

Barcode : 99999990312105
Title - Shree Gnatadharma Kathanga Sootram Bhag-2
Author - Maharaj, Ghasilalji
Language - sanskrit
Pages - 1125
Publication Year - 1963
Barcode EAN.UCC-13



जैनाचार्य-जैनधर्मटिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालजी-महाराज
विरचितया अनगार्यर्माभृतर्णिप्यार्यया न्यार्यया समलङ्कृतं
हिन्दी-गुर्जर-भाषाऽनुवादसहितम्-

श्री-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम्

SHREE GNĀTĀDHARMA
KATHĀNGA SOOTRAM

द्वितीयो भाग.

नियोजक

संस्कृत-प्राकृतज्ञ-जैनागमनिष्णात-प्रियव्याख्यानि-
पण्डितमुनि-श्रीकन्हैयालालजी-महाराज

प्रकाशक

दिल्लीनिवासि — लालाजी — किशनचंदजी — सा —
जौहरी- प्रदत्त- द्रव्यसाहाय्येन अ० भा० श्वे०
स्था० जैनशास्त्रोद्धारसमितिप्रमुखः श्रेष्ठि-
श्रीशान्तिलाल-मङ्गलदासभाई-महोदय.

मु० राजकोट

प्रथमा-आवृत्ति
प्रति १२००

धीर-संवत्
२४८९

विक्रम-संवत्
२०२०

ईसवीसन
१९६३

मूल्यम्-रु० २५-०-०

મળવાનું ઠેકાણું
૧. બા. શ્રવે સ્થાનકવાસી
શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ,
હિયા કુવા રોડ, શ્રીન લોજ
રાજકોટ, (સૌરાષ્ટ્ર)

Published by
Shri Akhil Bharat S S
Jain Shastroddhara Samiti,
Garedia Kuva Road, RAJKOT,
(Saurashtra), W Ry, India

ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञा,
जानन्ति ते किमपि तान् प्रति नैष यत्न. ।
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा,
कालो ह्यय निरवधिर्निपुला च पृथ्वी ॥ १ ॥

हरिगीतचउन्द

करते अवज्ञा जो हमारी यत्न ना उनके लिये ।
जो जानते है तत्त्व कुछ फिर यत्न ना उनके लिये ॥
जनमेगा मुझसा व्यक्ति कोई तत्त्व उससे पायगा ।
है काल निरवधि त्रिपुल पृथ्वी ध्यान मे यह लायगा ॥ १ ॥

મુલ્ય રૂ ૨૫=૦૦

૧ આગત્તિ પ્રત ૧૨૦૦
૧૨ મવત્ ૨૪૮૯
૧૬મસવત્ ૨૦૧૯
સિંચીસન ૧૯૬૩

મુદ્રક
મણિલાલ છગનલાલ શાહ
નવપ્રભાત પ્રિન્ટિંગ પ્રેસ,
ધીકાટા રોડ : અમદાવાદ

दिल्लीनिवासी श्रीमान् लालाजी किशनचंदजी सा, जौहरीजी के बग का संक्षिप्त जीवन

परिचय

भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली में श्री नेमीचंदजी चौरडिया का जन्म हुआ। आप बहुत होनहार व्यक्तता थी और धर्मप्रेमी थे। आप बत्तीसों शास्त्रों के ज्ञाता थे। आप जैन एवं वैदिक साहित्यके भी ज्ञाता थे। आपके पास अनेक प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के अतिरिक्त धार्मिक साहित्य का विशाल भंडार था। अल्प वय में ही आप स्वर्गारोहण कर गये। आपके सत्र से छोटे पुत्र श्री कपूरचंदजी चौरडिया भी आप ही की भाँति निर्भीक उत्साही कर्मशील एवं धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा रखने वाले थे। बीमारी की अवस्था में भी आपने सामायिक जो कि आप का नित्य नियम था, कभी नहीं छोड़ा। मृत्यु के अंतिम दिन तक आपने सामायिक व्रत की आराधना की थी। लाला कपूरचंदजी ने अपने व्यापार को बहुत बढ़ाया था। दिल्ली के गणमान्य व्यक्तियों में आपका नाम था। अनेक वर्षों तक आप समाज के प्रेसीडेन्ट रहे। आपके नेतृत्व में दिल्ली श्री सघ ने बहुत उन्नति की।

आपके सुपुत्र श्री किशनचंदजी चौरडिया भी आप ही की भाँति उद्योगी, विवेकवान एवं श्रद्धालु श्रावक हैं। प्रतिदिन सामायिक, व हर सप्ताह आर्यन्तिल अथवा उपवास का तप करते हैं और अनेक प्रकार के धार्मिक नियम पालते हैं। धार्मिक प्रवृत्तियों में सदा दिलचस्पी से भाग लेते हैं। स्थानीय सघ की कार्यकारिणी के आप सदस्य हैं।

लाला किशनचंदजीकी धर्मपत्नी श्रीमती नगीनादेवी चौरडिया, प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्री, एवं अनेक धार्मिक व सामाजिक समस्याओं से सघ रखनेवाली हैं और बड़ी श्राविका हैं, आपका धार्मिक ज्ञान बहुत गंभीर है। आप विचक्षण बुद्धिवाली एवं साहित्यप्रेमी हैं। आपके निजी पुरतकालय में अनेक अमूल्य हस्त लिखित ग्रंथों के अतिरिक्त लगभग पाँच हजार पुस्तकों का संग्रह है। शास्त्रों का स्वाध्याय करना आपका दैनिक नियम है। अनेक महासतीजी महाराज भी आपके धार्मिक ज्ञान का लाभ उठाते हैं।

श्रीमती नगीना देवी के पिता लाला धनोमल सुजती दिल्ली के प्रसिद्ध रईसों में से थे। धर्म के प्रति ... एवं ...

भरी हुई थी। अनेक दीक्षाएँ आपने कराईं। तन, मन, धन से साधु-
यों की सेवा करने में आपको अपूर्व आनंद मिलता था। आपका स्वर्गवास
ही ही हो गया था।

स्व. लाला धनोमलजी की धर्मपत्नी एव श्रीमती नगीनादेवीजी की माता
फूलमतीजी महाराज साहब को जैनदीक्षा अंगीकार किये हुए ३१ वर्ष हो
है। आप वयोवृद्ध, सरलस्वभावी, घोरसयमी (कठिन समय पालने वाले) हैं,
गो चौथे आरे की बानगी ही हो। अनेक वर्षों से आप दिल्ली में स्थवि-
र रह किये हुए हैं। आपके सदुपदेश से दिल्ली के अनेक व्यक्ति अपनी शास्त्री
समिति के सदस्य बने हैं।

श्रीमती नगीना देवीकी भाति उनकी पुत्री सुश्री विजयकुमारी बड़ी निर्भीक
पुत्पन्नमति, एव धार्मिक रुचि वाली हैं। आपके सुपुत्र सरलस्वभाव विनयशील
महतावचद भी बड़े धर्मनिष्ठ, समाजसेवी, विनयवान एव सुशिक्षित नवयुवक हैं।

श्रीमती नगीनादेवीके दो पुत्रियाँ और भी हैं। एक-सुश्री विनयकुमारी,
[सका विवाह जोधपुरनिवासी श्रीमान हुक्मचंदजी साहब जैन एडवोकेटके सुपुत्र
श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन एडवोकेट से हुआ है। वि० अनिलकुमार जैन, जिनका
वचन इस पुस्तक में है-इन्हीं के सुपुत्र है। श्री अनिलकुमार अपनी समिति के
सदस्य हैं। दूसरी पुत्री सुश्री विमलकुमारी का विवाह दिल्लीनिवासी प्रसिद्ध
ग्रेसी कार्यकर्ता स्व० श्री मुकुन्दलालजी जौहरी “कोमीनारा” (यह उपनाम
[धान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने उह दिया था) के सुपुत्र श्री हुक्मचंदजी
जौहरीके साथ हुआ है। श्रीमती विमलकुमारी भी अपनी समिति की सदस्या हैं।

परंपरा से ही चौरडिया परिवार धार्मिक प्रवृत्तियों में रुचि रखनेवाला रहा
। और चुस्तस्थानकवासी हैं। तन मन व धन से समाज व धर्म की खूब सेवा
करता आया है, यही सदा से इस परिवार का कर्तव्य रहा है।

॥ ॐ शान्ति. ॥

ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र के दूसरा भाग की विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमांक	विषय	पृष्ठ
	अध्ययन-५	
१	पाचवे अध्ययन की अवतरणिका	१
२	द्वारावति नगरी का वर्णन	२-७
३	नदनवन-उद्यानका वर्णन	७-८
४	कृष्णवासुदेवका वर्णन	९-१०
५	स्थापत्यापुत्र गाथापतिका वर्णन	११-१२
६	अरिष्टनेमीअद्वैतप्रभुका समवसरण	१४-१६
७	समवसरणमे कृष्णका आगमन आदिका वर्णन	१७-२३
८	स्थापत्यापुत्र गाथापतिके निष्क्रमणका वर्णन	२४-५८
९	शैलकराजका वर्णन	५८-६२
१०	सुदर्शनसेठका वर्णन	६३-१११
११	शुभपरित्राजकके दीक्षाग्रहणका वर्णन	११२-११५
१२	स्थापत्यापुत्रके निर्वाणका निरूपण	११६-११७
१३	शैलकराजके चरित्रका वर्णन	११८-१६७
	छठा अध्ययन	
१४	महावीरस्वामीका समवसरण	१६८-१६९
१५	इन्द्रभूतिका जीवकेविषयमे प्रश्न	१७०-१७७
	सातवां अध्ययन	
१६	ध य सार्थवाहके चरित्रका वर्णन	१७८-२३४
	अठवा अध्ययन	
१७	आठवे अध्ययनका अवतरण	२३५
१८	वलराजके चरित्रका वर्णन	२३६-२४०
१९	वलराजके दीक्षाग्रहणका वर्णन	२४०-२४२
२०	महावल आदिछह राजाओंके=चरित्रका वर्णन	२४३-२८२
२१	प्रभावतीदेवीके दोहदका वर्णन	२८३-२८८
२२	तीर्थकरके जन्मनिमित्त दिशाकुमारि आदिका उत्सवकरनेका वर्णन	२८९-२९२
२३	मोहगृहके निर्माणका वर्णन	२९३-२९६

पुत्तलिकानिर्माण आदिका वर्णन	२९७-३००
ति के स्वरूपका वर्णन	३००-३२०
चारित्रिका वर्णन	३२१-३३४
रित्रमे तालपिशाचका वर्णन	३३४-३५०
चरित्रमे अरहन्तक श्रावकके चरित्रका वर्णन	३५०-३७२
चरित्रका वर्णन	३७२-३८५
पति रुक्मी राजाकेचरित्रका वर्णन	३८५-३९६
“ शत्रु ” राजाकेचरित्रका वर्णन	४९७-४१०
राजके चारित्रिका वर्णन	४१०-४३५
राजाके चरित्रका वर्णन	४३५-४५७
गेके युद्धका वर्णन	४५७-४६५
केयुद्धका वर्णन	४६६-४७१
गरीके निरोधका वर्णन	४७१-४८०
मितपुत्तलिका का वर्णन	४८०-४९१
ओंके जातिस्मरणहोनाआदिका वर्णन	४९१-५०१
ानके दीक्षावसरका निरूपण	५०२-५१५
वान के दीक्षोत्सवका वर्णन	५१५-५३९
आदि छहों राजाओंके दीक्षाग्रहणआदिका वर्णन	५४०-५५२
नवर्वा अध्ययन	
ारकके चरित्रका वर्णन	५५३-६५५
दशवा अध्ययन	
वृद्धि और हानिकानिरूपण	६५६-६६७
ग्यारहवा अध्ययन	
न आराधक और विराधकत्वहोनेका कथन	६६८-६७८
बारहवा अध्ययन	
कके विषयमें सुबुद्धिका दृष्टांत	६७९-७२७
तेरहवा अध्ययन	
अध्ययनके सवधका निरूपण	७२८-७३०
गिहारमवका निरूपण	७३१-७८८

आद्यमुखी श्री—



बीचमें बैठे हुए

लालाजी किशनलालजी सा. जौहरी
खड़े हुए इनके सुपुत्र—

वि. महेतावचन्दजी सा जैन
छोटे—अनिलकुमार जैन (दोयचा)

२४ मणिनिर्मितपुत्तलिकानिर्माण आदिका वर्णन	२९७-३००
२५ कोसलाधिपति के स्वरूपका वर्णन	३००-३२०
२६ अङ्गराजके चरित्रका वर्णन	३२१-३३४
२७ अङ्गराज चरित्रमें तान्त्रपिशाचका वर्णन	३३४-३५०
२८ अङ्गराजके चरित्रमें अरहन्तरु श्रावकके चरित्रका वर्णन	३५०-३७२
२९ अङ्गराजके चरित्रका वर्णन	३७२-३८५
३० कुणालाधिपति स्वामी राजाकेचरित्रका वर्णन	३८५-३९६
३१ काशिराज " शख " राजाकेचरित्रका वर्णन	४९७-४१०
३२ अदीनशत्रु राजके चरित्रका वर्णन	४१०-४३५
३३ जितशर राजाके चरित्रका वर्णन	४३५-४५७
३४ छहराजाओके युद्धका वर्णन	४५७-४६५
३५ कुभरराज केयुद्धका वर्णन	४६६-४७१
३६ मिथिलानगरीके निरोधका वर्णन	४७१-४८०
३७ सुवर्ण निर्मितपुत्तलिका का वर्णन	४८०-४९१
३८ छहों राजाओंके जातिस्मरणहोनाआदिका वर्णन	४९१-५०१
३९ मल्लीभगवानके दीक्षावस्त्रका निरूपण	५०२-५१५
४० मल्लीभगवान के दीक्षोत्सवका वर्णन	५१५-५३९
४१ जितशर आदि छहों राजाओंके दीक्षाग्रहणआदिका वर्णन	५४०-५५२
नवर्चा अध्ययन	
४२ माकदीदारकके चरित्रका वर्णन	५५३-६५५
दशर्चा अध्ययन	
४३ जीवोंके वृद्धि और हानिकानिरूपण	६५६-६६७
ग्यारहवा अध्ययन	
४४ जीवोंके आराधक और विराधकत्वहोनेका कथन	६६८-६७८
बारहवा अध्ययन	
४५ खातोदकके विषयमें सुबुद्धिका दृष्टांत	६७९-७२७
तेरहवा अध्ययन	
४६ तेरह अध्ययनके सब धका निरूपण	७२८-७३०
४७ नन्दमणिकारभवका निरूपण	७३१-७८८

- ૧૬ શેઠ મીશ્રીલાલજી જેવતરાજજી લુણીયા ચડાવલવાળા અમદાવાદ ૫૫૦૨
- ૧૭ શેઠ રામજીભાઈ શામજી વીરાણી અને સમરતળેન
રામજી વીરાણી ટ્રસ્ટ રાજકોટ ૫૦૦૧
- ૧૮ એક જૈન ગૃહસ્થ અમદાવાદ ૫૪૨૫
- ૧૯ શેઠ મુળચંદજી જવાહીરલાલજી ખરડીયા અમદાવાદ ૫૦૦૧
- ૨૦ શેઠ મુકુદચંદજી ખાલીયાના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ મોહનલાલજી ખાલીયા (પાલીવાળા) અમદાવાદ ૫૦૦૧
- ૨૧ બા બ્ર શ્રી વિનોદમુનિના સ્મરણાર્થે હા શ્રી શામજી
વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીભાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ રાજકોટ ૫૦૦૦
- ૨૨ શ્રી શામજી વલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીભાઈ
વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શ્રી ડેશવલાલ વીરાણી રાજકોટ ૫૦૦૦
- ૨૩ શ્રીમતિ મણીભાઈ વૃજલાલ પારેખ ચેરીટેબલ
ટ્રસ્ટ ફંડ હા પારેખ વૃજલાલ હુર્લેલજી રાજકોટ ૫૨૫૧
- નોટ — ઘાટકોપરવાળા શેઠ માણેકલાલ એ મહેતા તરફતી અમદાવાદમાં
પાલડી બસ સ્ટેન્ડ પાસે પ્લોટ નં ૨૫૦ વાળી ૬૯૮ ચો વાર
જમીન સમિતિને ભેટ મળેલ છે અને જેનું રજીસ્ટર તા ૨૩-૩-૬૦
ના રોજ થઈ ગયેલ છે

મુરખખીશ્રીઓ—૨૮

(ઓછામાં ઓછી રૂા. ૧૦૦૦ ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	વકીલ જીવરાજભાઈ વર્ધમાન કોઠારી હા કહાનદાસભાઈ તથા વેણીલાલભાઈ કોઠારી	જેતપુર	૩૬૦૫
૨	દોશી પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ	રાજકોટ	૩૫૦૪
૩	મહેતા ગુલાબચંદ પાનાચંદ	રાજકોટ	૩૨૮૬૧૧-૧૧
૪	મહેતા માણેકલાલ અમુલખરાય	ઘાટકોપર	૩૨૫૦
૫	સઘવી પીતામ્બરદાસ ગુલાબચંદ	ભામનગર	૩૧૦૧
૬	લલ્લુભાઈ ગોરધનદાસ ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ હા શેઠ વાડીલાલ લલ્લુભાઈ	અમદાવાદ	૨૫૦૦
૭	નામદાર ઠાકોર માહેબ લખધીરસિંહજી બહાદુર	મોરબી	૨૦૦૦

આઘમુરખીશ્રીઓ-૨૩

(ઓછામાં ઓછી રૂ. ૫૦૦૦ ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શેઠ શાતિલાલ મગજદાસભાઈ બાણીલા મીલમાલીક	અમદાવાદ	૧૫૦૦૦
૨	શેઠ હરખચંદ કાળીદાસભાઈ વારીયા હા શેઠ લાલચંદભાઈ, નગીનભાઈ, વૃજલાલભાઈ તથા વલ્લભદાસભાઈ	ભાણુવડ	૬૦૦૦
૩	કેઠારી જેચંદ અજરામર હા હરગોવિંદભાઈ જેચંદભાઈ	રાજકોટ	૫૨૫૧
૪	શેઠ ધારશીભાઈ જીવણભાઈ	બારમી	૫૦૦૧
૫	સ્વ પિતાશ્રી છગનલાલ શામળદાસના સ્મરણાર્થે હા શ્રી ભોગીલાલ છગનલાલભાઈ ભાવસાર	અમદાવાદ	૫૨૧૧
૬	સ્વ શેઠ દિનેશભાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ કાતિલાલ મણીલાલ જેશીંગભાઈ	અમદાવાદ	૫૦૦૦
૭	શેઠ આત્મારામ માણેકલાલ હા શેઠ ચીમનલાલભાઈ શાતિલાલભાઈ તથા પ્રમુખભાઈ	અમદાવાદ	૬૦૦૧
૮	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી રાજકોટ સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શેઠ શામજી વેલજી વીરાણી		૫૦૦૦
૯	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા માતૃશ્રી કડવીબાઈ વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૦	શેઠ પોચાલાલ ખીતાબરદાસ	અમદાવાદ	૫૨૫૧
૧૧	શાહ રગજીભાઈ મોહનલાલ	અમદાવાદ	૫૦૦૧
૧૨	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શેઠ દુર્ગલજીભાઈ શામજીભાઈ વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૩	શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શ્રીમતિ મણીકુ વરબેન દુર્ગલજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૪	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શ્રી છોટાલાલ શામજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૦૦
૧૫	સ્વ માતૃશ્રીના સ્મરણાર્થે હા ભાવસાર ભોગીનાથ છગનલાલ અને કુટુંબીજનો	અમદાવાદ	૫૦૦૦

સહાયક મેમ્બરો--૧૩૨

(ઓછામાં ઓછી રૂ. ૫૦૦ ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા ઝુઝાભાઈ વેલશીભાઈ	વઢવાણ શહેર	૭૫૦
૨	શેઠ નરોત્તમદાસ ઓઘડભાઈ	જોરાવરનગર	૭૦૦
૩	શેઠ રતનશી હીરજીભાઈ હા ગોરધનભાઈ	જામજોધપુર	૫૫૫
૪	ખાટવીયા ગીરધર પરમાણુદ હા અમીચદભાઈ	ખાખીજાળીયા	૫૨૭
૫	મોરખીવાળા સઘવી દેવચદ નેણશીભાઈ તથા તેમના ધર્મપત્ની અ સૌ મણીભાઈ તરફથી હા મુળચદ દેવચદ સઘવી	મલાડ	૫૧૧
૬	વેરા મણીલાલ પોપટલાલ	અમદાવાદ	૫૦૨
૭	ગોસલીયા હરીલાલ લાલચદ તથા અ પાળેન ગોસલીયા	,,	૫૦૨
૮	શાહે મનહરલાલ પ્રાણજીવનદાસ	મુખઈ	૫૦૧
૯	શેઠ ઇશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૦	શેઠ ચંદુલાલ છગનલાલ	,,	૫૦૧
૧૧	શેઠ શીવલાલ ડમરભાઈ (કરાચીવાળા)	લીંબડી	૫૦૧
૧૨	કામદાર તારાચદ પોપટલાલ ઘોરાજીવાળા	રાજકોટ	૫૦૧
૧૩	મહેતા મોહનલાલ કપુરચદ	,,	૫૦૦
૧૪	શેઠ ગોવિંદજીભાઈ પોપટભાઈ	રાજકોટ	૫૦૦
૧૫	શેઠ રામજી શામજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૧
૧૬	સ્વ પિતાશ્રી નંદાજીના સ્મરણાર્થે હા વેણીચદ શાતિલાલ (જા ખુઆવાળા) મેઘનગર		૫૦૧
૧૭	શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા શેઠ ઠાકરશી કરશનજી	થાન્ગઢ	૫૦૦
૧૮	શેઠ તારાચદ પુખરાજજી	ઔરગાખાદ	૫૦૦
૧૯	શ્રી સ્થા નૈન સઘ	,,	૫૦૦
૨૦	મહેતા મુળચદ રાઘવજી હા મગનલાલભાઈ તથા દુર્લભજીભાઈ ધ્રાક્ષા		૭૫૦
૨૧	શેઠ હરખચદ પુરુષોત્તમ હા ઇન્દુકુમાર	ચોરવાડ	૫૦૦
૨૨	શેઠ કેસરીમલજી વસ્તીમલજી ગુગલીયા	મલાડ	૫૦૧
૨૩	શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા ખાટવીયા અમીચદ ગીરધરભાઈ ખાખીજાળીયા		૫૦૧
૨૪	શ્રી ખીમજીભાઈ ખાવાભાઈ કુલચદભાઈ ગુલાબચદભાઈ નાગરદાસભાઈ જમનાદાસભાઈ મુખઈ		૫૦૧

૮ શેઠ લહેરચંદ કુવરજી હા શેઠ ન્યાલચંદ દહેરચંદ	સિદ્ધપુર	૨૦૦૦
૯ શાહ હગનલાલ હેમચંદ વસા હા મોહનભાઈ		
તથા મોતીલાલભાઈ	મુળઈ	૨૦૦૦
૧૦ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સઘ હા શેઠ ચંદ્રકાન્ત વીક્રમચંદ	મોરળી	૧૯૬૩
૧૧ મહેતા સોમચંદ તુલસીદાસ તથા તેમના ધર્મપત્ની		
અ સૌ મણીગૌરી મગનલાલ	રતલામ	૨૦૦૦
૧૨ મહેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ	ભામજોધપુર	૧૫૦૨
૧૩ દોશી કપુરચંદ અમરશી હા દલપતરામભાઈ	ભામજોધપુર	૧૦૦૨
૧૪ ખગડીયા જગજીવનદાસ રતનશી	દામનગર	૧૦૦૨
૧૫ શેઠ માણેકલાલ ભાણજીભાઈ	પોરબંદર	૧૦૦૧
૧૬ શ્રીમાન ચંદ્રસિંહજી સાહેબ મહેતા (રેલ્વે મેનેજર) કલકત્તા		૧૦૦૧
૧૭ મહેતા સોમચંદ નેણસીભાઈ (કરાચીવાળા)	મોરળી	૧૦૦૧
૧૮ શાહ હરીલાલ અનોપચંદ	ખભાત	૧૦૦૧
૧૯ મોદી કેશવલાલ હરિશ્ચંદ્ર	અમદાવાદ	૧૦૦૧
૨૦ કોઠારી છબીલદાસ હરખચંદ	મુળઈ	૧૦૦૧
૨૧ કોઠારી રંગીલદાસ હરખચંદ	ભાવનગર	૧૦૦૦
૨૨ શાહ પ્રેમચંદ માણેકચંદ તથા અ સૌ સમરતબેન અમદાવાદ		૧૦૦૩
૨૩ શેઠ કરમશી જેઠાભાઈ સોમૈયા હા અ સૌ સાકરબેન મુળઈ		૧૦૦૦
૨૪ શેઠ પોપટલાલ ચત્રભુજ કોઠારી	સુરેન્દ્રનગર	૧૦૦૧
૨૫ શ્રી સ્થા જૈન લીખડી સપ્રદાયના ક્ષમાગુણુ નિધિ		
પૂજ્ય શ્રી લાધાજી સ્વામીના શિષ્ય પ્રખર પડિત		
રત્ન શ્રી ઉત્તમચંદજી મહારાજના સ્મરણાર્થે		
પૂજ્ય લાધાજી સ્વામી પુસ્તકાલય તરફથી હા		
શેઠ જ્ઞેશીંગભાઈ પોચાલાલ	અમદાવાદ	૧૦૦૦
૨૬ શ્રીમતિ આશાબેન હસરાજ સુરાણા	મુળઈ	૧૦૦૧
૨૭ શાહ શાંતિલાલ માણેકલાલ	અમદાવાદ	૧૦૦૧
૨૮ શ્રીયુત વીક્રમાર C/o મહેતાખચંદ જૈન	દિલ્હી	૧૦૦૧

- ૫૨ શેઠ ઇંદુભાઈ હરગોવિંદદાસ કટોરીવાળા મુળધ ૫૦૧
- ૫૩ પારેખ રતિલાલ નાનચદ મોરખીવાળા તરફથી તેમના
પિતાશ્રી નાનચદ ગોવિંદજીના સ્મરણાર્થે તથા તેમના
ધર્મપત્ની અ સૌ વસત બહેનના અદ્વાઈતપ નિમિત્તે
હા ભુપતલાલ રતિલાલ અમદાવાદ ૫૫૨
- ૫૪ સ્વ શાહ ત્રીભોવનદાસ મગનલાલના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
શ્રીવક્રુવરબાઈ તરફથી હા રતીલાલ ત્રીભોવનદાસ શાહ અમદાવાદ ૫૧૧
- ૫૫ શ્રીમાન નાથાલાલ માણેકચદ પારેખ (માટુ ગા) ૫૦૧
- ૫૬ શ્રી લીંબડી સ પ્રદાયના ગચ્છાધિપતિ પૂ આચાર્ય
મહારાજ શ્રી લાધાજી સ્વામીના સ્મરણાર્થે હા
શેઠ જેસીંગભાઈ પોચાલાલ (મહારાજ શ્રી
છોટાલાલજી સદાનદીના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧
- ૫૭ સ્વ શ્રી વિનયમુર્તિ શ્રી લક્ષ્મીચંદજી મહારાજના
સ્મરણાર્થે હા શેઠ જેસીંગભાઈ પોચાલાલ (મહારાજશ્રી
છોટાલાલજી સદાનદીના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧
- ૫૮ બા ધ્ર પ્રભાવતીબેન કેશવલાલ ઉજ્જૈનવાળા તરફથી
તેમની દીક્ષા પ્રસંગે વીરમગામ ૫૫૧
- ૫૯ શેઠ શ્રીચુત હરજીવનદાસ રાયચદ હા છબીલદાસ હરજીવન અમદાવાદ ૫૦૧
- ૬૦ શેઠ પોપટલાલ હ સરાજ તથા દિવાળીબેનના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ બાબુલાલ પોપટલાલ અમદાવાદ ૫૦૨
- ૬૧ અ સૌ લીલાવતીબેન ઇશ્વરલાલ અમદાવાદ ૫૦૨
- ૬૨ હેમાણી પ્રભુદાસ ભણજી કલકત્તા ૫૫૧
- ૬૩ શેઠ લક્ષ્મણદાસ સેજરામ અમદાવાદ ૫૦૧
- ૬૪ શ્રી સ્થા જૈન મોટા સઘ રાજકોટ ૫૦૧
- ૬૫ શેઠ ચાદમલ ખીરધીચદ નાસિક સીટી ૫૦૧
- ૬૬ ઝવેરી માણેકચંદજી પન્નાલાલ છજલાણી
હા ધનવતીબેન તથા કિરણબેન દિલ્હી ૫૦૧
- ૬૭ શેઠ હ સરાજજી પૂર્ણમલજી કાકરીયા ગોગેળાવ ૫૦૧
- ૬૮ શ્રી શ્રવે સ્થા જૈન સભા કલકત્તા ૫૦૧
- ૬૯ શેઠ તેજસિંહજી કુતેલાલજી છાજેડ ઉદેપુર ૫૦૧
- ૭૦ શેઠ રતનચદ લક્ષ્મીચદ મુમઇ ૫૦૦

૨૫ શેઠ મણીલાલ મોહનલાલ ડગલી હા મુળજીભાઈ મણીલાલભાઈ મુંબઈ	૫૦૧
૨૬ સ્વ કાતિલાલભાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ ખાલચંદ સાકરચંદ ,,	૫૦૧
૨૭ કામદાર-રતીલાલ દુર્લભજી (જેતપુરવાળા)	૫૦૧
૨૮ શાહ જયતીલાલ અમૃતલાલ	શીવ ૫૦૧
૨૯ વેરા મણીલાલ લક્ષ્મીચંદ	,, ૫૦૧
૩૦ શેઠ ગુલાબચંદ ભુદરભાઈ તથા કસ્તુરબેન હા ભાઈ અનોપચંદ ખારરોડ	૫૦૧
૩૧ મહાન ત્યાગી બેન ધીરજીકુવર ચુનીલાલ મહેતા	ધ્રાક્ષ ૫૭૧
૩૨ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ	ધ્રાક્ષ ૫૦૧
૩૩ શ્રી મગનલાલ છગનલાલ શેઠ	રાજકોટ ૫૦૧
૩૪ શેઠ ચતુરદાસ ઠાકરશી તથા અ સૌ નંદકુવરબેન	જામનગર ૫૦૩
૩૫ શેઠ દેવચંદ અમરશી (બેન ધીરજીકુવરની દીક્ષા પ્રસંગે લેટ) ભાણુવડ	૫૦૧
૩૬ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ (બેન ધીરજીકુવરની દીક્ષા પ્રસંગે લેટ) ભાણુવડ	૫૦૧
૩૭ વકીલ વાડીવાલ નેમચંદ શાહ	વીરમગામ ૫૦૧
૩૮ મહેતા શાંતિલાલ મણીલાલ હા કમળાબેન મહેતા	અમદાવાદ ૫૫૬
૩૯ શ્રીયુત લાલચંદજી તથા અ સૌ ધીસાબેન	,, ૫૦૧
૪૦ શેઠ મોહનરાજજી મુકુન્દચંદજી બાલીયા	,, ૫૦૧
૪૧ સ્વ શેઠ ઉકાભાઈ ત્રીભોવનદાસના સ્મરણાર્થે તેમના	

ધર્મપત્ની લક્ષ્મીબાઈ ગીરધર તરફથી હા મરઘાબેન

તથા મણુબેન અમદાવાદ ૫૦૧

૪૨ પારેખ જયતીલાલ મનસુખલાલ રાજકોટવાળા હ વિનુભાઈ ,, ૫૦૧

૪૩ શ્રી-સ્થા જૈન સંઘ વાકાનેર ૫૦૧

૪૪ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ બોટાદ ૫૦૧

૪૫ શેઠ ગુદડમલજી શેષમલજી જોવર (ખરાર) પીપળગાવ ૫૦૧

૪૬ સ્વ તુરખીયા લહેરચંદ માણેકચંદના સ્મરણાર્થે તેમના

ધર્મપત્ની જીવતીબાઈ તરફથી હા ભાઈ જયતીલાલ

તથા પુનમચંદભાઈ વડોદરા ૫૦૧

૪૭ શાહ અચલદાસ શુકનરાજજી હા શુકનરાજજી અમદાવાદ ૫૦૧

૪૮ ભાવસાર ખોડીદાસ ગણેશભાઈ ધ ધુકા ૫૦૧

૪૯ અ સૌ હીરાબેન માણેકલાલ મહેતા ઘાટકોપર ૫૦૧

૫૦ મહેતા શાંતિલાલ મગનલાલ તથા અ સૌ પદમાવતી

શાંતિલાલ મહેતા અમદાવાદ ૫૦૦

૫૧ શેઠ હીરાચંદજી વનેચંદજી કટારીયા હુળલી ૫૦૧

- ૮૮ શ્રીમાન લાલાજી કપુરચંદ્રજીના યોગગના ધર્મપત્ની
શ્રીમતી વમતદેવી હા લાલા રાજમલજી હેમચંદ્રજી
તરફથી (મહાસતી શ્રી મુદર્શનામાતજી તથા ફૂલ
મતિજી મહાદેવીના ઉપદેશથી) દિલ્હી ૫૦૧
- ૮૯ સ્વ મહાસતીજી શ્રી દ્રૌપતાદેવીજી મ સા ના સ્મરણાર્થે
શ્રી એસ એસ જૈન મહિલા મધ તરફથી (અનેક ગુણાલકૃત
મહાસતીજી શ્રી મોહનદેવીજી મ મા ની પ્રેરણાથી) દિલ્હી ૫૦૧
- ૯૦ સ્વ લક્ષ્મીચંદ્રજીના સ્મરણાર્થે નગિનાદેવી સુજતીના તરફથી
હા સઘવી હેમતકુમાર જૈન દિલ્હી ૫૦૧
- ૯૧ સ્વ પિતાશ્રી લાલા ઝવેરી ઘત્નેમલજી સુજન્તીના સ્મરણાર્થે
હા શ્રીમતી નગીનાદેવી દિલ્હી ૫૦૧
- ૯૨ લાલાજી કસ્તુરચંદ્રજી ખુશાવચંદ્રજી સચેતી હા જ્ઞાનચંદ્રજી અલવર ૫૦૧
- ૯૩ સ્વ પૂજ્ય પિતાશ્રી દુર્લભજી સોમચંદ દક્ષતરી
હા જૌરીશકર દુર્લભજી દક્ષતરી મુબઈ ૫૦૦
- ૯૪ શેઠ સોમચંદ જેઠાલાલ ગોલાણી
હા ચુનીલાલભાઈ જેડીયાવાળા મુબઈ ૫૦૬
- ૯૫ શેઠ ફ્રેન્ચલમંદલજી સુલતાનસિંહજી બેરહીયા અમદાવાદ ૫૦૧
- ૯૬ શેઠ છાનલાલ શામજી વીરાણી તથા
શ્રીમતી વૃજકુવરબેન છગનલાલ વીરાણી ટ્રસ્ટફડ
તરફથી શેઠ છગનલાલભાઈના સ્મરણાર્થે રાજકોટ ૫૦૧
- ૯૭ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક મધ
હા પ્રમુખ બસીવાલ કટારીયા હિંગણધાટ ૫૦૧
- ૯૮ લાલાજી રામલાલજી રોશનલાલજી (અનેક ગુણાલકૃત
મહાસતીજી મોહનદેવીના ઉપદેશથી) દિલ્હી ૫૦૧
- ૯૯ સ્વ મહેતા મગળજી મણીલાલના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્ની ગુણવતીબેન મહેતા પાડચેરી ૫૫૧
- ૧૦૦ બાટવીયા વનેચંદ અમીચંદ (મહાવીર ટેક્સટાઇલ મેટર્સ) બેંગલોર ૫૫૩
- ૧૦૧ શ્રીયુત તારાચંદ ગેલડા ટ્રસ્ટ મદ્રાસ ૫૦૧
- ૧૦૨ શેઠ ગુલરાજજી પુનમચંદજી મહેતા કીસનગઢ ૫૫૧
- ૧૦૩ શેઠ અગસ્તમંદલજી ત્રીકમચંદજી ઈંદોર સીટી ૫૫૧

૭૧ શાહ ઉમરશી બીમશીભાઈ (સ્વ પિતાશ્રી બીમશીભાઈ તથા માતૃશ્રી પાલાબાઈ તથા ધર્મપત્ની પાનબાઈના સ્મરણાર્થે) મહાડ પપર		
૭૨ શાહ શામલાલભાઈ અમરસીભાઈ	અમદાવાદ	૫૦૨
૭૩ મહેતા ચન્દ્રકાન્ત નીતમલાલ	મુળઈ	૫૦૧
૭૪ શેઠ ભીખચંદ્ર લાલચંદ્ર	પીપલગામ	૫૦૧
૭૫ ભેન મોહનીબેન મહેતા	મુળઈ	૫૦૧
૭૬ શ્રીમતી મોઘીબેન નવલચંદ શાહ	લીમડી (સૌરાષ્ટ્ર)	૫૦૧
હા મોતીબેન		
૭૭ શ્રીમતી વિમલાણી સૂરજમલ મહેતા	બેવગામ	૫૦૧
૭૮ ઉદાણી નિહાલચંદ્ર હાકેમચંદ્ર વડીલ		
બી એ એલ એલ બી	રાજકોટ	૫૦૧
૭૯ સ્વ કોઠારી મગનલાલજી કુન્દનમલજીના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની રાજકુવરબેન	સતારા	૭૫૧
૮૦ શેઠ મોહનલલજી મછાલાલજી હા રમણીકલાલ (પૂ મુનિશ્રી કૃતેચંદ મ ના શિષ્ય પ મુનિશ્રી કનૈયાલાલજી મ ના ઉપદેશથી)	જયપુર	૫૦૧
૮૧ શેઠ કનૈયાલાલજી સોહનલાલજી કાવેડિયા	ધારડી	૫૦૧
૮૨ શેઠ પ્રતાપમલજી કપુરચંદજી સાઢેરાવાળા (પૂજ્ય કૃતેચંદજી મ ના શિષ્ય મિશ્રીલાલજી મ ના શિષ્ય ચાદમલજી મ ના ઉપદેશથી)	અમદાવાદ	૫૦૧
૮૩ શ્રીમાન લાલાજી રોશનલાલજી સમન્દરલાલજી	બડોત	૫૦૧
૮૪ શ્રીમાન ભૂરમલજી દલીચંદજી સાકરિયા (પૂ મ શ્રી સ્વામીદાસજીના સ પ્રદાય પૂ મ શ્રી કૃતેચંદજી મ ના શિષ્ય પ મુનિશ્રી કનૈયાલાલજી મ ના ઉપદેશથી)	સાઢેરાવ	૫૦૧
૮૫ સ્વ ગૌરીશંકર કાળીદાસ દેસાઈના સ્મરણાર્થે હા ભૂપતલાલ ગૌરીશંકર	ઇદોર	૫૦૧
૮૬ શેઠ શ્રી નરભેરામભાઈ હંસરાજભાઈ કમાણી	જમશેદપુર	૫૦૧
૮૭ સ્વ મહાસતીજી શ્રી ધનદેવીજી મ સા ના સ્મરણાર્થે સ્વ જૂળચંદજી સ ખલાલના ધર્મપત્ની શ્રીમતી જયદેવી તરફથી (મહાસતીજી શ્રી સુદર્શનામતીજી તથા કુલમતીજીના ઉપદેશથી)	દિલ્લી	૫૦૧

૧૨૩ શેઠ જીમરલાલજી-સીરોયા	હિંદેપુર ૫૦૧
૧૨૪ શેઠ મનસુખલાલ ત્રીલોવનદાસ	કોમખતુર ૫૦૧
૧૨૫ શ્રી દશા શ્રીમાળી મ્યા નૈન સધ	જમશેદપુર ૫૦૧
૧૨૬ શ્રી નૈન રત્ન પુસ્તકાલય	જોધપુર ૫૦૧
૧૨૭ શેઠ અજીતમલ કનૈયાલાલ	અમદાવાદ ૫૦૦
૧૨૮ શેઠ વસ્તીમલજી જોરાવરમલજી ભુરટ	હુબલી ૫૭૧
૧૨૯ શેઠ ચાદમલજી હરખચદજી કોઠાગી હા ખમાબેન મુળચદજી	અમદાવાદ ૫૦૧
૧૩૦ બાટવીયા ગુલાબચદ લીલાધર	ખાખીનજીયા ૫૦૨
૧૩૧ બેન લક્ષ્મીબાઈ પુર્વમલ મહેતા	પાલનપુર ૫૦૧
૧૩૨ શ્રીવીર વર્ધમાન પુસ્તકાલય હા શેઠ હીરાલાલજી ગણેશલાલજી	કુવારીયા ૫૦૧

૫૮૨-લાઈફ મેમ્બરો

અમદાવાદ તથા પરાઓ

નંબર	નામ	રૂપિયા
૧	શેઠ ગીરધરલાલ કરમચદ	૨૫૧
૨	શેઠ છોટાલાલ વખતચદ હા ફકીરચદભાઈ	૨૫૧
૩	શાહ કાતિલાલ ત્રીલોવનદાસ	૨૫૧
૪	શાહ પોપટલાલ મોહનલાલ	૨૫૧
૫	શેઠ પ્રેમચદ સાકરચદ	૨૫૦
૬	શાહ રતીલાલ વાડીલાલ	૨૫૧
૭	શેઠ લાલભાઈ મંગળદાસ	૨૫૧
૮	સ્વ. અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે, હા કાનજીભાઈ અમૃતલાલ દેસાઈ	૨૫૧
૯	શાહ નટવરલાલ ચંદુલાલ	૨૫૧
૧૦	શાહ નરસિંહદાસ ત્રીલોવનદાસ	૨૫૧
૧૧	શાહ ખીખીનચંદ્ર તથા ઉમાકાત ચુનીલાલ ગોપાણી	૩૦૧
૧૨	શ્રી શાહપુર દરિયાપુરી આઠકોટી-સ્થા નૈન ઉપાશ્રય હા વહીવટ કર્તા શેઠ/મશ્વરલાલ/પુરુષોત્તમદાસ	૨૫૧

૧૦૪ કાલુગા ધોંગડમદલણ મુલતાનમલણ !

કવાડ ગઢસીયાણાવાળા

અમદાવાદ ૫૦૧

૧૦૫ લાલાણ નવરતનચંદણ ચોરડીયાના ધર્મપત્ની

શ્રીમતી રાજકુમારીબેન

દિલ્હી ૫૦૧

૧૦૬ શેઠ ચીમનલાલ રૂપભચંદ

અમદાવાદ ૫૦૧

૧૦૭ શેઠ કાનણ ભીમાણી દ્રસ્ટ

કલકત્તા ૫૦૧

૧૦૮ શેઠ ગીરધરલાલ હંસરાજ કામાણી

,, ૫૦૧

૧૦૯ અનેક ગુણાલંકૃત મહાસતી મોહનદેવીજીના ઉપદેશથી

અવધર્મી બધુઓ તરફથી

દિલ્હી ૫૦૧

૧૧૦ સ્વ વિનયદણ પારેખના અમરણથે લાલા

પૂર્ણચંદણ રતનચંદણ પારેખની વતી હ

શ્રીમતી પ્રેમાદેવી (શાતસ્વલાવી મહાસતીજી

કુલકુવરબાઈના ઉપદેશથી)

દિલ્હી ૫૦૧

૧૧૧ શ્રીમતી બદામબાઈ મીશ્રીલાલજી હુણિયા ચડાવલવાળા અમદાવાદ ૫૦૧

૧૧૨ શેઠ ભરતકુમાર મણીલાલ દલાલ

,, ૫૫૧

૧૧૩ શાહે હરખચંદ અમરચંદ

,, ૫૦૧

૧૧૪ શાહે જગજીવનદાસ વન્દ્રાવનદાસ

,, ૫૦૧

૧૧૫ શેઠ હંસરાજ લક્ષ્મીચંદ કામાણી-જૈનભુવન

કલકત્તા ૫૦૧

૧૧૬ પૂ દાદાજી સ્વ કપુરચંદણ તથા દાદીજી

કેસરબેન ચોરડીયાના સ્મરણથે હા લાલા

કુલચંદણ અને શ્રીમતી વીમલકુવરી ઝવેરીની

વતી શ્રીમતી નગીનાદેવી (મહાસતીજી

કુલમતીજીના ઉપદેશથી)

દિલ્હી ૫૦૧

૧૧૭ શેઠ નગીનદાસ છોટાલાલ :

અમદાવાદ ૫૦૧

૧૧૮ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હ શેઠ ગણેશભક્ત ગુલાબચંદ

બરૌરા ૫૦૧

૧૧૯ શ્રી સ્થા જૈન સઘ

ભદેસર ૫૦૧

૧૨૦ શ્રી સરાક જૈન વિદ્યાલય

કુમારડી ૫૦૧

૧૨૧ ગાંધી ભુરાલાલ નાનચંદ

મુબઈ ૫૦૧

૧૨૨ શ્રીમાન હિંમતસિંહજી સાહેબ ગણુડીયા

એડીસનજી કમિશ્નર અજમેર ડીવીઝનવાળાના

ધર્મપત્ની અ સૌ માણેકકુવરબેન તરફથી

હા પુરાણસિંહજી ગણુડીયા

નવપુર ૫૫૧

૩૯ શ્રી સાબરમતી સ્થા નૈન સઘ હા શેઠ મણીલાલભાઈ	૨૫૬
૪૦ ભાવસાર ટોટાલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૪૧ ભાવસાર શકરાભાઈ છગનલાલ	૨૫૧
૪૨ અ સૌ બેન જીવીબેન રતિલાલ હા ભાવસાર રતિલાલ હરગોવિંદદાસ	૨૫૧
૪૩ ભાવસાર ભોગીલાલ જમનાદાસ પાટણવાળા	૨૫૧
૪૪ સઘવી બાલુભાઈ કમળશી તથા તેમના ધર્મપત્નીઓ અ સૌ અ પાબેન તરફથી તથા વસતબેન તરફથી	૨૫૧
૪૫ અ સૌ વિગ્રાબેન વનેચદ દેસાઈ વર્ણિતપ તથા અઢાઈ પ્રસંગે હા ભુપેન્દ્રકુમાર વનેચદ દેસાઈ	૪૧૭
૪૬ શાહ નટવરલાલ ગોકળદાસ	૨૫૧
૪૭ અ સૌ સરસ્વતીબેન મણીલાલ છગનલાલ	૩૫૧
૪૮ અ સૌ કકુબેન (ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલના ધર્મપત્ની)	૩૦૬
૪૯ અ સૌ સવિતાબેન (જયતીલાલ ભોગીલાલના ધર્મપત્ની)	૨૫૧
૫૦ અ સૌ સુનદાબેન (રમણલાલ ભોગીલાલના ધર્મપત્ની)	૨૫૧
૫૧ શેઠ હીરાજી રૂગનાથજીના સ્મરણાર્થે હા વાગમલજી રૂગનાથજી	૩૦૧
૫૨ શેઠ મણીલાલ બોધાભાઈ	૨૫૧
૫૩ પટવા સુમેરમલજી અનોપચદજી જોધપુરવાળા	૩૦૧
૫૪ સ્વ માણેકલાલ વનમાળીદાસ શેઠના સ્મરણાર્થે હા રમણલાલ માણેકલાલ	૨૫૧
૫૫ સ્વ શાહ ધનરાજજી ખેમરાજજીના સ્મરણાર્થે હા ઝંઝેયાલાલ ધનરાજજી	૩૦૧
૫૬ શ્રી સારંગપુર દ આ કેા સ્થા નૈન સઘ હા શાહ રમણલાલ ભગુભાઈ	૨૫૧
૫૭ દોશી હરજીવનદાસ જીવરાજ તથા લક્ષ્મીબાઈ લહેરચદના સ્મરણાર્થે હા દોશી મનહરલાલ કરશનદાસ મુળીવાળા	૨૫૧
૫૮ શાહ પુનમચદ ક્ષેત્રચદ	૨૫૧
૫૯ શ્રીયુત ચતુરભાઈ નદલાલ	૫૨૧
૬૦ શ્રીયુત અમૃતલાલ ઇશ્વરલાલ મહેતા	૨૫૧
૬૧ શાહ જાદવજી મોહનલાલ તથા શાહ ચીમનલાલ અમુલખભાઈ	૨૫૧
૬૨ અ સૌ બેન લાલુબેન મગનલાલ હા શાહ અમૃતલાલ ધનજીભાઈ વઢવાણ રાહેરવાળા	૩૦૧

૧૩ શ્રી છીપાપોળ હરીયાપુરી આઠકોટી સ્થા નૈન સઘ	
હા શેઠ ચહુલાલ અચરતલાલ	૨૫૧
૧૪ શાહ ચીનુભાઈ બાલાભાઈ C/o શાહ બાલાભાઈ મહામુખલાલ	૨૫૧
૧૫ શાહ ભાઈલાલ ઉજ્જમશા	૨૫૧
૧૬ શ્રી સુખલાલ ડી શેઠ હા ડો કુ સરન્વતીબેન શેઠ	૨૫૧
૧૭ શ્રી સૌરાષ્ટ્ર સ્થા નૈન સઘ હા શેઠ કાતિલાલ જીવણલાલ	૨૫૧
૧૮ મોદી નાથાલાલ મહાદેવદાસ	૨૫૧
૧૯ શાહ મોહનલાલ ત્રીકમલાલ	૨૫૧
૨૦ શ્રી છકોટી સ્થા નૈન સઘ હા શેઠ પોચાલાલ પિતાબરદાસ	૨૫૧
૨૧ દેસાઈ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા ભાઈલાલ અમૃતલાલ	૨૫૧
૨૨ શાહ નવનીતરાય અમુલખરાય	૨૫૧
૨૩ શાહ મણીલાલ આશારામ	૨૫૧
૨૪ શેઠ ચીનુભાઈ સાકરચંદ	૨૫૧
૨૫ શાહ વરજીવનદાસ-ઉમેચંદ	૨૫૧
૨૬ શાહ રજનીકાન્ત કસ્તુરચંદ	૨૫૧
૨૭ સઘવી જીવણલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૨૮ શાહ શાંતિલાલ મોહનલાલ ધાગધ્રાવાળા	૨૫૨
૨૯ અ સૌ બેન રતનબેન નાદેચા હા શેઠ ધુલજી ચ પાલાલજી	૨૫૧
૩૦ શાહ હરિલાલ જેઠાલાલ ભાડલાવાળા	૨૫૧
૩૧ શ્રી સરસપુર હરીયાપુરી આઠ કોટી સ્થા નૈન ઉપાશ્રય	
હા ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૩૨ શેઠ પુખરાજજી સમતીરામજી પુનમિયા સાદડીવાળા	૨૫૧
૩૩ સ્વ પિતાશ્રી જવાહરલાલજી તથા પૂજ્ય ચાચાજી હુજરીમલજી	
ખરડીયાના સ્મરણાર્થે હા મુળચંદ જવાહરલાલજી ખરડીયા	૨૫૧
૩૪ સ્વ ભાવસાર બબાભાઈ (મ ગળદાસ) પાનાચંદના સ્મરણાર્થે	
હા તેમના ધર્મપત્ની પુરીબેન	૨૫૧
૩૫ સ્વ પિતાશ્રી રવજીભાઈ તથા સ્વ માતૃશ્રી મુળીબાઈના સ્મરણાર્થે	
હા કકલભાઈ કેઠારી	૩૦૧
૩૬ ભાવસાર કેશવલાલ મગનલાલ	૨૫૧
૩૭ શાહ કેશવલાલ નાનચંદ બખડાવાળા હા પાર્વતીબેન	૨૫૧
૩૮ શાહ જીતેન્દ્રકુમાર વાડીલાલ માણેકચંદ રાજસીતાપુરવાળા	૨૫૧

૮૬ ભાવસાર કનુભાઈ સાકરચ દ	૨૫૧
૮૭ શેઠ ભેરૂમલજી સાહેબ ભેધપુરવાળા	૨૫૧
૮૮ સ્વ બેનાણી વર્ધમાન રામજીભાઈ કુદણીવાળાના સ્મરણાર્થે	
હા શાંતિલાલ વર્ધમાન	૨૫૧
૮૯ સ્વ કચરાભાઈ લહેરભાઈના સ્મરણાર્થે	
હા શાંતિભાઈ કચરાભાઈ	૨૫૧
૯૦ એક સ્વધર્મી બન્ધુ હા શાહ ગીખલદામજી જયતીલાલજી	૨૫૧
૯૧ અ સૌ સરન્વતીબેન મણીલાલ ચતુરભાઈ શાહ	
(સદાનદી છોટાલાલ મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૯૨ ચીમનલાલ મણીલાલ શાહ (દરીયાપુરી અ પ્રદાયના પૂ તપસ્વી	
મહારાજશ્રી માણેકચંદ્રજીના શિષ્ય મુનિશ્રી મગનલાલજી	
મહારાજશ્રીના સ્મરણાર્થે)	૨૫૧
૯૩ બેન જેકુવર વજલાલ પારેખ	૨૫૧
૯૪ શેઠ પુનમચંદજી જવાહીરલાલજી બરડીયા	૨૫૧
૯૫ અ સૌ લીલાવતી ધીરજલાલ મહેતા	
હે હા ધીરજલાલ ત્રીઠમલાલ મહેતા	૩૦૧
૯૬ શેઠ રાજમલજી ધામીલાલજી ઝોઠાગી ઝોશીચલવાળા	૨૫૧
૯૭ શેઠ ચુનીલાલ ભગવાનજી હે રતીલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧
૯૮ ભાગ્યવતી અરવીંદકુમાર હે અરવીંદકુમાર સહરાભાઈ ભાવસાર	૨૫૧
૯૯ અ સૌ ચચળબેન મનસુખલાલ	
હા મનસુખલાલ જેઠાલાલ રૂપેરા	૨૫૧
૧૦૦ સ્વ આસીબાઈ તથા વસતીમલજી ભોંભાજીના સ્મરણાર્થે	
હા શેઠ મીશ્રીમલજી દેવચંદજી એસવાલ કેરવાળા	૨૫૨
૧૦૧ સ્વ શેઠ કીશનમલજી માડોતના સ્મરણાર્થે	
હા શીરેમલજી કીશનમલજી મોજતવાલા	૨૫૧
૧૦૨ સ્વ શેઠ વકતારમલજીના સ્મરણાર્થે	
હા શેઠ ધીસાલાલજી મુકનરાજજી શીયારીયા (ભેધપુરવાલા)	૨૫૧
૧૦૩ શાહ મહાસુખલાલ ભાઈલાલ (સદાનદી પડિત મુનિશ્રી	
છોટાવાલજી મહારાજના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૧૦૪ અ સૌ ડાન્તાબેન કાળીદાસ હે કુમાર બુકબાઈન્ડીંગ વર્ક્સ	૨૫૧
૧૦૫ સ્વ હિંમતલાલ મગનલાલના સ્મરણાર્થે	
તેમના સુપુત્રો મેસર્સ દ્વારકાદામ એન્ડ બ્રધર્સ તરફથી	૩૫૧

૧૬૩ અ સૌ બેનગાંતાબેન ગોરધનદાસ (ચાદમુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૧૬૪ દોશી કુલચંદ સુખલાલભાઈ બોટાદવાળાના સ્મરણાર્થે	
હા દોશી છળીલદામ કુલચંદભાઈ	૨૫૧
૧૬૫ લાલાજી રામકુવરજી નેન	૨૫૧
૧૬૬ શેઠ છોટાલાલ ગુલાબચંદ પાલનપુરવાળા	૨૫૧
૬૭ શાહ ધીરજલાલ મોતીલાલ	૨૫૧
૧૬૮ સઘવી સુર્યકાન્ત ચુનીલાલના સ્મરણાર્થે	
હા સઘવી જીવણલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧
૧૬૯ ભાવસાર મોહનલાલ અમુલખરાય	૨૫૧
૧૭૦ મહેતા મુળચંદ મગનલાલ	૨૫૧
૧૭૧ વૈદ્ય નરસિંહદાસ સાકરચંદના ધર્મપત્ની રેવાબાઈના સ્મરણાર્થે	
હા હરીલાલ નરસિંહદાસ	૨૫૧
૧૭૨ શાહ કુલચંદભાઈ મુલચંદ હા હંસમુખભાઈ કુલચંદભાઈ	૨૫૧
૧૭૩ શેઠશ્રી મિશ્રીલાલજી જવાહીરલાલજી ખરડીયા	૨૫૧
૧૭૪ શાહ લલ્લુભાઈ મગનભાઈ ચુડાવાળા હ જશવતલાલ લલ્લુભાઈ	૨૦૧
૧૭૫ કુમારી પુષ્પાબેન હીરાલાલ (ચાદમુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૧૭૬ શાહ મણીલાલ ઠાકરશી હ કમળાબેન મણીલાલ લખતરવાળા	
(ચાદમુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૧૭૭ કુમારી નલીનીબેન જયતીલાલ	૨૫૧
૭૮ સ્વ ઉમેદરામ ત્રીભુવનદાસના ધર્મપત્ની કાશીબાઈના સ્મરણાર્થે	
હા શાંતિલાલ ઉમેદરામ (ચાદમુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૭૯ સ્વ ભાવસાર મોહનલાલ છગનલાલના ધર્મપત્ની દીવાળીબાઈના સ્મરણાર્થે	
હ રતીલાલ માણેકલાલ (ચાદમુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૮૦ મહેતા દેવીચંદજી ખુખચંદજી ધોકા ગઢસીયાણાવાળાના સ્મરણાર્થે	
હ મહેતા ચુનીલાલ હરમાનચંદ	૨૫૧
૧૮૧ ઘાસીલાલજી મોહનલાલજી કેઠારી કે લક્ષ્મી પુસ્તક ભંડાર	૨૫૧
૧૮૨ સ્વ શેઠ નાથાલાલ રતનાભાઈ મારફતીયાના સ્મરણાર્થે પુનાબેન	
તરફથી હ કરશનભાઈ (ચાદમુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૮૩ શાહ મણીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૮૪ ભાવસાર જયતીલાલ ભોગીલાલ	૨૫૧
૮૫ ભાવસાર રમણલાલ ભોગીલાલ	૨૫૧

અમલનેર

- ૧ શાહ નાગરદાસ વાઘજીભાઈ ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા ગાડાલાલ બીખાલાલ ૨૫૧

અજમેર

- ૧ શેઠ ભુરાલાલ મોહનલાલ ડુગરવાલ ૨૫૧

અલવર

- ૧ શ્રીમતી ચપાદેવી ઠે બુદ્ધામલજી રતનમલજી સચેતી ૨૫૧
૨ શેઠ ચાદમલજી મહાવીરપ્રભાદ પાલાવત ૨૫૧
૩ શ્રીયુત રૂપભદ્રમાર સુમતિભદ્રમાર નૈન ૨૫૧

આસનસોલ

- ૧ બાવીશી મણીલાલ ચત્રભુજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
મણીબાઈ તરફથી હા રસિકલાલ, અનિલકાત, તથા વિનોદરાય ૨૫૧

આટકોટ

- ૧ મહેતા ચુનીલાલ નારણજી ૩૪૬

આણંદ

- ૧ શેઠ રમણીકલાલ એ કપાસી હા મનમુખલાલભાઈ ૨૫૧

આકોલા

- ૧ શેઠ કચનલાલ રાઘવજી અજમેરા ઠે. મેસર્સ અજમેરા બ્રધર્સ એન્ડ
કા (પૂ સદાનદી મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી) ૨૫૧

ઈગતપુરી

- ૧ શેઠ પન્નાલાલ લખીચંદ નૈન ૨૫૧

ઈન્દોર

- ૧ અ સૌ બેન દયાબેન મોહનલાલ દેસાઈ જેતપુરવાળા
(અ સૌ બેન વિદ્યાબેનનાવધીતપ નિમિત્તે)
હા અરવિંદકુમાર તથા જીતેન્દ્રકુમાર ૨૫૧
૨ શ્રીયુત ભાઈલાલ છગનલાલ તુરખીયા ૨૫૧

ઉદયપુર

- ૧ શેઠ રણજીતલાલજી મોતીલાલજી હિંગડ ૨૫૧
૨ શ્રીમતી મોહિનીબાઈ ઠે રણજીતલાલજી મોતીલાલજી હિંગડ ૨૫૧

૧૦૬ અ સૌ કાન્તાબેનના સ્મરણાર્થે

હા ભાવસાર નાગચંદ્રામ હરજીવનદાસ ૨૫૧

૧૦૭ શ્રી ઉમેદચંદ ઠાકરશી કે યુ ટી ગોપાણી એન્ડ મન્સ ૩૫૧

૧૦૮ પૂ માતૃશ્રીના સ્મરણાર્થે હા ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ ૨૫૧

૧૦૯ શાહ શાતીલાલ મોહનલાલ ૨૫૧

૧૧૦ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર હા પ્રભુદાસ મહેતા ૨૫૧

૧૧૧ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર હા શાહ જુરાલાલ ટાળીદાસ ૨૫૧

૧૧૨ અ પિતાશ્રી મોતીલાલજીના સ્મરણાર્થે

હા મહેતા રણજીતલાલજી મોતીલાલજી ઉદેપુરવાળા ૨૫૧

૧૧૩ શેઠ પરસોતમદાસ અમરસીના ધર્મપત્ની સ્વ કુસુમબેનના
સ્મરણાર્થે તથા અ સૌ સવીતાબેનના માસખમણના નિમિત્તે

હા શેઠ સોમચંદ પરસોતમદાસ (પોર્ટ મુદાનવાળા) ૩૦૧

૧૧૪ શ્રીમાન જોશવરમલજી ધર્મચંદ્રજી ડુંગરવાલ

રાજજી કાકેરડાવાળા (મુનિશ્રી માગીલાલજીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

૧૧૫ ડૉ ધનજીભાઈ પરમોતમદાસ ૨૫૧

૧૧૬ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર - ૩૫૧

૧૧૭ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર ૩૫૧

૧૧૮ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર ૩૫૧

૧૧૯ શેઠ ગેરિલાલજી સુગનલાલજી ઉદેપુરવાળા ૨૫૧

૧૨૦ શેઠ કનૈયાલાલજી મુરારા પીપલોદાવાળા ૨૫૨

૧૨૧ કામદાર વાડીલાલ રતીલાલ (સાબરમતી) ૨૫૨

૧૨૨ કુમારી અપાબેન ભોગીલાલ ભાવસાર ૨૮૦

૧૨૩ કુમારી ઉષાબેન જયતીલાલ ભાવસાર ૨૫૧

૧૨૪ કુમારી અ દ્રાબેન જયતીલાલ ભાવસાર ૨૫૧

૧૨૫ કુમારી જયશ્રી રમણલાલ ભાવસાર ૨૫૧

૧૨૬ શાહ ડાહ્યાભાઈ અબાલાલ ૩૫૧

૧૨૭ બરડીયા ચાંદમલજી જવાહીરલાલજી ૨૫૧

૧૨૮ શ્રી વીજયદાન સુરેશ્વરજી જ્ઞાનમંદીર પૌષધશાળા - ૩૫૧

૧૨૯ શેઠ પાનાચંદ અપેચંદ સારંગપુર ઉપાશ્રય ટ્રસ્ટ

હા વડીલ બાબુભાઈ હીમતલાલ ૩૫૧

૨ શાહ જગજીવનદાસ પુરસોતમદાસ	૨૫૧
૩ શાહ ગોકળદાસ શામજી ઉદાણી	૨૫૧

કલકત્તા

૧ શ્રી કલકત્તા જૈન સ્થા (ગુજરાતી) સઘ	૨૫૧
--------------------------------------	-----

કલોલ

૧ શેઠ મોહનલાલ જોઠાભાઈના સ્મરણાર્થે	
હા શેઠ આત્મારામ મોહનલાલ	૨૫૧
૨ ડો મયાચદ મગનલાલ શેઠ હા ડો રતનચદ મયાચદ	૨૫૧
૩ સ્વ નાથાલાલ ઉમેદચદના સ્મરણાર્થે હા શાહ રતીલાલ નાથાલાલ	૨૫૧
૪ શેઠ મણીલાલ તલકચદના સ્મરણાર્થે	
હા મારક્ટીયા ચંદુલાલ મણીલાલ	૨૫૧
૫ સ્વ શ્રીચુત વાડીલાલ પરસોતમદાસના સ્મરણાર્થે	
હા ઘેલાભાઈ તથા આત્મારામભાઈ	૨૫૧
૬ શાહ નાગરદાસ કેશવલાલ	૨૫૧
૭ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ આત્મારામભાઈ મોહનલાલભાઈ	૨૫૧

કડી

૧ શ્રી સ્થા દરિયાપુરી જૈન સઘ	
હા ભાવસાર દામોદરદાસભાઈ ઇશ્વરલાલભાઈ	૨૫૧
૨ પાર્વતીબેન કે જેસીંગભાઈ ઇશ્વરલાલભાઈ	૨૫૧

કરજણુ

૧ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સઘ મીયાગામ કરજણુ	૨૫૧
--	-----

કઠોર

૧ સ્થા જૈન સઘ જેસીંગભાઈ પોચાલાલ તરફથી (માધવસિંહજી મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી)	
હા ઠાકોરભાઈ રાયચંદ્ર	૨૫૧

કત્રાસગઢ

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ દેવચંદ અમુલખભાઈ	૨૫૧
---	-----

કલ્યાણુ

૧ સઘવી ઠાકરશીભાઈ સઘજીના સ્મરણાર્થે	
હા શાહ હોમતવાલ હરખચંદ	૨૫૧

૭ અ સૌ બેન ચન્દ્રાવતી તે શ્રીમાન બહોતલાલજી નાહરનાં	
ધર્મપત્ની હા શેઠ રણજીતલાલજી મોતીલાલજી હિંગડરખા	
૪ શેઠ છગનલાલજી બાગેચા	૨૫૧
૫ શેઠ મગનલાલજી બાગેચા	૨૫૧
૬ સ્વ શેઠ કાળુલાલજી લોઢાના સ્મરણાર્થે	
હા શેઠ દોલતમિહજી લોઢા	૨૫૧
૭ સ્વ શેઠ પ્રતાપમલજી સાખલાના સ્મરણાર્થે	
હા પ્રાણુલાલ હીરાલાલ સાખલા	૨૫૧
૮ શેઠ ભીમરાજજી યાવચદજી બાફણા	૨૫૧
૯ શ્રીયુત સાહેબલાલજી મહેતા	૨૫૧
૧૦ શેઠ પન્નાલાલજી ગણેશલાલજી હીંગડ	૨૫૧
૧૧ શેઠ દીપચદજી પન્નાલાલજી લોઢા	૨૫૧
૧૨ શેઠ કસ્તુરચદજી નાફમલજી	૨૫૧
૧૩ શ્રી યુ એલ કોઠારી	૩૦૧
૧૪ બાબુ પરશુરામ છગનલાલજી શેઠ	૨૫૦
૧૫ શેઠ કનૈયાલાલ કાફલાલજી નૈન	૨૫૧
૧૬ શ્રી વર્ધમાન સ્થા નૈન શ્રાવક સઘ આમડ	૩૫૧

ઉપલેટા

૧ શેઠ જેઠાલાલ ગોરધનદાસ	૨૫૧
૨ સ્વ બેન સતોકબેન કચરા હા ઓતમચદભાઈ, છોટાલાલભાઈ	
તથા અમૃતલાલભાઈ પાલજી (કલ્યાણવાળા)	૨૫૧
૩ શેઠ ખુશાલચદ કાનજીભાઈ હા પ્રતાપભાઈ	૨૫૧
૪ દોરી વીઠ્ઠલજી હરખચદ	૨૫૧
૫ સઘાણી મુળશકર હરજીવનભાઈના સ્મરણાર્થે હા તેમના પુત્રો	
જયતીલાલ તથા રમણીકલાલ	૨૫૧

ઉમરગાવ રોડ

૧૭ શાહ મોહનલાલ પોપટલાલ પાનેલીવાળા	૨૫૧
-----------------------------------	-----

૩

એડન કેમ્પ

૧ મહેતા પ્રેમચદ માણેકચદના સ્મરણાર્થે	
હા રાયચદભાઈ, પોપટલાલભાઈ તથા રસીકલાલભાઈ	૨૫૧

ખાભાત

૧ શેઠ માણેકલાલ ભગવાનદાસ	૨૫૧
૨ શેઠ ત્રીભોવનદાસ મ ગળદાસ	૨૫૧
૩ શ્રી સ્થા નૈન સ ગ	૨૫૧
૪ શાહ ચંદુલાલ હરીલાલ	૨૫૧
૫ શાહ સાકળચંદ મોહનલાલ	૨૫૧
૬ શાહ શંકરાભાઈ દેવચંદ	૨૫૧
૭ શાહ સુખલાલ દોલતચંદ	૨૫૧
૮ ગાધી બાપુલાલ મોહનલાલ	૨૫૧
૯ બેન લલિતા માણેકલાલ	૨૫૧

મંધીધામ

૧ શાહ મોરારજી નાગજી એન્ડ કંપની	૨૫૧
--------------------------------	-----

ગુદાલા

૧ શાહ માલશી ઘેલાભાઈ	૨૫૧
---------------------	-----

ગુલાબપુરા

૧ શ્રી સ્થા નૈન વર્ધમાન સંઘ	
હ માગીલાલજી ઉકારમલજી ધનોપવાળા	૨૫૧
૨ શ્રી એસવાલ પચાયત હ ગુલાબચંદજી ચોરડીયા	૨૫૧

ગોંડલ

૧ સ્વ ભાખડા વચ્છરાજ તુલસીદાસના ધર્મપતિ કમલબાઈ	
તરફથી હા માણેકચંદભાઈ તથા 'કપુરચંદભાઈ'	૨૫૧
૨ પીપળીયા લીલાધર દામોદર તરફથી તેમના ધર્મપત્ની અ સૌ	
લીલાવતી આકરચંદ કોઠારીના બીજા વર્ષીતપત્ની ખુશાલીમા	૩૦૧
૩ કામદાર જુઠાલાલ કેશવજીના સ્મરણાર્થે હા	
હરીલાલ જુઠાલાલ કામદાર	૩૦૧
૪ સ્વ કોઠારી કૃપાશંકર માણેકચંદના સ્મરણાર્થે	
હા તેમના ધર્મપત્ની પ્રભાકુવરબેન	૨૫૧
૫ કોઠારી ગુલાબચંદ રાયચંદ રગુનવાળા	૨૫૧

કાનપુર

૧ શાહ રમણીકલાલ પ્રેમચંદ ૩૦૦

કુંદણી-(આટકોટ)

૧ કોશી રતીલાલ ટોકરશી ૨૫૧

કોલકી

૧ ચંદેલ ગોવિંદલાલ ભગવાનજી ૨૫૧

૨ ચંદેલ ખીમજી, જેઠાભાઈ વાઘાણી (તેમના સ્વ સુપુત્ર
રામજીભાઈના સ્મરણાર્થે) ૩૦૨

કમ્પાલા

૧ સ્વ શેઠ નાનચંદ મોતીચંદ ધાકાવાળાના સ્મરણાર્થે
હ તેમના સુપુત્ર જમનાદાસ નાનચંદ શેઠ ૨૫૧

૨, શ્રીમતી હીરાબેન, રતીલાલ નાનચંદ શેઠ ધાકાવાળા ૨૫૧

કુશાળગઢ

૧ શેઠ ચ પાલાલજી દેવચંદજી ૨૫૧

કોટહાપુર

૧ વકીલ મણીલાલ ખેગારભાઈ
હા હરીલાલભાઈ ૨૫૧

ખારાધોડા

૧ સ્વ પિતાશ્રી હરજીવનદાસ લાલચંદ શાહ તથા
સ્વ અ. સૌ બેન જમકુભાઈ તથા લીલાબાઈના
સ્મરણાર્થે હા નરસિંહદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧

૨ સ્વ શેઠ ઓઘડલાલ લક્ષ્મીચંદના સ્મરણાર્થે હા લાઈચંદ ઓઘડભાઈ ૨૫૧

ખીચન

૧ શેઠ કીસનલાલ પૃથ્વીરાજ માણ ૩૫૨

ખુરદારોડ

૧ શેઠ ગીરધારીલાલજી સીતારામજી ખેડપવાળા ૩૦૦

૨ શેઠ નરસિંહદાસ શાતિલાલજી ભોરલાવાળા
(મુનિશ્રી ચાહમલજીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

જામખભાળીયા

૧ શેઠ વસનજી નારણજી	૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જેન સઘ હા મહેતા રણછોડદાસ પરમાણુદ	૨૫૧
૩ સઘવી પ્રાણુલાલ લવજીભાઈ	૨૫૧

જામનગર

૧ શાહ છોટાલાલ કેશવજી	૨૫૧
૨ વોરા ચીમનલાલ દેવજીભાઈ	૨૫૧
૩ ડા સાહેબ પી પી શેઠ	૨૫૦
૪ શાહ રંગીલદાસ પોપટલાલ	૨૫૧

જુનારદેવ

૧ ઘેલાણી ત્રીકમજી લાધાભાઈ	૨૫૧
---------------------------	-----

જુનાગઢ

૧ શેઠ મણીલાલ મીઠાભાઈ હા હરીલાલભાઈ (હાટીના માળીયાવાળા)	૨૫૧
---	-----

જામજોધપુર

૧ શ્રી સ્થા જેન સઘ હા મહેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ	૩૮૭
૨ શાહ ત્રીભોવનદાસ ભગવાનજી પાનેલીવાળા	૨૫૧
૩ દોશી માણેકચંદ લવાન	૨૫૧
૪ પટેલ લાલજી જુઠાભાઈ	૨૫૧
૫ શેઠ બાવનજી જેઠાભાઈ	૨૫૧
૬ શેઠ વૃજલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧

જેતપુર

૧ કોઠારી ડાલરકુમાર વેણીલાલ	૨૫૧
૨ અ સૌ બેન સુરજકુવર વેણીલાલ કોઠારી	૨૫૧
૩ શેઠ અમૃતલાલ હીરજીભાઈ હા નરસેરામભાઈ (જસાપુરવાળા)	૨૫૧
૪ દોશી છોટાલાલ વનેચંદ	૨૫૧

જેતલસર

૧ શાહ લક્ષ્મીચંદ કપુરચંદ	૨૫૧
૨ કામદાર લીલાધર જીવરાજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની જળકબેન તરફથી હા શાંતિલાલભાઈ ગોડલવાળા	૨૫૧

૬ જસાણી રૂગનાથભાઈ નાનજી હા નીલાચુલભાઈ	૨૫૧
૭ માસ્તર હંકમીચંદ દીપચંદ શેઠ	૨૫૧

ગોદાયા

૧ સ્થા નૈન સઘ હા શાહ પ્રેમચંદ છોટાલાલ (શેઠ પોપટલાલભાઈ તરફથી)	૨૫૦
--	-----

ગોધરા

૧ શાહ ત્રીભોવનદાસ છગનલાલ	૩૦૧
૨ કવ પ્રેમચંદ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હા શાહ ચુનીલાલ પ્રેમચંદ	૩૦૧

ઘટકણ

૧ શાહ ચંદુલાલ કેશવલાલ	૨૫૧
-----------------------	-----

ઘોસવડ (થાણા)

૧ મહેતા ગુલાબચંદ ગલીરમલજી	૩૦૦
---------------------------	-----

ઘોડનદી

૧ શેઠ ચંદ્રલાલ શોભાચંદ ગાદીયા	૨૫૧
-------------------------------	-----

ચુડા

૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા રતીલાલ મગનલાલ ગાધી	૨૫૧
--	-----

ચોટીલા

૧ શાહ વનેચંદ જેઠાલાલ શ્રી સ્થા નૈન સઘને ભેટ	૩૦૧
---	-----

ચારભુજરોડ

૧ શેઠ માગીલાલજી હીરાચંદજી બાબેલ	૩૦૧
---------------------------------	-----

જમશેદપુર

૧ દોશી ઝવેરચંદ વલ્લભજી	૨૫૧
------------------------	-----

જલેસર (ખાલાસોર)

૧ સઘવી નાનચંદ પોપટભાઈ થાનગઢવાળા	૨૫૧
---------------------------------	-----

જયપુર

૧ શ્રીમાન શેઠ શીરેમલજી નવલખાના ધર્મપત્ની અ સૌ પ્રેમલતાદેવી	૨૫૧
--	-----

જસવતગઢ

શ્રીમાન મુન્દરલાલજી નેમીચંદતલેસર	૩૫૧
----------------------------------	-----

જામખભાળીયા

૧ શેઠ વસનજી નારણજી	૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા મહેતા રણછોડદાસ પરમાણુદ	૨૫૧
૩ સઘવી પ્રાણલાલ લવજીભાઈ	૨૫૧

જામનગર

૧ શાહ છોટાલાલ કેશવજી	૨૫૧
૨ વોરા ચીમનલાલ દેવજીભાઈ	૨૫૧
૩ ડા સાહેબ પી પી શેઠ	૨૫૦
૪ શાહ રંગીલદાસ પોપટલાલ	૨૫૧

જુનારદેવ

૧ ઘેલાણી ત્રીકમજી લાધાભાઈ	૨૫૧
---------------------------	-----

જુનાગઢ

૧ શેઠ મણીલાલ મીઠાભાઈ હા હરીલાલભાઈ (હાટીના માળીયાવાળા)	૨૫૧
---	-----

જામજોડપુર

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા મહેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ	૩૮૭
૨ શાહ ત્રીભોવનદાસ ભગવાનજી પાનેડીવાળા	૨૫૧
૩ દોશી માણેકચંદ ભવાન	૨૫૧
૪ પટેલ લાલજી જુઠાભાઈ	૨૫૧
૫ શેઠ ખાવનજી જેઠાભાઈ	૨૫૧
૬ શેઠ વૃજલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧

જેતપુર

૧ કોઠારી ડાલરકુમાર વેણીલાલ	૨૫૧
૨ અ સૌ જૈન સુરજકુવર વેણીલાલ કોઠારી	૨૫૧
૩ શેઠ અમૃતલાલ હીરજીભાઈ હા નરભૈરામભાઈ (જસાપુરવાળા)	૨૫૧
૪ દોશી છોટાલાલ વનેચંદ	૨૫૧

જેતલસર

૧ શાહ લક્ષ્મીચંદ કપુરચંદ	૨૫૧
૨ કામદાર લીલાધર જીવરાજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની જખકજેન તરફથી હા શાંતિલાલભાઈ ગોડલવાળા	૨૫૧

જોધપુર

૧ શેઠ નવરતમલલ ધનવતસિહલ	૨૫૦
૨ શેઠ હસ્તીમલલ મનરૂપમલલ સામસુખા	૨૫૧
૩ શેઠ પુખરાજલ પદમારાજલ લડારી	૨૫૧
૪ શેઠ વસ્તીમલલ આનંદમલલ સામસુખા	૨૫૧

જોરાવરનગર

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ ચંપકલાલ ધનજીભાઈ	૨૫૧
---	-----

ઝરીયા

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ ઠંઠેયાલાલ બી મોદી	૨૫૧
---	-----

ડોંડાયયા

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ	૨૫૦
--------------------	-----

ઢસા

૧ ઢસાગામ સ્થા જૈન સઘ હા એક સદ્ગૃહસ્થ તરફથી	૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા બગડિયા નરસેરામ જેઠાલાલ (ઢસા જ કશન)	૨૫૧

તાસગાંવ

૧ ૨૩ ચુનીલાલલ દુગડના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની ઢોહુભાઈ તરફથી હા શેઠ રામચંદલ	૩૫૧
---	-----

થાનગઢ

૧ શાહ ઠાકરશીભાઈ કરશનલ	૨૫૧
૨ શેઠ જેઠાલાલ ત્રીભોવનદાસ	૨૫૧
૩ શાહ ધારશીભાઈ પાશવીરભાઈ હા સુખલાલભાઈ	૨૫૧
૪ હસામેન અરવીંદ હા ભાઈ રવીચંદ માણેકચંદ	૩૦૧

દહાણુરોડ

૧ શાહ હરજીવનદાસ ઓઘડ બધાર (કરાચીવાળા)	૨૫૧
--	-----

દાહોદ

૧ શેઠ માણેકલાલભાઈ ખેગારલ	૨૫૧
--------------------------	-----

દીંદહી

૧ લાલાલ પૂણંચંદલ જૈન (સેન્દ્રલ બેકવાળા)	૩૫૧
---	-----

૨ શ્રીયુત કીશનચદણ મહેતાબચદણ ચોરડીયા	
-હા શ્રીમતી નગીનાદેવી તથા શ્રીયુત મહેતાબચદ નેન	૨૫૧
૩ અ સૌ સન્નખેન ઇદરમલણ પારેખ	૨૫૧
૪ લાલાણ મીઠનલાલણ નેન એન્ડ સન્સ	૩૦૧
૫ લાલાણ ગુલશનલાલણ નેન એન્ડ સન્સ	૩૦૧
૬ બેન વિજયાકુમારી નેન ઠે મહેતાબચદ નેન	
(વયોવૃદ્ધ સરલ સ્વભાવી કુલમતીણ મહાસતીણની ગ્રેરણાથી)	૨૫૧
૭ શ્રીમાન લાલાણ રતનચદણ નેન ઠે આઈ સી હોઝીયરી	૨૫૧
૮ સ્વ શ્રી લાલાશ્રીચદણ ડુગરીયાના સ્મરણાર્થે રાજસ્થાન ન્યાયાધિકારી	
હુકમચદણ નેનના સુપુત્ર જીતેન્દ્રકુમાર વકીલના સુપુત્ર અનિલકુમાર -	
તરફથી લેટ હા વિનયકુમારી	૩૫૧
૯ સ્વ લાલાણ ચપાલાલણ ચોરડીયાના સ્મરણાર્થે લાલચદણ	
તથા હીરાલાલણ તરફથી હા શાત દેવી	૩૫૧
૧૦ એક સદ્ગૃહસ્થ તરફથી હા મહેતાબચદણ નેન	૩૦૧
૧૧ એક સ્વધર્મી બધુ તરફથી હા વિજયાકુમારીબેન	૩૦૧
૧૨ બાબુ નિરજનસિંહણ નેન	૨૫૧

ધ્રાક્ષ

૧ શેઠ મણીલાલ જેચદભાઈ	૨૫૧
----------------------	-----

ધાર

૧ શેઠ સાગરમલણ પનાલાલણ	૨૫૧
-----------------------	-----

ધ્રાગધ્રા

૧ ભાવદીક્ષિત અ સૌ રૂપાળીબેન હિંમતવાલ સઘવીની તપશ્ચર્યાથે	
સઘવી ચીમનલાલ પુરમોતમદામ સઘવી તરફથી	૩૦૫
૨ સઘવી નરસિંહદામ વખતચદ	૩૦૧
૩ શ્રી સ્થા નેન મોટા સઘ હા મગળણ જીવગજ	૨૫૧
૪ ઠક્કર નારણદાસ હરગોવિંદદામ	૨૫૧
૫ કોઠારી કપુરચદ મગળણ	૨૫૧

ધોરાણ

૧ મહેતા પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ	૩૫૧
૨ અ સૌ બચીબેન બાબુભાઈ	૨૫૧

૪ ધી નવસીરાબ્દ્ર ઓઈલ મીલ પ્રા લીમીટેડ	૨૫૧
૪ સ્વ રાયચંદ પાનાચંદના સ્મરણાર્થે હા ચીમનલાલ રાયચંદ શાહ	૩૦૧
૫ ગાધી પોપટલાલ જેચંદભાઈ	૨૫૦
૬ દેસાઈ છગનલાલ ડાહ્યાભાઈ લાઠવાળાનાં ધર્મપત્ની દિવાળીબેન તરફથી હા કુમારી હસુમતી	૨૫૧
૭ એક સદ્ગૃહસ્થ હા મહેતા પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ	૨૫૧
૮ શેઠ દલપતરામ વસનજી મહેતા	૨૫૧
૯ સ્વ પિતાશ્રી ભગવાન કચરાભાઈના તથા ચિ હસાના સ્મરણાર્થે હા પટેલ દલીચંદ ભગવાનજી	૩૦૧
૧૦ મહેતા હેમચંદ કાળીદાસ જામખલાળીયાવાળા	૨૫૧

ધ ધુકા

૧ શેઠ પોપટલાલ ધારશીભાઈ	૨૫૧
૨ સ્વ શુભાખચંદભાઈના સ્મરણાર્થે હા વેરા પોપટલાલ નાનચંદ	૨૫૧
૩ શ્રી ચત્રભુજ વાઘજીભાઈ વસાણી	૨૫૧

ધુલીયા

૧ શ્રી અમોલ જૈન જ્ઞાનાલય હા શેઠ કનૈયાલાલ છાજેડ	૨૫૧
--	-----

નડીયાદ

૧ શાહ મોહનલાલ ભુરાભાઈ	૨૫૧
-----------------------	-----

નારાયણ ગામ

૧ શેઠ મોતીલાલજી હીરાચંદજી ચોરડીયા બોરીવાળા	૨૫૧
--	-----

નંદુરબાર

૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શેઠ પ્રેમચંદ ભગવાનલાલ	૨૫૧
--	-----

નાગોર

૧ શ્રીપાલભાઈ એન્ડ કુ સાગરમલજી લુકડ ડેરવાળા તરફથી	૨૫૧
--	-----

નાગપુર

૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સંઘ	૨૫૧
------------------------------------	-----

પાલનપુર

૧ લોકાગચ્છ સ્થા જૈન પુસ્તકાલય હા કેશવલાલ જી શાહ	૨૫૧
---	-----

પાણુસણા

૧ સ્થા જૈન સઘ હા શાહ છોટાલાલ પુનભાઈ ૨૫૧

પાલેજ

૧ સ્વ મનસુખલાલ મોહનલાલ સઘવીના સ્મરણાર્થે
હા લાઈ ધીરજલાલ મનસુખલાલ ૩૦૧

પ્રાંતીજ

૧ સ્થા જૈન સઘ હા શ્રીયુત અબાલાલ મહાસુખરામ ૨૫૦

પૂના

૧ શેઠ ઉત્તમચંદ્ર કેવળચંદ્ર ધોડા ૨૫૧

ફાલના

૧ મહેતા પુખરાજી હસ્તીમલજી સાદડીવાલા ૩૦૧
૨ મહેતા કુદનમલજી અમરચંદ્ર સાદડીવાલા ૨૫૧

બગસરા

૧ શેઠ પોપટલાલ રાઘવજી રાયડીવાળા
હા માનસઘ પ્રેમચંદ શાહ ૨૫૧
૨ સ્વ માતુશ્રી જબકબાઈના સ્મરણાર્થે
હા દેસાઈ વૃજલાલ કાળીદાસ ૨૫૧

બરવાળા-ધેલાશા

૧ સ્વ મોહનલાલ નરસિંહદાસના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્ની સુરજબેન મોરારજી ૨૫૧

બદનાવર

૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સઘ હા. મિશ્રીલાલ જૈન વકીલ ૨૫૧

બાલોતરા

૧ શાહ જેઠમલજી હસ્તીમલજી લગવાનદાસજી લણસારી ૨૫૧

બીદડા

૧ શાહ કાનજી શામજીભાઈ ૨૫૧

બીકાનેર

૧ શેઠ ભેરદાસજી શેઠીયા ૨૫૪

બેરાબ

૧ શેઠ ગાગજી કેશવજી (જ્ઞાનભટ્ટાર માટે) ૨૫૧

બેસારી

૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હ શેઠ હન્ટરીમવજી હન્ટીમલજી રાંકા ૨૫૧

બેરમો

૧ શ્રી બેરમો સ્થા નૈન સઘ હ મહેતા નવલચંદ હાકેમચંદ ૨૫૧

બેગસોર

૧ શેઠ કીશનલાલજી કુલચંદજી સાહેબ ૨૫૧

૨ અંજમેરા છોટાલાલ માનસિંગ ૩૫૧

બોટાદ

૧ સ્વ વસાણી હરગોવિંદદાસ છગનવાલના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્ની છબલબેન ૨૫૨

બોડેલી

૧ શાહ પ્રવીણચંદ્ર નરસિંહદાસ સાણુદવાળા ૨૫૧

૨ શાહ ગીરધરલાલ સાકરચંદ ૨૫૧

ભાણુવડ

૧ શેઠ નેચદલાઈ માણેકચંદલાઈ ૩૫૨

૨ સઘવી માણેકચંદ માધવજી ૨૫૧

૩ શેઠ લાલજી માણેકચંદ લાલપુરવાળા ૨૫૧

૪ શેઠ રામજી જીભાભાઈ ૨૫૧

૫ શેઠ પદમશી ભીમજી ફેફરીયા ૨૫૧

૬ ફેફરીયા ગાડાલાલ કાનજીભાઈ હા અ સૌ શાતાબેન વસનજી ૨૫૧

૭ સ્વ મહેતા પૂનમચંદ ભવાનના સ્મરણાર્થે હા તેમના

ધર્મપત્ની દિવાળીબેન લીલાધર (શુ)

ભાવનગર

૧ સ્વ કુવરજી બાવાભાઈના સ્મરણાર્થે હા શાહ લહેરચદ કુવરજી ૩૦૧

ભાદરણ

૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા પટેલ ધુલાભાઈ ઝવેરભાઈ ૨૫૧

ભીલવાડા

૧ શ્રી ગાતિ નૈન પુસ્તકાલય હા ચાદમલજી માનમલજી સઘવી ૨૫૧
૨ શેઠ ભીમરાજજી મીશ્રેલાલજી ૩૦૧

ભીમ

૧ ચપકલાલજી નૈન પુસ્તકાલય હા શેઠ ઇગામલજી માગીલાલજી ૨૫૧

ભુમાવળ

૧ શેઠ રાજમલજી નદલાલજી ચેરીટેબલિટ્રસ્ટ ૨૫૧

ભોજાગ

૧ શાન મદિરના સેક્રેટરી શાહ કુવરજી જીવરાજ ૨૫૧

મદ્રાસ

૧ શેઠ મેઘરાજજી દેનીચદજી મહેતા ૨૫૧
૨ મહેતા મણીલાલ ભાઈચદ ૨૫૧
૩ મહેતા સુરજમલ ભાઈચદ ૨૫૧
૪ મહેતા બાપાલાલ ભાઈચદ ૨૫૧

મનકેરા

૧ સ્થા છોકોડી સ્થા નૈન સઘ ૨૫૧

મનોર

૧ શાહ શેરમલજી દેનીચદજી જશવતગઢવાળા
હા પૂનમચદજી શેરમલજી બોલ્યા ૨૫૧

માનકુવા

૧ સ્વ મહેતા કુવરજી નાથાલાલના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની
કુવરબાઈ હરખચદ (માનકુવા સ્થા નૈન સઘ માટે) ૨૫૧

બીકાનેર

૧ શેઠ લેફ્ટનન્ટ શેઠીયા

૨૫૪

બેરાન

૧ શેઠ ગાગણ કેશવણ (જ્ઞાનલકાર માટે)

૨૫૧

બેસારી

૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હે શેઠ હબરીમવણ હસ્તીમલણ રાકા

૨૫૧

બેરમો

૧ શ્રી બેરમો સ્થા નૈન સઘ હે મહેતા નવલચંદ હાકેમચંદ

૨૫૧

બેગસોર

૧ શેઠ કીશનલાલણ કુલચંદણ સાહેબ

૨૫૧

૨ અંબેસા છોટાલાલ માનસિંગ

૩૫૧

બોટાદ

૧ ૨૧ વસાણી હરગોવિંદદાસ છગનલાલના સ્મરણાર્થે

હા તેમના ધર્મપત્ની છબલબેન

૨૫૧

બોડેલી

૧ શાહે પ્રવીણચંદ્ર નરસિંહદાસ સાણુ દવાળા

૨૫૧

૨ શાહે ગીરધરલાલ સાકરચંદ

૨૫૧

ભાણુવડ

૧ શેઠ જેયદલાઈ માણેકચંદલાઈ

૩૫૨

૨ સઘવી માણેકચંદ માધવણ

૨૫૧

૩ શેઠ લાલણ માણેકચંદ લાલપુરવાળા

૨૫૧

૪ શેઠ રામણ જીર્ણાલાઈ

૨૫૧

૫ શેઠ પદમશી લીમણ ફેફરીયા

૨૫૧

૬ ફેફરીયા ગાડાલાલ કાનજીભાઈ હા અ સૌ શાતાબેન વસનણ

૨૫૧

૭ ૨૧ મહેતા પૂનમચંદ લવાનના સ્મરણાર્થે હા તેમના

ધર્મપત્ની દિવાળીબેન લીલાધર (ગુદાવાળા)

ભાવનગર

૧ સ્વ કુવરજી બાવાભાઈના સ્મરણાર્થે હા શાહ લહેરચદ કુવરજી ૩૦૧

ભાદરણ

૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા પટેલ ધુલાભાઈ ઝવેરભાઈ ૨૫૧

ભીલવાડા

૧ શ્રી શાંતિ નૈન પુસ્તકાલય હા ચાદમલજી માનમલજી સઘવી ૨૫૧

૨ શેઠ ભીમરાજજી મીશ્રેલાલજી ૩૦૧

ભીમ

૧ ચપકલાલજી નૈન પુસ્તકાલય હા શેઠ ઇગામલજી માગીલાલજી ૨૫૧

ભુસાવળ

૧ શેઠ રાજમલજી નદલાલજી ચેરીટેબલિટી ૨૫૧

ભોજા

૧ જ્ઞાન મહિરના સેક્રેટરી શાહ કુવરજી જીવરાજ ૨૫૧

મદ્રાસ

૧ શેઠ મેઘરાજજી દેવીચદજી મહેતા ૨૫૧

૨ મહેતા મણીલાલ ભાઈચદ ૨૫૧

૩ મહેતા સુરજમલ ભાઈચદ ૨૫૧

૪ મહેતા જાપાલાલ ભાઈચદ ૨૫૧

મનફરા

૧ સ્થા છકોડી સ્વા નૈન સઘ ૨૫૧

મનોર

૧ શાહ શેરમલજી દેવીચદજી જશવતગઢવાળા
હા પૂનમચદજી શેરમલજી બોલ્યા ૨૫૧

માનકુવા

૧ સ્વ મહેતા કુવરજી નાથાલાલના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની
કુવરબાઈ હરખચદ (માનકુવા સ્થા. નૈન સઘ માટે) ૨૫૧

માંડવી

૧ શ્રી સ્થા છકોટી જૈન સઘ હા મહેતા ચુનીલાલ વેલજી ૨૭૭

માંડવા

૧ શ્રી માંડવા સ્થા જૈનન સઘ
હ અ સૌ કચનગૌરી રતીલાલ ગોસલીયા (ગઢડાવાળા) ૨૫૧

માલેગાંવ

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હ કૃતેલાલ માલુ જૈન ૨૫૧

માગરોલ

૧ શાહ ત્રીલોવનદાસ નાનજી ૨૫૦
૨ દોશી ગીરધરલાલ જેઠાલાલ ૨૫૦

મુખર્ચ તથા પરાઓ

૧ શાહ શ્રી પિતાશ્રી કુદનમલજી મોતીલાલજી મુથાના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ મોતીલાલજી જુબરમલજી (અહમદનગરવાળા) ૨૫૧
૨ વર્ધમાન સ્થા જૈન સઘ હ કામદાર રૂપચંદ શીવલાલ (અ ઘેરી) ૨૫૧
૩ અ સૌ કમળાબેન કામદાર હ કામદાર રૂપચંદ શીવલાલ (અ ઘેરી) ૨૫૧
૪ સ્વ માતુશ્રી કડવીબાઈના સ્મરણાર્થે હ તેમના પૌત્ર
હકમીચંદ તારાચંદ દોશી (અ ઘેરી) ૨૫૧
૫ શાહ હરજીવન કેશવજી ૨૫૧
૬ શાહ રમણીકલાલ કાળીદાસ તથા અ સૌ કાન્તાબેન રમણીકલાલ ૨૫૧
૭ સઘવી હિંમતલાલ હરજીવનદાસ ૨૫૧
૮ વોરા પાનાચંદ સઘજીના સ્મરણાર્થે
હ ત્રબકલાલ પાનાચંદ એન્ડ બ્રધર્સ ૨૫૧
૯ શાહ રામજી કરશનજી થાનગઢવાળા ૨૫૧
૧૦ સ્વ જટાશકર દેવજીમાઈ દોશીના સ્મરણાર્થે
હ રણુછોડદાસ (બાબુલાલ) જટાશકર દોશી ૩૦૧
૧૧ દેલાણી વલ્લજી નરભેરામ હ નરસીંહદાસ વલ્લજી ૨૫૧
૧૨ કપાસી મોહનલાલ શીવલાલ ૨૫૧
૧૩ ત્રીલોવનદાસ માનસિંગભાઈ દોઢીવાળાના સ્મરણાર્થે
હ શાહ હરખચંદ ત્રીલોવનદાસ ૨૫૧
૧૪ ખેતાણી મણીલાલ કેશવજી (વડિયાવાળા) ઘાટકોપર ૨૫૧

૧૫ સ્વ પિતાશ્રી શામળજી કલ્યાણજી ગોડલવાળાના સ્મરણાર્થે	
હા વૃજલાલ શામળજી બાવીસી	૩૦૧
૧૬ શાહ રવિચંદ્ર સુખલાલભાઈ (દાદર)	૩૫૧
૧૭ સ્વ આશારામ ગીરધરલાલના સ્મરણાર્થે હા શાંતિલાલ	
આશારામ વતી જશવતલાલ શાંતિલાલ	૨૫૧
૧૮ ગાંધી કાતીલાલ માણેકચંદ	૨૫૧
૧૯ શાહ રવજીભાઈ તથા ભાઈલાલભાઈની કુ (કાદીવલી)	૨૫૧
૨૦ અ સૌ લાહુજેન હા રવજીભાઈ શામળ	૨૫૧
૨૧ સ્વ માતુશ્રી માણેકબાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ વલભદાસ નાનજી	૩૦૧
૨૨ એક સદ્ગૃહસ્થ હા શેઠ સુદરલાલ માણેકલાલ	૨૫૧
૨૩ શેઠ ખુશાલભાઈ ખેગારભાઈ	૨૫૦
૨૪ શેઠ ચુનીલાલ નરભેરામ વેકરીવાળા	૨૫૧
૨૫ સ્વ માતુશ્રી ગોમતીબાઈના સ્મરણાર્થે હા શાહ પોપટલાલ પાનાચંદ	૨૫૧
૨૬ કોટેચા જયતીલાલ રણછોડદાસ સૌભાગ્યચંદ જુનાગઢવાળા	૨૫૧
૨૭ વેરા ઠાકરશી જસરાજ	૨૫૧
૨૮ કોઠારી સુખલાલજી પુનમચંદજી	(ખારરૌડ) ૨૫૧
૨૯ અ સૌ ઈન કુદનગૌરી મનહરલાલ સઘવી	” ૨૫૧
૩૦ કોઠારી રમણીકલાલ કેસ્તુરચંદભાઈ	૨૫૧
૩૧ દેશાઈ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે	
હા દલીચંદ અમૃતલાલ દેસાઈ	૨૫૧
૩૨ સ્વ ત્રીલોવનદાસ મજપાળ વીછીયાવાળાના સ્મરણાર્થે	
હા હરગોવિંદદાસ ત્રીલોવનદાસ અજમેરા	૨૫૧
૩૩ તેજાણી કુમેરદાસ પાનાચંદ	૨૫૧
૩૪ શેઠ સરદારમલજી દેવીચંદજી કાવેડીયા (સાદડીવાલા)	
૩૫ શેઠ નેમચંદ સ્વરૂપચંદ ખલાતવાળા હા ભાઈ જેઠાલાલ નેમચંદ	૨૫૧
૩૬ શાહ કોરશીભાઈ હીરજીભાઈ	૩૦૧
૩૭ દડિયા અમૃતલાલ મોતીચંદ	(ઘાટકોપર) ૨૫૧
૩૮ દોશી ચત્રભુજ સુદરજી	” ૪૦૧
૩૯ દોશી જુગલકિશોર ચત્રભુજ	” ૪૦૧

૪૦ દોશી પ્રવિણચંદ્ર ચત્રભુજ	(ઘાટકોપર) ૩૮૧
૪૧ શેઠ મનુભાઈ માણેકચંદ હા ઝાટકીયા નરભેરામ મોરરજી	૨૫૧
૪૨ શાહ કાતીલાલ મગનલાલ	૨૫૧
૪૩ શેઠ મણીલાલ ગુલાબચંદ	ઘાટકોપર ૨૫૧
૪૪ શેઠ છગનલાલ નાનજીભાઈ	૨૫૧
૪૫ શાહ શીવજી માણેકભાઈ	૨૫૧
૪૬ મેમસાં સવાણી દ્રાન્સપોર્ટ કુ હા શેઠ માણેકલાલ વાડીલાલ	૨૫૧
૪૭ શાહ નગીનદાસ કલ્યાણજી (વેરાવળવાળા)	૨૫૧
૪૮ મહેતા રતીલાલ ભાઈચંદ	૨૫૧
૪૯ શાહ પ્રેમજી હીરજી ગાલા	૨૫૧
૫૦ બેન ફેશરભાઈ ચંદુલાલ જેસીંગભાઈ શાહ	૨૫૧
૫૧ પારેખ ચીમનલાલ લાલચંદ માયલાવાળાના ધર્મપત્ની અ સૌ	
ચચળભાઈના સ્મરણાર્થે હા સારાભાઈ ચીમનલાલ	૨૫૧
૫૨ ધી મરીના મોડેન હાઈસ્કૂલ ટ્રસ્ટ ફડ હા શાહ મણીલાલ ઠાકરશી	૨૫૧
૫૩ મહેતા મોટર સ્ટોર્સ હા અનોપચંદ ડી મહેતા	૨૫૧
૫૪ શેઠ રસીકલાલ પ્રભાચંદ મોરખીવાળા તરફથી તેમના	
માતૃશ્રી મણીબેનના સ્મરણાર્થે	૩૦૧
૫૫ શ્રીયુત જસવંતલાલ ચુનીલાલ વોરા	૨૫૦
૫૬ શાહ કુવરજી હંસરાજ	૨૫૧
૫૭ દડીયા જેસીંગલાલ ત્રીકમજી	૨૫૧
૫૮ મોદી અભેચંદ મુરચંદ રાજકોટવાળા હા ડોસાવાલ અભેચંદ	૨૫૧
૫૯ શાહ જેઠાલાલ ડામરશી ધ્રાગધ્રાવાળા હા શાહ વાડીલાલ જેઠાલાલ	૨૫૦
૬૦ સ્વ પિતાશ્રી ભગવાનજી હીરાચંદ જસાણીના સ્મરણાર્થે	
હા લક્ષ્મીચંદભાઈ તથા કેચનલાલભાઈ	૩૫૧
૬૧ સ્વ પિતાશ્રી શાહ અબાલાલ પુરુષોત્તમદાસના સ્મરણાર્થે	
હા શાહ બાપાલાલ અબાલાલ	૨૫૧
૬૨ સ્વ કસ્તુરચંદ અમરશીના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની ઝવેરબેન	
મર્ગનવાલ વતી જયતીલાલ કસ્તુરચંદ મશ્કરીયા (ચુડાવાળા)	૨૫૧
૬૩ શેઠ ડુગરશી હંસરાજ વીસરીયા	૨૫૧
૬૪ શાહ રતનશી મોણુશીની કુ	૨૫૧
૬૫ શેઠ શીવલાલ ગુલાબચંદ મેવાવાળા	૨૫૧
૬૬ શાહ ચંદુલાલ ફેરાવલાલ	૨૫૧

૬૭	સ્વ પિતાશ્રી વીરચંદ જેસીંગ, શેઠ જખતરવાળાના સ્મરણાર્થે	
	હા કેશવલાલ વીરચંદ	૨૫૧
૬૮	ચંદુલાલ કાનજી મહેતા	૨૫૧
૬૯	શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન સંઘ	
	હા કેશરીમલજી અનોપચંદજી ગુગલીયા	(મલાડ) ૨૫૧
૭૦	સ્વ પિતાશ્રી પતુભાઈ મોનાભાઈના સ્મરણાર્થે	
	હા શાહ કાનજી પતુભાઈ	૨૫૧
૭૧	અ સૌ પનખાઈ હા શેઠ પદમરી નરસિંહભાઈ	૨૫૧
૭૨	સ્વ નાગશીભાઈ મેજપાલના સ્મરણાર્થે રોમજી નાગગી	૩૦૧
૭૩	સ્વ ગોડા વણારશી ત્રીભોવનદાસ ચરસેઠવાળાના સ્મરણાર્થે	
	હા જગજીવન વણારશી ગોડા	૨૫૧
૭૪	સ્વ કાનજી મુળજીના સ્મરણાર્થે તથા માતૃશ્રી દિવાળીભાઈના	
	૧૬ ઉપવાસના પારણા પ્રસંગે હા જયતિલાલ કાનજી	૨૫૧
૭૫	શાહ પ્રેમજી માલશી ગગ	૨૫૧
૭૬	શાહ વેલરી જેસીંગભાઈ છાસરાવાળા તરફથી તેમના ધર્મપત્ની	
	સ્વ નાનખાઈના સ્મરણાર્થે	૩૦૧
૭૭	સ્વ પિતાશ્રી રાયરી વેલરીના સ્મરણાર્થે	
	હા શાહ દામજી રાયગીભાઈ	૩૦૧
૭૮	શાહ વરજીભાઈ શીવજીભાઈ	૨૫૧
૭૯	શાહ ખીમજી મુળજી પુલ	૨૫૧
૮૦	અ સૌ સમતાએન શાતિલાલ હા શાતિલાલ ઉજમશી શાહ	૨૫૧
૮૧	સ્વ કેશવલાલ વછરાજ ડોઠારીના સ્મરણાર્થે સુરજએન તરફથી	
	હા તનસુખલાલભાઈ	૨૫૧
૮૨	સ્વ પિતાશ્રી હસરાજ હીરાના સ્મરણાર્થે	
	હા દેવશી હસરાજ જન્મજી ખીદડાવાળા	૨૫૧
૮૩	ઘેલાણી પ્રભુલાલ ત્રીકમજી	(જૈરીવલી) ૨૫૨
૮૪	શેઠ ત્રખડલાલ કસ્તુરચંદ લીમડી અજરામર રાસ્રલ ડારને ભેટ (માટુગા)	૨૫૧
૮૫	અ સૌ જેન રજનગૌરી કે શાહ ચંદુલાલ લક્ષ્મીચંદ	૨૫૧
૮૬	શાહ નટવરલાલ દીપચંદ તરફથી તેમના ધર્મપત્ની	
	અ સૌ સુગીલાએનના વર્ષોત્પત્તિ પુશાલીમા	૨૫૧
૮૭	દોશી બીખાલાલ વૃજલાલ પાળીયાદવાળા	૨૫૧
૮૮	શાહ ગોપાળજી માનસંગ	૨૫૧

૮૬ દોશી કુલચંદ માણેકચંદ	માટુંગા ૨૫૦
૮૭ શેઠ ચંપકલાલ ચુનીલાલ દાદભાવાળા	,, ૨૫૧
૮૯ શ્રી વર્ધમાન સ્થા નૈન શ્રાવક સંઘ	
હ શાહ રવિચંદ સુખલાલ	(દાદર) ૨૫૧
૯૨ શાતીલાલ ડુંગરશી અદાણી	,, ૨૫૧
૯૩ શાહ કરશન લઘુભાઈ	,, ૨૫૧
૯૪ કીસનલાલ સી મહેતા	(શીવ) ૨૫૧
૯૫ માતુશ્રી જીવીબાઈના સ્મરણાર્થે	
હ શામજી ગીવજી કચ્છ ગુઢાળાવાળા	(ગોરેગાવ) ૨૫૧
૯૬ સ્વ શાહ રાયશી કચરાભાઈના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની	
નેણુબાઈની વતી હ જેઠાલાલ રાયશી	સુંબઈ ૨૫૧
૯૭ સુશીલાબેન શકરાભાઈ કે નવીનચંદ્ર વસંતલાલ શાહ (વીલેપાલે)	૨૫૧
૯૮ બેન ચંદનબેન અમૃતલાલ વારિયા	૨૫૧,
૯૯ સ્વ કાળીદાસ જેઠાલાલ શાહના સ્મરણાર્થે	
હ સુમનલાલ કાળીદાસ (કાનપુરવાળા)	૩૦૧
૧૦૦ શાહ ત્રીભોવન ગોપાળજી તથા અ સૌ બેન કસુંબા	
ત્રીભોવન (થાનગઢવાળા)	(શીવ) ૨૫૧
૧૦૧ અ સૌ શાતાબેન (દીનુભાઈ ભોગીલાલના ધર્મપત્ની)	(દાદર) ૨૫૧
૧૦૨ ભાવસાર દીનુભાઈ ભોગીલાલ	,, ૨૫૧

મુળી

૧ શેઠ ઉજ્જમશી વીરપાળ હ શેઠ કેશવલાલ ઉજ્જમશી	૩૦૧
--	-----

મોરબી

૧ દોશી માણેકચંદ ચુંદરજી	૩૫૧
-------------------------	-----

મોખાસા

૧ ધીરુત નાથાલાલ ડી મહેતા	૨૫૧
૨ શાહ દેવરાજ પેથરાજ	૨૫૦

મહેસાણા

૧ શાહ પદ્મશી સુરચંદના સ્મરણાર્થે હ શીવલાલ પદ્મશી	૨૫૧
--	-----

યાદગીરી

૧ શેઠ બાદરમલજી સુરજમલજી-બે કર્સ ૨૫૦

રતનામ

૧ અનેક લક્ષ્મણનો તરફથી હે શ્રીમાન કેશરીમલજી હે
(શ્રી કેવળચંદ્ર મુનિશ્રીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

રાણપુર

૧ શ્રીમતી માતુશ્રી સમરતબાઈના સ્મરણાર્થે
હે ડો નરોત્તમદાસ ચુનીલાલ કાપડીયા ૨૫૧
૨ સ્વ પિતાશ્રી લહેરાભાઈ ખીમજીના સ્મરણાર્થે
હે શેઠ કાળીદાસ લહેરાભાઈ વસાણી ૩૦૧

રાણાવાસ

૧ શેઠ જ્વાનમલજી નેમીચંદજી હે બાબુ રીખજીચંદજી ૩૦૧

રાયચુર

૧ સ્વ માતુશ્રી મોઘીબાઈના સ્મરણાર્થે
હે શાહે શીવલાલ ગુલાબચંદ વઢવાણવાળા ૨૫૧
૨ કાળુરામજી ચાંદમલજી સ ચેતી ૨૫૧

રાજકોટ

૧ વાડીલાલ હાઈ ગ એન્ડ પ્રિન્ટીંગ વર્ક્સ ૪૦૦
૨ શેઠ રતીલાલ ન્યાલચંદ ચીતલીયા ૨૫૧
૩ શેઠ મનુભાઈ મુળચંદ (એન્જનીયર સાહેબ) ૨૫૧
૪ શેઠ શાંતિલાલ પ્રેમચંદ તેમના ધર્મપત્નીના વર્ષીતપ-પ્રસંગે ૨૫૧
૫ શેઠ પ્રજારામ વીઠ્ઠલજી ૨૫૧
૬ બેન સચુબાળા નૌતમલાલ જસાણી (વર્ષીતપની ખુશાલી) ૨૫૧
૭ મોદી સૌભાગ્યચંદ મોતીચંદ ૨૫૧
૮ બદાણી ભીમજી વેલજી તરફથી તેમના ધર્મપત્ની અ સૌ
સમરતબેનના વર્ષીતપ નિમિત્તે ૨૫૧
૯ દોશી મોતીચંદ ધારશીભાઈ ૨૫૧

૧૦ કામદાર ચંદુલાલ જીવરાજ (પ્રાગધાવાળા)	૨૫૦
૧૧ હેમાણી ઘેલાભાઈ સવચંદ	૨૫૧
૧૨ દક્ષતરી પ્રભુલાલ ન્યાલચંદ	૨૫૧
૧૩ સ્વ મહેતા દેવચંદ પુરુષોત્તમના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્ની હિમકુવરબાઈ તરફથી હ જયતીલાલ દેવચંદ મહેતા	૨૫૧
૧૪ પારેખ શીવલાલ જીઝાભાઈ મોખ્યાસારાળા હ અ સૌ કચનમેન	૨૫૨

રાપર

૧ પૂન્ય વાલજીભાઈ ન્યાલચંદભાઈ	૨૫૧
------------------------------	-----

રામપુરા

૧ શેઠ તેજમલજી મનોહરલાલજી બેકર	૩૫૧
-------------------------------	-----

રાવટી

૧ શેઠ મીયાચંદજી જુહરમલજી કટારિયા	૩૫૧
----------------------------------	-----

લખતર

૧ શાહ રાયચંદ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હ શાંતિલાલ રાયચંદ શાહ	૨૫૧
૨ ભાવસાર હરજીવનદાસના સ્મરણાર્થે હ ત્રીભોવનદાસ હરજીવનદાસ	૨૫૧
૩ શાહ તલકશી હીરાચંદના સ્મરણાર્થે હ ભાઈ અમૃતલાલ તલકશી	૨૫૧
૪ શાહ ચુનીલાલ માણેકચંદ	૨૫૧
૫ શાહ જદવજી ઓઘડભાઈના સ્મરણાર્થે હ શાંતિલાલ જદવજી	૨૫૧
૬ દોશી ઠાકરશી ગુલાબચંદના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની સમરતમેન તરફથી હ જયતીલાલ ઠાકરશી	૨૫૧

લાલપુર

૧ નેમચંદ સવજી મોદી હ ભાઈ મગનલાલ	૨૫૧
૨ શેઠ મુલચંદ પોપટલાલ તથા જોસીગભાઈ	૨૫૧

લાકડીયા

૧ શ્રી લાકડીયા સ્થા જેન સઘ હ શાહ રતનસી કરમજી	૨૫૧
--	-----

લીબડી (સૌરાષ્ટ્ર)

૧ શાહ ચકુભાઈ ગુલાબચંદ	૨૫૧
-----------------------	-----

લીબડી (પચમહાલ)

૧ શાહ કુવરજી ગુલાબચંદ	૨૫૧
૨ છાજેડ ધાસીરામ ગુલાબચંદ	૨૫૧
૩ શેઠ વીરચંદ પન્નાલાલજી કરણાવટ	૨૫૧
૪ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હ શાહ શાતિલાલ ગુલાબચંદ	૩૫૧

લોનાવાલા

૧ શેઠ ધનરાજજી મુલચંદજી મુથા	૨૫૧
-----------------------------	-----

લુધીયાના

૧ બાબુ રાજેન્દ્રકુમાર નૈન દીલ્હીવાળા	૨૫૧
--------------------------------------	-----

વઢવાણ શહેર

૧ શેઠ દીલીપકુમાર સવાઈલાલ ઠે શાહ સવાઈલાલ ત્રબકલાલ	૨૫૧
૨ કામદાર મગનલાલ ગોકલદાસ હ રતીલાલ મગનલાલ	૨૫૧
૩ સઘવી મુળચંદ બેચરભાઈ હ જીવણલાલ ગફલદાસ	૨૫૧
૪ શેઠ કાતિલાલ નાગરદાસ	૨૫૧
૫ વોરા ચત્રભુજ મગનલાલ	૨૫૧
૬ સઘવી શીવલાલ હીમજીભાઈ	૨૫૧
૭ શાહ દેવશીભાઈ દેવકરજી	૨૫૧
૮ વોરા ડોસાભાઈ લાલચંદ સ્થા નૈન સઘ	૨૫૧
હ વોરા નાનચંદ શીવલાલ	૨૫૧
૯ વોરા ધનજીભાઈ લાલચંદ સ્થા નૈન સઘ	
હા વોરા પાનાચંદ ગોખરદાસ	૨૫૧
૧૦ દોશી વીરચંદ સુરચંદ હા દોશી નાનચંદ ઉજમશી	૨૫૧
૧૧ સ્વ વોરા મણીલાલ મગનલાલ હ વોરા ચત્રભુજ મગનલાલ	૨૫૧
૧૨ શાહ વાડીલાલ દેવજીભાઈ	૨૫૧
૧૩ કામદાર ગોવિંદનદાસ મગનલાલના ધર્મપત્ની	
અ સૌ કમળાબેન રશુનવાલા	૨૫૧
૧૪ શ્રી વૃજલાલ સુખલાલ	૨૫૧

વડોદરા

૧ કામદાર કેશવલાલ હિમતરામ પ્રોફેસર	૨૫૧
-----------------------------------	-----

- ૨ વક્રીલ મણીલાલ કેશવલાલ શાહ ૨૫૧
૩ સ્વ પિતાશ્રી ફકીરચંદ્ર પુન્યાભાઈના સ્મરણાર્થે
હા શાહ રમણલાલ ફકીરચંદ્ર ૨૫૧

વડિયા

- ૧ શેઠ લવાનભાઈ કાળાભાઈ પચમીયા ૨૫૧
વલસાડ

- ૧ શાહ ખીમચંદ્ર મુલજીભાઈ ૨૫૧
વણી

- ૧ મહેતા નાનાલાલ છગનલાલના ધર્મપત્ની સ્વ ચચાબેન
તથા પુરીબેનના સ્મરણાર્થે હા મનહરલાલ નાનાલાલ મહેતા ૨૫૧

વટામણુ

- ૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા પટેલ ડાહ્યાભાઈ હંબુભાઈ ૨૫૧

વડગાવ

- ૧ શેઠ માણેકચંદ્ર રાજમલજી બાફળુ ૨૫૧

વાકાનેર

- ૧ ખ ઢેરીયા કાતીલાલ ત્રબકલાલ ૨૫૧
૨ દફતરી ચુનીલાલ પોપટલાલ મોરખીવાળા
હા પ્રાણુલાલ ચુનીલાલ દફતરી ૨૫૧

વીછીયા

- ૧ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા અજમેરા રાયચંદ્ર ત્રજપાળ ૨૫૧

વીરમગામ

- ૧ માસ્તર વીઠલભાઈ મોદી ૨૫૧
૨ શાહ નાગરદાસ માણેકચંદ્ર ૨૫૧
૩ શાહ મણીલાલ જીવણુલાલ શાહપુરવાળા ૨૫૧
૪ શાહ અમુલખ નાગરદાસના ધર્મપત્ની અ સૌ બેન લીલાવતીના
વર્ષિતપ નિમિત્તે હા શાહ કાતિલાલ નાગરદાસ ૩૦૦
૫ સ્વ શેઠ ઉજમશી નાનચંદના સ્મરણાર્થે
હા ચુનીલાલ નાનચંદ

૬ સ્વ શેઠ મણીલાલ લક્ષ્મીચંદ આગઘોડાવાળાના સ્મરણાર્થે તેમના પુત્રો તરફથી હે ખીમચંદલાઈ	૨૫૧
૭ સ્વ શેઠ હરિલાલ પ્રભુદામના સ્મરણાર્થે હે અનુલાઈ	૨૫૧
૮ સઘવી જેચંદલાઈ નારણદામ	૨૫૧
૯ સ્વ શાહ વેલગીલાઈ માકરચંદ કત્રાસગઢવાળાના સ્મરણાર્થે હે ચીમનલાલભાઈ	૨૫૧
૧૦ પારેખ મણીલાલ ટોકરશી લાતીવાળા (મોડીબેનના સ્મરણાર્થે)	૨૫૧
૧૧ શાહ નારણદામ નાનજીભાઈના પુત્ર વાડીલાલભાઈના ધર્મપત્ની અ સૌ નારગીબેનના વર્ણિતપ નિમિત્તે હે શાતિલાલ નારણદાસ	૨૫૧
૧૨ સ્વ છબીલદાસ ગોકળદાસના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની કમળાબેન તરફથી હે મલુલાકુમારી	૨૫૧
૧૩ શ્રી સ્થા જૈન શ્રાવિકા મઘ હે રમાબેન વાડીલાલ હે ડો હિમતલાલ સુખલાલ	૨૫૧
૧૪ શાહ મુળચંદ કાનજીભાઈ હે શાહ નાગરદાસ ઓઘડલાઈ	૨૫૧
૧૬ શેઠ મોહનલાલ પિતાબદાસ હે ભાઈ કેશવલાલ તથા મનસુખલાલ	૨૫૧
૧૭ શ્રીમતી હીરાબેન નથુભાઈના વર્ણિતપ નિમિત્તે હે નથુભાઈ નાનચંદ શાહ	૩૦૧
૧૮ શેઠ મણીલાલ શીવલાલ	૨૫૧
૧૯ સ્વ મણીયાર પરસોતમદાસ સુદરજીના સ્મરણાર્થે હે સાકરચંદ પરસોતમદાસ શાહ	૨૫૧
૨૦ સ્વ મોહનદાસ ધુલાભાઈના સ્મરણાર્થે હે તેમના ધર્મપત્ની નાથીબાઈ તરફથી હે શકરલાલ તથા શાતિલાલ	૨૫૧

વિજયનગર

૧ શ્રી વર્ધમાન શ્રવે સ્થા જૈન શ્રાવક સઘ હે છોટુમલ અજીતસિંહ	૨૫૧
---	-----

વેરાવળ

૧ શાહ કેશવલાલ જેચંદલાઈ	૨૫૧
૨ શાહ ખીમચંદ સૌભાગ્યચંદ	૨૫૧
૩ સ્વ શેઠ મદનજી જેચંદલાઈના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની લાડકુવરબાઈ તરફથી હે ધીરજલાલ મદનજી	૨૫૧

૪ શ્રી સ્થા નૈન સંઘ હા શાહ શોભેચદ કરશનજી	૨૫૧
૫ શાહ હરકિશનદાસ કુલચદ કાનપુરવાળા	૨૫૧

સરા

૧ શ્રી સરા સ્થા નૈન સંઘ હા દોશી પાનાચદ સોમચદ	૨૫૧
--	-----

સાણુદ

૧ શાહ હીરાચદ છગનલાલ હા શાહ ચીમનલાલ હીરાચદ	૩૦૧
૨ અ સૌ. ચંપબેન હા દોશી જીવેરાજ લાલચદ	૨૫૧
૩ પટેલ મહાસુખલાલ ડોસાભાઈ	૨૫૧
૪ શાહ સાકરચદ કાનજીભાઈ	૨૫૧
૫ પુરીબેન ચીમનલાલ કંદ્યાણજી સઘવી લીંબડીવાળાના સ્મરણાર્થે	
હા વાડીલાલ મોહનલાલ ઠાઠારી	૨૫૧
૬ પારેખ નેમચદ મોતીચદ મુળીવાળાના સ્મરણાર્થે	
હા પારેખ ભીખાલાલ નેમચદ	૨૫૧
૭ સઘવી નારણદાસ ધરમશીના સ્મરણાર્થે હા જયતીલાલ નારણદાસ	૨૫૧
૮ શાહ કેતુરચદ હા હરજીવનદાસ	૨૫૧
૯ શેઠ મોહનલાલ માણેકચદ ગાધી ચુડાવાળા તરફથી	
તેમના ધર્મપત્ની મધાબેન લલ્લુભાઈના સ્મરણાર્થે	૩૦૧
૧૦ સઘવી ઝાન્તીલાલ હરખચદ	૩૦૧
૧૧ શાહ ભીખાલાલ નાગરદાસ	૨૫૧

સાલખની

૧ દોશી ચુનીલાલ કુલચદ	૨૫૦
----------------------	-----

સાદડી

૧ શેઠ દેવરાજજી જીતમલજી પુનમીયા	૨૫૧
--------------------------------	-----

સાસવડ

૧ ચંદનમલજી મુથાના ધર્મપત્ની અ સૌ રણુભાઈ મુથા તરફથી	
હા અમરચંદજી મુથા	૨૫૧

સિંગાપુર

૧ દોશી વનેચદ વછરાજ ૨૫૧

સુરત

૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા શાહ રતિલાલ લલ્લુભાઈ ૨૫૧
 ૨ શ્રી કલ્યાણચદ માણેકચદ હડાલાવાળા ૨૫૧
 ૩ શ્રી હરીપુરા છોકોટી સ્થા નૈન સઘ હા ખાણુલાલ છોટાલાલ ૨૫૧

સુરેન્દ્રનગર

૧ શેઠ આપશીભાઈ સુખલાલ ૨૫૧
 ૨ ભાવસાર ચુનીલાલ પ્રેમચદ ૨૫૧
 ૩ સ્વ કેશવલાલ મુળજીભાઈના ધર્મપત્ની અમરતભાઈના સ્મરણાર્થે
 હા ભાઈલાલ કેશવલાલ શાહ ૨૫૧
 ૪ શાહ ન્યાલચદ હરખચદ ૨૫૧
 ૫ શાહ વાડીલાલ હરખચદ ૨૫૧
 ૬ શ્રી સ્થા નૈન સઘ ૩૦૧

સુવર્ધ

૧ સાવળા શામજી હીરજી તરફથી સદાનદી નૈન મુનિશ્રી છોટાલાલજી
 મહારાજના ઉપદેશથી સુવર્ધ સ્થા નૈન સઘ જ્ઞાન બહારને ભેટ ૨૫૧

સેવાલીયા

૧ માસ્તર જેઠાલાલ મોનજીભાઈ
 હા એન્જનીયર સાહેબ અમૃતલાલ જેઠાલાલ ૨૫૧
 સ જેલી
 ૧ શાહ હુણાજી ગુલાબચદભાઈ ૨૫૧
 ૨ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા શાહ પ્રેમચદ દલીચદ ૨૫૧

સોજત

૧ અ. સૌ. ધીસાબેન લાલચદ મહેતા (રતેહનગર સઘને ભેટ) ૩૫૧

હાગીજ

૧ શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ હા પ્રકાશચંદ્ર અમુલખભાઈ ૩૦૧
 ૨ સ્વ બેન ચંદ્રકાતાના સ્મરણાર્થે હા શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ ૩૦૧

૪ શ્રી સ્થા નૈન સંઘ હા શાહ શોભેચદ કરશનજી	૨૫૧
૫ શાહ હરકિરાનદાસ કુલચદ કાનપુરવાળા	૨૫૧

સરા

૧ શ્રી સરા સ્થા નૈન સંઘ હા દોશી પાનાચદ સોમચદ	૨૫૧
--	-----

સાણુદ

૧ શાહ હીરાચદ છગનેલાલ હા શાહ ચીમનલાલ હીરાચદ	૩૦૧
૨ એ સૌ ચાપબેન હા દોશી જીવેરાજ લાલચદ	૨૫૧
૩ પટેલ મહામુખલાલ ડોસાભાઈ	૨૫૧
૪ શાહ સાકરચદ કાનજીભાઈ	૨૫૧
૫ પુરીબેન ચીમનલાલ કલ્યાણજી સંઘવી લીંબડીવાળાના સ્મરણાર્થે	
હા વાડીલાલ મોહનલાલ ઠોઠારી	૨૫૧
૬ પારેખ નેમચદ મોતીચદ મુળીવાળાના સ્મરણાર્થે	
હા પારેખ ભીખાલાલ નેમચદ	૨૫૧
૭ સંઘવી નારણદાસ ધરમસીના સ્મરણાર્થે હા જયતીલાલ નારણદાસ	૨૫૧
૮ શાહ કસ્તુરચદ હા હરજીવનદાસ	૨૫૧
૯ શેઠ મોહનલાલ માણેકચદ ગાધી ચુડાવાળા તરફથી	
તેમના ધર્મપત્ની મધાબેન લલુભાઈના સ્મરણાર્થે	૩૦૧
૧૦ સંઘવી કાન્તીલાલ હરખચદ	૩૦૧
૧૧ શાહ ભીખાલાલ નાગરદાસ	૨૫૧

સાલખની

૧ દોશી ચુનીલાલ કુલચદ	૨૫૦
----------------------	-----

સાદડી

૧ શેઠ દેવરાજજી જીતમલજી પુનમીયા	૨૫૧
--------------------------------	-----

સાસવડ

૧ ચંદનમલજી મુથાના ધર્મપત્ની અ સૌ રગુભાઈ મુથા તરફથી	
હા અમરચંદજી મુથા	૨૫૧

સિંગાપુર

૧ દોશી વનેચદ વછરાજ

૨૫૧

મુરત

૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા ગાહ રતિલાલ લલ્લુભાઈ

૨૫૧

૨ શ્રી કલ્યાણચદ માણેચદ હડાલાવાળા

૨૫૧

૩ શ્રી હરીપુરા છકોટી મ્થા નૈન સઘ હા - ખાણુલાલ છોટાલાલ

૨૫૧

મુરેન્દ્રનગર

૧ શેઠ ચાપશીભાઈ સુખલાલ

૨૫૧

૨ ભાવસાર ચુનીલાલ પ્રેમચદ

૨૫૧

૩ સ્વ કેશવલાલ મુળજીભાઈના ધર્મપત્ની અમરતભાઈના સ્મરણાર્થે
હા ભાઈલાલ કેશવલાલ શાહ

૨૫૧

૪ શાહ ન્યાલચદ હરખચદ

૨૫૧

૫ શાહ વાડીલાલ હરખચદ

૨૫૧

૬ શ્રી સ્થા નૈન સઘ

૩૦૧

સુવર્ધ

૧ સાવળા શામજી હીરજી તરફથી સદાનદી નૈન મુનિશ્રી છોટાલાલજી

મહારાજના ઉપદેશથી સુવર્ધ સ્થા નૈન સઘ જ્ઞાન બહારને લેટ ૨૫૧

સેવાલીયા

૧ માસ્તર જેઠાલાલ મોનજીભાઈ

હા એન્જનીયર સાહેબ અમૃતલાલ જેઠાલાલ

૨૫૧

સજેલી

૧ શાહ લુણાજી ગુલાબચદભાઈ

૨૫૧

૨ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા શાહ પ્રેમચદ દલીચદ

૨૫૧

સોજત

૧ અ. સૌ. ધીસાળેન લાલચદ મહેતા (કુતેહનગર-સઘને લેટ)

૩૫૧

હારીજ

૧ શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ હા પ્રકાશચંદ્ર અમુલખભાઈ

૩૦૧

૨ સ્વ બેન ચંદ્રકાતાના સ્મરણાર્થે હા શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ

૩૦૧

હાટીના માળીવા

૧. શેઠ ગોપાલજી મીઠાભાઈ

૨૪૦

૨. શ્રીમતી આનંદગૌરી ભગવાનદાસના સ્મરણાર્થે

હા. તેમના નાનાળેન અ સૌ મજુલાળેન ભગવાનદાસ

૨૪૧

*

તા. ૧-૧-૬૨ થી તા. ૧૫-૩-૬૩ સુધીનાં નવા મેમ્બરો

આદ્ય મુરબીશ્રી

૩. ૫૦૦૧ શેઠ મહેતાભયદ જૈન

દિલ્હી

મુરબીશ્રી

૩. ૧૦૦૧ શેઠ ત્રીલોચનદાસ જગજીવનદાસ

મુંબઈ

,, ૧૦૦૧ શેઠ મહેતાભયદ ચોરડીયા તથા

વિજયાકુમારી બહેન

દિલ્હી

તા. ૧૫-૩-૬૩ સુધીનાં મેમ્બરોની સંખ્યા

૨૪ આદ્ય મુરબીશ્રી

૩૦ મુરબીશ્રી

૧૩૨ સહાયક મેમ્બરો

૫૮૪ લાઇફ મેમ્બરો

૫૧ બીજા કક્ષાસના જુના મેમ્બરો

૮૨૧

સમિતી વતી સૌ દાતાઓનો આભાર માનુ છું

હી સેવક,

રાજકોટ તા. ૧૫-૩-૬૩

સાકરેચ દ ભાઈચ દ શેઠ

મ. વી.

શ્રી અખિલ ભારત શ્વે. સ્થા. જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સંમિતી

રાજકોટ

શાસ્ત્રોની ટૂંકી માહિતી.

ગયા સત્તરમા વાર્ષિક રિપોર્ટમાં બતાવેલ ૨૧ શાસ્ત્રો પ્રસિદ્ધ થયાં પછી નીચે મુજબ વધુ કામકાજ થયેલ છે

- ૧ હાલમાં ભગવતી ભાગ બીજો, સમવાયગ સૂત્ર તથા પ્રશ્ન વ્યાકરણ એમ ત્રણ સૂત્રો પ્રસિદ્ધ થયા છે
- ૨ ભગવતી ભાગ ૩ નો બહાર પડવાની તૈયારીમાં છે
- ૩ ભગવતી ભાગ ૪ થો તથા ૫ મો હાલમાં છપાય છે
- ૪ જ્ઞાતા સૂત્ર ભાગ ૧ લો, ૨ નો તથા ૩ નો છપાય છે
- ૫ કુલ્લે લગભગ ૩૦ સૂત્રો પૂજ્ય ગુરુદેવે લખીને પૂરા કરેલા છે તેમાં છપાયા વગરના જે સૂત્રો બાકી છે તેનું અનુવાદનું તેમજ સુશોધનનું કેટલુંક કામ ચાલુ છે અને કેટલુંક બાકી છે
- ૬ નિશીય સૂત્ર, સૂર્ય પન્નતી તથા ચંદ્ર પન્નતી સૂત્ર એ બાકી રહેલા ત્રણ સૂત્રો લખવાનું કામ અત્યારે ચાલે છે
આવા આગમ શાસ્ત્રોના મહદ્ કાર્યમાં જ્ઞાનદાનના શોખીનો, દાનવીરો બનતી મદદ મોકલાવે તેમ વિનંતિ કરવામાં આવે છે

હાટીના માળીવા

૧, શેઠ ગોપાલજી મીઠાભાઈ	૨૫૦
૨ શ્રીમતી આનંદગૌરી ભગવાનદાસના સ્મરણાર્થે	
હા તેમના નાનાબેન અ સૌ મજુલાબેન ભગવાનદાસ	૨૫૧

*

તા. ૧-૧-૬૨ થી તા. ૧૫-૩-૬૩ સુધીનાં નવા મેમ્બરો

આઘ મુરખખીશ્રી

૩. ૫૦૦૧ શેઠ મહેતાબચંદ જૈન	દિલ્હી
---------------------------	--------

મુરખખીશ્રી

૩. ૧૦૦૧ શેઠ ત્રીલોચનદાસ જગજીવનદાસ	મુંબઈ
,, ૧૦૦૧ શેઠ મહેતાબચંદ ચોરડીયા તથા વિજયાકુમારી બહેન	દિલ્હી

તા. ૧૫-૩-૬૩ સુધીનાં મેમ્બરોની સંખ્યા

૨૪	આઘ મુરખખીશ્રી
૩૦	મુરખખીશ્રી
૧૩૨	સહાયક મેમ્બરો
૫૮૪	લાઈફ મેમ્બરો
૫૧	ખીજા કલાસના જુના મેમ્બરો
<u>૮૨૧</u>	

સમિતી વતી સૌ દાતાઓનો આભાર માનું છું

લી સેવક,

રાજકોટ તા. ૧૫-૩-૬૩

સાકરચંદ લાઈચંદ શેઠ
મંત્રી

શ્રીગીતરાગાય નમઃ

જૈનાચાર્ય-જૈનધર્મદિવાકર-પ્રજ્વશ્રી-વામીલાલ-ત્રિ-વિરચિતયા

અનગારધર્માનુવર્તિગ્યારયયા વ્યાખ્યયા સમલઙ્કૃત

શ્રી-જ્ઞાતાધર્મકથાજ્ઞસૂત્રમ્

(દ્વિતીયો ભાગ.)

॥ અથ શૈલકારુય પશ્ચમાધ્યયનમ્ ॥

અભિઠિત કર્મકારુય ચતુર્યમધ્યયન તત્રાગુપ્તેન્દ્રિયસ્ય નરકાદિપ્રાપ્તિ ગુપ્તેન્દ્રિયસ્ય તુ નિર્વાણાદિ પ્રાપ્તિર્ભવતીત્યુક્તમ્ । इह पश्चमाध्ययने तु-पूर्वमप्रतिसली नेन्द्रियोऽपि यः पश्चात् सत्रीनेन्द्रियो भवति स आराधको भवतीत्युच्यते, इत्येव पूर्वण सहास्य सम्बन्धः । जम्बूस्वामी सुधर्मस्वामिन पृच्छति-‘जइ ण भते !’ इ०

પાંચવો અધ્યયન પ્રારમ્ભ ।

કર્મક (કચ્છપ) નામકા ચતુર્ય અધ્યયન કહ દિયા ગયા હૈ । ઉસ મેં અગુપ્તેન્દ્રિયવાલે માધુ સાધ્વી આદિ કે નરકાદિ કી પ્રાપ્તિ તથા ગુપ્તેન્દ્રિયવાલે સાધુ સા વી આદિ કે લિયે નિર્વાણ આદિ કી પ્રાપ્તિ હોતી હૈ યહ કહા ગયા હૈ । અવ ઇસ પંચમ અધ્યયન મેં યહ કહા જાયગા કી જો પહિલે અપ્રતિસલીન ઇન્દ્રિયવાલા (અગુપ્તેન્દ્રિય) હોતા હૈ ઓર વાદ મેં ફિર નહી સલીન ઇન્દ્રિયવાલા (ગુપ્તેન્દ્રિયવાલા) બન જાતા હૈ તો વહ આરાધક હોતા હૈ ઇસ તરહ પૂર્વ અધ્યયન કે સાથ ઇસકા સંબંધ હૈ । જમ્બૂ સ્વામી સુધર્મા સ્વામી સે પૂછતે હૈ કિ—

—પાંચમુ અધ્યયન—પ્રાગ્ ભ.—

કર્મક (કાચખો) નામે ચોથુ અધ્યયન પુરુ થઈ ગયુ છે, તે અધ્યયનમા અગુપ્તેન્દ્રિયવાળા સાધુ માધ્વી વગેરે ને નરક વગેરેની પ્રાપ્તિ તેમજ ગુપ્તેન્દ્રિય વાળા માધુ સાધ્વીઓને નિર્વાણ વગેરેની પ્રાપ્તિ થાય છે આ વત કહેવામા આવો છે પાંચમા અધ્યયન મા એ વાત ન્પષ્ટ કરવામા આવશે કે જે પહેલા અપ્રતિ સલીન ઇન્દ્રિયવાળો (અગુપ્તેન્દ્રિય) હોય છે, અને ત્યારબાદ તે સલીન ઇન્દ્રિય વાળો (ગુપ્તેન્દ્રિયવાળો) થઈ જાય છે ત્યારે તે આરાધક હોવા છે આ ગીતે ચોથા અધ્યયનનો સંબંધ છે જમ્બૂ સ્વામી, સુધર્મા સ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે-‘જયાણ ભતે ! ઇત્યાદિ ॥

સમિતિને મદદ કરવા તથા મેમ્બર થવાના

નિયમો



- ૧ રૂા ૫૦૦૧૫ પાચ હજાર ઁક ભરનાર સદ્ગૃહસ્થ આદ્યમુરખીશ્રી તરીકે દાખલ થઈ શકે છે તેમના નામથી ઁક સૂત્ર પ્રસિદ્ધ કરવામા આવે છે તેમજ તેઓશ્રીનુ જીવનચરિત્ર અને ફોટો શાસ્ત્રમા છપાય છે તેમને બળે કોપી દરેક શાસ્ત્રની મળે છે
- ૨ રૂા ૧૦૦૧૫ ઁક હજાર ઁક ભરનાર વ્યક્તિ મુરખી તરીકે ગણાય છે અત્યારે ફક્ત ૮૦ આવા મેમ્બરો દાખલ કરવાનો ગઈ કમીટીએ ઠરાવ કરેલ છે, પાછળથી મેમ્બરો દાખલ કરી શકાય તેમ નથી રૂા ૧૦૦૧૫ ભરનારને રૂા ૧૨૦૦૫ ની કિંમત ઉપરના શાસ્ત્રો ભેટ મળે છે માટે જેમને દાખલ થવુ હોય તેમણે ઢીલ ન કરવી
- ૩ ૨૫૫૫ વાળા તથા ૫૦૧૫ વાળા મેમ્બરો હવે લેવાનું બધ છે
- ૪ દાખલ થયેલા મેમ્બરોની ફીમાથી, શાસ્ત્રો ભેટ આપતા સમિતિને જે નુકશાની વેઠવી પડે છે તે ખાધ પૂરી કરવા માટે મેમ્બરો પાસેથી તેમજ અન્ય વ્યક્તિ તરફથી પાચ વર્ષ સુધી ભેટની રકમ મેળવવામા આવે છે જે રકમ ઓછામા ઓછી રૂા ૨૫૫ ની હોવી જોઈએ, અને તે રકમ પાચ વર્ષ સુધી દર વર્ષે હપ્તાથી મોકલી શકાય છે

समये 'वारवई' द्वारावतीनाम द्वारकाऽपरनाम्नी नगर्यासीत्, सा कीदृशी
इत्याह—'पार्श्वपदीणायया' प्राची प्रतीच्यायता प्राचीतः प्रतोच्यामायता पूर्वस्या
दिशः समारभ्य पश्चिमाया दिशि दीर्घेत्यर्थः । 'उदीणदाहिणवित्थिन्ना' उदगं
दक्षिणविस्तीर्णा उत्तरस्या दिशः समारभ्य दक्षिणस्यां दिशि विस्तीर्णा, 'नवजो-
यणवित्थिन्ना' नवयोजनविस्तोर्णा, 'दुवालसजोयणायामा' द्वादशयोजना-
यामा=द्वादशयोजनदीर्घा, 'धणवडमइनिम्मिया' धनपतिमतिनिर्मिता धनपतिः=
कुवेरस्तस्य मत्या=बुद्ध्या निर्मिता, 'चामीयर-पवर-पागार-णाणामणि-पचवन्न
-कवि-सीसग-सोहिया' चामीकरप्रवरप्राकारनानामणिपञ्चवर्णकपिशीर्षक
शोभिता, चामीकरस्य प्रवर' प्राकारस्तस्य यानि नानामणिपञ्चवर्णकपिशीर्षकानि तैः
शोभिता, सुवर्णमयप्रकृष्टप्राकारस्य यानि चन्द्रकान्तादिविविधमणिमयानि पञ्च-
वर्णानि कपिशीर्षकाणि 'रगुरा' इति भाषाप्रसिद्धानि, तैः शोभिता 'अलयापुरि-

है—(तेण कालेण तेण समण्ण वारवईनाम नगरी होत्था) उस समय
और उस काल में द्वारावती नामकी नगरी थी (पार्श्व परीणायया)
यह नगरी पूर्व दिशासे पश्चिम दिशा तक लगी थी और (उदीणदाहिण
वित्थिन्ना) उत्तरदिशा से लेकर दक्षिण दिशा तक विस्तर्ण थी)
(नवजोयणवित्थिन्ना) नौ योजन का इसका विस्तार था (दुवालसजोय-
णायामा) १२ बारह योजन की यह लगी थी । (धणवडमइ निम्मिया)
धनपति— कुवेर ने इसे अपनी बुद्धि से बनाया था (चामीयर पवर
पागारणाणामणि पचवन्न कविसीसग सोहिया) इसका जो प्राकार (दिवा-
र) था वह सुवर्ण से निर्मित हुआ था । तथा हमके जो कगूरे थे वे
पचवर्णवाले नाना मणियों से बनाये गये थे । अतः प्राकार और उसके
कगूरों से यह नगरी बड़ी सुहावनी लगती थी । (अलयापुरी सकासा)

छे, (तेण कालेण तेण समण्ण वारवई नाम नगरी होत्था) ते काले अने ते
समये द्वारावती नामे नगरी छती (पार्श्व परीणायया) आ नगरी पूर्वथी
भाडीने पश्चिम दिशा सुधी लाणी अने (उदीण दाहिण वित्थिन्ना) उत्तर दिशाथी
भाडीने दक्षिण दिशा सुधी पडोणी छती (नव जोयणवित्थिन्ना) नव योजन
सुधी ते नगरीने विस्तार छते । (दुवालसजोयणायामा) बार योजन लगी ते
लाणी छती (धणवडमइनिम्मिया) धनपति—कुवेरे आ नगरी ने पोतानी बुद्धिथी
बनावी छती (चामीयरपवरपागार - णाणामणि - पचवन्नकविसीसगसोहिया) ते
शहरने डोट (नागर) सेनाथी बनाववाभा आवेले छते तेना कागराओ
पाय रगना अनेक मणियो वडे बनाववाभा आव्या छते डोट अने काग
राओथी ते नगरी गोसनी छती (अलयापुरी सकासा) अलयापुरी (कुवेरनगरी)

મૂલમ્—જહ્ ણં ભંતે । સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં ચ-
ઉત્થસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પન્નત્તે, પંચમસ્સ ણં ભંતે
ણાયજ્ઞયણસ્સ કે અદ્દે પણ્ણત્તે ? ॥ સૂ. ૧ ॥

ટીકા—‘ જહ્ ણ ’ इत्यादि । यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महा-
वीरेण चतुर्थस्य ज्ञाता ययनस्य अयम्=उत्तरूप, अर्थ प्रज्ञप्त, पञ्चमस्य खलु
भदन्त ! ज्ञाताध्ययनस्य कोऽर्थ प्रज्ञप्तः इति । सर्वं सुगमम् ॥ १ ॥

શ્રી સુધર્મા સ્વામી જમ્બૂસ્વામિનમાહ—

મૂલમ્ એવં खलु जहू । तेणं कालेणं तेण समयेणं बारवई
नाम नयरी होत्था, पाईणपडीणायया उद्दीणदाहिणविस्थिन्ना
नेवजोयणविस्थिन्ना दुवालसजोयणायामा धणवइमइनिम्मिया
धामीयरपवरपागारणाणामणिपचवन्नकविसीसगसोहिया अलया-
पुरिसकासा पमुइयपक्कीलिया पच्चक्ख देवलोयभूया ॥सू. २॥

ટીકા—‘ એવં खलु ’ इत्यादि । ‘ एव खलु जम्बू । तस्मिन् काले तस्मिन्

‘ જહ્ ણ ભંતે ! ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(જહ્ ણ ભંતે !) हे भदन्त ! यदि (समणेण भगवया महा-
वीरेण) श्रमण भगवान महावीर ने (चउत्थस्स णायज्झयणस्स अयमद्वे
पन्नत्ते) चतुर्थ ज्ञाताध्ययन का यह उक्त रूप अर्थ प्रज्ञप्त (प्ररूपित)
किया है तो—(पचमस्स ण भंते ! णायज्झयणस्स के अद्वे पण्णत्ते)
पचम ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? “ १ ”

‘ એવં खलु जहू ! ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(એવં खलु जहू) हे जम्बू ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार

ટીકાર્થ—(જહ્ ણ ભંતે !) हे भदन्त ! ने (समणेण भगवया महावीरेण)
श्रमणभगवान महावीरे (चउत्थस्स णायज्झयणस्स अयमद्वे पन्नत्ते) यथाज्ञाता-
ध्ययनो पूर्वोक्त अर्थ निरूपित कयो છે, ત્યારે (પચમસ્સ ણ ભંતે ! ણાયજ્ઞ-
યણસ્સ કે અદ્દે પણ્ણત્તે) પાચમા અધ્યયનનો શો અર્થ બતાવ્યો છે ? “ સૂ. ૧ ” ॥

એવં खलु जहू, ? इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—(એવં खलु जहू !) हे जम्बू ! तमारा प्रश्नो जवाब आप्रमाणे

कीदृश इत्याह—तुङ्गः=अत्युन्नतः, 'गगणतलमणुलिहतसिहरे' गगनतलमणुलिह-
च्छिखरः आकाशप्रदेशमनुस्पृशति शृङ्ग यस्येत्यर्थ 'णाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लि-
परिगण' नानाविधगुच्छगुल्मलतागल्लीपरिगत =नानाविधागुच्छादयः परिगताः=
सर्वतः समुद्भूता यत्र सः, गुच्छगुल्मलतागल्लीशब्दाः पूर्वं व्याख्याता, 'हसमि-
गमयूरकोचसारसचक्रवायमयणसालकोइलकुलोववेण' हसमृगमयूरकोचसारस-
चक्रवाकमदनसालकोइलकुलोपपेत हसादि-कोयिलान्ताना कुलैः वृन्दैः उपपेतः
=युक्तः । अत्र-मदनशालः=सारिकाविशेष, अन्ये प्रसिद्धाः । 'अणेगतडकडग-
विवरउज्झरयपवायपवभारसिहरपउरे' अनेकतटमटक विवरोज्झरप्रपातप्राग्भार-
शिखरप्रचुरः, अनेके तटाः कटकामेखलाश्च यत्र स तथा, विवराणि = कन्दराश्च,
उज्झरकाः=निर्झराः पर्वतात् पतनशीला जलप्रवाहाश्च, प्रपाताः=तटरहितनिराधार-
स्थानानि च, अथवा प्रपाताः=गर्ताश्च, प्राग्भाराः=ईपदवनताः पर्वतभागाश्च, शि-

पौरस्त्य दिग्विभाग में-ईशान कोण में-रैवतक नाम का एक पर्वत था
(तुगे गगणतलमणुलिहतसिहरे) यह बहुत ऊँचा था । इस की चोटी
आकाश तल को छूती थी (णाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिपरिगण)
नाना प्रकार के गुच्छों से, गुल्मों से लताओं से और वल्लियों से यह
सर्व प्रकार से युक्त था । इन गुच्छादि शब्दों का अर्थ पहिले लिखा जा
चुका है । (हसमिगमयूरकोचमारसचक्रवायमयणसालकोइल कुलो-
ववेण) हस, मृग, मयूर, क्रौंच, सारस, चक्रवाक सारिका—मेना
और कोयल इन के समूहों से यह उपेत—युक्त था । (अणेग तडक
डगविवरउज्झरयपवायपवभारसिहरपउरे) अनेक तटों से अनेक कट-
कों (मेखला) से, अनेक कंदराओं से, अनेक उज्झरकों से, निर्झरनों
से—पर्वतों से गिरते हुए जल प्रवाहों से, अनेक प्रपातों से—तटरहित
निराधारस्थानों से अथवा गर्तों से कुठ कुठ झुके हुए अनेक पर्वत

के ईशान कोणमा रैवतक नामे पर्वत छते । (तुगे गगणतलमणुलिहतसिहरे)
ते गडुण्ड छेते । तेना शिखरे आकाशने स्पर्शता छते । (णाणाविहगुच्छ
गुम्मलयावल्लिपरिगण) अनेक लतना गुच्छे, गुम्मे, लताओ । अने वल्लीओ
थी ते ढकाओले छते । गुच्छ वगेरे गण्डोना अर्थो पडैला स्पष्ट करवामा
आव्या ७ (हसमिगमयूरकोचसारसचक्रवायमयणसालकोइलकुलोववेण) हस,
डरणा, मोर, क्रौंच, सारस, चक्रवाक मेना अने कोयलोना समूहोथी ते युक्त
छते । (अणेगतडकडगविवरउज्झरयपवायपवभारसिहरपउरे) अनेक तटो मेखला
ओ । (कटको) अनेक कंदराओ, अनेक उज्झरको—(अश्रुओ) पर्वतो उपरथी
नीचे वडैला पाणीना प्रवाडो, अनेक प्रपातो—तट वगरना निराधार स्थानो ।

सकासा ' अलकापुरीसकाशा = कुबेरनगरीपदशी ' पमुइयपक्कीलिया ' प्रमुदित-
प्रक्रीडिता ' पमुइय ' प्रमुदिताः=प्रमोदयुक्ताः, ' पक्कीलिया ' प्रक्रीडिताः विविध
क्रीडनपराः लोका यत्र सा, पच्चक्ख देवल्लोयभूया ' प्रत्यक्ष देवल्लोकभूता प्रत्यक्षी-
भूतदेवल्लोकवत् प्रतीयमानेत्यर्थ ॥ २ ॥

मूलम्—तीसे णं वारवईए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे
दिसीभाए रेवतगे नाम पव्वए होत्था, तुंगे गगणतलमणुलि-
हंतसिहरे णाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिपरिगए हसमिगमयूर-
कोंचसारसचक्रवायमयणसालकोइलकुलोवव्वेए अणेगतडकडग-
वियरउज्झरयपवायपव्वभारसिहरपउरे अच्छरगणदेवसंघचारण-
विज्जाहरमिहुणसविचिन्ने निच्छच्चणए दसारवरवीरतेल्लोकवल-
वगाणं, सोमे सुभगे पियदसणे सुरुवे पासार्इए ॥ सू०३॥

टीका—' तीसे ण ' इत्यादि । तस्या खलु द्वारावत्या नगर्या बहिरुत्तर-
पौरस्त्ये दिग्भागे ' रेवतगे ' रैवतको नाम ' पव्वए ' पर्वतः ' होत्था ' आसीत्, स
अलकापुरी (कुबेर की नगरी जैसी सुन्दर होती है ठीक वैसी ही यह
भी सुन्दर थी (पमुइयपक्कीलिया) इस में निवास करनेवाले जन सदा
हर्षित रहते थे और विविध प्रकार की क्रीडाओं में तत्पर रहते थे
(पच्चक्ख देवल्लोयभूया) इसलिये प्रत्यक्ष में यह नगरी देवल्लोक के
समान प्रतीत होती थी । सूत्र " २ "

‘ तीसेण वारवईए ’ इत्यादि

टीकार्थ—(तीसेण वारवईए नयरीए वहिया) उस द्वारावती नगरी के
बाहिर (उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए रेवतगे नाम पव्वए होत्था) उत्तर

जेवी सुद्ध डाय छे तेवी न ते नगरी पण सुद्ध डती (पमुइयपक्कीलिया)
तेमा रडेनारा नागरिके डमेशा प्रसन्न रडेता डता, अने जत जतनी रभते
(क्रीडाओ) मा वस्तु रडेता डता (पच्चक्ख देवल्लोयभूया) तेथी आ नगरी
प्रत्यक्ष देवल्लोक जेवी लागती डती ॥ सूत्र " २ " ॥

‘ तीसे ण वारवईए ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तीसे ण वारवईए नयरीए वहिया) ते द्वारावती नगरीनी अडार
(उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए रेवतगनामपव्वए होत्था) उत्तर पूर्व दिशाभा ओम्मे

कीदृश इत्याह—तुङ्गः=अत्युन्नतः, 'गगणतलमणुलिहतसिहरे' गगणतलमणुलिह-
च्छिखरः आकाशपदेशमनुस्पृशति शृङ्ग यस्येत्यर्थ 'णाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लि-
परिगण' नानाविधगुच्छगुल्मलतागल्लीपरिगत =नानाविधागुच्छादयः परिगताः=
सर्वतः समुद्भूता यत्र सः, गुच्छगुल्मलतागल्लीशब्दाः पूर्वं व्याख्याता, 'हसमि-
गमयूरकोचसारसचक्रवायमयणसालकोइलकुलोववेण' हसमृगमयूरकोचसारस-
चक्रवाकमदनसालकोइलकुलोपपेत हसादि-कोविलान्ताना कुलैः वृन्दैः उपपेतः
=युक्तः । अत्र-मदनशालः=सारिकाविशेष, अन्ये प्रसिद्धाः । 'अणेगतटकडग-
विवरउज्झरयपवायपम्भारसिहरपउरे' अनेकतटकटक विवरोज्झरप्रपातप्राग्भार-
शिखरप्रचुरः, अनेके तटाः कटकामेखलाश्च यत्र स तथा, विवराणि = कन्दराश्च,
उज्झरकाः=निर्झराः पर्वतात् पतनशीला जलप्रवाहाश्च, प्रपाताः=तटरहितनिराधार-
स्थानानि च, अथवा प्रपाताः=गर्ताश्च, प्राग्भाराः=ईषदवनताः पर्वतभागाश्च, शि-

पौरस्त्य दिग्बिभाग में-ईशान कोण में-रैवतक नाम का एक पर्वत था
(तुगे गगणतलमणुलिहतसिहरे) यह बहुत ऊँचा था । इस की चोटी
आकाश तल को छूती थी (णाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिपरिगण)
नाना प्रकार के गुच्छों से, गुल्मों से लताओं से और वल्लियों से यह
सर्व प्रकार से युक्त था । इन गुच्छादि शब्दों का अर्थ पहिले लिखा जा
चुका है । (हसमिगमयूरकोचमारसचक्रवायमयणसालकोइल कुलो-
ववेण) हस, मृग, मयूर, क्रौंच, सारस, चक्रवाक सारिका—मेना
और कोयल इन के समूहों से यह उपेत—युक्त था । (अणेग तडक
डगविवरउज्झरयपवायपम्भारसिहरपउरे) अनेक तटों से अनेक कट-
को (मेखला) से, अनेक कदराओं से, अनेक उज्झरको से, निर्झरनों
से—पर्वतों से गिरते हुए जल प्रवाहों से, अनेक प्रपातों से—तटरहित
निराधारस्थानों से अथवा गर्तों से कुछ कुछ झुके हुए अनेक पर्वत

के ईशान कोणमा रैवतक नामे पर्वत छते । (तुगे गगणतलमणुलिहतसिहरे)
ते अत्युन्नत छथे छते । तेना शिखरे आकाशने स्पर्शता छते । (णाणाविहगुच्छ
गुम्मलयावल्लिपरिगण) अनेक लतना गुच्छे, गुल्मे, लताओ अने वल्लीओ
थी ते ढकाओले छते । गुच्छ वगेरे गुच्छेना अर्थो पडेलो स्पष्ट करवाभा
आओ छे । (हसमिगमयूरकोचसारसचक्रवायमयणसालकोइलकुलोववेण) हस,
मृग, मयूर, क्रौंच, सारस, चक्रवाक मेना अने कोयलोना समूहोथी ते युक्त
छते । (अणेगतडकडगविवरउज्झरयपवायपम्भारसिहरपउरे) अनेक तटो मेखला
ओ (कटको) अनेक कदराओ, अनेक उज्झरको—(अरणाओ) पर्वतो उपरथी
नीचे वडेलो पाणीना प्रवाडो, अनेक प्रपातो—तट वगरना निराधार स्थानो

वराणि=शृङ्गाणि पर्वतोपरितनप्रदेशाश्च, प्रचुराणि=अधिकानि यत्र स तथा, तर्त^१
 र्मधारयः । ' अच्छर-गण-देव संघ-चारण-विज्जाहर मिहुण-संविचिन्ने '
 अप्सरोगण-देवसघ-चारण-विद्याधरमिगुन-सविचीर्ण'-अप्सरसा गणाश्च, देवस^२
 गाश्च, चारणा^३ गगनगमनलब्धिमन्तो मुनिविशेषा^४, विद्याधराणा मिगुनानि च तैः^५
 सविचीर्णः=आसेवित , ' निच्चच्छणएदसारवरवीरपुरिसतेल्लोकवल्लवगाण ' नित्य^६
 क्षणकः- दशार्हवरवीरपुरुषत्रैलोक्यवल्लवता, दशार्हाः=समुद्रविजयादयः दश, तेषु^७
 मध्ये वरास्त एव वीरा धीरपुरुषा^८ ते चामी-त्रैलोक्यादपि वल्वन्त, अतुलवल्ल-
 नेमिनाथ युक्तत्वात् तेषा - नित्यक्षणकः=नित्योत्सवस्थानम्, तेषा सर्वे उत्सवा^९
 स्तत्र भवन्तीति भावः । दशदशार्हाणां नामानि यथा-

“ समुद्रविजयो^१ अखोभो^२ थिमिओ^३ सांगरो^४ हिमरो^५ ।

अयलो^६ धरणो^७ पूरणो^८ अभिचरो^९ वसुदेवो^{१०}ति ” ॥१॥ इति ॥

भागों से तथा अनेक शिखरों से यह प्रचुर था अर्थात् ये तट, कटक
 आदि इस में अधिक थे । (अच्छरगणदेवसघचारणविज्जाहरमिहु-
 णसविचिन्ने) अप्सराओ के गणों से, देवसघों से गगन में गमन
 करने की लब्धि युक्त मुनि विशेषों से, और विद्याधरों के मिथुनों से
 यह सदा सेवित रहता था । (निच्चच्छणएदसारवरवीरपुरिसते-
 ल्लोकवल्लवगाण) समुद्र विजयादिक दश दशार्हों के बीच में उत्तम
 धीरवीर पुरुषों का जो की अतुल बलधारी नेमिनाथ से युक्त होने के
 कारण तीन लोक से भी बलवान थे यह नित्योत्सव का स्थान था ।
 उन के समस्त उत्सव यही होते रहते थे । दश दशार्हों के नाम इस
 प्रकार है— १, समुद्र विजय २, अक्षोभ ३, स्तिमित ४, सागर

अथवा गर्तो, थोडा आगणना लागथी नभता अनेक पवत लागो तेमज धणु
 शिखरोथी ते प्रचुरइथी युक्त हुतो ओटले के तट, कटक वगेरे ते पर्वतमा
 पुङ्कण प्रमाणुमा हुता (अच्छरगणदेवसघचारणविज्जाहरमिहुणसविचिन्ने) अप्स-
 राओना गणुथी, देवसघोथी गगन भागो गमन करता मुनि विशेषोथी,
 अने विद्याधरोना युगलोथी ते परत सदा सेवित रहेनो हुतो (निच्चच्छणए
 दसारवरवीरपुरिसतेल्लोकवल्लवगाण) समुद्र विजय वगेरे दश दशार्होमां
 उत्तम धीर वीर पुरुषोनो-के ओओ अतुल गणशाणी नेमिनाथथी युक्त होवाने
 कारणे त्रलो लोकथी गणवान हुता-आ नित्योत्सव भाटेनु स्थान हुतु तेमना
 अधा उत्सवो अही न थता हुता दश दशार्होना नामो आ प्रमाणु छे-१
 - समुद्रविजय, २ अक्षोभ ३ स्तिमित, ४ सागर, ५ हिमवान, ६ अथल,

पुनरसौ पर्वतः ? कीदृश ? इत्याह—‘सोम्मे’ सौम्यः=मनोहरः, सुभगः=आनन्दजनकः प्रियदर्शनः=दृष्टिमुखद, सुरूपः=शोभनाकृतिकः, प्रासादीयः=अत्र-प्रासादीय इत्यनन्तरदर्शनीयः, अभिरूपः, प्रतिरूप इति त्रयाणां पदानां समग्रः प्रासादीयः=दर्शकजनमनोमोदजनकः, दर्शनीयः=नयनानन्दजनकत्वेन पुनः पुनः प्रेक्षणीयः अभिरूपः=सुन्दराकृतिकः । यद्वा-अभि=प्रतिक्षणं नव नवमिवरूप यस्य सोऽभिरूपः । प्रतिरूपः-प्रतिविशिष्टम् असाधारणरूप यस्य स प्रतिरूपः, उत्कृष्टरूपवानित्यर्थः ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तस्स णं रेवयगस्स अदूरसामते एत्थ ण नदणवणे नाम उज्जाणे होत्था, सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे नदणवणप्पगासे पासाईए ४, तस्स णं उज्जाणस्स बहुमञ्जदेसभाए सुरप्पिए नामं जक्खाययणे होत्था दिव्वे वन्नओ ॥ सू० ४ ॥

५, हिमवान् ६ अचल, ७ धरण, ८ पूरण ९, अभिचद, १० वसुदेव ! (सोम्मे) यह पर्वत बड़ा मनोहर था (सुभगे, प्रियदर्शने, सुखे, प्रासादिए) सुभग या—आनन्दजनक था, प्रिय दर्शन या दृष्टि को सुखप्रद था, सुरूप या—शोभन आकृति से सपन्न था, प्रासादीय या, दर्शनीय था, अभिरूप था प्रतिरूप था । दर्शकजन के मन को मोदित करनेवाला होने से प्रासादीय, नयनो को आनन्दजनक होने से दर्शनीय, सुन्दर आकृतिवाला होने से अभिरूप अथवा इसका रूप हर एक क्षण में नवीन नवीन जैसा प्रतीत होता था इसलिये अभिरूप और असाधारणरूप सपन्न होने के कारण प्रतिरूप था । सूत्र “ ३—”

७ धारण, ८ पूरण, अलियद, १० वसुदेव, (सोम्मे) आ पर्वत अत्यन्त रमणीय હતો । (सुभगे, प्रियदर्शने, सुखे, प्रासादिए) सुभग હતો, પ્રિયદર્શી હતો એટલે કે આખોને ગમે એવો હતો । સુરૂપ હતો, પ્રાસાદીય હતો, દર્શનીય હતો અભિરૂપ હતો, પ્રતિરૂપ હતો જોનારાઓના મનને પ્રમન્ન કરનાર હોવાથી પ્રાસાદીય, આખોને આનન્દ આપનાર હોવાથી દર્શનીય, સુન્દર આકારવાળો હોવાથી અભિરૂપ અથવા તે તેનું રૂપ દરેક ક્ષણે નવું નવું લાગતું હતું તેથી તે અભિરૂપ હતો, અસાધારણ રૂપ મળ્યા હોવાને કારણે તે પ્રતિરૂપ હતો ॥ सूत्र ३ ॥

खराणि=शृङ्गाणि पर्वतोपरितनप्रदेशाश्च, प्रचुराणि=अधिकानि यत्र स तथा, ततः
 कर्मधारयः । ' अच्छर-गण-देव संघ-चारण-विज्जाहर मिहुण-सविचिन्ने '
 अप्सरोगण-देवसंघ-चारण-विद्याधरमिथुन-सविचीर्ण'-अप्सरसा गणाश्च, देवसं
 घाश्च, चारणाः गगनगमनलब्धिमन्तो मुनिविशेषाः, विद्याधराणा मिथुनानि च तैः
 सविचीर्णः=आसेवित, ' निचचच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेल्लोकवलवगाण ' नित्य
 क्षणकः- दशार्हवरवीरपुरुषैल्लोकवलवता, दशार्हा=समुद्रविजयादयः दश, तेषु
 मध्ये वरास्त एव वीरा धीरपुरुषाः ते चामी-त्रेलोकयादपि बलवन्त, अतुलबल-
 नेमिनाथ युक्तत्वात् तेषा - नित्यक्षणकः=नित्योत्सवस्थानम्, तेषा सर्वे उत्सवा
 स्तत्र भवन्तीति भावः । दशदशार्हाणां नामानि यथा-

“समुद्रविजयो अक्षोभो धिमिओ सागरो हिमो ।

अयलो धरणो पूरणो अभिचदो वसुदेवोति” ॥१॥ इति ॥

भागों से तथा अनेक शिखरों से यह प्रचुर था अर्थात् ये तट, कटक
 आदि इस में अधिक थे । (अच्छरगणदेवसंघचारणविज्जाहरमिहु-
 णसविचिन्ने) अप्सराओं के गणों से, देवसंघों से गगन में गमन
 करने की लब्धि युक्त मुनि विशेषों से, और विद्याधरों के मिथुनों से
 यह सदा सेवित रहता था । (निचचच्छणए दसारवरवीरपुरिसते-
 ल्लोकवलवगाण) समुद्र विजयादिक दश दशार्हों के बीच में उत्तम
 धीरवीर पुरुषों का जो की अतुल बलधारी नेमिनाथ से युक्त होने के
 कारण तीन लोक से भी बलवान थे यह नित्योत्सव का स्थान था ।
 उन के समस्त उत्सव यही होते रहते थे । दश दशार्हों के नाम इस
 प्रकार हैं— १, समुद्र विजय २, अक्षोभ ३, स्तिमित ४, सागर

अथवा गर्ती, थोडा आगलना लागथी नभता अनेक पर्वत लागे तेमज धणु
 शिखरोथी ते प्रचुरइपथी युक्त हुते। ओटले के तट, कटक वगेरे ते पर्वतभा
 पुष्कण प्रमाणुभा हुता । (अच्छरगणदेवसंघचारणविज्जाहरमिहुणसविचिन्ने) अप्स-
 राओना गणोथी, देवसंघोथी गगन भागे गमन करता मुनि विशेषोथी,
 अने विद्याधरोना युगलोथी ते पर्वत सदा सेवित रहनेो हुते । (निचचच्छणए
 दसारवरवीरपुरिसतेल्लोकवलवगाण) समुद्र विजय वगेरे दश दशार्होभा
 उत्तम धीर वीर पुरुषोना-के नेओ अतुल बलधारी नेमिनाथथी युक्त होवने
 कारणे त्रैलोक्यो लोकथी बलवान हुता-आ नित्योत्सव भाटेनु स्थान हुतु तेमना
 अधा उत्सवो अहुँ न थता हुता दश दशार्होना नामो आ प्रमाणु छे-१
 - समुद्रविजय, २ अक्षोभ ३ स्तिमित, ४ सागर, ५ हिमवान, ६ अथल,

राया परिवसइ, से णं तत्थ समुद्रविजयपामोक्खाणं दसण्ह
दसाराण, बलदेवपामोक्खाणं पचण्ह महावीराण, उग्रसेण-
पामोक्खाणं सोलसण्ह रायसहस्साणं, पञ्जुन्नपामोक्खाणं
अधुट्ठाण कुमारकोडीण, संवपामोक्खाण सट्ठीए दुदतसा-
हस्सीण, वीरसेणपामोक्खाणं एकवीसाए वीरसाहस्सीण,
महासेनपामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीण, रुपिणी-
पामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं, रुपिणीपामोक्खाणं
वत्तीसाए महिलासाहस्सीण, अणंगसेणापामोक्खाणं अणे-
गाण गणियासाहस्सीण, अन्नेसि च बहूण इसरतलवर जाव
सत्थवाहपभिर्इणं वेयडु गिरिसायरपेरतस्स दाहिणडुभरहस्स
य वारवईए नयरीए आहेवच्च जाव पालेमाणे विहरइ ॥सू- ५॥

टीका—‘ तत्थ णं ’ इत्यादि । तत्र तस्या खलु द्वारायत्या नगर्या ‘ कण्हे
नाम ’ कृष्णो नाम वासुदेवः राजा=त्रिखण्डाधिपति परिवसति । स खलु तत्र
‘ समुद्रविजयपामोक्खाण ’ समुद्रविजयप्रमुखाना दशाना ‘ दसाराण ’ दशार्हाणा
बलदेवप्रमुखाना ‘ पचण्ह ’ पञ्चाना महावीराणाम् । उग्रसेनप्रमुखाना षोडशाना

‘ तत्थ ण वारवईए नयरीए ’ इत्यादि

टीकार्थ—(तत्थ ण वारवईए नयरीए) उस द्वारावती नगरी मे (कण्हे नाम
वासुदेवे राया परिवसइ) कृष्ण वासुदेव नामके तीन खड के अधिपति
राजा रहते थे (सेण तत्थ समुद्रविजयपामोक्खाण दसण्ह दसाराण)
वे वहा समुद्र विजय आदि दश दशार्हों का (बलदेव पामोक्खाण

‘ तत्थ ण वारवईए नयरीए ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तत्थ ण वारवईए नयरीए) ते द्वारावती नगरीमां (वण्हे नाम
वासुदेवे राया परिवसइ) कृष्ण वासुदेव नामे त्रये अना अधिपति राजा रहता
हैता (से ण तत्थ समुद्रविजयपामोक्खाण दसण्ह दसाराण) त्या समुद्र
विजय वगेरे हराएनि । (बलदेवपामोक्खाण पचण्ह महावीराण) अण

ટીકા—‘તસ્સ ણ’ ઇત્યાદિ । તસ્ય સ્વલ્પ રૈવતકસ્ય અદૂરસામતે અન્ન સ્વલ્પ નન્દનવન નામોદ્યાનમાસીત્ તત્ કીદશમિત્યાહ—‘સઙ્ગોઽયપુષ્પફલસમિદ્ધે’ સર્વર્થે વપુષ્પફલસમૃદ્ધમ્ સર્વેષામ્ ઋતૂના પુષ્પૈઃ, ફલૈશ્ચ સમૃદ્ધ = સમન્વિતમ્, ‘રમ્મે’ રમ્ય=રમણીય ‘નદનવનપ્રકાશ’ નન્દનવનતુલ્યમ્, પાસાદીયમ્ ૪, તસ્ય સ્વલ્પોદ્યાનસ્ય ‘વહુમઙ્ગલદેસભાણ’ વહુમઘ્યદેશભાગે ‘સુરપ્પિણ નામ’ સુરપ્રિય નામ, ‘જક્ષાયયણે’ યક્ષાયતનમ્ ‘હોત્થા’ આસીત્ તત્ કીદશમિત્યાહ—‘દિવ્વે’ દિવ્ય=રમ્ય, વર્ણકઃ=વર્ણનગ્રન્થોઽન્યત્રાભિહિતઃ । અન્યત્ સુગમમ્ ॥ સૂ.૦૪ ॥

મૂલમ્—તત્થ ણ વારવર્ડેણ નયરીણ કણ્હે નામ વાસુદેવે

‘તસ્મિન્ રેવયગસ્સ’—ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તસ્મિન્ રેવયગસ્મિન્) ડસ રૈવતક પર્વતકે (અદૂરસામતે) ન ઘટ્ટુત દૂર ઓર ન પાસ કિન્તુ ડચિન સ્થાન પર (ણ્થણ નદણવણે નામં ડજ્ઞાણે હોત્થા) યહાં ંક નદન વન નામ કા ડધાન થા (સઙ્ગો ડય પુષ્પફલસમિદ્ધે) યહ સમસ્ન ઋતુઓં સવન્ધી પુષ્પોં ઓર ફલોં સે સમૃદ્ધ રહ્તા થા । (રમ્મે ણદણવણપ્પગાસે) નદનવન કે જૈસા થા । (પાસાહણ ૪) દર્શક જન કે મન કો પ્રમોદિત કરને વાન્ના થા । સુભગ પ્રિયદર્શન આદિ ઓર ઃી વિશેષણ હસમેં લગા લેના ચાહિયે યહી ષાત “પાસાઈણ” કે સાથ રહે દુણ યહ ૪ પદ સૂચિન કરતા હૈ । (તસ્મિન્ ણ ડજ્ઞાણસ્સ વહુમઙ્ગલદેસભાણ સુરપ્પિણ નામ જક્ષાયયણે હોત્થા દિવ્વે વન્નઓ) ડસ ડધાન કે ઢીક ઃીચો ઃીચ કે સ્થાન સે સુરપ્રિય નામ કા યક્ષાયતન યા । યહ દિવ્ય થા । હસકા ઓર વર્ણન દૂસરી જગહ કિયા હુઆ હૈ । સૂત્ર “૪”

(તસ્મિન્ રેવયગસ્સ) ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તસ્મિન્ રેવયગસ્મિન્) રૈવતક પર્વતી (અદૂર સામતે) અત્યંત દૂર પણ નહિ તેમજ અત્યંત નજીક પણ ન કહેવાય તેમ (ણ્થણ નદણવણે નામ ડજ્ઞાણે હોત્થા) ત્યાં ‘નદનવન’ નામે ંક ડધાન હેતુ, (સઙ્ગોઽય પુષ્પફલસમિદ્ધે) તે ંધી ઋતુઓના પુષ્પો અને ફળોથી સમૃદ્ધ (રમ્મે ણદણ વણપ્પગાસે) નદનવન જેવું હેતુ (પાસાહણ) દર્શકોના મનને હ્રિષિત કરનાર હેતુ (પાસાહણ ૪) પદની આગળ ચાર નો આકડો મૂક્યો છે તે ંમ સૂચવે છે કે સુભગ પ્રિયદર્શન વગેરે ંીના પણ વિશેષણ અહીં સમજવા જોઈએ (તસ્મિન્ ણ ડજ્ઞાણસ્સ વહુમઙ્ગલદેસભાણ સુરપ્પિણ નામ જક્ષાયયણ હોત્થા દિવ્વે વન્નઓ) તે ડધાનની ંરાણર વચ્ચે સુરપ્રિય નામે યક્ષનું આયતન હેતુ તે દિવ્ય હેતુ તેનું વર્ણન અન્યત્ર કરવામા આવ્યું છે ॥ સૂ. “૪” ॥

राया परिवसद्, से णं तत्थ समुद्विजयपामोक्खाणं दसण्हं
दसाराणं, बलदेवपामोक्खाण पच्चण्ह महावीराणं, उग्गसेण-
पामोक्खाणं सोलसण्ह रायसहस्साणं, पज्जुन्नपामोक्खाणं
अधुट्ठाण कुमारकोडीण, सवपामोक्खाणं सट्ठीए दुदतसा-
हस्सीण, वीरसेणपामोक्खाण एक्कवीसाए वीरसाहस्सणिं,
महासेनपामोक्खाण छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीण, रुपिणी-
पामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं, रुपिणीपामोक्खाणं
वत्तीसाए महिलासाहस्सीण, अणंगसेणापामोक्खाणं अणे-
गाण गणियासाहस्सीण, अन्नेसिं च बहूण इसरतलवर जाव
सत्थवाहपभिर्इणं वेयड्डु गिरिसायरपेरतस्स दाहिणद्धभरहस्स
य चारवईए नयरीए आहेवच्च जाव पालेमाणे विहरद् ॥सू- ५॥

टीका—‘ तत्थ ण ’ इत्यादि । तत्र तस्यां गच्छु द्वारावत्यां नगर्यां ‘ कण्हे
नाम ’ कृष्णो नाम वासुदेवः राजा=त्रिगुण्डाधिपति परिवसति । न गच्छु तत्र
‘ समुद्विजयपामोक्खाण ’ समुद्विजयप्रमुखानां दशानां ‘ दसाराणं ’ दशाहोणां
बलदेवप्रमुखानां ‘ पच्चण्ह ’ पञ्चानां महावीराणाम् । उग्गसेनप्रमुखानां सोलसानां
‘ सोलसण्ह ’ सोलसानां ‘ रायसहस्साणं ’ रायसहस्रानां ‘ पज्जुन्नपामोक्खाणं ’ पज्जुन्नप्रमुखानां
‘ अधुट्ठाण ’ अधुट्ठाणानां ‘ कुमारकोडीण ’ कुमारकोटीनां ‘ सवपामोक्खाणं ’ सवप्रमुखानां
‘ सट्ठीए ’ सट्ठीनां ‘ दुदतसाहस्सीण ’ दुदतसाहस्रानां ‘ वीरसेणपामोक्खाणं ’ वीरसेणप्रमुखानां
‘ एक्कवीसाए ’ एक्कवीसानां ‘ वीरसाहस्सणिं ’ वीरसाहस्रानां ‘ महासेनपामोक्खाणं ’ महासेनप्रमुखानां
‘ छप्पन्नाए ’ छप्पन्नानां ‘ बलवगसाहस्सीण ’ बलवगसाहस्रानां ‘ रुपिणीपामोक्खाणं ’ रुपिणीप्रमुखानां
‘ वत्तीसाए ’ वत्तीसानां ‘ महिलासाहस्सीण ’ महिलासाहस्रानां ‘ अणंगसेणापामोक्खाणं ’ अणंगसेनाप्रमुखानां
‘ अणेगाण ’ अणेगाणानां ‘ गणियासाहस्सीण ’ गणियासाहस्रानां ‘ अन्नेसिं ’ अन्नेसिंनां ‘ च बहूण ’ च बहूनां
‘ इसरतलवर जाव ’ इसरतलवर जाव ‘ सत्थवाहपभिर्इणं ’ सत्थवाहपभिर्इणं ‘ वेयड्डु ’ वेयड्डुनां
‘ गिरिसायरपेरतस्स ’ गिरिसायरपेरतस्स ‘ दाहिणद्धभरहस्स ’ दाहिणद्धभरहस्स ‘ य ’ य
‘ चारवईए ’ चारवईए ‘ नयरीए ’ नयरीए ‘ आहेवच्च जाव पालेमाणे विहरद् ॥सू- ५॥

‘ तत्थ ण चारवईए नयरीए ’ इत्यादि

टीका—(तत्थ ण चारवईए नयरीए) उस द्वारावती नगरी में (कण्हे नाम
वासुदेवे राया परिवसद्) कृष्ण वासुदेव नामके तीन खड्ग के अधिपति
राजा रहते थे (सेण तत्थ समुद्विजयपामोक्खाण दसण्ह दसाराणं)
वे वहा समुद्र विजय आदि दश दशाहों का (बलदेव पामोक्खाणं

‘ तत्थ ण चारवईए नयरीए ’ इत्यादि ॥

टीका—(तत्थ ण चारवईए नयरीए) ते द्वारावती नगरीमां (कण्हे नाम
वासुदेवे राया परिवसद्) कृष्ण वासुदेव नामके त्रेण्ण अउना अधिपति राजा रहता
हता (से ण तत्थ समुद्विजयपामोक्खाण दसण्ह दसाराण) त्यां समुद्र
विजय वगैरे ॥ ५ ॥ (पज्जुन्नपामोक्खाण पच्चण्ह महावीराण) गच्छु

ટીકા—‘તસ્સ ણ’ ઇત્યાદિ । તસ્ય સ્વલુ રૈવતકસ્ય અદૂરસામતે અથ સ્વલુ
નન્દનવન નામોદ્યાનમાસીત્ તત્ ક્રીદશમિત્યાહ—‘સવ્વોડયપુષ્પફલસમિદે’ સર્વત્
કપુષ્પફલસમૃદ્ધમ્ સર્વેષામ્ ઋતૂના પુષ્પૈઃ ફલૈશ્ચ સમૃદ્ધ = સમન્વિતમ્, ‘રમ્મે
રમ્ય=રમણીય ‘નદનવનપ્રકાશ’ નન્દનવનતુલ્યમ્, પાસાદીયમ્ ૪, તસ્ય સ્વલુદ્યા
‘નસ્ય’ વહુમજ્જદેવમાણ’ વહુમજ્જદેશમાણે ‘સુરપ્પિણ નામ’ સુરપ્રિય નામ
‘જક્ષાયયણે’ યક્ષાયતનમ્ ‘હોત્થા’ આસીત્ તત્ ક્રીદશમિત્યાહ—‘દિવ્વે
દિવ્ય=રમ્ય, ર્ણકઃ=વર્ણનગ્રન્થોઽન્યત્રાભિદિતઃ । અન્યત્ સુગમમ્ ॥ સૂ. ૪ ॥

મૂલમ્—તત્થ ણ વારવર્ણે નયરીણ કણ્હે નામ વાસુદેવે

‘તસ્મિન્ રેવયગસ્સ’—ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તસ્મિન્ રેવયગસ્મ) ઉસ રૈવતક પર્વતકે (અદૂરસામતે) :
બહુત દૂર ઓર ન પાસ કિન્તુ ડચિત સ્થાન પર (અત્થણ નદણવણે ના
ડડજાણે હોત્થા) યહાં ઇક નદન વન નામ કા ઉદ્યાન થા (સવ્વોડ
પુષ્પફલસમિદ્દે) યહ સમસ્ત ઋતુઓ સરન્થો પુષ્પો ઓર ફલો
સમૃદ્ધ રહતા થા । (રમ્મે ણદણવણપ્પગાસે) નદનવન કે જૈસા થા
(પાસાદિ ૪) દર્શક જન કે મન કો પ્રમોદિત કરને યાચ્છા થા । સુખ
પ્રિયદર્શન આદિ ઓર મી વિશેષણ હસમેં લગા લેના યાહિયે યહી થા
“પાસાદિ” કે સાથ રહે હુણ યહ ૪ પદ સૂચિત કરતા હૈ । (તસ્મિન્
ડડજાણસ્સ વહુમજ્જદેવમાણ સુરપ્પિણ નામ જક્ષાયયણે હોત્થા દિવ
વન્નઓ) ઉસ ઉદ્યાન કે ઠીક વીચો વીચ કે સ્થાન મેં સુરપ્રિય નામ વ
યક્ષાયતન યા । યહ દિવ્ય થા । હસકા ઓર વર્ણન દૂસરી જગહ કિ
હુઆ હૈ । સૂત્ર “ ૪ ”

(તસ્મિન્ રેવયગસ્સ) ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તસ્મિન્ રેવયગસ્સ) રૈવતક પર્વતી (અદૂર સામતે) અત્ય
દૂર પણ નહિ તેમજ અત્યંત નજીક પણ ન કહેવાય તેમ (અત્થણ નદણવણે
નામ ડડજાણે હોત્થા) ત્યાં ‘નદનવન’ નામે એક ઉદ્યાન હતું, (સવ્વોડય
પુષ્પફલસમિદ્દે) તે બધી ઋતુઓના પુષ્પો અને ફળોથી સમૃદ્ધ (રમ્મે ણદણ
વણપ્પગાસે) નદનવન જેવું હતું (પાસાદિ) દર્શકોના મનને હર્ષિત કરના
હતું (પાસાદિ ૪) પદની આગળ ચાર નો આકડો મૂક્યો છે તે એમ સૂચવે
છે કે સુખ પ્રિયદર્શન વગેરે બીજા પણ વિશેષણો અહીં સમજવા જોઈએ
(તસ્મિન્ ણ ડડજાણસ્સ વહુમજ્જદેવમાણ સુરપ્પિણ નામ જક્ષાયયણ હોત્થા દિવ
વન્નઓ) તે ઉદ્યાનની બરાબર વચ્ચે સુરપ્રિય નામે યક્ષનું આયતન હતું તે દિવ્ય
હતું તેનું વર્ણન અન્યત્ર કરવામાં આવ્યું છે ॥ સૂ. “ ૪ ” ॥

राया परिवसइ, से णं तत्थ समुद्रविजयपामोक्खाणं दसण्हं
दसाराण, बलदेवपामोक्खाण पचण्ह महावीराण, उगसेण-
पामोक्खाणं सोलसण्ह रायसहस्साणं, पज्जुन्नपामोक्खाणं
अध्धुट्ठाण कुमारकोडीण, संवपामोक्खाण सट्ठीए दुदतसा-
हस्सीण, वीरसेणपामोक्खाण एकवीसाए वीरसाहस्सीणिं,
महासेनपामोक्खाण छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीण, रुपिणी-
पामोक्खाण छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणिं, रुपिणीपामोक्खाणं
वत्तीसाए महिलासाहस्सीण, अणंगसेणापामोक्खाणं अणै-
गाण गणियासाहस्सीणिं, अन्नेसि च बहूण इसरतलवर जाव
सत्थवाहपभिर्इणं वेयडु गिरिसायरपेरतस्स दाहिणडुभरहस्स
य चारवईए नयरीए आहेवच्च जाव पालेमाणे विहरइ ॥सू- ५॥

टीका—‘ तत्थ ण ’ इत्यादि । तत्र तस्या खलु द्वारावत्या नगर्या ‘ कण्हे
नाम ’ कृष्णो नाम वासुदेवः राजा=त्रिखण्डाधिपति परिवसति । स खलु तत्र
‘ समुद्रविजयपामोक्खाण ’ समुद्रविजयप्रमुखाना दशाना ‘ दसाराण ’ दशार्हाणा
बलदेवप्रमुखाना ‘ पचण्ह ’ पञ्चाना महावीराणाम् । उग्रसेनप्रमुखाना षोडशाना

‘ तत्थ ण चारवईण नयरीए ’ इत्यादि

टीकार्थ—(तत्थ णं चारवईए नयरीए) उस द्वारावती नगरी मे (कण्हे नाम
वासुदेवे राया परिवसइ) कृष्ण वासुदेव नामके तीन खड के अधिपति
राजा रहते थे (सेण तत्थ समुद्रविजयपामोक्खाण दसण्ह दसाराण)
वे वहा समुद्र विजय आदि दश दशार्हों का (बलदेव पामोक्खाण

‘ तत्थ ण चारवईण नयरीए ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तत्थ ण चारवईए नयरीए) ते द्वारावती नगरीभां (कण्हे नाम
वासुदेवे राया परिवसइ) कृष्ण वासुदेव नामके त्रेखे ण उना अधिपति राजा रहता
हता (से ण तत्थ समुद्रविजयपामोक्खाण दसण्ह दसाराण) त्या समुद्र
विजय वगेरे ह्याहेनि । (बलदेवपामोक्खाण पचण्ह महावीराण) णण

राजसहस्राणां=षोडशसहस्रप्रमितानां राज्ञाम् । प्रद्युम्नप्रमुखानाम् अर्धचतुर्थानां
कुमारकोटीनां=सार्धत्रिकोटिसंख्यकानां यादवकुमाराणाम् । शाम्बप्रमुखानां
षष्ठ्या दुर्दान्तसाहस्रीणां=षष्टिसहस्रसंख्यकानां शाम्बादीनां दुर्दान्तानाम् । वीर
सेन प्रमुखानामेकविंशत्या वीरसाहस्रीणां=एकविंशतिसहस्रप्रमाणानां वीरसेना
दीना वीराणाम् । महासेनप्रमुखानां पट्पञ्चाशतो बलवत् साहस्रीणां=पट्पञ्चा-
शत् सहस्रप्रमितानां महासेनादीनां बलवताम् । रुक्मिणीप्रमुखानां द्वात्रिंशतो
महिलासाहस्रीणां=रुक्मिण्यादीनां द्वात्रिंशत्सहस्रप्रमितानां महिलानाम् । अनङ्गसेना
प्रमुखानामनेकासां गणिकासहस्रीणाम्=अनङ्गसेनादीनामनेकसहस्रसरयासमितानां
गणिकानाम् अन्येषां च बहूनां राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकश्रेष्ठिसेनापतीनां,
यावत् सार्धवाहप्रभृतीनां चैतादृशगिरिसागरपर्यन्तस्य च, दक्षिणार्धभरतस्य
च, द्वारावत्याः द्वारकायाः नगर्याश्च, आधिपत्यं यावत् — अत्र यावच्छ्रद्धा

पचण्ह महावीराण) बलदेव प्रमुख पाच महावीरोका उग्रसेन प्रमुख १६
सोलह हजार राजाओं का प्रद्युम्न प्रमुख ३॥, साढे तीन करोड़ यादव
कुमारों का (संव पामोक्खाण सट्टीए दुद्धत साहस्सीणं) ६० साठ हजार
दुर्दान्त शाम्ब आदिकों का (वीरसेणपामोक्खाणं एकवीसाए वीरसाह-
स्सीण) २१ इक्कीस हजार वीरसेन प्रमुख वीरोका (महासेना पामोक्खाणं
छप्पन्नाए बलवग साहस्सीण) ५६ छप्पन हजार बलिष्ठ महासेन आदिकों का
(रुक्मिणीपामोक्खाण वत्तीसाए महिला साहस्सीण) ३२ वत्तीस हजार
रुक्मिणी प्रमुख महिलाओं का (अणगसेणापामोक्खाण अणेगाणं
गणिया साहस्सीण) अनङ्गसेना प्रमुख अनेक हजार गणिकाओं का
निवास था । (अन्नेसिंच बहूण इसर तलवर जाव सत्थवाहपभिर्हणवे-
यड्डुगिरिसायरपेरतस्स य दाहिणड्डुभरहस्स य बारवहए नयरीए

हेव प्रमुअ पाअ महावीरोने, उग्रसेन प्रमुअ सेण डुल्लर राज्ञेओने,
प्रद्युम्न प्रमुअ साडा त्रयु डुरोड यादव कुमारोने (सवपामोक्खाण सट्टीए
दुद्धतसाहस्सीण) साठडि डुल्लर दुर्दान्तसाअ वगेरे ने। (वीरसेणपामोक्खाण
एकवीसाए वीरसाहस्सीणं) ऐकवीश डुल्लर वीरसेन प्रमुअ वीरोने। (महासेन पामो
क्खाण छप्पन्नाए बलवग साहस्सीण) छप्पन डुल्लर अणवान महासेन वगेरेने।
(रुक्मिणी पामोक्खाण वत्तीसाए महिलासाहस्सीण) अत्तीस डुल्लर रुक्मिणी प्रमुअ
महिलाओने। (अणगसेणापामोक्खाण अणेगाण गणियासहस्सीण) अने
अतगसेना प्रमुअ डुल्लरे। गणिकाओने निवास डते। (अन्नेसिंच, बहूण इसर
तलवर जाव सत्थवाहपभिर्हण वेचड्डुगिरिसायरपेर तस्सय दाहिणड्डु भरहस्स य बारवहए

दय पाठोऽनुसन्नेयः—‘पोरेयच्च’ पालयन् विहरति = आस्तेस्म । पौरपत्य
पुरवासिनामग्रसरत्वं, ‘सामित्त’ स्वामित्व, ‘भत्तित्त’ भर्तृत्व, महत्तरगत्य
महत्तरकत्वं, ‘आणाईसरसेणावच्च’ आज्ञेश्वर सेनापत्य ‘करेमाणे’ कुर्वन् इति ॥५॥

मूलम्—तत्थ पां वारवईए नयरीए थावच्चा णाम गाहावे-
इणी परिवसइ, अड्ढा जाव अपरिभूया, तीसेण थावच्चाए
गाहावइणीए पुत्ते थावच्चापुत्ते णामं सत्थवाहदारए होत्था
सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे, तएण सा थावच्चागाहा-
वइणी त दारय सातिरेगअड्ढवासजायय जाणित्ता सोह-
पांसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि कलायरियस्स
उवणेइ, जाव भोगसमत्थ जाणित्ता वत्तीसाए इव्वभकुल-
वालियाण एगदिवसेणं पाणि गेह्हावेइ वत्तीसओ दाओ
जाव वत्तीसाए इव्वभकुलवालियाहि सच्चि विपुले सहकारिसर-
सरुववन्ने गधे जाव भुजमाणे विहरइ ॥ ६॥

टीका—‘तत्थण इत्यादि । तत्र=तस्यां खलु द्वारावत्या नगर्या ‘थावच्चा-
आहेवच्च जाव पालेमाणे विहरइ) अन्य और भी अनेक राजेश्वर,
तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, श्रेष्ठीसेनापतियों का यावत् सार्थवाह
आदिकों का, वैताढ्य गिरिएव सागर पर्यन्त दक्षिणार्ध भरत का तथा
द्वारका नगरी का आधिपत्य पौरपत्य, स्वामित्व, भर्तृत्व महत्तरकत्व,
आज्ञेश्वर सेनापत्य करते हुए रहते थे अर्थात् द्वारका नगरीमें कृष्ण
वासुदेव राज्य करते थे । सूत्र “ ५ ”

‘तत्थ वारवईए नयरीए’ इत्यादि ।

टीका—(तत्थणं वारवईए नयरीए) उस द्वारका नगरी में (थावच्चा-

नयरीए आहेवच्च जाव पालेमाण विहरइ) अने भीन्त पणु धणु राजेश्वर,
तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक श्रेष्ठी सेनापतियों सार्थवाह वगेरे उपर वैताढ्य
गिरि अने समुद्र सुधीना दक्षिण भारत, नगरीनु आधिपत्य पौरपत्य,
भर्तृत्व महत्तरकत्व आज्ञेश्वर सेनापतित्व करता रहता होता अटलेउे द्वारका
नगरीमा कृष्ण वासुदेव राज्य करता होता ॥ सूत्र ५ ॥

(तत्थण वारवईए नयरीए) इत्यादि ।

टीकार्थ—(तत्थण वारवईए नयरीए) से द्वारका नगरीमा (थावच्चा णाम गाहा

राजसहस्राणा=पोडशसहस्रप्रमितानां राज्ञाम् । प्रद्युम्नप्रमुखानाम् अर्धचतुर्थानां
कुमारकोटीना=सार्धत्रिकोटिसंख्यकानां यादवकुमाराणाम् । शाम्बप्रमुखानां
पष्ठ्या दुर्दान्तसाहस्रीणा=पष्टिसहस्रसंख्यकानां शाम्बादीनां दुर्दान्तानाम् । वीर
सेन प्रमुखानामेकविंशत्या वीरसाहस्रीणा=एकविंशतिसहस्रप्रमाणानां वीरसेना
दीना वीराणाम् । महासेनप्रमुखानां पट्पञ्चाशतो बलवत् साहस्रीणा=पट्पञ्चा
शत् सहस्रप्रमितानां महासेनादीनां बलवताम् । रुक्मिणीप्रमुखानां द्वात्रिंशतो
महिलासाहस्रीणा=रुक्मिण्यादीनां द्वात्रिंशत्सहस्रप्रमितानां महिलानाम् । अनङ्गसेना
प्रमुखानामनेकांशं गणिकासाहस्रीणाम्=अनङ्गसेनादीनामनेकसहस्रसंख्यासमितानां
गणिकानाम् अन्येषां च बहूनां राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकश्रेष्ठिसेनापतीनां,
यावत् सार्धवाहप्रभृतीनां वैताढ्यगिरिसागरपर्यन्तस्य च, दक्षिणार्धभरतस्य
च, द्वारावत्याः द्वारकायाः नगर्याश्च, आधिपत्यं यावत् — अत्र यावच्छब्दा

पचण्ह महावीराण) बलदेव प्रमुख पाच महावीरोका उग्रसेन प्रमुख १६
सोलह हजार राजाओं का प्रद्युम्न प्रमुख ३॥ साठे तीन करोड़ यादव
कुमारों का (सब पामोकखाण सट्टीए दुहत् साहस्सीण) ६० साठ हजार
दुर्दान्त शाम्ब आदिकों का (वीरसेणपामोकखाण एकवीसाए वीरसाह-
स्सीण) २१ हकीस हजार वीरसेन प्रमुख वीरोका (महासेना पामोकखाण
छप्पन्नाए बलवग साहस्सीण) ५६ छप्पन हजार बलिष्ठ महासेन आदिकों का
(रुक्मिणीपामोकखाण बत्तीसाए महिला साहस्सीण) ३२ बत्तीस हजार
रुक्मिणी प्रमुख महिलाओं का (अणगसेणापामोकखाण अणेगाणं
गणिया साहस्सीण) अनङ्गसेना प्रमुख अनेक हजार गणिकाओं का
निवास था । (अन्नेसिंच बहूण इसर तलवर जाव सत्थवाहपभिईणवे-
यड्डुगिरिसायरपेरतस्स य दाहिणड्डुभरहस्स य बारवहण नयरीए

देव प्रभुओं पांच महावीरोंने, उग्रसेन प्रभुओं सोण डुन्तर राजाओंने,
प्रद्युम्न प्रभुओं साडा त्रणु करोड यादव कुमारोंने (सबपामोकखाण सट्टीए
दुहत्साहस्सीण) सार्ध ६० डुन्तर दुर्दान्तसाथ वगेरे ने। (वीरसेणपामोकखाण
एकवीसाए वीरसाहस्सीण) ऐकवीश डुन्तर वीरसेन प्रभुओं वीरोंने। (महासेन पामो
करवाण छप्पन्नाए बलवग साहस्सीण) छप्पन डुन्तर अणवान महासेन वगेरेने।
(रुक्मिणी पामोकखाण बत्तीसाए महिलासाहस्सीण) अत्तीस डुन्तर रुक्मिणी प्रभुओं
महिलाओंने। (अणगसेणापामोकरवाण अणेगाण गणियासहास्सीण) अने
अनङ्गसेना प्रभुओं डुन्तरे गणिकाओंने निवास डेतो। (अन्नेसिंच, बहूण इसर
तलवर जाव सत्थवाहपभिईण वेयड्डुगिरिसायरपेर तस्स य दाहिणड्डु

जातक, विचित्रधिकाष्टवर्षजात ज्ञात्वा शोभने तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुहूर्ते ' क
लायरियस्स ' कलाचार्यस्य समीपे उपनयति, यावत् सर्वा वलाः शिक्षयति मेघ
कुमारवद् द्वासप्ततिकला अनेन शिक्षिता इत्याशय । भोगसमर्थ यौवनवयः समा-
गमेन विषयभोगयोग्यताऽपन्न ज्ञात्वा द्वात्रिंशता ' इम्भकुलवालियाण ' इम्भकुल
वालिकानाम् महाधनाढ्यसार्धवाहना द्वात्रिंशत्सख्यकन्यानाम् एकदिवसेन एक-
स्मिन्नेव दिने पाणिं ग्राहयति पाणिग्रहण कारयति । द्वात्रिंशदायः द्वात्रिंशद् हिर-
ण्यकोट्य द्वात्रिंशत् सुवर्णकोट्यः इत्यादिरूपो मेघकुमारवदायोऽवगन्तव्य । यावत्
तदनन्तर स्थापत्यापुत्रः द्वात्रिंशता इम्भकुलवालिकाभिः सार्धं विपुलान् शब्दस्पर्श
रसरूपवर्णगन्धान् विषयान् यावद् भुञ्जान अनुभूयन् विहरति=आस्तेस्म ॥सू०६॥

इस के उस स्थापत्य गाथा पत्नीने उस अपने पुत्र को आठवर्ष से कुछ
अधिक जब जाना तब शुभ तिथि करण दिवस नक्षत्र एव मुहूर्त्त में
(कलायरियस्स) कलाचार्य के पास (उवणेइ) भेजदिया (जाव भोग
समर्थ जाणित्ता वत्तीसाए इम्भकुलवालियाण एगदिवसेण पाणि गेहा-
वेइ) यावत् मेघकुमार की तरह उस स्थापत्य पुत्र ने ७२वहत्तर कलाओ
को सीखलिया । यौवनवय के समागमन से विषय भोग की योग्यता
विशिष्टइसे जानकर बाद में उस स्थापत्यागाथापत्नीने उसका वैवाहित
संस्कार एकही दिनमें ३२ महाधनाढ्य सार्धवाहों की कन्याओं के साथ
करवादिया । (वत्तीस ओदाओ जाव वत्तीसाए इम्भकुलवालियाहिं
सद्धिं विपुले सदफरिसखगधे जाव भुजमाणे विहरइ) ३२वत्तीस हिरण्य
कोटि ३२ वत्तीस सुवर्ण कोटि इत्यादि रूपदहेज इसे मेघकुमार की तरह
मिला । इसके बाद स्थापत्य पुत्र ने ३२ उन इम्भकुल वालिकाओं के साथ

गाथा पत्नीओ पोताना पुत्रने आठवर्ष थी थोडा मोटा थयेलो जालीने शुभ
तिथि, करण, दिवस, नक्षत्र अने मुहूर्त्तमा (कलायरियस्स) कलाचार्यनी
पासे (उवणेइ) भेजये (जाव भोगसमर्थ जाणित्ता वत्तीसाए इम्भकुल-
वालियाण एगदिवसेण पाणि गेहावेइ) मेघकुमारनी जेभ ते स्थापत्य पुत्रे
पञ्च ओत्तेर कलाओ शीजीनीनी जव रे ते युवावन्थ सपत्त थाने विषयेप
लोगने लायक थये त्वारे गाथापत्नीओ ओइ दिवसमा तेनु लग्न पत्रीस
महाधनाढ्य सार्धवाहोनी कन्याओनी साथे उरावडावु (वत्तीस ओदाओ जाव
वत्तीसाए इम्भकुलवालियाहिं सद्धिं विपुले सदफरिसखगधे जाव भुजमाणे
विहरइ) पत्रीस हिरण्य कोटि, पत्रीस सुवर्ण कोटि वगेरे दहेज मेघकुमारनी
जेभ तेने पञ्च भगी त्वार पछी स्थापत्य पुत्र पत्रीस हिरण्य पत्नीओनी

णाम ' स्थापत्या नाम ' गाहावहणी ' गाथापत्नी परिवसति । सा कीदृशीत्याह—
 आढ्या=धनधान्यादि परिपूर्णा, यावत् अपरिभूता-अयैः परामवितुमशक्या, तस्याः
 खलु स्थापत्यायाः गाथापत्याः पुत्रः ' थावच्चापुत्ते णाम ' स्थापत्यापुत्रो नाम
 सार्थवाहदारकोऽभूत् । स कीदृश इत्याह—सुकुमारपाणिपादः यावत् गुरूपः अत्र
 यावच्छब्दकरणादयथातोऽनुसन्नेयः—' अहीणपडिपुण्णपच्चिदियसरीरे, लक्खण
 वेजणगुणोववेए, माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायमव्वंगसुदरगे, ससिसोमा-
 कारे कते पियदसणे इति एतानि पदानि प्रागेव व्याख्यातानि ततः खलु सा
 स्थापत्या गाथापत्नी त दारक ' सातिरेगअट्ठमासजायय ' सातिरेकाष्टवर्ष

णाम गाहावहणी परिवसइ) स्थापत्य नामकी गाथा पत्नी रहती थी ।
 (अट्ठाजाव अपरिभूया) यह धन धान्य आदि से परिपूर्ण यावत् अप-
 रिभूत अन्य व्यक्तियों द्वारा परीभूत अशक्य थी । (तीसेण थाव-
 च्चाए गाहावहणीए पुत्ते थावच्चा पुत्ते णाम सत्यवाहदारण होत्था)
 उस स्थापत्य गाथापत्नी का पुत्र था जिस का नाम स्थापत्य पुत्र था ।
 वह सार्थवाहदारक कहलाता था । (सुकुमालपाणिपाएजाव सुरुवे)
 इसके हाथपैर सुकुमार थे । यावत् यह अच्छे रूपवाले थे । यहा यावत्
 शब्द से " अहीणपडिपुण्णपच्चिदियसरीरे, लक्खणवजणगुणोववेए,
 माणुम्माणपमाण पडिपुण्णसुजायसव्वंग सुदरगे समि सोमाकारे कते,
 पियदसणे " इस पाठ का संग्रह हुआ है । इनपदों का अर्थ इहिले कहा
 जा चुका है (तण्ण सा थावच्चा गाहावहणी त दारय सातिरेग अट्ठ
 मासजायय जाणित्ता सोहणसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तसि)

वहणी परिवसइ) स्थापत्य नामे ओठ गाथापत्नी रहती હતી (अट्ठाजावअपरिभूया)
 ते धनधान्य वगेरेથી परिपूर्ण तेમજ ખીછ કેઈ વ્યક્તિથી પરભૂત ન થાય એવી
 હતી (તીસેણ થાવચ્ચાગ ગાહાવહણીગ પ= થાવચ્ચાપુત્તે ણામ સત્યવાહદારણ હોત્થા)

जातक, विचित्रिकाष्टवर्षजात ज्ञात्वा शोभने तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुहूर्ते ' कलायरियस्स ' कलाचार्यस्य समीपे उपनयति, यावत् सर्वा कलाः शिक्षयति मेघकुमारवद् द्वासप्ततिकला अनेन शिक्षिता इत्याशयः । भोगसमर्थं यौवनवयः समागमेन विषयभोगयोग्यताऽपन्न ज्ञात्वा द्वात्रिंशता ' इम्भकुलवालियाण ' इम्भकुलवालिकानाम् महाधनाढ्यसार्धवाहाना द्वात्रिंशत्सख्यकन्यानाम् एकदिवसेन एकस्मिन्नेव दिने पाणिं ग्राहयति पाणिग्रहणं कारयति । द्वात्रिंशदायः द्वात्रिंशद् हिरण्यकोट्य द्वात्रिंशत् सुवर्णकोट्यः इत्यादिरूपो मेघकुमारवदायोऽवगन्तव्यः । यावत् तदनन्तरं स्थापत्यापुनः द्वात्रिंशता इम्भकुलवालिकाभिः सार्धं विपुलान् शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् विषयान् यावद् भुञ्जान अनुभूयन् विहरति=आस्तेस्म ॥सू०६॥

इस के उस स्थापत्य गाथा पत्नीने उस अपने पुत्र को आठवर्ष से कुछ अधिक जब जाना तब शुभ तिथि करण दिवस नक्षत्र एव मुहूर्त्त में (कलायरियस्स) कलाचार्य के पास (उवणेइ) भेजदिया (जाव भोग समर्थ जाणित्ता वत्तीसाए इम्भकुलवालियाण एगदिवसेण पाणिं गेहावेइ) यावत् मेघकुमार की तरह उस स्थापत्य पुत्र ने ७२वहत्तर कलाओ को सीखलिया । यौवनवय के समागमन से विषय भोग की योग्यता विशिष्टइसे जानकर बाद में उस स्थापत्यागाथापत्नीने उसका वैवाहित संस्कार एकही दिनमें ३२ महाधनाढ्य सार्धवाहों की कन्याओं के साथ करवादिया । (वत्तीस ओदाओ जाव वत्तीसाए इम्भकुलवालियाहिं सद्धिं विपुले सदफरिसखगवे जाव भुजमाणे विहरइ) ३२वत्तीस हिरण्य कोटि ३२ वत्तीस सुवर्ण कोटि इत्यादि रूपदहेज इसे मेघकुमार की तरह मिला । इसके बाद स्थापत्य पुत्र ने ३२ उन इम्भकुलवालिकाओ के साथ

गाथा पत्नीओ पोताना पुत्रने आठवर्ष थी थोडा मोटो थयेलो जालीने शुभ तिथि, करण, दिवस, नक्षत्र अने मुहूर्त्तमा (कलायरियस्स) कलाचार्यनी पास (उवणेइ) भेजदये (जाव भोगसमर्थ जाणित्ता वत्तीसाए इम्भकुलवालियाण एगदिवसेण पाणिं गेहावेइ) मेघकुमारनी जेभ ते स्थापत्य पुत्र पणु जेत्तेर कलाओ सीखीनीरी जइ ते युवावन्था सपत्न थइने विषयेप भोगने लायक थये त्यारे गाथापत्नीओ ओकर दिवसमा तेनु लग्न जत्रीस महाधनाढ्य सार्धवाडोनी कन्याओनी साथे करावडावु (वत्तीस ओदाओ जाव वत्तीसाए इम्भकुलवालियाहिं सद्धिं विपुले सदफरिसखगवे जाव भुजमाणे विहरइ) जत्रीस हिरण्य कोटि, जत्रीस सुवर्ण कोटि वगेरे दहेज मेघकुमारनी जेभने तेने पणु भणी त्वार पछी स्थापत्य पुत्र जत्रीस हिरण्य जालीने

મૂઢમ્—તેણં કાલેણ તેણ સમણં અરહા અરિદ્ધનેમી સો
 ચેવ વણ્ણઓ દસધણુસેહે નીલુપ્પલગવલગુલિયઅયસિકુસુમ-
 પ્પગાસે અટ્ટારસહિ સમણસાહસ્સીહિ સદ્ધિ સપરિવુડે ચત્તાલી-
 સાણ અજ્ઞિયાસાહસ્સીહિ સદ્ધિ સપરિવુડે પુઠ્ઠાણુપુઠ્ઠિ ચરમાણે
 જાવ જેણેવ વારવર્ઠે નયરી જેણેવ રેવયગપઠ્ઠણ જેણેવ નદન-
 વણે ઉજ્જાણે જેણેવ સુરપ્પિયસ્સ જમ્મસ્સ જમ્મવાયયણે જેણેવ
 અસોગવરપાયણે તેણેવ ઉવાગચ્છુદ્ધ, ઉવાગચ્છિત્તા અહાપઢિરુવ
 ઉગ્ગહ ઓગિણિહત્તા સંયમેણ તવસા અપ્પાણ ભાવેમાણે વિહરદ્ધ
 પરિસા નિગ્ગયા ધમ્મો કહિઓ ॥ ૭ ॥

ટીકા—‘તેણ કાલેણ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये अर्हन् अरिष्ट
 नेमिर्द्वाविंशतितमस्तीर्थकरः समवसृत इति भावः, स एव वर्णकः = अन्यतीर्थक
 राणा यो वर्णकः ‘आइगरे तित्थगरे’ इत्यादि रूप कथितः स एवारिष्टनेमि
 भगवतोऽपि वर्णको बोध्य इत्यर्थः, नवर—‘दसधणुस्सेहे’ दशयनुरु सेधः=दश

વિપુલ શબ્દ રૂપ ગધરસ ઓર સ્પર્શ પાચો હૃદિયોં કે વિષયોં કો યાવત્
 ભોગતે હુણ અપના સમય આનન્દ કે સાથ વ્યતીત કરદિયા ॥સૂત્ર“૬”

તેણ કાલેણ તેણ સમણ ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—(તેણ કાલેણ તેણ સમણ) उस काल और उस समय में (अरिहा
 अरिद्वनेमी) उस द्वारावती नगरी में बावीसवें तीर्थकर अर्हत नेमीनाथ
 भगवान् आये (सो चैव वण्णओ) अन्यतीर्थकरो का जैसा “आइगरे
 तित्थगरे” इत्यादिरूप से वर्णन किया गया है उसी प्रकार का वर्णन

સાથે પુષ્કળ રાખ્, સ્પર્શ, રૂપ વર્ણ અને ગધ રૂપ પાચે હૃન્દિયોના વિષયો
 ને ભોગવતા પોતાનો વખત સુખેથી ખસાર કરવા ગયો ॥ સૂત્ર “૬” ॥

તેણ કાલેણ તેણ સમણ ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—(તેણ કાલેણ તેણ સમણ) તે કાળે અને તે સમયે (અરિહા અરિદ્ધનેમી
 તે દ્વારકા નગરીમા બાવીસમા તીર્થ કર અર્હત નેમીનાથ ભગવાન પધાર્યા
 (સો ચેવ વણ્ણઓ) “આઈગરે તિથગરે” ના રૂપમા જેમ બીજા તીર્થ કરેલા
 વર્ણન કરવામા આવ્યું છે તે પ્રમાણેજ અરિદ્ધનેમિ પ્રમુખ વર્ણ । પણ બીજી

धनु परिमित उत्सेध उच्छायो यस्य सः, पुनः कथं भूतौऽसावित्याह--'नीलु
प्लगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासे' नीलोत्पलगवलगुलिकातसीकुसुमप्रकाशः
नीलोत्पल = नीलकमल, गवल = माहिष शृङ्ग गुलिका = नीली, यद्वा - गवलगुलिका
= माहिषशृङ्गस्य त्वं गगेऽपसारिते सति तदन्तरालवर्तिनी गुलिका 'अतसी' अलसी
नाम्नाप्रसिद्धो धान्यविशेषस्तस्य कुसुम = पुष्प, तेषां प्रकाश इव प्रकाशो वर्णो यस्य
स तथा, अष्टादशभिः श्रमणसाहस्रीभिः अष्टादशसहस्रपरिमितैः श्रमणैः मुनिभिः
सार्धं सपरिवृतः चत्वारिंशता आर्यिकासाहस्रीभिः = चत्वारिंशत्सहस्रपरिमिताभिः
सार्यिकाभिः साध्वीभिः सार्धं सपरिवृतः, पूर्वानुपूर्वी = पूर्वानुपूर्व्यां तीर्थं करपरप-
रया चरन् = विहरन् यावत् यत्रैव द्वारावती नगरी वर्तते यत्रैव रैवतकपर्वतः
यत्रैव नन्दनवनं नामोद्यानमस्ति, यत्रैव सुरप्पियस्य यक्षस्य यक्षायतनं, यत्रैव,

इन अरिष्टनेमि प्रभुका भी जानना चाहिये । परन्तु उनके वर्णन की अपेक्षा
इनके वर्णन में इतनी विशेषता है कि ये (दसधणुस्सेहे, नीलुत्पलगवल-
गुलियअयसिकुसुमप्पगासे) इनके शरीर की ऊँचाई दश धनुष की थी ।
शरीर का वर्ण नीलकमल के गवल-माहिष केश्रृंग के अन्दरभाग
जैसा गुलिका-नील के जैसा अथवा गवल तुलिका-त्वग्भाग के दूर
करने पर तदन्तरालवर्तिनी माहिष शृङ्ग की गुलिका के-अलसी के पुष्प
के वर्ण के समान था । (अट्टारसहिं समणसाहस्सीहिं सद्धि सपरिवुडे
चत्तालीसाए अज्जिया साहस्सीहिं सद्धि सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विचरमाणे
जाव जेणेव बारवई नयरी जेणेव रेवयगपव्वए जेणेव नदनवणे उज्जाणे
जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव
उवागच्छइ) ये अर्हन् अरिष्टनेमि प्रभु १८ अट्टारह हजार श्रमणों के साथ
और ४० चालीस हजार आर्यिकाओं के साथ २ पूर्वानुपूर्वी से-तीर्थं कर

लेखु नेधये इत्ता अरिष्टनेमि लगवान नी विधे आटलु विशेष सम७वु नेधये
६--(दसधणुस्सेहे नीलुत्पलगवलगुलियअयसि कुसुमप्पगासे) तेमनु शरीर
दश धनुष नेटलु उंचु डेतुं तेमना शरीरने २० नील कमल गवलमाहिषना
शींगडाना मध्यभाग नेवे, गुलिका-नील नेवे, अथवातो गवल गुलिका-उपर
नी आमडीने उपाडी लीधापछी तेनी अदरना मडिपना शींगडानी गुलिजा
अने अलसीना पुष्पना २० नेवे डेतो (अट्टारसहिं समणसाहस्सीहिं
सद्धि सपरिवुडे चत्तालीसाए अज्जिया साहस्सीहिं सद्धि सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चर
माणे जाव जेणेव बारवई नयरी जेणेव रेवयगपव्वए जेणेव नदनवणे उज्जाणे जेणेव
सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ) अर्हन्
अरिष्टनेमि प्रभु अट्टार हजार श्रमणोनी साथे अने आलीस हजार आर्यिका

અશોકવરપાદપઃ=અશોકનામા મહાવૃક્ષઃ, તત્રેવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય 'અહાપહિરૂવ' યથાપતિરૂપ=મુનિજનકલ્પાનુસારમ્ અવગ્રહ=સ્થિત્યર્થં વસતેરાજ્ઞાં અવગૃહ્ણ =ગૃહીત્વા સયમેન તપસા ચાત્માન ભાવયન્ વાસયન્ વિહરતિ=આત્મેસ્મ । તદા વનપાલક સમાગત્ય કૃષ્ણાય વાસુદેવાય વર્ધાપનિના પ્રદત્તા । પરિપન્નિર્ગતા= દ્વારાવતી નગરી નિવાસિનાં જનાના પરિપત્ સમૂહઃ નિર્ગતા અરિષ્ટનેમિર્ભગવન્ સમાગત इति શ્રુત્વા ત વન્દિતુ દ્વારાવતીનગરીતો નિઃસૃતેત્યર્થઃ । સા પરિપદ્ ભગવન્ત વદિત્વા ધર્મ શ્રોતુ ભગવતઃ પુરોઽપરિથતા ધર્મઃ કથિતઃ અરિષ્ટનેમિના ભગવતા ધર્મકથા કથિતા ॥ સુ-૭ ॥

પરપરા કે અનુસાર-વિહાર કરતે હુએ યાવત્ જહાં વહ દ્વારાવતી નગરી થી ઉસમે જહા રૈવતક પર્વત થા-નદવન નામકા ઉદ્યાન યા । ઉસમેં મી જહા સુરપ્રિયયક્ષ કા યક્ષાયતન થા ઓર ઉસ મેં મી જહાં અશોક કા ઉત્તમ વૃક્ષ થા, વહાં પધારે (ઉવાગચ્છિત્તા અહાપહિરૂવ ઉગ્રહ ઓગિ- ણિહિત્તા સયમેણ તવસા અપ્પાણ ભાવેમાણે વિહરઈ) આકર કે ઉન્હોં ને મુનિજન કે કલ્પાનુસાર વનપાલ સે વસતિ કી આજ્ઞા પ્રાપ્ત કી-ઑર પ્રાપ્ત કર વે વહા તપ ઑર સયમ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ વિરાજમાન હો ગયે ઉસ મમય વનપાલકને આકર કે કૃષ્ણ વાસુદેવકો વધાર્દી । (પરિસા નિગયા ધમ્મો કહિઓ) દ્વારાવતીનગરી કે સમસ્ત જનોં કા સમૂહ-(અરિષ્ટનેમિ ભગવાન આયે હુએ હૈ) એમા સુનકર ઉન્હોં વદના કરને કે લિયે દ્વારાવતી નગરી સે નિકલે ।

ઓની સાથે પૂર્વાતુ પૂર્વોથી-એટલે કે તીર્થંકર પરપરા ને અનુસરતા વિહાર કરતા જ્યા તે દ્વારાવતી નગરી હતી, જ્યા રૈવતક પર્વત હતો, જ્યા નદવન નામે ઉદ્યાન હતું અને તેમા જ્યા સુરપ્રિય યક્ષતુ યક્ષાયતન હતું અને તેમા પણ જ્યા અશોકતુ શ્રેષ્ઠ વૃક્ષ હતું ત્યા પધાર્યા (ઉવાગચ્છિત્તા અહાપહિરૂવ ઉગ્રહ ઓગિણિહિત્તા સયમેણ તવસા અપ્પાણ ભાવેમાણે વિહરઈ) ત્યા પધારીને મુનિ જનોચિત પ્રણાલિકા મુજબ વનપાલક પાસેથી આજ્ઞા મેળવી અને આજ્ઞા મેળવીને ત્યા તપ અને સયમથી પેતાના આત્માને ભાવિત કરતા વિરાજ્યા તે વખતે વનપાલકે કૃષ્ણ વાસુદેવની પાસે જઈને તેમને શુભ સમાચારો આપ્યા (પરિસા નિગયા ધમ્મો કહિઓ) દ્વારાવતી નગરીન બધા નાગરીકોએ “અરિષ્ટનેમિ ભગવાન આત્રે પધાર્યા છે ” એવું સાંભળીને તેમની વદના કરવામાટે

मूलम्—तएणं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लच्छे
समाणे कोडुंवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । सभाए सुहम्माए मेघोघरसियं
गंभीरमहुरसद कोमुदीयं भेरि तालेह, तएणं ते कोडुंविय
पुरिसा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ट जाव मत्थए
अंजलिं कट्ठु-एव सामी । तहत्ति जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता
कण्हस्स वासुदेवस्स अतियाओ पडिनिक्खमंति पडिनिक्ख-
मित्ता जेणेव सहा सुहम्मा जेणेव कोमुदिया भेरी तेणेव उवा-
गच्छति, उवागच्छित्ता त मेघोघरसियं गंभीरं महुरसदं कोमु-
दियं भेरिं तालेंति । तओ णिद्धमहुरगंभीरपडिसुएणं पिव
सारएइण वलाहएणं पिव अणुरसियं भेरीए ॥सू० ८॥

टीका—‘तएण’ इत्यादि । ततः=तदनन्तर, खलु स कृष्णो वासुदेवोऽनया
भगवानरिष्टनेमिः समागत इत्येव रूपया कथया = वनपालकथितया कथया
‘लच्छे’ लब्धार्थः लब्धः=प्राप्तः, भगवदागमनरूपोऽर्थो येन स तथा, सन् कौडु
म्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अत्रा-

भगवान् को बदना कर वे सब धर्म सुनने की अभिलाषा से भगवान्
के सामने बैठ गये । प्रभुने उन्हें धर्म का उपदेश दिया । “सूत्र “ ७ ”

तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेव ने
(इमीसे कहाए लच्छे समाणे) वनपाल के मुख से अरिष्ट नेमि प्रभुका
आगमन रूप अर्थ विदित कर (कौडुवियपुरिसे सदावेइ) कौडुम्बिक

सावणवानी ध्विछाथी तेमनी सामे जेसी गया प्रभुजे पण तेमने उपदेश
आये ॥ सूत्र “ ७ ” ॥

तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थार आह (से कण्हे वासुदेवे) कृष्ण वासुदेवे (इमीसे
कहाए लच्छे समाणे) वनपालकना भोथी अरिष्टनेमि प्रभुनी पधराभणीनी बात
का ३

દીત્-ભો દેવાનુપ્રિયા 'સ્વિપ્પામેવ' ક્ષિપ્રમેદ=શ્વપ્રમેદ સુધર્માયાં સભાયાંગત્વા
 'મેઘોઘરસિય' મેઘોઘરસિતા=મેઘોઘાના મેઘસમૂહાનાં રસિતમિવ રસિત ધ્વનિરિષ
 ધ્વનિર્યસ્યારતાં ગમ્भीરા=સા દ્રાં 'મહુરસદ્' મધુરશબ્દાં 'કૌમુદીય' કૌમુદિકાં
 ઉત્સવસૂચનાસમયે વાદનીયા કૌમુદિકા નામની શ્રીકૃષ્ણવાસુદેવસ્ય મેરી તાં, મેરિ=
 દુન્દુભિ 'તાલેહ' તાલયત=વાદયત । તતઃ=તદનન્તર સ્વલ્પ તે કૌટુમ્બિકપુરુષા
 કૃષ્ણેન વાસુદેવેનૈવમુક્તાઃ સન્તો હૃષ્ટાઃ યાવત્ દર્પવશવિસર્પદ્ હૃદયા મસ્તકેઽ-
 અજલિં કૃત્વા 'એવ સ્વામિન્ તથેતિ' યાવત્ 'હે સ્વામિન્ એવમેવ તથાઽસ્તુ'
 ઇત્યુવત્વા પ્રતિશૃન્વન્તિ=સ્વીકુર્વન્તિ । પ્રતિશ્રુત્ય આજ્ઞા સ્વીકૃત્ય કૃષ્ણસ્ય વાસુદે-
 વસ્યાન્તિકાત્=સમીપાત્ 'પલિનિક્ષમતિ' પ્રતિનિક્રામન્તિ=નિસરન્તિ । પ્રતિ-

પુરુષોંકો બુલાયા (સદાવિત્તા એવ વયાસી) બુલાકર ઉનસે એસા કહા-
 (સ્વિપ્પામેવ ભો દેવાણુપ્રિયા સભાએ સુહર્માએ) ભો દેવાનુપ્રિયો !
 તુમ લોગ શીઘ્ર હી સુધર્મા નામ કી સભા મે જાકર (મેઘોઘરસિયં
 ગમ્भीરમહુરસદ્ કૌમુદીય મેરિ તાલેહ) મેઘોકે સમૂહ જૈસી સાન્દ્ર મધુર
 શબ્દવાલી કૌમુદિક નામકી મેરી કો કિ જો ઉત્સવ કી સૂચના કે
 સમય વજાઈ જાતી હૈ વજાઓ । (તણ તે કૌટુમ્બિકપુરિસા કણ્હેણ વાસુ-
 દેવેણ એવ બુત્તા સમાણા હટ્ટ જાવ મત્થએ અજલિં કટ્ટુ એવ સામી !
 તહત્તિ જાવ પલિસુણેતિ) કૃષ્ણવાસુદેવ કી હસ પ્રકાર આજ્ઞા સુનકર
 વે કૌટુમ્બિક પુરુષ અધિક હર્ષિત એવ સતુષ્ટ્ હૂએ ઓર મસ્તક પર
 અજલિ રાખકર હે સ્વમિન્ ! જૈસી આપકી આજ્ઞા હૈ હમ વૈસા હી કરેગે
 એસા કહકર ઉન્હોંને ઉનકી આજ્ઞા સ્વીકાર કર લી (પલિસુણિત્તા
 કણ્હસ્સ વાસુદેવસ્સ અતિયાઓ પલિનિક્ષમતિ) આજ્ઞા સ્વીકાર કર

સાભળાને (કૌટુમ્બિકપુરિસે સદાવેદ) કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા (સદાવિત્તા
 એવ વયાસી) બોલાવીને તેમણે કહ્યું-(સ્વિપ્પામેવ ભો દેવાણુપ્રિયા ! સભાએ
 સુહર્માએ) હે દેવાનુપ્રિયો ! સત્વરે તમે સુધર્મા નામની સભામાં જઈને (મેઘોઘ
 રસિય ગમ્भीરમહુરસદ્ કૌમુદીય મેરિ તાલેહ) મેઘસમૂહના ગર્જન જેવી
 સાન્દ્ર મધુર શબ્દવાળી તેમજ ઉત્સવના વખતે વગાડવામાં આવતી કૌમુદિક
 નામની ભેરી ને વગાડો । (તણ તે કૌટુમ્બિક પુરિસા કણ્હેણ વાસુદેવે ણ એવ
 બુત્તાસમાણા હટ્ટ જાવ મત્થએ અજલિં કટ્ટુ એવ સામી ! તહત્તિ જાવ પલિસુણેતિ)
 કૃષ્ણ વાસુદેવની આવી આજ્ઞા સાભળીને કૌટુમ્બિક પુરુષો ખૂબજ હર્ષિત અને
 સતુષ્ટ થયા, તથા મસ્તકે અજલિ રાખીને કહેવા લાગ્યા,-“ હે સ્વામિન્ !
 આપની જેવી આજ્ઞા છે, તે પ્રમાણેજ અમે કરીશું આમ કહીને તેઓએ તેમની
 આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી “ પલિસુણિત્તા કણ્હસ્સ વાસુદેવસ્ય અતિયાઓ પલિનિક્ષમ

નિષ્ક્રામ્ય યત્રૈવ સુધર્માસભા, યત્રૈવ કૌમુદિકા ભેરી, વિદ્યતે તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગસ્ય તર્થ મેઘોઘરસિતા=ગમ્भीરા મધુરશબ્દા કૌમુદિકા ભેરી તાડયન્તિ=વાદ-યન્તિ । તતઃ = તદનન્તર ' નિદ્ધમહુરગભીરપડિસુણપિવ ' સ્નિગ્ધમધુરગમ્भीર પ્રતિશ્રુતેનૈવ-સ્નિગ્ધ=હૃદયહર્ષજનક મધુર ગમ્भीર પ્રતિશ્રુત=પ્રતિ-વનિર્યસ્ય સ તથા, તેનેય કેન ? ' સારહણ ' શારદિકેન શરન્કાલસમુદ્ભૂતેન ' વલાહણ પિવ ' વલાહકેનેવ=મેવેનેવ ' અણુરસિય ' અનુરસિતમ્-અનુગર્જિત મેર્યા, શાર-દિકમેઘગર્જિતવદ્ ભેરીધ્વનિર્જાત ઇત્યર્થઃ ॥ સૂ.૦૮ ॥

મૂલમ્-તણ તીસે કોમુદ્યાણ મેરિયાણ તાલિયાણ સમા-
ળીણ વારવડ્ઠિણ નયરીણ નવજોયણવિત્થિન્નાણ દુવાલસજોય-
ળાયમાણ સિંવાડગતિયચઠકચચ્ચરકંદરદરી વિવરકુહરગિરિસિ-
હર નગરગોઠરપાસાયદુવારભવણદેઠલપડિસુયસયસહસ્સ સંકુલં
કરેમાળે વારવડ્ઠ નયરિ સભિતર વાહિરિય સ્વઓ સમંતા સે

‘ફિર વે કૃષ્ણ વાસુદેવ કે પાસ સે ચલદિયે । (પડિનિક્કલમિત્તા જેણેવ સભા સુહમ્મા જેણેવ કોમુદિયા ભેરી-તેણેવ ઉવાગચ્છતિ) ચલકર વે ઉસ સુધર્મા સભા મેં જહા વહ કોમુદિક નામની ભેરી રહ્લી હુઈ થી વહાં ગયે, (ઉવાગચ્છિત્તા ત મેઘોઘરસિય ગમ્भीરમહુરસદ્કોમુદિય ભેરિ તાલેતિ) વહા જાકર ઉન્હોને ઉસ મેઘો કે સમૂહ જૈસી સાન્દ્ર ગમ્भीર મધુર શબ્દ વાલી કૌમુદિક ભેરી કો વજાયા (તઓ નિદ્ધમહુરગભીરપડિ-સુણ પિવ સારહણ વલાહણ પિવ અણુરસિય ભેરીણ) વજતે હી ઉસ ભેરી કી ધ્વની શરત્કાલીન મેઘ કી ગર્જના કે સમાન હુઈ । ॥સૂ-૮॥

મતિ” આજ્ઞા કાર્યા ળાદ તેઓ કૃષ્ણની પાસેથી બહાર નીકળ્યા ” “પડિકિક્કલ મિત્તા જેણેવ સભા સુહમ્મા જેણેવ કોમુદિયા ભેરી તેણેવ ઉવાગચ્છતિ-” અને ત્યાથી તેઓ સુધર્મા સભામા જ્યા કૌમુદિક નામની ભેરી મૂકેલી હતી ત્યા ગયા “ ઉવાગચ્છિત્તા ત મેઘોઘરસિય ગમ્भीર મહુરસદ્ કોમુદિય ભેરિ તાલેતિ ” ત્યા જઈને તેમણે મેઘસમૂહના જેવી સાન્દ્ર ગભીર અને મધુર શબ્દવાળી કૌમુદિક ભેરીને વગાડી “તઓ નિદ્ધમહુરગભીરપડિસુણ પિવ સારહણ વલાહણ પિવ અણુરસિય ભેરીણ ” તે ભેરીમાથી શરદ કતુના મેઘની જેમ ગભીર સાન્દ્ર ધ્વનિ એમર પ્રસરી ગયો ॥ સૂ.૮ ॥

सहे विप्पसरित्था । तएणं वारवईए नयरीए नवजोयणवि-
 तिन्नाए वारसजोयणायामाए समुद्धविजयपामोक्खा दसदसारा
 जाव गणिया सहस्साइं कोमुदियाए भेरीए सहं सोच्चा णिसम्म
 हट्टुट्टु० जाव पहाया आविद्ध वग्घारियमल्लदामकलावा अह-
 तवत्थचंदणोक्किन्नगायसरीरा अप्पेगइया हयगया एव गयगया
 रहसीया संदमाणीगया अप्पेगइया पायविहारचारेणं पुरिसव-
 गुरापारिक्खित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियं पाउब्भवित्था ।

तएणं से कण्हे वासुदेवे समुद्धविजयपामोक्खे दसदसारे
 जाव अंतियं पाउब्भमाणे पासह, पासित्ता हट्टुट्टु जाव कोडुं-
 वियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी खिप्पामेव भो देवा-
 णुप्पिया । चाउरंगिणी सेणं सजेह, विजय च गधहत्थिं
 उवट्ठवेह । ते वि तहत्ति उवट्ठवेति, जाव पज्जुवासंति ॥सू०९॥

टीका—‘तएण तीसे’ इत्यादि । ततः खलु तस्यां कौमुदिकाया भेर्या ताडि-
 ताया सत्या द्वारावत्या नगर्या नवयोजनविस्तीर्णाया द्वादशयोजनायामाया
 ‘सिधाडगतियचउक्कचच्चर’ कदरदरीविवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउर पासाय दुवार

‘तएण तीसे कोमुइयाए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तीसे को मुइयाए) उस कौमुदी (भेरियाए
 तालियाए समाणीयाए) भेरी के बजने पर (वारवइए नयरीए न वजोजन
 वित्थिन्नाए) द्वारावती नगरी के कि जो नव ९ योजन विस्तीर्ण (चौड़ी)
 तथा (दुवालसजोयणायामाए) १२ बारह योजन लंबी थी—(सिधाडगतिय
 चउक्क चच्चरकदरदरीविवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउरपासायदुवार) भ-

“त एण तीसे कोमुइयाए” इत्यादि ॥

टीकार्थ—“तएण” त्थार आह “तीसे कोमुइयाए” ते कौमुदी “भेरियाए
 तालियाए समाणीए” भेरीने “वारवइए नयरीए न वजोजन वित्थिन्नाए” नव
 योजन विस्तार पांचौली तेमज “दुवालसजोयणाए” आर येअन लाभी
 “सिधाडगतियचउक्कचच्चरकदरदरीविवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउरपासायदुवारभवन-

भवणदेउलपडिसुयसयसहससकुल ' शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरकन्दरादरीविवर-
कुहरगिरिशिखरनगरगोपुरप्रासादद्वारभवनदेवकुलप्रतिश्रुतशतसहससकुला शृङ्गा-
टकादि देवकुलान्ताः शब्दाः प्रसिद्धाः, तेषु प्रतिश्रुताना प्रतिज्वनीना यानि
शतमहस्राणि तैः सकुला = परिपूर्णा ता तथाविधा कुर्वन् द्वारावतीं नगरीं
' सन्निभतरवाहिरिय ' साम्यन्तरवाद्या सर्वतः-समन्तात् स शब्दः=भेरी शब्दः
' विष्पसरित्या ' विप्रासत्=विशेषेण प्रसृतः ।

ततः खलु द्वारावत्या नगरीं नवयोजनविस्तीर्णया द्वादशयोजनयामाया
समुद्रविजयपमुखा दशदशार्हा-यावत् गणिकासहस्राणि अत्र यावच्छब्दादयमर्थोऽ-
वगम्यते-वलदेवपमुखा पञ्च महावीराः, उग्रसेनादयः षोडशसहस्रप्रमिता राजान
सार्धत्रिकोटिसख्यका यादवकुमाराः, पण्डितसहस्रसख्यकाः शम्बादयो दुर्दान्ताः,
वीरसेनपमुखा एकविंशति सहस्रप्रमितावीराः, महानलसेनादयः पद्मपञ्चाशत् सह-
स्रप्रमाणा बलवन्तः, तथा-रुक्मिणीपमुखा द्वात्रिंशत्सहस्रपरिमितामहिला अनङ्गसे-
नादयोऽनेकसहस्रमुखका वाराहनाश्चेति । कौमुदीकायाभेर्याः शब्द श्रुत्वा

वण देउलपडिसुयसयसहससकुल करे माणे चारवड नयरि सन्निभतर-
वाहिरिय सव्वओ समता से सहे विष्पसरित्या) शृङ्गाटक, त्रिक,
चतुष्क, चत्वर, कदरा, दरी, विवर, कुहर, गिरीशिखर, नगर, गोपुर,
प्रासादद्वार, भवन, देवकुल, इन सब स्थानों में लाखों प्रति ध्वनियां
उठी उन लाखों प्रति-ध्वनियों से उस द्वारावती नगरी को भीतर
बाहिर सब प्रकार से सब तरफ से परिपूर्ण करता हुआ वह भेरी का
शब्द बहुत जल्दी डधर डधर फैल गया । (तएण चारवडैण नयरीण नव
जोयणवित्थिन्नाए चारसजोयणायामाए समुद्रविजयपामोक्खा दसदसारा
जाव गणियासहस्साइ कोमुदियाए भेरीए सह सोच्चा निसम्म हट्ट
तुट्ट जावण्हाया) इस के बाद ९ नव योजन चौड़ी और १२ चारह
योजन लंबी उस द्वारावती नगरी में समुद्रविजय आदि दश दशार्हों

देउलपडिसुयसयसहससकुल करेमाणे चारवड नयरि सन्निभतरवाहिरिय सव्वओ
समता से सहे विष्पसरित्या " द्वारावती नगरीना शृङ्गाटक त्रिक, चतुष्क,
चत्वर, कदरा, दरी विवर, कुहर, गिरिशिखर, नगर, गोपुर, प्रासाद
द्वार, भवन देवकुल आ अथा स्थानोभा ताओ पड्याओ यड्या लेरीना
ध्वनि से कडा पड्याओथी द्वारावती नगरीनी अहर अहार येभेर पूर्ण रूपे
प्रसरिने अघे व्याप्त थई गये " तएण चारवडैण नयरीण नव जोयणवित्थिन्नाए
चारसजोयणायामाए समुद्रविजयपामोक्खा दसदसारा जाव गणियासहस्साइ कोमु
दियाए भेरीए सह सोच्चा निसम्म हट्ट तुट्ट जाव ण्हाया " त्थार आह नव
योजन पड्याणी अने आर योजन लायी द्वारावती नगरीमा समुद्र विजय

નિશ્ચય=હૃદયેઽવધાર્ય હૃદાસ્તુષ્ટા યાવત્ સ્નાતાઃ 'આવિદ્ધવગ્ધારિયમલ્લદામકલાવા' આવિદ્ધવગ્ધારિયમાલ્યદામકલાવા આવિદ્ધઃ પરિધૃત 'વગ્ધારિયમલ્લદામકલાવા' પ્રલમ્બિત પુષ્પમાલ્યમુક્તાદિ દારાણા કલાપો યૈસ્તૈ પ્રલમ્બિતપુષ્પમાલ્યમુક્તાદિ દારધારિણ इत्यर्थः । 'वगधारिय' इति देशीशब्दः प्रलम्बितार्थकः । अहतवत्थचदणोकिन्नगायसरीरा 'अहतवत्थचन्दनोत्क्लिन्नगात्रशरीरा-अहतवत्स्त्राणि चन्दनोत्किन्नगात्राणि येषु तानि तथाभूतानि शरीराणि येषां ते तेषां शरीराणि नूतनवसनयुक्तानि चन्दनानुलिप्तावयवकानि आसन्नित्यर्थः । नूतनवसनचन्दनानुलेपधारिण इति यावत् । अप्येकके=अप्येके=केचन हयगताः अश्वारूढाः एव=एके

ને યાવત્ ગણિકા સાહસ્ર ને ભેરી કે શબ્દ કો સુનકર ઓર ઉસે હૃદય મેં અવધારિત કર ઘટુત હી અધિક હર્ષ સે એવ સતોષ સે યુક્ત હો સ્નાન કિયા-સ્નાન કર (આવિદ્ધવગ્ધારિયદામકલાવા) ઉન્હોં ને લઘી ૨ પુષ્પ માલાઓ સે યુક્ત મુક્તાદિ હારો કો પહિરા "વગ્ધારિય" શબ્દ પ્રલમ્બિત અર્થ કા વાચક દેશીય શબ્દ હૈ । (અહતવત્થ ચદણોક્લિન્નગાયસરીરા) નવીન ૨ વસ્ત્રોં સે એવ ચદન કે લેપ સે શરીર કો સજ્જિત કિયા । "જાવ ગણિયાસહસ્સાઈ" મેં જો (યાવત્) પદ આયા હૈ-વહ ઇસ વાત કો કહતા હૈ કિ સમુદ્ર વિજય આદિ દશ દશાહોં કે સાથ (બલદેવ પ્રમુખ, પાંચમહાવીરો ને ઉગ્રસેન આદિ ૧૬સોલહ હજાર રાજાઓને, ૩૥ સઢે ત્રીન કરોડ યદવ કુમારોને, ૬૦સાઠ હજાર દુર્દાન્ત શામ્બાદિકોંને ૨૧હક્કીસ હજાર વીરસેન પ્રમુખ વીરોં ને, ૫૬છપ્પન હજાર બલવત મહાસેનોદિકોંને તથા રુક્મિણી પ્રમુખ ૩૨ વત્તીસ હજાર મહિલાઓંને

વગેરે દશ દશાહોંએ અને ગણિકા સાહસ્રોએ ભેરીનો અવાજ સાભળીને અને તેને હૃદયમાં અવધારિત કરીને બહુજ હર્ષ તેમજ સતોષ યુક્ત થઈને સ્નાન કર્યું, સ્નાન કરીને "આવિદ્ધવગ્ધારિયદામકલાવા" તેમણે લાખી લાખી પુષ્પમાળાઓ વાળા મોતી વુગેરેના હારો ધારણ કર્યા-વાગ્ધારિય, શબ્દ પ્રલમ્બિત (લટકતી), અર્થને સૂચવનાર દેશીય શબ્દ છે "અહતવત્થ ચદણોક્લિન્નસરીરા" નવા નવા વસ્ત્રો તેમજ ચદનના લેપોથી પોતાના શરીરને તેમણે શણગાર્યું "જાવ ગણિયાસહસ્સાઈ" માં જે "યાવત્" શબ્દ છે, તે એમ સૂચવે છે કે સમુદ્રવિજય, વગેરે દશ દશાહોંની સાથે બળદેવ પ્રમુખ પાંચમહાવીરોએ, ઉગ્રસેન વગેરે સોળ-હજાર રાજાઓએ સાઠ વળુ કરોડ યાદવ કુમારોએ, ૬૦-હજાર દુર્દાન્ત શામ્બાદિકોંએ એકવીસ હજાર વીરસેન પ્રમુખ વીરોએ, ૫૬પ્પન હજાર બળવાન મહાસેન, વગેરેએ તેમજ રુક્મિણી પ્રમુખ બત્રીસ હજાર મહિલાઓએ પણ તેમની જોડા હિંમત અને સુખદ થઈને સ્નાન

केचिद् गजगताः गजारूढाः, रहसीयासदमाणीगया' रथशिबिकास्यन्दमानीगता
केचिद् रथारूढाः, केचित् 'सदमाणीगया' स्यन्दमानीगताः स्यन्दमानी=पाल
खीनाम्ना प्रसिद्धो यादनविशेषः, तामारूढाः, अप्येनके=केचित् पादविहारचारेण
'पुरिसवगुरापरिखित्ता' पुरुषवगुरापरिक्षिताः पुरुषवृन्देन युक्ताः सभूय कृष्णस्य
वासुदेवस्यान्तिके प्रादुर्भवुः समागताः। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः समुद्र-
विजयप्रमुखान् दशदशार्हान् यावत् अन्तिके प्रादुर्भवतः समागतान् पश्यति, दृष्ट्वा
दृष्टुष्टोऽतिशयेन प्रमुदित कृष्णवासुदेव कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा
चैव वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-भो देवानुप्रिया! क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव, चतुरङ्गिणीं

भी उनके जैसा ही हर्षित एव सत्पुष्ट हो सब कुछ किया। (अप्पेगइया
हय गया एव गयगया रहसिया सदमाणीगया) इनमें कितनेक घोड़ों
पर बैठकर कितनेक हाथियोंपर बैठकर, कितनेक रथोंपर बैठकर कितनेका
शिबिका, स्यन्दमनी-पालखी-पर बैठकर (अप्पेगइयापायविहरचारेण
पुरिसवगुरापरिखित्ता) कितनेक अनेक पुरुषों से युक्त होकर पाद
विहार चारीगण-पैदल ही (कण्हस्स वासुदेवस्स अतिय पाउब्भवित्था)
कृष्ण वासुदेव के पास प्रादुर्भूत हुए-आ गये। (तएण से कण्हे वासु-
देवे समुद्रविजयपामोक्खे दस दसार जाव अतिय पाउब्भमाणे पासइ)
इस तरह जब उन कृष्ण वादेवने समुद्रविजय आदि दश दशार्हों को
यावत् अपने पास में प्रादुर्भूत हुआ देखा तो (पामित्ता) देखकर
(हट्ट तुट्ट जाव कोडुबियपुरिसे सदावेइ) हर्षित हो यावत् कौटुम्बिक
पुरुषों को बुलाया (सदावित्ता एव वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा

कथुं, अने भान पछी पोताना शरीरने वओ, देखे तेमए डारे वगेरेथी
थी शणुगार्था अप्पेगइया हयगया एव गयगया रहसीया सदमणीगया"
आमाथी डेटलाक घोडाओ। उपर सवार थधने डेटलाक डायीओ। उपर जेभीने
डेटलाक रथोभा जेभीने डेटलाक शिबिका, अने पालभीभा जेसीने "अप्पेगइया
पायविहरचारेण पुरिसवगुरा परिखित्ता" डेटलाक अनेक भाणुमेनी साथे
पगे आनीने "कण्हस्स वासुदेवस्स अतिय पाउब्भवित्था" कृष्ण वासुदेवनी
पामे डान्हे थया "तएण से कण्हे वासुदेवे समुद्रविजयपामोक्खे दसदसार
जाव अतिय पाउब्भमाणे पासइ" आ रीते कृष्णवासुदेवे समुद्रविजय वगेरे
दश दशार्हो वगेरे ते पोतानी पासे उपस्थित थयेला जेथा अने "पामित्ता"
जेधने "हट्टतुट्ट जाव कोडुबियपुरिसे सदावेइ" डर्षित थधछे कौटुम्बिक पुरुषोने
ओलाव्या "सदावित्ता एव वयासी" ओलावीने तेमणे आ प्रभाणे कहु "खित्पा

ગજાશ્વરથપદાદિયુક્તાં સેનાં સજ્જયત, વિજય = વિજયનામાન ચ ગન્ધર્થરિતનમ્
 ‘ ઉવદ્વેહ ’ ઉપરથાપયત = મણ્ડનાદિના મુસડીકૃત્ય સ્માનયત । તેઽપિ = કૌટુ-
 મ્બિક પુરુષા અપિ, કૃષ્ણવાસુદેવાર્જાં શ્રુત્વા ‘ તથાઽસ્તુ ’ ઇત્યુક્ત્વા તથૈવોપસ્થાપ-
 યન્તિ = આનયન્તિ, યાવત્ પર્યુપાસતે ॥ સૂ. ૧ ॥

મૂલ-થાવચ્ચાપુત્તે વિ ણિગ્ગણ જહા મેહેતહેવ ધમ્મં સોચ્ચા
 ણિસમ્મ જેણેવ થાવચ્ચા ગાહાવડ્ઢી તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવા-
 ગચ્છિત્તા પાયગ્ગહણ કરેઈ, જહા મેહરસ તહા એવ ણિવેયણા,
 જાહે નો સચાણ્ઠ વસયાણુલોમાહિ ય વસયપડિકૂલાહિ ય
 વહૂહિ આઘવણાહિ ય પન્નવણાહિય સન્નવણાહિ ય વિન્નવણાહિ
 ય આઘવિત્તણ વા ૪ તાહે અકામિયા એવ થાવચ્ચાપુત્તસ્સ
 નિવલ્લમણમણુમન્નિત્થા ।

તણ સા થાવચ્ચા આસણાઓ અબ્બુદ્દેઈ, અબ્બુદ્દિત્તા મ-
 હ્થ મહગ્ધ મહરિય રાયરિહ પાહુડ ગેણ્ઠઈ, ગિણિહિત્તા મિત્ત
 જાવ સપરિવુડા જેણેવ કર્ણહસ્સ વાસુદેવસ્સ ભવણવરપડિદુવાર-

(ચિપ્પામેવ ભો દેવાણુપ્પિયા । ચાઉરગિણી સેણ સજ્જેહ) ભો દેવાનુપ્રિ-
 યો । તુમ લોગ શીઘ્ર હી ચતુરગિણી સેના કો સજ્જિત કરો (વિજય ચ
 ગધર્થરિત્થિ ઉવદ્વેહ) ઔર વિજય નામ કે ગધ હસ્તી કો વેષ ભૂષા સે
 મણ્ડિત કર ઉપસ્થિત કરો (તે વિ તહસ્સિઉવદ્વેતિ) ઉન કૌટુમ્બિકપુરુષો
 ને ભી કૃષ્ણ વાસુદેવ કી ઓજા સુન (તથાસ્તુ) એસા કહકર વૈસા હી
 કિયા યાવત્ ઉનકી પર્યુપાસના કી ॥ સૂ-૧ ॥

મેવ ભો દેવાણુપ્પિયા ! ચાઉરગિણી સેણં સજ્જેહ ” ડે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સત્વરે
 ચતુરગિણી સેના તૈયાર કરો “ વિજય ચ ગધર્થરિત્થિ ઉવદ્વેહ ” અને વિજય
 નામક ગધ હાથીને સુદર વેષમાં સજ્જ કરીને ઉપસ્થિત કરો “ તે વિ તહસ્સિ
 ઉવદ્વેતિ જાવ પજ્જુવાસતિ ” તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ કૃષ્ણ વાસુદેવની આજ્ઞા
 સાભળીને (તથાસ્તુ) આમ કહીને તેમની આજ્ઞા મુજબ કર્યું અને તેમની
 પર્યુપાસના કરી ॥ સૂત્ર ૬ ॥

देसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडिहारदेसिएणं
मग्गेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
करयल० वट्ठावित्ता तं महत्थं महग्घं महारियं रायरिहं पाहुडं
उवणेइ, उवणित्ता एवं वयासी ॥ १० ॥

टीका—‘ थावच्चापुत्ते वि ’ इत्यादि । अथ स्थापत्यापुत्रोऽपि निर्गतः =
भगवन्तमरिष्टनेमिं वदितुं स्मृद्वाचिःसूत इत्यर्थः । यथा मेघ = मेघकुमारः, तथैव
धर्मं श्रुत्वा निश्चय्य, यत्रैव स्वजननी स्थापत्या गाथापत्नी वर्तते, तत्रैवोपागच्छति
उपागत्य पादग्रहणं करोति मातृशरणयोः पततिस्मेत्यर्थः । यथा मेघस्य = मेघकुमा-
रस्य प्रवृज्यार्थं निवेदना प्रार्थनाऽभूत् तथैव स्थापत्यापुत्रस्य निवेदना मातुर-
न्तिकेऽभवदित्यर्थः ।

‘ थावच्चापुत्ते वि णिग्गए ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(थावच्चापुत्ते वि णिग्गए) स्थापत्यापुत्र भी भगवान् अरि-
ष्टनेमि प्रभुके वदना करनेके लिये अपने घरसे निकला (जहा मेहे तहेव
धम्म सोच्चा णिसम्म जेणेव थावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता पायगहण करेइ, जहामेहस्स तहा चेव णिवेयणा) जिस
प्रकार मेघकुमार ने धर्म का श्रमण किया था उसी प्रकार स्थापत्या
पुत्र ने प्रभु अरिष्टनेमी भगवानके पास धर्मोपदेश सुना और सुनकर
जहा अपनी माता स्थापत्या गाथापत्नी थी वहां गया । जाकर उसने
उसके दोनो चरण पकड़ लिये—उसके दोनो चरणोंमें वह गिर गया—
और जिस प्रकार प्रवृज्या के लिये मेघ कुमार ने प्रार्थना की थी उसी

“ थावच्चापुत्ते वि णिग्गए ” इत्यादि ॥

टीकार्थ—“थावच्चापुत्त वि णिग्गए” स्थापत्या पुत्र पणु भगवान् अरिष्टनेमिने
वदन् धरवा भाटे पोताने घेरथी नीळये। “जहा मेहे तहेव धम्म सोच्चा णिसम्म
जेणेव थावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पायगहण करेइ, जहामेहस्स
तहाचेव णिवेयणा” मेघ कुमारे जेभ धर्म्मनु श्रवणु कथुं उतु तेभज्ज स्थापत्य
पुत्रे पणु प्रभुने अरिष्टनेमि भगवाननी पासैथी धर्म्मने उपदेश सालये। अने
सालयेया पछी त्या तेनी माता स्थापत्या गाथा उती त्या गये। जेधने तेणे
माताना अने पण पछी लीधा ते तेना पणोमा आणोटी गये। अने जेभ मेघकुमारे
प्रवज्ज्या भाटे पोताना मातापिताने विनती करी उती तेभज्ज तेणे पणु करी

यदा स्थापत्या गाथापत्नी स्वपुत्र 'नो संचाएइ' नो शक्नोति अस्य 'आघवित्तए' इत्यादिना सम्बन्धः । विषयानुलोमाभि = विषयानुकूलाभिः-वर्गिभिश्च, तथाहि — विषयभोग एव मनुष्यलोके साराशस्तदर्थमेव सर्वे जनाः प्रवर्तन्ते उक्तञ्च—

“ यदि रामा यदि च रमा, यदि तनयो विनयधीगुणोपेतः ।

तनये तनयोत्पत्तिः, सुरवरनगरे विमाधिवयम् ॥ १ ॥ ”

तथा—विषयप्रतिकूलभिः विषयाः = कामभोगास्तत्प्रतिकूलास्तत्प्रतिषेधेन सद्भावितस्तपः सयमास्तत्सम्बन्धिनीभिः लक्षणया विषयप्रतिकूलसम्बन्धिरूपोऽर्थः प्रतिबोध्यते । तपः सयमादिक खलु बालुका कवलवन्निरास्वादम् असिधारो परिगमनमिव सिक्थकदन्तैर्लोहमयचणकचर्वणमिवकरेण दीप्ताग्निशिखाग्रहणमिव मेरुगिरितोलनमिव सुदुष्कर भुजाभ्या समुद्रतरणमिवातिदुष्करमित्येव तपः सयमभयोद्वेगकारिणीभिर्वाग्भिरित्यर्थः । वहीभिराख्यापनाभि = बहुविधैराख्यानैः सामान्यतः कथनैश्च, प्रज्ञापनाभिः=विशेषतः कथनैश्च, सज्ञापनाभिः सवोधनाभिः

प्रकार से इसने भि कि (जाहेणो सचाएइ विसयाणुलोमाहि य पड्डीकूलाहि य बहूहिं आघवणाहिं य पन्नवणाहिं य सन्नवणाहिय विन्नवणाहि य आघवित्तएवा ४) स्थापत्या गाथापत्नी ने उसे विषयानुकूल तथा विषयों के प्रतिकूल आदि वचनों द्वारा खूब २ समझाया—परन्तु वह उन विषयानुकूल विषय प्रतिकूल अनेक विध आख्यानों द्वारा—सामान्य कथनों द्वारा—प्रज्ञापनाओं द्वारा विशेष कथनों द्वारा सज्ञापनाओं द्वारा—सवोधन पूर्वक कथनों द्वारा विज्ञापनाओं द्वारा तुम ही इस वृद्धावस्था में मेरे लिये आधार भूत हो इत्यादिरूप प्रेमसहित दीन वचनों द्वारा उसे सामान्यरूप से समझाने के लिये विशेष रूप से समझाने के लिये, विज्ञापित करने के लिये सज्ञापित करने के लिये समर्थ नहीं हुई—

“जाहे णो सचाएइ विसयाणुलोमाहि य पड्डीकूलाहिय, बहूहिं आयवणाहिय पन्नवणाहिय सन्नवणाहिय विन्नवणाहिय आघवित्तए वा” ४ स्थापत्या गाथापत्नीजे पोताना पुत्र विषयानुकूल तेमज विषयेने प्रतिकूलजेवी धण्णी वातो कडीने पूण समज्जन्थो, पणु ते विषयानुकूल विषयप्रतिकूल अनेक आख्याने वडे, सामान्य कथने वडे, प्रज्ञापनाजे वडे, विशेष कथने वडे, सज्ञापनाजे वडे, सवोधन पूर्वक कथने वडे, विज्ञापनाजे वडे, (तमेज आ धउपणुमा मारे आधार छे) वगेरे प्रेमयुक्तदीन वचने वडे पोताना पुत्रने ते सामान्य रूपथी समज्जववा भाटे, विशेष रूपथी समज्जववाने भाटे, विज्ञापित करवाने भाटे सज्ञापित करवा भाटे समर्थ थछ शक्ती नहिं ओटले के आख्यान वगेरे यार ज्ञातना

सबोध्य कथनैश्च, विज्ञापनाभिः त्वमेव ममास्या वृद्धावस्थायामाधारोऽसि अवलम्बनमसीत्यादि रूपेण सप्रेमदीनवचनेन पुनः पुनर्विज्ञप्तिपूर्वककथनैः, अत्र-विषयानुकूलभिराख्यानादिरूपाभिश्चतुर्विधाभिर्वाग्भिस्तथा विषयप्रतिकूलभिराख्यानादिरूपाभिश्चतुर्विधाभिर्वाग्भिरिति भावः । 'आघवित्तए वा' आख्यातु वा, प्रज्ञापयितु वा, विज्ञापयितु वा सज्ञापयितु वा । यदा स्थापत्या स्वपुत्रमाख्यानादिभिः प्रतिबोधयितु प्रव्रज्यातो निवर्तयितु न शक्नोति स्मेति सक्षिप्तार्थः । तदा सा 'अकामिया चेव' अकामिकैव=अनिच्छावत्येव स्थापत्यापुत्रस्य-स्थापत्यापुत्रनाम्नः स्वतनयस्य निक्खमणमणुमन्नित्था' निष्क्रमणमन्वमन्यत = अनिच्छया प्रव्रज्याग्रहणार्थमाज्ञा प्रदत्तवतीत्यर्थः ।

ततः=तदनन्तर खलु सा स्थापत्यागाथापत्नी आसनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय, 'महत्थ' महार्थ=महाप्रयोजनक, 'महग्घ' महार्घ=बहुमूल्यक, 'महरिह' महार्ह=महता श्रेष्ठपुरुषाणा योग्य, 'रायरिह' राजार्ह=राज्ञा योग्य, 'पाहुण्ड' प्राभृतम्=उपहार 'भेट' इति भाषा प्रसिद्ध गृह्णाति, गृहीत्वा मित्र-यावत् संपरिवृता=अत्र यावच्छब्देन-ज्ञातिनिजरुस्वजनसम्बन्धिपरिजनैरित्यस्य सग्रहः यत्रैव

अर्थात् आख्यान आदि चतुर्विधवचनों द्वारा जो कि विषयानुकूलता तथा विषयप्रतिकूलता के प्रदर्शक थे जब वह स्थापत्या गाथापत्नी उसे समझाने एवं प्रव्रज्या से निवर्तिन करने के लिये असमर्थ हुई (तर्हे अकामित्ता चेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणमणुमन्नित्था) तब उसने विना इच्छा के ही स्थापत्यापुत्र को प्रव्रज्या ग्रहण करनेकी आज्ञा दे दी (तएण सा थावच्चा आसणाओ अब्भुट्ठेह) बाद में वह स्थापत्या अपने आसन से स्थान से- उठी- (अब्भुट्ठित्ता महत्थ महग्घ महरिह रायरिह पाहुण गेण्हइ) उठकर उसने महार्थसाधक, श्रेष्ठ पुरुषों के, तथा राजाओं के योग्य बहुत कीमती- उपहार लिया- (गिण्हित्ता) लेकर वह (मित्तजाव सपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स) मित्र आदि परिजनों

वचनो द्वारा के जेओ विषयने अनुक्षण तेमज विषयने प्रतिकूल छता स्थापत्या पत्नी समझवीने प्रव्रज्या देता पोताना पुत्रने अटकाववामा समर्थ थई शकी नहि "तर्हे अकामित्ता चेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणमणुमन्नित्था" त्थारे तेणे धम्मा न होवा छता प्रव्रज्या अडणु करवानी तेने आज्ञा आपी त्थारे स्थापत्या पछी पोताना आसनेथी उली थई (अब्भुट्ठित्ता महत्थ महग्घ महरिह रायरिह पाहुण गेण्हइ) उली थईने महार्थसाधक, उत्तम पुरुषोने तेमज राज्ञोने योग्य अहु किमती लेट लीधी (गिण्हित्ता) लईने ते (मित्तजाव सपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स) मित्र वगैरे परिजनोनी साथे

यदा स्थापत्या गाथापत्नी स्वपुत्र 'नो सचाण्ड' नो शक्नोति अस्य 'आघवित्तए' इत्यादिना सम्बन्धः । विषयानुलोमाभिः = विषयानुकूलाभिः-वाग्भिश्च, तथाहि - विषयभोग एव मनुष्यलोके साराशस्तदर्थमेव सर्वे जनाः प्रवर्तन्ते उक्तञ्च—

“ यदि रामा यदि च रमा, यदि तनयो विनयधीगुणोपेतः ।

तनये तनयोत्पत्तिः, सुरवरनगरे विमाधिवयम् ॥ १ ॥ ”

तथा—विषयप्रतिकूलभिः विषयाः = कामभोगास्तत्प्रतिकूलस्तत्प्रतिषेधेन सद्भावनिस्तपः सयमास्तत्सम्बन्धिनीभिः लक्षणया विषयप्रतिकूलसम्बन्धिरूपोऽर्थः प्रतिबोध्यते । तपः सयमादिक खलु बालुका कवलवन्निरास्वादम् असिधारो परिगमनमिव सिक्थकदन्तैर्लोहमयचणकचर्वणमिवकरेण दीप्ताग्निशिखाग्रहणमिव मेरुगिरितोलनमिव सुदुष्कर भुजाभ्यां समुद्रतरणमिवातिदुष्करमित्येव तपः सयमभयोद्वेगकारिणीभिर्वाग्भिरित्यर्थः । बह्वीभिराख्यापनाभिः = बहुविधैराख्यानैः सामान्यतः कथनैश्च, प्रज्ञापनाभिः=विशेषतः कथनैश्च, सज्ञापनाभिः सवोधनाभिः

प्रकार से इसने भि कि (जाहे णो सचाण्ड विसयाणुलोमाहि य पड्डीकूलाहि य बहूहि आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहिय विन्नवणाहि य आघवित्तएवा ४) स्थापत्या गाथापत्नी ने उसे विषयानुकूल तथा विषयों के प्रतिकूल आदि वचनों द्वारा खूब २ समझाया-परन्तु वह उन विषयानुकूल विषय प्रतिकूल अनेक विध आख्यानो द्वारा-सामान्य कथनो द्वारा-प्रज्ञापनाओ द्वारा विशेष कथनो द्वारा सज्ञापनाओं द्वारा-सवोधन पूर्वक कथनों द्वारा विज्ञापनाओं द्वारा तुम ही इस वृद्धावस्था में मेरे लिये आधार भूत हो इत्यादिरूप प्रेमसहित दीन वचनो द्वारा उसे सामान्यरूप से समझाने के लिये विशेष रूप से समझाने के लिये, विज्ञापित करने के लिये सज्ञापित करने के लिये समर्थ नहीं हुई—

“जाहे णो सचाण्ड विसयाणुलोमाहि य पड्डीकूलाहिय, बहूहि आयवणाहिय पन्नवणाहिय सन्नवणाहिय विन्नवणाहिय आघवित्तए वा” ४ स्थापत्य गाथापत्नीये पोताना पुत्र विषयानुकूल तेभञ्ज विषयेने प्रतिकूलयेवी धणुी वातो कहीने भूण समन्तव्यो, भणु ते विषयानुकूल विषयप्रतिकूल अनेक आख्यानो वडे, सामान्य कथनो वडे, प्रज्ञापनाओ वडे, विशेष कथनो वडे, सज्ञापनाओ वडे, सवोधन पूर्वक कथनो वडे, विज्ञापनाओ वडे, (तमेञ्ज आ घडपणुमा भारो आधार हो) वगेरे प्रेमयुक्तदीन वचनो वडे पोताना पुत्रने ते सामान्य रूपथी समन्तववा भाटे, विशेष रूपथी समन्तववाने भाटे, विज्ञापित करवाने भाटे सज्ञापित करवा भाटे समर्थ थर् शकी नहि ओटवे के आख्यान वगेरे यार जतना

मूलम्—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम एगे पुत्ते थावच्चापुत्ते नाम दारए इट्ठे जाव से णं ससारभयउव्विग्गे इच्छइ, अरहओ अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए, अहण्ण निक्खमणसक्कारं करेमि, इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्तस्स निक्खममाणस्स छत्तमउडचामराओ य विदिन्नाओ, तएणं कण्हे वासुदेवे थावच्चा गाहावइणी एव वयासी—

अच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिए सुनिव्वया वीसत्था, अहण्ण सयमेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणसक्कारं करिस्सामि, तएण से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीए सेणाए विजयं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावइणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वयासी—
मा ण तुमे देवाणुप्पिया ! मुंडे भवित्ता पव्वयाहि, भुंजाहि णं देवाणुप्पिया ! विउले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छायापरिग्गहिए, केवल देवाणुप्पियस्स अह णो संचाएमि वाउकायं उवरिमेण गच्छमाणं निवारित्तए, अण्णे णं देवाणुप्पियस्स जे किंचिविआवाहं वा वावाहं वा उप्पाएति तं सब्ब निवारोमि ॥११॥

टीका—‘एव खलु’ इत्यादि । एवम् = अमुना प्रकारेण, खलु निश्चये हे देवानुप्रिय ! ममैकः=एक एव पुत्रः स्थात्यापुत्रो नाम दारक अङ्गजात, इष्ट

‘एस खलु देवाणुप्पिया’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रिय ! (एव खलु) मैं आप के पास इसलिये आई हूँ— कि (मम एगे पुत्ते थावच्चा पुत्ते नाम दारए) मेरा

(एस खलु देवाणुप्पिया इत्यादि) ।

टीकार्थ—(देवाणुप्पिया !) हे देवानुप्रिय ! (एव खलु) हु, आपनी यासे ओटला भाटे आवी हु—उ (मम एगे पुत्ते थावच्चा पुत्ते नाम दारए) भासे स्था-

કૃષ્ણવાસુદેવસ્ય ' ભવગવરપહિદુવારદેસમાણ ' મવનવરમતિદ્વારદેશમાગઃ મવન-
વરસ્ય મધાનપ્રાસાદસ્ય મતિદ્વારં વૃહદ્ દ્વારાતરાલવર્તિલઘુદ્વાર તસ્ય દેશમા-
ગોઽસ્તિ, તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સા પ્રતીહારદેશિતેન દ્વારપાલપ્રદર્શિતેન
માર્ગેણ યતૈવ કૃષ્ણવાસુદેવસ્તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સા કરતલપરિગૃહીતદશ-
નસ્યા મસ્તકે અઞ્જલિં કૃત્વા જયેન વિજયેન ચ વર્ધાપતિ, વર્ધાપયિત્વા તન્મહાર્થ
મહાર્થ મહાર્હ રાજાર્હ પ્રાપ્તમ્ ઉપનયતિ=કૃષ્ણવાસુદેવસ્યામિમુખે સ્થાપયતિ, ઉપ-
નીય = ઉપહાર કૃષ્ણવાસુદેવસ્યાગ્રે નિધાય, એવ=વક્ષ્યમાણમકારેણ અવાદીત્ =
ઉક્તવતી ॥ સૂ. ૧૦ ॥

સે યુક્ત હોકર જહા કૃષ્ણ વાસુદેવ કે (ભવગવરપહિદુવારદેસમાણ તેણેવ ઉવાગચ્છહ) પ્રધાન પ્રાસાદ કા વહે દરવાજે અન્દર લઘુદ્વાર કા દેશ ભાગ થા વહા ગઈ (ઉવાગચ્છિત્તા પહિદ્વારદેસિણ મગ્ગેણ જેણેવ કળ્હે વાસુદેવે તેણેવ ઉવાગચ્છહ) વહા જાકર દ્વારપાલ દ્વારા પ્રદર્શિત માર્ગ સે હોકર વહ જહા કૃષ્ણ વાસુદેવ થે વહા ગઈ (ઉવાગચ્છિત્તા કરચલ૦ વદ્ધાવેહ) વહા જાકર ઉસને દોનોં હાથો કો અજલિ રૂપ મેં જોડકર ઔર ઉસ મસ્તક પર રચ કર જય વિજય શબ્દો કા ઉચ્ચારણ કરતે હુણ ઉન્હેં વધાર્હ દી (વદ્ધાવિત્તા ત મહત્થ મહગ્થ મહરિહ રાયરિહ પાહુડ ઉવણેહ) વધાર્હ દેકર ઉસને ફિર મહાર્થસાધક મહાર્થ મહર્તા યોગ્ય એવ રાજાઓં કે લાયક ઉસ મેટ કો રાજાકે સમક્ષ રચ દ્રિયા । (ઉવણિત્તા એવ વયાસી) રચ કર ફિર ઉનસે એસા કહા— સૂત્ર “ ૧૦ ”

કૃષ્ણ વાસુદેવના (ભવગવરપહિદુવારદેસમાણ તેણેવ ઉવાગચ્છહ) ન્યા પ્રધાન મહેલ ના મુખ્ય દરવાજાની અંદરના લઘુદ્વારનો દેશ ભાગ હતો ત્યાં ગઈ (ઉવાગચ્છિત્તા, પહિદ્વારદેસિણ મગ્ગેણ જેણેવ કળ્હે વાસુદેવે તેણેવ ઉવાગચ્છહ) ત્યાં જઈને તે દ્વારપાલવડે ખતાવવામાં આવેલા મર્ગથી ન્યા કૃષ્ણ વાસુદેવ હતા ત્યાં ગઈ (ઉવાગચ્છિત્તા કરચલ૦ વદ્ધાવેહ) ત્યાં જઈને તેણે ખેલાના હાથોને અજલીના આકારે ખનાવીને તેમને જય વિજય શબ્દો બોલતા કૃષ્ણ વાસુદેવને વધાવ્યા (વદ્ધાવિત્તા ત મહત્થ મહગ્થ મહરિહ રાયરિહ પાહુડ ઉવણેહ) વધાવ્યા પછી સ્થાપત્યાએ મહાર્થસાધક મહાર્થ-સોટા માણસોને યોગ્ય- અને રાજાઓને લાયક તે ભેટને તેમની સામે મૂકી (ઉવણિત્તા એવ વયાસી) મૂકીને તેણે તેમને કહ્યું ॥ સૂ-૧૦ ॥

इति सम्बन्धः । अहं खलु स्वयमेव स्थापत्यापुत्रस्य निष्क्रमणसत्कारं करिष्यामि । ततः खलु स कृष्णवासुदेवश्चतुरङ्गिण्या सेनया सह विजय=विजयनामान गन्धहस्तिरत्नं यस्य गन्धसमाग्राय पलायन्ते गजाः परे । दूरुढ =समारुढः सन् यत्रैव स्थापत्याया गाथापत्या भवनं वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च स्थापत्यापुत्रम् एव = वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—देवानुप्रिय ! त्वं मुण्डो भूत्वा मां खलु मन्त्रज, दीक्षाग्रहणं मां कुरु इति सम्बन्धः । हे देवानुप्रिय ! त्वं खलु विपुलान् =बहुतरान् मानुष्यान्=मनुष्यसम्बन्धिनः कामभोगान् = शब्दादिविषयानुभवान्

गाहावहणीं एव वयासी) स्थापत्या गाथापत्नी की इस बात को सुनने के बाद कृष्णवासुदेव ने स्थापत्यागाथापत्नी से इस प्रकार कहा— (अच्छा ही न तुम देवाणुप्पिए ! सुनिव्वुया वीसत्था, अहण्ण सयमेव थावच्चापुत्तस्स निष्क्रमणसत्कारं करिस्सामि) हे देवानुप्रिये ! तुम इस विषय में निश्चिन्त होकर—स्वस्थ और विस्वस्थ होकर—बैठो, मैं स्वयं स्थापत्या पुत्र का निष्क्रमण सत्कार करूँगा । (तएण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणीए सेणाए विजय हत्थिरयण दूरुढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावहणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ) ऐसा कहने के बाद वे कृष्ण वासुदेव चतुरगिणी सेना के साथ विजय नामके हस्ति रत्न पर आरुढ हो कर जहा स्थापत्यागाथापत्नी का भवन था वहा गये । (उवागच्छित्ता थावच्चापुत्त एव वयासी) जाकर उन्होंने स्थापत्या पुत्र से इस प्रकार कहा— (माण तुम देवाणुप्पिया ! मुडे भवित्ता पव्वयाहि) हे देवानुप्रिय ! तुम मुण्डित होकर दीक्षा ग्रहण मत करो

गाहावहणीं एव वयासी) स्थापत्या गाथापत्नी आवातने सावणीने कृष्णवासुदेवे स्थापत्यागाथापत्नीने कहु (अच्छा ही न तुम देवाणुप्पिए ! सुनिव्वुया वीसत्था अहण्ण सयमेव थावच्चापुत्तस्स निष्क्रमणसत्कारं करिस्सामि) हे देवानुप्रिये ! तमे आ विषे निश्चित, स्वस्थ अने विस्वस्थ रहो । तुम स्थापत्यापुत्रने निष्क्रमण उत्सव करीश । (तएण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणीए सेणाए विजय हात्थिरयण दूरुढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावहणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ) तयार पछी कृष्णवासुदेव चतुरगिणी सेनानी साथे विजयनामान उत्तम डायी उपर सवार थई ते जया स्थापत्यागाथापत्नीनु भवन छतु त्या गया । (उवागच्छित्ता थावच्चापुत्त एव वयासी) त्या जईने तेभण्णे स्थापत्या पुत्रने आ प्रमाणे कहु—(माण तुम देवाणुप्पिया ! भवित्ता पव्वयाहि) हे देवानुप्रिय ! मुण्डित थई ने तमे दीक्षा स्वीकारो नहि । (मुजाहि न देवाणुप्पिया !

વલ્લભઃ યાવત્=અત્ર યાવચ્છબ્દેનાય પાઠોઽનુસન્ધેયઃ-કાન્તઃ=કમનીયઃ, પ્રિયઃ= પ્રીતિકારકઃ, મનોજઃ = હૃદયાવસ્થિતઃ, ઉદુમ્બરપુષ્પદર્શનમિત્ર દુર્લભઃ, વર્તતે, સ મમ પુત્રઃ સ્વલુ સસારભયોદ્વિગ્નઃ સન્ ઇચ્છતિ અર્હતોઽરિષ્ટનેમેઃ સમીપે યાવત્ પ્રવ્રજિતુમ્ । અહ સ્વલુ નિષ્ક્રમણસત્કાર દીક્ષોત્સવં કરોમિ, હે દેવાનુપ્રિય ! હે સ્વામિન ! અહમિચ્છામિ સ્વલુ સ્થાપત્યાપુત્રસ્ય નિષ્ક્રામનઃ = દીક્ષાગ્રહણ કુર્વતઃ છત્રચામરાણિ=છત્રચામરમુકુટાદીનિ વિતીર્ણાનિ ભવદ્ધિઃ પ્રદત્તાનિ ભવન્તુ ઇતિ, અહમેતદર્થે ભવતાં સમીપે સમાગતા યન્ તસ્મૈ છત્રચામરાદીનિ ભવન્તો વિતરન્તુ ઇતિ ભાવઃ ।

તત સ્વલુ કૃષ્ણવાસુદેવઃ સ્થાપત્યાગાથાપત્નીમેવમવાદીત્ । હે દેવાનુપ્રિયે ! ત્વ સ્વલુ સુનિર્વૃતા=સ્વસ્થા, વિસ્વસ્થા=વિશેષતઃ સ્વસ્થા, સુધીરા, આસ્સ્વ=તિષ્ઠ,

એક હી અજ્ઞજાત સ્થાપત્ય પુત્ર નામ કા પુત્ર હૈ । વહ (હટ્ટે જાવ સેળ સસારભયઽવિગ્ને) મુજે વલ્લભ હૈ । યાવત્ શબ્દ સે હસ પાઠ કા યહા સગ્રહ હુઆ હૈ- વહ વહુત અધિક કમનીય હૈ પ્રીતિકારક હૈ, મનો- જ હૈ, મેરે હૃદય મેં સ્થાન કિયે હુએ હૈ । ઓર ઉદમ્બર પુષ્પ કે દર્શન કે સમાન દુર્લભ હૈ । વહ મેરા પુત્ર સસારભય સે ઉદ્વિગ્ન હોકર (ઇચ્છઈ અરહઓ અરિષ્ટનેમિસ્સ જાવ પવ્વહત્તાઈ) અહત્ અરિષ્ટ નેમિ પ્રભુ કે પાસ દીક્ષિત હોના ચાહતા હૈ (અહણ નિષ્ક્રમણસત્કાર કરેમિ, ઇચ્છામિ ણ દેવાણુપ્પિયા ! થાવચ્ચાપુત્તસ્સ નિષ્કલમમાણસ્સ છત્તમ ઉહચામરાઓ ય વિ દિન્નાઓ) સો મૈ ઉસકા દીક્ષોત્સવ કરના ચાહતી હૈ । હસલિયે હે દેવાનુપ્રિય ! મૈ આપસે યહ ચાહતી હૈ કિ આપ મુજે ઉસ નિમિત્ત-નિષ્ક્રમણ સ્થાપત્ય પુત્ર કી દીક્ષોત્સવ કે નિમિત્ત છત્ર, ચામર ઓર મુકુટ આદિ દે દેવે । (તણ કળે વાસુદેવે થાવચ્ચા

પત્યાપુત્ર નામે એકનો એક પુત્ર છે તે (હટ્ટે જાવ સેળ સસાર ભય ઽવિગ્ને) મને પ્રિય છે અહીં (યાવત્) શબ્દથી આપાઠનો સગ્રહ થયો છે-તે ખૂબજ કમનીય (ઇચ્છવાયોગ્ય) છે, પ્રીતિકારક છે, મનોજ છે, મારા હૃદયમા તે સ્થાન પામેલો છે તેમજ ઉમરડાના પુષ્પના દર્શનની જેમ તે દુર્લભ છે તે સસારના ભયથી વ્યાકૂળ થઈ (ઇચ્છઈ અરહઓ અરિષ્ટનેમિસ્સ જાવ પવ્વહત્તાઈ) અર્હત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુથી દીક્ષિત થવા ચાહે છે (અહણ નિષ્કલમણસત્કાર કરેમિ, ઇચ્છામિ ણ દેવાણુપ્પિયા ! થાવચ્ચાપુત્તસ્સ નિષ્કલમમાણસ્સ છત્તમઉહચામ રાઓ ય વિદિન્નાઓ) હું તેનો દીક્ષાનો ઉત્સવ ઉજવવા ઇચ્છુ છું એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! આપ મને તે ઉત્સવ નિમિત્ત નિષ્ક્રમણ-સ્થાપત્યાપુત્રના દીક્ષોત્સવ માટે છત્ર ચામર અને મુકુટ વગેરે આપો । (તણ કળે વાસુદેવે થાવચ્ચા

मृत्म्-तएण से थावच्चापुत्ते कण्हेण वासुदेवेण एवं बुत्ते
समाणे कण्ह वासुदेव एव वयासी-जइ णं तुम देवाणुप्पिया ।
मम जीवियतकरण मच्चु एज्जमाण निवारसि जर वा सरीर-
रूवविणासिणि सरीर वा अइवयमाण निवारसि, तएण अह
तव वाहुच्छाया परिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुज-
माणे विहरामि ॥ सू० १३ ॥

टीका—‘ तएण से थावच्चापुत्ते ’ इत्यादि । तत खलु स स्थापत्यापुत्र-
कृष्णवासुदेवेनैव मुक्तः सन् कृष्ण वासुदेवमेवमादीत्-हे देवानुप्रिय ! यदि
खलु त्व मम “ जीवियतकरण ” जीवितान्तकरण जीवनविनाशकारक, ‘ मच्चु ’
मृत्यु=मरणदुःख, ‘ एज्जमाण ’ एवमानन्=जागच्छन्त, निवारयसि, ‘ जर वा ’
कारण इस का यह है कि मेरे राज्य में तुम्हें कुछ भी कष्ट नहीं होगा ।
मैं सदा तुम्हारी सहायता करता रहूँगा । क्यों व्यर्थ मैं परम कष्ट
साध्य दीक्षा ग्रहण करते हो- छोड़ो इसे । सूत्र “ ११ ”

‘ तएण से थावच्चापुत्ते कण्हे ण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से थावच्चापुत्ते कण्हे ण वासुदेवेण)
कृष्णवासुदेव के द्वारा इस प्रकार कहे गये उस स्थापत्यापुत्र ने (कण्ह
वासुदेव एव वयासी) कृष्णवासुदेव से इस प्रकार कहा—(जइण तुम
देवाणुप्पिया मम जीवियतकरणमच्चु एज्जमाण निवारसि जर वा सरी-
ररूवविणासिणि सरीरवा अइवलमाण निवारसि) हे देवानुप्रिय ? यदि
आपमेरे जीवन का अन्तकरने वाली आते हुए मृत्यु को मुझ से दूर

राज्यभा रहेता तमने कोउ पणु जतनी तद्वीर थगे नडि छ भेशा हु तमारी
मदद माटे पडजे डिलोछु शु जम व्यर्थ उण्ट माव्य-उठणु-दीक्षा थडणु करवा
तैयाः थया छे छोडी आ लपने । सूत्र “ ११ ”

(तएण से थावच्चापुत्ते कण्हेण इत्यादि) ।

टीकार्थ—(त एण) त्याः पछी (से थावच्चापुत्ते कण्हेण वासुदेवेण) कृष्णवासुदेव
पडेया गीते उडेवायेला स्थापत्या पुत्रे, (कण्ह वासुदेव एव वयासी) कृष्ण
वासुदेवने आ प्रमाणे उछु—(जइण तुम देवाणुप्पिया मम जीवियतकरणमच्चू
एज्जमाण निवारसि जर वा सरीररूवविणासिणि सरीर वा अइवयमाण निवा-
रेसि) हे देवानुप्रिय ! जो तमे भास श्रवण ने नाश करना मृत्यु ते

मम बाहुच्छाया परिगृहीतः=बाहुच्छायां समाश्रित सन् 'भुजाहि' भुङ्क्ष्व,
आसेवस्व पुन पुनर्विषयावाद्मुखेन विहरन् गृहे तिष्ठेत्यर्थः । केवल तत्र देवा-
नुप्रियरयाह नो इवनोमि वायुकायमुपरितो गच्छन्त निवारयितुम्, वायुपर्शव्य-
तिरेकेण प्रतिकूलतया तव शरीरस्य स्पर्शने कौऽपि समर्थो नास्तीति भाव । अन्य-
खलु देवानुप्रियस्य यत् किञ्चिदपि आवाधा वा ईपत् पीडा वा व्यावाधा वा विशेष-
पीडा वा उत्पादयति, तत्सर्वं निवारयिष्यामीत्यर्थः । मम राज्ये तत्र किमपि
दुःख नो भविष्यति, साहाय्य ते करिष्यामि, अल परमकष्टसाध्येन दीक्षा
ग्रहणेनेति भाव ॥ सू-१२, ॥

(-भुजाहि ण देवाणुप्पिया ! विउले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छाया
परिगृहीए) हे देवानुप्रिय ! मेरी छात्रच्छाया में रहते हुए तुम तो
विपुल मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगो को भोगो । (केवल देवाणुप्पि-
यस्स अह णो सचाएमि वायुकाय उवरिमेण गच्छमाण निवारित्तए)
हे देवानुप्रिय ! प्रतिकूल होकर तुम्हारे शरीर को मेरी छात्रच्छाया में
रहते हुए कोई स्पर्श तक भी नहीं कर सकता है-परन्तु वायुकाय
को तुम्हारे ऊपर से जाते हुए मूझ में रोकने की शक्ति नहीं है ।
अर्थात् वायु के सिवाय और किसी प्राणी में ऐसी शक्ति नहीं है जो
मेरी छात्रच्छाया में रहे हुए तुम्हें विरुद्ध बन कर स्पर्श तक भी कर
सके । (अण्णे ण देवाणुप्पियस्स जे किञ्चि वि आवाह वा वावाह वा
उप्पाएति त सच्च निवारेमि) वायुकाय के सिवाय यदि कोई दूसरी
व्यक्ति देवानुप्रिय तुम्हारे लिये थोड़ी सी भी किसी भी प्रकार की पीडा
या विशेष पीडा उत्पन्न करेगा तो वह सब मैं निवारित करता रहूंगा ।

विउले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छाया परिगृहीए) हे देवानुप्रिय ! भारी
बाहुच्छाया भा रहेता तमे मनुष्यभवना पुङ्गव काम लोग लोगवे । (केवल
देवाणुप्पियस्स अह णो सचाएमि वायुकाय उवरिमेण गच्छमाण निवारित्तए)
हे देवानुप्रिय ! भारी छात्र छायाभा रहेता तमने प्रतिकूल थधने केध
स्पर्शवानी पणु डिम्भत करशे नहि इक्षत वायुकायने के ने तभारी उपर थधने
पसार थाय छे-रोकवानी ताकात भाराभा नथी ओटले के पवन सिवाय भीज
केध पणु प्राणी नी ओवी डिम्भत नथी के भारी छात्र छायाभा रहेता, प्रति
कुण थधने तभारे स्पर्श पणु करी शके (अण्णे ण देवाणुप्पियस्स जे किं वि
विआवाह वावावाह वा उप्पाएति त सच्च निवारेमि) वायुकायना सिवाय भीज
व्यक्ति तमने थोड़ी के वधावे पीडा आपसे तो तेने हु भटाडीश भारा

मूलम्—तएण से थावच्चापुत्ते कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ते समाणे कण्ह वासुदेव एव वयासी—जइ णं तुम देवाणुप्पिया । मम जीवियतकरण मच्चु एज्जमाण निवारेसि जर वा सरीर-रूवविणासिणि सरीर वा अइवयमाण निवारेसि, तएण अह तव वाहुच्छाया परिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुज-माणे विहरामि ॥ मू० १३ ॥

टीका—‘ तएण से थावच्चापुत्ते ’ इत्यादि । ततः खलु स स्थापत्यापुत्रः कृष्णवासुदेवेनैव मुक्तः सन् कृष्ण वासुदेवमेवमवादीत्—हे देवानुप्रिय ! यदि खलु त्व मम “ जीवियतकरण ” जीवितान्तकरण जीवनविनाशकारक, ‘ मच्चु ’ मृत्यु=मरणदुःख, ‘ एज्जमाण ’ एनमानन=आगच्छन्त, निवारयसि, ‘ जर वा ’ कारण इस का यह है कि मेरे राज्य में तुम्हें कुछ भी कष्ट नहीं होगा । मैं सदा तुम्हारी सहायता करता रहूँगा । क्यों व्यर्थ मे परम कष्ट साध्य दीक्षा ग्रहण करते हो—छोड़ो इसे । सूत्र “ ११ ”

‘ तएण से थावच्चापुत्ते कण्हे ण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से थावच्चापुत्ते कण्हे ण वासुदेवेण) कृष्णवासुदेव के द्वारा इस प्रकार कहे गये उस स्थापत्यपुत्र ने (कण्ह वासुदेव एव वयासी) कृष्णवासुदेव से इस प्रकार कहा—(जइण तुम देवाणुप्पिया मम जीवियतकरणमच्चु एज्जमाण निवारेमि जर वा सरीर-रूवविणासिणि सरीरवा अइवलमाण निवारेमि) हे देवानुप्रिय ? यदि आपमेरे जीवन का अन्तकरने वाली आते हुए मृत्यु को मुझ से दूर

राज्यभा रहेंता तमने डोऽपणु नतनी तद्वीक्ष यशे नडि ह भेशा हु तमारी भदह माटे पडणे उलोछु गु जम व्यर्थ उण्ट माव्व-उडण-दीक्षा ग्रहणु करवा तैयार यथा हो छोड़ी आ लपने । सूत्र “ ११ ”

(तएण से थावच्चापुत्ते कण्हेण इत्यादि) ।

टीकार्थ—(त एण) त्याग पछी (से थावच्चापुत्ते कण्हेण वासुदेवेण) कृष्णवासुदेव पडेआ गीते उडेवायेला स्थापत्या पुत्रे, (कण्ह वासुदेव एव वयासी) कृष्ण वासुदेवने आ प्रमाणे उछु—(जइण तुम देवाणुप्पिया मम जीवियतकरणमच्चु एज्जमाण निवारेसि जर वा मरीररूवविणासिणि सरीर वा अइवयमाण निवा-रेसि) हे देवानुप्रिय ! जे तमे भाग जवन ने नाश करनार मृत्यु ते

જરા વા=વૃદ્ધાવસ્થા વા શરીરરૂપવિનાશિની, શરીર વા (વર્તમાનશરીર) 'અણ્વયમાણં' અતિપતત્તમ્=આત્મનઃ સકાશાત્ સર્વથા વિયુજ્યમાન નિગારયસિ, તતસ્તદા સ્વલુ અહ તવ વાહુચ્છાયા-પરિગૃહીતઃ શુજવલમાશ્રિતઃ સન્ વિપુલાન્ માનુષ્યાન્ કામ-ભોગાન્ શુજ્ઞાનો વિહરામિ=મૃદ્ધે વત્સ્યામીત્યર્થઃ ।

સસારાઽસક્તસ્ય જરામરણાદિ દુઃસ્વપ્નો ન ભવતીતિ સંસારસ્વરૂપમિદં સક્ષેપેણ નિરૂપ્યતે-આત્મકલ્યાણાર્થી જનઃ સ્વલ્લેવેવ વિભાવયતિ—

एतत् स्वलु ससारसुखं तुच्छम्, अस्मिन् ससारे कर्मवशवर्तिनः प्राणिनः केवलं मरणाय जायन्ते, म्रियन्तेऽपि जननायैव, यावन्तः कामभोगास्ते क्षणभङ्गुरा

કર સકતે હો તથા શરીર કે સ્વરૂપ કો વિનાશ કરનેવાલી આત્મી હુઈ જરાવસ્થા કો નિવારણ કર સકતે હોવે યા નિયમત. આત્મા કે સાથ સર્વથા વિયુજ્યમાન હસ શરીર કો આપ રોક સકતે હોવે (તણ અહ તવ વાહુચ્છાયા પરિગ્રહિય વિડલે માણુસસય કામભોગે શુજમાણે વિહરામિ) તો મેં આપકી શુજચ્છાયા કા સહારાલેકર વિપુલ મનુષ્યભવ-સમ્બધી કામભોગો કો ભોગતા હુઆ ઘર મે રહ સકતા હૂં ! સસાર મેં આસક્ત હુય પ્રાણી કે જરા મરણ આદિ કે દુઃખો કા ક્ષય નહીં હોતા હૈં હસલિયે સસાર કા સ્વરૂપ સક્ષેપ સે યહાં નિરૂપિત કિયાજાતા હૈં જો આત્મકલ્યાણ કે અર્થી મોક્ષાભિલાષી જન હોતે હૈં વે હસ પ્રકાર સે વિચાર કરતે હૈં-યહ સાસારિક સુખ તુચ્છ હૈં । હસ સસાર મેં કર્મ વશવર્તી હુય પ્રાણી કેવલ મરણ પ્રાપ્ત કરને કે લિયે હી જન્મતે હૈં ઓર જન્મ ધારણ-કરને કે લિયે હી મરતે હૈં । જિતને બી કામભોગ

મારાથી દૂર ડરી શકે છે, તેમજ શરીરના સ્વરૂપને નષ્ટ કરનાર ઘડપણને મટાડી શકે છે, આત્માથી વિયોગ પામતા આ શરીરને તમે વિયુક્ત થવા નહિ દો (તણ અહ તવ વાહુચ્છાયા પરિગ્રહિય વિડલે માણુસસય કામભોગે શુજમાણે વિહરામિ) તે હુ તમારી બાહુઓની છાયામા રહીને પુણ્ણ મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવતા ઘરમા જ રહી શકુ તેમ છુ સસારમા આસક્તિ રાખનાર પ્રાણીના જરા (ઘડપણ) મરણ વગેરે હુ ખો નો ક્ષય થતો નથી તેથીઅહીં ટૂંકમા સસારના સ્વરૂપ વિષે ચર્ચાકરવામા આવે છે જે આત્મ કલ્યાણ ને જખનાર મોક્ષાભિલાષી જન હોય છે, તેઓ આ પ્રમાણે વિચાર કરે છે આ સસારનુ સુખ નગણ્ય છે આ સસારમા કર્મ વશ થઈને જીવ નારા પ્રાણીઓ શક્ત મરણ પ્રાપ્ત કરવામાટે જ જન્મ પામે છે, અને જન્મ મેળવવા માટે જ મૃત્યુને ભેટે છે સસાર ના જેટલા કામ ભોગો છે તે

આસ્રવરૂપા વિપદા પદાનિ સન્તિ । લોચ્યર્તિનઃ સર્વેઽપિ પદાર્થા સિકતાકણ
વત્ પરસ્પરમસંગ્રહાઃ, તેષા ભોગોઽપિ જીવસ્ય વન્ધનાય પુનઃ પુનર્મોહજનનાય
ભવતિ । મોહ સ્વલુ મહાગર્તસ્ત્રાણાનિનો જીવા નિર્થકમેવ નિપતન્તિ । એતસ્મિન્
સુખાભાસે સસારે મમકઃ સમ્યગ્ન્ય । અજ્ઞાનરજન્યા વિવેકદષ્ટો મોહટ્ટતાયા સત્યાં
પન્ચેન્દ્રિયત્રયો વિંશતિ વિષય તદીય શતદ્વયાધિકચત્વાર્શિદ્વિમારરૂપાસ્તસ્કરા
આત્મગુણરૂપાણિ ધનાન્યપહરન્તિ । યથા પથિકેભ્યો ન રોચતે નિર્જલા ભૂમિ-
સ્તથા મમેદ સસારસુખ પ્રમોદાય ન પ્રભવતિ । યથા વા-શૈલશિખરાવસ્થિતપાદ-
પાનાં મૂલાનિ વાયુર્વિશીર્ણયતિ, તથોન્મૂલયતિ ભોગોઽપિ જીવાના મનાસિ, યથા

હૈં-વે સવ ક્ષણભગુર હે તથા હમકેદારા હી જીવ નવીન કર્મોં કા આ
સ્રવ કરતા હૈં-હસલિયે યે આસ્રવરૂપ હે-વિપદાઓ કે સ્વાનભૂત હૈં ।
હસ લોક મેં જિતને ભી પદાર્થ હૈં વે સવ ચાલુ કે કણ કે સમાન પર-
સ્પર મેં અસંગ્રહ હૈં । હનકા ભોગ ભી જીવ કે લિયે નવીન નવીન કર્મોં
કા વધદાતા હોતા હૈં ઓર ઘાર ૨ મોહકા જનક હોતા હૈં । મોહ ઇક
બડા ભારી ગર્ત (સ્વડ્ઢા) હૈં । હસમેં આત્મજ્ઞાન સે રહિતહુએ પ્રાણી નિ-
ર્થક હી ગિરતે રહતે હૈં । હસ અસારસસાર મેં મેરા કિસ સે ક્યા નાતા
હૈં । અજ્ઞાન રાત્રિ મેં વિવેકદષ્ટિ કે મોહાચ્છાદિત હોને પર પાચો ઇન્દ્રિયોં
કે ૨૩, વિષય ઓર હન વિષયોં કે ભી ૨૪૦, વિકાર રૂપ તસ્કર (ચૌર)
આત્મ ગુણ રૂપ ધન કા અપહરણ કરતે રહતે હૈં । જિસ તરહ પથિક જનોં
કે લિયે નિર્જલ ભૂમિ નહીં રુચતી હૈં ઊસી પ્રકાર સુદ્ધે યહ સસાર સુખ
નહીં રુચતા હૈં । અથવા જૈસે પર્વત કી ચોટી પર રહે હુએ વૃક્ષો કી જડોં

સર્વે ક્ષણુ ભગુર છે, તેમજ એમના વડે જ જીવ કર્મોના આસ્રવ (કર્મનુ આત્મામા
દાખલ થવું) ડરે છે એટલા માટે આ બધા આસ્રવરૂપ છે અને વિપત્તિઓનું
સ્થાન છે આ જગતમા એટલા પદાર્થો છે તેઓ સર્વે રેતીના ડણુની જેમ પર
સ્પર અનબદ્ધ છે એમનો ઉપલોગ પણ નવા નવા કર્મોના બધનમા પ્રાણીને
ફસાવનાર છે તે વારવાર મોહજનક હોય છે મોહ (અજ્ઞાન) બને એક મોટો ખાટો
(ગર્ત) છે આત્મજ્ઞાન વગરના પ્રાણીઓ વ્યર્થઆમા પડ્યા ડરે છે આ નિમાર
જગતમા મારો કેની સાથે કેવો સબધ છે ? અજ્ઞાન રાત્રિમા જ્યારે વિવેકની
દષ્ટિ અજ્ઞાનથી ઢકાઈ જાય છે ત્યારે પાંચ ઇન્દ્રિયોના ત્રેવીસ વિષયો અને
આ વિષયોના પણ બસો આલીશ વિકાર રૂપી ચોર (તસ્કર) આત્મગુણ રૂપી
ધન ને ચોરતા રહે છે જેમ મુસાફરોને નિર્જળ પ્રદેશ ગમતો નથી તેમ જ
મને પણ આ અમારું સુખ મારું લાગતું નથી જેમ પર્વતો પર રહેલા વૃક્ષોના
શિખરો મૂળ પવન વિશાળું (ઊન્નવિચ્છિન્ન) ડરી નાખે છે તેમજ સસાર

જરા વા=વૃદ્ધાવસ્થા વા શરીરરૂપવિનાશિની, શરીર વા (વર્તમાનશરીર) 'અશ્વયમાર્ણ'
અતિપતત્તમ્=આત્મનઃ સકાશાત્ સર્વથા વિયુજ્યમાન નિવારયસિ, તતસ્તદા સ્વલ્પ
અહ તવ વાહુચ્છાયા-પરિગૃહીતઃ શુજવલમાશ્રિતઃ સન્ વિપુલ્યાન માનુષ્યાન્ કામ-
ભોગાન્ શુજ્ઞાનો વિહરામિ=ગૃહે વત્સ્યામીત્યર્થઃ ।

સસારાઽસક્તસ્ય જરામરણાદિ દુઃસ્વલ્પયો ન ભવતીતિ સંસારસ્વરૂપમિદં
સક્ષેપેણ નિરૂપ્યતે-આત્મકલ્યાણાર્થી જનઃ સ્વલ્પેય વિભાનયતિ—

एतत् स्वल्प ससारसुख तुच्छम्, अस्मिन् ससारे कर्मवशवर्तिनः प्राणिन केवल
मरणाय जायन्ते, म्रियन्तेऽपि जननायैव, यावन्तः कामभोगास्ते क्षणभङ्गुरा

કર સકતે હોં તથા શરીર કે સ્વરૂપ કો વિનાશ કરનેવાલી આતી હુઈ
જરાવસ્થા કો નિવારણ કર સકતે હોવેં યા નિયમત આત્મા કે સાથ
સર્વથા વિયુજ્યમાન હસ શરીર કો આપ રોક સકતે હોવેં (તણ અહ
તવ વાહુચ્છાયા પરિગ્રહિણ વિડલે માણુસ્સણ કામભોગે શુજમાણે વિહ-
રામિ) તો મેં આપકી શુજચ્છાયા કાં સહારાલેકર વિપુલ મનુષ્યભવ-
સમ્બન્ધી કામભોગોં કો ભોગતા હુઆ ઘર મે રહ સકતા હૂં ! સસાર
મેં આસક્ત હુણ પ્રાણી કે જરાં મરણ આદિ કે દુઃખો કા ક્ષય નહીં
હોતા હૈં હસલિયે સસાર કા સ્વરૂપ સક્ષેપ સે ઘઠાં નિરૂપિત કિયાજાતા
હૈં જો આત્મકલ્યાણ કે અર્થી મોક્ષાભિલાષી જન હોતે હૈં વે હસ પ્રકાર
સે વિચાર કરતે હૈં-યહ સાસારિક સુખ તુચ્છ હૈં । હસ સસાર મેં કર્મ
વશવર્તી હુણ પ્રાણી કેવલ મરણ પ્રાપ્ત કરને કે લિયે હી જન્મતે હૈં ઓર
જન્મ ધારણ-કરને કે લિયે હી મરતે હૈં । જિતને ભી કામભોગ

મારાથી દૂર ડરી શકે છે, તેમજ શરીરના સ્વરૂપને નષ્ટ કરનાર ઘડપણને
મટાડી શકે છે, આત્માથી વિયોગ પામતા આ શરીરને તમે વિયુક્ત થવા
નહિ દો (તણ અહ તવ વાહુચ્છાયા પરિગ્રહિણ વિડલે માણુસ્સણ કામભોગે
શુજમાણે વિહરામિ) તે હુ તમારી બાહુઓની છાયામા રહીને પુણ્ય મનુષ્ય
ભવના કામભોગો ભોગવતા ઘરમા જ રહી શકુ તેમ છુ સસારમા આસ-
ક્તિ રાખનાર પ્રાણીના જરા (ઘડપણ) મરણ વગેરે હુ ખો નો ક્ષય થતો
નથી તેથી અહીં દૂકમા સસારના સ્વરૂપ વિષે ચર્ચા કરવામા આવે છે જે આત્મ
કલ્યાણ ને જખનાર મોક્ષાભિલાષી જન હોય છે, તેઓ આ પ્રમાણે વિચાર
કરે છે આ સસારનુ સુખ નગણ્ય છે આ સસારમા કર્મ વશ થઈને જીવ
નારા પ્રાણીઓ શક્ત મરણ પ્રાપ્ત કરવામાટે જ જન્મ પામે છે, અને જન્મ
ભોગવવા માટે જ મૃત્યુને ભેટે છે સસાર ના જેટલા કામ ભોગો છે તે

કાષ્ઠ ઘુન ડગ મૃત્યુઃ શરીરમુત્વનતિ । મૃત્યુતક્ષાઃ શ્વાસોચ્છ્વાસક્રુચ્ચેન શરીરવૃક્ષ છિન્નતિ । મૃત્યુ સપ્ત રાગદ્વેષપિપ્પલાવ્યાકુલતયા તપાર્ત ડગાડ્ઘુ-
પ્યજલ પિવતિ । યથા તૈલયન્ત્ર તિલ્લન નિષ્પીડયતિ, તથા મૃત્યુઃ પ્રાણિના શરી-
રાણિ નિષ્પીડ્ય નાશયતિ । સ લોકત્રયવર્તિનઃ પ્રાણિનઃ ક્ષોભયતિ । મૃત્યોપરા
ગમન પ્રાગેવ પંચાસતઃ સુરાણામપિ કલ્પતરુપુષ્પરચિતમાલા મુકુલયતિ, ચેતાસિ
તેષાં શોકસાગરે નિમજ્જયતિ । મૂર્ઝાન્વકાર પચ્ચન્ મૃત્યુરુપ ઉલ્લૂકો ધાવન્
સમાયાતિ ।

દિમાનીય કમલવનાનિ જરા પચ્ચેન્દ્રિયાણિ વિકૃતાનિ કુર્વતી શિથિલયતિ ।
સા મક્ષિતવિપત્તૃ ત્વરિતમેવ શરીર સહરતિ । માર્યાડપિ જરાવસ્થાપુરુષમ્—‘અય-

કાષ્ઠકો ઘુન કી તરહ મૃત્યુ મેરે શરીર કો ધુના રહી હૈ । મૃત્યુરુપી
વઢઈ શ્વાસોચ્છ્વાસરુપ આરે સે ડસ શરીરરુપ વૃક્ષ કો રાત દિન કાંટ
રહા હૈ । યહ મૃત્યુ રાગદ્વેષરુપ વિપકી જ્વાલા સે વ્યાકુલ જૈસી બના હુઆ
તૃપાર્ત કી તરહ આયુરુપીજલ કો પી રહા હૈ જૈસે તૈલ યન્ત્ર-કોલ્ફ-તિલો
કો પેલ ડાલતા હૈ । ઉસી પ્રકાર મૃત્યુ પ્રાણિયોકે શરીર કો નિષ્પીડિત
કર ડાલતા હૈ । એસા ત્રીન લોક મે કોઈ બી પ્રાણિ નહી હૈ જો ડસ
મૃત્યુસે ક્ષુભિત ન હો રહા હો । મૃત્યુકે આગમન કે છઠ્ઠમાસ કે પહિલે સે
દેવતાઓ કી બી કલ્પવૃક્ષો કે પુષ્પો કી રચિત માલા કુમ્હલા જાતી હૈ
ઉનકા મન શોક સાગર મે ડસ કારણ સે ડૂબ જાતા હૈ । મૂર્ઝારુપી
અધકાર કો દેખકર મૃત્યુરુપી ઉલ્લૂક દૌડતા હુઆ આ જાતા હૈ । હિમ
સતતિ (હિમ સમૂહ) જિસતરહ કમલ વનો કો વિકૃતકર શિથિલકર
દેતી હૈ ઉસી તરહ જરાવસ્થા બી પચ્ચેન્દ્રિયોં કો વિકૃત કર શિથિલ કર

ની જેમ મૃત્યુ મારા શરીરને નષ્ટ કરી રહ્યા છે મૃત્યુ રૂપી સુથાર શ્વાસો
અશ્વાસ રૂપો ડગવત વડે શરીર રૂપો વૃક્ષને રાત દિવસ કાપી રહ્યો છે આ
મૃત્યુ રાગદ્વેષ રૂપી વિપની જ્વાળા થી વ્યાકુળ થઈને તરબ્યારની પેઠે આયુષ્ય
જળને પી રહ્યો છે જેમ વાણી તલોને પીલી નાખે છે તેમજ મૃત્યુ
પ્રાણીઓના શરીરોને નિષ્પ્રાણ બનાવીને નષ્ટ કરીનાખે છે તથા લોકમા એક
કોઈ પ્રાણી મને દેખાતુ નથી કે જે મૃત્યુથી ક્ષોભ પામતુ ન હોય મૃત્યુના
છ મહિના પૂર્વે દેવોની પણ ડટપ વૃક્ષના પુષ્પોની માળાઓ ચીમળાડ બંધ
છે તેમજ મન શોક સાગરમા ડૂબી બંધ છે મૂર્ઝા રૂપી અધારાને બેઠને
મૃત્યુ રૂપી ઘુવડ દોડતા આવે છે આકળો જેમ ડમળ વનોને નષ્ટ કરી નાખે
છે, શિથિલ બનાવીદે છે તેમજ ઘડપણ પાથે ઇન્દ્રિયોને વિકૃત કરીને

પુરાતનાસ્તરવ સ્વકોટરસ્થાનલેન દહ્યમાના અન્તે નિપતન્તિ તદ્વદિદ્ જીવાઃ
 કષાયાનલેન પરિતપ્તા અશાન્તા અન્તે નરકાદો નિપતન્તિ । અહમપિ સમારદાવા
 નલેન પરિતપ્તાન્તઃકરણઃ ક્વાપિ ત્રિપયસુખે શાન્તિ ન પશ્યામિ । સપતિ મામકી
 નમન્તઃકરણ જન્મજરામરણદુઃખપાપાણૈ પરિપૂર્ણ વર્તતે, તસ્માત્ સાશ્રુમુક્તકુળં ચ
 રોદન કર્તુકામોઽપિ ન રોદિમિ, ઇમે હિ સ્વજના રુદન્ત મામવલોમ્યરોદિપ્યન્તિ ।
 તસ્માદસારેઽસ્મિન્ સસારે પ્રવ્રજ્યૈવ મમ શરણમ્ । અપર ચૈવમસૌ મૃત્યુજરાસ્વભાવ
 વિભાવયતિ—

કો વાયુ વિશીર્ણ કર દેતી છે उसी तरह सासारिक भोग भी जीवोंके
 मन को विशीर्ण करदिया करता है अपने कोटर में अवस्थित अग्नि से
 जैसे पुराने वृक्ष जलकर अन्त में जमीन पर गिर पड़ते हैं उसी तरह
 इस ससार में कषायरूपअग्निसे परितप्त होकर अशान्त हुए ये जीव
 भी अन्त में नरकादि दुर्गतियों में जाकर गिरजाते हैं । मैं भी ससार
 दावानल से परितप्त अन्तःकरण होकर किसी भी वैषयिकसुख में
 शान्ति नहीं देख रहा हूँ । इस समय मेरा अन्त करण जन्म जरा
 और मरण के दुःख रूप पाषाणों से परिपूर्ण बना हुआ है । अतः मैं
 चाहता हूँ कि मैं गला फाड़ २ कर खूब जोर २ से रोऊँ परन्तु नहीं रो
 सकता हूँ । कारण ये मेरे पीछे लगे हुए जो जन हैं वे मुझे रोता देख-
 कर रोने लग जावेंगे । इस लिये सार विहीन इस ससार में कोई शर
 ण भूत मेरे लिये है तो वह एक प्रव्रज्या ही है । मृत्यु और जराके
 स्वभाव को यह आत्म कत्याणार्यो इस प्रकार से विचारता है—

ના ભોગો પણ જીવોના મનને વિશીર્ણ (જીર્ણ) કરી નાખે છે પોતાની
 બળેલામા સળગતો અગ્નિ જેમ જુના વૃક્ષોને બાળીને ઉપડે જમીન દોસ્ત
 કરી નાખે છે, તેમજ આ સસારમા કષાય રૂપ અગ્નિમા સતત થઈને અશા
 ન્ત થયેલા જીવો પણ અન્તે નરક વગેરે દુર્ગતિઓમા જઈને પડે છે સસાર
 દાવાનળથી સતત થયેલુ માફ મન કેઈ પણ વિષય સુખમા શાંતિ જોતુ
 નથી અત્યારે માફ મન જન્મ જરા (ઘડપણ) અને મરણના દુખ રૂપી
 પથ્થરોથી પરિપૂર્ણ થઈ ગયુ છે એથી મને તો એમ થાય છે કે હું મોટેથી
 ખૂંચો પાડી પાડીને ખૂબ રડુ પણ મારાથી રડાતુ પણ નથી કેમકે મારા
 સ્વજનો મને રડતો જોઈને પોતે પણ રડવા માડશે એટલે નિસાર જગતમા
 મારો કેઈ આધાર છે તો તે પ્રવ્રજ્યા જ કહી શકાય મૃત્યુ અને ઘડપણની
 ભયકરતા વિષેનો વિચાર તે સ્થાપત્યાપુત્ર કહે છે “લાડામા બાંધ

समाधिरूपः कल्पतरुत्पद्यते च । वैराग्यजलाऽऽगमनमार्गरूपानालिका तत्र सद्भावना । ज्ञानदर्शनरूपाणि तत्र पुष्पाणि, स्वर्गापवर्गरूपाणि फलानि । देवल्लोके यत् सुख, यच्च सिद्धावस्था प्राप्तस्थानन्तसुख, तदेव तत्फलरसः, इति ॥ सू० १२ ॥

मूलम्—तएणं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेण एव वुत्तेसमाणे थावच्चापुत्तं एव वयासी—एएण देवाणुप्पिया । दुरतिक्रमणिज्जा णो खलु सका सुवल्लिएणावि देवेण वा दाणवेण वा णिवारित्तए णन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खएणं, तएणं मे थावच्चापुत्ते कण्ह वासुदेव एव वयासी जइण एए दुरतिक्रमणिज्जा णो खलु सका जाव नन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खएण तइच्छामि णं देवाणुप्पिया । अन्नाणमिच्छत्त अविरइकसायसच्चियस्स अत्तणो कम्मक्खयं करित्तए ॥ सू० १३ ॥

टीका—‘ तएण से कण्हे ’ इत्यादि । ततः=तदनन्तर खलु स कृष्णवासुदेवः स्थापत्यापुत्रेणोत्पन्नः सन् स्थापत्यापुत्रम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्—

समाधि रूप कल्पतरु उत्पन्न होता है और बढता है । वैराग्यरूप जल के आने के लिये मार्गरूप नाली के समान बहा सद्भावना है । ज्ञान रूप वर्तु पुष्प हैं । स्वर्ग एव अपवर्ग (मोक्ष रूप इसके फल है देवल्लोक में जो सुख है तथा सिद्धावस्था प्राप्त जीव को जो अनन्त सुख है वही सय इसके फलों का रस है ॥ सू० १२ ॥

‘ तएण से कण्हे वासुदेवे ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे उन कृष्ण वासुदेव ने (थावच्चापुत्तेण एव वुत्ते समाणे) स्थापत्या पुत्र के इस प्रकार कहने पर (एव वयासी) उससे ऐसा कहा—(एएण देवाणुप्पिया !

जणना भियनथी समाधिइपी कल्पतरु उत्पन्न थाय ते अने वधेछे वैराग्यइपी पाणीने लाववाभागे सद्भावनाओइपी नाणी छे ज्ञान दर्शन ज त्या पुष्प छे देवल्लोकमानु सुण तेमज्झ सिद्धावस्था प्राप्त भवने जे अनन्त सुख छे तेज्झ आ णधा इणोने। रस छे ॥ सूत्र १२ ॥

(तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ॥)

टीकार्थ—(तएण) त्थार ५४ (से कण्हे वासुदेवे) कृष्ण वासुदेवे (थावच्चा पुत्तेण एव वुत्ते समाणे) स्थापत्या पुत्रनी आ वात सालाणीने (एव वयासी)

ससारमहारण्ये मनुष्यदेहः खलु समाधिरूपस्य कल्पतरो क्षेत्रम् । तच्च विशिष्ट
पुण्यपुञ्जरूपहलेन कृष्टम् । निष्क्रमण तस्य वृक्षस्य बीजम् । वैराग्यजलाभिषेकेण
डालता है । भक्षित विप की तरह तुरत ही शरीर को नष्ट कर देती है ।
भार्या भी जरावस्थापन्नपुरुष को " यह उष्ट्र है " ऐसा मानने लगती है ।
पुत्रादिक उसका अपमान करने लग जाते हैं । वे इसका जरा भी सम्मान
नहीं करते । यह जरारूपी ज्वाला श्वास कासरूपी धूम से जीव को
व्याकुल करती हुई जिस शरीर में प्रज्वलित हो जाती है उसे भस्मसात
ही कर डालती है । यह जरावस्था समस्त आपत्तियों का एक स्थान
है । प्रबल अग्नि की ज्वाला के समान समस्त सुखों के मनोरथों को
नाश करने वाली है । मृत्यु, जरा, आदि रूप ससार के स्वाभाव के
चिन्तन से अब बस रहो । मृत्यु तथा जरा रूप वह्नि की शिखा से
प्रतप्त हुए मुझे तो अब निष्क्रमण (दीक्षा) ही एक शरण भूत होगा ।
कारण ससाररूप इस गहनवन में यह मनुष्य देह समाधि रूप कल्पवृक्ष
का क्षेत्र है । यह विशिष्ट पुण्य पुजरूप हल से जोता गया है । निष्क्र
मण (दीक्षा) उस वृक्ष का बीज है वैराग्यरूपा जल के सिंचन से

શિથિલ કરીનાળે છે આઘેલા વિષની જેમ તે શરીરને જાદી નષ્ટ કરે છે પત્ની પણ ઘરડા પુરુષને ‘આ ઉટ છે’ એમ માને છે પુત્ર વગેરે પણ તેમને તિરસ્કારે છે તેઓ થોડુપણુ તેમનું સન્માન કરતા નથી આ ઘડપણુની જવાબા શ્વાસ, કાસરૂપી ધુમાડાથી જીવને વ્યાકુળ કરીને જે રાગીરમા સળગી ઉઠે છે તેને ભસ્મીભૂત કરી નાળે છે ઘડપણુ બધી આકૃતોનું એકમાત્ર મ્થાન છે વિકરાળ અગ્નિની જવાબાઓની પેઠે બધા સુખોનો તેમજ મનોરથોનો મૃત્યુ નાશ કરનાર છે મૃત્યુ ઘડપણુ વગેરે ના સ્વભાવ જાળા આ જગત વિષે મારે હવે કંઈ વિચાર કરવો નથી મૃત્યુ તેમજ ઘડપણુ રૂપી અગ્નિની જવાબાઓથી સતત થયેલા મારામાટેતો હવે નિષ્કમણુ એટલે કે - દીક્ષાગ્રહણ કરવી-જ શરણુ ભૂત થશે કેમકે સસારરૂપી ભયકર વનમા આ મનુષ્ય શરીર સમાધિ રૂપી કટપવૃક્ષનું ભેત્ર છે આ વિશિષ્ટ પ્રકરના ઉત્તમ પુણ્યરૂની હળથી એકવામા આનંદુ છે નિષ્કમણુ (દીક્ષા) તે વૃક્ષનું (કટપવૃક્ષનું) બી છે વેરાગ્યરૂપી

સમાધિરૂપઃ કલ્પતરુરુત્પદ્યતે ચ । વૈરાગ્યજલાઽઽગમનમાર્ગરૂપા નાલિકા તત્ર સદ્ધા
વના । જ્ઞાનદર્શનરૂપાણિ તત્ર પુષ્પાણિ, સ્વર્ગાપવર્ગરૂપાણિ ફલાનિ । દેવલોકે
યત્ સુખ, યત્ સિદ્ધાવસ્થાં પ્રાપ્તસ્થાનન્તસુખ, તદેવ તત્ફલરસ', ઇતિ ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

મૂલમ્—તદ્દેવેણ સે કળહે વાસુદેવે થાવચ્ચાપુત્તેણં એવ વુત્તેસમાણે
થાવચ્ચાપુત્ત એવ વયાસી—એણ દેવાણુપ્પિયા । દુરતિક્કમણિજ્ઞા
ણો સ્વલ્લુ સક્કા સુવલિણનાવિ દેવેણ વા દાણવેણ વા ણિવારિત્તે
ણન્નત્થ અપ્પણો કમ્મવ્વણં, તદ્દેવેણ મે થાવચ્ચાપુત્તે કળહ
વાસુદેવ એવ વયાસી જઇણ એ દુરતિક્કમણિજ્ઞા ણો સ્વલ્લુ સક્કા
જાવ નન્નત્થ અપ્પણો કમ્મવ્વણં તદ્દિચ્છામિ ણં દેવાણુપ્પિયા ।
અન્નાણમિચ્છત્ત અવિરઙ્કસાયસચિયસ્સ અત્તણો કમ્મવ્વણં
કરિત્તે ॥ સૂ૦ ૧૩ ॥

ટીકા—‘ તદ્દેવેણ સે કળહે ’ ઇત્યાદિ । તતઃ=તદનન્તર સ્વલ્લુ સ કૃષ્ણવાસુ
દેવ’ સ્થાપત્યાપુત્રેણેત્યુક્તઃ સન્ સ્થાપત્યાપુત્રમ્ એવ=વક્ષમાણપ્રકારેણ અવાદીત્—

સમાધિ રૂપ કલ્પતરુ ઉત્પન્ન હોતાં છે અને યદ્વતા છે । વૈરાગ્યરૂપ જલ
કે આને કે લિયે માર્ગરૂપ નાલી કે સમાન વદા સદ્ધાવના છે । જ્ઞાન
રૂપ વર્તા પુષ્પ છે । સ્વર્ગ એવ અપવર્ગ (મોક્ષ રૂપ હસકે ફલ છે દેવલોક
મેં જો સુખ છે તથા સિદ્ધાવસ્થા પ્રાપ્ત જીવ કો જો અનન્ત સુખ છે વરી
સય હસકે ફલોં કા રસ છે ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

‘ તદ્દેવેણ સે કળહે વાસુદેવે ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તદ્દેવેણ) હસકે વાદ (સે કળહે વાસુદેવે) એ કૃષ્ણ વાસુદેવ
ને (થાવચ્ચાપુત્તેણ એવ વુત્તે સમાણે) સ્થાપત્યા પુત્ર કે હસ પ્રકાર
કહને પર (એવ વયાસી) એમસે એસા કહા—(એણ દેવાણુપ્પિયા ।

જળના મિચ્છનથી મમાધિરૂપી કલ્પતરુ ઉત્પન્ન થાય છે અને વધે છે વૈરાગ્યરૂપી
પાણીને લાવવામાટે સદ્ધાવનાઓરૂપી નાળી છે જ્ઞાન દર્શન જે ત્યા પુષ્પ છે
દેવલોકમાનુ સુખ તેમજ સિદ્ધાવસ્થા પ્રાપ્ત જીવને જે અનન્ત સુખ છે તે
આ બધા રૂપોનો રસ છે ॥ સૂત્ર ૧૨ ॥

(તદ્દેવેણ સે કળહે વાસુદેવે ઇત્યાદિ ॥)

ટીકાર્થ—(તદ્દેવેણ) ત્યાર પછી (સે કળહે વાસુદેવે) કૃષ્ણ વાસુદેવે (થાવચ્ચા
પુત્તેણ એવ વુત્તે સમાણે) સ્થાપત્યા પુત્રની આ વાત આભળીને (એવ વયાસી)

હે દેવાનુપ્રિય ! એતે મૃત્યુજરાદયઃ સ્વલુ દુરતિક્રમણીયાઃ=દુઃપરિહરણીયા, દુર્નિ-
વારા इत्यर्थः । एयमेवार्थं स्पष्टीकृतं नाह—‘ णो खलु सकका ’ इत्यादि । नो
स्वलु शक्या सुबलिकेन अनन्तबलवता देवेन=तीर्थंकरेणाऽपि, यद्वा—महाबलवता
केनापि देवेन, दानवेन वा निवारयितुं निरर्थयितुं नो खलु शक्याः, मृत्युजरादय
इत्यन्वयः । देवो वा दानवो वा मृत्युजरादीन् रिपून् वारयितुं समर्थो नास्तीत्यर्थः ।
नान्यत्रात्मन कर्मक्षयेण आत्मसचित्तमकलकर्मक्षयं विनाऽन्योपायेन मृत्युजरादि
परिहारो नैव भविष्यतीति भावः ।

ततः खलु स स्थापत्यापुत्रः कृष्णवासुदेवमेवमयादीत्—यदि खलु एते दुर-
तिक्रमणीया नो खलु शक्या—यावत्—यावत्करणादत्र—‘ सुबलिकेन देवेन दान-
दुरतिक्रमणिज्जा णो खलु सकका सुबलिणणापि देवेण वा दाणवेण वा
णिवारित्तण णन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खणण) हे देवानुપ્રિય ! ये मृत्यु
जरा आदि दुरतिक्रमणीय हैं दुःपरिहरणीय हैं । इसका निवारण करना
ससारावस्था जीव के लिये सर्वथा अशक्य है । इसी अर्थ को सूत्रकार
स्पष्ट करते हुए कह रहे हैं कि सुबलिक अनन्त बल के स्वामी तीर्थंकर
देव भी अथवा महाबलवान कोई भी देव या दानव इन मृत्यु जरा
आदि को निवारण करने के लिये सामर्थ्य शाली नहीं हो सके
हैं । केवल आत्म सचित्त सकल कर्मों का क्षय ही एक ऐसा उपाय है
जो इनका निवारण कर सकता है । इनके सिवाय और कोई दूसरा
उपाय नहीं है । (तएण से यावच्चापुत्ते कण्ह वासुदेव एव वयासी)
कृष्ण वासुदेव की इस बात को सुनकर स्थापत्यापुत्र ने तब उन से
इस प्रकार कहा—(जइण एण दुरतिक्रमणिज्जा णो खलु सकका जाव न-

તેમણે કહ્યું (એણે દેવાનુપ્રિય ! દુરતિક્રમણિજ્જા ણો સ્વલુ સકકા સુબલિ
ણા વિ દેવેણ વા દાણવેણ વા ણિવારિત્તણ ણન્નત્થ અપ્પણો કમ્મક્કણ)
હે દેવાનુપ્રિય ! આ મૃત્યુ વગેરે દુરતિક્રમણીય છે સસારમાં રહેતા પ્રાણીને
માટે તેનું નિવારણ અશક્ય છે “ સૂત્રકાર અહીં એજ અર્થને સ્પષ્ટ કરતા
કહે છે કે સુબલિક એટલે કે અનન્ત બળશાળી તીર્થંકર દેવ અથવા તો મહા-
બળવાન કોઈ દેવ કે દાનવ પણ આ મૃત્યુ ઘડપણ વગેરે ને દૂર કરવાનું સામ-
ર્થ્ય ધરાવી શક્યા નથી કહીને આત્મ સચિત્ત સકલ કર્મોનો ક્ષય એક માત્ર
ઉપાય છે કે જે આ મૃત્યુ ઘડપણ વગેરેનું નિવારણ કરી શકે એના સિવાય
બીજા કોઈ ઉપાય અમને દેખાતા નથી (તણે સે યાવચ્ચાપુત્તે કણ્ઠ વાસુદેવ
એવ વયાસી) કૃષ્ણ વાસુદેવની આ વાત સાંભળીને સ્થાપત્યા પુત્રે તેમને આ
પ્રમાણે કહ્યું (જઈણ એણે દુરતિક્રમણિજ્જા ણો સ્વલુ સકકા જાવ નન્નત્થ

વેન યા નિગારયિતુમ્ ' ઇતિ પૂર્વોક્તિપાઠસ્ય સગ્રહઃ । અન્યગ્રાત્મનઃ કર્મક્ષયેણ, તદ્=તત્માત્, દે દેવાનુપ્રિય । 'અન્નાણમિચ્છત્ત અવિરટ્-કમાયમચિયસ્સ ' અજ્ઞાનમિત્યાત્વાવિરતિક્રપાયમન્નિતસ્ય=અજ્ઞાનમ્—જ્ઞાનાવરણીયોદયજનિતાત્મપરિણામરૂપ સશયવિપર્યયાદિરૂક્ષણ મિત્યાજ્ઞાન, મિત્યાત્વ=મિત્યાત્વમોહનીયોદયજનિતાત્મપરિણામરૂપ તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાન કુદેવાદિપુ સુદેવાદિબુદ્ધિર્તા, અવિરતિઃ=વિરતે-વિપરીતાડવિરતિ, અનિવૃત્તિ દિસાન્તિ પાપસ્થાનેભ્યો પરિણામાભાવ, સાવધ પ્રવૃત્તિરિત્યર્થઃ । રૂપાયા=ક્રોધમાનાદય, તૈઃ સચિતસ્ય યુક્તસ્ય આત્મનઃ કર્મ ક્ષય જ્ઞાનાવરણીયાદ્યપ્રિયકર્મણા નાશ કર્તુમિચ્છામિ સ્વલુ ઇત્યન્વય ॥ મૂ ૦ ૧૩ ॥

અત્ય અપ્પણો કમ્મકરણ ત ઇચ્છામિ ણ દેવાણુપ્પિયા । અન્નાણમિચ્છત્ત અવિરટ્કમાય મચિયસ્સ અત્તણો કમ્મકરણ કરિત્તણ) યદિ યે જન્મ જરા આદિ દુરનિક્રમણીય હૈં ઇન્નેં કર કરને કે લિયે સુવલિક દેવ દાનવ મ્હી સમર્થ નહીં હૈં કેવલ કર્મ ક્ષય હી ઇનકી નિવૃત્તિ કા ઉપાય હૈ—જવ એસી વાત હૈં તો હૈં દેવાનુપ્રિય । મે જ્ઞાનાવરણીય કે ઉદય સે જનિત આત્મ પરિણામરૂપ અજ્ઞાન સે—સશય વિપર્યય આદિ રૂપ મિથ્યા જ્ઞાન સે—મિત્યાત્વ મોહનીય કે ઉદય સે જનિત તત્ત્વાર્થ અશ્રદ્ધા ન રૂપ આત્મપરિણામ સે—અથવા કુદેવ આદિ સે સુદેવ આદિ કી વિપરીતાભિ નિવેશ રૂપ બુદ્ધિ સે દિસાદિક પાપસ્થાનો સે અનિવૃત્તિ રૂપ પરિણામ સે સાવધ કાર્યો મે પ્રવૃત્તિ સે ક્રોધમાન આદિ રૂપ કપાયોં સે સચિત કિયે ગયે ઇન જ્ઞાનાવરણીય આદિ રૂપ આઠ પ્રકાર કે કર્મોં કો ક્ષય કરને કી ઇચ્છા કર રહા હૈં । સૂત્ર “ ૧૩ ”

અપ્પણો કમ્મકરણ ત ઇચ્છામિ ણ દેવાણુપ્પિયા । અન્નાણમિચ્છત્ત અવિરટ્ કમાય સચિયસ્સ અત્તણો કમ્મકરણ કરિત્તણ) જો એ જન્મ જરા (ઘડપણ) વગેરે દુરતી કમણીય છે, એમનાથી મુક્તિ મેળવવાની સુખસિદ્ધિ દેવ દાનવ પણ આમર્થ્ય વરાવતા નથી શક્ત કર્મ-ક્ષય જ એમની નિવૃત્તિનો ઉપાય છે, ત્યારે હે દેવાનુપ્રિય । હું જ્ઞાનાવરણીયના ઉદયથી જનિત આત્મપરિણામરૂપ અજ્ઞાનથી સશય વિપર્યય વગેરેના મિથ્યા જ્ઞાનથી, મિથ્યાત્વ મોહનીય । ઉદયથી જનિત તત્ત્વાર્થ અશ્રદ્ધાન રૂપ આત્મ પરિણામથી, અથવા તો કુદેવ વગેરેના સુદેવ વગેરેની વિપરીતાભિનિવેશરૂપ બુદ્ધિથી, દિસાવગેરે પાપના સ્થાનોથી, અનિવૃત્તિરૂપ પરિણામથી, સાવધ કામોમ પ્રવૃત્તિથી ક્રોધ, માન વગેરે ઉપાયોથી નિવૃત્તિ પ્રવાન અવેલા જ્ઞાનાવરણીય વગેરે ના આઠ પ્રકારના કર્મોનો ક્ષય ચાહ છું ॥ સૂત્ર ૧૩ ॥

मूलम्—तएण से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेण एव वुत्ते समाणे कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-
गच्छह णं देवाणुप्पिया। वारवइए नयरीए सिघाडगनियग चउ-
क्कचच्चर जाव हत्थिखधवरगया महया महया सद्देणं उग्घोसे
माणा २ उग्घोसण करेह—

एवं खलु देवानुप्पिया । थावच्चापुत्ते ससारभउव्विग्गे
भीए जम्मणमरणाणं इच्छइ अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अतिए
मुडे भवित्ता पव्वइत्तए त जो खलु देवाणुप्पिया राया वा
जुवराया वा देवी वा कुमारे वाईसरे वा तलवरे वा कोडुविय
माडविय इब्भसेट्ठि- सेणावइसत्थवाहे वा थावच्चापुत्त पव्वयत-
मणुपव्वयंति तस्स णं कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ, पच्छातुरस्स-
विय से मित्तनाइ । नियगसवधि परिजणस्स जोगखेम वट्ठ-
माण पडिवहति त्तिकट्ठु घोसणं घोसेह जाव घोसति ॥सू०१४॥

टीका—‘ तएण से कण्हे ’ इत्यादि । तत खलु स कृष्णवासुदेवः स्थापत्या
पुत्रेणैवमुक्त सन् कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय,
एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—हे देवानुप्पियाः । यूय गच्छत द्वारवत्या नगर्या

‘ तएण से कण्हे वासुदेवे ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) वे कृष्ण वासुदेव
जब(थावच्चा पुत्तेण) स्थापत्या पुत्र के द्वारा (एव वुत्ते समाणे) इस
प्रकार कहने पर उन्होंने ने (कोडुविय पुरिसे सदावेइ) कौटुम्बिक पुरुषों
को बुलाया (सदावित्ता एव वयासी) और बुलाकर उनसे ऐसा कहा—

(तएण से कण्हे वासुदेवे) इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थारणाइ (से कण्हे वासुदेवे) ते कृष्ण वासुदेवने न्थारे
(थावच्चापुत्तेण) स्थापत्या पुत्रे (एव वुत्त समाणे) आ रीते क्खु त्थारे
तेमब्बे (कोडुविय पुरिसे सदावेइ) कौटुम्बिक पुरुषोने भोलाब्ब्या (सदावित्ता,

शृङ्गाटकत्रिक चतुष्कचत्वरेषु यावत्-महापथेषु-राजमार्गेषु ' हत्थिकचत्वरगया ' हस्तिस्कन्धवरगता गजस्कन्धाख्वा महाता गहता शब्देन उद्घोषयन्तः २ ब्रुवन्त उद्घोषण कुरुत । तदुद्घोषणस्वरूपमाह- ' एव खलु ' इत्यादि ।

एव खलु हे देवानुप्रियाः । अयं स्थापत्यापुत्र ससारभयोद्विग्नः भीतो जन्ममरणेभ्यः अर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तिके मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितुमिच्छति, तद् तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रियाः ! यः कश्चित् खलु-राजा वा युवराजो वा देवी-राज्ञी वा राजकुमारो वा ईश्वरो वा तत्त्वरो वा कोटुम्विकमाडम्विकेभ्यश्चेष्टिसेनापति-

(गच्छह ण देवाणुप्पिया चारवडण नयरी ण सिंघाडग तियग चउक्कच च्चरजावहत्थिखधवरगया महया महया सहेंण उग्घोसेमाणा २ उग्घोसण करेह) हे देवानुप्रियो । तुम जाओ और द्वारावती नगरी के शृङ्गाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर यावत्-आदि-महापथोंमें-राजमार्गोंमें- हाथी के स्कन्ध पर चढ़े हुए तुम सब लोग बड़े जोर २ बोलते हुए ऐसी घोषणा करो (एव खलु देवानुप्पिया । यावच्चा पुत्ते ससार भउव्विग्गे भीए जम्म मरणा ण इच्छइ अरहओ अरिद्धनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए) हे देवानुप्रियो ! सुनो-यह स्थापत्यापुत्र ससार के भय से उद्विग्न तथा जन्ममरण से भयभीत होकर अर्हत अरिष्टनेमिप्रभु के पास मुडित बन दीक्षा ग्रहण करने की इच्छा कर रहा है-(त जो खलु देवाणुप्पिया राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कोटुम्विय माडम्विय इम्मसेट्ठिसेणावड सत्थवाहे व थावच्चापुत्ते पव्वयतमणुपव्वयति तस्स ण कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ) सो हे देवानुप्रियो ! जो कोई राजा,

एव वयासी) અને બોલાવને તેમને કહ્યું-(ગચ્છહ ણ દેવાણુપ્પિયા ! ચારવડણ નયરીણ સિંઘાડગતિયગચઉક્કચચ્ચર જાવ હત્થિસધવરગયા મહયા મહયા સહેણ ઉગ્ગોસેમાણા ૨ ઉગ્ગોસણ કરેહ) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જાઓ અને દ્વારવતી નગરીના શ્રંગાટક ત્રિક ચતુષ્ક, ચત્વર વગેરે મહાપથોમાં, રાજમાર્ગોમાં હાથી ઉપર સવાર થયેલ તમે બધા મોટા માટે આમ ઘોષિત કરો-(એવ ચલુ દેવાણુપ્પિયા ! યાવચ્ચાપુત્તે સસારભઉવ્વિગ્ગો ભીએ જમ્મમરણાણ ઇચ્છઇ અરહઓ અરિદ્ધનેમિસ્સ અતિએ મુડે ભવિત્તા પવ્વઈત્તએ) હે દેવાનુપ્રિયો ! સાંભળો આ સ્થાપત્યાપુત્ર સસારભયથી વ્યાકુળ તેમજ જન્મ અને મૃત્યુથી ભયત્રસ્ત થઈને અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુની પાસે મુડિત બની દીક્ષાગ્રહણ કરવાની ઇચ્છા રાખે છે (ત જો ચલુ દેવાણુપ્પિયા ! રાયા વા જુવરા યા વા દેવી વા કુમારે વા હૈસરે વા તલવરેવા કોટુમ્વિય માડમ્વિય ઇમ્મસેટ્ઠિસેણાવડસત્થવાહેવા થાવ ચ્ચાપુત્ત પવ્વયતમણુપવ્વયતિ તસ્સ ણ કણ્હે વાસુદેવે અણુજાણइ) તેા હે

मूलम्—तएण से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेण एव वुत्ते समाणे कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं देवाणुप्पिया। वारवइए नयरीए सिंघाडगनियग चउ-क्कचच्चर जाव हत्थिखधवरगया महया महया सहेण उग्घोसे-माणा २ उग्घोसण करेह—

एवं खलु देवानुप्पिया । थावच्चापुत्ते ससारभउव्विग्गे भीए जम्मणमरणाणं इच्छइ अरहतो अरिट्टनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए त जो खलु देवाणुप्पिया राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वाईसरे वा तलवरे वा कोडुविय माडविय इब्भसेट्ठि-सेणावइसत्थवाहे वा थावच्चापुत्त पव्वयत्त-मणुपव्वयति तस्स णं कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ, पच्छातुरस्स-विय से मित्तनाइ । नियगसवधि परिजणस्स जोगखेम वट्ट-माण पडिवहति त्तिकट्टु घोसणं घोसेह जाव घोसति ॥सू०१४॥

टीका—‘तएण से कण्हे’ इत्यादि । तत खलु स कृष्णवासुदेवः स्थापत्या पुत्रेणैवमुक्त सन् कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—हे देवानुप्पिया’ । यूय गच्छत द्वारवत्या नगर्या

‘तएण से कण्हे वासुदेवे’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) वे कृष्ण वासुदेव जब (थावच्चा पुत्तेण) स्थापत्या पुत्र के द्वारा (एव वुत्ते समाणे) इस प्रकार कहने पर उन्होंने ने (कोडुविय पुरिसे सदावेइ) कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सदावित्ता एव वयासी) और बुलाकर उनसे ऐसा कहा—

(तएण से कण्हे वासुदेवे) इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्पारभाइ (से कण्हे वासुदेवे) ते कृष्ण वासुदेवने न्यारे (थावच्चापुत्तेण) स्थापत्या पुत्रे (एव वुत्त समाणे) आ रीते उद्धु त्पारे तेभवे (कौडुविय पुरिसे सदावेइ) शौट्टु जिड पुइयोने जेलाव्या (सदावित्ता,

शृङ्गाटकत्रिक चतुष्कचत्वरेषु यावत्-महापथेषु=राजमार्गेषु ' हस्तिकचत्वरगया ' हस्तिस्कन्धवरगता गजस्कन्धारुढा महता महता शब्देन उद्घोषयन्तः २ श्रुन्त उद्घोषण कुरुत । तदुद्घोषणस्वरूपमाह- ' एव खलु ' इत्यादि ।

एव खलु हे देवानुप्रियाः । अयं स्थापत्यापुत्र ससारभयोद्विग्नः भीतो जन्ममरणेभ्यः अर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तिके मुण्डो भूत्वा प्रजितुमिच्छति, तद् तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रिया ! यः कश्चित् खलु-राजा वा युवराजो वा देवी=राज्ञी वा राजकुमारो वा ईश्वरो वा तत्त्वरो वा कोटुम्बिकमाडम्बिकेभ्यश्चेष्टिसेनापति- (गच्छह ण देवाणुप्पिया चारवडण नयरी ण सिंघाडग तियग चउक्कच- च्चरजावहत्थिस्सधवरगया महया महया सहेण उग्घोसेमाणा २ उग्घोसण करेह) हे देवानुप्रियो । तुम जाओ और द्वारावती नगरी के शृङ्गाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर यावत्-आदि-महापथोंमें- हाथी के स्कन्ध पर चढ़े हुए तुम सब लोग बड़े जोर २ बोलते हुए ऐसी घोषणा करो (एव खलु देवानुप्पिया । यावच्चा पुत्ते ससार भउव्विग्गे भीण जम्म मरणा ण इच्छह अरहओ अरिद्धनेमिस्स अतिण मुडे भवित्ता पव्वइत्तण) हे देवानुप्रियो ! सुनो-यह स्थापत्यापुत्र ससार के भय से उद्विग्न तथा जन्ममरण से भयभीत होकर अर्हत अरिष्टनेमिप्रभु के पास मुडित बन दीक्षा ग्रहण करने की इच्छा कर रहा है-(त जो खलु देवाणुप्पिया राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कोटुम्बिय माडम्बिय इवमसेट्ठिसेणावड सत्यवाहे च यावच्चापुत्ते पव्वयत्तमणुपव्वयति तस्स ण कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ) सो हे देवानुप्रियो ! जो कोई राजा,

एव वयासी) अने जोलावाने तेमने उधु-(गच्छह ण देवाणुप्पिया । चारवडण नयरीए सिंघाडगतियगचउक्कचचचर जाव हत्थिस्सधवरगया महया महया सहेण उग्घोसेमाणा २ उग्घोसण करेह) हे देवानुप्रियो ! तमे जणो अने द्वारावती नगरीना शृङ्गाटक त्रिक चतुष्क, चत्वर पगेरे महापथोभा, राजमार्गोभा हाथी उपर मवार थयेल तमे जथा मोटा आदे आभ घोषित उरे-(एव खलु देवाणुप्पिया । यावच्चापुत्ते ससारभउव्विग्गे भीण जम्ममरणाण इच्छह अरहओ अरिद्धनेमिस्स अतिण मुडे भवित्ता पव्वइत्तण) हे देवानुप्रियो ! आलणो आ स्थापत्यापुत्र ससारलयथो व्याडुण तेमज्ज जन्म अने मत्थुथी लयत्रस्त थमने अर्हु त अरिष्टनेमि प्रभुनी पामे मुडित वरुने दीक्षाग्रहण उग्वानी धरुछा राणे छे (त जो खलु देवाणुप्पिया । राया वा जुवरा या वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कोटुम्बिय माडम्बिय इवमसेट्ठिसेणावड सत्यवाहे वा याव च्चापुत्त पव्वयत्तमणुपव्वयति तस्स ण कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ) तो हे

સાર્થવાહા સ્થાપત્યાપુત્ર પ્રવ્રજન્તમનુપ્રવ્રજતિ સ્થાપત્યાપુત્રેણ સહ યઃ કોઽપિ નિ
ષ્ક્રમણ વર્તુમિચ્છતિ તસ્મૈ સ્વલુ કૃષ્ણવાસુદેવ ' અણુજાણઙ ' અનુજાનાતિ, આજ્ઞા
દદાતિ । ' પચ્છાતુરસ્સવિય ' પથ્થાદાતુરસ્યાપિ ચ-પથ્થાત્ આતુરસ્ય=દ્રવ્યા-
યમાવાદ્ દુઃસ્વિતસ્ય તસ્ય=તત્સમ્પન્ધિનઃ મિત્રજ્ઞાતિનિજકસમ્પન્નિપરિજનસ્ય
' જોગસ્થેમ ' યોગક્ષેમ અલબ્ધલાભો યોગ લબ્ધપરિરક્ષણ ક્ષેમ તયોઃ સમાહારઙ્ઙ
યોગક્ષેમ વર્તમાન પ્રતિવહતિ યે પ્રવ્રજ્યાયા પ્રવૃત્તા ભવિષ્યન્તિ, તત્સમ્પન્નિમિત્રા-
દીના યત્ સ્વલુ યોગક્ષેમરૂપકાર્યં કર્તવ્યતયા વર્તતે, તત્ સર્વં કૃષ્ણવાસુદેવઃ
સપાદયિષ્યતીત્યર્થ । इति कृत्वा इत्येव विज्ञापन मनसि निधाय घोषणा=वार्ता-
रूपा, घोषयत ययेय वार्ता द्वावावतीनगरी निवासिना सर्वेषा कर्णगता भवेत्,

યુવરાજ, દેવી, રાજી, રાજકુમાર ઈશ્વર, તલવર, કૌટુમ્બિક, માળવિક,
હમ્યશ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ અથવા સાર્થવાહ સ્થાપત્યાપુત્ર કે સાથ દીક્ષા લેના
ચાહતે હો ડસલિયે કૃષ્ણવાસુદેવે આજ્ઞા પ્રદાન કરતે હૈં (પચ્છાતુર-
સ્સ વિય સે મિત્તનાઈનિયગસવધિપરિજણસ્સ જોગસ્થેમ વદ્ધમાણ
પડિવહતિ ત્તિ કદ્દુઘોસણ ઘોસેહ જાવ ઘોસતિ) જો દીક્ષા લેનેવાલે
કે કુટુબી જન કિસી ખી પ્રકાર સે દુઃસ્વી હોંગે તો ડનકે સવધી મિત્ર,
જ્ઞાતિ, નિજક, સવધી પરિજન કે યોગ ક્ષેમ કો ખી કૃષ્ણ વાસુદેવ
કરેગે તાત્પર્ય ડસકા યહ હૈ કિ જો જન પ્રવ્રજ્યા મેં પ્રવૃત્ત હોંગે ડનકે
સમ્પન્ધી મિત્રાદિકો કા જો કર્તવ્યતયા યોગ-અલબ્ધ કા લાભ, ક્ષેમ-
લબ્ધ કા પરિરક્ષણ રૂપ કાર્ય હોગા વહ સવ કૃષ્ણ વાસુદેવ સપાદિત
કરેગા " इस प्रकार की इस घोषणा को हे देवानुप्रियो ! तुम अपने
चित्त में अच्छी तरह धारण कर जिस प्रकार यह बात द्वारावती नगरी

દેવાનુપ્રિયો ? જે ડાઇ રાજ, યુવરાજ, દેવી, રાજકુમાર, ઈશ્વર, તલવર કૌટુમ્બિક,
માડબિક હમ્ય, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ કે સાર્થવાહ સ્થાપત્યાપુત્રની સાથે દીક્ષા ગ્રહણ
કરવા ચાહે છે તેમના માટે કૃષ્ણ વાસુદેવ દીક્ષા સ્વીકારવાનિ આજ્ઞા પ્રદાન
કરે છે (પચ્છાતુરસ્સ વિય સે મિત્તનાઈનિયગસવધિપરિજણસ્સ જોગસ્થેમ
વદ્ધમાણ પડિવહતિ ત્તિ કદ્દુ ઘોસણ ઘોસેહ જાવ ઘોસતિ) દીક્ષાલેનાર કુટુબીઓ
જે તેમની દીક્ષાબાદ ગમેતે પ્રકારે હુ ખી હશે તો તેમના સવધી, મિત્ર,
જ્ઞાતિ, નિજક સવધી પરિજનોનુ યોગક્ષેમ પણ કૃષ્ણ વાસુદેવ ડવશે આનો
ભાવાર્થ એ પ્રમાણે છે કે જે માણસો પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરશે તેમના સવધી
મિત્ર વગેરેનુ જે કર્તવ્યતયાયોગ-અલબ્ધનો લાભ, ક્ષેમ-લબ્ધનુ પરિરક્ષણરૂપ
કાર્ય થશે-ને બધુ કૃષ્ણ વાસુદેવ પુરૂ કરશે હે દેવાનુપ્રિયો ! આ ઘોષણાને
તમે સારીપેઠે ચિત્તમા ધારણ કરો જેથી દ્વારાવતી નગરીના ઘરેકે ઘરેકે માણસ

तथोच्चैः स्वरेण दुन्दुभ्यादिनात्रैः सह भाषणं कुरुतेत्यर्थः । यानद् घोषयन्ति ।
कृष्णवासुदेवस्यादेशानुसारेण आदेशकारिणः पुरुषाः द्वारावत्यां नगर्यां घोषणा
कृतवन्त इत्यर्थः ॥ सू० १४ ॥

मूलम्—तएण थावच्चापुत्तस्स अणुराएण पुरिससहस्सं
निक्खमणाभिमुहं पहाय सव्वालकारविभूतिय पत्तेय २ पुरिस-
सहस्सवाहिणीसु सिवियासु दुरुद्ध समाणं मित्तणाइपरिवुड
थावच्चापुत्तस्स अतिय पाउव्भूय, तएण से कण्हे वासुदेवे पुरि-
ससहस्समतिय पाउव्भवमाण पासइ, पासित्ता कोडुवियपुरिसे
सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी—

जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ तहेव सेयापीएहि (कलसेहि)
पहावेइ, पहावित्ता जाव अरहतो अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइच्छत्त पडा-
गातिपडाग पासइ, पासित्ता विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता
सिवियाओ पच्चोरुहइ ॥ सू० १५ ॥

टीका—‘तएण’ इत्यादि । स्थापत्यापुत्रस्य अनुरागेण=स्नेहेन पुरुषमहस्स
निक्रमणाभिमुख्य स्नात सर्वालङ्कारनिभूषित प्रत्येक प्रत्येक पुरुषसहस्सवाहिनीपु

के समस्त मनुष्यो के कण गोचर हो सके इस तरह से बड़े २ जोर से
दुन्दुभि आदि बाजो के साथ करो । इस तरह कृष्णवासुदेव की इस
आज्ञा को उन आदेश कारीपुरुषो ने प्रमाणभूत मान कर उसे द्वारावती
नगरी में घोषित करके सुना दिया । सूत्र “ १४ ”

‘तएण थावच्चा पुत्तस्स’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (थावच्चापुत्तस्स अणुराएण) स्थापत्यापुत्र
के अनुराग से (पुरिससहस्स) १ हजार पुरुष (निक्खमणाभि

मुधी आ वात सारो गीते पडोयी राके तमे मोटेथो दुहुलि वगेरे वाण्णो
वगाडो अने आ वातनी घोषणा करे कृष्ण वासुदेवनी आज्ञाने कौटुणिक
पुरुषोअे सप्रमाण भाणीने द्वारावती नगरीमा तेनी घोषणा करे ॥ सूत्र १४ ॥

(तएण थावच्चापुत्तस्स इत्यादि)

टीकार्थ—(तएण) त्पारणाद (थावच्चापुत्तस्स अणुराएण) स्थापत्यापुत्र
प्रथे विशेष प्रेम डोवाने कारणे (पुरिस सहस्स) ओके १००० पुरुषो (निक्ख

शिविकासु दुरूढ=समारूढ सत् मित्रज्ञातिपरिट्टत स्थापत्यापुत्रस्य अन्तिके समीपे प्रादुर्भूतम् उपस्थितम् । तत खलु सकृण्णवासुदेवोऽन्तिके 'पाउञ्चामाण' प्रादुर्भूतम् पुरुषसहस्र पश्यति, दृष्ट्वा कौटुम्बिकपुरुषान् आदेशकारिणः पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अगादीत्-यथा मेघस्य निष्क्रमणाभिषेकः, तथैव 'सेयापीएहि' श्वेतपीतैः जलपूर्णैरुप्यसुवर्णमयैः कलशैः कृष्णवासुदेवः दीक्षोत्सुकः पुरुषसहस्रसहित-स्थापत्यापुत्र स्नपयति, स्नपयित्वा यात्रदुर्मर्वालङ्कारविभूषित कृत्वा पुष्पसहस्रवाहिनी शिविकामारोह्य कृष्णवासुदेव द्वारावतीनगरीम् यभागेन गत्वा अर्हतोऽरिष्टनेमेः उत्तरोपरि-उत्त उत्तरत्रय, पताकातिपताका=पताकोपरिपताका पुरुषवृन्दै सह पश्यति । 'विज्जाहरचारणे' विद्यायस्वाणान विद्यायस्वान्=

मुह) निष्क्रमण के सन्मुख हो गये अर्थात् दीक्षित होने के लिए तैयार हो गये (ण्हाय) उन्होंने स्नात करके (सव्वालकरविभूमिय) मद्य प्रकार के अलकारों से अपने २ शरीर को विभूषित किया (पत्तेय २ पुरि ससहस्सवाहिणीसु सिवियासु दुरूढ समान मित्तणाडपरिवुड) बाद में मित्रादि परिजनो से युक्त हुआ प्रत्येक व्यक्ति उन मेसे १ हजार पुरुषों को वहन करनेवाली शिविकापर आरूढ होकर (यावच्चचापुत्तस्स अतिय पाउञ्चभूय) स्थापत्या पुत्र के पास आया । (तण्ण से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्समतिय पाउञ्चभवमाण पासइ) जब कृष्ण वासुदेव ने पुरुष सहस्रको स्थापत्यापुत्र के पास आया हुआ देखा ता (पासित्ता कोडुबिय पुरिसे सदावेइ) देखकर उन्होंने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सदावित्ता एव वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा— (जहा मेहस्स निस्समणाभिसेओ तहेव सेया पीएहि ण्हावेइ, ण्हावित्ता जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स उत्ताइरुत्त पडागाइपडाग पासइ - पासित्ता

मणाभिमुह) निष्ठभणु (दीक्षा) भाटे तैयार थछ गया (ण्हाय) तेओ नडाया, (सव्वालकरविभूसिय) लधी लतना धरेण्णाओथी तेमने पोताना शरीर शणुगार्या (पत्तेय २ पुरिससहस्सवाहिणीसु सिवियासु दुरूढ समान मित्तणाई परिवुड) त्थार णाड मित्र वगेरे परिजनोनी साथे तेओभाथी दरेड दीक्षार्थी ओक डल्लर पुरुषो वडन डरे ओरी पालणी उपर सवार थछने (यावच्चचा पुत्तस्स अतिय पाउञ्चभूय) स्थापया पुत्रनी पाने आव्यो (तण्ण से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्समतिय पाउञ्चभवमाण पासइ) कृष्णवासुदेवे ल्य रे ओकडल्लर पुरुषोने स्थापत्यापुत्रने त्या आवेला जेथा (पासित्ता कोडुबिय पुरिसे सदावेइ) तेभणु कौटुम्बिक पुरुषोने ओलाव्या (सदावित्ता एव वयासी) ओलाणीने तेमने कलु (जहा मेहस्स निस्समणाभिसेओ तहेव सेयापीएहि ण्हावेइ ण्हावित्ता जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स उत्ताइरुत्त पडागाइपडाग पासइ पासित्ता विज्जा

चारणश्रमणां यावत्—अत्र 'जम्भ ए य देवे ओषयमाणे' इत्यादि पाठोऽनुसन्नेयः, जम्भकदेवाश्च गगनादवतरतः पश्यति, दृष्ट्वा शिविकां 'पञ्चोरुह' प्रत्यवरो-
हति अवतरति ॥ १५ ॥

मूलम्—तएणं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्त पुरओ काउं
जेणेव अरिहा अरिष्टनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेस
सव्वं तं चेव आभरणं तएणं से थावच्चागाहावइणा हसल-
क्खणेणं पडगसाडएण आभरणमल्लालकारे पडिच्छइ, हारवारि
धारच्छिन्नमुत्तावलिप्पगासाति असूणि विणिम्मुचमाणी २ एव
वयासी—

विज्ञाहरचारणे जाव पासित्ता सिवियाओ पञ्चोरुहइ) जिस प्रकार मेघ
कुमार का निष्क्रमणाभिषेक (दीक्षाका उत्सव) हुआ या उसी प्रकार
जलपूर्ण श्वेतपीतकलशों द्वारा - रूप्यसुवर्णके घटों द्वारा कृष्णवासुदेव
ने दीक्षा के उत्सुक - हजार पुरुष सहित स्थापत्यापुत्र का अभिषेक
किया। अभिषेक कर के फिर उन्होंने उसे सर्व प्रकारके अलकारोंसे
विभूषित किया। विभूषित करके फिरवे उसे पुरुष सहस्रवाहिनी शिविका
पर आरूढ़ कराकर द्वारावती नगरी के ठीक बीचों बीच से होकर लेनले।
चलते २ जब उन्होंने ने अर्हत अरिष्टनेमिप्रभु के उत्तरोपरिछत्र—तीन छत्रों
तो और पताको परिपताकाको पुरपट्टन्दो के साथ देखा—तथा विन्धाधरों
को चारणश्रमणों को आकाश से उतरते हुए जम्भक देवों को देखा—
तो देख कर वे शिविका से नीचे उतरे ॥ सू० १७ ॥

हाचारणे जाव पासित्ता सिवियाओ पञ्चोरुहइ) जेम मेघकुमारने निष्क्रमणाभिषेक थये। तेमज्ज जगगी परिपूणुं सङ्केद पीणा कण्ठे। वडे तेमज्ज याही मोनाना धडाओ। वडे कृष्णवासुदेवे दीक्षार्थी स्थापत्या पुत्र तेमज्ज तेनी साथेना ओउ छत्तर पुरुषेने। अभिषेक थये। अभिषेक पछी तेमले तेने णधा धरेण्णाओ। थो शणुगार्यो राणुगार्यो णाह तेओ। पुरुष सहस्र वाहिनी पादणी उपर स्थापत्या पुत्रने जेमाडीने द्वारावती नगरीनी णनाणर वर्ये ना भार्गे थम्भने थाइया जता जता क्यारे तेओओ अरु न अरिष्टनेमि प्रभुना छत्र उपर छत्र आभरण उपर। उपनी छत्रे, पताकाणी उपर पताकाओने तेमज्ज पुरुष समान्ने जेये। अने विन्धाधरेने चारण श्रमणोने आकाशभाथी नीथे उतरता, ते जम्भकदेवोने जेया त्यारे जेधने तेओ। पादणी उपरथी नीथे उतरी पड्या ॥१५॥

शिविकासु दुरुद्ध=समारुद्ध सत् मित्रज्ञातिपरिट्टत स्थापत्यापुत्रस्य अन्तिके समीपे प्रादुर्भूतम् उपस्थितम् । तत खलु सकृण्णवासुदेवोऽन्तिके 'पाउञ्च्यमाण' प्रादुर्भवत् पुरुषसहस्र पश्यति, दृष्ट्वा कौटुम्बिकपुरुषान् आदेशकारिणः पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-यथा मेवस्य निष्क्रमणाभिपेक्ष, तथैव 'सेयापीएहि' श्वेतपीतैः जलपूर्णैरुप्यसुवर्णमयैः कल्पैः कृष्णवासुदेवः दीक्षोत्सुक पुरुषसहस्रसहित-स्थापत्यापुत्र स्नपयति, स्नपयित्वा यावद्मर्वालङ्कारविभूषित कृत्या पुरुषसहस्रवाहिनीं शिविकामारोह्य कृष्णवासुदेव द्वारावतीनगरीम् यभागेन गत्वा अर्हतोऽरिष्टनेमे' उत्रोपरिष्ठत्र उत्रत्रय, पताकातिपताका=पताकोपरिपताका पुरुषवृन्दै सह पश्यति । 'विज्जाहरचारणे' मित्रारचारणान् विद्याधरान्=

मुह) निष्क्रमण के समुख हो गये अर्थात् दीक्षित होने के लिए तैयार हो गये (पहाय) उन्होंनेस्नात करके (सञ्चालकरविभूमिय) सब प्रकार के अलङ्कारों से अपने २ शरीर को विभूषित किया (पत्तेय २पुरि ससहस्रवाहिणीसु सित्रियासु दुरुद्ध समाण मित्तणाडपरिवुड) बाद में मित्रादि परिजनो से युक्त हुआ प्रत्येक व्यक्ति उनमेंसे १ हजार पुरुषों को वहन करनेवाली शिविकापर आरुद्ध होकर (यावच्चचापुत्तस्स अतिय पाउञ्भूय) स्थापत्या पुत्र के पास आया । (तण्ण से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्समनिय पाउञ्भवमाण पासइ) जब कृष्ण वासुदेव ने पुरुष सहस्रको स्थापत्यापुत्र के पास आया हुआ देखा ता (पासित्ता कोडुबिय पुरिसे सहावेइ) देखकर उन्होंने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सहावित्ता एव वयामी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा— (जहा मेहस्स निस्समणाभिसेओ तहेव सेया पीएहिं पहावेइ, पहावित्ता जाव अरहओ अरिद्धनेमिस्स छत्ताइच्छत्त पडागाइपडाग पासइ - पासित्ता

मणाभिमुह) निष्क्रमण (दीक्षा) भाटे तैयार थछ गया (पहाय) तेओ नडाया, (सञ्चालकरविभूमिय) जधी जतना धरेलाओथी तेमने पोताना शरीर शणुगार्या (पत्तेय २ पुरिससहस्सवाहिणीसु सित्रियासु दुरुद्ध समाण मित्तणाई परिवुड) तयार गाह मित्र वगेरे परिजनोंनी साथे तेओभाथी दरेड दीक्षार्थी ओइ छंजर पुरुषो वहन करे ओवी पालणी उपर सवार थछने (यावच्चचा पुत्तस्स अतिय पाउञ्भूय) स्थापत्या पुत्रनी पाने आय्यो (तण्ण से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्समतिय पाउञ्भवमाण पासइ) कृष्णवासुदेवे जय रे ओइछंजर पुरुषोने स्थापत्यापुत्रने त्या आवेला जेथा (पासित्ता कोडुबिय पुरिसे सहावेइ) तेमले कौटुम्बिक पुरुषोने ओलाव्या (सहावित्ता एव वयामी) ओलावीने तेमने छलु (जहा मेहस्स निस्समणाभिसेओ तहेव सेयापीएहिं पहावेइ पहावित्ता जाव अरहओ अरिद्धनेमिस्स छत्ताइच्छत्त पडागाइपडाग पासइ पासित्ता विज्जा

चारणश्रमणान् यावत्-अत्र 'जम्भक य देवे जोवयमाणे' इत्यादि पाठोऽनुसन्नेयः, जम्भकदेवाश्च गगनाद्वतरतः पश्यति, दृष्ट्वा शिविकात् 'पञ्चोरुहः' प्रत्यवरो-
हति अवतरति ॥ १५ ॥

मूलम्-तएणं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तं पुरओ काउं
जेणेव अरिहा अरिष्टनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेस
सव्व तं चेव आभरणं तएणं से थावच्चागाहावइणा हसल-
कखणैणं पडगसाडएण आभरणमल्लालकारे पडिच्छइ, हारवारि
धारच्छिन्नमुत्तावलिप्पगासाति असूणि विणिम्मुचमाणी २ एव
वयासी-

विज्ञाहरचारणे जाव पासित्ता सिवियाओ पञ्चोरुहः) जिस प्रकार मेघ
कुमार का निष्क्रमणाभिषेक (दीक्षाका उत्सव) हुआ या उसी प्रकार
जलपूर्ण श्वेतपीतकलशों द्वारा - रूप्यसुवर्णके घटों द्वारा कृष्णवासुदेव
ने दीक्षा के उत्सुक - हजार पुरुष सहित स्थापत्यापुत्र का अभिषेक
किया। अभिषेक कर के फिर उन्होंने उसे सर्व प्रकारके अलकारोंसे
विभूषित किया। विभूषित करके फिरवे उसे पुरुषसहस्रवाहिनी शिविका
पर आरुढ़ कराकर द्वागवती नगरी के ठीक बीचों बीच से होकर लेचले।
चलते २ जब उन्होंने ने अर्हत अरिष्टनेमिप्रभु के उत्रोपरिछत्र-तीन छत्रों
को और पताको परिपताकाको पुरुषवृन्दों के साथ देखा-तथा विद्याधरों
को चारणश्रमणों को आकाश से उतरते हुए जम्भक देवों को देखा-
तो देख कर वे शिविका से नीचे उतरे ॥ सू० १६ ॥

हाचारणे जाव पासित्ता सिवियाओ पञ्चोरुहः) जेभ मेघकुमारने निष्क्रमण
अभिषेक थये। तेमज्ज जणणी परिपूर्ण सङ्केह पीणा उण्णो वडे तेमज्ज थाही
मेनाना घडाओ वडे कृष्णवासुदेवे दीक्षार्थी स्थापत्या पुत्र तेमज्ज तेनी साथेना
ओक उन्तर पुरुषोने। अभिषेक थये। अभिषेक पजी तेमजे तेने जग्ग धरेण्णो
थी शण्णुगार्थी शण्णुगार्थी आह तेओ। पुरुष सहस्र वाहिनी पावणा उपर स्था
पत्या पुत्रने जेमाडीने द्वागवती नगरीनी जग्गवर वच्चे ना भागे थय्ने आह्या
जग्ग जग्ग जग्गारे तेओओ अह त अरिष्टनेमि प्रभुना उत्र उपर छत्र आम
त्रण उपरा उपरी छत्रो, पताजानी उपर पताजाओने तेमज्ज पुरुष समान्ते
जेथो अने विद्याधरने चारण श्रमणोने आजागमाथी नीचे उतरता, ते ज
जम्भकदेवोने जेथो थारे जेधने तेओ। पावणी उपरथी नीचे उतरी पड्या ॥१५॥

જડ્યઠ્ઠં જાયા । ઘડિયઠ્ઠ જાયા । પરિક્ષમિયઠ્ઠ જાયા ।
અસ્મિ ચ ણં અદ્દે ણોપમાણ્યઠ્ઠ જામેવદિસિ પાઠઠ્ઠમૂતા તામેવ
દિસિ પડિગયા ॥ સૂ. ૧૬ ॥

‘ તણ સે કળ્હે ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકા—તતઃ સ્વલુ સ કૃણવાસુદેવઃ સ્થાપત્યાપુત્ર પુત્ર. ‘ કાઠ ’ કૃત્વા
યત્રૈવ અર્હન્ અરિષ્ટનેમિઃ, તત્રૈવોપાગચ્છતિ અપ્રમુશ્વતિ । ઉપાગત્ય શેષ સર્વં તદેવ
શેષ=આદક્ષિણપ્રદક્ષિણાદિક સર્વં ચરિત યત્ સ્વલુ મેઘકુમારસ્ય, તદેવાત્ર વાચ્યમ્ ।
સ્થાપત્યાપુત્રોઽર્હતોઽરિષ્ટનેમે. સમીપાદીશાનકોણદિગ્ભાગે સ્વયમેવ ‘ આભરણમ
છાલકારે ’ આભરણમાલ્યાલઙ્કારાન્ ‘ ઓમુયઈ ’ અપ્રમુશ્વતિ અપ્રતારયતિ । તતઃ
સ્વલુ સા સ્થાપત્યાગાથાપત્ની હમલક્ષણેન હસસ્વરૂપેણ શુક્લવર્ણેન ‘ પટગસાડણ
ણ ’ પટશાટકેન પૃથુલસ્ત્રેણ આભરણમાલ્યાલઙ્કારાન્ પ્રતોચ્છતિ પ્રતિગૃહ્ણતિ ।

તણ સે કળ્હે વાસુદેવે ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—(તણ) ઇસકે બાદ (સે કળ્હે વાસુદેવે) વે કૃણવાસુદેવે
(થાવચ્ચા પુત્ત) સ્થાપત્યા પુત્ર કો (પુરઓકાઠ) આગે કરકે (જેણેવ
અરિહા અરિષ્ટનેમિ તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) જહા અર્હત અરિષ્ટનેમિ પ્રમુ થે
વહા ગયે (ઉવાગચ્છિત્તા સેસ સઘ્વ ત ચેવ આભરણ૦) વહા જાકર
ઉન્હોં ને પ્રમુ કી આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા પૂર્વક વદના કી । મેઘકુમાર
ને દીક્ષા અગીકાર કરતે સમય જો કુછ કિયા વહ સવ વહા સ્થાપત્યા
પુત્ર ને મી કિયા બાદ મે સ્થાપત્યા પુત્રને અરિષ્ટનેમિ પ્રમુ કે પાસ સે
ઈશાનકોણ મેં જાકર સ્વય હી અપને માલા ઓર અલકારો કો ઉત્તારા
(તણ સે) ઇસ સમય વહો ઉપસ્થિત રહી હુઈ ઉસકી માતા ગાથા
પત્ની ને હસ કે જૈસી શુક્લવર્ણવાલી અપની પટશાટિકા મેં ઉનઅવતા-

(તણ સે કળ્હે વાસુદેવે ઇત્યાદિ) ॥

ટીકાર્થ—(તણ) ત્યારબાદ (સે કળ્હે વાસુદેવે) કૃણવાસુદેવ (થાવચ્ચા પુત્ત)
સ્થાપત્યા પુત્રને (પુરઓ કાઠ) આગળ રાખીને (જેણેવ અરિહા અરિષ્ટનેમી
તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) જ્યાં અર્હત અરિષ્ટનેમિ પ્રમુ હતા ત્યાં ગયા (ઉવાગચ્છિત્તા
સેસ સઘ્વ ત ચેવ આભરણ૦) ત્યાં જઈને તેમણે પ્રમુની આદક્ષિણ પ્રદ
ક્ષિણની સાથે વદના કરી મેઘકુમારે દીક્ષા વખતે જે કંઈ કંથુ હોતુ તે બધું
સ્થાપત્યાપુત્રે પણ કંથુ ત્યાર બાદ સ્થાપત્યાપુત્રે અરિષ્ટનેમી પ્રમુની પાસેથી
ઈશાન ડોણમા જઈને જાતેજ માળા અને ઘરેણાઓ ઉતાર્યા, (તણ સે) તે
વખતે તેની માતા સ્થાપત્યાગાથાપત્ની ત્યાં હોતી તેમણે હસ જેવી સ્વચ્છ મહેદ

‘ हारवारिधारछिन्नमुक्तावलिप्पगासाड ’ हारवारि गाराछिन्नमुक्तावली प्रकाशानि
 ‘ असूणि ’ असूणि ‘ विणिम्मुचमाणी २, विनिर्मुञ्चन्ती २ मुक्ताहारजल गारा वि
 कीर्णमुक्तावत्स्वच्छाश्रुविन्दून् पुनः पुनर्निपातयन्तीत्यर्थः, एव=वक्ष्यमाण प्रकारेण
 अवादीत्-यत्तितव्य जात ! = हे पुत्र ! सयमाराधनायं यत्नं कुरु, प्रदितव्य जात !
 हे वत्स ! सयमे सलग्नोभव, पराक्रमितव्य जात ! = हे अङ्ग ! सयमप्रतिकूलान्
 आलस्यादीन् वारयितुं कायादियल प्रदर्शय, अस्मिन् अर्थे ‘ णो पमाएयव्व ’ नो
 प्रमादितव्यम्=प्रमादस्य वशे कदापि मा भू, इत्युक्त्वा = इति कथयित्वा, स्थाप
 त्यापुत्रस्य माता स्थापत्या गाथापत्नी यस्यादशः सकाशात् प्रादुर्भूता=आयाता
 तस्यामेवदिशि प्रतिगता ॥ सू० १६ ॥

रित माला अलकारों को लेकर रखलिया। रखते समय वह (हार
 वारिधार छिन्न मुक्तावलिप्पगासाड असूणि विणिम्मुचमाणी २ एव
 वयासी) हारवारिधारा और छिन्नमुक्तावली के समान आसुओं को
 धार २ बहाती जानी थी। इसी स्थितिमें बनी हुई उस स्थापत्या गाथा
 पत्नी ने फिर अपने पुत्र से उस प्रकार कहा—(जड़यव्व जाया ! घड़ियव्व
 जाया ! परिक्कमियव्व जाया ! अस्मि च ण अट्टे णो पमाएयव्व जामेव
 दिसि पाउम्भूया तामेव दिसि पडिगया) हे पुत्र ! सयम की आराधना
 के लिये तुम प्रयत्नशील रहना। हे पुत्र ! तुम सयम में सलग्न रहना।
 हे पुत्र सयम के प्रतिकूल आलस्य आदिको को निवारण करने के लिये
 अपने शारीरिक आदि बल को प्रस्फुरित करते रहना। इस सयम रूप
 अर्थमें हे बेटा ? तुम कभी भी एकाक्ष्ण भी प्रमादके वशवर्ती मत होना।
 ऐसा कहकर वह माता स्थापत्यागाथा पत्नी जिस दिशा से आई थी
 उसी दिशा में वापिस चली गई ॥ सू० १६ ॥

साडीमा ते उगारेली भाणा अने धरेणुओ वगेरे लई लीधा भाणा अने धरेणु
 ओ साडीमा भूकती वणते (हारवारिधारछिन्नमुक्तावलिप्पगासाड असूणि विणिम्मुच
 माणी २ एव वयासी) तेनी आपोभाथी नीकणता आसुओ। डार पाणीनी
 धारा अने छिन्न मुक्तावलीनी जेम सतत टपकी ग्या हुता आम आसुलीनी
 आपोथी स्थापत्यागाथा पत्नी पोताना पुत्रने डडेवा लागी—(जड़यव्व जाया ! घड़ि
 यव्व जाया ! परिक्कमियव्व जाया अस्मि च ण अट्टे णो पमाएयव्व जामेव
 दिसि पाउम्भूया तामेव दिसि पडिगया) हे पुत्र ! सयमनी साधना भाटे तमे
 सहा सावध रहने डेवत्त। सयमनी साधना भाटे प्रतिकूल आलस्य वगेरेना
 निवारण भाटे पोताना शारीरिक वण प्रस्फुरित करता रहने आ सयमनी
 साधनामा तमे डेवा पण वणते प्रमाद करता नहि आ प्रमाणे सपोधीने
 स्थापत्यापत्नी साथी पोताने डेर पाछी वणी सूत्र ॥ १६ ॥

मूळम्—तएण से थावच्चापुत्ते पुरिससहस्सेहि सद्धि सयमेव पचमुट्टिय लोय करेइ जाव पव्वइए । तएण से थाव-
च्चापुत्ते अणगारे जाते इरियासमिए भासासमिए जाव विह-
रइ, तएणं से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्टनेमिस्स तहारूवाणं
थेराण अतिए सामाइयमाइयाइ चउदसपुव्वाइ अहिज्जइ,
अहिज्जित्ता वहूहि जाव चउत्थेणं विहरति ।

तएण अरिहा अरिट्टनेमी थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स
त इव्वमाइयं अणगारसहस्ससीसत्ताए दलयइ, तएण से
थावच्चापुत्ते अन्नया कयाइ अरह अरिट्टनेमि वदइ नमंसइ
वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—इच्छामि ण भते तुव्वमेहि अव्वभ-
णुन्नाउ समाणे सहस्सेण अणगारेणं सद्धि वहिया जणवयविहारं
विहरित्तए, अहासुह देवाणुप्पिआ । तएण से थावच्चापुत्ते
अणगारसहस्सेणं सद्धि तेण उरालेणं उग्गेणं पयत्तेणं पग्ग-
हिणं वहिया जणवयविहार विहरइ ॥ सू० १७ ॥

‘तएण से थावच्चापुत्ते’ इत्यादि ।

टीका—तत’ तदनन्तर खलु स स्थापत्यापुत्रः पुरुषमहस्त्रेण सार्धं स्वयमेव

‘तएण से थावच्चा पुत्ते’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) हमके बाद (से थावच्चा पुत्ते) उस स्थापत्या पुत्रने
पुरिससहस्सेहिं सद्धि सयमेव पचमुट्टिय करेइ) उन एक हजार दीक्षित
पुरुषोंके साथ अपने केशोंका पचमुट्ठी लोंच किया—(जाव पव्वइए) यावत्

(तएण से थावच्चा पुत्ते) इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थारणाइ (से थावच्चापुत्ते) स्थापत्या पुत्रे (पुरिससह
स्सेहि सद्धि सयमेव पचमुट्टिय लोय करेइ) दीक्षा पाभेला ओइ उअर
पुरुषोनी साथे पोताना वाणनु पाथ सुणी बुचन कथुं (जाव पव्वइए) अनेर

पञ्चमुष्टिक लोच करोति कृत्वा च यावत् प्रव्रजितः सहस्रपुरुषे सह स्थापत्यापुत्रो
ऽईदरिष्टनेमेः समीपे चत्वारिमहाव्रतानि उच्चारितवान्। ततस्तदनन्तरं स स्थापत्या
पुत्रः 'अणगारे' अनगारः द्रव्यतो भावतश्च मुनिर्जातः, स कीदृश इत्याह—'ईरि-
यासमिण' ईर्यासमित ईर्यासमितिः यतनापूर्वकं गमनं, तथा समन्वितं, यथा
कथमप्यन्यजीवविराधना न स्यात्तथोपयोगपूर्वकगमनवानित्यर्थः, 'भासास-
मिण' भापासमितः भापासमितियुक्तं यावत् विहरति=यावच्छब्देन 'एषणास-
मिण, आयाणभडमत्तनिकखेवणासमिण, उच्चारपासवणखेलजल्लसिधाणपरिद्धा-
वणीया समिण' इत्यादि वान्यम्। एषणासमितः=एषणासमितियुक्तः निर्दोष-
भिक्षाग्रहणशीलः, आदानभाण्डामत्रनिक्षेपणासमितः=भाण्डामात्राद्युपकरणानाम्
आदाने ग्रहणे निक्षेपणाया रथापने च या समितिस्तथा युक्तः, उच्चारमस्रवण

प्रव्रजित होकर उसने सहस्र पुरुषोंके साथ अरिष्टनेमि प्रभुके समीप फिर
पंचमहाव्रतोंका उच्चारण किया। इस तरह वे स्थापत्यापुत्र अब द्रव्य और
भाव दोनों रूपसे अनगारावस्थापन्न बन गये। यही बात (तण्ण से याव
च्चा पुत्ते अणगारे जाए) इन पदों द्वारा व्यक्त की गई है। ('ईरिया-
समिण, भासासमिण जाव विहरइ') वे यतना पूर्वक चलने लगे ईर्या
समिति से युक्त बन गये—जिस तरह किसी भी अन्य जीव की विराधना
न हो इस तरह उपयोग पूर्वक चलने लगे भापा समिति आदि
समिति से युक्त हो गये। यही यावत् शब्द से एषणाममिण,
आयाणभडमत्तनिकखेवणासमिण, उच्चारपासवणखेलजल्लसिधाण-
परिद्धावणीया समिण " इन अवशिष्ट समितियों आदि का ग्रहण हुआ
है। निर्दोष भिक्षा लेना एषणा समिति है। भाण्डामत्रादि उपकरणों
के आदान में ग्रहण में और निक्षेपण में उपयोग पूर्वक प्रवृत्ति करना

प्रव्रजित થઈ ને તેણે એક હજાર પુરુષોની સાથે અરિષ્ટનેમિ પ્રભુની આગે પથ
મહાવ્રતોનું ઉચ્ચારણ કર્યું આ ગીતે તે સ્થાપત્યા પુત્ર દ્રવ્ય અને ભાવની
અપેક્ષાએ અનગાર અવસ્થાપન્ન થઈ ગયા આ વાત (તણ્ણ સે યાવચ્છાપુત્તે
અણગારે જાણ) આ પદો વડે પ્રકટ કરવામાં આવી છે તેઓ કેવા અણુગાર
થયા તે નીચેના સૂત્રથી બતાવે છે ('ઈરિયા સમિણ, ભાસા સમિણ, જાવ વિહરइ')
ઈર્યાસમિતિથી યુક્ત થઈ ગયા એટલે કેઈપણ બંધને વિરાધના (ડબ્બ) થાયનહી
એવી રીતે જતનથી ચાલવા લાગ્યા તે ભાપાસમિતિ વગેરે સમિતિથી યુક્ત થઈ ગયા
'યાવત્ રાખ્યવી' (એષણાસમિણ આયાણમહામત્તનિક્કલેવણાસમિણ, ઉચ્ચાર
પાસવણલેહજલ્લસિધાણપરિદ્ધાવણીયા સમિણ) આ સમિતિઓ વગેરેનું શ્રદ્ધણ
થયું છે નિર્દોષ ભિક્ષા સ્વીકારવી 'એષણા-સમિતિ' છે ભાણ્ડામત્રાદિ ઉપકરણોના
આદાન એટલે શ્રદ્ધણમાં અને નિક્ષેપણ મૂકવામાં ઉપયોગ પૂર્વક-પ્રવૃત્તિ યવી તે

मूलम्—तएण से थावच्चापुत्ते पुरिससहस्सेहि सद्धिं सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ जाव पव्वइए । तएण से थावच्चापुत्ते अणगारे जाते इरियासमिए भासासमिए जाव विहरइ, तएण से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्टनेमिस्स तहारूवाणं थेराण अंतिए सामाइयमाइयाइ चउद्दसपुठ्वाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहि जाव चउत्थेण विहरति ।

तएण अरिहा अरिट्टनेमी थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स तं इब्भाइय अणगारसहस्ससीसत्ताए दलयइ, तएण से थावच्चापुत्ते अन्नया कयाइ अरह अरिट्टनेमि वदइ नमंसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते तुव्वभेहि अव्वभ पुन्नाउ समाणे सहस्सेण अणगारेण सद्धिं वहिया जणवयविहार विहरित्तए, अहासुह देवाणुप्पिआ । तएण से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं तेण उरालेणं उग्गेणं पयत्तेणं पग्गहिणं वहिया जणवयविहार विहरइ ॥ सू० १७ ॥

‘तएण से थावच्चापुत्ते’ इत्यादि ।

टीका—ततः तदनन्तर खलु स स्थापत्यापुत्रः पुरुषमहस्त्रेण सार्धं स्वयमेव

‘तएण से थावच्चा पुत्ते’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से थावच्चा पुत्ते) उस स्थापत्या पुत्रने पुरिससहस्सेहिं सद्धिं सयमेव पचमुट्ठिय करेइ) उन एक हजार दीक्षित पुरुषोंके साथ अपने केशोंका पचमुट्ठी लोच किया—(जाव पव्वइए) यावत्

(तएण से थावच्चा पुत्ते) इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) तयारणाइ (से थावच्चापुत्ते) स्थापत्या पुत्रे (पुरिससहस्सेहि सद्धिं सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ) दीक्षा पाभेला ओक हजार पुरुषोनी साथे पोताना वाणनु पाय भुञ्जी लुयन कथुं (जाव पव्वइए) अनेर

रहित अनास्रव', हिंसादिवर्जितः, अममः, ममत्वरहित, अकिंचन द्रव्यभावपरिग्रहवर्जितः छिन्नग्रन्थः, स्नेहरहितः, निरुपलेपः—द्रव्यभावलेपवर्जितः, कास्यपात्रमित्र मुक्ततोयः तोयस्वप्नेहरहितत्वात्, शङ्ख इव नीरञ्जनः रागमम्बन्धरहितत्वात्, जीवत्वापतिहतगतिः सर्वदशविहारित्वात्, जात्यकनकमित्र जातरूप निरतिचारसयमवत्त्वात्, गगनमित्र निरालम्बनः देशग्रामकुलाद्यालम्बनरहितत्वात्, आदर्शफलक इव प्रकटस्वभावः दर्पणवन् स्वच्छस्वभावत्वात्, वायुरिवा प्रतिवद्धः क्षेत्रादिषु प्रतिबन्धरहितत्वात्, शारदमल्लिमिवशुद्धहृदय = शरदतुजलवन्निर्मलहृदयः

से वर्जित छुण-परिनिवृत्त हो गये—मनवचनकाय के सन्ताप से रहित बन गये। अनास्रव—हिंसादि पापों से रहित हो गये, ममता भाव से रहित हो गये, अकिंचन हो गये, द्रव्य और भावरूप परिग्रह से मुक्त बन गये। स्नेह रहित हो गये निरुपलेप हो गये द्रव्य भाव लेप से रहित हो गये। तोय जलरूप स्नेह से रहित होने के कारण कास्य पात्र की तरह वे मुक्ततोय बन गये। राग के सम्बन्ध से रहित होने के कारण वे शङ्ख की तरह निर्मल हो गये। सर्व देश में विहारी होने के कारण वे जीव की तरह अप्रतिबन्ध विहारी बन गये। निरतिचार सयम के पालक होने के कारण वे शुद्धसुवर्ण की तरह वे जातरूप हो गये। देश, ग्राम आदि के आलम्बन से रहित होने के कारण वे गगन की तरह निरालम्ब हो गये। दर्पण की तरह स्वच्छ स्वभाव से युक्त होने के कारण वे प्रकट स्वभाव हो गये। क्षेत्रादिकों में प्रतिबन्ध रहित

सन्तापयो रहित यथा अनास्रव—हिंसा वगैरे पापकार्योंही रहित यथा, ममता भावही रहित यथा, अकिंचन यथा, तेमन् द्रव्य ने भावना परिग्रहही मुक्त यथा, स्नेहरहित यथा, निरुपलेप यथा, द्रव्य ने भाव लेपही रहित यथा, तोय (पाणी) रूप स्नेह वगैरे होवाने कारणे ते कास्यपात्रनी जेम मुक्त तोय ' यथा रागना सम्बन्ध ही रहित होवा जडत्व ते गगनी जेम निर्मल यथा सर्व देशोभा विहार करनार होवाही ते जीवना जेम अप्रतिबन्ध गतिवाणा (जेनी गति द्वाय रोजाय नहि उ अवा) यथा निरतिचार ममय ने पाणनाग होवा ही ते शुद्ध मोनाना जेम जल रूप यथा, देश, ग्राम वगैरे ना आलम्बन ही रहित होवा जडत्व ते आलम्बना पेटे निरालम्ब यथा असीसाना जेम निर्मल स्वभावना होवाया ते ' प्रकट स्वभाव ' वाणा यथा, क्षेत्र वगैरेभा प्रतिबन्ध वगैरे होवाही ते पवनना जेम अप्रतिबन्ध विहारी यथा, कपाये।

શ્લેષ્મજલ્લશિઘ્વાણપરિષ્ઠાપનિકાસમિતઃ ઉચ્ચારાદીના પરિષ્ઠાપનિકાસમિતઃ =
 ઉત્સર્જને શાસ્ત્રોક્તવિધિપ્રવૃત્તિ, તથા યુક્ત इत्यर्थ । स मनः समित वच समित
 कायसमितः, मनोगुप्तः वचनगुप्तः कायगुप्त गुप्तेन्द्रियः इन्द्रियाणामसत्प्रवृत्तिनि
 वर्तनात् गुप्तब्रह्मचर्यः अक्रोधः अमानः अमायः अलोभ अतएव शान्तः, प्रशान्तः
 प्रशमभावसम्पन्नः, उपशान्तः, कषायकारणवर्जितः परिनिर्मुक्तः, योगत्रयसन्ताप-

इसका नाम भाण्डामन्त्रानिक्षेपणा समिति है तथा उभयकाल प्रतिलेखना
 करना उच्चोर, प्रस्रवण, श्लेष्म, जल्ल शिङ्घाण इनके परिष्ठावन
 करने में शास्त्रोक्त विधि के अनुसार प्रवृत्ति करना यह उच्चार प्रस्रवण
 श्लेष्म जल्ल शिङ्घाण परिष्ठापनिका समिति है । इसी तरह वे
 स्थापत्यानगार मनः समिति से, वचन समिति से कायसमिति से
 मनोगुप्ति से वचन गुप्ति से कायगुप्ति से युक्त हो गये तथा इन्द्रियों
 की असत् विषयो में प्रवृत्ति के निवर्तन से, गुप्तेन्द्रिय हो गये । मन,
 वचन और काय से पूर्ण ब्रह्मचर्य के पालन करने वाले होने से गुप्त
 ब्रह्मचारी हो गये क्रोध कषाय से सर्वथा रहित होने से अक्रोध मान
 कषाय के अभाव से अमान, मायाकषाय के अभाव से अमाय,
 लोभकषाय के अभाव होने से अलोभ परिणति वाले बन गये । इसी
 लिये वे शान्त प्रशान्त प्रशम भाव सम्पन्न, उपशान्त- कषायों के कारणों

ભાણ્ડામન્ત્રાનિક્ષેપણા સમિતિ છે, તેમજ જ ને કાળમા પ્રતિ લેખના કરવી આ ચોથી
 સમિતિ છે ઉચ્ચાર, પ્રસ્રવણ શ્લેષ્મ, જલ્લ, શિ ઘાણ એમનુ પરિષ્ઠાવન કરવામા
 શાસ્ત્રમા કહ્યા મુજબ પ્રવૃત્તિ કરવી આ ઉચ્ચાર પ્રસ્રવણ શ્લેષ્મ જલ્લ શિ ઘાણ પરિ
 ષ્ઠાપનિકા સમિતિ છે આ સમિતિથી પણ તેઓ યુક્ત હતા આ રીતે સ્થાપત્યા
 નગાર મન સમિતિથી, વચન સમિતિથી, કાય સમિતિથી, મનોગુપ્તિથી કાય
 ગુપ્તિથી યુક્ત થયા તે ઇન્દ્રિયોની અસત વિષયોમા પ્રવૃત્તિના નિવર્તનથી
 ગુપ્તેન્દ્રિય થયા તે મન વચન અને કાય (શરીર) થી પૂર્ણ બ્રહ્મચર્યનુ
 પાલન કરતાર હોવા બદલ ગુમ-બ્રહ્મચારી થયા તે સપૂર્ણ રીતે ક્રોધ-કષાય
 વગર હોવા બદલ અક્રોધ માન કષાયના અભાવથી અમાન, માયા કષાયના
 અભાવથી અમાય, લોભ-કષાયના અભાવથી અલોભ પરિણતિવાળા થયા
 અટલા માટે જ તે શાન્ત, પ્રશાન્ત પ્રશમભાવ સંપન્ન, તેમજ ઉપશાન્ત કષાયો
 ના કારણોથી વર્જિત થયા-પરિનિર્મુક્ત થયા-મન, વચન, અને કાયાએ ત્રણ યોગના

सूर्य इव दीप्ततेजाः परेण क्षोभत्वात्, सागर इव गम्भीरः उदारहृदयत्वात्, मन्दस्वप्नप्रकम्पः परीपहोत्सर्गैरविचलितत्वात्, वृषभ इव जातस्थामा गृहीतभारपारगत्वात्, सिंह इव दुर्धर्षः उपसर्गमृगैः पराजेतुमशक्यत्वात्, वसुधारेव सर्वस्पर्शविसहः शीतोष्णादिसर्वसहत्वात्, सुहृताशन इव तेजसा ज्वलन् तेजोलेश्यादिलब्धिमत्वात्, तस्य स्थापत्यापुत्रानगारस्य न कुत्रापि प्रतिबन्धो भवति । प्रतिबन्धो द्रव्यक्षेत्रकालभावभेदान्चतुर्विधः, तत्र द्रव्यतः-सचित्ताचित्तमिश्रेषु, क्षेत्रतो ग्रामनगरादरण्यादिषु, कालतः-समयावलिफादिषु, भावतः क्रोधभयहास्यादिषु । स

से युक्त हो गये । दूसरे जीवों को क्षोभ करने वाले तेज से सम्पन्न होने के कारण ये सूर्य की तरह दीप्त तेजवाले बन गये । उदार होने से सागर की तरह इन का हृदय गम्भीर हो गया । परीपह और उपसर्गों से अविचलित होने के कारण ये सुमेरु की तरह अप्रकम्प बन गये । गृहीत भार को पार लगाने के कारण वृषभ की तरह ये विशिष्ट शक्ति शाली हो गये । उपसर्ग रूपी मृगों से पराजेतु अशक्य होने के कारण ये सिंह की तरह दुर्धर्ष बन गये । शीत उष्ण आदि सब सहन करने के कारण ये वसुधरा (पृथिवि) की तरह सर्व स्पर्शसह बन गये । तेजो लेश्यादि लब्धि सम्पन्न होने के कारण ये जाज्वल्यमान हृताशन (मग्नि) की तरह विशिष्ट तेजसे चमकने लगे इन स्थापत्या पुत्र मुनिका कहीं पर भी प्रतिबन्ध नहीं था । यह प्रतिबन्ध द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा चार प्रकार का कहा गया है । द्रव्य की अपेक्षा सचित्त, अचित्त तथा मिश्र वस्तुओं में, क्षेत्र की अपेक्षा ग्राम,

क्षेत्र, पमाउनर तेजथी युक्त होवाथी ते सूर्यनी पेठे दीप्त तेज वाणा थया उदार हुता तेथी सागरनी जेम तेमतु डैयु गभीर थध गयु परीपहो अने उपमर्गोना आकरा प्रहारेथी पशु ते विचलित थता नहि तेथी सुमेरु पर्वत नी जेम ते अप्रकम्प थया स्वीकारेला कर्तव्योना लारने छेड सुधी पार लध जवा भाटे ते गणह नी जेम अविशेष शक्ति शाली थया उपसर्ग रूपी डुरणो थी पराजित न थवाथी ते सिंहनी पेठे दुर्धर्ष थया ंडी, गरभी वगेरे गधु सहन करवाथी ते वसुधरा (पृथिवी) नी जेम सर्व स्पर्श थया तेजो लेश्या वगेरेनी सिद्धि युक्त होवाथी ते मणगता अग्नि नी जेम अविशेष तेजथी प्रकाशित थया स्थापत्यापुत्र प्रतिबन्ध रहित थया आ प्रतिबन्ध द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावनी अपेक्षाछे चार प्रकारने छे द्रव्यनीअपेक्षाछे सचित्त, अचित्त तेमज मिश्र वस्तुओभा, क्षेत्रनी दृष्टिछे ग्राम, नगर, अरण्या (वन)

કપાયોપશમિતત્વાત્, પુષ્કરપત્રમિવનિરુપલેપઃ=ભોગામિલાપરૂપલેશર્જિતત્વાત્, કૂર્મૈવ ગુપ્તેન્દ્રિયઃ વશીકૃતેન્દ્રિયત્વાત્, સન્નિવિપાણમિવ એકજાતઃ સ્વદ્ગી=વન્ય જન્તુવિશેષ 'ગેંડા' ઇતિભાષાપ્રસિદ્ધ. તસ્ય વિપાણ શૂદ્ધ તદ્દંદકજાત સ્વાત્માવ લમ્બિતત્વાત્, વિહગૈવ વિપ્રમુક્તઃ પક્ષિવત્ સનિધિર્જિતત્વાત્, ભારણ્ડપક્ષીવ અ-અપ્રમત્તઃ=ભારણ્ડપક્ષિણો હિ એકોદરાઃ પૃથગ્રીવા અન્યોન્યફલભક્ષિણો જીવદ્વયરૂપા ભવન્તિ, તે ચ સર્વદા ચક્ષિતચિત્તાસ્તિષ્ઠન્તિ, તદ્વત્ પ્રમાદરહિતત્વાત્ કુજરૈવ શૂરઃ કર્મશત્રુ પરાજેતુ દ્વદોત્સાહનત્વાત્, ચન્દ્રૈવ સામ્યલેશ્યઃ શુભપરિણામનત્વાત્,

હોને કે કારણ વે વાયુ કી तरह અપ્રતિવદ્ધ વિહારી બન ગયે । કપાયો કે ઉપશમિત હો જાને સે શરત્ કાલ કે જલ કે સમાન વે નિર્મલ હૃદય સે યુક્ત હો ગયે । ભોગામિલાપ રૂપ લેપ સે રહિત હોને કે કારણ વે પુષ્કર (કમલ) પત્ર કી तरह નિરુપલેપ હો ગયે । કઞ્છપ કી तरह વે અપની ઇન્દ્રિયોં કો ગુસ્સ કરને વાલે હોને સે ગુપ્તેન્દ્રિય બન ગયે । કેવલ અપની આત્મા કે હી અવલમ્બન કરને વાલે હોને સે વે ગેંડાહાથી કે વિપાણ કી तरह એક જાત હો ગયે । સનિધિ સે વર્જિત હોને કે કારણ પક્ષી કી तरह વે વિપ્રમુક્ત હો ગયે । ભારણ્ડ પક્ષી કી तरह વે અપ્રમત્ત રહને લગે । યે ભારણ્ડ પક્ષી એક ઉદરવાલે હોતે હૈ, ગ્રીવા હસકી પૃથક્ક હોતી હૈ, અન્યોન્ય ફલ ભક્ષી હોતે હૈ—દો જીવ હોતે હૈ । યે સર્વદા ચક્ષિત ચિત્ત રહા કરતે હૈ । કર્મરૂપ શત્રુ કો પરાજિત કરને કે લિયે દ્વદ ઉત્સાહ સપત્ર હોને કે કારણ યે કુજર (હાથી) કી तरह શૂર બન ગયે । શુભ-પરિણામો સે યુક્ત હોને કે કારણ યે ચન્દ્રમણ્ડલ કી तरह સૌમ્ય લેશ્યા

ના ઉપશમનથી શરદ ઋતુના પાણીના જેમ તે સ્વચ્છ હૃદયવાળા થયા, ભોગ વિલાસ રૂપ લેપથી રહિત હોવાથી પુષ્કર ડમણપત્ર નો જેમ નિરુપલેપ થયા ડાચળાની જેમ તે પોતાની ઇન્દ્રિયોને ગુપ્ત કરનાર હોવાથી ગુપ્તેન્દ્રિય થયા કેવળ પોતાના આત્માને જ અવલમ્બ આપનાર હોવાથી તે ગેંડા હાથીના વિપાણ (શીંગડા) ની જેમ એક જાત થયા સનિધિ વગર હોવાથી પક્ષી ની જેમ તે વિપ્રમુક્ત થયા ભારડપક્ષીની જેમ તે અપ્રમત્ત (મદ વગર) રહેવા લાગ્યા, આ ભારડ પક્ષી એક પેટ વાળા હોય છે તેમની ડાક પૃથક્ક હોય છે અન્યોન્ય રૂબ લક્ષી હોય છે—તેમજ બે જીવ હોય છે તે હમેશા ચક્ષિતચિત્ત રહે છે તે સ્થાપત્યાપુત્ર કર્મના શત્રુને પરાજિત કરવા માટે દ્વદ ઉત્સાહ સપત્ર હોવાથી કુજર (હાથી) ની જેમ શૂર થયા શુભ પરિણામોથી યુક્ત હોવાથી તે ચન્દ્રમણ ની જેમ સૌમ્ય લેશ્યા વાળા થયા બીજા જીવોને

सूर्यइव दीप्ततेजाः परेण क्षोभस्त्वात्, सागर इव गम्भीरः उदारहृदयत्वात्, मन्दरइवाप्रकम्पः परीपहोत्सर्गेरविचलितत्वात्, वृषभइव जातस्थामा गृहीतभारपारगत्वात्, सिंह इव दुर्धर्षः उपसर्गमृगैः पराजेतुमशक्यत्वात्, वसुन्धरेव सर्वस्पर्शविसहः शीतोष्णादिसर्वसहत्वात्, सुहुताशन इव तेजसा ज्वलन् तेजोलेख्यादिलब्धिमत्वात्, तस्य स्थापत्यापुत्रानगारस्य न कुत्रापि प्रतिबन्धो भवति । प्रतिबन्धो द्रव्यक्षेत्रकालभावभेदान्चतुर्विधः, तत्र द्रव्यतः—सचित्ताचित्तमिश्रेषु, क्षेत्रतो ग्रामनगराऽरण्यादिषु, कालतः—समयावलिकादिषु, भावतः क्रौवभयहास्यादिषु । स

से युक्त हो गये । दूसरे जीवों को क्षोभ करने वाले तेज से सम्पन्न होने के कारण ये सूर्य की तरह दीप्त तेजवाले बन गये । उदार होने से सागर की तरह इन का हृदय गम्भीर हो गया । परीपह और उपसर्गों से अविचलित होने के कारण ये सुमेरुकी तरह अप्रकम्प बन गये । गृहीत भार को पार लगाने के कारण वृषभ की तरह ये विशिष्ट शक्ति शाली हो गये । उपसर्ग रूपी मृगों से पराजेतु अशक्य होने के कारण ये सिंह की तरह दुर्धर्ष बन गये । शीत उष्ण आदि सब सहन करने के कारण ये वसुधरा (पृथिवि) की तरह सर्व स्पर्शसह बन गये । तेजो लेख्यादि लब्धि सम्पन्न होने के कारण ये जाज्वल्यमान हुताशन (मग्नि) की तरह विशिष्ट तेजसे चमकने लगे इन स्थापत्या पुत्र मुनिका कहीं पर भी प्रतिबन्ध नहीं था । यह प्रतिबन्ध द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा चार प्रकार का कहा गया है । द्रव्य की अपेक्षा सचित्त, अचित्त तथा मिश्र वस्तुओं में, क्षेत्र की अपेक्षा ग्राम,

क्षेत्र पमाउतर तेजथी युक्त होवाथी ते सूर्यनी चेहे दीप्त तेज वाणा थया उदार हुता तेथी सागरनी जेम तेमनु डैयु गलीर थछ गयु परीपहो अने उयमर्गोना आउग प्रहारेथी पण ते विचलित थता नहि तेथी सुमेरु पर्वत नी जेम ते अप्रकम्प थया म्वीकारेला कर्तव्येना लारने छेउ सुधी पार लछ जवा माटे ते जणह नी जेम मविशेष गप्ति शाणी थया उयमर्ग इपी उरण्णो थी पणजित न थवाथी ते सिंहनी चेहे दुर्धर्ष थया उडी, गम्भी वगेरे जधु सहन करवाथी ते वसुधरा (पृथिवी) नी जेम सर्व स्पर्ग थया तेने लेख्या वगेरेनी सिद्धि युक्त होवाथी ते मज्जता अग्नि नी जेम अविशेष तेजथी प्रशशित थया स्थापत्यापुत्र प्रतिबन्ध रहित थया आ प्रतिबन्ध द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावनी अपेक्षाये आउ प्रकाणेने छे द्रव्यनीअपेक्षाये अचित्त, अचित्त तेमज मिश्र वस्तुओमा, क्षेत्रनी दृष्टिजे ग्राम, नगर, अरण्य (वन)

समतृणमणिलोष्टमाञ्चन', समसुखदुःखः, इहलोकपरलोकाऽप्रतिबद्ध', जीवित
मरणकाङ्क्षा रजित, ससारपाशामी कर्मनिर्गतनार्यमभ्युत्थित, अप्य च खलु
मोक्षमार्गे विहरति । ततः गलु स स्थापत्यापुत्रोऽर्हतोऽरिष्टनेमेस्तथारूपाणां
स्थविराणान्तिके सामायिकादीनि चतुर्दशपूर्णाणि अधीते, अधीत्य च बहुभिर्याव
चतुर्थेन=चतुर्थभक्तादिनाऽऽत्मान भावयन् विहरति ।

नगर, अरण्य आदिको में काल की अपेक्षा समय आवलिकआदिकों
में भाव की अपेक्षा क्रोध, भय, तथा हास्यादिकों में, उन स्थापत्या पुत्र
को किसी भी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं था । उन की दृष्टि में तृण,
मणि, लोष्ट और काँचन समान थे । सुख और दुःख समान थे । इह
लोक और परलोक से वे अप्रतिबद्ध थे । जीविताशसा और मरणा
शसा से वे रहित बन चुके थे । मसार से रहित हो चुके थे कर्मों के
नाश करने में ही उनका पुरुषार्थ लगा हुआ था । इस तरह वे समिति
आदि को से समित हो कर मुक्ति के मार्ग में सावधान होकर विचरण
करने लगे । (तण्ण से यावच्चचापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहा
रूवाण थेराण अतिण सामाइयमाइयाइ चोदसपुव्वाइ अहिज्जइ)
धीरे २ उन स्थापत्यापुत्र अनगार ने अर्हत अरिट्ठनेमि प्रभु के तथा-
रूप स्थविरो के पास सामयिक आदि चौदह पूर्वों का अध्ययन भी कर
लिया (अहिज्जित्ता बहूहि जाव चउत्थेण विहरइ) उनका अध्ययन
करके फिर उन्होंने चतुर्थ भक्तादि तपस्या से अपने को भावित किया

वगेरेभा, काणनी अपेक्षाअे समय आवलिग वगेरेभा, लावनी दृष्टिअे क्रोध, भय
तेमज्ज डास्य वगेरेभा ते स्थापत्या पुत्रने केअपणु जतनेा प्रतिबध डतेा नडि
तेना भाटे तो तृण, मणि, लोण (मानीनु ठेकु) अने काचन (सोनु)
आ जधा मरणा न डता सुण हुण जने सरणा डता धंड लोड अने पर
लोडथी ते अप्रतिबद्ध (अवतत्र) डता ज्विताशसा तेमज्ज मण्णाशसाथी
ते रडित थमा ससारना विषयोथी रडित थमने कर्मोना विनाशमान्ज तेअो
पुरुषार्थ सलग्न डता आ प्रमाणे ते स्थापत्यापुत्र भमिनि वगेरेथी समित
थमने मुक्तिमार्गमा सावधान थमने विचरणु करवा लाग्गा (तण्ण से यावच्चचा
पुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाण थेराण अतिण सामाइयमाइयाइ चोदस
पुव्वाइ अहिज्जइ) धीमे धीमे स्थापत्या-पुत्र अनगारे अरिट्ठनेमि प्रभुनी
पासे थी तेमज्ज तथाउप स्थविरोनी पासेथी सामयिक वगेरे चौदपूर्वोनु अध्य
यन पणु कथुं (अहिज्जित्ता बहूहि जाव चउत्थेण विहरइ) अध्ययन कथी जाइ
स्थापत्या पुत्रे चतुर्थं लज्जा वगेरे तपस्याथी पोताना आत्माने भावित कथी

ततः खलु अरिष्टनेमि स्थापत्यापुत्रस्यानगारस्य त=सहागत ‘इन्भाइय’ इभ्यादिवग् इभ्यश्रेष्ठिसेनापतिप्रभृतिकम् अनगारसहस्र शिष्यतया ददाति । स्थापत्यापुत्रेण सह ये सहस्रपुरपा दीक्षा गृहीतवन्तस्ते सर्वे तस्यैव शिष्याः कृता इति भावः । ततः खलु स स्थापत्यापुत्रोऽनगारोऽन्यदा कदाचित् अरिष्टनेमि वदते वाचा रतोति, नमस्यति, वायेन प्रणमति वन्दित्वा नमस्कार च कृत्वा एवं =वक्ष्यमाणप्रकारेण अगादीत्—

इच्छामि खलु भदन्त ! हे भगवन् युष्माभिः ‘अवभणुन्नाए’ अभ्यनुज्ञातः सन् आज्ञा प्राप्य सहस्रेणानगारेण साधं वहिः द्वारावती नगरीतो वहिर्निःसृत्य जनपदविहार देशे ग्रामानुग्रामविचरण, विहर्तु=कर्तुम्, भवदाज्ञया देशे विहार कर्तुं मिच्छामीत्यर्थः । हे देवानुप्रिय यथासुख=विहरेत्यर्थः ।

यावत् शब्द से उक्त अर्थ लिया गया है । (तएण अरिहा अरिट्टनेमि थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स त इन्भाइय अणगारसहस्स सीसत्ताए दलयइ) इसके बाद अरिष्टनेमि प्रभु ने उन अनगार स्थापत्या पुत्र के लिये उनके साथ आये हुए उस, इभ्य, श्रेष्ठी सेनापति आदि अनगार सहस्र को शिष्यरूप से दे दिया । (तएण से थावच्चापुत्ते अन्नया क्याइ अरह अरिट्टनेमि वदइ नमसइ) इसके बाद उन स्थापत्या पुत्र ने किसी समय अरिष्टनेमि को वदना की और उन्हे नमस्कार किया— (वदित्ता नमसित्ता एव वयासी) वन्दना नमस्कार करके फिर उन्हो से उन्होंने ऐसा कहा— (इच्छामि ण भते ! तुव्भेहिं अवभणुन्नाये समाणे सहस्सेण अणगारेण सद्धि वहिया जणवयविहार विहरित्तए) भदन्त ! यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं इन हजार अनगारों को साथ लेकर द्वारावती नगरी से बाहिर जनपद विहार करना चाहता हूँ ।

‘यावत्’ शब्द से उक्त अर्थ ने। सञ्ज्ञं थये छे (तएण अरिहा अरिट्टनेमि थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स त इन्भाइय अणगारसहस्स सीसत्ताए दलयइ) तयार पछी अरिष्टनेमि प्रभुअे अनगार स्थापत्यापुत्रने तेमनी साथे आवेला अने प्रनय्या अहणु करेला इभ्य, श्रेष्ठी सेनापति वगेरे अनगार सहस्र ने शिष्य रूपे आया (तएण से थावच्चापुत्ते अन्नया क्याइ अरह अरिट्टनेमि वदइ नमसइ) तयार बाद स्थापत्या पुत्रे केछ वणत अरिष्टनेमि प्रभुने वदन तेमन नमस्कार कया (वदित्ता नमसित्ता एव वयासी) वदन अने नमस्कार करीने तेमने विनती करी— (इच्छामि ण भते ! तुव्भेहिं अवभणुन्नाये समाणे सहस्सेण अणगारेण सद्धि वहिया जणवयविहार विहरित्तए) छे अदत्त ! तमारी आज्ञा थाय तोहु अेक हुन्तर अनगारे नी साथे द्वारावती

તત્ત્વ સ્થાપત્યાપુત્રોઽનગારસહસ્રેણ સાર્ધં તેનોદારેણ=પ્રધાનેન-પદ-
જીવનિકાયરક્ષણપરત્વાત્, ઉગ્રેણ=તીવ્રેણ પરીપહોપસર્ગ સહિષ્ણુત્વાત્, પ્રયત્નેન=
યતનાપ્રધાનત્વાત્ વહિર્જનપદવિહાર વિહરતિ ॥ ૧૭ ॥

મૂલમ્-તેણ કાલેણં તેણ સ્મરણં સેલગપુરે નામં નગરં
હાત્થા, સુભૂમિભાગે ઉજ્જાણે, સેલણ રાયા, પડમાવડ્ઢ દેવી,
મંહુણ કુમારે જુવરાયા । તરસ પાં સેલગસ્સ પથગપામોવસ્થા પચ-
મંતિસયા હોત્થા, ઉપ્પત્તિયાણ વેણડયાણ કમ્મિયાણ પારિણા-
મિયાણ ઉવવેયા રજ્જધુર ચિંતયતિ, થાવચ્ચાપુત્તે સેલગપુરે
સમોસઢે રાયા ણિગ્ગતો ધમ્મવહા, ધમ્મ સોચ્ચા જહાણ દેવા-
ણુપ્પિયાણં અતિણ વહવે ઉગ્ગા ભોગા જાવ ચડ્ડત્તા હિરન્નં જાવ

(અહાસુહ દેવાણુપ્પિયા । તણ સે થાવચ્ચાપુત્તે અણગારસહસ્સેણ
સદ્ધિ તેણ ઉરાલેણ ઉગ્ગેણ પચત્તેણ પગ્ગહિણ વહિયા જણવચ-
વિહાર વિહરહ) પ્રમુ ને ઉનસે કહા-યથાસુખ દેવાનુપ્રિય ! પ્રમુ કી
હસ પ્રકાર આજ્ઞા પ્રાપ્ત કર વે સ્થાપત્યાપુત્ર પદ્જીવનિકાય કી રક્ષા
કરને મે તત્પર હોને કે કારણ ઉદાર, પરીપહ ઓર ઉપસર્ગો કો સહન
કરને કે કારણ ઉગ્ર, યતના પ્રધાન હોને કે કારણ પ્રયત્ન ઓર ભગ-
વાન્ કી આજ્ઞા કો પ્રધાન રૂપ સે અગીકાર કરને કે કારણ પ્રગૃહીત
એસે ૧ એક હજાર શિષ્યોં કો સાંથ લેકર વહા સે વાહિર દેશોં મેં
વિહાર કિયા । સૂત્ર “ ૧૭ ”

નગરીની બહાર જનપદ વિહાર કરવા ચાહુ છુ (અહાસુહે દેવાણુપ્પિયા । તણ
સે થાવચ્ચ અણગારસહસ્સેણ સદ્ધિ તેણ ઉરાલેણ ઉગ્ગેણ પચત્તેણ પગ્ગહિણ
વહિયા જણવચવિહાર વિહરહ) પ્રભુએ તેને કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિય સુખેથી વિહાર
કરો, આ રીતે સ્થાપત્યાપુત્રે આજ્ઞા મેળવીને પદ્જીવનિકાયના રક્ષણમા સદા તૈયાર
હોવાથી ઉદાર, પરીપહ અને ઉપસર્ગોને સહન કરવાથી ઉગ્ર, યતના પ્રધાન
હોવાથી, પ્રયત્ન અને ભગવાનની આજ્ઞા પ્રધાન રૂપથી સ્વીકારવાથી પ્રગૃહીત એવા
એક હજાર શિષ્યોની સાથે ત્યા થી બહારના દેશોમા વિહાર કર્યો ॥ સ-૧૭ ॥

पठ्वइया, तहाणं अहं नो सचाएमि पठ्वइत्ताए, अहन्न देवाणु-
प्पियाण अंतिए पचाणुव्वइयं जाव समणोवासए जाव अहि-
गयजीवाजीवे जाव अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाणं
भावेमाणे विहरामि । पथगपामोक्खा पंचमंतिसया समणोवासया
जाया, थावच्चापुत्ते वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ सू० १८ ॥

‘ तेण कालेण ’ इत्यादि ।

टीका-तस्मिन् काले तस्मिन् समये शैलकपुर नाम नगरमासीत् । नगराद् वहिः
सुभूमिभाग नामोद्यानम् । तस्मिन् नगरे शैलको नाम राजाऽभूत् । पद्मावतीदेवी=प-
द्मावतीनाम्नीदेवी पट्टराज्ञी । मण्डककुमारो युवराजोऽभवत् । तस्य खलु शैलकस्य
राज्ञः पान्थकप्रमुखाः पञ्चशतानि मन्त्रिणः अमात्याः आसन्, कीदृशास्ते मन्त्रिण
इत्याह-‘ उप्पत्तियाए ’ औत्पत्तिकया शास्त्राभ्यासादि निमित्त विनैव सद्भाविनी
तथाविवक्षयोपशमजन्या मति रौत्पत्तिकी तथा, ‘ वेणइयाए ’ वैनयिन्ना=विनय-

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ-‘तेण कालेण तेण समएण’ उस काल और उस समय में
(सेलगपुरे नाम नगर होत्था) शैलक पुर नाम का नगर था (सुभूमि
भागे उज्जाणे सेलए राया पडभावइ देवी मुडए कुमारे जुवराया)
उस में सुभूमि भाग नाम का उद्यान था । शैलक पुर राजा का नाम
शैलक था । उसकी पट्टरानी का नाम पद्मावती था । मंडूक नाम का
इसका युवराज कुमार था । (तस्स ण सेलगस्स पथगपामोक्खा पच
मतिसयहोत्था) इस शैलक राजा के पान्थक प्रमुख पांचसौ मंत्री थे ।
(उप्पत्तियाए वेणइयाए, कम्मियाए, परिणामियाए, उववेया रज्जधुर चित-

तेण कालेण तेण समएण इत्यादि ।

टीकार्थ-‘तेण कालेण तेण समएण’ ते काले अने ते समये (सेलगपुरे
नाम नगर होत्था) शैलक पुर नामे नगर હતું (सुभूमिभागे उज्जाणे सेलए
राया पडभावइ देवी मुडए कुमारे जुवराया) त्या सुभूमि भाग नामे उद्यान
હતું શૈલક પુરના રાજાનું નામ શૈલક હતું પદ્માવતી તેની પટ્ટરાણી હતી
મંડૂક નામે તે રાજાનો યુવરાજ હતો (તસ્સ ણ સેલગસ્સ પથગ પામોક્ખા
પચમત્તિસય હોત્યા) આ શૈલક રાજાને પાંચક પ્રમુખ પાંચસો મંત્રીઓ હતા
(ઉપ્પત્તિયાએ વેણइयाए કમ્મિયાએ પરિણામિયાએ ઉવવેયા રજ્જધુર ચિત્ત-

પાસકો જાત । શ્રમણોપાસકાના ધર્મ. સવિસ્તરુપાસકદશાઙ્ગસૂત્રસ્યાગારધર્મસજી-
વની ટીકાયા વર્ણિતસ્તત એવ વિજ્ઞેયઃ । યાત્ ‘ અદિગયજીરાજીવે ’ અધિગત
જીવાજીવઃ, જીવાજીવસ્વરૂપાવિજ્ઞઃ, યાત્ યથા પરિગૃહી તૈમ્તપઃકર્મમિરાત્માનં
ભાવયન્ વિહરતિ । પાન્થકમુખાઃ પચ્ચશત મન્ત્રિણઃ શ્રમણોપાસકા જાતા દ્વાદ-
શવ્રતધારિણઃ શ્રાવકા અભૂવન્ । સ્થાપત્યાપુત્રઃ વહ્નિઃ=શૈલકપુર નામ્નો નગરાદ્
વહ્નિર્જનપદવિહાર વિહરતિ=કરોતિ સ્મ ॥ ૧૮ ॥

દ્વારા અભ્યનુજ્ઞાત હોકર શૈલક રાજા ને ૧૨ ચારહ પ્રકાર કા ગૃહસ્થ ધર્મ
સ્વીકાર કર લિયા-વે શ્રમણોપાસક બન ગયે । શ્રમણોપાસકો કે
ધર્મ કા વિસ્તાર પૂર્વક વર્ણન હમને ઉપાસકદશાઙ્ગ સૂત્ર કી અગાર
ધર્મસજીવની નામ કી ટીકા મેં કિયા હૈ । સો વહા સે જાન લેના
ચાહિયે । જીવ ઓર અજીવ કા કયા સ્વરૂપ હૈ ઇસ વાત કો ભી વે જાન-
ને વાલે બન ગયે । અનેક પ્રકાર કી તપ્ચર્ચા ભો વે કરને લગે । ઇસ
તરહ યથા પરિગૃહીત, તપ કર્મો દ્વારા વે અપને આપકો ભાવિત કરતે
હુણ રહને લગે । (પથગપામોક્ષ્વા પચમતિસયા સમણોવાસયા જાયા-
થાવચ્ચાપુત્તે વહ્નિયા જળવયવિહાર વિહરહ) રાજા કે જો પાથક પ્રમુખ
પાંચસૌ મત્રી થે-વે ભી શ્રમણોપાસક બન ગયે- ૧૨ વ્રત ધારી હો
ગયે - સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ઉસ શૈલકપુર નગર સે વાહર જનપદ મેં
વિહાર કર ગયે । સૂત્ર “ ૧૮ ”

સુખ થાય તેમ કરે. આ પ્રમાણે સ્થાપત્યા અનગારથી આજ્ઞાપિત
થયેલા શૈલક રાજાએ બાર પ્રકારના ગૃહસ્થ ધર્મો સ્વીકાર્યા અને તેઓ
શ્રમણોપાસક થયા. શ્રમણોપાસકોના ધર્મોનું સવિસ્તર વર્ણન અમે ઉપા-
સકદશાઙ્ગસૂત્રની અગાર ધર્મ સજીવની નામની ટીકામાં કર્યું છે. જિજ્ઞાસુ
જન તેમાંથી જાણી શકે છે. જીવ અને અજીવના સ્વરૂપ વિષેનું જાન પણ
શૈલક રાજાને થઈ ગયું અનેક જાતની તપસ્યાઓ તેઓ કરવા લાગ્યા.
આ રીતે યથાપરિગૃહીત તપ કર્મો વડે પોતાની જાતને ભાવિત કરતા રહેતા
લાગ્યા. (પથગપામોક્ષ્વા પચમતિસયા સમણોવાસયા જાયા થાવચ્ચાપુત્તે
વહ્નિયા જળવયવિહાર) રાજાના પાથક પ્રમુખ પાંચસૌ મત્રી
હતા તેઓ પણ શ્રમણ બન ગયા અને ૧૨ વ્રત ધારી થઈ ગયા ત્યાર બાદ
સ્થાપત્યા પુત્ર મહાર બીજા જનપદોમાં વિહાર
કરવા માંડે.

मूलम्—तेण कालेण तेण समएणं सोगधिया नाम नयरी होत्था, वन्नओ, नीलासोए उज्जणे वन्नओ, तथ ण सोगधियाए नयरीए सुदंसणे नामं नयरसेट्ठी परिवसइ, अड्डे जाव अपरिभूए ।

तेण कालेण तेण समएणं सुए नामं परिवायए होत्था, रिउव्वेयजजुव्वेयसामव्वेयअथव्वणवेयसट्ठिततकुसले सखसमए लद्धे पंचजमपंचनियमजुत्तं सोयमूलय दसप्पयारं परिव्वायगधम्म दाणधम्म च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणे पन्नवेमाणे धाउरत्तवत्थपवरपरिहिए, तिदंडकुंडियत्तच्छलुयंकुसपवित्तयकेसरीहत्थगए परिवायगसहस्सेणं सद्धि सपरिवुडे जेणेव सोगधियानयरी जेणेव परिवायगावसहसि भंडगनिक्खेवं करेइ, करित्ता संखसमणेणं अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।

तएणं सोगधियाए नयरीए सिघाडगतिगचउक्कचच्चरेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ । एव खलु सुए परिवायए इह हव्वमागए जाव विहरइ, परिसा निग्गया सुदंसणो निग्गए, तएण से सुए परिवायए तीसे परिसाए सुंदसणस्स य अन्नेसिं च बहूण सखाणं धम्मं परिकहेइ—एव खलु सुदंसणा अम्ह सोयमूलए धम्म पन्नत्ते, सेऽविय सोए दुविहे पन्नत्ते त जहा—दव्वसोए य, उदएण मट्ठियाए य, भावसोए दव्वेहि य मतेहि य, जन्न अम्हं देवाणुप्पिया किचि असुइ भवामो, त सव्व सज्जो पुढवीए आलिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पवखालिज्जइ. तओ त असुई सुई भवइ, एव खलु जीवा

પાસકો જાત । શ્રમણોપાસકાનાં ધર્મ સવિસ્તરુપાસકદશાઙ્ગસૂત્રસ્યાગારધર્મસંજી-
વની ટીકાયા વર્ણિતસ્તત એવ વિજ્ઞેયઃ । યાવત્ ‘ અહિગયજીગ્રાજીવે ’ અવિગત
જીગ્રાજીવઃ, જીગ્રાજીવસ્વરૂપાવિજ્ઞઃ, યાવત્ યથા પરિગૃહીતૈસ્તપઃકર્મભિરાત્માર્મ
ભાવયન્ વિહરતિ । પાન્થકપ્રમુખાઃ પચ્ચશત મન્ત્રિણઃ શ્રમણોપાસકા જાતા દ્વાવ-
શતધારિણઃ શ્રાવકા અભૂન્ । સ્થાપત્યાપુત્રઃ વહિઃ=શૈલકપુર નામ્નો નગરાદ
વહિર્જનપદવિહાર વિહરતિ=કરોતિ સ્મ ॥ ૧૮ ॥

દ્વારા અભ્યનુજ્ઞાત હોકર શૈલક રાજા ને ૧૨ પારહ પ્રકાર કા ગૃહસ્થ ધર્મ
સ્વીકાર કર લિયા-વે શ્રમણોપાસક બન ગયે । શ્રમણોપાસકોં કે
ધર્મ કા વિસ્તાર પૂર્વક વર્ણન હમને ઉપાસકદશાઙ્ગ સૂત્ર કી અગાર
ધર્મસંજીવની નામ કી ટીકા મેં કિયા હૈ । સો વહા સે જાન લેના
ચાહિયે । જીવ ઓર અજીવ કા ક્રયા સ્વરૂપ હૈ ઇસ વાત કોં ભી વે જાન
ને વાલે બન ગયે । અનેક પ્રકાર કી તપઃચર્ચા ભો વે કરને લગે । ઇસ
તરહ યથા પરિગૃહીત, તપ કર્મોં દ્વારા વે અપને આપકોં ભાવિત કરતે
હુએ રહને લગે । (પથગપામોક્ત્વા પચમતિસયા સમણોવાસયા જાયા-
થાવઠ્ઠાપુત્તે વહિયા જળવયવિહાર વિહરહ) રાજા કે જો પાથક પ્રમુખ
પાચસો મંત્રી થે- વે ભી શ્રમણોપાસક બન ગયે- ૧૨ વ્રત ધારી હો
ગયે - સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ઉસ શૈલકપુર નગર સે બાહર જનપદ મેં
વિહાર કર ગયે । સૂત્ર “ ૧૮ ”

સુખ થાય તેમ કરે । આ પ્રમાણે સ્થાપત્યા અનગારથી આશાપિત
થયેલા શૈલક રાજાએ બાર પ્રકારના ગૃહસ્થ ધર્મો સ્વીકાર્યા અને તેઓ
શ્રમણોપાસક થયા શ્રમણોપાસકોના ધર્મોનું સવિસ્તર વર્ણન અમે ઉપા-
સકદશાઙ્ગસૂત્રની અગાર ધર્મ સંજીવની નામની ટીકામાં કર્યું છે જિજ્ઞાસુ
જન તેમાંથી જાણી શકે છે જીવ અને અજીવના સ્વરૂપ વિષેનું જ્ઞાન પણ
શૈલક રાજાને થઈ ગયું અનેક જાતની તપસ્યાઓ તેઓ કરવા લાગ્યા
આ રીતે યથાપરિગૃહીત તપ કર્મો વડે પોતાની જાતને ભાવિત કરતા રહે ।
લાગ્યા (પથગપામોક્ત્વા પચમતિસયા સમણોવાસયા જાયા થાવઠ્ઠાપુત્તે
વહિયા જળવયવિહાર વિહરહ) રાજાના પાથક પ્રમુખ પાચસો મંત્રી
હતા તેઓ પણ શ્રમણોપાસક તેમજ બાર વ્રત ધારી થઈ ગયા ત્યાર બાદ
સ્થાપત્યા પુત્ર અનગાર શૈલકપુર નગરથી બહાર બીજા જનપદમાં વિહાર
કરવા માટે નીકળી પડ્યા ॥ સૂત્ર ૧૮ ॥

स कीदृश इत्याह—आठ्यः विभनशाली, यावत् अपरिभूतः=केनापि पराभ वितुमशक्यः ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये शुको नाम परिव्राजक आसीत् । सकीदृश इत्याह “रिउव्वेयजजुव्वेयसामवेयअथव्वणवेयसद्धितंतकुसले” ऋग्वेद यजुर्वेदसामवेदाथर्ववेदपण्डितन्त्र—कुशलः सर्ववेदसर्वतन्त्रनिपुण इत्यर्थः, ‘सखसमये लद्धहे’ साख्यसमये लब्धार्थः सांख्यशास्त्राभिमतसकलतत्त्वार्थामिज्ञः’ पञ्चयमपञ्च नियमयुक्त, तत्र=अहिंसा सत्यास्तेदब्रह्मचर्यापरिग्रहाः पञ्चयमाः, शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणि-

का नगर सेठ रहता था । यह विशेष विभूतिशाली था और अपरिभूत था—कोई भी व्यक्ति इसका तिरस्कार (अपमान) नहीं कर सकता था । (तेण कालेण तेण समएण सुए णाम परिव्वायए होत्था) उसी काल और उसी समयमें शुक नाम का परिव्राजक था (रिउव्वेय, जजुव्वेय, सामवेय, अथव्वणवेय, सद्धितंतकुसले, सख समए लद्धहे पचजम पच नियमजुत्त सोयमूलग दसप्पयारपरिव्वायगधम्म दाणधम्मच सोयधम्म च तित्थाभिसेयच आचवमाणे पणवेमाणे धाउरत्तवत्थपवरपरिहिण) यह ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद पण्डितन्त्र इनमें कुशल था—निपुण था । सांख्य सिद्धान्त प्रतिवादित सकल तत्त्वों के अर्थका ज्ञाता था । पचयम और पचनियम से युक्त तथा शौच मूलक दश प्रकारके परिव्राजक धर्मका दान रूपधर्म का शौच रूप धर्मका तीर्थाभिषेकका उपदेश देता था उसका प्रचार करता था । अहिंसा, सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य और परिग्रह ये पाच यम हैं । शौच सन्तोष तप स्वाध्याय, ईश्वरप्रणि-

शेठ रहेतो हुतो ते भूणञ्जैश्वर्यं सपन्नं अने अपरिभूत हुतो केअ पणु व्यक्ति तेमनो तिरस्कार न करी शकती हुती (तेण कालेण तेण समएण सुए णाम परिव्वायए होत्था) ते काले अने ते समये अेक शुक नामे परिव्राजक हुतो (रिउव्वेय, जजुव्वेय, सामवेय, अथव्वणवेय, सद्धितंतकुसले, सख समए लद्धहे पचजमपचनियमजुत्त सोयमूलग दसप्पयारपरिव्वायगधम्म दाणधम्म च सोयधम्म च तित्थाभिसेय च आचवेमाणे पणवेमाणे धाउरत्तवत्थ पवरपरिहिण) ते ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद तेमन् पण्डितन्त्रमा कुशल हुतो, निपुण हुतो सांख्यसिद्धान्तमा कडेला अधा तत्त्वोने ते णणु नार हुतो ते पाय यम तेमन् पाय नियम थी युक्त हुतो ते शौचमूलक दश ज्ञतना परिव्राजक धर्मनो, दानरूप धर्मनो शौचरूप धर्मनो तीर्थाभिषेक (तीर्थस्नान) नो उपदेश आपतो हुतो अने पोताना धर्मनो प्रचार करतो हुतो अहिंसा, सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य अने परिग्रह अे पाय ‘यम’ छे

જલાભિસેય પૂચ્છાણે અવિઘ્નેણ સગ્ગં ગચ્છતિ, તણ્ણં સે સુદં-
સણે સુયરસ આતિણ્ણ ધર્મં સોચ્છા હટ્ઠે સુયરસ આતિણ્ણ સોયમૂ-
લય ધર્મં ગિણ્ણહ, ગેણિહત્તા પરિટ્ઠવાયણ્ણ વિપુલેણ અસણપાણ-
સાદમસાદમેણં વત્થપરિગ્ગહેણં પરિલાભેમાણે જાવ વિહરહ ।
તણ્ણ સે સુણ પરિટ્ઠવાયગે સોગધિયાઓ નયરીઓ નિગચ્છહ,
નિગચ્છિત્તા વહિયા જણવય વિહારંવિહરહ ॥ સૂ. ૧૯ ॥

“ તેણ કાલેણ ” इत्यादि ।

टीका-तस्मिन् काले तस्मिन् समये सौगन्धिका नाम नगरी आसीत् वर्णक
सौगन्धिकानगर्या वर्णन औपपातिकसूत्रोक्त चम्पानगरीवद् वाच्यम् नीलाशोक
सुद्यान=नीलाशोकनामकमुपवन तत्रासीत् । वर्णक-अस्योद्यानस्य वर्णन पूर्ववद्
बोध्यम् । तत्र खलु सौगन्धिकाया नगर्या सुदर्शनो नाम नगर श्रेष्ठी प्रतिवसति ।

‘तेण कालेण तेण समएण’ इत्यदि ॥

टीकार्थ- (तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में
(सोगधिया नाम नगरी होत्था) सौगधिका नाम की नगरी थी-
(वन्नओ) इस नगरी का वर्णन औपपातिक सूत्र में जिस प्रकार
चपानगरी का वर्णन किया गया है उसी तरह का जानना चाहिये ।
(नीलासोए उज्जाणे) इस नगरी में उद्यान था जिसका नाम नीला-
शोक था । (वन्नओ) पूर्वकी तरह इस उद्यान का वर्णन जान
लेना चाहिये । (तत्थ ण सोगधियाए नयरीए सुदसणे नाम नयरसेट्ठी
परीवसह अट्ठे जाव अपरिभूए) उस सौगधिका नगरी में सुदर्शन नाम

तेण कालेण तेण समएण इत्यादि ।

टीकार्थ- (तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે (સોગધિયા
નામ નગરી હોત્થા) સૌગધિકા નામે નગરી હતી (વન્નઓ) ઔપપાતિક
સૂત્રમા જે પ્રમાણે ચપાનગરીનુ વર્ણન કરવામા આવ્યું છે તે પ્રમાણેજ અહીં
પણ જાણી લેવું જોઈએ, (નીલાસોએ ઉજ્જાણે) આ નગરીમા એક ઉદ્યાન હતું
જેનુ નામ નીલાશોક હતું (વન્નઓ) પહેલાની જેમ આ ઉદ્યાનનુ વર્ણન
પણ જાણી લેવું જોઈએ (તત્થણ સોગધિયાએ નયરીએ સુદસણે નામ નયરસેટ્ઠી
પરિવસહ, અટ્ઠે જાવ અપરિભૂએ) તે સૌગધિકા નગરીમા સુદર્શન નામે નગર

यत्रैव सौगन्धिका नगरी यत्रैव परिव्राजकावसथ, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य परिव्राजकावसथे भाण्डकनिक्षेप करोति = त्रिदण्डादीन्युपकरणानि स्थापयति, कृत्वा साख्यसमयेन साख्यसिद्धान्तानुसाराचारेण आत्मान भावयन् विहरति ।

ततः खलु सौगन्धिकाया नगर्यां शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरेषु यावद् राज-
पथेषु बहुजनोऽन्योन्यस्य परस्परम्-एवमाख्याति - कथयति, एव खलु शुको
नाम परिव्राजक इह अस्यां सौगन्धिकाया नगर्यां हव्यमागतः=समागतः यावदा-
त्मान भावयन् विहरति । परिपन्निर्गता । सुदर्शनोऽपि निर्गत । ततः खलु स

आश्रम या वहा आया । (उवागच्छित्ता परिव्रायगावसहसि भडल
निक्खेव करेइ, करित्ता सख समणेण अप्पाण भावेमाणे विहरइ)
आकर उसने उस परिव्राजकाश्रम में अपने भाड़ों को रख दिया ।
और रख कर सांख्य सिद्धान्त के अनुसार अपनी प्रवृत्ति चालू रखता
हुआ ठहर गया । (तण्ण सौगधियाण नयरीए सिंघाडगतिगचउक्क
चच्चरेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ) इसके बाद उस सौ-
गधि का नगरी में शृङ्गाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर यावत् राजमार्ग में
अनेक जन परम्पर में इस प्रकार बात चीत करने लगे (एव खलु सुए
परिव्रायण इह हव्वमागण जाव विहरइ) बधुओ ! शुक नाम का
परिव्राजक इस अपनी सौगधिका नगरी में अभी २ आया है । - वह
साख्य सिद्धान्त के अनुसार अपनी प्रवृत्ति रखता हुआ परिव्राजका
श्रम में ठहरा हुआ है । इस बात से परिचित होकर (परिमा निग्गया,
सुदसणो, निग्गण, तण्ण से सुए परिव्रायण तीसे परिस्सए सुदसणस्स

सौगधिका नगरी छती अने जया परिव्राजकोने आश्रम छते। त्या आये।
(उवागच्छित्ता परिव्रायगावसहसि भडगनिक्खेव करेइ, करित्ता सख समणेण
अप्पाण भावेमाणे विहरइ) ते परिव्राजकोना आश्रममा पडेयीने तेने
पोतानी जधी वस्तुओ भूझी दीयी अने त्या साख्यसिद्धान्तने अनुसरीने
पोताना धर्म्मने प्रचार करतो रहेवा लाये। (तण्ण सौगधियाए नयरीए
सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ) त्याएणाह भौग-
धिका नगरीमा शृङ्गाटक, त्रिक, चतुष्क चत्वर अने राजमार्गमा धणु भाणुसो
आ गीते वातो करवा लाया- (एव खलु सुए परिव्रायण इह हव्वमागण जाव
विहरइ) मित्रो ! आपणी आ नगरीमा शुक नामे अक परिव्राजक
हुमणु न आये छे साख्यसिद्धात अनुसार ते पोतानी प्रवृत्तिओ आथर
तो परिव्राजक आश्रममा रोअये छे आ वातनी जणु थता न (परिस्स

ધાનાનિ પશ્ચનિયમાઃ તૈર્યુક્તમ્ શૌચમૂલક દશપ્રકાર=યમનિયમસમેતનેન દશત્રિય
 પરિવાજકધર્મ દાનધર્મ=દાનરૂપધર્મ ચ શૌચધર્મ=મૃદ્ધારિજનિત શૌચરૂપ ધર્મ ચ તી-
 ર્થાભિષેક=ગાદાદિ તીર્થોદરુસ્નાનં ચ આભ્યાપયન્ પ્રભ્યાપયન્ પ્રવર્તયન્ પ્રભાપયન્
 પોધયન્ ' ધાતુરક્તવસ્ત્રપરિધિ' ધાતુરક્તવસ્ત્રપરિધિતઃ=ગૈરિકધાતુરક્તવસ્ત્ર
 પવરપરિધાનઃ, ગૈરિકરક્તવસ્ત્રધારીત્યર્થ, ' તિદહ-કુડિય - છત્ત - છલ્લય -
 કુસ-પવિત્તય-કેસરી હત્થગણ ' ત્રિદણ્ડ-કુણ્ડિકા-છત્ર-પદ્મના-લકાદુશ-પવિ-
 -ષ્ક-કેસરી હસ્તગતઃ, ત્રિદણ્ડાદીનિ સપ્ત હસ્તગતાનિ યસ્ય સ તથા, તત્ર ત્રિદ-
 ણ્ડ=મનોવાક્કાયદણ્ડત્રયપરિજ્ઞાનાર્થ દણ્ડત્રય, કુણ્ડિકા=કમળડલુઃ, છત્ર, પ્રસિદ્ધ,
 પદ્મનાલક = ત્રિકાષ્ઠિકા, અદુશઃ - પ્રસિદ્ધઃ-દૃષ્ટપલ્લવદ્દેદનાર્થ, પવિત્રક=
 તામ્રમયમગુલીયક, કેસરી = ચીવરખંડ, પરિવાજકસહસ્રેણ સાર્ધં સપરિવૃત

ધાન ચે પાચ નિયમ હૈ । મિટ્ટી ઓર પાની સે શુદ્ધ કરના ઇસકા નામ
 શૌચ હૈ । ગંગા આદિ તીર્થકે જલમેં સ્નાન કરના ઇસકા નામ તીર્થાભિષેક
 હૈ । ઇન વાતોં કો આભ્યાપન-કથન કરતા હુઆ પ્રભ્યાપન પ્રરૂપણા
 કરતા હુઆ યહ શુક જિન વસ્ત્રોં કો પરિરતા થા વે ગૈરિક ધાતુ સે રંગે
 હુએ થે । અર્થાત્ ગૈરિક ધાતુ સે રંગે હુએ વસ્ત્રોં કો હી યહ પરિરતા થા ।
 (તિદહકુડિય, છત્ત છલ્લયકુસપવિત્તયકેસરીહત્થગણ પરિવ્વાયગસહસ્સે
 ણ સદ્ધિ સપરિવૃદ્ધે જેનેવ સોગધિયા નયરી જેનેવ પરિવ્વાયગાવસહે
 તેનેવ ઉવાગચ્છહ) મન, વચન ઓર કાય ઇન ત્રીન દહો કે પરિજ્ઞાન
 કે લિયે યહ દણ્ડ ત્રય કા ગારી થા । કમળડલ, છત્ર, ત્રિકાષ્ઠિકા,
 અદુશ, તામ્રમય અગુલીયક, (અગટ્ટી) ઓર ચીવર ખંડ ચે સય ઉસ
 કે હાથ મેં થે । ૧ ટક હજાર સાધુ મંડલ સે યહ પરિવૃત થા । સો જહા
 વહ સૌગધિકા નગરી થી ઓર ઉસ મેં મી જહા પરિવાજકોં કા

શૌચ, સતોષ, તપ, સ્વાધ્યાય, ઈશ્વરપ્રભિવાન એ પાંચ નિયમો છે માટે
 અને પાણીથી શુદ્ધ કરવું તે ગૌચ કહેવાય છે ગંગા વગેરે તીર્થ જળોમા
 નાહવું તે તીર્થાભિષેક કહેવાય છે આ યમ નિયમોનુ આખ્યા વચન તેમજ
 પ્રશ્નથી કરતો તે શુક પરિવાજક ગૈરિક (ગેરુઆ) વસ્ત્રો પહેરતો હતો એટલે
 કે ગેરુ થીરગેલા વસ્ત્રો જ તે પહેરતો હતો (તિદહ કુડિય, છત્ત, છલ્લયકુસપ
 વિત્તયકેસરીહત્થગણ પરિવ્વાયગસહસ્સેણ સદ્ધિ સપરિવૃદ્ધે જેનેવ સોગધિયા
 નયરી જેનેવ પરિવાયગાવસહે તેનેવ ઉવાગચ્છહ) મન, વચન અને કાય આ
 ત્રણ દહોના પરિજ્ઞાન માટે તે દહત્રય (ત્રણદહ) ધારણ કરતો હતો કમળડ
 છત્ર, ત્રિકાષ્ઠિકા, અદુશ તાબાની વીટી અને ચીવરખંડ આ ગાદા તેના હાથ
 મા હતા એક હજાર સાધુઓ તેની માથે હતા તે કરતો કરતો જ્યા

यत्रैव सौगन्धिका नगरी यत्रैव परिव्राजकाग्रमय, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य परिव्राजकाग्रसये भाण्डकनिक्षेप करोति = त्रिदण्डादीन्युपकरणानि स्थापयति, कृत्वा साख्यसमयेन साख्यसिद्धान्तानुसाराचारेण आत्मान भावयन् विहरति ।

ततः खलु सौगन्धिकाया नगर्या शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरेषु यावद् राजपथेषु बहुजनोऽन्योन्यस्य परस्परम्-एवमाख्याति - कथयति, एव खलु शुको नाम परिव्राजक इह अस्या सौगन्धिकाया नगर्या हव्यमागतः=समागतः यावदात्मान भावयन् विहरति । परिपन्निर्गता । सुदर्शनोऽपि निर्गत । ततः खलु स

आश्रम था चहा आया । (उवागच्छित्ता परिव्रायगावसहसि मडल निक्खेव करेइ, करित्ता सख समणेण अप्पाण भावेमाणे विहरइ) आकर उसने उस परिव्राजकाश्रम में अपने भाइयों को रख दिया । और रख कर साख्य सिद्धान्त के अनुसार अपनी प्रवृत्ति चालू रखता हुआ ठहर गया । (तएण सौगधियाण नयरीए सिंघाडगतिगचउक्क चच्चरेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ) इसके बाद उस सौगधिका नगरी में शृङ्गाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर यावत् राजमार्ग में अनेक जन परस्पर में इस प्रकार बात चीत करने लगे (एव खलु सुए परिव्रायए इह हव्वमागए जाव विहरइ) बबुओ ! शुक नाम का परिव्राजक इस अपनी सौगधिका नगरी में अभी २ आया है । - वह साख्य सिद्धान्त के अनुसार अपनी प्रवृत्ति रखता हुआ परिव्राजकाश्रम में ठहरा हुआ है । इस बात से परिचित होकर (परिसा निग्गया, सुदमणो, निग्गए, तएण से सुए परिव्रायए तीसे परिसाए सुदसणस्स

सौगधिका नगरी छती अने जया परिव्राजकोने आश्रम छतो त्या आब्यो (उवागच्छित्ता परिव्रायगावसहसि मडल निक्खेव करेइ, करित्ता सख समणेण अप्पाण भावेमाणे विहरइ) ते परिव्राजकोना आश्रमभा पडोथीने तेने पोतानी णधी वन्तुओ भूझी दीधी अने त्या साख्यसिद्धान्तने अनुसरीने पोताना धर्म्मने प्रयाग करतो रडेवा लाव्यो (तएण सौगधियाए नयरीए सिंघाडगतिगचउक्क चच्चरेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ) तयारणाइ सौगधिका नगरीभा शृङ्गाटक, त्रिक, चतुष्क चत्वर अने गजमार्गभा धणु भाणुओ आ गीते वातो करवा लाव्यो- (एव खलु सुए परिव्रायए इह हव्वमागए जाव विहरइ) भित्रो ! आपणी आ नगरीभा शुड नामे ओक परिव्राजक छमणु न आब्यो छे साख्यसिद्धात अनुसार ते पोतानी प्रवृत्तिओ आथर तो परिव्राजक आश्रमभा रोडयो छे आ वातनी णणु धता न (परिस

શુકઃ પરિવ્રાજકસ્તસ્યા પરિપદ સુદર્શનસ્ય ચ અન્યેષા ચ વહૂના જનાના પુરસ્તાત્
સાહ્યાના=સાહ્યમતાનુયાયિના ધર્મ પરિકથયતિ-હે સુદર્શન ! એવ વક્ષ્યમાણ
પ્રકારેણ સ્વલુ અસ્માક શૌચમૂલકો ધર્મઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તદપિ ચ શૌચ દ્વિવિધ પ્રજ્ઞપ્ત
તથા-દ્રવ્યશૌચ ચ, ભાવશૌચ ચ । દ્રવ્યશૌચ ચ ઉદકેન=જલેન મૃત્તિકયા ચ
ભવતિ । ભાવશૌચ ' દઘ્મે હિ ય ' દર્મૈશ્વ, ' મતે હિ ય ' મન્ત્રૈશ્વ ભવતિ । હે
દેવાનુપિય ! યત્ સ્વલુ અસ્માક કિંચિત્=કરચરણકમળહલુ પ્રમૃતિ અશુદ્ધ ભવતિ
તત્ સર્વ ' સજ્જો પુઢ્વીણ ' સઘઃ પૃથિવ્યા=શુદ્ધનવીનમૃત્તિકયા, આલિપ્યતે અનુ-
લિપ્ત ક્રિયતે, તતઃ પશ્ચાત્ શુદ્ધેન=પવિત્રેણ, વારિણા=જલેન પ્રક્ષાલ્યતે તતસ્તદશુદ્ધ
ઉપહત વસ્તુ શુદ્ધ ભવતિ । એવ સ્વલુ જીવાઃ ' જલામિસેયપૂયપ્પાણો ' જલા-

ય અન્નેસિંચ વહૂણ સસ્રાણ ધમ્મ પરિકહેહ) નગર નિવાસી પરિષદ્
ઉસકે પાસ જાને કે લિયે અપને ૨ ઘર સે નિકલી । સુદર્શન મી નિકલા
હસકે બાદ ઉસ શુક પરિવ્રાજક ને ઉસ આગત પરિપદ્ કો સુદર્શન સેઠ
કો તથા ઔર મી એકત્રિત હુણ અનેક મનુષ્યોં તો સાહ્યોં કે ધર્મ કા
ઉપદેશ દિયા । ઉસમેં ઉસ ને હસ પ્રકાર કહા (એવ સ્વલુ સુદસણા
અમ્હેં સોયમૂલે ધમ્મે પળળત્તે) હે સુદર્શન ! મારા ધર્મ શૌચ મૂલક
પ્રજ્ઞપ્ત હુઆ હૈ (સે વિ ય સોણ દુવિહે પળળત્તે) વહ શૌચ મી દો પ્રકાર
કા કહા હુઆ હૈ- (દઘ્વસોણ ય ભાવસોણ ય) ૧ દ્રવ્ય શૌચ ૨ ભાવ
શૌચ । (દઘ્વમોણય ઉદણ મદ્ધિયાણ ય) જલ ઔર મિટ્ઠી સે દ્રવ્ય શૌચ
હોતા હૈ । (ભાવસોણ દઘ્મેહિં ય મતે હિં ય) ભાવશૌચ દર્મ ઔર મન્ત્રોં
સે હોતા હૈ । (જન્ન અમ્હ દેવાણુપ્પિયા ! કિંચિ અસુદ્ધ ભવહ ત સન્વ

નિગાવા, સુદસણો નિમાણ તણ સે સુણ પરિવ્વાયણ તીસે પરિસાણ સુદસણસ્સ
ય અન્નેસિં ચ વહૂણ સસ્રાણ ધમ્મ પરિકહેહ) નાગરીકોની પરિષદ તેની પાસે
જવા પોત પોતાને ઘેરથી નિકળી સુદર્શન પણ પોતાના ઘેરથી ત્યા જવા
માટે બહાર નીકળ્યો ત્યાર પછી શુક પરિવ્રાજકે ઉપસ્થિત થયેલી નાગરીકો
ની પરિષદ સુદર્શન તેમજ બીજા એકઠા થયેલા માણસોની સામે સાખ્યધર્મ
નો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ આપતા શુક પરિવ્રાજકે આ પ્રમાણે કહ્યું (એવ
સ્વલુ સુદસણા અમ્હેં સોયમૂલે ધમ્મે પળળ) હે સુદર્શન ! અમારો ધર્મ શૌચ
મૂલક પ્રજ્ઞપ્ત થયો છે (સેવિય સોણ દુવિહે પળળત્તે) શૌચના બે પ્રકાર છે
(દઘ્વસોણ ય ભાવસોણ ય) ૧, દ્રવ્ય શૌચ, ૨, ભાવ શૌચ (દઘ્વસોણ ય
ઉદણ મદ્ધિયાણ ય) અને માટીથી દ્રવ્ય શૌચ થાય છે (ભાવસોણ
દઘ્મેહ ય મતેહિં) અને મન્ત્રોવડે થાય છે (જન્ન અમ્હેં

भिषेक पूतात्मानः=जलेनाभिषेकः स्नान, तेन पूतः शुद्ध आत्मा येषां ते, प्राणिनः 'अविग्नेण' अविघ्नेन प्रतिबन्धरहितेन 'सग' स्वर्गं गच्छन्ति । ततः खलु स सुदर्शनः शुकस्य शुकनाम्नः परिव्राजकस्य अन्तिके=समीपे धर्म=शौचमूलक शुकोक्तधर्म, श्रुत्वा 'दृष्टे, दृष्टः प्रमुदितः सन् शुकस्यान्तिके शौचमूलक धर्मं गृह्णाति । साख्यमतस्मीकुरुतेस्म शुक परिव्राजकस्य पर्युपासको जातः, शुकमेव धर्माचार्यत्वेन मन्यतेस्म, धर्मं गृहीत्वा स सुदर्शनः परिव्राजकान् प्रतिदिवस विपुलेन निस्तीर्णेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन चतुर्विधाऽऽहारेण, तथा वस्त्र

सज्जो पुढवीए आसिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ) हे देवानुप्रिय ! जो भी हमारा कोई कर चरण, कमण्डलु आदि-अशुचि हो जाती है उसे पहिले शुद्ध नवीन मृत्तिका से हम माज लेते हैं और बाद में पवित्र जल से धो लेते हैं- (तओ त असुई सुई भवइ, एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणे अविग्घेण सगग गच्छति) इस तरह वह अशुचि पदार्थ शुचि-पवित्र हो जाता है । इसी प्रकार जीव भी जलाभिषेक से जलस्नान से पवित्रात्मा बन कर बहुत जल्दी विना किसी रुकावट के स्वर्ग को पहुँच जाते हैं । (तएण से सुदसणे सुयस्स अतिए धम्म सोच्चा दृष्टे सुयस्स अतिए सोयमूलय धम्म गिण्हइ) इस प्रकार वे सुदर्शन शुक के पास धर्म का श्रवण कर बहुत अधिक हर्षित हुए । बाद में उन्होंने शुक से शौचमूलक धर्म अंगीकार कर लिया । (गेण्हत्ता परिव्वायए विपुलेण असणपाणखाइमसाइमेण वत्थपरिग्गहेण परिलाभेमाणे जाव विहरइ) शौचमूलक धर्म

देवाणुप्पिया ? किं चि असुइ भवइ त सव्व सज्जो पुढवीए आसिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ) हे देवानुप्रिय ! हमारा हाथ, पैर कम-उणु वगैरे अपवित्र थछ जय छे तो पड़ेला तेने नवीन माटीथी अमे छट्ठी अमे छीअे अने तयार पछी शुद्ध पाणी थी साइ करी लछअे छीअे (तओ त असुई सुई भवइ एव खलु जीवा जलाभिसेय पूयप्पाणे अविग्घेण सगग गच्छति) अे प्रभ । ते अपवित्र पदार्थ पवित्र थछ जय छे आ रीते एव पणु पाणीथी स्नान करी । पवित्रात्मा थछने सत्तरे डोअ पणु जतना अट्ठाव डे भुइलेली वगर सगै पड़ेथी जय छे (तएण से सुदसणे सुयस्स अतिए धम्म सोच्चा दृष्टे सुयस्स अतिए सोयमूलय धम्म गिण्हइ) अ रीते ते सुदर्शन नगर शेठ शुकनी पासैथी धर्मनु श्रमणु करीने पूअअ डअ पाअ्या अने तेनी पासैथी तेभणु शौच मूलक धर्म स्वीकार्यो (गेण्हत्ता परिव्वायए विपुलेण असणपाणखाइमसाइमेण वत्थपरिग्गहेण परिलाभे माणे जाव विहरइ)

શુકઃ પરિવ્રાજકસ્તસ્યા પરિપદ સુદર્શનસ્ય ચ અન્યેષા ચ વહૂનાં જનાના પુરસ્તાત્ સાહ્યાના=સાહ્યમતાનુયાયિના ધર્મ પરિકથયતિ-હે સુદર્શન ! એવ વક્ષ્યમાણ પ્રકારેણ સ્વલુ અસ્માક શૌચમૂલકો ધર્મઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તદપિ ચ શૌચ દ્વિવિધ પ્રજ્ઞપ્તં તથા-દ્રવ્યશૌચ ચ, ભાવશૌચ ચ । દ્રવ્યશૌચ ચ ઉદકેન=જલેન મૃત્તિકયા ચ ભવતિ । ભાવશૌચ ' દઢમે હિ ય ' દર્મૈશ્વ, ' મતે હિ ય ' મન્ત્રૈશ્વ ભવતિ । હે દેવાનુમિય । યત્ સ્વલુ અસ્માક કિંચિત્=કરચરણકમળલુ પ્રભૃતિ અશુદ્ધ ભવતિ તત્ સર્વ ' સજ્જો પુઢ્વીણ ' સઘઃ પૃથિવ્યા=શુદ્રનત્રીનમૃત્તિકયા, આલિપ્યતે અનુલિપ્ત ક્રિયતે, તતઃ પશ્ચાત્ શુદ્ધેન=પવિત્રેણ, વારિણા=જલેન પ્રક્ષાલ્યતે તતસ્તદશુદ્ધ ઉપહત વસ્તુ શુદ્ધ ભવતિ । એવ સ્વલુ જીનાઃ ' જલામિસેયપૂયપ્પાણો ' જલા-

ય અન્નેસિંચ વહૂણ સહ્યાણ ધમ્મ પરિકહેહ) નગર નિવાસી પરિપદ ઉસકે પાસ જાને કે લિયે અપને ૨ ઘર સે નિકલી । સુદર્શન મી નિકલા ડસકે ઘાદ ઉસ શુક પરિવ્રાજક ને ઉસ આગત પરિપદ્ કો સુદર્શન સેઠ કો તથા ઓર મી એકત્રિત હુએ અનેક મનુષ્યોં તો સાહ્યોં કે ધર્મ કા ઉપદેશ દિયા । ઉસમેં ઉસ ને હસ પ્રકાર કહા (એવ સ્વલુ સુદસણા અમ્હં સોયમૂલે ધમ્મે પળ્લત્તે) હે સુદર્શન ! મારા ધર્મ શૌચ મૂલક પ્રજ્ઞપ્ત હુઆ હૈ (સે વિ ય સોણ દુવિહે પળ્લત્તે) વહ શૌચ મી દો પ્રકાર કા કહા હુઆ હૈ- (દઢ્વસોણ ય ભાવસોણ ય) ૧ દ્રવ્ય શૌચ ૨ ભાવ શૌચ । (દઢ્વસોણ ઉદણ મદ્ધિયાણ ય) જલ ઓર મિટ્ટી સે દ્રવ્ય શૌચ હોતા હૈ । (ભાવસોણ દઢ્વમેહિં ય મતે હિં ય) ભાવશૌચ દર્મ ઓર મન્ત્રોં સે હોતા હૈ । (જન્ન અમ્હ દેવાણુપ્પિયા ! કિંચિ અસુહ ભવહ ત સઠ્વ

નિગાવા, સુવસણો નિગાણ તણ સે સુણ પરિવ્વાયણ તોસે પરિસાણ સુદંસણસ્સ ય અન્નેસિં ચ વહૂણ સહ્યાણ ધમ્મ પરિકહેહ) નાગરીકોની પરિપદ તેની પાસે જવા પોત પોતાને ઘેરથી નિકળી સુદર્શન પણ પોતાના ઘેરથી ત્યા જવા માટે ખડાર નીકળ્યો ત્યાર પછી શુક પરિવ્રાજકે ઉપસ્થિત થયેલી નગરીકોની પરિપદ સુદર્શન તેમજ ખીન્ન એકઠા થયેલા માણસોની સામે સાખ્યધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. ઉપદેશ આપતા શુક પરિવ્રાજકે આ પ્રમાણે કહ્યું (એવ સ્વલુ સુદસણા અમ્હં સોયમૂલે ધમ્મે પળ્લ) હે સુદર્શન ! અમારો ધર્મ શૌચ મૂલક પ્રજ્ઞપ્ત થયો છે (સેવિય સોણ દુવિહે પળ્લત્તે) શૌચના બે પ્રકાર છે (દઢ્વસોણ ય ભાવસોણ ય) ૧, દ્રવ્ય શૌચ, ૨, ભાવ શૌચ (દઢ્વસોણ ય ઉદણ મદ્ધિયાણ ય) પાણી અને માટીથી દ્રવ્ય શૌચ થાય છે (ભાવસોણ દઢ્વમેહ ય મતેહિં ય) ભાવ શૌચ હર્ષ અને મત્રોવડે થાય છે (જન્ન અમ્હે

भिषेक पूतात्मानः=जलेनाभिषेकः स्नान, तेन पूतः शुद्ध आत्मा येषां ते, प्राणिनः 'अविग्धेण' अविग्नेन प्रतिबन्धरहितेन 'सग' स्वर्गं गच्छन्ति । ततः खलु स सुदर्शनः शुकस्य शुकनाम्नः परिव्राजकस्य अन्तिके=समीपे धर्म=शौचमूलक शुकोक्तधर्म, श्रुत्वा 'दृष्टे, दृष्टः प्रमुदितः सन् शुकस्यान्तिके शौचमूलक धर्मं गृह्णाति । सांख्यमतस्वीकुरुतेस्म शुक परिव्राजकस्य पर्युपासको जातः, शुकमेव धर्माचार्यत्वेन मन्यतेस्म, धर्मं गृहीत्वा स सुदर्शनः परिव्राजकान् प्रतिदिवस विपुलेन निस्तीर्णेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन चतुर्विधाऽऽहारेण, तथा वस्त्र

सज्जो पुढवीए आसिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ) हे देवानुप्रिय ! जो भी हमारा कोई कर चरण, कमण्डलु आदि-अशुचि हो जाती है उसे पहिले शुद्ध नवीन मृत्तिका से हम माज लेते हैं और बाद में पवित्र जल से धो लेते हैं- (तओ त असुई सुई भवइ, एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणे अविग्धेण सगग गच्छति) इस तरह वह अशुचि पदार्थ शुचि-पवित्र हो जाता है । इसी प्रकार जीव भी जलाभिषेक से जलस्नान से पवित्रात्मा बन कर बहुत जल्दी बिना किसी रुकावट के स्वर्ग को पहुँच जाते हैं । (तएण से सुदसणे सुयस्स अतिए धम्म सोच्चा दृष्टे सुयस्स अतिए सोयमूलय धम्म गिण्हइ) इस प्रकार वे सुदर्शन शुक के पास धर्म का श्रवण कर बहुत अधिक हर्षित हुए । बाद में उन्होंने शुक से शौचमूलक धर्म अंगीकार कर लिया । (गेण्हित्ता परिव्वायए विपुलेण असणपाणखाइम साइमेण वत्थपरिग्गहेण परिलाभेमाणे जाव विहरइ) शौचमूलक धर्म

देवाणुप्पिया ? किं च असुइ भवइ त सव्व सज्जो पुढवीए आसिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ) हे देवानुप्रिय ! हमारा हाथ, पैर कम-एणु वगेरे अपवित्र थई जाय छे तो पड़ेला तेने नवीन भाटीथी अमे उट्टी अमे छीअे अने त्थार पछी शुद्ध पाणी थी साइ करी लईअे छीअे (तओ त असुई सुई भवइ एव खलु जीवा जलाभिसेय पूयप्पाणे अविग्धेण सगग गच्छति) अे प्रभ । ते अपवित्र पदार्थ पवित्र थई जाय छे आ रीते एव पणु पाणीथी स्नान करी । पवित्रात्मा थईने सत्तरे केई पणु जातना अट्टाव के मुश्केली वगर सगे पड़ेअी जाय छे (तएण से सुदसणे सुयस्स अतिए धम्म सोच्चा दृष्टे सुयस्स अतिए सोयमूलय धम्म गिण्हइ) अ रीते ते सुदर्शन नगर शेठ शुद्धनी पासेथी धर्मानु श्रमणु करीने पूअअ डई पाअ्या अने तेनी पासेथी तेभणु शौच मूलक धर्म स्वीकार्यो (गेण्हित्ता परिव्वायए विपुलेण असणपाणखाइमसाइमेण वत्थपरिग्गहेण परिलाभे माणे जाव विह-

પ્રતિગ્રહેણ મતિલાભયન્ સત્કારયન્ સમાનયન્ યાગ્દ્ વિહરતિ=ચિરતિ । તતસ્ત-
દનન્તરં સ્વલુ સ શુકઃ પરિવ્રાજકઃ સૌગન્ધિકાયા નગર્યા નિર્ગચ્છતિ, નિર્ગત્ય
ચ બહિર્જનપદવિહાર વિહરતિ=કરોતિસ્મ ॥ ૧૯ ॥

મૂલમ્-તેણ કાલેણ તેણ સમણેણ થાવચ્ચાપુત્તસ્સ સમોસ-
રણ, પરિસા નિગ્ગયા સુદસણો વિ ણિગ્ગઓ, થાવચ્ચાપુત્તં વદ્દ
નમસ્સદ્ વદિત્તા નમસિત્તા એવ વયાસી-તુમ્હાણં કિ મૂલે
ધમ્મે પન્નત્તે ? તણેણ થાવચ્ચાપુત્તે સુદસણેણ એવ વુત્તે સમાણે
સુદસણ એવ વયાસી-સુદસણા અમ્હાણં વિણયમૂલે ધમ્મે પન્નત્તે
સેવિ ય વિણે દુવિહે પન્નત્તે ત જહા-અગારવિણે અણગાર
વિણે ય, તત્થ ણં જે સે અગારવિણે સે ણં ચત્તારિ અણુવયાઈ
સત્ત સિલ્લાવયાઈ, એકારસ ઉવાસગપહિમાઓ । તત્થણ જે
સે અણગારવિણે સે ણ ચત્તારિ મહાવયાઈ, ત જહા-સઠ્ઠાઓ
પાણાઢવાયાઓ વેરમણ સઠ્ઠાઓ મુસાવાયાઓ વેરમણ સઠ્ઠાઓ

અ ગીકાર કરકે ઉન્હોને ફિર અશન પાન, સ્વાદ્ય ઓર સ્વાદ્યરૂપ ચારો
પ્રકાર કે આહાર સે ઓર વસ્ત્ર કે પ્રદાન સે ઉસ શુક પરિવ્રાજક કો
લાભાન્વિત ક્રિયા સત્કારિત ક્રિયા, -સન્માનિત ક્રિયા । (તણ સે
સુણ પરિવ્રાજકો સોગધિયાઓ નયરીઓ નિગચ્છદ્ નિગચ્છિત્તા બહિયા
જણવયવિહાર વિહરદ્) હસકે બાદ વહ શુક પરિવ્રાજક સૌગધિકા
નગરી સે નિકલા ઓર નિકલ કર બાહર અન્ય દેશો કી ઓર વિહાર
કર ગયા । “ સૂ-૧૯ ”

રદ્) ગૌત્મ મૂલક ધર્મ સ્વીકારીને તેમણે શુક પરિવ્રાજકને અશન, પાન, યાગ
અને સ્વાદ્ય રૂપ ચારે પ્રકારના આહારો તેમજ વસ્ત્રો અપાને લાભાન્વિત કૃત્યો
અને સન્માન કૃત્યું (તણ સે સુણ પરિવ્રાજકો સોગધિયાઓ નયરીઓ નિગ
ચ્છદ્, નિગચ્છિત્તા બહિયા જણવયવિહાર વિહરદ્) ત્યાર પછી શુક પરિવ્રાજક
સૌગધિકા નગરીથી બહારના બીજા દેશો તરફ વિહાર કરવા નીકળ્યા ॥ સૂ. ૧૬ ॥

अदिन्नादाणाओ वेरमणं सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं सव्वाओ
राइभोयणाओ वेरमणं जाव मिच्छादसणसह्वाओ वेरमण,
दसविहे पचक्खाणे चारस भिक्खुपडिमाओ इच्चेएणं दुविहेण
विणयमूलएणं धम्मेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ खवेत्ता
लोयग्गपइट्ठाणा भवति ॥ सू० २० ॥

(तेण कालेण) इत्यादि

टीका-तस्मिन् काले तस्मिन् समये सौगन्धिकार्या नगर्या थावच्चापुत्रस्य
समवसरणमागमनमभूत्, तदा परिपन्निर्गता = सौगन्धिका नगरी निवासिनो
लोकाः स्थापत्यापुत्र वन्दितु निर्गता, सुदर्शनोऽपि = सुदर्शनाम्ना नगरश्रेष्ठी अपि,
निर्गतः, तत्रागत्य थावच्चापुत्र वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नत्वा च एव = वक्ष्य
माणप्रकारेण, अवादीत्-हे भगवान् ! युष्माक किं मूलको धर्मः प्रज्ञप्तः ? ततस्त-

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ- (तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय मे
उस सौगन्धिकानगरी में विहार करते हुए (थावच्चापुत्तस्स समोसरण)
स्थापत्यापुत्र अनगार का आगमन हुआ। (परिसा निग्गया, सुदसणो वि
णिग्गओ) स्थापत्यापुत्र का आगमन सुनकर सौगन्धिका नगरीके निवासी
जन उनको वदना करनेके लिये चले सुदर्शनसेठ भी चला। (थावच्चा-
पुत्त वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी) उसने वहाँ पहुचकर
स्थापत्या पुत्र अनगारको वचन से स्तुति करने रूप वदना की तथा काय
से उन्हे नमन किया। वदना नमस्कर करके फिर उसने उनसे इस प्रकार

तेण कालेण तेण समएण इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये ते सौग
धिका नगरीमा विहार करता (थावच्चा पुत्तस्स समोसरण) स्थापत्यापुत्र अन
गार आया (परिसा निग्गया सुदसणा वि णिग्गओ) स्थापत्यापुत्रने आवधानी
जायु थता ज सौग धिका नगरीमा नागरिके तेमने वदन उरवा नीकणी पडया
सुदर्शन सेठ पण तेमने वदन उरवा नीकया (थावच्चापुत्त वदइ, नमसइ
वदित्ता, नमसित्ता एव वयासी) त्या पडोयीने तेमणे स्थापत्या पुत्र अनगार
ना वचनयी स्तुति उगीने वदन कर्या तेमज थायाथा नभीने तेमने नमस्का
कर्या वदन अने नमस्का उगीने सुदर्शन सेठ तेमने विनती उरी (तुम्हाण

દનન્તરં ચલુ સ્થાપત્યાપુત્રઃ સુદર્શનેનૈવમુક્તઃ સન્ સુદર્શનમેવમવાદીત્—

હે સુદર્શન ! અસ્માક ધર્મ દુર્ગતૌ પતતો જન્તૂન્ ધરતિ રક્ષતિ શુભસ્થાન પ્રાપયતિ ઇતિ ધર્મઃ આચાર , વિનયમૂલઃ=વિનયતિ અપનયતિ નાશયતિ સકલ-લ્લેશકારકમણ્ડવિધ કર્મ યઃ સ વિનય કર્માપનયનસમર્થચારિત્રલક્ષણોઽનુષ્ઠાન વિશેષઃ સ એવ મૂલ કારણં યસ્ય સ તથા,—ઉક્ત ચ—

કર્મણા દ્રાગ્ વિનયનાદ્ વિનયો વિદુર્ષા મત ।

અપવર્ગ ફલાદ્યસ્ય મૂલ ધર્મતરોરયમ્ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

ચારિત્રમાશ્રિત્ય લઘ્વરિથતિષ્ઠત્યર્થ , યદ્વા વિનયો વિનીતતા દ્રવ્યભાવાભ્યાં નમ્રતા તન્મૂલકઃ, પ્રજ્ઞસઃ=તીર્થકરૈ પ્રરૂપિતઃ । સોઽપિ ચ વિનયો દ્વિવિધઃ તદ્યથા—

કહા (તુમ્હા ના કિ મૂલે ધર્મે પન્નત્તે) હે ભગવાન ! આપકા ધર્મ કિં મૂલક પ્રજ્ઞસ હુઆ હૈં । (તણ થાવચ્ચાપુત્તે સુદસણેણ એવ વુત્તે સમાણે સુદસણ એવ વયાસી) હસ પ્રકાર સુદર્શન સેઠ કે દ્વારા હસ પ્રકાર પૂછે ગયે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ને ઉસસે હસ પ્રકાર કહા (સુદસણા અમ્હાણ વિનયમૂલે ધર્મે પન્નત્તે) હે સુદર્શન હમારા ધર્મ-વિનય મૂલક પ્રજ્ઞસ હુઆ હૈં । દુર્ગતિમે જાને સે જો પ્રાણિયો કો બચાતા હૈં ઓર શુભ સ્થાન મેં ઉન્હે પહુંચાતા હૈં ઉસકા નામ ધર્મ-આચાર હૈં । સકલ લ્લેશોંકા દાતા જો અણ્ડ પ્રકાર કા કર્મ હૈં ઉસે જો નાશ કરતા હૈં ઉસકા નામ વિનય હૈં । એસા વિનય ચારિત્ર રૂપ અનુષ્ઠાન વિશેષ હૈં । યહ વિનય હી ધર્મ કા મૂલ કારણ કહા ગયા હૈં-કહા મિ હૈં જિસકે દ્વારા જીવ જ્ઞાતિ કર્મોં કા નાશ કર દેતા હૈં તથા અપવર્ગ રૂપ ફલ સે યુક્ત હુએ જો ધર્મરૂપી વૃક્ષકા મૂલ હૈં-વહી વિનય હૈં । એસા વિનય ચારિત્ર રૂપ હી માના ગયા હૈં

કિં મૂલે ધર્મે પન્નત્તે) હે ભગવાન ! આપના ધર્મના મૂળભૂત સિદ્ધાન્તો શુ છે (તણ થાવચ્ચાપુત્ત સુદસણેણ એવ વુત્ત સમાણે સુદસણ એવ વયાસી) સુદર્શન સેઠના આ પ્રશ્નને સાંભળીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે જવાબમાં તેમને કહ્યું (સુદસણા અમ્હાણ વિનયમૂલે ધર્મે પન્નત્તે) હે સુદર્શન ! અમારા ધર્મનો આધાર વિનય મૂલક છે દુર્ગતિમાં જતા પ્રાણીઓને જે અટકાવે છે અને શુભસ્થાનોમાં તેમને લઈ જાય છે તે ધર્મ-આચાર કહેવાય છે સમસ્ત કલેશોને ઉત્પન્ન કરનાર આઠ પ્રકારના કર્મોનો જે નાશ કરે છે તેનું નામ ‘વિનય’ છે એવું જ વિનય ચારિત્ર રૂપ અનુષ્ઠાન વિશેષ છે આ વિનય જ ધર્મનું મૂળ કારણ છે કહ્યું છે કે જેના વડે જીવ જલદી કર્મોનો નાશ કરે છે તેમજ અપવર્ગ (મોક્ષ) રૂપી વૃક્ષનું જે મૂળ છે તે ‘વિનય’ જ છે આવો વિનય ચારિત્ર રૂપ જ ગણાય છે (જે વિનય વિનય દ્વિવિધે પન્નત્તે) તે વિનય

અગારવિનયોઽનગારવિનયશ્ચ । તત્ર સ્વલુ ય સ અગારવિનયઃ સ સ્વલુ ચતવારિઅણુ
વ્રતાનિ, સપ્ત શિક્ષાવ્રતાનિ, એકાદશોપાસકપ્રતિમા । અગારવિનયવિષયે સવિસ્તર
વર્ણનમુપાસકદશાઙ્ગીકાયામગારધર્મસંજીવન્યા દ્રવ્યમ્ , તત્ર ચતુર્વિંશતિતમતીર્થ
કર શ્રી મહાવીરશાસનત્વેન આનન્દગાથાપતિવર્ણને પચ્ચાણુવ્રતાનિ પચ્ચમહાવ્રતાનિ
વર્ણિતાનિ । અત્રારિષ્ટનેમેઢ્ઠાવિંશતિતમતિર્થકરશાસનચતુર્થવ્રતમ્ય પરિગ્રહવિરમણ-

(સે વિ ય વિણયે હુવિહે પળ્લણ્ણત્તે) વહ વિનય મી દો પ્રકાર કા પ્રજ્ઞસ
હુઆ હૈ । (તજહા) વહ ઇસ પ્રકાર સે-(અગારવિણ્ણ અણગારવિણ્ણ) ૧
અગાર વિનય-દૂસરા અનગાર વિનય । યે દો ભેદ ચારિત્ર પર વિનય કો
લક્ષ્ય મેં રલ્લકર ક્રિયે ગયે હૈ । જય વિનય કા અર્થ વિનીતતા-નમ્રતા
હોતી હૈ ઉસ સમય દ્રવ્ય કી અપેક્ષા નમ્રતા ઓર ભાવ કી અપેક્ષા નમ્રતા
ઇસ તરહ મી ઉસકે દો ભેદ હો જાતે હૈ (તત્થ ણ જે સે આગારવિણ્ણ
સેણ ચત્તારિ અણુવ્વયાહ સત્તસિલ્લાવયાહ એકકારસઉવાસગપહિ
માઓ) અગારવિનય ચાર અણુવ્રત સાત શિક્ષાવ્રત તથા ૧૧ ઉપાસક
પ્રતિમા રૂપ હૈ । ઇસ વિષયકા વિસ્તૃત વર્ણન ઉપાસક દશાંગકી ટીકા
અગારધર્મ સંજીવની મેં ક્રિયા ગયા હૈ અતઃ યહવિષય વહા સે જાનલેના
ચાહિયે । વિશેષ કેવલ ઇતના હી હૈ-વહા ચૌવીસવેં તીર્થકર શ્રી મહા-
વીર સ્વામી કા શાસન હોને સે ઉપાસક દશાઙ્ગસૂત્ર મેં આનન્દગાથાપતિ
કે વર્ણન મેં પાચ અણુવ્રત ઓર પાચ મહાવ્રત કહે ગયે હૈ કિન્તુ યહાં
ચાઈસવેં તીર્થકર શ્રી અરિષ્ટનેમિ ભગવાન કે શાસન મેં ચૌથે વ્રત કા

ના પણુ જે પ્રકાર કહેવામા આવ્યા છે (ત જહા) તે પ્રકારે આ પ્રમાણે
છે (અગારવિણ્ણ અણગારવિણ્ણ) ૧, આગાર વિનય, ૨, અનગાર વિનય
આ બન્ને વિનયના પ્રકારે ચારિત્ર ગત વિનયને અનુલક્ષીને જ કરવામા
આવ્યા છે જ્યારે વિનય રાખ્ખનો અર્થ 'વિનીતતા' (નમ્રતા) થાય છે ત્યારે
દ્રવ્યની અપેક્ષાએ નમ્રતા તેમજ ભાવની અપેક્ષાએ પણ નમ્રતા આ રીતે
પણુ તેના જે ભેદ થાય છે (તત્થ ણ જે સે આગારવિણ્ણ સે ણ ચત્તારિ અણુવ્વયાહ
સત્ત સિલ્લાવયાહ, એકકારસઉપાસગપહિમાઓ) આગાર વિનય પાચ અણુ
વ્રત સાત શિક્ષાવ્રત તેમજ અગિયાર ઉપાસક પ્રતિમા રૂપ છે આ વિષે સ
વિસ્તર માહિતી ઉપાસક દશાઙ્ગસૂત્રની અગારધર્મસંજીવની ટીકામા આપે
લી છે જિજ્ઞાસુ જનોએ ત્યાથી જાણી લેવું જોઈએ વિશેષ કેવળ એટલું જ
છે કે ત્યા ચૌવીસમા તીર્થકર શ્રી મહાવીર સ્વામીનું શાસન હોવાથી આન
ન્દ ગાથાપતીના વર્ણનમા પાચ અણુવ્રત અને પાચ મહાવ્રત કહેલા છે પરંતુ
અહીં બાવીસમા તીર્થકર શ્રી અરિષ્ટનેમિ ભગવાનના આશનમા ચૌથાવ્રતનો

દનન્તર સ્થાપત્યાપુત્રઃ સુદર્શનેનૈવમુક્તઃ સન્ સુદર્શનમેવમવાદીત્-

હે સુદર્શન ! અસ્માક ધર્મઃ દુર્ગતૌ પતતો જન્તૂન્ ધરતિ રક્ષતિ શુભસ્થાન પ્રાપયતિ इति ધર્મઃ આચાર , વિનયમૂલઃ=વિનયતિ અપનયતિ નાશયતિ સકલ-લ્લેશકારકમષ્ટવિધ કર્મ યઃ સ વિનય કર્માપનયનસમર્થચારિત્રલક્ષણોઽનુષ્ઠાન વિશેષઃ સ એવ મૂલ કારણ યસ્ય સ તથા,-ઉક્ત ચ-

કર્મણા દ્રાગ્ વિનયનાદ્ વિનયો વિદુષાં મત ।

અપવર્ગ ફલાદ્યસ્ય મૂલ ધર્મતરોરયમ્ ॥ ૧ ॥ इति ।

ચારિત્રમાશ્રિત્ય લઘ્વરિથતિક્કિત્યર્થ , યદ્વા વિનયો વિનીતતા દ્રવ્યભાવાભ્યાં નમ્રતા તન્મૂલક , પ્રજ્ઞસઃ=તીર્થકરૈ પ્રરૂપિતઃ । સોઽપિ ચ વિનયો દ્વિવિધઃ તથા-

કહા (તુમ્હા ના કિ મૂલે ધર્મે પત્તે) હે ભગવાન ! આપકા ધર્મ કિ મૂલક પ્રજ્ઞસ હુઆ હૈં । (તણ થાવચ્ચાપુત્તે સુદસણેણ એવ વુત્તે સમાણે સુદસણ એવ વયાસી) હસ પ્રકાર સુદર્શન સેઠ કે દ્વારા હસ પ્રકાર પૂછે ગયે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ને ઉસસે હસ પ્રકાર કહા (સુદસણા અમ્હાણ વિનયમૂલે ધર્મે પત્તે) હે સુદર્શન હમારા ધર્મ-વિનય મૂલક પ્રજ્ઞસ હુઆ હૈં । દુર્ગતિમે જાને સે જો પ્રાણિયો કો વચાતા હૈં ઓર શુભ સ્થાન મેં ઉન્હે પહુંચાતા હૈં ઉસકા નામ ધર્મ-આચાર હૈં । સકલ લ્લેશોંકા દાતા જો અષ્ટ પ્રકાર કા કર્મ હૈં ઉસે જો નાશ કરતા હૈં ઉસકા નામ વિનય હૈં । એસા વિનય ચારિત્ર રૂપ અનુષ્ઠાન વિશેષ હૈં । યહ વિનય હી ધર્મ કા મૂલ કારણ કહા ગયા હૈં-કહા મિ હૈં જિસકે દ્વારા જીવ જીવિતિ કર્મોં કા નાશ કર દેતા હૈં તથા અપવર્ગ રૂપ ફલ સે યુક્ત હુએ જો ધર્મરૂપી વૃક્ષકા મૂલ હૈં-વહી વિનય હૈં । એસા વિનય ચારિત્ર રૂપ હી માના ગયા હૈં

કિં મૂલે ધર્મે પત્તે) હે ભગવાન ! આપના ધર્મના મૂળભૂત સિદ્ધાન્તો શું છે (તણ થાવચ્ચાપુત્ત સુદસણેણ એવ વુત્ત સમાણે સુદસણ એવ વયાસી) સુદર્શન સેઠના આ પ્રશ્નને સાંભળીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે જવાબમાં તેમને કહ્યું (સુદસણા અમ્હાણ વિનયમૂલે ધર્મે પત્તે) હે સુદર્શન ! અમારા ધર્મનો આધાર વિનય મૂલક છે દુર્ગતિમાં જતા પ્રાણીઓને જે અટકાવે છે અને શુભસ્થાનોમાં તેમને લઈ જાય છે તે ધર્મ-આચાર કહેવાય છે સમસ્ત કલેશોને ઉત્પન્ન કરનાર આઠ પ્રકારના કર્મોનો જે નાશ કરે છે તેનું નામ 'વિનય' છે એવું જ વિનય ચારિત્ર રૂપ અનુષ્ઠાન વિશેષ છે આ વિનય જ ધર્મનું મૂળ કારણ છે કહ્યું છે કે જેના વડે જીવ જલદી કર્મોનો નાશ કરે છે તેમજ અપવર્ગ (મોક્ષ) રૂપી વૃક્ષનું જે મૂળ છે તે 'વિનય' જ છે આવો વિનય ચારિત્ર રૂપ જ ગણાય છે (સે વિનય વિનય દ્વિવિધે પળતે) તે વિનય

પ્થાનાઃ=મોક્ષપદાવસ્થિતા ભવન્તિ । લોકાગ્રે સિદ્ધિપદે પ્રતિષ્ઠાન સ્થિતિર્યેષા તે તથા સિદ્ધા ભવન્તિ ॥ ૨૦ ॥

મૂલમ્-તણ થાવચ્છાપુત્તે સુદસણં એવ વયાસી-તુવ્ભેણં સુદસણા । કિં મૂલણ ધમ્મે પન્નત્તે ? અમ્હાણં દેવાણુપ્પિયા । સોયમૂલે ધમ્મે પન્નત્તે જાવ સગ્ગં ગચ્છંતિ, તણ થાવચ્છાપુત્તે સુદસણં એવ વયાસી-સુદસણા । સે જહાનામણ કેઢ પુરિસેણ મહ રુહિરકય વત્થ રુહિરેણ ચેવ ધોવેજા તણ સુદંસણા તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ રુહિરેણં ચેવ પક્ખાલિજ્જમાણસ્સ અત્થિ કાઢ સોહી ? ણો ઇણદ્દે સમદ્દે, એવામેવ સુદસણા । તુવ્ભપિ પાણાઢવાણં જાવ મિચ્છાદસણસલ્લેણં નત્થિ સોહી જહા તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ રુહિરેણં ચેવ પક્ખાલિજ્જમાણસ્સ નત્થિ સોહી, સુદસણા । સે જહા ણામણ કેઢ પુરિસેણ મહ રુહિરકય વત્થ સજ્જિયાચ્ચારેણં અણુલિપ્પઢ, અણુલિપિત્તા પયણ આરુહેઢ આરુહિત્તા ઉપહ ગાહેઢ, ગાહિત્તા તતો પચ્છાસુદ્ધેણવારિણા ધોવેજા સે ણૂણં સુદસણા । તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ સજ્જિયાચ્ચારેણ અણુલિત્તસ્સ પયણ આરુહિયસ્સ ઉપહ ગાહિયસ્સ સુદ્ધેણ વારિણા લોચગ્ગપહ્ઢાગા ભવતિ)

ઇસ પ્રકાર દ્વિવિધ વિનયમૂલક ધર્મની આરાધનાથી જીવ ક્રમ ૨ થી અષ્ટ વિધ કર્મોની પ્રકૃતિઓને લેઈ લોકના અગ્ર ભાગમાં વિરાજમાન થઈ જાય છે ।-સિદ્ધ પદને બોલવામાં આવે છે । સૂત્ર ॥ ૨૦ ॥

લોચગ્ગપહ્ઢાગા ભવતિ) આ રીતે વિનયના બે પ્રકારે બે ધર્મના મૂળ છે એવા ધર્મની આરાધના કરવાથી જીવ ધીમે ધીમે અનુક્રમે કર્મોની આઠ બીજની પ્રકૃતિઓનો નાશ કરીને લોકના અગ્રભાગે સ્થાન પ્રાપ્ત કરે છે, તેથી સિદ્ધપદને લોચવનાર થાય છે, ॥ સૂ-૨૦ ॥

વ્રતેઽન્તર્ભાવાત્ ચાઉજ્જામો ધમ્મો ઇતિ વચનાત્ ચત્વારિ અણુવ્રતાનિ, ચત્વારિ મહાવ્રતાનિ આસન્ ઇતિ વિશેષઃ । તત્ર સ્વલ્પ યઃ સોઽનગારવિનયઃ સ સ્વલ્પ પશ્ચ મહાવ્રતાનિ, તદ્વથા-સર્વસ્માત્ પ્રાણાતિપાતાદ્ વિરમણ૧, સર્વસ્માદ્ મૃષાગ્રાદાદ્ વિરમણ૨, સર્વસ્માદ્ અદત્તાદાનાદ્ વિરમણ૩, સર્વસ્માત્ પરિગ્રહાદ્ વિરમણ૪ । સર્વસ્માદ્ રાત્રિભોજનાદ્ વિરમણ, યાત્રન્મિત્યાદર્શનલ્પાદ્ વિરમણ, દશવિધ પ્રત્યાખ્યાન દ્વાદશભિક્ષુપ્રતિમા., ઇત્યેતેન દ્વિવિધેન, વિનયમૂલકેન ધર્મેણ ‘અણુપુઞ્વેણ’ અનુપૂર્વેણ ક્રમેણ ‘અટ્ટકમ્મપગ્ગહીઓ’ અટ્ટકર્મપ્રકૃતીઃ જ્ઞાના વરણીયાઘષ્ટકર્મપ્રકૃતીઃ ‘સ્વચેત્તા’ ક્ષપયિત્વા ‘લોચગ્ગપણ્ણા’ લોકાગ્રપ્રતિ

પાચ્ચે પરિગ્રહવિરમણવ્રત’ મેં અન્તર્ભાવિ હોને સે ‘ચાઉજ્જામો ધમ્મો’ હસ વચન સે ચાર અણુવ્રત ઓર ચાર મહાવ્રત કહે ગયે હેં ।

(તત્થ ણ જે સે અણગારવિણે સે ણં ચત્તારિ મહવ્વયાહ ત જહા) હસી તરહ જો અનગાર વિનય હૈ વહ ચાર મહાવ્રત રૂપ હૈ જૈસે (સઘ્વાઓ પાણાહવાયાઓ વૈરમણ સઘ્વાઓ મુસાવાયાઓ વૈરમણ સઘ્વાઓ અદિ-ન્નાદાણાઓ વૈરમણ, સઘ્વાઓ પરિગ્રહાઓ વૈરમણ, સઘ્વાઓ મોયણાઓ વૈરમણ જાવ મિચ્છાદસણસહ્ણાઓ વૈરમણ) સમસ્ત પ્રાણાતિપાત સે વિરમણ, સમસ્ત મૃષાગ્રાદ સે વિરમણ સમસ્ત અદત્તાદાન સે વિરમણ, સમસ્ત પરિગ્રહ સે વિરમણ હોના હન ચાર પ્રકાર કે મહાવ્રતરૂપ તથા સમસ્ત રાત્રિ ભોજન સે વિરમણ યાવત્ મિત્યાદર્શન શત્ય સે વિરમણ હોના હન રૂપ તથા (દસવિહે પચ્ચક્કલાણે વારસમિક્કલુપહિમાઓ દસ વિધ પ્રત્યાખ્યાન રૂપ ઓર ૧૨ વારહ ભિક્ષુ પ્રતિમા રૂપ હૈ (હચ્ચેણં દુવિહેણ વિણયમૂલેણ ધમ્મેણ અણુપુઞ્વેણ અટ્ટ કમ્મપગ્ગહીઓ સ્વચેત્તા

પાથમા પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતમા અન્તર્ભાવ હોવાથી “ચાઉજ્જામો ધમ્મો” એ વચનથી ચાર અણુવ્રત અને ચાર મહાવ્રત કહ્યા છે (તત્થ ણ જે સે અણગાર વિણે સે ણં ચત્તારિ મહવ્વયાહ ત જહા) આ રીતે ૪ અનગાર વિનય પણ ચાર મહાવ્રત રૂપ છે જેમકે (સઘ્વાઓ પાણાહવાયાઓ વૈરમણ સઘ્વાઓ મુસાવાયાઓ વૈરમણ સઘ્વાઓ અદિન્નાદાણાઓ વૈરમણ સઘ્વાઓ પરિગ્રહાઓ વૈરમણ સઘ્વાઓ રાત્રિ મોયણાઓ વૈરમણ જાવ મિચ્છાદસણસહ્ણાઓ વૈરમણ) સકળ પ્રાણાતિપાતથી વિરમણ સકળ મૃષાગ્રાદ (અસત્યભાષણ) થી વિરમણ, સકળ અદત્તાદાનથી વિરમણ, અને સકળ પરિગ્રહથી વિરમણ આ ચાર જાતના મહાવ્રત રૂપ છે રાત્રિ ભોજનથી વિરમણ યાવત્ મિત્યાદર્શન શત્યથી વિરમિત થયું, (દસવિહે પચ્ચ કલાણે વારસમિક્કલુપહિમાઓ) દશવિધ પ્રત્યાખ્યાનરૂપ અને ૧૨ પ્રતિમારૂપ છે (હચ્ચેણં દુવિહેણ વિણયમૂલેણ ધમ્મેણ અણુપુઞ્વેણ અટ્ટકમ્મપગ્ગહીઓ સ્વચેત્તા

ષ્ઠાનાઃ=મોક્ષપદાવસ્થિતા ભવન્તિ । લોકાગ્રે સિદ્ધિપદે પ્રતિષ્ઠાન સ્થિતિર્યેષા તે તથા સિદ્ધા ભવન્તિ ॥ ૨૦ ॥

મૂલમ્-તણ થાવચ્છાપુત્તે સુદસણં એવ વયાસી-તુવ્ભેણ સુદસણા । કિં મૂલમ્ ધમ્મે પન્નત્તે ? અમ્હાણં દેવાણુપ્પિયા । સોયમૂલે ધમ્મે પન્નત્તે જાવ સગ્ગ ગચ્છંતિ, તણ થાવચ્છાપુત્તે સુદસણં એવ વયાસી-સુદસણા । સે જહાનામમ્ કેઇ પુરિસેણમ્ મહ રુહિરકય વત્થ રુહિરેણ ચેવ ધોવેજા તણ સુદસણા તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ રુહિરેણ ચેવ પક્ખાલિજ્જમાણસ્સ અત્થિ કાઇ સોહી ? ણો ઇણદ્દે સમદ્દે, એવામેવ સુદસણા । તુવ્ભંપિ પાણાઙ્ગાણં જાવ મિચ્છાદસણસલ્લેણં નત્થિ સોહી જહા તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ રુહિરેણં ચેવ પક્ખાલિજ્જમાણસ્સ નત્થિ સોહી, સુદસણા । સે જહા ણામમ્ કેઇ પુરિસે ણમ્ મહ રુહિરકય વત્થ સજ્જિયાચ્ચારેણં અણુલિપ્પિ, અણુલિપિત્તા પયણ આરુહેઙ્ગ આરુહિત્તા ઉપ્પહ ગાહેઙ્ગ, ગાહિત્તા તત્તો પચ્છાસુદ્ધેણવારિણા ધોવેજા સે ણૂણ સુદસણા । તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ સજ્જિયાચ્ચારેણ અણુલિત્તસ્સ પયણ આરુહિયસ્સ ઉપ્પહ ગાહિયસ્સ સુદ્ધેણ વારિણા લોચગ્ગપદ્ધાણા ભવતિ) ડસ પ્રકાર દ્વિવિધ વિનયમૂલક ધર્મની આરાધનાથી જીવ ક્રમ ૨ સે અષ્ટ વિધ કર્મોની પ્રકૃતિયોનો સ્વરૂપાકર લોકોને અગ્ર ભાગમાં વિરાજમાન થઈ જાય છે ।-સિદ્ધ પદકે મોક્ષાવન જાય છે । સૂત્રા ૨૦ ॥

લોચગ્ગપદ્ધાણા ભવતિ) આ રીતે વિનયના બે પ્રકારો બે ધર્મના મૂળ છે એવા ધર્મની આરાધના કરવાથી જીવ ધીમે ધીમે અનુક્રમે કર્મોની આઠ જાતની પ્રકૃતિઓનો નારા ઢગીને લોકના અગ્રભાગે સ્થાન પ્રાપ્ત કરે છે, તેઓ સિદ્ધપદને લોચવનાર થાય છે, ॥ સૂ-૨૦ ॥

ટીકાર્થ—(તણ થાવચાપુત્તે) (સુદસણ એવ) આ રીતે ઉપદેશ આવતા સ્થા
પત્યાપુત્ર અનગારે કરી, (સુદસણ એવ) સુદર્શનને મળોધતા ઝલ્યુ—(તુન્મેણ સુદ
સણા । કિંમૂલે ધમ્મે પન્નત્તે)હે સુદર્શન તમારા ધર્મનું મૂળ શુ પ્રજ્ઞાત થયુ છે ?
(અમ્હાણ દેવાણુપ્પિયા । સોયમૂલે ધમ્મે પન્નત્તે) જવાબ આવતા સુદરાને ઝલ્યુ
“હે દેવાનુપ્રિય । મારા ધર્મનું મૂળ શૌચ (પવિત્રતા) છે ” એટલેકે મારા ધર્મ
શૌચ મૂલક સમગ્ર ગચ્છતિ) ‘ધાવતૂ’ સ્વર્ગમા પહોચે છે ” સુદર્શનના
કથનમા ૩ જેમ જેમ “ સો વિય સોપ દુવિદે પન્નતે ત જહા

सोए य इत्यादि एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्गेण ' इति पर्यन्त
वाच्यम् । ततः खलु स्वात्यापुत्र सुदर्शनमेवमवादीत्-सुदर्शन ! तद् यथानामकः
कश्चित् पुरुष एक महद् ' रुहिरकय ' रुधिरकृत शोणितलिप्त वस्त्र रुधरेण चैव=
शोणितेनैव ' धोवेज्जा ' धावयेत् प्रक्षालयेत् तदा खलु सुदर्शन ! तस्य रुधिरकृतस्य
वस्त्रस्य प्रक्षाल्यमानस्यास्ति=भवन्ति काचित् ' सोही ' शोधि शुद्धिः निर्मलता,
' णो इणट्ठे समट्ठे ' नायमर्थः समर्थ =रुधिरलिप्त वस्त्र रुधरेणैव प्रक्षालित सन्
पवित्र भवतीत्ययमर्थः समर्थो न भवति प्रामाणिकी बुद्धिमुपगन्तु न शक्नोतीत्यर्थः ।
हे सुदर्शन ! एवमेव ' तुव्भपि ' तवापि ' पाणाइवाएण ' प्राणातिपातेन याव-
न्मिज्जादृशश्लेष्णेन नास्ति शोधि', सुदर्शन ! अथ यथानामकः कश्चित् पुरुषः

द्वसोए य भावसोए य " इत्यादि से लेकर " एव खलु जीवा जला
भिसेयपूयप्पाणो अविग्गेण " (तएण धावच्चापुत्ते सुदसणं एव वयासी)
इस प्रकार सुदर्शन का कथन सुनकर स्वापत्यापुत्र अनगारने उस
सुदर्शन से इस प्रकार कहा-(सुदसणा ! से जहानामए केइपुरिसे एग
मह रुहिरकय वत्थ रुहिरेण चैव धोवेज्जा तएण सुदसणा ! तस्स रुहि-
रकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चैव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थिकाइ सोही !)
हे सुदर्शन ! जैसे कोई पुरुष एक बड़े भारी रुधिर लिप्त वस्त्र को रुधिर
से ही धोवे तो रुधिर (रक्त) से प्रक्षाल्यमान उस वस्त्र की शुद्धि
होती है जैसे (णो इणट्ठे समट्ठे) यह अर्थ समर्थित नहीं होता-रुधिर
से लिप्त हुआ वस्त्र रुधिर से धोने पर साफ-शुद्ध होता है-जैसा यह
अर्थ प्रामाणिक बुद्धि द्वारा माय नहीं होता है (एवामेव सुदसणाऽ
तुव्भपि पाणाइवाएण जावमिच्छादसणसल्लेण नत्थि सोही जहा तस्स
रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चैव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही)

द्वसोए य भावसोए य " अर्थात् " एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो
अविग्गेण " अर्थात् सुदर्शनं कथनं समञ्जसं भवेत् (तएण धावच्चा
पुत्ते सुदसणं एव वयासी) आ गीते सुदर्शनं शीघ्रं भूत्वा धर्मविधिनी वात
साधनीने स्वापत्या पुत्र अनगारे तेभने आ प्रमाणे कथु- (सुदसणा ! से जहा
नामए केइ पुरिसे एग मह रुहिरकय वत्थ रुहिरेण चैव धोवेज्जा तएण सुदसणा ?
तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चैव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थिकाइ सोही ?)
हे सुदर्शन ! केध पुरुष बोलीलीनु भोटु दूगडु बोलीथी न भाइ करे तो ते
बोलीथी भाइ करेनु दूगडु शु शुद्ध थसे । (णो इणट्ठे समट्ठे) नेम बोली
लीनु दूगडु बोलीथी नवत्थ थाय नडि आ वात प्रामाणिक बुद्धिथी गमे
तेने करीअेतो पणु माय थाय नडि (एवामेव सुदसणा ? तुव्भपि पाणा-
इवाएण जाव मिच्छादसणसल्लेण नत्थि सोही) ते गीते सुदर्शन ! तारी पणु

પક્ષાલિજ્જમાણસ્સ સોહી ભવઈ ? હંતા ભવઈ, એવામેવ સુદ-
સણા ! અમ્હપિ પાણાઙ્ગાયવેરમણેણં અત્થિ સોહી, જહા વા
તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ જાવ સુદ્ધેણં વારિણા પક્ષાલિજ્જમા-
ણસ્સ અત્થિ સોહી, તણં સે સુદસણે સવુદ્ધે થાવચ્છાપુત્ત વદઈ,
નમસઈ, વંદિત્તા નમસિત્તા એવં વયાસી-ઇચ્છામિણ મંતે ! ધમ્મ
સોચ્ચા જાણિત્તણ જાવ સમણોવાસણ જાણ અહિગયજીવાજીવે
જાવ પહિલાભેમાણે વિહરઈ ॥ સૂ. ૨૧ ॥

(તણ થાવચ્છા ૦) इत्यादि ।

ટીકા- તત. સ્વલુ સ્થાપત્યાપુત્રઃ સુદર્શનમેવમયાદીત્-તવ સ્વલુ સુદર્શનઃ
કિં મૂલકો ધર્મઃ પ્રજ્ઞસઃ ? એવ સ્થાપત્યાપુત્રેણ પૃષ્ઠઃ સન્ સુદર્શનો વદતિ-‘ અમ્હા-
ણ ’ इत्यादि । हे देवानुप्रिय ! अस्माक शौचमूलो धर्मः प्रज्ञसः, यावत् स्वर्गं गच्छन्ति
अत्र यावच्छब्देन-‘ सेऽत्रि य सोए दुविहे पन्नत्ते त जहा दव्वसोए य भाव

તણ થાવચ્છા પુત્તે इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તણ થાવચ્છાપુત્તે) इस प्रकार कहनेके बाद स्थापत्यापुत्र
अनगार ने पुनः (सुदसण एव) सुदर्शन से इस प्रकार कहा-(तुम्हेण
सुदसणा कि मूलए धम्मे पन्नत्ते हे सुदर्शन ! तुम्हारा धर्म कि मूलक
प्रज्ञस हुआ है (अम्हाण देवाणुप्पिया ! सोयमूले धम्मे पन्नत्ते) तव
सुदर्शनने कहा हे देवनुप्रिय ! हमारा धर्म शौचमूलक प्रज्ञस हुआ है ।
(जाव सगग गच्छति) इस सुदर्शन के कथन “ मैं स्वर्ग जाते है ” यहा
तक का पाठ लगा लेना चाहिये-जैसे-“सोवियसोए दुविहे पन्नत्ते तजहा

‘ તણ થાવચ્છા પુત્તે ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તણ થાવચ્છાપુત્તે) (सुदसण एव) आ रीते उपदेरा आपता स्था
पत्यापुत्र अनगारे इरी, (सुदसण एव) सुदर्शनने म बोधता उछु-(तुम्हेण सुद
सणा ! किं मूलए धम्मे पन्नत्ते)हे सुदर्शन तमारा धर्मनु भूण शु प्रज्ञत थयु छे ?
(अम्हाण देवाणुप्पिया ! सोयमूले धम्मे पन्नत्ते) જવાણ આપતા સુદશને કહ્યું
“હે દેવાનુપ્રિય ! મારા ધર્મનું ભૂણ શૌચ (પવિત્રતા) છે ” એટલેકે મારો ધર્મ
શૌચ મૂલક છે (જાવ સગગ ગચ્છતિ) ‘યાવત્’ સ્વર્ગમા પહોંચે છે ” સુદર્શનના
કથનમા અહીં સુધી લેવું જોઈએ જેમ “ સો વિય સોણ દુવિહે પન્નત્તે ત જહા

सोए य इत्यादि एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्गेण ' इति पर्यन्त वाच्यम् । ततः खलु स्यात्पापुत्र सुदर्शनमेवमवादीत्-सुदर्शन ! तद् यथानामकः कश्चित् पुरुष एक महद् ' रुहिरकय ' रुधिरकृत शोणितलिप्त वस्त्र रुधिरेण चैव= शोणितेनैव ' धोवेज्जा ' धावयेत् प्रक्षालयेत् तदा खलु सुदर्शन ! तस्य रुधिरकृतस्य वस्त्रस्य प्रक्षाल्यमानस्यास्ति=भवन्ति काचित् ' सोही ' शोधि शुद्धिः निर्मलता, ' णो इण्ठे समठ्ठे ' नायमर्थः समर्थ =रुधिरलिप्त वस्त्र रुधिरेणैव प्रक्षालित सन् पवित्र भवतीत्ययमर्थः समर्थो न भवति प्रामाणिकी बुद्धिसुपगन्तु न शक्नोतीत्यर्थः । हे सुदर्शन ! एवमेव ' तुब्भपि ' तत्रापि ' पाणाइवाएण ' प्राणातिपातेन यावन्मिथ्यादर्शशल्येन नास्ति शोधिः, सुदर्शन ! अयं यथानामकः कश्चित् पुरुषः

दन्वसोए य भावसोणय " इत्यादि से लेकर " एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्गेण " (तएण धावच्चापुत्ते सुदसणं एव वयासी) इस प्रकार सुदर्शन का कथन सुनकर स्यापत्यापुत्र अनगारने उस सुदर्शन से इस प्रकार कहा—(सुदसणा ! से जहानामए केहपुरिसे एग मह रुहिरकय वत्थ रुहिरेण चैव धोवेज्जा तएण सुदसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चैव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थिकाइ सोही !) हे सुदर्शन ! जैसे कोई पुरुष एक बड़े भारी रुधिर लिप्त वस्त्र को रुधिर से ही धोवे तो रुधिर (रक्त) से प्रक्षाल्यमान उस वस्त्र की शुद्धि होती है जैसे (णो इण्ठे समठ्ठे) यह अर्थ समर्थित नहीं होता—रुधिर से लिप्त हुआ वस्त्र रुधिर से धोने पर साफ-शुद्ध होता है—जैसा यह अर्थ प्रामाणिक बुद्धि द्वारा माय नहीं होता है (एवामेव सुदसणाऽतुब्भपि पाणाइवाएण जावमिच्छादसणसल्लेण नत्थि सोही जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चैव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही)

दन्वसोए य भावसोए य " अहीथी " एव खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्गेण " अही सुग्री सुदर्शननु कथन अभवत्तु जेष्ठे (तएण धावच्चापुत्ते सुदसणं एव वयासी) आ गीते सुदर्शननी शौच भूला धर्मविपेनी वात सावणीने स्यापत्या पुत्र अनगारे तेभने आ प्रभाणे कहु—(सुदसणा ! से जहानामए केहपुरिसे एग मह रुहिरकय वत्थ रुहिरेण चैव धोवेज्जा तएण सुदसणा ? तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चैव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थिकाइ सोही ?) हे सुदर्शन ! उध पुरुष दोहीलीनु मोटु लूगडु दोहीथी न माइ उरे तो ते दोहीथी माइ करेनु लूगडु शु शुद्ध थरे । (णो इण्ठे समठ्ठे) जेम दोहीलीनु लूगडु दोहीथो व्वत्थ थाय नडि आ वात प्रामाणिउ बुद्धिथी गमे तेने उरीअेतो पणु माय थाय नडि (एवामेव सुदसणा ? तुब्भपि पाणाइवाएण जाव मिच्छादसणसल्लेण नत्थि सोही) ते रीते सुदर्शन ! तारी पणु

एक महद् रुधिरकृत वत्स ' सज्जिजाखारेण ' सर्जिकाक्षारेण सज्जीनाम्ना प्रसिद्धया क्षारमृत्तिकया ' अणुलिपि ' अनुलिपति अनुलिप्य ! ' पयण ' पचनपाकस्थान ' आरुहेइ ' आरोहयति रुधिरलिप्त वत्सक्षारमृत्तिकानुलिप्त कृत्वा कस्मिंश्चिम् मृमयादिपात्रे निधाय तत्पात्र चुलिकोपरिस्थापयतीत्यर्थः । आ ' उण्ह गाहेइ ' उण्ण ग्राहयति उण्णीकरोति ग्राहयित्वा तत पश्चात् शुद्धेन वारिणा धावयेत् , हे सुदर्शन ! स नून तस्य रुधिरकृतस्य वत्सस्य सर्जिकाक्षारेण अनुलिप्तस्य पचनमारोहितस्योण्ण ग्राहितस्य शुद्धेन वारिणा ' पक्खालिज्जमाणस्स ' प्र

इसी तरह हे सुदसण ? तुम्हारी भी प्राणातिपात से यावत् मिथ्या दर्शन शल्य से शुद्धि नहीं होती है । जैसे उस शोणितलित वस्त्र की रुधिर से धोने पर शुद्धि नहीं होती है । (सुदसणा ? से जहाणामए केइपुरिसे एग मह रुधिरकयवत्थ सज्जिजाखारेण अणुलिपिइ, अणुलिपित्ता पयण आरुहेइ, आरुहित्ता उण्हे गाहेइ, गाहित्ता तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा धोवेज्जा से णूण सुदसणा ! तस्स रुधिरकयस्स वत्थस्स सज्जिजाखारेण अणुलित्तस्स पयण आरुहियस्स उण्ह गाहियस्स सुद्धेण सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स सोही भवइ) शुद्धि का प्रकार इस तरह है सुदर्शन ! जैसे कोई पुरुष एक महान रुधिरलिप्त वस्त्र को साजी खारसे, अनुलित कर कीसी मिट्टि के वर्तन में रख उसे चूलेपर रखता है—रखकर फिर उसे गर्म करता है—गर्म कर उसके बाद उसे फिर शुद्ध जल से प्रक्षालित करता है तो हे सुदर्शन ! निश्चय से

પ્રાણાતિપાત થી કે યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યથી શુદ્ધિ થતી જ નથી જેમ કે લોહીથી ખરડાયેલા લૂગડાની શુદ્ધિ લોહી વડે જ થતી નથી (સુદસણા ? સે જહા ણામए કેइ પુરિસે ઇગ મહ રુધિરકયવત્થ સજ્જિજાખારેણ અણુલિપિइ, અણુલિપિત્તા પયણ આરુહેइ, આરુહિત્તા ઉણ્હે ગાહેइ, ગાહિત્તા તઓ પચ્છા સુદ્ધેણ વારિણા ધોવેજ્જા સે ણૂણ સુદસણા ! તસ્સ રુધિરકયસ્મ વત્થસ્સ સજ્જિજાખારેણ અણુલિત્તસ્સ પયણ આરુહિયસ્મ ઉણ્હ ગાહિયસ્સ સુદ્ધેણ સુદ્ધેણ વારિણાપક્કા લિજ્જમાણસ્સ સોહી ભવइ) કે સુદર્શન ! લોહીથી ખરડાયેલા લૂગડાની શુદ્ધિ આ પ્રમાણે થાય જેમ કે સૌ પહેલા લોહીભીના વસ્ત્રને માણસ સાથેખારના પાણીમા યોળીને માટીના વાસણમા મૂકીને તેને થૂલા ઉપર ચઢાવે છે અને નીચે અગ્નિ પ્રકટાવીને તેને ઊંચું કરે છે અને ત્યાર બાદ લૂગડાને શુદ્ધ પાણીથી સાફ કરી નાખે છે તો તે નિશ્ચિત પણે સાથેખારમા યોળવાથી

ક્ષાલ્યમાનસ્ય 'સોઠી' શોધિર્ભવતિ । ઠન્ત ! ભવતિ । એવમેવ સુદર્શન ! અસ્માકપિ 'પાણાહવાયવેરમેણ' પ્રાણાતિપાતવિરમણેન યાવત્ મિથ્યાદર્શનયત્યવિરમણેના સ્તિ શોધિઃ, આત્મન પવિત્રતા ભવતિ, યદા વા તસ્ય રુધિરકૃતસ્ય વસ્ત્રસ્ય યાવત્ શુદ્ધેન વારિણા પ્રક્ષાલ્યમાનસ્યાસ્તિ શોધિઃ । વસ્ત્રરૂપોઽયમાત્મા રુધિરરૂપ પ્રાણાતિપાતાદ્યષ્ટાદશપાપસ્યાનોપહ્લિપ્તઃ સમ્યક્ત્વરૂપયા ક્ષારમૃત્તિકયાઽનુલેપ પ્રાપ્ય શરીરમાણ્ડ જિનરત્પસ્થવિરકલ્પરૂપપચનસ્થાનોપરી સસ્થાપ્ય તપોઽગ્નિના પરિતાપિતઃ સયમરૂપશુદ્ધજલેન પ્રક્ષાલિતઃ સન્નિર્મલ સ્વચ્છદર્પણવત્પ્રકાશમાનો ભવતિ નાન્યથેત્યર્થઃ । યે તુ પ્રાણાતિપાતાદિ પરાયણા જીવા શુદ્ધચર્ય યદ્વારિજનિત શૌચ જલ્લાભિપેક ચ કુર્વન્તઃ સન્તિ, તાન્ પ્રતિદયન્તે સ્વલુ જીવાજીવતત્ત્વવેદિનો વિદ્વાંમ્—અહો ! પ્રાણાતિપાતાદિ સેવનજનિત જ્ઞાનાવરણીયાદ્યષ્ટવિધકર્મ-મલનિરન્તરલેપાનુલેપસગ્રહપરાયણા અપિ ઇમે જીવા પુનઃ પ્રાણાતિપાતાદિભિરેવ-શુદ્ધિમિચ્છન્તિ અહો ! કીદૃશો મોહસ્ય મહિમા વરીર્મણિ ।

ઉસ રુધિરલિસ વસ્ત્ર કી સર્જિકા સ્વાર સે અનુલિસ હોને પર, પાકસ્થાન પર રહે જાને પર ગર્મ કિયે જને પર, ઓર શુદ્ધ જલ સે પ્રક્ષાલિત હો જાનેપર શુદ્ધિ હોતી હૈ ? (હતા મવહ) હાં હોતી હૈ (એવામેવ સુદસણા ! અમ્હ પિ પાણાહવાયવેરમણેણ જાવ મિચ્છાદસણસલ્લવેરમણેણ અત્થિ સોહી) તો હસી તરહ હે સુદર્શન ! હમારી ભી પ્રાણાતિપાતવિરમણ સે યાવત્ મિથ્યાદર્શન કલ્પ કે ચિરમણ સે શુદ્ધિ હોતી હૈ અર્થાત્ આત્મા કી પરિવ્રતા હોતી હૈ । (જહા વા તસ્સ રુદ્ધિરકયસ્સ વત્થસ્સ જાવ સુદ્ધેણ વારિણા પક્ષાલિજ્જમાણસ્સ અત્થિ સોહી) જૈસેઉસ રુધિરલિસ વસ્ત્ર કો યાવત્ શુદ્ધ જલ સે પ્રક્ષાલિત કરને પર શુદ્ધિ હો જાતી હૈ । (તણ

ચૂલા ઉપર ચઢાવીને ગરમ, કરવાથી તેમજ શુદ્ધ પાણીથી સાફ કરવા થી અવચ્છ થઈ જાય છે કે નહિ (હતા મવહ) સુદર્શને જવાબમા કહ્યું “ અવચ્છ થઈ જાય છે ” (એવામેવ સુદસણા ! અમ્હેપિ પાણાહવાયવેરમણેણ જાવ મિચ્છાદસણસલ્લવેરમણેણ અત્થિસોહી) તો આ પ્રમાણે જ પ્રાણાતિપાત વિરમણથી યાવત્ મિથ્યાદર્શન ગત્યના વિરમણથી શુદ્ધિ થાય છે એટલે કે એમનાથી આત્મા પવિત્ર થાય છે (જહા વા તસ્સ રુદ્ધિરકયસ્સ વત્થસ્સ જાવ સુદ્ધેણ વારિણા પક્ષાલિજ્જમાણસ્સ અત્થિ સોહી) જેમ કે લોહીભીના લગડા સાથેજાર તેમજ શુદ્ધ પાણીથી શુદ્ધ થઈ જાય છે (તણ સે સુદસણે સવુદ્ધે યાવન્ચાપુત્ત વવહ નમસહ, વદિતા નમસિતા એવ વયાસી) આ રીતે ઉપદેશ અપાએલા સુદર્શન શેઠે આપત્યાપુત્ર અનગરને વિનતી કરતા કહ્યું ‘ હે ભગવાન ! શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મના આરાધક તમને ધન્ય છે “ આ રીતે કહીને તેમને વ દન તેમજ નમસ્કાર

एक महद् रुधिरकृत वस्त्र ' सज्जियाखारेण ' सर्जिकाक्षारेण सज्जीनाम्ना प्रसि-
द्धया क्षारमृत्तिकया ' अणुलिपि ' अनुलिपति अनुलिप्य ! ' पयण ' पचन
पाकस्थान ' आरुहेइ ' आरोहयति रुधिरलिप्त वस्त्रक्षारमृत्तिकानुलिप्त कृत्या क
कस्मिंश्चिद् मृमयादिपात्रे निधाय तत्पात्र चुलिकोपरिस्थापयतीत्यर्थः । आरोह
' उण्ह गाहेइ ' उष्ण ग्राहयति उष्णीकरोति ग्राहयित्वा तत पश्चात् शुद्धेन वारिणा
धावयेत्, हे सुदर्शन ! स नून तस्य रुधिरकृतस्य वस्त्रस्य सर्जिकाक्षारेण अनुलि-
प्तस्य पचनमारोहितस्योष्ण ग्राहितस्य शुद्धेन वारिणा ' पक्खालिज्जमाणस्स ' प्र

इसी तरह हे सुदसण ? तुम्हारी भी प्राणातिपात से यावत् मिथ्या
दर्शन शाल्य से शुद्धि नहीं होती है । जैसे उस शोणितलिप्त वस्त्र की
रुधिर से धोने पर शुद्धि नहीं होती है । (सुदसणा ? से जहाणामए
केइपुरिसे एगं मह रुधिरकयवत्थ सज्जियाखारेण अणुलिपि, अणुलि-
पित्ता पयण आरुहेइ, आरुहित्ता उण्ह गाहेइ, गाहित्ता तओ पच्छा
सुद्धेण वारिणा धोवेज्जा से णूण सुदसणा ! तस्स रुधिरकयस्स वत्थस्स
सज्जियाखारेण अणुलित्तस्स पयण आरुहियस्स उण्ह गाहियस्स
सुद्धेण सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स सोही भवइ) शुद्धि का
प्रकार इस तरह है सुदर्शन ! जैसे कोई पुरुष एक महान रुधिरलिप्त
वस्त्र को साजी खारसे, अनुलिप्त कर कीसी मिट्टि के वर्तन में रख उसे
चूलेपर रखता है—रखकर फिर उसे गर्म करता है—गर्म कर उसके बाद
उसे फिर शुद्ध जल से प्रक्षालित करता है तो हे सुदर्शन ! निश्चय से

પ્રાણાતિપાત થી કે યાવત્ મિથ્યાદર્શન શાલ્યથી શુદ્ધિ થતી જ નથી જેમ
કે લોહીથી ખરડાયેલા લૂગડાની શુદ્ધિ લોહી વડે જ થતી નથી (સુદસણા ? સે
જહા ણામए કેइ પુરિસે એગ મહ રુધિરકયવત્થ સજ્જિયાખારેણ અણુલિપિ,
અણુલિપિત્તા પયણ આરુહેइ, આરુહિત્તા ઉણ્હે ગાહેइ, ગાહિત્તા તઓ પચ્છા સુદ્ધેણ
વારિણા ધોવેજ્જા સે ણૂણ સુદસણા ! તસ્સ રુધિરકયસ્સ વત્થસ્સ સજ્જિયાખારેણ
અણુલિત્તસ્સ પયણ આરુહિયસ્સ ઉણ્હ ગાહિયસ્સ સુદ્ધેણ સુદ્ધેણ વારિણાપક્કા
લિજ્જમાણસ્સ સોહી ભવइ) હે સુદર્શન ! લોહીથી ખરડાયેલા લૂગડાની શુદ્ધિ
આ પ્રમાણે થાય જેમ કે સૌ પહેલા લોહીભીના વસ્ત્રને માણસ સાજીખાર
ના પાણીમા બોળીને માટીના વાસણમા મૂકીને તેને ચૂલા ઉપર ચઢાવે છે
અને નીચે અગ્નિ પ્રકટાવીને તેને ઊંચું કરે છે અને ત્યાર બાદ લૂગડાને શુદ્ધ
પાણીથી સાફ કરી નાખે છે તો તે નિશ્ચિત પણે સાજીખારમા બોળવાથી

दृष्टान्तकी योजनाइस प्रकार दार्ष्टान्तमे करनी चाहिये-वस्त्र के जैसा यह अत्मा है रुधिरके जैसे प्राणातिपातादिक १८अठारह पापस्थान हैं। इन से यह मलीन हो रहा है। क्षार मृत्तिका जैसा सम्यक्त्व है। सो जब यह आत्मा इस सम्यक्त्व रूप क्षार मृत्तिका से अनुलिप्त हो जाता है और अपने शरीर रूप भाडको जिनकल्प तथा स्थविर कल्प रूप पचन स्थान पर स्थापित करता है तप, रूप अग्निसे अपने आपको तपाता है तब यह स्वच्छ दर्पणकी तरह प्रकाशमान होने लगता है। इस शुद्धि मार्ग के अतिरिक्त आत्माकी शुद्धि और किसी मार्ग से नहीं हो सकती है। जो प्राणातिपातादिकोंमें परायण बने हुए जीव शुद्धिके लिये मृत्तिका एवं जल का उपयोग करते हैं और उससे आत्माकी शुचिता मानते हैं गंगादि तीर्थोंमें स्नान करने से पापोंकी निवृत्ति होना मानते हैं उनके प्रति जीव और अजीवके स्वरूपको जाननेवाले विद्वज्जन सदय हो कर कहते हैं की देखोतो मही यह कैसीमोह की प्रबल महिमा है जो प्राणातिपात आदि सेवन से जनित ज्ञानावरणीय आदि अष्टविध कर्ममल के निरन्तर लेपानुलेप के संग्रह करने में परायण बने हुए भी

आ उक्त दृष्टान्त दृष्टान्तिऽ इपे आ गीते भगवतु लेख्ये-आ आत्मा वस्त्र इपे छे प्राणातिपात वगेरे अठार पापस्थानो लोहीनी जेम छे जेमनाथी आत्मा मलिन थई रह्यो छे मालुभारना उपमा सम्यक्त्व छे, तयारे आत्मा सम्यक्त्व उप मालुभाथी अनुलिप्त थाय छे अने पोताना शरीर इपी वासणुने जिनकल्प तेमज स्थविरकल्पइय पचन स्थान (यूदा) उपर भूके छे तप इय अग्नि वडे शरीर इपी वासणुने तपावे छे तयारे ते स्वच्छ दर्पण ना इयमा प्रकाशित थाय छे आत्माना शुद्धिनो आ जेवण जेउज मार्ग छे के जेनाथी आत्मशुद्धि योउउम पणु सलवित थाय छे जेना मिवाय भीन केछि उपायथी आत्म-शुद्धि थवी अमलवित छे जे प्राणातिपात वगेरेमा लीन वयेला जेवो शुद्धिने भाटे भाटी अने पाणीनो उप योग करेछे, अने तेमनाथी आत्म शुद्धि माने छे-गंगा वगेरे तीर्थ स्थानोमा स्नान हरवाथी पापो नष्ट थाय छे जेम माने छे तेमना प्रत्ये जेव अने अजुवना स्वइपने जणुनारा विहानो सदय थअने कहेछे-जुओ तो भरा, अज्ञाननो आ केनो प्रमण मडिमा छे ? जे जेओ प्राणातिपात वगेरेना सेवनथी जनित ज्ञानावरणीय वगेरे आठ प्रकारना उर्म इपी जणने उमेशा लेपानु

તતઃ સ્થાપત્યાપુત્રવચનશ્રવણાનન્તરં ચ્વલુ સ સુદર્શઃ સતુહઃ સમ્યક્ત્વમાનઃ
સન્ સ્થાપત્યાપુત્ર વન્દતે શ્રુતચારિત્રલક્ષણસદ્ધર્મમારાધનેન ધન્યોઽસિ ભગવન્નિ-
ત્યાદિવાક્યેન સ્તોતિ ઇત્યર્થઃ । નમસ્યતિ સ્વાપરૂપં પ્રોધયન્ શ્રદ્ધેયવચનતથા શુરુ
ભાવેન વિનય પ્રકટયન્ કાચેન પ્રણમતીત્યર્થઃ । વન્દિત્વા નત્યા એવ=વક્ષ્યમાણ
પ્રાકારેણાવાદીત્-ઇચ્છામિ ચ્વલુ ભદન્ત ! હે ભગવાન્ ! ધર્મ=વિનયમૂલક ભવદુક્ત
શ્રુતચારિત્રલક્ષણ શ્રુત્વા જ્ઞાતુમ્, જીવાજીવપુણ્યપાપાસ્ત્રવસવરનિર્જરાન્યમોક્ષરૂપાણિ
તત્વાણિ સમ્યક્ સર્વથા ચેતુમિત્યર્થઃ યાવત્-યાવત્ કરુણાદત્ત ધર્મશ્રવણજીવાજી
વાદિતચજ્ઞાનાનન્તર શ્રાવકધર્મસ્વીકારેણ, શ્રમણોપાસનો જાત , સ કીદશ ઇત્યાહ
-અધિગતજીવાજીવો યાવત્ પ્રતિલાભયન્ સત્કારયન્ સમાનયન્ વિહરતિ ॥૨૧॥

સે સુદસણે સતુદ્ધે ધાવઘા પુત્ર વદહ નમસહ, વદિત્તા નમસિત્તા એવ
વયાસી) હસ પ્રકાર સધોધિત હુગ સુદર્શન સેઠને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર
કી હે ભગવાન્ શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મ કે આરાધન કરને વાલે હોને સે
આપકો ધન્ય હૈ ઇત્યાદિ વચનો દ્વારા વદના કી નમસ્કાર ક્રિયા । વદના
નમસ્કાર કર ફિર ઉસને ઉનસે હસ પ્રકાર કહા (ઇચ્છામિ ણ મતે !
ધમ્મ સોચ્છા જાણિત્તણ જાવ સમણોવાસણ જાણ-અહિગયા જીવા
જીવે જાવ પહિલાભેમાણે વિહરહ) હે ભદન્ત ! વિનય મૂલક શ્રુતચારિત્ર
રૂપ ધર્મ કો સુનકર મેં જીવ, અજિવ, પુણ્ય, પાપ, આસ્ત્રવ, સવર, નિર્જરા
એવ મોક્ષ ઇન તત્ત્વોં કો જાનના ચાહતા હૂં । હસ પ્રકાર વહ ધર્મ-
શ્રવણ ઔર જીવાજીવાદિતત્ત્વોં કે બાદ શ્રાવક ધર્મસ્વીકાર કર શ્રમણો
પાસક બન ગયા । શ્રમણોપાસક બનકર ફિર ઉસને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર
કા આહાર આદિ પ્રદાન કર સત્કાર ક્રિયા-સન્માન ક્રિયા ।

કથા વદના અને નમસ્કાર કરીને તેમણે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારને વિનિતિ કરી
-(ઇચ્છામિ ણ મતે ! ધમ્મ સોચ્છા જાણિત્તણ જાવ સમણોવાસણ જાણ અહિગય
જીવાજીવે જાવ પહિલાભેમાણે વિહરહ) હે ભદન્ત ! વિનયમૂલક શ્રુતચારિત્ર
રૂપ ધર્મની વાત સાંભળીને હું હવે જીવ, પુણ્ય, પાપ, આસ્ત્રવ, સવર,
નિર્જરા, બધા અને મોક્ષ આ આ તત્ત્વોંને સ્પષ્ટ રૂપે સમજવાની ઇચ્છા રાખુ
છું આ પ્રમાણે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ના મોઢેથી આ બધા જીવ અજીવ
વગેરે તત્ત્વોં વિષે સાંભળીને શેઠ શ્રાવક ધર્મ સ્વીકારીને શ્રમણોપાસક થઈ
ગયા । શ્રમણોપાસક થઈને શેઠે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારને આહાર વગેરે
અર્પીને સત્કાર કર્યો સન્માન કર્યો

तएण से सुदसणे सुयेणं परिव्वायएणं एवं वुत्ते समाणे
आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता करयल० सुयं परिव्वायग
एवं वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । अरिहओ अरिट्ठनेमिस्स
अतेवासी थावच्चापुत्ते नामं अणगारे जाव इहमागए इह चेव
नीलासोए उज्जाणे विहरइ, तस्स णं अतिए विणयमूले धम्म
पडिवन्ने ॥ सू० २२ ॥

टीका—तएण इत्यादि—ततस्तदनन्तर खलु तस्य भुक्त्वा परित्राजकस्य
'इमीसे कहाए' अम्याः कथायाः 'लद्धट्ठस्स' लब्धार्थस्य=ज्ञातार्थस्य सतः 'अयमे-
यारूवे' अयमेतद्रूपः प्रक्षयमाणरूपः 'अज्झत्थिए' आ-त्यात्मिक आत्मगतोविचारः,
यावत् समुपपद्यत=प्रादुर्भूतः—एव खलु सुदर्शनेन शौचमूल धर्म 'विप्पजहाय'
विप्पजहाय=परित्यज्य विनयमूलो धर्म. 'पडिवन्ने' प्रतिपन्नः स्वीकृतः । तत्=त-
स्मात् श्रेय खलु मम सुदर्शनस्य दृष्टि=दर्शनं जिनप्रवचने श्रद्धान 'वामेत्तए'
वमयितुं त्याजयितुं पुनरपि शौचमूलकं धर्ममाख्यातुम्, सुदर्शनस्य यद् विनयमूल

‘तएण तस्स सुयस्स’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तस्स सुयस्स) उस शुक परिव्राजकको
जब (इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स) यह ससचार विदित हुआ
सुदर्शन से श्रमणोपासक बन गया—यह खबर मिली—तब (अयमेयारूवे
अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था) उस के मनमें यह प्रकार का विचार
उत्पन्न हुआ (एव खलु सुदसणेण सोयमूल धम्म विप्पजहाय विणय
मूले धम्म पडिवन्ने) सुदर्शन शौच मूलक धर्मका परित्याग कर
विनयमूलक धर्म को स्वीकार लिया है, (त सेय खलु मम सुदसणस्स
दिट्ठिवामेत्तए पुणरवि सोयमूलय धम्म आधवित्तए) सो अब मुझे

‘तएण तस्स सुयस्स’ इत्यादि ।

टीकार्थ (तएण) त्वारेणाह (तस्स सुयस्स) शुक परिव्राजके न्याये (इमीसे
कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स) आ वात आलंकीके सुदर्शन श्रेष्ठ श्रमणोपासक
थय गयाहे त्वारे (अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था) तेना मनभा
विचार रुक्यो—(एव खलु सुदसणेण सोयमूल धम्म विप्पजहाय विणयमूले धम्म
पडिवन्ने) के सुदर्शन श्रेष्ठ शौच मूलक धर्म त्यागने विनय मूलक धर्म स्वी
कार्यो छे (त सेय खलु मम सुदसणस्स दिट्ठि वामेत्तए पुणरवि सोयमूलय धम्म
आधवित्तए) तो अबे भारे सुदर्शननी विनय मूलक धर्म उपरथी श्रद्धा भटा

મૂલમ-તણેં તસ્સ સુયસ્સ પરિઠ્ઠવાયગસ્સ ઇર્મીસે કહાણ
 લઘ્ઠસ્સ સમાણસ્સ અયમેયારૂવે અઙ્ગરિથિણ જાવ સમુપજિત્થા,
 એવ યલ્લુ સુદસણેણં સોયમૂલ ધમ્મ વિપ્પજહાય વિણયમૂલે
 ધમ્મે પઢિવન્ને, તં સેય યલ્લુ મમ સુદંસણસ્સ દિટ્ઠિં વામેત્તણ
 પુણરવિ સોયમૂલણ ધમ્મે આઘવિત્તણ ત્તિકદ્ધુ એવ સપેહેદ્, સં-
 પેહિત્તા પરિઠ્ઠવાયગસહસ્સેણં સદ્ધિં જેણેવ સોગધિયા નગરી જેણેવ
 પરિઠ્ઠવાયગાવસહે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્, ઉવાગચ્છિત્તા પરિઠ્ઠવાય-
 ગાવસહસિ ભડનિક્ખેવ કરેદ્, કરિત્તા ધાઉરત્તવત્થપરિહિણ પવિ-
 રલપરિઠ્ઠવાયગેહિ સદ્ધિં સપરિવુડે પરિઠ્ઠવાયગાવસહાઓ પઢિ-
 નિક્ખમદ્, પઢિનિક્ખમિત્તા સોગંધિયાણ નયરીણ મઙ્ગલ મઙ્ગલેણં
 સુદંસણસ્સ ગિહે જેણેવ સુદસણે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ ।

તણ સે સુદસણે ત સુય એજ્ઞમાણ પાસદ્, પાસિત્તા નો
 અબ્ભુટ્ટેદ્, નો પચ્ચુગ્ગચ્છદ્ ણો અઢાદ્ નો પરિયાણાદ્ નો વદદ્
 તુસિણીણ સચ્ચિટ્ઠદ્, તણ સે સુણ પરિઠ્ઠવાયણ સુદસણ અણ-
 વ્ભુટ્ઠિયં પાસિત્તા એવ વયાસી-તુમં ણં સુદસણા ! અન્નદા
 મમ એજ્ઞમાણ પાસિત્તા અબ્ભુટ્ટેસિ જાવ વદસિ ઇયાણિસુદસણા !
 તુમ મમ એજ્ઞમાણ પાસિત્તા ત કસ્સ ણં તુમે જાવ ણો વદસિ
 સુદસણા ! ઇમેયારૂવે વિણયમૂલે ધમ્મે પઢિવન્ને ।

ये जीव पुनः उन्ही प्राणातिपातादिको के सेवन से अपनी शुद्धि की
 कामना कर रहे हैं ॥ सूत्र २१ ॥

લેવને સત્રહવામા લીન થયેલા એ જીવો ફરી તેજ પ્રાણાતિપાત વગેરેના
 સેવનથી પોતાની શુદ્ધિ ઇચ્છે છે ॥ સૂત્ર “ ૨૧ ” ॥

तएणं से सुदसणे सुयेणं परिवायएणं एव वुत्ते समाणे
आसणाओ अब्भुट्टेइ, अब्भुट्ठित्ता करयल० सुयं परिवायगं
एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । अरिहओ अरिट्ठनेमिस्स
अतेवासी थावच्चापुत्ते नाम अणगारे जाव इहमागए इह चेव
नीलासोए उज्जाणे विहरइ, तस्स णं अतिए विणयमूले धम्म
पडिवन्ने ॥ सू० २२ ॥

टीका—तएण इत्यादि—ततस्तदनन्तर खलु तस्य शुकस्य परिव्राजकस्य
'इमीसे कहाए' अस्याः कथाया, 'लद्धट्ठस्स' लब्धार्थस्य=ज्ञातार्थस्य सतः 'अयमे-
यारूवे' अयमेतद्रूपः रक्ष्यमाणरूपः 'अज्झत्थिए' आ यात्तिक आत्मगतोविचारः,
यावत् समुदपद्यत=प्रादुर्भूतः—एव खलु सुदर्शनेन शौचमूल धर्म 'विप्पजहाय'
विप्रजहाय=परित्यज्य विनयमूलो धर्मः 'पडिवन्ने' प्रतिपन्नः स्वीकृतः । तत्=त-
स्मात् श्रेय खलु मम सुदर्शनस्य दृष्टि=दर्शनं जिनप्रवचने श्रद्धान 'वामेत्तए'
वमयितुं त्याजयितुं पुनरपि शौचमूलक धर्ममाख्यातुम्, सुदर्शनस्य यद् विनयमूल-

'तएण तस्स सुयस्स' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तस्स सुयस्स) उस शुक परिव्राजकको
जब (इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स) यह ससचार विदित हुआ
सुदर्शन से श्रमणोपासक बन गया—यह खबर मिली—तब (अयमेयारूवे
अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था) उस के मनमें यह प्रकार का विचार
उत्पन्न हुआ (एव खलु सुदसणेण सोयमूल धम्म विप्पजहाय विणय
मूले धम्म पडिवन्ने) सुदर्शन शौच मूलक धर्मका परित्याग कर
विनयमूलक धर्म को स्वीकार लिया है, (त सेय खलु मम सुदसणस्स
दिट्ठिवामेत्तए पुणरपि सोयमूलय धम्म आधवित्तए) सो अब मुझे

'तएण तस्स सुयस्स' इत्यादि ।

टीकार्थ (तएण) तयारे आह (तस्स सुयस्स) शुक परिव्राजके तयारे (इमीसे
कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स) आ बात आलजीके सुदर्शन गे० श्रमणोपासक
थई जयाळे तयारे (अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था) तेना मनमा
विचार रुक्यो—(एव खलु सुदसणेण सोयमूल धम्म विप्पजहाय विणयमूले धम्म
पडिवन्ने) के सुदर्शन सेठे शौच मूलक धर्म त्यज्जने विनय मूलक धर्म स्वी
कार्यो छे (त सेय खलु मम सुदसणस्स दिट्ठि वामेत्तए पुणरपि सोयमूलय धम्म
आधवित्तए) तो हुवे भारे सुदर्शननी विनय मूलक धर्म उपरधी श्रद्धा भटा

કર્મવિષયક શ્રદ્ધાન તદપનીય પુનરપિત શોચમૂલકે ધર્મે સ્થાપયિતુ મમોચિતમિ
ત્યર્થઃ । ‘ત્તિકદ્દુ’ इतिकृत्वा=इदं मनसि धृत्वा, एवम्=उक्तप्रकारेण ‘सपेहेइ’
सप्रेक्षते विचारयति, ‘सपेहित्ता’ सप्रेक्ष्य इत्येव मनसि विचार्य, परिव्राजकसहस्रेण
सार्धं यत्रैव सौगंधिकानगरी यत्रैव परिव्राजकावसथः=परिव्राजकानामावसथ आश्रम
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य परिव्राजकावसथे भाण्डनिक्षेपम् त्रिदण्डाद्युपकरणानां
स्थापनं करोति, कृत्वा धातुरक्तवस्त्रपरिहितः गैरिकरागरजितवस्त्रगारी प्रविरल-
परिव्राजकैः कतिपयपरिव्राजकाश्रमात् ‘पडिनिस्खमई’ प्रतिनिष्क्रामति=निः
सरति । प्रतिनिष्क्रम्य निःसृत्य सौगन्धिकाया नगर्यां ‘मज्झ मज्झेण’ मध्यमध्येन
मध्यमभ्यभागेन यत्रैव सुदर्शनस्य गृह, यत्रैव सुदर्शनस्तत्रैवोपागच्छति ।

यही योग्य है कि मैं सुदर्शन की विनय मूलक धर्मकी दृष्टि को हटाकर
उसे समझाकर स्थापित करूँ । (त्तिकदुएव सपेहेइ ऐसा मनमें धारण
कर उसने पूर्वोक्तरूप से उसे समझाने का विचार किया—(सपेहित्ता
परिव्वायगसहस्सेण सद्धिं जेणेव सौगंधिया नगरी जेणेव परिव्वायगा
वसहे तेणेव उवागच्छइ) विचारकर वह फिर परिव्राजक सहस्र के
साथ जहा वह सौगंधिका नगरी और उस में भी जहां परिव्राजकाश्रम
था वहा आया । (उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहसि भडनिस्खेव
करेइ) आकर उसने उस परिव्राजकाश्रम में अपने भाँडोको रख दिया
(करित्ता धातुरक्तवस्त्रपरिहिते पविरलपरिव्वायगेहिं सद्धिं सपरिवुडे
परिव्वायगवसहीओ पडिनिस्खमई) रखकर फिर वह गैरिक धातु से
रंगे हुए वस्त्रो को पहिरे हुए कुत्तेक परिव्राजको के साथ २ उस
परिव्राजकाश्रम से बाहर निकला (पडिनिस्खमित्ता सौगंधियाए

ડીને ફરી સૌચ મૂલક ધર્મપ્રત્યે તેની શ્રદ્ધા જમાવવી જોઈએ (ત્તિ કદ્દુ એવ
સપેહેइ) આ રીતે મનમાં વિચાર કરીને તેણે પહેલાની જેમ તેને સમજાવવાનો
વિચાર કર્યો (સપેહિત્તા પરિવ્વાયગસહસ્સેણ સદ્ધિં જેણેવ સૌગંધિયા નગરી
જેણેવ પરિવ્વાયગાવસહે તેણેવ ઉવાગચ્છइ) વિચાર કરીને તે ફરી એક સહસ્ર
પરિવ્રાજકોની સાથે જ્યાં તે સૌગંધિકા નગરી અને તેમાં પણ જ્યાં પરિવ્રાજ
કાશ્રમ હોતો ત્યાં આવ્યો (ઉવાગચ્છિત્તા પરિવ્વાયગાવસહસિ ભડનિસ્ખેવ કરેइ)
આવીને તેણે પોતાની બધી વસ્તુઓ ત્યાં મૂકી (કરિત્તા ધાતુરક્તવસ્ત્રપરિહિતે
પવિરલપરિવ્વાયગેહિં સદ્ધિં સપરિવુડે પરિવ્વાયગાવસહાઓ પડિનિસ્ખમઈ) મૂકીને
તે ગૈરિકધાતુથી રંગાયેલા વસ્ત્રો પહેરીને થોડા પરિવ્રાજકોને સાથે લઈને
આશ્રમની બાર નીકળ્યો (પડિનિસ્ખમિત્તા સૌગંધિયાએ નગરીએ મજ્ઞ મજ્ઞેણ

ततः खलु स सुदर्शनस्त शुक्रमेजमानम् आगच्छन्त पश्यति, दृष्ट्वा 'नो अब्भु-
द्वेइ' नो अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थान न करोतिस्म 'नो पच्चुग्गच्छइ' नो प्रत्युद्ग-
च्छति अभिमुख न गच्छति, 'नो आढाइ' नो अद्रियते आदर न कुरुते 'नो'
परियाणाइ' नो परिजानाति=आगमन नानुमोदयति, नो वन्दते न स्तौति,
'तुसिणीए सचिद्धइ' तूष्णीकः सतिष्ठति ।

ततः खलु स शुक परिव्राजकः सुदर्शनमभ्युत्थित दृष्ट्वा एवमवादीत्-त्व
खलु सुदर्शन ! अन्यदा अन्यस्मिन् समये मामेजमान दृष्ट्वा अभ्युत्तिष्ठसि यावद्-
नयरीए मज्झ मज्झे ण जेणेव सुदसणस्स गिहे जेणेव सुदसणे तेणेव
उवागच्छइ) बाहर निकल कर सौगधिका नगरी के ठीक बीचो बीच से
होकर जहा सुदर्शन का घर और उसमे भी जहा सुदर्शन था वहा
गया (तए ण से सुदसणे त सुय एज्जमाण पासइ) सुदर्शन ने आते
हुए परिव्राजक को देखा (पासित्ता नो अब्भुद्वेइ, नो पच्चुग्गच्छइ, णो
आढाइ णो परियाणाइ नो वदइ, तुसिणीए सचिद्धइ) परन्तु देखकर
वह उठा नही उसके सामने नही गया, उसका आदर नही किया, उस
के आगमन की उसने सराहना नही की । स्तुति भी नही की केवल
चुपचाप बैठा रहा । (तए ण से सुए परिव्वायए सुदसण अणब्भुद्धियं
पासित्ता एव वयासी) जब शुक ने ऐसा देखा अर्थात् सुदर्शन को नही
उठा हुआ, सामने नही आया हुआ, आदि रूप से देखा तो देखकर
उसने उससे इस प्रकार कहा- (तुम ण सुदसणा ! अन्नया मम एज्ज-
माण पासित्ता अब्भुद्वेसि जाव वदसि इयाणि सुदसणा ! तुम मम

जेणेव सुदसणस्स गिहे जेणेव सुदसणे तेणेव उवागच्छइ) બહાર નીકળીને
સૌગધિકા નગરીની બરાબર વચ્ચે થઈને જ્યાં સુદરાનનું ઘર અને તેમાં પણ
જ્યાં સુદર્શન હતો ત્યાં ગયો (તદા ણ સે સુદસણે ત સુય એજ્જમાણ પાસઈ)
સુદરાને પણ પરિવ્રાજકને આવતા જોયા (પાસિત્તા નો અબ્ભુદ્વેઈ, નો પચ્ચુ
ગ્ગચ્છઈ, ણો આઢાઈ, ણો પરિયાણાઈ, નો વદઈ, તુસિણીએ સચિદ્ધઈ) પરંતુ જોઈ
ને તે ઉભા થયા નહિ, સ્વાગત માટે તેની સામે ગયા નહિ, તેને આદર
આપ્યો નહિ, તેના આગમનની તેમણે સરાહના કરી નહિ, તેની સ્તુતિ પણ
કરી નહિ ક્રિયા તેઓ ચુપચાપ પોતાની જગ્યાએ બેઠી જ રહ્યા (તદા ણ સે
સુએ પરિવ્વાયએ સુદસણ અણબ્ભુદ્ધિયં પાસિત્તા એવ વયાસી) શુક
પરિવ્રાજકે શેઠને મત્કાર માટે પોતાની સામે નહીં આવતા જોઈને કહ્યું-(તુમ ણ
સુદસણા ! અન્નયા મમ એજ્જમાણ પાસિત્તા અબ્ભુદ્વેસિ જાવ વદસિ ઇયાણિ

કર્મવિપયક શ્રદ્ધાન તદપનીય પુનરપિત શોચમૂલકે ધર્મે સ્થાપયિતુ મમોચિતમિ-
ત્યર્થઃ । ‘ત્તિકદ્દુ’ इति कृत्वा=इदं मनसि धृत्या, एवम्=उक्तप्रकारेण ‘सपेहेइ’
सप्रेक्षते विचारयति, ‘सपेहिता’ सप्रेक्ष्य इत्येव मनसि विचार्य, परिव्राजकसहस्रेण
सार्धं यत्रैव सौगंधिकानगरी यत्रैव परिव्राजकावसथः=परिव्राजकानामावसथ आश्रम
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य परिव्राजकाग्रमये भाण्डनिक्षेपम् त्रिदण्डाद्युपकरणानां
स्थापनं करोति, कृत्वा धातुरक्तवस्त्रपरिहितः गैरिकरागरञ्जितवस्त्रयारी प्रविरल-
परिव्राजकैः कतिपयपरिव्राजकाश्रमात् ‘पडिनिक्खमई’ प्रतिनिष्क्रामति=निः
सरति । प्रतिनिष्क्रम्य निःसृत्य सौगन्धिकाया नगर्या ‘मज्झ मज्झेण’ मध्यमध्येन
मध्यमध्यभागेन यत्रैव सुदर्शनस्य गृह, यत्रैव सुदर्जनस्तत्रैवोपागच्छति ।

यही योग्य है कि मैं सुदर्शन की विनय मूलक धर्मकी दृष्टि को हटाकर
उसे समझाकर स्थापित करूँ । (त्तिकदुएव सपेहेइ ऐसा मनमें धारण
कर उसने पूर्वोक्तरूप से उसे समझाने का विचार किया—(सपेहिता
परिव्वायगसहस्रेण सद्धिं जेणेव सौगंधिया नगरी जेणेव परिव्वायगा
वसहे तेणेव उवागच्छइ) विचारकर वह फिर परिव्राजक सहस्र के
साथ जहा वह सौगंधिका नगरी और उस में भी जहां परिव्राजकाश्रम
था वहा आया । (उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहसि भडनिक्खेव
करेइ) आकर उसने उस परिव्राजकाश्रम में अपने भांडोंको रख दिया
(करित्ता धाउरत्तवत्थपरिहिण पविरलपरिव्वायगेहिं सद्धिं सपरिवुडे
परिव्वायगवसहीओ पडिनिक्खमई) रखकर फिर वह गैरिक धातु से
रंगे हुए वस्त्रों को पहिरे हुए कुत्तेक परिव्राजको के साथ २ उस
परिव्राजकाश्रम से बाहर निकला (पडिनिक्खमित्ता सौगंधियाए

ડીને ફરી શૌચ મૂલક ધર્મપ્રત્યે તેની શ્રદ્ધા જમાવવી જોઈએ (ત્તિ કદ્દુ એવ
સપેહેइ) આ રીતે મનમાં વિચાર કરીને તેણે પહેલાની જેમ તેને સમજાવવાનો
વિચાર કર્યો (સપેહિતા પરિવ્વાયગસહસ્રેણ સદ્ધિં જેણેવ સૌગંધિયા નયરી
જેણેવ પરિવ્વાયગાવસહે તેણેવ ઉવાગચ્છइ) વિચાર કરીને તે ફરી એક સહસ્ર
પરિવ્રાજકોની સાથે જ્યાં તે સૌગંધિકા નગરી અને તેમાં પણ જ્યાં પરિવ્રાજ
કાશ્રમ હતો ત્યાં આવ્યો (ઉવાગચ્છિત્તા પરિવ્વાયગાવસહસિ ભડનિક્ખેવ/ કરેइ)
આવીને તેણે પોતાની બધી વસ્તુઓ ત્યાં મૂકી (કરિત્તા ધાઉરત્તવત્થપરિહિણ
પવિરલપરિવ્વાયગેહિં સદ્ધિં સપરિવુડે પરિવ્વાયગાવસહાઓ પડિનિક્ખમઈ) મૂકીને
તે ગૈરિકધાતુથી રંગાએલા વસ્ત્રો પહેરીને થોડા પરિવ્રાજકોને સાથે લઈને
આશ્રમની બાર નીકળ્યો (પડિનિક્ખમિત્તા સૌગંધિયાએ નયરીએ મજ્ઞ મજ્ઞેણ

ततः खलु स सुदर्शनस्त शुकमेजमानम् आगच्छन्त पश्यति, दृष्ट्वा 'नो अब्भु-
द्वेइ ' नो अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थान न करोतिस्म ' नो पच्चुग्गच्छइ ' नो प्रत्युद्ग-
च्छति अभिमुख न गच्छति, ' नो आढाइ ' नो अद्रियते आदर न कुरुते ' नो '
परियाणाइ ' नो परिजानाति=आगमन नानुगोदयति, नो वन्दते न स्तौति,
' तुसिणीए सचिद्वइ ' तूष्णीकः सतिष्ठति ।

ततः खलु स शुक परिव्राजकः सुदर्शनमभ्युत्थित दृष्ट्वा एवमवादीत्-त्व
खलु सुदर्शन ! अन्यदा अन्यस्मिन् समये मामेजमान दृष्ट्वा अभ्युत्तिष्ठसि यावद्-
नयरीए मज्झ मज्झे ण जेणेव सुदसणस्स गिहे जेणेव सुदसणे तेणेव
उवागच्छइ) चाहर निकल कर सौगधिका नगरी के ठीक बीचो बीच से
होकर जहा सुदर्शन का घर और उसमें भी जहा सुदर्शन था वहा
गया (तए ण से सुदसणे त सुय एज्जमाण पासइ) सुदर्शन ने आते
हुए परिव्राजक को देखा (पासित्ता नो अब्भुद्वेइ, नो पच्चुग्गच्छइ, णो
आढाइ णो परियाणाइ नो वदइ, तुसिणीए सचिद्वइ) परन्तु देखकर
वह उठा नहीं उसके सामने नहीं गया, उसका आदर नहीं किया, उस
के आगमन की उसने सराहना नहीं की । स्तुति भी नहीं की केवल
चुपचाप बैठा रहा । (तए ण से सुए परिव्वायए सुदसण अणब्भुद्वियं
पासित्ता एव वयासी) जब शुक ने ऐसा देखा अर्थात् सुदर्शन को नहीं
उठा हुआ, सामने नहीं आया हुआ, आदि रूप से देखा तो देखकर
उसने उससे इस प्रकार कहा- (तुम ण सुदसणा ! अन्नया मम एज्ज-
माण पासित्ता अब्भुद्वेसि जाव वदसि इयाणि सुदसणा ! तुम मम

जेणेव सुदसणस्स गिहे जेणेव सुदसणे तेणेव उवागच्छइ) બહાર નીકળીને
સૌગધિકા નગરીની બરાબર વચ્ચે થઈને જ્યાં સુદરશનનું ઘર અને તેમાં પણ
જ્યાં સુદરશન હોતો ત્યાં ગયો (તए ण से सुदसणे त सुय एज्जमाण पासइ)
सुदर्शनें પણ परिव्राजकને આવતા જોયા (पासित्ता नो अब्भुद्वेइ, नो पच्चु
गच्छइ, णो आढाइ, णो परियाणाइ, नो वदइ, तुसिणीए सचिद्वइ) परंतु जेध
ने ते उला थया नडि, स्वागत भाटे तेनी સામે ગયા નહિ, તેને આદર
આપ્યો નહિ, તેના આગમનની તેમણે સરાહના કરી નહિ, તેની સ્તુતિ પણ
કરી નહિ કદાચ તેઓ ચુપચાપ પોતાની જગ્યાએ બેઠી જ રહ્યા (તए ण से
सुए परिव्वायए सुदसण अणब्भुद्वियं पासित्ता एव वयासी) शुक
परिव्राजके शेठने सत्कार भाटे पोटानी સામે નહી આવતા જોધને ાહુ-(તુમ ण
સુદસણા ! અન્નયા મમ એજ્જમાણ પાસિત્તા અન્નુદ્વેસિ જાવ વદસિ ઇયાણિ

अत्र यावच्छब्देन—' पचुगन्ठसि ' आढासि, परिजाणासि ' इति वाच्यम्, वन्दसे, इदानीं सुदर्शन ! त्वं मामेजमानं दृष्ट्वा यावद् नो वन्दसे, अभ्युत्थानादिकं करोषीत्यर्थः तत्कस्य खलु त्वया सुदर्शन ! अयमेतद्रूपो विनयमूलधर्मः प्रतिर्षभः हे सुदर्शन ! मम धर्मे परित्यज्य त्वया कस्य धर्मः स्वीकृत इत्यर्थः ।

ततः खलु स सुदर्शनः शुक्रेण परिव्राजकेनैवमुक्तः सन् आसनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय करतलपरिगृहीत—शिर आश्रितं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा शुकं परिव्राजकमेव—वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्—एव खलु देवानुप्रिया ? अर्हतोऽरिष्टनेमेः अन्तेवासी—शिष्यः, स्थापत्यापुत्रनामाऽनगार यावद्—पूर्वानुपूर्वावरन् ग्रामानुग्राम एज्जमाणं पासित्ता जाव णो वदसि त कस्स ण तुमे सुदसणा इमेयारूवे विणयमूले धम्मो पडिवन्ने) सुदर्शन ! जय तुम किसी समय मुझे आता हुआ देखता था तो देखकर उठता था—यावत् वदना करता था । परन्तु अब इस समय सुदर्शन ! तुम मुझे आता हुआ देखकर यावत् उठे नहीं तुमने मेरी वदना नहीं की । तो हे सुदर्शन ! तुमने किसका यह इस रूप विनय मूलक धर्म स्वीकार कर लिया है । (तएण से सुदसणे सुकेण परिव्वायएण एव पुत्ते समाणे आसणाओ अम्मुट्ठेइ, अम्मुट्ठित्ता करयल० सुय परिव्वायग एव वयासि) इस प्रकार शुक परिव्राजक के द्वारा कहा गया वह सुदर्शन अपने स्थान से उठा और उठकर उसने दोनों हाथों को अञ्जलिरूप में कर और उसे मस्तक पर रख उससे इस प्रकार कहा कि (एव खलु देवानुप्रिया ! अरिहाओ अरिट्ठनेमिस्स अतेवासी यावच्चा पुत्ते नाम अणगारे जाव इहमागए इह चेव नीला सोए उज्जाणे विहरइ) हे देवानुप्रिय ! अर्हत अरिष्टनेमि प्रभु के

सुदसणा ! तुम मम एज्जमाणं पासित्ता जाव णो वदसि त कस्स ण तुमे सुदसणा इमेयारूवे विणयमूले धम्मो पडिवन्ने) हे सुदर्शन ! पड़िला तु जमे त्थारे भने आवता नेतो त्थारे स्वागत भाटे उलो थतो अने सामे आवीने वदन विगेरे करने। उतो पणु अत्थारे भने नेधने तु उलो थये नथी तेमज ते भने वदन पणु थो नथी हे सुदर्शन ! ते आ केवाप्रकारेण विनयभूजस धर्म स्वीकार्यो छे ? (तएण से सुदसणे सुकेण परिव्वायएण एव पुत्ते समाणे आसणाओ अम्मुट्ठेइ अम्मुट्ठित्ता करयल० सुय परिव्वायग एव वयासी) शुक परिव्राजकनी बात सावणीने सुदर्शन पोताना स्थानेथी उलो थये। अने उलो थधने ण न्ने हाथनी अज्जलीने मस्तके भूझीने तेने उछु—(एव खलु देवानुप्रिया ! अरिहाओ अरिट्ठनेमिस्स अतेवासी यावच्चा पुत्ते नाम अणगारे जाव इहमागए इहचेव नीलासोए उज्जाणे विहरइ) हे देवानुप्रिय !

द्रव्यं सुखं सुखेन विहरन् . इति सग्रहः । उह=सौगन्धिकानगर्यामागतोऽस्ति, इहैव
अस्यामेव नगर्यां पट्टिर्भागे नीलाशोके नीलाशोकनाम्नि उद्याने विहरति, तस्य=
स्थापत्यापुत्रस्य खलु अन्तिके=समीपे विनयमूलो वर्मः प्रतिपन्नः मया स्वीकृतः ।
यदा स्थापत्यापुत्र इहागतस्तदाऽहमपि वदितुं तत्रगतस्तदा तदुपदिष्टधर्मकथा श्रुत्वा
विनयमूलमार्हत्तवर्मं समीचीनं विज्ञाय स एव धर्मः स्वीकृतो मयेति भावः ॥२२॥

मूलम्—तएणं से सुए परिव्वायए सुदसणं एव वयासी-
त गच्छामो सुदसणा । तव धम्मारियस्स थावच्चापुत्तस्स
अंतिय पाउवभवामो इमाइ च णं एयारूवाड अट्टाइं हेउइ
पसिणाइ कारणाइ वागरणाइ पुच्छामो, त जइणं मे से इमाइ
अट्टाइ जाव वागरइ, तएण अह वदामि नमसामि अहमेसे
इमाइ अट्टाइं जाव नो से वाकरेइ, तएण अह एएहि चेव
अट्टेहि हेउहिं निप्पट्टुपसिणवागरणं-करिस्सामि ॥ सू० २३ ॥

अतेवासी स्थापत्या नाम के अनगार मुनि परपरा के अनुसार चलते
हुए, ग्रामानुग्राम विहार करते हुए सुख पूर्वक इस सौगधिका नाम
की नगरी में आये और अब वे नीलाशोक नाम के उद्यान में ठहरे
हुए हैं । (तस्सण अतिए विणयमूले धम्मे पडिवन्ने) उनके पास
मैंने विनयमूल वर्म समीचीन समझ कर स्वीकार कर लिया है ।
तात्पर्य इसका यह है कि मैं भी उनको वदना करने के लिये गया था ।
उन के मुख से जब मैंने धर्मकथा सुनी तब मुझे उनका सिद्धान्त
निर्दोष युक्ति शास्त्र से अविरुद्ध प्रतीत हुआ अतः मैंने उनसे उनके उस
धर्म को अंगीकार कर लिया है । सूत्र ॥ २२ ॥

अहं त अरिष्टनेमि प्रबुद्धा अतेवासी (गिण्य) स्थापत्यापुत्र नामना अन-
गार मुनि परपराने अनुसरता अहं गामथी णीये गाम विहार कृत्वा सौग धिका
नगरीमा सुप्पेथी आव्या अने उभयं नीलाशोका उद्यानमा उत्तरां छे (तस्स
ण अतिए विणयमूले धम्मे पडिवन्ने) तेमनी पामे मे मागी पेठे अभयने
विनय मूलधर्म स्वीकार्यो छे तात्पर्य अहं ते उह पण तेमने वदना
कृत्वा गयो छे तेमना श्रीभुजथी मे धर्मकथा मावणी मने तेमना सिद्धा-
न्तो निर्दोष तेमज्ज शास्त्र सम्मत लाया अथी मे तेमनी पामेथी आ-
धर्म स्वीकार्यो छे ॥ सूत्र २२ ॥

‘तएण से सुए’ इत्यादि ।

टीका-ततः खलु म शुकः परिव्राजकः सुदर्शननामकं श्रेष्ठिनम् एव= वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-तत्=तस्मात् गच्छाम’ खलु सुदर्शन ! तव धर्माचार्यस्य स्थापत्यापुत्रस्यान्तिके प्रादुर्भवामः । ‘इमाइ च’ इमान् अनन्तरमेव वक्ष्यमाण तथा सनिकृष्टान, च शब्दादन्याश्च खलु एतद्रूपान्=वक्ष्यमाणस्वरूपान्, अर्थान्=अर्थमाणत्वाद् अधिगम्यमानत्वादर्थः भावा वक्ष्यमाणयात्रा यापनीयादयस्तदन्ये हेतून्=अथ यद्यतिरेकलक्षणहेतुना ज्ञायमानत्वाद् हेतुरूपास्तान्, प्रश्नान्=प्रश्नविषयत्वात् प्रश्नरूपास्तान्, कारणानि=कारण तत्प्राप्त्युक्तिरूपम्, उपपत्तिमात्र तद्विषयत्वाद् कारणानि तानि, व्याकरणानि=सप्रमाण व्याख्यायमानत्वात् व्याकरणानि च तानि पृच्छाम’ । तद्=तस्माद् यदि खलु मम स स्थाप

‘तएण से सुए’ इत्यादि ।

टीकार्थ-‘तएण’ इसके बाद (से सुए) उस शुक (परिव्राजक) परिव्राजक ने (सुदर्शन एव वयासी) सुदर्शन से ऐसा कहा-‘(त गच्छामो ण सुदर्शणा ! तव धम्मायरियस्स यावच्चापुत्तस्स अतिय पाउब्भवामो) तो हे सुदर्शन ! मैं यहाँ से-अब तुम्हारे धर्मचार्य स्थापत्यापुत्र के पास जाता हूँ । (इमाइ च ण एयाख्वाइ अट्ठाइ हेउइ पसिणाइ कारणाइ वागरणाइ पुच्छामो त जइण मे से इमाइ अट्ठाइ जाव वागरइ, तएण अह वदामि नमसामि, अहमे से इमाइ अट्ठाइ जाव नो से वागरेइ तएण अह एएहिं चेव अट्ठेहिं हेउहिं निष्पट्ठपसिण वागरण करिस्सामि) और इस प्रकार के इन अर्थों को, हेतुओं को, प्रश्नों को कारणों को, व्याकरणों को, उनमें पूछूँगा, यदि वे मेरे इन अर्थों का यावत् व्याकरणों प्रश्न

‘तए ण से सुए इत्यादि’

टीकार्थ (तएण) त्वारणाइ (से सुए) शुक (परिव्राजक) परिव्राजके (सुदर्शन एव वयासी) सुदर्शनने आ प्रभाण्णे उहु-‘(त गच्छामो ण सुदर्शणा ! तव धम्मायरियस्स यावच्चापुत्तस्स अतिय पाउब्भवामो) हे सुदर्शन ! तो उवे आडि थी हु भीघे तारा धर्मशुरु स्थापत्यापुत्रनी पासे जई छु (इमाइ च ण एयाख्वाइ अट्ठाइ हेउइ पसिणाइ कारणाइ वागरणाइ पुच्छामो त जइण मे से इमाइ, अट्ठाइ, जाव वागरइ तएण अह वदामि, नमसामि, अहमेसे इमाइ अट्ठाइ जाव नो से वागरेइ तएण अह एएहिं चेव अट्ठेहिं हेउहिं निष्पट्ठपसिण वागरण करिस्सामि) तेमनी साथे हु अर्थों, हेतुओं, प्रश्नों, कारणों, अने व्याकरणों “ । ते भारा अर्थों, हेतुओं, प्रश्नों,

त्यापुत्रः इमान् अर्थान् यावद् व्याकरोति=मम प्रश्नाना समीचीन समा-
धान करिष्यति ततस्तदनन्तर खलु अहं वन्दे=वन्दिष्ये, नमस्यामि=नमस्करि-
ष्यामि । अथ मम स इमान् अर्थान् यावद् व्याकरणानि नो व्याकरोति=न स्प-
ष्टीकरिष्यति, ततस्तदा खलु अहम् एतैरेव अर्थैर्हेतुभिः ' निष्पट्टपस्मिन्नागण '
निःस्पष्टप्रश्नव्याकरण=निःस्पष्टानि अव्याख्यातानि प्रश्नव्याकरणानि प्रश्नो-
त्तराणि येन स तथा तम्, प्रश्नोत्तरकरणासमर्थ करिष्यामि ॥ २३ ॥

मूलम्—तएणं से परिव्वायगसहस्सेणं सुदंसणेण य सेट्टिणा
सद्धि जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्त एवं वयासी-
जत्ता ते भते । जवणिज्ज ते अव्वावाह पि त, फासुयं विहार ते ? ।

तएण से थावच्चापुत्ते सुएण परिवायगेण एव वुत्ते समाणे
सुयं परिव्वायग एव वयासी—सुया । जत्तावि मे जवणिज्जां पि
मे अव्वावाहपि मे फासुय विहारं पि मे, ॥

तएण से सुए थावच्चापुत्त एव वयासी—कि भंते । जत्ता । ॥

सुया । जन्न मम णाणदसणचरित्ततवनियमसजममाइ-
एहि जोएहिं जयणा से तं जत्ता ।

से कि त भते । जवणिज्ज ? ।

विशेष का अच्छी तरह से समाधान कर दोगे तो मैं उन्हें नमस्कार
करूंगा । यदि वे मेरे इन अर्थों से लेकर व्याकरणों तक की बातों का
कोई ठीक २ स्पष्टीकरण नहीं करेंगे । तो मैं उन्हें उसी समय इन्हीं
अर्थ हेतुओं द्वारा प्रश्नोत्तर करने में असमर्थ कर दूंगा ॥ सू० २३ ॥

कारणो तेमन् व्याकरणो विधेना प्रश्नो ना नागी पेठे समाधान उरुशे तो हु
तेमने वहन करीश अने ते ते भाग अर्थो व्याकरणो वगेरे ना विधे सारी
रीते स्पष्टी करु नहिं उगी राके तो हु तेमने तत न प्रश्नोत्तर उरवाभा

‘तएण से सुए’ इत्यादि ।

टीका-ततः खलु म शुकः परिव्राजकः सुदर्शननामकं श्रेष्ठिनम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-तत्=तस्मात् गच्छामः खलु सुदर्शन । तत्र धर्माचार्यस्य स्थापत्यापुत्रस्यान्तिके प्रादुर्भवामः । ‘इमाइ च’ इमान् अनन्तर्गमेव वक्ष्यमाण तथा सनिकुष्टान्, च शब्दादन्याश्च खलु एतद्रूपान्=वक्ष्यमाणमरूपान्, अर्थान्=अर्थमाणत्वाद् अधिगम्यमानत्वादर्थान् भावा वक्ष्यमाणयात्रा यापनीयादयस्तदन्ये हेतून्=अन्यव्यतिरेकलक्षणहेतुना ज्ञायमानत्वाद् हेतुरूपास्तान्, प्रश्नान्=प्रश्नविषयत्वात् प्रश्नरूपास्तान्, कारणानि=कारण तत्प्राथम्यव्यक्तिरूपम्, उपपत्तिमात्र तद्विषयत्वाद् कारणानि तानि, व्याकरणानि=सप्रमाण व्याख्यायमानत्वात् व्याकरणानि च तानि पृच्छामः । तद्=तस्माद् यदि खलु मम स स्थाप

‘तएण से सुए’ इत्यादि ।

टीकार्थ-‘तएण’ इसके बाद ‘से सुए’ उस शुक (परिव्राजक) परिव्राजक ने (सुदर्शन एव वयासी) सुदर्शन से ऐसा कहा-‘त गच्छामो ण सुदर्शणा ! तव धम्मायरियम्म यावच्चापुत्तस्स अतिय पाउब्भवामो’ तो हे सुदर्शन ! मैं यहाँ से-अब तुम्हारे धर्मचार्य स्थापत्यापुत्र के पास जाता हूँ । (इमाइ च ण एयारुवाइ अट्टाइ हेउइ पसिणाइ कारणाइ वागरणाइ पुच्छामो त जइण मे से इमाइ अट्टाइ जाव वागरइ, तएण अह वदामि नमसामि, अहमे से इमाइ अट्टाइ जाव नो से वागरेइ तएण अह एएहिं चेव अट्टेहिं हेउहिं निप्पट्ठपसिण वागरण करिस्सामि) और इस प्रकार के इन अर्थों को, हेतुओं को, प्रश्नों को कारणों को, व्याकरणों को, उनमें पूछूँगा, यदि वे मेरे इन अर्थों का यावत् व्याकरणों प्रश्न

‘तए ण से सुए’ इत्यादि ।

टीकार्थ (तएण) त्थारणाइ (से सुए) शुक (परिव्राजक) परिव्राजके (सुदर्श ण एव वयासी) सुदर्शनने आ प्रमाणे उहु (त गच्छामो ण सुदर्शणा ! तव धम्मायरियस्स यावच्चापुत्तस्स अतिय पाउब्भवामो) हे सुदर्शन ! तो उवे अही थी हु भीधा तारा धर्मशुक स्थापत्यापुत्रनी पासे उठे छु (इमाइ च ण एयारुवाइ अट्टाइ हेउइ पसिणाइ कारणाइ वागरणाइ पुच्छामो त जइण मे से इमाइ, अट्टाइ, जाव वागरइ तएण अह वदामि, नमसामि, अहमेसे इमाइ अट्टाइ जाव नो से वागरेइ तएण अह एएहिं चेव अट्टेहिं हेउहिं निप्पट्ठपसिण वागरण करिस्सामि) तेमनी साथे हु अर्थो, हेतुओ, प्रश्नो, कारणो, अने व्याकरणो ना विषे अर्थो करीश, ने ते भास अर्थो, हेतुओ, प्रश्नो,

पन्नत्ता, तं जहा—सहजायया सहवड्ढियया सहपसुकीलि
यया, ते णं समणाणं निग्गथाण अभक्खेया, तत्थ णं जे
ते धन्नसरिसवया ते दुविहा पन्नत्ता, त जहा सत्थप-
रिणया य असत्थ परिणया य, तत्थ णं जे ते असत्थ-
परिणया ते समणाणं निग्गथाण अभक्खेया, तत्थ णं जे ते
सत्थपरिणया ते दुविहा पन्नत्ता, त जहा फासुगा य अफासुगा
य, अफासुगा णं सुया । नो भक्खेया, तत्थ णं जे ते फासुगा
ते दुविहा पन्नत्ता, । जहा--जाइया य अजाइया य, तत्थ णं
जे ते अजाइया ते अभक्खेया तत्थ णं जे ते जाइया ते दुविहा
पन्नत्ता, तं जहा-एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य । तत्थ णं जे
ते अणेसणिज्जा ते णं अभक्खेया, तत्थ णं जे ते एसणिज्जा
ते दुविहा पन्नत्ता, लद्धा य अलद्धा य, तत्थ णं जे ते अलद्धा
ते अभक्खेया, तत्थ णं जे ते लद्धा ते समणाणं निग्गंथाणं
भक्खेया, एएणं अट्टेणं सुया । एव वुच्चंति—सरिसवया भक्खेया
वि, अभक्खेया वि, एव कुलत्था वि भाणियव्वा, नवर इम
णाणत्त—इत्थि कुलत्था य धन्नकुलत्था य इत्थि कुलत्था तिविहा
पन्नत्ता त जहा—कुलवधूयाइ य कुलमाउयाइ य कुलधूयाइ
य, धन्नकुलत्था तहेव, एव मासा वि, नवरं इम नाणत्त--
मासा तिविहा पन्नत्ता, त जहा-कालमासा य अत्थमासा य,
धन्नमासा य, तत्थ णं जे ते कालमासा ते णं दुवालसविहा
पन्नत्ता त जहा-सावणे जाव आसाढे, ते णं अभक्खेया

सुया । जवणिजे दुविहे पन्नत्त, तजहा इदियजवणिजे य नो इदियजवणिजे य से किं तं इदियजवणिजे ? ।

सुया । जन्नं ममं सोइंदिय-चविखदिय-घाणिदिय-जिर्विभदिय फासिदियाइ निरुवहयाइ वसे वट्ठंति, से तं इंदियजवणिजं ।

से किं तं नो इंदियजवणिजं ? ।

सुया । जन्न कोहमाणमायालोभा खीणा उपसंता नो उदयति से तं नो इंदियजवणिजे ।

से किं तं भते ! अवावाहं ?

सुया जन्न मम वाइयपित्तिय सिमिय सन्निवाइया विविहा रोगायंका णो उदीरेंति से तं अवावाहं ।

से किं तं भते फासुयविहारं ? ।

सुया । जन्न आरामेसु वा उज्जाणेसु वा देवकुलेसु वा सभासु वा पव्वएसु वा इत्थीपिसुपंडगविवज्जिएसु वसहीसु पाडिहारिय पीठफलगसेजासथारय उग्गिणिहत्ताण विहरामि, से त्त फासुयविहार ।

सरिसवया ते भंते । किं भक्खेया अभक्खेया ? ।

सुया । सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

से केणट्ठेणं भंते एव वुच्चइ ? सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

सुया । सरिसवया दुविहा पन्नत्ता, त जहा- मित्तसरिसवया धन्नसरिसवया य, तत्थ ण जे ते मित्तसरिन्वया ते तिविहा

મતે ! ' હે મદન્ત ! તે તવ યાત્રા વર્તતે ? ' જવણિજ્જ તે ' યાપનીય તે તવ વર્તતે ? ' અવ્વાગાહ પિ તે ' અવ્વાગામપિ તે વર્તતે ? ' ફાસુયવિહાર તે ' પ્રાસુક વિહારસ્તે તવ વર્તતે ? ।

તતસ્તદનન્તર સ સ્થાપત્યાપુત્રઃ શુકેન પરિત્રાજકેનૈવ મુક્તઃ સન્ શુક પરિત્રાજકમેવમવાદીત્-હે શુક ! ' જત્તા વિ મે ' યાત્રાઽપિ મે મમાઽસ્તિ, ' જવણિજ્જપિ મે ' યાપનીયમપિ મે મમાઽસ્તિ, ' અવ્વાગાહપિ મે ' અવ્યાવાધમપિ મે મમ વર્તતે, ' ફાસુયવિહાર પિ મે ' પ્રાસુક વિહારોઽપિ મે મમાઽસ્તિ ।

તતસ્તદનન્તર સ્વલુ સ શુકઃ સ્થાપત્યાપુત્રમેવમવાદીત્ ' કિં મતે ! જત્તા ' કા મદન્ત યાત્રા હે મદન્ત ! કા=કિં સ્વરૂપા તવ યાત્રા ? ।

સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર થા વહા ગયા । (ઉવાગચ્છિત્તા થાવચ્ચાપુત્ત એવ વયાસી) વહા જાકરડસને સ્થાપત્યાપુત્ર સે, એસા કહા-(જત્તાતે મતે ! જવણિજ્જ તે અવ્વાગાહ પિ તે ફાસુયવિહાર) તો હે મદન્ત ! આપકી યાત્રા હૈ કયા ? આપકે યાપનીય હૈ કયા ? આપકે અવ્યાવાધ હૈ કયા ? આપકે પ્રાસુક વિહાર હૈ કયા ? (તણ સે થાવચ્ચાપુત્તે સુણ પરિવાયગેણ એવ વુત્તે સમાણે સુય પરિવાયગ એવ વયાસી) ઇસ પ્રકાર શુક પરિત્રાજક સે પૂછે ગયે બન સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ને ડસ-શુક પરિત્રાજક સે એસા કહા-(સુયા ! જત્તા વિ મે, જવણિજ્જપિ મે અવ્વાગાહપિ મે ફાસુયવિહારપિ મે) હે શુક હમારા યાત્રા મી હૈ, યાપનીય મી હૈ હમારા અવ્યાવાધ મી હૈ હમારે પ્રાસુક વિહાર મી હૈ । (તણ સે સુણ થાવચ્ચાપુત્ત એવ વયાસી) જય સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ને શુક પરિત્રાજક સે ઇસ પ્રકાર કહા-તવ ડસને સ્થાપત્યપુત્ર અનગાર

(ઉવાગચ્છિત્તા થાવચ્ચાપુત્ત એવ વયાસી) ત્યા જઈને તેણે સ્થાપત્યાપુત્ર ને કહ્યું-(જત્તા તે મતે ! જવણિજ્જતે અવ્વાગાહ પિ તે ફાસુયવિહાર) હે ભદન્ત ! શુ તમારી યાત્રા છે ? યાપનીય છે ? અવ્યાવાધ છે ? તમારે પ્રાસુક વિહાર છે ? (તણ સે થાવચ્ચાપુત્તે સુણ પરિવાયગેણ એવ વુત્તે સમાણેસુય પરિવાયગ એવ વયાસી) શુક પરિત્રાજકની આ વાત સાંભળીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે શુક પરિત્રાજકને કહ્યું-(સુયા ! જત્તા વિ મે જવણિજ્જપિ મે અવ્વાગાહપિ મે ફાસુયવિહાર પિ મે) હે શુક ! અમારી યાત્રા પણ છે, યાપનીય પણ છે, અવ્યાવાધ પણ છે અને અમારે પ્રાસુક વિહાર પણ છે (તણ સે સુણ થાવચ્ચાપુત્ત એવ વયાસી) અમારે સ્થાપત્યા પુત્ર અનગારે શુક પરિત્રાજકને આ પ્રમાણે કહ્યું, ત્યારે સ્થાપત્યા પુત્ર અનગારે તેમને કહ્યું-(કિં

એગે ભવ દુવે ભવ અણેગે ભવ અવ્ઘણે ભવ અઠ્ઠણે ભવ
અવાટ્ટિણે ભવ અણેગભૂયભાવભવિણિ ભવ ? ।

સુયા । એગે વિ અહ દુવેવિ અહં જાવ અણેગભૂયભાવ
ભવિણિ અહ ।

સે કેણદ્દેણં ભતે । એવં વુચ્ચદ્દ એગે વિ અહં જાવ અણેગ-
ભૂયભવિણિ અહ ।

જણં સુયા । દઠ્ઠવટ્ટયાણે એગે અહ નાણદસણદ્દયાણે દુવેવિ
અહ પપ્પસદ્દયાણે અવ્ઘણિ અહં અઠ્ઠણિ અહં અવાટ્ટિણે વિ
અહ ઉવઓગદ્દયાણે અણેગભૂયભાવ ભવિણિ અહં ।

एत्थ णं से सुएसवुद्धे थावच्चापुत्तं वदड नमंसइ, वदित्ता
नमसित्ता एव वयासी-इच्छामि णं भते । तुव्भ अंतिए केवल्लि-
पन्नत्त धम्म निसामित्तए, धम्मकहा भाणियव्वा ॥सू० २४॥

‘તણ સે સુ’ ઇત્યાદિ—

टीका— ततस्तदनन्तरं स शुकः परिव्राजकसहस्रेण सुदर्शनेन त्रेष्टिना च
सार्धं यत्रैव नीलाशौकनामोद्यानं यत्रैव स्थापत्यापुत्रं नामाऽनगरं आसीत्, तत्रैव
पागच्छति, उपागत्य स्थापत्यापुत्रमेतद्वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्— ‘जत्ता ते

‘તણ સે સુ’ ઇત્યાદિ ।

टीकार्थ—(तण) इसके बाद (से सु) वह शुक परिव्राजक (परिव्रा-
यगसहस्रेण सुदसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव
थावच्चा पुत्तो अणगारे तेणेव उवागच्छइ) १ एक हजार परिव्राजको
के-और सुदर्शन के साथ जहां नीलाशोक उद्यान तथा उसमें जहां

‘તણ સે’ સુ’ ઇત્યાદિ ।’

टीकार्थ (तण) त्थार आह (से सु) शुक परिव्राजक (परिव्रायगसहस्रेण
सुदसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे
तेणेव उवागच्छइ) ओक हजार परिव्राजका અને સુદર્શન શેઠની સાથે જ્યા
નીલાશોક ઉદ્યાન હતો અને તેમા જ્યા સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર હતા ત્યા ગયો

પરિણામઃ, તપઃ=અનશનાદિકં દ્વાદશવિધર્, નિયમઃ=દ્રવ્યક્ષેત્રકાલભાવતોઽભિગ્રહ
ગ્રહણમુત્તરગુણરૂપમ્, સયમઃ=ચારિત્રગ્રહણેનૈવ સયમે પ્રતિવોધિતે પુનઃસયમ
પદોપાદાનાદુભયકાલપ્રતિલેખનરૂપ, કાલચતુષ્ટા યે સ્વાધ્યાયાદિકરણરૂપશ્ચ
સયમો ગ્રાહ્યઃ । આદિપદાદ્ ધ્યાનાપશ્યકાદિઃ તત્ર ધ્યાન=ધર્મ-યાનાદિ, આવશ્યક
પઙ્કિથ તેષુ, 'જોઈ' યોગેષુ મનોવાકુકાયવ્યાપારેષુ, 'જયણા' યતના પ્રયત્તિ,
સૈવા યાત્રા મમ વર્તતે । નાન્યા શત્રુજયાદિયાત્રા વીતરાગમાર્ગે વર્તતે इत्यर्थः ।

एवमेव भगवतीसूत्रेऽष्टादशशतकस्य दशमोद्देशके भगवता सोमिल ब्राह्म
णाय प्रोक्तम्—

शुक्रो वदति—'से किं त भते जवणिज्जं' अथ किं तद् भदन्त ! यापनीयम् ? ।

ચારિત્ર મોહનીય કર્મ' કે ક્ષયોપશમ સે અથવા ક્ષય સે જો સ્થૂલ તથા
સૂક્ષ્મ પ્રાણાતિપાત આદિ પાપોં સે નિવૃત્તિ રૂપ આત્મા કા પરિણામ હોતા
હૈ વહ ચારિત્ર હૈ । તપ-અનશન આદિ કે ભેદ સે ૧૨ પ્રકાર કા હૈ । દ્રવ્ય,
ક્ષેત્ર, કાલ, ઔર ભાવ કો લેકર ઉત્તર ગુણરૂપ જો નાના પ્રકાર કે
નિયમ-અભિગ્રહ-ગ્રહણ સે હી સયમ ભી ગ્રહીત હો જાતા હૈ—ફિર ભી
જો યહાં સયમ કા સ્વતત્ર ગ્રહણ કિયા ગયા હૈ વહ “ ઉભય કાલ મેં
પ્રતિલેખના કરના ઔર કાલ ચતુષ્ટય મેં સ્વાધ્યાય કરના ઇસ રૂપ સયમ
હૈ, યહ વાક્ય ઇસ અર્થ કો સૂચિત કરતા હૈ । આદિ પદ સે “ધ્યાન આવ
શ્યક” યે ગ્રહીત હુવ હૈ । ધર્મ યાન આદિકા નામ ધ્યાન તથા આવશ્યક
કરને યોગ્ય કર્તવ્ય કા નામ આવશ્યક હૈ । યહ આવશ્યક ત્ર પ્રકાર હૈ ।
इन ज्ञानादिकों मे तथा योगों मे जो यतना है यही यात्रा है—अन्य कोई
यात्रा नहीं है यह बात भगवती सूत्र में भगवान् ने अठारहमां शतक के

પ્રાણાતિપાત વગેરે પાપો થી નિવૃત્તિ રૂપે આત્મા નો પરિણામ થાય છે તે
ચારિત્ર છે તપ, અનશન વગેરેના લેધથી બાર પ્રકારનું છે

દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવની સાથે ઉત્તર ગુણ રૂપ જે અનેક જાતના
નિયમ-(અભિગ્રહ) ગ્રહણથી જ સયમનું પણ ગ્રહણ થઈ જાય છે, છતાં એ
અહીં જે સયમનું સ્વતત્ર રૂપે ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે, તે બંને વખત
પ્રતિ લેખના કરવી અને કાલ ચતુષ્ટયમાં સ્વાધ્યાય કરવો તે ‘સયમ’ છે,
આ વાક્ય એજ અર્થ અહીં સચવે છે, આદિપદ વડે “ધ્યાન આવશ્યક”
પદોનું સૂચન થાય છે ધર્મ વિષે ધ્યાન વગેરે ‘ધ્યાન’ કહેવાય છે, તેમજ
આવશ્યક રૂપે કરવા યોગ્ય કર્તવ્યનું નામ ‘આવશ્યક’ છે આ આવશ્યકના છ
પ્રકારો છે અજ્ઞાનાદિજો વગેરેમાં તેમજ યોગોમાં જે યતના છે તેજ યાત્રા
છે બીજી કોઈપણ જાતની યાત્રા છે જ નહિ આ વાત “ભગવતી સૂત્ર”
ના અઠારમા ગાત્રના દશમા ઉદ્દેશકમાં ભગવાને સોમિલ બ્રાહ્મણને કહી છે,

શુકસ્ય પ્રશ્ન શ્રુત્વા સ્થાપત્યાપુત્રો વદતિ—‘ સુયા ’ इत्यादि । हे शुक । ‘जन्म
यत् खलु मम ’ णाणदसणचरित्ततवनियमसजममाइएहिं ’ ज्ञानदर्शनचारित्र
तपोनियमसयमादिकेषु ज्ञान=ज्ञानावरणीयस्य क्षयोपशमात् क्षयाद्वा प्रादुर्भूतो
जीवाजीवादि तत्त्वनिर्णयलक्षणआत्मपरिणामः, दर्शन=दर्शनमोहनीयस्य क्षयोप
शमात् क्षयाद्वा ऽऽविर्भूतस्तत्त्व श्रद्धानरूपआत्मपरिणामः, चारित्र=चारित्रमोहनी-
यस्य क्षयोपशमात् क्षयाद्वा जातः सूक्ष्मसूक्ष्मप्राणातिपातान्ति विरमणलक्षण आत्म

સે હસ તરહ પુનઃ પૂઝા (કિં ભતે જત્તા) હે ભદન્ત ! યાત્રા શબ્દ કા
અર્થ કયા હૈ ? (સુયા જન્ન મમ ણાણદસણચરિત્ત તવનિયમ સજમાઈ
ઈહિં જોઈહિં જયણા સે ત જત્તા) સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ને કહા હૈ
શુક ? જ્ઞાનદર્શન, ચારિત્ર, તપ, નિયમ, સયમ, આદિકોં મેં એવ મન
વચન ઔર કાય હનકે વ્યાપારો મેં જો હમારી ચતનાચાર પૂર્વક પ્રવૃત્તિ
હૈ વહી યાત્રા હૈ—ઔર એસી યાત્રા હમારી આનંદ કે સાથ હો રહી હૈ ।
અન્ય શત્રુજયાદિ તીરોં કી યાત્રા વીતરાગ માર્ગ મેં નહી હૈ । જ્ઞાનાવર-
ણીય કર્મ કે ક્ષયોપશમ સે, અથવા ક્ષય સે જીવઅજીવ આદિ તત્વોં
કે વિષય મેં જો ઉનકે સ્વરૂપ આદિ કા નિર્ણય રૂપ આત્મ પરિણામઉ-
ત્પન્ન હોતા હૈ વહ જ્ઞાન હૈ ।

દર્શન મોહનીય કર્મ કે ક્ષયોપશમ સે અથવા ક્ષય સે, જીવ કે જો
તત્ત્વ શ્રદ્ધાન રૂપ આત્મ પરિણામ હોતા હૈ વહ દર્શન હૈ ।

મતે જત્તા) હે ભદન્ત ! યાત્રા સખન્નો અર્થ શુ છે (સુયા જન્ન મમ ણાણ
દસણચરિત્તતવનિયમસજમમાઈઈહિં જોઈહિં જયણા સે ત જત્તા) સ્થાપ
ત્યાપુત્ર અનગારે કહ્યુ—હે શુક ! જ્ઞાન દર્શન, ચારિત્ર, તપ, નિયમ, સયમ, વગેરે
મા અને મન, વચન અને કાયાના વ્યાપારોમા જે અમારી જતન પૂર્વક
આચરણ કરવાની પ્રવૃત્તિ છે, તેજ યાત્રા છે, અને એ યાત્રા અમારી સુખેથી
પસાર થઈ રહી છે, શત્રુજય વગેરે તીરોંની યાત્રા વીતરાગ માર્ગને
અનુસરનારાઓ માટે નથી જ્ઞાનાવરણીય કર્મના ક્ષયોપશમથી અથવા ક્ષયથી
એવ અજીવ વગેરે વિષયમા જે તેમના સ્વરૂપ વગેરેના નિર્ણય રૂપ આત્મ
પરિણામ ઉત્પન્ન થાય છે તે જ્ઞાન છે

દર્શન મોહનીય કર્મના ક્ષયોપશમથી અથવા ક્ષયથી જતતા જે તત્ત્વ
શ્રદ્ધાન રૂપ આત્મપરિણામ હોય છે તે દર્શન છે

ચારિત્ર મોહનીય કર્મના ક્ષયોપશમથી અથવા કાયથી જે સ્થૂળ તેમજ સૂક્ષ્મ

શુકઃ પૃચ્છતિ—‘સે કિં’ इत्यादि । अथ किं तद् नोऽन्द्रिययापनीयम् । स्थापत्यापुत्र आह—‘सुया ’ इत्यादि । हे शुक ! यत्=यस्मात् खलु क्रोयमानमाया लोभाः क्षीणा क्षय प्राप्ताः, उपशान्ता उपशम प्राप्ताः सन्तो नो उदयन्ते=नोदीर्यन्ते, नो इन्द्रिययापनीय नोऽन्द्रिय मनस्तस्य विकाराः कषाया इह नो इन्द्रियशब्देन गृह्यन्ते, तेषां यापनीय वशीकरण समास्ति ।

શુકો વદતિ—‘ સે કિં ’ इत्यादि. । अथ किं तद् भदन्त अव्याघाधम् ? । स्थापत्यापुत्र आह—‘ सुया ’ ’ इत्यादि । हे शुक ! यत्=यस्मात् खलु मम वातिक पैत्तिक श्लैष्मिक सानिपातिका= ! वातिकाः वातप्रकोपजनिता पैत्तिकाः प्रकोप समुद्भवाः, श्लैष्मिकाः कफप्रकोपप्रभवाः, सानिपातिकाः=वातपित्त श्लेष्मणा समूह सनिपातः, तत्र भवाः विविधा ‘ रोगायका ’ रोगातङ्काः=रोगाश्चातकाश्चेति

इन्द्रिय यापनीय है । (से कि त नो इन्द्रियजवणिज्जे) भदन्त ! नो इन्द्रिय यापनीय का क्या अर्थ है ? (सुया जन्म कोहमाण माया लोभा खीणा उवसता नो उदयन्ति से त नो इन्द्रियजवणिज्जे) हे शुक जो क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार कषाये क्षयावस्थापन्न होकर यां उपशम अवस्थावाली होकर उदय में नहीं आ रही है यही नो इन्द्रिय यापनीय है । नो इन्द्रियका अर्थ मन होता है । मन के विकार ये क्रोध, मान, माया, और लोभ ये चार कषाये हैं । इसलिये ये नो इन्द्रिय शब्द से गृहीत हुए हैं । यापनीय शब्द का अर्थ वश करना हैं । ये सब कषाये मेरे वश में हो रही हैं — यही नो इन्द्रिय यापनीय मेरे वर्त रहा है । (से कि भते अव्याघाह) भदन्त ! अव्याघाध का तात्पर्य क्या है ? (सुया जन्म मम वाडयपित्तिय सिंभियसन्निवाडया

ઇન્દ્રિય યાપનીય છે (સે કિ ત નો ઇન્દ્રિયજવણિજ્જે) હે ભદન્ત ! નો ઇન્દ્રિય યાપનીયનો શો અર્થ થય છે (સુયા જન્મ કોહમાણ માયાલોભા સ્ત્રીણા ઉવસતા નો ઉદયન્તિ સે ત નો ઇન્દ્રિયજવણિજ્જે) હે શુક ! ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ એ ચારે કષાયે ક્ષય પામીને અથવા તેા ઉપશમિત થઈને ફરી ઉદય પામતી નથી એજ નો ઇન્દ્રિય યાપનીય છે નો ઇન્દ્રિય એટલે મન, અને ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ એ ચારે મનનાજ વિકારો છે એથી આ બધાનો ઇન્દ્રિય ગણથી ગૃહીત થયા છે યાપનીય શબ્દનો અર્થ વશ કરવું છે આ બધા ક્ષાયાો મારે વશ થયેલા છે એજ નો ઇન્દ્રિય યાપનીયને હું વર્તી ગયો છું (સે કિ ભતે અવ્યાઘાહ) હે ભદન્ત ! અવ્યાઘાધ નો શો અર્થ છે ? (સુયા જન્મ મમ વાડયપિત્તિય સિંભિયસન્નિવાડયા વિવિધા

સ્થાપત્યાપુત્રઃ કથયતિ-હે શુક ! યાપનીય દ્વિવિધં પ્રજ્ઞત્, તદ્ યથા ઇન્દ્રિયયાપનીય નોન્દ્રિય યાપનીય ચ ।

શુકો વૃત્તે-અથ કિં તદ્ ઇન્દ્રિયયાપનીયમ્. ? ।

સ્થાપત્યાપુત્રઃ સમાધત્તે-‘ સુયા ! ઇત્યાદિ । હે શુક ! યત્=યસ્માત્ કારણાત્ સ્વલુ મમ શ્રોત્રેન્દ્રિ-ચક્ષુરિન્દ્રિય-ગ્રાણેન્દ્રિય-જિહ્વેન્દ્રિ-સ્પર્શેન્દ્રિયાણિ નિરુપહ-તાનિ વશે વર્તન્તે, તદ્ ઇન્દ્રિયયાપનીયમ્=ઇન્દ્રિયાણા વશીકરણ મમ વર્તન્તે. । ‘ ત ’ ઇતિવાક્યાલંકારે, એવમન્યત્રાપિ ।

દશમેંઉદ્દેશક મેં સોમિલ બ્રાહ્મણ સે કહી હૈ । (સે કિં ત ભતે જવણિ જ્ઞ) હે ભદત્ ! યાપનીય શબ્દ કા કયા અર્થ હૈ ? (સુયા ! જવણિજ્ઞે દુવિહે પળત્તે ત જહા-ઇદિયજવણિજ્ઞે ય ણો ઇદિયજવણિજ્ઞે ય) હસ પ્રકાર શુક પરિવ્રાજક કે પૂછને પર સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ને ઉસે સમ-જ્ઞાયા કિ હે શુક ! યાપનીય દો પ્રકાર કા કહા હુઆ હૈ —જૈસે ૧ ઇન્દ્રિ યાપનીય ૨ નો ઇન્દ્રિય યાપનીય । (સે કિં ત ઇદિયજવણિજ્ઞ) ઇન્દ્રિય યાપનીય કા કયા સ્વરૂપ હૈ હસ પ્રકાર શુક કે પૂછ ને પર સ્થાપત્યા પુત્ર ને કહો (સુયા ! જન્ન મમ સોઇદિય ચક્ષિલદિય જિર્વિભદિય ફાસિદિયાઇ નિરુવહયાઇ વસે વટ્ટતિ, સે ત ઇદિયજવણિજ્ઞ) શુક ! શ્રોત્રેન્દ્રિય, ચક્ષુઃઇન્દ્રિય, ગ્રાણેન્દ્રિય, જિહ્વાઇન્દ્રિય, સ્પર્શનઇન્દ્રિય નિરુપહત બન કર જો મેરે વશ મેં હો રહી હૈં યહી ઇન્દ્રિય યાપનીય હૈ અર્થાત્ વિના કિસી વાધા કે અપને વિષયો કો ગ્રહણ કરને મેં સમર્થ હોને પર ભી યે પાચો ઇન્દ્રિયાં જો મેરે વશ મેં વર્ત રહી હૈં યહી

(સે કિં ત ભતે જવણિજ્ઞ) હે ભદન્ત ! યાપનીય શબ્દનો અર્થ શુ છે ? (સુયા ! જવણિજ્ઞે દુવિહે પળત્તે ત જહા ઇદિયજવણિજ્ઞે ય ણો ઇદિય જવણિજ્ઞે ય) શુકપરિવ્રાજકના પ્રશ્નને સાંભળીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે તેને સંભળાવતા કહ્યું કે-હે શુક ! યાપનીયના બે પ્રકારો કહ્યા છે (૧) ઇન્દ્રિય યાપનીય અને (૨) નો ઇન્દ્રિય યાપનીય (સે કિં ત ઇદિયજવણિજ્ઞ) ઇન્દ્રિય યાપનીયનું સ્વરૂપ શુ છે ? શુક પરિવ્રાજકના આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં સ્થાપત્યા પુત્રે કહ્યું —(સુયા ! જન્ન મમ સોઇદિય ચક્ષિલદિય જિર્વિભદિય ફાસિદિયાઇ નિરુવહ યાઇ વસે વટ્ટતિ, સે ત ઇદિયજવણિજ્ઞ) હે શુક ! શ્રોત્રેન્દ્રિય, ચક્ષુ ઇન્દ્રિય, ગ્રાણુ ઇન્દ્રિય, જિહ્વા ઇન્દ્રિય, સ્પર્શ ઇન્દ્રિય, નિરુપહત થઇને મારા વશમાં થઇને તેજ ઇન્દ્રિય યાપનીય છે અટલે કે કોઇપણ જાતન વાધા વગર વિષયોને ગ્રહણ કરવાની તાકત હોવા છતાં એ પાચે ઇન્દ્રિયો મારે વશ થયેલી છે તેજ

शुकः पृच्छति—‘से किं’ इत्यादि । अथ किं तद् नोऽन्द्रिययापनीयम् । स्थापत्यापुत्र आह—‘सुया’ इत्यादि । हे शुक ! यत्=यस्मात् खलु क्रोयमानमाया लोभाः क्षीणा क्षय प्राप्ता, उपशान्ता उपशम प्राप्ताः सन्तो नो उदयन्ते=नोदीर्यन्ते, नो इन्द्रिययापनीय नोऽन्द्रिय मनस्तस्य विकाराः कषाया इह नो इन्द्रियशब्देन गृह्यन्ते, तेषां यापनीय वशीकरण ममास्ति ।

शुको वदति—‘से किं’ इत्यादि । अथ किं तद् भदन्त अव्याघाधम् ? । स्थापत्यापुत्र आह—‘सुया’ इत्यादि । हे शुक ! यत्=यस्मात् खलु मम वातिक पैत्तिक श्लैष्मिक सानिपातिका= । वातिकाः वातप्रकोपजनिता पैत्तिकाः प्रकोप-समुद्भवा, श्लैष्मिकाः कफप्रकोपप्रभवा, सानिपातिकाः=वातपित्त श्लेष्मणा समूहः सनिपातः, तत्र भवाः विविधा ‘रोगायका’ रोगातङ्काः=रोगाश्चातकाश्चेति

इन्द्रिय यापनीय है । (से कि त नो इदियजवणिज्जे) भदत ! नो इन्द्रिय यापनीय का क्या अर्थ है ? (सुया जन्न कोहमाण माया लोभा खीणा उवसता नो उदयन्ति से त नो इदियजवणिज्जे) हे शुक जो क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार कषाये क्षयावस्थापन्न होकर या उपशम अवस्थावाली होकर उदय में नहीं आ रही है यही नो इन्द्रिय यापनीय है । नो इन्द्रियका अर्थ मन होता है । मन के विकार ये क्रोध, मान, माया, और लोभ ये चार कषाये हैं । इसलिये ये नो इन्द्रिय शब्द से गृहीत हुए हैं । यापनीय शब्द का अर्थ वश करना हैं । ये सब कषाये मेरे वश में हो रही हैं — यही नो इन्द्रिय यापनीय मेरे वर्त रहा है । (से कि भते अब्बावाह) भदत ! अव्याघाध का तात्पर्य क्या है ? (सुया जन्न मम वाइयपित्तिय सिंभियसन्निवाइया

इन्द्रिय यापनीय છે (સે કિ ત નો ઇદિયજવણિજ્જે) હે ભદત ! નો ઇન્દ્રિય યાપનીયનો શો અર્થ થય છે (સુયા જન્ન કોહમાણ માયાલોભા સ્વીણા ઉવસતા નો ઉદયતિ સે ત નો ઇદિયજવણિજ્જે) હે શુક ! ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ એ ચારે કષાય ક્ષય પામીને અથવા તો ઉપશમિત થઈને ફરી ઉદય પામતી નથી એજ નો ઇન્દ્રિય યાપનીય છે નો ઇન્દ્રિય એટલે મન, અને ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ એ ચારે મનનાજ વિકારો છે એથી આ બધાનો ઇન્દ્રિય ગાળ્યો ગૃહીત થયા છે યાપનીય ગણાનેા અર્થ વગ કરવુ છે આ બધા ડાળો ભારે વગ થયેલા છે એજ નો ઇન્દ્રિય યાપનીયને હું વર્તી ગયો છું (સે કિ ભતે અન્નાવાહ) હે ભદત ! અવ્યાઘાધ નો શો અર્થ છે ? (સુયા જન્ન મમ વાઈયપિત્તિય સિંભિયસન્નિવાઈયા વિવિદા

દ્વન્દ્વઃ રોગા દાહજ્વરાદયઃ, આતંકાઃ શીઘ્રઘાતિનઃ શૂલાદયઃ નો ઉદીયન્તે, તદ્ અવ્યાવાધઃ=વ્યાનાધાના શરીરપીડાનામભાવઃ મમ વર્તતે. ।

શુકઃ પૃચ્છતિ-‘સે કિં ’ इत्यादि । अथ कोऽसौ भद त’ प्रासुक विहारः । ?

સ્થાપત્યાપુત્રો વદતિ-‘સુયા ’ इत्यादि । हे शुक ! यत् यस्मात् खलु आरामेषु=उपवनेषु, उद्यानेषु पुष्पप्रधानेषु राजवनेषु, देवकुलेषु व्यन्तरायतनेषु, सभासु परिषत्सु ‘ पव्वाणसु ’ पर्वतेषु इदमुपलक्षण तेनाष्टादशस्थानेषु इत्यर्थ । स्त्री-पशुपण्डकविवर्जितासु वसतिषु प्रातिहारिक=पुनः समर्पणीय, पीठफलशम्यास-

વિવિદા રોચાયકા નો ઉદીરેતિ સે ત અવ્યાવાહ સે કિં ત ભતે ફાસુચવિહાર આરામેસુ ઉજ્જાણેસુ દેવઝલેસુ, સભાસુ, પવ્વ-
ણસુ, હત્થી પસુપડગ વિવર્જિજ્યાસુ વસરીસુ પાઢિહારિય પીઠફલગ સથારય ઉગિગિહિત્તા ણ વિહરામિ સેત્ત ફાસુચવિહાર) શુક !
જિસ કારણ સે વાત, પિત્ત ઓર કફ સે જનિત તથા હન તીનોં કે સન્નિપાત સે જનિત જો વિવિધ પ્રકાર કે દાહજ્વર આદિ રોગ શીઘ્ર ઘાતક શૂલાદિક આતક મુક્કે ઉદિત નહી હો રહે હૈ યહી અવ્યાવાધ મેરે વર્ત રહા હૈ । વ્યાવાધ શબ્દ કા અર્થ શારીરિક પીડા હૈ- ઓર
હસ કા અભાવ હસ સમય મેરે મેં વર્ત રહા હૈ । યહી અવ્યાવાધ કા સ્વરૂપ હૈ । હે ભદન્ત ! પ્રાસુક વિહાર કા વચ્ચા સ્વરૂપ હૈ ? ઉત્તર-હે
શુક ! જિસ કારણ મેં ઉપવનો મે પુષ્પ પ્રધાન રાજકીય વનો મેં દેવઘરોં
મેં અર્થાન્ વ્યન્તરાયતનો મેં પરિષદો મેં પર્વતોં મેં ઉપલક્ષણ સે અઠારહ
સ્થાનોં મેં, સ્ત્રી, પશુ, પડક-નપુસકોં સે વિહીન વસતિઓ મેં મઠોં મેં

રોચાયકા નો ઉદીરેતિ સે ત અવ્યાવાહ સે કિં ત ભતે ફાસુચવિહાર આરામેસુ
ઉજ્જાણેસુ દેવઝલેસુ સભાસુ પવ્વણસુ હત્થી, પસુપડગવિવર્જિજ્યાસુ વસરીસુ
પાઢિહારિય પીઠફલગસેજ્ઞાસથારય ઉગિગિહિત્તા ણ વિહરામિ સેત્ત ફાસુચવિહાર)
હે શુક ! વાત, પિત્ત અને કફથી જન્મતા તેમજ આ ત્રણેના સન્નિ
પાતથી ઉદ્ભવતા અનેક દાહજ્વર વગેરે, રોગો શીઘ્રઘાતક શૂળ વગેરે
આતક મારા શરીરમા ઉદ્ભવતા નથી એજ અવ્યાવાધ મારામા વર્તી રહ્યો
છે અવ્યાવાધનુ સ્વરૂપ એજ છે શુકે સ્થાપત્યાપુત્રને બીજો પ્રશ્ન ડ્યો
-હે ભદત ! પ્રાસુક વિહારનુ સ્વરૂપ શુ છે ? તેનો ઉત્તર આપતા સ્થાપત્યા
પુત્ર કહે છે-હે શુક ! હું ઉપવનોમા, પુષ્પ પ્રધાન રાજકીય વનોમા, દેવ
ઘરોમા એટલે કે વ્યતરાયતનોમા, પરિષદોમા પર્વતોમા-ઉપલક્ષણથી અઠાર
સ્થાનોમા સ્ત્રી, પશુ, પડક, નપુસક વગરની વસ્તીઓમા મઠોમા પ્રાતિહારિક

સ્તારમમગૃહ=યાચિત્વા વિહરામિ=વિચરામિ, સ પ્રાસુકવિહારઃ । 'ત' ઇતિ વા
ક્યાલક્ષ્ણારે । શુક પુનરપ્યુપહાસાર્થં પૃચ્છતિ—'સરિસવયા' ઇત્યાદિ । હે ભદન્ત !
'સરિસવયા' તે તત્ત્વં કિં ભક્ષ્યા, ઉત અભક્ષ્યાઃ કિમ્ ? સ્થાપત્યાપુત્ર' સમાધત્તે
—'સુયા !' ઇત્યાદિ । હે શુક ! 'સરિસવયા' સરિસવયશ્વદ્યર્થઃ, ભક્ષ્યા અપિ,
અભક્ષ્યા અપિ, 'સરિસવયા' ઇતિ પદસ્યાર્થભેદાદ્ ભક્ષ્યા અભક્ષ્યા ભવન્તીતિ
ભાવઃ । શુકઃ પુનરાહ—'સે કેણદ્વેણ' ઇત્યાદિ । ભદન્ત ! હે ભગવન્ તત્ કેના
ર્થેન એવમુચ્યતે—'સરિસવયા' ભક્ષ્યા અપિ, અભક્ષ્યા અપીતિ ।

સ્થાપત્યાપુત્રો વદતિ—'સુયા !' ઇત્યાદિ । 'સરિસવયા' સરિસવયશ-
શ્વદ્યોધ્યા અર્થા દ્વિવિદ્યા પ્રજ્ઞતા, તદ્ યથા 'મિત્તસરિસવયા વન્નસરિસવયા ય'

પ્રાતિહારિક—પુનઃ સમર્પણીય—પીઠ, ફલક, શય્યા સસ્તારક કો યાચિ-
ત કર વિચરણ કરતા હું—યહી મેરા પ્રાસુક વિહાર હૈ । ઉપહાસ કરને
કે અભિપ્રાય સે પુન શુક પરિત્રાજક પૂછના હૈ કિ (સરિસવયા તે
મતે કિં ભક્ષ્યેયા અભક્ષ્યેયા ?) ભદત્ ! "સરિસવય" તુમ્હારે
સિદ્ધાન્તાનુસાર ભક્ષ્ય હૈ યા અભક્ષ્ય હૈ ? (સુયા સરિસવયા ભક્ષ્યેયા
વિ અભક્ષ્યેયા વિ) સ્થાપત્યા પુત્ર ને કહા—શુક ! સરિસવય ભક્ષ્ય મી
હૈ ઓર અભક્ષ્ય મી હૈ । (સે કેણદ્વેણ મતે ! એવ વુચ્ચહ સરિસવયા
ભક્ષ્યેયા વિ અભક્ષ્યેયા વિ) શુક ને ડનસે પુન પૂછા ભદત્ ! આપ યહ
કિસ અર્થ કો અપેક્ષા લેકર એસા કહતે હૈ કિ સરિસવય ભક્ષ્ય મી હૈ
ઓર અભક્ષ્ય મી હૈ । (સુયા સરિસવયા દુવિદ્યા પન્નત્તા તજહા મિત્ત સરિ
સવયા ધન્નસરિસવયા) સ્થાપત્યાપુત્રને ડસે સમજાયા કિ શુક ! સરિસવય

—એટલે કે યાચના કરેલી વસ્તુ કે જે યાછી અપાય જેમકે પીઠ, ફળક,
શય્યા સસ્તારકની યાચના કરી ને વિચર છું એજ મારો પ્રાસુક વિહાર છે
શુક પરિત્રાજક ઉપહાસના અભિપ્રાયથી ફરી પ્રશ્ન કરે છે કે (સરિસવયા તે
મતે કિં ભક્ષ્યેયા અભક્ષ્યેયા ?) હે ભદત્ ! 'સરિસવય' તમારા શાસ્ત્ર પ્રમાણે
ભક્ષ્ય છે કે અભક્ષ્ય ? (સુયા સરિસવયા ભક્ષ્યેયા વિ અભક્ષ્યેયા વિ) સ્થાપત્યા
પુત્રે તેના ઉત્તરમા કહ્યું—હે શુક ! 'સરિસવય' ભક્ષ્ય પણ છે અને અભક્ષ્ય
પણ છે (સે કેણદ્વેણ મતે ! એવ વુચ્ચહ સરિસવયા ભક્ષ્યેયા વિ અભક્ષ્યેયા
વિ) શુકે તેમને ફરી પ્રશ્ન કર્યો—હે હે ભદત્ ! તેમ 'સરિસવય' તે ભક્ષ્ય
તેમજ અભક્ષ્ય કયા અર્થની અપેક્ષાએ કરી રહ્યા છે । (સુયા સરિસવયા દુવિદ્યા
પન્નત્તા ત જહા મિત્તસરિસવયા ધન્નસરિસવયા) સ્થાપત્યાપુત્રે તેને સમ-
જાવતા કહ્યું કે હે શુક ! 'સરિસવય' શબ્દનો અર્થ જે રીતે થાય છે ૧

મિત્ર સદશવયમ, ધાન્યસર્પપકાથ । ‘ સરિસવયા ’ इत्यस्य द्विविधोऽर्थः सदशव-
यस सर्पपकाथेति । तत्र सदशवयसो मित्ररूपा सर्पपकास्तु धान्यरूपा इति भावः ।
तत्र खलु ये ते मित्र सदशवयसः=मित्ररूपाः समानवयसस्ते त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः
प्रतियोधिताः तद् यथा—‘ सहजायया ’ सहजातका समानकालजन्मानः, ‘ सह-
वर्द्धियया ’ सह वर्धितकाः समानकाले वृद्धिं प्राप्ताः, ‘ सह पशुकीलियया ’ सह पाशु-
क्रीडितकाः सहैव वृत्तिक्रीडाकारिणश्चेति । वे सर्वे मित्ररूपाः सदशवयस्काः खलु
श्रमणानां निर्ग्रन्थानामभक्ष्याः भोक्तुं न कल्पन्ते । तत्र खलु ये ते धान्यसर्पप-

દો પ્રકારસે પ્રજ્ઞપ્ત હુઆ હૈ—૧ મિત્રસરિસવય દૂસરા ધાન્ય સરિસ-
વય—। સરિસવય શબ્દ કી ‘ સદશવય ” ઔર સર્પપક ” इस प्रकार
સંસ્કૃત છાયા હોતી હૈ । જય સદશવય—સમાન આયુવાલે મિત્રજન
—એસા છાયાર્થક “સરિસવય” પદ લિયા જાતા હૈ—તય उस पक्ष के
અનુસાર સરિસવય અભક્ષ્ય હૈ એસા અર્થ બોધ હોતા હૈ—तथा सर्पपक
છાયાર્થક જય સરિસવય પદ લિયા જાતા હૈ તય “ સરિસવય ” ભક્ષ્ય
ભી હૈ એસા અર્થબોધ હોતા હૈ । इसी विषय को अधिक और स्पष्ट
કરને કે લિયે સૂત્રકાર કહતે હૈં કિ— (तत्थ ण जे त मित्त सरिसवया
તે તિવિહા પન્નત્તા, જહા— सहजायया, सहसवर्द्धियया, सहपशुकीलि-
यया ते ण समणाण निगगथाण अभक्खेया) इनमे जो मित्र सरिसवय
हैं वे तीन प्रकार के प्रज्ञप्त हुए हैं— जैसे सह जातक, सहवर्धितक, सह
पाशुकीडितक अपने साथ जिनका जन्म हुआ हैं वे सहजातक हैं ।
अपने साथ २ जो वृद्धि को प्राप्त हुए हे वे सहवर्धित हैं । तथा जो

મિત્ર, સરિસવય, ૨ ધાન્ય, ‘ સરિસવય ’ શબ્દની સંસ્કૃત છાયા ૧, સદશવય,
અને ૨, સર્પપક બે રીતે થાય છે જ્યારે સરિસવય નો ‘સદશવય’ (સર
ખી આયુષ્ય ધરાવનારા મિત્ર જન) આવેા અર્થ ગ્રહણ કરવામા આવે છે
ત્યારે ‘ સરિસવય ’ અભક્ષ્ય છે આવેા અર્થ જણાય છે તેમજ ‘ સરિસવય ’
પદ સર્પપક (સરસિયુ) અર્થમા લેવાય છે ત્યારે તે ભક્ષ્ય છે આવેા પણ
અર્થ થાય છે એજ વાતને વિશેષ સ્પષ્ટ કરના સૂત્રકાર કહે છે કે (तत्थ ण
जे त मित्त सरिसवया ते तिविहा पन्नत्ता, तज्जा—सहजायया, सहसवर्द्धियया,
सहपशुकीलियया तेण समणाण निगगथाण अभक्खेया) આમા જ્યારે સરિસવય
શબ્દનો અર્થ મિત્ર હોય છે, ત્યારે તેના ત્રણ પ્રકાર સમજવા જોઈએ જેમકે
૧, સહજાતક, ૨, સહવર્ધિતક, અને ૩, સહપાશુકીડિતક આપણી સાથે
જન્મ લેનાર સહજાતક કહેવાય છે અપણી સાથે મોટા થનાર સહવર્ધિત

કાસ્તે દ્વિવિધા=દ્વિપ્રકારા પ્રજ્ઞતા, તદ્ યથા શસ્ત્ર પરિણતાશ્ચ । તત્ર ચ્છલુ યે તે અશસ્ત્રપરિણતાઃ સચિત્તાસ્તે શ્રમણાના નિર્ગ્રન્થાનામભક્ષ્યાઃ અસ્વાદ્યા. તત્ર ચ્છલુ યે શસ્ત્રપરિણતાઃ શસ્ત્રપરિણત્યાઽચિત્તાસ્તે દ્વિવિધા પ્રજ્ઞતાઃ, તદ્ યથા-પ્રાસુકાશ્ચ અપ્રાસુકાશ્ચ । અપ્રાસુકાઃ ચ્છલુ હે શુક ! નો ભક્ષ્યા =અસ્વાદ્યાઃ । તત્ર ચ્છલુ યે તે પ્રાસુકાસ્તે દ્વિવિધા. પ્રજ્ઞતા, તદ્ યથા-‘ જાડયા ય અજાડયા ય ’ યાચિતાશ્ચ, અયાચિતાશ્ચ । તત્ર ચ્છલુ-યે તે અયાચિતાસ્તે અભક્ષ્યાઃ અસ્વાદ્યા । તત્ર ચ્છલુ યે તે યાચિતાસ્તે દ્વિવિધાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તદ્ યથા એપનીયાશ્ચ અનેપનીયાશ્ચ । તત્ર ચ્છલુ

સાથ ૨ ધૂલિ મે રેલે હેં વે મહ પાસુ ક્રીડિતક હૈ । યે સઘ શ્રમણ નિર્ગ્રન્થો કો અભક્ષ્ય હૈ । (તત્થણ જે તે ધન્નસરિસવયા તે દુવિહા પણ્ણત્તા, તજહા સત્થપરિણયા ય અસત્થ પરિણયા ય) જો ધાન્ય સરિસવય હૈ વે દો પ્રકાર કે હૈ-જૈસે ૧ શસ્ત્ર પરિણત ૨ અશસ્ત્ર પરિણત- (તત્થણ જે તે અસત્થ પરિણયા તે સમણાણ ણિગ્ગયાણ અભક્ષેયા તત્થણ જે તે સત્થપરિણયા તે દુવિહા પણ્ણત્તા ત જહા ફાસુગાય અફાસુગાય) इन में जो अशस्त्र परिणत सचित्त- धान्यसरिसवय ह वै श्रमण निर्ग्रन्थो को अभक्ष्य है- अस्वाद्य हें । जो शस्त्र परिणत अचित्त है वै प्रासुक और अप्रासुक के भेद से दो प्रकार के हैं (अफासुयाण सुया णो भक्खेया तत्थण જે તે ફાસુયા તે દુવિહા પન્નત્તા ત જહા જાડયાય અજાડયા ય તત્થણ જે તે જાડયા તે દુવિહા પન્નત્તા ત જહા એસણિજ્જા ય અણેસણિજ્જા ય) इन में जो अप्रासुक धान्य सरिसवय है वै हे शुक खाने

કહેવાય છે, તેમજ જેઓ એકી સાથે માટીમા રમતા રમતા મોટા યયા છે તેઓ સહપાસુક્રીડિતક મિત્ર કહેવાય છે શ્રમણ નિર્ગ્રન્થો માટે આ બધા અભક્ષ્ય છે (તત્થણ જે તે ધન્નસરિસવયા તે દુવિહા પણ્ણત્તા, ત જહા સત્થ પરિણયાય અસત્થ પરિણયાય) ધાન્ય એટલે કે જે અનાજના રૂપમા સરિસવય (સરસિયુ) છે તેના બે પ્રકાર છે-૧ શસ્ત્ર પરિણત, ૨, અશસ્ત્ર પરિણત, (તત્થણ જે તે અસત્થપરિણયા તે સમણાણ ણિગ્ગયાણ અભક્ષેયા તત્થણ જે તે સત્થપરિણયા તે દુવિહા પણ્ણત્તા ત જહા-ફાસુગાય અફાસુગાય) આમા જે અશસ્ત્ર પરિણત-‘ સચિત્ત ’ ધન્ય સરિસવય છે તે શ્રમણ નિર્ગ્રન્થો માટે અભક્ષ્ય છે, અપ્રાધ છે તેમજ શસ્ત્રપરિણત-અચિત્ત છે તે પ્રાસુક અને અપ્રાસુક આમ બે પ્રકારના છે (અફાસુયાણ સુયા ણો ભક્ષેયા-તત્થણ જે તે ફાસુયા તે દુવિહા પન્નત્તા ત જહા જાડયાય અજાડયાય તત્થણ જે તે જાડયા તે દુવિહા પન્નત્તા ત જહા એસણિજ્જાય અણેસણિજ્જાય) આમાથી આ પ્રાસુક ધાન્ય સરસિયુ (સરિસવય) છે, તે અપ્રાધ છે પ્રાસુક ધા ય સરસિયા (સરિસવય) ના બે

યે તે ' અણેસણિજ્ઞા ' અનેપણીયાસ્તે સ્વલુ અભક્ષ્યાઃ । તત્ર સ્વલુ યે તે ' એસ-
ણિજ્ઞા ' એવળીયા, તે દ્વિવિધા પ્રજ્ઞતાઃ—તદ્ યથા—લઘ્વાશ્ચ અલઘ્વાશ્ચ । તત્ર
સ્વલુ યે તેઅલઘ્વાસ્તે અભક્ષ્યાઃ । તત્ર સ્વલુ યે તે લઘ્વાસ્તે શ્રમણાના નિર્ગ્રન્થાના
ભક્ષ્યાઃ હે શુક ! એતેનાર્થેન=ઉક્તરૂપેણ અર્થેન ઉક્તાર્થમાદાએત્યર્થ, એવમુચ્યતે
' સરિસવયા ' સરિસવયશ્ચઙ્ગાન્યા અર્થા ભક્ષ્યા અપિ અભક્ષ્યા અપીતિ ।

' એવ કુલત્યા વિ ભાણિયઘ્વા ' એવઉક્તપ્રકારેણ કુલત્યા અપિ ભણિતઘ્વાઃ,
' નવેર' વિશેષ. હદ નાનાત્વ સ્ત્રીકુલસ્થાશ્ચ ધાન્યકુલત્યાશ્ચ । સ્ત્રીકુલસ્થા સ્ત્રિવિધા

યોગ્ય નહીં હૈં । પ્રાસુક ધાન્ય સરિસવય દો પ્રકાર કે હૈં જૈસે યાચિત
ઔર અયાચિત । હન મૈં મી જો અયાચિત હૈં વે અભક્ષ્ય હૈં—શ્રમણ
નિર્ગ્રન્થોં કો સ્થાને યોગ્ય નહીં હૈં । યાચિત એવળીય ઔર અનેપળીય કે
ભેદ સે દો પ્રકાર કે હૈં (તત્થણ જે તે એણેસણિજ્ઞા તે ણ અભક્ષેયા)
હન મે જો અનેપળીય ધાન્ય સરિસવય હૈં વે અસ્વાદ્ય હૈં । (તત્થણ જે
તે એસણિજ્ઞા તે દુવિદા પત્રત્તા લઘ્વાય અલઘ્વાય, તત્થણ જે તે અલઘ્વા,
તે અભક્ષેયા, તત્થ ણ જે તે લઘ્વા તે સમણાણ નિગથાણ ભક્ષેયા)
જો એવળીય સરિસવય હૈં વે લઘ્વ ઔર અલઘ્વ કે ભેદ સે દો પ્રકાર કે
હૈં—અલઘ્વ અભક્ષ્ય ઔર લઘ્વ શ્રવણ નિર્ગ્રન્થોં કો ભક્ષ્ય હૈં । (એણ
અટ્ટેણ સુયા એવ વુચ્ચતિ—સરિસવયા—ભક્ષેયા વિ અભક્ષેયા વિ
એવ કુલત્યા વિ ભાણિયઘ્વા) હે શુક ! સરિસવય પદ કે હન પૂર્વોક્ત
અર્થોં કો લેકર એસા મૈં કહતા હૈં કિ સરિસવય ભક્ષ્ય મી હૈં ઔર અ-
ભક્ષ્ય મી હૈં । હસી તરહ " કુલત્યા " કે વિષય મૈં મી એસા હી સમ
જ્ઞાના ચાહિયે । (ણવરહમ નાણત્ત) પરન્તુ હસ મે હસ તરહ વિશેષતા

પ્રકાર છે—યાચિત અને અયાચિત, આમા અયાચિત સરિસવય અભક્ષ્ય ગણાય
છે શ્રમણ નિર્ગ્રન્થો આહારમા અયાચિત સરિસવયનો પ્રયોગ કરતા નથી
(તત્થણ જે તે એસણિજ્ઞા તે દુવિદા પત્રત્તા લઘ્વાય અલઘ્વાય, તત્થણ જે તે
અલઘ્વા, તે અભક્ષેયા, તત્થણ જે તે લઘ્વા તે સમણાણ નિગથાણ ભક્ષેયા)
એવળીય (ઇન્ધ્રીય) સરિસવયના લઘ્વ અને અલઘ્વ બે પ્રકારે છે નિર્ગ્રન્થો
થોને માટે અલઘ્વ સરિસવય (સરશિયુ) અભક્ષ્ય છે અને લઘ્વ સરિસવય
ભક્ષ્ય છે (એણ અટ્ટેણ સુયા એવ વુચ્ચતિ સરિસવયા ભક્ષેયા વિ અભક્ષેયા
વિ એવ કુલત્યા વિ ભાણિયઘ્વા) હે શુક ! આ પ્રમાણે સરિસવય ને પૂર્વોક્ત
રીતે અર્થ સ્પષ્ટ કરતા તેને ભક્ષ્ય અને અભક્ષ્ય આમ બે રીતે કહી શકાય
આ રીતે ' કુલત્યા ' ના વિષે પણ સમજી લેવું જોઈએ (ણવરહમ નાણત્ત)

प्रज्ञप्ताः, तद्वया कुलवधूका इतिच कुलमातृका इतिच, कुल दुहितर इतिच । धान्य कुलत्वास्तथैव ।

एव मासाः मापा अपि, नवरं विशेषः—इद नानात्वम् मासा मापा त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्वया—कालमासाश्च अर्थमापाश्च धान्यमापाश्च । तत्र खलु ये ते काल मासास्ते खलु द्वादशविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्वया—श्रावणो यावद् आषाढः, ते खलु अभक्ष्याः । अर्थमापा द्विविधाः—हिरण्यमापाश्च, सुवर्णमापाश्च, ते खलु अभक्ष्या धान्यमापास्तथैव ॥

है— (इत्थी कुलत्वा य धन्न कुलत्वा य) एक स्त्री कुलस्था दूसरी धान्य कुलस्था । तात्पर्य इसका—कुलत्वा की छाया कुलस्था है—इसका अर्थ स्त्री कुलस्था और धान्य कुलस्था है । कुलथी जात का अन्न विशेष जो होता है वही यह धान्य कुलत्वा से ग्रहण हुआ है । (इत्थी कुलत्वा त्रिविहा पन्नत्ता त जहा कुल वधूयाड य कुल माउयाइ य, कुल वूयाडय) इन में जो कुलत्वा का वाच्यार्थ स्त्री कुलस्था है वह तीन प्रकार का हैं जैसे— १ कुलवधू २ कुलमातृका ३ और कुल दुहिता (लड़की) (धन्न कुलत्वा तहेव) धान्यकुलत्वा अर्थ का निरूपण धान्य मरिसवय के समान जानना चाहिये । (एव मासा वि नवर इम नाणत्त— मासा त्रिविहा पन्नत्ता, त जहा— काल मासाय, अत्यमासाय, धन्न मासाय, तत्थ ण जे ते काल मासा ते ण दुवालसविहा पन्नत्ता, त जहा— साव णे जाव आसाढे ते ण अभक्खेया, अत्यमासा दुविहा हिरन्न मासा सुवण्णमासा य तेण अभक्खेया धन्न मासा तहेव) इसी तरह “मासा”

आनु स्पष्टीकरणे अथै गीते उ (इत्थी कुलत्वाय धन्नकुलत्वाय) अथै स्त्री कुलस्था अने धान्य (अनाज) कुलत्वा नी छाया ‘ कुलस्था ’ थाय छे तेना जे रीते अर्थ समस्त गहाय छे स्त्री ने पण कुलस्था छेवाय छे अने कुलस्था अथै जातनु द्वाण पण छे तेने ‘ कुलथी ’ उछे छे (इत्थी कुलत्वा त्रिविहा पन्नत्ता त जहा कुलवधूयाइ य कुलमाउयाइ य कुल वूयाडय) स्त्री कुलस्थाना त्रय प्रकार छे जेभ उ—(१) कुल वधू, (२) कुल मातृका, अने (३) कुल दुहिता (लड़की) (धन्नकुलत्वा तहेव) धान्यार्थवाची कुल-त्वा गणत्तु निरूपण धान्य मरिसवनी जेभ समस्तु जेछे (एव मासा वि नवर इम नाणत्त मासा त्रिविहा पन्नत्ता त जहा—काल मासाय, अत्यमासाय, धन्नमासाय तत्थ ण जे ते कालमासा तेण दुवालसविहा पन्नत्ता त जहा सावणे जाव आसाढे तेण अभक्खेया अत्यमासा दुविहा हिरन्न मासा सुवण्णमासाय तेण अभक्खेया पन्नमासा तहेव) आ प्रमाणे ज ‘ मास ’ गण्ठ विधे पण

સ્થાપત્યાપુત્રસ્ય તત્ત્વજ્ઞાનજિજ્ઞાસયા શુકઃ પૃચ્છતિ—‘એમે ભવ’ ઇત્યાદિ. ।
‘એમે ભવ’ એકો ભવાન્ ? અયમ્ ભાવઃ—આત્માનં એકત્વસ્વીકારે શ્રોત્રાદિ વિજ્ઞાનનામવેયવાનાં ચાત્મકનેકતોપલબ્ધ્યા એકત્વં દૂપયિષ્યામીતિ. ।

—‘દુવે ભવ’ દ્વૌ ભવાન્ ? અયમ્ ભાવઃ—આત્મનો દ્વિત્વાભ્યુપગમેઽહમિત્યેકં ત્વવિશિષ્ટાર્થસ્ય દ્વિત્વવિરોધેન દ્વિત્વં દૂપયિષ્યામીતિ. । ‘અણેમે ભવ’ અનેકે ભવાન્ ?—આત્માનોઽનેકત્વસ્વીકારેઽહમિત્યેકત્વવિશિષ્ટાર્થસ્યાનેકત્વવિરોધેનાનેકત્વં દૂપયિષ્યામીતિ ભાવઃ. । ‘અવસ્થાભવ’ અક્ષયો ભવાન્ ? ‘અવ્યયભવ’ અવ્યયો ભવાન્, ‘અવદ્વિષ્ણુભવ’ અવસ્થિતો ભવાન્, આત્માન્તિત્યં ઇતિ ભવતા સ્ત્રી ક્રિયતે ઇતિપશ્ચત્રયાભિપ્રાયઃ. ।

શબ્દાભિધેય કે વિષય મેં મી જાનનાં ચાહિયે. કિન્તુ વિશેષતા ઇસ પ્રકાર હૈ—માસ ત્રીન તરહ કે હૈ—જૈસે—કાલમાસ અર્થમાષ, ધાન્યમાષ ઇન્ન મેં જો કાલમાસ હૈં વે ૧૨ દ્વારહ પ્રકાર હૈ. જૈસે શ્રાવણ માસ સે લેકર આષાઢ માસ તક. ચે સવ અભક્ષ્ય હૈં. હિરણ્ય માષાં ઓર સુવર્ણમાષાં કે ભેદ સે અર્થમાષ દો પ્રકાર હૈં. ચે મી અભક્ષ્ય હૈં. ધાન્યમાષ કે વિષય મેં ધાન્યસરિસવ કે સમાન પ્રત્યુપજા જાનની ચાહિયે. અથ સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર સે શુક પરિવાજક તત્ત્વજ્ઞાનની જિજ્ઞાસા સે પ્રશ્ન કરતા હૈ કિ—(એમે ભવ દુવે ભવ અણેમે ભવ અક્ષયભવ અવ્યયભવ અવદ્વિષ્ણુભવ અણેગભૂયભાવભવિષ્ણુ વિ ભવ ?) આપ એક કૈસે હૈં ? અર્થાત્ આત્મા મેં યદિ એકત્વ માનાં જાવે તો શ્રોત્રાદિ વિજ્ઞાનોં એવ અવયવોની અપેક્ષા જો ઉસમે અનેકતાની ઉપલબ્ધિ હોતી હૈં ઉસ સે ઉસમેં એકતા નહીં વનતી હૈં. યદા “ ભવ ” આત્મા કા વ્યવહાર હૈં

વિશેષાર્થો જાણવા જોઈએ ‘માસ’ શબ્દનો અર્થ ત્રણ રીતે થાય છે જેમ કે કાળ માસ, (૧) અર્થ માષ, (૨) ધાન્ય માષ, (૩) કાળ વાચક માસ (મહિના) ના શ્રાવણ થી માહિને આષાઢ સુધી બાર પ્રકારો છે આ બધા અભક્ષ્ય છે હિરણ્યમાષ અને સુવર્ણ માષ આ બંને અર્થમાષના બે પ્રકારો છે એ પણ અભક્ષ્ય છે અનાજના રૂપમાં જે ધાન્ય માષ (અહ) છે તેના માટે ધાન્ય સરિસવની જેમજ નિરૂપણ સમજવું જોઈએ શુક પરિવાજક તત્ત્વજ્ઞાનની જિજ્ઞાસાથી તેમને પ્રશ્ન કરે છે કે (એમે ભવ દુવે ભવ અણેમે ભવ અક્ષયભવ અવ્યયભવ અવદ્વિષ્ણુભવ અણેગભૂયભાવભવિષ્ણુ વિ ભવ ?) તમે એક છો, એ કેવી રીતે ? એટલે કે આત્મા માં જે એકત્વ મનાય તો શ્રોત્ર વગેરે વિજ્ઞાનો અને અવયવોની અપેક્ષાએ તેમાં અને તા ઉપવબ્ધ હોય છે તેથી આત્મામાં એકત્વ સિદ્ધ થતું નથી અહીં ‘ભવ’ શબ્દ આત્મ

‘अणेगभूयभावमएि वि भव’ अनेक भूतभावभरिकोऽपि भवान् ? अनेके अशा अवयवाभूता = भतीताः, भावा वर्तमाना भविका = भाविनश्च यस्य स तथा, आत्मा अनित्य इति पक्षो भवता स्वीक्रियत इत्यर्थः । अनयोर्नित्यानित्यक्षयोरेकत-

आत्मा एक है- इस सिद्धान्त को लेकर शुक स्थापत्या पुत्र अनगार से कहता है कि यह आत्मा का एकत्व पक्ष युक्ति सगत नहीं बैठता है कारण श्रोत्रादि इन्द्रियों से जो भिन्न २ विज्ञान उत्पन्न हुए हैं एव जो भिन्न अवयवों की उपलब्धि होती है उस से आत्मा में एकत्व बाधित होता है । इसी तरह यदि आत्मा में द्वित्व माना जावे तो यह भी पक्ष युक्ति युक्त प्रतीति नहीं होता है कारण “ अह ’ अह ” इत्याकार-रूप जो आत्मा में एकत्व की प्रतीति होती है उससे एकत्व विशिष्ट अर्थ की ही प्रतीति होती है इसलिये इस प्रतीति से उस में द्वित्व (दो) का विरोध आता है । “ अणेगे भव ” आत्मा को अनेक भी इसी लिये मानना युक्ति सगत प्रतीति नहीं होता है कि उस में फिर ‘ अह ’ अह ’ इत्याकारक एकत्व प्रतीति नहीं बन सकती है । इस प्रतीति से उस में एकत्व (एकपन) का ही मान होना है अनेकता के साथ इस प्रतीति का विरोध है । इसलिये यह पक्ष भी दूषित ठहरता है । ‘ अक्ख-ए भव’ आत्मा अक्षय है ‘ अव्वए भव’ अव्यय है अवद्विए भव आत्मा

ने भाटे छे आत्मा ओक छे आ सिद्धान्तने विषे शुक परिव्राजक स्थापत्या पुत्र अनगारने उहे छे के आत्मा विषे ओकत्वपक्ष युक्ति सगत लागते नथी कारण उे श्रोत्र वगेरे इन्द्रिये थी ने जुदी जुदी जतना विज्ञाने उ प न्न तथा छे अने ने जुदा जुदा अवयवोनी उपलब्धि थाय छे तेथी आत्मा मा ओकत्व बाधित थाय छे आ रीते ज जो आत्मामा द्वित्व मानवामा आवे तो आ वात पणु उचित लागती नथी, केमके ‘ अह ’ ‘ अह ’ आ रीते ने आत्मामा ओकत्वनी प्रतीति थाय छे तेथी आत्मा ओकत्व विशिष्ट छे ओ अर्थ ज स्पष्ट थाय छे आ रीने आत्मामा द्वित्व विषे पणु बाधे उलो थाय छे “ अणेगे भव ” आत्माने अनेउ पणु मानी न राकाय केमके तेमा पछी ‘ अह ’ ‘ अह ’ आ जतनी ओकत्वनी प्रतीति मलवित थछ शकती नथी ओनाथी तेमा ओकत्वनी प्रतीति थाय छे आ रीते अनेकता नी साथे आ प्रतीति ने बाधे उलो थाय छे आ प्रमाणे आ पक्ष पणु सटोप ज उडेवाय (अक्खए भव) आत्म अक्षय छे (अव्वए भव) अव्यय

સ્પષ્ટપરિગ્રહોઽન્યતર દૂપયિષ્યામીત્યાશયઃ । સ્થાપત્યાપુત્રો રદતિ-‘સુયા’ ઇત્યાદિ ।
 હે શુક ! એકોઽપ્યહમ્, દ્વાયપ્યહમ્, યાવત્-અનેકભૂતભાવભવિકોઽપ્યહમ્ । પુનઃ
 શુકઃ પૃચ્છતિ-‘સે કેણદ્વેણ ભતે !’ ઇત્યાદિ । તત્ કેનાર્થેન ભદન્ત । એવમુચ્યતે
 -એકોઽપ્યહ યાવત્-અનેકભૂતભાવભવિકોઽપ્યહમ્ ?

અવસ્થિત છે, નિત્ય છે ‘અણેગભૂયભાવભવિવિ ભવ’ અનેક ભૂત,
 ભાવ ઓર ભવિક પર્યાયોં વાળા છે અનિત્ય છે ભૂત શબ્દ કા- અર્થ
 -અતીત,-ભાવ કા અર્થ વર્તમાન એવ ભવિક કા અર્થ ભવિષ્યત-કાલીન
 છે-અર્થાત્ આત્મા કે ભૂત પર્યાય રૂપ અશ વર્તમાન પર્યાય રૂપ અશ
 તથા ભવિષ્યત કાલ મેં હોને વાળે પર્યાય રૂપ અશ ઉસ કે અવયવ, રૂપ
 છે-।-હસસે- આત્મા મેં અનિત્યતા સિદ્ધ હોતી છે । હસ તરહ શુક ને
 સ્થાપત્યા પુત્ર અનગાર કે હન સમસ્ત પક્ષોં કો દૂપિત કિયા । નિત્ય
 પક્ષ અનિત્ય પક્ષ સાથ વિરુદ્ધ પડતો છે ઓર અનિત્ય પક્ષ નિત્ય પક્ષ
 કે સાથ વિરુદ્ધ પડતો છે ઇત્યાદિ । અથ સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર સ્વાદ્વાદ
 સિદ્ધાન્ત કે અનુસાર ઉત્તર દેતે હેં । (સુયા ણ્ગે વિ અહ દુવેવિ અહ
 જાવ અણેગ ભૂયભાવ ભવિવિ અહ) હે શુક ! મેં એક ભી હેં, મેં દો
 ભી હેં, યાવત્ અનેક ભૂત ભાવ ભવિક પર્યાયોં વાળા ભી હેં (સે કેણ
 દ્વેણ ભતે એવ વુચ્ચહ, ણ્ગે વિ અહ જાવ અણેગભૂયભાવભવિવિ વિ

છે (અવદિવિ ભવ) આત્મા અવસ્થિત છે નિત્ય છે, (અણેગભૂયભાવભવિવિ
 વિ ભવ) અનેક ભૂત, ભાવ અને ભાવિક પર્યાય વાળો છે અનિત્ય છે, ભૂત
 શબ્દનો અર્થ ભૂતકાળ છે ભાવ શબ્દનો અર્થ વર્તમાનકાળ અને ભાવિક શબ્દનો
 અર્થ ભવિષ્ય કાળ થાય છે, એટલે કે આત્માના ભૂત પર્યાય અશ, વર્તમાન
 પર્યાય અશ તેમજ ભવિષ્યમા થનારા પર્યાય રૂપ અશ તેના (આત્માના)
 અવયવ રૂપ છે એથી આત્મમા અનિત્યતા સિદ્ધ થાય છે આ રીતે શુક
 , પરિવ્રાજકે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારના બધા પક્ષોને સદોષ સિદ્ધ કર્યા, આત્મા
 વિષે નિત્ય અને અનિત્ય આમ બંને પક્ષો એક બીજાથી વિરુદ્ધ છે આ પ્રમાણે
 જ અનિત્યપક્ષ નિત્યપક્ષ ની સાથે વિરુદ્ધ છે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર સ્વાદ્વાદ
 સિદ્ધાન્ત મુજબ શુકપરિવ્રાજકને જવાબ આપતા કહે છે—(સુયા ણ્ગે વિ
 અહ દુવેવિ અહ જાવ અણેગભૂયમાવિમાવિવિ અહ) હે શુક ! હું એક
 પણ છું, હું બે પણ છું, અને હું અનેક ભૂત, ભાવ તેમજ ભવિક પર્યાય
 વાળો પણ છું (સે કેણદ્વેણ ભતે એવ વુચ્ચહ, ણ્ગે વિ અહ જાવ અણેગભૂય
 ભાવભવિવિ વિ અહ) શુકે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારને કહ્યું કે હે ભદન્ત ।

અથ સ્થાપત્યાપુત્ર સ્યાદ્વાદમવલમ્બ્યોત્તર કરોતિ 'જળ્ણ સુયા !' इत्यादि ।
 यत् खलु हे शुक ! ' द्रव्यद्वयाए एगे अह ' द्रव्यार्थतया एकोऽहम् । द्रव्यत्वेनामे-
 कोऽस्मि जीवद्रव्यस्य एकत्वात् , न तु प्रदेशाभिप्रायेण ।

- ' नाणदसणद्वयाए दुवेवि अह ' ज्ञानदर्शनार्थतया द्वावप्यहम् । ज्ञानदर्शनार्थद्व-
 याभिप्रायेण द्विस्वभावकोऽहमस्मीत्यर्थः । द्वावप्यहमित्यनेन अनेकोऽपि भगानि-
 तिप्रश्नस्याप्युत्तर प्रदत्तम् , उक्तरीत्या द्विस्वभावरुत्वाम् श्रोत्रादिविज्ञानानामवय-
 वानां चात्मनोऽनेकत्वाच्च । यथा एको देवदत्त एकस्मिन्नेवकाले पितृत्वपुत्रत्वभ्रा-
 तृत्वादीननेकान् स्वभावान् प्राप्नोति ।

अह) सो भदत् । आप ऐसा किस अर्थ को लेकर कह रहे हैं कि मैं एक
 भी हूँ यावत् अनेक भूत भाव भविक पर्यायो वाला भी हूँ हे शुक !
 ऐसा जो मैं कह रहा हूँ सो किस अर्थ की अपेक्षा को लेकर कह रहा
 हूँ यह सुनो (जળ्ण सुया ! द्रव्यद्वयाए एगे अह नाणदसणद्वयाए,
 दुवेवि अह, पएसद्वयाए, अक्खए वि अह अव्वए वि अह अवट्टिए-
 वि अह उवओगद्वयाए अणेगभूयभावभविए वि अह) मैं एक हूँ
 ऐसा जो मेरा कहना है वह हे शुक ! द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा है ।
 (द्रव्यार्थिक नय का विषय एक अखण्ड द्रव्य होता है । अतः उस दृष्टि
 से मैं द्रव्य को एक होने की वजह से एक हूँ । प्रदेशों की अपेक्षा से
 एक नहीं हूँ । ज्ञान, दर्शन की अपेक्षा से मैं दो रूप भी हूँ दो स्वभा-
 ववाला भी हूँ । आत्माका लक्षण उपयोग है । यह उपयोग ज्ञान
 और दर्शन की अपेक्षा से दो प्रकार का है । इस दृष्टि से मैं एक
 होता हुआ भी दो रूप हूँ । इस कथन से मैं अनेक भी हूँ इस प्रश्न

તમે કયા આધારે કહી રહ્યા છો કે હું એક પણ છું અનેક પણ છું અને
 હું અનેક ભૂત, ભાવ અને ભવિક પર્યાય વાળો પણ છું ? સ્થાપત્યાપુત્ર
 અનંગાર શુક પરિત્રાજક ને જવાબ આપતા કહેવા લાગ્યા કે—(જળ્ણ
 સુયા ! દ્રવ્યદ્વયાએ એગે અહ નાણદસણદ્વયાએ દુવેવિ અહ પસદ્વયાએ અક્ખએ
 વિ અહ અવ્વએ વિ અહ અવટ્ટિએ વિ અહ ઉવઓગદ્વયાએ અણેગભૂયભાવભવિએ
 વિઅહ) હે શુક ! “ હું એક છું ” મારૂં આ કહેવું દ્રવ્યાર્થિક નયની અપે-
 ક્ષાઓથી છે દ્રવ્યાર્થિક નયનો વિષય એક અમડ દ્રવ્ય હોય છે, દ્રવ્ય એક
 હોવાથી, આ દૃષ્ટિએ હું એક છું, પ્રદેશોની અપેક્ષાથી હું એક નથી જ્ઞાન
 દર્શનની દૃષ્ટિએ મારા બે રૂપ પણ છે હું બે જાતના સ્વભાવવાળો પણ છું
 આત્માનું લક્ષણ ઉપયોગ છે જ્ઞાન અને દર્શનની દૃષ્ટિએ ઉપયોગના બે પ્રકાર
 થાય છે આમ હું એક રોવા છતાં પણ બે રૂપ વાળો છું આથી ‘ હું

‘પણસદ્વ્યાપ્ત અસ્ત્યપિ વિ અહ અન્વપિ વિ અહ અવટ્ટિપિ વિ અહ’ પ્રદેશાર્થ-
તયા-અધ્યયોડ્વ્યહમ્ અસંખ્યાતાનામાત્મપ્રદેશાનામેકસ્યાપિ કેનાપિ પ્રકારેણ ક્ષયા
ડભાવાત્ । અધ્યયોડ્વ્યહમ્-કેનાપિ પ્રકારેણેકસ્યાપ્યાત્મપ્રદેશસ્ય નાશાભાવાત્ ।

કાં મી ઉત્તર હો જાતા હૈ । હસ તરહસે માનને પર મી વહા અહ પ્રત્યય હોને મેં કોઈ ઘાધા નહીં ઓતી હૈ । ઓર ઉક્તરીતિ સે આત્મા મેં દ્વિત્વ ભાવતા આને પર ઉસમેં શ્રોત્રાદિ વિજાનોં કી તથા અવયવો કી અનેકતા મી વિરુદ્ધ નહીં પડ સકતી હૈ । યહ વિરુદ્ધતા તો આત્મા મેં ઇક સ્વભાવતા માનને પર હી આતી હૈ । મૂલ મેં ઇક હોને પર મી અનેક સ્વભાવ કી માન્યતા વાધિત નહીં હોતી હૈ । જૈસે દેવદત્ત ઇક પદાર્થ મેં પિતૃત્વ, પુત્રત્વ, ભ્રાતૃત્વ આદિ અનેક સ્વભાવ ઇક હી કાલ મેં હોતે હુપ્રતીતિ હોતે હૈ । ઇક આત્મા કે અસંખ્યાત પ્રદેશ શાસ્ત્ર-કારોં ને કહે હૈ । ઇન મેં સે કોઈ મી ઇસા પ્રદેશ નહીં હૈ જિસકા કિસી મી પ્રકાર સે ક્ષય હો સકે અતઃ હસ પ્રદેશ કી અપેક્ષા સે મેં આત્મા અક્ષય હૈ । હસી તરહ ઇક મી આત્મા કે પ્રદેશ કા કિસી મી તરહ સે નાશ નહીં હો સક ને કે કારણ મેં આત્મા અધ્યય હૈ । અધ્યય શબ્દ કા જો કિન્હી ૨ ને ઇસા અર્થ કિયા હૈ કિ કિતનેક પ્રદેશોં કા ધ્યય નહીં હોતા હૈ સો વહ આગમ સે વિરુદ્ધ પડતા હૈ કારણ હસ

અનેક છુ’ એ પ્રશ્નનો ઉત્તર પણ પુષ્ટ થાય છે આ માન્યતાથી ત્યાં ‘અહ ની પ્રતીતિમા કોઈપણ જાતનો વાધો જણાતો નથી અને આ રીતે આત્મામા દ્વિત્વભાવની સ્થાપન થી તેમા શ્રોત્ર વગેરે વિજ્ઞાનોની તેમજ અવયવોની અને કતામા પણ કોઈ પણ જાતનો વિરોધ જણાતો નથી આત્મામા એક સ્વભાવતા માનવામાજ આ વાધો જિલો થાય છે આ પ્રમાણે મૂળ રૂપે એક હોવા છતાં પણ અનેક સ્વભાવની માન્યતા કોઈ પણ રીતે બાધિત થતી નથી જેમકે દેવદત્ત આ એક પદાર્થમા પિતૃત્વ પુત્રત્વ ભ્રાતૃત્વ વગેરે ઘણા સ્વભાવોની પ્રતીતિ એકજ કાળમા થાય છે એક આત્માના અસંખ્યાત પ્રદેશો શાસ્ત્રકારો એ કહ્યા છે આ અસંખ્યાત પ્રદેશોમાથી કોઈ પણ એવો પ્રદેશ નથી કે જેનો કોઈપણ રીતે નાશ થઈ શકે એથા આ પ્રદેશની અપેક્ષાએ હું ‘આત્મા’ અક્ષયછુ આ રીતે આત્માના એક પણ પ્રદેશનો ગમેતે સંજોગમા કોઈપણ રીતે નાશ નહિ થવાથી હું ‘આત્મા અધ્યય’ અધ્યય શબ્દનો અર્થ’ કોઈ એ એવી રીતે કર્યો છે કે ‘કેટલાક પ્રદેશો નો વ્યય થતો ન હોય તે અધ્યય’ તો આ અર્થ આગમથી વિરુદ્ધ છે કારણકે આ અર્થને માનવાથી ‘કેટલાક પ્રદેશોનો નાશ થાય છે’ આવો અર્થ પણ નીકળે છે’ ત્રિકાગમા

यत्तु-अव्ययः क्रियतामपि च व्ययाभावादित्युक्त, तदागमविरुद्धम्-क्रियतामपीत्युक्त्या क्रियताना नाशोभयतीत्यर्थस्यापि बोधापत्तिसम्भवात् । अवस्थितोऽप्यहम्-असख्यातप्रदेशतत्त्व कदाचिदपि न विनश्यति तेन मम स्वरूपमविचल सदाऽवस्थायीत्यर्थः । तस्मान्नित्यस्वरूपोऽप्यहमस्मीति भावः । शिष्यबुद्धिनिर्मलीकरणार्थमेकस्मिन्नेवार्थेऽनेकपर्यायशब्दानां प्रयोगः ।

‘ उवओगट्टयाए अणेगभूयभावभविए वि अह ’ अनेकभूतभावभक्तिकोऽप्यहम् । अनेके विषयभेदाद् बहुविधा उपयोगा भूताः=अतीताः, भाना=वर्तमाना, स्तथा भविकाः=भाविनश्च यस्य स तथा, अतीतकाले रहव-उपयोगा=श्रोत्रादि

प्रकार के कथन में “ किननेक प्रदेशों का नाश होता है ” ऐसा अर्थ भी हो जाता है । असख्यात प्रदेशों से युक्त पना आत्मा में त्रिकाल में भी नष्ट नहीं होता है अतः यह असख्यात प्रदेशों से युक्त रहने रूप जो आत्मा का स्वरूप है उससे यह आत्मा अविचल है सदा अवस्थित है । इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि मैं नित्य स्वरूप वाला हूँ । मैं अक्षय हूँ, अव्यय हूँ, अवस्थित हूँ ऐसे जो ये सब पर्याय शब्द एक ही आत्मा रूप अर्थ में प्रयुक्त किये गये हैं वे शिष्य की बुद्धि को निर्मल करने के लिये प्रयुक्त हुए हैं ऐसा जानना चाहिये । “ उव ओगट्टयाए अणेगभूयभावभविए वि अह ” यहा अनेक शब्द विषय भेद की अपेक्षा अनेकविध उपयोगों का वाचक हैं ये अनेकविध उपयोग जिस के पहिले हो चुके हैं तथा वर्तमान में जिस में हो रहे हैं और भविष्य में जिस में होंगे अर्थात् अतीतकाल में श्रोत्रादि विज्ञान रूप उपयोग जिस में उत्पन्न हुए हैं, नष्ट हुए हैं, वर्तमान काल में भी जिस में

પણ આત્મામા અસખ્યાત પ્રદેશોનો યુક્ત ભાવ નષ્ટ થતો નથી એટલા માટે અસખ્યાત પ્રદેશોથી યુક્ત રહેનાર આત્માનું સ્વરૂપ છે તેનાથી આ આત્મા અવિચળ છે હું મેરો અવસ્થિત છે એનાથી એ સ્પષ્ટ થાય છે કે હું નિત્ય સ્વરૂપ વાળો છું હું અક્ષય છું હું અવ્યય છું હું અવસ્થિત છું. અને આ બધા એક અર્થ વાચક પર્યાય શબ્દો આત્મા રૂપ અર્થમાં પ્રયુક્ત કરવામાં આવ્યા છે, તે શિષ્યની બુદ્ધિને નિર્મળ બનાવવા માટેજ, આમ સમજી લેવું જોઈએ (ઉવઓગટ્ટયાએ અણેગભૂયભાવભવિર વિ અહ) અહીં જે અનૈક શબ્દો તે વિષય લેઈની અપેક્ષાથી અનૈક વિધ ઉપયોગોનો વાચક છે આ અનૈકવિધ ઉપયોગો જેના પહેલા થઈ ગયા છે, વર્તમાન કાળમાં જેમાં યજ રહ્યા છે અને ભવિષ્યમાં જેમાં થશે એટલે કે શ્રોત્ર વગેરે વિજ્ઞાન રૂપ જેમાં ભૂતકાળમાં ઉત્પન્ન થયા છે, વર્તમાન કાળમાં પણ જેમાં

વિજ્ઞાનરૂપા ઉત્પન્ના વિનષ્ટાશ્ચ વર્તમાનકાલેऽપિ ઉત્પદ્યન્તે વિનશ્યન્તિ ચ, તથા ભવિષ્યત્ કાલે ઉત્પત્સ્યન્ત વિનશિષ્યન્તિ ચ, ત ઉપયોગા આત્મનઃ=કથચિદભિન્ના સ્તેનાનેકભૂતભાવભવિકોऽપ્યદમસ્મીત્યેયમનિત્યપક્ષોપિ મમ દોષાય નાસ્તીત્યર્થઃ ।
પત્તુ-અવ્રભાવાઃ સત્તાઃ પરિણામા યા ઇતિ વ્યાખ્યાત તદ્યુક્તમ્-

અતીતાના ભાવિના ચ ભાવાનામનેકાન્વયિતયાઽતીતાર્થકભૂતશબ્દાત્ પ્રાગેવ પ્રયોક્તવ્યસ્ય ભાવશબ્દસ્ય તદનન્તર પ્રયોગો ન સગચ્છતે અપિ ચ-તન્મતેઽતીત ભવિકાના ભાવાન્વયિતયા તતઃ પૂર્વત્ર વા સદૈવ પ્રયોક્તવ્યયોરતીતભવિકશબ્દ-

ઉત્પન્ન હોતે હૈ નષ્ટ હોતે હૈ ત યા ભવિષ્યત્ કાલ મેં જિસ મેં ઉત્પન્ન હોંગે ઔર નષ્ટ હોંગે વે ઉપયોગ આત્મા સે કથચિત્ અભિન્ન હૈ ।
અતઃ હૈસં ઉપયોગ કી અપેક્ષા મેં આત્મા અનેક ભૂત, ભાવ, ભવિક વાળોં મી હૈ હસ તરહ આત્મા મેં અનિત્યતા મી આ જાતી હૈ સો યહ અનિત્યતા કા પક્ષ મી હમારે લિયે દોષાગ્રહ નહી હોતા હૈ । યહા પેર જો કિન્હીર ને ભાવ શબ્દ કા અર્થ સત્તા યા પરિણામ હસ રૂપ સે કિયા હૈ વહ ઠીક નહીં હૈ । ભાવ શબ્દ યદા વર્તમાન કાલાર્થ કા હી વાચક હૈ સત્તા યા પરિણામ કા વાચક નહી । કારણ જો અતીત ઔર ભાવી ભાવ હોતે હૈ વે અનેકાર્થાન્વયી હોતે હૈ હમલિયે અતિતાર્થક ભૂત શબ્દ સે પહિલે હી પ્રયોક્તવ્ય ભાવશબ્દ કા ઉસ કે બાદ પ્રયોગ કરના સગત પ્રતીત નહી હોતા ।

અપિચ-સત્તા યા પરિણામવાદિયોં કે મત મે અતીત ઔર ભવિષ્યત્ ભાવોં કો ભાવાન્વયી હોને કે કારણ અતીત ઔર ભવિષ્યત્

ઉત્પન્ન થયા છે નષ્ટ થયા છે તેમજ ભવિષ્ય કાળમા પણ જેમા ઉત્પન્ન થશે અને નાશ પામશે તે ઉપયોગો આત્માથી કથચિત અભિન્ન છે એટલા માટે આ ઉપયોગની અપેક્ષાએ હું 'આત્મા' ઘણા ભૂત, ભાવ અને ભવિક વાળો પણ છું આ રીતે આત્મામા અનિત્યતા પણ આવી જાય છે તો આ અનિત્ય ભાવનો પક્ષ પણ અમારા માટે સદોષ ઢહી રાકાય નહિ કેટલાક ભાવ શબ્દનો અર્થ સત્તા કે પરિણામ પણ કરે છે તે ઉચિત નથી અહી ભાવ શબ્દ ફક્ત વર્તમાન કાળનો વાચક છે સત્તા કે પરિણામ અર્થનો વાચક નથી કારણ કે જે અતીત અને ભાવી ભાવો હોય છે તે અનેકાર્થાન્વયી હોય છે, અથી અતીતાર્થક ભૂત શબ્દની પહેલા જ પ્રયુક્ત કરવામા આવેલા ભાવ શબ્દનો તેના પછી પ્રયોગ કરવો ઉચિત લાગતો નથી વળી સત્તા કે પરિણામ વાદીઓના મતે અતીત અને ભવિષ્ય ભાવો ભાવાન્વયી હોવા બદલ

योर्भावशब्दव्यवधानेन प्रयोगो न सगच्छते, तस्माद् भावशब्दोऽत्र वर्तमानकालार्थपर इत्येव भगवदाशयोऽवगम्यते ।

अत्रः=अस्मिन् स्थाने स्थापत्यापुत्ररय वचनानि श्रुत्वा स शुकः सवुद्धः सम्यग्बोध प्राप्तः सन् स्थापत्यापुत्रमनगार वन्दते स्तौति, नमरयति प्रणमति वदित्वा नत्वा चैवमवादीत् हे भदन्त । इच्छामि खलु युष्माकमन्तिके केवलिप्रज्ञप्त धर्मं निशामयतु=श्रोतुम् ।

(भूत, भविक) ये दोनों शब्द भाव के पहिले या भाव के बाद साथ २ प्रयुक्त होने चाहिये भाव शब्द से व्यवहित होकर प्रयुक्त नही होने चाहिये परन्तु यहाँ तो वे दोनों शब्द भाव शब्द से व्यवहित होकर ही प्रयुक्त हुए हैं इसलिये भावशब्द यहा वर्तमान कालार्थ परक है ऐसा ही भगवान् का आशय जात होता है । (एत्य ण से सुए सवुद्धे धावच्चा पुत्त वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता, एव वयासी, इच्छामिणं भते । तुब्भे अतिए केवलिपन्नत्त धम्म निसामित्तए धम्मकहा भाणियव्वा) इस स्थान में स्थापत्यापुत्र अनगार के वचनों को सुनकर वह शुक परिव्राजक सम्यक् बोध को प्राप्त हो गया और उसने फिर उन स्थापत्यापुत्र अनगार को वदना की स्तुति की उन्हें नमस्कार किया । वदना नमस्कार कर फिर वह उनसे इस प्रकार कहने लगा हे भदन्त ! मैं आप से केवलि प्रज्ञप्त धर्म सुनना चाहता हूँ । शुक परिव्राजक की इस प्रकार प्रार्थना सुन कर स्थापत्या पुत्र ने उसे धर्म

अतीत अने भविष्य (भूत, भावि) आ अने गण्डो भाव पड़ेवा के भाव, पुत्री साथे साथे प्रयुक्त थवा जेधये भाव शब्दथी व्यवहित (युक्त) थाने प्रयुक्त थवा न जेधये पक्ष अही तो ते अने शब्दो भाव शब्दनी व्यवहित (युक्त) थाने न प्रयुक्त थवा छे अथी अही भाव शब्द वर्तमान कालनो अर्थ भतावे छे लगवाननो अलिप्राय अवो न जणाय ७ (एत्य ण से सुए सवुद्धे धावच्चापुत्त वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी इच्छामिणं भते ! तुब्भे अतिए केवलिपन्नत्त धम्म निसामित्तए, धम्मकहा भाणियव्वा) आ प्रभावे स्थापत्या पुत्र अनगारना वचनो सालणीने शुक परिव्राजकने सम्यक्त्वबोध थयो अने तेणे स्थापत्यापुत्र अनगारने वदना कथा स्तुतिकरी अने तेभने नमस्कार कथा वदना अने नमस्कार करीने तेणे तेभने उछु के छे लहत । हु तभारा श्री भुअथी केवली प्रज्ञप्त धर्म ने सालणवानी जिहा राणुछु शुक परिव्राजक नी आवी विनती सालणीने स्थापत्यापुत्रे तेने धर्मकथा सालणानी अथा

વિજ્ઞાનરૂપા ઉત્પન્ના વિનષ્ટાથ વર્તમાનકાલેऽપિ ઉત્પદ્યન્તે વિનશ્યન્તિ ચ, તથા મ
વિષ્યત્ કાલે ઉત્પત્સ્યન્ત વિનશિષ્યન્તિ ચ, ત ઉપયોગા આત્મનઃ=કથચિદમિન્ના
સ્તેનાનેકભૂતભાવમવિકોઽપ્યહમસ્મીત્યેયમનિત્યપક્ષોપિ મમ દોષાય નાસ્તીત્યર્થઃ ।

યત્તુ-અવભાવા, સત્તાઃ પરિણામા યા ઇતિ વ્યાખ્યાત તદ્યુક્તમ્-

અતીતાના ભાવિના ચ ભાવાનામનેકાન્વયિતયાઽતીતાર્થકભૂતશબ્દાત્ પ્રાગેવ
પ્રયોક્તવ્યસ્ય ભાવશબ્દસ્ય તદનન્તર પ્રયોગો ન સગચ્છતે અપિ ચ-તન્મતેઽતીત
મવિકાના ભાવાન્વયિતયા તતઃ પૂર્વત્ર વા સદૈવ પ્રયોક્તવ્યયોરતીતમવિકશબ્દ-

ઉત્પન્ન होते हैं नष्ट होते हैं तथा भविष्यत् काल में जिस में उत्पन्न
होंगे और नष्ट होंगे वे उपयोग आत्मा से कथंचित् अभिन्न हैं ।
अतः इस उपयोग की अपेक्षा में आत्मा अनेक भूत, भाव, भविक
वालों भी हैं इस तरह आत्मा में अनित्यता भी आ जाती है सो यह
अनित्यता का पक्ष भी हमारे लिये दोषावह नहीं होता है । यहा पर
जो किन्हीं २ ने भाव शब्द का अर्थ सत्ता या परिणाम इस रूप से
किया है वह ठीक नहीं है । भाव शब्द यहा वर्तमान कालार्थ का ही
वाचक है सत्ता या परिणाम का वाचक नहीं । कारण जो अतीत और
भावी भाव होते हैं वे अनेकार्थान्वयी होते हैं इसलिये अतितार्थक
भूत शब्द से पहिले ही प्रयोक्तव्य भावशब्द का उस के बाद प्रयोग
करना सगन प्रतीत नहीं होता ।

अपिच-सत्ता या परिणामवादिषों के मत में अतीत और भवि
ष्यत् भावों को भावान्वयी होने के कारण अतीत और भविष्यत्

ઉત્પન્ન થયા છે નષ્ટ થયા છે તેમજ ભવિષ્ય કાળમાં પણ જેમાં ઉત્પન્ન થશે
અને નાશ પામશે તે ઉપયોગો આત્માથી કથચિત્ અભિન્ન છે એટલા માટે
આ ઉપયોગની અપેક્ષાએ હું ' આત્મા ' ઘણા ભૂત, ભાવ અને ભવિક
વાળો પણ છું આ રીતે આત્મામાં અનિત્યતા પણ આવી જાય છે તો આ
અનિત્ય ભાવનો પક્ષ પણ અમારા માટે સંદોષ ઝડી રાકાય નહિ કેટલાક ભાવ
શબ્દનો અર્થ સત્તા કે પરિણામ પણ કરે છે તે ઉચિત નથી અહીં ભાવ
શબ્દ ફક્ત વર્તમાન કાળનો વાચક છે સત્તા કે પરિણામ અર્થનો વાચક
નથી કારણ કે જે અતીત અને ભાવી ભાવો હોય તે અનેકાર્થાન્વયી
હોય છે, અથી અતીતાર્થક ભૂત શબ્દની પહેલા જ પ્રયુક્ત કરવામાં આવેલા
ભાવ શબ્દનો તેના પછી પ્રયોગ કરવો ઉચિત લાગતો નથી વળી સત્તા કે
પરિણામ વાદીઓના મતે અતીત અને ભવિષ્ય ભાવો ભાવાન્વરી હોવા બદલ

‘तएणसे इत्यादि ।

टीका—तत्तरतदनन्तर खलु स शुकः परिव्राजक स्थापत्यापुत्रस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निश्चय एव गक्ष्यमाण प्राकारेणावादीत्—इच्छामि खलु भन्त ! परिव्राजक-सहस्रेण सार्धं सपरिवृतो देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितुम् । भवतां समीपेऽहं परिव्राजकसहस्रेण सह केशोल्लुञ्चनेन मुण्डो भूत्वा दीक्षा ग्रहीतुमिच्छामि । ततः स्थापत्यापुत्रोऽवादीत्—हे देवानुप्रिय यथासुख यावत्= ईप्सित कार्ये दीक्षाग्रहणरूपे विनम्य मा कुरु, इत्येवमुक्तः सन् शुकः परिव्राजकः यावत्

तएण से सुए परिव्वायए इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से सुए) उस शुक (परिव्वायए) परिव्राजकने (थावच्चापुत्तस्स अतिए धम्म सोच्चा) स्थापत्यापुत्र अनगार के मुखसे श्रुत चारित्र रूप धर्मका श्रवण कर (णिसम्म) उसे हृदय में अवधारित कर (एव वयासी) उन से इस प्रकार कहा—(इच्छामि ण भते । परिव्वायगसहस्से णं सद्धिं सपरिवुडे देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता पव्वडत्तए) हे भदत । मैं आप देवानुप्रिय के पास इन १ एक हजार परिव्राजको के साथ २ मुडित होकर दीक्षित होना चाहता हूँ (अहासुह जाव उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तिडडय जाव धाउरत्ताओ य एगते एडेइ, एडित्ता सयमेव सिंह उप्पाडेइ उप्पाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते तेणेव उवागच्छइ) शुक परिव्राजक की इस भावना को जान कर स्थापत्यापुत्र अनगार ने उससे कहा हे देवानुप्रिय । तुम्हें जैसे सुख हो वैसा करो—इच्छित कार्य जो दीक्षा ग्रहण है उसमें तुम

(तएण से सुए परिव्वायए इत्यादि)

टीकार्थ—(तएण) त्थारमाद (से सुए) शुक (परिव्वायए) परिव्राजके (थावच्चापुत्तस्स अतिए धम्म सोच्चा) स्थापत्यापुत्र अनगारना श्री भुभ थी श्रुत्वा चारित्र रूप धर्मनु श्रवण करीने (णिसम्म) तेने सारी पेडे हृदयमा अवधारित करीने (एव वयासी) तेमने आ रीते उह्यु—(इच्छामि ण भते । परिव्वायगसहस्सेण सद्धिं सपरिवुडे देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता पव्वडत्तए) हे भदत । तमारी पासेथी ओउ उन्नर परिव्राजकेनी साथे हु मुडित थधने दीक्षित थवा थाडू छु (अहासुह जाव उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए तिडडय जाव धाउरत्ताओ य एगते एडेइ एडित्ता सयमेव सिंह उप्पाडेइ उप्पाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते तेणेव उवागच्छइ) शुक परिव्राजकी दीक्षित यवानी धरुआ साभणीने स्थापत्यापुत्र अनगारे तेमने उह्यु ‘हे देवानुप्रिय । तेमने जेम जमे तेम करे इच्छित कार्यमा ओटले के दीक्षाग्रहण करवाभा भोडु करे नाह आ रीते

અથ સ્થાપત્યાપુત્રો ધર્મકથા રથયતિસ્મ । નનુ ત્રીદશી ધર્મકથા મગવતોષ-
દિપ્તેતિ જિજ્ઞામાયામાહ—‘ ધમ્મકથા માણિયવ્વા ’ ઇતિ । ધર્મકથા મણિતઠ્ઠયા
ઔપપાતિકસૂત્રોક્તા ધર્મકથાઽત્ર યાન્યા સા ચોપાસકદશાઙ્ગસૂત્રસ્યાગારધર્મસત્તી-
વનીટીયાયા મયા વિસ્તરતો વ્યાખ્યાતા તતોઽયગન્તવ્યા ॥ ૨૪ ॥

મૂલમ્—તણ્ણં સે સુણ પરિવ્વાયણ થાવચ્ચાપુત્તસ્સ અતિણ
ધમ્મ સોચ્ચા ણિસમ્મ એવં વયાસો—ઇચ્છામિ ણં ભત્તે । પરિ-
વ્વાયગસહસ્સેણં સદ્ધિ સપરિવુડે દેવાણુપ્પિયાણં અંતિણ મુડે
ભવિત્તા પઠ્ઠહિત્તણ, અહાસુહં જાવ ઉત્તરપુરત્થિમે દિસીમાણ
તિહિત્તયં જાવ ધાઉરત્તાઓ ય ણગંતે ણ્ણેહ, ણ્ણિત્તા સયમેવ
સિહ ઉપ્પાહેહ, ઉપ્પાહિત્તા જેણેવ થાવચ્ચાપુત્તે અણગારે તેણેવ
ઉત્તાગચ્છહ, ઉત્તાગચ્છિત્તા મુડે ભવિત્તા જાવ પઠ્ઠહિત્તણ સામાહ-
યમાહિયાહ ચઉદસપુઠ્ઠવાહ અહિજ્જહ । તણ્ણં થાવચ્ચાપુત્તે
સુયસ્સ અણગારસહસ્સ સીસત્તાણ વિયરહ । તણ્ણં સે થાવ-
ચ્ચાપુત્તે સોગધિયાઓ નીલાસોયાઓ પહિનિક્ખમહ, પહિનિ-
ક્ખમિત્તા વહિયા જણવયવિહારં વિહરહિય ॥ સૂ. ૨૪ ॥

કથા સુનાઈ । કિસ પ્રકાર કી ધર્મકથા સ્થાપત્યા પુત્ર ને શુક પરિવ્રાજક
કો સુનાઈ સો ઘટ કથા ઔપપાતિક સૂત્ર મેં વર્ણિત હુઈ હૈ । વહી કથા
યહ સમજની ચાહિયે । ઉપાસકદશાંગસૂત્ર કી જો અગારધર્મ સ
જીવની ટીકા હૈ ઉસમે મૈને હસ કથા કો વિસ્તાર સે વ્યાખ્યાત
કિયા હૈ । સૂત્ર ॥ ૨૪ ॥

પત્યાપુત્ર અનગારે જે ધર્મકથા શુક પરિવ્રાજકને કહી સંભળાવી તેનું
વર્ણન “ઔપપાતિક સૂત્ર” માં કરવામાં આવ્યું છે જિજ્ઞાસુઓએ તે તથાથી
જાણી લેવી જોઈએ “ઉપાસકદશાંગ સૂત્ર” ની અગારધર્મ સંજીવની ટીકામાં
પશુ મેં આ કથાનું સવિસ્તર વર્ણન કર્યું છે ॥ સૂત્ર ‘ ૨૪ ’ ॥

‘तएणसे इत्यादि ।

टीका—ततस्तदनन्तर खलु स शुकः परिव्राजक स्थापत्यापुत्रस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निश्चय एव वक्ष्यमाण प्राकारेणावादीत्—इच्छामि खलु भन्त ! परिव्राजक-सहस्रेण सार्धं सपरिवृतो देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितुम् । भवतां समीपेऽहं परिव्राजकसहस्रेण सह केशोल्लुञ्चनेन मुण्डो भूत्वा दीक्षा ग्रहीतुमिच्छामि । ततः स्थापत्यापुत्रोऽवादीत्—हे देवानुप्रिय यथासुख यावत्= ईप्सित कार्ये दीक्षाग्रहणरूपे विलम्ब मा कुरु, इत्येवमुक्तं सन् शुकः परिव्राजकः यावत्

तएण से सुए परिव्यायण इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से सुए) उस शुक (परिव्यायण) परिव्राजकने (थावच्चापुत्तस्स अतिण धम्म सोच्चा) स्थापत्यापुत्र अनगार के मुखसे श्रुत चारित्र रूप धर्मका श्रवण कर (णिसम्म) उसे हृदय में अवधारित कर (एव वयामी) उन से इस प्रकार कहा—(इच्छामि ण भते । परिव्यायगसहस्से ण सद्धिं सपरिवुडे देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता पव्वहत्तण) हे भदत । मैं आप देवानुप्रिय के पास इन १ एक हजार परिव्राजको के साथ २ मुडित होकर दीक्षित होना चाहता हूँ (अहासुह जाव उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाण तिदउय जाव धाउरत्ताओ य एगते एडेइ, णडित्ता सयमेव सिंह उप्पाडेइ उप्पाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते तेणेव उवागच्छइ) शुक परिव्राजक की इस भावना को जान कर स्थापत्यापुत्र अनगार ने उससे कहा हे देवानुप्रिय । तुम्हें जैसे सुख हो वैसा करो—इच्छित कार्य जो दीक्षा ग्रहण है उसमें तुम

(तएण से सुए परिव्यायण इत्यादि)

टीकार्थ—(तएण) त्थारमाद (से सुए) शुक (परिव्यायण) परिव्राजके (थावच्चापुत्तस्स अतिण धम्म सोच्चा) स्थापत्यापुत्र अनगारना श्री भुय थी श्रुत्वा चारित्र रूप धर्मनु श्रवण करीने (णिसम्म) तेने सारी पेठे हृदयमा अवधारित करीने (एव वगामी) तेमने आ गीते उछु—(इच्छामि ण भते । परिव्यायगसहस्सेण सद्धिं सपरिवुडे देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता पव्वहत्तण) हे भदत ! तमारी पासेथी ओउ उन्नर परिव्राजकेनी साथे हु मुडित थधने दीक्षित थवा थाछु छु (अहासुह जाव उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाण तिडउय जाव धाउरत्ताओ य एगते एडेइ णडित्ता सयमेव सिंह उप्पाडेइ उप्पाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते तेणेव उवागच्छइ) शुक परिव्राजकी दीक्षित यवानी धम्मा सावणीने स्थापत्यापुत्र अनगारे तेमने उछु ‘हे देवानुप्रिय ! तमने जेम गमे तेम करे। धम्मिअत कार्यमा ओटवे के दीक्षाग्रहण करवामा मोउ उगे नाउ आ रीते

અથ સ્થાપત્યાપુત્રો ધર્મકથા રથયતિસ્મ । નનુ શ્રીદશી ધર્મકથા ભગવતોષ
દ્રિષ્ટેતિ જિજ્ઞાસાયામાહ- ' ધર્મકથા માણિયવ્યા ' ઇતિ । ધર્મકથા મણિતવ્યા
ઔપપાતિકસૂત્રોક્તા ધર્મકથાઽત્ર ગ્રાન્યા સા ઓપાસકદશાઙ્ગસૂત્રસ્યાગારધર્મસત્રી
વનીટીનાયા મયા વિસ્તરતો વ્યાખ્યાતા તતોઽયગન્તવ્યા ॥ ૨૪ ॥

મૂલમ્-તણ્ણં સે સુણ પરિવ્વાયણ થાવચ્ચાપુત્તસ્સ અંતિણ
ધમ્મ સોચ્ચા ણિસમ્મ એવં વયાસો-ઇચ્છામિ ણં ભતે । પરિ-
વ્વાયગસહસ્સેણં સદ્ધિ સપરિવુડે દેવાણુપ્પિયાણં અતિણ મુડે
ભવિત્તા પઠ્ઠહિત્તણ, અહાસુહં જાવ ઉત્તરપુરત્થિમે દિસીમાણ
તિહિહય જાવ ધાઉરત્તાઓ ય ઇગંતે ઇડેહ, ઇહિત્તા સયમેવ
સિહ ઉપ્પાડેહ, ઉપ્પાહિત્તા જેણેવ થાવચ્ચાપુત્તે અણગારે તેણેવ
ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા મુડે ભવિત્તા જાવ પઠ્ઠહિણ સામાહ-
યમાહયાહ ચ્ચઉદસપુઠ્ઠવાહ અહિજ્જહ । તણ્ણં થાવચ્ચાપુત્તે
સુયસ્સ અણગારસહસ્સં સીસત્તાણ વિયરહ । તણ્ણ સે થાવ-
ચ્ચાપુત્તે સોગધિયાઓ નીલાસોયાઓ પહિનિક્ખમહ, પહિનિ-
ક્ખમિત્તા વહિયા જણવયવિહાર વિહરહય ॥ સૂ. ૨૪ ॥

કથો સુનાઈ । કિસ પ્રકાર કી ધર્મકથા સ્થાપત્યા પુત્ર ને શુક પરિવ્રાજક
કો સુનાઈ સો યહ કથા ઔપપાતિક સૂત્ર મેં વર્ણિત હુઈ હૈ । વહી કથા
યહ સમજની ચાહિયે । ઉપાસકદશાંગસૂત્ર કી જો અગારધર્મ સ
જીવની ટીકા હૈ ઉસમેં મૈને હસ કથા કો વિસ્તાર સે વ્યાખ્યાત
કિયા હૈ । સૂત્ર ॥ ૨૪ ॥

પત્યાપુત્ર અનગારે જે ધર્મકથા શુક પરિવ્રાજકને કહી સંભળાવી તેનું
વર્ણન “ઔપપાતિક સૂત્ર” માં કરવામાં આવ્યું છે જિજ્ઞાસુઓએ તે ત્યાથી
જાણી લેવી જોઈએ “ઉપાસકદશાંગ સૂત્ર” ની અગારધર્મ સંબંધની ટીકામાં
પશુ મેં આ કથાનું સવિસ્તર વર્ણન કર્યું છે ॥ સૂત્ર ‘ ૨૪ ’ ॥

टीका—ततस्तदनन्तर सल्लस शुकः परित्राजक स्थापत्यापुरोऽवादितां नित्यं
निश्चय एव वक्ष्यमाण प्राकारेणावादीत्-ह्रामि मद्य मन्न ! परित्राजक-
ण सार्धं सपरिवृतो देवानुमियाणामन्तिके मृष्टो वा प्रविशति । अथ
पेडह परित्राजकसद्वस्त्रेण सह केशोल्लुञ्जनेन मृष्टो वा नीला ग्रीष्मिन्ना
र्थः । ततः स्थापत्यापुरोऽवादीत्-हे देवानुप्रिय यथाप्राप्तं मां हरे-
दीक्षाग्रहरूपे विद्म्य मा कुम्भ इत्येवमुक्तः सा शुकः परित्राजक-
सद्वस्त्रेण सह केशोल्लुञ्जनेन मृष्टो वा नीला ग्रीष्मिन्ना

टीकाार्थ—(तण्ण) हमके बाद (मे मुण) उस शुद्ध (परिव्रज) को
ब्राह्मणने (धावच्चापुत्तास्स अतिण यम्म सोन्हा) १० वर्षों तक
के मुखसे श्रुत चारित्र्य रूप धर्मका श्रवण कर (निरुत्तम, उच्चैश्चरं)
अवधारित कर (एव वयामी) उन में हम प्रवेश करना
भते । परिव्रज्यागसहस्से ण मल्लि अपमिमुंसे देवपुं, पुन सोन्हा
भवित्ता पव्वहत्ताण) हे भदत । मैं आप देवपुं, पुन सोन्हा
हजार परिव्रजको के साथ २ मुट्ठिन शंकरा देवपुं, पुन सोन्हा
(अहासुह जाव उत्तरपुरत्थिमे निसीयान्ति देवपुं, पुन सोन्हा)
य एगते एडेइ, एडित्ता सयमेव सिद्ध जायन्ति देवपुं, पुन सोन्हा
च्चापुत्ते तेणेव उवागच्छउह) शुक, निरुत्तम देवपुं, पुन सोन्हा
जान कर स्थापत्यापुत्र अनगार ने देवपुं, पुन सोन्हा
जैसे सुख हो वैसा करो—इच्छिमांस्स देवपुं, पुन सोन्हा

(तण्ण से सुण परिव्रज्यागसहस्से)

(तएण से सुण परि-यागण ३३१

टीका—(तएण) त्याच भा. (११ प्र.)

पुत्तमस अ ति ए धम्म सोच्चा)

ચારિત્ર રૂપ ધર્મનું શ્રવણ

ધારિત કરીને (એવ વગાઈ

परिव्वायगसाहस्सेण मद्दि २

इत्तए) डि लदत । तभ

થઈને દીક્ષિત થવા

तिड टय जाय धायर,

जेणेन यावच्चापुत्ते

સાબળીને સ્થાપ્યું

તેમ કશા ઇચ્છિત

ની બહાર થઈ

11

उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे गत्वा त्रिदण्डिका यावत् त्रिदण्डादीनि सप्तोपकरणानि यावत्
गैरिकधातुरक्तानि वस्त्राणि चैकान्ते एकान्तप्रदेशे ' पडेइ ' एदति=त्यजति एडि-
त्ता=त्यक्त्वा ' सयमेव सिह उप्पाडेइ ' स्वयमेव स्वहस्तेनैव शिखां जटारूपात्
उत्पाटयति=लुञ्चति ।

यत्तु-दीपिकाकारेण कस्तूरचन्द्रगणिना-यतिना ' सयमेव वसहि उप्पाडेइ ' इति स्वरूपोलकल्पित मूल प्रदर्श्य, दीपिकाया- 'स्वयमेव=स्वहस्ताभ्यामेव परिव्राजकवसतिः त्रिदण्डिकाना निवासार्हं यन्मठं तामुत्पाटयतिस्म समूलं विनाशितवानित्यर्थः ' इत्युक्तं, तदसमीचनम्-हस्तलिखितेषु मुद्रितेषु च प्राचीनपुस्तकेषु तदुक्तमूलपाठानवलोकनेन, सर्वत्र 'सिह' इत्येव पाठस्य दर्शनेन च उत्सूत्र प्र-

विलम्ब मत करो-इस प्रकार स्थापत्यापुत्र के कहने पर उस शुक परिव्राजकने ईशान कोण में जाकर अपने त्रिदण्डिका आदि सात उपकरणों को तथा गैरिक धातु से रक्त हुए वस्त्रों को एकान्त स्थान में रख दिया उन्हें छोड़ दिया—और छोड़कर फिर अपने आप अपनी जटारूप शिखा का उत्पाटन किया । दीपिका कार कस्तूर चन्द्र जी गणिने (सयमेव वसहि उप्पाडेइ " ऐसा कपोलकल्पित मूल पाठ दिखा कर दीपिका में जो ऐसा लिखा है कि उसने अपने हाथों से त्रिदण्डिकों के निवास योग्य मठ को समूल उगवा डाला " यह ठीक नहीं है कारण ऐसा पाठ हस्त लिखित एवं मुद्रित हुई प्राचीन प्रतियों में देखने में नहीं आता है । वहां तो "सिह" यही पाठ लिखा हुआ मिलता है । इस तरह से अपनी कपोलकल्पना से पाठ को कल्पित कर रखना यह उत्सूत्र प्ररूपणा है अपनी शिखा को उत्पाटित कर—लुञ्चितकर—वह शुक परिव्राजक

स्थापत्या पुत्रनी आज्ञा आलजीने शुक परिव्राजके ईशान कोणमा जध ने पोताना त्रिदंड वगेरे मात उपकरणो तेमज जेइ रगना वेओने ओक तरइ भूझी दीधो ओटले के आ जधी वस्तुओने तेणे सहाने भाटे त्याग करी दीधो ओना पछी तेणे जटा रूप पोतानी शिखानु लुञ्चन कथुं दीपिकाकार कस्तूर चन्द्र गणिओ " सयमेव वसहि उप्पाडेइ " आवो कपोलकल्पित मूल पाठ जतावता दीपिकाभा ओ प्रभाणे लभ्यु छे ते तेणे (परिव्राजके) पोताना डाथेथी त्रिदंडिकेना निवास (मठ) ने समूल नष्ट करी नाच्यो हुते । आ बात ठीक कही शक्य नहि केम के आ जतने पठ हस्तलिखित तेमज मुद्रित (छपाओली) जूनी प्रतीमा जेवा भजने नथी ते प्रतीमा तो ' सिह ' पाठज लभेओ भजे छे आवी रते पोतानी कपोलकल्पना भूवक असत्य बातोथी पाठकेने जममा भूझवाना प्रयासो करवा ते भरेभर " उत्सूत्रप्र

रूपणा जनितानन्तससारित्वापत्तेः । उत्पाटय यत्रैव स्थापत्यापुत्रोऽनगारस्तत्रैवो
पागच्छति, उपागत्य मुण्डोभूत्वा यावत् प्रजितः दीक्षां गृहीतवान् । सामायि
कादीन्येकादशाङ्गानि चतुर्दशपूर्वाणि अधीतेस्म । तदा-शुकस्य सार्यभूताः सहस्रप-
रिव्राजका अपि दीक्षा गृहीतवन्त । ततस्तदनन्तर खलु स्थापत्यापुत्रोऽनगार
सहस्र तदानीं दीक्षितान् सहस्रमनगारान् शुकस्य शिष्यत्वा वितरति, दत्तवान् ।
ततः खलु स स्थापत्यापुत्रः सौगन्धिकाया नगर्याः नीलाशोमात् नीलाशोकना
मकादुधानात् प्रतिनिष्क्रामति, निर्गच्छतिस्म, प्रतिनिष्क्रम्य निर्गत्य, बहिर्जनप-
दविहार देशमध्ये विहार विहरति करोतिस्म ॥ २५ ॥

जहा स्थापत्यापुत्र अनगार विराज मान थे वहा गया-(उवागच्छित्ता
मुढे भवित्ता जाव पव्वडण समाइयमाइयाडं चउदमपुव्वाह अहिज्जइ)
जाकर वह मुडित हो उनके पास दीक्षित हो गया । सामायिक आदि
ग्यारह अङ्गो को और चतुर्दश पूर्वोको उसने उनके पास पढा । शुक
के साथ रहे हुए उन १ हजार परिव्राजको ने भी भगवनी दीक्षा धारण
करली । (तएण थावच्चा पुत्ते सुयस्स अणगारसहस्स सीसत्ताए वियर-
इ) स्थापत्यापुत्र अनगार ने इन १ एक हजार साधुओ को शुक परि-
व्राजक का शिष्य बना दिया । (तएण से थावच्चापुत्ते सौगन्धियो नीला
सोयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिस्सा बहियो जणवयविहार विहरइ)
इसके बाद स्थापत्यापुत्र अनगार उस सौगन्धिका नगरी से, नीला
शोक उद्यान से निकले और निकल कर बाहर जनपदों में विहार
करने लगे ॥ सू० २५ ॥

पणुा " अ छे पोतानी शिणानु बुधन उरीने शुऽ परिनाजक न्या स्थापत्या
पुत्र अनगार हुता त्या गया (उवागच्छित्ता मुढे भवित्ता जाव पव्वडण
समाइयमाइयइ चउदमपुव्वाह अहिज्जइ) था अछने मुडित थछने
तेमनी पासैथी दीक्षा भेगरी लीधी सामयिक पगेदे अगियार अगे
ने। तेमअ चतुर्दश पूर्वोने। तेछे स्थापत्यापुत्र अनगार पासै रहिने अभ्यास
कर्यो शुऽ नी साथै रहैने रा ओउ हुत्तर परिनाजकोअे पणु लागवती दीक्षा
स्वीकारी लीधी (तएण थावच्चापुत्ते सुयस्स अणगारसहस्स सीसत्ताए वियरइ)
स्थापत्यापुत्र अनगारे ते ओउ हुत्तर साधुओने शुऽ परिनाजकना अ शिष्यो
बनाव्या (तएण से थावच्चापुत्ते सौगन्धियो नीलासोयाओ पडिनिक्ख
मइ, पडिनिक्खमिस्सा बहियो जणवयविहार विहरइ) त्याउ बाद स्थापत्यापुत्र
अनगार सौगन्धिका नगरी अने नीलाशोका उद्याननी पछाउ थछने भील जन
पद (देश) भा विहार करवा नीकल्या ॥ सूत्र २५ ॥

મૂલમ્-તણ્ણ સે થાવચ્ચાપુત્તે અણગારસહસ્સેણ સદ્ધિ સંપ-
રિવુડે જેણેવ પુંડરીય પઠ્ઠવણ તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા
પુડરીય પઠ્ઠવય સણિય ૨ દુરુહહ, દુરુહિત્તા મેઘઘણસનિગાસ
દેવસન્નિવાયં પુઠ્ઠવિસિલાપટ્ટય જાવ પાઓવગમણ ણુવન્ને,
તણ્ણ સે થાવચ્ચાપુત્તે વહૂણિ વાસાણિ સામન્નપરિયાગં પાઠ
ણિત્તા માસિયાણ સલેહણાણ સદ્ધિં ભત્તાહ અણસણાહ છેદિત્તા
જાવ કેવલવરનાણદંસણસમુપ્પાહેત્તા તઓ પચ્છા સિદ્ધે
જાવ પહીણે ॥ સૂ. ૨૭ ॥

ટીકા-‘તણ્ણ સે’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स स्थापत्यापुत्रोऽनगारहस्तेन
सार्धं सपरिवृतो ग्रामानुग्रामं विहरन् यत्रैव पुण्डरीकं पुण्डरीकनामकं पर्वतस्त
त्रैवोपागच्छति, उपागत्य च पुण्डरीकं पर्वतं शनैः शनैर्दूरोहति-आरोहति, दूरुह्य
‘मेघघणसनिगास’ मेघघनसनिकाशं मेघानां घनं समूहस्तद्वत् कालवर्णं ‘देवस-

તણ્ણ સે થાવચ્ચા પુત્તે इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તણ્ણ) ઈસકે ગાદ (સે થાવચ્ચાપુત્તે) યે સ્થાપત્યાપુત્ર
અણગાર સહસ્સેણ સદ્ધિ સપરિવુડે) જગાર અનગાર કે સાથ ૨ ગ્રામાનુ
ગ્રામવિહાર કરતે હુણ (જેણેવ પુંડરીય પઠ્ઠવણ) જદા પુંડરીક પર્વત થા
(તેણેવ ઉવાગચ્છહ) વહા આયે (ઉવાગચ્છિત્તા પુડરીય પઠ્ઠવય સણિય
૨ દુરુહહ) વહા આકર વે ડસ પુંડરીક પર્વત પર ધીરે ૨ ચઢે (દુરુ
હિત્તા મેઘઘણસનિગાસ દેવસનિવાય પુઠ્ઠવિસિલાપટ્ટય જાવ પાઓવ

‘તણ્ણ સે થાવચ્ચાપુત્તે ।’ इत्यादि ॥

ટીકાર્થ-(તણ્ણ) ત્યારબાદ (સે થાવચ્ચાપુત્તે) સ્થાપ ત્યાપુત્ર (અણગારસહસ્સેણ
સદ્ધિ સપરિવુડે) એક હજાર અણગારની સાથે એક ગામથી બીજે ગામ
વિહાર કરતા (જેણેવ પુંડરીય પઠ્ઠવણ) જ્યાં પુંડરીક પર્વત હતો (તેણેવ
ઉવાગચ્છહ) ત્યાં આવ્યા (ઉવાગચ્છિત્તા પુડરીય પઠ્ઠવય સણિય ૨ દુરુહહ) ત્યાં
પહોંચીને તેઓ પુંડરીક પર્વતપર ધીમે ધીમે ચઢવા માડ્યા (દુરુહિત્તા મેઘઘણ
સનિગાસ દેવસનિવાય પુઠ્ઠવિસિલાપટ્ટય જાવ પાઓવગમણ ણુવન્ને) ચઢીને તેમણે

त्रिमाय ' देवसन्निपात=निर्वाणाद्युत्सवसमये यत्र देवा समागत्य मिलन्ति, देवा
ना सन्निपातः समिलनं यत्र त ' पृथिवीशिलापट्टक प्रतिलेख
यित्वा यावत् ' पादपोषगमनं पुनर्ने ' पादपोषगमनमतुपाप्त. सहस्रशिष्यै सह
पादपोषगमनसस्तारक कृतवान् । तत खलु स स्थापत्यापुत्रो गृहनिर्वाणिसामान
परियाग ' आमण्यपर्याय=चारित्र्यपर्याय ' पाउणिक्ता ' पालयित्वा मासिक्या
सलेखनया पण्डितानि अनशनेन छित्त्वा यावत् - केवलवरज्ञानदर्शने सति
' समुष्पाडेत्ता ' समुत्पाद्य अन्तसमये केवलज्ञाना केवलदर्शनं च संप्राप्य ततः
पश्चात् सकलकर्मक्षये सिद्धः मुक्तिं प्राप्तः यावत् बुद्धो मुक्तः सर्वदुःख प्रहीणः
जन्मजरामरणादिदुःखरहितो जात ॥ २६ ॥

गमनं पुनर्ने) चढकर उन्होंने ने मेघ समूह के समान कृष्ण वर्णवाले
तथा निर्वाण आदि के उत्सव के समय जहां देव एकत्रित होते हैं ऐसे
पृथिवी शिलापट्टक पर प्रतिलेखना कर यावत् पादपोषगमन सथारा
धारण कर लिया। साथ के उन १ हजार साधुओं ने भी पादपोषगमन
सथारा ले लिया। (तर्ण से आवच्छादुत्ते बहुणि वासाणि सामन्न परि
याग पाउणिक्ता मासियाण सलेहणाए सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदिक्ता
जाव केवलवरनाणदसण समुष्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे जाव पहीणे)
इस तरह उन स्थापत्यापुत्र अनगार ने अनेक वर्षों तक आमण्य पर्याय
का पालन करके एक मान की सलेखना से साठ भक्तों का अनशन
द्वारा छेदन कर यावत् अन्त समय में केवल ज्ञान केवल दर्शन प्राप्त
कर लिया। उन्हें प्राप्त कर फिर वे सकल कर्मों के क्षय होने पर सिद्ध
बन गये। यहा यावत् शब्द से बुद्ध मुक्त सर्व दुःख प्रहीण जन्मजरा
मरणादि दुःख रहितो जाता " इन पदों का समग्र हुआ है । सू० २६॥

मे० समूह नेवी क्षणी तेमन् निर्वाण वगेत्तेना उत्भवना वणते देवे। नया ओ० ४८
थाय छे नेवी शिलापर प्रतिलेखना करीने पादपोषगमन सथारे नेवीयाये तेमनी
साथे ओ० ४९ उत्तर साधुओओ पाणु (तर्ण से आवच्छादुत्ते बहुणि वासाणि सामन्न परि
रियाग पाउणिक्ता मासियाए सलेहणाए सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदिक्ता जाव केवलवर
नाणदसण समुष्पाडेत्ता तओपच्छा सिद्धे जाव पहीणे) आ रीते स्थापत्यापुत्र
अनगारे धण्णा वर्षो सुधी आणएय पययनु पालन करीने ओ० भट्टिनानी
सलेखनाथी साछि ७८तोनु अनशन वडे छेदन करीने छेवटे केवण ज्ञान केवण
दर्शन मे० १०० त्थार भाद गथा उमो क्षय यया त्थारे तेमने सिद्ध पद भ० १०
अही ने 'यावत्' ग० ४८ आ० १० तेथी (बुद्ध मुक्त सर्वदुःखप्रहीण जन्म
जरामरणादिदुःखरहितो जात) आ पहीने स० ४८ थये छे ॥ सू० २६ ॥

मूलम्-तएणं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेण सद्धि संप-
रिवुडे जेणेव पुडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
पुडरीय पव्वय सणिय २ दुरुहइ, दुरुहित्ता मेघघणसनिगासं
देवसन्निवायं पुढविसिलापट्ठयं जाव पाओवगमण पुव्वन्ने,
तएण से थावच्चापुत्ते वहूणि वासाणि सामन्नपरियाग पाउ
णित्ता मासियाए सलेहणाए सद्धि भत्ताइ अणसणाइ छेदित्ता
जाव केवलवरनाणदसणसमुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे
जाव पहीणे ॥ सू० २७ ॥

टीका-‘तएण से’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु म स्थापत्यापुत्रोऽनगारहस्त्रेण
साधे सपरिवृतो ग्रामानुग्राम विहरन् यत्रैव पुण्डरीक पुण्डरीकनामक पर्वतस्त
त्रैवोपागच्छति, उपागत्य च पुण्डरीक पर्वत शनैः शनैर्दूरोहति-आरोहति, दूरुह्य
‘मेघघणसनिगास’ मेघघनसनिगास मेघानां घन समूहस्तद्वत् कालवर्णं ‘देवस

तएण से थावच्चा पुत्ते इत्यादि ।

टीकार्थ- (तएण) ईसके बाद (से थावच्चापुत्ते) ये स्थापत्यापुत्र
अणगार सहस्सेणं सद्धि सपरिवुडे) हजार अनगार के साथ २ ग्रामानु
ग्रामविहार करते हुए (जेणेव पुडरीए पव्वए) जदा पुडरीक पर्वत था
(तेणेव उवागच्छइ) वहा आये (उवागच्छित्ता पुडरीय पव्वय सणिय
२ दुरुहइ) वहा आकर वे उस पुडरीक पर्वत पर धीरे २ चढे (दुरु
हित्ता मेघघणसनिगास देवसन्निवाय पुढविसिलापट्ठय जाव पाओव

‘तएण से थावच्चापुत्ते ।’ इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) त्थारभाह(से थावच्चापुत्ते) स्थाप यापुत्र (अणगारसहस्सेण
सद्धि सपरिवुडे) ओक ऊँतर आणुगारनी साथे ओक गामथी भीजे गाम
विहार करता (जेणेव पुडरीए पव्वए) तथा पुडरीक पर्वत डते। (तेणेव
उवागच्छइ) तथा आया (उवागच्छित्ता पुडरीय पव्वय सणिय २ दुरुहइ) तथा
पडाँचीने तेओ पुडरीक पर्वतपर धीमे धीमे चढवा भाडथा (दुरुहित्ता मेघघण
सनिगास देवसन्निवाय पुढविसिलापट्ठय जाव पाओवगमण पुव्वन्ने) यहीने तेमणे

નિરાય ' દેવસનિપાત=નિર્વાણાદ્યુત્સવસમયે યત્ર દેવા સમાગત્ય મિલન્તિ, દેવા
ના સનિપાતઃ સમિલન યત્ર ત ' પૃથ્વિસિન્ધાપટ્ટય ' પૃથિવીશિલાપટ્ટક પ્રતિલેખ
યિત્વા યાવત્ ' પાઓપગમણ ણુવન્ને ' પાદપોપગમનમનુપાસ. સહસ્રશિષ્યૈ સહ
પાદપોપગમનસસ્તારક કૃતવાન્. તત્ત્વલ્લુ સ સ્થાપત્યાપુત્રો ગૃહનિર્વાણિસામાન્ન
પરિયાગ ' શ્રામણ્યપર્યાય=વાસ્ત્રિપર્યાય ' પાઙ્ગિત્તા ' પાલયિત્વા માસિક્યા
સલેખનયા પઠ્ઠિભક્તાનિ અનશનેન ડિત્ત્વા યાવત્ - કેવલ્લવરજ્ઞાનદર્શને સત્તિ
' સમુપ્પાઢેત્તા ' સમુત્પાદ્ય અન્તસમયે કેવલજ્ઞાના કેવલ્લદર્શન ચ સપાપ્ય તતઃ
પશ્ચાત્ સકલકર્મક્ષયે સિદ્ધઃ મુક્તિ પ્રાપ્તઃ યાવત્ બુદ્ધો મુક્તઃ સર્વદુ સ્વ પ્રહીણઃ
જન્મજરામરણાદિદુઃસ્વરહિતો જાત ॥ ૨૬ ॥

ગમણ ણુવન્ને) નહકર ઉન્હોં ને મેઘ સમ્રટ્ કે સમાન કૃષ્ણ વર્ણવાલે
તથા નિર્વાણ આદિ કે ઉત્સવ કે સમય જહા દેવ એકત્રિત હોતે હૈં એસે
પૃથિવી શિલાપટ્ટક પર પ્રતિલેખના કર યાવત્ પાદપોપગમન સથારા
ધારણ કર લિયા। સાય કે ઉન ૧ હજાર સાધુઓં ને બી પાદપોપગમન
સથારા લે લિયા। (તણેં સે યાવચ્ચાપુત્તે વહુણિ વાસાણિ સામાન્ન પરિ
યાગ પાઙ્ગિત્તા માસિયાણ સલેહ્ણાણ સદ્ધિં ભત્તાઈ અણસણાણ છેદિત્તા
જાવ કેવલ્લવરનાણદસણ સમુપ્પાઢેત્તા તઓ પચ્છા સિદ્ધે જાવ પહીણે)
હસ તરહ ઉન સ્થપત્યાપુત્ર અનગાર ને અનેક વર્ષોં તક શ્રામણ્ય પર્યાય
કા પાલન કરકે ણક માસ કી સલેખના સે સાઠ ભક્તો કા અનશન
દ્વારા છેદન કર યાવત્ અન્ત સમય મે કેવલ જ્ઞાન કેવલ દર્શન પ્રાપ્ત
કર લિયા। ઉન્હેં પ્રાપ્ત કર ફિર વે સકલ કર્મોં કે ક્ષય હોને પર સિદ્ધ
બન ગયે। યહા યાવત્ શબ્દ સે બુદ્ધ મુક્ત સર્વ દુઃસ્વ પ્રહીણ જન્મજરા
મરણાદિ દુ સ્વ રહિતો જાતા " ઇન પદો કા મગ્રહ હુઆ હૈં । સૂ. ૨૬ ॥

મે. ૧ સમૂહ એવી ડાળી તેમજ નિર્વાણ વગેરેના ઉત્કૃષ્ટતા વખતે દેવો જ્યાં એકઠા
થાય છે એવી શિલાપટ્ટ પ્રતિલેખના કરીને પાદપોપગમન સથારે સ્વીકાર્યો તેમની
સાથે એક હજાર સાધુઓએ પણ (તણે સે યાવચ્ચાપુત્તે વહુણિ વાસાણિ સામાન્નપ
રિયાગ પાઙ્ગિત્તા માસિયાણ સલેહ્ણાણ સદ્ધિં ભત્તાઈ અણસણાણ છેદિત્તા જાવ કેવલ્લવર
નાણદસણ સમુપ્પાઢેત્તા તઓ પચ્છા સિદ્ધે જાવ પહીણે) આ રીતે સ્થાપત્યાપુત્ર
અનગારે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રાવણ્ય પર્યાયનું પાલન કરીને એક મહિનાની
સલેખનાથી સાઈઠ ભક્તોનું અનશન વડે છેદન કરીને છેવટે કેવળ જ્ઞાન કેવળ
દર્શન મેળવ્યું ત્યાર બાદ બધા કર્મો ક્ષય થયા ત્યારે તેમને સિદ્ધ પદ મળ્યું
અહીં જે 'યાવત્' શબ્દ આવ્યો છે તેથી (બુદ્ધ મુક્ત સર્વદુઃસ્વપ્રહીણ જન્મ
જરામરણાદિદુઃસ્વરહિતો જાત) આ પદોનો સચ્છ થયો છે ॥ સૂ. ૨૬ ॥

मूलम्—तएण से सुए अन्नया कथाइं जेणेव सेलगपुरे नयरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव समोसरिए परिसा निग्गया से-लओ निग्गओ धम्म सोच्चा देवाणुप्पिया । पथगपामोक्खाइ पंच मंतिसयाइ आपुच्छामि मंडुयं च कुमार रज्जे ठावेमि, तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुडे भवित्ता आगाराओ अण-गारयं पठ्वयामि, अहासुह, तए ण से सेलए राया सेलागपुरं नयर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव वाहि-रिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे सन्निसन्ने, तएण से सेलए राया पथगपामोक्खे पंच मति-सए सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । मए सुयस्स अंतिए धम्म णिसंते सेविय धम्मो इच्छिए पडि च्छिए अभिरुइए अहण देवाणुप्पिया । ससारभयउव्विग्गे जाव पठ्वयामि, तुव्वं णं देवाणुप्पिया । कि करेह कि ववसाह कि वा ते हियइच्छति ?

तएण ते पथगपामोक्खा सेलगराय एव वयासी—जइणं तुव्वं देवाणुप्पिया । ससारभयउव्विग्गा जाव पठ्वयह अम्हाण देवा-णुप्पिया । किमन्ने आहारे वा आलवे वा अम्हेऽवि य णं देवाणुप्पिया । ससारभयउव्विग्गा जाव पठ्वयामो, जहा देवाणुप्पिया । अम्ह बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य जाव तहा णं पठ्वतियाण वि समणाण बहुसु जाव चक्खुभूए ।

तएण से सेलगे पथगपामोक्खे पंचमतिसए एव वयासी

जइणं देवाणु०तुवमे ससार जाव पव्वयह त गच्छह णं देवा०
सएसु २ कुडुंवेसु जेट्ठे पुत्ते कुडुवमज्जे ठावेत्ता पुरिससहस्स
वाहिणिओ सीयाओ दुरूढा समाणा मम अंतियं पाउवभव-
हत्ति, तहेव पाउवभवति ।

तएणं से सेलए राया पच मत्तिसयाइं पाउवभवमाणाइं
पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे कोडुविय पुरिमे सदावेइ, सदावित्ता एव
वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । मडुयस्स कुमारस्स महत्थ
जाव रायाभिसेय उवट्ठवेह० अभिसिचइ जाव राया यावट्ठ
विहरइ ॥ सू० २७ ॥

टीका—ततस्तदनन्तर खलु स शुकोऽन्यथा=अन्यस्मिन् काले, कदाचित्
कस्मिंश्चित् समये यनैव शैलकपुर नाम नगर यत्रैव सुभूमिभाग=सुभूमिभागनामकम्
उद्यान ' तेणेव समोसरिण ' तनैव समवसृतः समागत । परिषन्निर्गता=शैलकपुर
नगरनिवासिना जनानासहतिः शुकनामाऽनगार समागत श्रुत्वा त वन्दितु शैलक
पुरनगराद्वहिर्नि सृतेत्यर्थ । शैलकोऽपि निर्गतः शैलकनामा नृपोऽपि शुकमनगार
वन्दितु नगराद्वहिर्नि.सृत' । निर्गत्य यत्रैव शुकोऽनगारस्तत्रैवोपागच्छति । अथ

‘तएणं से सुए’ इत्यादि

टीनार्थ—(तएण) इसके बाद (से सुए)वे शुक अनगार(अन्नया कयाइ)
किसी एक समय (जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव समोसरिण)
जहा शैलकपुर नाम का नगर और उस में भी जहा सुभूमिभाग नाम
का उद्यान था वहा विहार करते २ आये (परिमा निगया सेलओ
निगओ, धम्म सोच्चा जाव देवाणुप्पिया पथगपामोक्खाइ पचमत्तिस

(तएण से सुए इत्यादि ।

टीकार्थ—‘ तएण) त्याख्याइ (से सुए) शुक अनगार (अन्नया कयाइ) के।
ओक वप्पते (जेणेव सेलकपुरे नयरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव समा
सरिण) न्या शैलक पुर नामे नगर अने तेमा पणु न्या सुभूमि भाग नामे
उद्यान डेतु त्या विहार उरता उरता आल्या (परिमा निगया सेलओ निग
ओ धम्म सोच्चा जाव देवाणुप्पिया पथगपामोक्खाइ पचमत्तिसयाइ आपु

शुकनाम्नाऽनगारेण धर्मकथा कथिता । परिपत् प्रतिगता । तत शैलको राजा-धर्म
श्रुत्वा यावत्-सबुद्धः शुकमेवमादीत्-देवानुप्रिय । पाथकप्रमुखानि पञ्च मन्त्रि
शतानि पञ्चशतसंख्यकान् पाथकादीन् मन्त्रिणः आपृच्छामि, मन्दूक च कुमार
स्वपुत्र राज्ये स्थापयामि, ततः पश्चात् देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डोभूत्वाऽगारादन
गारता प्रजामि=स्वीकरोमि । शुक जाह-यथामुख=प्रजयाग्रहणे विलम्बो न
करणीय इत्यर्थः । तत खलु स शैलको राजा शैलकपुर नगरमनुप्रविशति, अनुपवि-
श्य यत्रैव स्वक=निज गृह यत्रैव गच्छा 'उद्वानशाला' उपस्थानशाला=सभा

याह आपृच्छामि महुयच कुमारे रज्जे ठावेमि तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं
अतिए मुडे भवित्ता आगाराओ अणगारय पव्वयामि) इनका आगमन
सुनकर शैलकपुर नगर निवासी जनों का समूह उनके वदना करने
के लिये नगरसे बहार निकला । शैलकपुर राजा भी निकले । ये सब
चलकर वहा आये जहा वे शुक अनगार विराज मान थे । शुक अन
गार ने सब को धर्म कथा सुनाई । सुनकर सबलोग वापिस चले गये ।
शैलक राजा धर्म का उपदेश सुनकर यावत् प्रतिबुद्ध हो गया । उसने
शुक अनगार से इस प्रकार कहा—देवानुप्रिय । मैं पाथक प्रमुख
पाच सौ मन्त्रियो से पूछलेता हूँ और अपने पुत्र मडूक कुमार को
राज्यमे स्थापित कर देता हूँ । बाद में मैं देवानुप्रिय आपके पास
मुडित होकर अगार अवस्था से अनगार अवस्था धारण करलूगा ।
(अहासुह तएण से सेलण राया सेलगपुर नयर अणुपविसइ, अणु

च्छामि महुयच कुमारे रज्जे ठावेमि तओ पच्छा देवाणुप्पियाण अतिए मुडे
भवित्ता आगाराओ अणगारय पव्वयामि) तेभनु आगमन सालणीते शैलक
पुरना नागरिकेना समूहो तेमनी वदना करवा माटे ञ्हार नीकल्या शैलक
पुरना राजा पण वदन माटे ञ्हार ञ्वा नीकल्या तेओ ञ्धा ञ्वा शुक
परिजड विराजमान हुता त्या पडोअ्या शुक परिजडके ञ्धाने धर्मकथा
सालणीवी धर्मकथा सालणी ने ञ्धा पोत पोताने स्थाने ञ्ता रद्धा धर्म
कथा सालणीने शैलक राजा ने ञ्हा थयो तेमणे शुड अनगारने वितती
करता कहु उे—“ देवानुप्रिय । हु मारा पायसो मन्त्रीओने पूछी लउ छु अने
मारा पुत्र मडूक कुमारने राज्यमिडासने जेसाडी दड त्यार प ग्री तमारी
पासे मुडित थधने हु अगार अवस्था त्यओने अनगार अवस्था धारण
करीश (अहासुह तएण सेसेलए राया सेलगपुर नयर अणुपविसइ अणुपवि

स्थान, तत्रैवोपागच्छति. उपागत्य सिंहासने 'सन्निसन्ने' सन्निपण्ण = उपविष्टः ।-
ततः खलु स शैलको राजा पान्थकप्रमुखाणि पञ्चमन्त्रिशतानि = पञ्चशतसंख्यकान्
पान्थकादीन् मन्त्रिणं शब्दयति = आह्वयति, शब्दयित्वा = आह्वय एव वक्ष्यमाणप्रका-
रेण, अवादीत्-एव खलु हे देवानुप्रियाः ! मया शुकस्य = शुकनाम्नोऽनगारस्या-
न्तिके = समीपे धर्म = श्रुतचारित्रलक्षण 'णिसते' निशान्तः = श्रुतः, सोऽपि च
धर्मः 'इच्छिण' इच्छ = वाञ्छितः, 'पडिच्छिण' प्रतीप्सितः = ग्रहीतुमभिलषितः
'अभिरुडण' अभिरुचितः = प्रत्यात्मप्रदेशे रचिविपयीभूतः, अहं खलु हे देवानु-
प्रिया ! 'ससारभयउव्विग्गे' समारभयोद्विग्न जन्मजरामरणेष्टवियोगानिष्टसयो-
गादिभयोद्विग्नः सन् यावद् प्रव्रजामि = दीक्षा ग्रहिष्यामि । हे देवानुप्रिया ! यूय-
किं करिष्यथ किं व्यवमायिष्यथ = कीदृशं व्यवसायमुद्यमं करिष्यथ, किं वा युष्माक-
हृदययेप्सित इति, भयता मनोगतोविचारः कीदृशो वर्तते इत्यर्थः । ततः खलु ते

पविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उट्टानसाला तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे सन्निसन्ने, तएण से सेलए राया
पथगपामोक्खे पचमत्तिसए सदावेइ) शैलक राजा के इस प्रकार
के विचार सुन कर शुक अनगार ने उनसे कहा-यथा सुख-अर्थात्
शुक-अनगार की इस तरह दीक्षा ग्रहण करने में अनुमति प्राप्त कर
शैलक राजा वहां से शैलक पुर नगरमें आये । आकर वे जहां अपना
घर और जहां अपनी बाहिर उपस्थानशाला सभास्थान-या वहां गये-
वहां जाकर उन्होंने सिंहासन पर बैठकर पांचसौ पांथक प्रमुख मन्त्रियों
को बुलाया-(सदावित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया मए
सुयस्स अतिण धम्मे णिसते से विय धम्मे इच्छिण पडिच्छिण, अभि-
रुडण अहं ण देवाणुप्पिया ! समारभयउव्विग्गे जाव पच्चयामि तुम्हे ण

सित्ता जेणेव मए गिहे जेणेव बाहिरिया उट्टानसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
सीहासणे सन्निसन्ने, तएण से सेलए राया पथगपामोक्खे पचमत्तिसए सदावेइ)
शैलक राजाना आ जातना विगारे आलणीने शुड अनगारे तेभने उल्लु-
" यथासुण " ओट्ठे उ तभने जेमा सुण भणे ते करे शुड पणिनाउकनी
दीक्षा ग्रहण करवागाटेनी अनुमति भेजवीने शैलक राज त्थाथी शैलकपुर नग-
रमा आव्या त्या आवीने तेओ भीधा पोताना भडेलनी अहर उपस्थान
गाणा ओट्ठे के मत्तामन उतु त्या पडाव्या त्या जेधने तेभणे मिडामन
उपर जेमीने पायरा पायड प्रमुण भत्राओने जेलाव्या (सदावित्ता एव
वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मए सुयस्स अतिण धम्मे णिसते से वि उ धम्मे
इच्छिण पडिच्छिण अभिरुडण अहं ण देवाणुप्पिया ! समारभयउव्विग्गे जाव पच्च-

પાન્થક્રમમુખા પાન્થકાદયો મન્ત્રિણઃ શૈલક રાજાનમેવમદન યદિ સ્વલુ યૂય દેવા
નુપ્રિયા ! સસારભયોદ્વિગ્નાઃ યાત્રત્ પ્રત્રજત=પ્રવ્રજિત્ય, તર્હિ અસ્માક હે દેવાનુ
પ્રિય ! =હે રાજન્ ! કોડન્ય આધારઃ=આશ્રયો ગા, આલમ્પ=હુ ત્વાદૌ પ્રપતતાં-
ધારકઃ વા ભવિષ્યતિ, યતોડસ્માક ભયાનેપશરણમ્, ઇત્યર્થઃ । વયમપિ ચ સ્વલુ
હે દેવાનુપ્રિય ! સમારભયોદ્વિગ્ના યાત્રદ્ ભવદ્ધિ સાર્ધમેવ પ્રત્રજામઃ=દીક્ષા ગ્રહી-

દેવાણુપ્પિયા ! કિં કરેહ કિંવચસહ, કિં વા તે હિચ્છન્તિ ?) બુલાકર
તનસે એસા કહા-હે દેવાણુપ્રિયો ? મૈને શુક અનગાર કે પામ શ્રતચારિત્ર
રૂપ ધર્મ કા ઉપદેશ સુના હૈ-વહ મુક્ષે વહુત અચ્છા લગા હૈ । મેરી
ઇચ્છા તસે ગ્રહણ કરને કી હો રહી હૈ હર ંક આત્મપ્રદેશમેં વહ મેરી
રુચિકા વિષયભૂત બન ગયા હૈ । હે દેવાનુપ્રિયો ! મૈ સસાર કે ભય સે
જન્મ જરા મરણ ઇષ્ટ વિયોગ અનિષ્ટ સયોગ આદિ કે હર સે હસ
સમય ઉદ્વિગ્ન હો રહા હું અતઃ મૈ સયમ ધારણ કરુંગા । અતઃ હે દેવા-
નુપ્રિયો ! તુમ કયા કરોગે , કેસા ઉદ્યમ કરોગે-આપલોગોં કા મનોગત
વિચાર કેસા કયા હો રહા હૈ ? (તણ તે પથગપામોવલા સેલગ રાય
એવ વયાસી) રાજા કી હસ પ્રકાર વાણી સુનકર તન પાન્થક્ર પ્રમુખ
પાચસૌ મન્ત્રિયોં ને તસ શૈલક રાજા સે હસ પ્રકાર કહા-(જહ્ણ તુબ્મે
દેવાણુપ્પિયા ! સસારભઉવિગ્ના જાવ પવ્વચહ, અમ્હાણ દેવાણુપ્પિયા !
કિમન્ને આહારે વા અલવે વા અમ્હે વિ ય ણ દેવાણુપ્પિયા ! સસારભઉ
વિગ્ના જાવ પવ્વચામો) હે દેવાનુપ્રિય ! યદિ આપ સસાર ભય સે

ચામિ તુબ્મેણ દેવાણુપ્પિયા ! કિં કરેહ કિં વચસહ કિંવાતે હિચ્છન્તિ !) બોલાવી
ને રાજાએ તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! મે શુક અનગર પાસેથી શ્રુતચારિત્ર
રૂપ ધર્મને ઉપદેશ સાંભળ્યો છે તેનાથી હું બહુજ પ્રભાવિત થયો છું શ્રુત
ચારિત્ર રૂપ ધર્મને સ્વીકારવાની મારી તીવ્ર ઇચ્છા છે, મારા આત્માના પ્રત્યેક
ભાગમાં શ્રુત ચારિત્ર રૂપ ધર્મ વ્યાપ્ત થઈ ગયો છે હે દેવાનુપ્રિયો ! હું
સસારના ભયથી જન્મ જરા (ઘડપણ) ઇષ્ટજનનો વિયોગ, અનિષ્ટ સયોગ
વગેરેની બીકથી અત્યારે વ્યાકુળ થઈ રહ્યો છું તેથી હું સયમ ધારણ કરીશ
હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે શુ કરશો ? તમે શો ઉદ્યોગ કરશો ? આ વિષે તમારા
મનમાં કંઈ જાતના વિચારો આવવા માડ્યા છે ? (તણ તે પથગપામોવલા સેલગ
રાય એવ વયાસી) રાજાની વાણી સાંભળીને પાન્થક્ર પ્રમુખ પાન્થસૌ મન્ત્રીઓએ
શૈલકરાજને આ પ્રમાણે કહ્યું—(જહ્ણ તુબ્મે દેવાણુપ્પિયા ! સસારભઉવિગ્ના જાવ
પવ્વચહ અમ્હાણ દેવાણુપ્પિયા ! કિમન્ને આહારે વા અલવેવા અમ્હે વિ ય ણ દેવાણુ
પ્પિયા ! સસારભઉવિગ્ના જાવ પવ્વચામો) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જો સસાર ભયથી ભય

प्यामः । हे देवानुप्रिय ! हे स्वामिन् ! यथाऽस्माकं बहुषु कार्येषु=राज्याधिकृत-
कार्येषु च कारणेषु=राज्यरक्षणोपायेषु च यावत्-तथा - खलु भवद्भिः' सार्धं
प्रवृजितानामपि श्रमणानां बहुषु यावत् कार्यादिषु चक्षुर्भूतः । यथाऽस्माकमधिकृ-
तेषु भवान् विश्रामस्थानं, राज्यकार्येषु भवानेव नेतृतुल्यो नेताऽस्ति तथा चारित्र्य
पालनकार्येष्वपि भवानेव नेताभविष्यतीतिभावः ।

उद्दिष्ट हो कर दीक्षित होना चाहते हैं तो हे देवानुप्रिय ! अब हमलोगों
का और कौन आपके सिवाय दूसरा आचार हो सकेगा कौन दुःखा-
दिक के समय हमलोगों के लिये आलोक देने वाला होगा, क्योंकि
हमारे लिये तो आपही एक शरण भूत है । अतः जब आप दीक्षित
होना चाहते हैं तो हम लोग भी संसार भय से उद्दिष्ट हो कर आप
के साथ ही दीक्षा समय धारण करेंगे । (जहा देवानुप्रिया ! अम्ह
बहुसु कज्जेसु य कारणेषु य जाव तहाण पव्वतियणवि समणा णं
बहुसु जाव चक्खुभूए) हे देवानुप्रिय ! जोस तरह आप हमलोगों के
लिये अनेक राज्याधिकृत कार्यो मे अनेक कारणों मे-राज्य संरक्षण
के उपायो में-चक्षुर्भूत रहे हैं उसी तरह आपके साथ प्रवृजित हुए
हमलोगों के चारित्र्य पालन कार्य में भी आप ही नेता रहेंगे । (तएण से
सेलगे पथगपामोक्खे पचमतिसए एव वयासी) मन्नि मडल की इस
प्रकार बात सुनकर उस शैलक राजा ने उन पाँचक प्रमुख पाचसौ
मन्त्रियों से इस प्रकार कहा:-

अस्त थाने दीक्षा भणववानी धिआ राजोछो तो तभारा सिवाय अमारे
भीने कोणु आचार दशे ? आक्षतना वणते अमने आश्रय आपनार कोणु थशे ?
अमारे भाटे तो तमे न शणु इप छो, ओटले न्यारे तमे दीक्षित थवानी
धिआ राजो छो त्तारे अमे लोडे पणु आस सार्थी उटाणी गया छीअे तभारी
साथे अमे पणु बोद्धम दीक्षा समय धारणु करीशु (जहा देवानुप्रिया !
अम्ह बहुसु कज्जेसु य कारणेषु य जाव तहाण पव्वतियाणवि समणाण
बहुसु जाव चक्खुभूए) हे देवानुप्रिय ! तमे नेम अडी अभाग भाटे
धणु गज्जवडीटना उमोमा धणु जारणोमा-गन्ध सग्गणु विपेना उपा
योमा चक्षुर्भूत रह्या छे तेथी अमारी साथे प्रवृजित थमने पणु अमे लोडे
चारित्र्यपालन कार्यमा पणु तमे न अभाग नेता थओ ओवी अभागी धिआ
छे, (तएण से सेलगे पथगपामोक्खे पचमतिसए एव वयासी) मन्नीओ
आ जतना विचारो सावणीने शैलक राजाओ ते पाथक प्रमुख पाचओ

ततः खलु स शैलकः पा यक्रममुखं पञ्चमन्त्रिगत=पञ्चशतसंयकान् पान्यका
दीन् मन्त्रिणः, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेणादादीत्-यदि खलु ह देवानुप्रियाः । यूय
ससारभयोद्विग्नाः यावत् प्रव्रजत प्रव्रजिष्यथ दीक्षा ग्रहीष्यथ, तत् तर्हि गच्छत
खलु हे देवानुप्रियाः । स्त्रकेषु स्त्रकेषु कुटुम्बेषु ज्येष्ठान् पुत्रान् कुटुम्बम ये स्था-
पयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिविकाः दुरूढाः आरूढाः सतो ममान्तिक प्रादु-
र्भवतेति । तयैव प्रादुर्भवन्ति=ते पञ्चशतानि मन्त्रिणः स्य स्य ज्येष्ठपुत्र कुटुम्ब
म ये स्वस्थाने स्थापयित्वा शिविकामारूढाः सन्तः शैलकनृपस्य समीपे उपस्थिता
अभूवन्नित्यर्थः ।

ततः खलु स शैलक राजा पञ्चमन्त्रिशतानि=पञ्चशतानि मन्त्रिणः प्रादुर्भवतः=
समागतान् पश्यति, दृष्ट्वा हृष्टदृष्टः कौटुम्बिकपुरुषान् = आज्ञाकारिणः पुरुषान्

(जइण देवाणु० तुब्भे ससार जाव पव्वयह त गच्छह ण देवाणु०
सएसु २ कुडुवेसु जेट्ठे पुत्ते कुटुम्बज्जे ठावेत्ता पुरिसहस्सवाहिणिओ
सीहाओ दुरूढा समाणा मम अन्तिय पाउव्वभवहत्ति तहेव पाउव्वभवति)
हे देवानुप्रिय । यदि आप लोग ससार भय से उछिन्न हैं और यावत्
प्रव्रजित होना चाहते हैं तो जाओ और अपने २ कुटुम्बों में अपने २
स्थानों पर ज्येष्ठ पुत्रों को स्थापित करके पुरुष सहस्रवाहिनी शिविकाओं
पर आरूढ़ हो कर फिर मेरे पास आजाओ इस प्रकार राजा के
कथन को सुनकर उनसमने अपने २ कुटुम्बों में अपने २ स्थान पर
अपने २ ज्येष्ठ पुत्रों को स्थापित किया-और बाद में फिर वे सब
शैलक राजा के पास में पुरुष सहस्रवाहिनी शिविकाओं पर आरूढ़ हो
कर उपस्थित हो गये । (तएण से सेलए राया पचमत्तिसयाइ पाउव्वभ
वमाणाइ पासइ पासित्ता हट्ठुट्ठे कोडु विय पुरिसे सदावेइ सदावित्ता

भत्रीओने आ प्रभाण्णे ४६) (जइण देवाणु० तुब्भे ससार जाव पव्वयह त
गच्छह ण देवाणु० सएसु २ कुडुवेसु जेट्ठे पुत्ते कुटुम्बज्जे ठावेत्ता पुरिसहस्स
वाहिणिओ सीहाओ दुरूढा समाणा मम अन्तिय पाउव्वभवहत्ति तहेव पाउ
व्वभवति) हे देवानुप्रियो । अरेपर जो तमैं ससारक्षयथी सत्रस्त हो तो
जाओ अपने पोतपोताना कुटुम्बोमा पोताना स्थाने ज्येष्ठ पुत्रो ने भूझीने
पुरुषसहस्रवाहिनी पालभीओमा जेनीने भारी पास आवो आ रीते राजानु
कथन आसज्जीने तेओ जधा पोतपोताने स्थाने ज्येष्ठ पुत्रोने भूझीने पुरुष
सहस्रवाहिनी पालभीओमा भवार थध राजनी पामे आव्या (तएण से
सेलए राया पचमत्तिसयाइ पाउव्वभमाणाइ पासइ पासित्ता हट्ठुट्ठे कोडु विय

शन्दयति, आह्वयति । शन्दयित्वा=आह्वय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-निप्रमेव
=शीघ्रमेव भो ! देवानुप्रिया ! मण्डकस्य कुमारस्य महार्थ=महाप्रयोजनक यावत्-
राज्याभिषेक ' उवृद्धेह ' उपस्थापयत कुरु । ' अभिसिंचति ' अभिषिञ्चन्ति,
ततस्ते कौटुम्भिकपुरुषाः सुवर्णरजतकञ्चोर्मण्डककुमार स्नापयित्वा सर्वोच्छ्कार
विभूषित कृत्वा, तस्य राज्याभिषेक कुर्वन्ति स्मेत्यर्थः । यावद् मण्डको राजा
जात विहरति=भास्ते ॥ सू० २७ ॥

मूलम्-तएण सी सेलए राया मडुयं राय आपुच्छइ, तएणं
से मंडुए राया कोडुवियपुरिसे सहावेइ, सहावित्ता एव वया-
सी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । सेलगपुर नगर आसित्त
समज्जिओवलित्त गधोदयसित्तं गधवट्ठिभूत करेह य कारवेह य,

एव वयासी) इसके बाद उस दौलक राजा ने जब उन पाचसौ मन्त्रियों
को अपने समीप उपस्थित हुआ देखा-तो देखकर वह बहुत अधिक
प्रसन्न एवं सतुष्ट हुआ और उसी समय उसने कौटुम्भिक पुरुषों को
बुलाया-बुलाकर उनसे कहा (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मडुयस्स
कुमारस्स महत्थ जाव रायाभिसेय उवट्ठवेह, अभिसिंचइ जाव राया
यावत् विहरइ) भो देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही मडुक कुमार का
महार्थ साधक-महाप्रयोजन भूत-यावत् राज्याभिषेक करो । उन्हो ने
उसका राज्याभिषेक किया अर्थात् सुवर्ण रजत के कलशों से मडुक
कुमार का अभिषेक कर और उसे समस्त अलकारों से विभूषित कर
राज्य पद में अभिषिक्त किया । इस तरह मडुक कुमार राज्य पदासीन
हो गया ॥ सूत्र २७ ॥

पुरिसे सहावेइ सहावित्ता एव वयासी) त्थार भाइ पोताना पायमे भन्नीओने
आवेला जेधने राजा भूषण प्रमत्त थया अने सतुष्ट थया राजाओ तरत ज
पोताना कौटुम्भिक पुरुषोने ओलाव्या अने ओलावीने तेभने उहु-(खिप्पामेव
भो देवाणुप्पिया ! मडुयस्स-कुमारस्स महत्थ जाव रायाभिसेय उवट्ठवेह अभिसि
चइए जाव राया यावद् विहरइ) हे देवानुप्रियो ! तमे सत्तरे मडुक राज
कुमारने महार्थसाधक महाप्रयोजन भूत-राज्याभिषेक करे कौटुम्भिक पुरु
षोओ राजनी आज्ञा प्रमाणे ज मडुक राजकुमारने राज्यभिय उयो ओटले हे
तेओओ मोना उपाना उज्जेशीथी मडुक कुमारने अलिषेक कयो अने जधा अल
काशेयी तेने आपगारीने जन्म निहामन उपर जेमाउयो ॥ सूत्र " २७ " ॥

करित्ता य कारवित्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं से
 मडुए राया दोच्चपि कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव
 वयासो-खिप्पामेव भो । सेलगस्स रत्तो महत्तय जाव निम्ब-
 मणाभिसेय जहेव मेहस्स तहेव, णवर पउमावत्तीदेवी अग्ग
 केसे पडिच्छइ । सच्चेव पडिग्गह गहाय सीय दुरुहति, अवसेस
 तहेव जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइं अहिज्जइ,
 अहिजित्ता वहूहि चउत्थ जाव विहरइ, तएण से सुए सेलय-
 स्स अणगारस्स ताइ पथगपामोक्खाइं पच्च अणगारसयाइ
 सोसत्ताए वियरइ, तएण से सुए अन्नया कयाइ सेलगपुराओ
 नयराओसुभूमिभागाओ पडिनिम्बमइ, पडिनिम्बमित्ता वहि
 या जणवयविहार विहरइ, तएण से सुए अणगारे अन्नया
 कयाइ तेणं अणगारसहस्सेण सद्धि सपरिवुडे पुव्वाणुपुठ्वि
 चरमाणे गामाणुगाम विहरमाणे जेणेव पोडरीए पव्वए
 जाव सिद्धे ॥ सू० २८ ॥

‘ तएण से सेलए ’ इत्यादि ।

टीका-तत स शैलको राजा मण्डूक राजानमापृच्छति, हे देवानुप्रिय ! अहं
 दीक्षा ग्रहीष्यामीति । तत खलु स मण्डूको राजा कौटुम्बिकपुरूपान् आदेश
 कारिण पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एव वक्ष्यमाणप्रकारे

‘ तएण से सेलए राया ’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से सेलए राया) उस शैलक राजा ने
 (मडुय राय आपुच्छइ) मण्डूक राजा से पूछा कहा कि हे देवानुप्रिय !
 मैं दीक्षा सयम लूंगा (तएण से मडुए राया कोडुविय पुरिसे सदावेइ)

(तएण से सेलए राया) इत्यादि

टीकार्थ-(तएण, त्थार भाइ (सेलएराया) सेलए राजाने (मडुय राय आपु
 छइ) मडुय राजाने केहु-के छे देवानुप्रिय । हु दीक्षा ग्रहीष्यामीति (तएण से
 मडुए राया कोडुवियपुरिसे सदावेइ) त्थार यही मडुय राजाने कोटिजिह

णादादीत् क्षिप्रमेव शीघ्रमेव भो देवानुप्रियाः शैलकपुर नगरम् 'आसित्तसम-
ज्जिओवलित' आसित्त समार्जितोपलिप्त=आसित्तम् जलेनाऽऽर्द्रीकृत, समार्जित
समार्जन्या कचवरात्रपमारणेन सथुद्ध', उपलिप्त गोमयादिना सलिप्त,
गन्धोदकसिक्त पुनर्गन्धोदकेन प्रसिक्त गन्धवर्तिभूत अगरवर्तिरूप सुगन्धमय गूय
कुरुत, अन्यैश्च कारयत कृत्वा च कारयित्वा च 'एयमाणत्तिय' एतामाज्ञप्तिका=एता
ममाज्ञा प्रत्यर्पयत = मरदादिष्ट कार्य सर्व सपादितमस्माभिरित्यावेदयतेत्यर्थः ।
तत खलु स मण्डको राजा 'दोच्चपि' द्वितीयमपि द्वितीयवारमपि कौटुम्बिक-
पुरपान्=आदेशकारिणः पुरुषान् शब्दयति=आह्वति. शब्दयित्वा एवमवादीत्-

इसके बाद मण्डक राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सहावित्ता एव
वयासी) बुलाकर उन से ऐसा कहा (क्षिप्पामेव भो देवानुप्रिया !
सेलगपुर नगर आसित्त समज्जिओवलित्त गधवट्ठिभूत्त करेहय
कारवेहय) भो देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही शैलकपुर नगर
को जल से छिड़को- मिचित्त करो, कचवर आदि के अपनयन से
उसे साफ करो, गोमयादि से उसे लीपो गधोदक से उसे बार २ सिक्त
प्रसिक्त करो गधवर्त्तिरूप करो- सुगन्धमय करो, तथा दूसरों से कर
वाओ । (करित्ता कारवित्ताय एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) कर के
और करा के पीछे हमें इस आज्ञा के पालन की खबर दो हमने आप
की आज्ञानुसार सब कार्य सपादित कर दिया है- ऐसा पीछे हमें
समाचार दो (तण्ण से मण्डक राया दोच्चपि कौटुम्बिकपुरिसे सहा-
वेह, सहावित्ता एव वयासी) इसके बाद मण्डक राजा ने दुवारा भी

पुरुषोने ओलाव्या (सहावित्ता एव वयासी) ओलावीने आ प्रमाणे उधु-
(क्षिप्पामेव भो देवानुप्रिया ! सेलगपुर नगर आसित्तसमज्जिओवलित्त
गधवट्ठिभूत्त करेहय कारवेहय) हे देवानुप्रियो ! तमे शैलकपुरने पाणीथी
सत्तरे सिथित करे उयरे वगेरे साक्ष करीने, छाणु वगेरेथी लीपो तेमज्ज
सुवासित पाणीथी वारवार तेने सिथित करे अने तेने गधवर्त्ति ओटवे हे
धूपमणीनी जेम सुवामिन् भनावो तेमज्ज भीलओथी सुवासमय भनावडावो
(करित्ता कारवित्ताय एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) आ प्रमाणे जते करीने अने
भीलओथी पानेथी उरावडावीने जम पुरे थयानु अभने जणाने (तण्ण से
मुडक राया दोच्च पि कौटुम्बिकपुरिसे सहावेह, सहावित्ता एव वयासी)
त्यार आह मण्डक गज्जओ भील पणत कौटुम्बिक पुरुषोने ओलाव्या अने

करित्ता य कारवित्ता य एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह, तएणं से
 मडुए राया दोच्चपि कोडुवियपुरिसे सदावेड, सदावित्ता एव
 वयासो—खिप्पामेव भो । सेलगस्स रत्तो महत्तय जाव निम्ब-
 मणाभिसेय जहेव मेहस्स तहेव, णवरं पउमावत्तीदेवी अग्ग
 केसे पडिच्छइ । सच्चेव पडिग्गह गहाय सीय दुरुहति, अवसेस
 तहेव जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइं अहिज्जइ,
 अहिजित्ता वहूहि चउत्थ जाव विहरइ, तएण से सुए सेलय-
 स्स अणगारस्स ताइ पथगपामोक्खाइ पच अणगारसयाइ
 सीसत्ताए वियरइ, तएण से सुए अन्नया कयाइं सेलगपुराओ
 नयराओ सुभूमिभागाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता वहि-
 या जणवयविहार विहरइ, तएण से सुए अणगारे अन्नया
 कयाइं तेणं अणगारसहस्सेण सद्धि सपरिवुडे पुट्ठाणुपुट्ठि
 चरमाणे गामाणुगामं विहरमाणे जेणेव पोडरीए पव्वए
 जाव सिद्धे ॥ सू० २८ ॥

‘ तएण से सेलए ’ इत्यादि ।

टीका—तत स शैलको राजा मण्डूक राजानमापृच्छति, हे देवानुप्रिय ! अहं
 दीक्षा ग्रहीष्यामीती । तत खलु स मण्डूको राजा कोटुम्भिरुपुम्पान् आदेश
 कारिणं पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एव वक्ष्यमाणप्रकारे

‘ तएण से सेलए राया ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से सेलए राया) उस शैलक राजा ने
 (मडुय राय आपुच्छइ) मण्डूक राजा से पूछा कहा कि हे देवानुप्रिय !
 मैं दीक्षा सयम लूंगा (तएण से मडुए राया कोडुविय पुरिसे सदावेइ)

(तएण से सेलए राया) इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थार भाव (सेलएराया) शैलक राजाने (मडुय राय आपु
 च्छइ) मण्डूक राजाने उद्यु-के छे देवानुप्रिय ! तु दीक्षा ग्रहीष्यामीती (तएण से
 मडुए राया कोडुवियपुरिसे सदावेइ) त्थार पत्री मण्डूक राजाने कोटुम्भिरुपुम्पान्

‘पडिग्गह’ पतद्ग्रह पात्र गृहीत्वा शिविका दूरोहन्ति । आरोहन्ति अम्बधाज्यादयः रजोहरणपात्रादिकं शैलकराजा तन्मन्त्रिणोऽपि शिविकामारोहन्तिस्मेत्यर्थः । अपशेषं तथैव, यथा मेघकुमारः श्रीमरावीरस्वामिनोऽन्तिके प्रव्रज्या गृहीतवान् । तथैव शुकस्य समीपे शैलकनृपेण प्रव्रज्या गृहीता, तदा-शैलकनृपस्य मन्त्रिणोऽपि पञ्च शतसंख्यकाः पान्थकप्रमुखास्तत्रैव प्रव्रज्या गृहीतवन्त इत्यर्थः । यावत्-गृहीत्याच सामायिकादीनि एकादशाङ्गान्यधीतेस्म । अधीत्य च बहुभिश्चतुर्थभक्तादिभिस्त पोभिः यावत्-आत्मान भावयन् विहरति । तदनन्तरं स शुकः शैलकस्याऽनगरस्य तानि पान्थक प्रमुखाणि पञ्चाऽंगाशतानि-तान् पान्थकप्रमुखान् पञ्चशत-संख्यकाननगारानित्यर्थः, शिष्यतया वितरति ददातिस्म ।

ने अपने वस्त्राञ्चल में लिया था । (सच्चेव पडिग्गह गहा य सीयं दुरुहति अवसेस तहेव, जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जइ) शैलक राजा उसके मंत्री तथा उसकी अम्बधात्रादि ये सब के सब रजोहरण एवं पात्रादिकों को लेकर शिविका (पालखी) में आरूढ़ हो गये । जिस प्रकार मेघकुमारने श्री महावीर स्वामी के पास प्रव्रज्या ग्रहण की थी उसी प्रकार शुक अनगार के पास शैलक नृपने भी प्रव्रज्या धारण की । नृपके साथ २ उस के पाथक प्रमुख पांच सौ मन्त्रियोंने भी वही पर दीक्षा ग्रहण की यावत् दीक्षा ग्रहण करने के बाद उस शैलक-राज ऋषिने सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन किया । (अहिज्जित्ता बहूहि चउत्थ जाव विहरइ, तए ण से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइ पथगपामोक्खाइ पच अणगारसयाइ सीसत्ताए वियरइ) अ घयन करने के बाद उन्होंने ने फिर अनेकविध चतुर्थ भक्त आदि की तपस्या की बाद में शुक अनगार ने उन शैलक अनगार के

पटशाली पद्मावती देवीसे शैलक राजाना वाणो चार आगण छोडीने आगणना वाणोने पोताना वस्त्रायणमा लीधा (सच्चेव पडिग्गह गहाय सीयं दुरुहति अवसेस तहेव जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगइ अहिज्जइ) शैलकराज तेमना मंत्रीसे तेमज शैलक रजनी अम्बधात्री वगेरे णधा रजोहरण अने पात्रो वगेरे लधने पालखीमा मवार थई गया लगवान भडावीरनी पासे जेम मेघकुमारे प्रव्रज्या लीधी हुती तेमज सुउ अनगारनी पासे शैलक राजसे प्रव्रज्या स्वीकारी रजनी साथे तेमना पाथसे पाथक प्रमुख मंत्रीसे से पणु त्या ज दीक्षा लीधी , दीक्षा लीधा आइ जैवउ राजसे सामयिक वगेरे अगियार अजोनु अध्ययन कथुं (अहिज्जित्ता बहूहि चउत्थ जावविहरइ, तए ण से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइ पथगपामोक्खाइ पच अणगारसयाइ सीसत्ताए वियरइ) अ घयन पत्री तेमसे अनेउ जतना चतुर्थलज्ज वगेरेनी तपस्या उनी सुउ अनगारे शैलक अनग ने पाथक प्रमुख पाथसे अन

ક્ષિપ્રમેવમો । શૈલકસ્ય રાજ્ઞો મહાર્થ=મહાપયોજનક મોક્ષફલક યાવત્ નિષ્ક્રમણા
 ભિપેકમ્=દીક્ષોત્સવમ્ ઉપસ્થાપયત=કુરુત, યદા મેઘસ્ય મેઘકુમારસ્ય પ્રથમાખ્યયને
 નિષ્ક્રમણાભિપેકો વર્ણિત તથૈર=તદ્વદગ્રાપિ વાચ્ય इत्यर्थः । મહાકવિનૃપાડઽગ્રયા
 કૌટુમ્બિકપુરુષાઃ શૈલકનૃપસ્ય નિષ્ક્રમણાભિપેક મેઘકુમારવત્ કૃતયન્ત ઇતિ ભાવઃ
 નવર તત્રૈતાગાન્ ભેદઃ યત્-પદ્માવતી દેવી પદ્માવતી નામ્ની રાક્ષી શૈલકનૃપસ્ય સ્વ
 માર્યા, અગ્રકેશાન્ = અગ્રભૂતાન્ કેશાગ્રમાગરૂપાન્ ચતુરગુલવર્જિતાન્ નાપિતક-
 તિતાન્ કેશાન્ પ્રતીચ્છતિ=વસ્ત્રાશ્ચલે ગૃહ્ણતિ, મેઘકુમારસ્ય તુ સ્વમાતા ધારિણી-
 દેવી કેશાન્ ગૃહ્ણતિસ્મેતિભાવઃ સચ્ચેવા તદિવ=તદ્વત્ = મેઘકુમારવદિત્યર્થઃ,

કૌટુમ્બિક પુરુષો કો વુલાયા, ઓર વુલાકર ઉન સે એસો કહા (ત્રિપ્પા
 મેવ મો સેલગસ્મ રન્નો મહત્થ જાવ નિષ્ક્રમણાભિસેય જહેવ મેહસ્સ
 તહેવ- જવર પડમાવતી દેવી અગ્ગકેસે પડિચ્છડ) તુમ લોગ શીઘ્ર
 હી શૈલક રાજા કો મોક્ષફલ સાધક યાવત્ નિષ્ક્રમણાભિપેક દીક્ષો-
 ત્સવ- મેઘકુમાર કે દીક્ષોત્સવ કી તરહ કરો । મેઘકુમાર કા દીક્ષોત્સવ
 જૈસા પ્રથમ અધ્યયન મેં વર્ણિત કિયા હૈ વૈસા હી યદા પર મી સમક્ષ
 હેના ચાહિયે । હસ પ્રકાર મહૂક રાજા કી આજ્ઞા સુનકર ઉન કૌટુમ્બિક
 પુરુષો ને શૈલક રાજા કા દીક્ષોત્સવ મેઘકુમાર કે દીક્ષોત્સવ કી
 તરહ અચ્છી તરહ સે કિયા । ઉસમેં ઓર હસમેં કેવલ હતના હી ભેદ
 રહા કિ હસ દીક્ષોત્સવ મેં પદ્માવતી દેવી જો શૈલક રાજા કી મુખ્ય
 રાની થી ઉસને ઉસકે નાપિત કર્તિત ચતુરગુલવર્જિત અગ્ર કેશોં કો
 અપને વસ્ત્રાશ્ચલ મેં લિયા ઓર મેઘકુમાર કે દીક્ષોત્સ મેં મેઘકુમાર કે
 નાપિત કર્તિત ચતુરગુલવર્જિત કેશોં કો ઉસ કી માતા ધારિણી દેવી

બોલાવીને તેમને કહ્યું-કે (ત્રિપ્પામેવ મો સેલગસ્મ રન્નો મહત્થ જાવ નિષ્ક્રમણા
 ભિસેય જહેવ મેહસ્સ તહેવ જવર પડમાવતી દેવી અગ્ગકેસે પડિચ્છડ) તમે
 મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવની જેમ મોક્ષદાયક શૈલક રાજાને દીક્ષોત્સવ થોળે
 પ્રથમ અધ્યયનમાં મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવ વિષે જેમ વર્ણન કરવામાં આવ્યું
 છે તેમ જ અહીં પણ સમજવું જોઈએ આ રીતે મહૂક રાજાની આજ્ઞા
 પ્રમાણે જ કૌટુમ્બિક પુરુષોએ મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવની જેમજ સરસ રીતે
 દીક્ષોત્સવ ઊજાવ્યો । મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવમાં અને શૈલક રાજાના દીક્ષોત્સવમાં
 તદ્વાત આટલોજ સમજવો કે-મેઘરાજાના દીક્ષોત્સવ વખતે જ્યારે તેમના
 માતા ધરિણીદેવીએ આર આગળ છોડીને બાકીના બધા નાપિત વડે કપાએલા
 વાળો પોતાના અથળામાં લીધા હતા, અને શૈલક રાજાના દીક્ષોત્સવમાં તેમના

‘पडिग्गह’ पतद्ग्रह पात्र गृहीत्वा शिविका दूरोहन्ति । आरोहन्ति अम्बधाज्यादयः रजोहरणपात्रादिक शैलकराजा तन्मन्त्रिणोऽपि शिविकामारोहन्तिस्मेत्यर्थः । अत्रशेषं तथैव, यथा मेघकुमारः श्रीमरावीरस्वामिनोऽन्तिके प्रव्रज्या गृहीतवान् ’ तथैव शुकस्य समीपे शैलकनृपेण प्रव्रज्या गृहीता, तदा-शैलकनृपस्य मन्त्रिणोऽपि पञ्च शतसंख्यकाः पान्थकप्रमुखास्तत्रैव प्रव्रज्या गृहीतवन्त इत्यर्थः । यावत्-गृहीत्वाच सामायिकादीनि एकादशाङ्गान्यधीतेस्म । अधीत्य च बहुभिश्चतुर्थभक्तादिभिस्त पोभिः यावत्-आत्मान भाषयन् विहरति । तदनन्तर स शुकः शैलकस्याऽनगारस्य तानि पान्थक प्रमुखाणि पञ्चाऽंगारशतानि=तान् पान्थकप्रमुखान् पञ्चशत-संख्यकाननगारानित्यर्थः, शिष्यतया वितरति ददातिस्म ।

ने अपने वस्त्राञ्चल में लिया था । (सच्चेव पडिग्गह गहा य सीय दुरुहति अवसेस तहेव, जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जह) शैलक राजा उसके मन्त्री तथा उसकी अम्बधात्रादि ये सब के सब रजोहरण एवं पात्रादिकों को लेकर शिविका (पालखी) में आरोह हो गये । जिस प्रकार मेघकुमारने श्री महावीर स्वामी के पास प्रव्रज्या ग्रहण की थी उसी प्रकार शुक अनगार के पास शैलक नृपने भी प्रव्रज्या धारण की । नृपके साथ २ उस के पाथक प्रमुख पाच सौ मन्त्रियोंने भी वहीं पर दीक्षा ग्रहण की यावत् दीक्षा ग्रहण करने के बाद उस शैलक राज ऋषिने सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन किया । (अहिज्जित्ता बह्महिं चउत्थ जाव विहरइ, तए ण से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइ पयगपामोक्खाइ पच अणगारसयाइ सीसत्ताए विघरइ) अध्ययन करने के बाद उन्होंने ने फिर अनेकविध चतुर्थ भक्त आदि की तपस्या की बाद में शुक अनगार ने उन शैलक अनगार के

पटशाणी पद्मावती देवीसे शैलक राजाना वाणो चार आगण छोडीने आगणना वाणोने पोताना वस्त्राञ्चलमा लीया (सच्चेव पडिग्गह गहाय सोय दुरुहति अवसेस तहेव जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जह) शैलक राजा तेमना मन्त्रीओ तेमज्ज शैलक २ ज्ञानी अम्बधात्री वगेरे षष्ठा रजोहरण अने पात्रो वगेरे लउने पालखीमा सवार थउ गया लगवान महावीरनी पासो जेम मेघकुमारो प्रव्रज्या लीधी छती तेमज्ज शुक अनगारनी पासो शैलक राजाओ प्रव्रज्या स्वीकारी २ ज्ञानी साथे तेमना पाथसो पाथउ प्रमुण मन्त्रीओ ओ पणु त्या ज दीक्षा लीधी, दीक्षा लीधा बाद जैवउ राजाओ सामयिक वगेरे अगियार अजोनु अध्ययन कथुं (अहिज्जित्ता बह्महिं चउत्थ जावविहरइ, तए ण से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइ पयगपामोक्खाइ पच अणगारसयाइ सीसत्ताए विघरइ) अध्ययन पत्री तेमणे अनेउ ज्ञतना चतुर्लज्ज वगेरेनी तपस्या कनी शुक अनगारो शैलक अनगारने पाथउ प्रमुण पाथसो अन

ततः खलु सशुक्रः शुकनामानगर, अन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले शैलकपुरानगरात् सुभूमिभागादुद्यानात् प्रतिनिष्क्रामति=प्रतिनिर्गच्छति, प्रतिनिष्क्रम्य=प्रतिनिर्गत्य वहिः= बाह्ये जनपदविहार विहरति । ततस्तदनन्तर खलु सशुक्रोऽनगारोऽन्यदा कदाचित्-अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले तेन=पूर्वोक्तेन शिष्येण अनगारसहस्रेण साथं सपरिटृतः पूयानुपूर्व्यां तीर्थं करगणधरपरपरया चरन् ग्रामानुग्रामं विहरन् यत्रैव पुण्डरीक=पुण्डरीकनाम्ना प्रसिद्धः पर्वतः यावत् तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पुण्डरीकं पर्वतमारुह्य पृथिवीशिलापट्टकं प्रतिलेख्य

लिये पांथक प्रमुख आदि ५०० सौ अनगारों को शिष्य रूप से वितरित कर दिया । (तएण से सुए अन्नया कयाइ सेलगपुराओ नयराओ सुभूमिभागाओ पडिनिक्खइ, पडिनिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ,) इस के बाद किसी एक समय वे शुक अनगार शैलक पुर नगर से और उस सुभूमिभाग नाम के उद्यान से निकले और निकल कर उन्होंने ने वहां से बाहर जनपदों की ओर विहार कर दिया । (तएण से सुए अणगारे अन्नया कयाइ तेणं अणगारसहस्सेणं सद्धिं सपडिबुडे पुब्बाणुपुर्व्वि चरमाणे गामाणु गाम विहरमाणे जेणेव पोंडरीए पव्वए जाव सिद्धे) ग्रामानुग्राम विहार करते २ वे किसी एक समय उस अपने शिष्य अनगार सहस्र के साथ तीर्थकर, गणधर परशर के अनुसार चारित्र की आराधना करते हुए जहां पुण्डरीक नाम का प्रसिद्ध पर्वत था वहां आये वहां आकर उन्होंने ने वहां के पृथिवी शिलापट्टक की प्रतिलेखना की प्रतिलेखना कर के फिर उन्होंने ने उस

गारेने शिष्य इये आभ्या (तएण से सुए अन्नया कयाइ सेलगपुराओ नयराओ सुभूमिभागाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ) तयार भाइ केहिं ओक वण्णते शुक अनगार शैलकपुरना सुभूमिभाग उद्यानथी भहार नीउणीने त्याथी भहारना भीअ जनपदोभा विहार कर्यो (तएण से सुए अणगारे अन्नया कयाइ तेण अणगारसहस्सेण सद्धिं सपडिबुडे पुब्बाणुपुर्व्वि चरमाणे गामाणुगाम विहरमाणे जेणेव पोंडरीए पव्वए जाव सिद्धे) शुक परि ब्राह्मण ओक गामनी भीजे गाम विहार करता करता केहिं वण्णते चोताना ओक छत्तर अनगार शिष्योनी साथे तीर्थकर, गणधरानी परपराने अनुसरता चारित्रनी आराधना करता करता जया पुण्डरीक नामे प्रसिद्ध पर्वत छतो त्या गया पडोलीने तेमहे त्या पृथिवी शिलापट्टकनी प्रतिलेखना कर्या पछी तेमहे तेना उपर चोताना ओक छत्तर शिष्योनी साथे पादपोगमन

सहस्रशिष्यैः सह पादपोषगमनमस्तारक कृतवान्, ततः खलु स शुक्रो नडूनि वर्षाणि
श्रावण्यपर्याय पालयित्वा केवलपरज्ञानदर्शने समुत्पाद्य सकलकर्मक्षये मति सिद्धः
—मुक्तिं प्राप्त इत्यर्थः ॥ २८ ॥

मूलम्—तएणं तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स तेहिअतेहि यपतेहि
य तुच्छेहि यल्लहेहि य अरसेहि य विरसेहि येसीएहिय उण्हेहि
य कालातिक्रतेहि य पमाणाइक्कतेहि य णिच्च पाणभोयणेहि
य पयइसुकुमालयस्स सुहोचियस्स सरीरगसि वेयणा पाउ-
वभूया, उज्जला जाव दुरहिया सा कडुयदाहपित्तज्जरपरिगय-
सरीरे यावि विहरइ, तएणं से सेलए तेणं रोयायकेण सुक्के
जाए यावि होत्था, तएणं से सेलए अन्नया कयाइ पुव्वाणु-
पुव्वि चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरइ, परिसा
निग्गया मडुओ वि निग्गओ सेलय अणगारंजाव वंदइ, नम-
सइ, वदित्ता नमस्सित्ता पज्जुवासइ, तएण से मंडुए राया
सेलयस्स अणगारस्स सरीरयं सुक्क भुक्कं जाव सव्वावाह सरोग
पासइ, पासित्ता एव वयासी—अह णं भते । तुव्वम अहापवत्तेहिं
तिगिच्छएहि अहापवत्तेणं ओसहभेसज्जेण भत्तपाणेणं तिगिच्छ
आउट्ठावेमि, तुव्वमे ण भते मम जाणसालासु समोसरह फासुअ

पर अपने सहस्र शिष्यों के साथ २ पादपोषगमन सवारा किया । इस
तरह उन शुक्र अनगार ने अनेक वर्षों तक श्रावण्य पर्याय का परिपा-
लन कर के अन्त समय में केवलज्ञान केवल दर्शन प्राप्तकर सकल
कर्मों के क्षय होने पर मुक्ति को प्राप्तकर लिया । ॥ सू० २८ ॥

सथारो उर्थो आ रीते ते शुद्ध परित्राज्जे धण्णा वर्षो सुधी श्रावण्य पर्यायनु
परिपालन करीने छेवटे केवलज्ञान केवल दर्शन भेजवीने अधा उर्थो व्यादे
नाश पाव्या आरे मुक्ति भेजवी ॥ सूत्र “ २८ ” ॥

एसणिज्जं पीढफलगसेज्जासथारग ओगिणिहत्ताण विहरइ, तएणं
से सेलए अणगारे मंडुयस्स रत्तो एयमट्ठ तहत्ति पडिसुणेइ,
तएणं से मडुएसेलय वंदइ नमसइ वदित्ता नमंसित्ता जामेव
दिसिं पाउव्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० २९ ॥

टीકાર્થ—‘તएણ તસ્સ’ ઇત્યાદિ । તતસ્તદનન્નર સ્વલુ તસ્ય શેલકસ્ય
રાજર્ષેસ્તૈઃ=અનગારધર્માનુસારેણ પ્રાપ્તૈઃ ‘અતેહિ’ અન્તૈઃ=વલ્લવણકાદિભિઃ,
‘પતેહિ’, પ્રાન્તૈઃ=પર્યુપિતૈઃ, ‘તુચ્છેહિય’ તુચ્છૈ અલ્પૈશ્ચ ‘લૂહેહિય’ રુક્ષૈઃ અસ્તિ

‘તएण तस्स सेलगस्स’ ઇત્યાદિ ।

टीकार्थ—(तएण)इसके बाद (पयइ सुकुमाअयस्स सुहोचियस्स) प्रकृति
सुकुमार तथा सुखोपभोग के योग्य (तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स)
उस शैलक राजाऋषि के (मरीरगसि) शरीर में (तेहिं अतेहिं य
पतेहिं य तुच्छे हिं य लूहे हिं अरसे हिं य विरसेहिं य सीएहिं य,
उण्हेहिं य कालाइक्कते हिं य पमाणाइक्कते हिं य, णिच्च पाणभोग्यणे
हिं य) अनगार धर्म के अनुसार प्राप्त हुए अन्त प्रान्त, तुच्छ, रुक्ष,
अरस, विरस, शीत, उष्ण, तथा कालातिक्रान्त (असमय मे) नित्य
पान भोजन आहार करने से (वेयणा पाउव्भूया) वेदना प्रकट हुई । वल्ल
वणक आदि का नाम अत हैं । पर्युपित (वासी) अन्न का नाम प्रान्त है ।
अल्प आहार का नाम तुच्छ है । स्निग्धता (घृतादि) रहित आहार का

(तएण तस्स सेलगस्स इत्यादि)

टीકાર્થ—(તएણ) ત્યાર બાદ (પયइ સુકુમાઅયસ્સ સુહોચિયસ્સ) શરીરની પ્રકૃતિ
સુકુમાર તેમજ આરામ ભોગવવા યોગ્ય (તસ્સ સેલગસ્સ રાયરિસિસ્સ) રાજ
ઋષિ શૈલક (સરીરગસિ) ના શરીરમાં (તેહિં અતેહિંય પતેહિં ય તુચ્છેહિં ય
લૂહેહિ અરસેહિં ય વિરસેહિંય સીએહિં ય ઉણ્હેહિંય કાલાઈક્કતેહિંય પમાણાઈ
ક્કતેહિંય, ણિચ્ચ પાણભોગ્યણેહિંય) અનગાર ધર્મ મુજબપ્રાપ્ત થયેલા અન્ય,
પ્રાત, તુચ્છ, રુક્ષ, અરમ, વિરસ, શીત, ઉષ્ણ તેમજ અન્યમય (કાલાતિક્રાન્ત)
માં હમેશા પાન, ભોજન (આહાર) કરવાથી (વેયણા પાઉવ્ભૂયા) વેદના
થવા વાગી બાલ ચણક (ચણા) વગેરે ‘અત’ કહેવાય છે વાસી આહાર
નુનામ ‘પર્યુપિત’ છે થોડા આહારનું નામ તુચ્છ છે સ્નિગ્ધતા (ધી રહિત)
વગર આહાર રુક્ષ કહેવાય છે ડિંગ વગેરેના વધાર વગરના આહારને

ઘૈશ્વ, 'અરસેહિય' અરસો દિહ્માદિવ્યાગાર રહિતૈશ્વ, 'વિરસેહિય' વિરસૈ. પુરાણ ત્વાદ્ વિગતરસૈશ્વ 'સીયેહિય' શીતૈઃ શીતલૈશ્વ 'ઉળ્હેહિય' ઉળ્ળૈશ્વ 'કાલાતિ-
વક્રતેહિય' કાલાતિક્રાન્તૈ ક્ષુધાપિપાસા કાલેષ્વપ્રમાસૈશ્વ 'પમાણાઙ્કતેહિય' પ્રમા-
ણાતિક્રાન્તૈશ્વ વુશુધાપિપાસાઽનનુકૂલૈશ્વ=વુશુક્ષાપિપાસા યત્પ્રમાણા વર્તતે, તામતિ-
ક્રાન્તૈઃ તન્નિયારણાઽમમથૈ સ્વલ્પલઙ્ગૈરિત્યર્થઃ । નિત્યપાનભોજનૈશ્વ પ્રતિદિવસ
પ્રાપ્તૈરન્નપાનૈશ્વ નિત્ય પ્રતિકૂલપાનભોજન કુર્વતિતિ ભાવ । પ્રકૃતિસુકુમારકસ્ય
સ્વભાવક્ષોમલસ્ય, સુગ્ધોચિતસ્ય=સુહાર્દસ્ય, લેશતોઽપિ કલેશાસદસ્યેત્યર્થઃ, શરીરે
વેદના=વ્યાધિઃ પ્રાદુર્ભૂતા=ઉત્પન્ના, સા વેદના કીદૃશીત્યાદ-ઉજ્જલા=દુઃસ્વાતિશયેન
પ્રલયાગ્નિવજ્જાજ્વલ્યમાના યાવત્-અત્ર યાવત્કરણેન-વિડલા, પગાઢા, इत्यनयोः

નામ રુક્ષ હૈ । હિંગ આદિ કે વધાર સે રહિત હુએ નીરસ આહાર કા નામ
અરસ હૈ । પુરાને નીરસ અન્ન કે બને હુએ આહાર કા નામ વિરસ આહાર
હૈ । બનાકર રહે હુએ શીતલ-ઠંડે-આહાર કા નામ શીત હૈ । ગરમ ર
કા નામ ઉષ્ણ હૈ । ક્ષુધા પિપાસા કે સમય મેં નહી પ્રાપ્ત હુએ આહાર કા
નામ કાલાતિક્રાન્ત હૈ । અથવા ક્ષુધા પિપાસા કે અનુસાર નહી પ્રાપ્ત હુઆ
આહાર મી કાલાતિક્રાન્ત કહા જાતા હૈ । જિતની મૂંઝ લગી હો, જિતની
પ્યાસ લગી હો ઉતને આહાર પાની વા નહી મિલના યોડા સા મિલના
હસસે શરીર મેં અશક્તિ આદિ ઉત્પન્ન હો જાની હૈ । અનગાર અવસ્થા
મે સાવુ કો અનુકૂલ આહાર પાની નહી મિલતા હૈ । અતઃ પ્રતિકૂલ આ
હાર પાની કે સેવન સે શરીર મે વિવિધ પ્રકાર કી વ્યાધાઈ ઉપસ્થિત હો
જાતી હૈ । એસા હી રાજકૃપિ શૈલક અનગાર કે લિયે હુઆ । ડનકે શરીર

અરસ કહે છે જૂના થઈ ગયેલા અનાજનો આહાર બનાવવામા આવે તે 'વિરસ' નામે ઓળખાય છે બહુ વખત પડેલા બનાવીને મૂકી રાખેલા ઠંડા થઈ ગયેલા આહારને 'શીત' કહેવામા આવે છે એકદમ ગરમ આહારને ઉષ્ણ કહે છે ભૂખ અને તરસના વખતે અહાર ન મળે તેને કાલાતિક્રાન્ત કહેવાય છે અથવા ભૂખ અને તરસને યોગ્ય આહાર ન મળવો તેને પણ કાલાતિક્રાન્ત કહેવાય છે ભૂખ અને તરસના પ્રમાણમા આહાર અને પાણી મળે નહિ થોડા પ્રમાણમા મળે તો એનાથી ગંદીરમા શિથિલતા આવી જાય છે અનગાર અર્થમા સાધુને અનુકૂળ આહાર પાણી મળતુ નથી એથી પ્રતિજ્ઞ આહાર પાણીના નેવનથી શરીર અનેક રીતે નબળુ થઈ જાય છે રાજકૃપિ અનગારની હાલત પણ આવી જ

एसणिज्जं पीढफलगसेज्जासथारग ओगिणिहत्ताण विहरइ, तएणं
से सेलए अणगारे मंडुयस्स रत्तो एयमट्ठ तहत्ति पडिसुणेइ,
तएणं से मडुए सेलयं वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता जामेव
दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० २९ ॥

टीકાર્થ—‘તएણ તસ્સ’ ઇત્યાદિ । તતસ્તદનન્નર સ્વલુ તસ્ય શૈલકસ્ય
રાજર્ષેસ્તૈઃ=અનગારધર્માનુસારેણ પ્રાપ્તૈઃ ‘અતેહિ’ જન્તૈઃ=વલ્લુચળકાદિભિઃ,
‘પતેહિ’, પ્રાન્તૈઃ=પર્યુપિતૈઃ, ‘તુચ્છેહિય’ તુચ્છૈ અલ્પૈશ્ચ ‘લૂહેહિય’ રુક્ષૈઃ અસ્મિ

‘તएण तस्स सेलगस्स’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं)इसके बाद (पयइ सुकुमारयस्स सुहोचियस्स) प्रकृति
सुकुमार तथा सुखोपभोग के योग्य (तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स)
उस शैलक राजाऋषि के (मरीरगसि) शरीर में (तेहिं अतेहिं य
पतेहिं य तुच्छे हिं य लूहे हिं अरसे हिं य विरसेहिं य सीएहिं य,
उण्हेहिं य कालाइक्कते हिं य पमाणाइक्कते हिं य, णिच्च पाणभोयणे
हिं य) अनगार धर्म के अनुसार प्राप्त हुए अन्त प्रान्त, तुच्छ, रुक्ष,
अरस, विरस, शीत, उष्ण, तथा कालातिक्रान्त (असमय मे) नित्य
पान भोजन आहार करने से (वेयणा पाउब्भूया) वेदना प्रकट हुई । बल्ल
चणक आदि का नाम अत हैं । पर्युपित (वासी) अन्न का नाम प्रान्त है ।
अल्प आहार का नाम तुच्छ है । स्निग्धता (घृतादि) रहित आहार का

(तएण तस्स सेलगस्स इत्यादि)

टीકાર્થ—(તएણ) ત્યાર બાદ (પયइ સુકુમાલયસ્સ સુહોચિયસ્સ) શરીરની પ્રકૃતિ
સુકુમાર તેમજ આરામ લોગવવા યોગ્ય (તસ્સ સેલગસ્સ રાયરિસિસ્સ) રાજ
ઋષિ શૈલક (સરીરગસિ) ના શરીરમાં (તેહિં અતેહિંય પતેહિં ય તુચ્છેહિં ચ
લૂહેહિ અરસેહિં ય વિરસેહિંય સીએહિં ય ઉણ્હેહિંય કાલાઇક્કતેહિંય પમાણાઇ
ક્કતેહિંય, ણિચ્ચ પાણભોયણેહિંય) અનગાર ધર્મ મુજબપ્રાપ્ત થયેલા અન્ય,
પ્રાત, તુચ્છ, રુક્ષ, અરસ, વિરસ, શીત, ઉષ્ણ તેમજ અસમય (કાલાતિક્રાન્ત)
માં હમેશા પાન, ભોજન (આહાર) કરવાથી (વેયણા પાઉબ્ભૂયા) વેદના
થવા વાગી બાલ ચણક (ચણા) વગેરે ‘અત’ કહેવાય છે વાસી આહાર
નુનામ ‘પર્યુપિત’ છે થોડા આહારનુ નામ તુચ્છ છે સ્નિગ્ધતા (ધી રહિત)
વગર આહાર રુક્ષ કહેવાય છે ડિંગ વગેરેના વધાર વગરના આહારને

वस्मिंश्चित् काले पूर्वानुपूर्व्यां चरन् यावत्-यत्रैव शैलकपुर नामनगर यत्रैव सुभूमि
भाग नामोद्यान तत्रैवोपागच्छति उगत्य च यावद् सयमेन तपसा स्वात्मान
भावयन् विहरति । परिवन्निर्गता मण्डूकोऽपि निर्गतः, यत्र शैलकोऽनगरस्तत्रा-
गत्य शैलकमनगर यावद् वन्दते नमस्यति, वदित्वा नत्वा स मण्डूकः
पर्युपास्ते=सेवते स्म ।

ततः खलु स मण्डूको राजा शैलकम्यानगरस्य शरीर शुष्क रूक्ष यावत्-सव्या-
वाध=पीडित स रोग=रोगाक्रान्त पश्यति दृष्ट्वा एवमनादीत्-अह खलु भदन्त ।

खाने पीने की रुचि जाती रही । (तएण से सेलए तेण रोगायकेण सुक्के
जाए यावि होत्था तएण से सेलए अन्नया कयाइ पुव्वाणुपुर्वि चरमाणे
जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरइ) इससे वे शैलक अनगर उस
रोग से-सामान्य ज्वरादि व्याधि से, आतग से-प्रयत्नतर मस्तक
शूलादि शीघ्रघातक व्याधि से-सूख गये-निलकुल दुबले पतले शरीर
वाले हो गये । किसी एक समय पूर्वानुपूर्वी से विहार करते हुए ये
जहां शैलक पुर नगर और उसमें भी जहा सुभूमि भाग नाम का
उद्यान था वहां आये । तप और सयम से अपने आत्माको भावित
करते हुए ये वहा ठहर गये । (परिसा निग्गया मडुओ वि निग्गओ, से
लय अणगारे जाव वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता, पज्जुवासइ)
जनता वदना करने के लिये आई मंडूक भी आया । सबने शैलक
राजकृपि को वदना की नमस्कार किया । वदना नमस्कार करके मंडूक
राजा ने उन की सेवा की । (तएण से मडुए राया सेलयस्स अणगा-

गमे थर्ध गये। डतो। (तएण से सेलए तेण रोगायकेण सुक्के जाए यावि
होत्था तएण से सेलए अन्नया कयाइ पुव्वाणुपुर्वि चरमाणे जाव जेणेव सुभूमि
भागे जाव विहरइ) तेथी शैलक अनगर सामान्य रोगथी आतक ओटले डे
सभत रोगथी सूडाँ गया साव दूणणा थर्ध गया डोर्ध वणते पूर्वानु पूर्वी
थी विहार करता शैलक अनगर शैलक पुर नगरना सुभूमिलाग उद्यानमा
आव्या, अने तप अने सयमथी पोताना आत्माने लावित उरता तेओ
त्या रोकाया (परिसा निग्गया मडुओ वि निग्गओ सेलय अणगारे जाव वदइ,
नमसइ वदित्ता, पज्जुवासइ) तेमने वदन करवा भाटे नागरीडेनी परिपद
नगरनी णडार नीकणी त्या पडोथीने णधा नागरिकोओ शैलक राजकृपिने वदन
अने नमस्कार उर्या वदन अने नमस्कार करीने मडूक राजाओ तेमनी नेवा
इती । तएण से मडुए राया सेलयस्स अणगारस्स शरीरय सुक्क भुक्क जाव

સગ્રહઃ । વિપુલા-વિસ્તીર્ણા આત્મપ્રતિપદેગવ્યાપિની, પ્રગાઢા પ્રવર્ધમાના તીવ્રતરા, અતएव-दुरध्यामा=दुःसहा । वेदनायाः परिणाम प्रदर्शयति—‘ कडुयदाह ’ इत्यादि । ‘ कडुयदाह पित्तज्वरपरिगयसरीरे, कण्डूकदाहपित्तज्वरपरिगतशरीरः= कण्डूकेन=कण्डूत्या, दाहेन हृदयकरचरणनयनज्वत्नेन पित्तज्वरेण च परिगत व्याप्त शरीर यस्य स तथा, चापि विहरती=आस्ने । ततः खलु स शैलकस्तेन रोगा तद्धेन रोगेण सामान्येन व्याधिना, आतद्धेन प्रयत्नतरेण व्याधिना, च शुष्को जात आप्यासीत् । ततः खलु स शैलक ‘अन्नया कयाइ’ अन्यदा कदाचित् अन्यस्मिन्

મેં જો વેદના ઉત્પન્ન હુઈં વહ (ઉજ્જલા જાવ દુરહિયા) ઘટ્ટત અધિક દુઃસ્વાતિશય સે વર્ધિત થી અતઃ પ્રલય કાલીન અગ્નિ કી તરહ શરીર કો જલા રહી થી । યદા યાવત્ શબ્દ સે “ વિઝલા પગાઢા ” ઇન પદો કા સગ્રહ હુઆ હૈ । આત્મા કે પ્રતિ પ્રદેશ મેં વ્યાપ્ત હોને સે વહ વેદના વિપુલ થી તથા તીવ્રતર થી વહુત અધિક દિન પ્રતિદિન વઢને સે વહ પ્રગાઢ થી । ફસલિયે દુરધ્યાસથી ઘડી તકલીફ કે સાથ વહ સહન કરને યોગ્ય થી । ફસ વેદનાજન્ય શરીર મેં કયા ર પરિણામ હુઆ ફસ ઘાત કો સૂત્રકાર (કડુય દાહપિત્તજ્વરપરિગયસરીરે) ઇન પદો દ્વારા પ્રકટ કરતે હૈં વે કહતે હૈં કિ ઉન રાજકૃષિ શૈલક અનગાર કા શરીર કડુયન-ખુજલી- કે દાહસે ઓર પિત્તજ્વર સે વ્યાપ્ત હો ગયા । હૃદય મેં, હાથો મેં, ચરણો મેં ઓર નેત્રો મેં ઉનકે જલન હોને લગ ગઈં । પિત્તજ્વર સે પિત્ત મેં અધિકાધિક ગર્મી આ ગઈં- ફસ સે લિયા હુઆ આહાર ઉન્હેં નહીં પચના ઓર વમન દ્વારા વહ બાહિર નિકલ જાતા

થઈ ગઈ તેમના શરીરમા (ઉજ્જલા જાવ દુરહિયા) વેદના ખૂબજ થવા માડી હતી તેથી પ્રલયના અગ્નિની જેમ તેમના શરીરમા બળતરા થતી હતી અહીં ‘ યાવત્ ’ શબ્દ થી (વિઝલા પગાઢા) આ પદોનો સમૂહ થયો છે આત્મા ના બધા પ્રદેશોમા વેદના વ્યાપ્ત થઈ હતી તેથી તે ‘ તીવ્રતર ’ હતી દિવસે દિવસે વેદના વધતી જ જતી હતી તેથી તે ‘ પ્રગાઢ ’ હતી એટલા માટે, જ વેદના દુરધ્યાસ એટલે કે બહુ કષ્ટથી સહ્ય હતી વેદનાને લીધે રાજ કૃષિના શરીરની હાલત કેવી થઈ તે સૂત્ર કાર અહીં સ્પષ્ટ કરતા કહે છે (કડુય દાહપિત્તજ્વરપરિગયસરીરે) કે તે રાજકૃષિ અનગારનું શરીર કડુયન-ખર જવાની પીડાથી અને પિત્તના જ્વરથી વ્યાપ્ત થઈ ગયું તેમની છાતીમા હાથોમા, પગોમા અને આંખોમા બળતરા થવામાડી પિત્તજ્વર થી પિત્તમા ગરમીનું પ્રમાણ વધી જવાથી કરેલા આહારનું પાચન થતું નહિ અને તે બિલ્લી થઈને બહાર નીકળી જતો હતો આવાપીવા તરફ તેમને સાવ અણુ

स्वीकुरुतेस्म । ततस्तदनन्तरं स मण्डूको राजा शैलक वन्दते नमस्यति, वदित्वा
नत्वा च यस्यादिशं प्रादुर्भूतः आगतः, तामेव दिशं प्रतिगतः स्वप्रासादं समाप्तः ॥ २९ ॥

मूलम्—तएण से सेलए कल्ल जाव जलते सभंडमत्तोवगरणमा-
याए पन्थयपामोक्खेहि पच्चाहि अणगारसएहि सद्धि सेलगपुरम-
णुपविसइ अणु पविसित्ता जेणेव मडुयस्स जाणसाला तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता फासुय पीढ जाव विहरइ ।
तएणं से मंडुए विगिच्छए सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-
तुब्भे ण देवाणुप्पिया । सेलयस्स फासुएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं
आउट्ठेह, तएणं ते तेगिच्छया मडुएणं रन्ना एव वुत्ता हट्ठतुट्ठा
समाणा सेलयस्स अहापवत्तेहि ओसहभेसज्जभत्तपाणेहि ते-
गिच्छ आउट्ठेति, मज्जपाणय च से उवदिसति, तएण तस्स
सेलयस्स अहापवत्तेहि जाव मज्जमाणेण रोगायके उवसंते होत्था
हट्ठे मल्लसरीरे जाते ववगयरोगायंके, तएण से सेलए तंसि
रोगायंकसि उवसंतमि समाणसि तसि विपुलसि असण० पाण
खाइमसाइम, मज्जपाणए य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झो-

कह कर उस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया । (तएण से मडुए सेलय
वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव
दिसि पडिगए) इसके बाद वे मण्डूक राजा शैलक अनगार को वदना
नमस्कार कर जिस दिशा से प्रकट हुए थे—आये थे—उसी दिशा तरफ
चले गये । अर्थात् वहा से अपने राज महल में वापिस आ गये ॥ सूत्र २९ ॥

विनति भालजीने शैलक अनगारे तेमनी विनतिने “ तद्धृत्ति ” आभ कहीने
स्वीकारी लीधी (तएण से मडुए सेलय वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता जामेव
दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए) त्वार बाद मण्डूक राजा शैलक अनगारने
वदन अने नमस्कार करीने अर्थात् आया उता त्या जाता ग्या ओटवे के
तेओ पोताना राजभवनमा गया ॥ सूत्र २९ ॥

યુગ્માક યથાપ્રવૃત્તૈઃ=યથાયોગ્યૈ રોગોપશમનમર્થઃ ચિકિત્સકૈઃ વૈત્રૈઃ યથાપ્રવૃત્તેન
=યથાયોગ્યેન પ્રાસુકેન ઔષધભૈષજ્યેન ઔષધમ્-અકદ્રગ્નિર્મિત, ભૈષજ્ય=દ્રવ્ય
સમુદાયનિર્મિત તેન, ભક્તપાનેન નિરવધાગપાનેન, ચિકિત્સામાર્તવ્યામિ કાર-
યામિ । હે ભદન્ત ! યુય સ્વલુ મમ યાનશાલાસુ રથાદિશાલાસુ સમવસરત=આગ-
ચ્છત તત્ર સુખેન તિષ્ઠતા પ્રાસુકમેવળીયે પીઠફલકશય્યાસસ્તારકમવગૃહ
વિહરતિ । સતઃ સ્વલુ સ શૈલકોડનગારો મહૂકસ્ય રાજ-અતમર્થ તથેતિ પતિશ્ચગોતિ

રસસ સરીરય સુખક શુખક જાવ સઘ્વાવાહ સરોગ પાસઢ) હસ કે
ઘાદ જ્યો હી મહૂક રાજા ને શૈલક રાજકુપિ કે શરીર કો શુષ્ક રક્ષ
યાવત્ પીડિત એવ રોગાક્રાન્ત દેસા તો (પાસિત્તા એવ વયામી) દેસ
કર ડન સે હસ પ્રકાર કહા-(અહં ણ મતે ! તુબ્મ અહા પવત્તેહિં તિગિ
ચ્છઞ્હિં અહાપવત્તે ણ ઓસહમેસજ્જેણ મત્તપાણેણ તિગિચ્છ આઝઢાવેમિ)
હે મદત ! મેં આપકી યથા યોગ્ય-રોગો પશમન કરને મેં સમર્થ-વૈદ્યો
દ્વારા-ઉચિત પ્રાસુક (નિર્દોષ) ઔષધઑર ભૈષજ્ય સે તથા નિરવધ અન્ન-
પાન સે ચિકિત્સા કરવાના ઘાંત્તા હું-હસલિયે (તુબ્મે ણં મતે ! મમ
જાણસાલાસુ સમોસરહ, ફાસુઅં એસણિજ્જ પીઠફલગસેજ્જાસથારગ
ઓગિણિહત્તા ણં વિહરહ) આપ મેરી રથશાલા મેં પધારે ઑર વહા ઘિરાજે
સુખ શાતા સે વહા ઠહરે, પ્રાસુક એવળીય, પીઠફલક શય્યા સસ્તારક
કો સુનિ કે કલ્પાનુસાર યાચિત કર હેલે । (તણ સે સેલણ અણગારે
મહુયસ્સ રણ્ણો એયમહુ તહ ત્તિ પડિસુણેહ) હસ પ્રકાર મહૂક રાજા
કે પ્રાર્થના કરને પર ડન શૈલક અનગાર ને ડસકી “ તહત્તિ ” એસા

સઘ્વાવહ સરોગ પાસઢ) ત્યાર બાદ મહૂક રાજાએ રાજકુપિના શરીરને શુષ્ક
રક્ષ યાવત્ પીડિત તેમજ રોગાક્રાન્ત બેથુ તો (પાસિત્તા એવ વયામી) બેઠને
તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું-(અહં ણ મતે ! તુબ્મ અહાપવત્તેહિં તિગિચ્છઞ્હિં
અહાપવત્તે ણ ઓસહમેસજ્જેણ મત્તપાણે ત તિગિચ્છ આઝઢાવેમિ) હે ભદત !
મારી ઇચ્છા છે કે હું રાજાને મટાવનાર યોગ્ય વૈદ્યોની ઉચિત પ્રાસુક ઔષધો
અને ભૈષજ્યોદ્વારા તેમજ નિરવધ અન્નપાન થી તમારી ચિકિત્સા (ઇલાજ)
કરાવડાવું એટલા માટે (તુબ્મેણ મતે ! મમ જાણસાલાસુ સમોસરહ ફાસુઅં
એસણિજ્જ પીઠફલગસેજ્જાસથારગ ઓગિણિહત્તાણ વિહરહ) તમે અમારી રથ
શાળામા પધારા અને સુખ શાંતિ પૂરડ ત્યા રહેા સુનિ જનોવિત પ્રાસુક
એવળીય, પીઠફલક શય્યા સસ્તારક ત્યાથા માગી લેજો (તણ સેલણ અણ
ગારે મહુયસ્સરણ્ણો એયમહુ તહ ત્તિ પડિસુણેહ) મહૂક રાજાની આ પ્રમાણે

राजा चिकित्सकान् वैद्यान् शब्दयन्ति आह्वयति । शब्दयित्वा=आहूय, एव
=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-युय खलु देवानुप्रियाः । शैलकस्य राजर्षेः ' फासु
एसणिज्जेण ' प्रासुकैपणीयेन यावत् औपधभेषजेन ' तेगिच्छ ' चिकित्सा
रोगनिवारणोपायम् आवर्तयत कुरुत । ततस्तदन्तर चिकित्सकाः वैद्या मण्डुकेन
राजैवमुक्ताः हृष्टतुष्टाः=प्रमुदिताः सन्तः शैलकस्य यथाप्रवृत्तैः साधुकल्पैः प्रासुकैप-
णीयैरित्यर्थः, औपधभेषज्यभक्तपानैश्चिकित्सा=व्याधिप्रतीकारम्. आवर्तयति
=करोति ' मज्जपाणय च, मद्यपानकच=मद्यस्य, निद्राकारकद्रव्यविशेषस्य पान
च ' से ' तस्य=शैलकस्य उपदिशन्ति ।

कर आज्ञा लेकर ठहर गये । (तएणं से मडुण चिगिच्छए सदावेह) इसके
बाद मडुक राजा ने वैद्योंको बुलाया (सदावित्ता एव वयासी) बुलाकर
उनसे ऐसा कहा (तुभे ण देवाणुप्पिया । सेल्यस्स फासुएसणिज्जेण
जाव चिगिच्छ आउट्टेह) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग शैलक राज ऋषि
अनगार की प्रासुक एपणीय औपध भेषज से चिकित्सा करो । (तएण
ते तेगिच्छया मडुण रत्ता एव वुत्ता हट्ट तुट्टा समाणा सेल्यस्स अहा-
पवत्तेहिओसहमेसज्जभत्तपाणेहि चिगिच्छ आउट्टे ति) इस प्रकार
मडुक राजा द्वारा कहे गये उन वैद्यो ने हर्ष एव सतोष से युक्त होकर
उन शैलक राजऋषि की यथा प्रवृत्त निर्दोष औपध भेषजों से तथा
भक्त पानों से चिकित्सा करना प्रारम्भ कर दिया । (मज्ज पाणयच से उव
दिसति) और निद्रा कारक द्रव्य विशेष का पीना उन्हें बतला दिया ।
यहां यह जो मद्य शब्द प्रयुक्त हुआ है वह मदिरा अर्थ का वाचक नहीं
है । किन्तु निद्रा कारक पेयद्रव्य विशेष का वाचक है । क्योंकि साधु

भेजवीने तेओ त्था राजाया (तएण से मडुए चिगिच्छए सदावेह) त्थार आह
मडुक राजाओ वैद्योने ओलाव्या (सदावित्ता एव वयासी) ओलावीने तेभने
आ प्रभाणु कहु (तुभेण देवाणुप्पिया ! सेल्यस्स फासुएसणिज्जे ण जाव
तेगिच्छ आउट्टेह) हे देवानुप्रियो ! तमे शैलक राजऋषि अनगारनी प्रासुक
एपणीय औपध अने भेषज यी चिकित्सा करे । (तएण ते तेगिच्छया मडुएण
रत्ता एव वुत्ता हट्टा तुट्टा, समाणा सेल्यस्स अहापवत्तेहि ओसहमेसज्जभत्तपाणेहि
चिगिच्छ आउट्टेति) आ रीते मडुक राजानी वात सालजी ने उर्पित तेभज
मडुए थयेवा वैद्यो शैलक राजऋषिनी उचित औपध अने भेषजोथी तेभज
भक्तपानोथी चिकित्सा (धत्ताज्ज) करवा लाव्या (मज्जपाणयच से उवदिसति)
अने निद्रावश थर्ध शजाय तेवा पदार्थ विशेषने पीवानी विवि तेभने भभ-
नवी अर्धी (मज्ज) मद्य शब्द आव्यो छे ते मदिरा (वारु) ना अर्थ

वधन्ने ओसन्ने ओसन्नविहारी एवं पासत्थे, २ पासत्थविहारी
कुसीले २ कुसीलविहारी पमत्ते ससत्ते उउवच्चपीठफलगसेज्जा-
सथरण पमत्ते यावि विहरइ । नो सचाएइ फासुएसणिज्जं
पीठ पच्चप्पिणित्ता मंडुयं च रायं आपुच्छित्ता वहिया जणव-
यविहार अब्भुज्जएण पयत्तेण, पग्गहिएण विहरित्तए॥ सू०३०॥

टीका-‘तएण से’ इत्यादि-ततस्तदनन्तर खलु स शैलकः कल्ये=प्रभाते यावत्
तेजसा ज्वलति=सूर्ये उदिते सतीत्यर्थः ‘सभडमत्तोवगरणमायाए’ स भाण्डामत्रो
पकरणमादाय भाण्डामत्राणि अशनपानादिपात्रादि तैः सहोपकरण रजोहरणादिकम्
आदाय=गृहीत्वा, पान्थकप्रमुखैः पञ्चभिरनगरशतैः साधं शैलकपुरमनुप्रविशति,
अनुप्रविश्य यत्रैव मण्डूकस्य यानशाला वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य प्रायुक्त
पीठफलकशय्या सस्तारक गृहीत्वा यावद् विहरति । ततस्तदनन्तर खलु स मण्डूको

‘तएण से सेलए’ इत्यादि ।

टीकार्थ-‘तएण’ इसके बाद ‘से सेलए’ वे राजकृपिशैलक अनगार
(कल्ल जाव जलते सभडमत्तोवगरणमायाए पथय पामोक्खेहिं पच्च
हिं अणगारसएहिं सद्धि सेलगपुरमणुपविसइ) प्रातः काल जब सूर्य
उदित होकर तेज से चमक ने लगा था “सभडमत्तोवगरणमायाए”
भाण्डोपकरणको लेकर पाथक प्रमुख पाचसौ अनगारों के साथ शैलक-
पुर नगर में प्रविष्ट हुए । (अणुपविसित्ता जेणेव मडुयस्स जाणसाला-
तेणेव उवागच्छइ) प्रविष्ट हो कर जहा मडूक राजा की यान शाला थी
वहा पहुँचे- (उवागच्छित्ता-फासुय पीठ जाव विहरइ) पहुँच कर वहाँ
से मुनिके कल्पानुसार एषणीय पीठ फलक शय्या सस्तारक की याचना

(तएण सेलए) इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) त्थार भाट (सेलए) शैलक अनगार (कल्ल जाव
जलते सभडमत्तोवगरणमायाए पथयपामोक्खेहिं सद्धि सेलगपुरमणुपविसइ)
सवारे सूर्य उदय पाये। त्थारे (सभडमत्तोवगरणमायाए) भाण्डोपकरण
लेकर पाथक प्रमुख पाचसौ अनगारों की साथ शैलक पुर नगरमा प्रविष्ट थया
(अणुपविसित्ता तेणेव मडुयस्स जाणसाला तेणेव उवागच्छइ) प्रवेशीने तेओ
ज्यां मडूक राजा की रथशाला होती त्या पहुँची। (उवागच्छित्ता फासुय पीठ
जाव विहरइ) त्या पहुँचीने शैलक अनगारे मुनि कल्पानुसार एषणीय, पीठ
फलक शय्या सस्तारक की याचना करी अने ते जधी वस्तुओ तेमज आशा

राजा चिकित्सकान् वैद्यान् शब्दयन्ति आह्वयति । शब्दयित्वा=आहूय, एव
=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-युय खलु देवानुप्रियाः । शैलकस्य राजर्षेः ' फासु
एसणिज्जेण ' प्रासुकैपणीयेन यावत् औपधभेषजेन ' तेगिच्छ ' चिकित्सा
रोगनिवारणोपायम् आवर्तयत कुरुत । ततस्तदन्तर चिकित्सकाः वैद्या मण्डुकेन
राजैवमुक्ताः हृष्टुष्टाः=प्रमुदिताः सन्तः शैलकस्य यथाप्रवृत्तैः साधुऋष्यैः प्रासुकैप-
णीयैस्त्वित्यर्थः, औपधभेषज्यभक्तपानैश्चिकित्सा=व्याधिप्रतीकारम् आवर्तयति
=करोति ' मज्जपाणय च, मद्यपानकच=मद्यस्य, निद्राकारकद्रव्यविशेषस्य पान
च ' से ' तस्य=शैलकस्य उपदिशन्ति ।

कर आज्ञा लेकर ठहर गये । (तएणं से मडुण चिगिच्छए सदावेइ) इसके
बाद मडुक राजा ने वैद्योंको बुलाया (सदावित्ता एव वयासी) बुलाकर
उनसे ऐसा कहा (तुम्हे ण देवाणुप्पिया । सेलयस्स फासुएसणिज्जेण
जाव चिगिच्छ आउट्टेह) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग शैलक राज ऋषि
अनंगार की प्रासुक एपणीय औपध भेषज से चिकित्सा करो । (तएण
ते तेगिच्छया मडुण रत्ता एव बुत्ता हट्ट तुट्टा समाणा सेलयस्स अहा-
पवत्तेहिओसहभेसज्जभत्तपाणेहि चिगिच्छ आउट्टे ति) इस प्रकार
मडुक राजा द्वारा कहे गये उन वैद्यो ने हर्ष एव सतोप से युक्त होकर
उन शैलक राजऋषि की यथा प्रवृत्त निर्दोष औपध भेषजों से तथा
भक्त पानों से चिकित्सा करना प्रारम्भ कर दिया । (मज्ज पाणयच से उव
दिसति) और निद्रा कारक द्रव्य विशेष का पीना उन्हें बतला दिया ।
यहा यह जो मद्य शब्द प्रयुक्त हुआ है वह मदिरा अर्थ का वाचक नहीं
हैं । किन्तु निद्रा कारक पेयद्रव्य विशेष का वाचक है । क्यों कि साधु

भेजवीने तेओ त्या राजया (तएण से मडुण चिगिच्छए सदावेइ) त्थार थाइ
मडुक राजाओ वैद्योने ओलाओया (सदावित्ता एव वयासी) ओलावीने तेभने
आ भमाणे उछु (तुम्हेण देवाणुप्पिया ! सेलयस्स फासुएसणिज्जे ण जाव
तेगिच्छ आउट्टेह) हे देवानुप्रियो ! तमे शैलक राजऋषि अनंगारनी प्रासुक
ओपणीय औपध अने लेपज थी चिकित्सा करे (तएण ते तेगिच्छया मडुण
रत्ता एव बुत्ता हट्टा तुट्टा, समाणा सेलयस्स अहापवत्तेहि ओसहभेसज्जभत्तपाणेहि
चिगिच्छ आउट्टेति) आ रीते मडुक राजाणी वात सालणी ने उचित तेभज
सतुष्ट थयेवा वैयो शैलक राजऋषिनी उचित औपध अने लेपज्जेथी तेभज
भक्तपानोथी चिकित्सा (छलाज) करवा लाओया (मज्जपाणयच से उवदिसति)
अने निद्रावश थउ गज्जाय तेवा पदार्थ विशेषने पीवानी विधि तेभने भम-
ज्जवी अरु (मज्ज) मद्य शब्द आओया छे ते मदिरा (दारु) ना अर्थ

इह मद्यशब्दो न मदिरार्थकः किंतु निद्राजनक-पानद्रव्यविशेषार्थक । सागो
चिकित्साया प्रासुकैषणीयोपधानामेव प्रस्तुतत्वादिह मदिरायाः प्रसङ्गाभावात्
साधोर्मद्यपानानधिकारित्वात् आगमेदि साधोर्मद्यपानप्रतिषेधात् मद्यपानस्य चारित्र
विश्वसकत्वाच्च, साधोः सुरापानेन साधुत्वमद्वापत्तेश्च, यथा दशवैकालिकसूत्रै-

सुर वा मेरग वावि अन्न वा मज्जग रस ।

ससक्ख न पिवे भिक्खू जस सारक्खमप्पणो ॥ अ० ५, उ० २, गा० ३६ ।

વડૂઈ સુહિયા તસ્સ માયા મોસં ચ ભિક્ખુગો ।

આજસોય અનિવ્વાણ સયય ચ અસાહુયા ॥ ૫ ૩૦૨, ગા૦ ૩૮।

जनों की चिकित्सा में प्रासुक एषणीय औषधियों का ही विधान है
और यही कारण यहा चल रहा है । यहा मदिरा का तो कोई प्रकरण
ही नहीं चल रहा है । दूसरे साधुओं को मद्यपान का अधिकार ही नहीं
है । वे उसके शास्त्रीय मर्यादा के अनुसार अनधिकारी हैं । आगम में
साधुओं को मद्यपान करने का निषेध किया गया है । कारण वह
चारित्र का विश्वसक होता है । जहा चारित्र नहीं वहां साधुता कैसी
सुरापान से साधुता का भग होता है यह बात आगम में स्पष्ट है-
जैसे दश वैकालिक सूत्र में " सुर वा मेरग वावि अन्न वा मज्जग
रस, ससक्ख न पिवे भिक्खू जस सारक्खमप्पणो " अ० ५, उ० २ गा
३६ वडूई सुहिया तस्स माया मोस च भिक्खुणो अजसोय अनिक्वा

ને બતાવવા માટે નહિ પણ નિદ્રાવગ થવાય તેવા પેટા પદાર્થ વિશેષ ને
સૂચવવા માટે પ્રયુક્ત થયો છે કેમકે-સાધુઓની ચિકિત્સામા પ્રાસુક એષણીય
ઔષધીઓજ શ્રાદ્ધ સમન્તય છે અહી પ્રકરણ પણ ઔષધીઓનુ જ ચાલી રહ્યું
છે મદિરા વિષે ની તેા અહી કંઈ વાત જ નથી બીજી વાત અ પણ છે કે
સાધુઓને મદ્યપાન નો અધિકાર પણ નથી, શાસ્ત્રીય વિધિવિધાનની
દૃષ્ટિએ તેઓ મદ્યપાનની બાબતમા અનધિકારી ગણાય છે આ ગમે તે
સાધુઓને મદ્યપાન કરવાની મના કહી છે કેમકે મદ્યપાનથી ચારિત્ર નષ્ટ
થાય છે જ્યા ચારિત્ર નથી ત્યા સાધુતાની કલ્પના કરવીજ વ્યર્થ છે દારૂ
પીવાથી સાધુતા તારા પામે છે આ વાત આગમમા સ્પષ્ટ રીતે સમજાવવામા
આવી છે દા ત ' દશ વૈકલ્પિક સૂત્ર ' મા સ્પષ્ટ પણે કહેવામા આવ્યું
છે કે-(સુરવા મેરગવા વાવિ અ ન વા મજ્જગરસ, સસક્ખ ન પિવે ભિક્ખૂ જસ
સારક્ખ મપ્પણો) અ ૫, ૩ ૫, ગા ૩૬ વડૂઈ સુહિયા તસ્સ માયા મોસચ

‘ભિક્ષુ’ ‘ભિક્ષુ’ ‘અપ્પણો’ આત્મન. સ્વસ્ય, ‘જસ’ યશ’ સયમ ‘સાર
ક્ષ’ સરક્ષન ‘સુર’ સુરા મદિરાના ‘મેરગ’ મેરક સરકાનામવેય મદ્ય ‘વાપિ’
વાડપિ ‘અન્ન વા’ અન્યદ્વા=અન્યમપિમદિરાજાત ‘મઝ્જગ’ માધક મદજનક
રમ ‘સસક્ષ’ સસાક્ષિ ‘ન પિવે’ ન પિવેત્ સાક્ષિભિ કૈવલ્યાદિભિઃ સહેતિ સસાક્ષિ,
કૈવલ્યાદિક સાક્ષીકૃત્યેત્યર્થ । એકાન્તેડપિ ન પિવેદિતિ ભાવઃ । ૩૬ ॥

‘તસ્સ’ તસ્ય સુરાપાયિનઃ ‘ભિક્ષુણો’ ભિક્ષોઃ માધોઃ ‘સયય’ સતત
‘સુણ્ડિયા’ મદ્યપાનવિષયાડસક્તિ, ચ પુનઃ માયા=કપટ ‘મોસ’ મૃપા
અસત્યભાષણ, ચ પુનઃ ‘અજસો’ અયશઃ અપરીતિઃ અસયમથ ‘અનિવ્વાણ’
અનિર્વાણમ્-અનુપશાન્તિ, ચ પુનઃ ‘અસાહુયા’ અસાધુતા સાધુ પદાનર્હત્વ વર્તે ।
સર્વાનર્થમૂલ મદ્યપાનમિતિ ભાવઃ ॥ ૩૮ ॥

અનયોર્વિસ્તૃતવ્યાખ્યા દશવૈકાલિકમૂત્રસ્ય મત્કૃતાડચારમણિમજ્જૂપાતોડવ
ગન્તવ્યા ।

વૈદ્યકેડપિ-બુદ્ધિભ્રશકરત્વાન્મદ્ય પ્રતિપિદ્વમિતિયો યતે । ‘શાલિગ્રામનિઘટુ’

ળ સમય ચ અસાહુયા ” અ ૫ ઉ ૨ ગાથા ૩૮ इन दो गाथाओ द्वारा
यह कहा गया है कि जो साधु अपने सयम रूप यश की रक्षा करना
चाहता है वह मदिरा मेरक-सरका तथा और भी जो मादक द्रव्य है
उनका सेवन न करे । इस के सेवन करने से सेवन करने वाले में
मद्यपान विषयक आमक्ति बढ़ती है, कपट असत्य भाषण असमभाव
की वृद्धि होती है और परिणामो में शान्ति नहीं रहती है । असाधुता
जगती है-बढ़ती है । मद्यपान समस्त अनर्थों का मूल कारण है । इन
दोनों गाथाओं की विस्तृत व्याख्या मैंने दशवैकालि सूत्र के आचार
मणि मज्जूपा में की है । वहां से जान लेनी चाहिये । वैद्यक ग्रन्थ जो
शालिग्राम निघटु है उस में भी बुद्धि को ब्रस करने वाली होने के

ભિક્ષુણો અજસોય અનિવ્વા ણ સમય ચ અસાહુયા) અ ૫ ઉ ૨, ગાથા ૩૮
આ બે ગાથાઓ વડે આ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવી છે કે જે સાધુઓ
પોતાના સયમ રૂપ યશને રક્ષવા આહે છે, તે મદિરા (દારૂ) મેરક (સરકો)
અને બીજા પણ કેટલાક મદક પદાર્થો છે તેમનું સેવન કરે નહિ એમના
સેવનથી સેવન કરનારમા મદ્યપાન વિષેની આસક્તિ વધે છે કપટ અસત્ય વચન
અને અસયમ જેવા ભાવોની પણ વૃદ્ધિ થાય છે, અને છેવટે એનાથી
જીવનમા શાંતિભગ થાય છે અસાધુતા (દુષ્ટતા) વધે છે ખરેખર મદ્યપાન
જગતના બધા અનર્થોનું મૂળકારણ છે ઉક્ત બે ગાથાઓની અવિસ્તર
વ્યાખ્યા ‘દશવૈકાલિપદ મૂત્ર’ની આચાર મણિ મજ્જૂપામા આવી છે જિશા
બાણી લેવું બેગે ‘શાલિગ્રામ નિઘટુ’ નામે વૈદ્યક ગ્રંથમા

કથ તર્હિ સમ્યગ્દર્શનાદિરત્નત્રયસરક્ષકસ્ય સાધોચિકિત્સાયા મધ્યપાનાધિકારઃ સ્યાત્ ।

આચારાન્ન સૂત્રેઽપિ (શ્રુ૦ ૨, ૩૦૨) મધ્યપાનસ્ય સંસ્કરણેનાપિ સાધુઃ પ્રાયશ્ચિત્તભાગી ભવતીતિ પ્રતિગોધિતમ્ ઉક્ત ચાન્યત્રાપિ યથા—

અજ્ઞાનાદ્ વારુણીં પીત્વા સંસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ ।

મતિપૂર્વમનિર્દેશ્ય પ્રાણાન્તિકમિતિ સ્થિતિઃ ॥ મનુ૦ અ૦ ૧૧—શ્લો૦ ૧૪૬ ।

મદિરામજ્ઞાત્વા યદિ પિવેત્ તર્હિ પુનરુપનયનસંસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ, નાન્યથૈતિ ભાવ । યદિ મદિરા જ્ઞાત્વા પિવેત્ તર્હિ પ્રાણાન્તકરણેનૈવ શુદ્ધયતિ નાન્યથૈતિ સ્થિતિર્ધર્મસ્ય મર્યાદાઽસ્તીત્યર્થઃ ।

કારણ મધ્યપાન નિષિદ્ધ ક્રિયા છે । અતઃ વિચાર ને જૈસી થાન છે કિ સાધુ જો તપસજમ કા સરક્ષક હોના છે વહ અપની ચિકિત્સા કરાને મેં મધ્યપાન કા અધિકારી કૈસે હો સકતા છે । આચારાન્ન સૂત્ર મેં મી (શ્રુ૦ ૨ ૩૦૨) મધ્યપાન કરને કો સકન્પ મી સાધુઓ કો ત્યાગ દેના ચાહિયે । યદિ વહ એસા કરતા છે તો ઉસે પ્રાયશ્ચિત્ત કા ભાગી થનના પડતા છે । અન્ય સિદ્ધાન્ત કારોં ને મી “ અજ્ઞાનાત્ વારુણીં પીત્વા સંસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ, મતિપૂર્વમનિર્દેશ્ય પ્રાણાન્તિકમિતિસ્થિતિઃ । મનુ સ્મૃતિ૦ અ૦ ૧૧ શ્લોક ૧૪૬, હસ શ્લોક દ્વારા વિષય સમજાયા છે કિ યદિ કોહ અજ્ઞાન ભાવ સે મદિરા કો પી લેના છે તો વહ પુનઃ ઉપનયન સંસ્કાર સે હી શુદ્ધ હો સકતા છે અન્યથા નહીં । યદિ વહ જાનબૂઝ કર મદિરા કા સેવન કરતા છે તો વહ અપને પ્રાણ અપેણ કર હી શુદ્ધ હો

પણ મદિરાને બુદ્ધિને નષ્ટ કરનારી હોવા બદલ તેનો વિષેધ સૂચ્યો છે એટલે આવી નાની સરખી વાતોતો દરેક વ્યક્તિ સમજી શકે છે તો પછી રત્નત્રયના સરક્ષક સાધુજનો પોતાની ચિકિત્સામા પણ મદિરા પાન કેવી રીતે કરી શકે છે ? તેઓ આવું કરે તો તેમને તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું પડે છે બીજા પણ શાસ્ત્રકારો મદિરાનો નિષેધ કરતા કહે છે (અજ્ઞાનાત્, વારુણીં પીત્વા સંસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ । મતિપૂર્વમનિર્દેશ્ય પ્રાણાન્તિકમિતિ સ્થિતિ ॥ મનુસ્મૃતિ અધ્યાય ૧૧ શ્લોક—૧૪૬ ।) આશ્લોક વડે કહેવામા આવ્યું છે કે જો કોઈ બ્રાહ્મણમા પણ મદિરાનું સેવન કરી જાય તો યજ્ઞોપવીત (જનોધ) સંસ્કારથી તે ફરી શુદ્ધ થાય છે અને જો તે જોણી બ્રૂજને મદિરાનું સેવન કરે તો પોતાના પ્રાણોને અર્પણ કરીને એટલે કે મૃત્યુને ભેગીને જ તે શુદ્ધ થઈ શકે છે, બીજા કોઈપણ ઉપાયથી તેની શુદ્ધિ અસંભવિત છે ધર્મશાસ્ત્રોનું એજ વિધાન

अत्रत्य पूर्वापरमूलपाठसमालोचनतोऽप्यत्र मद्यशब्दस्य मदिरार्थरत्न न सिध्य-
ति तथाहि-यथाप्रवृत्तैश्चिकित्सकैर्यथाप्रवृत्तेनौषधभैषज्येन भक्तपानेन चिकित्सामा-
वर्तयामीति स्वीकृत्य मण्डूकेन शैलकानगर इत्यप्रार्थितः-यूय खलु प्रासुकमेपणीय
पीठफलकादिकमद्गृह्य विहरतेति, शैलकानगरस्तयेति प्रतिश्रुत्य मण्डूकस्य यान-
शालाया तथैव विहरतिस्म ततोमण्डूकेन चिकित्सका आदिष्टा-प्रासुकैपणीयेन
यावत् चिकित्सामावर्तयतेति ततश्चिकित्सका मण्डूकस्याज्ञानुसारेण प्रासुकै
पणीयैरेवौषधादिभिश्चिकित्सा कुर्वत' साधोरवलम्ब्य प्रवचननिषिद्ध मण्डूकेनाप्यना-
दिष्ट तदाज्ञाविरुद्ध मन्त्र पाययितुं कथं प्रवृत्ताः स्युः ! कथमपि न ।

सकता है अन्यथा नहीं । यही धर्म की मर्यादा है । यहां पर के पूर्वा पर
के मूल पाठ के समालोचन से भी मद्यशब्द में मदिरा अर्थ सिद्ध नहीं
होता है । जब मण्डूक राजा ने शैलक राजकृपि के समक्ष यह प्रार्थ-
ना की-कि मैं 'यथा प्रवृत्तेन औषध भैषज्येन भक्तपानेन चिकित्सा आव-
र्तयामि' रोगोपशमन करने में समर्थ वैद्यों के द्वारा यथा योग्य निर्दोष
प्रासुक औषध भैषज्य से आपकी चिकित्सा कराऊंगा आप मेरी यान
शाला में प्रासुक एपणीय पीठ फलक आदि की याचना करके वहां रहें
तब इस मण्डूक राजा की प्रार्थना को सुनकर वे शैलक अनगर 'तथेति'
कहकर उसे स्वीकार कर के वहां उनकी यानशाला में आये । इनके
आते ही मण्डूक ने वैद्यों को बुलाकर यह आदेश दिया कि आप लोग
प्रासुक एपणीय आदि औषध भैषज्य से इनकी चिकित्सा करें । तब
उन वैद्यों ने मण्डूक की आज्ञानुसार प्रासुक एपणीय औषध आदि से
उनकी चिकित्सा करने लगे । फिर सोचने की बात है कि जब साधु

छे अर्द्धी पूर्वापरना भूणपाठथी पणु मद्यशब्दथी मदिरा विषेने। अर्थ सिद्ध
थतो नथी जेमके मण्डूक राजाये शैलक राज कृपिनी सामे विनती करता
उछु-(यथाप्रवृत्तै चिकित्सकै यथाप्रवृत्तेन औषधभैषज्येन भक्तपानेन चिकित्सा
मावर्तयामि) रोगोने भटाउनारा समर्थ वैद्योद्वारा हु यथोचित प्रासुक
औषध औषज्यथी तमारी चिकित्सा (छलाज) इगवीश भागी न्यगणामा तमे
प्रासुक एपणीय पीठ फलक वगेरेनी याचना उराने त्या रोकामे त्यारे मण्डूक
राजानी विनतीने स्वीकारता 'तथेति' (मा३) उछीने तेओ तेमनी न्यगणामा
आव्या शैलक अनगरनी चिकित्सा भाटे मण्डूके वैद्योने जोलाव्या अने जोला
वीने ओम आज्ञा करी के तमे प्रासुक एपणीय वगेरे लेपज्या ओमनी
चिकित्सा गरु करी वैद्योपणु मण्डूक राजानी आज्ञा प्रमाणेन प्रासुक एपणीय
रेथी तेमनी चिकित्सा (छलाज) करवा लाव्या ओनी माथे साथे

કથ તર્હિ સમ્યગ્દર્શનાદિરત્નત્રયસરક્ષકસ્ય સાધોચિકિત્સાયા મધ્યપાનાધિકારઃ સ્યાત્ ।

આચારાઙ્ગ સૂત્રેઽપિ (શ્રુ૦ ૨, ૩૦૨) મધ્યપાનસ્ય સરુલ્પેનાપિ સાધુઃ પ્રાયશ્ચિત્તભાગી ભવતીતિ પ્રતિવોધિતમ્ ઉક્ત ચાન્યત્રાપિ યથા—

અજ્ઞાનાદ્ વારુણીં પીત્વા સસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ ।

મતિપૂર્વમનિર્દેશ્ય પ્રાણાન્તિકમિતિ સ્થિતિઃ ॥ મનુ૦ અ૦ ૧૧—શ્લો૦ ૧૪૬ ।

મદિરામજ્ઞાત્વા યદિ પિવેત્ તર્હિ પુનરુપનયનસંસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ, નાન્યથેતિ ભાવ । યદિ મદિરા જ્ઞાત્વા પિવેત્ તર્હિ પ્રાણાન્તકરણેનૈવ શુદ્ધયતિ નાન્યથેતિ સ્થિતિર્ધર્મસ્ય મર્યાદાઽસ્તીત્યર્થઃ ।

કારણ મધ્યપાન નિષિદ્ધ ક્રિયા છે । અતઃ વિચાર ને જૈસી થાન છે કિ સાધુ જો તપસજમ કા સરક્ષક હોના છે વહ અપની ચિકિત્સા કરાને મેં મધ્યપાન કા અધિકારી કૈસે હો સકતા છે । આચારાઙ્ગ સૂત્ર મેં મી (શ્રુ૦ ૨ ૩૦૨) મધ્યપાન કરને કો સકન્પ મી સાધુઓ કો ત્યાગ દેના ચાહિયે । યદિ વહ એસા કરતા છે તો ઉસે પ્રાયશ્ચિત્ત કા ભાગી થનના પડતા છે । અન્ય સિદ્ધાન્ત કારોં ને મી “ અજ્ઞાનાત્ વારુણી પીત્વા સસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ, મતિપૂર્વમનિર્દેશ્ય પ્રાણાન્તિક મિતિસ્થિતિઃ । મનુ સ્મૃતિ૦ અ૦ ૧૧ શ્લોક ૧૪૬, હસ શ્લોક દ્વારા વિષય સમજાયા છે કિ યદિ કોઈ અજ્ઞાન ભાવ સે મદિરા કો પી લેના છે તો વહ પુનઃ ઉપનયન સસ્કાર સે હી શુદ્ધ હો સકતા છે અન્યથા નહીં । યદિ વહ જાનબૂઝ કર મદિરા કા સેવન કરતા છે તો વહ અપને પ્રાણ અપેણ કર હી શુદ્ધ હો

પણ મદિરાને ખુદિને નષ્ટ કરનારી હોવા ખતલ તેનો વિષેધ સૂચ થો છે એટલે આવી નાની સરખી વાતોતો દરેક વ્યક્તિ સમજી શકે છે તો પછી રત્નત્રયના સરક્ષક સાધુજનો પોતાની ચિકિત્સામા પણ મદિરા પન કેવી રીતે કરી શકે છે ? તેઓ આવુ કરેતો તેમને તેનુ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવુ પડે છે ખીજ પણ શાસ્ત્રકારો મદિરાનો નિષેધ કરતા કહેછે (અજ્ઞાનાત્, વારુણી પીત્વા સસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ । મતિપૂર્વમનિર્દેશ્ય પ્રાણાન્તિકમિતિ સ્થિતિ ॥ મનુસ્મૃતિ અધ્યાય ૧૧ શ્લોક-૧૪૬ ।) આશ્લોક વડે કહેવામા આવ્યુ છે કે જો કોઈ અજ્ઞાણુમા પણ મદિરાનુ સેવન કરી જાય તો યજ્ઞોપવીત (જનોઈ) સસ્કારથી તે ફરી શુદ્ધ થાય છે અને જો તે જાણી ખૂજીને મદિરાનુ સેવન કરે તો પોતાનો પ્રાણોને અર્પણ કરીને એટલે કે મૃત્યુને ભેટીને જ તે શુદ્ધ થઈ શકે છે, ખીજ કોઈપણ ઉપાયથી તેની શુદ્ધિ અસંભવિત છે ધર્મશાસ્ત્રોનુ એજ વિધાને

किं च-मद्यपानात् पूर्वापरहकाले सुखप्रसुप्तस्य शैलकस्य राजर्षेः चातुर्मासिके प्रतिक्रमितुकामेन पान्थकेन क्षमापनार्थं गिरसा तच्चरणसम्पर्शं कृते सति स उत्थाय क्रोधाविष्टो जातः । ततोऽमौ पान्थकः शैलकानगारं वन्दमानः स्वशीर्षेण तच्चरणयोः स्पृशन् प्रार्थयति स्म-क्षमन् मेऽपराध, नैव पुनः करिष्ये इति । मद्यशब्दस्य निषिद्धमद्यार्थकत्वे तु-मूलसूत्रे शैलकस्य राजर्षिर्विशेषणं नोपपद्यते, पान्थकानगारकृतं तद् वन्दनादिकं च विरुध्यते ।

किं च-मद्यशब्दस्य मदिरार्थकत्वस्वीकारे शैलकस्य पश्चात्तापादये सति विशुद्ध-वैयावृत्ति करना भी विरुद्ध पडता है । किं च मद्य के पान करने से पूर्वा-पराहकाल में सुख से सुप्त हुए शैलक राजकृषि के, चातुर्मासि प्रतिक्रमण करने की इच्छा से जब क्षमापना याचनार्थं मस्तक से चरणों का स्पर्श किया तो वे जग गये और अचानक निद्रा भग होने से उन्हें क्रोध आ गया । पान्थक ने जब उनकी यह दशा देखी तो उसने नमन करते हुए उनके चरणों को छूकर प्रार्थना की महाराज ! आप मेरे अपराध को क्षमा कीजिये आगे ऐसा अत्र नहीं करूंगा । यदि मद्य शब्द को निषिद्ध मद्यार्थक-मदिरार्थक-माना जावे तो मूल सूत्र में शैलक के लिये जो राजकृषि शब्द का प्रयोग किया गया है-उन्हें जो राजकृषि के विशेषण से विशेषित किया है-वह नहीं बनता है और न पान्थक अनगार कृत उन के प्रति वन्दना आदि कृत्य युक्ति सगत बैठते हैं ।-यदि यहाँ मद्य शब्द को मदिरार्थक स्वीकार किया जावे तो उन्हें जो पश्चात्ताप के

छोवा णदल पाथउ अनगारनी तेमनी भाटेनी वैयावृत्ति पणु उचित गणुत
न नडि अने भीउ उ न्यारे मद्यपान उरीने पूर्वाप । ह कणमा शैलक
राज कृषि सुणेथी सूता हुता त्यारे चातुर्मासि प्रातिक्रमण कृत्वाणी छुगथी
न्यारे क्षमापना ताटे पाथउ तेमना अरलोमा पोताना भरतकने स्पर्श कर्थे
त्यारे तेणे नत्रत थर्ग गया अने ओयिता निद्रालग थता तेणे क्रोधा
विष्ट थर्ग गया पाथउ तेमने सुस्मे थयेला तेने इनी तेमना अरलोमा
भरतउ नमावीने विनती कृता कहु उ छे लगवान । भारे शुने भाइ करे
इरीथी आवु नडि थाय ले मद्य शब्द मदिराना अर्थने सूचवनारे होयते
भूणसूत्रमा शैलकना भाटे राजकृषि शब्दने प्रयोग कृत्वामा आव्ये छे, तेमने
राजकृषिना विशेषणथी अ मोधवामा आ या छे ते केवा रीते अने १ पाथउ
अनगारे तेमना प्रत्ये क्षमापना इप वदन विनय वगेरे भताव्ये ते पणु
उचित केवी गीते उनी जनय ? भीउ उ ले मद्य शब्दने मदिराना अर्थमा
स्वीकरीये तो जैवउ अनगार पश्चात्तापना उद्यथी विशुद्ध आरिचना आराधन

અગ્નિમૂલપાઠાવલોચનેન ચ મૂલગુણનાશક નિષિદ્ધમગ્નિદિ નૈવ વિજ્ઞાયતે, તથાહિ-ચતુર્વિધાઽઽહારે મધપાને ચ મૂર્ચ્છિતસ્યાપિ ઇન્દ્રિય પ્રમાદદોષવશાત્ કેવલં જનપદવિહારાનર્હતા નાતા, ન તુ મૂલગુણનાશસ્તમ્યાભૂદિતિ વિજ્ઞાય પાન્થકમણ્ણુ સેષુ પચ્ચશતાનગારેષુ પ્રધાનતયા સુરય પાન્થકમનગારં તસ્ય વૈયાટ્યકરણાર્થં સ્થાપયિત્વા પાન્થકવર્જિતાસ્તે સર્વેઽનગારાવદ્ધિર્જનપદવિહાર વિહરન્તિસ્મેતિ વસ્યતે । યદિ શૈલકેન નિષિદ્ધમધ સેવિત સ્યાત્ તર્હિ તસ્મિન્ મૂલગુણરહિતેઽનગારધર્માત્ પ્રચ્યુતે ચ સતિ પાન્થકાનગારસ્ય તદ્વૈયાટ્યકરણ વિરુદ્ધયતે ।

મર્યાદા કે અનુસાર અકલ્પ્ય તથા પ્રવચન નિષિદ્ધ વસ્તુ કે દેને કે લિયે મટૂક રાજા ને ઉન સે નહીં કહા તો મટા વે उसकी आज्ञा के विरुद्ध मद्य उन्हें कैसे पिलाने में समर्थ हो सकते थे । तथा आगे का मूल पाठ देख ने से भी यही बात पुष्ट होती है कि मूल गुणों का विनाशक निषिद्ध मद्य इस मद्य शब्द का वाच्यार्थ नहीं हो सकता है । तथा हि- “ चतुर्विध आहार एव मद्यपानेन मूर्च्छित बने हुए भी शैलक को प्रमाद दोष के वश से केवल जन पदों में विहार करने की ओर से ही अशक्ति आ गई है, उनके मूलगुणों का नाश नहीं हुआ है ऐसा समझ कर पांथक को छोड़ और समस्त मुनिजन वहां से बाहिरजन पदों में विहार कर गये और पाथक को वे उनकी वयावृत्ति करने के लिये छोड़ गये । ऐसा सूत्रकार आगे कहेंगे । यदि शैलक ने निषिद्ध मद्यका सेवन किया होता तो वे मूलगुणों से भी रहित हो जाते और इस तरह अनगार धर्म से रहित होने पर पांथक अनगार को उनकी

બીજી વાત એ પણ છે કે જ્યારે સાધુમર્યાદા મુજબ અકલ્પ્ય તેમજ પ્રવચન નિષિદ્ધ વસ્તુ ને આપવા માટે મટૂક રાજાએ વૈદ્યોને આદેશ આપ્યો નહિ તો વૈદ્યોની શી તાગત છે તેઓ તેમની આજ્ઞાને ઓળખીને શૈલક અનગારને મધ પીવડાવે ? તેમજ આગળના “ મૂળ પાઠને ” જોવાથી પણ આવત સિદ્ધ થાય છે કે ગુણોને નષ્ટ કરનાર મધ અહીં મધ-શબ્દનો વાચ્યાર્થ થઈ શકે જ નહિ જેમકે- ચાર જાતના આહાર અને મધ પાનમાં મૂર્ચ્છાવશ થયેલા શૈલકને પ્રમાદ દોષથી ક્રુષ્ણ જનપદો વિહાર કરવા માટેની અશક્તિ જ આવી ગઈ છે તેમના મૂળગુણોનો નાશ થયો નથી આવું સમજીને જ પાથકને ત્યાં મૂકીને બધા મુનિઓ ત્યાંથી ખીંત ખેંચીને જન પદોમાં વિહાર કરવા માટે નીકળી પડ્યા પાથકને શૈલકની વૈયાવૃત્તિ માટે જ મુનિઓ મૂકીને ગયા હતા આ સૂત્રકાર આ પ્રમાણે આગળ વર્ણન કરવાના જ છે હવે જો શૈલકે આગમનિષિદ્ધ મદિદાનુ સેવન કર્યું હોત તો તેઓ મૂળ ગુણોથી પણ હીન થઈ જાત અને આ પ્રમાણે અનગાર ધર્મ રહિત

किं च-मद्यपानात् पूर्वापरहकाले सुखप्रसुप्तस्य शैलकस्य राजर्षेः चातुर्मासिके प्रतिक्रमितुकामेन पान्थकेन क्षमापनार्थं शिरसा तच्चरणसम्पर्शं कृते सति स उत्थाय क्रोधाविष्टो जातः । ततोऽमौ पान्थकः शैलकानगारं वन्दमानः स्वशीर्षेण तच्चरणयोः स्पृशन् प्रार्थयति स्म-क्षमन्व मेऽपराध, नैव पुनः करिष्ये इति । मद्यशब्दस्य निषिद्धमद्यार्थकत्वे तु-मूलसूत्रे शैलकस्य राजर्षिर्विशेषणं नोपपद्यते, पान्थकानगारकृतं तद् वन्दनादिकं च विरुध्यते ।

किं च-मद्यशब्दस्य मदिरार्थकत्वस्वीकारे शैलकस्य पश्चात्तापादये सति विशुद्ध-
वैयावृत्ति करना भी विरुद्ध पड़ता है । किं च मद्य के पान करने से पूर्वा-
पराहकाल में सुख से सुप्त हुए शैलक राजऋषि के, चातुर्मासि प्रतिक्रमण
करने की इच्छा से जब क्षमापना याचनार्थं मस्तक से चरणों का स्पर्श
किया तो वे जग गये और अचानक निद्रा भग होने से उन्हें क्रोध
आ गया । पान्थक ने जब उनकी यह दशा देखी तो उसने नमन करते
हुए उनके चरणों को छूकर प्रार्थना की महाराज ! आप मेरे अपराध को
क्षमा कीजिये आगे ऐसा अब नहीं करूंगा । यदि मद्य शब्द को निषिद्ध
मद्यार्थक-मदिरार्थक-माना जावे तो मूल सूत्र में शैलक के लिये जो
राजऋषि शब्द का प्रयोग किया गया है-उन्हें जो राजऋषि के विशेषण
से विशेषित किया है-वह नहीं बनता है और न पान्थक अनगार कृत
उन के प्रति वन्दना आदि कृत्य युक्ति सगत बैठते हैं ।-यदि यहाँ
मद्य शब्द को मदिरार्थक स्वीकार किया जावे तो उन्हें जो पश्चात्ताप के

छोवा भदल पाथक अनगारनी तेमनी भाटेनी वैयावृत्ति पणु उचित गणुत
न नडि अने भीणु के न्यारे मद्यपान करीने पूर्वापराह कालमा शैलक
राज ऋषि सुषेथी सूता छता त्यारे चातुर्मासि प्रातिक्रमण करवानी छत्रार्थी
न्यारे क्षमापना ताटे पाथके तेमना अरण्यमा पोताना भस्तकने स्पर्श कर्था
त्यारे तेथो नत्रत थर्ध गया अने ओचित निद्रालग थता तेथो क्रोधा
विष्ट थर्ध गया पाथके तेमने शुभे थयेला तेने करी तेमना अरण्यमा
भस्तक नभावीने विनती कर्ता कछु के छे लगवान । भारे शुने भाइ करे
इरीथी आवु नडि थाय ते मद्य शब्द मदिराना अर्थने सूत्रवनागे छायतो
मूलसूत्रमा शैलकना भाटे राजऋषि शब्दने प्रयोग करवामा आव्यो छे, तेमने
राजऋषिना विशेषार्थी न मोधवामा आव्या छे ते केवी रीते अने ? पाथक
अनगारे तेमना प्रत्ये क्षमापना रूप वदन विनय वगेरे अताव्यो ते पणु
उचित केवी रीते उनी गजाय ? भीणु के ते मद्य शब्दने मदिराना अर्थमा
स्वीकरीये तो शैलक अनगार पश्चात्तापना उचित विशुद्ध आरिचना आराधन

ચારિત્રારાધનાર્થં કૃત પ્રતિજ્ઞસ્ય કૃતનિશ્ચયસ્ય તદનન્તરદ્વિતીયેહિ પ્રભાતકાલે આનુ-
પૂર્વ્યા ગ્રામાનુગ્રામવિહારાર્થં પ્રવૃત્તિરપિ પુનઃ પ્રાયશ્ચિત્તગ્રહણમન્તરેણ નોપપદ્યતે ।
તસ્માદન્ન મધ્યશબ્દો નાસ્તિ મદિરાર્થકઃ । કિં તુ—‘મજ્જપાણય પીએ પુઞ્વાવરણ્હકા
લસમયસિ સુહપ્પસુત્તે ’ इत्यग्रिममूलपाठप्रामाण्यात् निद्राजनरूपानद्रव्यविशेषार्थक-
एवेति निश्चीयते ।

તત્ત્વતઃ પૂર્વાપરમૂલપાઠપર્યાલોચનેન ‘મજ્જપાણય ચ સે ઉપદિસતિ’ ‘જાવ-
મજ્જપાણેણ ’ મજ્જપાણય ય મુચ્છિએ ’ ‘ સુવહુ મજ્જપાણય પીએ ’-ઇતિ -પાઠાઃ
પ્રક્ષિપ્તા એવેતિ સુધિયો વિમર્શયન્તુ ।

તતસ્તદનન્તર તસ્ય શૈલકસ્ય યથાપદૃત્તૈઃ પ્રાસુકૈપણીયૈર્યાત્-ઔપધમૈપજ્યૈર્પ
ધ્યાહારૈશ્ચ રોગાતઙ્કાઃ ઉપશાન્તા અભૂવન્, હૃદયઃ=પ્રસન્નચિત્તઃ, મહુશરીરઃ=મહુવત્

ઉદય હોને પર વિશુદ્ધ ચારિત્ર આરાધન કે લિયે કૃત નિશ્ચય દેખા-
જાતા હૈ ઓર ઉસકે બાદ જો દ્વિતીય દિન પ્રાતઃકાલ મેં આનુપૂર્વ્યા ગ્રામા-
નુગ્રામ વિહાર કી ઉનમેં પ્રવૃત્તિ પાઈ જાતી હૈ વહ બી નહીં ઘટિત હો
સકતી હૈ । કારણ પ્રાયશ્ચિત્ત ગ્રહણ કે વિના એસી પ્રવૃત્તિ હોતી નહીં
હૈ । ફસલિયે યહાં મધ્ય શબ્દ મદિરાર્થક નહીં હૈં કિન્તુ યહ “મજ્જ
પાણય પીએ પુઞ્વાવરણ્હકાલસમયસિ સુહપ્પસુત્તે ” ફસ અગ્રિમ મૂલ
પાઠ કી પ્રમાણતા સે નિદ્રાજનક પાન દ્રવ્ય વિશેષ અર્થવાલો હી હૈ
એસા નિશ્ચિત્ત હોતા હૈ । તત્ત્વતઃ વિચાર કિયા જાવે તો પૂર્વાપર મૂલ પાઠો
કી પર્યાલોચના સે “ મજ્જપાણય ચ સે ઉપદિસતિ જાવ મજ્જપાણેણ
મજ્જપાણય ય મુચ્છિએ, મજ્જપાણય મુચ્છિએ, સુવહુ મજ્જપાણય પીએ ”
યે સબ પાઠ પ્રક્ષિપ્ત હી જ્ઞાત હોતે હૈં એસા બુદ્ધિમાન્ જન વિચાર કરે ।
(તણતસ્સ સેલયસ્સ અહાપવત્તેહિં જાવ મજ્જણપાણેણ રોયાયકે ઉવસતે

માટે કૃત પ્રતિજ્ઞ દેખાય છે અને ત્યાર બાદ તેઓ બીજા દિવસે સવારે જ
પૂર્વાપરપરા અનુસાર એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરવાની ઇચ્છા કરે છે
જે આવુ હોતતો તેમનામા આવી ઇચ્છા પણ પ્રકટ કેવી રીતે થાત ? એમકે
પ્રાયશ્ચિત્ત વગર આવુ તે કરી શકે જ નહિ એટલા માટે, અહીં મધ્ય શબ્દ
મદિરાનો અર્થ સૂચવતો નથી પણ (મજ્જપાણય પીએ પુઞ્વાવરણ્હકાલસમયસિ
સુહપ્પસુત્તે “ મધ્ય શબ્દ મૂળપાઠને અનુલક્ષી તે નિદ્રા જનક પાન દ્રવ્ય
વિશેષ “ અર્થ ને જ સૂચવનારો છે (મજ્જપાણય ચ સે ઉપદિસતિ જાવ મજ્જપાણેણ
મજ્જપાણય ય મુચ્છિએ મજ્જપાણય મુચ્છિએ, સુવહુમજ્જપાણય પીએ) પૂર્વાપરની
અપેક્ષાએ મૂળપાઠ વિષે આપણે ગભીર પણે વિચાર કરીએ તો ઉક્ત પાઠ
પ્રક્ષિપ્ત જ લાગશે (તણ તસ્સ સેલયસ્સ અહાપવત્તેહિં જાવ મજ્જણપાણેણ રોયા

पुष्टशरीर, जात, व्यपगतरोगातङ्कः=सर्वव्याधिरहितो जात इत्यर्थः । ततः खलु स शैलकस्तस्मिन् रोगातङ्के उपशान्ते सति तस्मिन् विपुले=अतिशये अशनपानस्वाद्यस्वाद्ये=चतुर्विधाऽऽहारे मद्यपानके च निद्राजनकपानद्रव्यविशेषे च मूर्च्छितः आसक्तः ग्रथितः=स्नेहरज्जुभिर्वद्धः गृद्धो=लोलुप ' अज्ज्ञोववन्ने ' अयुपपन्नः, सरसाहाराद्यधीनजीवन । ' ओसन्नो ' अवसन्नः=अवसन्न इवावसन्नः श्रान्ततुल्यः, आरक्ष्य-स्वाध्यायप्रतिलेखन-यानादिक्रियासु शैथिल्येन श्रान्तइवमोक्षमार्गे शि-

होत्या) इस प्रकार इस शैलक राजकृपि के यथा प्रवृत्त प्रासुक एषणीय यावत्-औषध औषधो से और पचाहार से रोगातक उपशमित हो गये (हृद्रे मल्लसरीरे जाण ववगयरोयायके, तण्ण सेलए तसि रोगायकसि उवसतसि समाणसि तसि विपुलसि असण० पाण खाइम साइमे मज्जपाणेण य मुच्छिउए गढिए गिद्धे अज्ज्ञोववन्ने ओसन्नो, ओसन्न विहारी एव पासत्थे २ पासत्थविहारी कुसीले २ कुसील विहारी पमत्ते ससत्ते उउवद्वपीठफलकसेज्जासधारए पमत्ते यावि विहरइ) वह प्रसन्न चित्त हो गया शरीर से भी मल्ल की तरह पुष्ट हो गये । इस प्रकार रोग और आतको से सर्वथा रहित हो गये । इस के बाद वह राजकृपि विविध प्रकार के विपुल अशन, पान, स्वाद्य और स्वाद्य रूप चतुर्विध आहार में एव मद्यपान में आसक्त हो गये । उन में स्नेह रूपी रज्जु से बन्ध गये-गृद्ध-लोलुप-हो गये और सरस आहार के आधीन जीवन वाले बन गये । यके हुए व्यक्ति की तरह वह स्वाध्याय,

यके उवसते होत्या) आ प्रमाणे यथा प्रवृत्त प्रासुक एषणीय यावत् औषध औषधयेथी अने योग्य पथ्य आहारथी शैलक राजकृपिना रोगो भटी गया (हृद्रे मल्लसरीरे जाण ववगयरोयायके, तण्ण सेलए तसि रोगायकसि उवसतसि समाणसि तसि विपुलसि असण० पाण खाइम साइमे मज्जपाणेण य मुच्छिउए गढिए गिद्धे अज्ज्ञोववन्ने ओसन्नो, ओसन्न विहारी एव पासत्थे २ पासत्थविहारी कुसीले २ कुसील विहारी पमत्ते ससत्ते उउवद्वपीठफलकसेज्जासधारए पमत्ते यावि विहरइ) तेज्जो शरीरथी पुष्ट तेमज्ज प्रसन्न चित्त भई गया आ रीते रोग अने आतको थी तेज्जोअे अज्ज्ञम मुक्ति भेजवी लीधी त्थारणाइ तेज्जो जत जतना पु कण प्रमाणमा जनाववामा आवेला अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य रूप आ० प्रकारना आहारमा तथा मद्यपानमा आसक्ता थई गया तेज्जो स्नेहइपी होरीधी जधाई गया गृद्ध-अटले के लोलुप थईने सग्ग आहारोना सेवनमा तेज्जो ठेवाई गया श्रान्त व्यक्तिनी पेठ स्वाध्याय प्रति

થિલ इत्यर्थः । ‘ ओसन्नविहारी ’=अवसन्नविहारी शिथिलाऽऽचारी आलस्यवशेन मन्दीभूतचरणकरण इत्यर्थः । एव=अनेन प्रकारेण ‘ पार्श्वस्थे ’ पार्श्वस्थ-साधुगुणानां पार्श्वे तिष्ठतीति पार्श्वस्थः ज्ञानादीनां न सम्यगाराधकः । पार्श्वस्थविहारी=पार्श्वस्थानां यो विहारस्तथावर्तन पार्श्वस्थविहारः सोऽस्यास्तीति पार्श्वस्थविहारी, कुशीलः=उत्तरगुणविराधनया सज्ज्वलनकपायोदयेन च कुत्सिताऽऽचारः । कुशीलविहारी=कुत्सिताचारशीलः । ‘ प्रमत्ते ’ प्रमत्तः=प्रमाद्यतिस्म-मोहनीयादिकर्मोदयप्रभावात् सज्ज्वलनकपायनिद्राविकथाऽन्यतमप्रमादयोगेन सयमाराधनेषु सीदतिस्मेति प्रमत्तः । कर्तरि क्त । ‘ ससत्ते ’ ससक्तः गौरवत्रयाश्रयेण सक्रीर्णाचारः, ऋतुवद्धपीठफलकशय्यासस्तारके प्रमत्तश्चापि विहरति, शेषशालेऽपि कारणमन्तरेण

પ્રતિ લેખન, ધ્યાન આદિ મોક્ષ માર્ગ મેં મી શિથિલ હો ગયે । અવસન્ન વિહારી હો ગયે-શિથિલાચારવાલે બન ગયે-આલસ્ય કે વશ સે ચરણ સત્તરી ઔર કરણ સત્તરી કે આરાધના ઢીલે પડ ગયે હસ પ્રકાર વહ પાર્શ્વસ્થ હો ગયે-સાધુ ગુણો કે પાસ મેં રહને વાલા બને રહે-જ્ઞાનાદિકોં કા સમ્યક્ આરાધન કર્તા વહ નહી રહે । પાર્શ્વસ્થોં કે વિહાર જૈસા હનકા વર્તાવ હો ગયા । ઉત્તર ગુણોં કી વિરાધના સે ઔર સજ્જ્વલન કપાય કે ઉદય સે વહ કુત્સિત આચાર વાલે હો ગયે । કુશીલ વિહારી હો ગયે । મોહનીય આદિ કર્મોં કે ઉદય કે પ્રભાવ સે યહ સજ્જ્વલન કપાય નિદ્રા વિકથા રૂપ પ્રમાદોં મેં સે કિસી એક પ્રમાદ કે યોગ સે સયમ કી આરાધના કરને મેં શિથિલ પરિણામી હો ગયે । ગૌરવત્રય કે આશ્રય સે ઉનકા આચાર શિથિલ હો ગયા । હર એક સમય કારણ કે વિના મી પીઠ ફલકાદિ કા સેવન કરને વાલે બન ગયે સદા હન

લેખન ધ્યાન વગેરે ક્રિયાઓમા તેમજ મોક્ષમાર્ગમા તેઓ શિથિલ થઈ ગયા અવસન્ન વિહારી થઈ ગયા, -શિથિલ આચરણ વાળા થઈ, અળસને લીધેચરણ સત્તરી અને કાણુસત્તરી રહિત થઈ ગયા આમ તેઓ પાર્શ્વસ્થ થઈ ગયા સદ્ગુણોમા રચ્યાપચ્યા બનીને રહેનારા બની ગયા જ્ઞાન વગેરેની સમ્યક્ આરાધના તેમનાથી હવે નહોતી થતી પાર્શ્વસ્થોના વિહારની જેમ તેમનુ આચરણ થઈ ગયુ ઉત્તર ગુણોની વિરાધનાથી અને સજ્જ્વલન કપાયના ઉદયથી તેઓ કુત્સિત આચાર વાળા થઈ ગયા કુશીલ વિહારી થઈ ગયા મોહનીય વગેરે કર્મોના ઉદયને લીધે તેઓ સજ્જ્વલન કપાય નિદ્રા વિકથા રૂપ પ્રમાદોમા થી કેઈ પણ એક પ્રમાદના યોગથી સયમને આરાધનામા શિથિલ થઈ ગયા ગૌરવત્રયના આશ્રયથી તેમનો આચાર શિથિલ બની ગયા કારણુ વગર પણ તેઓ ગમે ત્યારે પીઠ ફલક વગેરે નુ સેવન કરવા લાગ્યા તેઓ હમેશા તેના ઉપર પડ્યા જ

પીઠકન્ઠકાદિસેવી સજાત્ત્વમ્ । ' નો સંવાણ્' નો શમ્નોત્તિ, અસ્ય વિહર્તુમિ-
ત્યત્રાન્વયઃ, પ્રાસુકૈષ્ણીય પીઠ=પીઠાદિકં પ્રત્યર્પ્ય મઙ્ગલક ચ રાજનમાપૃચ્છ્ય
વહિર્જનપદવિહાર ' અઽભુજ્જણ ' અભ્યુદયતેન-ઉત્તમયુક્તેન, ' પયત્તેણ ' પ્રદત્તેન
મગદનુજ્ઞાતેન પ્રમાદરહિતેન, ' પગ્ગહિણેણ ' પ્રગૃહીતેન તીર્થકરૈરપિ સ્વીકૃતેન;
વિહર્તુ=કર્તુમ્ । સજ્વલનકપાયનિદ્રાવિક્રાન્તમપમાદવશગત શૈલકો વહિર્જન
પદવિહાર કર્તુમસમર્થો જાત્ત્વમ્ । ૩૦ ॥

મૂલમ્—તણ તેસિ પથયવજ્ઞાણ પચણ્હ અણગારસયાણં
અન્નયા કયાઈ એગયઓ સહિયાણ જાવ પુઠ્ઠરત્તાવરત્તકાલસમ-
યસિ ધમ્મજાગરિય જાગરમાણાણ અયમેયારૂવ અઠ્ઠમ્થિણ્ણ જાવ
સમુપ્પજિત્થા—એવ સ્વલ્લુ સેલણ રાયરિસી ચડત્તા રજ્જ જાવ પઠ્ઠ-

પર પડા રહને લગે (નો સચાણ્ ફાસુણ્સણિજ્જ પીઠે પચ્ચપ્પિણિત્તા
મઙ્ગલ ચ રાયા અપુચ્છિત્તા વહિયા જળવયવિહાર—અઽભુજ્જણ પયત્તેણ
પગ્ગહિણેણ વિહરિત્તણ) પ્રાસુક એષ્ણીય પીઠ આદિ કો પ્રત્યર્પિત કર
(દેકર) તથા મઙ્ગલરાજ સે પૂઠ્ઠકર યહ બાહર જનપદો મેં વિહાર કરને
કે લિયે સમર્થ નહી હુણ । જો વિહાર ઉત્તમ યોગ રૂપ ઉદયમ સે યુક્ત
હોકર કિયા જાતા હૈ અર્થાત્ત્વમ્ જિસમેં પ્રમત્ત દશા નહી રહતી હૈ—
જિસકે કરને કી મગવાન્ કી આજ્ઞા હૈ । તથા તીર્થકરો ને મી જિસે
કિયા હૈ । તાત્પર્ય્ હસકા યહ હૈ કિ સજ્વલન કપાય, નિદ્રા તથા વિ
કથારૂપ પ્રમાદો મેં સે કિસી એક પ્રમાદ કે વશગત્ત્વમ્ હોકર વહા સે
વિહાર કરને કે લિયે અસમર્થ બન ગયે । સૂત્ર ॥ ૩૦ ॥

રહેતા હતા (નો સચાણ્ ફાસુણ્સણિજ્જ પીઠ પચ્ચપ્પિણિત્તા મઙ્ગલ ચ રાયા અપુ
ચ્છિત્તા વહિયા જળવયવિહાર અઽભુજ્જણ પયત્તેણ પગ્ગહિણેણ વિહરિત્તણ) પ્રાસુક
એષ્ણીય પીઠ ફલક વગેરે પાછા આપી તેમજ મઙ્ગલ રાજને પૂછીને બહારના
બીજા જનપદો માં વિહાર કરવા માટે પણ તેઓ સમર્થ થઈ શક્યા નહિ
જે વિહાર ઉત્તમ યોગ રૂપ ઉદયમ વડે કરવા માં આવે છે, એટલે કે જેમાં
પ્રમત્ત દશા રહેતી નથી તેમજ જે વિહારને કરવાની ભગવાને આજ્ઞા આપી
છે, અને તીર્થકરો પણ જેને કરતા આવ્યા છે તેમાં તેઓ અસમર્થ થઈ
ગયા તાત્પર્ય એ છે કે આ મજ્જલન કપાય, નિદ્રા તેમજ વિકથા રૂપ પ્રમાદો
માથી કોઈ પણ એક પ્રમાદના વશગતી થઈને ત્યાંથી બહાર વિહાર કરવા
સમર્થ થઈ શક્યા નહિ ॥ સૂત્ર ૩૦ ॥

इए, विउलेणं असण० ४ मज्जपाणए मुच्छिणो नो संचाएइ
जाव विहरित्तए, नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया । समणाणं निग्ग-
थाण जाव पमत्ताणं विहरित्तए, त सेय खलु देवानुप्पिया ।
अम्ह कल्ल सेलय रायरिसि आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीढफल-
गसेज्जासंथारणं पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पथयं
अणगारं वेयावच्चकर ठवेत्ता वहिया अट्ठभुज्जएण जाव पवत्तेण,
पग्गहियेण जणवयविहार विहरित्तए, एवं सपेहेति, संपेहित्ता
कल्लं जाव जलंते सेलय आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढफलगसे-
ज्जासथारय पच्चप्पिणति, पच्चप्पिणित्ता पथय अणगार वेया
वच्चकरं ठावति ठावित्ता वहिया जाव विहरति ॥ सू०३१ ॥

टीका—‘ तएण तेसि ’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु तेषा पान्थक-
वर्जाना पञ्चानामनगरशताना=पञ्चशतानगाराणाम्, अन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन्
कस्मिंश्चित् काले, एकतः सहितानाम्=एकत्रसमिलिताना यावत् पूर्वरात्रापर-
रात्रकालसमये= धर्मजागरिका=धर्मध्यानप्रयोधिनी कथा जाग्रता=कुर्वताम्

‘ तएण तेसि पथयवज्जाण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तेसि पथयवज्जाण पचण्ह अणगार
सयाण अन्नया कयाइ एगयओ सहियाण जाव पुव्वावरत्तकालसमयसि
धम्मजागरिय जागरमाणाण अयमेवारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था)
उन पाचसो, पाथक अनगार वर्ज मुनियों को किसी एक समय मध्य
रात्रि मे जब कि वे धर्मध्यान प्रयोधिनी कथा को एकत्र समिलित होकर

(तएण तेसि पथयवज्जाण) ध्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थार भाद (तेसि पथयवज्जाण पचण्ह अणगारसयाण
अन्नया कयाइ एगयओ सहियाण जाव पुव्वावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय
जागरमाणाण अयमेवारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था) पाचसो पाथक अन-
गार वर्ज मुनियोने केअ ओइ वप्पते मध्यरात्रिमा न्थारे तेओ भधा ओइअ
थप्पे धर्मध्यान प्रयोधिनी कथा विवे यथा करी रह्ता छता त्थारे तेओने आ

अयमेतद्रूपः=इक्ष्यमाणप्रकारक 'अवमर्ति' 'अभ्यर्थितः प्रवचनसंमतः यावत्-
यावत् करणेन-चित्ति, पत्ति, मनोगत इत्येषा सङ्ग्रहः । चिन्तितः प्रार्थितः
मनोगतः सकल्पः= विचारः 'समुपज्जित्वा' समुदपद्यत=अभवत्-एव अमुना
प्रकारेण खलु=निश्चये शैलको राजर्षिः 'चडत्ता' त्यक्त्वा, 'रज्ज' राज्य यावत्
प्रजित= दीक्षा गृहीतवान् स चेदानीं 'विउलेण' विपुलेन अतिशयेन अशन
पानखाद्यस्त्रात्रे चतुर्विधाहारे निद्राजनकपानद्रव्यविषे च मूर्च्छितः=आसक्तः
नो शक्नोति यावद् कुनापि विहर्तुम् । नो खलु कल्पते देवानुप्रियाः !
श्रमणानां यावत् प्रमत्तानां विहर्तुम्, हे देवानुप्रिया ! प्रमादिनो भूत्वा श्रमणानां
सयममार्गे विहर्तुं न कल्पते, किंतु अभ्युद्यतेन इत्यर्थः । 'त सेय' तच्चेयः=तत्
तस्मात् श्रेयः खलु देवानुप्रिया अस्माकं कल्ये प्रभाते शैलक राजर्षिमापृच्छय

कर रहे थे । इस तरह का प्रवचन समत चिन्तित, प्रार्थित, मनोगत
सकल्प-विचार उत्पन्न हुआ । (एव खलु सेलए रायरिसी चडत्ता रज्ज
जाव पव्वइए विउलेण असण ४ मज्जपाणे मुच्छि ए नो सचाण्ड जाव
विहरित्तए, नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणाणं निग्गथारणं जाव
पमत्ताण विहरित्तए) शैलक राजा ने राज्य का परित्याग कर भगवती
दीक्षा अंगीकार की हैं-इस तरह वे राजऋषि बने हैं-परन्तु अब वे
विपुल अशन पान खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार में तथा निद्रा
कारक पान द्रव्य विशेष में आसक्त हो रहे हैं । कहीं पर भी बाहर
विहार नहीं करना चाहते हैं । इस तरह हे देवानुप्रियो ! श्रमणों को
प्रमत्त बनकर सयम मार्ग में विहार करना रहना-उचित नहीं है ।
(त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह कल्ल सेलय रायरिसि आपुच्छित्ता

गतनो प्रवचन संमत, चिन्तित, प्रार्थित, मनोगत सकल्प विचार उत्पन्नये
(एव खलु सेलए रायरिसि चडत्ता रज्ज जाव पव्वइए विउलेण ४ मज्जपाणे मुच्छि
ए नो सचाण्ड जाव विहरित्तए नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणाणं निग्गथारणं
जाव पमत्ताण विहरित्तए) शैलक राजानो राजन्यवैभव त्यज्जने भागवती दीक्षा
स्वीकारी छे अथी तेओ राजऋषि तरीके प्रसिद्ध थया छे पणु अत्यारे तेओ
पुण्डण प्रमाणुमा अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य आधार तेमन् निद्राकारक
पानद्रव्य विशेषमा आसक्त थय रह्या छे जीजे कथ विहार कव्वानी पणु
तेओनी छिज्जा लागती नथी हे देवानुप्रियो ! आ रीते श्रमणोने प्रमत्त
थयने सयमभागमा रहीने विहार करवो येअय लागतु नथी (त सेय
खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह कल्ल सेलय रायरिसि आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीढ

‘पाडिहारिय’ प्रातिहारिक=प्रत्यर्पणीय, पीठफलकशय्यासस्तारक प्रत्यर्प्य, शैलक-
स्यानगारस्य पान्थकमनगार ‘वेयावच्चकर’ वैयावृत्त्यकर=सेवाकारक, स्थापयि-
त्वा बहिरभ्युद्यतेन यावद्-इह यावत्करणात्-अभ्युद्यतेन=सोऽग्नेन प्रदत्तेन=तीर्थ-
करानुज्ञापितेन, प्रगृहीतेन तीर्थकराङ्गीकृतेन जनपदविहार इत्यस्य सग्रहः । विहर्तुम्
-कर्तुम् शैलकानगारस्य वैयावृत्त्यार्य पान्थकमनगार बहिर्विहर्तुमस्माक श्रेय इत्यर्थ
एवम्=उक्तप्रकारेण ‘सपेहेति’ सप्रेक्षन्ते, विचारयन्ति । ‘सपेहिता’ सप्रेक्ष्य
विचार्य, कल्ये यावज्जलति=सूर्ये उदिते सति शैलकमापृच्छ्य प्रातिहारिक=प्रत्य
र्पणीय पीठफलकशय्यासस्तारक ‘पञ्चप्पिणत्ति’ प्रत्यर्पयन्ति प्रत्यर्प्य पान्थकमनगार
‘वेयावच्चकर’ वैयावृत्त्यकर, ‘ठावति’ स्थापयन्ति ‘ठावित्ता’ स्थापयित्वा
बहिर्याविद्-इह यावत्करणात्-अभ्युद्यतेन प्रदत्तेन, प्रगृहीतेन जनपदविहार इत्यस्य
सग्रहः, विहरन्ति । शैलकानगारस्य ये पञ्चशतसख्यकाः पान्थकप्रमुखा अन

पाडिहारिय पीठफलगसेज्जासथारग पञ्चप्पिणित्ता सेलगस्स अण-
गारस्स पथय अणगार वेयावच्चकर ठवेत्ता बहिया अब्भुज्जएणं जाव
पवत्तेण पग्गहिण्ण जणवयविहार विहरित्तए) इसलिय हे देवानुप्रियो !
हम लोगों को यही कल्याण कारक है कि प्रातः होते ही हम लोग शैलक
राजऋषि से पूछकर और प्रत्यर्पणीय पीठ फलकशय्यासस्तारक को
रखकर वापिस देकर तथा शैलक राजऋषि की वैयावृत्ति करने के लिये
पान्थक अनगार को रखकर यहा से सोद्यम के साथ प्रदत्त तीर्थकर की
दी हुई आज्ञा के अनुसार प्रगृहीत तीर्थकर की आज्ञा को अंगीकार
कर ऐसा बाहिर देशों में विहार करें । (एव सपेहेति, सपेहिता कल्ल
जाव जलते सेलय आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीठफलगसेज्जासथा
रय पञ्चप्पिणत्ति, पञ्चप्पिणित्ता पथयअणगार वेयावच्चकर ठावति

फलगसेज्जासथारग पञ्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पथय अणगार, वेयाव
च्चकर ठवेत्ता बहिया अब्भुज्जएणं जाव पवत्तेण पग्गहिण्ण जणवयविहार
विहरित्तए) ओटये हे देवानुप्रियो ! आपणु भाटे कट्याणुने भागं ओक न
रह्यो छे के सवारे शैलक राजऋषिनी आज्ञा भेजवीने पीठफलक, शय्या सस्तार
क वगेरे पाछा आवीने शैलक राजऋषिनी वैयावृत्ति करवा भाटे पान्थक अन
गारने नीभीने (धर्मपूर्वक आपणु अर्द्धीथी तीर्थकरानी आज्ञा सुज्जण तेमज्ज
तीर्थकरानी आज्ञानु पालन करता णडारना भीज्ज देशोभा विहार करवा नीकणी
पडीओ एव सपेहेति सपेहिता कल्ल जाव जलते सेलय आपुच्छित्ता, पाडिहारिय
पीठफलगसेज्जासथारय पञ्चप्पिणित्ता पथयअणगार वेयावच्चकर ठावति

गाराः शिष्यरूपेण सहचरा आसन् तेषु पान्थक शैलकानगारसेवार्थं स्थापयित्वा पान्थकवर्जास्ते सर्वेऽनगाराः पीठफलकादिक प्रत्यर्प्य बहिर्जनपदविहार कुर्वन्ति स्मेत्यर्थः ॥ ३१ ॥

मूलम्-तएण से पंथए सेलयस्स सेज्जासथारयउच्चार-
पासवणखेलसिघाणमल्लओसहभेसज्जभत्तपाणएण अगिलाए
विणएण वेयावडिय करेइ, तएणं से सेलए अन्नया कयाइ क-
त्तिय चाउम्मासियसि विउल असण० आहारमाहारिए सुवहु
मज्जपाणय पीए पुब्बावरण्हकालसमयसि सुहप्पसुत्ते, तएणं
से पन्थए कत्तियचाउम्मासियसि, कयकाउस्सग्गे देवसियं पडि-
क्कमण पडिक्कंते चाउम्मासियं पडिक्कमिउकामे सेलय रायरिसिं
खामणट्ठयाए सीसेण पाएसु सघट्टेइ, तएण से सेलए पंथएणं
सीसेणं पाएसु सघट्टिए समाणे आसुरत्ते जाव मिसिमिसेमाणे
उट्टेइ, उट्टित्ताएव वयासी-सं केस ण भोएस अप्पत्थियपत्थिए
जाव परिवज्जिए जेणं मम सुहप्पसुत्त पाएसुसंघट्टेइ? तएणं से
पथए सेलएण एव बुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिय करयेल०क

ठावित्ता बहिया जाव विहरति) इस प्रकार उन्होंने विचार किया-
विचार करके प्रातःकाल जब सूर्य अपनी प्रभा से प्रकाशित होने लगा
तब उन्होंने शैलक राजकपि से पूछकर प्रतिहारिक-प्रत्यर्पणी पीठ फलग
शय्या सस्तारक को वापिस दे दिया-वापिस देकर फिर उन्होंने उन
की वैयावृत्ति करने के लिये पाथक अनगार को रख दिया । रखकर फिर
वे वहा से बाहर दूसरे देशों में विहार कर गये । सूत्र ॥ ३१ ॥

ठावित्ता बहिया जाव विहरति) आ प्रभाणे तेओओ विचार कर्यो, विचार
करीने न्यारे सवारे सूर्य उदय पाओ त्यारे शैलक राजकपिनी अज्ञाभेजवीने
प्रत्यर्पणीय ओटले के पीठवक शय्या सस्तारकने पाछा ओपीने राजकपिनी
वैयावृत्ति माटे पाथक अन॥ने त्या नियुक्त करीने तेओ त्याथी नडाइना
भीन देशोभा विहार करवा नीडया ॥ सूत्र ३१ ॥

एवं वयासी-अहणं भंते । पंथए कायकउस्सग्गे देवसिय पडि-
क्रमणं पडिक्कते चाउम्मासियं खामेमाणे देवाणुप्पियं वंदमाणे
सीसेणं पाएसु संघट्टेमि, त खमंतु मं देवाणुप्पिया । खमतु मेऽ
वराहं तुम्मणं देवाणुप्पिया णाइभुज्जो एवं करणयाए त्तिकहु
सेलयं अणगार एतमहु सम्मं विणएण भुज्जो २ खामेइ ।

तएणं तस्स सेलयस्स रायरिसिस्स पंथएण एवंवुत्तस्स
अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु अहं रज्ज च जाव
ओसन्नो जाव उउवद्धपीठफलगसेज्जासंधारणं गिण्हित्ता
विहरामि, त नो खलु कप्पइ समणाणं ओसन्नाणं पासत्थाणं
जाव विहरित्तए, तं सेय खलु मे कल्ल मडुय राय आपुच्छित्ता
पाडिहारियं पीठफलगसेज्जासंधारयं पच्चप्पिणित्ता पंथएण अण-
गारेणं सद्धि वहिया अब्भुजएणं जाव जणवयविहारणे विहरि-
त्तए । एव सपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं याव विहरइ ॥ सू० ३२॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि-ततस्तदनन्तर खलु स पान्थकः शैलकस्य
‘सेज्जासथारयउच्चारपासवणखेलसिंघाणमल्लओसहभेसज्जभत्तपाणएण’ शय्यास
स्तारकोच्चारप्रस्रवणखेलसिंघाणमल्लौषधभैषज्यभक्तपानेन ‘अगिलाए’ अग्लान’ सन्

‘तएण से पथए इत्यादि’ ॥ सूत्र ॥ ३२ ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से पथए) वह पाथक (सेलयस्स)
शैलक अनगार की (सेज्जासथारयउच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणमल्ल
ओसहभेसज्जभत्तपाणएण) शय्या सस्तारक के द्वारा उच्चार प्रस्र-
वण, खेल, जल्ल सिंघाण मल आदि की परिष्ठापना द्वारा औषध भैषज्य
द्वारा, भक्त पान लाने के द्वारा (अगिलाए) बिना कोई ग्लानभाव के

(तएण से पथए) इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थार आद (से पथए) पाथक (सेलयस्स) शैलर राज्ञभिनी
(सेज्जासथारयउच्चारपासवण-खेल-जल्ल-सिंघाणमल्ल-ओसहभेसज्जभत्तपाणएण)
शय्या सस्तारक द्वारा, तेभञ्ज उच्चार प्रस्रवण, खेल, सिंघाण मल वगैरे नी

વિનયેન વૈયાટ્ય સેવા કરોતિ । તતઃ સ્વલુ સ શૈલકઃ 'અન્નયા કયાઈ' અન્યદા કદા-
ચિત્ અન્યસ્મિન્ કસ્મિથિત્ કાલે 'કત્તિયચાઉમ્માસિયસિ' કાર્તિકચાતુર્માસિકે
વિપુલમ્=અધિકમ્, 'અસગં' અશનપાનલાઘ્વસ્વાદ્યમ્ 'આહારમાહારિણ' આહારમા-
હારિતઃ ચતુર્વિધાહારમતિશયેન કૃત્વેત્યર્થઃ સુમહુ 'મજ્જપાણય' મધપાનક=નિદ્રા-
જનકપાનકદ્રવ્યવિશેષ 'પીણ' પીતઃ પીત્વેત્યર્થઃ । 'પૂર્વાપરાહકાલસમયસિ'
પૂર્વાપરાહકાલસમયે=દિવસસ્ય ચતુર્થે પ્રહરે સુખપ્રસુપ્તઃ મનોહ્રમણીતઃ ભોજનાતિશ-
યેન નિદ્રાકારકપાનકદ્રવ્યસેવનેન ચ ગાઢનિદ્રા પ્રાપ્ત ઇત્યર્થઃ । યત્તુ સમાધિના
સુખેન સુપ્ત ઇત્યર્થ ઇત્યુક્ત તન્ન યુક્તમ્ પ્રમાદસદ્ભાવે સમાધેરસમ્ભવાત્ અમર્યાદિતનિ-
દ્રાતાઃ સમાધેર્દૂરવર્તિત્વાચ્ચ । તતસ્તદનન્તર સ પાન્યકઃ 'કત્તિયચાઉમ્માસિયસિ'

(વિણણ) બડે વિનય કે સાથ (વૈયાવડિય કરેઈ) વૈયાવૃત્તિ કરને
લગા । (તણ સે સેઝળ અન્નયા કયાઈ) એક દિન કી ઘાત હૈ કિ વે
શૈલક અનગાર (કત્તિય ચાઉમ્માસિયસિ વિઝલ અસગં આહારમાહા-
રિણ સુમહુ મજ્જપાણય પીણ પુવ્વવરણ્હકાલસમયસિ સુહપ્પસુત્તે)
ચતુર્માસકે કાર્તિક મહિને મેં વહુત અધિક અશન, પાન, લાઘ, ઓર
સ્વાદ્યરૂપ ચતુર્વિધ આહાર કર કે ઓર નિદ્રાકારક પાનક દ્રવ્ય વિશેષ
'કો પી કરકે દિવસ કે ચતુર્થ પ્રહર મે સુખ સે સોયે હુણ થે । યહાં પર
જો કોઈ ૨ એસા પાઠ કહતે હૈં કિ વે સમાધિ પૂર્વક સુખ સે સોયે હુણ
થે વહ ઠીક નહી હૈ । કારણ પ્રમાદ કે સદ્ભાવ મેં સમાધિ કા હોના
વનતા નહી હૈ । અમર્યાદિત નિદ્રા ઓર સમાધિ ઇનકા પરસ્પર વિરોધ
હૈ એસી સ્થિતિ મેં તો સમાધિ વહુત દૂર રહા કરતી હૈ । (તણ સે

પરિણાપના દ્વારા (અગિલાણ) ડોઠપથ્થ બાતનેા અણુગમેા કે ધણા વિનાના
બનીને (વિણણ) ખૂબજ નમ્ર થઈને (વૈયાવડિય કરેઈ) વૈયાવૃત્તિ કરવા
લાગ્યા (તણ સે સેઝળ અન્નયા કયાઈ) એક દિવસ શૈલક રાજક્રપિ
(કત્તિયચાઉમ્માસિયસિ વિઝલ અસગં — આહારમાહારિણ સુમહુ મજ્જપાણય પીણ
પુવ્વવરણ્હકાલસમયસિ સુહપ્પસુત્તે) ચાતુર્માસના કાર્તિક માસમા ખૂબજ પ્રમાણ
મા અશન પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર બાતના આહાર કરીને અને નિદ્રા
કારક આપાનક દ્રવ્ય વિશેષનુ પાન કરીને સાજના છે. તા પહોરના વખતે સુખેથી
સુતા હતા અહીં ' ધણા લોકો સમાધિ પૂર્વક સુખેથી શૈલક રાજક્રપિ સુતા
હતા " એ પ્રમાણેનો પાઠ હોવાનુ કહે છે તે યોગ્ય ગણાય જ નહિ કેમકે
પ્રમાદઅવસ્થામા સમાધિ થઈ શકતી નથી અમર્યાદિત નિદ્રા અને સમાધિ
આ બંને વચ્ચે વિરોધ છે આવી સ્થિતિમા સમાધિ થઈ શકતી જ નથી

कार्तिकचातुर्मासिके ' कायकाउत्सवे ' -कृतयायोत्सवे ' देवसिय ' देवसिक
प्रतिक्रमण परिक्रान्तः=कृतवान् , चातुर्मासिक ' पडिकमिउ कामे ' प्रतिक्रमितु-
कामः शैलक राजर्षि ' स्वामणट्टयाए ' क्षमापनार्थाय शीर्षेण मस्तकेन पादयो
सघट्टयति स्पृशति । ततस्तदनन्तर खलु स शैलकः शैलकराजर्षि पान्थकेन=पा-
न्थकानगारेण शीर्षेण पादयोः सघट्टितः संस्पृष्टः सन् ' आसुरुत्त ' आशुरुत्तः स्रष्टि-
तिकोपयुक्तः, यावत् क्रोधानलवेगेन ' मिसिमिसेमाणे ' मिसमिसन् देदीप्यमानः
' उट्टेइ ' उत्तिष्ठति, ' उट्टित्ता ' उत्थाय एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् ' से '
सः ' केस ' एषः एतादृशः कोऽस्ति खलु भोः ! ' एस ' एषः ' अप्पत्थियप-
त्थिय ' अपार्थितमार्थकः, यावत् परिवर्जितः श्री ह्री धी रहितः, यः खलु मां

पथए कत्तिय चाउम्मासियसि कय काउत्सवे देवसिय पडिककमण पडि
ककते चाउम्मासिय पडिककामिउकामे सेलय रायरिसि स्वामणट्टयाए
सीसेण पाएसु सघट्टेइ) इसी समय पांथक अनगार ने उसी चतुर्मास के
कार्तिक महीने में कायोत्सव करके देवसिक प्रतिक्रमण किया । फिर
चातुर्मासिक प्रतिक्रमण करने की इच्छा से उसने शैलक राजर्षि के
अपने कृत दोषों की क्षमा याचना निमित्त मस्तक से दोनों चरणों का
स्पर्श किया । (तएण से सेलए पथएण सीसेण पाएसु सघट्टिए समाणे
आसुरुत्ते जाव मिसिमिसे माणे उट्टेइ) पाथक अनगार के मस्तक से
दोनों चरणों में स्पृष्ट हुए वे शैलक राजर्षि इकदम कोप से लाल हो
गये । और मिस मिसाते हुए यावत् क्रोधानल के वेग से देदीप्यमान
होते हुए-वे उठकर बैठ गये । (उट्टित्ता एव वयासी) बैठकर इम
प्रकार कहने लगे- (से केसण भो एस अप्पत्थिय पत्थिए जाव परिव-

(तएण से पथए कत्तियचाउम्मासि यसि, कयकाउत्सवे देवसिय पडिककमण
पडिककते चाउम्मासिय पडिककामिउकामे सेलय रायरिसि स्वामणट्टयाए सीसेण
पाएसु सघट्टेइ) आ वण्णते चातुर्मासिना कार्तिक मासमा ज पाथक अनगारे
कायोत्सव करीने देवसिक प्रातिक्रमण करुं त्थार पछी चातुर्मासिक
प्रातिक्रमण करवानी छच्छाथी तेमण्णे पोतना दोषोनी क्षमापना भाटे शैलक
राजर्षिना अरहोमा पोताना मस्तकनो स्पृशं उथो तएण से सेलए पथएण
सीसेण पाएसु सघट्टिएसु समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे उट्टेइ)
पाथक अनगारना मस्तकना अने पणोमा थयेना स्पृशथी शैलक राजर्षि
ओकदम लाल भोज थय गया, अने क्रोध नी जवाणोमा सगगना तेओ
उठीने ओठा थय गया (उट्टित्ता एव वयासी) ओठा थयने तेओओ आ प्रमाणे

सुखप्रसुप्त पादयोः सघट्टयति ? ततः खलु स पाथकः शैलकेनैवमुक्तः सन् भीतः
 =भययुक्तः त्रस्तः=उद्विग्नः, त्रसितः कम्पितः करतलपरिगृहीत शिरआवर्तं मस्त-
 केऽञ्जलिं कृत्वा एव=उक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-'अहण्ण' अह खलु भदन्त !
 पान्थकः कृतकायोत्सर्गः 'देवसिय' दैवसिक=प्रतिक्रमण प्रतिक्रान्तः । हे भदन्त !
 अह खलु पान्थकनामसो भवदीयशिष्यः कायोत्सर्गं कृत्वा दैनिक प्रतिक्रमण कृत-
 वान् , अधुना चातुर्मासिक क्षमापयन् देवानुप्रियं वन्दमानः शीर्षेण पादयोः सघट्ट-
 यामि, हे देवानुप्रियाः तत् तस्माद् क्षमध्व माम् , क्षमध्व मे ममापराध, 'तुम-
 जिजए) अरे ! यह कौन ऐसा हैं जो श्री ह्री से रहित बुद्धिवाला हुआ
 यहा बिना बुलाये आ गये है और (ण मम सुहप्पसुत्त पाएसु
 सघट्टेइ) सुख पूर्वक सोए हुए सुझे पैरों मे स्पर्श कर रहा है । (तएण
 से पथए सेलएण एव वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिय करयल० कट्ठु एव
 वयासी) इस प्रकार शैलक के द्वारा कहे जाने पर वह पाथक अनगार
 डर गया, उद्विग्न हो गया, रोम २ उसका कप गया । उसी समय उसने
 दोनों हाथों की अजलि जोड़कर और उसे मस्तक पर रखकर इस
 प्रकार कहा-अहण्ण भते पथए कयकाउसग्गे देवसिय पडिक्कमणं
 पडिक्कते चाउम्मासिय खामेमाणे देवाणुप्पिय ! वदमाणे सीसेण पाएसु
 सघट्टेमि) हे भदन्त ! मैं हूँ आपका शिष्य मैं पांथक ने कायोत्सर्ग करके
 दैवसिक प्रतिक्रमण कर लिया है । अब चातुर्मासिक दोषों की क्षमा
 कराने निमित्त हे देवानुप्रिय आपकी वदना करते हुए मैं आपके चरणों
 का स्पर्श किया है । (त खमतु म देवाणुप्पिया ! खमतु मेऽवराह तुमण्णं

कथु-(से केसण भो एस अणत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए) अरे ! आ केसु
 छे ? ने श्री ह्री थी रहीत भूर्ण जोलाव्या वगर न अही आवतो रह्यो छे
 (ण मम सुहप्पसुत्त पाएसु सघट्टेइ) के ने सुजेथी विश्राम करनास भने पगोभा
 स्पर्श करी रह्यो छे (तएण से पथए सेलएण एव वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिय
 करयल० कट्ठु एव वयासी) शैलक राजऋषिनी आ बात सावणीने पाथक
 अनगार डरी गया, उद्विग्न थर गया अने तेभना अणु अणुभा लय व्यास
 थर गये । तत न तेओ अने हाथोनी अजलि भन्तके भूझीने आ
 प्रभाणे कडेवा लाग्या-(अहण्ण भते पथए कयकाउसग्गे देवसियपडिक्कमण
 पडिक्कते चाउम्मासिय खामेमाणे देवानुप्पिय ! वदमाणे सीसेण पाएसु सघट्टेमि)
 हे भदन्त ! आतो हु छु आपनो शिष्य पाथक ने कायोत्सर्ग करीने दैवसिक
 प्रतिक्रमण करी लीधु छे आतुर्मासिक दोषोनी क्षमापना भाटे तभास अरहोभा
 मे भस्तउने स्पर्श कर्यो छे (त खमतु म देवाणुप्पिया ! खमतु मेऽवराह

ण ' यूय खलु । हे देवानुप्रियाः ' णाह भुज्जो ' न भूयः एव करणाय प्रवर्तिष्ये इति कृत्वा=इत्युक्त्वा शैलकमनगास्मेतदर्थं मम्यगु विनयेन ' भुज्जो भुज्जो ' भूयो भूयः पुन पुनः ' खामेइ ' क्षमयति शैलकस्य राजर्षे क्रोवोपशमनार्थं पुनः पुनः स्वापराध क्षमयति स्मेत्यर्थः ।

ततः खलु तस्य शैलकस्य राजर्षेः पान्थकेनैरमुक्तस्य अयमेतद्रूपो वक्ष्यमाण-
रूपः यावत् सकल्प समुदपद्यत=अभवत्-एवम्=अमुना प्रकारेण खलु निश्चये, अह
सर्वं राज्य त्यक्त्वा च यावत् दीक्षा गृहीत्वा पुनर्विपुलाशनपानादौ मूर्च्छितः गृद्धः
अध्युपपन्नः अवसन्नः, यावत् अग्रसन्नविहारी, पार्श्वस्थविहारी कुशीलः कुशीलविहारी
प्रमत्तः ससक्तश्चतुर्मासापगमेऽपि ऋतुवद्धपीठफलकशय्यासस्तारक गृहीत्वा विह-
देवाणुप्पिया ! णाह भुज्जो एव करणयाए त्ति कद्दु सेलय अणगार
एयमट्ट सम्म विणएण भुज्जो २ खामेइ) इसलिये हे देवानुप्रिय ! आप
मुझे क्षमा कीजिये । अब मैं हे देवानुप्रिय ! पुनः ऐसा नहीं करूँगा ।
इस प्रकार कहकर उसने चार २ शैलक अनगार से अपने इस अपराध
की बड़े विनय के साथ क्षमा मागी । (तएणं तस्स सेलयस्स रायरिसिस्स
पथएण एव वुत्तस्स अयमेयारू वे जाव समुप्पज्जित्था) इस प्रकार पान्थक
अनगार के कहने पर उस शैलक राजर्षि के मन में यह इस प्रकार का
यावत् सकल्प उत्पन्न हुआ (एव खलु अह रज्ज च जाव ओसन्नो जाव
उउ वद्धपीठफलकसेज्जासथारग गिण्हित्ता विहरामि त नो खलु कप्पइ
समणाण ओसन्ना ण पासत्था ण जावविहरित्तए) मैंने समस्त राज्य का परि-
त्याग कर यावत् जिनदीक्षा धारण की है परन्तु अब मैं पुन विपुल अशन

तुमण्ण देवाणुप्पिया ! णाह भुज्जो एव करणयाए त्ति कद्दु सेलय अणगार
एयमट्ट सम्म विणएण भुज्जो २ खामेइ) ओथी छे देवानुप्रिय ! तमे मने क्षमा
करे। छे देवानुप्रिय ! हुवेथी भाराथी आवु केधपिणु द्विस थरे नडि आ
प्रभाणु पाथक अनगारे शैलक राजकपिनी पे ताना , अपराध भदल वारवार
विनम्र थधने क्षमा याचना करी, (तएण तस्स सेलयस्स रायरिसिस्स पथएण
एव वुत्तस्स अयमेयारू वे जाव समुप्पज्जित्था) आ प्रभाणु पाथक अनगारनी
पात सालणीने शैलक राजकपिना मनमा आ जतने। सकटप-विचार रुधुर्यो
छे (एव खलु अह रज्ज च जाव ओसन्नो जाव उउ वद्धपीठफलकसेज्जा
सथारग गिण्हित्ता विहरामि त नो खलु कप्पइ समणाण ओसन्नाण पासत्थानं
जाव विहरित्तए) सकण राजवैलवने। त्याग करीने मे जिनदीक्षा भेजवी छे
पणु आत्यारे करी छु पुण्ण प्रभाणुमा अशन, वान वजेरेना सेवनमा आअ

रामि । तत्=तस्मात् नो खलु कल्पते अणानाम् अनगाराणा 'पासत्याण' पार्श्वस्थाना यावत् करणेन—'असन्नाण कुशीलाणं प्रमत्ताण ससक्ताण इत्येषा सग्रह । 'अवसन्ना' पार्श्वस्था कुशीलाः प्रमत्ताः ससक्ताश्च भूत्वाऽनगाराणा विहर्तुं न कल्पते इत्यर्थः ।

'त सेय' तन्त्रेयः=तत् तस्मात् श्रेयः खलु मे मम कल्ये प्रभातकाले मण्डूक राजानमापृच्छ्य प्रतिहारिक=प्रत्यर्पणीय, पीठफलकशय्यासस्तारक प्रत्यर्प्य पान्थकेनानगारेण सार्धं वहिः 'अद्भुज्जण' अभ्युद्यतेन=उत्तमसहितेन, यावत्—इह यावत् करणात्—'पव्वत्तेण, पग्गहियेण' इत्यनयो सग्रह । 'पव्वत्तेण' प्रदत्तेन, तीर्थकरानुज्ञापितेन गुरुपदिष्टेन इत्यर्थः, 'पग्गहियेण' प्रवृत्तीतेन, तीर्थकराङ्गीकृतेन, गुरुसकाशान्मयाङ्गीकृतेनेत्यर्थः जनपदविहारेण विहर्तुम् । नव-

पान आदि में मूर्च्छित बन रहा हूँ । उन में स्नेहरूपी रज्जु से बँध गया हूँ । लोलुप हो गया हूँ । सरस आहार आदि के अधीन मेरा जीवन हो गया है । स्वा याय प्रतिलेखन आदि आवश्यक क्रियाओं से मैं शिथिल हो रहा हूँ । मेरी चरण सत्तरी और करण सत्तरी दोनों ही आलस्य के बश से मदीभूत हो रही हैं । इसलिये मैं पार्श्वस्थ हो रहा हूँ । पार्श्वस्थों के जैसा मेरा विहार वर्तव्य हो गया है । कुशील-कुत्सित आचार वाला बन गया हूँ । कुशील विहारी हो रहा हूँ । प्रमत्त दशाधीन होकर गौरवत्रय से सकीर्ण आचारवाला बना हुआ हूँ । ऋतुण्ड पीठ फलक शय्या सस्तारक का से वी हो रहा हूँ । अतः अवसन्न, पार्श्वस्थ, कुशील प्रमत्त एवं ससक्त होकर अनगार रूप से रहना यह श्रेयस्कर नहीं है । (त सेय खलु मे कल्ल मडुय राय आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीठ

कत थर्ध रह्यो छु अनेउत्ती दोरीमा हु ण धार्ध गयो छु हु लोलुप थर्ध गयो छु भाइ लुवन सरस आहारने आधिन थर्ध गयो छे स्वाध्याय प्रतिलेखन वगेरे आवश्यक क्रियामा हु शिथिल थर्ध गयो छु भारी चरण सत्तरी अने करण सत्तरी णने आणसने लीधे मद थर्ध रही छे अथी हु पार्श्वस्थ थर्ध रह्यो छु भारी विहार अने आचरण पण पार्श्वस्थानी जेम न थवा भाउयो छे कुशील-अटले के हु कुत्सित आचरण वाणो थर्ध गयो छु कुशील-विहारी थर्ध रह्यो छु प्रमत्तना जेवी दशावाणो हु, गौरवत्रयथी सकीर्ण आचार वाणो थर्ध रह्यो छु हु ऋतुण्ड पीठ इलक शय्या सस्तारक ने सेवनारे थर्ध गयो छु अथी अवसन्न, पार्श्वस्थ कुशील प्रमत्त अने ससक्त थर्धने अनगार इपे रह्यो ने श्रेयस्कार नहीं (त सेय खलु मे कल्ल मडुय राय आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीठफलक शय्या सस्तारक पञ्चपिणिता पथण

કલ્પિવિહારેણ દેશમધ્યે વિહાર ર્તુ શ્રેય इत्यर्थ । एतम्=उक्तप्रकारेण, 'संप्रेक्षते
स्व मनसि विचारयतिस्मेत्यर्थः । ' संपेक्षित्ता 'संप्रेक्ष्य विचार्य, कल्ये यावद्विह-
रति । अत्र यावच्चन्द्रेण-‘ जलन्तेमद्भ्य राय आपुच्छित्ता, पाङ्गिहारिय, पीठफलग
सेज्जासथारय पच्चप्पिणइ, पच्चप्पिणित्ता पथएण अनगारेण सद्धि बहिया अब्भु-
जएण जाव जणवयविहारेण ’ इतिपाठस्य सग्रहः ॥ ३२ ॥

फलગ सेज्जा સંથારય પચ્ચપ્પિણિત્તા પંથણ અણગારેણ સદ્ધિ બહિયા
અબ્ભુજણ જાવ જણવયવિહારેણ વિહરિત્તા એવ સંપેહેહ, સંપેહિત્તા
કલ્લ યાવ વિહરહ) મેરા હિતતો અવ હસી મેં હું કિ પ્રાત કાલ મહુક-
રાજા સે પૂછકર પ્રતિહારિકા-જો યે પીઠ ફલગ શય્યા સસ્તારક હૈ
ઉન્હે પીછે દેકર પાથક અનગાર કે સાથ ઉત્તમ યોગરૂપ ઉદ્યમ સે
યુક્ત-અપ્રમત્તદશા વિશિષ્ટ-તીર્થ કરાદિ દ્વારા આચરિત ઓર ગુરુ જન
દ્વારા ઉપદિષ્ટ-એમા વિહાર યદા સે કરદું । અર્થાત્ નવ કલ્પિત વિહાર
સે અન્ય દેશોં મે વિહાર કરના હી મુજે અવ હિતકારક હૈ । હસ પ્રકાર
કા વિચાર શૈલક અનગાર ને કિયા । યાદ મે વે હસી વિચાર કે અનુસાર
વહાં સે વિહાર કર ગયે । યદા યાવત્ શબ્દ સે “ જલતે-મહુય રાય
આપુચ્છિત્તા પાંગિહારિય પીઠફલગ સેજ્જાસથારય પચ્ચપ્પિણइ, પચ્ચ-
પ્પિણિત્તા પથણ અણગારેણ સદ્ધિ બહિયા અબ્ભુજણ જાવ જણવય
વિહારેણ ” હસ પાઠ કા સગ્રહ હુઆ હૈ । હસકા અર્થ ઉપર લિખા જા
ચુકા હૈ । સૂત્ર ॥ ૩૦ ॥

અણગારેણ સદ્ધિબહિયા અબ્ભુજણ જાવ જણવય વિહારેણ વિહરિત્તા એવ સંપેહેહ
સંપેહિત્તા કલ્લ યાવ વિહરહ) હવે મારા પોતાને માટે તો એજ શ્રેયસ્કાર
ગણાય કે સવારે મહુકરાજાને જણાવી પીઠ ફલગ શય્યા સસ્તારકો સોપીને
પાથક અનગારની સાથે ઉત્તમ યોગરૂપ ઉદ્યમથી યુક્ત-અપ્રમત્તદશાવિશિષ્ટ
-અને તીર્થકર વગેરે દ્વારા આચરિત અને ગુરુ જન દ્વારા ઉપદિષ્ટ વિહાર
કર એન્હો કે નવ કલ્પિત વિહારથી બીજાદેશોમા વિહાર કરવો જ હવે
અત્યારના સંજોગોમા મારે માટે હિતાવહ છે આરીતે શૈલક અનગારે વિચાર
કર્યો ત્યાર પછી એ વિચાર પ્રમાણે જ ત્યાથી તેઓએ બીજે વિહાર કર્યો
અહીં ‘યાવત્’ શબ્દથી “ જલતે મહુય રાય આપુચ્છિત્તા પાંગિહારિય પીઠફલગસેજ્જા
સંથારય પચ્ચપ્પિણइ, પચ્ચપ્પિણિત્તા પથણ અણગારેણ સદ્ધિ બહિયા અબ્ભુજણ
જાવ જણવયવિહારેણ) આ પાઠનો સગ્રહ થયો છે આના અર્થ પહેલા
સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યો છે ॥ સૂત્ર “૩૨” ॥

मूलम्—एवामेव समणाउसो जो अम्हं निग्गथो वा निग्गंथी
वा आयरिय उवज्झयाण अंतिए पव्वइए समाणे ओसन्ने जाव
सथारए पमत्ते विहरइ, से ण इहलोए चेव वहूणं समणाण ४
हीलणिज्जे ससारो भाणियव्वो ॥ सू० ३३ ॥

टीका—‘एवामेव’ इत्यादि—एवमेव अनेन प्रकारेणैव यथा शैलको राजर्षिः प्रमादी
जातस्तथैव हे श्रमणा आयुष्मन्तः ! योऽस्माक निर्ग्रथो वा निर्ग्रन्थी वा आचार्योपा
ध्यायानामन्तिके समीपे प्रव्रजितः गृहीतप्रव्रज्यः सन् अवसन्न यावत्—सस्तारके—
अत्र यावच्छब्देन—अवसन्ननिहारी, पार्श्वस्थः पार्श्वस्थविहारी, कुशीलः कुशीलविहारी
प्रमत्तः ससक्तः ऋतुवद्धपीठफलकशय्या’ इत्यन्तः पाठः सगृह्यते । एव चावसन्नत्वादि
विशिष्ट सन् ऋतुवद्धपीठफलकशय्यासस्तारके प्रमत्तः=प्रमादीभूत्वा विहरति अव-
तिष्ठते, स खलु इह लोके चैव गृह्णा श्रमणानां ४ श्रमणीनां श्रावकाणां श्राविकाणां

‘ एवामेव समणाउसो ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(एवामेव) जिस तरह शैलक राजकृपि प्रमादी हुवे उसी
तरह (समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणो ! (जो अम्हं निग्गंथो वा
निग्गथी वा आयरिय उवज्झयाण अंतिए पव्वइए समाणे ओसन्ने जाव
सथारए पमत्ते विहरइ इह लोए चेव वहूणं समणाण ४ हीलणिज्जे
ससारो भाणियव्वो) जो कोई हमारा निर्ग्रन्थ वा निर्ग्रन्थी जन आचार्य
उपोध्याय के पास प्रव्रजित होता हुआ अवसन्न बन जाता है यावत् ऋतु
वद्ध पीठ फलकशय्या सस्तारक में प्रमत्त होकर बैठा रहता है वह इस
लोक में अनेक श्रमण, श्रमणी श्रावक, श्राविकाओं द्वारा हीलनीय होता

(एवामेव समणाउसो) इत्यादि

टीकार्थ—(एवामेव) जेभ शैलकराज कृपि प्रमादवशं यथा तेभ (समणाउसो)
हे आयुष्मन्त श्रमणो ! (जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गथी वा आयरिय उवज्झयाण
अंतिए पव्वइए समाणे ओसन्ने जाव सथारए पमत्ते विहरइ इह लोए चेव
वहूणं समणाण ४ हीलणिज्जे ससारो भाणियव्वो) जे कोई अमारा निर्ग्रन्थ
निर्ग्रन्थी जन आचार्य उपोध्ययनी पास प्रव्रजित भइने अवसन्न भइ जाय
छे यावत् ऋतु वद्ध पीठ फलक शय्या सस्तारकमा प्रमत्त भइने जेसी रह
छे ते आ लोकमा धरु श्रमणो श्रमणीओ अने श्रावक श्राविकाओ द्वारा

હીલનીયઃ નિન્દનીયઃ શ્લિસનીયઃ ગર્હનીયઃ પરિભવનીયઃ, ભવતિ । પરલોકેऽપિ
 ચ્છલુ આગચ્છતિ, માપ્નોતિ વહુનિ દણ્ડાનાનિ 'સસારો માણિયઞ્ચો' સસારો મણિ
 સ્વયઃ । સંસારે સ પરિભ્રામ્યતિ અત્ર સસારપરિભ્રમણપાઠો ગાન્ય -યદા- ' અ
 ણાહ્ય અણવદગ્ગ દીહમદ્ધ ચાઉરત્ત સસારકતાર અણુપરિયટ્ટહ ' અનાદિકમ્ અન-
 વદગ્મ્ અનન્ત દીર્ઘોદ્ધ દીર્ઘકાલ, દીર્ઘાઘ્યાન વા દીર્ઘમાર્ગ, ચાતુરન્ત ચતુર્વિભાગ,
 ચતુર્ગતિક, સસારેવ કાન્તાર દુર્ગમમાર્ગ તત્, તથા અનુપર્યટ્ટતિ પુનઃપુન
 ભ્રમ્યતીત્યર્થઃ ॥ ૩૩ ॥

મૂલમ્—તણ તે પથગવજ્જા પંચ અળગારસયા ઇમીસે
 કહાણ લદ્ધટ્ઠા સમાણા અન્નમન્ન સદાવેતિ, સદાવિત્તા એવં
 વયાસી—સેલણ રાયરિસી પંથણં અળગારેણં સદ્ધિ વહિયા જાવ
 વિહરહ, ત સેયં ચ્છલુ દેવાણુપ્પિયા । અમ્હ સેલયં ઉવસપાજ્જિ-
 ત્તાણં વિહરિત્તણ, એવં સંપેહેતિ, સપેહિત્તા સેલય રાય ઉપસંપાજ્જિ-
 ત્તાણં વિહરંતિ ॥ સૂ૦ ૩૪ ॥

હૈ, નિંદનીય હોતા હૈ, શ્લિસનીય હોતા હૈ, ગર્હનીય હોતા હૈ, પરિભ-
 વનીય હોતા હૈ । તથા પરલોક મેં મી અનેક દણ્ડો કો પાતા હૈ । સસાર
 મેં વહ પરિભ્રમણ કરતા હૈ ।

સસાર પરિભ્રમણ સચન્ધી પાઠ યદા હસ પ્રકાર સે લગા લેના ચાહિયે ।
 “ અણાહ્ય અણવદગ્ગ દીહમદ્ધ ચાઉરત્તસમારકતાર અણુપરિયટ્ટહ ”
 હસકા ભાવે હસ પ્રકાર હૈ—એસા જીવ અનાદિ અનતરૂપ સસાર કાન્તાર
 મેં કિ જો ચતુર્ગતિરૂપ વિભાગ વાલા હૈ ઓર જિસકા માર્ગ યા કાલ
 ઘટુત દીર્ઘ હૈ ઉસમેં પુનઃ પુનઃ ભ્રમણ કરતા રહતા હૈ । સૂત્ર ॥ ૩૩ ॥

હીલનીય હોય છે, નિંદનીય હોય છે, શ્લિસનીય હોય છે, ગર્હણીય હોય છે,
 પરિભવનીય હોય છે તેમજ પરલોકમા પણ ઘણી જાતની શિક્ષાને પાત્ર
 થાય છે તે સસારમા પરિભ્રમણ કરતો જ રહે છે

સસાર પરિભ્રમણ વિષે પાઠ અહીં આ પ્રમાણેજ લખ્યો છે નોંધો (અણાહ્ય
 અણવદગ્ગ દીહમદ્ધ ચાઉરત્તસમારકતાર અણુપરિયટ્ટહ) આનો ભાવર્થ આ પ્રમાણે
 છે કે—ચતુર્ગતિ રૂપ વિભાગવાળા અનાદિ અનત રૂપ સસાર ઝાતારમા કે જેનો
 માર્ગ ખૂબજ દીર્ઘ છે વારવાર જીવ પરિભ્રમણ કરતો જ રહે છે ૩૩

ટીકા-‘તણ’ इत्यादि-ततस्तदनन्तर पान्थकवर्जाः पञ्चअनगारशतानि=पान्थकरहिताः पञ्चशतमुखका अनगारा एकोनपञ्चशतमुखका अनगारा इत्यर्थः । ‘इमीसे कहाए’ अस्या कथाया, ल्यबलोपे कर्मण्यधिकरणे चेति वार्तिकेन पञ्चमी । इमा कथामाकर्ण्येत्यर्थः । ‘लद्धद्वा’ लब्धार्थाः प्राप्ताभिलषिताः सन्तः ‘अन्नमन्न’ अन्योन्य परस्पर ‘सदावेति’ शब्दयन्ति आह्वयन्ति, शब्दयित्वा=आह्वय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादिषुः-शैलको राजर्षिः पान्थकेनानगारेण सार्धं नहि यावद् विहरति, अत्र यावच्छब्देन-अवभुञ्जएण पक्वत्वेण पडिग्गहिएण जणवयविहार इति पाठस्य संग्रह अस्य व्याख्या प्रागुक्ता । तत्=तस्मात् श्रेयः खलु हे देवानुप्रियाःअस्माक शैलक शैलकराजर्षिम् ‘उवसपज्जित्ता उपसद्य=

‘तण ते पथगवज्जा’ इत्यादि ॥

ટીકાર્થ-(તણ) इसके बाद (ते पथगवज्जा पच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धद्वा समाणा अन्नमन्न सदावेति) वे पांथक वर्ज(५००) सौ अनगार अर्थात् ४९९ वे साधु जो शैलक राजकृषि के शिष्य थे जब इस कथा को सुना-तो सुनकर अभिलषित अर्थ की प्राप्ति वाले बनकर उन्हो ने आपस में एक दूसरे को बुलाया-(सदावित्ता एव वयासी) बुलाकर इस प्रकार विचार किया-(सेलए रायरिसी पथएण अणगारेण सद्धि बहिया जाव विहरइ) शैलक राजकृषि पांथक अनगार के साथ बाहर जनपदों में यावत् विहार कर रहे हैं ।

यहा यावत् शब्द से “अवभुञ्जएण पक्वत्वेण पडिग्गहिएण जणवय विहार” इस पाठ का संग्रह किया गया है । इन पदों की व्याख्या

(તણ તે પથગવજ્જા) इत्यादि !

ટીકાર્થ-(તણ) ત્યાર બાદ (તે પથગવજ્જા પચ અણગારસયા ઇમીસે કહાએ લદ્ધદ્વા સમાણા અન્નમન્ન સદાવેતિ) પાંથકને બાદ કરતા બીજા ચારસો નવાણુ રાજકૃષિ શૈલકના શિષ્યોએએ બ્યારે આ બધી વિગત બાણી ત્યારે ઇચ્છિત અર્થની પ્રાપ્તિની અભિલાષા રાખતા તેઓએ એક બીજાને એક સ્થાને એકઠા થવા માટે બોલાવ્યા (સદાવિત્તા એવ વયાસી) બોલાવીને એક જગ્યાએ એકઠા થઈને તેઓ વિચાર કરવા લાગ્યા, (સેલએ રાયરિસી પથએણ અણગારેણ સદ્ધિ બહિયા જાવ વિહરइ) કે શૈલક રાજકૃષિ પાંથક અનગારની સાથે બહાર જનપદોમાં વિહાર કરી રહ્યા છે,

અહીં જે (યાવત્) શબ્દ છે તેનાથી (અવભુજ્જએ ણ પક્વત્તેણ પડિગ્ગ હિએણ જગવયવિહાર) આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે, આ પદોની

હીલનીયઃ નિન્દનીયઃ શ્લિસનીયઃ ગર્હનીયઃ પરિભવનીયઃ, ભવતિ । પરલોકેऽપિ ચ
 खलु आगच्छति, प्राप्नोति बहूनि दण्डानानि 'ससारो भाणियन्तो' ससारो भणि
 तव्यः । ससारे स परिभ्राम्यति अत्र ससारपरिभ्रमणपाठो याच्य - यथा- ' अ
 णाइय अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत्त ससारकत्तार अणुपरियट्ठइ ' अनादिकम् अन-
 वदग्रम् अनन्त दीर्घाद्ध दीर्घकाल, दीर्घाव्वान वा दीर्घमार्गं, चातुरन्त चतुर्विभाग,
 चतुर्गतिक, 'ससारएव कान्तार दुर्गममार्गं तत्, तथा अनुपर्यटति पुनःपुन
 भ्राम्यतीत्यर्थः ॥ ३३ ॥

મૂલમ્—તથા તે પથગવજ્ઞા પંચ અળગારસયા ઇમીસે
 कहाए लछट्टा समाणा अन्नमन्न सदावेति, सदावित्ता एवं
 वयासी—सेलए रायरिसी पंथएणं अणगारेण सद्धि वहिया जाव
 विहरइ, त सेयं खलु देवाणुप्पिया । अम्ह सेलयं उवसपज्जि-
 ताणं विहरित्तए, एव संपेहेति, सपेहिता सेलय रायं उपसपज्जि-
 ताणं विहरंति ॥ सू० ३४ ॥

હૈ, નિંદનીય હોતા હૈ, શ્લિસનીય હોતા હૈ, ગર્હનીય હોતા હૈ, પરિભ-
 વનીય હોતા હૈ । તથા પરલોક મેં ભી અનેક દણ્ડો કો પાતા હૈ । સસાર
 મેં વહ પરિભ્રમણ કરતા હૈ ।

સસાર પરિભ્રમણ સબન્ધી પાઠ યદા હસ પ્રકાર સે લગા લેના ચાહિયે ।
 “ અણાહય અણવદગ્ગ દીહમદ્ધ ચાઉરત્તસમારકતાર અણુપરિયટ્ઠઈ ”
 હસકા ભાવ હસ પ્રકાર હૈ—એસા જીવ અનાદિ અનતરૂપ સસાર કાન્તાર
 મેં કિ જો ચતુર્ગતિરૂપ વિભાગ વાલા હૈ ઓર જિસકા માર્ગ યા કાલ
 ઘટુત દીર્ઘ હૈ ઉસમેં પુનઃ પુનઃ ભ્રમણ કરતા રહતા હૈ । સૂત્ર ॥ ૩૩ ॥

હીલનીય હોય છે, નિંદનીય હોય છે, શ્લિસનીય હોય છે, ગર્હનીય હોય છે,
 પરિભવનીય હોય છે તેમજ પરલોકમા પણ ઘણી જાતની ગિફાને પાત્ર
 થાય છે તે સસારમા પરિભ્રમણ કરતો જ રહે છે

સસાર પરિભ્રમણ વિષે પાઠ અહીં આ પ્રમાણેજ જાણવો જોઈએ (અણાહય
 અણવદગ્ગ દીહમદ્ધ ચાઉરત્તસમારકતાર અણુપરિયટ્ઠઈ) આનો ભાવર્થ આ પ્રમાણે
 છે કે—ચતુર્ગતિ રૂપ વિભાગવાળા અનાદિ અનત રૂપ સસાર કાન્તારમા કે જેનો
 માર્ગ ખૂબજ દીર્ઘ છે વારવાર જીવ પરિભ્રમણ કરતો જ રહે છે ॥ સૂત્ર ૩૩ ॥

टीका-‘तएण’ इत्यादि-ततस्तदनन्तर पान्थकवर्जाः पञ्चअनगारशतानि=पान्थकरहिताः पञ्चशतमुखका अनगारा एकोनपञ्चशतसख्यका अनगारा इत्यर्थः । ‘इमीसे कहाए’ अस्या कथाया, ल्यबलोपे कर्मण्यधिकरणे चेति वार्तिकेन पञ्चमी । इमा कथामाकर्ण्येत्यर्थः । ‘लद्धद्वा’ तब्धार्थाः प्राप्ताभिलषिताः सन्तः ‘अन्नमन्न’ अन्योन्य परस्पर ‘सदावेति’ शब्दयन्ति आह्वयन्ति, शब्दयित्वा=आह्वय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादिषुः-शैलको राजर्षिः पान्थकेनानगारेण सार्धं वहि र्यावद् विहरति, अत्र यावच्छब्देन-अवभुज्जएण पवत्तेण पडिग्गहिण जणवयविहार इति पाठस्य संग्रह अस्य व्याख्या प्रागुक्ता । तत्=तस्मात्, त्रेयः खलु हे देवानुप्रियाःअस्माक शैलक शैलकराजर्षिम् ‘उवसपज्जित्ता उपसद्य=

‘तएण ते पथगवज्जा’ इत्यादि ॥

टीकार्थ-‘तएण इसके बाद (ते पथगवज्जा पच अनगारसया इमीसे कहाए लद्धद्वा समणा अन्नमन्न सदावेति) वे पाथक वर्ज(५००) सौ अनगार अर्थात् ४९९ वे साधु जो शैलक राजकृपि के शिष्य थे जब इस कथा को सुना-तो सुनकर अभिलषित अर्थ की प्राप्ति वाले बनकर उन्हो ने आपस में एक दूसरे को बुलाया-(सदावित्ता एव वयासी) बुलाकर इस प्रकार विचार किया-(सेलए रायरिसी पथएण अनगारेण सद्धि वहिया जाव विहरइ) शैलक राजकृपि पाथक अनगार के साथ बाहर जनपदों में यावत् विहार कर रहे हैं ।

यहा यावत् शब्द से ‘‘अवभुज्जएण पवत्तेण पडिग्गहिण जणवय विहार’’ इस पाठ का संग्रह किया गया है । इन पदों की व्याख्या

(तएण ते पथगवज्जा) इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) त्थार भाइ (ते पथगवज्जा पच अनगारसया इमीसे कहाए लद्धद्वा समणा अन्नमन्न सदावेति) पाथकने भाइ करता भीजा त्थारसे नवाणु राजकृपि शैलकना शिष्योओओ त्थारे आ णधी विगत जाणी त्थारे धम्मिष्ठत अर्थनी प्राप्तिनी अलिलापा राभता तेओओ ओक भीजने ओक स्थाने ओकठा थवा भाटे ओलाव्या (सदावित्ता एव वयासी) ओलावीने ओक जग्ग्याओ ओकठा थमने तेओ विचार कग्वा लाग्या, (सेलए रायरिसी पथएण अनगारेण सद्धि वहिया जाव विहरइ) ओ शैलक राजकृपि पाथक अनगारनी साथे णडार जनपदेभा विहार करी रह्या ओ,

अही ओ (यावत्) शब्द ओ तेनाथी (अवभुज्जए ण पवत्तेण पडिग्ग हिण जणवयविहार) आ पाठने संग्रह थयो ओ, आ पदेनी

ઉપગત્ય તદાજ્ઞામગ્નીકૃત્ય વિહર્તુ જનપદરિહાર કર્તુમિત્યઃ૪ । એવ અમુના પ્રકારે
સપ્રેક્ષન્તે, પરસ્પર પર્યાલોચયન્તિ, સપ્રેક્ષ્ય પર્યાલોચ્ય શૈલક 'રાય' રાજાને
રાજર્ષિમિત્યર્થ ઉપસપદ્ય=ઉપેત્ય તદાજ્ઞામાદાય વિહરન્તિ ॥ ૩૪ ॥

મૂલમ્-તેણં સેલય પથગપામોક્ત્વા પંચ અળગારસયા
વહૂણિ વાસાણિસામન્તપરિયાગ પાઉણિત્તા જેનેવ પોંડરીયે પઠ્ઠય
તેનેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા જહેવ યાવચ્ચાપુત્તે તહેવ
સિદ્ધા । એવામેવ સમણાઉસો જો અમ્હ નિગ્ગંથો વા નિગ્ગંથી
વા જાવ વિહરિસ્સઇ ।

એવ खलु जंवू । समणेण भगवया महावीरेण जाव संप-
त्तेणं पंचमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्तेत्ति वेमि ॥३५॥

॥ पचम णायज्झयण समत्त ॥

પહિલે કર દી ગઈ છે । (ત સેય खलु देवाणुप्पिया । અમ્હ સેલય ઉવ
સપજ્જિત્તા ણં વિહરિત્તણ) હસલિયે હે દેવાનુપ્રિયો ! અવ હમ લોગો કો
યહી ઉચિત્ત-કલ્યાણ કારક-માર્ગ હૈ કિ હમ સવ ઉન શૈલક રાજઋષિ
કો આજ્ઞા કો અગીકાર કર બાહર જનપદોં મે વિહાર કરેં ।

(એવ સપેહેંતિ) હસ પ્રકાર ઉન્હોને વિચાર ક્રિયા-(સપેહિત્તા
સેલય રાય ઉપસપજિત્તાણ વિહરતિ) વિચાર કર વે સવ કે સવ
શૈલક રાજા-રાજઋષિ કે પાસ પહુંચે ઓર ઉનકી આજ્ઞા લેકર વિહાર
કરને લગે । સૂત્ર ॥ ૩૪ ॥

બ્યખ્યા પડેલા કરવામા આવી છે (ત સેય खलु देवाणुप्पिया ! અમ્હ સેલય
ઉવસપજિત્તાણ વિહરિત્તણ) એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! અમારા માટે એજ
હિતાવહ છે કે અમે બધા તે શૈલક રાજઋષિની આજ્ઞા મેળવીને બહાર ના
જનપદોમા વિહાર માટે નીકળીએ

(એવ સપેહેંતિ) આ પ્રમણે વિચાર કર્યો (સપેહિત્તા સેલય રાય ઉપસવ
જિત્તાણ વિહરતિ) વિચાર કરીને તેઓ બધા શૈલક રાજઋષિની પાસે ગયા
અને તેમની આજ્ઞા મેળવીને વિહાર કરવા લાગ્યા ॥ સૂત્ર “ ૩૪ ” ॥

टीका—ततस्तदनन्तर खलु 'सेलए' शैलकराजर्षिः 'पथगपामोक्त्वा' पान्थकप्रमुखाः, 'पच' पञ्च, 'अणगारसया' अनंगारशतानि, बहूनि वर्षाणि 'सामन्नपरियाग' श्रामण्यपर्याय 'पाउणित्ता' पालयित्वा यत्रैव पुण्डरीकः पुण्डरीकपर्वतस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यथैव स्थापत्यापुत्रः सिद्धस्तथैव सिद्धः । मासिकीं सलेखना कृत्वा केवलीभूत्वा सिद्धा मुक्ता जाता इत्यर्थः ।

एवमेव शैलकराजर्षिपदेन, हे श्रमणा आयुष्मन्तः । योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा यावद् प्रमाद परित्यज्य अभ्युद्यतेन सोद्यमेन प्रदत्तेन तीर्थकरानुज्ञा

‘तएणं सेलए पथगपामोक्त्वा’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सेलए) वे शैलक राजकृषि और (पथगपामोक्त्वा पच सय अणगारसया) पाथक प्रमुख पांचसौ अनंगार (बहूणि वासाणि) अनेक वर्षों तक (सामन्नपरियाग पाउणित्ता श्रामण्यपर्याय का पालन करके (जेणेव पोंडरीये पव्वए तेणेव उवागच्छति) जहा पुण्डरीक पर्वत था वहा आये । (उवागच्छित्ता जहेव धावच्चा पुत्ते तहेव सिद्धा) वहा आकर स्थापत्यापुत्र अनंगार की तरह १ मास की सलेखना कर केवली होकर मुक्त हो गये । अर्थात् सिद्ध हो गये ।

(एवामेव समणाउसो जो अम्ह निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा जाव विहरिस्सइ) इसी तरह शैलक राजकृषि की तरह—(समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणो ! (जो अम्ह निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा जाव विहरिस्सइ) जो हमारा निर्ग्रन्थ श्रमण और निर्ग्रन्थ सा बीजन यावत् प्रमाद

(तएण सेलए पथगपामोक्त्वा) इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थार भाइ (सेलए) शैलक राजकृषि अने (पथगपामोक्त्वा पच अणगारसया) पाथक प्रमुख पांचसौ अनंगार (बहूणि वासाणि) धण्डा वर्षों सुधी (सामन्नपरियाग पाउणित्ता) श्रामण्य पर्यायनु पालन करीने (जेणेव पोंडरीये पव्वए तेणेव उवागच्छति) तथा पुण्डरीक पर्वत छतो तथा आया (उवागच्छित्ता जहेवधावच्चा पुत्ते तहेव सिद्धा) तथा आवीने स्थापत्या पुत्र अनंगारनी जेम अेक मासनी सलेखना करीने डेवणी थर् मुक्त थर् गया अेटले डे तेओ सिद्ध थथा

(एवामेव समणाउसो जो अम्म निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा जाव विहरिस्सइ) तथा प्रमाणे शैलक राजकृषिनी जेम (समणाउसो) डे आयुष्मन्त श्रमणो ! (जो अम्ह निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा जाव विहरिस्सइ) जे अमारा निर्ग्रन्थ श्रमण अने निर्ग्रन्थ साध्वी जन्त प्रमाद वेगेरेने त्यज्जने मोक्ष प्रदत्त-तर्थाकरानुज्ञापित

પિતેન ગુરુપદિષ્ટેન, પ્રગૃહીતેન તીર્થકરૈરક્ષીકૃતેન જનપદવિહારેણ વિહરિષ્યતિ સો
જનગાશ્ચતુર્વિધસધસ્યાર્ચનીયો વન્દનીયોભૂત્વા યાવત્ સસારસ્થાન્ત કૃત્વા મોક્ષ-
ગામી ભવિષ્યતિ ॥

एव खलु जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् समाप्तेन सिद्धिगतिं
गतेन पञ्चमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः=उक्तरूपोऽर्थः प्रज्ञप्त =कथित । इति ब्रवी
मि=अस्य व्याख्यापूर्वम् ॥

જો ઓસન્નો ય પાસથો કુમીઓ વિ પમાયઓ ।

सवेगा उज्जमो होज्जा सिद्धो सो शेज्जमो जहा ॥ १ ॥

छाया-योऽवसन्नश्च पार्श्वस्थः कुशीनोऽपि प्रमादतः ।

सवेगादुद्यतश्चेत् स्यात् पिद्धोऽपौ शैलको यथा ॥ १ ॥ ३५ ॥

इति श्री-विश्वप्रख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचरूपञ्चदशमापाकलितकलितक-

लापालापक-प्रविशुद्धगयपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूठ

त्रपतिकोलहापुरराजप्रदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभૂषित-कोલहापुरराज

गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-वासोलाठ-

व्रतिविरचिताया ‘ ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ’ सूत्रस्यानगारधर्माश्रितव-

र्षिण्याख्याया व्याख्याया पञ्चममध्ययन सपूर्णम् ॥

કા પરિત્યાગ કર સોચમ પ્રદત્ત-તીર્થ કરાનુજાપિત-ગુરુપદિષ્ટ ઓર
પ્રગૃહીત-તીર્થ કરો દ્વારા અગીકૃત ક્રિયે ગયે એસે જનપદ વિહાર સે યુક્ત
હોગા વહ અનગાર ચતુર્વિધ સધકા અર્ચનીય વદનીય હોકર યાવત્
સસાર કા અન્ત કર મોક્ષ ગામી હોગા ।

(एव खलु जम्बू ! समणेण भगवता महावीरेण जाव सपत्ते ण
पंचमस्स णायज्झयगस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिवेमि) इस प्रकार हे जम्बू !
श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि सिद्धगति को प्राप्त कर चुके हैं
इस पांच वे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप अर्थ प्रज्ञप्त किया है ।
ऐसा मे कहता हूँ “ इति ब्रवीमि ” इन पदों की व्याख्या पहिले की

ગુરુપદિષ્ટ અને પ્રગૃહીત તેમજ તીર્થ કરો દ્વારા સ્વીકૃત એવા જનપદ વિહારથી
યુક્ત થશે તે અનગાર ચતુર્વિધ સધનો અર્ચનીય, વદનીય થઈને યાવત્
સસારનો અંત કરીને મોક્ષપદ મેળવશે

एव खलु जम्बू ! समणेण भगवता महावीरेण जाव सपत्ते ण पंचमस्स णाय
झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि) आशीते हे जम्बू ! सिद्ध गति पाभेला
भगवान् महावीरे आ जाता अध्ययनना पाथमा अध्ययननो अर्थ प्रज्ञप्त
कृतो छे आभ हु तने उहु छु ‘ इतिब्रविमि ’ आ पढोनी व्याख्या

गई व्याख्या के अनुसार ही जानना चाहिये । इस सग्रह श्लोक का अर्थ इस प्रकार है—जो प्रमाद से अवसन्न पार्श्वस्थ तथा कुशील हो जाता है वह साधु-अनगार-सवेग भाग से अपने चरित्र में उद्यमशील होकर शैलक राजऋषि की तरह सिद्ध पदका भोक्ता हो जाता है । सूत्र ॥ ३५ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत “ज्ञानाधर्मकथाङ्गसूत्र की अनगारधर्माभृतवर्षिणी व्याख्या का पाचवा
अध्ययन समाप्त ॥ ५ ॥

પહેલા કરવ મા આવી છે આ સગ્રહ શ્લોકનો અર્થ આ પ્રમાણે છે-કે જે પ્રમાદથી અવસન્ન પાર્શ્વસ્થ તેમજ કુશીલ થઈ જાય છે, તે માધુ (અનગાર) સવેગ ભાવથી પોતાના ચરિત્રમાં ઉદ્યમશીલ થઈને શૈલક રાજઋષિની જેમ સિદ્ધ પદને મેળવનાર થાય છે ॥ સૂત્ર ‘ ૩૫ ’ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી ઘામીલાલજી મહારાજકૃત જ્ઞાનાધર્મકથાંગ સૂત્રની અનગાર ધર્માભૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ પાચમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥૫॥

અથ ષષ્ઠમધ્યયન પ્રારમ્ભ્યતે—

ગત પશ્ચમાધ્યયન-સપત્તિ ષષ્ઠપ્રારમ્ભ્યતે અસ્યાય પૂર્વેણ મહામિસમ્બન્ધઃ પશ્ચ
માધ્યયને પ્રમાદવતોઽનર્થપ્રાપ્તિઃ અપ્રમાદયતશ્રગુણઃઅત્રાપિ તાવેવ દોષગુણો કથ્યે
તે इत्यनेन सम्बन्धेनायातस्येदमादिमसूत्रम् ।

મૂલમ્—જડ્ઞં ભતે ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણં પંચમસ્સ
ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પન્નત્તે છટ્ઠસ્સ ણં ભતે ! નાયજ્ઞ-
યણસ્સ સમણેણં જાવ સપત્તેણં કે અદ્દે પન્નત્તે ? એવ સ્વલુ
જંબૂ ! તેણં કાલેણં તેણ સમણેણ રાયગિહે સમોસરણં પરિસા
નિગ્ગયા ! તેણં કાલેણ તેણં સમણેણ સમણસ્સ જેદ્દે અતેવાસી
ઇદમ્ભૂઈ અદૂરસામતે જાવ ધમ્મજ્ઞાણોવગણ વિહરઈ ॥સૂ૦૧॥

છઠા અધ્યયન કા પ્રારમ્ભ—

પાંચવાં અધ્યયન સમ્પૂર્ણ હો ચુકા હૈ । અવ છઠા અધ્યયન પ્રારમ્ભ
હોતા હૈ । હસ કા પૂર્વ અધ્યયન કે સાથ હસ પ્રકાર સે સબન્ધ હૈ કિ
પાચવે અધ્યયન મેં જો એસા કહા ગયા હૈ કિ પ્રમાદ યુક્ત અનગાર કો
અનેક અનર્થો કી પ્રાપ્તિ હોતી હૈ તથા જો પ્રમાદ સે રહિત હોતે હૈ ઉન્હે
અનેક ગુણો કા લાભ હોતા હૈ સો હસ અધ્યયન દ્વારા ઉન્હોં દોષ ઓર
ગુણો કા કથન કિયા જાવેગા હસી સબધ કો લેકર યહ અધ્યયન પ્રારમ્ભ
હુઆ હૈ । હસ કા આદિ સૂત્ર યહ હૈ—(જડ્ઞં ભતે ! સમણેણં इत्यादि ।

છઠા અધ્યયનનો પ્રારભ—

પાચમા અધ્યયન પછી આ છઠ્ઠું અધ્યયન પ્રારભ થાય છે પાચમા
અધ્યયનમા આ પ્રમાણે નિરૂપણ કરવામા આવ્યું છે કે પ્રમાદિ અનગાર ઘણા
અનર્થો મેળવે છે તેમજ જે આ પ્રમાદિ હોય છે તે ઘણા ગુણો પ્રાપ્ત કરે
છે તે હવે આ અધ્યયનમા તે ગુણો અને દોષોનુ કથન વર્ણવવામા આવશે
પાચમા અધ્યયનની સાથે આ છઠ્ઠા અધ્યયનનો એ જ સબધ છે આ સ
બધને વિચારવાના ઉપક્રમથી જ આ અધ્યયન શરૂ થયું છે છઠ્ઠા અધ્યયન
નુ પહેલું સૂત્ર આ છે—જડ્ઞં ભતે ! સમણેણં इत्यादि ।

टीकार्थ—‘जइण भंते इत्यादि, यदि खलु भदन्त श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन पञ्चमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः पष्ठस्य खलु भदन्त ! ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः एव खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे समवसरण, परिपत् निर्गता, तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य ३ ज्येष्ठे ऽन्तेवासी इन्द्रभूतिः अदूरसामन्ते जाव धर्मध्यानोपगतो विहरति ॥सू० १॥

टीकार्थ—(भते) हे भदन्त (जइण) यदि (जाव स पत्तेण समणेण) मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने (पचमस्स णायज्झयणस्स) पाचवे ज्ञाताध्ययन का (अयमट्ठे पन्नत्ते) यह पूर्वोक्त अर्थ कहा है तो (छट्ठस्स ण भते ! नायज्झयणस्स समणेण जाव स पत्तेण के अट्ठे पन्नत्ते) उन्ही मुक्ति प्राप्त श्रमण भगवान् महावीर ने छठे ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ प्ररूपित किया है ।

(एव खलु जम्बू !) इस प्रकार जम्बू स्वामी के इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये सुधर्मा स्वामी उन से इस तरह कहते हैं कि हे जम्बू ! सुनो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है—

(तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण परिसा निगया) उस काल और उस समय में राजगृह नगर में भगवान् महावीर का आगमन हुआ । भगवान् के आगमन की बात सुनकर राजगृह नगर से परिपद उन को वदना करने के लिये उनके समिप पहुँची (ते ण कालेण तेण समएण) उक्तकाल और उस समय में (समणस्स जेट्ठे अत्तेवासीइ

टीकार्थ—(भते) हे भदन्त ! (जइण) ने (जाव सपत्तेण समणेण) मुक्ति भोगवेला श्रमण भगवान् महावीरे (पचमस्स णायज्झयणस्स) पाचमा ज्ञाताध्ययनने (अयमट्ठे पन्नत्ते) आ पूर्वोक्त अर्थ निरूपित किये छे तो (छट्ठस्स ण भते ! नायज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पन्नत्ते ?) मुक्ति भोगवेला श्रमण भगवान् महावीरे छठ्ठा ज्ञाताध्ययनने शो अर्थ निरूपित किये छे ? (एव खलु जम्बू !) जम्बू स्वामीना आगतना प्रश्नने आलङ्गीने जवाण आपता सुधर्मा स्वामी तेभने उडेवा लाया छे छे जम्बू ! तभारा प्रश्न ने उत्तर सांभणे ।

(तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण परिसा निगया) ते काले अने ते समये राजगृह नगरमा भगवान् महावीर पधायी भगवान् महावीर स्वामीना आगमननी जण थता तेभने वदना करवा भाटे राजगृह नगरथी परिपद नी गी (तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते वण्णने (समणस्स जेट्ठे अत्तेवासी इन्द्रभूतिः अदूरसामन्ते जाव धम्मज्झाणोवगए

मूलम्—तएण से इंदभूई जायसहे० समणस्स३ एवं वयासी
 —कहणं भते। जीवा गुरुयत्त वा लहुयत्तं वा हव्वमागच्छति?
 गोयमा। से जहा नामए केइ पुरिसे एगं महं सुक्क तुव णि-
 च्छिड्डु निरुवहयं दंभेहिं कुसेहिं वेढेइ, वेढित्ता मट्टियालेवेण
 लिपइ लिपित्ता उण्हे दलयइ, सुक्कं समाण दोच्चपि दंभेहि
 य कुसेहि य वेढेइ वेढित्ता मट्टियालेवेण लिपइ लिपित्ता उण्हे
 सुक्क समाणं तच्चपि दंभेहि य कुसेहि य वेढेइ वेढित्ता मट्टि-
 यालेवेण लिपइ। एवं खलु एएणुवाएणं अतरा वेढेमाणे
 अंतरा लिपेमाणे अतरा सुक्कवेमाणे जाव अट्टुहि मट्टियालेवेहि
 आलिपइ, अत्थाहमतारमपोरिसियसि उदगसि पविस्ववेज्जा, से
 णूण गोयमा। से तुवे तेसि अट्टुण्ह मट्टियालेवाण गुरुयत्ताए
 भारियत्ताए गुरुयभारियत्ताए उप्पि सलिलमाइवइत्ता अहे
 धरणियलपइट्ठाणे भवइ। एवामेव गोयमा। जीवा वि पाणाइ-
 वाएण जाव मिच्छादसणसल्लेणं अणुपुब्बेण अट्टकम्मपग-
 ङीओ समज्जिणति, तासि गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुयभारिय-
 त्ताए कालमासे काल किच्चा धरणियलमइवइत्ता अहे नरग-
 तल पइट्ठाणा भवति, एव खलु गोयमा। जीवा गुरुयत्त
 हव्वमागच्छति ॥ सू० २ ॥

दभूई अदूरसामते जाव धम्मज्झाणोवगए विहरइ) श्रमण भगवान्
 महावीर के प्रधान अतेवासी जिनका नाम इन्द्रभूतिथा उचित स्थान परबेठे
 हुए धर्म ध्यान में तल्लीन थे। सूत्र-१

विहरइ) श्रमणु लगवानना प्रधान अतेवासी धन्द्रभूति उचित स्थाने जेठेला
 धर्म ध्यानमा तल्लीन छता ॥ सूत्र १ ॥

टीकार्थ—ततः खलु स इन्द्रभूतिः जातश्चन्द्रः० श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण—अवादीत् कथं खलु भदन्त ! जीवाः 'गुरुयत्त' गुरुकत्व—अधोगमनस्वभावकत्वं च 'लहुयत्त' लघुकत्व—उर्ध्वगमनस्वभावकत्वं 'हव्व' मागच्छइ हव्वमागच्छन्ति = भगवान् महावीरस्वामी दृष्टान्तप्रदर्शनेन पुरःसरमुत्तरमाह—'गोयमा' इत्यादि । गौतम ! 'से' अथ, 'जहानामए' यथानामकः=यत्किंचिन्नामकः, एक महत् शुष्क तुम्ब निच्छिद्र=छिद्रवर्जित 'निरुवहय' निरुपहत=वातादिकृतविकाररहितम्. अविशीर्णम् अविदारितमित्यर्थः दम्भैः=डाभनाम्ना प्रसिद्धैस्तृणविशेषैः, कुशैः स्वनामविख्यातैस्तृणविशेषैः, वेष्टयति, वेष्टयित्वा मृत्तिकाशेपेन 'लिपड' लिम्पति=लिप्त करोति 'लिपित्ता' लिप्त्वा 'उण्हे' उण्णे—'सूर्यातपे' ददाति=धारयति, शुष्क सत् द्वितीय मपि=द्वितीय

'तएणसे इदमूर्ह जाय सड्ढे' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इनके बाद (से इदमूर्ह जाय सड्ढे०) उन इन्द्रभूति ने कि जिन्हें प्रभु के ऊपर—अपूर्व श्रद्धा है (समणस्स ३ एव वयासी) श्रमण भगवान् महावीर से इस प्रकार पूछा—(कहण्ण भते ! जीवा गुरुयत्तवा लहुयत्तवा हव्वमागच्छति) हे भदन्त जीव कैसे भारी अधोगमन करने के स्वभाव को और कैसे लघु स्वभाववाले उर्ध्व गमन करने के स्वभाव को प्राप्तकरते हैं ? उनके इस प्रश्नका उत्तर भगवान् दृष्टान्त पूर्वक इस प्रकार देते हैं—

(गोयमा ! से जहा नामए केइ पुरिसे एग मह सुक्क तुव निच्छिद्र निरुवहय दम्भेहिं कुसेहिं वेढेइ, वेढित्ता मड्डियालेवेण लिपड, लिपित्ता उण्हे दलयइ) हे गौतम ! जैसे कोई पुरुष एक बड़ी सी निच्छिद्र, वातादि

'तएण से इदमूर्ह जाय सड्ढे' इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थारणाइ (से इदमूर्ह जाय सड्ढे) प्रभु ऊपर भूषण श्रद्धा धरावनार इन्द्रभूतिसे (समणस्स ३ एव वयासी) श्रमण भगवान् महावीरने आ प्रमाणे प्रश्न पूछयो (कहण्ण भते ! जीवा गुरुयत्तवा लहुयत्तवा हव्वमागच्छति) हे भदन्त ! लारे अधोगमन करनार स्वभावने तेमण उर्ध्वगमन करनार लघु स्वभावने एव उवी रीते भेजवे छे ? तेमना आ प्रश्नने जवाण भगवान् महावीर स्वामी दृष्टान्त साथे आ प्रमाणे आपे छे

(गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एग मह सुक्क तुव निच्छिद्र निरुवहय दम्भेहिं कुसेहिं वेढेइ वेढित्ता मड्डियालेवेण लिपड लिपित्ता उण्हे दलयइ) हे गौतम ! जेभ केई भाणुस ओक भेटी निच्छिद्र वातादिविकार

પારમપિ દર્ભેશ્ચ કુશૈશ્ચ વેષ્ટયન્તિ, વેષ્ટયિત્વા મૃત્તિકાલેપેન લિમ્પતિ. । લિપ્ત્વા ઉષ્ણે દદાતિ, શુષ્ક સત્ તૃતીયમપિ=તૃતીયપારમપિ દર્ભેશ્ચ કુશૈશ્ચ વેષ્ટયતિ, વેષ્ટયિત્વા મૃત્તિકાલેપેન લિમ્પતિ । એવ સ્વલુ ' એણુવાણં ' પનેનોવાયેન, અન્તરા=મધ્યે, વેષ્ટયન્, અન્તરા=મધ્યેન લેપયન્, અન્તરા=મધ્યે શોષયન્, યાત્ અષ્ટમિર્મૃત્તિકાલેપૈઃ આલિમ્પતિ=સમન્તાલિપ્ત કરોતિ, ' અત્યાહ ' અમ્તાયે=સ્તાય યાતિજલે નાસિકા ન દ્યુહતિ તાત્ સ્તાય ગાથ, સ્તાયમિતિ નઝ્મમાસ' તસ્મિન્ અગાધે ઽતિ ગમ્भीરે इत्यर्थः, અથવા-‘ અત્યાહ ’ અય દેશીશબ્દ અગાધાર્થક, આર્પત્વાત્ સપ્તમ્યર્થે પ્રથમા, ‘ અતાર ’ અતારે તરીતુમશક્યે, ‘ અપોરિસિયસિ અપોરુપિકે=પુરુષઃ પ્રમાણમસ્યેતિ પૌરુષિક, ન પૌરુષિકમિત્યપૌરુષિક તસ્મિન્ પુરુષપ્રમાણાદ ધિકે, પુરુષૈરગાહ્યે ‘ ઉદગંસિ ’ ઉદકે=જલે ‘ પક્ષિયવેજ્જા ’ પ્રક્ષિપતિ ।

કૃતવિકાર રહિત, ણેસીપૂરી-૦કિ જો ફટો તુટી નહિં હૈ તુમી કો દર્ભા સે ઓર કુશોં સે વેષ્ટિત કરતા હૈ, ઓર વેષ્ટિતકર ફિરઉસે મિટ્ટી કે લેપ સે લપેટ દેતા હૈ-લપેટ કર ઉસે ધૂપ મે સુકાના હૈ (સુષ્ક સમાણ દોચ્ચપિ દબ્ધેહિય કુસેહિય- વેઢેહ, વેઢિત્તા મટ્ટિયાલેવેળલિપહ, લિપિત્તા ઉળ્હે સુષ્ક સમાણ તચ્ચપિ દબ્ધેહિય કુસે હિય વેઢેહ, વેઢિત્તા મટ્ટિયા લેવેળે લિપહ) જન વહ અચ્છી તરહ શુષ્ક હો જાતી હૈ તથ દુવારા મી વહ ઉસે દર્ભ ઓર કુશોં સે પરિ વેષ્ટિત કરતા હૈ ઓર પરિવેષ્ટિત કર કે ફિર ઉસ પર મિટ્ટી કા લેપ કરતા હૈ-લેપકર પહિલે કી તરહ ફિર ઉસે ધૂપ મે સુગ્વને કે લિયે રખ દેતા હૈ । સુખ જાને પર ઉસે પુનઃ તૃતીય ચાર દર્ભ ઓર કુશોં સે વેષ્ટિત કરતા હૈ । વેષ્ટિત કરકે ફિર ઉસ પર મિટ્ટી કા લેપ કરતા હૈ (એવ સ્વલુ એણ વાણ અતરા વેઢેમાણે અતરા લિપેમાણે અતરા સુષ્કવેમાણે જાવ અટ્ઠહિં મટ્ટિયાલેવેહિં આલિપહ, અત્યાહમતારમપોરિસિયસિ

રહિત વગર તૂટેલી તુબીને દાલ તેમજ કુશથી વીટી લે છે અને ત્યાર બાદ માટીથી તેની આસ પામ લેપ કરે છે અને તેને તાપમા સૂકવે છે (સુષ્ક સમાણ દોચ્ચપિ દબ્ધેહિય કુસેહિય વેઢેહ, વેઢિત્તા મટ્ટિયાલે વેળલિપહ, લિપિત્તા ઉળ્હે સુષ્ક સમાણ તચ્ચપિ દબ્ધેહિય કુસેહિય વેઢેહ, વેઢિત્તા મટ્ટિયાલેવેળ લિપહ) બ્યારે તુબી સારી રીતે સૂકાઈ જાય ત્યારે બીજી વખત પણ તેને દાલ અને કુશથી વીટાળીને ફરી તેના ઉપર માટીનો લેપ કરે છે લેપ કર્યા બાદ તેને તાપમા મૂકે છે આમ સૂકાઈ ગયા બાદ ત્રીજી વખત દાલ અને કુશથી વીટાળીને માટીનો લેપ કરે છે (એવ સ્વલુ એણુવાણ અત્તરા વેઢેમાણેઅતરા લિપેમાણે અતરા સુષ્કવેમાણે જાવ અટ્ઠહિં મટ્ટિયાલેવેહિં આલિપહ અત્યાહમતારમપોરિસિયસિ ઉદગંસિ પક્ષિયવેજ્જા) આ

અવ=નૂન=નિશ્ચયેન । તત્તુમ્વ તેપામટાના મૃત્તિકાલેપાના સમ્બન્ધાદ્ ‘ ગુરુ-
યયા’ ગુરુકતયા ‘ ભારિયયા’ ભારિકતયા દર્મકુશમૃત્તિકાનાં ભારેણ ભારા
ક્રાન્તાતયા, અતएव-‘ ગુરુયભારિયયા’ ગુરુકભારિકતયા ઉક્ત હેતુદ્વયસ્ય
સદ્ભાવેન શીઘ્રનિમજ્જનસ્વભાવતા પ્રદર્શિતા ઉપરિ સલિલમતિવ્રજ્ય=અતિક્રમ્ય
પરિત્યજ્ય અધો=નીચે ધરણીતલપ્રતિષ્ઠાન=પૃથ્વીતલ પ્રતિષ્ઠાનમાયારો यस્ય તત્
ભવતિ=ભૂમિતલમાશ્રિત્ય તિષ્ઠતીત્યર્થઃ ।

एवमेव गौतम ! जीवा अपि प्राणातिपातेन यावद् मित्यादर्शनशक्त्येन आनु
पुर्व्या अष्टकर्मपकृतिः समर्जयन्ति, तामा गुरुकतया भारिकतया गुरुकभारिक

उदगसि पक्खिवेज्जा) इस तरह के उपायसे बीच २ में वेष्टित कर
बीच २ में लिपकर बीच २ में सुका कर जब आठ बार मिट्टी के लेप
से उसे वह लिप्त कर चुकता है और बाद में उसे अगाध गहरे पानी
में कि जो अतार तथा पुरुष प्रमाण से अधिक है डाल देता है ‘ अत्याह ’
यह देशीय शब्द है और इसका अर्थ अगाध होता है (से णूण गोयमा
से तुवे तेसि अट्ठण्ह मट्ठियालेवाण गुरुयात्ताए भारियत्ताए गुरियभारि
यत्ताए उप्पि सलिलमइवइत्ता अहे धरणिमलपइट्ठोणे भवइ) तो
निश्चय से हे गौतम ! वह तुम्ही उन आठ बार के मिट्टी के लेपों के
सब २ से गुरु हो जाने के कारण और ८ बार के दर्भ कुशों के भार
से वजन दार हो जाने के कारण जैसे शीघ्र ही ऊपर में पानी को
छोड़ कर नीचे पानी के बैठ जाती है (एवामेव गोयमा !) इसी
तरह हे गौतम । (जीवा वि पाणाइवाएण जाव मित्छादसणसल्लेण
अणुपुब्बेण अट्ठकम्म पगडीओ समज्जिणति) जीव भी प्राणातिपातया

પ્રમાણે તુળીને આઠ વખત દાહ અને કુશોથી વીટાળીને તથા આઠ વખત
માટીનો લેપ કરીને તાપમા સુકવે છે ત્યાર બાદ તેને ઉડા ‘ અતાર ’ તેમજ
પુરુષ પ્રમાણ કરતા વધારે ઘેરા પાણીમાં નાખીદે છે (અત્યાહ) આ દેશીય
શબ્દ છે અને તેનો અર્થ આગાધ હોય તે (સે ણૂણ ગોયમા ! સે તુવે તેસિ
અટ્ઠણ્હ મટ્ઠિયાલેવાણ ગુરુયાત્તાએ ભારિયત્તાએ ગુરિયભારિયત્તાએ ઉપ્પિ સલિલમઇ
વઇત્તા અહે ધરણિમલપઇટ્ઠોણે ભવઇ) હે ગૌતમ ! પાણીમાં નાખેલી તે તુળી
આઠ વખત માટીના લેપથી ભારે થઇ જવાને કારણે તેમજ આઠ વખત દાહ
તથા કુશના ભારથી ભારે થઇ જવાને લીધે પાણીમાં નાખતાની સાથે જ
પાણીમાં નીચે જતી રહે છે અર્થાત્ ટૂળી જાય છે (એવામેવ ગોયમા !) આ
પ્રમાણે હે ગૌતમ ! (જીવા વિ પાણાઇવાણ જાવ મિત્છાદસણસલ્લેણ
અણુપુબ્બેણ અટ્ઠકમ્મપગડીઓ સમજ્જિણતિ) એવ પશુ પ્રાણાતિપાત યાવત્

તયા કાલમાસે કાલ કૃ-યા ધરણીતલમતિનુચ્ચ અયો નરકતલપ્રતિષ્ઠાના ભવન્તિ,
નરકાદૌ પતન્તીત્યર્થઃ, એવ સ્વલુ ગૌતમ ! જીવા ગુરુત્વ હવ્યમાગચ્છતિ શીઘ્ર
પ્રાપ્તુવન્તિ, યસ્મિન્સમયે પ્રાણાતિપાતાદિક કુર્વન્તિ, તસ્મિન્નેવ સમયે ગુરુત્વ પ્રા
પ્તુવન્તીતિ હવ્ય શબ્દો દ્યોતયતિ ॥ સૂ.૨ ॥

મૂલમ્—અહણં ગોયમા સે તુવે તસિ પઢમિલ્લુગસિ મદ્દિ
યાલેવસિ તિન્નંસિ કુહિયસિ પરિસડિયસિ ઇસિ ધમ્મણિયલાઔ
ઉપ્પડ્દત્તાણ ચિટ્ઠિ, તણ્ણતર ચ ણં દોચ્છપિ મદ્દિયાલેવે જાવ
ઉપ્પડ્દત્તાણ ચિટ્ઠિ, એવ સ્વલુ ણ્ણં ઉવાણ્ણ તેસુ અદ્દસુ

વત્ મિથ્યા દર્શન શલ્ય સે ક્રમર કર અષ્ટકર્મોંની પ્રકૃતિઓંનો ઉપા-
ર્જિત કરતે રહતે હૈ । અર્થાત્ ઉન સે વધતે રહતે હૈ—(તાસિં ગુરુચત્તાણ
મારિચત્તાણ ગુરુમારિચત્તાણ કાલમાસે કાલ કિચ્ચા ધરણિયલ મદ્વડ્દત્તા
અહે નરગતલપદ્દટ્ટાના ભવતિ, એવ સ્વલુ ગોયમા । જીવા ગુરુચત્ત હવ્ય-
માગચ્છતિ) ઉન પ્રકૃતિઓંનો પૌદ્ગલિક હોનેકે કારણ ગુરુ ઓર ભારી
હોને સે યે કર્મ વધ વાલે જીવ મી ગુરુ ઓર ભારી હો જાતે હૈ ઇસ લિયે
વે કાલ માસ મે કાલ કરતે હૈ તવ ધરીણિતલ કો અતિક્રમણ કર
નીચે નરકતલ મે પ્રતિષ્ઠિત હોજાતે હૈ ।

ઇસ તરહ હે ગૌતમ । જીવ જિસ સમય પ્રાણાતિપાત આદિ કર્મોંનો
કરતે હૈ ડસી સમય મેં વે ગુરુત્વ અવસ્થા કો પ્રાપ્તહો જાતે હૈ યહવાત
હવ્ય શબ્દ સે દ્યોતિત હોતી હૈ । સૂત્ર “ ૨ ”

મિથ્યાદર્શન શલ્યથી ક્રમપૂર્વક આઠ કર્મોંની પ્રકૃતિઓંનો ઉપાર્જન કરતો રહે
છે એટલે કે આઠ કર્મોંથી જીવ બધાતો જાય છે (તાસિં ગુરુચત્તાણ મારિચત્તાણ
ગુરુમારિચત્તાણ કાલમાસે કાલ કિચ્ચા ધરણિયલમદ્વડ્દત્તા અહ નરગતલપદ્દટ્ટાના
ભવતિ એવ સ્વલુ ગોયમા ! જીવા ગુરુચત્ત હવ્યમાગચ્છતિ) તે જ્ઞાનાવરણાદિ કર્મોં
ની પ્રકૃતિઓં પૌદ્ગલિક છે, ગુરુ તેમજ ભારે છે, એટલા માટે તેમનાથી
આ કર્મ બધવાળા જીવો પણ ગુરુ તેમજ ભારે થઈ જાય છે એથી તે
જીવો ડાળ માસમા ડાળ કરે છે ત્યારે પૃથ્વીનું અતિક્રમણ કરીને તેની નીચે
નરક તળમા અવસ્થિત થઈ જાય છે
આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! જીવ જ્યારે પ્રાણાતિપાત વગેરે કર્મોં કરે છે તે
સમયે જ તેઓ ગુરુત્વ અવસ્થા મેળવે છે આ વાત ‘ હવ્ય ’ શબ્દ થી
જણાય છે ॥ સૂત્ર ૨ ॥

મદ્વિયાલેવેસુ તિન્નેસુ જાવ વિમુક્કવધને અહે ધરણિયલમહવ-
ઇત્તા ઉપ્પિ સલિલતલપડ્ઢાણે ભવઇ ।

एवामेव गोयमा । जीवा पाणाइवायवेरमणेणं जाव
मिच्छादसणसल्लवेरमणेणं अणुपुब्बेणं अट्ठकम्मपगडीओ
खवेत्ता गगणतलमुप्पइत्ता उप्पि लोयग्गपड्ढाणा भवन्ति, एव
खलु गोयमा । जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छन्ति, एव खलु जंबू ।
समणेण भगवया महावीरेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे
पन्नत्ते त्ति वेमि ॥ सू० ३ ॥

॥ छट्ठं नायज्झयणं सम्मत्त ॥ ६ ॥

ટીકા—અથ સ્વલુ ગૌતમ ! તત્તુમ્વ તસ્મિન્ ‘ પઢમિલ્લુગસિ ’ પ્રથમે મૃત્તિ
કાલેપે ‘ તિન્નસિ ’ સ્તિમિતે-આર્દ્રતા પ્રાપ્તે તતઃ ‘ કુહિયસિ ’ ક્ષયિતે-વિનષ્ટે
‘ પરિસહિયસિ ’ પરિશદિતે-વન્ધનમુક્તે સત્તિ, ઈષત્=સ્તોક ધરણીતલાદ્ ઉત્પત્ય-
ઉર્ધ્વોભૂય સ્વલુ તિષ્ઠતિ । તતોડનન્તર ચ સ્વલુ દ્વિતીયેડપિ મૃત્તિકાલેપે યાવદુત્પ-

‘અહર્ણ ગોયમા’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ-(અહણ ગોયમા) હે ગૌતમ ! જૈસે (સે તુવે તસિ પઢમિ
લ્લુગસિ મદ્વિયાલેવસિ તિન્નસિ કુહિયસિ પરિસહિયસિ ઈસિં ધરણિય
લાઓ ઉપ્પઇત્તાણ ચિટ્ઢહ) ચહ તુચી અપને ડપર કા પહેલા લેપ જઘ
આર્દ્ર (ગિલા) હો જાતા હૈ, ક્ષયિત-વિનષ્ટ-હો જાતા હૈ-પરિશદિત
વધન મુક્ત હો જાતા હૈ તવ નીચે સે કુછ ડપર કો ઉઠ જાતી
હૈ (તયણતરચ ણ દોચ્ચપિ મદ્વિયાલેવે જાવ ઉપ્પાહત્તાણ ચિટ્ઢહ

(અહણ ગોયમા !) ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ-(અહણ ગોયમા) હે ગૌતમ ! જેમ (સે તુવે તસિ પઢમિલ્લુ
ગસિ મદ્વિયાલેવસિ તિન્નસિ કુહિયસિ પરિસહિયસિ ઈસિં ધરણિયલાઓ ઉપ્પઇત્તાણ
ચિટ્ઢહ) પાણીમા ડૂખી ગયેલી તુખીની ઉપરનો પહેલો લેપ જ્યારે પાણીથી આર્દ્ર
થઈ જાય છે-ક્ષયિત-નાશ-પામે છે, પરિશદિત-બધ મુક્ત થઈ જાય છે ત્યારે
તે નીચેથી કંઈક થોડી ઉપર આવે છે, (તયણતર ચ ણ દોચ્ચપિ મદ્વિયાલેવે

તથા કાલમાસે કાલ કૃ-રા ધરણીતલમતિમજ્જ્ય અથો નરકતલપ્રતિષ્ઠાના ભવન્તિ, નરકાદૌ પતન્તીત્યર્થઃ, એવ સ્વલુ ગૌતમ ! જીવા ગુરુકત્વ હવ્યમાગચ્છતિ શીઘ્ર પ્રાપ્તુવન્તિ, યસ્મિન્સમયે પ્રાણાતિપાતાદિક કુર્વન્તિ, તસ્મિન્નેવ સમયે ગુરુત્વ પ્રાપ્તુવન્તીતિ હવ્ય શબ્દો ઘોતયતિ ॥ સૂ.૨ ॥

મૂલમ્—અહણં ગોયમા સે તુવે તંસિ પઢમિલ્લુગસિ મદ્દિ-
યાલેવસિ તિન્નંસિ કુહિયસિ પરિસહિયંસિ ઇસિં ધગણિયલાઔ
ઉપ્પદ્ધત્તાણ ચિદ્દહ, તણંતર ચ ણં દોઘંપિ મદ્દિયાલેવે જાવ
ઉપ્પદ્ધત્તાણ ચિદ્દહ, એવ સ્વલુ એણ ઉવાણ તેસુ અદ્ધસુ

વત્ મિથ્યા દર્શન શલ્ય સે ક્રમર કર અષ્ટકર્મોં કી પ્રકૃતિયોં કો ઉપા-
ર્જિત કરતે રહતે હૈ । અર્થાત્ ઉન સે વધતે રહતે હૈ—(તાસિં ગરુયત્તાણ
મારિયત્તાણ ગરુયમારિત્તાણ કાલમાસે કાલ કિચ્ચા ધરણિયલ મદ્વદ્ધત્તા
અહે નરગતલપદ્દાણા ભવતિ, એવ સ્વલુ ગોયમા । જીવા ગુરુયત્ત હવ્ય
માગચ્છતિ) ઉન પ્રકૃતિયો કો પૌદ્ગલિક હોનેકે કારણ ગુરુ ઓર ભારી
હોને સે યે કર્મ વધ વાલે જીવ મી ગુરુ ઓર ભારી હો જાતે હૈં ઇસ લિયે
વે કાલ માસ મે કાલ કરતે હૈ તવ ધરીણિતલ કો અતિક્રમણ કર
નીચે નરકતલ મે પ્રતિષ્ઠિત હોજાતે હૈં ।

ઇસ તરહ હૈ ગૌતમ । જીવ જિસ સમય પ્રાણાતિપાત આદિ કર્મોં કો
કરતે હૈં ડસી સમય મેં વે ગુરુત્વ અવસ્થા કો પ્રાપ્તહો જાતે હૈં યહવાત
હવ્ય શબ્દ સે ઘોતિત હોતી હૈ । સૂત્ર “ ૨ ”

મિથ્યાદર્શન શલ્યથી ક્રમપૂર્વક આઠ કર્મોંની પ્રકૃતિઓનુ ઉપાજન કરતો રહે
છે એટલે કે આઠ કર્મોંથી જીવ બધાતો જાય છે (તાસિં ગુરુયત્તાણ મારિત્તાણ
ગુરુયમારિત્તાણ કાલમાસે કાલ કિચ્ચા ધરણિયલમદ્વદ્ધત્તા અહ નરગતલપદ્દાણા
ભવતિ એવ સ્વલુ ગોયમા । જીવા ગુરુયત્ત હવ્યમાગચ્છતિ) તે જ્ઞાનાવરણાદિ કર્મોં
ની પ્રકૃતિઓ પૌદ્ગલિક છે, ગુરુ તેમજ ભારે છે, એવા માટે તેમનાથી
આ કર્મ બધવાળા જીવો પણ ગુરુ તેમજ ભારે થઈ જાય છે એથી તે
જીવો કાળ માસમા કાળ કરે છે ત્યારે પૃથ્વીનુ અતિક્રમણ કરીને તેની નીચે
નરક તળમા અવસ્થિત થઈ જાય છે

આ પ્રમાણે હૈ ગૌતમ ! જીવ જ્યારે પ્રાણાતિપાત વગેરે કર્મોં કરે છે તે
સમયે જ તેઓ ગુરુત્વ અવસ્થા મેળવે છે આ વાત ‘ હવ્ય ’ શબ્દ થી
જણાય છે ॥ સૂત્ર ૨ ॥

हव्यमागच्छन्ति शीघ्रं प्राप्नुवन्ति, अस्मिन्नेव समये कर्मक्षये प्रवृत्ता भवन्ति तस्मिन्नेव समये लघुत्वं प्राप्नुवन्तीत्यर्थः ।

एव खलु जम्बूः श्रमणेन भगवता महावीरेण पण्डित्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः इति त्रयीमि, शेष सुगमम् ॥ सू० ३ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धवाचस्पत्यदशभाषाकलितकलितक-
लापालाप-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूठ-
त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘जैनशास्त्राचार्य’ पदभूषित-कोल्हापुरराज-
गुरु-बालप्रह्लाचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-वासिलाल-
व्रतिविरचिताया ‘ज्ञाताधर्मकथाङ्ग’ सूत्रस्यानगारधर्माभृतव-
र्षिण्याख्याया व्याख्याया पष्ठमध्ययन संपूर्णम् ॥ ६ ॥

(एव खलु गोयमा । जीवालहुयत्त हव्य मागच्छति-एव खलु जम्बू ।
समणेण भगवता महावीरेण छट्टस्स नायज्जुयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते
त्तिवेमि ॥ ३ ॥ इस तरह हे गौतम । जिव उर्ध्व गमन स्वभाव को शीघ्र
प्राप्त कर लेते हैं-अर्थात् वे जिस समय कर्मक्षय करने में प्रवृत्त होते
हैं उसी समय में वे लघुत्व स्वभाव को प्राप्त हो जाते हैं । इस प्रकार
हे जम्बू । श्रमण भगवान् महावीरने छठे अद्ययन का यह अर्थ कहा है । सू० ३ ।
श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री वासीलालजी महाराज कृत “ज्ञाता
धर्मकथाङ्गसूत्र की अनगारधर्माभृतवर्षिणी व्याख्या का छठा
अध्ययन समाप्त ॥ ६ ॥

(एव खलु गोयमा । जीवा लहुयत्त हव्यमागच्छति-एव खलु जम्बू ।
समणेण भगवता महावीरेण छट्टस्स नायज्जुयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिवेमि । ३ ।
आ प्रमाणे हे गौतम । एव उर्ध्व गमनवाणा स्वभावने तरत न भेजवी
ले छे छट्टले हे व्यापरे एव कर्मोना नाश भाटे प्रवृत्त थाय छे, त्यारे न
ते लघुत्व स्वभावने भेजवे छे हे नणू आभ लगवान् महावीरे छट्टा अ-
ध्ययनो अर्थ निरूपित उर्थो छे ॥ सूत्र ३ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री वासीलालजी महाराज कृत ज्ञाताधर्मकथाङ्ग
सूत्राणी अनगारधर्माभृतवर्षिणी व्याख्यातु छट्ठे अध्ययन समाप्त ॥ ६ ॥

ત્ય સ્વલુ વિષ્ઠતિ, એવ સ્વલુ એતેન ઉપાયેન તેષુ અદૃસુ મદિયાલેવેષુ સ્તિમિતેષુ યાવત્ વિમુક્તવધને સત્તિ-અથો ધરણીતલમતિરજ્ઞ=ઉત્પત્ય ઉપરિ સલિલતલપ્રતિ પ્ઠાન ભવતિ ।

એવમેવ ગૌતમ ! જીવાઃ પ્રાણાતિપાતવિરમણેન યાવત્ મિથ્યાદર્શનશલ્ય-વિરમણેન આનુપૂર્વ્યા અદૃશ્યપ્રકૃતિ ક્ષપયિત્વા ગગનતલમુત્પત્ય ઉપરિ લોકાગ્રે પ્રતિપ્ઠાના, સિદ્ધસ્વરૂપાવસ્થિતા ભવન્તિ । એવં સ્વલુ ગૌતમ ! જીવા લઘુકૃત્વ

એવ સ્વલુ ણ્ણ ઉવાણ્ણ તેસુ અદૃસુ મદિયાલેવેસુ તિન્નેસુ જાવ વિમુક્ક વધને અહે ધરણિયલમદ્વદ્ધત્તા ઉપ્પિ સલિલતલપદ્ધાણે ભવદ્ધ) હસી તરહ દ્વિતીય મિદ્ધી કા લેપ જવ ગીલા હોકર નપ્પ હો જાતા હૈ પરિશદ્ધિત (સુલ્લ) જાતા હૈ તવ વહ તુયી પરિલે કી અપેક્ષા ઓર કુટ્ઠ વહા સે ઝૂંચી ઉઠ જાતી હૈ । હસી તરહ હોતે ૨ જવ ઉસ તુયી કે વે આઠોં હી લેપ ગીલે કથિત એવ પરિશદ્ધિત હો જાતે હૈં તવ વહ તુયી વિલકુલ ધરિતલ સે ઉઠકર ઝપર પાની મેં આ જાતી હૈ (એવામેવ ગોયમા ! જીવા પાણાહવાયવેરમણેણ જાવ મિચ્છાદસણસલ્લવેરમણેણં અણુપુન્નવેણ અદ્દ કમ્મવગ્ગહીઓ સ્વવેત્તા ગગણતલમુપ્પદ્ધતા ઉપ્પિ લોયગ્ગ પદ્ધાણા ભવતિ) હસી તરહ હૈ ગૌતમ ! જીવ પ્રાણાતિપાત કે વિરમણ સે યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્ય કે વિરમણ સે ક્રમશઃ અદૃશ્ય કર્મોં કી પ્રવૃત્તિયો કો નપ્પ કર ઝપર કી ઓર ગગનતલ મેં ઉઠ કર લોક કે અગ્રભાગમેં સિદ્ધ સ્વરૂપ સે અવસ્થિત હો જાતા હૈ ।

જાવ ઉપ્પાદ્ધાણ ચિદ્દુદ્ધ એવ સ્વલુ ણ્ણ ઉવાણ્ણ તેસુ અદૃસુ મદિયાલેવેસુ તિન્નેસુ જાવ વિમુક્કવધને અહે ધરણિયલ મદ્વદ્ધત્તા ઉપ્પિ સલિલતલ પદ્ધાણે ભવદ્ધ) આ રીતે તુળડીના ઉપરનો બીજી વચ્ચતનો લેપપણુ લીનો થઈને ઓગળી જાય છે, નદી થઈ જાય છે અને પરિશદ્ધિત થઈ જાય છે ત્યારે તે પડેલા કરતા પાણીમા કંઈક થોડી વધારે ઉપર આવી જાય છે આમ તુળડીના આઠે આઠ લેપ લીના થઈને ઓગળી જાય છે ત્યારે તુળડી પોતાની મેળે જ પાણીની ઉપર તરવા માડે છે (એવામેવ ગોયમા ! જીવા પાણાહવાયવેરમણેણ જાવ મિચ્છાદસણસલ્લવેરમણેણ અણુ પુન્નવેણ અદ્દ કમ્મ વગ્ગહીઓ સ્વવેત્તા ગગણતલમુપ્પદ્ધતા ઉપ્પલોયગ્ગપદ્ધાણા ભવતિ)

આ પ્રમાણે જ હૈ ગૌતમ ! એવ પ્રાણાતિપાત ના વિરમણથી થવત મિથ્યા દર્શન રાજ્યના વિરમણથી અનુક્રમે આઠ કર્મોની પ્રકૃતિઓનો નાશ કરી ને ઉપર ગગનતળમા પડોચીને લોડના અથ લાગમા સિદ્ધ સ્વરૂપથી અવસ્થિત થાય છે

हव्यमागच्छन्ति शीघ्रं प्राप्नुवन्ति, अस्मिन्नेव समये कर्मक्षये प्रवृत्ता भवन्ति तस्मिन्नेव समये लघुकृत्वं प्राप्नुवन्तीत्यर्थः ।

एव खलु जम्बूः श्रमणेन भगवता महावीरेण पण्डितस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः इति त्रयीमि, शेषं सुगमम् ॥ सू० ३ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धवाचस्पत्यदशभाषाकलितकलितक-
लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछ-
त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘जैनशास्त्राचार्य’ पदभूषित-कोल्हापुरराज-
गुरु-गालव्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-वासीलाल-
प्रतिविरचिताया ‘ज्ञाताधर्मकथाङ्ग’ सूत्रस्यानगारधर्माभूतव-
र्षिण्याख्याया व्याख्यायां पष्ठमध्ययनं संपूर्णम् ॥ ६ ॥

(एव खलु गोयमा । जीवालहुयत्त हव्य मागच्छति-एव खलु जम्बू ।
समणेण भगवता महावीरेण छट्ठस्स नायज्जुयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते
त्तिवेमि ॥ ३ ॥ इस तरह हे गौतम । जिव उर्ध्वं गमन स्वभाव को शीघ्र
प्राप्त कर लेते हैं-अर्थात् वे जिस समय कर्मक्षय करने में प्रवृत्त होते
हैं उसी समय में वे लघुकृत्व स्वभाव को प्राप्त हो जाते हैं । इस प्रकार
हे जम्बू । श्रमण भगवान् महावीरने छठे अ-ध्ययन का यह अर्थ कहा है । सू० ३ ।
श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री वासीलालजी महाराज कृत “ज्ञाता
धर्मकथाङ्गसूत्र की अनगारधर्माभूतवर्षिणी व्याख्या का छठा
अध्ययन समाप्त ॥ ६ ॥

(एव खलु गोयमा । जीवा लहुयत्त हव्यमागच्छति-एव खलु जम्बू ।
समणेण भगवता महावीरेण छट्ठस्स नायज्जुयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिवेमि । ३ ।
आ प्रभावे हे गौतम । एव उर्ध्वं गमनवाणा स्वभावने तरत ज मेणवी
वे छे अट्ठे वे न्यारे एव कम्मोना नाश भाटे प्रवृत्त थाय छे, त्थारे ज
ते लघुकृत्व स्वभावने मेणवे छे हे जणू आम्स लगवान् महावीरे छट्ठा अ
ध्ययनो अर्थ निश्चित उर्यो छे ॥ सूत्र ३ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री वासीलालजी महाराज कृत ज्ञाताधर्मकथाङ्ग
सूत्राणी अनगार धर्माभूतवर्षिणी व्याख्यानु अष्टम अध्ययन समाप्त ॥ ६ ॥

અથ સપ્તમમધ્યયનં પ્રારમ્ભ્યતે—

ગત પઠ્ઠમમધ્યયનમ્ સામ્પ્રત સપ્તમમારમ્ભ્યતેઽમ્ય ચ પૂર્વેણ સહાયમભિસમ્બન્ધઃ
 શ્વાનન્તરાધ્યયને પ્રાણાતિપાતાદિ ક્રિયાયતા કર્મગુરુતા પ્રોક્તા, તદભિન્નાના કર્મ
 લઘુતા તતશ્વાનર્થાર્થપ્રાપ્તિરુપોઽર્થે શ્વેતુ પ્રાણાતિપાતાદિ વિરતિ સ્વલિતસર
 ક્ષકાણામનર્થાર્થપ્રાપ્તિઃ પ્રોચ્યેતે । તન્નાય સૂત્રમાહ—

મૂલમ્—જડ્ઢણં મતે । સમણેણં જાવ સપત્તેણં હટ્ટસ્સ નાય
 જ્ઞયણસ્સ અયમટ્ટે પન્નત્તે સત્તમસ્સ ણ મંતે । નાયજ્ઞયણસ્સ
 કે અટ્ટે પન્નત્તે ? એવં સ્વલ્લુ જંવૂ । તેણં કાલેણં તેણં સમણં
 રાયગિહે નામ નયરે, હોત્થા, સુમ્મિમાગે ઉજ્જાણે, તત્થણં રાય-

સાતવાં અધ્યયન પ્રારમ્ભ—

છઠ્ઠા અધ્યયન સમ્પૂર્ણ હો ચુકા—અવ સાતવાં અધ્યયન પ્રારમ્ભ હોતા
 હૈ । હસ અધ્યયન કા પૂર્વ અધ્યયન કે સાથ હસ પ્રકાર સે સવન્ધ હૈ—
 છઠે અધ્યયન મેં પ્રાણાતિપાત આદિ કરનેવાલે પ્રાણિયોં મે કર્મ ગુરુતા
 કહી ગઈ હૈ ઓર નહીં કરને વાલોં મેં કર્મલઘુતા કહી ગઈ હૈ—તથા હન
 દોનો કા ફલ ક્રમશઃ, અનર્થ એવ અર્થ કી પ્રાપ્તિ હોના કહા ગયા હૈ । અવ
 હસ અધ્યયન મેં યહ કહા જાવેગાં કિ જો પ્રાણાતિપાત આદિ સે
 વિરતિ ધારણ કરકે મી ઉસસે સ્વલિત હો જાતે હૈં વે જીવઅનર્થ પર-
 પરા કો મોગતે હૈં ઓર જો ઉસકી રક્ષા કરતે હૈં વે અમીષ્ટ-ઈચ્છિત
 અર્થ કો પ્રાપ્ત કર હેતે હૈં ।

સાતમુ અધ્યયન પ્રારભ

છઠ્ઠા અધ્યયન બાદ હવે સાતમુ અધ્યયન શરૂ થાય છે સાતમા અધ્ય-
 યનનેા છઠ્ઠા અધ્યયનની સાથે સબ્ધ આ પ્રમાણે છે છઠ્ઠા અધ્યયન મા
 પ્રાણાતિપાત વગેરે કરનાર પ્રાણીઓમા કર્મની ગુરુતા કહેવામા આવી છે અને
 પ્રાણાતિપાત નહિ કરનાર પ્રાણીઓમા કર્મની લઘુતા કહેવામા આવી છે
 તેમજ અનુક્રમે આ બનેનુ ફળ એટલે કે અનર્થ અને અર્થની પ્રાપ્તિ થવી
 આ વિષે કહેવામા આવ્યુ છે હવે સાતમા અધ્યયનમા કહેવામા આવશે કે
 જે પ્રાણાતિપાત વગેરેથી વિરતિ ધારણ કરવા છતા તેનાથી સ્વલિત થઈ જાય
 છે, તે જીવો અનર્થપરપરા ઓને ભોગવે છે અને જે જીવો તેની રક્ષા
 કરે છે તેઓ અલીપ્ટ-મનગમતા એટલે કે ઇચ્છિત અર્થ ને મેળવે છે

गिहे नयरे धणो नाम सत्थवाहे परिवसइ० अड्डे० भदा भारिया
अहीण पंचेदिय० जाव सुरुवा तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स
पुत्ता भदाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाहदारया होत्था
त जहा—धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए तस्स णं ध-
णस्स सत्थवाहस्स चउण्ह पुत्ताण भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ
होत्था, त जहा—उज्झिया भोगवड्डियारक्खइया रोहिणिया॥सू०१॥

टीका—‘ जइण भते ’ इत्यादि—अथ जम्बूस्वामी पृच्छति हे भदन्त ! यदि
खलु श्रमणेन भगवता महावीरेण यावन् मुक्तिसमाप्तेन पण्ठस्य ज्ञाताध्ययनस्याय
मर्थः प्राप्तः, हे भदन्त मत्तमस्य खलु ज्ञाताध्ययनस्य कोऽर्थः प्राप्तः ? एव जम्बू
स्यामिना मत्ते कृते सति सुधर्मास्वामी प्राह एव खलु जम्बूः । तस्मिन् काले तस्मिन्

‘ जइण भते । समणेण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते !) जम्बूस्वामी पूछते हैं कि हे भदन्त ! (समणेण
जाव सपत्तेण उड्डस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तमस्स ण
भते नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?) श्रमण भगवान् महावीर ने
जो मुक्ति को प्राप्त हो चुके हैं छट्टे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ
प्ररूपित किया है तो हे भदन्त ! सत्तम ज्ञाताध्ययन का उन्होंने क्या
अर्थ प्ररूपित किया है ? (एव खलु जम्बू !) इसका उत्तर देते हुए श्री
सुधर्मा स्वामी जम्बूस्वामी से कहते हैं कि हे जम्बू ! सुनो श्रमण भगवान्
महावीर ने जो सातवें ज्ञाताध्ययन का अर्थ प्ररूपित किया है—वह इस
प्रकार है (तेण काळेण तेण समण्ण) उस काल और उस समय

‘ जइण भते । समणेण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते !) जम्बू स्वामी प्रश्न पूछे थे कि हे भदन्त ! (समणेण
जाव सपत्तेण उड्डस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तमस्स ण भते नायज्झ
यणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?) मुक्ति पामेला श्रमणु भगवान् महावीरे छट्टा
ज्ञाताध्ययननो अर्थ पूर्वोक्त रीते २७ कथां छे त्यारे छे भदन्त ! तेओ श्रीओ
सातमा ज्ञाताध्ययननो शो अर्थ प्ररूपित कयो छे ? (एव खलु जम्बू !) आ
प्रश्ननो उत्तर आपता श्री सुधर्मा स्वामी तेभने कडेवा लाग्या छे छे जम्बू !
साओ ! श्रमणु भगवान् महावीरे सातमा ज्ञाताध्ययननो अर्थ आ प्रभाओ

અથ સપ્તમમધ્યયનં પ્રારમ્ભ્યતે—

ગત પઠમમધ્યયનમ્ સામ્પત સપ્તમમારમ્ભ્યતેઽસ્ય ચ પૂર્વેણ સહાયમભિસમ્બન્ધઃ
ઇદાનન્તરાધ્યયને પ્રાણાતિપાતાદિ ક્રિયાયતા કર્મશુરતા મોક્તા, તદભિન્નાના કર્મ
લઘુતા તતશ્ચાનર્થાર્થપ્રાપ્તિરુપોઽયં ઇદતુ પ્રાણાતિપાતાદિ વિરતિ સ્વલિતસર
ક્ષણાણામનર્થાર્થપ્રાપ્તિઃ પ્રોચ્યેતે । તન્નાથ સૂત્રમાહ—

મૂલમ્—જડ્ઢળં મંતે । સમણેળં જાવ સપત્તેળં હૃદૃસસ નાય
ઝ્ઙયણસસ અયમઢ્ઢે પન્નત્તે સત્તમસસ ણં મંતે । નાયઝ્ઙયણસસ
કે અઢ્ઢે પન્નત્તે ? ંવં સ્વલુ જંવૂ । તેળં કાલેળં તેળં સમણં
રાયગિહે નામ નયરે હોત્થા, સુમ્મિમાગે ઝજ્ઙાળે, તત્થળં રાય-

સાતવાં અધ્યયન પ્રારમ્ભ—

છઠા અધ્યયન સમ્પૂર્ણ હો ચુકા-અવ સાતવા અ યયન પ્રારમ્ભ હોતા
હૈ । ઇસ અધ્યયન કા પૂર્વ અધ્યયન કે સાથ ઇસ પ્રકાર સે સબન્ધ હૈ-
છઠે અધ્યયન મેં પ્રાણાતિપાત આદિ કરનેવાલે પ્રાણિયોં મેં કર્મ શુરતા
કહી ગઈ હૈ ંર નહીં કરને વાલોં મેં કર્મલઘુતા કહી ગઈ હૈ-તથા ઇન
દોનો કા ફલ ક્રમશઃ અનર્થ ંવ અર્થ કી પ્રાપ્તિ હોના કહા ગયા હૈ । અવ
ઇસ અધ્યયન મેં યહ કહા જાવેગા કિ જો પ્રાણાતિપાત આદિ સે
વિરતિ ધારણ કરકે મી ંસસે સ્વલિત હો જાતે હૈં લે જીવઅનર્થ પર-
પરા કો મોગતે હૈં ંર જો ંસકી રક્ષા કરતે હૈં લે અમીષ્ટ-ઙ્ચિત્ત
અર્થ કો પ્રાપ્ત કર લેતે હૈં ।

સાતમ્ અધ્યયન પ્રારભ

છઠ્ઠા અધ્યયન ળાહ હવે સાતમ્ અધ્યયન શરૂ થાય છે સાતમા અધ્ય
યનનો છઠ્ઠા અધ્યયનની સાથે સબધ આ પ્રમાણે છે છઠ્ઠા અધ્યયન મા
પ્રાણાતિપાત વગેરે કરનાર પ્રાણીઓમા કર્મની શુરતા કહેવામા આવી છે અને
પ્રાણાતિપાત નહિ કરનાર પ્રાણીઓમા કર્મની લઘુતા કહેવામા આવી છે
તેમજ અનુક્રમે આ ળનેતુ ઙ્ઙા ંટલે કે અનર્થ અને અર્થની પ્રાપ્તિ થવી
આ વિષે કહેવામા આળ્યુ છે હવે સાતમા અધ્યયનમા કહેવામા આવશે કે
જો પ્રાણાતિપાત વગેરેથી વિરતિ ધારણ કરવા છતા તેનાથી સ્થલિત થઇ જાય
છે, તે જીવો અનર્થપરપરા ંને લોગવે છે અને જો જીવો તેની રક્ષા
કરે છે તેઓ અમીષ્ટ-મનગમતા ંટલે કે ઙ્ચિત્ત અર્થ ને મેળવે છે ..

१ धनपालः, २ धनदेवः, ३ धनगोपः, धनरक्षितश्चेति । तस्य खलु धन्यसार्थवाहस्य चतुर्णां पुत्राणां भार्याश्चतस्रस्तनुपाः—पुत्रपञ्च वधूः तद्यथा— १ उज्जिता, २ भोगवतिका, ३ रक्षिता, ४ रोहिणिकाचः ॥ सू १ ॥

मूलम्—तएणं तस्स धणस्स अन्नया कयाइ पुठवरत्ताव-
रत्तकालसमयसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एव
खलु अह रायगिहे वहुण ईसर जाव पठिभईणं सयस्स कुडुवस्स
वहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुवेसु य मत्तेसु य गुज्जेसु य
रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारे सुय आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छ-
णिजे मेढीपमाणे आहारे आलंघणे चक्खुमेढीभूए जाव सव्व
कज्जवड्ढावए तणणज्जइ जमए गयसि वा चुयसि वा मयसि वा
भग्गसि वा लुग्गसि वा सडियसि वा पडियसि वा विदेसत्थं
सि वा विप्पवासियसि वा इम्मस्स कुडुंवस्स कि मत्ते आहारे वा

हुए चार सार्थवाह दारक-पुत्र-थे (त जहा) उनके नाम ये हैं—(धण-
पाले, धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए) धनपाल, धनदेव, धनगोप, धन
रक्षित (तस्स ण धणस्स सत्थवाहस्स चउण्ह पुत्ताण भारियाओ चत्तारि
सुण्हाओ होत्था) उस धन्य सार्थवाह को उन चारपुत्रों की भार्याएँ पुत्र
वधुए—यी (तजहा—उज्जिता, भोगवइया, रक्खइया, रोहिणिया) धन
पालपुत्र की भार्या उज्जितायी १ धनदेवकी भार्या भोगवतिका यी २, धन
गोपकी भार्या रक्षितायी ३, धनरक्षित की भार्या रोहिणिका यी ४ ॥ सू० १ ॥

(त जहा) तेभना नामे आ प्रमाणे छे—(धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खि-
ए) धनपाल, धनदेव, धनगोप अने धनरक्षित (तस्मण धणस्स सत्थवा-
हस्स च उण्ह पुत्ताण भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था) धन्य सार्थवाहना
आ आरे पुत्राने भार्याओ छती (त जहा उज्जिता भोगवइया, रक्खइया,
रोहिणिया) धनपालनी भार्या उज्जिता छती १, धनदेवनी भार्या भोगवतिका
छती, २, धनगोपनी भार्या रक्षिता छती ३, धनरक्षितनी भार्या रोहिणिका
छती ४ ॥ सूत्र १ ॥

समये राजगृह नाम नगरमासीत्, नगरस्य नदिः सुभूमिभाग नामकमुद्यान
 'तत्थ ण' तत्र खलु राजगृहे नगरे धन्यनामा सार्यवाहः परिवसतिस्म स कीदृश,
 'अड्डे' आढ्यः बहुधनवान्प समृद्ध, तस्य भद्रानाम्नी भार्या, सा किं भूता? अ
 हीनपञ्चेन्द्रियशरीरा 'जाव सुखा' इह यावत्करणादिद ज्ञातव्य 'लक्खण
 वज्जेण गुणोववेया माणुम्माणपणागपडिपुण्णसुजायसव्वगसुदरगा, ससि सोमा
 कारा कता पियदसणा सुखा' इति एतानि पदानि व्याख्यातपूर्वाणि 'तस्स ण
 'तस्य खलु धन्यस्य सार्यवाहस्य पुत्राः भद्राया भार्याया 'अत्तया' आत्मजा
 भद्रजा-निजकुक्षिसभया इत्यर्थः चत्वारः सार्यवाहदारका आसन्, तद् यथा

में (रायगिहे नाम नगरे होत्या) राजगृह नाम का नगर था (सुभूमि-
 भागे उज्जाणे) वहा बाहिर में एक सुभूमि भाग नाम का उद्यान था।
 (तत्थ ण रायगिहे धण्णे नाम सत्थवाहे परिवसद्) उस राजगृह में
 धन्य नाम का सार्यवाह रहता था। (अड्डे० भद्रा भारिया, अहीण पचे
 दिय० जाव सुखा) यह बहुत अधिक धन धान्य से समृद्ध था। इसकी
 भद्रानाम की भार्या थी।

इसका शरीर अहीन पचेन्द्रियो से परिपूर्ण था। सुन्दर अगवाली
 थी। "यावत् शब्दसे" लक्खणवज्जेण गुणोववेया, माणुम्माणपणा
 पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वग सुदरगा, ससिसोमाकारा, कता पियदसणा
 सुखा "इस पाठका संग्रह किया गया है

कोई बार पहिले इन पदों का अर्थ लिखा जा चुका है। (तस्स ण
 धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्राया भारियाया अत्तया चत्तारि सत्थवाह
 दारया होत्या) उस धन्य सार्यवाह के भद्राभार्या की कुक्षी से उत्पन्न

निर्दिष्ट कथी छ (तेण कालेण तेण समण) ते काले अने ते समये
 (रायगिहे नाम नगरे होत्या) राजगृह नामे नगर इत्तु (सुभूमिभागे उज्जाणे)
 ते नगरनी भडार सुभूमिभाग नामे ओक उद्यान इत्तु (तत्थ ण रायगिहे
 धण्णेनाम सत्थवाहे परिवसद्) राजगृह नगरमा धन्य नामे सार्यवाह रहते।
 इत्ते। (अड्डे भद्रा भारिया अहीण पचेदिय जाव सुखा) ते धण्णे ४ धन
 धान्यथी समृद्ध इत्ते। भद्रा नामे तेनी पत्नी इती तेनु शरीर अहीन पचे-
 न्द्रियेथी परिपूर्ण इत्तु ते सुदर अगवाली इती 'यावत्' शब्दथी
 अड्डे (लक्खणवज्जेण गुणोववेया, माणु माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वगसुदरगा,
 ससिसोमाकारा, कता पियदसणा सुखा) आ पाठने न पड थये। छ आ
 पढेने पडेला धणी वणत अर्थ स्पष्ट करवाभा आये। छ (तस्स ण धण्णस्स
 सत्थवाहस्स पुत्ता भद्राया भारियाया अत्तया चत्तारि सत्थवाहदारया होत्या) धन्य
 सार्यवाहने भद्रा भार्याता उद्दर ४ न्म पामेला यार सार्यवाह दारया-पत्र-इत्ता,

ઈશ્વરાઃ—એ શ્વર્સમ્પન્નાઃ ‘જાવપભર્ષણ’ યાવત્ કલ્પેન ‘તલવરમાડવિય કોહુ
વિયદ્વમ સેટ્ટસેનાન્દસથરાહ’ એતેષા સગ્રહઃ, તેન તલવરમાડગ્ધિવ કોહુવકેમ્ય-
શ્રેષ્ઠિસેનાપતિ સાર્થવાદપ્રભૂતીના ‘સયસ્સ’ સ્વકસ્ય—નિજસ્ય કુટુમ્બસ્ય ગ્રહુષુ
‘કજ્જેસુ’ કાર્યેષુ—પ્રયોજનેષુચ પુનઃ ‘કારણેસુ’ કારણેષુ—કાર્યજાતસમ્પાદક
હેતુષુચ, ‘કુહુવેસુ’ કુટુમ્બેષુ વાન્ધવેષુ ચ ‘મતેસુ’ મન્ત્રેષુ—વર્તવ્ય નિશ્ચયાથં
ગુપ્તવિચારેષુ ચ ‘ગુજ્ઞેસુ’ ગુહ્યેષુ—લજ્જાયા ગોપનીયવ્યવહારેષુ ચ ‘રહસ્યેસુ’
રહસ્યેષુ—પ્રચ્છન્ન વ્યવહારેષુચ ‘નિચ્છણેસુ’ નિશ્ચયેષુ=પૂર્ણ નિર્ણયેષુ ચ ‘વવહારેસુ’
વ્યવહારેષુચ વાધવાદિ સમાચરિતલોકવિપરીતાદિ ક્રિયા પ્રાયશ્ચિત્તેષુ અત્ર ચકારાઃ
સમુચ્ચયાર્થ કા એતેષુ વિષયેષુ ‘આપુચ્છણિજ્જે’ આપચ્છનીયઃ ‘ઈપત્તપ્પુયોગ્ય’ એકગાર
મિત્યર્થઃ ‘પહિપુચ્છણિજ્જે’ પરિપચ્છનીયઃ સર્વતો ભાવેન પ્રવૃત્ત્ય ૧ મેઢી’ મેધિઃ
ગ્રીહિયવાદિવળમર્દનાર્થ પશુવન્ધનસ્તમ્ભ’, તત્સાદૃશ્યાદયમપિ મેધિઃ—મેધિરૂપઃ,

કુટુમ્બસ્ય ગ્રહુષુ કજ્જેસુ ચ કારણે સુ ચ, કુહુવે સુ ચ, મતેસુ ચ, ગુજ્ઞે
રહસ્યે નિચ્છણ, વવહારે સુ ચ, આપુચ્છણિજ્જે પહિપુચ્છણિજ્જે, મેઢીપ
માણે આહારે આલબ્ધે) મેં રાજગૃહ નગર મેં અનેક ઐશ્વર્યશાલી
તલવર, માડવિક કૌટુખિક હમ્ય, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ, સાર્થવાહ આદિજનો
કે તથા અપને નિજ કુટુમ્બકે પ્રયોજની ભૂત કાર્યો મે, કાર્યો કે સાધન
ભૂત કારણો મેં વન્ધુજનોં કે વર્તવ્ય કો નિશ્ચય કરને કે લિયે પ્રવૃત્ત
ગુપ્તવિચારો મેં લજ્જાવશ ગોપનીય વ્યવહારો મે—પ્રચ્છન્નવ્યવહારોમે—
પૂર્ણનિર્ણયો મે, વાધવાદિજનો દ્વારા સમાચરિત લોક વિરુદ્ધાદિકાર્યો
કે પ્રાયશ્ચિત્તો મે અર્થાત્ इन सब विषयो मे पृछा जाता है, ये सबलोग
मेरी अच्छी तरहसे सलाह लेते हैं। मैं इन सब के लिये मेधी रूप हूँ

જાવ પભર્ષણ સયસ્સ કુટુમ્બસ્ય ગ્રહુષુ કજ્જેસુ ચ કારણેસુચ, કુહુવેસુ ચ,
મતેસુચ, ગુજ્ઞે રહસ્યે નિચ્છણ વવહારેસુચ, આપુચ્છણિજ્જે પહિપુચ્છણિજ્જે, મેઢીપમાણે
આહારે આલબ્ધે) રાજગૃહ નગરમા હુ ધણા ઐશ્વર્યશાળી, તલવર, માડ-
વિક, કૌટુખિક, હમ્ય, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ, સાર્થવાહ વગેરેના તેમજ પોતાના
કુટુમ્બના જ ખાસ કામોમા, કાર્યોના સાધન ભૂત કારણોમા મળા વહાલાના
વર્તવ્યોના નિશ્ચય માટે ની ગુપ્ત મત્રણાઓમા છુપાવવા યોગ્ય લગ્નતથી
સળધિત ગોપનીય કાર્યોમા—પ્રચ્છન્ન વ્યવહારોમા—પૂર્ણ નીર્ણયોમા મળા
સમધીઓ વડે આચારથી વિરુદ્ધ અનાચરણીય કરવામા આવેલા કાર્યોમાટે
ની પ્રાયશ્ચિત્ત વિધિમા—એટલે કે આ બધી સામાજિકરાજનીતિક અને ધાર્મિક
બાબતોમા બધા મને પૂછે છે બધા માણુનો મારી સલાહ લે છે આ બધા
લોકો માટે જ મેધી રૂપ છુ, પ્રમાણ રૂપ છુ અનાજ વગેરેની હાલણી માટે

आलवे वा पडिवधे वा भविस्सइ ? त सेयं खलु मम वल्ल जाव
जलते विउल असणं ४ उववखडावेत्ता मित्तणाइ० चउण्ह
सुण्हाण कुलघरवग्गं आमतेत्ता तं मित्तणाइ णियगसयण०
य चउण्ह सुण्हाणं कुलघरवग्गं विउलेणं असणं ४ धुवपुप्फ
वत्थ गधजाव सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह
य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ चउण्ह सुण्हाणं परिरक्ख-
णट्टयाए पंचर सालि अक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किण्ह
वा सारक्खेइ वा संगोवेइ वा सन्नद्धेइ वा ? ॥ सू० २ ॥

टीका- 'तएण तस्स' इत्यादि- ततस्तदनन्तर खलु तस्य धन्यसार्थवा
हस्य अ यदा कदाचित् 'पुञ्चत्तावरत्तकालमयसि' पूर्वरात्रापररात्रकालमये
कुटुम्बजागरणं कुर्वतो 'इमेयारूवे' अयमेतद्रूप 'अज्झत्थिए' आध्यात्मिकः
आन्तरोपायसाध्यसुखदुःखादिरूप यावत्सकल्प 'सुप्पज्जित्था' समुदपद्यत
'एव' अमुना प्रकारेण खलु 'निश्चयेन अहं राजगृहे नगरे नहूना 'ईसर'

'तएण तस्स धणस्स' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (तस्स धणस्स) उस धन्य सार्थवाह को
(अन्नया कथाइ) किसीएक समय (पुञ्चत्तावरत्तकालमयसि)
मध्यरात्रि के समय में जब कि वह कुटुम्ब जागरणासे जगरहा था
(इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव सुप्पज्जित्था) इस प्रकार का यह
आध्यात्मिक-आंतर उपाय साध्या सुख दुःखदिरूप यावत् सकल्प
उत्पन्नहुवा (एव खलु अहं रायगिहे बहूण ईसर जाव पढभईण सयस्स

'तएण तस्स धणस्स' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) त्थार ७॥६ (तस्स धणस्स) धन्य सार्थवाहने (अन्नया
कथाइ) केअ वपते (पुञ्चत्तावरत्तकालमयसि) अउधी रात्रिना समये
न्यारे ते कुटुम्ब जागरणु करतु छतु (इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव सुप्पज्जित्था)
त्यरे आ जातने। आध्यात्मिक ओटये के आतरिक उपायथी साध्य सुप्पज्जित्था
वगेरे ३५ यावत् सकल्प उत्पन्नयो-(एव खलु अहं रायगिहे बहूण ईसर

તસ્માત્કારણત્ 'ળ ણજ્ઞઃ' ન જ્ઞાયતે મયા 'જં' યત્ યદિ 'મણ' મયિ 'ગયસિ' ગતે
ગ્રામાદૌ 'વા' 'ચુયસિ' ચ્યુતે-સ્થલિતેના કર્મવશાદનાચરતઃ સ્વપદાત્પતિતે ઇત્યર્થ
'મયસિ' મૃતે-પ્રાણત્રિયોગે સતિ, વા 'ભગ્ગમિ' ભગ્ને-રોગાદિના કુબ્જ સ્વક્ષ-
ત્વેનાઽસમર્થીભૂતે, વા 'લુગ્ગમિ' રુગ્ને-રોગાવસ્થાપ્રાપ્તેસતિ 'સહિયસિવા'
સટિતે વ્યાધિવિશેષેણ જીર્ણતા ગતે સતિ, વા 'પહિયસિ' પતિતે પ્રાસાદાદિતો
ગ્લાનભાવાદ્વા 'પિદેસત્થસિ' દેશાન્તર ગત્વા તત્રૈવ સ્થિતે વા 'ત્રિપ્પવસિયસિ'
વિપ્રોપિતે - સ્વસ્થાનત્રિનિર્ગતે-દેશાન્તરગમનપ્રવૃત્તે સતિ વા 'મન્ને' અહ મન્યે

આધાર, આલમ્બન તથા ચક્ષુ એન પદો કે સાથ સૂત્રકાર ઇસી ઘાત કો
ઔર જોરદાર શબ્દોં સે સમજાને કે લિયે ઉપમા વાચક ભૂત શબ્દ કા
પ્રયોગ કરતે હુણ કહતે હૈં કિં યહ ધન્યસાર્થવાહ એન સત્ર કે લિયે
મેધિભૂત થા, પ્રમાણભૂત થા, આધારભૂત થા, આલમ્બનભૂત થા ઔર
ચક્ષુભૂત થા । હસ તરહ યહાં પુનરુક્તિ દોષ કા સંજ્ઞાવ મી નહીં
માના જા સકતા હૈં ।

કારણ પહિલે કથન મેં ઉસે સ્વય મેધિ આદિ રૂપ કહા ગયા હૈં ઔર
હસ કથન મેં ઉસે એન ૨ જૈસા કહા ગયા હૈં । હસ-પ્રકાર પુનરુક્તિ દોષ
કા વારણ હો જાતા હૈં । યહ ધન્ય સાર્થવાહ સમસ્ત ઈશ્વર આદિ જનોં
કે સર્વ કાર્યોં કા સ પાદક થા-હસલિયે ઉસે યહ " સર્વ કાર્ય વર્દક "
કહા ગયા હૈં । હસ પ્રકાર યહ ધન્ય સાર્થવાહ અપને મેં એન સમસ્ત ઘાતોં
કા વિચાર કરકે અવગણે એસા વિચાર કરતા હૈં (ત ણ ણજ્ઞઃ જ મણ
ગયસિ વા ચુયસિ વા, મયસિ વા ભગ્ગસિ વા, લુગ્ગસિ વા, સહિયસિ

સાથે સૂત્રકાર એ જ વાતને વધારે અષ્ટ ડરવા માટે ઉપમા વાચક 'ભૂત'
શબ્દનો પ્રયોગ કરતા કહે છે કે ધન્ય સાર્થવાહ બધાને માટે મેધિભૂત હતો,
પ્રમાણુ ભૂત હતો, આધારુ ભૂત હતો, આલમ્બન ભૂત હતો અને ચક્ષુ ભૂત
હતો એથી અહીં પુનરુક્તિ રૂપ દોષ ઉદ્ભવવાની શક્યતાથી ઉભી થતી
નથી કેમકે પૂર્વ કથનમા જ તેને મેધિ વગેરે રૂપ બનાવવામા આવ્યો
છે અને આ વર્ણનમા પણ તેને તે પ્રમાણુ જ વર્ણવવામા આવ્યો છે આ
રીતે પુનરુક્તિ દોષનુ નિવારણ પણ થઈ જ ગયું કહેવાય ધન્ય સાર્થવાહ
બધા ઈશ્વર વગેરે લોકોના બધા કામોને પાર પમાડનાર હતો એથી જ તેને
" સર્વ કાર્ય વર્દક " કહેવામા આવ્યો છે આ પ્રમાણુ ધન્ય સાર્થવાહ પોતાની
મેળે આ બધી વાતો વિષે વિચાર કરતો આગળ આમ વિચારે છે કે (ત ણ
જ્ઞઃ જ મણ ગય સિવા ચુયસિવા મયસિવા ભગ્ગસિવા, લુગ્ગમિવા, સહિયસિવા,

અર્થાદેતદઅભ્યનૈવ સર્વસ્યાપિ કુદુમ્બસ્યાસ્થાનમ્ ' પમાણે ' પ્રમાણમ્ પ્રત્યક્ષાદિ પ્રમાણયદ્ વસ્તુતત્ત્વપ્રતિબોધકઃ ' આધારે ' આધાર - આધારયત્ કુદુમ્બાદીનામાશ્રય ' આલમ્બણે ' આલમ્બન રજ્યાદિયત્ વિપદગર્તપતન્નનોદ્ધારકતયાઽવલમ્બનમ્ ' ચક્ષુ ' ચક્ષુઃ નેત્ર તદ્વત્ સકલાર્થપ્રદાક, યદુક્ત (મેધિ પ્રમાણમા-ધાર આલમ્બન ચક્ષુરિતિ ' તદેવ સ્પષ્ટયોધાર્થમૌપમ્યગામિભૂતશબ્દસમેચ્છનેન પુનરાવર્તયતિ મેધિભૂતઃ इत्यादि, यावदिति -- यावन्ઽન્તરેન (પમાણભૂષ આહારભૂષ આલમ્બણભૂષ ચક્ષુભૂષ) इत्येषा સગ્રહો બોધ્યઃ અર્થત પુનરુક્તિરોપ વારણ તુ પૂર્વત્ર મેધિરિતિ આરોપિત મેધિત્વગાનિત્યાદ્યર્થેન ચોપયમ્ । સઘ્વકજ્જવઢ્ઢાવણ ' સર્વ કાર્યયર્થક - સર્વેષા કાર્યાણા, યર્થકઃ = સમ્પ્રાદક્ષોઽસ્મિ. ' ત ' તદ્

પ્રમાણરૂપ હૈં । ગ્રીષ્ઠિ કવ આદિકે કળોં કો મર્દન કરને કે લિયે પશુ જિસ સ્તંભ મેં બાધે જાતે હૈં ઉસકા નામ મેધી હૈ । મેધી કે સહારે સે જિસ તરહ પશુઓં કા અવસ્થાન રહતા હૈં ઉસી તરહ ઉસકે સહારે સે સમસ્ત કુદુમ્બકા અવસ્થાન થા હમલિયે હસે મેધીરૂપ કહા ગયા હૈ । પ્રત્યક્ષ આદિ પ્રમાણ જૈસે વસ્તુતત્ત્વ કે પ્રતિબોધક હોતે હૈં ઉસી તરહ યહ બી સચ કે લિયે વસ્તુ કા વાસ્તવિક સ્વરૂપ સમજા દિગા કરતા થા અતઃ હસે પ્રમાણ રૂપ પ્રકટકિયા હૈ । મેં હી કુદુમ્બ આદિકા આશ્રય ભૂત હ, રજ્યાદિકા કી તરહ વિપત્તિરૂપ સ્વદ્ધે મેં પતિત જનો કા ઉદ્ધારક હોનેકે કારણ મેં ઉનકા અવલમ્બન રૂપહૈં ।

ચક્ષુ જિસ પ્રકાર સામને કે પદાર્થ કા યથાર્થ પ્રકાશન કરતા હૈં ઉસી તરહ યહ બી મનુષ્યોં કો રાય લેને પર વાસ્તવિક વસ્તુ કે રહસ્ય સે પરિચિત્ત કરા દેતા થા । અતઃ હસે યહાં ચક્ષુરૂપ કહા ગયા હૈં હસીલિયે (ચક્ષુ મેધીભૂષ જાવ સઘ્વકજ્જવઢ્ઢાવણ) મેધિ પ્રમાણ,

બળદો જે થાભલાને બાધવામા આવે છે તેનુ નામ મેધી છે મેધી જેમ પશુઓને માટે ખાસ કેન્દ્રરૂપમા રહેલો આધાર હોયછે તેમજ તેપણુ બધાને માટે મેધી રૂપ હતો પ્રત્યક્ષ વગેરે પ્રમાણો જેમ વસ્તુના તત્ત્વને બતાવનારા હોય છે તેમજ ધન્યસથવાહ પણ બધાને દરેકે દરેક વસ્તુનુ સાચુ સ્વરૂપ સમજાવતો હતો તેથી તેને પ્રમાણ કહ્યો છે કુદુમ્બનો હુ જે આશરો છુ હુ જે ઉંડા ખાણમા પડેલા માણુસોનો દોરીની જેમ ઉદ્ધારક છુ એથી હુ તેમના માટે અવલમ્બન (આધાર) રૂપ છુ ચક્ષુ જેમ સામેની વસ્તુને પ્રકાશિત કરે છે તેમજ તે પણુ સલાહ માટે આવેલા માણુસોને વસ્તુના સાચા રહસ્યથી વાકેફ કરતો હતો એટલા માટે જ (ચક્ષુમેધીભૂષ જાવ સઘ્વકજ્જવઢ્ઢાવણ) મેધિ પ્રમાણ આધાર આલમ્બન અને ચક્ષુ - પગેની

मित्रज्ञातिनिजकर्मजनसम्बन्धिनः परिजनांश्च चतस्रः स्नुषा कुलगृहवर्गं च विपुलेन अशनादिना ४ धूपपुष्पवस्त्रगन्धादिभिर्यावत् 'सक्कारेत्ता' सत्कृत्य 'सम्मानेत्ता' सम्मान्य मयुरवचनादिना, तस्यैव मित्रज्ञत्यादेः चतसृणा स्नुषाणा कुलगृहवर्गस्य पुरतः समक्ष चतसृणा स्नुषाणा 'परिरक्खणद्वयाए' परीरक्षणार्थं पञ्च

आमतेत्ता) तो मेरी अब इसी में भलाई है कि मैं कल सूर्योदय होते ही प्रातःकाल सूर्य के उदय होने पर विपुल मात्रा में अशन पान, स्वाद्य, स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार तैयार कराकर मित्र ज्ञाति, निजक स्वजन सम्बन्धी जनों को तथा परिजनो को चारों अपनी इन पुत्र वधूओं को, इनके माता पिता आदिको को भोजनार्थ आमन्त्रित करके (त मित्तणाइ गियग सयण० य चउण्ह सुण्हाण कुलघरवग्ग विउलेण असण ४ धुवपुष्पवत्थगध जाव सक्कारेत्ता सम्मानेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह सुण्हाण परिरक्खणद्वयाए पच्च २ मालि अक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किण्ह वा सारक्खेइ वा सगोवेइ वा सवड्ढेइ वा) उन मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन सबधियो को परिजनो को चारो इन अपनी पुत्र वधूओ को और इनके माता पिता आदिको को उस विपुल अशनादि से और धूप पुष्प, वस्त्र गन्ध आदि से यावत् सत्कृत करु मयुरवचनादि द्वारा उन्हें सम्मानित करूँ। सत्कृत और सम्मानित करके बाद मे मैं उन्ही मित्र ज्ञाति आदि जनो के चारो ओर अपनी इन पुत्र वधूओ के कुल गृह वर्ग के समक्ष इन चारो पुत्र

चउण्ह सुण्हाण कुलघरवग्ग आमतेत्ता) हु काल सवार थता न सवारे सूर्योदय थता अशन, पान, स्वाद्य अने भाद्य आम थार प्रकारे विपुल मात्राभा आहार तैयार करवीने मित्र, ज्ञाति, निजक स्वजन, सम्बन्धी तेमन परिजनो अने थारे पुत्रो थारे पुत्रवधूओ तथा तेमना मातापिता वगेरेने नमवा भाटे ओलावीने (त मित्तणाइ गियगसयण य चउण्ह सुण्हाण कुलघरवग्ग विउलेण असण ४ धुव पुष्पवत्थगध जाव सक्कारेत्ता सम्मानेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह सुण्हाण परिरक्खणद्वयाए पच्चरसालि अक्खए दलइत्ता जाणामि तावका किण्ह वा सारक्खेइवा सगोवेइवा सवड्ढेइवा) मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन सम्बन्धीओ, परिजनो, पोतानी थारे पुत्रवधूओ, अने तेमना माता पिता वगेरेने पुष्कण प्रमाणभा ननाववाभा आवेला अशन वगेरे थारे प्रकारे आहारो थी अने धूप, पुष्प वस्त्र गन्ध वगेरेथी मत्कार उइ तथा मधुरवाणी थी तेमनु सम्मान उइ तेमनी सत्कार तेमन सम्माननी विधि पूरी कर्या भाइ हु मित्र, ज्ञाति वगेरे तथा पुत्रवधूओना उडुणीजनेनी सामे थारे पुत्र

‘ઇમસ્સ’ અસ્ય કુડુમ્બસ્ય ‘કિં’ ક ‘આહારે’ આધારઃ આશ્રયો ભૂમિરિવ
 ‘વા’ અથવા ‘આલવે’ આલમ્બ-પતતો રજ્જાદિકમિવ અથવા ‘પટિવધે’
 પ્રતિવન્ધઃ પ્રમાર્જનિકાશલાકાદીના પરિરક્ષણાય દ્વરકડવ ‘ભવિસ્સઙ્ગ’ ભવિષ્યતિ
 ‘ત’ તદ્-તસ્માત્ ‘સેય’ શ્રેયઃ સ્વલુ નિશ્ચયે મમ ‘કલ્લ’ કલ્પે-શ્વઃ પ્રમાત-
 સમયે યાવત્-તેજસા ‘જલતે’ જ્વલતિસતિ-દિનકરે ઉદય પ્રાપ્તે ત્રિપુલ-પ્રચુર
 આશન ૪ ‘ઉવક્કલ્હાવેત્તા’ ઉપસ્કાર્ય નિપ્પાદ્ય મિત્રજ્ઞાતિ નિજક સ્વજન સમ્બ-
 ન્ધિન પરિજનાન્ ચતસ્રઃ સ્ત્રુપા ‘કુલઘરવર્ગ’ કુલગૃહવર્ગ, કુલટુહ-પિતૃગૃહ
 તદ્ વર્ગ માતાપિતાદિક ‘આપતેત્તા’ આમત્ર્ય=ભોજનાર્થમાહૂય ‘ત’ તાન્

વા પહિયસિ વા વિદેસત્થસિ વા વિપ્પવસયસિ વા ઇમસ્સ કુડુબ્બસ
 કિં મન્ને આહારે વા આલવે વા પહિવધે વા ભવિસ્સઙ્ગ ?) કિં એસા મૈ
 યદિ યહા સે દૂસરે ગ્રામ આદિ કો ચલા જાઝ, યા કર્મવશાત્ સ્વપદ
 સે ચ્યુત હો જા , મરજાઝ કિસી રોગ આદિ કે દ્વારા કુલ્હા યા
 લૂલા વન જાઝ, રોગ સે ગ્રસિત હો જાઝ, કિસી વ્યાધિ વિઝોપ સે જીર્ણ
 શરીર હો જાઝ કિમી મકાન આદિ સે અચાનક ગિરજાઝ વિદેશ જાકર
 વ્હાં રહને લગજાઝ, અથવા યહાં સે વિપ્રોપિત પરદેશ રહને ચાલા જાઝનાં
 એસી સ્થિતિ મૈં મુઝે એસા કોઈ નહીં જાત હોતા હૈ કિ જો ઇસ મેરે કુડુમ્બ
 કા આધાર હોગા આલવનભૂત હોગા ડસકી બુહારુ સમાર્જની કી સીકો
 કો એકત્ર બાંધ કર રક્ષા કરને વાલે ડોરેકે સામાન રક્ષા કરને વાલા હોગા।
 હસલિયે જબ મૈં એસા માનતા હૂં (ત સેય સ્વલુ મમ કલ્લ જાવ જલતે
 વિઝલ અસણ ૪ ઉવક્કલ્હાવેત્તા મિત્તણાહંચડણ્હ સુહાણ કુલઘરવર્ગ)

પહિય સિવા, વિદેસત્થ સિ વા વિપ્પવસય સિ વા ઇમસ્સ કુડુબ્બસ કિં મન્ને આહારે વા
 આલવે વા પહિવધે વા ભવિસ્સઙ્ગ ?) જો હું અહીંથી બીજે ગામ જતો રહું કે
 કર્મવશાત્ સ્વપદ (પોતાના અધિકાર) થી ખુટ થઈ જાઉં કે મરણને લેઉં, રોગ
 વગેરેમા સપડાઈને કૂબડો અથવા અપંગ થઈ જાઉં, રોગી થઈ જાઉં કેાઈ વ્યાધિ
 વિશેષમા સપડાઈને સાવ દુર્બળ શરીરવાળો થઈ જાઉં, કેાઈ મકાન ઉપરથી
 ઓચિંતો પડીજાઉં, વિદેશમા જઈને ત્યાં રહેવા લાગુ અથવા તો અહીંથી
 વિપ્રોપિત-પરદેશમા રહેનાર થઈ જાઉં ત્યારે એવી સ્થિતિમા મને એવી કેાઈ
 પણ વ્યક્તિ દેખાતી નથી કે જે મારા કુટુંબનો આધાર થઈ શકે, આલબન
 ભૂત થઈ શકે સાવરણીના છૂટાપડેલા તગણાઓને એકીસાથે બાધનાર દોરીની
 જેમ મારા આ કુટુંબને એકી સાથે સપીને રાખનાર તેમજ તેની રક્ષાકરનાર
 કેાણુ હશે ? જો અત્યારે આવી પરિસ્થિતિ છે તો મારે એ વિચાર છે કે-
 (ત સેય સ્વલુ મમ કલ્લ જાવ જલતે વિઝલ અસણ ૪)

विसजेइ, तएणं सा उज्झया धणस्स तहत्ति एयमट्ठं पडिसु-
णेइ पडिसुणित्ता धणस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पच सालि
अक्खए गेणहइ गेणिहत्ता एगतमवक्कमइ एगतमवक्कमियाए
इमेयारुवे अज्झत्थिए० एवं खलु तयाणं कोट्टागारंसि वहवे
पल्ला सालिणं पडिपुण्णा चिट्ठति । त जया णं मम ताओ इमे
पच सालि अक्खए जाइस्सइ तयाण अह पल्लंतराओ अते
पच सालि अक्खए गहाय दाहामि त्तिकट्ठु एव सपेहेइ सपेहित्ता
ते पच सालि अक्खए एगते एडेइ एडित्ता सकम्मसज्जुत्ता
जाया यावि होत्था ॥ सू० ३ ॥

टीका—‘एव सपेहेइ’ इत्यादि—एव उक्तरूपेण सप्रेक्षते मनसि विचार्यते ‘सपेहित्ता
सप्रेक्ष्य—पर्यालोच्य कलये प्रभातसमये, यावत् तेजसा ज्वलति, सूर्य उद्वते सति
मित्रज्ञाति स्वजनप्रमुखान् चतसृणा स्नुषाणा कुलगृहवर्गं च—पितृगृहसम्बन्धिमाता
पित्रादीन्, आमन्त्रयति निमन्त्रयति, आमन्त्र्य विपुलमशनादिकं चतुर्विधाहार उप-

‘ एव सपेहेइ सपेहित्ता ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(एव सपेहेइ) धन्यसार्थवाह ने इस पूर्वोक्त प्रकार अपने मन
में विचार किया (सपेहित्ता) विचार करके (कल्ल जाव मित्तणाइ०
चउण्ह सुण्हाण कुलधरवग्ग आमतेइ आमत्तित्ता विउल असण ४
उवक्खडावेइ) फिर उसने प्रातःकाल होते ही सूर्य के उदय हो जाने
पर मित्र, ज्ञाति, स्वजन आदि को और चारों ही पुत्रवधूओं के कुल
गृह वर्ग को—उनके माता पिता आदिको को आमन्त्रित किया । आमन्त्रित

एव सपेहेइ, सपेहित्ता’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(एव सपेहेइ) धन्यसार्थवाह ने पूर्वोक्त रूपे पोताना मनमा विचार
ये (सपेहित्ता) विचार करीने (कल्ल जाव मित्तणाइ चउण्ह सुण्हाण कुलधर
वग्ग आमतेइ आमत्तित्ता विउल असण ४ उवक्खडावेइ) अगरे सूर्यउदयपामता
नी साथे ४ तेणे पोताना मित्र, ज्ञाति, स्वजन वगेरेने अने अरे या० पुत्र
वधूजोना ४० नीजनेने तेमना मातापिता वगेरेने ४मथा भाटे आमन्त्रित

પશ્ચ સહ્યકાન્ શાલ્યક્ષતાન્ શાલિકળાન્ દત્વા 'જાણામિ' જાનામિ 'તાવ' તાવત્
નિશ્ચયેન 'કા' સ્તુપા 'કિઠ' કથ કેન પ્રકારેણ 'સારક્ષેઃ' સંરક્ષયતિ સંગોપયતિ
-સંપરણતઃ, મજૂપાદિપુ સસ્થાપનેન ગોપન કરોતિ. અથવા કા-વધૂ 'સવઙ્ગેઃ'
સમ્વર્ધયતિ વહુત્વકરણતઃ વપનાદિના ? ॥ સૂ ૦ ૨ ॥

મૂલમ્-—એવં સપેહેઃ સપાહિતા કલ્હં જાવ મિત્તળાઃ૦ ચતુષ્ઠ
સુપ્પહાણ કુલધરવગ્ગ આમતેઃ આમંતિત્તા વિત્તલ અસળં ૪
ઉવક્કલ્હાવેઃ, તઓ પચ્છા પ્પહાણ ભોયણમહવસિ સુહાસળં
મિત્તળાઃ૦ ચતુષ્ઠ ય સુપ્પહાણ કુલધરવગ્ગેણં સદ્ધિ ત વિત્તલ
અસળ ૪ જાવ સક્કારેઃ સંમ્માણેઃ સક્કારિત્તા સંમ્માણેત્તા તસ્સેવ
મિત્તળાઃ૦ ચતુષ્ઠ ય સુપ્પહાણ કુલધરવગ્ગસ્સ ય પુરઓ પચ
સાલિ અક્કલ્હ ગેપ્પહઃ ગેપ્પિહત્તા જેઠ્ઠા સુપ્પહા ઉઙ્ગિયા ત સદ્ધા-
વેઃ સદ્ધવિત્તા એવ વયાસી-તુમ ણ પુત્તા મમ હત્થાઓ ઇમે
પચ સાલિ અક્કલ્હ ગેપ્પહાહિ ગેપ્પિહત્તા અણુપુવ્વેણં સારક્કલ્હમાણી
સંગોવેમાણી વિહરાહિ । જયાણહ પુત્તા । તુમ ઇમે પચ સાલિ
અક્કલ્હ જાણ્જા તયાંણ તુમ મમ ઇમે પચ સાલિ અક્કલ્હ
પઠિદિજ્જાણ્જાસિ તિક્કલ્હુ સુપ્પહાણ હત્થે દલ્લયઃ દલ્લયિત્તા પઠિ-

વધૂઓંની પરીક્ષા કે નિમિત્તે ઉન્ને પાંચ પાંચ શાલિકળોંને કોં દૂં- ઓર
દેકર યહ જ્ઞાત કરૂં કિં ઇન મેં સે કોન પુત્ર વધૂ કિસ તરહ સે ઇનકી
રક્ષા કરતી હૈ, કોન પુત્ર વધૂ ઇન્ને મજૂપા આદિ મેં રલ્લકર ગુપ્ત રલ્લતી
હૈ ઓર કોન સી પુત્રવધૂ વપનાદિ ક્રિયા દ્વારા ઉન્ને વઢાતી હૈ । સૂત્ર '૨'

વધૂઓની પરીક્ષા માટે તેઓમાથી દરેકને પાંચ પાંચ શાલિકળો (ડાગરના
કળો) આપુ અને આપીને 'એ વાતની પરીક્ષા કર કે તેઓમાથી કોણ કેવી
રીતે તે શાલિકળોને સાચવી રાખે છે કઈ પુત્ર વધૂ શાલિકળોને પેટી વગેરે
મા મૂકીને ગુપ્ત રાખે છે ? અને કઈ પુત્રવધૂ શાલિકળો ને વાપીને તેમની
વૃદ્ધિ કરે છે ? ॥ સૂત્ર ૨ ॥

एवमवदत् हे पुत्रि त्व खलु मम हस्तादिगान् पञ्च शाल्यक्षतान् गृहाण, गृहीत्वा च 'अणुपुण्ड्रेण' अणुपुण्ड्र्या-अनुक्रमेण सरक्षन्ती सगोपायन्ती 'विहराहि' विहर । 'जया' यदा-यस्मिन् समये खलु हे पुत्रि ! अह 'तुम' तत्रपार्थ्वे इमान् पञ्च शाल्यक्षतान् 'जाएज्जा' याचय, 'तया' तदा तस्मिन् समये खलु 'तुम' त्व मम इमान् पञ्चशाल्यक्षतान् 'पडिदिज्जासि' प्रतिदयाः पश्चाद् मह्य समर्पये, इतिकृत्वा-इत्युक्त्वा ज्येष्ठाय स्तुपायाः हस्ते ददाति, दत्त्वा च प्रतिविसर्जयति,

धन्य सार्थवाह ने अपने मित्र ज्ञाति आदि जनों के तथा उन चारों जपनी पुत्रवधूओं के कुल गृहवर्ग के सामने पांच शाल्यक्षतो को लिया और लेकर ज्येष्ठा जो पुत्रवधू थी कि जिसका नाम उज्झिका थी उसे बुलाया (सदावित्ता एव वयासी तुम ण पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पच सालिअक्खए गेणहाहि, गेण्हित्ता अणुपुण्ड्रे ण सारक्खेमाणी सगोवेमाणी विहराहि) बुलाकर उससे ऐसा कहा-पुत्रि ! तुम मेरे हाथ से इन पांच शाल्यक्षतो को लो और लेकर इन्हें सुरक्षित रखो सम्मालकर अच्छी तरह से रखो । (जयाण अह पुत्ता ! तुम इमे पच सालिअक्खए जाएज्जतयाण तुम मम इमे पच सालिअक्खए पडिदिज्जाएज्जासि) जब मैं हे पुत्रि ! तुम से इन पांच शालि अक्षतों को मागू तब तुम मेरे लिये इन्हें पीछे देना ।

(सक्कु सुण्हाए हत्थे दलयइ) ऐसा कहकर उसने उस ज्येष्ठ स्तुपा के हाथ में उन शाल्यक्षतो को दे दिया । (दलयित्ता पडिविसज्जेइ) देकर फिर उसे विसर्जित कर दिया ।

मेडभानोना सत्कार तेमज्ज सन्मान थर् गथु त्थारे धन्य सार्थवाडे पोत ना मित्र ज्ञाति वगेरे स्वज्जो तेमज्ज त्थारे पुत्र वधूओना मातापिता वगेरे सगावडाला ओनी सामे पाय शालिकखो (जाणना उखो) लीवा अने पोताना सौथी मोटा पुत्रनी लाया उज्झिकाने ओलावी (सदावित्ता एव वयासी तुम ण पुत्ता ! ममहत्थाओ इमे पचसालि अक्खए गेणहाहि गेण्हित्ता अणुपुण्ड्रेण सारक्खेमाणी सगोवेमाणी विहराहि) ओलावीने तेने आ प्रभावे उखु " हे पुत्रि ! आ पाय शालिकखोने तमे स्वीकारे अने ओमने सारी राते सलाणीने सुरक्षित राखे (जयाण अह पुत्ता ! तुम इमे पच सालि अक्खए जाएज्ज तयाण तुम मम इमे पचसालि अक्खए पडिदिज्जासि) हे पुत्रि ! त्थारे हे तभारी पामेथी शालीकखो भागु त्थारे तमे भने पाछा आपने

(त्तिकहु सुण्हाए हत्थे दलयइ) आभ उहीने तखे मोटा पुत्रनी वधूना ओ ने भूझी दीधा (दलयित्ता पडिविसज्जेइ) शालीकखो

स्कारयति=निष्पादयति. ततः पश्चात् स्नातो भोजनमण्डपे सुवामननिषण्णः—
सुखेनासने उपविष्टः सन् मित्रज्ञातिस्वजनादिभिः सार्द्धं चतसृणा स्नुषाणा च
कुलवृहद्गणैश्च सार्द्धं तद्विपुलमशानादिकं भोजयित्वा यावत्सत्कारयति वस्त्रादिभिः
समानयति मधुरवचनादिना, सत्कारं कृत्वा समानयित्वा तस्य धन्यसार्थवाहस्यैव
स्वमित्रज्ञाति प्रमुखाणामग्रे चतसृणा स्नुषाणा कुलवृहद्गणस्य पुरतः पञ्चशाल्य
क्षतान्, गृह्णन्ति गृहीत्वा ज्येष्ठा स्नुषा उज्जिका नाम्नी तां शब्दयति शब्दयित्वा

करने के बाद फिर उसने विपुल मात्रा में अशनादि रूप चतुर्विध
आहार तैयार करवाया ।

(तओ पच्छा ण्हाए भोयण मडवमि सुहासण० मित्तणाइ० चउण्ह
य सुण्हाण कुलघरवग्गेण सद्धिं त विउल असण ४ जाव सक्कारेइ,
सम्माणेइ) जब चतुर्विध आहार निष्पन्न हो चुकी तब वह स्नान करके
भोजनशाला में सुख से आसन पर उपविष्ट (बैठ गया) हो गया
और मित्र, ज्ञाति एवं स्वजनादि को के साथ २ और अपनी पुत्रवधूओं
के माता पिता आदिकों के साथ २ उस चतुर्विध भोजन की विपुल
सामग्री का आहार करने के बाद में उन सबका उस ने वस्त्रादि से
सत्कार किया तथा मधुरवचनादि से सम्मान किया । (सक्कारित्ता
सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य
पुरओ पच सालि अक्खण गेण्हइ, गेण्हित्ता जेद्धा सुण्ह उज्झिया त
सदावेइ) जब सबका सत्कार और सम्मान हो चुका तब उस के बाद

क्यों आभित्रणु आप्या पछी धन्य सार्थवाडे पुण्डण प्रमणुमा अशन वगेरे
ने। चार प्रकारने आहार बनावडाये।

(तओपच्छाण्हाए भोयणमडवासि सुहासण मित्तणाइ चउण्हय सुण्हाण
कुलघरवग्गेण सद्धिं त विउल असण ४ जाव सक्कारेइ सम्माणेइ) ब्यारे
चारे जतने। आहार तैय २ थछ गये। त्थारे ते स्नान करीने रसेछ घरमा
सुजेथी आसन उपर जेसी गये। अने मित्र, ज्ञाति अने पोताना स्वजने।
वगेरेनी साथे तेभज पोतानी पुत्र वधूओना सगा वडालाओ। मातापिताओ।
नी साथे चारे जतना पुण्डण प्रमाणुमा तैयार क्क्वा मा आवेला आहारने
ज्भ्ये। ज्भ्या पछी तेले वओ वगेरे आपीने ते जधाने सत्कार्या तेज्ज
मधुर वचनेथी ते जधानु सम्मान क्थुं (सक्कारित्ता सम्माणेत्ता तस्सेव
मित्तणाइ, चउण्हय सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरओ पचसालि अक्खण
गेण्हइ, गेण्हित्ता जेद्धा सुण्ह उज्झिया त सदावेइ) ब्यारे जधा आभित्रित

तस्मात्-कारणात् यदा यस्मिन् समये खलु मम तात श्वसुर इमान् पञ्च शाल्य
क्षतान् याचिष्यति ' तथा ण ' तदानीं तस्मिन्नेव समये खलु अह ' पल्लतराओ'
पल्लान्तरात्-कोष्ठागारम ये अन्यतरा पल्लनात् ' अ-ने' अन्यान् पञ्चशाल्यक्षतान्
' गहाय ' गृहीत्वा ' दाहामि ' दास्यामि, इति कृत्वा-इति मनसि निधाय ' एव
सपेहेइ ' एव सप्रेक्षते-चिन्तयति ' सपेहिता ' सप्रेक्ष्य-पर्यालोच्य ' ते ' तान्
श्वसुरप्रदत्तान् पञ्चशाल्यक्षतान् ' एगते ' एकान्ते ' एडेइ ' एडति - प्रक्षिपति-
पातयतीत्यर्थः ' एडित्ता ' प्रक्षिप्य ' सकम्मसजुत्ता ' स्वकर्म समयुक्ता-जातावाप्य
भवत् स्वगृहादिकार्यकरणे उद्युक्ताऽऽसीदित्यर्थः ॥ सू० ३ ॥

मूलम्-एवं भोगवतियाए वि, णवरं सा छोल्लेइ छोल्लित्ता
अणुगिलइ अणुगिलित्ता जाया, एव रक्खियावि, णवरं गेण्हइ
गेण्हित्ता इमेयारूवे अउज्झत्थिए० एवं खलु मम ताओ इमस्स
मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरओ सदा-
वेत्ता एव वयासी-तुमण्णं पुत्ता मम हत्थाओजाव पडिदिज्जा

त्ति कहु पच सालि अक्खए जाइम्मइ तयाण अहं पल्लतराओ अते
पच सालिअक्खए गहाय दहामित्ति कहु एव सपेहेइ सपेहिता ते पंच
सालि अक्खए एगते एडेइ, एडित्ता सकम्मसजुत्ता जाया यावि
होत्था) जब ऐसा क्लिने ही पल्यक चावलो के कोष्ठागार में भरे हुए
रखे हैं तो जिस समय श्वशुरजी इन पांच शाली-अक्षतों को मुझसे
मा गेंग मैं उसी समय कोष्ठागार के मध्य में से किसी एक दूसरे
पल्यक से लेकर इन पांच शालि-अक्षतों को दे दूगी । ऐसा उसने विचार
किया । विचार करके बादमें उसने श्वसुरप्रदत्त पांचशालि अक्षतों को
एकान्त में दिया । और डालकर फिरवह अपने घर के काम करने
में लग गई ॥ सू० ३ ॥

जयाण मम ताओत्ति कहु पच सालि अक्खए जाइस्सइ तयाण अहं पल्लतराओ
अते पच सालि अक्खए गहाय दहामि त्ति कहु एव सपेहेइ, सपेहिता ते
पच सालि अक्खए एगते एडेइ, एडित्ता सकम्मसजुत्ता जाया यावि होत्था)
जयारे, धणु पल्लजे योआ कोठारमा छे तो ते वण्णते ससरा पाय शालि
छे। भागसे ते वण्णते पाय शालिछे। कोठारना पयकोमाथी लधने तेभने
आपी दधशि " आ प्रमाणे विचारीने ससगअ आपेला पाय शालिछे।ने
भोटा पुत्रनी वधूअे अेक तरइ इेकी दीधा अने इेकीने पोताना ह भेशाना
घरकाभमा परेवाध गध ॥ सूत्र " ३ " ॥

તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ સા-ઉજ્જિઙ્ઘા નામ્ની વધૂઃ ધન્યસ્ય સાર્થવાહસ્યૈતમર્થ 'તદ્વત્તિ
તથેતિ કૃત્વા-તથાસ્તિતિ કથયિત્વા ' પઙ્કિસુણેઙ્ ' પ્રતિશ્રુણોતિ સ્વીકરોતિ ।
' પઙ્કિસુણિત્તા ' પ્રતિશ્રુત્ય=સ્વીકૃત્ય ધન્યસ્ય સાર્થવાહસ્ય હસ્તાત્ ' તે ' તાન્
પશ્ચશાલ્યક્ષતાન્ ગૃહ્ણતિ ગૃહીત્વા ' એગતમવક્રમઙ્ ' એગન્તમપક્રામતિ એકાન્ત
સ્થાને ગચ્છતિ ' એગતમવક્રમિયાએ ' એકાન્તમપક્રમિતાયાઃ એકાન્ત ગચ્છન્ત્યા
મનસિ ' હમેયારુવે ' અયમેતદ્રૂપ ' અઙ્ગત્થિએ ' આધ્યાત્મિક-આત્માશ્રયો યા-
વત્સકલ્પઃસમુદપદ્યત એવમમુના પ્રકારેણ સ્વલુ નિશ્ચયેન ' તાયાણ ' તાતસ્ય શ્વશુરસ્ય
(તાયાણ) અન્ન આદરાયં વહુવચન, ' કોઢ્ઢાગારંસિ ' કોઢ્ઢાગારે ' વહવે ' વહવ
-અનેકસરુવકાશાલિના ' પલ્લા ' પલ્લકા -પલ્લકામાનવિશેષા તૈઃ ' પઙ્કિપુષ્પા '
પ્રતિપૂર્ણાઃ ભૃતાસ્તિષ્ઠતિ સાર્દ્ધત્રયમણપ્રમિતાના ધાન્યાનામેક પલ્લકાં હત્યભિધીયતે
તે પલ્લકા વહવ કોઢ્ઢાગારે ભૃતાઃ સતીતિ ભાવઃ । ' ત જયા ણં ' તદ્-

(તએણ સા ઉજ્જિઙ્ઘા ધણ્ણસ્સ તદ્વત્તિ એયમદ્ધ પઙ્કિસુણેઙ્) ચલતે
સમયે ઉસ જ્યેષ્ઠ પુત્ર વધૂ ઉજ્જિઙ્ઘા ને ધન્ય સાર્થવાહ કે " તથાસ્તુ "
કહકર હસ કથનરૂપ અર્થકો સ્વીકાર કરલિયા (પઙ્કિસુણિત્તા ધણ્ણસ્સ
સત્થવાહસ્સ હત્થાઓ તે પચ સાલિ અક્કલ્લએ ગેણ્હઙ્) સ્વીકાર કરકે
ધન્ય સાર્થવાહ કે હાથસે ડન પાચ શાલ્યક્ષનોં કો ફિર ડસને લેલિયા ।

(ગેણ્હિત્તા એગતમવક્રમઙ્) લેકર ફિર વહ વહા સે એકાન્ત
સ્થાન મે ચલી ગઈ । (એગતમવક્રમિયાએ હમેયારુવે અઙ્ગત્થિએ ૦)
વહા ઓકર ડસને એમા વિચાર કિયા-(પવ સ્વલુ તાયાણ કોઢ્ઢાગારંસિ
વહવે પલ્લાસાલિ ણ પઙ્કિપુણ્ણા ચિટ્ઠતિ) તાત-શ્વશુરજી-કે કોઢ્ઢાગાર
મેં-અનેક ચાવલો કે પલ્લકા ભરેહુએ રક્ષે હૈં । યહા પલ્લકા એક પ્રમાણ
વિશેષ કા નામ હૈં । યહ ૩૥) મન કા હોતા હૈં । ત જયાણ મમ તાઓ

આપીને તેમને જવાની આજ્ઞા આપી (તએણ સા ઉજ્જિઙ્ઘા ધણ્ણસ્સ તદ્વત્તિ
એયમદ્ધ પઙ્કિસુણેઙ્) જતી વખતે મોટા પુત્રની વધૂ ઉજ્જિઙ્ઘાએ ધન્ય સાર્થ
વાહને ' સાઙ્ ' (તથાસ્તુ) આમ કહીને તેની આજ્ઞાને સ્વીકારી (પઙ્કિસુણિત્તા
ધણ્ણસ્સ સત્થવાહસ્સ હત્થાઓ તે પચ સાલિઅક્કલ્લએ ગેણ્હઙ્) આજ્ઞા સ્વીકાર્યા પછી
ધન્ય સાર્થવાહના હાથથી તેમણે પાચ શાલિકણ્ણો લઈ લીધા ।

(ગેણ્હિત્તા એગતમવક્રમઙ્) શાલિકણ્ણો ને, લઈને તે ત્યાંથી એકાન્ત સ્થાન
તરફ જતી રહી (એગતમવક્રમિયાએ હમેયારુવે અઙ્ગત્થિએ ૦) ત્યાં એક તરફ
આવીને તેણે વિચાર કર્યો-(એવ સ્વલુ તાયાણ કોઢ્ઢાગારંસિ વહવે પલ્લાસાલિ
પઙ્કિપુણ્ણા ચિટ્ઠતિ) " મારા સસરાના કોઢ્ઢારમા એખાના ઘણા પલ્લકા ભરેલા
છે (પલ્લકા એક પ્રમાણ વિશેષનું નામ છે તે જા મળુનું હોય છે) (ત

ध्यात्मिक-आत्माश्रेय चिन्तितः प्रार्थितः मनोगत सकल्पः समुदपद्यत, एव खलु मा तात श्वसुरः ' इमस्स ' एतेषा मित्रज्ञातिप्रमुखाणा ' पुरओ ' पुरतः-समक्ष पुनश्चतसृणां स्नुषाणा कुलगृहवर्गस्य पुरतोऽग्रे शब्दयित्वा चैवमवादीत् वक्ष्यमाण-रीत्या मा कथितवान् त्व खलु ' पुत्ता ' हे पुत्रि ! मम हस्तादिमान् पञ्चशालि-कणान् गृहाण गृहीत्वा आनुपूर्व्यां सरक्षन्ती सगोपायन्ती निहर, यावद् यदाऽह पुनर्याचयेय तदा खलु त्व मह्यमिमान् पञ्चशाल्यक्षतान् ' पडिदिज्जाएज्जासि ' प्रति-दद्याः प्रति समर्पयेः, इति कथयित्वा मम हस्ते पञ्चशालिकणा ददाति ' त-भवि-यव्व मेत्थ कारणेण ' तस्माद्भवितव्यमत्र किञ्चित्कारणमित्येव ' सपेहेइ ' सपेक्षते -पर्यालोचयति विचारयतीत्यर्थः ' सपेहिच्चा ' सपेक्ष्य-पर्यालोच्य ' ते ' तान्

उसने वे ले लिया । लेने के बाद उसे ऐसा विचार आया (एव खलु मम ताओ इमस्स मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हा ण कुलगरवग्गस्स य पुरओ सदावेत्ता एव वयासी) कि ये मेरे तात-श्वसुर-जो मुझे इस मित्र ज्ञाति-आदि मडली के समक्ष बुलाकर इसतरह कह रहे हैं (तुमण्ण पुत्ता ! मम हत्थाओ जाव पडि दिज्जाएज्जासि त्तिकद्दु मम हत्थसि पच सालि अक्खए दलयइ त भवियव्वमेत्थ कारणेण) कि " हे पुत्रि ! तुम मेरे हाथसे पांच शाल्यक्षतो को लो और लेकर इन्हे सुरक्षित देखो । जब मैं तुम से इन्हे पीछे वापिस मागू तो तुम इन पांचो शाल्यक्षतोको मुझे समर्पित कर देना । सो ऐसा कहकर जो ये पांच शाल्यक्षतो को मुझे दे रहे हैं तो इस विषय में कोई न कोई कारण अवश्य होना चाहिये (त्तिकद्दु एव सपेहेइ, सपेहिच्चा ते पच सालि

હણોને લીધા અને ત્યાર બાદ તેને આ બાતનો વિચાર ઉદ્ભવ્યો-(એવ
ખલુ મમ તાઓ ઇમસ્સ મિત્તણાઇ ચઉણ્હ ય સુણ્હાણ કુલગરવગ્ગાસ્સ ય પુરઓ
સદાવેત્તા એવ વયાસી) ' મારા સસરા પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે તેમજ આરે
પુત્રવધૂઓ ના માતાપિતા વગેરેની સામે મને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહી
રહ્યા છે-(તુમણ્ણ પુત્તા ! મમ હત્થાઓ જાવ પડિદિજ્જાએજ્જાસિ ત્તિ કદ્દુ
મમ હત્થસિ પચસાલિ અક્ખએ દલયઇ ત ભવિયવ્વમેત્થકારણેણ) " હે પુત્રિ !
આ પાંચ શાલિકણો તમે મારી પાસેથી લો અને લઇને એમને સલાખીને
રાખો ત્યારે હું તમારી પાસેથી શાલિકણો માગુ ત્યારે આ પાંચે શાલિકણો
તમે મને પાછા આપતો આમ કહીને મને આ શાલિકણો આપી રહ્યા છે તો
એની પાછળ ગમેતે કારણ તો હોય જ બેઠ્યો (ત્તિ કદ્દુ એવ સપેહેइ
સપેહિત્તા તે પચસાલિ અક્ખએ સુદ્ધે વત્થે વઘइ ,વધિત્તા રચણ કરડિયાए પક્કિસવેइ

एजासि तिकट्टु मम हत्थसि पच सालि अक्खए दलयइ त भवि-
यवमेत्थ कारणेणं तिकट्टु एवं संपेहेइ सपेहिता ते पंच सालि
अक्खए सुद्धे वत्थे वधइ, वंधित्ता रयणकरंडियाए पक्खिवेइ
पक्खिवित्ता उसीसा मूले ठावेइ ठावित्ता तिसइ पडिजागर
माणी विहरइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—एव भोगवतिकामपि—भोगवती नाम्नी स्नुषामप्याह्वयति नवरं
'सा' भोगवती भ्रशुरप्रदत्तपञ्चशालिकणरूपानक्षतान् स्वस्थाने नीत्वा 'छोल्लेइ'
तुपरहितं करोति 'छोल्लित्ता' निप्लुपीकृत्य 'अणुगिलइ' अनुगिलति—भक्षयति,
'अणुगिलित्ता' अनुगिल्य भक्षयित्वा 'जाया' स्वमार्यसमयुक्ता जातावा
प्यासीत्—स्वगृहकार्यकरणे लग्नाऽभवदिति भावः । एवमनेनैव प्रकारेण रक्षिता-
मपि—रक्षितानाम्नीं तृतीया स्नुषामप्याह्वयति, आह्वय तेन पचसरूपाः शालिकणा
दत्ताः, नवर सा तान् गृह्णाति, रम गृहीत्वा चायमेतद्रूपः 'अज्झत्थिए' आ

‘एव भोगवतिया एवि’ इत्यादि । सूत्र

टीकार्थ—(एव भोगवतियाए वि) उसी तरह भोगवतिका नामकी
अपनी पुत्रवधू थी—उसे भी धन्यसार्थवाहने बुलाया (णवर) इसमें विशेष
पता केवल इतनी रही कि (सा छोल्लेइ) उसने उन शाल्यक्षतोंको अपने
स्थान पर लेजाकर तुषरहित किया (छोल्लित्ता अणुगिलइ) और तुष
रहित कर वहउन्हे खा गई (अणुगिलित्ता जाया) खाकर बादमें
अपने काम में लग गई । (एव रक्खिया वि) इसी प्रकार धन्यसार्थवाहने
अपनी तीसरी रक्षिता नामकी पुत्रवधू को बुलाया (णवर गेण्हइ, गेण्हित्ता
इमेयारूवे अज्झत्थिए०) बुलाकर उसे भी पांच शालिकणों को दिया ।

‘एव भोगवतियाएवि’ इत्यादि

टीकार्थ—(एव भोगवतियाए वि) आ प्रभाणु धन्यसार्थवाडे लोगवतिका
नामनी पोतानी श्रीण पुत्रवधूने ओलावी (णवर) लोगवतिकाना विषे वधारानु अ
अणुवु ओधअे डे (सा छोल्लेइ) तेणु शालिकणुने पोताना निवास स्थाने लध
अधने तुष (इतरा) वगरना बनाअा (छोल्लित्ता अणुगिलइ) अने शालिकणु
ना इतरा साइ करीने तेमने आध गध (अणुगिलित्ता जाया) आधा पधी
ते पोताना कामभा परोवाध गध (एव रक्खिया वि) आ रीते धन्यसार्थवाडे
पोतानी श्रीण पुत्रवधू रक्षिताने ओलावी (णवर गेण्हइ गेण्हित्ता इमेयारूवे
अज्झत्थिए) ओलावीने तेमने पणु पाय शालिकणु आभ्या रक्षित शालि-

वावेह वावित्ता दोच्चपि तच्चपि उक्खयनिहए करेह करित्ता
वाडिपक्खेव करेह करित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा अणु
पुब्बेणं संवडेह । तएणं ते कोडुविया रोहणीए एयमट्ट पडि-
सुणंति ते पंच सालि अक्खए गिण्हति गिण्हित्ता अणुपुब्बेण
सारक्खति संगोवति विहरति तएणं ते कोडुंविया पढम पाउ-
ससि महावुट्टिकायसि णिवइयंसि समाणंसि खुड्डायं केयारं
सुपरिकम्मियं करेति करित्ता ते पंच सालि अक्खए ववति
दुच्चपि तच्चपि उक्खयनिहए करेति करित्ता वाडिपरिक्खेव
करेति करित्ता अणुपुब्बेणं सारक्खेमाणा संगोवेमाणा सवडे
माणा विहरति ॥ सू० ५ ॥

टीका—‘ तएण से धण्णे ’ ततस्तदनन्तर खलु स धन्यसार्थवाह ‘ तहेव ’
तस्यैव मित्रादीन् यावच्चतुर्थी रोहिणिका स्नुषा शब्दयति, शब्दयित्वा ‘ जाव ’
यावच्छब्देन यथा तृतीया रक्षिका शाल्यक्षतविषये चिंतयति तथैव रोहिणिकापि

‘ तएण से धण्णे ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से धण्णे) उस धन्यसार्थवाह ने (तहेव
मित्त जाव चउत्थि रोहिणीय सुण्ह सदावेइ) उसी तरह मित्रादि
परिजनो के समक्ष अपनी चतुर्थ पुत्रवधू कि जिम्मा नाम रोहिणी था
उसे बुलाया (सदावित्ता जाव त भणियव्व) बुलाकर उसे पांच शाल्य-
क्षत देकर उन्हे सुरक्षित रखने के लिये उससे कहा ।

श्वसुर की बात सुनकर जिस प्रकार प्राप्त शाल्यक्षतों के विषय में
तृतीय पुत्रवधू रक्षिका ने विचार किया था उसी तरह इस चतुर्थ पुत्रवधू

‘ तएण से धण्णे ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्थार भाइ (से धण्णे) धन्य स र्थवाडे (तहेव मित्त जाव
चउत्थि रोहिणीय सुण्ह सदावेइ) आ प्रभाए ४ मित्र वगेरे स भधीओनी साभे
पोतानी ओथी पुत्र वधू रोडिणीने ओलावी (सदावित्ता जाव त भणियव्व)
ओलावीने तेणे पाथ शालिकणे आपीने तेओने सुरक्षित राखवा भाटे कहु-

ससगनी बात सालणीने रोडिणीओ त्रीण पुत्रवधू रक्षिकाओ नेम
विथरे कया तेमज तेणे पणु आ विधे धणी जलना विथारे कया छेवटे ते

પચ્ચશાલ્યક્ષતાન્ ' સુદ્ધે ' શુદ્ધે-પપિત્રે ' વત્થે ' વસ્ત્રે ' વપ્પદ્ધ ' વપ્પનાતિ-'વધિત્તા' વધ્ધા ' રચ્ચણકરહિયાણ ' રત્તનકરહિકાયા-રત્તનહિન્નિકાયા ' પવિલ્લવેદ્ધ ' પવિલ્લિ પતિ રક્ષાર્થે સ્થાપયત્તિ ' પવિલ્લવિત્તા ' પ્રતિલ્લિપ્પ સ્થાપયિત્વા ' ઉસીસામૂલ્લે ' ઉચ્છીર્ષકમૂલ્લે-ઉપધાનસ્યાધોભાગે ' ઠાવેદ્ધ ' સ્થાપયત્તિ ' ઠાવિત્તા ' સ્થાપયિત્વા ' તિસજ્જ ' ત્રિસધ્ધ-પ્રાતર્મધ્યાહ્નમાયકાલલક્ષણે ' પહિજાગરમાણી ' પ્રતિ જાગ્રતી તદ્દરક્ષાર્થે સાવધાનાસતી, ' વિહરદ્ધ ' વિહરતિ ॥ સુ. ૪ ॥

મૂલમ્-તણ્ણ સે ધણે સત્થવાહે તહેવમિત્ત જાવ ચઉર્થિ રોહિણીયં સુણ્ણ સદ્ધાવેદ્ધ સદ્ધાવિત્તા જાવ તં ભણિયઠ્ઠવ્વ एत्થ कारणेणं તં સેય ચ્છલુ મમ ણ્ણ પચ્ચ સાલિ અઠ્ઠલ્લણ સારલ્લલ્લ-માણીણ સગોલ્લેમાણીણ સવ્વહ્ધેમાણીણ તિકદ્ધુ ણ્ણ સપેહેદ્ધ સંપે-હિત્તા કુલલ્લણપુરિસે સદ્ધાવેદ્ધ સદ્ધાવિત્તા ણ્ણ વયાસી - તુલ્લભેણં દેવાણુપ્પિયા । ણ્ણ પંચ સાલિ અઠ્ઠલ્લણ ગિણ્ણહદ્ધ ગિણ્ણિહિત્તા પઢ્ઢન પાઉસંસિ મહાવુદ્ધિકાયાંસિ નિવ્વડ્ઢયસિ સમાણંસિ સુલ્લહાગં કેયાર સુપરિકમ્મિયં કરેદ્ધ કરિત્તા ઇમે પચ્ચ સાલિ અઠ્ઠલ્લણ

અઠ્ઠલ્લણ સુદ્ધે વત્થે વધ્ધદ્ધ, વધિત્તા રચ્ચણકરહિયાણ પવિલ્લવેદ્ધ, પવિલ્લિ વિત્તા ઉસીસામૂલ્લે ઠાવેદ્ધ, ઠાવિત્તા તિસજ્જ પહિજાગરમાણી વિહરદ્ધ) એસા જબ ઉસને વિચાર કિયા તો વિચાર કરકે ઉસને ઉન પાચ શાલ્ય ક્ષતોં કો શુદ્ધ વસ્ત્ર મે વાધા વાધકર ઉન્હ ફિર રત્તનનિર્મિત્ત એક હબ્બે મે રલ્લ દિયા । રલ્લકર ઉસ હબ્બે કો ઉસને ઉસીસે-કે નીચ્ચે ભાગ મેં સિરહાને કે અધોભાગ મેં રલ્લ દિયા । હસ તરહ વહ પ્રાતઃ મધ્યાન્હ ઓર સાયકાલ મેં હન તીનોં કાલો મેં ઉસકી સભાલ મે સાવધાન હોકર રહને લગી । સૂત્ર " ૪ "

પવિલ્લવિત્તા ઉસીસા મૂલ્લે ઠાવેદ્ધ ઠાવિત્તા તિસજ્જ પહિજાગરમાણી વિહરદ્ધ) આમ વિચારીને તેણે પાચ શાલિકણ્ણને શુદ્ધ વસ્ત્રમા બાધીને રત્તન બડેલી એક હાબલીમા મૂકી દીધા હાબલીમા મૂકીને તેણે તે હાબલીને પોતાના એ શીકાની નીચે મૂકી દીધી આ પ્રમાણે તે સવાર બપોર અને સાંજ આમ ત્રણે વખત તે હાબલીને સલાળીને રાખવા લાગી ॥ સૂત્ર ૪ ॥

‘खुडाग’ क्षुलक ‘कयार’ केदार = क्षेत्र वयारा, इति भाषा प्रसिद्ध ‘सुपरि
कम्मिय’ सुपरिकर्मित = शाल्यक्षतवपनयोग्य ‘करेह’ कुरुत, कृत्वा च ‘इमे’
इमान् पञ्चशाल्यक्षतान् ‘वावेह’ वपत प्ररोहार्थं क्षेत्रे प्रक्षिपत, उत्त्वा = क्षेत्रे वपन
कृत्वा द्वितीयमपि तृतीयमपि चार ‘उक्खयनिहए’ उत्खातनिहतान् क्षेत्रे जातान्
पुनस्तान् वर्धनार्थं द्वित्रियारम्-उत्पाटय अन्यत्र क्षेत्रे समारोपितान् ‘करेह’
कुरुत एकस्मात् स्थानादन्यस्थाने रोपयत ‘करित्ता’ कृत्वा-रोपयित्वा, ‘वाडि-
पडिक्खेव’ वाटिकापरिक्षेप = प्राकारान्तरेण वाटिका कुरुत कृत्वा सरक्षन्त,
सगोपायन्त आनुपूर्व्या = अनुक्रमेण ‘सवड्ढेह’ सवर्धयत ।

सुपरिकम्मिय करेह) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग इन पाच शालि अक्षतो
को लो-और लेकर जब सर्व प्रथम वर्षाकाल के प्रारम्भ में जलराशि
रूप अप्काय महा वृष्टिरूप से भूमि पर गिरे तो उस समय तुम छोटी
सी एक क्यारी में शालि अक्षतो को बोने के योग्य करो (करित्ता
इमे पच सालि अक्खए वावेह वावित्ता दोच्चपि तच्चपि उक्खय निहए
करेह, करित्ता वाडिपक्खेव करेह करित्ता सारक्खेमाणा सगोवेमाणा
अणुपुब्बेण सवड्ढेह) जब वह क्यारी अच्छी तरह से परिकर्मित हो
जावे तो उसमें इन पाच शालि अक्षतों को तुम लोग बो दो ।

बोकर दुवारा तिथारा उन्हें उत्खात निहत करो-अर्थात् जब वे
खेत में-क्यारी में-अकुररूप से उत्पन्न हो जावे तब उन्हें वृद्धिगत
करने के लिये वहा से उखाडो और फिर दूसरी जगह-क्यारी में उन्हें
आरोपित करो । इस तरह दो तीन बार करो । करके फिर उस खेत
को चाड़ी से परिवृत करो-प्राकार के आकार जैसी काटो की बाड़ से

हे देवानुप्रियो ! तमे आ पाच सालिक्खे दो अने वर्षाकाल ना प्रारम्भमा
अप्कायमहावृष्टि इमे जण वृष्टि थाय त्तारे तमे नानी सरणी अेक क्यारी
मे आ सालिक्खे वावी शके ते रीते योग्य णनावणे, (करित्ता इमे पच सालि
अक्खए वावेह वावित्ता दोच्चपि तच्चपि उक्खइ निहए करेह, करित्ता वाडि
पक्खेव करेह करित्ता सारक्खेमाणा सगोवेमाणा अणुपुब्बेण सवड्ढेह) क्यारी
ज्यारे ससम रीते तैयार थय जय त्तारे तेमा आ पाचे सालिक्खेने वावणे

वावीने भीण अने त्रीण वणत उत्थात निहत करे अेटले हे ज्यारे
शालिक्खे क्यारीमा णीगी जय त्तारे तेओना वधन भाटे ते स्थानेथी उपा-
डीने करी भीजे स्थाने शेषो आ प्रमाणे तमे जे त्रण वणत करे आभ
करीने तमे ते सालिक्खेवाणी क्यारीनी ओमेर काटाओनी वाड णनावे आ

વિવિધમ્કારેણ ચિન્તયતિ, 'ત મણિયજ્ઞં' તસ્માદ્વિતવ્યમત્ર કિંચિત્કારણેન મમ તાતેન શ્વસુરેણ મહા પચ શાલ્યક્ષતા દત્તા., તત્ર ધોડપિ હેતુરસ્તિ । 'ત' તદ્ તસ્માત્કારણાત્ 'સેય' શ્રેય સુખકરમેતદેવ સ્વલુ મમ 'એ' એતાન્ પચ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ સરક્ષન્ત્યાઃ । સગોપાયન્ત્યાઃ સર્વદ્વયન્ત્યાઃ ઇતિ નિશ્ચિત્ય એવ સપ્રેક્ષતે=પર્યાલોચયતિ, સપ્રેક્ષ્ય ચ બુલગૃહપુરુષાન્=કૃપિકર્મનિપુણનિજકુટુમ્બપુરુષાન્ શબ્દયતિ=આહ્વયતિ શબ્દયિત્વા ચેવ રક્ષ્યમાણમ્કારેણાવાદીત્, હે દેવાનુપિયાઃ યૂય સ્વલુ એતાન્ પચશાલ્યક્ષતાન્ ગૃહીત ગૃહીત્વા 'પદ્મપાડસસિ' પ્રથમ માઠુપિ વર્ષાકાલપ્રારમ્ભસમયે 'મહાબુદ્ધિકાયસિ' મહાઘટ્ટિકાયે 'નિવ્રજ્યસિ સમાણસિ' નિપતિતે સતિ મહાઘટ્ટિરૂપેણ જલરાશિ રૂપેડ્પ્રકાયે ભૂમો નિપતિતે સતીત્યર્થઃ

રોહિણીકાને ભી વિવિધરૂપ સે વિચાર કિયા । અન્ત મેં હસ નિષ્કર્ષ પર વહ પહુંચી કિ શ્વસુરજીને જો ચે પાંચ શાલ્યક્ષત મુજે દિયે હૈ— ઓર હનકી રક્ષા આદિ કરને કે વિષય મેં જો મુજ્જ સે કહા હૈ સો હસમે કોઈ ન કોઈ કારણ અવશ્ય હૈ । (ત સેય સ્વલુ મમ એ પચ સાલિ અક્ષય સારક્ષેમાણી એ સગોવેમાણી એ સર્વદ્વેમાણી એ ત્તિકદ્દુ એવ સપે હેઈ) હસલિયે મુજે યહી સુખકર હૈ કિ મેં હન પાચ શાલ્યક્ષતોં કી રક્ષા કરૂં હન કા સગોપન ઓર સર્વદ્વન કરૂં । એસા નિશ્ચય કર ઉસને યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે વિચાર કિયા । (સપેહિત્તા કુલઘરપુરિસે સદાવેઈ) વિચાર કર ફિર વાદ મેં ઉસને કૃપિકર્મ કરને મેં નિપુણ અપને કુટુમ્બ કે પુરુષો કો બુલાયા । (સદાવિત્તા એવ વયાસી) બુલા કર એસા કહા— (તુભેણ દેવાણુપિયા ! એ પચ સાલિ અક્ષય ગિળ્દહ ગિળિહત્તા પદ્મપાડસસિ મહાબુદ્ધિકાયસિ નિવ્રજ્યસિ સમાણસિ સુહાગ કેયાર

એ નિશ્ચય ઉપર આવી કે સસરાએ મને પાચ શાલીકણે આપ્યા છે અને તેઓની રક્ષામાટે મને જે કંઈ કહ્યું છે તેની પાછળ કંઈને કંઈ કારણ તો થોડકસ હોયુ જ બેઠાંએ (ત સેય સ્વલુ મમ એ પચ સાલિ અક્ષય સારક્ષેમાણી એ સગોવેમાણી એ સર્વદ્વેમાણી એ ત્તિકદ્દુ એવ સપેહેઈ) તો મારી એજ ફરજ છે કે હું તેઓની રક્ષા કરૂં તેઓનું સગોપન તેમજ સર્વદ્વન કરૂં આ પ્રમાણે શેડિણી એ પાચ શાલિકણે ને માટે વિચાર કર્યો (સપેહિત્તા કુલઘરપુરિસે સદાવેઈ) વિચાર કરીને તેણે કૃપિકર્મ કરવામા એટલે કે એ વામા ચતુર એવા પોતાના જ કુટુમ્બના માણસોને બોલાવ્યા (સદાવિત્તા એવ વયાસી) બોલાવીને તેણે આ રીતે કહ્યું—

(તુભેણ દેવાણુપિયા ! એ પચ સાલિ અક્ષય ગિળ્દહ ગિળિહત્તા પદ્મ પાડસસિ મહાબુદ્ધિકાયસિ નિવ્રજ્યસિ સમાણસિ સુહાગ કેયાર સુપરિકમ્મિય કરેઈ)

मूलम्—तएणं ते साली अणुपुब्बेणं सारविखज्जमाणा संगोविज्जमाणा सवड्ढिज्जमाणा साली जाया किण्हा किण्हो भासा जाव निउरंवमूया पासार्इया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । तएण साली पत्तिया वत्तिया गट्ठिभया पसूया आगयगंधा खीराइया वद्धफला पक्का परियागया सल्लइया पत्तइया हरिय-पव्वकडा जाया यावि होत्था, तएण ते कोडुंविया ते सालिए पत्तिए जाव सल्लइयपत्तइए जाणित्ता तिक्खेहिं णव पज्जण-एहि असियएहि लुणेति लुणित्ता करयलमलिए करेति, करित्ता पुणति, तत्थण चोवखाणं सूयाणं अवखडाणं अप्फुडियाण छड्डुछडापूयाणं सालीण मागहए पत्थए जाए । तएण ते कोडुविया ते साली णवएसु घडएसु पविखवति पविखवित्ता

डुमाणा विहरति) जब सर्व प्रथम वर्षा काल के प्रारंभ में जलराशी रूप अप्रकाय महा वृष्टि के रूप भूमि पर बरसा तब उन लोगो ने शालि वपन के योग्य एक छोटा क्यारी बनाया । बनाकर उस में उन पांच शालि अक्षतों को बो दिया । बाद में जब वे अक्षुर के रूप में उत्पन्न हो गये—तब उन्हें मूलस्थान से उगवाड कर दूसरे स्थान में आरोपित कर दिया । इस तरह दो तीन बार उन्हें उगवाड और आरोपित किया पश्चात् उस खेत को बाड़ से परिवृत कर दिया । इस प्रकार कर के उन सब ने क्रमशः उनकी रक्षा की-उपद्रवों से उन्हें बचाया और उन्हें बढ़ाया ॥ सू० ५ ॥

प्रारंभमा न्यारे सो प्रथम अप्पजाय भडावृष्टि ना इपमा णव वर्षा थर्ध त्यारे ते छोडोअे शालिकल्लोने वाववा योग्य अेवी अे- नानी सरणी क्यारी जनावी नानी क्यारी जनावीने तेओअे तेमा पाच शालिकल्लोने वाववा न्यारे शालिकल्लो अ कुरित थया त्यारे तेओअे तेमना पोताना भूण स्थानेथी उपाडीने भील स्थाने रोपी दीधा त्यार जाड क्यारीने तेओअे काटानी वाड करी दीधी आ प्रमाणे ते छोडोअे यथाकमे वावेला शालिकल्लोनी रक्षा करी, उपद्रवेथी तेमनी सलाण राणी अने तेमनु वधेन कथुं ॥ सूत्र “ ५ ”

ततस्तदनन्तर खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः रोहिण्याः एतमर्थं शाल्यक्षतसवर्धनरूपमर्थं प्रति शृण्वन्ति-रोहिणी कथनानुसारेण स्वीकुर्वन्ति स्वीकृत्य च तान् पञ्च शाल्यक्षतान् गृह्णन्ति गृहीत्या चानुपूर्वेण क्रमेण सरक्षन्ति सगोपायन्ति, 'विहरति' आसते । ततस्तदनन्तर खलु ते कौटुम्बिकाः पुरुषाः प्रथममावृषि महावृष्टिकाये निपतिते सति क्षुल्लक वेदार सुपरिमित शाल्यपनयोग्य कुर्वन्ति कृत्वा च तान् पञ्च शाल्यक्षतान् उपन्ति द्वितीयमपि तृतीयमपि द्वित्रिवार 'उक्खय निहण' उखात निहतान् मूलस्थानादुत्पाद्य अन्यत्र खाने समारोपितान् कुर्वन्ति कृत्वा वाटिका परिक्षेप कुर्वन्ति कृत्वा च आनुपूर्व्या अनुक्रमेण-सरक्षन्तः-सम्यक् रक्षा कुर्वन्तः सगोपायन्तः सवर्धयन्तो विहरन्ति ॥ सू० ५ ॥

उसे घेर दो-और घेर कर उस की रक्षा करो-उपद्रवों से उसे बचावो इस प्रकार क्रमशः इन शालि अक्षतों को तुम लोग बढाओ । (तएण ते कौटुम्बिया रोहिणीए एयमट्ठ पडिसुणति ते पचसालिअक्खए गिण्हति गिण्हत्ता अणुपुब्बेण सारक्खेति स गोवति विहरति) रोहिणिका के इस शालि अक्षत वर्धनरूप अर्थ को उन कौटुम्बिक पुरुषों ने स्वीकार कर लिया और उन पाच शालि अक्षतों को उससे ले लिया । लेकर रोहिणीका के कहने के अनुसार क्रमशः उन सब ने रक्षा की और उपद्रवों से उन्हें बचाया ।

(तएण ते कौटुम्बिया पढमापाउससि महा बुद्धिकायसि णिवइयसि समाणसि खुड्डीय केयार सुपरिकम्मिय करंति, करित्ता ते पच सालि अक्खए ववति दुच्चपि तच्चपि उक्खय निहण करंति, करित्ता वाडि परिकखेव करंति, करित्ता अणुपुब्बेण सारक्खेमाणा सगोवेमाणा सब-

प्रमाणे तमे ते वावेला शालिकल्लोनी विविध रीते, स, लाण पूर्वक रक्षा करता करता तेथोनु वर्धन करे । (तएण ते कौटुम्बिया रोहिणीए एयमट्ठ पडिसुणति ते पच सालि अक्खए गिण्हति गिण्हत्ता अणुपुब्बेण सारक्खेति स गोवति विहरति) रोहिणीना-शालिकल्लोना, वर्धन माटेना-पधा सूयने, कौटुम्बिक पुरुषोऽपि स्वीकार्या, अने पाचे शालिकल्लोने तेमनी पासेथी लध दीधा-लधने रोहिणीनी सूयना मुज्ज्ज शालिकल्लो नी तेमले उपद्रवोथी रक्षा करी

(तएण ते कौटुम्बिया पढमापाउससि महाबुद्धिहायसि णिवइयसि समाणसि खुड्डीय केयार सुपरिकम्मिय करेति, करित्ता ते पचसालि अक्खए ववति दुच्चपि तच्चपि अक्खए निहण करेति, करित्ता वाडिपरिकखेव करेति करित्ता अणुपुब्बेण सारक्खेमाणा सगोवेमाणा सबद्धेमाणा विहरति) ५५) ४।७।१।

‘मेघ निउरभूया’ मेघनिकुरम्बभूता अन्योन्यशाखाप्रशाखानुप्रवेशात् घन निरतरच्छायरमणीयमेघाना निकुरवः समूहस्तद्गतः शोभाशालिन इत्यर्थः अतएव ‘पासाईया’ प्रासादीयाः दर्शकमनः प्रसन्नता हेतुत्वात् ‘दरिसणिज्जा’ दर्शनीयाः नेत्रानन्दकारित्वात् ‘अभिरूवा’ अभिरूपाः कमनीयत्वात् ‘पडिरूवा’ प्रतिरूपा-सर्वथा चित्तहारित्वात् । ततस्तदनन्तर खलु ‘साली’ शालय ‘पत्तिया’ पत्रिता-पत्रयुक्ता जाता ‘वत्तिताः’-वृत्ताकारतया वर्तुला जाता नालरूपतया शाखा दिना समतया वा वृत्तभाव प्राप्ताः ‘गब्भिया’ गर्भिता प्रवर्धनानन्तर जातगर्भाः= अन्तः सञ्जातमञ्जरिका इत्यर्थः ‘पसूयाः’ पसूताः=निस्सृतमञ्जरिका ‘आगय-गधा’ आगतगन्धाः=सर्वतः प्रसस्तसुरभिगन्धाः ‘खीराइया’ क्षीरकिताः=समुत्पन्नदुग्धा, ‘वद्धकला’ ‘वद्धफलाः’ क्षीरस्य कणरूपेण परिणामादुत्पन्नफला ‘पक्का’ पक्वाः कणानां परिपाकात् परिपुष्टा ‘परियागया’ पर्यायागताः=सर्वावयवेन पक्कापस्थामुपगताः । ‘सल्लइया’ गलाकिताः=शुष्कपत्रत्वेन

निकुरभूया, पासाईया, दरसणिज्जा, अभिरूवा पडिरूवा) वर्ण से वह काली हो गई आभा भी उसकी काली निकलने लगी । यावत् वह मेघ निकुरम्ब समूह जैसी हो गई ।

शाखा प्रशाखाओं के परस्पर में प्रवेश से, सान्द्र और अन्तर रहित छाया से रमणीय मेघों के समूह की तरह वह शोभित होने लगी । जो भी कोई उसे देखता तो उसका मन आनन्द से खिल उठता । नेत्रों को उसके दर्शन से बहुत अधिक शीतलता प्राप्त होती । इस लिये वह कमनीय और प्रतिरूप बन रही थी । चित्ताकर्षक थी और बहुत अधिक मनोहारी थी । (तएण साली पत्तिया, वत्तिया, गब्भिया, पसूया, आगय गधा खीराइया, वद्धकला, पक्का, पडियागया, सल्लइया, पत्तइया हरियपव्वकडा, जाया यावि होत्थो) धीरे २ समयानुसार वह

ते श्याम रजना थउ गया, तेमनाभाथी डाणी आला इट्ठा लागी यावत् ते मेघनीकुरण जेवा थउ गया

आ रीते वावेली ते, उगार शाखा प्रशाखओंना प्रवेशथी माद्र तेमज्ज सधन छायाथी रमणीय मेघसमूहा जेवी शोभवा लागी जे केध तेना सौदर्य ने जेतु त्थारे तेनु मन डर्पधेनु थउने नाथी उठतु डतु तेने जेवाथी नेत्रा शीतलता अनुभवता उता जेथी ते कमनीय अने प्रतिरूप लागती उती ते चित्तने आकर्षनारी तेमज्ज भूणज्ज मनोहर उती (तएण साली पत्तिया, वत्तिया, गब्भिया, पसूया आगमगधा, खीराइया वद्धकला पक्कापडियागया, सल्लइया

उवलिपंति, उवलिपित्ता लंछियमुद्दिष्ट करेति, करित्ता कोट्टा-
गारस्स एगदेसंसि ठावेति, ठावित्ता सारक्खेमाणा सगोवेमाणा
विहरंति । तएण ते कोडुविया दोच्चंसि वासरत्तसि पढम
पाउसंसि महावुट्टिकायंसि निवइयसि खुड्डाग केयार सुपरिक-
म्मिय निवइयसि खुड्डागं केयार सुपरिकम्मियंकरेति ते साली
ववति दोच्चपि तच्चपि उक्खयणिहए जाव लुणेति जाव चलण
तलमलिष्ट करेति, करेत्ता पुणंति तत्थण सालीण वहवे कुडवा
जाव एगदेसंसि ठावेति ठावित्ता सारक्खेमाणा सगोवेमाणा
विहरति। तएण ते कोडुविया तच्चंसि वा सासरत्तसि महावुट्टिकायंसि
निवइयंसि वहवे केयारे सुपरिकम्मिष्ट जाव लुणेति लुणत्ता
संवहति संवहित्ता खलय करेति खलय करित्ता मलेति जाव
वहवे कुभा जाया, तएण ते कोडुविया साली कोट्टागारंसि
पविस्सवंति जाव विहरति अउत्थे वासास्से वहवे कुंभसया
जाया ॥ सू० ६ ॥

टीका-ततस्तदनन्तर खलु ते शालय आनुव्या सरक्ष्यमाणाःसंगोप्यमानाः
संवर्द्धयमानाः शालय ' जाया ' जाताः-निष्पन्नाः किंभूताः ? किण्हा ' कृष्णा-
वर्णतः श्यामाः ' किण्होभासा ' कृष्णावभासाः कृष्णच्छायाः श्यामकान्तयः यावद्

‘ तएण ते साली अणुपुब्बेण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से साली) अन्य खेत में आरोपित की
गई वह साली (अणुपुब्बेण) क्रम २ से (सारक्खिज्जमाणा, सगोविज्ज
माणा सबद्धिज्जमाणा साली जाया) उन लोगो से रक्षितकी जाकर संगो-
पित की जाकर बढ़ाई गई सो खूब बढ़ गई (किण्हा किण्हो भासा, जाव

‘ तएण ते साली अणुपुब्बेण ’ इत्यादि

टीकार्थ-(तएण) त्थारभाट (ते साली) जीना जेतरभा उपाडीने वावेदा शादि
अणु (अणुपुब्बेण) यथाक्रमे (सारक्खिज्जमाणा स गोविज्जमाणा, सबद्धिज्जमाणा
सालीजाया) तेजोमयी रक्षित, संगोपित तेभञ्ज वर्धित यथने पूज्य वृद्धि
प्राप्त्या (किण्हा किण्होभासा जाव निउर वभूया, पासाईया दरसणिज्जा, अभिरूपा)

पत्रितान् यावत् शल्यक्रित पत्रक्रितान् ज्ञात्वा तीक्ष्णैः ' णवपज्जणएहि ' नवपा
यनकै-नवानि=नवीनानि पायनकानि=लोहकारेण तापितानि कुट्टितानि तीक्ष्णवारी
कृतानि कृत्वा पुनस्तापयित्वा जले निरोलनानि येषां तानि, तैः ' असियएहि '
' असिय ' इति दात्रार्थकोऽयदेशी शब्दः दात्ररित्यर्थः, लुनन्ति=छेदयन्ति, लवित्वा
' करतलमलिए ' करतलमृदितान् कर लत्रर्पणेतान् कुर्वन्ति, शालिकणान् मज्ज
रीतो निस्सारयन्तीत्यर्थः ' पुणति ' पुनन्ति पलालादीनपसारयन्ति तत्र खलु=

(तण्ण ते कौडुविया ते सालीए पन्तिए जाव सल्लइय पत्तइए जाणित्तो तिक्खे हि णवपज्जणएहि अस्सिएहि लुणेति, लुणित्ता करयलमलिए करेति, करित्ता पुणति, तत्थणं चोक्खाण सयाण अक्ख-
डाण अप्फुडियाण छड्डछडापूयाण सालीण मागहए पत्थए जाए) इस
तरह जब वह शालि-सस्य पूर्णरूप पककर तयार हो गई और जब उन
कौटुम्बिक पुरुषोंने उसे पत्रित यावत् शल्यक्रित पत्रांकिन-पके हुए पत्तो
वाली और शालि से युक्त देखा तो उसे पूर्ण पकी हुई जानकर तीक्ष्ण
नव पायनक वाले दात्रों से-हैसियोसे उन लोगो ने उसे काट लिया ।

“ लुहार के द्वारा जो तापित और कुट्टित कर पहिले तीक्ष्ण धारी
वाले बनाये गये थे हैं और बाद में फिर तापित कर जलमे बुझाये गये
हैं ” यह “ नव पायनक ” इस शब्द का अर्थ है । यह “ आसिएहि ”
यह हैसिया (दात्र) वाचक देशीय शब्द है । काटकर फिर उन्होंने
उसशालि मजरी मे से हाथो से मर्दित कर शालिकणों को निकाला ।

(तण्ण ते कौडुविया ते सालीए पन्तिए जाव सल्लइय पत्तइए जाणित्तो
तिक्खेहि णवपज्जणएहि आसियएहि लुणेति लुणित्ता करयलमलिए करेति, करित्ता
पुणति तत्थण चोक्खाण सयाण अक्खडाण अप्फुडियाण छड्डछडापूयाण साली
ण मागहए पत्थए जाए) आ प्रमाणे न्याये ते शालिधान् पुरुषे परिपक्व
थर्धने तैथ २ थर्ध गध त्थारे कौटुम्बिक पुरुषोऽन्ते तेने पत्रित यावत् शल्यक्रित
पत्रांकिन ओट्ठे डे पाडेला पाडडा वाणी नेऽ त्थारे तेने पूर्णइये परिपक्व
थयेली न्णाने तीक्ष्ण धारवाणी हातरडीथा तेने कापी नाणी

“ लुहार वडे तपावी तेमज् टीपीने पडेला तीक्ष्ण धारवणा जनाववाभा
आवे अने त्या बाद इरी तपावाते पाणीभा डडा करवाभा आवे तेने ' नव
पायनक ' डडेवाभा आवे छे

‘ आमिओहि ’ आ दात्र (हातरडी) वाचक देशी गण्ट छे

डागरने कापीने तेओऽन्ते शालिमजरीओने डयेणीथी मसणीने शालीकणो
छटा पड्या भूसाने तेओऽन्ते त्याथी हर ड्यु आ रीते ते स्थान भूसु

શલાકારૂપેણાવસ્થિતાઃ ' પત્તશ્યા ' પત્રક્રિતાઃ=પત્રપત્રાણાં પ્રાયશ્ચ ક્ષરણાદરૂપ
પત્રાઃ, ' હરિયપવ્યકઢા ' હરિતર્પકાણ્ડાઃ-હરિતાનિ=પરિપક્વતયા હરિતાલવર્ણાનિ
આશુકાનિ પ્રાદુર્ભવદકુરત્પીતવર્ણાનિ - પર્વકાણ્ડાનિ યેષા તે તથા, જાતાશ્ચાપ્ય
ભવન્ સમ્પૂર્ણતયા પરિપક્વા જાતા इत्यर्थः । ततः खलु ते कौटुम्बिका तान् शालीन्

શાલી-ધાન્ય-પત્ર યુક્ત હોને લગી, આકારમેં ગોલ ર દિશ્વલાઈ દેને
લગી । નાલ કે ડપર શાલા આદિ-અવયવ સમાન રૂપ સે નીચેકી ઓર
છત્તો કે સમાન છુક ગયે ઘે ઇસલિયે વહ આકાર મે ગોલાકાર દિશ્વલાઈ
દેતી થી । જવ વહ અચ્છી તરહ વર્ધિત હો ચુકી તવ ડસમેં ખીતર
મજરી આગઈ ઓર વાહિર નિકલ આઈ । ચારો ઓર સુગધિ ડસમે સે
ફેલને લગી ।

ધીરે ર ડસ મજરીમે દૂધ મા ઉત્પન્ન હો ગયા । ઓર વહ દુગ્ધ
કણરૂપ સે પરિણમ ગયા ઇસસે ડસ મજરી મેં અન્ન ખી આગયે । વે
અન્નકે દાને ખી પરિપક્વ હો ગયે સપૂર્ણ રૂપ સે અચ્છી તરહ પકકર
પુષ્ટ હો ગયે । ઇસ તરહ જવ વહ શાલી-ધાન્ય પકકર તૈયાર હો ગઈ
-તવ ડસકે પત્તે શુષ્ક હો વહે ઓર વે શલાઈ કે આકાર મેં ડસમેં
લટકને લગે । ધીરે ર કુછ ર પકે હુણ પત્તે ડસમેં સે ક્ષરિત ખી હો
ગયે । ઇસલિયે ડસમેં વહુત કમ પત્તે લગે હુણ રહ ગયે । ડસકે પર્વ
કાણ્ડ પરિપક્વ હોને કે કારણ પ્રાદુર્ભવિત અકુર કે સમાન પીલે હો ગયે ।

પત્તશ્યા, હરિય પવ્યકઢા જાયા યાત્રિ હોત્યા) સમય જતા યથાક્રમે તે ડાગર
પાદડા વાળી થવા માડી આકારમા તે ગોળ દેખાવા લાગી ડાગરની દાડીની
ઉપર નાની શાખાઓ વગેરે અવયવો સરખી રીતે છતરીના આકારમા નીચે
નમેલા હતા એથી જ તે આકારમા ગોળ દેખાતી હતી જ્યારે તે સારી પેઠે
મોટી થઈ ગઈ ત્યારે તેમા મજરીઓ નીકળી અને તેની સુવાસ ચોમેર પ્રસરી ગઈ

ધીમે ધીમે મજરીઓમા દૂધ ઉત્પન્ન થયું અને યથા સમયે તે દૂધ
તેમાજ કણોના રૂપમા બધાવા લાગ્યું આમ સમય જતા શાલિકણો સપૂર્ણ
રીતે પરિપક્વ તેમજ પુષ્ટ થઈ ગયા આ રીતે જ્યારે તે શાલિધાન્ય નો પાક
તૈયાર થઈ ગયો ત્યારે તેના પાદડાસૂકાઈ ગયા અને તે શલાકા (સળી) ના
આકારે તેમા લટકવા લાગ્યા તેમા લટકવા લાગ્યા ધીમે ધીમે પાકેલા પાદડા
તેમાથી ખરવા લાગ્યા એથી ખૂબજ થોડા પાદડા તેની ઉપર રહી ગયા
તેનો પર્વકાંડ (છોડની બે ગાઠ વચ્ચેનો ભાગ) પરિપક્વ થઈ જવાથી પ્રાદુ
ર્ભવિત અકુરની જેમ પીળો થઈ ગયો હતો

चिह्नेन चिह्निताः, मुद्रिता = नाममुद्रादिनाऽङ्कितास्तान् कुर्वन्ति, कृत्वा 'कोट्टागारस्स' कोट्टागाहस्य एकदेशे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा सरक्षन्तः सगोपायन्तो विहरन्ति ।

ततः खलु ते कौटुम्बिका द्वितीये वर्षारारे द्वितीयवर्षसम्बन्धि चातुर्मास्यकाले प्रथममावृष्टिं प्रावृष्ट्वा प्रारम्भसमये महावृष्टिकाये, निपतिते महावर्षार्या सत्यां क्षुल्लक केदार 'सुपरिकम्मियं' सुपरिकर्मित = विशिष्ट *लक्षणमृत्तिकादिदानेन हलकुदायादिनोत्खनने च सस्कारित कुर्वन्ति, कृत्वा तान् शालीन् वपन्ति 'दोच्चपि तच्चपि' द्विरपि त्रिरपि = द्वित्रिशारमापि 'उक्खयनिहए' उत्खातनिहतान् = उत्पाटितरोपितान् यावत् लुनन्ति, यावत् चरणतलमुद्रितान् कुर्वन्ति, कृत्वा पुनन्ति

से चिह्नित कर उनपर नामकी मुहर लगा दी । पश्चात् भंडार में उन्हें एक ओर रख दिया । समय २ पर वे लोग उनकी रक्षा और सभाल भी करते रहे । (तएण ते कौटुम्बिया दोच्चपि चासारत्तस्सि पढम पाउसस्सि महावुद्धिकायस्सि निवड्यस्सि खुड्ढाग केयार सुपरिकम्मिय करेति) इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषोंने द्वितीय वर्ष सम्बन्धी चौमासा जब लगा - तव - सर्व प्रथम महावृष्टि के रूप में जल के बरस जाने पर, हल से जोत कर तथा कुद्दाल आदि से खोदकर एक छोटा सा खेत तैयार किया । उसमें चिकनी और नरम मिट्टी डालकर उसे बहुत ही अच्छा शालि उपजाने के योग्य बना दिया । (ते शालि वपन्ति, दोच्चपि तच्चपि उक्खय निहए जाव लुणेति) बादमें उस शाली को उसमें बो दिया ।

पहिले की तरह जब वह धान्य अकुरित हो आई तब उन्होंने उसे वहां से उखाड़ कर दूसरी जगह आरोपित कर दिया । इस तरह यह

भूझी दीधा यथा समय तेओ तेमनी सभाण पणु गण्णता डता (तएण ते कौटुम्बिया दोच्चपि चासारत्तस्सि पढम पाउसस्सि महावुद्धिकायस्सि निवड्यस्सि खुड्ढाग केयार सुपरिकम्मिय करेति) तयार पछी कौटुम्बिक पुरुषोओ णीत्ता वपे ओमाभाना द्विपसो आण्ण्य तयारे सौ पडेल्ला भड्ढावृष्टिना इपे जणवषा यथा भाह डण्णथी जेडाने तेमज्ज डेड्ढाणी वगेरे थी ओद्धीने ओक नानु जेतार तैयार उरुं नेमा थीडण्णी अने डेमण माटी नाणीने तेने भूणज्ज सरस्स शालि (अगार) वाववा योग्ग ण्णावी दीधु (ते शालीवपन्ति, दोच्चपि तच्चपि उक्खय निहए जाव लुणेति) तयार पछी जेतारमा शालिनेवावी दीधी

पडेल्लानी जेम अयारे शालिना अकुरे भड्ढार नीडण्ण्य तयारे कौटुम्बिक भाणुसो ओ तेना छोडाने त्याथी उपाडीने णीत्ता स्थाने रेपी दीधा आ

तस्मिन् स्थाने ' चोख्वाण ' चोक्षाण=रुचरनिस्मारणेन स्वच्छानाम् ' सुड्याण ' सूक्तानां=शूकयुक्तानां वपनयोग्यानामित्यर्थः ' अखडाण ' अखडाणाम्=अक्षतानाम् ' अफुडियाण ' अफुटितानाम्=भ्रुटितानाम् ' उड्डडापूयाण ' उड्डडापूतानाम्- ' छड-उड ' शब्दपूर्वरु सर्पादिना शोधितानां शालीनां शालिकणानां ' मागइए ' मागधकः- मगधदेशप्रसिद्ध, ' पत्थए ' प्रस्थकः=मानविशेषो जातः, मागधप्रस्थपरिमिता शालयः सजाता इत्यर्थः ।

ततः खज्जु ते कौटुम्बिकास्तान् शालीन् ' नयएसु ' नवकेषु=नूतनेषु घटेषु लघुकलशेषु ' पक्खिवति ' प्रक्षिपन्ति=स्थापयन्ति भरन्तीत्यर्थः, उत्क्षिप्य ' उवल्लिपति ' उपलिम्पन्ति=पटमुखे पिधानरुस्य गोमयादिना संयोजनेन मुखनिरोध कुर्वन्ति, उपलिप्य ' लछियमुद्दिए ' लाठिउमुद्रितान् लाज्जिता= रेखादि

उसके प्यार आदिको पलाल को-वहा से हटाया । इस तरह उसस्थान मे चोखे-कूडाकरकट निकलजाने से बिलकुल स्वच्छ हुए-शूक युक्त-वपन योग्य ऐसे अखड-अक्षत-सावित-टूटे नहीं तथा उड्ड छड शब्द पूर्वक सर्पादि से शोधित किये गये शालिकण निकले जो मगध देश प्रसिद्ध १ प्रस्थ प्रमाण हुए । (तएण ते कौटुम्बिया ते शालि णवएसु, घडएसु, पक्खिवति पक्खिवित्ता उवल्लिपति, उवल्लिपित्ता लछियमुद्दिए करेति, करित्ता कोट्टागारस्स एगदेससि ठावेति, ठावित्ता सारक्खेमाणा, सगोवेमाणा विहरति) इस के बाद उन कौटुम्बिक पुरुषोने उन शालिकणों को नवीन छोटे २ घडों में भरकर रख दिया । भरने के बाद उन घडोंका मुख ढँक दिया और उसे गोबर आदि से लीपकर बंद कर दिया । बन्द करके फिर उन घडों को रेखादि चिह्न

वगेरे साक्ष करवाथी स्वच्छ शालिकणो शूक युक्त-वाववा योग्य, अखड-अक्षत रूप वगेरे, थी छड छड शब्द करावडावीने साक्षकरेला शालिकणो नीकण्या ते शालिकणो मगधदेश प्रसिद्ध ओक प्रस्थ प्रमाण छता (तएण ते कौटुम्बिया ते शालिणवएसु घडएसु पक्खिवति पक्खिवित्ता, उवल्लिपति उवल्लिपित्ता लछियमुद्दिए करेति, करित्ता कोट्टागारस्स एगदेससि ठावेति, ठावित्ता सारक्खेमाणा, सगोवेमाणा विहरति) तयार भाद कौटुम्बिक पुरुषोने शालिकणोने नवा नाना नाना कणशेमा लरीने भूकी दीधा

तयार भाद कणशेमा भा ढाकीने तेभने छाणु वगेरेथी लीपीने णव करी दीधा कणशेमा णव करीने रेखाओ वगेरेथी तेभने चिह्न करीने तेभना ऊपर नामनी भंडार लगावी दीधी तयार पत्री लडाइमा ओक

चिहनेन चिह्निताः, मुद्रिता = नाममुद्रादिनाऽङ्कितास्तान् कुर्वन्ति, कृत्वा 'कोट्टागारस्स' कोट्टागाहस्य एकदेशे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा सरक्षन्तः सगोपायन्तो विहरन्ति ।

ततः खलु ते कौटुम्बिका द्वितीये वर्षारान्ने द्वितीयवर्षसम्बन्धि चातुर्मास्यकाले प्रथममावृत्तिं प्रावृत्तं प्रारम्भसमये महावृष्टिकाये, निपतिते महावर्षार्या सत्यां क्षुल्लक केदार 'सुपरिकम्मियं' सुपरिकर्मित = विशिष्ट श्लक्ष्णमृत्तिकादिदानेन हलकुदाळादिनोत्खनने च सस्कारित कुर्वन्ति, कृत्वा तान् शालीन् वपन्ति 'दोच्च पि तच्चपि' द्विरपि त्रिरपि = द्वित्रिशारमापि 'उक्खयनिहए' उत्खातनिहतान् = उत्पाटितरोपितान् यावत् लुनन्ति, यावत् चरणतलमृदितान् कुर्वन्ति, कृत्वा पुनन्ति

से चिह्नित कर उनपर नामकी मुहर लगा दो । पश्चात् भंडार में उन्हें एक ओर रख दिया । समय २ पर वे लोग उनकी रक्षा और सभाल भी करते रहे । (तएण ते कौटुम्बिया दोच्चपि वासारत्तसि पढम पाउससि महावुद्धिकायसि निवइयसि खुट्ठाग केयार सुपरिकम्मिय करेति । इसकेबाद उन कौटुम्बिक पुरुषोंने द्वितीय वर्ष सवन्धी चौमासा जब लगा - तव - सर्व प्रथम महवृष्टि के रूप में जल के बरस जाने पर, हल से जोत कर तथा कुदाल आदि से खोदकर एक छोटा सा खेत तैयार किया । उसमें चिकनी और नरम मिट्टी डालकर उसे बहुत ही अच्छा शालि उपजाने के योग्य बना दिया । (ते शालि वपति, दोच्चपि तच्चपि उक्खय निहए जाव लुणेति) बादमें उस शाली को उसमें बो दिया ।

पहिले की तरह जब वह धान्य अकुरित हो आई तब उन्होंने उसे वहा से उखाड कर दूसरी जगह आरोपित कर दिया । इस तरह यह

भूझी दीधा यथा समय तेओ तेमनी सलाण पणु राभता डता (तएण ते कौटुम्बिया दोच्चपि वासारत्तसि पढम पाउससि महावुद्धिकायसि निवइयसि खुट्ठाग केयार सुपरिकम्मिय करेति) त्थार पछी कौटुम्बिक पुरुषोओ भीज्ज वपे ओमान्नाना द्विसो आओया त्थारे सौ पडेला भडावृष्टिना इपे जणवषा थया भाद डण्ठी जेडाने तेमज्ज डेढाणी वगेरे थी जेदीने ओक नानु जेतरे तैथार उरु नेमा थीडणी अने डेमण भाटी नाभीने तेने भूज्ज सरस शालि (डगर) वाववा थोव्व जनावी दीधु (ते शालीवपति, दोच्चपि तच्चपि उक्खय निहए जाव लुणेति) त्थार पछी जेतरेमा शालिनेवावी दीधी

पडेलाणी जेम ज्थारे शालिना अकुरे भडार नीडया त्थारे, कौटुम्बिक भाणुसो ओ तेना छोडाने त्थथी उपाडीने भीज्ज स्थाने रेपी दीधा आ

तस्मिन् स्थाने ' चोख्वाण ' चोक्षाण=रुचरनिम्मारणेन स्वच्छानाम् ' सुड्याण ' शूकिताना=शूकयुक्तानां वपनयोग्यानामित्यर्थः ' अखड्डाण ' अखड्डानाम्=अक्षतानाम् ' अफुडियाण ' अफुडितानाम्=प्रवृद्धितानाम् ' उड्डुड्डाण्याण ' उड्डुड्डाण्याणाम्- ' छड-उड ' शब्दपूर्वक सूर्यादिना शोभिताना शालीनां शालिकणानां ' मागडए ' मागधकः- मगधदेशप्रसिद्ध, ' पत्यए ' प्रस्थकः=मानविशेषो जातः, मागधप्रस्थपरिमिता शालयः सजाता इत्यर्थः ।

ततः खच्छु ते कौडुम्बिकास्तान् शालीन् ' नयएसु ' नयकेषु=नूतनेषु घटेषु लघुकुलशेषु ' पक्खिवति ' पक्षिपन्ति=स्थापयन्ति भरन्तीत्यर्थः, उत्क्षिप्य ' उवल्लिपति ' उपलिम्पन्ति=घटमुखे पिधानकस्य गोमयादिना संयोजनेन मुखनिरोध कुर्वन्ति, उपलिप्य ' लच्छियमुद्दिए ' लच्छियमुद्रितान् लच्छिता=रेखादि-

उसके प्यार आदिको पलाल को-वहा से हटाया । इस तरह उसस्थान में चोखे-कूडाकरकट निकलजाने से बिलकुल स्वच्छ हुण-शूक युक्त-वपन योग्य ऐसे अखड-अक्षत-सानित-टूटे नहीं तथा उड्डु छड शब्द पूर्वक सूर्यादि से शोभित किये गये शालिकण निकले जो मगध देश प्रसिद्ध १ प्रस्थ प्रमाण हुए । (तएण ते कौडुम्बिया ते सालि णवएसु, घडएसु, पक्खिवति पक्खिवित्ता उवल्लिपति, उवल्लिपित्ता लच्छियमुद्दिए करेति, करित्ता कोट्टागारस्स एगदेससि ठावेति, ठावित्ता सारक्खेमाणा, सगोवेमाणा विहरति) इस के बाद उन कौडुम्बिक पुरुषोंने उन शालिकणों को नवीन छोटे २ घडों में भरकर रख दिया । भरने के बाद उन घडोंका मुख ढँक दिया और उसे गोबर आदि से लीपकर बंद कर दिया । बन्द करके फिर उन घडों को रेखादि चिह्न

वगेरे साक्ष करवाथी स्वच्छ शालिकणो शूक युक्त-वाववा योग्य, अण्ड-अक्षत सूप वगेरे, थी छड छड शब्द करवावानीने साक्षकरेला शालिकणो नीकण्या ते शालीकणो मगधदेश प्रसिद्ध एक प्रस्थ प्रमाण हुता (तएण ते कौडुम्बिया ते सालिणवएसु घडएसु पक्खिवति पक्खिवित्ता, उवल्लिपति उवल्लिपित्ता लच्छियमुद्दिए करेति, करित्ता कोट्टागारस्स एगदेससि ठावेति, ठावित्ता सारक्खेमाणा, सगोवेमाणा विहरति) तयार आह कौडुम्बिक पुरुषोऽपि शालिकणाने नवा नाना नाना कणशोभा लरीने भूझी दीधा ।

तयार आह कणशोभा आ ढाकीने तेमने छाणु वगेरेथी लीपीने अध करी दीधा कणशोने अध करीने रेखाओ वगेरेथी तेमने चिह्न करीने तेमना ऊपर नामनी भंडार लगावी दीधी तयार पत्री लडाइमा एक कणशोने

यावत् वहवः=वृहद्घटाः जाताः=अनेकवृहद्घटाः शालिपूर्णा अभूवन्नित्यर्थः । ततःखलु ते कौटुम्बिकाः शालीन् कोष्ठागारे प्रक्षिपन्ति=स्थापयन्ति यावत् सर्गो पायन्तो विहरन्ति । चतुर्थे ' वासारत्ने=चतुर्थवर्षसम्बन्धि-चातुर्मास्यकाले वर्गि

चौमासा प्रारभ हुआ और उस में सर्व प्रथम महावृष्टि के रूप में जब जलकी वर्षा हुई तो उन कौटुम्बिक पुरुषों ने अनेक खेत सुपरिकर्मित किये उन में उस शाली को बो दिया । यावत् उसे काट लिया । जब वह सब काट चुकी तब गट्टा के रूपमें बांधा तब मस्तक परस्कध पर भार रूप से उसे रख कर वे सब खलिहान में ले आये । लाकर वहां उन्होंने धान्यमर्दन के योग्य खलिहान तैयार किया । उस के तैयार हो जाने पर उस में उस शाली को फैला कर रख दिया । बाद में बैलो द्वारा उस की दौय की । यावत् वह धान्य इतना निष्पन्न हुआ कि उससे षडे २ घडे भर गये । (तएण ते कोटुब्बिया साली कोट्टागारसि पक्खि-वेत्ति, जाव विहरति, चउत्थे वासारत्ते वहवे कुमसया जाया) इसके बाद उन लोगो ने उन धान्य को कोष्ठागार में रख दिया और समय २ उस की देखभाल करने लगे । इसी तरह जब चौथे वर्ष का चतुर्मास

आ रीते समय पसार थता न्यारे त्रीण वण्त वर्षा काल आव्यो अने भडावृष्टिना इपे प्रथम नण वर्षा थठ त्यारे कौटुम्बिक पुरुषोअे धणुा जेतरे तैयार ज्या

जधा जेतरेभा तेओअे शाली वावी अने आम समय नता न्यारे ते पडेलानी नेम परिचक्र थठ गध त्यारे कौटुम्बिक पुरुषोअे शालिने पाक कापी लीधो न्यारे लणुणी थठ त्यारे लाराओ भाधी भाथे तेमज् जले भूझीने जधा जेतरेनी शालिने जणाभा लध आव्या त्या लावीने तेओअे धान्य मर्दन योग्य जणु तैयार क्युं तैयार क्यो जाद तेओअे शालि ने पाथरी दीधी अने जणदो डेरवीने जणु क्युं आ प्रभाणे आगानी पडेलानी नेम जधी विधिओ पताव्या जाद जेतरेभाथी शालिधान्य आटलु जधु थयु के जेनाथी धणुा मोटा मोट कणशो लराध गया

(तएण ते कोटुब्बिया साली कोट्टागारसि पक्खिवेत्ति, जाव विहरति च उत्थे वासारत्ते वहवे कुमसया जाया)

त्यार जाद तेओअे शालिधान्य थी लरेला कणशोने केठारभा भूझी दीधा अने यथा समय तेमनी सभाण राजवा लाज्या आ प्रभाणे न थोथा वर्षना

तत्र खलु शालीना ग्रहः कुडवाः शालिगभृता ग्रहः कुडवा अभूवन् मंजाताः,
यावत् एतद्देशे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा सरसन्तः सगोपायन्तो विहरन्ति । ततः
खलु ते कौडुम्बिकास्तृतीये वर्षाराने महाट्टष्टिकाये निधितिते सति ग्रहन् केदारान्
सुपरिकर्मितान् यावद् एनन्ति, लुणित्वा सवहन्ति=भाररूपेण तान् उद्धृत्वा मस्तके
रक्षधेया निधाय खले स्थापयितु समानयन्ति, तत्रतोऽपनीय तान् वहन्ति, समुष=
समानीय 'खलय' खलय=धान्यमर्दनस्थान 'करेति' कुर्वन्ति शालीन् खले
स्थापयन्तीत्यर्थः, कृत्वा=खले सस्थाप्य 'मलेति' खले प्रसार्य शालीन् मर्दयन्ति

उत्खारु (उत्खारना) निखात (रोपना) रूपक्रिया उन्होंने दो तीन बार की
यावत् धीरे २ उसके पूर्णत पकजाने पर उन्होंने ने उसे काट लिया । (जाव
चरण तल मल्लिण करेति, करेत्ता पुणति, तत्थण सालीण ग्रहवे कुडवा जाव
एगदेससि ठावेति ठावित्ता सारवखमाणा सगोवेमाणा विहरति) यावत्
उसे अपने २ पैरों के तलियों से मर्दित किया । घाद में उसे पलालआदि
के अपसारण (दूर) से साफ किया । इस तरह वहाँ शालियों के अनेक
कुडव (घडे) उन से भर गये । यावत् उन कुडवो (घड़ो) को उन्होंने
ने ले जाकर पहिले की तरह भंडार में एक तरफ रख दिया ।

रखकर वे समय २ पर उनकी सारस भाल भी करने लगे । (तण्ण
ते कौडुविया तच्चपि वासारत्तसि महा बुड्डिकायसि निवइयसि ग्रहवे
केयारे सुपरिकम्मिए जाव लुणें नि, लुणित्ता सवहति सवहित्ता खलय
करेति, खलयकरेत्ता मलेंति, जाव ग्रहवे कुभा जाया) इस तरह
धीरे २ समय निकल ने पर जब तीसरी बार वर्षा काल सम्बन्धी

रीते आ उत्थात (उपाडवु) निष्ठात (रोपवु नी डिया तेमणे जे त्रशुवार करी
समय जता यथासमये ज्यारे पाड तैयार थड गये त्यारे तेज्यो जे तेने डापी दीधे।

(जाव चरण तल मल्लिण करेति करेत्ता पुणति, तत्थण सालीण ग्रहवे कुडवा
जाव एगदेससि, ठावेति ठावित्ता सारवखेमाणा सगोवेमाणा विहरति)

अने 'यावत्' तेने पोताना पगोथी भर्त्ति ज्यो त्जार पछी तेमाथी लसु
वगेरे साइ कथुं आ प्रमाणे त्या शालिज्यो (डागर) ना धणु कुडव-कुणशो
-भराड गया आ रीते ते कौटुजिड पुरुषो जे पडेदानी जेम ज शालिथी
परिपूर्ण कुणशोने केडारभा जेक तरह भूझी दीधा यथा समय शालिना कुण
शोनी तेज्यो सलाण पणु राखता हुता

(तण्ण ते कौडुविया तच्चपि व सारत्तमि महाबुड्डिकायसि निवइयसि ग्रहवे
केयारे सुपरिकम्मिए जाव लुणेंति, लुणित्ता, सवहति सवहित्ता खलय, करेति,
खलय करेत्ता मलेंति जाव ग्रहवे कुभा जाया)

हंता अत्थि । तएणं पुत्ता । मम ते सालि अक्खए पडिनि-
जाएहि । तएणं सा उज्झिया धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ
सम्मं पडिसुणेइ, पडिसुणिता जेणेव कोट्टागारं तेणेव उवाग-
च्छइ, उवागच्छिता पल्लाओ पंचसालिअक्खए गेणहइ, गिणिहत्ता
जेणेव धणो सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता धणं
सत्थवाहं एवं वयासी एएणं ते पंचसालिअक्खए-त्ति कट्ठ
धणस्स सत्थवाहस्स हत्थसि ते पंच सालि अक्खए दलयइ ।
तएणं धणो सत्थवाहे उज्झिय सवहसोवियं करेइ, करित्ता
एवं वयासी-किं णं पुत्ता । ते चेव एए पंच सालि अक्खए
उदाहु अन्ने ? । तएणं उज्झिया धणं सत्थवाहं एवं वयासी-
एवं खलु तुव्भे ताओ । इओ अईए पंचमे संवच्छरे इमस्स
मित्तनाइ० चउण्हं य सुण्हाणं कुल० जाव विहराहि । तएणं
अहं तुव्भं एयमट्ठं पडिसुणिता ते पंचसालिअक्खए गेणहामि,
गिणिहत्ता एगंतमवक्रमामि । तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए
जाव समुपज्जित्था-एव खलु तायाणं कोट्टागारसि० जाव सक-
म्मसपउत्ता जाया, त ण खलु ताओ ते चेव पंच सालिअक्खए
एएण अन्ने । तएणं से धणो उज्झियाए अतिए एयमट्ठं
सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे उज्झितियं
तस्स मित्तणाइ० चउण्हं य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ
तस्स कुलघरस्सं छारुज्झियं च छाणुज्झियं च केयवरुज्झियं च
समुच्छियं च सम्मच्छियं च पाउवदाइं च पहाणोवदाइं च
बाहिरपेसणकारिं ठवेइ ।

तानां शालीनां वह्नि कुम्भशतानि जातानि वह्नि कुम्भशतानि शालिसंपृतानि जातानि. ॥ सू० ॥ ६ ॥

मूलम्—तएणं तस्स धणस्स पचमयंसि संवच्छरसि परि-
णममाणसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयांख्वे अज्झात्थिए
जाव समुप्पज्जित्था एव खलु मए इओ अईए पंचमे संवच्छरे
चउण्हं सुण्हाणं परिकखणट्ठयाए ते पचसालि अक्खया हत्थे
दिन्ना तं सेय खलु मम कल्ल जाव जलते पच सालिअक्खए
पडिजाइत्तए जाव जाणामि ताव काए किण्हं सारक्खिया वा
संगोविया वा सवड्डिया जाव त्ति क एवं संपेहेइ, संपेहिन्ना
कल्ल जाव जलंते विउल असणपाणिंखाइमसाइम उवक्खडा-
वेइ, उवक्खडावत्ता मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघर
जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुल-
घरवग्गस्स पुरओ जेट्ठ उज्झिय सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी
—एव खलु अह पुत्ता । इओ अईए पचमासि संवच्छरंसि इम-
स्स मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ
तव हत्थसि पंचसालि अक्खए दलयामि, जयाणं अह पुत्ता ।
एए पंचसालि अक्खए जाएज्जा तयाणं तुम मम इमे पंच
सालिअक्खए पडिदिज्जाएसित्ति, से नूणं पुत्ता । अट्ठे समट्ठे,

प्रारम्भ हुआ तब उस समय बोई गई और धर्मित हुई उस धान्य के
सैकड़ों कुम्भ तैयार हो गये । अर्थात् वह धान्य इतनी अधिक निपजी
कि जिससे सैकड़ों बड़े २ घड़े उससे भर गये । सूत्र “ ६ ”

आभासाभा वाववाभा आवेली शालिथी सेकडो भोटो कणशो लराध गया
अट्ठे के शालि धान्यनो अट्ठो अधो सरस पाक तैयार थयो के तेनाथी
सेकडो भोग भोटो कणशो लराध गया ॥ सूत्र “ ६ ” ॥

तस्स कुलघरस्स हिरन्नस्स य जाव कसदूस्स विउल धण जाव
साव तेजस्स य भडागारिणि ठवेइ ।

एवामेव समणाउसो । जाव पच य से महव्वयाइं रक्खि
याइं भवंति, से ण इहभवे चेव वहुणं समणाणं ४ अच्चणिजे४
जहा व सा रक्खिया ॥ ३ ॥

रोहिणियावि एवं चेव, नवर तुव्वं ताओ । मम सुवहुय
सगडीसागडं दलाह जेणं अहं तुव्वं ते पच सालिअक्खए पडि-
णिज्जाएमि । तएणं से धण्णे रोहिणि एव वयासी-कहं णं
पुत्ता । तुम मम ते पच सालिअक्खए सगडीसागडेण निज्जाइ-
स्ससि ? । तएणं सा रोहिणी धण्ण एव वयासी-एवं खलु
ताओ । तुव्वे इओ पचमे सवच्छरे इमस्स मित्तं० जाव वहवे
कुमसया जाया, तेणेव कमेणं, एव खलु ताओ । तुव्वे ते पच
सालिअक्खए सगडीसागडेण निज्जाएमि । तएण से धण्णे सत्थ-
वाहे रोहिणियाए सुवहुय सगडीसागड दलयइ । तएणं सा
रोहिणी सुवहु सगडीसागड गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्टागारं विहाडेइ, विहाडित्ता पल्ले
उब्भिदइ, उब्भिदित्ता सगडीसागड भरेइ, भरित्ता रायगिहे
नगर मज्झमज्झेण जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे
तेणेव उवागच्छइ । तएण रायगिहे नयरे सिघाडग जाव वहु-
जणो अन्नमन्ने एवमाइक्खइ - धन्नेण देवाणुप्पिया ! धण्णे
सत्थवाहे, जस्स ण रोहिणिया सुण्हा पच सालिअक्खए सगड-
सागडिण निज्जाएइ । तएण से धण्णे सत्थवाहे ते पच सालि-

एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गथो वा णिग्गंथी
वा जाव पव्वइए, पंच य से महाव्वयाइं उज्झियाइं भवंति सेणं
इह भवे चेव बहूण समणाणं ४ जाव अणुपरियट्ठिस्सइ जहा
सा उज्झिया ॥ १ ॥

एव भोगवइयावि, नवरं तस्स जाव कडतियं च कुट्टतियं
च पीसितिय च, एव रुधतिय, रधतिय, परिवेसतिय च परि-
भायतिय च अब्भतरिय च पेसणकारि महाणसिणि ठवेइ ।

एवामेव समणाओ । जो अम्हं समणो वा जाव पचयसे
महाव्वयाइ फोडियाइ भवति से णं इह भवे चेव बहूण सम-
णाण ४ जाव हीलणिजे ४ जहा व सा भोगवइया ॥ २ ॥

एवं रक्खिइयावि, नवर जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता मजूसं विहाडेइ, विहाडित्ता रयणकरंडगाओ ते
पंचसालिअक्खए गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव धण्णे तेणेव उवा
गच्छइ, उवागच्छित्ता पंचसालिअक्खए धण्णस्स हत्थे दलयइ ।
तएण से धण्णे रक्खिइय एव वयासी—कि ण पुत्ता ते चेव एए
पंचसालिअक्खया उदाहु अन्ने ? त्ति । तएण रक्खिइया धण्णं
सत्थवाह एव वयासी—ते चेव ताया । एए पच सालिअक्खया
णो अन्ने । कह ण पुत्ता ! एव खलु ताओ तुब्भे इओ पचममि
जाव ‘भवियव्व एत्थ कारणेणं’—ति कट्ठु ते पंचसालिअक्खए
सुद्धे वत्थे जाव तिसस्स पडिजागरमाणी२ विहरामि, त एएण
कारणेण ताओ । ते चेव एए पच सालिअक्खया, णो अन्ने ।
तएण से धण्णे रक्खिइयाए अतिए एयमह सोच्चा हट्ठुट्ठं

પરીક્ષાર્થે તે પચ્ચ શાલ્યક્ષતા હસ્તે દત્તા આસન્, 'સેય' શ્રેયઃ=ઉચિતમ્ અસ્ય પ્રતિયાચિતુમિત્યનેન સવન્ધ' ! એવં સ્વલુ મમ કલ્પે યાવજ્જ્વલતિ=સૂર્યોદયે સતિ= પ્રભાતે પચ્ચશાલ્યક્ષતાન્ 'પડિજાહત્તણ' પ્રતિયાચિતુ=પ્રતિગ્રહીતુમ્, 'જાણામિ' જાનામિ=તદધુના નિર્ણયામિ યત્- 'જાવ' યાવત્=યાવત્સરુચકાઃ શાલ્યક્ષતા મયા દત્તાસ્તે 'તાવ' તાવત્=તાવન્પરિમિતાઃ કયા સ્તુપયા 'કિહ' કથ=કેન પ્રકારેણ સરક્ષિતાઃ સગોપિતાઃ સવર્ધિતા યાવત્ 'તિકુ' ઇતિ કૃત્વા ઇત્યભિપ્રાય મ્નસિ નિધાય એવ=વક્ષ્યમાગપ્રકારેણ સપેક્ષયતિ=વિચારયતિ, સપ્રેક્ષ્ય કલ્પે યાવજ્જ્વલતિ પ્રભાતસમયે વિપુલમશન પાન સ્વાદ્ય ચતુર્વિધમાહારમ્. ઉપસ્કા

સવચ્છરે ચઉપ્પહ સુપ્પહાણ પરિક્કલ્લણદ્વયાણ તે પચ્ચ સાલિ અક્કલ્લયા હત્થે દિન્ના-ત સેય સ્વલુ મમ કલ્લં જાવ જલ તે પચ્ચ સાલિ અક્કલ્લણ પડિ-જાહત્તણ) કિ મૈને આજ સે ગત પાંચવે વર્ષ મે ચારોં અપની પુત્રવધૂઓં કે ઉન કી બુદ્ધિ કી પરીક્ષા કે નિમિત્ત હાથોં મેં ઉન પાચ પાંચ શાલિ-અક્ષતોં કો દિયા થા, તો અવ પ્રાતઃકાલ હોતે હી જવ સૂર્યોદય હો જાય-ગા-મેં ઉન પાચ શાલિ અક્ષતોં કો ઉનસે પીછે માગ લૂં યહ ઉચિત હૈ ।

(જાવ જાણામિ તાવ કાણ કિણ્હ સારવિલ્લયા વા સગોવિયા વા સવલ્લિયા જાવ ત્તિ કહ્હુ એવ સપેહેહ) ઇસસે મેં યહ નિર્ણય કર લૂંગા કિ જિતને શાલ્યક્ષત મૈને કેન્હે દિયે થે વે ઉતને શાલ્યક્ષત કિસ પુત્ર વધૂ ને કિસ પ્રકાર સે સરક્ષિત કિયે હૈં, સગોપિત કિયે હૈં ઓર સવર્ધિત કિયે હૈં । ઇસ પૂર્વોક્ત પ્રકાર સે ઉસને વિચાર કિયા (સપેહિત્તા

(એવં સ્વલુ મમ્ ઇઓ અર્હણ પચમે સવચ્છરે ચઉપ્પહાણ પરિક્કલ્લણદ્વયાણ તે પચસાલિ અક્કલ્લયા હત્થે દિન્ના-ત સેય સ્વલુ મમ કલ્લતે જાવ જલતે પચસાલિ અક્કલ્લણ પડિજાહત્તણ)

કે આજથી પાચ વર્ષ પડેલા મે ચારે પુત્રવધૂઓને તેમની બુદ્ધિ પરીક્ષા માટે તેમના હાથોમા પાચ શાલિકણે આપ્યા હતા તો હવે સવારે સૂર્ય ઉદય પામતાની સાથે જ હું તેમની પાસેથી પાચે શાલિકણે પાછા માગુ એ જ ઉચિત છે

(જાવ જાણામિ તાવ કાણ કિણ્હ સારવિલ્લયા વા સગોવિયા વા સવલ્લિયા જાવ ત્તિ કહ્હુ એવ સપેહેહ)

એનાથી મને એ વાતની ખબર પડશે કે મે જેટલા શાલિકણે તેમને આપ્યા હતા તેને કઇ પુત્રવધૂએ કેવી રીતે સરક્ષિત, સ'ગોપિત તેમજ સવર્ધિત કર્યા છે આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો

अक्खए सगडीसागडेणं निज्जाइए पासइ, पासित्ताहट्ठे० पडि-
च्छइ, पडिच्छित्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुणहाणं कुल-
घरस्स पुरओ रोहिणियं सुणहं तस्स कुलघरस्स बहुसु कज्जेसु य
जाव रहस्सेसु य आपुच्छणिज्जं जाव सव्वकज्जव विष-
पमाणभूयं ठावेइ ।

एवामेव समणाउसो । जाव पंच य से महाव्वया संवड्डिया
भवन्ति से णं इह भवे चेव चट्ठणं समणाणं० ४ अच्चणिज्जे जाव
वीईवइस्सइ जहा व सा रोहिणिया ।

एव खलु जंबू । समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स
नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते—त्तिवेमि ॥

॥ सत्तमं नायज्झणं समत्त ॥ ७ ॥

टीका—‘ तएण तस्स ’ इत्यादि । ततः खलु तस्य धयस्स=धन्यसार्थवा
वाहस्य पञ्चमे सत्तरे ‘ परिणममाणसि ’ परिणम्यमाने=संपूर्यमाणे सति पूर्वरा-
त्रापररात्रकालसमये अयमेतद्रूपः— आध्यात्मिकः=आत्मनि विचार यावत्
मनोगतः सकल्पः समुदपद्यत— एव खलु मया ‘ इओ ’ इतः=अद्यतनादिवसात्प्राग्
अतीते पञ्चमे वर्षे चतसृणा स्तुपाणा ‘ परिक्खणेट्ठयाए ’ परीक्षणार्थाय=बुद्धि-

‘ तएण तस्स धणस्स ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तस्स धणस्स) उस धन्य सार्थवाह को
(पचमयसि सबच्छरसि परिणममाणसि) पांच वर्ष जब पूर्ण हो चुके,
तब (पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि) मध्यरात्रि के समय में (इमेयारूवे
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत्
मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ (एव खलु मए इओ अईए पच में

“ तएण तस्स धणस्स ” इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थार जाइ (तस्स धणस्स) धन्य सार्थवाहने
(पचमयसि सबच्छरसि परिणममाणसि) पांच वर्षों के पूरा तथा त्थारे (पुव्वरत्ताव-
रत्तकालसमयसि) अर्धरात्रि में (इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था
आ जातने) आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न हो

यदा खलु अहं पुत्रि । एतान् पञ्च शाल्यक्षतान् याचेय तदा खलु त्वं मह्यमि-
मान् पञ्च शाल्यक्षतान् प्रतिदद्या 'इति, स नूनं पुत्रि । अर्थ. समर्थ' ? उज्जिता
प्राह- हन्त ! अस्ति=एतत्सत्यमस्ति । त्रेष्ठीप्राह- 'त' तत्=तस्मात् खलु
त्व हे पुत्रि । मह्यं तान् 'पडिन्दिज्जाएहि' प्रतिनिर्यातय=प्रतिममर्पय । तत् खलु
सा उज्जिता धन्यस्य सार्थवाहस्य एतमर्थं सम्यक् प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रति-
श्रुत्य यत्रैव कोष्ठागारं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'पल्लाओ' पल्लात्=शालि

कुलघरवग्गस्स पुरओ तव हत्थसि पच सालि अक्खए दलयामि)
बुलाकर उससे ऐसा कहा हे पुत्रि ! आज से गन पाँचवें वर्ष में मैंने जो
इन मित्र, ज्ञाति आदि परिजनों के और चारों पुत्रवधूओं के कुल गृह-
वर्ग के समक्ष तुम्हारे हाथ में पाच शालि-अक्षतों को दिया था ।
(जयाण अहं पुत्ता एए पच सालि अक्खए जाण्जा) और हे पुत्रि
ऐसा कहा था कि जब मे इन पाच शालि-अक्षतों को माँगू (तयाण
तुम मम इमे पच सालि अक्खए पडिदिज्जाएसि त्ति) तब तुम मुझे इन
पाच शालि-अक्षतों को पीछे वापिस दे देना (से णूण पुत्ता अट्ठे समट्ठे)
हे पुत्रि ! कहो यही बात कही थी न ? (हन्ता अत्थि) तब उज्जिताने
कहा-हाँ यही बात कही थी (तण्ण पुत्ता ! मम ते सालि अक्खए
पडिदिज्जाएहि) तो पुत्रि ! तुम मुझे उन पाच शालि अक्षतों को अब
पीछे वापिस दे दो । (तण्ण सा उज्जिता धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ
सम्म पडिसुणेइ पडिसुणित्ता जेणेव कोट्ठागार तेणेव उवागच्छइ)

जोलावीने तेरे कुछ दे दे पुत्रि ! आज ही पाच वर्ष पीछे मे
तने आ जाधा मित्र ज्ञाति वगैरे परिजनों अने आरे पुत्रवधूओंना संग
पडावाओंनी सामे तमारा हाथमा पाच शालिकेला आया होता

(जयाण अहं पुत्ता एए पचसालि अक्खए जाण्जा)

अने अब कुछ देतु दे न्यारे हु तमागी पासैथी आ पाच शालिकेला भागु

(तयाण तुम मम इमे पच सालि अक्खए पडिदिज्जएसि त्ति)

त्यारे तमे मने आ पाये शालिकेला पाछा आपने (से णूण पुत्ता अट्ठे
समट्ठे दे पुत्रि ! जोला मे तमने अब बात कही होती ने ? (हन्ता अत्थि)
त्यारे उज्जिताओ कुछ- " हा अब बात कही होती " तण्ण पुत्ता ! मम ते
सालि अक्खए पडिदिज्जाएहि) तो दे पुत्रि ! ते पाये शालिकेला तमे मने
पाछा आपीदो

(तण्ण सा उज्जिता धण्णस्स सत्थवाहस्स, एयमट्ठ सम्म पडिसुणेइ पडिसुणि-
त्ता जेणेव कोट्ठागार तेणेव उवागच्छइ)

રયતિ, ઉપસ્કાર્ય મિત્રજ્ઞાતિમૃતીન્ ચતસૃણાં ચ સ્ત્રુપાણાં કુલગૃહવર્ગેણ સાર્દ
 'ભોજયિશ્વા યાવત્તાન્ સમાન્ય તસ્યૈવ મિત્રજ્ઞાતિમૃતેઃ, ચતસૃણાં સ્ત્રુપાણાં કુલ
 ગૃહવર્ગસ્ય ચ પુરતો 'જેઢુ' ઉચ્ચેઠાં=ઉચ્ચેષ્ઠપુત્રવધૂમ્ 'ઉજ્ઞિય' ઉજ્ઞિતામ્
 =ઉજ્ઞિતાનામ્ની શબ્દયતિ, શબ્દયિત્યા એમયાદીન્- એવં સ્વલુ અહં પુત્રિ !
 ઇતોઽતીતે પશ્ચમે સપ્તસરે અસ્ય મિત્રાદેશ્ચતસૃણાં સ્ત્રુપાણાં કુલગૃહવર્ગસ્ય
 ચ પુરતસ્તત્ર હસ્તે પશ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ 'દલયામિ' દદામિ=દત્તવાન્ કથિતત્રાશ્વ

કલ્લ જાવ જલતે વિઉલ અસળપાળગ્વાહમસાહમ ઉવઝ્વડાવેહ-
 ઉવઝ્વડાવિત્તા-મિત્તનાહં ચઉળ્હ સુળ્હાળ કુલધર જાવ સમ્માણિત્તા
 તસ્સેવ મિત્તનાહં ચઉળ્હ ય સુળ્હાળ કુલધરવગ્ગસ્સ પુરઓ જેઢુ ઉજ્ઞિ
 ય સદાવેહ) વિચાર કર કે ફિર ઉસને પ્રાતઃકાલ સૂર્યોદય હોને પર
 વિપુલમાત્રા મેં અશન, પાન, ગ્વાશ્ય એવ સ્વાશ્ય રૂપ સે ચારોં પ્રકાર કા
 આહાર તૈયાર કરવાયા ।

જવ ચારોં પ્રકાર કા આહાર અચ્છી તરહ નિષ્પન્ન હો ચુકા તવ
 ઉસને અપને સમસ્ત મિત્ર જ્ઞાતિ આદિ પરિજનોં કે ઓર ચારોં પુત્રવ
 ધૂઓં કે કુલવર્ગ કે સાથ ભોજન કિયા । વાદ મેં ઉન મત્રકા સન્માન
 સત્કાર કિયા । ઓર ઉન્હી મિત્રાદિ પરિજનોં કે એવ અપની ત્વારોં પુત્ર-
 વધૂઓં કે કુલવર્ગ કે સમક્ષ જેઠી જો પુત્રવધૂ થી કિ જિસ કા નામ
 ઉજ્ઞિતા થા ઉસે બુલાયા । (સદાવિત્તા એવ વયાસી એવ સ્વલુ અહં પુત્તા ।
 ઇઓ અઈએ પચમસિ સવઞ્ઞરસિ ઇમસ્સ મિત્તનાહં ચઉળ્હ ય સુળ્હાળ

(સપેહિત્તા કલ્લ જાવ જલતે વિઉલ અસળ પાળ ગ્વાહમ ઉવઝ્વડાવેહ ઉવ-
 ઝ્વડાવિત્તા મિત્તનાહં ચઉળ્હ સુળ્હાળ કુલધર જાવ સમ્માણિત્તા તસ્સેવ મિત્તનાહં
 ચઉળ્હ ય સુળ્હાળ કુલધરવગ્ગસ્સ પુરઓજેઢુ ઉજ્ઞિય સદાવેહ)

વિચાર કરીને તેણે સવારે સૂર્ય ઉદયપામ્યા બાદ અશન, પાન બાદ
 અને સ્પર્શ આમ ચાર જાતનો પુણ્ડળ પ્રમાણુમા આહાર તૈયાર કરાવડાવ્યો ।

ચારે જાતનો આહાર સારી રીતે તૈયાર થઈ ગયો ત્યારે તેણે પોતાના
 બધા મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ ચારે પુત્રવધૂઓના સગવડાલાઓની
 સાથે ભોજન કર્યું જમ્યા બાદ તેણે બધાનો સત્કાર-તથા સન્માન કર્યું
 ત્યારબાદ મિત્ર વગેરે પરિજનો અને ચારે પુત્રવધૂઓનાં સગવડાલાઓની
 સામે તેણે મોટા પુત્રની વધૂ ઉજ્જિતાને બોલાવી

(સદાવિત્તા એવ વયાસી એવ સ્વલુ અહંપુત્તા । ઇઓ અઈએ પચમસિ સવઞ્ઞ-
 રસિ ઇમસ્સ મિત્તનાહં ચઉળ્હ ય સુળ્હાળ કુલધરવગ્ગસ્સ પુરઓ તવ હત્થસિ પવ
 સાલિ અવસથે દલયામિ)

दत्-एव खलु युय हे तात ! अतीते पञ्चमे सवत्सरे अस्य मित्रज्ञातिप्रभृतेः, चत-
सृणा च स्नुषाणा कुलगृहवर्गस्य 'जाव' यावत् पुरतः पञ्च शाल्यक्षतान् दत्वा
कथितवन्तः-हे पुत्रि ! त्वमेतान् पञ्चशाल्यक्षतान् सरक्षन्ती सगोपायन्ती विह-
रति । ततः खलु अहं युष्माकमेतमर्थं प्रतिश्रृणोमि प्रतिश्रुत्य तान् पञ्चशाल्य-
क्षतान् गृह्णामि, गृहीत्वा-एकान्तमपक्रामामि, ततः खलु तदा मम मनसि अयमे-
तद्रूप आन्यात्मिक-विचार यावन्मनोगतः सकल्पः समुदपद्यत एव खलु 'तायाण'

एव वयासी एव खलु तुब्भे ताओ ! इओ अईए पचमे सवच्छरे इमस्स
मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाण कुल० जाव विहराहि) उन पांच शालि
अक्षतो को हाथ में लेकर धन्य सार्थवाह ने उसे शपथ दिलाई-और
दिलाकर उससे ऐमा पूछा पुत्रि ! कहो-ये पांच शालि अक्षत वे ही हैं
या और दूसरे हैं ? इम प्रकार धन्य सार्थवाह के कथन को सुनकर
उज्झिताने उससे ऐसा कहा हे तात ! आपने आज से गत पाचव वर्ष
में मित्र जाति आदि परिजनों के और अपनी पुत्रवधूओ के कुल गृह
वर्ग के समक्ष पांच शालि अक्षतों को देकर ऐसा कहा था-हे पुत्रि !
तुम मेरे इन पांच शालि अक्षतों की रक्षा करती रहो-इन्हे उपद्रवों से
बचाकर सुरक्षित रखो- (तएण अहं तुब्भ एयमट्ठ पडिसुणेमि पडिसु-
णित्ता ते पच सालि अक्खए गेह्णामि गिह्णित्ता एगतमवक्कमामि-तएण
मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) मैंने आपके इस कथन
को स्वीकार कर लिया था । और उन पांच शालि अक्षतों को ले लिया

सत्यवाहे एव वयासी एव खलु तुब्भे ताओ ! इओ अईए पचमे सवच्छरे इमस्स
मित्तनाइ चउण्ह य सुण्हाण कुठ जाव विहराहि)

ते पाच शालिकुलोने हाथमा रणावीने धन्यसार्थवाडे तेने शपथ (सभ)
आपीने करी पूछ्यु के हे पुत्रि ! जालो, आ पाचे शालिकुलो भारा
आयेला न ठे के भीज आ रीते धन्यसार्थनी वान सालणीने उज्झिताये
तेमने कहु-“ हे तात ! आज्जथी पाचवर्ष पूर्वे मित्र जाति वगेरे परिज्जेने
तेमज्ज आरे पुत्रवधूओना सगावडावाओनी सामे भने पाच शालिकुलो आ-
पता तमे कहु छुठु के हे पुत्रि ! तमे भारा आ पाच शालिकुलोनी रक्षा
करे अने ओओने उपद्रवोथी जयाये।

(तएण अहं तुब्भ एयमट्ठ पडिसुणेमि, पडिसुणित्ता ते पचसालि अक्खए
गेह्णामि, गिह्णित्ता एगतमवक्कमामि-तएण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव
समुप्पज्जित्था)

मे तभारी आज्जा प्रभु ते शालिकुलो लध लीधा त्थार जाइ हु

कोष्ठात् पञ्च शाल्यक्षतान् गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव धन्य सार्थवाहस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य धन्य सार्थवाहमेवमवादीत्— एते खलु ते पञ्च शाल्यक्षताः, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा धन्यस्य सार्थवाहस्य हस्ते तान् पञ्च शाल्यक्षतान् ददाति । ततः खलु धन्य उज्झिता पुत्रयधू 'सवहसारिय' शपथशापिता = शपथयुक्ता करोति—शपथं कारयति, कृत्वा एवमवदत्—किं खलु पुत्रि ! त एव—एते पञ्च शाल्यक्षताः, उदाहु=अयम् अन्ने ? । ततः खलु उज्झिता धन्यसार्थवाहमेवमव-

इस प्रकार उज्झिताने उस धन्य सार्थवाह के इस कथन रूप अर्थको स्वीकार कर लिया । और स्वीकार करके जहा कोष्ठागार था—वहाँ पर गई ।

(उवागच्छित्ता पल्लाओ पच सालि अक्खए गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ) वहा जाकर उसने शालि कोष्ठ से पाच शालि—अक्षतों को ले लिया और ले जाकर जहा धन्य सार्थवाह था वहाँ आई । (उवागच्छित्ता धण्ण सत्थवाह एव वयासी) आकर उसने धन्यसार्थवाह से ऐसा कहा—(एण ण ते पच सालि अक्खए त्ति कट्ठु धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थसि ते पच सालि अक्खए दलयइ) आपके वे पाच शालि अक्षत ये हैं । ऐसा कहकर उसने धन्यसार्थवाह के हाथ में उन पांच शालि अक्षतों को दे दिया (तएण धण्णे सत्थवाहे उज्झिय सवहसारिय करेइ करित्ता एव वयासी—किं ण पुत्ता ! ते चेव एए पच सालि अक्खए उदाहु अन्ने ? तएण उज्झिया धण्ण सत्थवाहे

उज्झितामे धन्यसार्थवाहनी आज्ञा स्वीकारी अने तयार पछी ते न्या होठार डते। त्या- गध

(उवागच्छित्ता पल्लाओ पचसालि अक्खए गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ)

त्या जधने ते शालिकोष्ठमाथी पाच शालिकोष्ठो लध लीधा अने लधने ते धन्यसार्थवाहनी पासो पडोन्ही (उवागच्छित्ता धण्ण सत्थवाह एव वयासी) त्या आवीने तेणे धन्यसार्थवाहने आ प्रमाणे कछु

(एएण ते पचसालि अक्खए त्ति कट्ठु धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थसि ते पच सालि अक्खए दलयइ)

“ तमे आपेला पाच शालिकोष्ठो आ रह्या ” आभ कछीने तेणे पाच पाच शालिकोष्ठो धन्यसार्थवाहने आपी दीधा

(तएण धण्णे सत्थवाहे उज्झिय सवहसारिय करेइ करित्ता एव वयासी किं पुत्ता ते चेव एए पच सालि अक्खए उदाहु अन्ने ? तएण । धण्ण

जाज्वल्यमान उज्झिता तस्य मित्रज्ञातिप्रभृतेः, चतसृणा च स्नुषाणा कुलगृहवर्गस्य च पुरतस्ता तस्य=स्वस्य कुलगृहस्य 'छारुज्झियच' क्षारोज्झिका भस्मप्रक्षेपिकाम्, 'छाणुज्झिय च' छाणोज्झिका=गोमयप्रक्षेपिकाम् 'कयवरुज्झिय' कचवरो-ज्झिका=गृहकचवरप्रक्षेपिकाम्, 'समुच्छियच' समुक्षिका=गृहाङ्गणे जलच्छटक दायिकाम्, 'समज्जियच' समानिका=गृहसमार्जनकारिकाम्, 'पाओवदाइय पादोदकदायिकां=पादप्रक्षालनजलदायिकाम्, 'ण्हाणोवदाइय' स्नानोदकदा-यिका=स्नानार्थजलदायिकाम्, 'वाहिरपेसणकारिय बाह्यपेषणकारिक' बाह्यपे-षणकार्यकारिकाम्, 'ठवेइ' स्थापयति=तादृशकार्यकारिणीत्वेन नियोजयतीत्यर्थः।

माणे उज्झितिय तस्स मित्तणाड० चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झिय च छाणुज्झिय च कयवरुज्झिय च समुच्छिय च सम्मच्छिय च पाउवदाइ च ण्हाणोवदाइ च वाहिर पेसण कारिंठवेइ) इस तरह वह धन्य सार्थवाह उज्झिताके मुख से इस कथन रूप अर्थको सुनकर और उसे हृदय में अवधारण कर शीघ्र ही क्रुपित हो गया। मिस मिसाने लग गया—क्रोधरूपी अग्निसे जलने लगा। उसने उसी समय उज्झिता को उस मित्र ज्ञाति आदि कों के तथा चारो पुत्र वधूओं के कुलगृहवर्ग के समक्ष अपने घर की राख डालने वाली गोबर फेंकने वाली' कूड़ाकर कट साफ करने वाली, घरके आगण में पानी छिडकने वाली घुहार देने वाली, पाद प्रक्षालन तथा स्नान के लिये जल देने वाली, बाहर जाने का काम करने वाली बना दिया।

अर्थात् बाहिरी काम करने वाली दासी के पद पर उसे रख दिया।

पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झिय च छाणुज्झिय च कयवरुज्झिय च समुच्छिय च सम्मच्छिय च पाउवदाइ च ण्हाणोवदाइ च वाहिरपेसणकारिं ठवेइ)

आ प्रमाणे ते धान्य सार्थवाड उज्झिताना मुण्हेथी आ वात सालणीने तेने हृदयमा अवधारणु करीने अकडम सुस्से थछ गये।

क्रुपितावस्थामा ते क्रोधनी ज्वाणामोमा सणगवा लाग्ये। तेण्हे तेज्झण्हे उज्झिताने मित्र ज्ञाति वगेरे परिज्जेने। तेमज्झ चारे पुत्रवधूओ ना कुणना भाणुओनी सामे वरनी राण साइ करनारी, छाणु साइ करनारी, उयरे वगेरे साइ करनारी, धग्गना आगणुमा पाण्णी छाटनारी, सावरण्णी थी क्यरे वाणनारी, पग धोवाभाटे तेमज्झ स्नानकरवा भटे पाण्णा तैयार राखनारी अने धरनी ण्डारना कामे करनारी णनावी दीधी

अट्ठे ण्डारना काम करनारी दाभीनाइये धन्यसार्थवाडे तेनी निमण्णु करी।

तातानाम् आदरार्थं बहुवचनम् तातस्येत्यर्थः, श्वशुरस्य कोष्ठागारे ब्रह्मवः पञ्चाः शालीनाः प्रतिपूर्णरितिष्ठन्ति, तद् यदा खलु मम सयाशात् तात इमान् पञ्च शाल्यक्षतान् याचिष्यते तदा खलु अहं पल्लवरात्=कोष्ठाभ्यन्तराद् अन्यान् पञ्च शाल्यक्षतान् गृहीत्वा दास्यामि, इति कृत्वा एकान्तेऽपक्राम्य तान् प्रक्षिप्य स्व कर्मसमुक्तां=स्वकार्यसलग्नां समभवात् 'त' तत्=तस्मात् कारणात् नो खलु तात ! तएव पञ्च शाल्यक्षताः, नितु एते खल्वन्ये=कोष्ठाभ्यन्तरादानीताः सन्तीत्यर्थः । तत खलु स धन्यः सार्यगाह उज्झिताया अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा 'आसुरस्ते' आशुरस्तः=शीघ्रकोपान्वितः यावत् 'मिसमिसेमाणे' मिसमिसन्=क्रोधाम्निना था । लेकर फिर मैं आपके पास किसी एकान्त स्थान में चली आई— वहां आते ही मुझे इस प्रकार का विचार आया—

(एव खलु तायाण कोष्ठागारसि० जाव सकम्भ सपउत्ता जाया त णो खलु ताओ ते चेव पच सालि अक्खण, एण ण अन्ने) मेरे श्वशुर जी के यहां कोष्ठागार में तो बहुत से पल्लवशालियों के भरे पड़े हैं—तो जिस समय श्वशुर जी इन प्रदत्त पाच शालि अक्षतों को मुझ से पीछे चापिस मागेगे तो मैं दूसरे शालि कोष्ठ के भीतर से अन्य पाच शालि अक्षतों को उठाकर दे दूंगी । इस प्रकार विचार कर मैंने आपके द्वारा दिये हुए पांच शालि अक्षतों को इधर उधर डाल दिया और अपने दैनिक कार्य करने में लग गई । अतः हे तात ! ये शालि-अक्षत वे पांच शालि अक्षत नहीं हैं—किन्तु उनसे भिन्न दूसरे ही हैं । (तएण से घण्णे उज्झियाण अतिण एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म आसुरस्ते जाव मिसि मिसे

तमारी पामेथी ओक तरङ्ग गछी त्या आवता न भने विचार खुर्थी

(एव खलु तायाण कोष्ठागारसि, जाव सकम्भ सपउत्ता जाया त णो खलु ताओते चेवपचसालिअक्ख एण अन्ने)

भारा ससराना कोष्ठारमा डागरथी लरेला धण्डा पट्यो छे ते न्यारे पणु तेओ भारी पामेथी इरी पाय शालिकण्डो भागशे त्यारे कोष्ठारमाथी भीज पाय शालिकण्डो तेभने आपीश आम विचार उरता मे तभारा आपेला पाये शालिकण्डोने आम तेभ डेकी होधा अने त्वार जाह हु भारा डमेशाना धर काममा परेवा १ गछ ओथी छे तात । आ शालिकण्डो तमे ने आपेला छता ते नथी पणु आ तो भीज न छे

(तएण से घण्णे उज्झियाण अतिण एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म आसुरस्ते जाव मिसेमिसे माणे उज्झितिय तस्स मित्तगाड० च उण्हय सुण्हाण कुलधरवग्गस्सय

શ્રીવર્ધમાનસ્વામીપ્રાહ- એમેવ હે શ્રમણાઃ ! અયુષ્મન્તઃ ! યોઽસ્માકં નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થીવા યાત્મપ્રજિતઃ સન્નિદરતિ યદિ પશ્ચ ચ તસ્ય મહાવ્રતાનિ ઉજ્જિતાનિ=પરિત્યક્તાનિ ભવન્તિ તર્હિ સ સ્વલુ ર્હ મવે એવ વહુના શ્રમગાનાઽચતુર્વિધસઙ્ગસ્ય હીલનીયઃ, નિન્દનીયઃ, ગર્હણીયઃ, યાત્ ચાતુરન્તસસારકાન્તારમનુપર્યટ્પિપ્યતિ યથા સા ઉજ્જિતા ।

એવ ભોગવતિકાઽપિ=ભોગવતિકાનામ્ની શાલ્યક્ષતમક્ષિકા દ્વિતીયા પુત્રવધૂરપિ । નવર=વિશેષસ્ત્રયમ્ તામોગવતિકા તસ્ય=નિજસ્ય કુન્દમૃદસ્ય યાત્ 'કડંતિયચ' કુટ્ટયન્તિકામ્=ઉદુલ્લાદી તળુલાદીના તુપાપસારણાર્થે મુશલાદિનાઽવઘાતિનીમ્, 'કુટ્ટયતિયચ' કુટ્ટયન્તિકા=તિલાદિચૂર્ણકારિકામ્, 'પીસતિયચ' 'પેપયન્તિકા=પરદાદી ગોઘૂમાદીના પેપણકારિકામ્, 'રુધતિયચ' રુધયન્તિકા

(એવામેવ સમણાઽસો જો અમ્હ નિગ્ગથો વા નિગ્ગથી વા જાવ પવ્વહ્ણ પચ ય સે મહવ્વયાહ ઉજ્જિયાહ ભવન્તિ, સે ણ ર્હ મવે ચેવ વહૂણ સમણાણે ઽ જાવ અણુપરિયટ્પિસસઙ્ગ જહા સા ઉજ્જિયા) શ્રી વર્ધમાનસ્વામી હસકા ઉપસહાર કરતે હુણ કહતે હૈં કિ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા નિર્ગ્રન્થ અથવા નિર્ગ્રન્થી સાધ્વીજન દીક્ષા સયમ લેતે સમય પચ મહોવ્રત લેતે હૈં ઓર યદિ વહ અપને મહોવ્રતોં કા પરિત્યાગ કર દેતા હૈં તો વહ ઉજ્જિતા કી તરહ ર્હ મવ મેં ર્હી અનેક શ્રમણજનોં કૈ દ્વારા તથો ચતુર્વિધ સઘ કૈ દ્વારા હીલનીય હોતા હૈં, નિન્દનીય હોતા હૈં, ગર્હણીય હોતા હૈં-યાવત્ વહ ચતુર્ગતિરૂપ ર્હ સસાર મેં પરિશ્રમણ કરતા રહતા હૈં । (એવ ભોગવદ્યાવિ' નવર જાવ કડતિય ચ, કુટ્ટયતિય ચ, પીસતિય ચ, એવ રુધતિય ચ, રુધતિય પરિવેસતિય પરિભાય

(એવામેવ સમણા ઽસો જો અમ્હ નિગ્ગથો વા નિગ્ગથીવા જાવ પવ્વહ્ણ પચ યસે મહવ્વયાહ ઉજ્જિયાહ ભવન્તિ, સે ણ ર્હ મવે ચેવ વહૂણ સમણાણ ઽ જાવ અણુપરિયટ્પિસસઙ્ગ જહા સા ઉજ્જિયા)

શ્રી વર્ધમાન સ્વામી આવિષે ઉપસહાર કરતા કહે છે કે હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! અમારા જે કેાઈ નિર્ગ્રન્થ કે નિર્ગ્રન્થી સાધ્વીજન દીક્ષા સયમ લેવાના વખતે પાત્ર મહોવ્રતો સ્વીકારે છે અને લવિખ્યમા સ્વીકારેલા તે મહોવ્રતો નો પરિત્યાગ કરે છે તો તે ઉજ્જિતા ની જેમજ આ લવમા ઘણા શ્રમણો વડે તેરજ ચતુર્વિધ સઘ વડે હીલનીય હોય છે, નિન્દનીય હોય છે, ગર્હણીય હોય છે-યાવત-તે ચતુર્ગાનિ વાળા આ સસારમા પરિશ્રમણ કરતો રહે છે

(એવ ભોગવદ્યાવિ, નવર જાવ કડતિય ચ કુટ્ટયતિયચ પીસતિયચ, એવ

यन्त्रे चणककोद्रवादीनां तुपापसारिकाम्, 'रुधतिय च' रन्धयन्तिकाम्=ओदनादि
पाचिकाम् 'परिवेसयति च' परिवेषणकारिकाम् 'परिभायति च' परिभाज
यन्तिका=पर्वदिनादौ स्वजनगृहेषु खण्डखाद्यादीनां सविभागकारिकाम् 'अम्भ
तरिय च' पेसणकारिय 'आभ्यन्तरिका च' प्रेषणकारिका=गृहाभ्यन्तरप्रेषणकार्य
कारिकाम् 'महाणसिणि' महानसिका=महानससम्बन्धिसम्पत्कार्यकारिणी 'ठवेइ'
स्थापयति-गृहाभ्यन्तरकार्यकारिणीत्वेन नियोजयतीत्यर्थः । श्री वर्धमानम्बामी

ति य च अम्भतरिय च पेसणकारि महाणसिणि ठवेइ) इसी तरह
धन्य सार्थवाह ने अपने जो दूसरी पुत्रवधु भोगवतिका नाम की थी
कि जिसने उन पाच शालि अक्षतों को खा लिया था उसे बुलाया—
और उससे भी उद्दिष्टता की तरह दिये हुए पाच शालि अक्षतों को
वापिस मागा—उसने “ वे पाच शालि अक्षत मैंने खा लिया है जब
ऐसा कहा—तब उस धन्य सार्थवाहने उन मित्र जाति आदि परिजनों
के समक्ष और पुत्रवधुओं के कुलगृह के व्यक्तियों के समक्ष अपने घर
के भीतरी काम पर रख दिया ।

उसके अधीन में घर का भीतर का यह काम दिया गया—
ओखली में मृशल से धान्य कूटना और चावल तैयार करना, तिल
आदि का चूर्ण करना, चक्की से गेहूँ आदि पीस कर आटा तैयार
करना, चना आदि की दाल बनाना तथा क्रोद्रव आदि को फर्श से दल
कर उनके तिल के दूर कर उन की कुदई बनाना ? चावल पकाना,

रुधतिय च रुधतिय परिवेसयति, परिभायति य च अम्भतरिय च पेसणकारि
महाणसिणि ठवेइ)

આ પ્રમાણે જ ધન્યસાર્થવાહે પોતાની ખીણ પુત્રવધૂભોગ વતીકા-
જે પાચે શાલિકણે ખાઈ ગઈ હતી—તેને બોલાવી અને તેની પાસેથી પણ
ઉન્નિજતાની જેમ પાચે રાવિકણે માયા જવાબમાં ભોગવતીકાએ જ્યારે
એમ કહ્યું “ કે તે પાચે શાલિકણે હું ખઈ ગઈ છું ત્યારે ધન્યસાર્થવાહે
તેને મિત્ર જાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ ત્યારે પુત્ર વધૂઓના કુટુંબીઓની
સામે તેને ઘરની અદરના કામોમાં તેની નિમણૂક કરી

ધન્યસાર્થવાહે ઘરના નીચે મુજબના કામો તેને સોંપ્યા હતા ખાદિય્યા
સાબેલાથી શાળ (ધા ય) ખાડવી અને ચોખા તૈયાર કરવા, તલ વગેરેનો
ભૂકો કરવો ઘટીમાં ઘઉં વગેરે દળીને લોટ તૈયાર કરવો આખા ચણા વગેરે
ની દાળ તૈયાર કરવી તથા ડોહગ વગેરેને ઘટીથી ભરડીને તેના દોતરા કર

પ્રાહ એવમેવ=અનેનૈવ પ્રકારેણ હે આયુષ્મન્તઃ ! શ્રમણાઃ ! યોઽસ્માક શ્રમણો વા શ્રમણીવા પ્રવ્રજિત સન્ વિહરતિ, યદિ પચ ચ તસ્ય મહાવ્રતાનિ ' ફોડિયાઈ ' સ્ફોટિતાનિ=સ્વણ્ડિતાનિ ભવતિ તર્હિ સ ચલુ ઇહમ્હે ચૈવ વહુનાં શ્રમણાનાં ૪ ચતુર્વિધસઘસ્ય હીલનીયઃ, યાવત્ સમારમનુપર્યટિપ્યતિ યથા ચ સા ભોગવતિકા ધન્યસાર્થવાહસ્ય દ્વિતીય પુત્રવધૂઃ ।

એવ રશ્ચિનાઽપિ=રશિતાનામ્ની ધન્યસાર્થવાહસ્ય તૃતીયપુત્રવધૂરપિ, નવર-ધન્યસાર્થવાહેન સ્વદત્તશાલ્લક્ષતાન્ પ્રત્યર્પયિતુ યાચિતા સતો યત્રૈવ વાસગૃહ તત્રૈ ભોજન કરને ચાલોં કો ભોજન પરોસના, સ્વજન કે ઘરોં મેં સ્વણ્ડ-સ્વાના સ્વાય આદિ કા વિભાગ કરના રસોઈ ઘર કા સમસ્ત કાર્ય કરના । (એવામેવ સમણાઽસો જો અમ્હ સમણો વા જાવ પચય સે મહવ્વયાઈ ફોડિયાઈ ભવતિ સે ણ ઇહ ભવે ચેવ વહૂણ સમણાણ ૪ જાવ હીલણિજ્જો ૪ જહાવ સા ભોગવહયા) ઇસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા શ્રમણ અથવા શ્રમણી જન પ્રવ્રજિત હોકર પચ મહાવ્રતોં કા સ્વડન કરતા હૈ વહ ભોગવતિકા કી તરહ ઇસ ભવ મેં હી અનેક શ્રમણોં દ્વારા તથા ચતુર્વિધ સઘ દ્વારા હીલનીય હોતા હૈ, યાવત્ અનાદિ અનત ઇસ સસાર મેં પરિભ્રમણ કરતા હૈ । (એવ રશ્ચિવહ્યાવિ નવર જેણેવ વાસ ઘરે તેણેવ ઉવાગચ્છિત્તા મજૂસ વિહાઢેઈ, વિહાહિત્તા ચયણકરહગાઓ તે પચ સાલિ અક્ષણ ગેણહઈ) ઇસી તરહ ધન્ય સાર્થવાહ ને અપની તૃતીય પુત્રવધૂ સે જિસ કા નામ રક્ષિત થા અપને દ્વારા દિયે હુએ ૫ શાલિ અક્ષતોં કો માગા-સો વહ જહા અપના વાસગૃહ થા વહા આઈ -

કરી તેમાથી કોહરી બનાવવી, ભાત તૈયાર કરવા, જમનારાઓને પીરસવું સગા સબધીઓના ઘરોમા પીરસણુ વગેરે મોકલવું રસોઈધરનું બધું કામ કરવું (એવામેવ સમણાઽસો જો અમ્હ સમણો વા જાવ પચય સે મહવ્વયાઈ ફોડિયાઈ ભવતિ સે ણ ઇહ ભવે ચેવ વહૂણ ૪ જાવ હીલણિજ્જો સમણાણ ૪ જહાવ સા ભોગવહયા)

આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા શ્રમણ કે શ્રમણીજન પ્રવ્રજિત થઈને પાંચ મહાવ્રતોનું બંધન કરે છે તે ભોગવતીકાની જેમ આ ભવમા ઘણા શ્રમણો વડે તેમજ ચતુર્વિધ સઘદ્વારા હીલનીય હોય છે યાવત્ અનાદિ અનત આ સસારમા પરિભ્રમણ કરે છે

(એવ રશ્ચિવહ્યાવિ નવર જેણેવ વાસઘરે તેણેવ ઉવાગચ્છિત્ત, ઉવાગચ્છિત્તા મજૂસ વિહાઢેઈ વિહરિત્તા ચયણકરહગાઓ તે પચસાલિ અક્ષણ ગેણહઈ)

આ રીતે જ ધન્યસાર્થવાહે પોતાની ત્રીજી પુત્રવધૂ રક્ષિતા પાસેથી પોતે આપેલા પાંચ શાલિકણે માગ્યા તે ત્યાંથી પોતાના નિવાસ

वोपागच्छति, उपागत्य मञ्जूषा 'विदाढेः' विपटयति=उद्घाटयति विघटय्य
मञ्जूषाभ्यन्तरस्थात् रत्नकरण्डकात् तान् पञ्चशाल्यक्षतान् गृह्णाति, गृहीत्वा
यत्रव धन्यः सार्थवाहस्तैर्वोपागच्छति उपागत्य पञ्च शाल्यक्षतान् धन्यसार्थवाह-
स्य हस्ते ददाति । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहो रक्षिता रक्षिताभिधा तृतीयपुत्र
वधूमेवमवदत्- किं खलु पुत्रि ! त एवैते पञ्चशाल्यक्षताः उदाहु- अथवा अन्ये,
इति । ततः खलु रक्षिता धन्य सार्थवाहमेवमवदत् त एव तात ! एते पञ्च
शाल्यक्षताः, नो अन्ये धन्यः सार्थवाह आह कथं खलु पुत्रि ! रक्षितान्प्राह-एव
खलु तात ! यूयमित पञ्चमे समत्सरे 'जात्र' यायत् सर्वेषा मित्रज्ञातिप्रभृतीना

वहा आकर उसने अपनी पेटी खोली-उस में से रत्नी हुई रत्न की
डिबिया निकाली-निकाल कर उसमें रखे हुए पाच शालि अक्षतों को
लिया (गिण्हत्ता जेणेव धण्णे तेणेव उवागच्छइ) और लेकर जहा
धन्य सार्थवाह थे-वह वहा आई (उवागच्छित्ता पचसालि अक्खए
धण्णस्स हत्थे दलयइ) वहा आकर उसने पाच शालि अक्षतो को धन्य
सार्थवाह के हाथ में सोंप दिया । (तएण से धण्णे रक्खइय एव
वयासी) धन्य सार्थवाह ने उन्हें लेकर रक्षिता से ऐसा कहा (किण
पुत्ता ! ते चेव एए पच सालि अक्खया उदाहु अन्ने ? त्ति) हे पुत्रि ! ये
पाच शालि अक्षत वे ही हैं या और दूसरे ? (तएण रक्खइया धण्णे
सत्थवाह एव वयासी ते चेव ताया ! एए पच सालि अक्खया णो
अन्ने) तब रक्षिता ने धन्य सार्थवाह से कहा-हे तात ! ये पाच शालि
अक्षत वे ही हैं अन्य नहीं हैं । (कह ण पुत्ता ! एव खलु ताओ तुम्हे

स्थाने आवी त्या तेणे पेनी जोनीने अहरथा रत्नजडित डाणली ञ्छार डाढी
डाणलीमाथी तेणे पाथे शालिउणे। लीधा (गिण्हत्ता जेणेव धण्णे तेणेव उवागच्छइ)
अने लधने धन्यमार्थवाह न्या डतो त्या आवी

(उवागच्छित्ता पचमालि अक्खए धण्णस्महत्थे दलयइ)

त्या आवीने तेणे पाथे शालिउणे। धान्यसार्थवाहने आपी दीधा
(तएण से धण्णे रक्खइय एव वयासी) धन्यमार्थवाह शालिउणे। लधने रक्षि
ताने उहु (कि ण पुत्ता ! तेचेव एए पचसालि अक्खया उदाह अन्ने ! त्ति)

“ हे पुत्रि ! आ पाथ शालिउणे। ते न छे के भीम ? ”

(तएण रक्खइया धण्णे सत्थवाहे एव वयासी ते चेव ताया ! एए पच
सालि अक्खया णो अन्ने)

त्यारे रक्षिताओ धन्यसार्थवाहने उहु-“ हे तात ! आ पाथ शालिउणे।
ते न छे भीम नहि

પુરતઃ પચ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ મમ દત્તવન્તસ્તદા મમ મનમિ મકલ્પો જાતઃ—યત્તાતઃ
 સર્વેષાં પુરતઃ પચ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ દદાતિ તત્ ‘ મવિયવ્વ ઇત્થ કારણેણ ’ ‘ મન્તિ
 વ્યમત્ર કેનાપિ કારણેન=અસ્મિન્ વિષયે કિમપિ કારણમવશ્ય વિદ્યતે ‘ તિક્કદુ ’
 इति कृत्वा इतिविचार्य तान् पञ्चशाल्यक्षतान् शुद्धे=स्वच्छे निर्मले वस्त्रे बद्ध्वा
 रत्नकरण्डके निक्षिप्य उच्छीर्षकपूले स्थापयित्वा ‘ तिसङ्ग ’ तिसङ्ग्य=प्रभाते
 मध्याह्ने सायंकाले वा ‘ पडिजागरमाणी २ प्रतिजाग्रती २= पुनः पुनर्निरीक्षमाणा

इओ पचमसि जाव (भविष्यव्व एत्थ कारणेण) त्ति कद्दु ते पच सालि
 अक्खए सुद्धे वत्थे जाव तिसङ्ग पडि जागर माणी २ विहरामि) इस
 प्रकार रक्षिता की बात सुनकर धन्य सार्थवाह ने उससे पूछा-पुत्रि !
 ये इसी तरह से अभी तक कैसे रखे रहे-तब रक्षिता ने कहा-सुनो
 मैं बताती हूँ-आपने आज से गत पाचवें वर्ष में जो ये पांच शालि
 अक्षत मुझे ममस्त मित्र ज्ञाति आदि परिजनों के तथा पुत्रवधूओं के
 कुलगृह वर्ग के समक्ष दिये थे उस समय मेरे मन में ऐसा विचार
 आया कि ये तात जो मुझे सब जनों के सामने इन पाच शालि अक्षतों
 को दे रहे हैं और इन की रक्षा आदि के विषय में कह रहे हैं-सो इस
 में कोई न कोई कारण अवश्य है-ऐसा विचार कर मैंने उन पाच शालि
 अक्षतों को स्वच्छ-निर्मलवस्त्र में बान्ध कर एक रत्न की डिविया में
 रख दिया-और उसे अपने सिरहाने में रखकर आज तक मैं उसकी
 हर समय सभाल करती आ रही हूँ ।

(कहण पुत्ता एव खलु ताओ ! तुम्हे इओ पचमसि जाव ‘ भविष्यव्व एत्थ
 कारणेण ’ त्ति कद्दु ते पचसालि अक्खए सुद्धे वत्थे जाव ति सम्म पडि जागर-
 माणी २ विहरामि)

આ રીતે રક્ષિતાની વાત સાંભળીને ધન્યસાર્થવાહે તેને પૂછ્યું “ હે પુત્રિ !
 અત્યાર સુધી કેવી રીતે આ શાલિકણોને રાખવામાં આવ્યા ત્યારે રક્ષિતાએ
 જવાબ આપતા કહ્યું ‘સાંભળો,હું બધી વિગત તમારી સામે રજુ કરું છું આજથી
 પાંચ વર્ષ પહેલાં બધા મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ મારે પુત્રવધૂઓના
 કુટુંબીજનોની સામે તમે મને શાલિકણો આપ્યા હતા હે તાત ! તમે મને બધા
 સ્વજનોની સામે પાંચ શાલિકણો આપીને તેઓની રક્ષાભાટે મને આજ્ઞા આપી
 હતી જેથી મેં વિચાર કર્યો કે આમાં કેઈ રહસ્ય ચોક્કસ છુપાયેલું છે આમ
 વિચાર કરીને પાંચે શાલિકણોને સ્વચ્છ નિર્મળ વસ્ત્રમાં બાંધીને એક રત્નની
 ડાબલીમાં મૂકી દીધા, અને તેને આશીર્વાદોની નીચે મૂકીને આજ (દિવસ) સુધી
 તેની રક્ષા કરતી રહી છું

વિહરામિ=અઘાવધિ તિષ્ઠામિ તદેતેન કારણેન હે તાતે ! ત એવૈતે પચ્ચ શાલ્ય-
ક્ષતાઃ, નો અન્યે । તતઃસ્વલુ સ ધન્યઃ સાર્યવાહો રક્ષિતાયા અન્તિકે=સમીપે
પ્રતમર્થ શ્રુત્વા હૃષ્ટ તુષ્ટ તસ્ય=નિજસ્ય કુલગૃહસ્ય ' હિરણ્યસ્ય ' હિરણ્યસ્ય ચ=
રજતસ્ય યાવત્ કાસ્યદૂણ્ય વિપુલ યાવત્સ્વાપતેયસ્ય=હિરણ્યાદિ યાવન્માત્રધનસ્ય
' ભાણ્ડાગારિણિ ' ભાણ્ડાગારાધિષ્ઠાત્રી ' ઠવેહ ' સ્થાપયતિ=મર્વધનાધિકારિણી
ત્વેન નિયોજયતીત્યર્થ । શ્રીવર્ધમાનસ્યામી પ્રાહ એવમેવ હે શ્રમણા. ! આયુષ્મન્ત
યોઽસ્માકશ્રમણો વા શ્રયણી વા પ્રવ્રજિતઃ સન્ વિહરતિ,યદિ પચ્ચ ચ તસ્ય મહાવ્રતાનિ

(ત એણ કારણેણ તાઓ ! તે ચેવ એ પચ સાલિ અક્ષવેળો
અન્ને) હસ કારણ હે તાત ! વે પાચ શાલિ અક્ષત ચે હો હૈ, દૂસરે નહી
હૈ । (તણ સે ધણે રક્ષિય્યાએ અતિએ એમટ્ટ સોચ્ચા હટ્ટતુટ્ટં તસ્સ
કુલધરસ્સ હિરન્નસ્સ ય જાવ કસદૂસ વિઝલધણ જાવ સાવતેજ્જસ્સ ય
ભડાગારિણિ ઠવેહ) હસ તરહ ઉસ ધન્ય સાર્યવાહ ને રક્ષિકા કે મુલ
સે હસ અર્થ કો સુનકર વહુન અધિક પ્રસન્ન ઓર સતુષ્ટ હોકર ઉસે
અપને ઘર મેં જિતના મી સોના ચાદી આદિ ધન થા ઉસકી અધિકારિ
ણિ વના દિયા ।

(એવામેવ સમણાઉસો જાવ પચ ય સે મહવ્વયાહ ભવતિ, સેણ હહ
ભવે ચેવ વહુણ સમણાણં ૪ અચ્ચણિજ્જે ૪ જહાવ સા રક્ષિયા) હસી
તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા શ્રમણ ઓર શ્રમણી જન પ્રવ્ર
જિત હોકર હતસ્સનં વિહરણ કરતા હૈ યદી ઉસ કે પાચ મહાવ્રત

(ત એણ કારણેણ તાઓ ! તે ચેવ એ પચમાલિ અક્ષવેળો અન્ને)

એટલે હે તાત ! તે પાચ શાલિકલ્લે એજ છે, બીજા નથી

(તણ સે ધણે રક્ષિય્યાએ અતિએ એમટ્ટ સોચ્ચા હટ્ટતુટ્ટં તસ્સ કુલ
ધરસ્સ હિરન્નસ્સય જાવ કસદૂસ વિઝલ ધણજાવ તેજ્જસ્સય મહારગારિણિ ઠવેહ)

આ રીતે ધાન્યસાર્યવાહે રક્ષિકાના મુખેથી બધી વિગત સાલણીને
ખૂબ પ્રસન્ન તેમજ સતુષ્ટ થતા તેને પેતાના ઘરમા જેટલું સોનું ચાદી વગેરે
ધન હતું તેની અધિકારીણી બનાવી દધી

(એવામેવ સમણાઉસો જાવ પચયસે મહવ્વયાહ રક્ષિયાહ ભવતિ સેણ
હહભવે ચેવ વહુણ સમણાગ ૪ અચ્ચણિજ્જે ૪ જહાવ સા રક્ષિયા)

આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા શ્રમણ તેમજ શ્રમણી
જનો પ્રવ્રજિત થઈને આમ તેમ વિહાર કરતા રહે છે તેમ કરતા જો તેમના

રક્ષિતાનિ ભવન્તિ સ સ્વલુ રક્ષમણે ચૈવ રક્ષના શ્રમણાનાઃ ચતુર્વિધસ્ય અર્ચનોય
યાવત્ સમાનનીયો ભવતિ યથા સા રક્ષિતા=ધન્યસાર્થવાહસ્ય તૃતીયા પુત્રવધૂઃ ।

રોહિણિકાઽપ્યેવમેવ=રોહિણિકાનામ્ની ધન્યસાર્થવાહસ્ય ચતુર્થપુત્રવધૂરપિ પૂર્વ
વદેવ વિજ્ઞેયા, નવર વિશેષસ્ત્યમ્-ત્રેષ્ઠિના સમાહૃય 'મદત્તાન્ પચ્ચશાલ્યક્ષતાન્
સમર્પય' ઇત્યેવ કથિતા સતી રોહિણિકા ત્રેષ્ઠિન મત્યાહ-હેતાત 'યુય મમ
સુવહુકમ્=અનેકસહ્યક 'સગડીસાગડ શકટીશાકટ શકટયઃ=લઘુગાડિકાઃ
શાકટ=શકટસમૂહઃ, શકટયશ્ચ શાકટ ચેતિ સમાહારે શકટીશાકટમ્=અનેકગાડી
શકટસમૂહ 'દલહ' દત્ત=મયન્હત, યેન શકટયાદિનાઽહ 'તુબ્ધ' યુષ્માક તાન્

સુરક્ષિત રહતે હે તો વહ ઇસ ભવ મેં હી અનેક શ્રમણાદિ જનોં દ્વારા
તથા ચતુર્વિધ સઘ દ્વારા અર્ચનીય હોતા હે યાવત્ સમાન નીય હોતા
હે । જૈસે વહ ધન્યસાર્થવાહ કી તૃતીય પુત્રવધૂ રક્ષિતા હુઈ હે । (રોહિ
ણિયાવિ એવ ચેવ નવર તુબ્ધેતાઓ ! મમ સુવહુય સગડી સાગડ દલહ
જેળ અહ તુબ્ધ તે પચ સાલિ અઝઘણ પહિણિજ્ઞામિ) इसी तरह
ધન્યસાર્થવાહ કી ચૌથી પુત્રવધૂ રોહિણી કા ભી ચરિત્ર જાનના ચાહિયે
પરન્તુ इसमे जो विशेषता है-वह इस प्रकार है-नव धन्यसार्थवाहने
चौथी अपनी पुत्रवधू रौहिणिका को बुलाया-और बुलाकर उससे ऐसा
कहा किमैने आज से गत पाचवे वर्ष जो तुझे पांच शालि-अक्षत दिये
थे-उन्हे तुम वापिस सुझे आज दो-तब रौहिणिकाने उनसेकहा हे
तात ! आप मेरे लिये अनेक छोटी गाडिया और बड़ी २ गाडिया
दीजिये-कि जिनके द्वारा मैं आपके उन पांच शालि अक्षतो को भर-

પાય મહાવ્રતો સુરક્ષિત રહે છે તો આ ભવમા તે અનેક શ્રમણો દ્વારા અર્ચ
નીય હોય છે યાવત્ સન્માનનીય હોય છે, ધન્યસાર્થવાહની ત્રીજી પુત્રવધૂ
રક્ષિતા જેમસન્માનીત થઈ તેમજ તે પણ સન્માનીત થાય છે

(રોહિણિયાવિ એવ ચેવ નવર તુબ્ધેતાઓ ! મમ સુવહુય સગડીસાગડ દલહ
જેળ અહ તુબ્ધ તે પચ સાલિ અઝઘણ પહિણિજ્ઞામિ)

આ પ્રમાણે હવે આપણે ધન્યસાર્થવાહની ચૌથી પુત્રવધૂ રોહિણીના ચરિત્ર
વિષે પણ જાણવું જોઈએ તેના ચરિત્રની વિશેષ વાત આ પ્રમાણે છે કે—
જ્યારે ધન્યસાર્થવાહે પેતાની ચૌથી પુત્રવધૂ રોહિણિજાને બોલાવી અને
બોલાવીને તેને એમ કહ્યું કે આજથી પાચ વર્ષ પહેલાં મેં તને પાચ
શાલિકણો આપ્યા હતા તેમને પાછા આપો ત્યારે રોહિણિકાએ તેમને કહ્યું
કે હે તાત ! તમે મને અનેક નાની મોટી ગાડીઓ આપો કે જેથી તમે
આપેલા પાચ શાલિકણોને તેમા ભરાવીને અહીં લાવું અને તમને પાછા

पञ्च शाल्यक्षतान् 'पडिणिज्जाएमि' प्रतिनिर्यातयामि=प्रतिसमर्पयामि । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहो रोहिणीमेवमवदत्- कथ खलु हे पुत्रि ! त्व मम तान् पञ्च शाल्यक्षतान् शकटीशकटेन 'पडिणिज्जाइस्ससि' प्रतिनिर्यातयिष्यसि=प्रति-समर्पयिष्यसि ? ततः खलु सा रोहिणी धन्य सार्थवाहमेवमवदत्-एव खलु हे तात ! यूयम् इतः पञ्चमे सवत्सरे-अस्य मित्रज्ञातिप्रभृतेः पुरतः सरक्षणार्थं सगोपनार्थं पञ्च शाल्यक्षतान् महा दत्तवन्तः, तान् गृहीत्वा मया चिन्तितम्-अत्रकेनापि

वाकर यहा ला सकू-और आपको पीछे वापिस करसके (तएण से धण्णे रोहिणि एव वयासी) रोहिणिका की इस प्रकार बात सुनकर धन्यसार्थवाहने उससे ऐसा कहा-(कह ण पुत्ता ! तुम मम ते पच सालि अक्खए सगडी सागडेण निज्जाइस्ससि) पुत्रि ! किस तरह तुम मुझे वे पाच शालि अक्षत शकटी और शकट समूह में भरने लायक कर पीछे वापिस देना चाह रही हो ? (तएण सा रोहिणि धण्ण एव वयासी-एव खलु ताओ ! तुब्भे इओ पचमे सवच्छरे इमस्स मित्तं जाव वहवे कुमसया जाया-तेणेव कमेण एव खलु ताओ ! तुब्भे ते पच सालि अक्खए सगडी सागडेण निज्जाएमि) धन्यसार्थवाह का ऐसा कहना सुन कर रोहिणिका ने कहा-तात ! आजसे पांचवें वर्ष में आपने मुझे मित्र ज्ञाति आदिपरिजनों के समक्ष बुला कर पाच शालि अक्षत दिये थे-और उनके सरक्षण सवर्धन आदि विषय में आपने शिक्षा की थी ।

आपी शडु (तएण से धण्णे रोहिणि एव वयासी) रोहिणिज्जानी आ रीते वात सालणीने धन्यसार्थवाडे तेने आ प्रभाणु कहु

(कहण पुत्ता ! तुम ते पचसालि अक्खए सगडीसागडेण निज्जाइस्ससि)

हे पुत्री ! मे आपेला पाच सालिकणुने तमे नानी मोटी धण्णी गाडी ओभा लरावाने डेरी रीते आपना भागो छे

(तएण सा रोहिणी धण्ण एव वयासी-एव खलु ताओ ! तुब्भे इओ पचमे सवच्छरे इमस्स मित्तं जाव वहवे कुमसया जाया तेणेव कमेण एव खलु ताओ तुब्भे ते पचसालि अक्खए सगडी सागडेण निज्जाएमि)

धन्यसार्थवाहनु कथन सालणीने रोहिणिज्जाओ तेमने कहु- 'हे तात ! आ जयी पाच वर्ष पडेला मित्रज्ञाति वगेरे परिजनों नी आमे मने ओलावीने तमे पाच सालिकणु आभ्या डता अने आपती वण्णते तमे तेमना सरक्षण सवर्धन वगेरेनी भावतभा सूचने कर्था डता

तमारी पासोयी सालिकणु लभने मे आम विचार कयो छे आ पाच सालिकणु ताते आभ्या छे अने तेमना सरक्षण तथा सवर्धन विषे ले

કારણેન ભવિતવ્યમિતિ, તદનુ પિતૃગૃહપુરુષાન્ સમાદાય મયા વર્દ્યિતુ તેભ્યસ્તે
પञ्ચ શાલ્યક્ષતા દત્તાઃ । તે સુપરિકર્મિત કેદારેષુ વપનાદિ ક્રિયામિઃ પરિવર્દિતા
જાતોસ્તે પ્રથમે વર્ષે માગધપ્રસ્થપરિમિતા શાલ્યઃ । એવ ક્રમગો દ્વિતીયે વર્ષે શાલી
ના વદ્ય કુડવાઃ સજાતાઃ । તૃતીયે વર્ષે વદ્યઃ કુમ્ભા । ચતુર્થે સત્રત્સરે વહ્નિ
કુમ્ભશતાનિ શાલીના સજાતાનિ । તેનૈવ ક્રમેણ એવ સ્વલુ હે તાત ! યુષ્માક તાન્
પञ्ચ શાલ્યક્ષતાન્ શરટીશાકટેન પ્રતિનિર્યાતિયામિ=સમર્પયામિઃ । તત સ્વલુ સ
ધન્યઃ સાર્થવાહો રોહિણિકાયૈ સુવહુમ્=અનેકસદ્વ્યક શરટી શાકટ દદાતિ, ।

મને उन्हें लेकर ऐसा विचार किया-कि तातने जो ये पाच शालि
अक्षत दिये हैं और उनके सरक्षण आदि के विषय में जो कहा है सो
नियमतः इसमें कोई न कोई कारण अवश्य है-ऐसा विचार कर मैंने
पितृगृह (पीयर) के पुरुषों को बुलाया-और उन्हें उन पाच शालि
अक्षतों को बढ़ाने के लिये दिया ।

उन लोगों ने उन्हें लेकर सुपरि कर्मित खेतों में वपनादि क्रिया
द्वारा खूब बढ़ाया प्रथम वर्ष में वे मगधदेश प्रसिद्ध प्रस्थप्रमाण निपजे ।
द्वितीय वर्ष अनेक कुडव प्रमाण होने पर हुए । तृतीय वर्ष में वे अनेक
कुभप्रमाण हुए । चौथे वर्ष सैकड़ों कुभप्रमाण हुए । इस तरह आपके
द्वारा दिये हुए वे पाच शालि अक्षत आज अनेक गाड़ी और गाड़ा
प्रमाण हुए हैं-इसलिये मैं आगे के लिये आज उन्हें अनेक गाड़ी और
गाड़ा प्रमाण करके पीछे वापिस देरही हूँ । तएण से धण्णे सत्थवाहे
रोहिणिगए सुबहुय सगडी सागड दलयइ, तएण सा रोहिणि सुबहु

કઈ મને કહ્યું છે, જેથી ચોક્કસ આ વાતમા કઈક રહસ્ય હોવું જોઈએ એમ
વિચાર કરીને મેં પિયરના માણસોને જોલાવ્યા અને તેમને વર્ધન માટે પાચ
શાલિકણો આપ્યા

તેમણે શાલિકણો લઈ લીધા, અને સુપરિકર્મિત ખેતરોમા વારીને તે
કણોની ખૂબ વૃદ્ધિ કરી પહેલા વર્ષે મગધ દેશ પ્રસિદ્ધ પ્રસ્થ પ્રમાણુ જેટલા
શાલિકણો થયા ખીન્ના વર્ષે વાવવાથી ઘણા કળશેા ભરાય તેટલા થયા, ત્રીજા
વર્ષે ખીન્ના વર્ષ કરતા પણ વધારે કળશેા ભરાય તેટલી શાલિ થઈ ચોથા વર્ષે
વાવવાથી સેકડો કળશેા ભરાય તેટલી શાલિ થઈ આ પ્રમાણે તમે આપેલા
પાચ શાલિકણો આજે ઘણી નાની મોટી ગાડીઓમા ભરાય તેટલા થઈ ગયા છે,
તેથી જ હું આપને તે પાચ શાલિકણો અનેક ગાડીઓમા ભરાય તેટલા પ્રમા
ણમા વર્ધન કરાવે પાછા આપી રહી છું

(તएण से धण्णे सत्थवाहे रोहिणिगए सुबहुय सगडी सागड दलयइ,

તતઃ સ્વલુ સા રોહિણી સુવહુક શકટીશકટ મૃદીત્વા યત્રૈવ સ્વક કુલગૃહ=પિતૃગૃહ તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય કોષ્ઠાગારાણિ=કોષ્ઠગૃહાણિ ' વિહાડેઃ ' વિઘટયતિ=ઉદ્ઘાટયતિ, વિઘટય પલ્લાન્=શાલિકોષ્ઠાન્ ' ઉઞ્ઞિમદેઃ ' ઉઞ્ઞિનત્તિ=ઉન્મુદ્રિતાન્ કરોતિ, તેષા મુદ્રામપનયતીત્યર્થઃ, ઉઞ્ઞિય શકટીશકટ ભરતિ, મૃત્વા રાજગૃહ નગર મધ્ય મધ્યેન યત્રૈવ સ્વક ગૃહ યત્રૈવ ધન્યઃ સાર્થવાહસ્તત્રૈવોપાગચ્છતિ. । તતઃ સ્વલુ રાજગૃહે નગરે શૃંગાટક યાવત્-મઠાપથપથેષુ વહુજનોઽન્યો ન્યમેવમારુયાતિ

સગડી સાગડ ગહાય જેણેવ સઘ કુલધરે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગ ચ્છિત્તા કોઢાગારે વિહાડેઈ) इस तरह रोहिणिका के वचन सुनकर धन्य सार्थवाहने उसे अनेक शकटी और शकटों को दिया वह रोहिणि का उन अनेक शकटी और शकटों को लेकर जहा अपना कुलगृह था वहा पहुँची-पहुच कर उसने वहा के कोष्ठागार को उगडा (विहाडित्ता पल्ल उञ्जिमदइ)-उघाड कर वहा रखे हुए शालि कोष्ठों को खोला उन्हें मुद्रा रहित किया-(उञ्जिमदित्ता सगडीसागड भरेइ) बाद में उनसे अनेक शकटी और शकटों को भरा (भरित्ता रायगिह नयर मज्झ मज्झेण जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ) भर कर राजगृह नगर के ठीक बीचो बीच के मार्ग से होकर वह जहां अपना घर था और जहा धन्य सार्थवाह थे वहा पहुँची-(नण्ण रायगिहे नयरे सिंगाडग जाव वहुजणो अन्नमन्न एवमाइक्खइ, वण्णेण

તણ સા રોહિણી સુવહુ સગડીસાગડ ગહાય જેણેવ સઘ કુલધરે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા કોઢાગારે વિહાડેઈ)

આ રીતે રોહિણિકાની વાત સાંભળીને ધન્યસાર્થવાહે તેને ઘણી ન ની મોટી ગાડીઓ આપી રોહિણિકા તે બધી નાની મોટી ગાડીઓને લઈને જગ પોતાનું પિયર હાલુ ત્યા આવી ત્યા આવીને તેણે ત્યાનો કોઠાર ઉઘાડયે (વિહાડિત્તા પલ્લ ઉઞ્જિમદઈ) ત્યારમાઠ ત્યા મૂકેલા શ નિના કોઠારોને ઉઘાડયા (ઉઞ્જિમદિ ત્તાસગડીસાગડ ભરેઈ) અને તેમનાથી નાની મોટી ઘણી ગાડીઓને ભરી

(ભરિત્તા રાયગિહ નયર મજ્ઝ મજ્ઝેણ જેણેવ સઘ ગિહે જેણેવ ઘણે સત્થવાહે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ)

ભરીને રાજગૃહ નગરના ઠીક મધ્ય ભાગે થઈને જ્યા તેનું પોતાનું ઘર અને જ્યા ધન્યસાર્થવાહ હતા ત્યા પહોચી

(તણ રાયગિહે નયરે સિંગાડગ જાવ વહુજણો અન્નમન્ન એવમાઈક્કવઈ,

ધન્યઃ=ધન્યવાદપાત્ર સ્વત્વે દેવાનુપ્રિયાઃ ધન્યઃસાર્થવાહઃ યમ્ય સ્વત્વ રોહિણિકા
સ્તુપા=ચતુર્થપુત્રવધૂ પશ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ શકટીશારુટેન નિર્યાતયતિ । તતઃ સ્વત્વ
સ ધન્યઃ સાર્થવાહ. પશ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ શકટીશારુટેન નિર્યાતિતાન્=મમર્પિતાન્
પશ્યતિ દૃષ્ટ્વા હૃષ્ટઃ યાત્ ' પડિન્હ' પ્રતીન્હતિ=સ્વીકરોતિ, પ્રતીપ્ય=સ્વી
કૃત્ય તસ્યૈવ મિત્રજ્ઞાતિપ્રભૃતે, ચતસ્રગા ચ સ્તુપાણાં કુલ્લટ્વસ્ય પુરતો રોહિણિકાં
સ્તુપા તસ્ય=નિજસ્ય કુલ્લટ્વસ્ય=કુલુમ્બસ્ય વહુપુ કાર્યેષુ ચ યાવદ્ રહસ્યેષુ ચ

દેવાણુપ્રિયા । ધણે સત્યવાહે તે પચ સાલિ અઘ્મણ સગડી સાગડેળ
નિજ્ઞાઈણ પાસઈ પાસિત્તા હઠ્ઠ તુઠ્ઠ પડિન્હ, પડિન્હિત્તા તસેવ મિત્ત-
ણઈ૦ ચત્તણ્ણ ય સુણ્ણાણ કુલઘરસ્સ પુરઓ રોહિણિય સુણ્ણ તસસ કુલ
ઘરસ્સ વહુસુ કજ્જેસુ ય જાવ રહસેસુ ય અપુન્હણિજ્જ જાવ સન્નક
જ્જ વહ્ણાવિય પમાણભૂય ઠાવેઈ) જવ વે ગાડી ઔર ગાડે ભરે હુણ
રાજગૃહ કે મધ્યમાર્ગ સે હોત્તર જા રહે થે-તથ લોગો ને દેસ્વત્તર નગરમેં
શ્રુ ગાટક આદિ માર્ગોં કે ઝપર પરસ્પર હસ પ્રકાર સે બાત ચિત્ત કરના
પ્રારંભ કિયા " દેવાણુપ્રિયો ! દેવો ધન્ય સાર્થવાહ કિતના અધિક ધન્ય
વાદ કા પત્ર હૈ કિ જો ચતુર્થ પુત્ર વધૂ રોહિણિકા કે દ્વાગ પાચ શાલિ
અક્ષતોં કી ગાડી ઔર ગાડો સે ભરકર પીછે લૌટાયે હુણ દેસ્વ રહા હૈ ।
ઔર હૃષ્ટ તુષ્ટ હો ઝન્હેં સ્વીકાર કર રહા હૈ । તથા સ્વીકાર કરકે ઝસ
રોહિણિકા કો મિત્રજ્ઞાતિ આદિ પરિજનોં કે ચારો પુત્રવધૂઓં કે કુલ

ધણેણ દેવાણુપ્રિયા ! ધણે સત્યવાહે તે પચસાલિ અઘ્મણ સગડીમાગડેળ નિ
જ્ઞાઈણ પાસઈ પાસિત્તા હઠ્ઠ તુઠ્ઠ પડિન્હ પડિન્હિત્તા તસેવ મિત્તણાઈ ચત્તણ્ણ
ય સુણ્ણાણ કુલઘરસ્સ પુરઓ રોહિણિય સુણ્ણ તસસ કુલઘરસ્સ વહુસુ કજ્જેસુય
જાવ રહસેસુય અપુન્હણિજ્જ જાવ સન્નકજ્જ વહ્ણાવિય પમાણભૂય ઠાવેઈ)

બ્યારે તે નાની મોટી ગાડીઓ રાજગૃહ નગરના મધ્યમાર્ગે થઈને
પસાર થઈ રહી હતી ત્યારે નગરના શ્રુ ગાટક વગેરેમા એકઠા થયેલા લોકો
પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતો કરવા લાગ્યા " દેવાનુપ્રિયો ! જુઓ ધન્યસાર્થવાહ
કેટલો બધો ભાગ્યશાળી છે કે જે આજે એથી પુત્રવધૂ રોહિણિકા વડે પાચ
શાલિક્ષોના ગાડાઓ અને ગાડીઓ ભરીને ફરી પાછા આવતા જોઈ રહ્યો છે
અને પ્રસન્ન થઈને તુષ્ટ થઈને તેને સ્વીકારી રહ્યો છે તે આ બધું સ્વીકારીને
રોહિણિકાને મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ આરે પુત્રવધૂઓના કુલુબી

આપચ્છનીયા યાવત્ મર્મકાર્યવર્દિકા પ્રમાણભૂતા ' ઠવેડ ' ' સ્થાપયતિ=સર્વ કુદુમ્પાધિષ્ઠાત્રીત્વેન તા નિયોજયતીત્યર્થ. ।

एवमेव हे श्रमणाः । आयुष्मन्तः । योऽस्माक श्रमणोवा श्रमणीवा प्रव्रजितः सन् विहरति यदि पञ्च च तस्य महाव्रतानि सर्वर्द्धितानि भवन्ति स खलु इह भवे एव बहूनां श्रमणानां ४=चतुर्विधसंघस्य अर्चनीयः-यावत् चातुरन्तसंसारकान्तार ' वीईवइस्सइ ' व्यतिव्रजिष्यति=पागयिष्यति यया च सा रोहिणिका=अन्यसार्थवा इत्य चतुर्थी पुत्रपधू. । उक्तञ्च-

गृह वर्ग के समक्ष अपने कुदुम्प के अनेक कार्यों में यावत् रहस्यों में पूजने योग्य यावत् समस्त कार्यों में प्रमाणभूत उसे बना रहा है ।

तथा सपूर्ण कार्यों की बढ़ाने वाली उसे मान रहा है-कारण इस का केवल यही है कि धन्य सार्थवाह ने उस रोहिणिका को अपने समस्त कुदुम्प की अधिष्ठात्री बना दिया । (एवामेव समाणाउसो ! जाव पच य से महव्वया सवड्डिया भवति सेण इह भवे चेव बहुण समणाण ४ अच्चणिज्जे जाव वीईवइस्सइ जहाव सा रोहिणिया एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयम' पन्नत्ते त्ति वेमि) इस तरह हे आयुष्मन्त श्रमणो ! जा हमारा श्रमण तथा श्रमणीजन दीक्षित होता हुआ अपने पंच महाव्रतों को बढ़ाता रहता है वह रोहिणिका की तरह हम भयमें ही अनेक श्रमण आदि महानुभावों द्वारा तथा चतुर्विध संघ द्वारा अर्चनीय आदि होता हुआ चतु

ઓની સામે પોતાના કુટુંબની ઘણી બાબતોમાં યાવત થીજ પણ ઘણી રહે-
સ્થની મહત્વપૂર્ણ વ તોમાં તેની મહાહ લઈને તેને પ્રમાણ ભૂત બનાવી રહ્યો છે

તેમજ રોહિણિકાને તે બધા કામોને સંપૂર્ણ રીતે પાર પાડનારી માની
રહ્યો છે કેમ કે ધન્યસાર્યવાહે કે હિણિકાને પોતાના આખા કુટુંબની અધિષ્ઠાત્રી
બનાવી દીધી છે

(एवामेव समाणाउसो ! जाव पचय से महव्वया सवड्डिया भवति से ण इह भवे चेव बहुण समणाण ४ अच्चणिज्जे जाव वीईवइस्सइ जहाव सा रोहिणिया एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयम' पन्नत्ते त्तिवेमि)

આ પ્રમાણે જ કે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા શ્રમણ તેમજ
શ્રમણીજન દીક્ષિત થઈને પોતાના પંચમહાવ્રતોનું વર્ધન કરે રહે છે-તે રોહિ
ણિકાની જેમ આ જગતમાં જ ઘણા શ્રમણ વગેરે મહાનુભાવો દ્વારા તેમજ
ચતુર્વિધ સંઘદ્વારા અર્ચનીય હોય છે અને તે ચતુર્ગતિ રૂપ આ અનાદિ

“ જહસેદ્ધી તદ્ ગુરુના, જહણાજગો તદ્ સમણમયોય ।

જહ વહુયા તદ્ ભવ્વા, જહ સાલિકુળા તદ્ વયાઇ ॥ ૧ ॥” ઇતિ

છાયા—“ યથાત્રેષ્ઠી તથા ગુરવઃ, યથાજ્ઞાતિજનસ્તથા શ્રમણસઘશ્ચ ।

યથા વપસ્તથા ભવ્યાઃ (શ્રમણાઃ) યથા શાલિકુળાસ્તથા વ્રતાનિ ॥ ૧ ॥ ઇતિ

एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् मोक्ष समाप्तेन

સસમસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્યાયમ્=પૂર્વોક્તઃ અર્થ=માત્ર પ્રક્ષપ્ત =પ્રરૂપિતઃ । ‘ ઇતિ બ્રવીમિ

इति पूर्ववत् ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धवाचरूपश्वदशभाषाकलितछलितक-

लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहच्छ

न्नપतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोल्हापुरराज-

गुरु-पालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाट-

व्रतिविरचिताया ‘ ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ’ सूत्रस्यानगारधर्ममृतव

ર્પિણ્યાख्याયા વ્યાખ્યાયા સસમમધ્યયન સપૂર્ણમ્ ॥ ૭ ॥

ર્ગતિ રૂપ હસ અનાદિ સસાર કાન્તાર કો પારકરદેતાહૈ । કદા બી હૈ-
શ્રેષ્ઠી કે સ્થાનાપન્ન યદા ગુરુજન હૈ જ્ઞાતિજનોં કે સ્થાનાપન્ન શ્રમણ સઘ
હૈ, વધુઓં કે સ્થાનાપન્ન ભવ્યજન હૈ ઓર શાલિકુળોં કે સમાન પાંચ
મહાવ્રત હૈ ।

હસ પ્રકાર હે જમ્બૂ ! મુક્તિ કો પ્રાપ્ત હુણ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર
ને હસ સસમ જ્ઞાતાધ્યયન કા પૂર્વોક્ત અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ । એસા
મૈં તુમ સે કહતા હૂં ।

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસી લાલજી મહારાજ કૃત “ જ્ઞાતા-
ધર્મકથાસૂત્ર ” કી અનગારધર્મમૃતવર્પિણી વ્યાખ્યા કા સાતવા
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૭ ॥

સ સાર કાતાર (જગલ) ને પાર થઇ જાય છે અહીં શ્રેષ્ઠીના સ્થાને ગુરુ
' જનો છે જ્ઞાતિજનોના સ્થાને શ્રમણસઘ છે સગાવડાલા ઓના સ્થાને ભવ્ય
જનો છે અને શાલિકુળો ના સ્થાને પંચમહાવ્રતો છે

આ રીતે હે જમ્બૂ ! મુક્તિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીર આ સાતમા
જ્ઞાતા ધ્યયનનો અર્થ પૂર્વોક્ત રૂપે નિરૂપિત કર્યો છે આમ હું તમને ઠીક રહ્યો છું
શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત ‘જ્ઞાતાધર્મકથાસૂત્ર’

સૂત્રની અનગાર ધર્મમૃતવર્પિણી વ્યાખ્યાનુ સાતમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥૭॥

॥ अथाष्टममध्ययन प्रारभ्यते ॥

उक्त सप्तमाध्यन सम्पत्त मल्लीनामक्रममष्टमाध्ययनमुच्यते, एव रूपेण सहा-
स्य सम्बन्धः—पूर्वाध्ययने ' महाव्रताना विराजनायामर्थो भवति, तथा तत्समारा-
धनाया शिवसुखावाप्तिरूपः परमार्थो भवती ' त्युक्तम्, अस्मिन्नध्ययने तु तेषा
महाव्रतानामेव स्तोकेनापि मायाशब्देन मालिन्ये सति यथावत् स्वफलजनकत्वं
नास्तीति प्रतिगोध्यते, इत्येव प्रसंगतः प्राप्तस्यैतस्याध्ययनस्य प्रथम सूत्रमाह—

—: अष्टम अध्ययन प्रारभ —

सातवा अध्ययन का भाव संपूर्ण हो गया है—अब मल्ली नामका
अष्टम अध्ययन प्रारम्भ होता है । इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ
इस प्रकार से संबंध है कि पूर्व अध्ययनमें जो यह विषय कहा गया
है कि जो साधुमहाव्रतो की विराधना करता है वह अनेक अनर्थों का
भोक्ता होता है और चतुर्गति ससार में परिभ्रमण करता है जो इनकी
रक्षा करता है—अच्छी तरह से आराधना करता है—वह शिव सुख
प्राप्तिरूप परमार्थका भोक्ता होता है ।

अब इस अध्ययन में सूत्रकार इस बातको स्पष्ट कहते हैं कि उन
महाव्रतों में यदि थोड़ीसी भी मायाशब्द से मलिनता आजाती है तो
वे यथावत् अपने फलके जनक नहीं होते हैं—। इसी संबंध से प्राप्त हुए
इस अध्ययन का यह प्रथम सूत्र है जहण भते इत्यादि

आठम अध्ययन

सातम अध्ययन पुरे થઈ ગયું છે હવે મલ્લી નામે આઠમું અધ્યયન
પ્રારંભ થાય છે આ અધ્યયનનો પૂર્વ અધ્યયનની સાથે સંબંધ એવી રીતે છે
કે—સાતમા અધ્યયનમા એ પ્રકારે ચર્ચા થઈ કે જે સાધુ મહાવ્રતોની વિરાધના
કરે છે તે ઘણા અનર્થોને ભોગવનાર હોય છે, અને તે ચતુર્ગતિ રૂપ આ
સ સારમા પરિભ્રમણ કરે છે જે પથમહાનતોની રક્ષા કરે છે—સારી પેઠે તેમની
આરાધના કરે છે તે શિવસુખ પ્રાપ્તિરૂપ પરમાર્થને ભોગવતા હોય છે

હવે આઠમા અધ્યયનમા સૂત્રકાર એ બાબતનું સ્પષ્ટીકરણ કરે છે કે
મહાવ્રતોમા જો થોડી પણ માયા શબ્દથી મલીનતા આવી જાય તો તેમનું
ફળ સંપૂર્ણ પણે મળતું નથી એજ સંબંધની ચર્ચા માટેના આઠમા અધ્યય-
નનું આ પહેલું સૂત્ર છે ' જહણ ભતે ' इत्यादि—

મૂલ્ય-જહ્નં ભંતે । સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં જાવ
સંપત્તેણં સત્તમસ્સ ણાયઙ્ગયણસ્સ અયમદ્દે પળણત્તે, અટ્ટમસ્સ
ણં ભંતે । કે અદ્દે પળણત્તે ? ।

एवं खलु जम्बू । तेण कालेण तेण समएण इहेव जंबू-
द्दीवे दीवे महाविदेहेवासे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं निस-
ढस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेण सीयोयाए महाणइए दाहि-
णेण सुहावहस्स वक्खारपव्वतस्स पच्चत्थिमेण पच्चत्थिमल-
वणसमुदस्स पुरत्थिमेण एत्थणं सलिलावतीनाम विजए
पन्नत्ते, तत्थ ण सलिलावती विजए वीयसोगानामं राय-
हाणी पणत्ता, नवजोयणवित्थिन्ना जाव पच्चक्खं देवलोग-
भूया, तीसे णं वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसि-
भाए इंदकुमे नामं उज्जाणे, तत्थ ण वीयसोगाए रायहाणीए
व्वले नाम राया तस्स धारणीपामोक्ख देवीसहस्स ओरोहे,
होत्था, तएण सा धारिणीदेवी अन्नया कयाइ सीहं सुमिणे
पासित्ता ण पडिबुद्धा जाव महव्वले नाम दारए जाव उम्मुक्क
जाव भोगसमत्थे ॥ सू० १ ॥

टीका—श्री जम्बूस्वामी पृच्छति—‘ जह्ण भते ! ’ इत्यादि ‘ जइ ’ यदि
‘ ण ’ खलु ‘ भते ! ’ हे भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण श्रीवर्धमान स्वा

टीકાર્થ—(જહ્ન ભતે !) શ્રી જમ્બૂસ્વામી સુધર્માસ્વામી સે પૂછતે હૈ
કિ (જહ્ન ભતે !) હે ભદત્ત । યદિ (સમણેણ ભગવયા મહાવિરેણ જાવ
સપત્તેણ સત્તમસ્સ ણાયઙ્ગયણસ્સ અયમદ્દે પળણત્તે અટ્ટમસ્સ ણ ભતે ! કે

टीकार्थ—(जह्ण भते !) श्री जम्बूस्वामी पूछे छे કે (जह्ण भते) हे भदत ! जे
(समणेष भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सत्तमस्स णायङ्गयणस्स अय-
मद्वे पणत्ते अट्टमस्स ण भते । के अद्वे पणत्ते)

मिना यावत्- सिद्धिगतिनामधेय स्थान संप्राप्तेन सप्तमस्य ज्ञाताध्ययनस्याय
मर्थः प्रज्ञप्तः, अष्टमस्य खलु हे भदन्त ! कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?

एव श्रीजम्बू स्वामिना पृष्ठः श्री सुधर्मास्वामी त कथयति- ' एव खलु जम्बू
इत्यादि । एव खलु हे जम्बू ' तस्मिन् समये- इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे मध्य जम्बू
द्वीपे महाविदेहे वर्षे महाविदेहनामके क्षेत्रे मन्दरस्य पर्वतस्य=मेरुगिरेः ' पञ्चत्वि
मेण ' पश्चिमे पश्चिमाया दिशि ' निसदस्स ' निषधस्य=निषधपर्वतस्य ' वामहरप
व्यस्य ' वर्षधरपर्वतस्य ' उत्तरेण ' उत्तरस्मिन् उत्तरस्या दिशि ' सीयोयाए
महाण्डए ' शीतोदाया महानया, ' दाहिणे ' दक्षिणे दक्षिणस्या दिशि सुहाव

अष्टे पणत्ते) श्रमण भगवान् महावीरने किं जो मोक्षको प्राप्त हो चुके है
सातवें ज्ञाता ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ प्ररूपित किया है तो हे भदन्त !
उन्होंने आठवें ज्ञाताध्ययन का क्या भाव प्ररूपित किया है । (एव खलु जम्बू
तेण कालेण तेण समएण इहैवजम्बू द्वीवे दीवे महाविदेहे वासे मन्दरस्स
पव्वयस्स पञ्चत्विमेण निसदस्स वासहर पव्वयस्स उत्तरेण सीयोयाए
महाण्डए दाहिणेण सुहावहस्स वक्खारव्वयस्स पञ्चत्विमेण पञ्चत्वि
मलवणसमुदस्स पुरत्विमेण एत्थण सलिलावड नाम विजए पन्नत्ते)
इस प्रकार जम्बू स्वामी के द्वारा पूछे गये श्री सुधर्मास्वामी उनसे कहते
हैं हे जम्बू । तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इसप्रकार है उस काल में और उस
समय में इस जम्बूद्वीप नामके द्वीप में स्थित महाविदेह नामका क्षेत्र में
सुमेरुपर्वत की पश्चिमदिशामें, निषधर्वत की उत्तरदिशा में शीतोदा म

मोक्ष पायेला श्रमण भगवान् महावीरे सातमा ज्ञाताध्ययनने। पूर्वोक्त
रीते अर्थ रूप्युं उयो छे तो छे लहत। तेमणे आठमा ज्ञाताध्ययनने।
शे। अर्थ निरूपित उयो छे

(एव खलु जम्बू तेण कालेण तेण समएण इहैव जम्बू द्वीवे दीवे महाविदेहे
वासे मन्दरस्स पव्वयस्स पञ्चत्विमेण निसदस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेण सीयो
याए महाण्डएदाहिणे ण सुहावहस्स वक्खारपव्वयस्स पञ्चत्विमेण पञ्चत्विमलव
णसमुदस्स पुरत्विमेण एत्थण सलिलावड नाम विजए पन्नत्ते)

श्री सुधर्मास्वामी जम्बू स्वामीने जवाण आपता कडे छे के छे जम्बू ।
तभारा प्रश्नने। उत्तर आ प्रमाणे छे के-ते कणे अने ते समये आ जम्बू
द्वीप नामे द्वीपमा स्थित महाविदेह नामे क्षेत्रमा सुमेरुपर्वतनी पश्चिमदिशामा
निषधपर्वतनी उत्तर दिशामा, महानदी शीतोदानी दक्षिणे, सुषोत्पादक वक्षन्डार
पर्वतनी पश्चिमे, पश्चिम लवणुममुद्रनी पूर्वदिशामा सलिलावती नामे विजय
छे पश्चिम समुद्रमा भगवारी महानदी शीतोदानी दक्षिण दिशामा सलिला

હસ્ય સુખોત્પાદકસ્ય ' રક્ષારપન્વયમ્સ ' રક્ષસ્કારપર્વતસ્ય પશ્ચિમે પશ્ચિમાયાં દિગિ પશ્ચિમલવણસમુદ્રસ્ય ' પુરત્થિમેગ ' પૌરસ્ત્યે પૂર્વે, અત્ર અસ્મિન્ સ્થાને સ્વલુ સલિલાવતી નામા વિજયઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ- પશ્ચિમ સમુદ્રગામિન્યાઃ શીતોદામહાનદ્યા દક્ષિણતઃ સલિલાવતીનામક ચક્રવર્તિના વિજેતવ્ય ક્ષેત્રસ્વર્ણમાસીત્, તદેવ સલિલાવતીવિજય इत्युच्यते इत्यर्थः ।

તત્ર સ્વલુ સલિલાવતીવિજયે વીતશોકા નામ રાજયાની પ્રજ્ઞપ્તા કથિતા । સા કીદૃશો- इत्याह-नखयोजनविस्तीर्णा यावन् द्वादश योजनावामा प्रत्यक्ष देव लोकभूता साक्षात् स्वर्गस्वरूपा । तस्या स्वलु शीतशोकाया राजधान्या उत्तर पौरस्त्ये=दिग्भागे ईशानकोणे इन्द्रकुम्भ नामोद्यानमासीत् । तत्र स्वलु वीतशोकाया राजधान्या बलो नाम राजाऽभूत् । तस्य पत्न्ये राज्ञो धारणी प्रमुख देवीसहस्रम्.

હાનદી કી દક્ષિણ દિશામેં, સુખોત્પાદક વક્ષસ્કારપર્વત કી પશ્ચિવદિશામેં, પશ્ચિમલવણસમુદ્ર કી પૂર્વ દિશા મેં સલિલાવતી નામ કા વિજય હૈ ।

પશ્ચિમ સમુદ્ર મેં જાનેવાલી શીતોદા મહાનદી કી દક્ષિણદિશા મેં જો સલિલાવતી નામકા વિજય હૈ-જિસે ચક્રવર્તી જીતા કરતે હૈં । उसी का नाम सलिलावती विजय है ।

(તત્થણ સલિલાવતી વિજય વીયસોયા નામ રાયહાણી પળ્લત્તા)
 उस सलिलावती विजय में वीतशोका नाम की राजधानी है
 (नव जोयणविस्तिन्ना जाव पच्चक्ख देवलोय या) इसका नौ योजन
 का विस्तार है और १२ योजन का आयाम है । यह प्रत्यक्ष में देवलोक
 -अमरावती-जैसी प्रतीत होती है । (तीसेण वीयसोगाए राघहाणीए
 उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए इदकुभे नाम उज्जाणे) उस वीतशोका नगरी
 के ईशान कोण मे एक इन्द्रकुभ नामका उद्यान था । (तत्थण वीयसोगाए

વતી નામે એક ક્ષેત્ર-ખડ-છે જેને ચક્રવર્તી સામ્રટે જીતતા આવ્યા છે-તેનું નામ સલિલાવતી વિજય છે

(તત્થણ સલિલાવતી વિજય વીયસોયા નામ રાયહાણી પળ્લત્તા) સલિલાવતી વિજયમા વીતશોકા નામે એક રાજધાની છે (નવ જોયણ વિત્થિન્ના જાવ પચ્ચક્ક દેવલોય મૂયા) તેનો વિસ્તાર નવ યોજન જેટલો તેમજ તેનો આયામ ૧૨ (બાર) યોજન જેટલો છે તે પ્રત્યક્ષ દેવલોક-અમરપુરી-જેવી જુદી છે (તીસેણ વીયસોગાએ રાયહાણીએ ઉત્તરપુરાત્થિમે દિસિમાએ હિદ કુમે નામ ઉજ્જાણે) તે વીત શોકા નગરીના ઈશાન કોણમા ઇન્દ્રકુભ નામે એક ઉદ્યાન હતો

(તત્થણ વીયસોગાએ રાયહાણીએ બલે નામ રાયા, તસ્સ પામોક્ક

अवरोधे=अन्तः पुरे आसन्. बलनामकस्य तस्य राज्ञो धारणीप्रमुखा एकसहस्र
सख्यकाः देव्यआमन्नित्यर्थः ।

ततस्तदनन्तर खलु सा धारिणी देवी अन्यदा कदाचित्—अन्यस्मिन् कस्मि
श्चित् समये मिह स्वप्ने स्वप्नावस्थायां दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा=जागरिता, यावद् महा-
बलो नाम दारको जातः इह यावच्छब्देन—सा स्वपवृत्त भर्तुरग्रे निवेदयति, ततः
स्वप्नपाठकमुखात् स्वप्नफलश्रुतिस्ततः सा गर्भवती जाता सपूर्णेपु मासेषु महा
बल नामकः पुत्रो जात इत्यर्थो बोद्धव्यः । सा कीदृश इत्याह उमुक्त—यावद्

रायहाणीए बले नाम राया, तस्स धारणी पामोक्ख देवी सहस्स ओराहे
होत्था) उस वीत शोका नाम की राजधानी में बल नामका राजा रहता
था । उसके अन्तः पुर में धारणी प्रमुख १ हजार रानियां थी । (तएण
सा धारिणी देवी अन्नया कयाइ सिहे सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धा
जाव महव्वले नाम दारए जाए उम्मुक्क जाव भोगसमत्थे) एक दिनकी
यात है कि जब धारिणी देवी अपनी शय्या में आनन्द के साथ सोयी
हुई थी उस समय उसने रात्रिके पश्चिम प्रहरमें स्वप्नमें एक सिंह देखा ।
स्वप्न देखने के साथ साथ वह जग गई । स्वप्न का वृत्तान्त उसने अपने
पतिसे निवेदिन किया । उसने स्वप्न पाठकों को बुलाया और उनलोगोंने
स्वप्न फलका रहस्य उसे सुनाया रानीने भी वह सब सुना । वह गर्भवती
हो गई । गर्भ के नौ मास रात्रि सगडे सात और आनन्द के साथ
उसके व्यतीत हुई । बाद मे महाबल नामका पुत्र उससे उत्पन्न हुआ ।

देवी सहस्स ओराहे होत्था)

ते वीतशोका नामनी राज नीमा भल नामे राज रहते। डने।

तेना राणवाममा धारणी १ ण ओउ डन्तर राणीओ डती।

(तएण सा धारिणीदेवी अन्नया कयाइ सिहे सुमिणे पासित्ताण पडिबुद्धा
जाव महव्वले नाम दारए जाए उम्मुक्कजाव भोगसमत्थे)

ओउ वणत्तनी वात छे के धारिणीदेवी पोतानी शय्या छपर सुणेथी सूती
ते समये रात्रिना छेदला पडारमा तेणे स्वप्नमा ओउ सिंह जेये। स्वप्न
जेतानी साथेए ते जगी गछ, अने स्वप्ननी विगत पोताना पतिने कडी सल
जावी स्वप्न पाठोने पोलाव्या अने तेमणे राजने स्वप्नना द्वा रिचे अथी
वात कडी राणीओ पणु स्वप्नना रहस्यने स्वप्न पाठोना सुणेथी सलज्जु
ते सगला थउ गर्भना नव मास अने साडा वात दिवसे सुणेथी पमार
थया तयार जाह यथा समये तेने महाबल नामे पुत्रने जन्म थये।

ભોગ સમર્થઃ = ઉન્નુક્તચાલભાવ વિજ્ઞાતપરિણતમાત્રઃ સર્વકલ્યાકુશલો ભોગસમર્થો જાત इत्यर्थः ॥ सू० १ ॥

મૂલ્મ-તएण तं महव्वलं अम्मापियरो सरिसियाणं कम-
लसिरी पामोक्खाणं पचण्ह रायवरकन्नासयाणं एगदिवसेणं
पाणिं गेण्हावेति, पच पासायसया पचसयदाओ जाव विहरइ,
थेरागमणं, इदकुभे उज्जाणे समोसढा । परिसा निग्गया, बलो
वि निग्गओ धम्म सोच्चा णिसम्म जं नवरं महव्वल कुमारं
रज्जे ठावेइ जाव एक्कारसंगवी चहूणि वासाणि सामणपरियाय
पाउणित्ता जेणेव चारुपठवए मासिएणं भत्तेणं सिद्धे ॥सू० २॥

ટીકા-તતસ્તદનન્તરસ્વલુ ત 'મહવ્વલ' મહાવલનામક કુમારમાતાપિતરૌ 'સરિ
સિયાણ' સદશીના કુલેન વયમા યોગ્યાના કમલશ્રીપમુલાણા, પશ્ચાનાં રાજવરક
ન્યાશતાના=પશ્ચશતાના રાજવરકન્યાનામ્ એકદિવસે પાણિ ગ્રાહયતઃ, પશ્ચ

ધીરે ૨ વહ મહાવલ પુત્ર બાલ્યકાલ કો પૂરા કરકે યૌવન અવસ્થા
કો પ્રાપ્ત હુઆ । અવસ્થાનુસાર વહ વિકસિતજ્ઞાન વાલા મી હોગયા
સર્વકલાઓ મે કુશલમતિ બન ગયા ઓર-પચેન્દ્રિયોં કે મોગ મોગને
લાયક મી હો ગયા । સૂત્ર " ૧ "

‘ તएण त महव्वल ’ इत्यादि

ટીકાર્થ-(તएण) इसके बाद (त महव्वल अम्मापियरो) उस महा
बल का माता पिताने (एगदिवसेण) एक ही दिन के भीतर (सरिसियाण
कमलसिरी पामोक्खाण पचण्ह रायवरकन्नासयाण) समान कुल, वय
वाली कमलश्री आदि पाचसौ श्रेष्ठ राजकन्याओं के साथ (पाणिं

સમય જતા મહાવલ બચણુ વળાવીને જુવાન થયો । ઉમરના વધારાથી
વધીને તે સવિશેષ વિકાસ યુક્ત જ્ઞાનવાળો ગયો । તે બધી ડળાઓમા કુશળ બુદ્ધિ
વાળો અને પચેન્દ્રિયોના ભોગોને ભોગવવા યોગ્ય થઈ ગયો ॥ સૂત્ર " ૧ " ॥

‘ તएण महव्वल ’ इत्यादि

ટીકાર્થ—(તएण) ત્યારબાદ (ત મહવ્વલ અમ્માપિયરો) મહામલને તેના
માતા પિતાએ (એગદિવસેણ) ફક્ત એક દિવસમા જ

(સરિસિયાણ કમલસિરીપામોક્ખા ણ પચણ્હ રાયવર કન્નામયાણ)

સરખા કુળ અને સરખી આયુષ્યવાળી કમળ શ્રી વગેરે પાચસો ઉત્તમ રાજ
કન્યઓની સાથે (પાણિ ગેણ્હાવેતિ) પરણાવી દીધો (પચ પાસાય સયા પચ સય

प्रासादशतानि पञ्चशतवधूना निवासार्थं पञ्चशतानि प्रसादान् कारयतः। पञ्चशतदाय = पञ्चशतप्रमितो दायः = योतुक 'दहेज' इति भाषा प्रसिद्धः श्वसुरेण तस्मै महावलकुमाराय प्रदत्त इत्यर्थः। स महावलकुमारः यावद् = उपरि प्रासादे मानुष्यकान् कामभोगान् उपभुञ्जानः, विहरति = आस्तेस्मः। अथ - 'थेरागमण' स्थविरागमनम् = तत्र वीतशोकाया नगर्या स्थविराणामागमनमभूदित्यर्थः। ते स्थविराः इन्द्रकुम्भे = इन्द्रकुम्भनामके 'उज्जाणे' उद्याने 'समोसोढा' समवसृताः - अवग्रहमवग्रहावस्थिता। परिपन्निर्गता = वीतशोकानगरी निवासीनो लोकाः स्थविराण वन्दनार्थं वहिर्निःसृता इत्यर्थः। वलोऽपि निर्गतः = वलनामा नृपोऽपि नगर्या नि सृतः। स्थविराणामन्तिके धर्मं श्रुत्वा निश्चय्य, राजा वलः प्रतिबुद्धः सन्नगादीत् -

गेण्हावेति) विवाह कर दिया। (पच पासायसया पचसयदाओ) और पाच सौ प्रासाद उन ५०० पाच सौ वधूओ के निवास के लिये बनवा दिये। महावल कुमारके लिये उसके श्वसुर ने ५०० प्रमाण दहेज दिया। अर्थात् दहेज में भी वस्तुए महावल कुमारको मिली-वे सब ५०० ५०० सौ थी। (जाव विहरइ) इस तरह वह महावल कुमार यावत् महलो के ऊपर रहता हुआ मनुष्य भव सबधी काम भोगों को भागने लगा (थेरागमण इन्द्रकुम्भे उज्जाणे समोसोढा परिसा निग्गया वलो वि निग्गओ) वीतशोका नामकी उसनगरी में एक समय स्थविरो का आगमन हुआ वे सब वहा के इन्द्रकुम्भ नाम के उद्यान में मुनिपरपरा के अनुसार अवग्रह प्राप्तकर विराजमान हुए। नगरी के परिषद मुनि वदना के लिये अपने अपने घर से निकल कर उस उद्यान में आई। वल राजा भी आया। (धम्म सोच्चा निसम्म

दाओ) अने पायसो भडेल ते पायसो नववधूओ ने गडेवा भाटेबनावी दीधा भडावल कुमारना ससराओ पायसो प्रमाण देज आप्पु ओटले के भडावलकुमाने देजभा नेटली वस्तुओ भणी ते तमाम पायसोनी सज्ज्यावाणी छती (जाव विहरइ) आ प्रमाणे भडावल कुमार 'यावत' णधा भडे लोभा रहीने मनुष्य लवना णधा लोगोभोगववा लाग्ये।

(थेरागमण इन्द्रकुम्भे उज्जाणे समोसोढा परिसा निग्गया वलो वि निग्गओ)

ओक वणते वीतशोका नामनी ते नगरीमा स्थविरोनु आगमन थयु तेओ णधा त्याना इन्द्रकुलना उद्यानमा मुनिपरपराने अनुसरता अवग्रह भेजवीने निराजमान थया नागरिकोनी परिषद पोत पोत्ताना धेश्ठी नीकणीने मुनिज्जोनी वदना भाटे उद्यानमा आवी णल्लराज पणु त्या आया,

ભોગ સમર્થઃ = ઉચ્ચુક્તચાલભાવ વિજ્ઞાતપરિણતમાત્રઃ સર્વકલાકુશલો ભોગસમર્થો જાત ઇત્યર્થઃ ॥ સૂ. ૧ ॥

મૂલ્મ-તણ ત મહવ્વલ અમ્માપિયરો સરિસિયાણં કમ-
લસિરી પામોવ્લાણં પંચળહ રાયવરકન્નાસયાણં એગદિવસેણં
પાણિં મેળહાવેતિ, પંચ પાસાયસયા પંચસયદાઓ જાવ વિહરહ,
થેરાગમણં, હદકુંભે ઉજ્જાણે સમોસઢા । પરિસા નિગ્ગયા, વલો
વિ નિગ્ગઓ ધમ્મં સોચ્ચા ણિસમ્મ જં નવરં મહવ્વલ કુમારં
રજ્જે ઠાવેહ જાવ એકારસંગવી વહૂણિ વાસાણિ સામણ્ણરિયાયં
પાઉણિત્તા જેણેવ ચારુપઠ્ઠવ્વે માસિણં ભત્તેણં સિદ્ધે ॥સૂ. ૨॥

ટીકા-તતસ્તદનન્તર સ્વલુ ત 'મહવ્વલ' મહાવલનામક કુમાર માતાપિતરો 'સરિ
સિયાણ' સદ્દશીના કુલેન વયમા યોગ્યાના કમલશ્રીપમુલાણા, પશ્ચાના રાજવરક
ન્યાશતાના=પશ્ચશતાના રાજવરકન્યાનામ્ એકદિવસે પાણિ ગ્રાહયતઃ, પશ્ચ

ધીરે ૨ વહ મહાવલ પુત્ર ચાલ્યકાલ કો પૂરા કરકે ચૌવન અવસ્થો
કો પ્રાપ્ત હુઆ । અવસ્થાનુસાર વહ વિકસિતજ્ઞાન ચાલા મી હોગયા
સર્વકલાઓં મેં કુશલમતિ ઘન ગયા ઓર-પચેન્દ્રિયોં કે ભોગ ભોગને
લાયક મી હો ગયા । સૂત્ર " ૧ "

‘ તણ ત મહવ્વલ ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(તણ) હસકે વાદ (ત મહવ્વલ અમ્માપિયરો) ઉસ મહા
વલ કા માતા પિતાને (એગદિવસેણ) એક હી દિન કે મીતર (સરિસિયાણ
કમલસિરી પામોવ્લાણ પચળહ રાયવરકન્નાસયાણ) સમાન કુલ, વય
ચાલી કમલશ્રી આદિ પાચસૌ શ્રેષ્ઠ રાજકન્યાઓં કે સાથ (પાણિ

સમય જતા મહાવલ બચણુ વળાવીને જુવાન થયો ઉમરના વધારાથી
વધીને તે સવિશેષ વિકાસ યુક્ત જ્ઞાનવાળો ગયો તે બધી કળાઓમા કુશળ બુદ્ધિ
વાળો અને પચેન્દ્રિયોના ભોગોને ભોગવવા યોગ્ય થઈ ગયો ॥ સૂત્ર " ૧ " ॥

‘ તણ મહાવલ ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(તણ) ત્યારણાદ (ત મહવ્વલ અમ્માપિયરો) મહાવલને તેના
માતા પિતાએ (એગદિવસેણ) ફક્ત એક દિવસમા જ

(સરિસિયાણ કમલસિરીપામોવ્લા ણ પચળહ રાયવર કન્નાસયાણ)

સરખા કુળ અને સરખી આયુષ્યવાળી કમળ શ્રી વગેરે પાચસૌ ઉત્તમ રાજ
કન્યઓની સાથે (પાણિ મેળહાવેતિ) પરણાવી દીધો (પંચ પાસાય સયા પંચ સય

मूलम्—तएणं सा कमलसिरी अन्नया सीहं सुमिणे जाव वल-
भदो कुमारो जाओ, जुवराया यावि होत्था, तस्स ण महाव-
लस्स रत्तो इमे छप्पियवालवयसगा रायाणो होत्था, त जहो
अयले धरणे पूरणे वसु वेसमाणे अभिचदे सहजायया सहवड्ढि-
या जाव अम्हेहि एगयओ समेच्चा णित्थरियव्व त्तिकहु अन्न-
मन्नस्सेयमट्ट पडिसुणेति, तेणं कालेणं तेणं समएणं, इदकुभे
उज्जाणे थेरा समोसढा । परिसा निग्गया, महव्वले णं
धम्म सोच्चा ज नवर छप्पियवालवयसए आपुच्छामि
वलभद च कुमार रज्जे ठावेमि, जाव छप्पिय वालवयसए आपु-
च्छइ । तएणं ते छप्पियवालवयसगा महव्वल राय एवं
वयासी—जइ ण देवाणुप्पिया । तुव्वमे पव्वयह अम्ह के अन्ने
आहारे वा जाव पव्वयामो । तएणं से महव्वले राया ते
छप्पिय वालवयसए एव वयासी—जइण तुव्वमे मए सद्धि जाव
पव्वयह तो ण गच्छह जेठे पुत्ते सएहिं २ रज्जेहि ठावेह—
पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा जाव पाउव्वभवति, तए
णं से महव्वले राया छप्पियवालवयसए पाउव्वभूते पासइ,
पासित्ता, हट्टुत्ते कोडुविय पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता, वलभ-
दस्स अभिसेओ आपुच्छइ, तएण से महव्वले जाव महिड्ढीए
जाव पव्वइए एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, वहुहिं चउत्थ जाव
भावेमाणे विहरइ ॥ सू० ३ ॥

અત્ર પૂર્વવદ્ વર્ણન ત્રોધ્યમ્ યથા હે દેવાનુપ્રિયાઃ મહાબલકુમાર રાજ્યે સ્થાયિત્વા
યુષ્માકમન્તિકે પ્રવ્રજિતુમિચ્છામિ. તત્ સ્થવિરૈઃ- 'વિલમ્બ માકુરુ' इत्युक्तो
उसौ बल यन्नवर=विशेषवृत्तमाह-महाबल महाबलनामक स्वपुत्र राज्ये स्थाप-
यति स्थापयित्वा स्थविराणा समीपे प्रव्रजितः ।

યાવદ્ એકાદશાઙ્ગિદ્ એકાદશાઙ્ગાન્યધીતે સ્મ । વહ્નિ ર્વાણિ શ્રામણ્યપર્યાય
પાલયિત્વા યત્રૈવ ચારુપર્વતસ્તત્રોપાગત્ય માસિકેન ભક્તેન=માસિકભક્તપર્યાખ્યાને
ન માસિકમનશન કૃત્વેત્યર્થ , સિદ્ધ =મુક્તિ પ્રાપ્તઃ ॥ સૂ૦૨ ॥

જ નવર મહાબલ કુમાર રજ્જે ઠાવેહ, જાવ એકકારસગવી વઢૂણિ વાસા
ણિ સામણપરિયાય પાઝણિત્તા જેણેવ ચારુપવ્વણ, માસિણ ભક્તેણ
સિદ્ધે) સ્થવિરોં સે શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મ કા વ્યાખ્યાન સુનકર, ઉસે
હૃદય મેં ધારણ કર રાજા બલ પ્રતિબુદ્ધ હો ગયા । ઓર કહને લગા-
હે દેવાનુપ્રિયો ! મેં મહાબલ કુમાર કો રાજ્ય મેં સ્થાપિત કર આપકે
પાસ દીક્ષા લેના ચાહતા હું । હસ તરહ જબ રાજા ને કહા-તો ઉન સ્થવિ-
રોં ને “વિલમ્બ મત કરો” એસા ઉસસે કહા-હસ પ્રકાર ઉન સે
ઑજ્ઞાપિત્ત હોતા હુઆ વહ મહાબલ રાજા વાપિસ નગર મેં આયા વહા
આકર ઉસને મહાબલ કુમાર કો રાજ્ય મેં સ્થાપિત કિયા ।

1- વાદ મેં સ્થવિરોં કે પાસ જાકર દીક્ષિત હો ગયા । ધીરે ૨ ઉસને
૧૧ અગોં કા અધ્યયન કર લિયા । હસ તરહ ઉસને અનેક વર્ષોં તક
શ્રામણ્ય પર્યાય કા પાલન કિયો । પાલન કરકે ફિર વહ જહા વંહ
ચારુ પર્વત થા વહા આયા । વહા આકર ઉસને ૧ મામ કા ભક્ત પ્રત્યા
ખ્યાન કિયા । ઓર અન્ત મેં મુક્તિ કો પ્રાપ્ત કિ । સૂત્ર “ ૨ ”

(ધમ્મ સોચ્ચા નિસમ્મ જ નવર મહાબલ કુમાર રજ્જે ઠાવેહ, જાવ એકકારસગવી
વઢૂણિ વાસાણિ સામણપરિયાય પાઝણિત્તા જેણેવ ચારુપવ્વણ માસિણભક્તેણ સિદ્ધે)

સ્થવિરો પાસે શ્રી શ્રુતચરિત્ર રૂપ ધર્મનું વ્યાખ્યાન માલગીને તેને
સારી પેઠે હૃદયમાં ધારણ કરીને રાજા બલ પ્રતિબુદ્ધ થઈ ગયો, અને તે કહેવા
લાગ્યો-‘ હે દેવાનુપ્રિયો ! હું મહાબલ કુમારને રાજ્યાસને સ્થાપિત કરીને
તમારી પાસેથી દીક્ષિત થવા ચાહું છું રાજાની આ વાત સાલગીને સ્થવિરો
એ તેને કહ્યું ‘વિલમ્બ કરો નહિ’ આ રીતે તેમની આજ્ઞા મેળવીને રાજા નગ
રમાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેણે મહાબલ કુમારને રાજ્યસિંહાસન ઉપર બેસાડ્યો ।
ત્યારબાદ રાજા સ્થવિરોની પાસે આવીને દીક્ષિત થઈ ગયો ધીમે ધીમે
તેણે અગિયાર (૧૧) અંગોનું અધ્યયન કર્યું આરિતે તેણે ઘણા વર્ષો સુધી
શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કર્યું પાલન કરીને તે જ્યાં ચારુપર્વત હતો ત્યાં
આવીને તેણે એક માસનું ભક્ત પ્રત્યાખ્યાન કર્યું અને અન્તે મુક્તિ મેળવી ।

मूलम्—तएण सा कमलसिरी अन्नया सीहं सुमिणे जाव वल-
भदो कुमारो जाओ, जुवराया यावि होत्था, तस्स ण महाव-
लस्स रत्तो इमे छप्पियवालवयसगा रायाणो होत्था, त जहो
अयले धरणे पूरणे वसु वेसमाणे अभिचदे सहजायया सहवड्ढि-
या जाव अम्हेहि एगयओ समेच्चा णित्थरियव्व त्तिकट्टु अन्न-
मन्नस्सेयमट्टु पडिसुणेंति, तेण कालेणं तेणं समएणं । इदकुमे
उज्जाणे थेरा समोसढा । परिसा निग्गया, महव्वले णं
धम्मं सोच्चा ज नवर छप्पियवालवयसए आपुच्छामि
वलभद च कुमार रज्जे ठावेमि, जाव छप्पिय वालवयसए आपु-
च्छइ । तएणं ते छप्पियवालवयसगा महव्वल रायं एवं
वयासी—जइ ण देवाणुप्पिया । तुव्वे पव्वयह अम्ह के अन्ने
आहारे वा जाव पव्वयामो । तएणं से महव्वले राया ते
छप्पिय वालवयसए एव वयासी—जइणं तुव्वे मए सद्धि जाव
पव्वयह तो ण गच्छह जेट्ठे पुत्ते सएहि २ रज्जेहि ठावेह—
पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा जाव पाउव्वभवंति, तए
णं से महव्वले राया छप्पियवालवयसए पाउव्वभूते पासइ,
पासित्ता, हट्टुट्टे कोडुविय पुरिसे सहावेइ, सदावित्ता, वलभ-
दस्स अभिसेओ आपुच्छइ, तएण से महव्वले जाव माहिड्ढीए
जाव पव्वइए एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, वट्ठहि चउत्थ जाव
भावेमाणे विहरइ ॥ सू० ३ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं सा कमलश्री राक्षी महाबलस्य भार्या, अन्यदा अन्यस्मिन् काले सिंहं स्वप्ने दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा । यावत् बलभद्रः कुमारो जातः अत्र यावत्तरणेनायमर्थोऽयमन्तव्यः—सा स्वप्नवृत्तं भर्तुरग्रे निवेदयति ततः स्वप्नपाठकमुखात् स्वप्नफलश्रवणं यावत्—तदनन्तरं सा गर्भवती जाता, सपूर्णेषु मासेषु बलभद्रनामकः कुमारः उत्पन्न इति । स युवराजश्चाप्यभवत् । तस्य खलु महाबलस्य राज्ञ इमे=वक्ष्यमाणा पठपि च बालवयस्यका बालमित्राणि

‘तएण सा कमलसिरी’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सा कमलसिरी) महाबल राजा की रानी कमल श्री ने (अन्या) किसी एक समय (सींह) सिंह को (सुमिणे) स्वप्न में (जाव बलभद्रो कुमारो जाओ) देखा और देख कर वह प्रतिबुद्ध हो गई—जग गई—। यावत् उस के बलभद्र कुमार उत्पन्न हुआ यहा यावत् शब्द से इस पाठ का संग्रह हुआ है—कमल श्री ने स्वप्न में जो सिंह देखा था उस स्वप्न को उस ने अपने पति महाबल से कहा—महाबल ने स्वप्नपाठकों को बुलाया उन्हो ने इस दृष्ट स्वप्न का क्या फल है यह बात उसे सुनाई । सुनकर सब को बड़ा आनन्द हुआ । कमल श्री गर्भवती हुई । नौ मास साढे सात दिन जब गर्भ को पूर्ण हो गया—तब कमल श्री के बलभद्र नाम का कुमार उत्पन्न हुआ ।

(जुवराया यावि होत्था) धीरे २ वह कुमार युवराज भी बन गया ।
(तस्स ण महाबलस्स रन्नो इमे छप्पिय बालवयसगा रायाणो होत्था)

‘तएण सा कमलसिरी’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थारणाद (सा कमलसिरी) महाबल राजा की रानी कमल श्री ने (अन्या) कौन एक वખते (सींह) सिङ्ग ने (सुमिणे) स्वप्न में (जाव बलभद्रो कुमारो जाओ) लेयो अने लेईने ते जगी गछ ‘यावत्’ समय जाता तेने महाबल नामे कुमार जन्म्यो अछी ‘यावत्’ शब्दथी आ पाठोनो संग्रह थयो छे के—कमलश्री ने जे स्वप्न में सिङ्ग लेयो छते ते स्वप्न विषेनी थर्या तेणे पोताना पति महाबल ने दुई महाबल स्वप्नपाठकेने बोलाव्या स्वप्नपाठकेने तेने स्वप्नतु इण जताव्यु स्वप्नइणने जालीने अधाने पूज्ज आनंद थयो कमलश्री मगलाई थछ गलने ज्यारे नवमास अने साडा सात हिस पूरा थया त्थारे कमलश्रीना उदरथी महाबलनामे कुमारने जन्म थयो

(जुवराया यवि होत्था) समय पसार थता कुमार महाबल युवराज पणु थछ गया (तस्स ण महाबलस्स रन्नो इमे छप्पिय बालवयसगा रायाणो होत्था) महाबल राजने ६ बालमित्र राजाओ पणु छता

राजान आसन्, तद् यथा—(१) अचल, (२) धरण, (३) पूरणः, (४) वसुः (५) वैश्रमण, (६) अभिचद्रः, ते कीदृशा इत्याह—‘सहजायया’ सहजातकाः सह समानकाले समुत्पन्नाः, सहवर्धिताः, समानकाले वर्धिताः, यावत्—‘तेसिं अन्यया कयाइ एगयओ सहियाण समुवागयाण सन्निसन्नाण सन्निविट्ठाण इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—जन्न देवाणुप्पिया ! अम्ह सुह वा दुक्ख वा पवज्जा वा विदेशगमण वा समुपज्जइ, तन्न, ’ इत्यन्तस्य पाठस्य संग्रहः । तेषाम् अन्यदा कदाचित् एकतः सहितानां समुपागतानां सनिषण्णानां सनिविष्टानाम् अयमेतद्रूपः मिथः कथासमुल्लापः समुदपद्यत इति छाया । एकतः=एकत्र—एकस्मिन् स्थाने सहितानां=मिलितानां, समुपागतानां सप्तानां मध्ये एकस्य कस्यचिद् भवने कार्यवशात् सप्राप्तानां, सनिषण्णानाम्=उपविष्टानां, सनिविष्टानां=स्थिरसुखासनस्थितानाम्—अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूप मिथः कथासमुल्लापः=परस्परवार्तालापः समुदपद्यत=अभवत्, इत्यर्थः । यत् खलु देवानुप्पिया ! अस्माकं सुख वा दुःख वा प्रवज्जा वा विदेशगमन वा समुत्पद्यते, तत् खलु अस्माभिः ‘एगयओ

उस महाबल राजा के ये छह बाल मित्र राजा थे । (तंजहा अयले, धरणे, पूरणे, वसु, वेसमणे अभिचदे सहजायया, सहवड्डिया जाव कम्हेहिं एगयओ समेच्चा णित्यरियव्व त्ति कट्ठु अन्नमन्नस्सेयमट्ठ पडिसुणेति) उनके नाम ये हैं—(१) अचल, (२) धरण (३) पूरण (४) वसु (५) वैश्रमण (६) ये अभिचद्र । सब महाबल राजा के साथ २ उत्पन्न हुए थे, और उन्हीं के साथ २ बड़े हुए थे । एक समय सब ये सबके सब किसी कार्यवश एक स्थान पर एकत्रित हुए तो परस्पर में इन सब ने ऐसा विचार किया—कि चाहे सुख कारक कार्य हो या दुःख कारक कार्य हो, प्रवज्जा लेना हो या परदश जाना हो चाहे इनमें से कोई भी

(तंजहा अयले, धरणे, पूरणे, वसु, वेसमणे, अभिचदे सहजायया सह वड्डिया जाव अम्हेहिं एगयओ समेच्चा णित्यरियव्व त्ति कट्ठु अन्नमन्नस्सेयमट्ठ पडिसुणेति

तेमना नामो आ प्रमाणे छे—(१) अचल, (२) धरण, (३) पूरण, (४) वसु, (५) वैश्रमण, (६) अभिचद्र आ जधा महाबल राजानी साथे ज जन्म्या हुता, अने तेमनी नाये ज मोटा थया हुता, ओक वणते न्यारे जधा ओछ कार्यवश ओक स्थाने ओकठा थया त्तारे तेओओ विचार कर्यो छे हु ज कारक के सुख कारक गमे तेषु काम होय प्रवज्जा अडुलु करवी होय के परदेश जेडु होय, तो आपणे जधाओ सपीने ज ते काम साथे रहीने करव

समेच्छा ' एकतः समेत्य ' गित्थरियव्व ' निस्तरितव्यम् इति कृत्वाऽन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति, अस्माभिः सर्वमित्रैर्मिलित्वा सर्वं कार्यं संपादनीयमिति निश्चित्य परस्परमेतमर्थं प्रतिज्ञातवन्त इत्यर्थः ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये इन्द्रकुम्भे उद्याने स्थविराः समवसृताः समागतवन्तः । परिपन्निर्गता=स्थविरान् यदितु वीतशोका नगरी निवासिनो लोका बहिर्नि सृताः, महाबलो राजाऽपि वन्दनार्थं निर्गत । महाबलः खलु धर्मं श्रुत्वा प्रतिबुद्धः सन् स्थविरानेवमवादीद् युष्माकमन्तिके प्रयजितुमिच्छामि यन्नवर पडपि च बालवयस्यकान् आपृच्छामि बलभद्रं च कुमार राज्ये स्थापयामि, तवः कार्यं करना हो तो हम सब लोग मिलकर ही वह कार्य करेंगे इस प्रकार से 'आपस में वे सब वचन बद्ध हो गये । (तेण कालेण तेण समएण) इतने में उस काल और उस समय में (इन्द्रकुम्भउज्जाणे थेरा समोसढा) उस इन्द्रकुम्भ उद्यान में स्थविरो का आगमन हुआ— (परिसा निग्गया महव्वलेण धम्म सोच्चा ज नवर छप्पियवालवयसए आपु च्छामि बलभद्रं च कुमार रज्जे ठावेमि) स्थविरो का आगमन सुनकर वीतशोका नगरी की परिपद मुनियों को बचना करने के लिये अपने २ घर से निकल कर उद्यान में आई, महाबल राजा भी गये । धर्म का उपदेश हुआ महाबल राजा धर्म का उपदेश सुन कर प्रतिबोध को प्राप्त हो गया ।

उसने उसी समय स्थविरो से कहा—भद्र ! मैं आप लोगों के पास दीक्षा धारण करना चाहता हूँ—परन्तु मेरे जो बालसखा हैं मैं उन से

आ प्रमाणे तेज्जे प्रतिज्ञा (वचन) बद्धं थया (एण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये इन्द्रकुम्भे उज्जाणे थेरा समोसढा) इन्द्रकुल उद्यानम् ! स्थविरो पधायो

(परिसा निग्गया महव्वले ण धम्मं सोच्चा जनवर छप्पिय बालवयसए आपृच्छामि बलभद्रं च कुमार रज्जे ठावेमि)

स्थविरोऽनु, आगमन सालणीने पोत पोताना अथानेधी नीकणीने वीत शोका नगरीना नागरिकेनी परिपद मुनियोनी वदन् भाटे उद्यानमा आवी महाबल राजा पणु त्या गया मुनिज्जे धर्मो उपदेश आये धर्मोपदेश श्रवण करीने राजा महाबलने प्रतिबोध थयो अटक्के के वैराग्य थयो

महाबले ते समये ज स्थविरोने विनति करी “ हे भद्र ! तु तमारी पासैथी दीक्षित थवा थाहु छु पणु ते पडेला आ विचे मारा पालसाभाज्जोने

स्थविरै—‘ मा विलम्ब कुरु ’ इत्येवमुक्तं सन् स्वभवने समागत्य यावत् तान् पडपि बालवयस्यकान् अपृच्छति । तत खलु ते पडपि च बालवयस्यका महाबल रोजानमेवमवादीत्—यदि खलु देवानुमियाः ! यूय प्रव्रजिष्यथ, अस्माक कोऽन्य आधारी वा आलम्बो वा भविष्यति यावत्—तस्माद् युष्माभि सहैव वय प्रव्रजामः । तत खलु स महाबलो राजा तान् पडपि च बालवयस्यकान् एवमवादीत् यदि खलु यूय मया साथं यावत् प्रव्रजिष्यथ, तर्हि खलु स्व स्वभवन गच्छत ज्ये-

इस विषय में पूछ लें और बलभद्र कुमारको राज्य में स्थापित कर दें पीछे आपके पास समय लूंगा । इस प्रकार राजा का कथन सुनकर स्थवि-
रों ने उससे “ मा विलम्ब कुरु ” विलम्ब मत करो ऐसा कहा—
स्थविरो द्वारा अनुमत हो कर राजा अपने घर पर वहां से वापिस
आया और आते ही उस ने (जाव छप्पिय बालवयसए आपुच्छइ)
अपने बाल काल्य के उन छह मित्रों से पूछा ।

(तएण ते छप्पिय बालवयसगा महव्वल राय एव वयासी)
अपने मित्र महाबल की बात सुनकर उन मित्रों ने उससे ऐसा कहा—
(जइण देवा० जाव पव्वयामो) मित्र ! यदि आप दीक्षा लेना चाहते
हैं तो फिर हमारा आपके बाद और कौन दूसरा आलम्बन तथा आधार
होगा—इसलिये हम भी आप ही के साथ दीक्षा समय धारण करेंगे ।
(तएण एव वयासी) इस प्रकार अपने बाल काल्य के मित्रों की बात
सुनकर राजा महाबल ने उन से कहा (जइण तुब्भे मए सद्धि जाव

हु पूछी लउ अने बलभद्र कुमारने राज्यासने ऐसाही कह तयार पाद
तमारी पासेथी समय अइणु करीश “ आ रीते राजनी विनती सालणीने
स्थविरोअे तेने कहु—“ मा विलम्ब कुरु, मोहु करे नहि ” आम स्थविरोनी
आज्ञा भेजवीने ते राज पोताने घेर पाछे वज्जे घेर आवीने तेणे (जाव
छप्पियबालवयसए आपुच्छइ पोताना छये आलसणाअेने पूछथु

(तएण ते छप्पियबालवयसगा महव्वल राय एव वयासी) पोताना
मित्र भडाबलनी बात सालणीने ते मित्रोअे तेने कहु—“ जइण देवा जाव
पव्वयामो) हे मित्रवर ! तमे ने दीक्षित थवा खाछो छे तो अमारो केणु
आलम्बन अने आधार थये ? अथी अमे पणु तमारी साथे न दीक्षा समय
धारण करीशु (तएण एव वयासी) आ रीते पोताना आल सणाअेनी
बात सालणीने भडाबले तेभने कहु—

(जइण तुब्भे मए सद्धि जाव पव्वयइ तोण गच्छइ जेहे पुत्ते सएहिं २ रज्जे

पुत्रान् पुत्रान् स्वकेषु स्वकेषु राज्येषु स्थापयत, स्थापयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीः
शिविका दूरुद्धाः समारुद्धाः सन्तो यावत्=ममान्तिके प्रादुर्भवन्त, ततस्ते षडपि
बालवयस्यकाः स्व स्व गृहे गत्वा स्व स्व ज्येष्ठपुत्र राज्ये स्थापयित्वा पुरुषसह
स्रवाहिनीः शिविकाः समारुद्धाः सन्त महाबलस्य राज्ञोऽन्तिके प्रादुर्भवन्ति ।
ततः खलु स महाबलो राजा षडपि च बालवयस्यकान् प्रादुर्भूतान् पश्यति । दृष्ट्वा
दृष्टुष्टो=ऽतिशयेन तृष्टः सन् कौटुम्भिरुपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति । शब्दयित्वा
=आहूय बलभद्रस्य बलभद्रकुमारस्य अभिषेकः कारितः । ततो महाबलो बलभद्र

पञ्चमह तो ण गच्छह जेहे पुत्ते सण्हिं २ रज्जेहिं ठावेह) यदि आप
लोग मेरे साथ प्रव्रजित होना चाहते हैं तो अपने २ घर पर जाओ-
और जाकर ज्येष्ठ पुत्रों को अपने २ राज्यपद पर स्थापित करो-बाद में
पुरुष सहस्र वाहिनी शिविकाओ पर आरुढ होकर मेरे पास यहा आओ
(पुरिससहस्रवाहिणीओ सीयाओ दुरुद्धा जाव पाउब्भवति) इस
प्रकार महाबल राजा की बात सुनकर वे छहों मित्र वहा से अपने २
घर पर आये-और अपने २ ज्येष्ठ पुत्रों को अपने २ पद पर स्थापित
कर पुरुष सहस्र वाहिनी शिविका पर आरुढ हो महाबल राजा के
पास आये । (तएण से महाबले राया छप्पिय बाल वयसए पाउब्भूए
पासइ, पासित्ता हट्ठ तुट्ठे कोडु विय पुरिस सदावेड, सदावित्ता बलभद्रस्स
अभिसेओ, आपुच्छइ) महाबल राजा ने जब अपने इन छहों बाल
मखाओं को अपने पास आया हुआ देखा-तो देखकर वे बहुत अधिक

जे तमे अधा भुशीथी भारी साथे दीक्षित भवा आहुताडो छे तो सत्तरे
पोत पोतानी राजधानीछे जेधने पोत पोताना मोटा पुत्रो ने राजगादीछे
जेसाडीने ऊपर पुरुषो पडन करे खेवी ' पुरुष सहस्रवाहिनी ' पालणीओ
ऊपर जेसीने अड्डी आवे (पुरिससहस्रवाहिणीओ सीयाओ दुरुद्धा जाव
पाउब्भवति) आ रीते महाभव राजनी बात आलणीने छे मित्रो त्याथी
पोतपोताने घेर आव्या अने पोताना स्थाने मोटा पुत्रोने राज गादीछे
जेसाडीने पुरुष सहस्र वाहिनी पालणीओ ऊपर जेसीने थधने महाभव राजनी
पासे आव्या

(तएण से महाबले राया छप्पिय बालवयसए पाउब्भूए पासइ, पासित्ता
हट्ठ तुट्ठे कोडुवियपुरिस सदावेड सदावित्ता बलभद्रस्स अभिसेओ, आपुच्छइ)

पोताना छे आलमित्रोने पोतानी प से आवी गयेला जेधने राज महाभव
अत्यंत क्षुब्धित तेमज सतुष्ट थयो राजाछे सत्तरे ते समये जे छोट भिक पुत्र

राजानम् आपृच्छतिस्म । आपृच्छय स महाबलो यावत् महद्दर्शं महाद्युत्या पुरुष
सहस्रवाहिनी शिविकामास्थ यावत् स्थविराणामन्तिके मत्रजितः दीक्षा गृहीत-
वान् । एकादशाङ्गानि-आचाराङ्गादीनि अधीतेस्म । बहुभिश्चतुर्थादि भक्तैः यावत्
आत्मानं भावयन् विहरति आस्ते स्म ॥ सू० ३ ॥

मूलम्-तएण तेसि महव्वलपामोक्खाणं सत्तण्हं अणगा-
राण अन्नया कयाइ एगयओ सहियाण इमेयारूवे मिहो
कहासमुल्लावे समुप्पजित्था-जण्ह अम्ह देवाणुप्पिया । एगे
तवोकम्म उवसपजित्ताण विहरइ, तण्ण अम्हेहिं सव्वेहि तवो-
कम्म उपसपजित्ताणं विहरित्तएत्ति कट्ठु अणमण्णस्स एयमट्ठ
पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता वट्ठहिं चउत्थ जाव विहरति, तएण
से महव्वले अणगारे इमेण कारणेण इत्थिणामगोय कम्म
निव्वत्तिसु ॥ सू० ४ ॥

इर्षित एव सतुष्ट हुण । उसी समय उन ने कौटुम्बिक पुरुषों को
बुलाया-बुलाकर बलभद्र कुमार का अभिषेक करवाया ।

इस तरह बलभद्र कुमार अब राज्य पद आसीन हो गया- ।
महाबल राजा ने बलभद्र से पूछा-पूछकर फिर वे पुरुष सहस्र वाहिनी
शिविका पर आरूढ़ हो गये-और महाक्रद्धि एव महाद्युति के साथ २
चलते हुए वे स्थविरो के पास उद्यान में आये । उन्होंने ने समय ले लिया ।
आचारांग आदि ११ अंगों का अध्ययन किया और चतुर्थभक्त आदि
विविध प्रकार की तपस्याओं से अपने आत्मा को भाविन किया ॥सू० ३॥

येने जोलाव्या अने जोलावीने जलभद्र कुमारने राज्याभिषेक करावडाव्यो

आ रीते जलभद्र कुमार राज्यामने गिराजित थर्ग गया राजा मडाजले
मनज्या विघे जलभद्रने पूछ्यु अने पूछीने पुरुष सहस्रवाहिनी पातणी
उपर जेभीने मडाक्रद्धि अने मडाद्युतिनी साथे शोलता तेजो उद्यानमा अर्थ
विशानी पासो आव्या अने तेजोअे मथम स्वीकार्यो तेमण्णे आचारांग वगेरे
अगियार अंगोतु अध्ययन क्युं अने चतुर्थभक्त वगेरे अनेक प्रकारनी
तपस्या जेवा पोताना आत्माने भावित क्यो ॥ सूत्र " ३ " ॥

टीका—तेसिं ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर तेषां महाबलप्रमुखाणां सप्तानां मनगाराणाम् अन्यदा कदाचित् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले एकतः सहितानाम् एकत्रोपविष्टानाम् अवमेतद्वय = वक्ष्यमाणस्वरूपः ' मिहो ' मिथः=परस्पर ' कथा समुल्लावे ' कथासमुल्लापः—वार्तालापः ' समुपज्जित्था ' समुदपद्यत—अभवत् हे देवानुप्रियाः ! अस्माकं मध्ये ' एगे ' एकः=कोऽप्येकः यत् खलु तपः कर्म ' उवसपज्जित्ता ' उपसंपद्य अङ्गीकृत्य खलु विहरति=विहरिष्यति, अस्माभिः सर्वैः तत् खलु तपः कर्म उपसंपद्य खलु विहर्तुं=विहर्तव्यम्, इति कृत्वा ' अणमणस्स ' अन्योन्यस्य परस्परस्य एतमर्थं ' पडिसुणेति ' प्रतिशृण्वन्ति=प्रतिजानन्ति प्रतिज्ञां

‘ तएण तेसिं महव्वलपामोकखाणं ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इस के बाद (तेसिं महव्वलपामोकखाणं सत्तण्ह अणगाराण अन्नया कयाइ) उन महाबल प्रमुख सप्त अनगारोंको किसी एक समय (एगयओ सहियाण इमेयारूवे मिहो कहा समुल्लावे समुपज्जित्था) जब कि ये एक जगह बैठे हुए थे इस प्रकार का यह विचार उत्पन्न हुआ—परस्पर में उनकी ऐसी घात चीत चली—(जण्ह अम्ह देवानुप्रिया ! एगे तवोकम्म उवसपज्जित्ताण विहरइ) हे देवानुप्रियों ! हम लोगों में से जो भी कोई तप कर्म को अंगीकार कर अपने आप को भावित करेगा—हम सब भी वही तप कर्म आचरित करेंगे । (तण्णं अम्हेहिं सव्वेहिं तवोकम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तएत्ति कट्ठु अण्ण-

‘ तएण तेसिं महव्वलपामोकखाणं ’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थारभाइ (तेसिं महव्वलपामोकखाणं सत्तण्ह अणगाराण अन्नया कयाइ) कोई वपते महाबल प्रमुख ते साते अनगारेने (एगयओ सहियाण इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुपज्जित्था)—अथारे तेओ। ओक स्थाने ओकहा थधने ओहा उता थारे आ प्रभाणे विचार रुक्यो—ओटले के तेओ। आ रीते अरस परम वातथीत करवा लाग्या—(जण्ह अम्ह देवानुप्रिया ! एगे तवो कम्म उवसपज्जित्ताण विहरइ) हे देवानुप्रियो ! आपणाभाथी गमेते प्यज्जित्ते जेतनु तप कर्म स्वीकारीने चोत्ताना आत्माने भावित करशे आपणे पधा पणु तेज तप आचरीशु

(तण्णं अम्हेहिं सव्वेहिं तवोकम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तएत्ति कट्ठु अण्णमणस्स एयमह पडिसुणेति)

કુર્વન્તિ । પ્રતિશ્રુત્યં વહુભિશ્ચતુર્થ— યાવદ્ ચતુર્થં ભક્તાદિભિરાત્માન ભાવયન્તો વિહ-
રન્તિ । તતસ્તદનન્તરં સ મહાવલોઽનગારો ' ઇમેણ ' એનેન વક્ષ્યમાણેન 'કારણેણ'
કારણેન પ્રતિજ્ઞાં કૃત્વા તદન્યથા કરણરૂપેણ ભાપિત્વાતદન્યથા કરણં હિ માયા
સાચ સ્ત્રીત્વસ્ય કારણમ્, ઇયં માયાઽભિમાનાત્ પ્રાદુર્ભવતિ, અભિમાનં ચાત્ર—' અહ
મેતેષાં નાયકોઽસ્મિ, એતે મદધીના અનુનાયકાઃ સન્તીતિ. યદિ મમોત્કૃષ્ટતા ન
સ્યાત્તર્હિ નાયકાનુનાયકાનાં કો વિશેષ સ્યાદિત્યેવ ભાવનયા અભિમાનો માયા

મણસસ એયમદ્ધ પડિસુણેતિ) હસ પ્રકાર વિચાર કર ઉન્હોં ને પરસ્પર
મેં હસ વિચાર કો સ્વીકાર કર લિયા ।

(પડિસુણિત્તાં વહૂર્હિં ચડત્થ જાવ વિહરતિ) સ્વીકાર કર ફિર
उन सबने साथ ही साथ चतुर्थ भक्त आदि की तपश्चर्या करना प्रारभ
कर दी— (तएण से महव्वले अणगारे इमेण कारणेण इत्थिणामगोय
कम्म निव्वत्तिस्सु) महावल अनगार ने इस वक्ष्यमाण कारण से स्त्री
नाम गोत्र कर्म का उपार्जन किया अर्थात् महावल ने प्रतिज्ञा करके भी
प्रतिज्ञानुसार तपश्चरण नहीं किया किन्तु—कुटिलभाव रखकर अन्यथारूप
से तपश्चरण किया—कहा कुछ और किया कुछ—इसी का नाम माया है ।
यह माया स्त्रीत्व प्राप्ति का कारण होती है । माया अभिमान से जद्भूत
होती है—महावल के हृदय में अभिमान इस कारण से आया था—कि
मैं इन सब का नायक हूँ—ये मेरे आधीन हैं—अनुनायक हैं—यदि मेरे में
इनकी अपेक्षा उत्कृष्टता नहीं हो तो फिर नायक और अनुनायकों में

આ પ્રમાણે વિચાર કરીને બધાએ મળાને એ વાતને સ્વીકારી લીધી
(પડિસુણિત્તાં વહૂર્હિં ચડત્થ જાવ વિહરતિ) સ્વીકાર કરીને તેઓએ એકી
સાથે ચતુર્થભક્ત વગેરે તપશ્ચર્યા શરૂ કરી

(તएण से महव्वले अणगारे इमेण कारणेण इत्थिणामगोय कम्म निव्वत्तिस्सु)

મહાવલ અનગારે જેના કારણે વિષેની ચર્ચા આગળ થશે—તેવા “ સ્ત્રી
નામ ગોત્ર કર્મનુ ” ઉપાર્જન કર્યું એટલે કે મહાવલે પ્રતિજ્ઞા કરીને પણ
તે મુજબ તપનુ આચરણ કર્યું નહિ કુટિલભાવથી તેઓએ બીજી રીતે તપનુ
આચરણ કર્યું “ કહેવું કંઈ અને કરવું કંઈ ” તેનું નામ માયા છે એ માયા
જ સ્ત્રીત્વ પ્રાપ્તિ । કારણ બને છે અભિમાનથી માયા ઉત્પન્ન થાય છે મહાવલ
ના મનમાં આરીતે અભિમાન ઉત્પન્ન થયું કે હું બધાનો નાયક છું આ
બધા મારે આધીન છે—અનુનાયક છે જે મારામાં તેઓની અપેક્ષા ઉત્કૃષ્ટતા
નહિ હોય તો નાયક અને અનુનાયકોમાં તફાવત શો ગ્યો ? આ જાતની ભાવના

મુત્પાદયતિ । ‘ ઇત્થિનામગોય ’ સ્ત્રીનામગોત્ર યસ્ય કર્મણ ઉદયાત્ સ્ત્રીભાવઃ
સ્ત્રીત્વ માપ્યતે તત્ સ્ત્રીનામ કર્મ તથા-ગોત્રં જાતિ કુળ નિર્વર્તક કર્મ અનયો સમા
હારઃ સ્ત્રીનામગોત્ર કર્મ ‘ નિવર્તિસુ ’ નિર્વર્તિતવાન્ ઉપાર્જિતવાન્ ॥ સૂ૦૪ ॥

મૂલમ્-જડ્ઢ તે મહવ્લવજ્ઞા છ અળગારા ચતુરથં ઉવસપ-
જ્ઞિત્તાળ વિહરતિ, તઓ સે મહવ્લલે અળગારે છટ્ટ ઉવસંપ-
જ્ઞિત્તાળ વિહરઈ । જડ્ઢણં તે મહવ્લલવજ્ઞા અળગારા છટ્ટં
ઉવસંપજ્ઞિત્તાળ વિહરંતિ, તઓ સે મહવ્લલઅળગારે અટ્ટમ
ઉવસપજ્ઞિત્તાળ વિહરઈ । એવ અટ્ટમં તો દસમ, અહ દસમ
તો દુવાલસં ઇમેહિ ય ણં વીસાએહિ ય કારણેહિ આસેવિય
વહુલીકએહિં તિત્થયરનામગોયં કર્મમં નિવ્વર્તિસુ, ત જહા —

(૧) અરહત (૨) સિદ્ધ (૩) પવચળ (૪) ગુરુ (૫) થેર
(૬) વહુસ્સુએ (૭) ત્તવસ્સીસુ । વચ્છછ્છયાઈ (૮) તેસિ અભિક્ખણં
ળાળોવઓગે ય ॥૧॥ (૯) દસળ (૧૦) વિળએ (૧૧) આવસ્સએ
ય (૧૨) સીલવ્વએ નિરદયાર । (૧૩) યળલવ (૧૪) તવ (૧૫)
ચ્ચિયાએ (૧૬) વેયાવચ્ચે (૧૭) સમાહીય ॥૨॥ (૧૮) અપ્પુવ્વ-
ળાળગહળે (૧૯) સુયમત્તી (૨૦) પવચળે પમાવળયા । એપ્પહિં
કારણેહિ તિત્થયરત્ત લહઈ જીઓ ॥સૂ૦૫॥

કયા ભેદ હોગા-ઇસ પ્રકાર કી ભાવના ને ઉસ કે હૃદય મેં અભિમાન
ઉત્પન્ન કિયા ઓર ઇસ અભિમાન ને માયા કો જન્મ દિયા । જિસ કર્મ
કે ઉદય સે જીવ સ્ત્રીત્વપદ પ્રાપ્ત કરતા હૈ વહ સ્ત્રી નામ કર્મ હૈ તથા
જાતિકુલ નિર્વર્તક જો કર્મ હોતા હૈ વહ ગોત્ર હૈ । ઇસ પ્રકાર કે કર્મ કો
માયા કે સદ્ભાવ સે અનગાર ને ઉપાર્જિત કિયા । સૂત્ર “ ૪ ”

એજ મહાળક્ષના મનમા અભિમાન ને જન્મ આપ્યો હતો અને એ અભિ
માને જ માયાને પણ ઉત્પન્ન કરી હતી જે ડમના ઉદયથી જીવ સ્ત્રીત્વપદ
મેળવે છે તે સ્ત્રીનામ કર્મ છે તેમજ જે ડમ જાતિકુલ નિર્વર્તક હોય છે તે
ગોત્ર છે માયા ના સદ્ભાવથી આ પ્રમાણે તે અનગારે આ જાતના કર્મનું
ઉપાર્જન કર્યું ॥ સૂત્ર “ ૪ ” ॥

टीका— 'जड्ण ते इत्यादि । यदि खलु ते महाबलवर्जा पडनगाराः ' चउत्थ चतुर्थ=चतुर्थभक्तम् एकोपवासमित्यर्थ , उवसपज्जित्ता ' उपसपद्य=स्वीकृत्य खलु विहरति, ततः स महाबलोऽनगारः ' छट्ठ ' पण्ठ=पण्ठभक्तमुपवामद्वयमुप-पद्य खलु विहरति । अयं भाव—यदा ते पडनगारा एकोपवासं कुर्वन्ति, तदा महाबलोऽप्येकोपवासं करोति, परंतु-पारणदिने एव मथयति अद्य मे शिरोवाधा ते नाहं पारणं करिष्यामि, भवद्भिरेव पारणं कर्तव्यमित्युक्तं मायया पण्ठ भक्तं करोतीति ।

यदि खलु ते महाबलवर्जा पण्ठ=पण्ठभक्तमुपसपद्य=स्वीकृत्य खलु विहरति, ततः स महाबलोऽनगारोऽष्टम अष्टमभक्तमुपसपद्य खलु ' विहरइ ' विहरति ।

‘ जड्ण ते महव्वलवज्जा छ अणगारा ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(जड्ण) यदि वे (महव्वलवज्जा) महाबल अनगार को छोड़कर (छ अणगारा) छह अनगार (चउत्थउवसपज्जित्ताण विहरति) चतुर्थ भक्त की तपस्या करते—तओसे) तो वह (महाबल अणगारे) महाबल अनगार (छट्ठउवसपज्जित्ताण विहरइ) दो उपवास करता—तात्पर्य इसका यह है कि जिस समय वे छह अनगार एक उपवास करते उस समय महाबल अनगार भी एक ही उपवास करता—परंतु जब पारणा का दिन आता तो कहने लगता कि आज मेरे शिरमें दर्द हो रहा है मैं पारणा नहीं करूंगा—आप लोग ही पारणा कर लो ।

इस प्रकार भाया को चित्त में रखकर वह दूसरा उपवास कर लेता । (जड्ण ते महव्वलवज्जा अणगारा छट्ठ उपसपज्जित्ताण विहरति ताओ से महव्वले अणगारे अट्ठम उवसपज्जित्ताण विहरइ) इसी तरह वे

‘ जड्ण ते महव्वलवज्जा छ अणगारा ’ इत्यादि

टीकार्थ—(जड्ण) जे तेओ (महव्वलवज्जा) महाबल सिवायना (छ अणगारा) छ अनगारे (चउत्थउवसपज्जित्ताण विहरति) चतुर्थभक्तानी तपस्या करता (तओसे) तारे ते (महाबलअणगारे) महाबल अनगार (छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरइ) जे उपवास करता ओटवे जे तारे छ अनगार ओक उपवास करता तारे महाबल अनगार पण ओक-उपवास करता पण नगारे पारणाने दिवस आवतो तारे तेओ कहेना के आने भाइ भाथु हुणवा भाउथु छे, हु पारणा करीरा नहि तमे दोमे पारणा करे

आरीते भायावरा थजे महाबल अनगार भीजे उपवास करता हुता

(जड्ण ते महव्वलवज्जा अणगारा छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरति, ताओ से महव्वलेअणगारे अट्ठम उवसपज्जित्ताण विहरइ)

एव यदि ते पडनगारा अष्टमम् अष्टमभक्तम् उपसपद्य विहरति 'तो' तर्हि स महाबलोऽनगारः दशम=दशमभक्तमुपसपद्य विहरति । अथ यदि ते पडनगारा दशम=दशमभक्तमुपसपद्य विहरति ' तो ' तदा स महाबलोऽनगार ' दुबालस ' द्वादश द्वादश भक्तम् उपसपद्य विहरति, एवमधिकाधिकतः करणादहमुत्कृष्टो भविष्यामीति मायाकरणेन स्त्रीनामगोत्र कर्मोपार्जितवान् तदानीं मिथ्यात्व सास्वादने च गुणस्थानमनुभवतिस्मिन्, स्त्रीनामकर्मणो मिथ्यात्वानन्तानुवन्धि मायाहेतुकत्वादिति महाबल अनगार वर्ज छट्ट की तपश्चर्या-दो उपवास-करते तो यह महा बल अनगार अष्टम की तपश्चर्या-तीन उपवास करता ।

(एव अष्टमतो दसम, अह दसमतो दुबालस इमेहि य ण वीसाए हिं य कारणेहिं य आसेविय बहुलीकएहिं तित्थयरनामगोय कम्म निव्वत्तिस्सु) यदि वे छह अनगार अष्टमभक्त की तपश्चर्या करते तो यह महाबल अनगार दशमभक्त की तपश्चर्या करता यदि वे दशम भक्त की तपश्चर्या करते, तो यह द्वादशभक्त की तपस्या करता । इस तरह अधिकाधिक तप करने से मैं उत्कृष्ट उत्तम-हो जाऊंगा “ इस प्रकार माया पूर्वक तपस्या करने से उसने स्त्री नाम गोत्र-जिस कर्म के उदय से स्त्रीत्व की प्राप्ति होती है ऐसा स्त्री नाम कर्म तथा जाति कुल निर्वर्तक गोत्र कर्म का बंधकर लिया । इस समय में मिथ्यात्व और सास्वादने इन दो गुणस्थानों का जीव अनुभव करता है । क्यों कि मिथ्यात्व और अनन्तानुवन्धी माया हेतुकता स्त्री नामकर्म में रहती

આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ બધા છએ અનગારો છટ્ટની તપશ્ચર્યા-એ ઉપવાસ-કરતા ત્યારે મહાબલ અનગાર અઠમની તપશ્ચર્યા-ત્રણ ઉપવાસ કરતા હતા

(એવ અઠમતો દસમ, અહ દસમતો દુબાલસ રમેહિં ય ણ વીસાણહિય કારણેહિંય આસેવિય બહુલીકર્ણેહિં તિથ્યરનામગોય કમ્મ નિવ્વર્તિસ્સુ)

તે બધા છ અનગારો જ્યારે અષ્ટમ ભક્તની તપશ્ચર્યા કરતા ત્યારે મહાબલ અનગાર દશમ ભક્તની તપશ્ચર્યા કરતા આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ છ અનગાર દશમભક્તની તપશ્ચર્યા કરતા ત્યારે મહાબલ અનગાર દ્વાદશ ભક્તની તપસ્યા કરતા હતા આ રીતે વધારે તપ કરવાથી હું આ બધા કરતા ઉત્તમ થઈ જઈશ તેમ તેઓ માનતા પણ આમ માયાવશ તપ કરવાથી તેણે સ્ત્રીનામ ગોત્ર-એટલે કે જે કર્મના ઉદયથી સ્ત્રીત્વની પ્રાપ્તિ થાય છે એવું સ્ત્રીનામ કર્મ તેમજ જાતિકુલ નિર્વર્તક ગોત્ર કર્મનો બંધ કર્યો આ વખતે મિથ્યાત્વ અને સાસ્વાદને આ બે ગુણ સ્થાનોને જીવ અનુભવે છે કેમકે મિથ્યાત્વ અને અનન્તાનુવન્ધી માયા

ભાવઃ । તત્ત્વ સ્વલુ સ મહાવલોડનગારઃ ' હમેદિ ' એમિશ્વ શાસ્ત્રપ્રસિદ્ધઃ સ્વલુ વીસા
 એહિય ' વિશત્યાચ કારણે વિશતિસ્થાનકૈઃ ' આસેવિય વહુલીકુર્ણિ ' આસે-
 વિતવહુલીકૃતૈઃ પ્રત્યેક સ્થાનસ્ય સકૃત્ કરણાદાસેવિતાનિ વહુશઃ સેવનાદ્ વહુ
 લી કૃતાનિ તૈઃ લ્ઘ્વોન્કૃપ્ટરસાયનપરિણામૈરિત્યર્થઃ । તીર્થકરનામગોત્ર કર્મ ' નિ
 વર્તિસુ ' નિર્વર્તિતવાન્ ઉપાર્જિતવાનિત્યર્થઃ । ત જહા તદ્યગા-વિશતિસ્થાનકાના
 નામાનિ ગાથાત્રયેણ દર્શયતિ(૧-૭) અર્હત્-સિદ્ધ- પ્રવચન- ગુરુ- સ્થવિર-
 વહુશ્રુતતપસ્વિષ્ણુ વ્રતસલતા ભક્તિઃ-યથાડવસ્થિતે ગુણગ્રામોત્કીર્તનરૂપા (૮)
 ' તેસિ ' તેપામ્ અર્હદાદીનાં ' અભિકલ્પણ ' અભીક્ષ્ણ=પુન પુનઃ જ્ઞાનોપયોગઃ જ્ઞાને-
 પૂપયોગઃ જ્ઞાનોપયોગઃ इत्यष्ट સ્થાનકાનિ, (૯) દર્શન=સમ્યક્ત્વ, (૧૦) વિનયો
 ગુરુદેવાદિવિષયક, (૧૧) આવશ્યકમ્- ઉભયકાલમાવશ્યકકરણમ્ (૧૨) શીલ
 વ્રત ચ નિરતિચાર, વ્રતપ્રત્યાખ્યાનનિર્મલ પાલનમ્, (૧૩) ક્ષણલવેતિ- કાલોપ

હૈ । હસ કે વાદ ઉસ મહાવલ અનગાર ને શાસ્ત્ર પ્રસિદ્ધ ઇન વિશતિ
 સ્થાનકોં કે દ્વારા કિ જો આસેવિત વહુલીકૃત થે તીર્થકર નામ ગોત્ર
 કર્મ કા ઘથ કિયા । પ્રત્યેક સ્થાન કા ણક વાર સેવન કરના હસકા
 નામ આસેવિત ઓર વહુત વાર સેવન કરના હસકા નામ વહુલી કૃત
 હૈ । (તજહા) વે વીસ સ્થાન વે હૈં અરિહત (૧), સિદ્ધ (૨), પ્રવચન (૩)
 ગુરુ (૪), સ્થવિર (૫), વહુશ્રુત (૬), તપસ્વી ઇનમેં વાત્સલ્યભાવ-ભક્તિ
 -રક્ષના-અર્થાત્ ઇનકે યથાવસ્થિત ગુણો કા ઉત્કીર્તન કરના (૭), ઇન
 કે જ્ઞાન મેં નિરતર ઉપયોગ રક્ષના (૮), દર્શન કા વિશુદ્ધિ કરના (૯)
 ગુરુદેવ આદિ કે વિષય મેં વિનય સપન્નતા હોના (૧૦), દોનોં કાલ મેં
 આવશ્યક ક્રિયાઓં કો કરના (૧૧), શીલ ઓર વ્રતોં મેં અતિચાર રહિત

હેતુકતા સ્ત્રીનામ કર્મમા રહે છે ત્યાર બાદ મહાવલ અનગારે શાસ્ત્ર પ્રસિદ્ધ
 વિશતિ (વીસ) સ્થાનકો વહે-હે જે આસેવિત બહુલીકૃત હતા -તીર્થ કર નામ
 ગોત્ર કર્મનો બધ કર્યો દરેક સ્થાનનુ એક વાર સેવન કરવું તે આસેવિત
 અને ઘણી વાર સેવન કરવું તે બહુલીકૃત છે (તજહા) વીસ સ્થાનો નીચે
 મુજબ છે-અરિહત, (૧) સિદ્ધ, (૨) પ્રવચન, (૩) ગુરુ, (૪) સ્થવિર, (૫) બહુ
 શ્રુત, (૬) તપસ્વીમા વાત્સલ્યભાવ-ભક્તિ-રાખવી એટલે કે તેમના યથાવસ્થિત
 ગુણોનુ કીર્તન કરવું (૭) તેમના જ્ઞાનમા નિરતર ઉપયોગ કરતા રહેવું (૮)
 દર્શનની વિશુદ્ધિ કરવી (૯) ગુરુ દેવ વગેરેની સામે વિનય રાખવો (૧૦)
 બને સમયે (સવાર માત્ર) આવશ્યક ક્રિયાઓ કરવી, (૧૧) શીલ અને

લક્ષણં, ક્ષણલયાદિકાલેષુ પ્રમાદ વિહાય શુભધ્યાનકરણમ્ (૧૪) તપઃ= દ્વાદશ વિધમ્, (૧૫) ત્યાગ=દાનમ્ તથા અભયદાન સુપાત્રદાન ચ, તત્રાભયદાન=ભયા ઉત્પાદન પરિભય પ્રાપ્તસ્ય માર્યમાણસ્ય કચ્ચિન્મ્રીયમાણસ્ય ચ પરિરક્ષણમ્, અભયદાનમિહ કરુણાદાનોપલક્ષણમ્ । સુપાત્રેભ્યો દાન મહાત્તધારિભ્યઃ પ્રતિમાધારિ શ્રાવકેભ્યથ દાનમ્ સુપાત્રદાનમ્ । इदमुपलक्षण तेन चतुर्विधसध सुखोत्पादनमित्यर्थः । (૧૬) વૈયાવૃત્ય=આચાર્યોદીના શુશ્રૂષા (૧૭) સમાધિ-સર્વજીવાના સુખોત્પાદનમ્, (૧૮) અર્જુજ્ઞાનગ્રહણ=પ્રસિદ્ધમ્, (૧૯) શ્રુતમક્તિઃ=જિનોક્તાગમેષુ

દોર પ્રવૃત્તિ કરતે રહનાવ્રત, પ્રત્યાખ્યાન કો નિર્મલ રૂપસે પાલન કરના (૧૨), ક્ષણ, લવ આદિ કાલોં મેં પ્રમાદ કા પરિહાર (નિવારણ) કરતે હુએ શુભ ધ્યાન કરના, (૧૩), તપ-૧૨ પ્રકાર કે તપોં કા આરાધન કરના (૧૪), ત્યાગ-અભય દાન ઓર સુપાત્ર દાન દેના કિસી કો ભય ઉત્પાદન નહીં કરના યહ અભયદાન હૈ-તથા દૂસરોં દ્વારા ભય કો પ્રાપ્ત હુએ અથવા માર્યમાણ યા કિસી ભી તરહ મરણોન્મુખ હુએ એસે વ્યક્તિ કી અપની શક્તિ કે અનુસાર રક્ષા કરના, ડન પર કરુણા ઘર-સાના, ડનકે પ્રતિ દયા ભાવ રલ્લના યહ સધ અભય દાન હૈ ।

યહ અભયદાન કરુણાદાન કા ઉપલક્ષક હૈ । મહાવ્રતધારી સકલ સઘમીજનોં કો અથવા પ્રતિમાધારી શ્રાવકોં કો આહારાદિ દાન કરના યહ સુપાત્ર દાન હૈ । ચતુર્વિધ સધ કે લિયે સુખ કા ઉત્પાદન કરના હસકા યહ ઉપલક્ષક હૈ (૧૫), વૈયાવૃત્ય-આચાર્ય આદિ કી શુશ્રૂષા કરના (૧૬) સમાધિ-સમસ્ત જીવોં કો સુખ મિલે હસ પ્રકાર કા પ્રય

વ્રતોમા અતિચાર વગર થઇને પ્રવૃત્તિ કરતા રહેવું-વ્રત, પ્રત્યાખ્યાન નુ નિમજ્જ રૂપથી પાલન કરવું (૧૨) ક્ષણ, લવ વગેરે કાળોમા પ્રમાદ રહિત થઇને શુભ ધ્યાન ધરવું (૧૩) તપ,-બાર પ્રકારના તપોનુ આરાધન કરવું, (૧૪) ત્યાગ, અભય દાન અને સુપાત્ર દાન આપવું, કોઇને પણ ભયની સ્થિતિમા મૂકવો નહિ તે અભયદાન છે તેમજ બીજાઓ દ્વારા ભયની સ્થિતિમા મૂકાયેલા અથવા તે કોઇપણ રીતે મરણોન્મુખ થતા વ્યક્તિની પોતાની શક્તિ મુજબ રક્ષા કરવી, તેમની ઉપર કરુણા રાખવી, દયાભાવ બતાવવો આબધુ અભયદાન કહેવાય છે

આ અભયદાન કરુણાદાનનો ઉપલક્ષક છે મહાવ્રતધારી બધા સઘમી જનોને અથવાતો પ્રતિમાધારી શ્રાવકોને આહાર વગેરે દાન કરવું તે સુપાત્ર દાન છે ચતુર્વિધ સધના માટે સુખનુ મર્જન કરવું આ તેનો ઉપલક્ષક છે (૧૫) વૈયાવૃત્ય-આચાર્ય વર્ગેરેની સેવા કરવી, (૧૬) સમાધિ-બધા

પરમાનુરાગઃ, (૨૦) પ્રવચને પ્રભાવના=પ્રભૂતભવ્યેભ્યઃ પ્રવ્રજ્યાદાન, ભવકૂપપત-
ત્પ્રાણિનાણસમાશ્વાસનપરાયણજિનશાસનમહિમોપવૃદ્ધિ સમસ્તસ્ય જગતોજિનશાસન
રસિક કરણ મિથ્યાત્વતિર્મિરાપહરણં, ચરણકરણશરણીકરણ ચ ।

एतानी-तीर्थकरत्नप्राप्तिः विंशतिस्थानकानि सर्वजीवसाधारणानि सन्तीति
दर्शयितुमाह-‘एएहिं तित्थयरत्त लहइ जीवो’ इति । एतैः कारणैस्तीर्थकरत्न
लभते जीवः ।

તન કરના, (૧૭), અપૂર્વ જ્ઞાન કા પઢના, (૧૮), શ્રુતભક્તિ-જિનેન્દ્ર દ્વારા
પ્રતિપાદિત આગમો મેં પરમ અનુરાગ રાખના, (૧૯), પ્રવચન પ્રભાવના
અનેક ભવ્ય જીવોં કો પ્રવ્રજ્યા ઢેના, સસારકૂપ મેં પડતે હુએ પ્રાણીયોં
કી રક્ષા કરને કે આશ્વાસન મેં પરાયણ એસે જિનશાસન કી મહિમા
વઢાના, સમસ્ત જગત કે જીવોં કો જિન શાસન કા રસિક બનાના,
મિથ્યાત્વરૂપ તિમિર કા ધ્વસ કરના, ઓર ચરણ સત્તરી એવ કરણ
સત્તરી કી શરણ મેં રહના યહ સવ પ્રવચન પ્રભાવન હૈ (૨૦) ।

ये २० स्थान समस्त जीवों को तीर्थकर पदकी प्राप्ति में कारण
है । (एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्त लहइ जीओ) इन्हीं बीस स्थानक के
सेवन से जीव तीर्थकर पद को प्राप्त करता है । अन्यत्रभी यही बात
कही है-जिनागम में अनेक तप प्रसिद्ध हैं परन्तु इन श्री बीसस्थानरूप
तपस्या के समान और कोई तप नहीं है । इन बीस स्थानों में से कोई
एक स्थान की आराधना करके जीव अरिहतो के बीच में उत्तम
जिनेन्द्र के पद को पाता है ।

સુખ મળે તેમ કરવું-(૧૭) અપૂર્વજ્ઞાનનું વાચન કરવું (૧૮ શ્રુતભક્તિ-જિને
ન્દ્રપ્રતિપાદિત આગમો-મા ઝૂળજ અનુરાગ રાખવો, ૧૯ પ્રવચન પ્રભાવના
-અનેક ભવ્યજીવોને પ્રવ્રજ્યા આપવી સસાર રૂપી વાવમા પડનાર પ્રાણીઓની
રક્ષા કરવા રૂપ આશ્વાસન મા પરાયણ એવા જિન શાસનનો મહિમા પ્રશસ્ત
કરવો જગતના બધા જીવોને જિનશાસનના રસિક બનાવવા મિથ્યાત્વ રૂપ
અધકારનો નાશ કરવો, અને ચરણસત્તરી અને કરણસત્તરીની શરણમા
રહેવું આ પ્રવચન પ્રભાવના છે ૨૦

આ વીસ સ્થાનો બધા જીવોને માટે તીર્થકર પદની પ્રાપ્તિમા કારણ
ભૂત હોય છે “एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्त लहइ जीओ” આ કારણો દ્વારા જ
જીવ તીર્થકર પદ મેળવે છે બીજી ઘણી જગ્યાએ પણ એજ વાત કહેવામા
આવી છે જિનાગમોમા અનેક તપ પ્રસિદ્ધ છે, પણ આ શ્રી વીસ સ્થાન
રૂપ તપસ્યા જેવી બીજી કોઈપણ તપસ્યા નથી આ વીસ સ્થાનોમાથી ગમે
તે એક સ્થાનની આરાધના કરીને જીવ અરિહતોની મધ્યે ઉત્તમ જિનેન્દ્રના
પદને મેળવે છે

યદુક્તમ્—

ભૂયાસ્યપિ તપાંસિસ્યુઃ, પ્રસિદ્ધાનિ જિનાગમે ।

પરશ્રીવિંશતિસ્થાન — તપસ્તુલ્ય તપો નદિ ॥ ૧ ॥

અન્યચ્ચ—ત્રીસાણ અન્નયર, ઠાગ આરાહિઝ્ઞ જે જીયા ।

અરિહાર્ણ મજ્ઞે, જિર્ણિદપદમુત્તમ લહ્હ ॥ ૨ ॥

પુનઃ—પુરિમેણ પન્નિઝમેણય, એણ સવ્વે વિ ફાસિયા ઠાણા ।

મજ્ઞિમમેહિં જિણેહિં, એગ દો તિણિ સવ્વે વા. ॥ ૩ ॥

इतिवचनादादिनाथजीवेन वर्धमानजीवेन च पूर्वस्मिन् तृतीयभवे सर्वाणि विंशतिस्थानकानि सेवितानि, अन्यैर्द्वाविंशतितीर्थकरजीवैरेक द्वे त्रीणि सर्वाण्यपि स्पृष्टानि, नियमो नास्ति । मल्लीनाथ जीवेन तु सर्वाण्येव सेवितानीति भावः ।

एतेषु विंशति सख्याकेषु ये वसन्ति तदाराधनाया प्रवृत्ता भवन्ति, ते स्थानकवासिनः कथ्यन्ते । उक्तं च—

“ तिथ्यगर पयदाइसु, वसइ य वीसासु ठाणगेसु ज ।

आराहणट्टमणिस, ठाणगवासी य सो हवए ॥ १ ॥ ”

छाया—“ तीर्थङ्कर पददायिषु वसति च विंशतो स्थानकेषु यत् ।

आराधनार्थमनिश, स्थानकवासो च स भवति ॥ १ ॥ ” इति ।

आदि नाथ प्रभु के जीव ने और श्री महावीर प्रभुके जीवने पूर्व तृतीय भव में समस्त बीस स्थानों की आराधना की थी । बीच के बाकी २२ तीर्थंकरों ने किन्हींने एक किन्हींने २ किन्हींने ३ स्थानों की और किन्हीं २ ने सबही स्थानों की आराधना की । ऐसा नियम नहीं है कि तीर्थंकर प्रकृति के बंध के लिये इन बीसों ही स्थानों की आराधना करनी पड़ती हो । मल्लिनाथ के जीव ने तो इन बीसोंही स्थानों की आराधना की । बीस स्थानों में जो रहते हैं उनकी आराधना करने में प्रवृत्त होते हैं—वे स्थानकवासी कहलाते हैं । उक्तच—तीर्थंकर

પૂર્વતૃતીય ભવમા આદિનાથ પ્રભુના જીવે અને શ્રી મહાવીર પ્રભુના જીવે વીસ સ્થાનોની આરાધના કરી હતી વચ્ચેના શેષ બાવીસ તીર્થંકરો માથી કોઈએ એક કોઈએ બે, કોઈએ, ત્રણ સ્થાનોની અને કોઈ કોઈએતો બધા સ્થાનોની આરાધના કરી હતી એવો કોઈ ચોક્કસ નિયમ નથી કે તીર્થંકર પ્રકૃતિના બંધને માટે ઉક્ત વીસે વીસસ્થાનોની આરાધના કરવી જ પડતી હોય મલ્લિનાથના જીવેતો આ બધાની વીસેવીસ સ્થાનોની આરાધના કરી હતી આ વીસ સ્થાનોમા જે રહે છે તેમની આરાધના કરવામા જે તત્પર રહે છે તેઓ ‘સ્થાનકવાસી’ કહેવાય છે ઉક્તચ—તીર્થંકર પ્રકૃતિને આપનારા ૮ વીસ

अन्यच्च—“ तीर्थद्वार पदप्राप्तेः, स्थानकेषु च विंशतौ ।

वसन्त्याराधनार्थं यत्तस्मात् स्थानकवासिनः ॥ १ ॥ ” इति ।

मूलम्—तएण ते महाव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताण विहरति, जाव एगराइयं उवसपज्जित्ताण विहरति, तएण ते महाव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्ढागं सीहनिक्कीलिय तवोकम्म उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तं जहा—चउत्थं करेति, करित्ता सव्वकामगुणिय पारेति, पारित्ता छट्ठ करेति । करित्ता चउत्थ करेति, करित्ता अट्ठम करेति, करित्ता छट्ठ करेति, करित्ता दशम करेति, करित्ता अट्ठमं करेति, करित्ता दुवालसम करेति, करित्ता दसम करेति, करित्ता चाउदसम करेति, करित्ता दुवालसम करेति, करित्ता सोलसमं करेति, करित्ता चोदसम करेति, करित्ता अट्ठारसमे करेति, करित्ता सोलसम करेति, करित्ता वीसडम करेति, करित्ता अट्ठारसमं करेति, करित्ता वीसडम करेति करित्ता सोलसम करेति, करित्ता अट्ठारसमं करेति करित्ता चोदसम करेति, करित्ता सोलसमं करेति, करित्ता दुवालसम करेति, करित्ता चाउदसमं करेति, करित्ता दसम करेति, करित्ता दुवालसम करेति, करित्ता अट्ठम करेति, करित्ता दसमं करेति, करित्ता छट्ठ करेति, करित्ता अट्ठम करेति,

प्रकृति के दाता इन २० स्थानों में जो आराधना करने के निमित्त सदा बसते हैं—निवाम करते हैं—वे ही स्थानकवासी कहलाते हैं । दूसरे श्लोक का भी यही भाव है । सूत्र ‘ ५ ’

स्थानोभा आराधना उरवाना प्रयोजनथी जेओ। उमेश। निवास करे छे—वसे छे, तेओज स्थानवासी उडेवाय छे जीन श्योउ नो पणु ओज अर्थ छे सूत्र ‘ ५ ’ ॥

करित्ता चंउत्थ करेति करित्ता छट्ठं करेति, करित्ता चंउत्थं करेति,
सव्वत्थ सव्वकामगुणिएणं पारेति एव खलु एसा खुड्ढागसीह
निक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी छहिं मासेह सत्तहि
य अहोरत्तेहि य अहासुत्तं जाव आराहिया भवइ,

तयाणतर दोच्चपि परिवाडीए चउत्थं करेति, नवरं विग-
इवज्ज पारेति, एव तच्चापि परिवाडी नवर पारणए अलेवाड
पारेति, एव चउत्था वि परिवाडी नवर पारणए आयविलेण
पारेति ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘ तएण ते ’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु ते महावलप्रमुखा सप्ता-
नगाराः ‘ मासिय ’ (१) मासिकीम् एकमामपरिमाणं प्रथमा भिक्षुप्रतिमाम्
‘ उवसजित्ताण ’ उपसपद्य स्वीकृत्य, विहरन्तिस्म । एवम् अमुना प्रकारेण ‘ जाव
एगराइय ’ यावत् एकान्तिकीम् अत्र यावत् करणात् ‘ दो मासिय तेमासिय
चउम्मासिय पचमासिय छम्मासिय सत्तमासिय पढमसत्तराइदिय वीयसत्तराइदिय

‘ तएण ते महावल पामोकखा ’ । इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (ते महावलपामोकखा) उन महावल
प्रमुख सातों अनगारों ने (मासिय भिक्षुपडिम उवसपज्जित्ताण
विहरति) १ मास की प्रमाण वाली १ प्रथम भिक्षु प्रतिमा धारण की
(जाव एगराइय उवसपज्जित्ताण विहरति) इसी तरह दो मास प्रमाण
वाली द्वितीय भिक्षु प्रतिमा, तीन मास प्रमाण वाली तृतीय भिक्षु
प्रतिमा, ४ चार मास प्रमाण वाली चतुर्थ भिक्षु प्रतिमा, पाच मास

‘ तएण ते महावल पामोकखा ’ । इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थार आठ (ते महावलपामोकखा) महावल प्रमुख सात
अनगारोअे (मासिय भिक्षुपडिम उवसपज्जित्ताण विहरति) अेक मासनी
प्रमाणवाणी १ प्रथम भिक्षु प्रतिमा धारणु डरी (जाव एगराइय उवसपज्जि-
त्ताण विहरति) आ प्रमाणे ४ अे मास प्रमाणवाणी द्वितीय भिक्षुप्रतिमा,
अणुमास प्रमाण वाणी तृतीय भिक्षुप्रतिमा, थार थार मास प्रमाण वाणी अतु

તત્ત્વસત્તરાદિય અહોરાદિય ' ઇતિ પાઠસ્ય સગ્રહઃ । તત્ર ૨ દ્વૈમાસિકી, ૩ કી, ૪, ચાતુર્માસિકી ૫, પચમાસિકી, ૬, પાષ્ણમાસિકી, ૭ સપ્તમાસિકી, સર્મા ૮ પ્રથમ સપ્તરાત્રિદિવા, ૯. દ્વિતીય સપ્તરાત્રિદિવા, ૧૦ તૃતીય સપ્તરાત્રિદિવ, ઇમા દશ પ્રતિમા ઉપસપથ, એકાદશીમ્-૧૧ અહોરાત્રિકી, ૧૨ દ્વાદશીમ્-એક રાત્રિકીમ્ ઇત્યેવ દ્વાદશપ્રતિમા ઉપસપથ વિહરન્તિ સ્મ । આસા વર્ણન દશાશ્રુત-સ્કન્ધે સપ્તમાધ્યયને મુનિહર્ષિણી ટીકાયાં દ્રષ્ટવ્યમ્ ।

તતસ્તદન્તર સ્વલુ તે મહાવલપ્રમુખા સપ્તાનગારા ' સુહાગ ' ક્ષુલ્લક ' સીહ નિક્કીલિય' સિંહનિક્કીડિત=સિંહનિક્કીડિતનામક સિંહો યથા વિહરન્ સ્વ પથા-

પ્રમાણ વાલી પાચવી ભિક્ષુપ્રતિમા, ૭ માસ પ્રમાણ વાલી છઠી ભિક્ષુપ્રતિમા, ૭ માસ પ્રમાણ વાલી સપ્તમી ભિક્ષુપ્રતિમા, પ્રથમ સાત રાત્રિ દિન પ્રમાણ વાલી ૮ મી ભિક્ષુપ્રતિમા, દ્વિતીય સાત દિન રાત્રિ પ્રમાણ વાલી ૧૦ વી ભિક્ષુપ્રતિમા તથા ૧ દિન રાત્રિ પ્રમાણ વાલી ૧૧ વી ભિક્ષુપ્રતિમા ઓર એક રાત્રિ પ્રમાણ વાલી ૧૨વી ભિક્ષુપ્રતિમા ઉન સર્વ અનગારોને ધારણ કી ।

इन समस्त प्रतिमाओं का वर्णन दशाश्रुतस्कंध में सप्तम अध्यायन में मुनि हर्षिणी नाम की टीका में किया गया है । वहां से देख लेना ।

(તણ તે મહવલપામોક્ષા સત્ત અનગારા સુહાગ સીહનિક્કીલિય તવોક્કમ્મ ઉવસપજ્જિજ્ઞાણ વિહરતિ) इसके बाद उन महावलप्रमुख सातो ही अनगारो ने लधु सिंह निष्क्रीडित नाम का तप किया । जिस

ર્થભિક્ષુપ્રતિમા પાચ માસ પ્રમાણવાળી પાચમી ભિક્ષુપ્રતિમા, છ માસ પ્રમાણ વાળી છઠી ભિક્ષુપ્રતિમા, સાત માસ પ્રમાણવાળી સાતમી ભિક્ષુપ્રતિમા, પ્રથમ સાત રાત્રિ દિવસ પ્રમાણવાળી આઠમી ભિક્ષુપ્રતિમા, બીજી સાત દિવસ રાત્રિ પ્રમાણ વાળી નવમી ભિક્ષુપ્રતિમા, ત્રીજી સાત દિવસ રાત્રિ પ્રમાણવાળી દશમી ભિક્ષુ પ્રતિમા તેમજ એક દિવસ રાત્રિ પ્રમાણવાળી અગિયારમી ભિક્ષુપ્રતિમા, અને એક રાત્રિ પ્રમાણવાળી બારમી ભિક્ષુ પ્રતિમા, તેઓ બધા અનગારો એ ધારણ કરી

આ બધી પ્રતિમાઓ વિષે વિગત વાર ચર્ચા ' દશાશ્રુતસ્કંધ ' ના સાતમા અધ્યાયનની મુનિહર્ષિણી નામની ટીકામાં કરવામાં આવી છે જિજ્ઞાસુ ઓએ ત્યાથી જાણી લેવું જોઈએ

(તણ તે મહવલપામોક્ષા સત્ત અનગારા સુહાગ સીહ નિક્કીલિય તવો કમ્મ ઉવસપજ્જિજ્ઞાણ વિહરતિ)

ત્યાર બાદ મહાબલ પ્રમુખ સાતે સાત અનગારોએ લધુસિંહનિક્કીડિત નામે તપ કર્યું સિંહ જેમ પોતાના પાછળના ભાગની તરફ ડોકીયું કરતો

જાગ પડ્યતિ, તથા યત્ તપ પૂર્વકૃત પુનરાવર્ત્યોત્તરોત્તર ક્રિયતે તત્ સિંહનિષ્ક્રી
 ડિતમિત્યુચ્યતે. । તપ કર્મોપસપથ વિહરન્તિ । તત્ ક્ષુલ્લક સિંહનિષ્ક્રીડિત
 તપઃ કર્મ કેન પ્રકારેણ તૈઃ કૃતમિત્યાકાઢ્યાયામાહ—‘ તજહા ’ इत्यादि चतुर्थ
 ચતુર્થભક્તમેકોપવાસરૂપ કુર્વન્તિ કૃત્વા ‘ સર્વકામગુણિય ’ સર્વકામગુણિત=સર્વ
 કામગુણા દુગ્ધદધિધૃતતૈલમધુરરૂપા વિકૃતય સજાતા યત્ર તત્ સર્વકામગુણિતમ્
 इदं पारणक्रियायाविशेषण, ‘ पारंति ’ पारयन्ति=पारण कुर्यन्ति । पारयित्वा षण्ठ
 કુર્વન્તિ, તત્ પારણ કૃત્વા ષણ્ઠભક્ત દ્વયુપવાસરૂપ તપઃ કુર્વન્તિ— इत्यर्थं कृत्वा

तरह सिंह अपने पश्चात् भाग का निरीक्षण करता आगे चलता है उसी
 प्रकार जो तप पूर्वकृत तपो को साथ लेकर आगे २ किया जाता है उस
 का नाम सिंहनिष्क्रीडित तप है । (तजहा) यह क्षुल्लक सिंह निष्क्री
 डित तप उन्हो ने किस प्रकार से किया इस बात को अब सूत्रकार
 प्रदर्शित करते हैं ।— (चउत्थ करेंति, करित्ता सर्व कामगुणिय पारंति,
 पारित्ता छट्ठ करेंति, करित्ता चउत्थ करेंति करित्ता अट्ठम करेंति, करित्ता
 छट्ठ करेंति, करित्ता, दसम करेंति, करित्ता अट्ठम करेंति, करित्ता दुवा
 लसम करेंति, करित्ता दसम करेंति, करित्ता चाउदसम करेंति करित्ता
 दुवालसम करेंति) उन्हो ने पहिले चतुर्थ भक्त—एक उपवास किया । एक
 उपवास करके विगय सहित पारणा किया पारणा करके फिर छट्ठभक्त
 —दो उपवास किये दो उपवास करके फिर उन्होंने ने पारणा किया बाद
 में चतुर्थ भक्त किया । चतुर्थभक्त करके पारणा किया फिर—तीन उप

આગળ ચાલે છે તે પ્રમાણે જ જે તપ પૂર્વે કરેલા તપોને સાથે લઈને
 આગળ ડરવામા આવે છે, તે તપ સિંહ નિષ્ક્રીડિત કહેવાય છે (ત જહા)
 અનગારોએ આ ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કેવી રીતે કર્યું ? તે વિશે
 સૂત્રકાર સ્પષ્ટીકરણ કરતા કહે છે

(ચઉત્થ કરેતિ, કરિત્તા સર્વકામગુણિય પારેતિ, પરિત્તા, છટ્ઠ કરેતિ
 કરિત્તા ચઉત્થ કરેતિ, કરિત્તા અટ્ઠમ કરેતિ, કરિત્તા છટ્ઠ કરેતિ, કરિત્તા દસમ
 કરેતિ કરિત્તા અટ્ઠમ કરેતિ, કરિત્તા દુવાલસમ કરેતિ કરિત્તા ચાઉદસમ કરેતિ
 કરિત્તા દુવાલસમ કરેતિ)

તેઓએ સૌ પ્રથમ ચતુર્થભક્ત—એક ઉપવાસ કર્યો એક ઉપવાસ કરીને
 વિગય સહિત પારણા કર્યો પારણા કર્યા બાદ ફરી છટ્ઠભક્ત—બે ઉપવાસ કર્યા
 બે ઉપવાસ કરીને તેઓએ પારણા કર્યા ત્યાર બાદ ચતુર્થ ભક્ત કર્યા બાદ
 પારણા કર્યા ત્યાર પછી ત્રણ ઉપવાસ રૂપ અષ્ટમ ભક્ત કર્યો અષ્ટમ ભક્ત

ચતુર્યં કુર્વન્તિ, કૃત્વા ડાઠમમ્, અષ્ટમમ્ ચતુર્યાસરૂપ કુર્વન્તિ, કૃત્વા પઞ્ચ કુર્વન્તિ, કૃત્વા દશમ ચતુર્યાસરૂપ દશમમ્ કુર્વન્તિ, કૃત્વા ડાઠમ કુર્વન્તિ, કૃત્વા દ્વાદશ પશ્ચપોવાસરૂપ કુર્વન્તિ, કૃત્વા દશમ કુર્વન્તિ કૃત્વા ચતુર્દશ પદુપવામરૂપ કુર્વન્તિ, કૃત્વા દ્વાદશ કુર્વન્તિ કૃત્વા પોડશ સપ્તોપવાસરૂપ કુર્વન્તિ, કૃત્વા ચતુર્દશ કુર્વન્તિ, કૃત્વા ડાઠાદશ અષ્ટોપવાસરૂપ કુર્વન્તિ, કૃત્વા પોડશ કુર્વન્તિ, કૃત્વા વિંશ

વાસરૂપ અષ્ટમમ્ કૃત્વા અષ્ટમમ્ કરકે પારણા કૃત્વા ફિર છટ્ટમમ્ રૂપ દો ઉપવાસ કૃત્વા પૈમ્ અષ્ટમમ્ કરકે પારણા કૃત્વા ફિર દશમ મમ્ રૂપ ચાર ઉપવાસ કૃત્વા ચાર ઉપવાસ કરકે પારણા કૃત્વા ફિર અષ્ટમ મમ્ રૂપ ત્રીન ઉપવાસ કૃત્વા અષ્ટમ મમ્ કરકે પારણા કૃત્વા ફિર પશ્ચ ઉપવાસ રૂપ દ્વાદશ મમ્ કૃત્વા દ્વાદશ મમ્ કરકે પારણા કૃત્વા પુનઃ દશમ મમ્ કૃત્વા દશમ મમ્ કરકે પારણા કૃત્વા ફિર પટ્ટ ઉપવાસ રૂપ ચતુર્દશ મમ્ કૃત્વા ચતુર્દશ મમ્ કરકે પારણા કૃત્વા પુનઃ દ્વાદશ મમ્ રૂપ પાચ ઉપવાસ કૃત્વા (કરિત્તા સોલસમ કરેતિ) પાચ ઉપવાસ કરકે પારણા કૃત્વા પુનઃ ૭ ઉપવાસરૂપ સોલસ મમ્ કૃત્વા (કરિત્તા ચોદસમ કરેતિ) ૭ ઉપવાસ કરકે પારણા કૃત્વા—વાદ મે ૬ ઉપવાસ કૃત્વા (કરિત્તા અટ્ઠારસમ કરેતિ) પારણા કરકે ફિર અષ્ટાદશ મમ્ રૂપ ૮ ઉપવાસ કૃત્વા (કરિત્તા સોલસમ કરેતિ) આઠ ઉપવાસ કરકે પારણા કૃત્વા ફિર ૭ ઉપવાસ કૃત્વા (કરિત્તા વીસદમ કરેતિ) સાત ઉપવાસ કરકે ઉસકા

કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ છટ્ટ લકત રૂપ બે ઉપવાસો કર્યા પઞ્ચ લકત કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ દશમ લકત રૂપ ચાર ઉપવાસો કર્યા ત્યાર ઉપવાસોના અન્તે પારણા કર્યા ત્યાર બાદ અષ્ટમ લકત રૂપ ત્રણ ઉપવાસો કર્યા અષ્ટમ લકત કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ દ્વાદશ લકત પાચ ઉપવાસ કર્યા ત્યાર પછી પારણા કર્યા કરી દશમ લકત કર્યા દશમ લકત કરીને પારણા કર્યા અને ત્યાર બાદ છ ઉપવાસ રૂપ ચતુર્દશ લકત કર્યા

ચતુર્દશ લકત કરીને પારણા કર્યા કરી દ્વાદશ લકત રૂપ પાચ ઉપવાસો કર્યા (કરિત્તા સોલસમ કરેતિ પાચ ઉપવાસો કરીને પારણા કર્યા કરી સોલસ લકત સાત ઉપવાસ કર્યા (કરિત્તા ચોદસમ કરેતિ) સાત ઉપવાસ કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ છ ઉપવાસો કર્યા “ કરિત્તા અટ્ઠારસમ કરેતિ ” પારણા કરીને અષ્ટાદશ લકત રૂપ આઠ ઉપવાસો કર્યા “ કરિત્તા સોલસમ કરેતિ આઠ ઉપવાસો કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ સાત ઉપવાસો કર્યા “ કરિત્તા વીસદમ કરેતિ ” સાત ઉપવાસો કરીને તેણે પારણા કર્યા, ત્યાર

જ્ઞાન પશ્યતિ, તથા યત્ તપ પૂર્વકૃત પુનરાવર્ત્યોત્તરોત્તર ક્રિયતે તત્ મિહનિષ્કી
 ડિતમિત્યુન્યતે । તપ કર્મોપસપથ વિહરન્તિ । તત્ ક્ષુલ્લક સિંહનિક્કીડિત
 તપઃ કર્મ કેન પ્રકારેણ તૈઃ કૃતમિત્યાકાઢ્યાયામાહ—‘ તજહા ’ इत्यादि चतुर्थ
 ચતુર્થમક્તમેકોપવાસરૂપ કુર્વન્તિ કૃત્વા ‘ સર્વકામગુણિય ’ સર્વકામગુણિત=સર્વ
 કામગુણા દુગ્ધદધિષ્ઠતૈલમધુરરૂપા ત્રિકૃતય સજાતા યત્ર તત્ સર્વકામગુણિતમ્
 इदं पारणक्रियायाविशेषण, ‘ पारंति ’ पारयन्ति=पारण कुर्यन्ति । पारयित्वा पण्ड
 કુર્વન્તિ, તત્ પારણ કૃત્વા પઠ્ઠમક્ત દ્વયુપવાસરૂપ તપઃ કુર્વન્તિ— इत्यर्थं कृत्वा

તરહ સિંહ અપને પશ્ચાત્ ભાગ કા નિરીક્ષણ કરતા આગે ચલતા હૈ ડસી
 પ્રકાર જો તપ પૂર્વકૃત તપો કો સાથ લેકર આગે ૨ ક્રિયા જાતા હૈ ડસ
 કા નામ સિંહનિક્કીડિત તપ હૈ । (તજહા) યત્ ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્કી
 ડિત તપ ડન્હો ને કિસ પ્રકાર સે ક્રિયા હસ ઘાત કો અવ સૂત્રકાર
 પ્રદર્શિત કરતે હૈ । — (ચતુર્થ કરંતિ, કરિત્તા સર્વ કામગુણિય પારંતિ,
 પારિત્તા છદ્ધ કરંતિ, કરિત્તા ચતુર્થ કરંતિ કરિત્તા અદ્ધમ કરંતિ, કરિત્તા
 છદ્ધ કરંતિ, કરિત્તા, દસમ કરંતિ, કરિત્તા અદ્ધમ કરંતિ, કરિત્તા દુવા
 લસમ કરંતિ, કરિત્તા દસમ કરંતિ, કરિત્તા ચાડદસમ કરંતિ કરિત્તા
 દુવાલસમ કરંતિ) ડન્હો ને પહિલે ચતુર્થ મક્ત—એક ડપવાસ ક્રિયા । એક
 ડપવાસ કરકે વિગય સહિત પારણા ક્રિયા પારણા કરકે ફિર છદ્ધમક્ત
 —દો ડપવાસ ક્રિયે દો ડપવાસ કરકે ફિર ડન્હો ને પારણા ક્રિયા બાદ
 મે ચતુર્થ મક્ત ક્રિયા । ચતુર્થમક્ત કરકે પારણા ક્રિયા ફિર—ત્રીન ડપ

આગળ ચાલે છે તે પ્રમાણે જ જે તપ પૂર્વે કરેલા તપોને સાથે લઇને
 આગળ ડરવામા આવે છે, તે તપ સિંહ નિષ્કીડિત કહેવાય છે (ત જહા)
 અનગારોએ આ ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્કીડિત તપ કેવી રીતે શ્યુ ? તે વિષે
 સૂત્રકાર સ્પષ્ટીકરણ કરતા કહે છે

(ચતુર્થ કરંતિ, કરિત્તા સર્વકામગુણિય પારંતિ, પારિત્તા, છદ્ધ કરંતિ
 કરિત્તા ચતુર્થ કરંતિ, કરિત્તા અદ્ધમ કરંતિ, કરિત્તા છદ્ધ કરંતિ, કરિત્તા દસમ
 કરંતિ કરિત્તા અદ્ધમ કરંતિ, કરિત્તા દુવાલસમ કરંતિ કરિત્તા ચાડદસમ કરંતિ
 કરિત્તા દુવાલસમ કરંતિ)

તેઓએ સૌ પ્રથમ ચતુર્થ મક્ત—એક ડપવાસ કર્યો એક ડપવાસ કરીને
 વિગય મહિત પારણા કર્યો પારણા કર્યા બાદ ફરી છદ્ધમક્ત—એ ડપવાસ કર્યા
 એ ડપવાસ કરીને તેઓએ પારણા કર્યા ત્યાર બાદ ચતુર્થ લક્ષ્ય કર્યા બાદ
 પારણા કર્યા ત્યાર પછી ત્રણ ડપવાસ રૂપ અષ્ટમ લક્ષ્ય કર્યો અષ્ટમ લક્ષ્ય

ચતુર્યં કુર્વન્તિ, કૃત્વાડાઠમમ્, અષ્ટમમ્ ચુપવાસરૂપ કુર્વન્તિ, કૃત્વા પષ્ઠ કુર્વન્તિ, કૃત્વા દશમ ચતુરુપવાસરૂપ દશમમ્ કુર્વન્તિ, કૃત્વાડાઠમ કુર્વન્તિ, કૃત્વા દ્વાદશ પશ્ચપોવાસરૂપ કુર્વન્તિ, કૃત્વા દશમ કુર્વન્તિ કૃત્વા ચતુર્દશ પહુપવાસરૂપ કુર્વન્તિ, કૃત્વા દ્વાદશ કુર્વન્તિ કૃત્વા પોડશ સપ્તોપવાસરૂપ કુર્વન્તિ, કૃત્વા ચતુર્દશ કુર્વન્તિ, કૃત્વાડાઠાદશ અષ્ટોપવાસરૂપ કુર્વન્તિ, કૃત્વા પોડશ કુર્વન્તિ, કૃત્વા વિંશ

વાસરૂપ અષ્ટમમ્ કૃત્વા અષ્ટમમ્ કરકે પારણા કૃત્વા ફિર છઠ્ઠમમ્ રૂપદો ઉપવાસ કૃત્વા પષ્ટમમ્ કરકે પારણા કૃત્વા ફિર દશમ મમ્ રૂપ ચાર ઉપવાસ કૃત્વા ચાર ઉપવાસ કરકે પારણા કૃત્વા ફિર અષ્ટમ મમ્ રૂપ ત્રીન ઉપવાસ કૃત્વા અષ્ટમ મમ્ કરકે પારણા કૃત્વા ફિર પશ્ચ ઉપવાસ રૂપ દ્વાદશ મમ્ કૃત્વા દ્વાદશ મમ્ કરકે પારણા કૃત્વા પુનઃ દશમ મમ્ કૃત્વા દશમ મમ્ કરકે પારણા કૃત્વા ફિર ષટ્ ઉપવાસ રૂપ ચતુર્દશ મમ્ કૃત્વા ચતુર્દશ મમ્ કરકે પારણા કૃત્વા પુનઃ દ્વાદશ મમ્ રૂપ પાચ ઉપવાસ કૃત્વા (કરિત્તા સોલસમ કરેતિ) પાચ ઉપવાસ કરકે પારણા કૃત્વા પુનઃ ૭ ઉપવાસરૂપ સોલસ મમ્ કૃત્વા (કરિત્તા ચોદસમ કરેતિ) ૭ ઉપવાસ કરકે પારણા કૃત્વા-વાદ મે ૬ ઉપવાસ કૃત્વા (કરિત્તા અઠ્ઠારસમ કરેતિ)પારણા કરકે ફિર અષ્ટાદશ મમ્ રૂપ ૮ઉપવાસ કૃત્વા (કરિત્તા સોલસમ કરેતિ) આઠ ઉપવાસ કરકે પારણા કૃત્વા ફિર ૭ ઉપવાસ કૃત્વા (કરિત્તા વીસદશમ કરેતિ) સાત ઉપવાસ કરકે ઉત્તર

કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ છઠ્ઠ લકત રૂપ બે ઉપવાસો કર્યા પષ્ઠ લકત કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ દશમ લકત રૂપ ચાર ઉપવાસો કર્યા ચાર ઉપવાસોના અન્તે પારણા કર્યા ત્યાર બાદ અષ્ટમ લકત રૂપ ત્રણ ઉપવાસો કર્યા અષ્ટમ લકત કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ દ્વાદશ લકત પાચ ઉપવાસ કર્યા ત્યાર પછી પારણા કર્યા કરી દશમ લકત કર્યા દશમ લકત કરીને પારણા કર્યા અને ત્યાર બાદ છ ઉપવાસ રૂપ ચતુર્દશ લકત કર્યા

ચતુર્દશ લકત કરીને પારણા કર્યા કરી દ્વાદશ લકત રૂપ પાચ ઉપવાસો કર્યા (કરિત્તા સોલસમ કરેતિ પાચ ઉપવાસો કરીને પારણા કર્યા કરી સોલસ લકત સાતઉપવાસ કર્યા (કરિત્તા ચોદસમ કરેતિ) સાત ઉપવાસ કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ છ ઉપવાસો કર્યા “ કરિત્તા અઠ્ઠારસમ કરેતિ ” પારણા કરીને અષ્ટાદશ લકત રૂપ આઠ ઉપવાસો કર્યા “ કરિત્તા સોલસમ કરેતિ આઠ ઉપવાસો કરીને પારણા કર્યા ત્યાર બાદ સાત ઉપવાસો કર્યા “ કરિત્તા વીસદશમ કરેતિ ” સાત ઉપવાસો કરીને તેણે પારણા કર્યા, ત્યાર

જાગ પડ્યતિ, તથા યત્ તપ પૂર્વકૃત પુનરાત્યોત્તરોત્તર ક્રિયતે તન્ મિહનિષ્કી
 ઢિતમિત્યુન્યતે. । તપ કર્મોપસપદ્ય વિહરન્તિ । તપ ક્ષુલ્લક સિંહનિક્કીડિત
 તપઃ કર્મ કેન પ્રકારેણ તૈઃ કૃતમિત્યાકાઢ્યાયામાહ—‘ તજહા ’ ઇત્યાદિ ચતુર્થ
 ચતુર્થભક્તમેકોપવાસરૂપ કુર્વન્તિ કૃત્વા ‘ સન્વકામગુણિય ’ સર્વકામગુણિત=સર્વ
 કામગુણા દુગ્ધદધિધૃતતૈલમધુરરૂપા ત્રિકૃતય સજાતા યત્ર તત્ સર્વકામગુણિતમ્
 ઇદ પારણક્રિયાયાવિશેષણ, ‘ પારેતિ ’ પારયન્તિ=પારણ કુર્વન્તિ । પારયિત્વા ષઠ
 કુર્વન્તિ, તત પારણ કૃત્વા ષઠભક્ત દ્વયુપવાસરૂપ તપ’ કુર્વન્તિ— ઇત્યર્થ કૃત્વા

તરહ સિંહ અપને પશ્ચાત્ ભાગ કા નિરીક્ષણ કરતા આગે ચલતા હૈ उसी
 પ્રકાર જો તપ પૂર્વકૃત તપો કો સાથ લેકર આગે ૨ ક્રિયા જાતા હૈ उस
 કા નામ સિંહનિક્કીડિત તપ હૈ । (તજહા) यह क्षुल्लक सिंह निष्की
 ढित तप उन्हो ने किस प्रकार से किया इस बात को अब सूत्रकार
 प्रदर्शित करते हैं ।— (चउत्थ करेंति, करित्ता सन्व कामगुणिय पारेंति,
 पारित्ता छट्ट करेंति, करित्ता चउत्थ करेंति करित्ता अट्टम करेंति, करित्ता
 छट्ट करेंति, करित्ता, दसम करेंति, करित्ता अट्टम करेंति, करित्ता दुवा
 लसम करेंति, करित्ता दसम करेंति, करित्ता चाउदसम करेंति करित्ता
 दुवालसम करेंति) उन्होंने ने पहिले चतुर्थ भक्त—एक उपवास किया । एक
 उपवास करके विगत सहित पारणा किया पारणा करके फिर छट्टभक्त
 —दो उपवास किये दो उपवास करके फिर उन्होंने ने पारणा किया बाद
 मे चतुर्थ भक्त किया । चतुर्थभक्त करके पारणा किया फिर—तीन उप

આગળ ચાલે છે તે પ્રમાણે જ જે તપ પૂર્વે કરેલા તપોને સાથે લઈને
 આગળ કરવામા આવે છે, તે તપ સિંહ નિક્કીડિત કહેવાય છે (ત જહા)
 અનગારોએ આ ક્ષુલ્લક સિંહ નિક્કીડિત તપ કેવી રીતે શ્યુ ? તે વિષે
 સૂત્રકાર સ્પષ્ટીકરણ કરતા કહે છે

(ચઉત્થ કરેતિ, કરિત્તા સન્વકામગુણિય પારેતિ, પરિત્તા, છટ્ટ કરેતિ
 કરિત્તા ચઉત્થ કરેતિ, કરિત્તા અટ્ટમ કરેતિ, કરિત્તા છટ્ટ કરેતિ, કરિત્તા દસમ
 કરેતિ કરિત્તા અટ્ટમ કરેતિ, કરિત્તા દુગાલસમ કરેતિ કરિત્તા ચાઉદસમ કરેતિ
 કરિત્તા દુગાલસમ કરેતિ)

તેઓએ સૌ પ્રથમ ચતુર્થ ભક્ત—એક ઉપવાસ કર્યો એક ઉપાસ કરીને
 વિગત મહિત પારણા કર્યા પારણા કર્યા બાદ ફરી છટ્ટ ભક્ત—એ ઉપવાસ કર્યા
 એ ઉપવાસ કરીને તેઓએ પારણા કર્યા ત્યાર બાદ ચતુર્થ ભક્ત કર્યા બાદ
 પારણા કર્યા ત્યાર પછી ત્રણ ઉપવાસ રૂપ અષ્ટમ ભક્ત કર્યો અષ્ટમ ભક્ત

चतुर्थं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टमम्, अष्टमभक्तं युपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा षष्ठं कुर्वन्ति, कृत्वा दशमं चतुरूपवासरूपं दशमभक्तं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टमं कुर्वन्ति, कृत्वा द्वादशं पञ्चपुत्रवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा दशमं कुर्वन्ति कृत्वा चतुर्दशं षडुपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा द्वादशं कुर्वन्ति कृत्वा षोडशं सप्तोपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा चतुर्दशं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टादशं अष्टोपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा षोडशं कुर्वन्ति, कृत्वा विंश-

वासरूपं अष्टमभक्तं किया अष्टमभक्त करके पारणा किया फिर छट्ठभक्त रूप दो उपवास किये । षष्ठभक्त करके पारणा किया फिर दशमभक्त रूप चार उपवास किये चार उपवास करके पारणा किया फिर अष्टमभक्त रूप तीन उपवास किये । अष्टमभक्त करके पारणा कियो फिर पञ्च उपवास रूप द्वादशभक्त किया द्वादशभक्त करके पारणा किया । पुनः दशमभक्त किया । दशमभक्त करके पारणा किया फिर षट् उपवास रूप चतुर्दशभक्त किया । चतुर्दशभक्त करके पारणा किया पुनः द्वादशभक्त रूप पांच उपवास किये । (करित्ता सोलसम करेति) पांच उपवास करके पारणा किया पुनः ७ उपवासरूप सोलसभक्त किया (करित्ता चोदसम करेति) ७ उपवास करके पारणा कियो-बाद में ६ उपवास किये (करित्ता अट्टारसम करेति) पारणा करके फिर अष्टादशभक्त रूप ८ उपवास किये (करित्ता सोलसम करेति) आठ उपवास करके पारणा किया फिर ७ उपवास किये (करित्ता वीसडम करेति) सात उपवास करके उसका

करीने पाण्डु कथा त्थार आठ छठ लकत रुप ये उपवासो कथा षष्ठ लकत करीने पाण्डु कथा त्थार आठ दशम लकत रुप त्थार उपवासो कथा त्थार उपवासोना अन्ते पाण्डु कथा त्थार आठ अष्टम लकत रुप त्रणु उपवासो कथा अष्टम लकत करीने पारणा कथा त्थार आठ द्वादश लकत पाच उपवास कथा त्थार पछी पाण्डु कथा इरी दशम लकत कथा दशम लकत करीने पारणा कथा अने त्थार आठ छ उपवास रुप चतुर्दश लकत कथा

चतुर्दश लकत करीने पारणा कथा इरी द्वादश लकत रुप पाच उपवासो कथा (करित्ता सोलससम करेति पाच उपवासो करीने पाण्डु कथा इरी मोलस लकत सात उपवास कथा (करित्ता चोदसम करेति) सात उपवास करीने पारणा कथा त्थार आठ छ उपवासो कथा “ करित्ता अट्टारसम करेति ” पारणा करीने अष्टादश लकत रुप आठ उपवासो कथा “ करित्ता सोलसम करेति आठ उपवासो करीने पाण्डु कथा त्थार आठ सात उपवासो कथा “ करित्ता वीसडम करेति ” सात उपवासो करीने तेणु पारणा कथा, त्थार

તિતમ નમોપવાસરૂપ કુર્વન્તિ । કૃત્વાઽષ્ટાદશ કુર્વન્તિ કૃત્વા ત્રિશતિતમ કુર્વન્તિ
કૃત્વા પોઢન કુર્વન્તિ, કૃત્વાઽષ્ટાદશ કુર્વન્તિ, કૃત્વા ચતુર્દશ કુર્વન્તિ, કૃત્વા પોઢશ
કુર્વન્તિ, કૃત્વા દ્વાદશ કુર્વન્તિ કૃત્વા ચતુર્દશ કુર્વન્તિ કૃત્વા દશમ કુર્વન્તિ કૃત્વા
દ્વાદશ કુર્વન્તિ, કૃત્વાઽષ્ટમ કુર્વન્તિ, કૃત્વા દશમ કુર્વન્તિ કૃત્વા પૃથ્થ કુર્વન્તિ, કૃ

પારણા ક્રિયા-ફિર ૯ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા અઢ્ઢારસમ કરેતિ) ઉસ
કા પારણા ક્રિયા-ફિર ૮ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા વીસદ્દમ કરેતિ) આઠ
ઉપવાસ કરકે ઉસ કા પારણા ક્રિયા-ફિર ૯ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા સોલ
સમ કરેતિ) ૯ ઉપવાસ કરકે ઉસ કા પારણા ક્રિયા-ફિર ૭ ઉપવાસ
ક્રિયે (કરિત્તા અઢ્ઢારસમ કરેતિ) સાત ઉપવાસ કા પારણા ક્રિયા-૮
ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા ચોદ્દસમ કરેતિ) ઉન આઠ ઉપવાસ કા પારણા
ક્રિયા-ફિર ૬ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા સોલસમ કરેતિ) ૬ ઉપવાસ કા
પારણા ક્રિયા-ફિર ૭ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા દુવાલસમ કરેતિ)
૭ ઉપવાસ કરકે ઉસ કા પારણા ક્રિયા-ફિર ૫ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા
ચાઉદ્દસમ કરેતિ) ૫ ઉપવાસ કરકે ઉસ કા પારણા ક્રિયા-ફિર ૬
ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા દસમ કરેતિ) ૬ ઉપવાસ કરકે પારણા ક્રિયા
ફિર ૪ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા દુવાલસમ કરેતિ) ૪ ઉવાસ કા પાર-
ણા ક્રિયા-પારણા કરકે ૫ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા અઢ્ઢમ કરેતિ) ૫
ઉપવાસ કા પારણા ક્રિયા-ફિર ૩ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા દસમ

ખાદ્દ ફરી નવ ઉપવાસો ક્રિયા “ કરિત્તા અઢ્ઢારસમ કરેતિ ” અને તેના પારણા
ક્રિયા ત્યાર ખાદ્દ આઠ ઉપવાસો ક્રિયા “ કરિત્તા વીસદ્દમ કરેતિ ” આઠ ઉપ
વાસો કરીને તેના પારણા ક્રિયા ત્યાર પછી નવ ઉપવાસો ક્રિયા “ કરિત્તા
સોલસમ કરેતિ ” નવ ઉપવાસો કરીને તેના પારણા ક્રિયા ત્યાર ખાદ્દ સાત
ઉપવાસો ક્રિયા “ કરિત્તા અઢ્ઢારસમ કરેતિ ” સાત ઉપવાસના પારણા કરીને
આઠ ઉપવાસો ક્રિયા “ કરિત્તા ચોદ્દસમ કરેતિ ” અને આઠ ઉપવાસોના પારણા
ક્રિયા ત્યાર પછી છ ઉપવાસો ક્રિયા “ કરિત્તા સોલસમ કરેતિ ” છ ઉપવાસોના
પારણા કરીને સાત ઉપવાસ ક્રિયા “ કરિત્તા દુવાલસમ કરેતિ ” સાત ઉપવાસ
કરીને તેના પારણા ક્રિયા ત્યાર ખાદ્દ પાચ ઉપવાસો ક્રિયા “ કરિત્તા ચાઉદ્દસમ
કરેતિ ” પાચ ઉપવાસો કરીને તેના પારણા ક્રિયા ત્યાર ખાદ્દ છ ઉપવાસો
ક્રિયા “ કરિત્તા દસમ કરેતિ ” છ ઉપવાસના પારણા ક્રિયા, અને ત્યાર પછી
ચાર ઉપવાસો ક્રિયા “ કરિત્તા દુવાલસમ કરેતિ ” ચાર ઉપવાસના પારણા
કરીને પાચ ઉપવાસો ક્રિયા “ કરિત્તા અઢ્ઢમ કરેતિ ” પાચ ઉપવાસના પારણા
ક્રિયા અને ત્યાર ખાદ્દ ત્રણ ઉપવાસો ક્રિયા “ કરિત્તા ” ત્રણ

ત્વાઽપ્તમ કુર્વન્તિ કૃત્વા ચતુર્થે કુર્વન્તિ, કૃત્વા પૃથ્વ કુર્વન્તિ કૃત્વા ચતુર્થે કુર્વન્તિ
સર્વત્ર સર્વકામગુણિતેન પારયન્તિ । ચતુર્થ કુર્વન્તીત્યાદિ-સર્વત્ર સર્વકામગુણિતેન પાર-
યન્તીત્યન્તસ્થાય નિષ્કર્ષ:-સિંહનિષ્ક્રીડિતં તપોદ્વિવિધ મહત્ ક્ષુલ્લકચ ।
તન્નાનુલોમગત્યા-

કરેતિ) ૩ ઉપવાસ કા પારણા ક્રિયા ફિર ૪ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિત્તા
છટ્ઠ કરેતિ) ૪ ઉપવાસ કા પારણા ક્રિયા-ફિર ૨ ઉપવાસ ક્રિયે (કરિ-
ત્તા અઢમ કરેતિ) ૨ ઉપવાસ કા પારણા કરકે ફિર ૩ ઉપવાસ ક્રિયે
(કરિત્તા ચત્થ કરેતિ) ૩ ઉપવાસ કા પારણા કરકે ફિર ૧ ઉપવાસ
ક્રિયા (કરિત્તા છટ્ઠ કરેતિ) ૧ ઉપવાસ કા પારણા કરકે ફિર ૨ ઉપ-
વાસ ક્રિયે (કરિત્તા ચત્થ કરેતિ) ૨ ઉપવાસ કા પારણા કરકે ફિર
૧ ઉપવાસ ક્રિયા (સર્વત્થ સર્વકામગુણિણ પારેતિ) પારણા
જો હન્હો ને ક્રિયા વહ સર્વત્ર વિગય સહિત ક્રિયા

(એવ સ્વલ્લુ એસા સુદ્ધાગસીહનિક્કીલિયસ્સ તવોકમ્મસ્સ પઢમા પરી-
વાડી છર્હિ-માસેર્હિ સત્તર્હિ અહોરત્તેર્હિ ય અહાસુત્ત જાવ અહારાહિયા
ભવહ) હસ તરહ ક્ષુદ્ર સિંહનિષ્ક્રીડિત તપ કી પ્રથમ પરિપાટી હૈ । યહ
હહ માસ ઓર સાત દિન રાત તક સૂત્રોક્ત વિધિ કે અનુસાર યાવત્
આરાધિત હોતી હૈ ।

અર્થાત્ હસકે કરને મેં સાત દિન રાત અધિક ૬ માસ કા સમય
લગતા હૈ । યહા “ સર્વકામગુણિત ” એસા જો પારણા કા વિશેષણ

ઉપવાસોના પારણા કરીને ત્યાર પછી ત્યાર ઉપવાસો કર્યા “ કરિત્તા ૭ કરેતિ ”
ત્યાર ઉપવાસના પારણા કર્યા, ત્યાર બાદ બે ઉપવાસ કર્યા “ કરિત્તા અઢમ
કરેતિ ” બે ઉપવાસના પારણા ત્રણ ઉપવાસ કર્યા “ કરિત્તા ચત્થ કરેતિ ”
ત્રણ ઉપવાસના પારણા કરીને એક ઉપવાસ કર્યો “ કરિત્તા છટ્ઠ કરેતિ ”
એક ઉપવાસના પારણા કરીને બે ઉપવાસો કર્યા “ કરિત્તા ચત્થ કરેતિ ”
બે ઉપવાસના પારણા કરીને એક ઉપવાસ કર્યો “ સર્વત્થ સર્વ કામગુણિ
ણ પારેતિ ” તેઓએ બધા પારણા વિગય સહિત કર્યા હતા

(એવ સ્વલ્લુ એસા સુદ્ધાગસીહનિક્કીલિયસ્સ તવોકમ્મસ્સ પઢમા પરિવાડી
છર્હિ માસેર્હિ સત્તર્હિ અહોરત્તેર્હિય અહાસુત્ત જાવ અહારાહિયા ભવહ)

આ પ્રમાણે ક્ષુદ્રસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની આ પ્રથમ પરિપાટી છે છ માસ અને
સાત દિવસ રાત સુધી સૂત્રોક્ત વિધિ મુજબ ‘યાવત્’ તેની આરાધના હોય છે

એટલે કે આ વ્રતને કરવામા છ માસ અને સાત દિવસ રાત એટલે
વખત લાગે છે અહીં “ સર્વકામગુણિત ” ને પારણાના વિશેષણ રૂપે મૂક-

ચતુર્ભક્તાદિ વિંશતિતમપર્યન્ત, પ્રતિલોમગત્યા ।

વિંશતિતમભક્તાદિતથ્ચતુર્થભક્તપર્યન્ત ચ મિલિત્વા તપઃ ક્ષુલ્લકમિત્યુચ્યતે ।
અનુલોમસમાપ્ત્યનન્તર પ્રતિલોમકરણાત્ પ્રાગ્ મધ્યેઽષ્ટાદશભક્ત' ભવતિ । ચતુર્થ
પષ્ઠાષ્ટમાદીનિ તુ એકૈકવૃદ્ધયા એકોપવાસ દ્વયુપવાસાદીનિ । ઇદં ચતુર્થપષ્ઠાષ્ટમદશમ
દ્વાદશચતુર્દશપોડશભક્તાનિ પ્રત્યેક ચત્વારિ ૨ ત્રિણિ અષ્ટાદશાનિ, દ્વે વિંશતિતમે
એવ તપોદિનાનિ ૧૫૪ ચતુઃપચ્ચાદધિકશત, પારણદિનાનિ ૩૩ ત્રયસ્ત્રિંશદ્ભવન્તિ ।

રહ્યા છે એવસે યહ નિષ્કર્ષ નિકલના છે કે યહ સિંહનિષ્ક્રીડિત તપ
ક્ષુલ્લક ઓર મહત્ત કી અપેક્ષા સે દો પ્રકાર કા હોતા હૈ—ઇનમેં અનુલોમ
ગતિ સે પ્રથમ ચતુર્થભક્ત સે પ્રારંભ હોકર વિંશતિતમ પર્યન્ત કિયા
જાતા હૈ ઓર પ્રતિ લોમગતિ સે પ્રથમ વિંશતિતમ ભક્તાદિ સે પ્રારંભ
કર ચતુર્થભક્ત પર્યન્ત સમાપ્ત કિયા જોતા હૈ । હસ તરહ અનુલોમ
પ્રતિલોમ વિધિ સે કિયા ગયા યહ તપ ક્ષુલ્લક નિષ્ક્રીડિત તપ માના
ગયા હૈ । અનુલોમ વિધિ કી સમાપ્તિ હોને કે વાદ પ્રતિલોમ વિધિ સે
હસે કરને કે પહિલે ઘીચ મેં અષ્ટાદશ ભક્ત હો જાતે હૈં । યે ચતુર્થ પષ્ઠ
અષ્ટમાદિ એક એક ઉપવાસ કી વૃદ્ધિ સે એક ઉપવાસ દો ઉપવાસ ત્રીન
ઉપવાસ આદિ વોલે હોતે હૈ ।

હસમેં ચતુર્થ પષ્ઠ અષ્ટમ, દશમ દ્વાદશ ચતુર્દશ ઓર પોડશ ભક્ત
યે પ્રત્યેક ક્રમશઃ ૪-૪-૩-૩ હો જાતે હૈ, તથા વિંશતિતમ ૯ ઉપવાસ
દો હોતે હૈ । તપસ્યા કે દિન ૧૫૪, પારણા કે દિન ૩૩ હસ પ્રકાર મિલા

વામા આબ્યો છે તેનો અભિપ્રાય આ પ્રમાણે છે કે સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ
ક્ષુલ્લક અને મહતની દૃષ્ટિએ બે પ્રકારનું હોય છે અનુલોમ ગતિથી પહેલા
ચતુર્થ ભક્તથી આરંભીને વિંશતિતમ સુધી તપ કરવામા આવે છે અને પ્રતિ
લોમ ગતિથી પ્રથમ વિંશતિતમ ભક્ત વગેરે થી આરંભીને ચતુર્થ ભક્ત સુધી
પુરૂ કરવામા આવે છે, આ રીતે અનુલોમ પ્રતિલોમ વિધિથી કરવામા આવેલું
આ તપ ક્ષુલ્લક નિષ્ક્રીડિત તપ ગણાય છે અનુલોમ વિધિની સમાપ્તિ બાદ
પ્રતિલોમ વિધિથી આ તપ આરંભ કરીને તેના પહેલા વચ્ચે અષ્ટાદશ
ભક્ત થઈ જાય છે આ ચતુર્થ, અષ્ઠ, અષ્ટમ વગેરે એક એક ઉપવાસની
વૃદ્ધિથી એક ઉપવાસ, બે ઉપવાસ અને ત્રણ ઉપવાસ વગેરેના હોય છે

આમા ચતુર્થ, પષ્ઠ, અષ્ટમ, દશમ, દ્વાદશ, ચતુર્દશ અને પોડશ ભક્ત આ
બધા અનુક્રમે ચાર ચાર, ત્રણ ત્રણ થઈ જાય છે તેમજ વિંશતિતમ નવ
ઉપવાસ બે હોય છે તપસ્યાના દિવસો ૧૫૪, અને પારણ, ૩૩,

ઉભય મિલિત્વા પ્રથમપરિપટયા ૧૮૭ સપ્તાશીત્યધિકેમેકશત દિનાનિ ભવન્તિ પારણક ચ સર્વે સર્વકામગુણિત=સવિકૃતિક કુર્વન્તિ-इत्यर्थः । एव खलु एषा क्षुद्रसिंहनिष्क्रीडितस्य तपः कर्मणः प्रथमा परिपाटी पद्मिभर्मासैः सप्तभिश्चाहोरात्रैश्च यथामूत्र सूत्रोक्तविधिना यावद् आराधिता भवति । उक्तरीत्या क्षुद्रकसिंह निष्क्रीडितस्य तपसः प्रथमाया परिपाट्या सप्तरात्रिदिवाधिकाः पणमासा भवन्ति पारण च विकृतिसहित भवति ।

इदमस्य तपस प्रथमपरिपाटीयन्त्रम्, एकमेव द्वितीय तृतीयचतुर्थ परिपाटीनामपि यन्त्र यो यम् ।

१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	
१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	८

તદનન્તર પ્રથમપરિપાટીકરણાનન્તર દ્વિતીયાયા પરિપાટ્યા ચતુર્થ કુર્વન્તિ, નવર વિકૃતિવર્જ પારયન્તિ । પારણ કુર્વન્તિ, એવ તૃતીયાપિ પરિપાટી, નગર કર પ્રથમ પરિપાટી મેં ૧૮૭, દિન હો જાતે હૈ । પારણા કે દિન વિગય સહિત આહાર લિયા જાતા હૈ । ઇસ પ્રકાર ઇસ ક્ષુદ્ર સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કી પ્રથમ પરિપાટી ૬ માસ ૭ દિન રાત તક સૂત્રોક્ત વિધિ કે અનુસાર આરાધિત હોતી હૈ । ઇસ તપ કી પ્રથમ પરિપાટી કા યન્ત્ર ઉપર સસ્કૃત ટીકા મેં દિયા હૈ । ઇસી તરહ, દ્વિતીય, તૃતીય, ચતુર્થ પરિપાટી કામી યન્ત્ર જાનના ચાહિયે ।

(તયાણતર પારેતિ)

જવ પ્રથમ પરિપાટી કે અનુસાર ક્ષુદ્ર સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ આરાધિત હો ચુકના હૈ તવ ઉસકે ત્રાદ દ્વિતીય પરિપાટી મેં જો ચતુર્થ ભક્ત કી તપસ્યા કરતે હ વે વિકૃતિવર્જ આહાર કા પારણા કરતે હૈ ।

આમ બનેનો અરવાળો પ્રથમ પરિપાટીમા ૧૮૭ દિવસનો હોય છે પારણાના દિવસે વિજય સહિત આહાર ડરવામા આવે છે આ પ્રમાણે ક્ષુદ્રસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની પ્રથમ પરિપાટી સૂત્રોક્ત વિધિ મુજબ છ માસ અને માત્ર દિવસ રાત મુધી આરાધિત હોય છે આ તપની પ્રથમ પરિપાટીનુ યત્ર ઉપર સમ્પ્રકૃત ટીકામા બતાવ્યા મુજબ છે આ પ્રમાણેજ દ્વિતીય, તૃતીય ચતુર્થ પરિપાટીના યત્ર વિષે પણ જાણુવુ જોઇએ

(તયાણતર પરિતિ)

ત્યારે પ્રથમ પરિપાટી મુજબ ક્ષુદ્રસિંહ-નિષ્ક્રીડિત તપની આરાધના પૂરી થઈ જાય છે ત્યારે દ્વિતીય પરિપાટીમા ચતુર્થ ભક્તની તપસ્યા ડરનારા વિકૃતિ વર્જ આહારના પારણા કરે છે

પારણકે-અલેપકૃત=અસ્તિગ્ધ=રૂક્ષ પારયન્તિ । એવ ચતુર્થ્યપિ પરિપાટી નવર પારણકે આચામામ્લેન પારયન્તિ=રૂક્ષાન્નમચિત્તજલપ્લાવિત કૃત્વા તેન પારણ કુર્વન્તીત્યર્થઃ ॥ સૂ૦ ૬ ॥

મૂલમ્-તણ્ણં તે મહવ્વલપામોક્ષા સત્ત અણગારા खुड्ढागं सीहनिक्कीलिय तवोकम्म दोहि संवच्छरेहि अट्ठावीसाए अहो-रत्तेहि अहासुत्त जाव आणाए आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वदति नमंसति वदित्ता, नमसित्ता एव वयासी-इच्छामो णं भते । महालय सीहनिक्कीलिय तहेव जहा खुड्ढागनवरंचोत्तीसइमाओ नियत्तए णगाए परिवाडोए कालो एगेणं संवच्छरेणं छहि मासेहि अट्ठा-रसहि य अहोरत्तेहि समप्पेइ । सव्वपि सीहनिक्कीलिय छहिं वासेहि दोहि य मासेहि वारसेहि य अहोरत्तेहि समप्पेइ । तण्ण ते मહવ્વલપામોક્ષા સત્ત અણગારા મહાલય સીહનિક્કીલિય અહાસુત્ત જાવ આરાહેત્તા જેણેવ થેરે ભગવંતે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા થેરે ભગવંતે વદતિ નમસતિ વદિત્તા નમાસિત્તા વહૂણિ ચઉત્થ જાવ વિહરતિ ॥ સૂ૦ ૭ ॥

इसी तरह तीसरी भी परिपाटी होती है । परन्तु इसमें जो पारणा होता है वह विगय वर्जित रूक्ष अन्न का होता है । इसी तरह की चौथी परिपाटी होती है परन्तु इस में जो पारणा होता है वह चावल आदि का धोया हुआ धोवान पानी में अर्थात् अचित्त जल से प्लावित हुए रूक्ष अन्न याने आयविल का होता है ॥ सूत्र ६ ॥

આ પ્રમાણે ત્રીજી પરિપાટી પણ હોય છે પણ તેના પારણા વિગય વગરના રૂક્ષ અન્નના હોય છે આ પ્રમાણે ચોથી પરિપાટી પણ હોય છે પણ તેના પારણા ભાત વગેરેના ઓસામણુમા એટલે કે અચિત્ત પાણીથી પ્લાવિત થયેલા રૂક્ષ અન્ન અર્થાત્ આયવિલના હોય છે ॥ સૂત્ર ૬ ॥

ટીકા-તતસ્તદનન્તર સ્વલુ તે મહાવલપમુખાઃ સપ્તાનગારા 'સુહાગ' લુલુક=લઘુક, સિંહનિષ્ક્રીડિત-ચતસ્રભિઃ પરિપાટીભિર્યુક્ત તપ કર્મ દ્વાભ્યા સવત્મરાભ્યા-મષ્ટાવિંશત્યાઽહોરાત્રૈઃ 'અહાસુત્ત' યથાસૂત્ર સૂત્રોક્તવિધિના, યાવદ્=ઇદં યાવત્ કરણાદ્ જ્ઞાનાદિમોક્ષમાર્ગાનતિક્રમેણ ક્ષાયોપશમિક્રમાગ્રાનતિક્રમેણ વા 'આણાણ' આજ્ઞયા=ભગવદાજ્ઞયા પ્રવચનાનુસારેણ આરાધ્ય, યત્રૈવ સ્થવિરા ભગવન્તસ્તત્રૈયો પાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય સ્થવિરાન્ ભગવતો વન્દતે=સ્તુવન્તિ, નમસ્યતિ=પ્રણમન્તિ, વન્દિત્વા નત્વા એવમગદન્

હે ભદન્ત ! વયમિચ્છામઃ સ્વલુ 'મહાલય' મહત્ સિંહનિષ્ક્રીડિત તપઃ કર્મ કર્તુમ્, તતઃ સ્થવિરાજ્ઞયા મહાવલપમુખા સપ્તાનગારાઃ મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપઃ

‘તણ્ણ તે મહવ્વલપામોક્ખા’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ-(તણ્ણ) ઇસકે વાદ (તે મહવ્વલપામોક્ખા સત્ત અણગારા) વે મહાવલ પ્રમુખ સાતોં હી અનગાર (સુહાગ સીંહ નિકીલિય) લઘુ સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મ કો (દોહિ સવચ્છરેહિં અઢ્ઢોવિસાણ અહોરત્તેહિં) દો વર્ષ ૨૮ દિન રાત તક (અહાસુત્ત) યથા સૂત્ર (જાવ આણાણ આ રાહેત્તા) યાવત્ ભગવાન કી ઇસ તપ કો કરને કી જેસી આજ્ઞા હૈ ઉસ કે અનુસાર આરાધિત કર (જેણેવ થેરે ભગવતે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ ઉવાગચ્છિત્તા થેરે ભગવતે વદતિ નમસતિ, વદિત્તા નમસિત્તા એવ વયાસી) જર્હા સ્થાવિર ભગવાન થે વહા ગયે । વહા જાકર ઉન્હોને ભગવત સ્થ વિરો કો વદન કી-ઉન્હે નમસ્કાર ક્રિયા વદના નમસ્કાર કરકે ફિર વે ઇસ પ્રકાર બોલે (ઇચ્છામો ણ ભતે ! મહાલય સીંહનિકીલિય

‘તણ્ણ તે મહવ્વલપામોક્ખા’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ-(તણ્ણ) ત્યારબાદ ‘તે મહવ્વલપામોક્ખા સત્ત અણગારા’ મહાવલ પ્રમુખ સાતે અનગારો (સુહાગ સીંહનિકીલિય) લઘુસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મ કરીને (દોહિ સવચ્છરેહિં અઢ્ઢોવિસાણ અહોરત્તેહિં) બે વર્ષ ૨૮ દિવસ રાત સુધી (અહાસુત્ત) સૂત્રોક્ત વિધિ મુજબ (જાવ આણાણ આરાહેત્તા) તેમજ તેને આરાધવાની ભગવાનની જેવી આશા છે, તે મુજબ આરાધીને

(જેણેવ થેરે ભગવતે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ ઉવાગચ્છિત્તા થેરે ભગવતે વદતિ નમસતિ, વદિત્તા, નમસિત્તા એવ વયાસી)

જ્યા સ્થવિર ભગવાન હતા ત્યા ગયા ત્યા જઈને તેમણે ભગવત સ્થ વિરોની વદના કરી અને તેમને નમસ્કાર કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને તેઓ એ વિનતી કરતા આ પ્રમાણે કહ્યું

પારણકે-અલેપકૃત=અસ્તિગ્ધ=રૂક્ષ પારયન્તિ । એવ ચતુર્થ્યપિ પરિપાટી નવર પારણકે આચામામ્હેન પારયન્તિ=રૂક્ષાન્નમચિત્તજલપ્લાવિત કૃત્વા તેન પારણ કુર્વન્તીત્યર્થઃ ॥ સૂ૦ ૬ ॥

મૂલમ-તત્ત્વેણ તે મહવ્વલપામોક્ષવા સત્ત અણગારા સુદુર્ગ સીહનિક્કીલિય તવોકમ્મં દોહિ સંવચ્છરેહિં અટ્ટાવીસાણ અહો-રત્તેહિં અહાસુત્ત જાવ આણાણ આરાહેત્તા જેણેવ થેરે ભગવતે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા થેરે ભગવંતે વદતિ નમસંસતિ વદિત્તા, નમસિત્તા એવ વયાસી-ઇચ્છામો પં ભતે । મહાલય સીહનિક્કીલિય તહેવ જહા સુદુર્ગ નવર ચોત્તીસઙ્ગમાઓ નિયત્તણ ણગાણ પરિવાહીણ કાલો ણગેણં સવચ્છરેણં છહિ માસેહિ અટ્ટા-રસહિ ય અહોરત્તેહિ સમપ્પેઙ્ગ । સઠ્ઠવપિ સીહનિક્કીલિય છહિં વાસેહિ દોહિ ય માસેહિ વારસેહિ ય અહોરત્તેહિ સમપ્પેઙ્ગ । તત્ત્વેણં તે મહવ્વલપામોક્ષવા સત્ત અણગારા મહાલય સીહનિક્કીલિય અહાસુત્ત જાવ આરાહેત્તા જેણેવ થેરે ભગવંતે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા થેરે ભગવતે વદંતિ નમસંસતિ વદિત્તા નમસિત્તા વહૂણિ ચઉત્થ જાવ વિહરતિ ॥ સૂ૦ ૭ ॥

इसी तरह तीसरी भी परिपाटी होती है । परन्तु इसमें जो पारणा होता है वह विगय वर्जित रूक्ष अन्न का होता है । इसी तरह की चौथी परिपाटी होती है परन्तु इस में जो पारणा होता है वह चावल आदि का धोया हुआ धोवान पानी में अर्थात् अचिस्त्र जल से प्लावित हुए रूक्ष अन्न याने आयविल का होता है ॥ सूत्र ६ ॥

આ પ્રમાણે ત્રીજી પરિપાટી પણ હોય છે પણ તેના પારણા વિગય વગરના રૂક્ષ અન્નના હોય છે આ પ્રમાણે ચોથી પરિપાટી પણ હોય છે પણ તેના પારણા ભાત વગેરેના એસામણુમા એટલે કે અચિત્ત પાણીથી પ્લાવિત થયેલા રૂક્ષ અન્ન અર્થાત્ આયવિલના હોય છે ॥ સૂત્ર ૬ ॥

ટીકા-તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ તે મહાવલપ્રમુખાઃ સત્તાનગારા 'સુહાગ' લુહુક=લઘુક, સિંહનિક્કીડિત-ચતસ્રભિઃ પરિપાટીભિર્યુક્ત તપ કર્મ દ્વાભ્યા મવત્મરાભ્યા-મષ્ટાવિંશત્યાઽહોરાત્રૈઃ 'અહાસુત્ત' યથાસૂત્ર સૂત્રોક્તવિધિના, યાવદ્=ઇદં યાવત્ કરણાદ્ જ્ઞાનાદિમોક્ષમાર્ગાનતિક્રમેણ ક્ષાયોપશમિક્રમાગ્રાનતિક્રમેણ વા 'આણાણ' આજ્ઞયા=ભગવદાજ્ઞયા પ્રવચનાનુસારેણ આરાધ્ય, યત્રૈવ સ્થવિરા ભગવન્તસ્તત્રૈવો પાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય સ્થવિરાન્ ભગવતો વન્દતે=સ્તુવન્તિ, નમસ્યતિ=પ્રણમન્તિ, વન્દિત્વા નત્વા એવમનદન્

હે ભદ્રન્ત ! વયમિચ્છામઃ સ્વલુ 'મહાલય' મહત્ સિંહનિક્કીડિત તપઃ કર્મ કર્તુમ્, તત્ સ્થવિરાજ્ઞયા મહાવલપ્રમુખા સત્તાનગારાઃ મહાસિંહનિક્કીડિત તપઃ

‘તણ્ણ તે મહવ્વલપામોક્સા’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ--(તણ્ણ) ડસકે વાદ (તે મહવ્વલપામોક્સા સત્તા અણગારા) વે મહાવલ પ્રમુખ સાતો હી અનગાર (સુહાગ મોહ નિક્કીલિય) લઘુ સિંહ નિક્કીડિત તપ કર્મ કો (દોહિં સવચ્છરેહિં અઢાવિસાણ અહોરત્તેહિં) દો વર્ષ ૨૮ દિન રાત તક (અહાસુત્ત) યથા સૂત્ર (જાવ આણાણ આ રાહેત્તા) યાવત્ ભગવાન કી હસ તપ કો કરને કી જેસી આજ્ઞા હૈ હસ કે અનુસાર આરાધિત કર (જેણેવ થેરે ભગવતે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ ઉવાગચ્છિત્તા થેરે ભગવતે વદતિ નમસતિ, વદિત્તા નમસિત્તા એવ વયાસી) જહાં સ્થાવિર ભગવાન થે વહા ગયે । વહા જાકર ઉન્હોને ભગવત સ્થ વિરો કો વદન કી-ઉન્હેં નમસ્કાર કિયા વદના નમસ્કાર કરકે ફિર વે હસ પ્રકાર વોલે (ડચ્છામો ણ ભત્તે ! મહાલય સીહનિક્કીલિય

‘તણ્ણ તે મહવ્વલપામોક્સા’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ--(તણ્ણ) ત્યારબાદ ‘તે મહવ્વલપામોક્સા સત્તા અણગારા’ મહાવલ પ્રમુખ સાતે અનગારો (સુહાગ સીહનિક્કીલિય) લઘુમિંહુ નિક્કીડિત તપ કર્મ કરીને (દોહિ સવચ્છરેહિ અઢાવીસાણ અહોરત્તેહિ) બે વર્ષ ૨૮ દિવસ રાત સુધી (અહાસુત્ત) સૂત્રોક્ત વિધિ મુજબ (જાવ આણાણ આરાહેત્તા) તેમજ તેને આરાધવાની ભગવાનની જેવી આશા છે, તે મુજબ આરાધીને

(જેણેવ થેરે ભગવતે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ ઉવાગચ્છિત્તા થેરે ભગવતે વદતિ નમસતિ, વદિત્તા, નમસિત્તા એવ વયાસી)

જ્યા સ્થવિર ભગવાન હતા ત્યા ગયા ત્યા જઈને તેમણે ભગવત સ્થ વિરોની વદના કરી અને તેમને નમસ્કાર કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને તેઓ એ વિનતી કરતા આ પ્રમાણે કહ્યું

ધર્મ કર્તુ પ્રવૃત્તાઃ, 'તદેવ' તથૈવ=મહામિહનિષ્ક્રીડિતમપિ તદ્વદેવ ભવતિ-જહા
 સુહાગ' યથા ક્ષુલ્લક=લઘુમિહનિષ્ક્રીડિત, નવર વિશેષસ્તુ 'ચોત્તીસઃમાઓ
 નિયત્તણ' ચતુર્લિંગશત્તમાદ્ નિર્વર્તતે-અયમર્થઃ-ચતુર્થભક્તમેકોપવાસરૂપમાદિતઃ
 કૃત્વાનુલોમગત્યા પૂર્વોક્ત-ક્ષુલ્લકસિંહ નિષ્ક્રીડિતતપઃ ક્રમયત્ પોડશોપવાસરૂપ
 ચતુર્લિંગશત્તમપર્યન્ત કરોતિ પુનસ્તસ્માન્નિર્વર્તતે=પ્રત્યાર્વર્તતે, તદ્ યદા-ચતુર્લિંગશત્તમ

તદેવ જહા સુહાગ નવર ચોત્તીસઠમાઓ નિયત્તણ ણગાણ પરિવાડિણ
 કાલો ણગેણ સવચ્છરેણ ઊર્હિ માસેર્હિ અઢારસહિય અહોરત્તેર્હિ ય
 સમપ્પેહ) હે ભદત્ ! હમ લોગ મહાન્ સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મ
 કરના ચાહતે હે । હસકે ઘાદ વે સ્થવિર ભગવાન્ કી આજ્ઞા સે મહાબલ
 પ્રમુખ સાતોં હી અનગાર વ્રહ્મ સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મ કરને મેં
 પ્રવૃત્ત હો ગયે ।

યહ મહામિહનિષ્ક્રીડિત તપ મી ક્ષુલ્લકસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કી
 હી તરહ હોતા હૈ-પરન્તુ હસમે હતની વિશેષતા રહતી હૈ કિ હસ તપ
 કો કરને વાલા સયમી એક ઉપવાસ રૂપ ચતુર્થ ભક્ત કો સર્વ પ્રથમ
 કરતા હૈ ફિરવહ અનુલોમ ગતિ સે પૂર્વોક્ત ક્ષુલ્લકસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ
 કર્મ કો આરાધિત કરને કે ક્રમ કી તરહ સોલહ ઉપવાસ રૂપ ચતુર્લિંગ
 શત્તમ પર્યન્ત હસ તપ કો કરતા હૈ ।

ઘાદ મેં વહા સે લૌટતા હૈ-લૌટને કા ક્રમ હસ પ્રકાર હૈ-જબ યહ

(ઇચ્છામો ણ મતે ! મહાલય સીહનિક્કીલિય તદેવ જહા સુહાગ નવર
 ચોત્તીસઠમાઓ નિયત્તણ ણગાણ પરિવાડિણ કાલો ણગેણ સવચ્છરેણ ઊર્હિ માસેર્હિ
 અઢારસહિય અહોરત્તેર્હિ ય સમપ્પેહ)

હે ભદત્ ! અમે મહાન સિંહનિષ્ક્રીડિત તપ કર્મ કરવા ઇચ્છી
 એ છીએ ત્યાર બાદ સ્થવિર ભગવાનની આજ્ઞાથી મહાબલપ્રમુખ સાથે અન
 ગારો મહાન સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મમાં પ્રવૃત્ત થઈ ગયા

મહાસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની વિધિ પણ ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની
 વિધિની જેમજ હોય છે પણ તેના કરતા તેમાં એટલી વિશેષતા હોય છે
 કે આ તપને આચરનાર સયમી એક ઉપવાસ રૂપ ચતુર્થ ભક્તને સૌ પહેલા
 આચરે છે ત્યાર બાદ તે અનુલોમ ગતિથી પૂર્વે વર્ણવેલા ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રી
 ડિત તપ કર્મના આરાધન કરમની જેમજ સોળ ઉપવાસ રૂપ ચતુર્લિંગશત્તમ
 સુધી આ તપને કરે છે

કરણાનન્તર પ્રતિલોમગત્યા પ્રત્યાવૃત્તિકાલે મધ્યે પશ્ચદશોપવાસરૂપં દ્વાત્રિશ ભક્ત
કૃત્વા પુનઃ પોડશોપવાસરૂપ ચતુસ્ત્રિશત્તમ કરોતિ, તતશ્ચતુર્દશોપવાસરૂપ ત્રિશત્તમ
કૃત્વા દ્વાત્રિશ કરોતિ એવ પૂર્વોક્તક્રમેણ તતશ્ચતુર્થભક્તપર્યન્ત કરોતિ । इद
મહાસિંહનિષ્ક્રીડિતસ્ય તપસઃ પ્રથમપરિપાટી યન્ત્રત્—

૧	૨	૧	૩	૨	૪	૩	૫	૪	૬	૫	૭	૬	૮	૭	૯	૧૦	૯
૧	૨	૧	૩	૨	૪	૩	૫	૪	૬	૫	૭	૬	૮	૭	૯	૧૦	૯
૧૧	૧૦	૧૨	૧૧	૧૩	૧૨	૧૪	૧૩	૧૫	૧૪	૧૬							
૧૧	૧૦	૧૨	૧૧	૧૩	૧૨	૧૪	૧૩	૧૫	૧૪	૧૬	૧૫						

इमेऽङ्का उपवासना निवेशिताः । एवमेव द्वितीयतृतीय चतुर्थपरिपाटीना
प्रत्येक यन्त्र वो यम् ।

इह महासिंह निष्क્રીडिते तपस्येरुस्यां परिपाट्यामनुलोमप्रतिलोमतश्च^२ 'चतुर्थ-
पष्ठाष्टमादि त્રિશतमपर्यन्तानि चत्वारि चत्वारि ' દ્વાત્રિશાનિ ત્રીણિ, ' દ્વે ચતુ
સ્ત્રિશત્તમે ' ભવન્તિ ।

સોલહ ઉપવાસ કર ચુકતા હૈ—તવ પ્રતિલોમ ગતિ સે પ્રત્યાવૃત્તિ કાલ
મે બીચ મે યહ ૧૫ ઉપવાસરૂપ દ્વાત્રિશત્ ભક્ત કરતા હૈ—પુનઃ સોલહ
ઉપવાસરૂપ ચતુસ્ત્રિશત્તમ ભક્ત કરતા હૈ । ફિર ચતુર્દશ ઉપવાસ રૂપ
ત્રીસ ભક્ત કરતા હૈ—इन्हें कर के फिर १५ उपवास करता है । इस
પ્રકાર પૂર્વોક્ત ક્રમ સે યહ ચતુર્થભક્ત પર્યન્ત તપસ્યા કરતા હૈ । इस
મહાસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કા પ્રથમ પરિપાટીયત્ર ઉપર સસ્કૃત ટીકા
મેં દિયા હૈ । इस प्रकार समझ लेवें ।

यत्र मे जो अरु दिये हैवे अक उपवासों के हैं । इसी तरह द्वितीय
तृतीय और चतुर्थ परिपाटीयो के प्रत्येक के अक जानना चाहिये । इस
महासिंह निष्क्रीडित तप मे एक परिपाटी मे अनुलोम प्रतिलोम की

ત્યાર બાદ તે ત્યાથી પાછો ફરે છે પાછા ફરવાનો ક્રમ આ પ્રમાણે
છે જ્યાં તે સોળ ઉપવાસો કરી લે છે ત્યારે પ્રતિલોમ ગતિથી પ્રત્યાવૃત્તિ
કાળમા વચ્ચે પદર ઉપવાસ ૩૫ દ્વાત્રિશત ભક્ત કરે છે ફરીતે ચોળ ઉપવાસ
૩૫ ચતુસ્ત્રિશત્તમ ભક્ત કરે છે ગ્યાર બાદ ચતુર્દશ ઉપવાસ ૩૫ ત્રીશ ભક્ત
કરે છે અને ત્યાર પછી પદર ઉપવાસ કરે છે આ રીતે પૂર્વોક્ત ક્રમથી તે
ચતુર્થ ભક્ત પર્યન્ત તપસ્યા કરે છે મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપનુ પ્રથમ પરિ-
પાટી યત્ર ઉપર સસ્કૃત ટીકામા બતાવ્યા પ્રમાણે સમજ લેવું

આ અકો ઉપવાસો ના છે આ પ્રમાણે જ દરેક બીજી, ત્રીજી અને
ચોથી પરિપાટીઓના અકો જાણવા બેઠાએ મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપમા એક
પરિપાટીમા અનુલોમ પ્રતિલોમની અપેક્ષા ચતુર્થ, પચ્છ, અષ્ટમ, વગેરેથી

इह प्रत्येकपरिपाटया मनुलोमप्रतिलोमत सर्वाणि तपोदिनानि सकलनया ४९७सप्तनवत्यधिकानि चत्वारि शतानि, तथा पारणदिनानि-६१एकाधिक षष्ठिम-
ख्यकानि भवन्ति, एषामुभयेषामाकलनेन यावान् कालो भवति, त प्रदर्शयितु-
माह 'एगाए परिवाडीए' इत्यादि। एरुस्याः परिपाटयाः कालः-एकेन सवत्सरेण
पद्भिर्मसैरष्टादशभिश्चाहोरात्रै 'समप्पेइ' समाप्यते सपूर्णं भवति। 'सव्ववि'
सर्मपि अशेषमपि चतस्रभिः परिपाटीभिर्युक्तमित्यर्थ, 'सीहनिक्कीलिय' सिंह
निष्क्रीडित तपः- पद्भिर्वर्षेर्द्धाभ्या च मासाभ्या द्वादशभिश्चाहोरात्रै पारण
दिनतैः 'समप्पेइ' समाप्यते= सपूर्णं भवति-यथामूत्र यावदाराधित भवतीत्यर्थः

अपेक्षा चतुर्थ, पष्ठ, अष्टम, आदि से लेकर त्रिशत्तम-१४ उपवासो-तक
सब उपवास चार चार हो जाते हैं। अर्थात् प्रथम भक्त ४, चतुर्थ
भक्त ४ पष्ठ भक्त ४ अष्टम भक्त ४, इत्यादि १४ उपवासों तक जानना
चाहिये। १५ उपवास ३, और १६ उपवास २ हो जाते हैं।

यहां प्रत्येक परिपाटी में अनुलोम प्रतिलोम विधि के अनुसार
समस्त तपस्या के दिनों की संख्या मिलाकर ४९७ होती है। पारणा के
दिनों की संख्या ६१। इन दोनों के सकलन से जितना समय होता
है-सूत्रकार उसे "एगाए परिवाडीए" इत्यादि पदों द्वारा प्रकट करते
हैं-वे कहते हैं कि एक परिपाटी का काल एक वर्ष ६ मास और १८ रात
दिनों में समाप्त होता है। (सव्व वि सीहनिक्कीलिय छहिं वासेहिं दोहिं
मासेहिं बारसहिय अहोरत्ते हिं य समप्पेइ) और समस्त यह सिंह नि
ष्क्रीडित तप छह वर्ष दो मास एवं १२ दिन रात में समाप्त होता है।

भाડીને ત્રિશત્તમ-૧૪ ઉપવાસો-સુધી બધા ઉપવાસો ચારચાર હોય છે એટલે
કે પ્રથમ ભક્ત ૪ ચતુર્થ ભક્ત ૪, પઠ્ઠ ભક્ત ૪, અષ્ટમ ભક્ત ૪, વગેરે
૧૪ ઉપવાસો સુધી જાણવું જોઈએ ૧૫ ઉપવાસ ૩ અને ૧૬ ઉપવાસ ૨
થઈ જાય છે

આ પ્રમાણે અહીં દરેકે દરેક પરિપાટિમા અનુલોમ પ્રતિલોમ વિધિ
મુજબ તપસ્યાના બધા દિવસોની જાણત્રી કરીએ તો ૪૯૭ થાય છે પારણાના
દિવસોની સંખ્યા ૬૧ હોય છે આ બંનેના સરવાળાના જેટલા દિવસો થાય
છે સૂત્રકાર 'એગાએ પરિવાડીએ' વગેરે પદો દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે સૂત્રકાર
કહે છે કે એક પરિપાટીનો કાળ એક વર્ષ છ માસ અને અઠાર દિવસોમા
પૂરો થાય છે (સવ્વ વિ સીહનિક્કીલિય છહિં વાસેહિં દોહિં માસેહિં વારસહિય
અહોરત્તેહિય સમપ્પેઇ અને આ સિંહ નિષ્ક્રીયડિત તપને સપૂર્ણ પણે પૂરૂ થયામા
છ વર્ષ બે માસ અને બાર દિવસ રાત જેટલો વખત લાગે છે

તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ તે મહાવલપ્રમુખાઃ સપ્તાનગારાઃ ' મહાલય ' મહત્, સિંહ
નિષ્ક્રીડિત યથાસૂત્ર-સૂત્રાનતિક્રમેણ યાવદ્ આજ્ઞયા આરાધ્ય યત્રૈવ સ્થવિરા
ભગવન્તસ્તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ ઉપાગત્ય સ્થવિરાન્ ભગવતો વન્દન્તે નમસ્યન્તિ,
વન્દિત્વા નત્વા વહૂનિ ગ્રહુવિધાનિ ચતુર્થ યાવદ્ ચતુર્થપષ્ઠાઽષ્ટમાદીનિ તપાસિ
કુર્વન્તો વિહરન્તિ. ॥ સૂ૦ ૭ ॥

મૂલમ-તણેણં તે મહવ્વલપામોક્ષા સત્ત અણગારા તેણં
ઓરાલેણં સુક્કા મુક્કા જહા સ્વદઓ નવર થેરે આપુચ્છિત્તા
ચારુપવ્વય દુરુહતિ, દુરુહિત્તા જાવ દોમાસિયાણ સલેહણાણ
સવીસ મત્તસય ચડરાસીઈ વાસસયસહસ્સાઈ સામણ્ણપરિયાગં
પાડણંતિ, પાડણિત્તા ચુલસીઈ પુવ્વસયસહસ્સાઈ સવ્વાડયં
પાલડિત્તા જયતે વિમાણે દેવત્તાણ ઉવવન્ના । તત્થ ણં અત્થેગ-
ડયાણં દેવાણં વત્તસિ સાગરોવમાઈ ઠિઈ તત્થણં મહવ્વલ-

(તણેણ તે મહવ્વલપામોક્ષા સત્ત અણગારા મહાલય સિંહ નિષ્ક્રી-
લિય અહાસુત્ત જાવ આરાહેત્તા જેણેવ થેરે ભગવતે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ)
ઇસ પ્રકાર વે મહાવલ પ્રમુખ સાતો હી અનગાર ઇમ મહાસિંહ નિષ્ક્રી-
ડિત તપ કો યથા સૂત્ર યાવત્ આરાધિત કરકે જહા સ્થવિર ભગવત થે
વહા આયે । (ઉવાગચ્છિત્તા થેરે ભગવતે વદતિ નમસતિ, વદિત્તા નમ-
સિત્તા, વહૂણિ ચડત્થ જાવ વિહરતિ) વહા આકર ઉન્હો ને સ્થવિર
ભગવતો કો વદના કી નમસ્કાર કિયા-ઔર વદના નમસ્કાર કરકે
ફિર વે ચતુર્થ પષ્ટ અષ્ટમાદિ તપો કો કરતે હુણ વિહાર કરને લગે ॥સૂ૦ ૭॥

(તણેણ તે મહવ્વલપામોક્ષા સત્ત અણગારા મહાલય સિંહનિષ્ક્રીલિય અહા
સુત્ત જાવ આરાહેત્તા જેણેવ થેરે ભગવતે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ)

આ રીતે યથાસૂત્ર અને યાવત્ યથાવિધિ મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપને આરા-
ધીને મહાવલ પ્રમુખ સાતે અનગારો જ્યા સ્થવિર ભગવત હતા ત્યા આવ્યા

(ઉવાગચ્છિત્તા થેરે ભગવતે વદતિ નમસતિ, વદિત્તા નમસિત્તા, વહૂણિ
ચડત્થ જાવ વિહરતિ)

ત્યા જઈને તેમણે સ્થવિર ભગવતો ને વદન અને નમસ્કાર કર્યા, અને
વદન તેમજ નમસ્કાર કરીને તેઓ ત્યાર બાદ ચતુર્થ પષ્ટ અષ્ટમ વગેરે તપોને

વજ્રાણં છળં દેવાણં દેસૂનાઈં વત્તીસં સાગરોવમાઈં ઠિઈં મહ-
વ્વલસસ દેવસસ પહિપુન્નાઈં વત્તીસ સાગરોવમાઈં ઠિઈં ॥સૂ૦૮॥

ટીકા—‘તણ તે’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु ते महाबलप्रमुखाः सप्तानगा
रास्तेनोदारेण इहलोकाद्याशसारहितत्वेन प्रधानेन तपः कर्मणा ‘ सुक्का ’ शुष्काः
शुष्कशरीराः रक्तमासशोषणात् ‘ भुक्खा ’ उभुक्षिताः बहुतपस्यित्वात् । ‘ जहा
खदओ ’ यथा स्कन्दकः स्कन्दकनामकोऽनगारः भगवतीयूत्रे द्वतीयशतके प्रथ
मोद्देशके वर्णितस्तथा सजाता इत्यर्थः, नवर-एतावान् विशेषः—‘ थेरे ’ स्थविरान्
स्कन्दको महावीरमापृष्टवान् एते तु स्थविरानित्यर्थः आपृच्छय ‘ चारुपव्वय ’

‘ તણ તે મહાબલપામોક્ખા ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तणं) इसके बाद (ते महाबल पामोक्खा सत्त अणगारा)
वे महाबल प्रमुख सातो ही अनगार (तेण ओरालेण सुक्का भुक्खा
जहा खदओ) भगवती सूत्र के द्वितीय शतक के प्रथम उद्देशक में
वर्णित स्कन्दक मुनि की तरह उसे इहलोक परलोक आदि की आशसा
से रहित होने के कारण प्रधान तप से शुष्क शरीर एवं बुभुक्षित
(भूख युक्त) हो गये । (नवर थेरे आपुच्छित्ता चारुपव्वय दुरुहति’
दुरुहित्ता जाव दो मासियाए सलेहणाए सवीस भत्तसय चउरासीइ
वाससयसहस्साइ सामण्णपरियाग पाउणति) किन्तु स्कन्दक मुनि की
अपेक्षा इन सातों अनगारों में यह विशेषता हुई कि स्कन्दक मुनि ने
महावीर प्रभु से आज्ञा ली और इन्होंने स्थविर भगवतो से आज्ञा ली

‘ તણ તે મહાબલ પામોક્ખા સત્ત અણગારા ’ इत्यादि

टीकार्थ—(तण) त्याग्याइ (महाबलपामोक्खा सत्त अणगारा) महाबल
प्रमुख साते अनगारे। (तेण ओरालेण सुक्का भुक्खा जहा खदओ) भगवती
सूत्रना भीज्ज शतनकना पडेल। उद्देशकमा वर्णित स्कन्दक मुनिनी जेम तेओ
छल्लोकां अने परलोकां वगेरेनी अरासा (छिछा) रहित होवा अदल प्रधान
तपथी शुष्क शरीर अने बुभुक्षित (भूभ्या) थछ गया

(नवर थेरे आपुच्छित्ता चारु पव्वय दुरुहति, दुरुहित्ता जाव दो मासियाए
सलेहणाए सवीस भत्तसय च उरासीइ वाससय सहस्साइ सामण्णपरियार्ग पाउणति)

स्कन्दक मुनिओ न्यारे लगवान महावीर पासे आज्ञा भेणवी હતી ત્યારે
ઓ સાતે અનગારોઓ ભગવત સ્થવિરો પાસેથી આજ્ઞા ભેળવી સ્કન્દમુની કરતા
એમના વિશે આટલું જ વધારે બાબુ બોધએ આ પ્રમાણે સાતે અનગારો

चारुपर्वत चारुनामक पर्वत 'दुरुहति' दूरोहन्ति=आरोहन्ति, 'दुरुहिता' दूरह्य=आरुह्य यावद् पृथिवीशिलापट्टक प्रमार्ज्य पादपोषगमन स्वीकृत्य द्विमासिभ्यास-लेखनया सर्वशक्तिभक्तशत 'चउरासीइ वाससयसहस्साइ' चतुरशीर्ति वर्षशतसह-स्राणि=चतुरशीतिलक्षवर्षाणि, श्रामण्यपर्याय=चारित्रपर्याय पालयन्ति, पालयित्वा चतुरशीर्ति पूर्वशतसहस्राणि=चतुरशीतिलक्षपूर्वाणि सर्वायुः पालयित्वा जयन्ते विमाने देवतयोपपन्नाः=देवत्वेनोपपातमुत्पत्तिं प्राप्ताः ।

तत्र खलु अस्त्येककाना देवाना द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि यावत् स्थितिः । तत्र खलु महावलवर्जाना पण्णा देवाना देशोनानि द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः । महावलम्य देवस्य प्रतिपूर्णानि द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिर्जाता ॥ सू० ८ ॥

इस तरह ये सानों ही अनगर भगवत स्थविरो से आज्ञा लेकर चारु नाम के पर्वत पर पहुँचे-वहा पहुँच कर उन्होंने ने वहाँ के शिलापट्टक की प्रमार्जमा की-बाद में पादपोषगमन सधारा धारण कर लिया । दो मास की सलेखना से १२० भक्तों का लेखन कर उन्होंने ने ८४ लाख वर्ष तक श्रामण्य पर्याय का पालक किया ।

इस तरह अपनी ८४ लाख पूर्व की समस्त आयु समाप्त कर अन्त में देह का परित्याग कर वे पाँच अनुत्तर विमान के अन्दर जयन्त विमान में (तत्थण अत्थे गइयाण देवाण वत्तीस सागरोवमाइ० ठिई तत्थण महवलवज्जाण उण्ह देवाण देसूणाइ वत्तीस सागरोवमा इ ठिई महवलस्स देवस्स पडिपुन्नाइ वत्तीस सागरोवमाइ ठिई) वहाँ कितने क देवों की वत्तीस सागर प्रमाण स्थिति है सो महावल को छोड़कर छह देवों की स्थिति कुछ कम वत्तीस सागर की हुई और महावल की स्थिति पूर्ण वत्तीस सागर की हुई । " सूत्र ९ "

भगवत स्थविरो नी आज्ञा प्राप्त करीने चारु नामे पर्वत उपर पहुँच्या त्या पहुँचीने तेजोअे पादपोषगमन सधारे धारणु कर्ये

आ प्रमाणे पोताने ८४ लाख पूर्वतु संपूर्ण आयुष्य पूरु करीने अन्ते देह छोडीने तेजो पाय अनुत्तर विमानमा जयन्त नामना विमानमा देवता पर्यायथी जन्म पाभ्या

(तत्थण अत्थेगइयाण देवाण वत्तीस सागरोवमाइ० ठिई-तत्थण महवल वज्जाण उण्ह देवाण देसूणाइ वत्तीस सागरोवमाइ ठिई)

त्यना उटलाइ देवानी अत्रीश सागर प्रमाण स्थिति ठे मडावलने पाइ उरता जीन ७ देवानी स्थिति अत्रीश सागर प्रमाणमा थोडी ओछी थय अने मडावलनी स्थिति पूरी अत्रीश सागर जेटली थय ॥ सूत्र " ८ "

मूलम्—तएणं ते महव्वलवज्जा छप्पिय देवा ताओ देव-
लोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं
चइत्ता इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे विसुद्धपिइमाइवसेसु राय-
कुलेसु पत्तेय पत्तेयं कुमारत्ताए पच्चायायासी, त जहा पडिबुद्धी
इक्खागराया, चदच्छाए अगराया, सखे कासिराया, रुप्पी कुणा-
लाहीवई, अदीणसत्तुकुराया, जितसत्तु पच्चालाहिवई॥ सू०९ ॥

टीका—‘तएण ते’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर ते महाबलवज्याः पडपि देवास्त
स्माद् देवल्लोकाद् जयन्ताद् विमानाद् । ‘आउक्खएण’ आयुः क्षयेण—देवसम्बन्धिन
आयुःकर्मदलिकनिर्जरणेन, देवसम्बन्ध्यायुः क्षयेण ‘भवक्खए’ भवक्षयेण भवनि
बन्धनभूतकर्मणा गत्यादीना निर्जरण ‘ठिइक्खएणं’ स्थितिक्षयेण=देवसम्बन्धि
स्थितिक्षयेण तेनानन्तर चय=देवशरीर त्यक्त्वा इहेव जम्बूद्वीपे नाम्नि द्वीपे

‘तएण ते महव्वलवज्जा छप्पियदेवा’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (ते महव्वल वज्जिया) महाबल के
सिवाय वे (छप्पिय देवा) छोटे देव (ताओ देवल्लोगाओ आउक्खएण
भवक्खएण ठिइक्खएण) उस देवलोक से जयन्त विमान से—देवलोक
सबन्धी आयु कर्म के दलिको की निर्जना हो जाने से अर्थात् देव पर्याय
सबन्धी आयु के क्षय हो जाने से भव के कारण भूत गत्यादि कों की
निर्जना हो जाने से स्थिति के क्षय हो जाने से (अणतर) उसी समय
(चय चइत्ता) देव शरीर को छोड़कर (इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे
वासे) इसी जंबू द्वीप नाम के द्वीप में, भारतवर्ष में—भरत क्षेत्र में—

‘तएण ते महव्वल वज्जा छप्पिय देवा’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्यागना (ते महव्वल वज्जिया) महाबल सिवाय ते
(छप्पियदेवा) छोटे देव (ताओ देवल्लोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण)
ते देवलोकना जयन्त विमानथी देवलोक सबन्धी आयु कर्मना दलिकोनी
निर्जना थछ जवाथी ओठले ते देव पर्याय सबन्धी आयुक्ख क्षय थवाथी लवना
कारण भूत गतिवज्जेनी निर्जना थछ जवाथी, स्थितिना क्षय होवाथी
(अणतर) ते समयेज (चयचइत्ता) देव शरीरने छोडीने (इहेव जंबूदीवे दीवे
भारहे वासे) जंबूद्वीप नामना ओज द्वीपमा—भारत वर्षमा—भरत क्षेत्रमा

(मध्यजम्बूद्वीपे) भारते वर्षे भरत-क्षेत्रे, विशुद्धपितृमातृवशेषु राजकुलेषु प्रत्येक २ कुमारतया ' पञ्चायाया होत्या प्रत्युत्पन्ना अभूवन् तद्यथा-१. प्रतिबुद्धिः-इक्ष्वाकुराज प्रथमो जीव प्रतिबुद्धि नामकः कोशलदेशाधिपतिः । यत्रदेशे-अयोध्यानगरी २ चन्द्रच्छायः-अङ्गराजः द्वितीयो-वरणि जीवः चन्द्रच्छायना-माङ्ग देशाधिपतिः यत्र चम्पानगरी ३ शङ्ख काशिराजः तृतीयोऽभिचन्द्रजीवः शङ्खनामा-काशिदेशाधिपतिः यत्र वाराणसी नगरी । ४ रुक्मी-कुणालाधिपतिः चतुर्थः पूरण जीवः-रुक्मीनामकः कुणालदेशाधिपति यत्र श्रावस्ती नगरी । ५ अदीनशत्रुः-कुरुराजः, पञ्चमो वसु जीवोऽदीनशत्रुनामकः कुरुदेशाधिपतिः । यत्र

(विशुद्धपितृमातृवशेषु) विशुद्ध माता पिता के वश वाले राज कुलों में (पत्तय २) पृथक् २ (कुमारत्ताण पञ्चायायासी) पुत्र रूप से उत्पन्न हुए । (तजहा) उनमें (पडिबुद्धी इक्ष्वागराया चन्द्रच्छाण अगराया सखे कासि राया, रुक्मी कुणालाहिवह, अदीणसत्त कुरु राया, जितसत्त पञ्चालाहिवह) प्रथम जो अचल का जीव या वह कोशल देश का अधिपति हुआ, जिस में अयोध्या नगरी है-इसका नाम वहा प्रतिबुद्ध हुआ । दूसरा जिसका नाम धरण या वह चन्द्र छाया नाम का अङ्ग देश का अधिपति हुआ । इस अग देश में चपा नगरी है । तीसरा जो अभिचन्द्र का जीव या वह काशी देश का राजा हुआ । वहा इसका नाम शङ्ख हुआ । हम काशी देश में जनारस नाम की नगरी है । चौथा जो पूरण का जीव या वह कुणाल देश का अधिपति हुआ उसका वहा नाम रुक्मी या । इस कुणाल देश में श्रावस्ती नगरी है । पाचवा जो

“विशुद्धपितृमातृवशेषु” विशुद्ध मातापिताना वशवागा राजकुलोभा (पत्तय २) जुद्धा जुद्धा (कुमारत्ताण पञ्चायायासी) पुत्र रूपे जन्म पाभ्या (तजहा) आ जहाभा

(पडिबुद्ध इक्ष्वागराया चन्द्रच्छाण अगराया सखे कासिराया रुक्मी कुणालाहिवह अदीणसत्त कुरुराया, जितसत्त पञ्चालाहिवह)

पडेले अचलने अव कोशल देशने अधिपति थये। कोशल देशनु पाट नगर अयोध्या नगरी छुतु अचलने अव त्या प्रतिबुद्ध नामे पडायो।

भीने धरण अग देशने अधिपति थये। तेनु नाम चन्द्रछाय छुतु भीने अलिखद्रने अव काशी देशने राज थये। ते त्या शङ्ख नामे प्रसिद्धि पाभ्यो। आ काशी देशमा जनारमनामे नगरी छे थोथा पूरणने अव कुणाल देशने अधिपति थये। त्या तेनु नाम रुक्मी छुतु आ कुणालदेशमा

દેશે-હસ્તિનાગપુરમ્ । ૨. જિનશત્રુ પાશ્ચાલ્લાધિપતિઃ, પૃષ્ઠો વૈશ્રવણ જીવો જિત શત્રુનામકઃ પાશ્ચાલદેશાધિપતિઃ, યત્રદેશે કામ્પિલ્ય નગરમ્ । એવ પઢપિ પૃથક્ ૨ સ્થાનેષુ રાજાનો જાતાઃ ॥ સૂ૦ ૯ ॥

મૂલમ્-તર્ણાં સે મહઽવલે દેવે તીર્હિ ણાળેર્હિ સમગ્ગે ઉચ્ચ-
ઠ્ઠાણઢિણ્ણસુ ગહેસુ સોમાસુ દિસાસુ વિતિમિરાસુ વિસુદ્ધાસુ
જહ્ણસુ સડળેસુ પયાહિણાણુકૂલસિ ભૂમિસપ્પિસિ મારુયસિ
પવાયસિ નિપ્પક્કસસ્સમેહ્ણીયસિ કાલંસિ પમુદ્ધયપક્કીલિણ્ણસુ
જળવણ્ણસુ અદ્ધરત્તકાલસમયસિ અસ્સિણીણવ્વત્તેણ જોગમુવા
ગણા જે સે હેમતાણ ચડત્થે માસે અટ્ટમે પક્કલે પગ્ગુણસુદ્ધે
તસ્સ ણં પગ્ગુણસુદ્ધસ્સચડત્થિ પક્કલેણ જયતાઓ વિમાણાઓ
વત્તીસ સાગરોવમઢિર્ઢ્યાઓ અણતર ચય ચડત્તા ઇહેવ જબૂદ્ધીવે
દીવે મારહે વાસે મિહિલાણ રાયહાળીણ કુમ્ભગસ્સ રત્તો પમા-
વર્ઢ્ણ દેવીણ કુચ્છિસિ આહારવક્કંતીણ સરીરવક્કતીણ મવવક્ક
તીણ ગબ્ભત્તાણ વક્કતે તરયણિ ચ ણંચોદ્ધસમહાસુમિણાવન્નઓ
મત્તારકહણ સુમિણપાઢગપુચ્છા જાવ વિહરઢ્ ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

વસુ કા જીવ થા વહ કુરુ દેશ કા અધિપતિ હુઆ-વહા હસકા નામ
અદીન શત્રુ થા । કુરુ દેશ મેં હસ્તિનાગ પુર હૈ । તથા છઠા જો વૈશ્રવણ
કા જીવ થા પાશ્ચાલ દેશ કા અધિપતિ હુઆ-હસકા વહા નામ જિત
શત્રુ પડા થા । હસ મે કપિલા નામ કી નગરી હૈ ।

હસ તરહ યે છઠો પૃથક્ ૨ સ્થાનો મે રાજા હુણ । સૂત્ર “ ૯ ”

આવસ્તી નગરી છે પાચમે વસુનો જીવ કુરુદેશનો અધિપતિ થયો તેનુનામ
અદીન શત્રુ હતુ કુરુ દેશમા હસ્તિનાપુર નગર છે તેમજ છઠો વૈશ્રવણનો
જીવ પાચાલ દેશનો અધિપતિ થયો તેનું નામ જિત શત્રુ હતુ પાચલ દેશમા
કપિલા નામે નગરી છે

આ પ્રમાણે તેઆ છઠો જુદા જુદા દેશોમા રાજ્ય પદે સુશોભિત
થયા ॥ સૂત્ર “ ૯ ” ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं स महाबलो देवस्त्रिभिर्ज्ञानैः ‘समग्गे’ समग्रं सयुक्तः, ‘उच्चट्ठाणट्टिएसु’ उच्चस्थानस्थितेषु ग्रहेषु सूर्यादिषु सौम्यासु दिग्दाहाद्युत्पातरहितासु ‘दिसासु’=दिक्षु वितिमिरासु तीर्थकरगर्भावासप्रभावाद् व्यपगतान्धकारासु विशुद्धासु=झझावातरजः कणादि रहितत्वेन निर्मलासु ‘जइएसु’ जापिकेषु राजदीना विजयसूचकेषु ‘सउणेषु’ शकुनेषु काकरुतोदिषु ‘पर्याट्ठाणुकूलसि’ प्रदक्षिणानुकूले प्रदक्षिणावर्तत्वात् प्रदक्षिणः, शुभावह सुरभिशीतमन्दत्वादनुकूलश्च तस्मिन् ‘भूमिसर्पिसि’ भूमिसर्पिणी=भूमौ प्रसरणशीले मारुते वायौ, ‘पवायसि’ प्रवाते वातु प्रवृत्ते ‘निप्फन्नसस्स मेइणीयसि’ निष्पन्नसस्यमेदिनीके निष्पन्नसस्या मेदिनी भूमिर्यस्मिन् तथाभूते काले ‘पमुडयपक्कीलिएसु’ प्रमुदितप्रक्रीडितेषु जनपदेषु अर्धरात्रिकालसमये अश्विनीनक्षत्रेण ‘जोग’ योग चन्द्रयोगम्, उपागतेन प्राप्तेन, यःस=प्रसिद्ध ‘हे मताण’ हेमन्तानां मार्गशीर्षादि फाल्गुनान्तानां शीतकालमासानां मध्ये चतुर्थे मासः, अष्टमः पक्षः कृष्णादि मासस्य शास्त्रसंयमत्वाद्दृष्टमत्वं पक्षस्येति भावः फाल्गुनशुद्धः=फाल्गुनस्य शुद्धः शुक्लः द्वितीयपक्षोऽस्तीत्यर्थः । तस्य फाल्गुनशुद्धस्य ‘चउत्थिपक्खे’ चउर्थीपक्षे फाल्गुनशुद्धस्य पक्षस्य या चतुर्थी तिथिस्तस्याः पक्षः पार्श्वोऽर्धरात्रिरिति भावः, तत्र—‘ण’ इति याक्वालङ्कारे, जयन्ताद् विमानाद् द्वात्रिंशत्सागरोपमस्थितिकादनन्तरं चय=देवसम्बन्धिं शरीरं त्यक्त्वा—इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे=मध्यजम्बूद्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे मिथिलाया राजधान्या

‘तएण से महब्बले’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से महब्बले देवे) वह महाबल का जीव देव (तीहिं णाणेहिं समग्गे) भूति ज्ञान श्रुतज्ञान और अवधि ज्ञान इन तीन ज्ञानों का धारी हो कर (अणत्तर) उन छहों के बाद अपनी स्थिति पूर्ण कर (जयताओ विमाणाओ) उस जयत विमान से (चइत्ता) चल कर (इहेव जम्बूद्वीवे दीवे) इसी जम्बू द्वीप नाम के द्वीप में (भार

‘तएण से महब्बले’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थारभाह “से महब्बले देवे” देव महाबलानो एव “तीहिं णाणेहिं समग्गे” भूतिज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान आ त्रये ज्ञानोने धारण करनार थरने “अणत्तर” ते छयेना पछी पोतानी स्थिति पूरी करीने “जयताओ विमाणाओ” जयत विमानथी “चइत्ता” आक्षीने “इहेव जम्बूद्वीवे दीवे” जम्बू द्वीप नामना आण द्वीपमा (भारदे वासे)

‘कुभगस्स’ कुम्भकस्य कुम्भकनामकस्य राज्ञः प्रभावत्याः=प्रभावतीनाम्न्या देव्यः ‘कुच्छिमि’ कुक्षी ‘आहारवक्कतीए’ आहारव्युत्क्रान्त्या=आहारपरिवर्तनेन मनुष्योचिताहारग्रहणेनेत्यर्थः, ‘सरीरवक्कतीए’ शरीरव्युत्क्रान्त्या=देवशरीरपरिवर्तनपूर्वकमनुष्यशरीरग्रहणेनेत्यर्थः ‘भववक्कतीए’ भवव्युत्क्रान्त्या=देवभवविहाय मनुष्यभवाग्रहणेन ‘गव्वमत्ताए वक्कते’ गर्भतया व्युत्क्रान्तः=गर्भरूपेण समुत्पन्नः । तस्या रजन्यां च खलु चतुर्दश महास्वभाः प्रभावती देव्या दृष्ट ।

हे चासे) भरत क्षेत्र मे (मिहिलाए रायहाणीण) मिथिला राजधानी में (कुभगस्स रन्नो प्रभावहाण देवीण कुच्छिसि) कुम्भक राजाकी प्रभावती देवी की कुक्षि मे (आहार वक्कतीण) आहार के परिवर्तन से-मनुष्योचित आहार के ग्रहण से, (सरीरवक्कतीण) शरीर की व्युत्क्रान्ति से देव शरीर के परिवर्तन पूर्वक मनुष्य शरीर के ग्रहण से, (भव वक्कतीए) भव की व्युत्क्रान्ति से देव भव को छोड़कर मनुष्य भव के ग्रहण से (गव्वमत्ताए वक्कते) गर्भरूप से उत्पन्न हुए ।

जब यह प्रभावती की कुक्षी मे गर्भ रूप से उत्पन्न हुए तब (गहेसु उच्चट्टाणट्टिणसु) सूर्यादिग्रह उच्चस्थान पर स्थित थे । (दिसासु सोमासु) चारों दिशाये दिग्दाह आदि उपद्रवों से रहित थी (विति मिरासु विसुद्धासु) तीर्थंकर के गर्भावाम के प्रभाव से वे अन्धकार रहित बन गई थीं एवं झझावात रजकण आदि से रहित हो कर निर्मल हो गई थी ।

भरत क्षेत्रभा ‘मिहिलाए रायहाणीए’ मिथिला राजधानीभा कुभगस्सरन्नो प्रभावहाए देवीए कुच्छिसि ” कुलक राजनी प्रभावती देवीना उदरभा “आहार वक्कतीए ” आहारना परिवर्तनथी मानवोचित आहारना ग्रहणथी “ सरीर वक्कतीए ” शरीरनी व्युत्क्रान्तिथी ओटले के देव शरीरना परिवर्तन तेमज मनुष्य शरीरना ग्रहणथी “ भववक्कतीए ” लवनी व्युत्क्रान्तिथी देव लवने त्यजने मनुष्य लवने ग्रहण करवानी आपेक्षाथी “ गव्वमत्ताए वक्कते ” गर्भ रूपे जन्म पाव्या

ज्यारे तेओ प्रभावतीना उदरभा गर्भरूपे अवतयो त्यारे “ गहेसु उच्चट्टाण ट्टिणसु ” सूर्य वगेरे अडे उच्च स्थाने डता दिसासु सोमासु ज्यारे दिशाओ दिग्दाह वगेरे उपद्रवो वगरनी डती “ वितिमिरासु विसुद्धासु ” तीर्थंकर ना गर्भवासना प्रभावथी दिशाओ प्रकाश अकृत तेमज अजानिद रजकण वगेरेथी रहित थधने स्वच्छ बनी गर्भ

ઉસ સમય (સડળે સુ જહણસુ) કાક આદિ પક્ષી, રાજા આદિ કે વિજય સૂચક શબ્દ બોલ રહે થે । (મારુયસિ) હવા ખી (પયાણુ કૂલસિ) પ્રદક્ષિણાવર્ત હો કર (પવાયસિ) વહ રહી થી । સુરખી ઓર શીતલ મન્દ હોને કે કારણ વહ અનુકૂલ થી । (ભૂમિ સપ્પિસિ) ભૂમિ કા સ્પર્શ વહ કર રહી થી । (કાલસિ) વહ સમય એસા થા કિ જિસમે (નિપ્પન્નસસ્સમેહણીયસિ) નિપ્પન્ન સસ્ય સે મેદિની આચ્છાદિતહરી ભરી બની હુઈ થી (જળવણ સુ) જન પદ ખી (પમુહયપક્કીલીણસુ) હર્ષ સે હર્ષિત બને હુણ થે ઓર વિવિધ પ્રકાર કી ક્રીડાઓ મેં રત થે- (અદ્ધરત્તકાલસમયસિ) યહ સમય અર્ધ રાત્રિ કા થા । (અસ્સિણી ણક્કવત્તેણ જોગમુવગણ) હસ મેં અશ્વિની નક્ષત્ર કા ચન્દ્ર કે સાથ યોગ હો રહા થા (જે સે હેમતાણ ચડત્થે માસે અદ્ધમે પક્કે ફગ્ગુણ સુદ્ધે) યહ અર્ધ રાત્રિ કા સમય ફાલગુન માસ કે શુક્લ પક્ષ કા થા । યહ માસ હેમત કાલ કે માસો મેં ચોથા માસ તથા ૮ વાં પક્ષ હૈ । (તસ્સ ણ ફગ્ગુણસુદ્ધસ્સ ચડત્થિ પક્કેણ) એસી ઉસ ફાલ્ગુન શુક્લ ચોથ કી અર્ધરાત્રિ કે સમય મેં વે મહાબલ દેવ અપની ૩૨ સાગર કી સ્થિતિ પૂર્ણ કરકે ઉસ જયત નામક વિમાન સે ચવ કર પ્રભાવતી દેવી

તે વખતે (સડળેસુ જહણસુ) કાગડા વગેરે પક્ષીઓ રાજા વગેરેના માટે વિજયને સૂચવનારા શબ્દો ઉચ્ચારી રહ્યા હતા । (મારુયસિ) પવન પણ (પયાણુકૂલસિ) પ્રદક્ષિણાવર્ત થઈને (પવાયસી) વાતો હતો । શીતળ મન્દ અને સુગંધ યુક્ત પવન અનુકૂળ લાગતો હતો । ‘ ભૂમિસપ્પિસિ ’ તે પૃથ્વીને સ્પર્શ કરતા વાતો હતો હતો । ‘ કાલસિ ’ આવો સુખદ સમય હતો કે જેમા (નિપ્પન્નસસ્સમેહણિયસિ) નિપ્પન્ન ધાનથી મેહિની ‘ પૃથ્વી ’ લીલાઝમ આવ રણ થી ઢકાઈ રહી હતી । ‘ જળવણસુ ’ જનપદ પણ ‘ પમુહય પક્કીલીણસુ ’ હર્ષમા તરબોળ થઈ રહ્યું હતું અને બતબતની ક્રીડાઓમા મસ્ત હતું । ‘ અદ્ધરત્તકાલસમયસિ ’ અડધી રાતનો વખત હતો । ‘ અસ્સિણીણક્કવત્તેણ જોગમુવગણ ’ અશ્વિની નક્ષત્રનો ચન્દ્રની સાથે યોગ થઈ રહ્યો હતો । ‘ જે સે હે મતાણ ચડત્થે માસે અદ્ધમે પક્કે ફગ્ગુણસુદ્ધે ’ ફાગણ મહિના નો શુક્લ પક્ષ ચાલતો હતો આ મહિનો હેમત ડાળના મહિનામા ચોથો મહિનો તેમજ આઠમો પક્ષ છે । ‘ તસ્સ ણ ફગ્ગુણસુદ્ધસ્સ ચડત્થિ પક્કેણ ’ એવી ફાગણ શુક્લ ચોથના અડધી રાતના વખતે મહાબલ દેવ પોતાની બત્રીશ સાગરની સ્થિતિ પૂરી કરીને ત જયત નામક વિમાનમાથી ચીને પ્રભાવતી દેવીના ગર્ભમા

वर्णकः= तेषां स्वप्नानां वर्णनं वाच्यं तच्चान्यत्र सविस्तरं द्रष्टव्यम् तेषां नामानि केवलं प्रोच्यन्ते—गज-वृषभ-सिंह-लक्ष्मी-पुष्पमाला-चन्द्र-सूर्य-ध्वज-पूर्णकलश-पद्मसर-समुद्र-देवविमान-रत्नराशिप्रहय इति । भर्तृवधनम् स्वप्नवृत्तं भर्त्रे निवेदयतीत्यर्थः । स्वप्नपाठकपृच्छा=स्वप्नफलवाचकान् समाह्वय भर्त्रा कुम्भकनृपेण स्वप्नफलपृच्छा कृतेत्यर्थः । यावत्-स्वप्नपाठकैः स्वप्नफलं निवेदितं, तत्सर्वं प्रथमाध्ययने धारिणीदेव्या अधिकारे यथा कथितं तथैव वाच्यं विशेषस्तु-धारिण्या स्वप्ने गज एव दृष्टः, प्रभावत्या तु चतुर्दश स्वप्ना इति । एव च तैरुक्तम्—

के गर्भ में आये । (त रघणिं च ण चौदस महासुमिणा वन्नओ) उस रात्रि में उस प्रभावतीदेवी ने १४ महास्वप्न देखे । इन महास्वप्नों का सविस्तर वर्णन अन्यत्र से जानना चाहिये हम यहाँ उन के नाम निर्देश करते हैं जो इस प्रकार चन्द्र, सूर्य, ध्वज, पूर्णकलश, पद्मसर, समुद्र देवविमान, रत्नराशि और अग्नि । इन स्वप्नों को देखकर प्रभावती ने अपने पति कुम्भक राजा से कहा राजा ने उसी समय स्वप्नपाठकों को बुलाया—और उनसे इन स्वप्नों के फल को पूछा ।

उन्होंने इन स्वप्नों का क्या फल है यह बात राजा को कही । यह सब विषय इसी के प्रथम अध्ययन में धारिणी देवी के अधिकार में जिस प्रकार से प्रकट किया गया है उसी प्रकार से यहाँ भी जानना चाहिये । धारिणी देवी ने स्वप्न में केवल एक हाथी ही देखा था । प्रभावती ने तो चौदह महास्वप्न देखे । अन्त में उन स्वप्न पाठकों ने कहा—राजन ! प्रभावती देवी ने जो ये चौदह सुन्दर स्वप्ने देखे हैं—उन

स्थितं यथा ' त रघणिं च ण चौदसमहासुमिणा वन्नओ ' ते रात्रिमा प्रभावती देवीये १४ स्वप्नो ज्ञेया आ अथा महास्वप्नो विधेनु सविस्तर वर्णनं जिज्ञासुओये जीज्ञेयी ज्ञाणी देवु ज्ञेय्ये प्रभावती देवीये चन्द्र, सूर्य, ध्वज, पूर्णकलश, पद्मसर, समुद्र, देवविमान रत्नराशि अने अग्नि आटली वस्तुओ स्वप्नमा ज्ञेयं इति आ स्वप्नोने ज्ञेया आह प्रभावतीये पोताना पति कुम्भक राजाने स्वप्न विधे कहु अने तेमणे तरत ज स्वप्नपाठकोने ओलाव्या अने तेमने आ स्वप्नोना इण विधे पूछ्यु

स्वप्न पाठकोये आ स्वप्नोनु इण शु थरे तेनी अधी विगत राजाने कहु सलजावी शांताध्ययन ना प्रथम अध्ययनमा धारिणिदेवीना प्रसंगमा आ विधे सविस्तर वर्णन्यु छे अर्ही पण ते मुज्जम ज समण देवु ज्ञेय्ये स्वप्नमा धारिणी देवीये इकत ओक इथी ज ज्ञेयो इतो पण प्रभावतीये तो चौद महास्वप्नो ज्ञेया इता स्वप्ननु इ

હે રાજન્ ! પ્રભાવતી દેવ્યા ચતુર્દશ શોભનાઃ સ્વપ્ના અવલોકિતાઃ । તત્પ્રભાવાચ્ચ
ક્રવર્તી વા તીર્થકરો વા ભવિષ્યતિ । સ્વપ્નફલ શ્રુત્વા સા પ્રભાવતી ગર્ભ સુખસુ-
ખેન વહમાના વિહરતિ=આસ્તે સ્મ ॥ સૂ. ૧૦ ॥

મૂલમ્-તણ્ણં તીસે પમાવર્ણે દેવીણે તિણ્ણહ માસાણં વહુ-
પહિપુત્તાણં ઇમેયારૂવે ડોહલે પાઉવ્ભૂણ-ધન્નાઓ ણં તાઓ
અન્મયાઓ જાઓ ણં જલથલયમાસુરપ્પભૂણં દસદ્ધવન્નેણં
મલ્હેણં અત્થુયપચ્ચત્થુયંસિ સયણિજ્જંસિ સન્નિસન્નાઓ સપિણ-
વન્નાઓ ય વિહરંતિ, એગ ચ મહં સિરીદામગડ પાડલમહ્ણિય
ચપય અસોગ પુન્નાગ નાગ સરુયગદમણગઅણોજ્જકોજ્જયપટ્ટરં
પરમસુહફાસદરિસણિજ્જ મહયાગંધદ્ધણિં મુયંતં અગ્ધાયમા-
ણીઓ ડોહલ વિણેતિ ।

તણ્ણં તીસે પ્રભાવતીણે દેવીણે ઇમેયારૂવં ડોહલં પાઉ-
વ્ભૂય પાસિત્તા અહાસન્નિહિયા વાણમતરા દેવા સિપ્પામેવ જલ-
થલયં જાવ દસદ્ધવન્નમલ્લ કુંભગ્ગસો ય મારગ્ગસો ય કુંભગ-
સ્સ રન્નો ભવણસિ સાહરંતિ, એગં ચ ણં મહ સિરીદામગડ જાવ
મુયત જાવ ઉવર્ણેતિ, તણ્ણ સા પ્રભાવતી દેવીજલથલયજાવ
મલ્લેણં જાવ ડોહલ વિણેઙ્, તણ્ણં સા પ્રભાવતી દેવી પસત્થ-

કે પ્રભાવ સે ઇસ કે યા તો કોઈ તીર્થકર જન્મ લેના યા કોઈ ચક્રવર્તી ।
ઇસ પ્રકાર સ્વપ્નોં કા ફલ સુનકર પ્રભાવતી બહી પ્રસન્ન હુઈ ઓર ઉસ
ને આનંદ કે સાંચ ગર્ભ કો ધારણ કરતે હુએ સુખપૂર્વક સમય કો
વ્યતીત કિયા । સૂત્ર “ ૧૦ ”

‘ હે રાજન્ ! પ્રભાવતી દેવીએ ઔદ ઉત્તમ સ્વપ્નના જોયા છે, તેના પ્રભાવ
થી એમના ઉચ્ચ કાંતો તીર્થ કર જન્મલેશે કા કોઈ ચક્રવર્તી ! ’ આ પ્રભાવે
સ્વપ્ન કરી સાક્ષીને પ્રભાવતી ખૂબજ પ્રસન્ન થઈ અને સુખેથી ગર્ભ ધરણ
કરી ને અમય પપાર કરવા લાગી ॥ સૂ. ૧૦ ॥

ડોહલા જાવ વિહરહ, તણં સા પભાવઈ દેવી નવળહ માસાળં
 વહુપહિપુળાળં અહુટમાળ યરત્તિદિયાળ જે સે હેમંતાળં પઢમ
 માસે દોચ્ચે પવલે મગ્ગસિરસુલે તસ્સળ એકારસીણ પુઠ્ઠરત્તા-
 વરત્તં અસિસળી નવલત્તેળ જોગમુવાગળ ઉચ્ચટ્ટાળાટ્ટિણસુ
 ગહેસુ પમુહયપક્કીલિણસુ જળવણસુ આરોગ્ગારોગ્ગં એકૂળવીસ-
 હમ તિત્થયર પયાયા ॥ સૂં ૧૧ ॥

ટીકા—‘ તણ તીસે ’ હત્યાદિ— તતસ્તદનન્તર સ્વલુ તસ્યા પ્રભાવત્યા
 દેવ્યા સિપુ માસેષુ વહુપતિપૂર્ણેષુ=અશેષતઃ સમ્પૂર્ણેષુ સત્ત્વ અયમેતરૂપ દોહદઃ
 ગર્ભસદ્ભાવજનિતાભિત્યાપઃ પ્રાદુર્ભૂત.— ધન્યાઃ સ્વલુ તા અમ્યા=પુત્રમાતરઃ યા સ્વલુ
 ‘ જલથલયભાસુરપ્પભૂણ ’ જલસ્થલજભાસ્વરપ્રભૂ — તેન જલેપુ સ્થલેપુચ યજ્ઞાત
 ભાસ્વર= વિકસિત, પ્રભૂત પ્રચુર, તેન ‘ દસદ્ધવન્નેણ ’ દશાર્ધર્ણેન પચ્ચવર્ણયુક્તેન
 માલ્યેન માલ્યેભ્યો હિત માલ્ય=પુષ્પજાત, તેન ‘ અત્થુયપચ્ચત્થુયસિ ’ આસ્નૃત
 પ્રત્યાસ્નૃતે ક્રમશઃ ઉપર્યુપરિ સમાચ્છાદિતે શયનીયે=શય્યાયા ‘ સન્નિસન્નાઓ ’
 સન્નિપણ્ણા=સન્નિવિષ્ટા ‘ સળિવન્નાઓ ’ સન્નિપન્નાઃ સુપ્પાથ વિહરન્તિ સુલેન

‘ તણ તીસે પભાવઈણ ’ હત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તણ) હસ કે બાદ (તીસે પભાવઈણ દેવીણ) ઉસ પ્રભાવતી
 દેવી કે જય (તિણહ માસાળ વહુપહિપુળાળ) તીન માસ અચ્છી તરહ
 સે પૂર્ણ હો ચુકે—તવ (હમેયારૂવે દોહલે પાઠ્ઠમૂણ) ઉસે હસ પ્રકાર કા
 દોહલા ઉત્પન્ન હુઆ— (ધન્નાઓ ણ તાઓ અમ્મયાઓ) વે માતાઈ ધન્ય
 હૈં (જાઓ ણ જલ થલય ભાસુરપ્પભૂણ દસદ્ધવન્ને ણં મલ્લે ણ) જો
 જલ મે એવ સ્થલ મેં ઉત્પન્ન હુણ વિકસિત પચવર્ણોં કે પ્રભૂતપુષ્પોં સે
 (અત્થુય પચ્ચત્થુયસિ સયણિજ્જસિ સન્નિસન્નાઓ મન્નિવન્નાઓ ય

‘તણ તીસે પભાવઈણ । ’ હત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તણ) ત્યારબાદ (તીસે પ્રભાવઈણ દેવીણ) પ્રભાવતીદેવીને જ્યારે
 (તિણહ માસાળ વહુપહિપુળાળ) ત્રણ મહિના સારી રીતે પસાર થઈ ચુક્યા
 ત્યારે (હમેયારૂવે દોહલે પાઠ્ઠમૂણ) તેને આ પ્રમાણે દોહલે ઉત્પન્ન થયું કે
 (ધન્નાજો ણ તાઓ અમ્મયાઓ) તે માતા એા ધન્ય છે (જાઓ ણ જલ થલય
 ભાસુરપ્પભૂણ દસદ્ધવન્નેણ મલ્લેણ) જેઓ જળ અને સ્થળમા ઉદ્ભવેલા
 અને વિકાસ પામેલા પાત્રરગના પુષ્પાળ પ્રમાણમા એકઠા કરેલા પુષ્પોથી

તિષ્ઠન્તિ તા અમ્વા વન્યા , ઇતિ પૂર્વેણ સમ્યન્વ । એક મહત્ વિગલ 'સિરિ
દામગડ' શ્રીદામકાણ્ડ શ્રીદામ્ના=શોભાયુક્તમાલાના કાણ્ડ સમૂહ 'પાટલમલિલ
ચપય-અસોગ-પુન્નાગ-નાગમરુચગ-દમણગ-અળોજ્જ કોજ્જયપર' પાટલા-
મલિકા-ચમ્પિકા-અશોક-પુનાગનાગ - મરુચક-દમનકા-અનવધકુવ્જ પ્રચુર,
પાટલાદ્યા પુષ્પજાતયઃ- પાટલપુષ્પ, 'ગુલાબ' ઇતિ પ્રસિદ્ધ મલિકાપુષ્પ=ચમ્પ-
કપુષ્પમ્, અશોકપુષ્પમ્, પુન્નાગપુષ્પમ્, નાગપુષ્પ, મરુચક પત્રજાતિ વિશેષ,
દમનકપુષ્પમ્, અનવધ - સુન્દરઃ, કુવ્જક. શતપત્રિકા વિશેષ, એતાનિ પ્રચુરાણિ
યત્ર તત્ તથા, 'પરમસુહ્ર્વાસદરિસણિજ્જ' પરમસુખસ્પર્શદર્શનીય પરમસુખદઃ
સ્પર્શોયસ્ય તદ્ તત્ત્વ દર્શનીય દૃષ્ટિસુખદ ચેતિ 'મહયા ગધદ્ધાણિ' મહાસુરભિગ
ન્ધદ્ધાણિ મહાસુરભિગન્ધગુણ તૃપ્તિહેતુ પુદ્ગલસમૂહ મુચ્ચત્ પ્રસારયદ્ તદ્ આજિઘ્રન્ત્યઃ

વિહરતિ) હસ તમ્હ એક એક કારકે ક્રમશઃ પુષ્પોં કે અનેક સ્વરો સે
સમાચ્છાદિત હુઈ શય્યા પર બેઠતી હૈ સુખ સે શયન કરતી હૈ । (એગ
ચ મહ સિરીદામગડ પાટલમલિલચપયઅસોગપુન્નાગનાગમરુચગદમ-
ણગઅળોજ્જકોજ્જયપર પરમસુહ્ર્વાસદરિસણિજ્જ મહયાગધદ્ધાણિમુ-
યત આધાયમાણીઓ દોહલ વિણેતિ) ઓર અઢિતીય શ્રીદામકાંડ
કો-શોભાયુક્ત માલાઓ કે સમૂહ કો કિ જિસમેં પાટલ (ગુલાબ)
મલિકા (મીઘરા) ચપક, અશોક, પુન્નાગ, નાગ, મરુચા, દમનક એવ
સુન્દર કુવ્જક કે પુષ્પોં કા પ્રાચુર્ય હૈ, જિસકા સ્પર્શ પરમ સુખ કારક
હૈ ઓર જો દૃષ્ટિ કો આનદ દાયક હૈ તયા તૃપ્તિ કારક મહાસુરભિ ગધ
ગુણ વાલે પુદ્ગલોં કો જો ફેલા રહા હૈ સૂઘતી હુઈ અપને ગર્ભ મનોરથ

(અત્યુચ પદ્મત્યુચસિ સવણિજ્જસિ સન્નિવન્નાઓ સન્નિવન્નાઓ ચ વિહરતિ) આ
રીતે અનુક્રમે પુષ્પોના થરથી ઢકાએલી એવી શય્યા (પયારી) ઉપર બેમે છે
અને સુખેથી શયન કરે છે

(એગ ચ મહ સિરીદામગડ પાટલમાલિલચપયઅસોગપુન્નાગનાગમરુચ-
ગદમણગઅળોજ્જકોજ્જ પર પરમસુહ્ર્વાસદરિસણિજ્જ મહયા ગધદ્ધાણિમુયતઆધાય
માણીઓ દોહલ વિણેતિ)

બેમા પાટલ (ગુલાબ), મલિકા, ચપક, અશોક, પુન્નાગ, નાગ, મરુચા,
દમનક અને સુન્દર કુવ્જકના પુષ્પો પુષ્પા પ્રમાણુમા છે, અપાર બેનો અત્યંત
સુખદ છે અને બે દૃષ્ટિને આનદ આપનાર છે અને તૃપ્તકરનાર મહાસુગંધ
શુષ્કવાળા પુદ્ગલોને બે ફેલાવી રહ્યો છે-એવા અઢિતીય (સર્વોત્તમ)

તેન તથાપિત્રેન શ્રીદામકાળદેન ઘ્રાણેન્દ્રિય તર્પયન્ત્યઃ દોહદ = ગર્ભસદ્ભાવજનિત મનોરથ 'વિણેતિ' વિનયન્તિ=પૂરયન્તિ । તા એવ જનન્યો જગતિ ભાગ્યશાલિન્યઃ પ્રશસનીયા ધન્યાશ્ચ સન્તીત્યર્થઃ ।

તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ- તસ્યાઃ પ્રભાવત્યા દેન્યા ઇમમેતદ્દૈવ દોહદ પ્રાદુર્ભૂત દૃષ્ટા યથા સનિહિતાઃ સમીપસ્થિતા વાનવ્યન્તરાદેવાઃ ક્ષિપમેવ જલસ્થલીત્પન્નાનિ યાવદ્દશાર્ધવર્ણાનિ = પશ્ચવર્ણાનિ માલ્યાનિ = પુષ્પાણિ કુમ્ભાગ્રશ્ચ કુમ્ભ- પરિમાણતઃ, મારાગ્રશ્ચ મારપરિમાણતથ કુમ્ભકસ્ય રાજો ભવને સહરન્તિ= સમાનયન્તિ. । એકવ સ્વલુ મહત્ શ્રીદામકાળડ યાવદ્ મુશ્ચત્ ઉપનયન્તિ-સમીપે સમાનયન્તિ । તતઃ સ્વલુ સા પ્રભાવતી દેવીજલસ્થલજ યાવત્- યાવદ્ઽબ્દેન- કી પૂર્તિ કરતી હું (વે માતાએ ધન્ય હું એસા સચધ યદા પર લગા છેના ચાહિયે) (તણ) ઇસકે વાર (તીસે પ્રભાવતીદેવીદેવે ઇમેયારુવ દોહલ પાઉઁમૂત પાસિત્તા અહાસન્નિહિયા વાળમતરા દેવા ક્ષિપ્પામેવ જલથલયં જાવ દસદ્ધવન્નમલ્લ કુમ્ભગસોય મારગસોય કુમ્ભગસ્સ રન્નો ભવણસિ સાહરતિ) ઉસ પ્રભાવતી દેવીકે ઇસ પ્રકારકે દોહલેકો ઉત્પન્ન હુઆ દેલ કર કે સમીપ મેં રહે હુણ વાનવ્યન્તર દેવોને શીઘ્ર હી જલ મેં ઓર સ્થલ મેં ઉત્પન્ન પચવર્ણ કે પુષ્પો કો કુમ્ભ પરિમાણ મેં ઓર મારપરિમાણ મેં કુમ્ભક રાજા કે ભવન પર લાકર રલ દિયા ।

(ણગ ચ ણ મહ સિરિદામગડ જાવ મુચત જાવ ઉવણેતિ) ઓર સાથ મેં એક વડા મારી શ્રીદામકાળડ મી કિ જિસમે 'પાટલ ગુલાબ

શ્રી દામકાડ (મુદરમાળાઓના સમૂહ) ની સુવાસ અનુભવતી પોતાના ગર્ભ મનોરથ (દોહદ) ની પૂર્તિ કરે છે (ખરે ખર તે માતાઓ ધન્ય છે) (તણ) ત્યાર બાદ

(તીસે પ્રભાવતીદેવીદેવે ઇમેયારુવે દોહલ પાઉઁમૂત પાસિત્તા અહાસન્નિ હિયા વાળમતરા દેવા ક્ષિપ્પામેવ જલ થલયં જાવ દસદ્ધવન્ન મલ્લ કુમ્ભગસોય મારગસોય કુમ્ભગસ્સ રન્નો ભવણસિ સાહરતિ)

પ્રભાવતી દેવીના આ પ્રભાણેના દોહલોને ઉત્પન્ન થયેલો જાણીને પાસે રહેનારા વાનવ્ય તર દેવોએ તરત જ જળ અને સ્થળમા ઉત્પન્ન થયેલા પાચરગના પુષ્પોને કુલ પરિમાણમા અને લાર પરિમાણમા કુલક રાજાના ભવન ઉપર લાવીને મૂકી દીધા

(એગવ ણ મહ સિરિદામગડ જાવ મુચત જાવ ઉવણેતિ) પાટલ વગેરે ના પુષ્પો જેમા ગૂથેલા છે, અને જે નેત્રોને માટે સુખદ અને સ્પર્શ પણ જેના આનંદ દાયક છે, અને જેમાથી ચોખ્ખર સુગંધી પ્રસરી રહી છે એવો

‘ जल थल इत्यनन्तर ‘ भासुरप्पभूएण दसद्धवन्नेण ’ इति सग्रह, मात्येन=पुष्प जातेन यावत्-अत्र यावच्छब्देन- ‘ अत्युयपच्चत्थुयसि ’ इत्यारभ्य ‘ अग्याय माणीओ ’ इतिपर्यन्तस्य ग्रहणम्, दोहद विनयति=पूरयति. । ततः खलु सा प्रभावती देवी प्रशस्तदोहदा यावद् सपूर्ण दोहदा समानित दोहदा विहरति ।

अथ भगवतस्तस्य तीर्थंकरस्य सकल जगत्कल्याणकरजन्मकदाऽभवदिति जिज्ञासायामाह-‘ तएण ’ इत्यादि ।

ततस्तदन्तर खलु सा प्रभावती देवी नवसु मासेषु बहुमतिपूणेषु=सर्वथा सपूर्णेषु तदनन्तरम् अर्गण्टमेसु रात्रिदिवेषु व्यतीतेषु योऽसौ हेमन्तानो हेमन्त ऋतु सङ्गकाना मार्गशीर्षदिकालगुनान्ताना प्रथमो मासः, द्वितीयः पक्षः मार्गशीर्ष शुद्धः मार्गशीर्षमासस्य शुद्ध शुक्लः पक्षो वर्तते, तस्य- खलु एकादश्या तिथौ पूर्वरात्रापररात्रकालसमये मध्यरात्रे अश्विनी नक्षत्रे योग=चन्द्रयोगमुपागते-प्राप्ते

आदिकेपुष्पगुथे हुए हैं और जो नेत्र को सुख देने वाले एव सुखस्पर्श है जिसमें से सुगंध ही सुगंध चारों ओर फैल रही है रानिके पास लाकर उपस्थित किया । (तएण सा प्रभावती देवी जल थलय जाव मल्लेण जाव दोहल विणेइ) इसके अनन्तर उस प्रभावती देवीने जल थलके विकसित पच वर्ण वाले प्रभूत पुष्पों से समाच्छादित हुई शय्या पर बैठकर शयन कर श्रीदामकाण्ड को कि जो पाटल (गुलाब) आदि के पुष्पो से गुथा हुआ था यावत् गंध को फैला रहा था सूत्र कर अपने दोहले की प्रति की । (तएण सा प्रभावती देवी पसत्थ दोहला जाव विहरइ, तएण सा प्रभावंई देवी नवण्ह मामाण बहु पडिपुण्णाण अद्धमाण य रत्तिं दियाण जे से हेमत्ताण पढमे मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे तस्सण एगारसीए पुव्वरत्तावरत्त० आस्सिणीनक्खत्तेण जोगमुवागएण उच्चट्ठाणट्ठिएसु गहेसु पमुइयपक्कीलिएसु जणवणसु आरोग्गारोग्ग एगू

એક મોટો ભારે શ્રીદામકાંડ પણ વાનવ્યતરો ત્યા લાવ્યા (તएण सा प्रभावती देवी जलथलय जाव मल्लेण जाव दोहल विणेइ) त्यार आह प्रभावती देवीએ જળના વિકસિત પાચરંગના પુષ્પોથી સમાચ્છાદિત શય્યા ઉપર બેસીને, શયન કરીને, પાટલ વગેરેના પુષ્પોથી ગૂથાયેલા સુવાસિત શ્રીદામકાંડને સુધીને પોતાના દોહડની પૂર્તિ કરી

(તएण सा प्रभावती देवी पसत्थदोहला विहरइ, तएण सा प्रभावंई देवी नवण्ह मामाण बहुपडिपुण्णात अद्धमाणयरादियाण जे से हेमताण पढमेमासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे तस्सण एगारसीए पुव्वरत्तावरत्त आस्सिणीनक्खत्तेण जोग

સતિ ઉચ્ચસ્થાનસ્થિતેષુ ઉચ્ચરાગિગ તેષુ ગ્રહેષુ સૂર્યાદિષુ પ્રમુદિત પ્રક્રીડિતેષુ દ્વષ્ટેષુ
ક્રીડાવત્સુ ચ જનપદેષુ=દેશેષુ સત્સુ આરોગ્યારોગરહિતા અનાયાધા પ્રસરવેદના
રહિતા સતીત્યર્થઃ આરોગ્ય = અનાયાધ લક્ષણર્જિત એકોનવિંશતિતમ તીર્થકર
પ્રજાતા=પ્રજનિવતી ॥ સૂ. ૧૧ ॥

ળવીસહમ તિત્થયર પયાયા) હસ પ્રકાર પ્રશસ્ત દોહલા વાલી વહ પ્રમા
વતી દેવી કિ જિસ કા દોહલા અચ્છો તરફ સે પૂર્ણ હો ચુકા હૈં ઓર
જિસ દોહલે કો રાજા આદિજનો ને મી સન્માનિત કિયા હૈ આનન્દ પૂર્વ
ક રહને લગી । અથ સૂત્રકાર ગ્રહ પ્રકટ કરતે હૈં કિ ભગવાન્ ઉન તીર્થ
કર કો જગત્ કલ્યાણ કારક જન્મ કિસ સમય હુઆ-વે કહતે હૈં કિ
જય ગર્ભ કે નૌ માસ સમ્પૂર્ણ સ્વપ્ન સે વ્યતીત હો ચુકે ઓર ઉનકે ઉપર
સાઢે સાત રાત કા સમય ઓર અધિક નિકલ ચુકા ઉસ સમય
પ્રભાવતી દેવી ને હેમન્ત કાલ કે પ્રથમ માસ માર્ગશીર્ષ શુક્લ એકાદશી
કે દિન મ ય રાત્રિ કે સમય અશ્વિની નક્ષત્ર મે, જય કિ ઉસકા યોગ
ચન્દ્રમા કે સાથ હો રહા થા ઓર સૂર્યાદિગ્રહ ઉચ્ચસ્થાન પર સ્થિત થે તથા
જનપદોં મે આનન્દ કો લહરે છાંયી હુઈર્થી-વિવિધ પ્રકાર કી ક્રીડાઓં
મે વે રત થને હુએ યે વિના કિસી વાધા કે કલેશવર્જિત ૧૯ વૈં તીર્થકર
કો જન્મ દિયા ॥ સૂત્ર ૧૧ ॥

મુવાગણ ઉચ્ચદ્વાણદિષુ ગ્રહેષુ પ્રમુદ્ય પ્રક્રીલિષુ જળવણસુ આરોગ્યારોગ
એકૂળવીસહમ તિત્થયર પયાયા)

આ રીતે જેનું દોહદ સંપૂર્ણ થયું પૂરું થયું છે અને રાજા વગેરે ગુરુ
જનોએ પણ જેના દોહદને સન્માનીત કર્યું છે એવી પ્રશસ્ત દોહદ વાળી
પ્રભાવતી દેવી આનંદની સાથે પેતાના દિવસો પસાર કરવા લાગી હવે
સૂત્રકાર જગત્ ના ઉત્થાણ કરનારા એવા ભગવાન તીર્થકર ને જન્મ ક્યારે
થયો તેનું વર્ણન કરતા કહે છે-કે જ્યારે ગર્ભના નવમાસ પૂરા થઈ ગયા
અને નવમાસ ઉપર માડા માત દિવસરાતનો સમય પમાર થયો ત્યારે હેમ-
તકાળના પ્રથમ મહિનાના શુક્લ પક્ષ અગિયારસના દિવસે અડધી રાતના
સમયે અશ્વિની નક્ષત્રમા-જ્યારે તે નક્ષત્રનો યોગ ચન્દ્રની સાથે થઈ રહ્યો
હતો અને સૂર્ય વગેરે ગ્રહો ઉચ્ચ સ્થાને સ્થિત હતા અને આખા જનપદમા
આનંદના મોજાઓ પ્રમગી રહ્યા હતા અને બધા માણસો અને જાતની
રમતો અને ક્રીડાઓમા મસ્ત થઈ રહ્યા હતા ત્યારે પ્રભાવતી દેવીએ કયેશ
અને કુબ રહિત થઈને ૧૯ મા તીર્થકર ને જન્મ આપ્યો ॥ સૂત્ર " ૧૧ " ॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समयेणं अहोलोगवत्थव्वाओ
अट्ट दिसाकुमारीओ मयत्तरीयाओ जहा जवूदीवपन्नत्तीए जम्मणं
सव्वं नवर मिहिलाए कुभयस्स पभावईए अभिलाओ सजो-
एव्वो जाव नन्दीसरवर दीवे महिमा, तथा णं कुभए राया
वहूहि भवणवइ४ तित्थयर जायकम्म जाव नामकरण, जम्हाणं
अम्हे इमीए दारियाए माउए मल्लसयणिज्जंसि डोहले विणीते
त होउणं णामेणं मल्ली, जहा महाव्वले नाम जाव परिवड्डिया
सा वद्धती भगवती दियलोयचुता अणोवमसिरीया। दासीदास
परिवुडा परिकिन्ना पीढमद्देहि ॥ सू० १२ ॥

टीका—‘ तण कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले चतुर्थारकलक्षणे तस्मिन्
समये जिन ज मसमयेऽधोलोक वास्तव्या अष्ट दिक्कुमार्य महत्तरिकाः प्रधानाः
भोगङ्करा १, भोगवती २, सुभोगा ३, भोगमालिनी ४, सुवत्सा ५, वत्समित्रा
६, वारिषेणा ७, बलाहका ८, इत्येतन्नामिका समागताः । यथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ
भगवतस्तीर्थकरस्य जन्मवर्णित, सर्वं तथैव विज्ञेयम्, नवर=एतानान् विशेषः

‘ तेणं कालेण तेण समएण ’ इत्यादि

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में
(अहो लोगवत्थव्वाओ) अधोलोक में निवास करनेवाली (अट्ट) आठ
(दिसाकुमारीओ) दिक्कुमारिकाएँ (मयत्तरीयाओ जहा जवूदीवपन्नत्तीए
जम्मणसव्वं) जिनका नाम भोगङ्करा, भोगवती, सुभोगा, भोगमालिनी
सुवत्सा, वत्समित्रा वारिषेणा और बलाहका है आई । जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति

‘ तेण कालेण तेण समएण ’—इत्यादि

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये (अहोलोग
वत्थवाओ) अधोलोकमा रहेनारी (अट्ट) आठ (दिसाकुमारीओ) दिशा
कुमारिकाओ । (मयत्तरीयाओ जहा जवूदीवपन्नत्तीए जम्मण सव्व) जेभना
नामो लोगङ्करा लोगवती, सुभोगा, लोगमालिनी, सुवत्सा, वत्समित्रा,
वारिषेणा, अने बलाहका—छे—त्या आवी—‘ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति ’ मा लगवान

इह मिथिलाया नगर्या कुम्भकरय राज प्रभायत्याः अभिलाप' = वर्णन सयोक्तव्यः
= उक्तव्य', यावत् नन्दीश्वरवरे द्वीपे महिमा = उत्सवः, देवैकृतः । तदा खलु
कुम्भको राजा बहुभिर्भवनपतिवानव्यन्तर ज्योतिष्क वैमानिकैः जन्मोत्सवे कृते सति
तीर्थकरजातकर्म यावत् नामकरण कृतवान् यस्मात् खलु अस्माकम् अस्यां
दारिकाया गर्भगताया मातुर्माल्यशयनीये कुसुमशय्या विषये दोहदो विनीत =

में भगवान तीर्थकर ने जन्म का जैसा वर्णन किया गया है—वैसा ही
वर्णन यहाँ जानना चाहिये (नगर) परन्तु उसकी अपेक्षा इसमें इतनी
विशेषता है (मिथिलाए कुम्भकरस प्रभावहण अभिलाओ) कि यहाँ
मिथिला नगरी कुम्भक राजा और रानी प्रभावती का सम्बन्ध लिया
गया इसलिये मल्लिनाथ तीर्थकर के जन्म के वर्णन करने में इनसब
का योग लगा लेना चाहिये ।

(जाव नदीसर वरे दीवे महिमा) मल्लिनाथ तीर्थकर के जन्म का
उत्सव नदीश्वर नाम के द्वीप में देवों ने किया । (तयाणं कुम्भए राया
बहूहि भवणवइ ४ तित्थयर जाय कम्म जाव नाम करण) इसके बाद
कुम्भक राजा ने अनेक भवनपति वानव्यन्तर, ज्योतिष्क एव वैमानिक
देवों के द्वारा जन्मोत्सव किये जाने पर तीर्थकर का जातकर्म यावत्
नामकरण किया । (जम्हा ण अम्हे इमीए दारियाए माउए मल्ल
सयणिज्जसि दोहले विणीए त होउण णामेण मल्ली) नामकरण

तीર્થ કર ના જન્મ વિષે જેવું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તેવું જ વર્ણન
અહીં પણ બાણુવું જોઈએ (નવર) પણ તેના કરતા અહીં આટલી વિશેષતા
બાણવી જોઈએ કે (મહિલાએ કુમ્ભકરસ પ્રભાઈએ અભિલાઓ) અહીં મિથિલા
નગરી, કુલક રાજા અને રાણી પ્રભાવતીના સબધ વિષે વર્ણન કરવામાં આવે
છે એટલે મલ્લિનાથ તીર્થ કરના જન્મ વર્ણનમાં આ બધાનો યોગ અપેક્ષિત છે

(જાવ નદીસરવરે દીવે મહિમા) દેવોએ મલ્લિનાથ તીર્થ કરનો જન્મો
ત્સવ નદીશ્વર નામના દ્વીપમાં ઊજવ્યો હતો (તયાણ કુમ્ભએ રાયા બહૂહિ ભવણ
વइ४ તિત્થયર જાયકમ્મ જાવ નામ કરણ) ઘણા ભવનપતિ વાનવ્યતર, જ્યોતિષક
અને વૈમાનિક દેવોએ જ્યારે સારી પેઠે ભગવાન તીર્થ કરનો જન્મોત્સવ ઊજવી
હીધો ત્યારે કુલક રાજાએ તેમનો જાતકર્મ યાવત્ નામ કરણ સસ્કાર કર્યો

(જમ્હાણ અમ્હે ઇમીએ દારિયાએ માઉએ મલ્લસયણિજ્જસિદોહલે વિણીએ
ત હોઉણ ણામેણ મલ્લી)

રાજાએ તેમનું નામ મલ્લિ પાડ્યું કેમકે જ્યારે તે ગર્ભમાં હતા ત્યારે તેમની
માતાને માલતીના પુષ્પોની માળાની શય્યાનું દોહડ થયું હતું અને તેમના દોહડની

દેવૈઃ પૂરિત', તદ્ ભયતુ સ્વલુ ઇય નામ્ના મલિલઃ માલાયૈ હિત, તત્ર સાધુ વા માલ્ય કુસુમ તદ્વતામિલાપરૂપદોહદપૂર્વકમેતસ્મા દારિકાયા જન્મસજાત તસ્મા દસ્યા નામ 'મલ્લી' ઇતિકૃતમ્ । અસ્યાઃ સ્ત્રીત્વેઽપિ જિનસ્તીર્થકરોઽર્હદિતિ શબ્દાના વાહુલ્યેન પુસ્ત્ત્વે પ્રવૃત્તિદર્શનાત્પુલિલ્લશબ્દેન વ્યવહારઃ । યથા મહાવલો નામ=

મેં ઉનકા નામ મલ્લી રખા ગયા-કયો કિ રાજાને યહ વિચારા કિ જવ યે ગર્ભ મે થી તો હનકી માતાકો પુષ્પોંકી માલ્ય કી શય્યા કે વિષય મેં દોહલા ઉત્પન્ન હુઆ થા-ઔર ઉસ દોહલે કી પૂર્તિ દેવો ને કી થી અતઃ યહ પુત્રી નામ સે મલ્લી રહો- ઇસી અભિપ્રાય સે રાજા ને ઉસકા નામ મલિલ રખા ।

“માલાયૈ હિત તત્ર સાધુ વા માલ્ય” ઇસ વ્યુત્પત્તિ કે અનુસાર માલ્ય શબ્દ કા અર્થ કુસુમ હોતા હૈ । સો જવ યે માતા કે ગર્ભ મેં થી તવ માતા કો ઉસ માલ્ય કે વિષય મેં અમિલાપ રૂપ દોહલા ઉત્પન્ન હુઆ થા-જિસ કો પૂર્તિ દેવો ને કી થી-અતઃ ઉસ દોહદ પૂર્વક ઇસ લઢકી કા જન્મ હુઆ-ઇસ કારણ રાજા ને ઉસકા નામ મલિલ રખ દિયા । યદ્યપિ યહ સ્ત્રીરૂપ મેં થી-તો ઓ “જિનઃ તીર્થકર અર્હત” ઇત્યાદિ શબ્દોં કો વહુલતા સે પુલિલ્લ મેં પ્રવૃત્ત દેખી જાતી હૈ-ઇસલિયે યહા હનકા પુલિલ્લ શબ્દ સે વ્યવહાર તીર્થકર કી અપેક્ષા કિયા ગયા હૈ । (જહા મહાવલે નામ જાવ પઢિવઢિયા “સા વદ્વત્ત મગવતી દિય લોય ચુતા અણોવમ સિરીયા દાસી દાસ પરિવુડા પરિકિન્ના પીઢમદેહિં ,,

પૂર્તિ દેવોએ કરી હતી એથી જ રાજાએ તે પુત્રીનું નામ મલિલ પાડ્યું હતું

“માલાયૈ હિત તત્ર સાધુવા માલ્ય” આ વ્યુત્પત્તિ મુજબ માલ્ય શબ્દનો અર્થ કુસુમ (પુષ્પ) થય છે જ્યારે મલિલ માતાના ગર્ભમાં હતા ત્યારે તેમને માલ્ય ની અમિલાપા રૂપ દોહદ ઉત્પન્ન થયું હતું તે દોહદની પૂર્તિ દેવોએ કરી હતી એથી માલ્યના દોહદથી જન્મેલી તે પુત્રીનું નામ રાજાએ મલિલ પાડ્યું જે કે આ સી રૂપે હતી છતાં એ “જિન તીર્થકર અર્હત વગેરે શબ્દો ના બાહુલ્યથી તે પુલિલગથી જ સંબોધિત કરવામાં આવે છે એટલા માટે અહીં જે પુલિલગ શબ્દથી વ્યવહાર કરવામાં આવે છે તે તેમની તીર્થ કરની અપેક્ષાથી જ

(જહા મહાવલે નામ જાવ પઢિવઢિયા ‘સા વદ્વત્ત મગવતી દિયલોય ચુતા અણોવમસિરીયા દાસીદામપરિવુડા પરિકિન્ના પીઢમદેહિં “ ૧ ”)

ભગવતી સૂત્રના મહાબલના વર્ણનની જેમ જ મલિલના વર્ણન વિષેયથી

યથા ભગવતી સૂત્રે મહાવલો વર્ણિતસ્તથેય મહી વિદ્યેત્યર્થઃ ।

અથ ગાથા દ્વયેન મહિં વર્ણયતિ—‘ સા વદ્વઃ ’ ઇત્યાદિ

સા વર્ધમાના ભવતી ઘુલોકચ્યુતા અનુપમશ્રીકા,

દાસીદાસપરિવૃતા પરિકીર્ણા પીઠમર્દ ॥ ૧ ॥

સા મહી વર્ધમાના=અનુદિન વૃદ્ધિ ગતા, ભગવતી=ऐश्वर्यादिगुणयुक्ता,
ઘુલોકચ્યુતા દેવલોકાદનુત્તરવિમાનાચ્યુતા=અવતીર્ણા, અનુપમ શ્રીકા=અદ્વિતીય
શોભાયુક્તા, દાસીદાસપરિવૃતા, પીઠમર્દઃ=વયસ્યૈઃ પરિકીર્ણા=પરિકરવતી બહુ
સહચરી યુક્તેત્યર્થઃ ।

અસિતશિરોજા સુનયના વિમ્વોષ્ટી ધવલદન્તપદ્તિકા ।

વરકમલકોમલાઙ્ગી ફુલોત્પલગન્ધનિઃશ્વાસા ॥ ૨ ॥

અસિત શિરોજા=અમરવદતિશ્યામવર્ણકેશા, સુનયના = સુલોચના, વિમ્વોષ્ટી
=વિમ્વવદ્રક્તવર્ણોષ્ટી, ધવલદન્તપદ્તિકા ધવલા કુન્દમુક્તાદિવચ્છુલ્લવર્ણા દન્ત
પદ્તિર્દન્તશ્રેણિકા યસ્યાઃ સા તથા, વરકમલકોમલાઙ્ગી=વરકમલપત્ - અશુષ્ક
કમલપુષ્પવત્ કોમલાનિ મૃદુલાન્યઙ્ગાનિ યસ્યાઃ સા તથા, ફુલોત્પલગન્ધનિ.
શ્વાસા=વિકસિતનીલકમલપદ્મગન્ધયુક્તનિ શ્વાસવતી જાતા ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

જિસ પ્રકાર ભગવતી સૂત્ર મેં મહાવલ કા વર્ણન કિયા ગયા હૈ—
ઉસી પ્રકાર સે इन मटली का भी वर्णन जानना चाहिये—सूत्रकार इसी
बात का वर्णन “ सा वद्वह ” इस गाथा द्वारा करते हैं—वे कहते हैं कि
ये मल्लि नाम की कन्या प्रतिदिन वृद्धिगत हो रही थी । ऐश्वर्य आदि
गुणों से युक्त थी । अनुत्तर विमान से चब कर आई थी अनुपम श्री से
सपन्न थी । दासी दास परिवृत्त थी और अनेक सहचरियों से युक्त थी ।

उनके बाल भ्रमर के समान अति श्याम वर्ण वाले थे । लोचन बड़े
सुहावने थे । बिम्ब जैसे लाल वर्ण वाले इनके दोनों ओष्ठ थे । दांतों
की पद्क्ति कुन्द तथा मुक्ता आदि के समान बिलकुल शुभ्र थी । अशुष्क

બાળુબુ બોધએ “ સા વદ્વહ ” આ ગાથા વડે સૂત્રકાર એજ વાત સ્પષ્ટ કરવા
માગે છે તેઓ વર્ણન કરતા કહે છે કે મલ્લિ નામે કન્યા દિવસે દિવસે
મોટી થઈ રહી હતી તે ઐશ્વર્ય વગેરે ગુણોથી પૂર્ણ હતી તે અનુત્તર વિમા
નથી ચવીને આવી હતી અને અનુપમ શ્રી સપન્ન હતી તે દાસી દાસોથી
બીટળાયેલી તેમજ ઘણી સહચરીઓથી યુક્ત હતી

તેમના વાળ ભ્રમરા જેવા અત્યંત કાળા હતા તેમના નેત્રો મનોહર
હતા અને હોઠ બિંબજન જેવા લાલ હતા તેમની દત્તપદ્ધિ કુદ તેમજ મોતી

मूलम्—तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना उम्मुक्कवाल-
भावा जाव रूवेण जोव्वणेण य लावन्नेण य अतीव २ उक्कि-
ट्टसरीरा जाया यावि होत्था, तएणं सा मल्ली देसूणवाससय-
जाया ते छप्पिरायाणो विउलेण ओहिणा आभोएमाणी २
विहरइ । त जहा — पडिबुद्धि जाव जियसत्तु पचालाहिवइ,
तएणं सा मल्ली कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव
वयासी — तुव्वेणं देवाणुप्पिया । असोगवणियाए एगं मह
मोहणघर करेह अणेगखभसयसन्निविट्ट, तस्स णं मोहणघरस्स
वहुमज्झदेसभाए छ गव्वभघरए करेह, तेसि णं गव्वभघरगाणं
वहुमज्झदेसभाए जालघरय करेह, तस्स णं जालघरयस्स वहुम
ज्झदेसभाए मणिपोढिय करेह, जाव पच्चप्पिणति ॥सू०१३॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि—ततस्तदनन्तर खलु सा मल्ली मल्लीनाम्नी विदेह
रायवरकन्ना ’ विदेहराजवरकन्या=विदेहो मिथिलाजनपद’, तस्य राजा कुम्भ
कस्तस्य वराकन्या=पुत्री ‘ उम्मुक्कवालभावा ’ उन्मुक्तवालभावा, व्यपगतवाल्या
वस्था यावत् रूपेण च योपनेन च लावण्येन च अतीवातीवोत्कृष्टा उत्कृष्ट-

कमल पुष्प के जैसा इनका मृदुल अंग था । विकसित नील कमल के
समान गंध युक्त इनका निश्वास था । सूत्र “ १२ ”

‘ तएण सा मल्ली ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (विदेहरायवरकन्ना सा मल्ली) विदेह
राजकी कन्या वह मल्ली (उम्मुक्कवालभावा) वाल्यावस्था का परित्याग
कर (जाव रूवेण जोव्वणेण य लावन्नेण य अतीव २ उक्किट्टसरीरा

वगेरे जेवी ओउदम स्वच्छ हुती ताण उमण पुष्पना जेवा तेमना सुओमण
अ गो हुता तेमनो निश्वास प्रकुदित नीलकमण जेवो सुवानित हुतो ॥ सूत्र “ १२ ”

‘ तएण सा मल्ली ’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्पारभाट (विदेहरायवरकन्ना सा मल्ली) विदेह राजकन्या
मल्लि (उम्मुक्कवालभावा) अथपणु पटावीने (जाव रूवेण जोव्वणेण य

શરીરા ચાપિ જાતા ડડતીદિતિ સમ્યન્ન' = તતસ્તદનન્તર સલ્લ મા મલિન્દેશોન વર્ષશત જાતા દેશોન = કિઞ્ચિદ્ન વર્ષશત જાત = ભૂત વ્યતીત યસ્યાઃ સા તથા, દેશોનશતવર્ષત્રયસ્કા સતીત્યર્થ' તાન્ પહપિ પ્રતિબુદ્ધ્યાદીન્ રાજ્ઞો વિપુલેનાવધિના = અવધિજ્ઞાનેન આભોગયતી ૨ પુનઃ પુનઃ પશ્યન્તી વિહરતિ, તિષ્ઠતિ સ્મ । તદ્વયથા પ્રતિબુદ્ધિ યાત્ જિતશત્રુ પાશ્ચાલ્યાધિપતિમ્ । પ્રતિબુદ્ધિ નામા ઈક્ષ્વાકુવશ્યો રાજાઽ યોધ્યાધિપતિઃ, ચન્દ્રચ્છાયોઽદ્ગદેશાધિપતિ, શદ્ધનામા કાશીજનપદાધિપતિઃ, રુક્મીનામા કુળાલ્યાધિપતિ, અદીનશત્રુનામા કુરુદેશરાજઃ, જિતશત્રુઃ પશ્ચાલ્યા

જાયા યાવિ હોત્યા) યાવત્ રૂપ, યૌવન એવ લાવણ્ય સે અત્યત ઉત્કૃષ્ટ શરીર યુક્ત હો ગર્હ । (તણ સા મરલી દેસૂળ વાસ સય જાયા-તે છપ્પિ રાયાળો વિપુલેણ ઓહિળા આભોળમાળી ૨ વિહરડ) ઉમ સમય ડસ કી અવસ્થા શત વર્ષ સે કુલ્લ કમ ગી । પ્રતિબુદ્ધિ આદિ અપને સાથ કે ડન ૬ રાજાઓં કો ડયોંહી ડનોંને અપને અવધિજ્ઞાન સે જાના તો ડને માલૂમ હો ગયા કિ (પહિબુદ્ધિ જાવ જિયસતુ પચાલાહિવડ) અચલ કા જીવ કોશલ દેશ કો અધિપતિ હુઆ હૈ-વર ઈક્ષ્વાકુવશીય હૈ ઓર ડસકા નામ પ્રતિબુદ્ધ હૈ ।

ધરણ કા જીવ ચન્દ્રચ્છાય નામ કા અગ દેશાધિપતિ હુઆ હૈ । અભિચન્દ્ર કા જીવ કાશી દેશ કા અધિપતિ હુઆ હૈ ડસકા નામ ઈસ સમય શલ્લ હૈ । પૂરણ કા જીવ કુળાલ દેશ કા અધિપતિ હુઆ હૈ । ડસકા નામ રુક્મી હૈ । વસુકા જીવ કુરુદેશ કા અધિપતિ હુઆ હૈ

લાવન્નેણ ય અતીવ ૨ ઉક્કિદ્ધસરીરા જાયા યાવિ હોત્યા) યાવત રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી એકદમ ઉત્તમ શરીરવાળી થઈ ગઈ

(તણ સા મરલી દેસૂળ વાસ સમજાયા તે છપ્પિ રાયાળો વિપુલેણ ઓહિળો આભોળમાળી ૨ વિહરડ)

તેમની ઉંમર તે વખતે સો વર્ષ કરતા ઓછી હતી પ્રતિબુદ્ધિ વગેરે પેતાની સાથેના તે છ રાજાઓને તેણે પોતાના અવધિજ્ઞાનથી જાણ્યા ત્યારે તેને જાણુ થઈ કે (પહિબુદ્ધિ જાવ જિયસતુ પચાલાહિવડ) અચલને એવ કોશલને અધિપતિ થયો છે તે ઈક્ષ્વાકુવશીય છે, અને તેનું નામ પ્રતિબુદ્ધ છે

ધરણને એવ અગ દેશને અધિપતિ થયો છે અને તેનું નામ ચન્દ્ર ચ્છાય છે અભિચન્દ્રને એવ કાશી દેશને અધિપતિ થયો છે અને અત્યારે તેનું નામ રાખ છે પૂરણ ને એવ કુળાલ દેશને અધિપતિ થયો છે અને તેનું નામ રુક્મી છે વસુને એવ કુરુ દેશને અધિપતિ થયો છે અને તેનું

धेपति, एतान् पडपि राज्ञः पुनपुनरवधिज्ञानेन विलोकयन्ती तिष्ठतिस्मेत्यर्थः।
 तानत्रयसपत्ना मल्ली भगवती स्वकीयावधिज्ञानोपयोगेनेदं विदितवती-पूर्वभव-
 नेहवशात्ते पडपि राजानो मा परिणेतुमागमिष्यन्तीति तेषां प्रतिबोधार्थमुपायो
 मया विधेय इति भावयति स्मेति भावः। ततस्तदनन्तरं सा मल्ली कौटुम्बिक
 पुरुषान् आज्ञाकारिणः पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय, एव=
 वक्ष्यमाण प्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रियाः। यूयं खलु अशोकवनिकायामेक
 महत्=बृहत् मोहनगृह=समोहनकरं गृह 'करेह' कुरुत=निर्मात, कीदृशं तदित्याह
 'अणेगखभसयसन्निविट्' अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टम् अनेकानि स्तम्भशतानि
 सन्निविष्टानि सलग्नानि यस्मिन् तत् तथाविधम्। तस्य खलु मोहनगृहस्य बहुम-

उसका नाम अदीन शत्रु है। वैश्रवण का जीव पांचालाधिपति हुआ
 है। उसका नाम जितशत्रु है (तण्ण सा मल्ली कौटुम्बिक पुरिसे
 सदावेह) इस प्रकार अपने पूर्वभव के साथियों की परिस्थिति को ज्ञात
 कर उस मल्ली भगवती ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया- (सदावित्ता
 एव वयामी) और बुलाकर उन से ऐसा कहा- (तुम्हे ण देवाणुप्पिया।
 असोगवणियाए एग मह मोहणधर करेह-अणेगखभसयसन्निविट्)
 हे देवानुप्रियों! तुम अशोकवनिका में सैकड़ों खम्भों से युक्त एक
 विशाल समोहन गृह बनाओ। इस घर को बनाने को आदेश उन
 मल्ली भगवती इसलिये दिया था कि उन्हों ने अपने अवधिज्ञान से यह
 जान लिया था कि वे छहों राजा पूर्वभव के स्नेह से मुझ से विवाह
 करने के लिये यहां आवेंगे-अतः मुझे उन्हें प्रतिबोधित करने के
 लिये उपाय करना चाहिये।

नाम अदीनशत्रु छे वैश्रवण ने। एव पांचाल देशने अधिपति थये। ते अने
 तेनु नाम जितशत्रु छे (तण्ण सा मल्ली कौटुम्बिक पुरिसे सदावेह) आ रीते
 पोताना पूर्वभवना मित्रानी परिस्थिति जालीने मल्ली भगवतीछे कौटुम्बिक
 पुरुषोने जालाव्या "सदावित्ता एव वयामी" अने जालापीने तेभने उहु

(तुम्हेण देवाणुप्पिया! असोगवणियाए एग मह मोहणधर करेह-अणेग-
 खभ सयसन्निविट्)

हे देवानुप्रियो! तमे अशोक वनिका में सैकड़ों खम्भों के साथ
 एक महान मोहन घर बनाओ। मल्ली भगवतीछे समोहन घर में
 बनावडाव्या छतु के पोताना अवधिज्ञान थी तेभने छे बात जाली लीधी छती
 के तेछे छे राजा पूर्व भवना तेभने लीधे तेमनी साथे लग्न करवा अछी
 आवशे छेथी तेभने प्रतिबोधित करवाना उपाये। तेभने मल्लीने करवा ज
 तेभने कौटुम्बिक पुरुषोने तेभने आगण उहु-

ધ્યદેશભાગે=સર્વથા મધ્યસ્થાનભાગે પર-‘ ગર્ભઘરાણ ’ ગર્ભગૃહાન્ અન્તગૃહાન્ કુરુત । વાસ મરનાનિ તેષા ચ ગર્ભગૃહાણા વહુમધ્યદેશભાગે જાલગૃહ અત્ર ગૃહાન્તર્ગત વસ્તુ વહિ સ્થિતાઃ પશ્યન્તિ, તદર્થે કુડ્યેષુ દારાદિનિર્મિતજાલકાનિ વર્તન્તે તદ્ જાલગૃહ કુરુત તસ્ય સ્વલુ જાલગૃહસ્ય વહુમધ્યદેશભાગે મણિપીઠિકા મણિમયપીઠિકા, કુરુત, કૃતા યાત્ પ્રત્યર્પયન્તિ મલ્લીભગવત્યા આદેશાત્ કોદુમ્બિકપુરુષા મોહનગૃહ તત્ર મધ્યભાગે પદ્મસૂચક ગર્ભગૃહ તન્મધ્યે મણિમય

(તસ્સ ણ મોહણઘરસ્સ વહુમજ્ઞદેસમાણ ડ ગર્ભઘરાણ કરેહ)
 ઉસ સમોહન ગૃહ કે ઠીક મધ્યભાગ મેં ૭ ગર્ભગૃહો કો બનાઓ (તો સેણ ગર્ભઘરાણા વહુમજ્ઞદેસમાણ જાલધરય કરેહ તસ્સ ણ જાલ ઘરયસ્સ વહુમજ્ઞદેસમાણ મણિપેઢિય કરેહ, જાવ પચ્ચપ્પિણતિ)
 ઉન ગર્ભ ગૃહોં કે મધ્યભાગ મેં જાલઘર કો બનાઓ । જાલિયોં મેં સે જિસ ઘર કી વસ્તુ કો બાહિર રહે હુએ મનુપ્ય દેશ્વ લેતે હેં । વહ જાલ ઘર કહ્લાતે હેં । યે જાલિયા બીતો મેં કાષ્ટ આદિ કી બનાકર લગાઈ જાતી હેં । જિસ પ્રકાર મકાનો મેં હવા તથા પ્રકાશ આને કે લિયે સ્થિરકિયોં હુઆ કરતી હેં-ઉસી પ્રકાર સે યે જાલિયા બી લગાઈ જાતી હેં । ઓર ઉસ જાલ ગૃહ કે ઠીક બીચ કે સ્થાન મેં મણિનિર્મિત પીઠિકા કો બનાઓ ।

બનાકર પીઠે હસકી હમે સૂચના દો । ઇસ પ્રકાર મલ્લી ભગવતી કે આદેશ કો પાકર ઉન કોદુમ્બિક પુરુષોં ને ૧ મોહન ગૃહ, ઉસકે બીચ મેં છ ગર્ભ ગૃહ ઉનકે બીચ મેં ૧ જાલ ગૃહ ઓર ઉસ કે બીચ મેં મણિ

“ તસ્સ ણ મોહણઘરસ્સ વહુમજ્ઞદેસમાણ ડ ગર્ભઘરાણ કરેહ ” સ મોહન ઘરનો અધવચ્ચે છ જાલ ગૃહો બનાવો

(તીસેણ ગર્ભઘરાણા વહુમજ્ઞદેસમાણ જાવ ઘર ય કરેહ તસ્સ ણ જાલ ઘરયસ્સ વહુમજ્ઞદેસમાણ મણિપેઢિય કરેહ જાવ પચ્ચપ્પિણતિ)

જાલગૃહોના મધ્ય ભાગમા જાલ ઘર બનાવો જે ઘરની અંદરની વસ્તુઓ ને બહારના માણસો ઘરની બાજીઓથી જોઈ લે છે, તે ઘરને બાજી ઘર કહે છે બાજીઓ બીતોમા લાકડા વગેરેની બનાવીને મૂકવામા આવે છે ઘરોમા પવન તેમજ પ્રકાશ ને આવવાને માટે બારીઓ હોય છે, તેમજ બાજીઓ પણ મૂકવામા આવે છે) આ બાજી ઘરની બરાબર અધવચ્ચે મણિ જટિત પીઠિકા બનાવો

આબધુ તૈયાર થઈ જાય ત્યારે મને સૂચિત કરો આરીતે મલ્લી ભગવતીની આજ્ઞા સાંભળીને કોટુગિહ પુરુષોએ એક સ મોહન ઘર, તેની વચ્ચે છ જાલગૃહ, તેની વચ્ચે એક બાજીગૃહ અને તેની વચ્ચે મણિ જટિત પીઠિકા

પીઠિકાં ચ કૃત્વા મલ્લીભગવત્યાં સમીપમાગત્યાવેદયન્તિ સ્મ. મનદીયાદેશમનુ
સૃત્ય સર્વ સાધિતમસ્માભિરિતિ કથયન્તિ સ્મેત્યર્થઃ ॥ સૂ. ૧૩ ॥

મૂલમ્—તદ્દેણ મલ્લી મણિપેઢિયાણ ઉવરિં અપ્પણો સરિસિયં
સરિત્તય સરિવ્વય સરિસલાવન્નજોવ્વણગુણોવવેય કળગમઈં
મત્થયચ્છિહ્ણ પડમુપ્પલપ્પિહાણં પડિમ કરેહ, કરિત્તા જ વિઝલં
અસણં પાણં શ્વાહમ સાહમ આહારેહ, તઓ મણુન્નાઓ અસણ
૪ કલ્લાકલિલિ એગમેગ પિહ ગહાય તીસે કળગમઈંણ મત્થ-
યચ્છિહ્ણાણ જાવ પડિમાણ મત્થયસિ પક્કિવ્વમાણી ૨ વિહરહ ।
તદ્દેણં તીસે કળગમઈંણ જાવ મચ્છયચ્છિહ્ણાણ પડિમાણ એગમેગંસિ
પિંડેપક્કિવ્વપ્પમાણે ૨ તઓ ગધે પાઠવ્ભવહ, સે જહાનામણ
અહિમહેહ વા જાવ દત્તો અણિટ્ઠનરાણ અમણામતરાણ ॥ સૂ. ૧૪ ॥

ટીકા—‘તદ્દેણ મલ્લી’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु मल्ली=मल्लीकुमारी मणि-
पीठिकाया उपरि आत्मनः सदृशीं सदृशत्वं च सदृशप्रयस्का स्वशरीरसदृशप्रमाणा
सदृशलावण्ययौवनगुणौषपेता स्वमदृशलावण्यादिगुणैः सहिता, कनकमयी सुवर्णनि

મય પીઠિકા ઘનાઈ—और बनाकर फिर वे मल्ली भगवती के पास
आये—आकर कहने लगे—आपके आदेशानुसार हमने सब बनाकर
यथावत् तैयार कर दिया है । सूत्र “ १३ ”

‘ તદ્દેણ મલ્લી મણિપેઢિયાણ ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(તદ્દેણ) इसके बाद (मल्ली) मल्ली कुमारीने (मणिपेडियाए
उवरि अप्पणो मरिसिय सरित्तय सरिव्वय सरिसलावन्न जोव्वण गुणो

બનાવી અને બનાવીતે તેઓ મલ્લી ભગવતીની સામે આવ્યા અને આવીને
કહેવા લાગ્યા—“ હે દેવાનુપ્રિયો હુમારી આજ્ઞા પ્રમાણે અમે યથાવત બધું
તૈયાર કરાવી દીધું છે ” ॥ સૂત્ર “ ૧૩ ” ॥

‘તદ્દેણ મલ્લી મણિપેઢિયાણ’ इत्यादि

ટીકાર્થ—(તદ્દેણ) ત્યાર બાદ (મલ્લી) મલ્લી કુમારીએ

(મણિપેઢિયાણ ઉવરિ અપ્પણો સરિસિય સરિત્તય સરિવ્વય સરિસ લાવન્ન

ધ્યદેશભાગે=સર્વથા મધ્યસ્થાનભાગે વહ-‘ ગર્ભઘરણ ’ ગર્ભગૃહાન્ અન્તર્ગૃહાન્ કુરુત । વાસ ભવનાનિ તેષાં ચ ગર્ભગૃહાણાં વહુમધ્યદેશભાગે જાલગૃહં અત્ર ગૃહાન્તર્ગત વસ્તુ વહિ સ્થિતાઃ પશ્યન્તિ, તદર્થં કુડ્યેષુ દાર્પાદિનિર્મિતજાલકાનિ વર્તન્તે તદ્ જાલગૃહં કુરુત તસ્ય સ્વલુ જાલગૃહસ્ય વહુમધ્યદેશભાગે મણિપીઠિકાં મણિમયપીઠિકાં, કુરુત, કૃતાં યાત્ પ્રત્યર્પયન્તિ મલ્લીભગવત્યા આદેશાત્ કૌટુમ્બિકપુરુષા મોહનગૃહં તત્ર મધ્યમાગે પદ્મસ્વરૂપ ગર્ભગૃહં તન્મધ્યે મણિમય

(તસ્ય ણ મોહનઘરસ્ય વહુમજ્ઞદેસમાણ છ ગર્ભઘરણ કરેહ)
 ઉસ સમોહન ગૃહ કે ઠીક મધ્યમાગ મે છ ગર્ભગૃહો કો યનાઓ (તો સેણ ગર્ભઘરમાણ વહુમજ્ઞદેસમાણ જાલઘરય કરેહ તસ્ય ણ જાલ ઘરયસ્ય વહુમજ્ઞદેસમાણ મણિપેઢિય કરેહ, જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ)
 ગર્ભ ગૃહોં કે મધ્યમાગ મે જાલઘર કો યનાઓ । જાલિયોં મેં સે જિસ ઘર કો વસ્તુ કો વાહિર રહે હુણ મનુષ્ય દેસ લેતે હેં । વહ જાલ ઘર કહલોતે હેં । યે જાલિયાં મીતો મેં કાષ્ટ આદિ કી યનાકર લગાઈ જાતી હેં । જિસ પ્રકાર મકાનો મેં હવા તથા પ્રકાશ આને કે લિયે સિદ્ધકિયોં હુઆ કરતી હેં-ઉસી પ્રકાર સે યે જાલિયાં મી લગાઈ જાતી હેં । ઓર ઉસ જાલ ગૃહ કે ઠીક ધીચ કે સ્થાન મેં મણિનિર્મિત પીઠિકા કો યનાઓ ।

બનાકર પીઠે હસકી હમેં સૂચના દો । હસ પ્રકાર મલ્લી ભગવતી કે આદેશ કો પાકર ઉન કૌટુમ્બિક પુરુષોં ને ૧ મોહન ગૃહ, ઉસકે ધીચ મેં છ ગર્ભ ગૃહ ઉનકે ધીચ મેં ૧ જાલ ગૃહ ઓર ઉસ કે ધીચ મેં મણિ

“ તસ્ય ણ મોહનઘરસ્ય વહુમજ્ઞદેસમાણ છ ગર્ભઘરણ કરેહ ” સ મોહન ઘરનો અધવચ્ચે છ ગલ ગૃહો બનાવો

(તીસેણ ગર્ભઘરમાણ વહુમજ્ઞ દેસમાણ જાવ ઘર ય કરેહ તસ્ય ણ જાલ ઘરયસ્ય વહુમજ્ઞદેસમાણ મણિપેઢિય કરેહ જાવ, પચ્ચપ્પિણંતિ)

ગર્ભગૃહોના મધ્ય ભાગમા જાલ ઘર બનાવો જે ઘરની અદરની વસ્તુઓ ને બહારના માણસો ઘરની બાજીઓથી જોઈ લે છે, તે ઘરને બાજીઘર કહે છે બાજીઓ બીતોમા લાકડા વગેરેની બનાવીને મૂકવામા આવે છે ઘરોમા પવન તેમજ પ્રકાશ ને આવવાને માટે બારીઓ હોય છે, તેમજ બાજીઓ પણ મૂકવામા આવે છે) આ બાજી ઘરની બરાબર અધવચ્ચે મણિ જડિત પીઠિકા બનાવો

આબધુ તૈયાર થઈ જાય ત્યારે મને સૂચિત કરો આરીતે મલ્લી ભગવતીની આશા સાબળીને કૌટુમ્બિક પુરુષોએ એક સ મોહન ઘર, તેની વચ્ચે છ ગર્ભગૃહ, તેની વચ્ચે એક જાલગૃહ અને તેની વચ્ચે મણિ જડિત પીઠિકા

मय्या यावत् मस्तकच्छिद्राया प्रतिमायामेकैकस्मिन् पिण्डे प्रक्षिप्यमाणे प्रक्षिप्यमाणे सति ' तओ ' ततः=तस्या पुत्तलिकाया सकाशाद् गन्धः=दुर्गन्धः पाउब्भवइ ' प्रादुर्भवति=रहिर्निस्सरति स्म । सदृष्टान्त पुत्तलिका वर्णयति-तद् यथानामकम्=यथा दृष्टान्तम्-' अहिमडेइ वा ' अहिमृतक इति वा यावत्-अत्र यावच्छब्देन-' गोमडेइ वा, सुणगमडेइ वा, मज्जारमडेइ वा, मणुस्समडेइ वा, महिसमडेइ वा, मूसगमडेइ वा, आसमडेइ वा, हत्थिमडेइ वा सीहमडेइ वा, वाघमडेइ वा, विगमडेइ वा, दीविमडेइ वा, इति सङ्ग्रहः ' गोमृतक इति वा, शुनकमृतक इति वा, मार्जारमृतक इति वा, मनुष्यमृतक इति वा, महिषमृतक, इति वा मूपकमृतक इति वा, अश्वमृतक इति वा, हस्तिमृतक इति वा, सिंहमृतक इति वा, व्याघ्रमृतक

तीसे कणगमत्तीए जाव मच्छय छिद्राए पडिमाण एगमेगसि पिंड पक्खिप्पमाणे २ तओ गधे पाउब्भवइ) इस प्रकार करते करते उस सुवर्ण मयी पुत्तलिका मे मस्तक के छेद द्वारा पिंड पहुँच ने पर उस पुत्तलिका से दुर्गन्ध निकल ने लगी ।

(से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणाम तराए) वह दुर्गन्ध ऐसी थी-जैसी मरे हुए सर्प के सड जाने की होती है । यहाँ यावत् शब्द से " गोमडेइ वा, सुणगमडेइ वा " इत्यादि का सग्रह हुआ है ।

इसका अर्थ हम प्रकार है-वह दुर्गन्ध गाय के मरे हुए सडे कलेवर की होती है मरे हुए कुत्ते के सडे कलेवरकी होती है, मरे हुए बिलाव के सडे कलेवर की होती है, मनुष्य के मरे हुए सडे कलेवर की होती है, महिष के मरे हुए सडे कलेवर की होती है, मरे हुए चूहे के सडे कलेवर की होती है, मरे हुए घोडे के सडे कलेवर की

भाथाना डाण्णाना नाभती (तएण तीसे कणगमत्तीए जाव मच्छय छिद्राए पडिमाण एगमेगसि पिंडे पक्खिप्पमाणे २ तओ गधे पाउब्भवइ) आरीते सोनानी पूतणीभा दुरोअ ओअ ओअ डाणीये। नाभवाथी तेभाथी दुर्गन्ध नीकणवा लागी (से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणाम तराए) मरेखा अने सडेखा सापना जेवी ते दुर्गन्ध डती अडी यावत् शब्दथी ' गोमडेइवा, सुणगमडेइवा ' वगेरेने। मअडु यये। छे आने। अर्थ आ प्रभाएथाय छे के मरीने सडी गयेखा गायना शरीरना जेवी मरीने सडवा भाडेखा इतराना शरीरना जेवी मरीने सडवा भाडेखा मिलाडाना शरीरना जेवी, मरीने सडता भाएसना शरीरना जेवी, मरीने सडता पडाना शरीरना जेवी, मरीने सडता उदरना शरीरना जेवी, मरीने सडता घाडाना शरीरना जेवी, मरीने सडी गयेखा डाथीना शरीरना जेवी,

મિતા 'મત્થયચ્છિદ્ધ' મસ્તકચ્છિદ્રા મસ્તકોપરિભાગે છિદ્રયુક્તા 'પડમુપ્પલપ્પિહાણ' પડ્મોત્પલપિધાનાં=રક્તનીલકમલાંનિ પિધાનાંનિ મસ્તકચ્છિદ્રસ્યાન્ઢાદનાંનિ યસ્યા સ્તા પ્રતિમા = સ્વતુલ્યકૃતિકપુત્તલિકા કારયતિ = શિલ્પકારંનિર્માપયતિ । કાર યિત્વા સા મહ્તી કુમારી યદ્ 'વિઝલ' વિપુલ=વહુલમ્, અશનપાનલાઘ સ્વાદ્ય= ચતુર્વિધમાહારમ્ આહારયતિ=ભુજ્યતે, તત તસ્માત્-'મણુન્નાઓ' મનોજ્ઞામ્ પ્રિય રસયુક્તાત્ અશનપાનલાઘસ્વાદ્યાત્ ચતુર્વિધાદારમખ્યાત્ 'કલ્લાકલ્લિ' કલ્યાકલ્લિય દિને દિને, એકમેક પિણ્ડ=ગ્રામ ગૃહીત્વા, તસ્યાઃ કનકમય્યાઃ મસ્તકચ્છિદ્રાયા યાવત્ પ્રતિમાયા મસ્તકે=મસ્તકોપરિભાગવર્તિનિ રન્ત્રે પ્રક્ષિપન્તી=એકમેક ગ્રાસ નિપાતયન્તી 'વિહરહ' વિહરતિ=આસ્તે રમ । તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ તમ્યા કનક

વવેય કણગમહ મત્થયચ્છિદ્ધ પડમુપ્પલપ્પિહાણ પહિમ કરેહ) ઉસ માણિપીઠિકા કે ઝપર અપની જેસી-અપની જેસી વઘવાલી અપને શરીર કે સદૃશ પ્રમાણવાલી, અપને જેસે લાવણ્ય આદિ ગુણો વાલી એક સુવર્ણ નિર્મિત પુત્તલિકા શિલ્પિયો સે બનવાઈ । ઉસકે મસ્તક મેં ણક વઢા સા છેદ રાખવાયા । વહ છેદ રક્ત નીલ કમલ રૂપ ઢક્કન સે ઢકા હુઆ થા । (કરિત્તા જ વિઝલ અસણ પાણ લાઝમ સાહમ આહારેહ તઓ મણુન્નાઓ અસણ ૪ કલ્લાકલ્લિલ ણગ દ્વારેણ પિગ્ગહાય વિહરહ) જવ હસ પ્રકાર કી પુત્તલિકા બનકર તૈયાર હો ચુકી-તવ ઉસ મલ્લી કુમારી ને વિપુલ માત્રા મેં અશન, પાન, તાપ્ય ઓર સ્વાદ્ય રૂપ ચતુર્વિધ આહાર તૈયાર કરવાયા ઓર સ્વયં લાગા-લાદ મેં ઉસ પ્રિયરસયુક્ત આહાર મેં સે પ્રતિદિન વહ ણક એક ગ્રામ કો લેકર ઉસ મસ્તક છિદ્ર વાલી સુવર્ણ કી પુત્તલિકા કે ઉસ મસ્તકોપરિભાગવર્તી છેદ મેં ઢાલને લગી-(તણ

જોવ્વણગુણોવવેય કણગમહ મત્થયચ્છિદ્ધ પડમુપ્પલપ્પિહાણ પહિમ કરેહ)

તે મણિ પીઠિકા ઉપર શિલ્પ શાસ્ત્રીઓ પાસેથી પોતાના જેવી પોતાના જેવા આયુષ્યની, પોતાના શરીર જેવા પ્રમાણની પોતાના જેવા લાવણ્ય વગેરે શુભોવાળી એક સોનાની પૂતળી બનાવડાવી તેના માથામા એક મોટું કાણું રખાવ્યું તે કાણું રક્તનીલ કમળના ઢાઢણાથી ઢાકેલું હતું

(કરિત્તા જ વિઝલ અસણ પાણ લાઝમ સાહમ આહારેહ તઓ મણુન્નાઓ અસણ ૪ કલ્લાકલ્લિલ ણગદ્વારેણ પિગ્ગહાય વિહરહ)

જ્યારે આરીતે સોનાની પૂતળી તૈયાર થઈ ગઈ ત્યારે મહલ્લી કુમારીએ અશન પાન ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ આર બીજાને પુષ્કળ પ્રમાણમા આહાર તૈયાર કરાવડાવ્યો, અને હુ મેશાં તે આહારમાથી પોતે જમતી, અને ત્યાર બાદ તેમાથી એક કોળીઓ લઈને કાણુવાળી સોનાની પૂતળીના

मय्या यावत् मस्तकच्छिद्राया प्रतिमायामेकैकस्मिन् पिण्डे प्रक्षिप्यमाणे प्रक्षिप्यमाणे सति ' तओ ' ततः=तस्या पुत्तलिकाया सकाशाद् गन्धः=दुर्गन्धः पाउब्भवइ ' मादुर्भवति=वहिर्निस्सरति स्म । सदृष्टान्त पुत्तलिका वर्णयति-तद् यथानामकम्=यथा दृष्टान्तम्-' अहिमडेइ वा ' अहिमृतक इति वा यावत्-अत्र यावच्छब्देन-' गोमडेइ वा, सुणगमडेइ वा, मज्जारमडेइ वा, मणुस्समडेइ वा, महिसमडेइ वा, मूसगमडेइ वा, आसमडेइ वा, हत्थिमडेइ वा सीहमडेइ वा, वाघमडेइ वा, विगमडेइ वा, दीविमडेइ वा, इति सङ्ग्रहः ' गोमृतक इति वा, शुनकमृतक इति वा, मार्जारमृतक इति वा, मनुष्यमृतक इति वा, महिषमृतक, इति वा मूपकमृतक इति वा, अश्वमृतक इति वा, हस्तिमृतक इति वा, सिंहमृतक इति वा, व्याघ्रमृतक

तीसे कणगमत्तीए जाव मच्छयछिद्राए पडिमाण एगमेगसि पिंड पक्खिप्पमाणे २ तओ गधे पाउब्भवइ) इस प्रकार करते करते उस सुवर्ण मयी पुत्तलिका मे मस्तक के छेद द्वारा पिंड पहुँच ने पर उस पुत्तलिका से दुर्गन्ध निकल ने लगी ।

(से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणाम तराए) वह दुर्गन्ध ऐसी थी-जैसी मरे हुए सर्प के सड जाने की होती है । यहाँ यावत् शब्द से " गोमडेइ वा, सुणगमडेइ वा " इत्यादि का संग्रह हुआ है ।

इसका अर्थ इस प्रकार है-वह दुर्गन्ध गाय के मरे हुए सडे कलेवर की होती है मरे हुए कुत्ते के सडे कलेवरकी होती है, मरे हुए बिलाव के सडे कलेवर की होती है, मनुष्य के मरे हुए सडे कलेवर की होती है, महिष के मरे हुए सडे कलेवर की होती है, मरे हुए चूहे के सडे कलेवर की होती है, मरे हुए घोडे के सडे कलेवर की

भाथाना डाण्णाना नाभती (तएण तीसे कणगमत्तीए जाव मच्छय छिद्राए पडिमाण एगमेगसि पिंडे पक्खिप्पमाणे २ तओ गधे पाउब्भवइ) आरीते सोनानी भूतणीभा हररोज्ज ओक ओक कोणीये। नाभवाथी तेभाथी दुर्गन्ध नीडणवा लागी (से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणामतराए) भरेला अने सडेला सापना जेवी ते दुर्गन्ध डती अडी यावत् शब्दथी ' गोमडेइवा, सुणगमडेइवा ' वगेरेने। अग्रउ यथे छे आने। अर्थ आ प्रमाणे थाय छे के भरीने सडी गयेला गायना शरीरना जेवी भरीने सडवा भाडेला इतराना शरीरना जेवी भरीने सडवा भाडेला मिलाडाना शरीरना जेवी, भरीने सडता माणुसना शरीरना जेवी, भरीने सडता पडाना शरीरना जेवी, भरीने सडता उडरना गरोरना जेवी, भरीने सडता घोडाना शरीरना जेवी, भरीने सडी गयेला डायीना शरीरना जेवी,

इति वा, वृकमृतक इति वा, द्वीपिमृतक इति वा, इतिञ्जया, ण्णां मृतसर्पादि
कलेवराणां दुर्गन्धः खलु यादृशोऽनिष्टः प्रादुर्भवति ' एतो ' एतस्माद् ' अणि
वृतराए ' अनिष्टतर अधिकस्तीव्रः, अतएव ' अमणामतराए ' अमनभामतरा-
मनसोऽति प्रतिकूलो दुर्गन्धस्तस्याः पुत्तलिकाया अभवदित्यर्थः ॥ सू० १४ ॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसलणामं जणवए,
तत्थ णं सागेए नाम नयरे, तस्स णं उत्तरपुरात्थिमे दिस्सी-
भाए, एत्थ णं मह एगे णागघरए होत्था दिव्वे सच्चे सच्चो
वाए संनिहियपाडिहेरे, तत्थ ण नयरे पडिवुद्धिनामं इक्खाणु-
राया परिवसइ, पउमावई देवी सुवुद्धी अमच्चे सामदडभेय-
कुसले, तएण पउमावईए देवीए अन्नया कयाइ नागजन्नए
यावि होत्था । तएणं सा पउमावई नागजन्नमुवट्ठिय जाणित्ता
जेणेव पडिवुद्धी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल
परिग्गहिय सिरसावत्त दसनह मत्थए अंजलि कट्ठु एव वयासी
—एव खलु सामी । मम कल्ल नागजन्नए यावि भविस्सइ, त

होती है, मरे हुए हाथी के सड़े कलेवर की होती है, मरे हुए सिंह के
सड़े कलेवर की होती है, मरे हुए व्याघ्र के सड़े कलेवर की होती है
वृक और द्वीपि के सड़े कलेवर की होती है । इन मृत सर्पों के
सड़े हुए कलेवरों की दुर्गन्ध जिस प्रकार अनिष्ट होती है उसी प्रकार
इससे भी अनिष्टतर वह पुत्तलिका से निकलती हुई दुर्गन्ध थी—अमन
आमतर थी मन को जरा सी भी रुचे ऐसी नहीं थी—किन्तु मन के
अतिसर्वथा प्रतिकूल थी । सूत्र “ १४ ”

મરીને સડી ગયેલા સિંહના શરીરના જેવી, મરીને સડી ગયેલા વાઘના
શરીરના જેવી મરીને સડી ગયેલા વરુ અને દીપડા (દ્વીપિ)ના શરીરના જેવી,
મરીને સડી ગયેલા સાપ વગેરેના શરીરના જેવી અનિષ્ટકારી દુર્ગન્ધ હોય છે
તેવી જ અને તેઓના કરતા પણ વધારે અનિષ્ટતર પૂતળીમાથી નીકળતી
દુર્ગન્ધ હતી મનને એકદમ અણુગમે થાય તેવી સર્વથા પ્રતિકૂળ તેમાથી
નીકળતી દુર્ગન્ધ હતી ॥ સૂત્ર “ ૧૪ ” ॥

इच्छामि णं सामी । तुव्भेहि अवभणुन्नाया समाणी नागजन्नय
गमित्तए, तुव्भेवि णं सामी । मम नागजन्नयसि समोसरहा
तएणं पडिबुद्धी पउमावईए देवीए एयमट्ट पडिसुणेइ । तएण
पउमावई पडिबुद्धिणा रन्नो अवभणुन्नाया हट्टतुट्ट जाव कोडु
वियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणु-
प्पिया । मम कल्ल नागजणणए भविस्सइ तं तुव्भे मालागारे
सदावेह, सदावित्ता एवं वदह एव खलु पउमावईए देवीए कल्ल
नागजणणए भविस्सइ, त तुव्भे णं देवाणुप्पिया । जलथलय०
दसद्धवन्नं मल्ल णागघरयसि साहरह, एगं च णं मह सिरिदा-
मगंड उवणेह । तएणं जलथलय दसद्धवन्नेणं मल्लेणं णाणा-
विह भत्तिसुविरडय हसमियमउरकोच सारसचक्रवायमयणसाल
कोइलकुलोववेयईहामियजावभत्तिचित्त महग्घ महरिह विपुलं
पुप्फमंडवं विरएह तस्सणं बहुमज्झदेसभाए एग मह सिरिदा-
मगड जाव गधधुणिं मुयत उल्लोयंसि ओलंवेह, ओलवित्ता
पउमावई देवि पडिवालेमाणा २ चिट्ठह । तएणं ते कोडुविया
जाव चिट्ठति ॥ सू० १५ ॥

टीका--‘ तेण कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये कोसला-
नाम जनपदः देश आसीत्, तत्र खलु साकेतनामक नगरमासीत् । तस्य साकेत

‘ तेणं काले ण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ--(तेण काले ण तेण समएण) उस काल और उस
समय में (कोसला नाम जणवए) कोशल नामका जन पद-देश था ।

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि

टीकार्थ--(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते वधते (कोसल नाम
जणवए) देशका नामे जनपद (देश) छेने । (तत्थण सागेए नाम नयरे)

नगरस्य खलु उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे=ईशानकोणे अत्र खलु महदेक नागगृहमासीत्
तत् कीदृशमित्यात-दिव्य=प्रधानं, सत्य कामनापूरुत्वात् 'सच्चोवाए' सत्यावशात्
=सत्याभिलाष, 'सनिहियपाडिहेरे' सनिहितमातिहार्यै=सनिहित विनिवेशित
मातिहार्यं प्रतीहारकर्म व्यन्तरदेवेन यस्मिन् तत्तथा देवाधिष्ठितमित्यर्थः । तत्र
खलु नगरे=साकेतनगरे प्रतिबुद्धिनामा इक्ष्वाकुराजः=इक्ष्वाकुवंशीयो राजा परिव
सति । पद्मावती देवी तस्य भार्याऽऽसीत् । 'सुबुद्धिः अमच्चे' सुबुद्धिनामक
स्तस्यामात्य =मन्त्री, स कथंभूत इत्याह-'सामदडभेयकुसले' सामदण्डभेदकुशलः

(तत्थण सागेण नाम नगरे) उस में साकेत नाम का नगर था । (तस्स
ण उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाण-एत्थण मह एगे णागधरण् होत्था दिव्वे
सच्चे सच्चोवाए सति हियपाडिहेरे) उस के ईशान कोण में
विशाल नागघर था ।

यह दिव्य और प्रत्येक व्यक्ति की कामना का पूरक होने से सत्य
था । जो भी कोई कामना-अभिलाषा-इसके समक्ष करता वह उस की
सफल हो जाती-सत्य हो जाती-इसलिये यह सत्याभिलाष था । इसके
द्वार पर व्यन्तरदेव प्रतिहार के रूप में खड़े रहते थे इसलिये यह सनिहित
प्रतिहार्य था । (तत्थण नगरे पडिबुद्धी नाम इक्खागु राया परिवसइ,
पडमावई देवी सुबुद्धी अमच्चे सामदडभेयकुसले) उस साकेत (अ
योध्या) नगर में इक्ष्वाकुवंश से उत्पन्न प्रतिबुद्ध नाम का राजा रहता
था । इस की भार्या का नाम पद्मावती था । अमात्य का नाम सुबुद्धि था ।

तेभा साकेत नामे नगर उतु

(तस्सण उत्तर पुरत्थिमे दिसी भाण-एत्थण मह एगे णागधरण् होत्था)
दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सतिहिय पडिहेरे)

तेना ईशान कोणुमा ऐक मोटु नागधर उतु

ते दिव्य अने दरेके दरेक भाणुसनी धम्मिअने पूरी करनार होवाथी सत्य
उतु गमे ते व्यक्ति पोतानी धम्म-कामना-तेनी सामे प्रकट करतो, तेनी
धम्म ते बोद्धस पूरी पाउतु उतु तेनी कामना सक्षण तेमज्ज सत्य थती
उती अथी ज ते सयाभिलाष उतु व्यन्तर देवे तेना द्वारे प्रतिहारना
इयमा बिला रहता उता अथी ज ते सनिहित प्रतिहार्य उतु

(तत्थण नगरे पडिबुद्धीनाम इक्खागुराया परिवसइ, पडमावई देवी सुबुद्धी
अमच्चे सामदडभेयकुसले)

साकेत नगरमा इक्ष्वाकुवंशमा जन्मेवे प्रतिबुद्ध नामे राजा रहने
उतो तेनी भार्यातु नाम पद्मावती उतु तेना अमात्य (मन्त्री) तु नाम
सुबुद्धि उतु

साम=सान्त्वनप्रयोगः, दण्डः=युद्ध, भेदः=शत्रुपक्षे मन्त्रिसैनिकादिभिर्निरोधोत्पादनम्, तेषु कुशलः=निपुण । ततस्तदनन्तर खलु पद्मावत्यादेव्या अन्यदा कदाचित् नागयज्ञऋष्याप्यासीत्=नागमहोत्सव दिवस समायात इत्यर्थः । ततस्तदा खलु सा पद्मावती देवी नागयज्ञ नागमहोत्सवदिवसम्, उपस्थित=समायात ज्ञात्वा यत्रैव प्रतिबुद्धिर्नाम इक्ष्वाकुराजस्तत्रैवोपागच्छति । उपागत्य करतल परिगृहीत शिरः आवर्त्त दशनख मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे स्वामिन् । एव खलु मम कलये आगामिदिवसे नागयज्ञऋष्यापि भविष्यति, तद्=तस्मात् इच्छामि

यह अमात्य साम, दण्ड, और भेद नीति में कुशल था । शत्रु को शांति से वश करना यह साम नीति है, युद्ध से वश करना-उसे परास्त कर अपने आधीन बनाना-यह दण्ड नीति है-शत्रु की सेना में मंत्री तथा सैनिकों में विरोध उत्पन्न कराना इस का नाम भेद है । (तएणं पउमावईए देवीए अन्नया कयाइ नागजन्नए यावि होत्था) एक समय की बात है कि पद्मावती देवी के यहा नागयज्ञ के महोत्सव का दिन आया । (तएण सा पउमावई नागजन्न सुवट्ठिय जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धी-तेणेव उवागच्छइ) अतः वह पद्मावती देवी नाग यज्ञ-नागमहोत्सव-का दिन आया हुआ जान कर जहाँ अपने पति प्रतिबुद्धि राजा थे वहा गई । (उवागच्छित्ता करयल परिगगहिय सिरसावत्त दसनह मत्थए अजलिं कट्ठु एव वयासी) वहा जाकर उस ने राजा को दोनों हाथों की अजलि बनाकर और मस्तक पर रखकर नमस्कार किया-बाद में वह इस प्रकार कहने लगी- (एव खलु सामी मम कल्ल नाग जन्नए

ते अमात्य साम दण्ड तेभज्जे वेद नीतिमा कुशल इतो शत्रुने शांतिथी वशकरवो ते सामनीति छे युद्ध लडीने वश करवो, तेने उराववो अने पोताने अधीन करवो ते दण्डनीति ते शत्रुनी सेनामा मंत्री तेभज्जे सैनिकोमा विशेध उत्पन्न करवो ते वेद नीति छे (तएण पउमावईए देवीए अन्नया कयाइ नागजन्नए याविहोत्था) ओक समयनी बात छे के पद्मावती देवीने त्या नागयज्ञ ने महोत्सव दिवस आयो । (तएण सा पउमावई नागजन्नसुवट्ठिय जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धि तेणेव उवागच्छइ) नाग महोत्सव ना दिवसनी जाणु थता पद्मावती देवी प्रतिबुद्ध राजानी पासो गछ (उवागच्छित्ता करयलपरि गहिय सिरसावत्त दसनह मत्थए अजलिं कट्ठु एव वयासी) त्या जेने तेले जेने उथोनी अजलि बनावीने तेने मस्तके भूडीने नमस्कार कर्या अने त्यारपछी कहु

(एव खलु सामी मम कल्ल नाग जन्नए यावि भविस्सइ त इच्छामि णं

खलु स्वामिन् ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता=भादिष्टासती नागयज्ञक गन्तु नागमहोत्सव
 कर्तुं=नागगृह गन्तुम् 'इच्छामी' ति पूर्वेण समन्वयः । हे स्वामिन् ! यूयमपि खलु
 मम नागयज्ञे=नागपूजाया समवसरत=भागच्छत यत्तु 'मया सार्धं समागच्छत
 इत्यर्थः' इति व्याख्यात तत् प्रमादिकम् पश्चात्त्या उक्तिं स्वीकृत्य हि राज्ञः पश्चा
 द् गमनपर शास्त्र विरुध्येत । ततस्तदनन्तर खलु स प्रतिबुद्धिः प्रतिबुद्धिनामको
 नृप पश्चात्त्या देव्या एतमर्थम्=प्रार्थनारूप प्रतिशृणोति=स्वीकरीतिस्म । ततः
 खलु पश्चात्ती प्रतिबुद्धिना राज्ञाऽभ्यनुज्ञाता दृष्टा तुष्टा० यावत् कौटुम्बिकपुरुषान्
 आज्ञाकारिणः पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एव=रक्ष्यमाण
 प्रकारेणावादीत्- हे देवानुप्रियाः ! एव खलु मम कलये नागयज्ञको भविष्यति,

यावि भविस्सइ, त इच्छामिणं सामी ! तुव्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी
 नागजन्मए य गमित्तए) स्वामीन् ! कल नागमहोत्सव होगा-मैं कल
 नाग महोत्सव मनाऊँगी-अतः आपसे आज्ञा लेने आई हूँ अतः आप
 आज्ञा दे तो मैं कल नाग महोत्सव मनाने के लिये नाग गृह जाऊँ । हे
 स्वभिन् ! आप भी मेरे इस उत्सव में पधारें ।

(तएण पडिबुद्धी पउमावईए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ) पश्चावती
 देवी के इस कथन को सुनकर प्रतिबुद्धि राजा ने उस के प्रार्थना रूप
 अर्थ को स्वीकार कर लिया (तएण पउमावई पडिबुद्धिणा रत्ता अब्भ-
 णुन्नाया हट्ठ तुट्ठ जाव कोटुम्बिय पुरिसे सदावेइ) इस के अनन्तर प्रतिबुद्धि
 राजा से आज्ञापित हुई वह पश्चावती देवी बहुत अधिक हर्षित एव
 सतुष्ट हुई । यावत् उस ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सदावित्ता एव
 वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मम, कल्ल नागजण्णए भविस्सइ,

सामी ! तुव्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी नागजन्मएय गमित्तए)

हे स्वामिन् आवती काले भारे त्या नाग महोत्सव थरे हु आवती
 काले महोत्सव उज्जववानी छु ऐथी नाग महोत्सव उज्जववानी तभारी पासैथी
 आज्ञा भेजववा आवी छु तभारी आज्ञा थाय तो हु आवती काले नाग
 महोत्सव भाणुवा नागधर जठि हे स्वामि ! उत्सवमा पधारवा तभने पणु
 हु आमत्रणु आपु छु

(तएण पडिबुद्धि पउमावईए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ) पश्चावती पु
 कथन सावलीने प्रतिबुद्धि राजाके तेनी विनती स्वीकारी लीधी " तएण
 पउमावई पडिबुद्धिणा रत्ता अब्भणुन्नाया हट्ठतुट्ठ जाव कोटु बियपुरिसे सदावेइ "
 प्रतिबुद्धि राजा वडे आज्ञाकित थयेली राज्ञी पश्चावती देवी भूषण्ण हर्षित
 तेभण्ण सतुष्ट थछ यावत् तेणु कौटुम्बिक पुरुषोने जालाव्या

तद्=तस्मात् यूय मालाकारान् शब्दयत, शब्दयित्वा एव उदत-एव खलु पद्मावत्या
देव्याः कल्ये=प्रभाते नागयज्ञक =नाग महोत्सवो भविष्यति तद्=तस्माद् यूय खलु
हे देवानुप्रियाः जलस्थलजभास्वरप्रभूत जलोत्पन्न विकसित प्रचुरदशार्ध वर्ण=पञ्च-
वर्णमाल्य कुसुमजातमाल्य च नागगृहे सहरत=समानयत एकच खलु महत् श्रीदाम-
काण्डमुपनयत समानयत । तत खलु जलस्थलज भास्वर प्रभूतेन दशार्धवर्णेन
माल्येन 'णाणाविहभत्तिषु विरइय'नानाविव भक्ति सुरचितम् अनेकप्रकारकचित्ररचना
सुशोभित, पुष्पमण्डप विरचयतेति सम्बन्ध', पुनः कथंभूत तदित्याह-'हसमियमउ
रकोच सारसचक्रवायमयणमालकोइलकुलोववेय ' हसमृगमयूरकोश्वसारसचक्रवाक
मदन शालकोकिञ्च कुओपपेतम्-ह सादि कोकिलान्ताः प्राग् व्याख्याताः, तेषां कुलै
समूहैश्चित्ररूपैरुपपेत्त युक्त, 'ईहामियजारभत्तिचित्त ' ईहामृग यावद् भक्तिचित्रम्

त तुम्हे मालागारे सदावेह, सदावित्ता एव उदह एव खलु पद्मावर्द्ध
देवीए कल नाग जण्णए भविस्सइ) बुलाकर उन से उस ने ऐसा कहा
देवानुप्रियो ! मेरे यहाँ कल नागमहोत्सव होगा-इसलिये तुम लोग
मालियो को बुलाओ-और बुलाकर उन से ऐसा कहो-कि पद्मादेवी के
कल नाग यज्ञ होगा । (त तुम्हेण देवाणुप्पिया ! जल थलय० दसद्धवन्न
मल्ल णागधरयसि साहरह) सो तुम सब हे देवानुप्रियो ! जलथल में
उत्पन्न हुए विकसित पञ्चवर्णों के पुष्पो को नागधर पर पहुँचाओ
और साथ में एक महान् श्रीदामकाण्ड को भी । (तएण जलथल०
दसद्धवने ण मल्लेण णाणा विहभत्तिषु विरइय हंस मिय मउर कोच
सारसचक्रवायमयणमालकोइलकुलोववेय ईहामिय जाव भत्तिचित्त

“ सदावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया मम कल नाग जण्णए
भविस्सइ, त तुम्हे मालागारे सदावेह सदावित्ता एव उदह एव खलु पद्मावर्द्ध
देवीए कल नागजण्णए भविस्सइ ”

जोलावीने तेमने इह- “ देवानुप्रियो ! भादे त्या आवती डावे नाग
महोत्सव थशे अथी तमे भाणीअने जोलावे अने जोलावीने तेमने अ
प्रभासे इहो के डावे पद्मावती देवीने त्या नाग महोत्सव थशे (त तुम्हेण
देवाणुप्पिया ! जल थलय दसद्धवन्न मल्ल णागधरयसि साहरह) तो हे
देवानुप्रियो ! तमे अधा जण थणमा उत्पन्न थयेला पाथ गोना पुष्पेने
अने श्रीदामनाउने नागधरेमा पडोयाडे।

“ तएण जल थल० दसद्धवन्ने ण मल्लेण णाणाविह भत्तिषु विरइय हंस
मियमउर काँच सारस चक्रवायमयणमाल कोइलकुओववेय ईहामिय जाव
भत्ति चित्त महग्व गहरिह विपुल पुष्पमण्डप विरएह)

खलु स्वामिन् ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता=आदिष्टासती नागयज्ञक गन्तु नागमहोत्सव
कर्तुं=नागगृह गन्तुम् 'इच्छामी' ति पूर्वेण रामन्वयः । हे स्वामिन् ! यूयमपि खलु
मम नागयज्ञे=नागपूजाया समवसरत=भागच्छत यत्तु 'मया सार्धं समागच्छत
इत्यर्थः' इति व्याख्यात तत् ममादिकम् पद्मावत्या उक्तिं स्वीकृत्य हि राज्ञः पश्चा
द् गमनपर शास्त्र विरुध्येत । ततस्तदनन्तर खलु स प्रतिबुद्धिः प्रतिबुद्धिनामको
नृप पद्मावत्या देव्या एतमर्थम्=प्रार्थनारूप प्रतिशृणोति=स्वीकरोतिस्म । ततः
खलु पद्मावती प्रतिबुद्धिना राज्ञाऽभ्यनुज्ञाता दृष्टा तृष्ठा० यावत् कौटुम्बिकपुरुषान्
आज्ञाकारिणः पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एव=यक्ष्यमाण
प्रकारेणावादीत्- हे देवानुप्रियाः ! एव खलु मम कल्ये नागयज्ञको भविष्यति,

यावि भविस्सइ, त इच्छामिण सामी ! तुम्हेहिं अब्भणुन्नाया समाणी
नागजन्नए य गमित्तए) स्वामीन् ! कल नागमहोत्सव होगा-मैं कल
नाग महोत्सव मनाऊँगी-अतः आपसे आज्ञा लेने आई हूँ अतः आप
आज्ञा दे तो मैं कल नाग महोत्सव मनाने के लिये नाग गृह जाऊँ । हे
स्वामिन् ! आप भी मेरे इस उत्सव में पधारें ।

(तएण पडिबुद्धी पउमावईए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ) पद्मावती
देवी के इस कथन को सुनकर प्रतिबुद्धि राजा ने उस के प्रार्थना रूप
अर्थ को स्वीकार कर लिया (तएण पउमावई पडिबुद्धिणा रत्ता अब्भ
णुन्नाया हट्ठ तुट्ठ जाव कोटुब्बिय पुरिसे सदावेइ) इस के अनन्तर प्रतिबुद्धि
राजा से आज्ञापित हुई वह पद्मावती देवी बहुत अधिक हर्षित एवं
संतुष्ट हुई । यावत् उस ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सदावित्ता एव
वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मम, कल्ल नागजण्णए भविस्सइ,
सामी ! तुम्हेहिं अब्भणुन्नाया समाणी नागजन्नएय गमित्तए)

हे स्वामिन् आवती काले भारे त्या नाग महोत्सव थसे हु आवती
काले महोत्सव उज्जववानी छु अथी नाग महोत्सव उज्जववानी तमारी पासैथी
आज्ञा भेजववा आवी छु तमारी आज्ञा थाय तो हु आवती काले नाग
महोत्सव भाणुवा नागधर न्ठउ हे स्वामि ! उत्सवमा पधारवा तमने पणु
हु आभत्रणु आपुं छु

(तएण पडिबुद्धि पउमावईए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ) पद्मावती उ
कथन साधुजीने प्रतिबुद्धि राजासे तेनी विनती स्वीकारी लीधी " तएण
पउमावई पडिबुद्धिणा रत्ता अब्भणुन्नाया हट्ठ तुट्ठ जाव कोटुब्बिय पुरिसे सदावेइ "
प्रतिबुद्धि राजा वडे आज्ञाकित थयेली राज्ञी पद्मावती देवी भूण्ण हर्षित
तेमन् सतुष्ट थय यावत तेणु कौटुम्बिक पुरुषोने ओलाव्या

तद्=तस्मात् यूय मालाकारान् शब्दयत, शब्दयित्वा एव वदत-एव खलु पद्मावत्या
देव्याः कल्ये=प्रभाते नागयज्ञक=नाग महोत्सवो भविष्यति तद्=तस्माद् यूय खलु
हे देवानुप्रियाः जलस्थलजभास्वरप्रभूत जलोत्पन्न विकसित प्रचुरदशार्ध वर्ण=पञ्च-
वर्णमाल्य कुसुमजातमाल्य च नागगृहे सहरत=समानयत एकच खलु महत् श्रीदाम-
काण्डमुपनयत समानयत । ततः खलु जलस्थलज भास्वर प्रभूतेन दशार्धवर्णेन
माल्येन 'णाणाविहभस्त्रिषु विरचय'नानाविव भक्ति सुरचितम् अनेकप्रकारकचित्ररचना
सुशोभित, पुष्पमण्डप विरचयतेति सम्बन्धः, पुनः कथंभूत तदित्याह-'हसमियमउ-
रकोच सारसचक्रवायमयणमालकोइलकुलोववेव ' हसमृगमयूरकोश्वसारसचक्रवाक
मदन शालकोकिञ्च कुलोपपेतम्-इ सादि कोकिलान्ताः प्राग् व्याख्याताः, तेषां कुलै
समूहैश्चित्ररूपैरुपपेत्त युक्त, 'ईहामियजावभत्तिचित्त ' ईहामृग यावद् भक्तिचित्रम्

त तुम्हे मालागारे सदावेह, सदावित्ता एव वदह एव खलु पद्मावर्द्ध
देवीए कल नाग जण्णए भविस्सइ) बुलाकर उन से उस ने ऐसा कहा
देवानुप्रियो ! मेरे यहाँ कल नागमहोत्सव होगा-इसलिये तुम लोग
मालियो को बुलाओ-और बुलाकर उन से ऐसा कहो-कि पद्मादेवी के
कल नाग यज्ञ होगा । (त तुम्हेण देवाणुप्पिया ! जल थलय० दसद्धवन्न
मल्ल णागघरयसि साहरह) सो तुम सब हे देवानुप्रियो ! जलथल मे
उत्पन्न हुए विकसित पञ्चवर्णों के पुष्पो को नागघर पर पहुँचाओ
और साथ मे एक महान् श्रीदामकाण्ड को भी । (तएण जलथल०
दसद्धव ने ण मल्लेण णाणा विहभत्तिषु विरचय हँस मिय मउर कोच
सारसचक्रवायमयणमालकोइलकुलोववेय ईहामिय जाव भत्तिचित्त

“ सदावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया मम कल नाग जण्णए
भविस्सइ, त तुम्हे मालागारे सदावेह सदावित्ता एव वदह एव खलु पद्मावर्द्ध
देवीए कल नागजण्णए भविस्सइ ”

जोलावीने तेमने इधु- “ देवानुप्रियो ! भादे त्या आवती आवे नाग
महोत्सव थगे अथी तमे भाणीअने जोलावेअने जोलावीने तेमने अ
प्रभावे उडे के आवे पद्मावती देवीने त्या नाग महोत्सव थगे (त तुम्हेण
देवाणुप्पिया ! जल थलय दसद्धवन्न मल्ल णागघरयसि साहरह) तो हे
देवानुप्रियो ! तमे अधा जण थणमा उत्पन्न थयेता पाथ जेना पुण्येने
अने श्रीदामकाण्डने नागघरेमा पहुँचाओ

“ तएण जल थल० दसद्धवन्ने ण मल्लेण णाणाविह भत्तिषु विरचय हँस
मियमउर काँच सारस चक्रवायमयणमाल कोइलकुलोववेय ईहामिय जाव
भत्ति चित्त महग्व गहरिह त्रिपुल पुष्पमण्डप विरचह)

अत्र यावच्छब्देन - ' ईहामृगेत्यनन्तर - वृषभतुरगमकरविहगव्यालकविभररुह
शरभकुञ्जरवनलतापद्मलता ' इतिपाठस्य ग्रहणम् । ईहामृगो वृषः, रुहसरभौ
मृगजातिविशेषौ अन्ये स्पष्टार्थाः तेषां भक्त्या चित्ररचनया चित्रम्-आश्चर्य
जनकम्, ' महग्ध ' महार्घ-महामूलक ' महरिह ' महार्ह=महता योग्य, विपुल
विस्तीर्णम्, ईदृश पुष्पमण्डप विरचयत कुरुतेत्यर्थः । तस्य पुष्पमण्डपस्य खलु
बहुमध्यदेशभागे-सर्वथा मध्यभागे एक महत् श्रीदामकाण्ड यावत् पाटलादिपुष्प
समूहसहितगन्धघ्राणि गन्धतर्प्तिं मुञ्चत्-मददत् ' उल्लोयसि ' उल्लोचे=चन्द्रा
तपे वस्त्रनिर्मितगृहाम्ब्यन्तरिवावरणे-' ओलवेह ' अवलम्बयत, ओलवित्ता अब

महग्ध महरिह विपुलं पुष्पमण्डप विरएह) इस के अनन्तर वे
सब जल थल के विकसित पंचवर्णों के पुष्पो से और अनेक प्रकार के
चित्रों की रचना से सुशोभित एक पुष्प मण्डप बनावे, इस मण्डप को वे
हस मृग, मयूर, कौच, सारस, चक्रवाक, मदनशाल कोकिल इन सब
के चित्रों से सुशोभित करें ईहा मृग-वृक, वृषभ, तुरग, मकर, विहग,
व्यालक-सर्प, किरर, एए, शरभ, कुजर-वनलता और पद्मलता इन के
चित्रों की रचना से उसे आश्चर्य कारक बनावें ।

वह पुष्प मण्डप कीमती महारूपों के योग्य, एव विस्तीर्ण हो ऐसा
बनावें । (तस्मिन् बहुमज्जदेसभाए एग मह सिरिदामगंड जाव गंध
द्वणि मुयत उल्लोलयसिओलवेह, ओलवित्ता पउमावइ देवीं पडि
वाले माणा २ चिट्ठह, तएण ते कोडुबिया जाव चिट्ठति) और उस के
ठीक मध्य भाग में तने हुए चढ़ोवा के नीचे एक बड़ा भारी श्रीदाम

अने तयार णाह जणथण ना विकास थयेला पयवण्णोना पुण्येथी तेमज्
जत जतना चित्रोनी रचनाथी शोभतो अेक पुण्ये ने भाउवे। अनावे हस,
भृग, भोर, कौच, सारस, चक्रवाक मदनशाल अने डो।ल आणधा पशु
पभीओ ना चित्रो थी भाउवाने शणुगारे तथा छंडाभृग, वरु, णणह, घोडो,
भजर, पक्षी व्यालक, (सर्प), जिनर, रुह, शरभ डुथी, वनलता, अने
पद्मलताना सुहर चित्रोथी भाउवाने अद्भुत रीते सुशोभित करे।

पुष्पमण्डप किमती तेमज् मंडापुरुषोने योग्य विशाण डोवे। जेधअे

(तस्मिन् बहुमज्जदेसभाए एग मह सिरिदामगंड जाव गंधद्वणि मुयत
उल्लोलयसि ओलवेह, ओलवित्ता पउमावइ देवी पडिवालेमाणा २ चिट्ठह,
तएण ते कोडुबिया जाव चिट्ठति)

अने ताणुला अहरवानी नीचे ठीक मध्यभागमा नाकने पोतानी सुवास
थी नृत्य करवनार अेक, णडु मोटो श्रीदामकांड लटकावे।

લઘ્વ પદ્માવતી દેવી ' પહિવાલેમાણા ' પ્રતિપાલયન્ત ૨ પ્રતીક્ષમાણાઃ પ્રતીક્ષમાણાસ્તિષ્ઠત । તતસ્તદનન્તર સ્વલુ તે કૌટુમ્બિકા કૌટુમ્બિકપુરુષા યાવત્-યથાપદ્માવત્યાસમાદિષ્ટ તથા કૃત્યા પદ્માવતીદેવી પ્રતીક્ષમાણાસ્તિષ્ઠન્તિસ્મા ॥ મુ० ૧૫ ॥

મૂલમ્-તણ્ણં સા પડમાવડે દેવી વહ્લં કોડુવિણ એવ વયાસી-સ્થિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા । સાગેય નગર સઘ્મિતર વાહિરિયં આસિત્ત સમજિઓવલિત્ત જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ તણ્ણં સા પડમાવડે દેવી દોચ્ચપિ કોડુવિયં સ્થિપ્પામેવ લહુકરણ-જુત્તં જાવ જુત્તામેવ ઉવટ્ટુવેહ, તણ્ણ તેઽવિ તહેવ ઉવટ્ટુવેતિ । તણ્ણં સા પડમાવડે દેવી અંતો અતે ઉરસિ પહાયા જાવ ધમ્મિય જાણ દુરુઢા, તણ્ણ સા પડમાવડે દેવી નિયગપરિવાલ સપરિ-વુડા સાગેય નગરમજ્ઝમજ્ઝેણં ણિજ્ઞાઈ, ણિજ્ઞિત્તા જેણેવ પુવ્વ-રણી તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા પુવ્વરણિં ઓગાહઈ, ઓગાહિત્તા જલમજ્ઞણં જાવ પરમસૂઈમ્ભૂયા ઉલ્લપડસાહિયા જાઈ

કાળ-પુષ્પો કા ગજરા-કિ જિસ સે નાસિકા ઇન્દ્રિય કો તૃપ્તિ કારક ગધ નિકલ રહી હો કો લટકાવે । લટકા કર ફિર મુદ્ધ-પદ્માવતી કી વહાં પ્રતીક્ષા કરતે હુણ ચેઠે રહે । ઇસ પ્રકાર ઉન કૌટુમ્બિકપુરુષો સે પદ્માવતી દેવી ને એસા કહા-પદ્માવતી દેવી કે ઇસ કથનાનુસાર સવ હી કામ ઉન કૌટુમ્બિક પુરુષો ને કિયા-અર્થાત્ માલિયો કો બુલાયા-ઔર ઉન સે ઇસ પૂર્વોક્ત પ્રકાર કે પુષ્પ મહપ કી રચના કરને કો કહા-ઉન્હો ને સત્ર કાર્ય વ્યવસ્થિત ઢગ સે કર દિયા ઔર પદ્માવતી દેવી કી પ્રતીક્ષા કરતે હુણ વે સવ વહાં ઠહરે રહે । સૂત્ર " ૧૫ "

લટકાવાને મારી-પદ્માવતી દેવીની બધા ત્યા પ્રતીક્ષા કરતા રોકાય આ પ્રમાણે પદ્માવતી દેવીએ કૌટુમ્બિક પુરુષોને નાગમહોત્સવ વિષે સૂચનો આપ્યા પદ્માવતી દેવીના આદેશ મુજબ કૌટુમ્બિક પુરુષોએ માળીઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને યથાયોગ્ય પુષ્પમહપ બતાવવાની આજ્ઞા આપી આ પ્રમાણે બધું કામ વ્યવસ્થિત રીતે પતાવીને પદ્માવતી દેવીની રાહ જોતા તેઓ ત્યા રોકાયા ॥ સૂત્ર " ૧૫ " ॥

અત્ર યાત્રચ્છબ્દેન - 'ઈદામૃગેત્યનન્તર - વૃષભતુરગમકરવિદગ-ચાલકવિષ્ણુરુશરભકુજરવનલતાપદ્મલતા' ઇતિપાટસ્ય ગ્રહણમ્ । ઈદામૃગો વૃકઃ, રુશરભી મૃગજાતિવિશેષો અન્યે સ્પષ્ટાર્થાઃ તેષા મત્તયા ચિત્રરચનયા ચિત્રમ્-આશ્ચર્ય જનકમ્, 'મહગ્ધ' મહાર્ધ-મહામૂલક 'મહરિહ' મહાર્દ્ધ=મહતા યોગ્ય, વિપુલ વિસ્તીર્ણમ્, ઈદમ્ પુષ્પમણ્ડપ વિરચયત કુરુતેત્યર્થઃ । તસ્ય પુષ્પમણ્ડપસ્ય સ્વલુ વહુમધ્યદેશભાગે-સર્વથા મધ્યભાગે એક મહત્ શ્રીદામગાંડ યાત્રત્ પાટલાદિપુષ્પ સમૂહસહિતગન્ધદ્રાણિ ગન્ધતૃપ્તિ મુશ્વત્-મદદત્ 'ઉલ્લોયસિ' ઉલ્લોચે=ચન્દ્રા તપે વસ્ત્રનિર્મિતમૃદાભ્યન્તરિકાવરણે-'ઓલવેહ' અવલમ્બયત, ઓલવિત્તા અવ

મહગ્ધ મહરિહ વિપુલ પુષ્પમણ્ડવ વિરણહ) હસ કે અનન્તર વે સ્વ જલ થલ કે વિકસિત પચવર્ણો કે પુષ્પો સે ઓર અનેક પ્રકાર કે ચિત્રોં કી રચના સે સુશોભિત એક પુષ્પ મણ્ડવ બનાવે, હસ મણ્ડવ કો વે હસ મૃગ, મયૂર, ક્રૌંચ, સારસ, ચક્રવાક, મદનશાલ કોકિલ હન સ્વ કે ચિત્રોં સે સુશોભિત કરે ઈદા મૃગ-વૃક, વૃષભ, તુરગ, મકર, વિદગ, વ્યાલક-સર્પ, કિન્નર, એ, શરભ, કુજર-વનલતા ઓર પદ્મલતા હન કે ચિત્રોં કી રચના સે હસે આશ્ચર્ય કારક બનાવે ।

વહ પુષ્પ મણ્ડવ કીમતી મહારુપો કે યોગ્ય, એવ વિસ્તીર્ણ હો એસા બનાવે । (તસ્મિન્ વહુમઝ્ઞદેસમાણ એમ મહ સિરિદામગાંડ જાવ ગંધ દ્વણિ મુચત ઉલ્લોલયસિઓલવેહ, ઓલવિત્તા પડમાવહ દેવી પડિ વાલે માણા ૨ ચિદ્વહ, તણ તે કોહુવિયા જાવ ચિદ્વતિ) ઓર હસ કે ઠીક મધ્ય ભાગ મે તને હુણ ચદોવા કે નીચે એક વહા મારી શ્રીદામ

અને ત્યાર બાદ જળથળ ના વિકાસ થયેલા પચવર્ણોના પુષ્પોથી તેમજ જાત જાતના ચિત્રોની રચનાથી શોભતો એક પુષ્પે નો માડવો બનાવે હસ, મૃગ, મેર, ક્રૌંચ, સારસ, ચક્રવાક મદનશાલ અને ડોંગલ આબધા પશુ પખીઓ ના ચિત્રો થી માડવાને શણગારે તથા ઇંડામૃગ, વરુ, બળદ, વોડો, મગર, પક્ષી વ્યાલક, (સર્પ), કિન્નર, રુરુ, શરભ હાથી, વનલતા, અને પદ્મલતાના સુદર ચિત્રોથી માડવાને અદ્ભુત રીતે સુશોભિત કરે

પુષ્પમણ્ડવ કીમતી તેમજ મહાપુરુષોને યોગ્ય વિશાળ હોવો જોઈએ

(તસ્મિન્ વહુમઝ્ઞદેસમાણ એમ મહ સિરિદામગાંડ જાવ ગંધદ્વણિ મુચત ઉલ્લોલયસિ ઓલવેહ, ઓલવિત્તા પડમાવહ દેવી પડિવાલેમાણા ૨ ચિદ્વહ, તણ તે કોહુવિયા જાવ ચિદ્વતિ)

અને તાણેલા ચદરવાની નીચે ઠીક મધ્યભાગમા નાકને પોતાની સુવાસ થી નૃત્ય કરાવનાર એક, બહુ મોટો શ્રીદામકાંડ લટકાવે

लम्ब्य पद्मावती देवीं ' पडिवालेमाणा ' प्रतिपालयन्त २ प्रतीक्षमाणाः प्रतीक्षमाणास्तिष्ठत । ततस्तदनन्तर खलु ते कौटुम्बिका कौटुम्बिकपुरुषा यावत्-यथापद्मान्त्यासमादिष्ट तथा कृत्वा पद्मावतीदेवीं प्रतीक्षमाणास्तिष्ठन्तिस्मा॥सू० १५॥

मूलम्-तएणं सा पउमावई देवी वल्ल० कोडुविण एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । सागेयं नगर सन्निभतर वाहिरियं आसित्त समज्जिओवलित्त जाव पच्चप्पिणंति तएणं सा पउमावई देवी दोच्चपि कोडुविय० खिप्पामेव लहुकरण-जुत्त० जाव जुत्तामेव उवट्टवेह, तएण तेऽवि तहेव उवट्टावेति । तएणं सा पउमावई देवी अंतो अते उरसि णहाया जाव धम्मियं जाण दुरुढा, तएण सा पउमावई देवी नियगपरिवाल सपरिवुडा सागेय नगरमज्झमज्झेणं णिज्जाइ, णिज्जित्ता जेणेव पुक्खरणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुक्खरणि ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं जाव परमसूइ भूया उल्लपडसाडिया जाइ

काण्ड-पुष्पो का गजरा-कि जिस से नासिका इन्द्रिय को तृप्ति कारक गव निकल रही हो को लटकावे । लटका कर फिर मुझ-पद्मावती की वहा प्रतीक्षा करते हुए बैठे रहें । इस प्रकार उन कौटुम्बिकपुरुषों से पद्मावती देवी ने ऐसा कहा-पद्मावती देवी के इस कथनानुसार सब ही काम उन कौटुम्बिक पुरुषों ने किया-अर्थात् मालियो को बुलाया-और उन से इस पूर्वोक्त प्रकार के पुष्प मंडप की रचना करने को कहा-उन्होंने सब कार्य व्यवस्थित ढंग से कर दिया और पद्मावती देवी की प्रतीक्षा करते हुए वे सब वहा ठहरे रहे । सूत्र " १५ "

लटकावाने भारी-पद्मावती देवीनी बधा त्या प्रतीक्षा कृता रोकाय आ प्रभाणे पद्मावती देवीओ कौटुम्बिक पुरुषोने नागमडोत्तमव विणे सूचने आभ्या पद्मावती देवीना आदेश मुग्धण कौटुम्बिक पुरुषोओ भाणीओने ओलाव्या अने ओलावीने तेमने यथायोग्य पुष्पमंडप बनाववानी आना आपी आ प्रभाणे अधु ठाम व्यवस्थित रीते पतावीने पद्मावती देवीनी राड लेता तेओ त्या रोकाया ॥ सूत्र " १५ " ॥

तत्थ उप्पलाइ जाव गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव नागघरए तेणेव
पहारेत्थ गमणाए, तएण, पउमावईए दासवंडीओ बहूओ
पुप्फपडलगहत्थगयाओ धूवकडुच्छुगहत्थगयाओ पिट्टओ सम-
णुगच्छति । तएणं पउमावई सट्ठिण्हिए जेणेव नागघरे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नागघरय अणुपविसइ, अणुपविसित्ता
लोमहत्थग जाव धूव उहइ, उहित्ता पडिवुडि पडिवालेमाणी
पडिवालेमाणी चिहइ ॥ सू० १६ ॥

टीका — ' तएण सा ' इत्यादि-ततस्तदनन्तर गलु सा पद्मावती देवी
कल्पे द्वितीयदिवसे प्रभाते कौटुम्बिका=जात्राकारिण. पुनपान् एव=वक्ष्यमाण-
प्रकारेणावादित्-भो देवानुमिया । क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव, साकेत नगर ' सर्भिभतर
वाहिरिय' माभ्यन्तरवाह्य=अभ्यन्तरेण-म यभागेन मइ वाय वहिर्भाग यत्र तत्-
' आसित्तसम्मज्जिओवलित्त ' आसित्त समार्जितोपलिप्त=आसित्त=सुगन्धितजलै-
रार्द्रीकृत समार्जित=मार्जन्यादिभिः कचयरापसारणेन निर्मलीकृतं पश्चादुपलिप्त

' तएणं सा पउमावई देवी इत्यादि ' ।

टीकार्थ-(तएण) इस के बाद (सा पउमावईदेवी) उस पद्मावतीदेवीने
(कल्ल कोडुविए एव वयासी) दूसरे दिन प्रातः काल उन कौटुम्बिक
पुरुषों से ऐसा कहा-(क्षिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सागेय नगर
सर्भिभतर वाहिरिय आसित्त सम्मज्जिओवलित्त जाव पच्चप्पिणेंति)
भो देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही साकेत नगर को भीतर बाहिर
सुगन्धित जल से सींचो, बूहारू लेकर उसे कूड़ा कर केट कचरा हटाकर
धिलकुल साफ करो, गोबर आदिसे उसे लीपों इस प्रकार पद्मावतीदेवी

' तएण सा पउमावईदेवी ' इत्यादि

टीकार्थ(तएण) त्थार भाइ (सा पउमावई देवी) पद्मावती देवाणे (कल्ल
कोडुविए एव वयासी) जीणे दिवसे सवारे डोटु णिउ पुरुषोने आ प्रभाणु उल्लु
(क्षिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सागेय नगर सर्भिभतरवाहिरिय आसित्त
सम्मज्जिओवलित्त जाव पच्चप्पिणेंति)

हे देवानुप्रियो ! तमे लोको सत्त्व साकेत नगरो नी णडार अने अहर
सुवासित पाणी छोटो सारणीथी उथरो अेठम माइ करो अने छाणु वगेरथी
लीपो पद्मावती देवीनी आशा सालणीने डोटु णिउ पुरुषोणे ते प्रभाणु न

गोमयादिनाऽनुलिप्त कुरुत यावत् प्रत्यर्पयन्ति-यथा-पद्मावती देव्या आदिष्ट
तथा कृत्वा ते कौटुम्बिका हे स्वामिन्य' सर्व साधितमस्मानिरिति-तदाज्ञा प्रत्यर्प-
यन्ति-आवेदयन्ति स्म । ततस्तदनन्तरं सा पद्मावती देवी ' दोच्चपि ' द्वितीय-
वारमपि कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयित्वा एवमवादित्-हे देवानुप्रियाः ! क्षिप्रमेव
' लहकरणजुत्त० ' लघुकरणयुक्त० यावद् युक्तमेव वृषभैर्युक्ता कृत्वा रथमुपस्थाप-
यत । ततस्तदनन्तरं खलु तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषा अपि यथा पद्मावत्या समादिष्ट
तथैव रथमुपस्थापयन्ति । तत खलु सा पद्मावती देवी अन्तोऽन्तःपुरे=अन्तः
पुरस्य मध्ये स्नाता यावद् सर्वालकारनिभूषिता धार्मिक यान=रथ, दुरुढा=आरो

के आदेश को पाकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने वैसा ही सब कुछ कार्य
यावत् कर दिया और पीछे पद्मावती के पास जाकर कहा-स्वमिनी !
आपने जैसा काम करने को कहा या हम ने वह काम वैसा ही कर
दिया है । (तएण सा पडमावई देवी दोच्चपि कौटुप्रिय० खिप्पामेव
लह करण जुत्त० जाव जुत्तामेव उवट्ठवेह, तएण ते वि तहेव उवट्ठवेति)
इसके बाद पद्मावती देवीने द्वारा भी उन कौटुम्बिक पुरुषोंको बुलाया
और बुलाकर कहा-ओ देवानुप्रियों ! तुम लोग शीघ्र ही जल्दी २ चाल
से चलने वाले बैलों को जोत कर यहा एक रथ को उपस्थित करो ।
पद्मावती की इस आज्ञा को पाकर वे कौटुम्बिक पुरुष भी पद्मावती के
आदेशानुसार रथ को बैलों से युक्त कर ले आये । (तएणं सा पडमा
वई देवी अतो अतेउरसि ण्हाया जाव वम्मिय जाणं दुरुढा) रथ
जब आ चुका-तब पद्मावती देवी ने अन्तः पुर के भीतर ही स्नान किया
यावत् समस्त अलकारों से आने आप को विभूषित कर फिर वह

कथुं अने त्थार भाद तेमनी पासे आवीने कडिवा लाग्या-हे स्वामिनि ! तमे
जे काम करवानी अभने आज्ञा आपी छती ते काम अभे जे सरस रीते
पूणुं करी दीधु छे

तएण सा पडमावईदेवी दोच्चपि कौटुप्रिय खिप्पामेव लहकरण जुत्ता०
जाव जुत्तामेव उवट्ठवेह तएण तेवि तहेव उवट्ठवेति)

त्थार भाद पद्मावती देवीजे भीछ वार कौटुजिक पुरुषोने जोला-या
अने जोलावीने कहु " हे देवानुप्रियो ! तमे सत्तरे शीघ्रगति वाजो णण्ड
नेतरिने जेउ रथ लावो पद्मावती देवीनी आग्रभाणे आज्ञा सालजाने कौटुजिक
पुरुषो पणु तेमनी आज्ञा मुअण गथमा णण्ड नेतरिने लध अ व्या (तएण
सा पडमावई देवी अतो अतेउरसि ण्हाया जब धम्मिय जाण दुरुढा) त्थारे
रथ सन्न थधने आवी गयो त्थारे पद्मावती देवीजे रणुवामनी अहर
स्नान कथुं यावत् सर्व प्रजरता धरेणुओधी पोताना गनीरने शणुगाधुं
अने त्थार पछी ते धार्मिक रथमा जेमी गर्ध

હતિસ્મ । તતઃ સ્વલુ સા પદ્માવતી દેવી નિઝકપરિમારસપરિશ્રુતા સહ્યાદિપરિ
વારેણ યુક્તા સાકેતનગર મધ્યમધ્યેન નિર્યાતિ=નિર્ગચ્છતિ । નિર્યાય=નિર્ગત્ય
યત્રૈવ પુષ્કરણી કમલયુક્તા યાપી વર્તતે તત્રૈયોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય પુષ્કરણીમવ
ગાદતે=પ્રવિશતિ । અગ્નાય જલમજ્જન યાવત્-સ્નાન કર્ત્વા પરમશુચિભૂતા 'ઉલ્લપ-
ઢસાડિયા' આર્દ્રપટશાટિકા, સાર્દ્રપરિધાનીયવસ્ત્રા યાનિ તસ્યા પુષ્કરિણ્યામૃત્ય
લાનિ યાવત્પદ્માદીનિ તાનિ ગૃહ્ણતિ ગૃહીત્વા યત્રૈવ નાગઘર વર્તતે તત્રૈવ પ્રધારયતિ
પ્રવર્તતે ગમનાય । તતસ્તદનન્તર સ્વલુ પદ્માવત્યા દાસવેદ્યો વદન્યઃ પુષ્પપટલ-
કહસ્તગતાઃ=હસ્તપરિશ્રુતપુષ્પકરબ્દકાઃ ધૂપકહ્નુકહસ્તગતા=ધૂપાધારપાત્રાણિ

ઉસ ધાર્મિક યાન પર રવ પર આરુઢ હો ગઈ । (તણ સા પડમાવઈ
દેવી નિયગપરિવાલ સપરિશુડા સાગેય નયર મજ્જ મજ્જે ણ ણિજ્જાઈ
ણિજ્જિત્તા જેણેવ પુસ્કરણી તેણેવ ઉવાગચ્છઈ) હસ કે ઘાદ પદ્માવતી
દેવી અપને પરિવાર સે ઘિરી દુઈ હોકર ઉસ સાકેત નગર કે ઠીક વીચો
ધીચ કે માર્ગ સે હોકર નિકલી-નિકલ કર વહ જહા કમલો સે યુક્ત
ઘાપી થી-વહાં પર આઈ-(ઉવાગચ્છિત્તા પુસ્કરણિ ઓગાહઈ) આકર
ઉસ ને ઉસ પુષ્કરિણી મેં પ્રવેશ ક્રિયા -(ઓગાહિત્તા જલમજ્જણ
જાવ પરમસુહમૂયા ઉલ્લ પડ સાડિયા જાઈ તથ ઉપ્પલાડ જાવ ગેણઈ)
પ્રવેશ કર જલ સ્નાન ક્રિયા યાવત્ પરમ શુચી ભૂત વની દુઈ ઉસ ને
ગીલી સાડી પાહ ને હી પુષ્કરિણી સે કમલ ચુન લિયે (ણિજ્જિત્તા જેણે
વ નાગધરણ તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણ) ચુન કર ફિર વહ જહા નાગ
ધર થા ઉસ આર ચલ દી-(તણ પડમાવઈણ દાસવેદીઓ વદ્ધઓ

(તણ સા પડમાવઈદેવીનિયગ પરિવાલસપરિશુડા સાગેય નયર મજ્જ
મજ્જેણ ણિજ્જાઈ ણિજ્જિત્તા જેણેવ પુસ્કરણી તેણેવ ઉવાગચ્છઈ)

ત્યાર બાદ પદ્માવતી દેવી પોતાના સપૂર્ણ પરિવારની સાથે સાકેત નગ
રીની બરા બર મધ્યમાર્ગમા થઈને પસાર થઈ અને જ્યાં કમળો યુક્ત વાવ
હતી ત્યાં પહોંચી (ઉવાગચ્છિત્તા પુસ્કરણિ ઓગાહઈ) ત્યાં પહોંચીને તે
પુષ્કરિણી (કમળવાવ) માં ઉતરી

ઓગાહિત્તા જલમજ્જણ જાવ પરમસુહમૂયા ઉલ્લ પડસાડિયા જાઈ તથ
ઉપ્પલાડ જાવ ગેણઈ)

ઉતરીને તેણે પાણીમા સ્નાન કર્યું યાવત તે પરમ પવિત્ર થઈને તેણે
લીના લુગડાથીજ પુષ્કરિણીમાંથી કમળો ચૂંટ્યા (ણિજ્જિત્તા જેણેવ નાગધરણ તેણેવ
પહારેત્થ ગમણાણ) ચૂંટ્યા બાદ પદ્માવતી દેવી જ્યાં નાગધર હતો તે તરફ ગઈ

હસ્તે ધૃતવત્યઃ પૃષ્ઠતઃ સમનુગચ્છન્તિ । તતઃ સ્વલ્લ મા પદ્માવતી દેવી સર્વદ્યૌર્ધા= સચ્ચિદાસ્યાદિપરિજનૈઃ સહ યત્રૈવ નાગગૃહ તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય નાગગૃહ- મનુપ્રવિશતિ, અનુપ્રવિશ્ય રોમહસ્તક્ર=મયૂરપિચ્છનિર્મિતમાર્જની ગૃહીત્વા નાગગૃહ સમાર્જ્ય યાવદ્ ધૂપ દહતિ, નાગગૃહાભ્યન્તરે સમન્તાત્ ધૂપ દહતિ સ્મ । ધૂપં દગ્ધ્વા પ્રતિબુદ્ધિ=પ્રતિબુદ્ધિનૃપ સ્વપતીં પ્રતિપલ્યન્તી પ્રતિપાલયન્તી=પુનઃ પુનઃ પ્રતીક્ષમાણા તિષ્ઠતિ સ્મ ॥ સૂ૦ ૧૬ ॥

પુષ્પપદ્મલગ્નહત્યગયાઓ ધૂવક્રુદ્ધગ્નહત્યગયાઓ પિટ્ઠઓ સમનુગ- ચ્છતિ) ઉસ કે પીછે ૨ ઉસ કી અનેક દાસ ચેટિયા પુષ્પ કરણ્ડોં કો ઓર ધૂપ કે પાત્રો કો હાથો મેં લિયે હુણ ચલી । (તણ પડમાવર્ડે સચ્ચિદ્ધિ જેણેવ નાગધરે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા નાગધરય અણુપવિસહ, અણુપવિસિત્તા લોમહત્યગ જાવ ધૂવ હહહ હહિત્તા પડિ બુદ્ધિ પડિવાલેમાણી ૨ ચિદ્દહ) હસ કે અનન્તર પદ્માવતી સચ્ચી, દાસી આદિ પરિજન રૂપ અપની મમસ્ત ક્રદ્ધિ કે સાથ જહા વહ નાગ ઘર યા વહાં આઈ-વહાં આકર વહ નાગ ઘર કે મીતર ગઈ મીતર જાકર ઉસ ને વહા રચી હુઈ મયૂર પિચ્છ નિર્મિત માર્જની કો ઉઠાયા-ઉઠા કર ઉસ ને ઉસસે ઉસ નાગધર કો જાહા જાહ કર ફિર ઉસ ને વહા યાવત્ ધૂપ જલાઈ । ધૂપ જલા કર ફિર વહ અપને પતિદેવ પ્રતિબુદ્ધિ રાજા કી પ્રતીક્ષા કરતી હુઈ બેઠ ગઈ । સૂત્ર ' ૧૬ '

(તણ પડમાવર્ડે દાસ ચેડીઓ વહૂઓ પુષ્પપદ્મલગ્નહત્યગયાઓ ધૂવક્રુ- દ્ધગ્નહત્યગયાઓ પિટ્ઠઓ સમનુગચ્છતિ)

તેની પાછળ ઘણી દાસ-દાસીઓ પુષ્પ-હરણકો તેમજ ધૂપદાનીઓ હાથેમા ઉચ્છી ચાલવા લાગી

(તણ પડમાવર્ડે સચ્ચિદ્ધિ જેણેવ નાગધરે તેણેવ ઉવાગચ્છહ ઉવાગચ્છિત્તા નાગધરય અણુપવિસહ અણુપવિસિત્તા લોમહત્યગ જાવ ધૂવ હહહ હહિત્તા પડિબુદ્ધિ પડિવાલેમાણી ૨ ચિદ્દહ)

આરીતે પદ્માવતી દેવી સખી દામી વગેરે પરિજન રૂપ પોતાની સંપૂર્ણ ક્રદ્ધિની સાથે જ્યા તે નાગધર હતો ત્યા પહોચી અને ત્યા પહોચીને તે નાગધરના અંદર ગઈ ત્યા જઈને તેણે મોરપીંછી હાથમા લીધી અને ત્યાર પછી તેણે નાગધરને સ્વચ્છ જનાવ્યું નાગધરની મક્કાઈ કરાને તેણે ધૂપ સળગાવેા અને પછી પોતાના પતિ પ્રતિબુદ્ધિની પ્રતીક્ષા કરતી ત્યા જ બેસી ગઈ સૂ ૧૬

मूढम्—तएण पडिबुद्धी पहाए हतिखधवरगते सकोरट जाव
 सेयवरचामराहिं० हयगयरहजोहमहयाभडगचडकरपहकरेहिं सा-
 केयनयरं० णिगच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव नागघरे तेणेव उवा-
 गच्छइ, उवागच्छित्ता हतिखधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता आ-
 लोए पणामं करेइ, करित्ता पुप्फमंडवं अणुपविसइ अणुपविसित्ता
 पासइ तं एगं महं सिरिदामगंड। तएण पडिबुद्धी त सिरिदाम-
 गंड सुइरं कालं निरिक्खइ, निरिक्खित्ता तंसि सिरिदामगंडंसि
 जाय विम्हयमणे सुबुद्धि अमच्चं एव वयासी-तुमन्न देवाणु
 प्पिया । मम दोच्चंण बहूणि गामागर जाव सन्निवेसाइं आहिं-
 ढसि बहूणि रायईसर जाव गिहाइं अणुपविससि त अतिथ णं
 तुमं कहिचि परिसए सिरिदामगंडे दिट्ठपुठ्वे जारिसए णं इमं
 पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे ?

तएणं सुबुद्धी पडिबुद्धि राय एवं वयासी — एव खलु
 सामी । अह अन्नया कयाइ तुव्वं दोच्चेण मिहिल रायहाणिं
 गए, तत्थ णं मए कुभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए
 अत्तयाए मल्लीए सवच्छरपडिलेहणगसि दिठ्वे सिरिदाम डि
 दिट्ठपुठ्वे तस्स णं सिरिदामगंडस्स इमे पउमावईए सिरिदाम
 गंडे सयसहस्सतम कल ण अग्घइ, तएणं पडिबुद्धी सुबुद्धि
 अमच्च एव वयासी-केरिसिया ण देवाणुप्पिया । मल्ली विदेह-
 रायवरकन्ना जस्स णं सवच्छरपडिलेहणयसि सिरिदामगंडस्स
 पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे सयसहस्सतमपि कल न
 अग्घइ ?, तएण सुबुद्धी पडिबुद्धि इवखागुराय एव वयासी—

विदेहरायवरकन्नगा सुपइद्वियकुम्मुन्नयचारुचरणा वन्नओ,
तएणं पडिबुद्धी सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा
णिसम्म सिरिदामगंडजणितहासे दूय सदावेइ, सदावित्ता एवं
वयासी—गच्छाहि णं तुम देवाणुप्पिया । मिहिलं रायहणिं
तत्थ णं कुभगस्स रन्नो धूयं पभावईए देवीए अत्तयं मल्लि
विदेहवररायकण्णग मम भारियत्ताए वरेहि जतिविय णं सा
सयं रज्जं सुक्का, तएणं से दूए पडिबुद्धिणा रत्ता एवं बुत्ते समाणे
हट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव चाउग्घटे
आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घट आसरहं
पडिकप्पावेइ, पडिकप्पावित्ता दुरुढे जाव हयगयमहयाभडचड-
गरेण साएयाओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव विदेहजणवए
जेणेव मिलिा रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥सू०१८॥

टीकाः—ततस्तदनन्तर खलु प्रतिबुद्धिः प्रतिबुद्धिनामको राजा स्नातो
मुकुटाद्यलङ्कारवस्त्रविभूषितः हस्तिस्सन्धवरगतः 'सकोरण्टमल्लदामेण' सको-
रण्टमाल्यदाम्ना कोरण्टाख्य पुष्पस्तवन्ति माल्यदामानि पुष्पस्तजस्तैः सहितेन
छत्रेण ध्रियमाणेन यावत् श्वेतमरचामरैरुद्योजितैश्च सहितः, हयगजरथयोधमहा-

‘तएण पडिबुद्धी ण्हाए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (पडिबुद्धी) प्रतिबुद्धि राजाने (ण्हाए)
स्नान किया बाद मे वे मुकुट आदि अलकारों से और राजसी वस्त्रों
से अलंकृत होकर (हस्तिस्सन्धवरगए) अपने पट हाथी पर बैठ गये—
(सकोरट जाव सेयवरचामराहिं० हयगयरह जोहमहया भड

‘तएण पडिबुद्धिण्हाए’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्यागणाह (पडिबुद्धि) प्रतिबुद्धि राजाने (ण्हाए) स्नान
क्युं अने मुकुट वगेरे आभूषणो तेमज्ज राजानी वओथी अलंकृत थअने
(हस्तिस्सन्धवरगए) पोताना आस हाथी उपर सवार थया

(सकोरट जाव सेयवर चामराहिं० हयगयरह जोह महया भडचडकरेहिं
साकेयनयर० निग्गच्छइ)

મટ ચરકરપહકરૈ હય ગજાદીના સમૂદૈશ્વ સહિતઃ સાકેતનગરસ્ય મધ્યમાગેન નિર્ગચ્છતિ । નિર્ગત્ય સ પ્રતિયુદ્ધિનૃપો યત્રૈવ નાગટહ વર્તતે તત્રૈવોપાગચ્છતિ ઉપાગત્ય હસ્તિસ્કન્ધાત્ પ્રત્યવરોહતિ=અવતરતિ પ્રત્યવરણ=અધઃ પ્રત્યવતીર્ય આ-લોકે=નાગદર્શને પ્રાપ્તે સતિપ્રણામ વરોતિ કૃત્યા પુષ્પમણ્ડપ પદ્માવતી નિર્માપિત-પુષ્પમયમણ્ડપમ્ અનુપ્રવિશતિ, અનુપ્રવિશ્ય પદ્યતિ તદંક મહત્ શ્રીદામકાણ્ડમ્ ।

ચડ કર પહ કરેહિ સાકેય નયર૦ નિગગચ્છહ) उन के बैठते ही छत्र धारी ने उन पर कोरण्ट पुष्प के गुच्छों से निर्मित मालाओं से युक्त छत्र को तान दिया ।

ચમર ઢોર ને વાલોં ને उन पर श्वेत उत्तम चमर ढोरना प्रारभ कर दिया । बाद में वे हय, गज आदि के समुदाय से युक्त होकर साकेत नगर के मध्यभाग से होकर निकले (निगगच्छित्ता जेणेव नाग धरे, तेणेव उवागच्छह) निकल कर नागघर की ओर चल दिये (उवागच्छित्ता हत्थि स्वधाओ पच्चो रुहइ, पच्चो रुहित्ता आलोए पणाम करेइ) वहा पहुँच कर वे उस हाथी से नीचे उतरे-उतर कर ज्यो ही उन्हें नाग प्रतिमा दिखलाइ पडी तो उसी समय उन्हो ने उसे नमस्कार किया ।

(करित्ता पुष्पमण्डप अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पासइ, त एग मह सिरिदामगडे) नमस्कार कर फिर वे पद्मावती देवी द्वारा निर्मापित पुष्प मण्डप में प्रविष्ट हुए । वहा उन्होंने ने उस विशाल श्री दाम काण्ड

રાજા જ્યારે હાથી ઉપર સવાર થઈ ગયા ત્યારે છત્ર ધારીએ તેમના ઉપર કોરંટ પુષ્પોના ગુચ્છોથી બનેલું તેમજ માળાઓથી શોભિતું છત્ર તાણ્યું ચમર ધારીએ તેમના ઉપર સફેદ તેમજ ઉત્તમ ચમરો ઢોળવા લાગ્યા આમ પ્રતિયુદ્ધિ રાજા હય, ગજ વગેરે સમુદાયની સાથે સાકેત નગરના મધ્યભાગે થઈને (નિગગચ્છિત્તા જેણેવ નાગધરે તેણેવ ઉવાગચ્છહ) જે તરફ નાગઘર હતું તે તરફ ગયા

(ઉવાગચ્છિત્તા હત્થિસ્વધાઓ પચ્ચોરુહइ, પચ્ચોરુહિત્તા આલોए पणाम करेइ) ત્યા પહોચીને તેઓ હાથી ઉપરથી નીચે ઉતર્યા અને ઉતરીને જ્યારે તેઓએ નાગપ્રતિમાઓ જોઈ ત્યારે તરત જ તેમણે તેમને નમન કયું (કરિત્તા પુષ્પ મણ્ડવ અણુપવિસइ, અણુપવિસિત્તા પાસइ, ત एग मह सिरिदाम गडे) નમન કર્યા બાદ રાજા પદ્માવતી દેવી વડે બનાવવામાં આવેલા પુષ્પ મંડપમાં પ્રવિષ્ટ થયા ત્યા તેમણે મોટા શ્રીદામકાંડને જોયો

ततस्तदनन्तर खलु प्रतिबुद्धिस्त श्रीदामकाण्ड सुचिर काल=बहुकाल निरीक्षते एकाग्रमनसा पश्यतिस्म । निरीक्ष्य तस्मिन् श्रीदामकाण्डे जातविस्मयः ' अपूर्वदृष्टमिदं श्रीदामकाण्ड ' मित्याश्चर्यं प्राप्तः सन् सुबुद्धि=सुबुद्धिनामक ममात्य=स्वमन्त्रिणम्, एव=उक्षयमाणप्रकारेण अवादीत्-हे देवानुप्रिय ! त्व खलु मम ' दोच्चेण ' दोत्येन=दूतो भूत्वा बहून् यावत् ग्रामाकरनगरसनिवेशान् अहिण्डसि = परिभ्राम्यसि, बहूनि च राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकश्रेष्ठी सेनापतिमार्यग्राहाना यावद् गृहाणि अनुप्रविशसि, तदस्ति खलु त्वया दृष्टपूर्वं

को-देखा । (तएण पडिबुद्धि त सिरीदामगड सुइर काल निरिक्खइ, निरिक्खत्ता तसि सिरिदामगडसि जाय विम्हयमणे सुबुद्धि अमच्च एव बयासी) देख ने के बाद प्रतिबुद्धि राजा ने बहुत देर तक उस का सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण किया ।

निरीक्षण करने के बाद उसे उस श्रीदामकाण्ड के विषय में बड़ा आश्चर्य हुआ । आश्चर्य युक्त होकर उसने अपने सुबुद्धि मन्त्रीसे फिर इस प्रकार कहा-(तुम एण देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेण बहूणि गामागर जाव गिहाइ अणुपविससि-त अत्थि ण तुम कहिंचि एरिसए सिरिदामगडे दिट्ठ पुब्बे जारिसए ण इमे पउमावईए देवीए सिरिदामगडे)

हे देवानुप्रिय ! तुम मेरे दूत होकर अनेक ग्रामों में अनेक आंकरों में, अनेक नगरों में अनेक सनिवेशों में घूमते फिरते हो वहां बहुत से राजा, ईश्वर, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, श्रेष्ठी सेनापति और सार्यवाहों के घरों में भी आते जाते रहते हो, तो क्या तुमने ऐसा

(तएण पडिबुद्धि त सिरीदामगड सुइर काल निरिक्खइ, निरिक्खत्ता तसि सिरिदामगडसि जाय विम्हयमणे सुबुद्धि अमच्च एव बयासी)

तेने जेने प्रतिबुद्धि राजाणे सूक्ष्म दृष्टिथी जडु वणत सुधी तेनु निरीक्षणु कयु

राजाने श्रीदामकांड जेने ज्ञान आश्चर्य थयु तेमणे पोताना मन्त्री सुबुद्धिने आ प्रमाणे कयु-

(तुमन्न देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेण बहूणि गामागर जाव गिहाइ अणु पविससि त अत्थिण तुम कहिंचि एरिसए सिरिदामगडे दिट्ठपुब्बे जारिसएण इमे पउमावईए देवीए सिरिदामगडे)

हे देवानुप्रिय ! माराहत थने तमे धया गाभे, आकरो नगरो अने सनिवेशोभा इरना रडो छे, त्या धया राजा ईश्वर, तलवर, माडम्बिक कौटुम्बिक, श्रेष्ठी, सेनापति अने सार्यवाहोना निवास स्थानभा पण आवागमन

કુત્રચિદેતાદશ શ્રીદામકાન્ડમ્, યાદશ ચલુ રુદ પદ્માવત્યા દેવ્યા શ્રીદામકા
ન્ડ વર્તતે । તતઃસ્વલુ સુબુદ્ધિઃ સુબુદ્ધિનામા મન્ત્રી પ્રતિબુદ્ધિ રાજાનમેવં=વક્ષ્યમાણ
પ્રકારેણ અવાદીત્-एव स्वलु स्वामिन् ! अहमन्पदा कदाचित् युष्माक दौत्येन=
દતો ભૂત્યા મિથિલા રાજધાની ગતઃ ।

તત્ર=મિથિલારાજધાન્યા સ્વલુ મયા કુમ્ભકસ્ય=કુમ્ભકનામ્નો રાજો દુરિત
પુત્ર્યાઃ પ્રભાવત્યા દેવ્યા આત્મજાયા મલ્લીયા =કુમ્ભકનૃપસ્ય પુત્રી યા પ્રભાવતી
દેવ્યા આત્મજા=ગર્ભજા મલ્લી નામ્નો કુમારી વર્તતે તસ્યા इत्यर्थः, 'सर्वच्छ
परिलेहणगसि' 'सर्वत्सप्रतिलेखनके=वर्षवृत्तिसर्याकरणदिनसे वार्षिके
जन्मदिवसोत्सवकाले इत्यर्थः दिव्यम् आश्चर्यकारक श्रीदामकाण्ड दृष्टपूर्व=पूर्वकाले
दृष्टम् । तस्य स्वलु श्रीदामकाण्डम्येद पद्मावत્યા श्रीदामकाण्ड शतसहस्रतमा कला

શ્રીદામકાન્ડ જૈસા કિ યે શ્રીદામકાન્ડ પદ્માવતી દેવી કા હૈ કહીં દેસ્યા
હૈ ? (તણ સુબુદ્ધી પઢિબુદ્ધિ રાય એવ વયાસી) રાજા કી હસ પ્રકાર
ઘાત સુનકર સુબુદ્ધિ અમાલ્ય ને ઉન પ્રતિબુદ્ધિ રાજા સે હસ તરહ કહા
(એવ સ્વલુ સામી ! અહ અન્નયા કયાઈ તુમ્મ દોચ્ચેણ મિહિલ રાય
હાણિ ગણ તત્થ ણં મણ કુમ્ભગસ્સ રન્નો ધૂયાણ પમાવર્ડેણ દેવીણ અત્તયાણ
મલ્લીણ સર્વચ્છરપહિલેહણગસિ દિવ્વે સિરિદામગઢે દિટ્ઠપુવ્વે) સ્વામિન્ !
મેં કિસી એક સમય આપકા દૂત વનકર મિથિલા રાજધાનીમે ગયો હુઆ
થા । વહા મેંને કુમ્ભક નરેગ કી પુત્રી પ્રભાવતી દેવી કી આત્મજા-ગર્ભ
જા-મલ્લી કુમારી કી વર્ષ ગાઠ કે અવસર પર આશ્ચર્ય કારક શ્રીદામ
કાન્ડ કો દેસ્યા થા ।

(તસ્સ ણં સિરીદામગઢસ્સ હમે પડમાવર્ડેણ સિરિદામગઢે સયસ-
હસ્સતમે કલ્લ ણ અગ્ગહ) ઉસ કે સમક્ષ પદ્માવતી દેવી કા યહ શ્રી

કરો છો, તે તમે પદ્માવતી દેવીના જેવો શ્રીદામકાન્ડ કોઈ સ્થાને જોયો છે ?
(તણ સુબુદ્ધિ પઢિબુદ્ધિરાય એવ વયાસી) રાજાની આ પ્રમાણે વત સાલણીને
અમાલ્ય સુબુદ્ધિએ પ્રતિબુદ્ધિ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું-

- (એવ સ્વલુ સામી ! અહ અન્નયા કયાઈ તુમ્મ દોચ્ચેણ મિહિલ રાયહાણિગણ
તત્થણ મણ કુમ્ભગસ્સ રન્નો ધૂયાણ પમાવર્ડેણ દેવીણ અત્તયાણ મલ્લીણ, સર્વચ્છર
પહિલેહણગસિ દિવ્વે સિરિદામગઢે દિટ્ઠપુવ્વે)

હે સ્વામિન્ ! એક વખતે તમારા દૂત તરીકે જ હું મિથિલા રાજધાની
મા ગયો હતો

ત્યા મેં કુલક રાજાની પુત્રી પ્રભાવતી દેવીની આત્મજા-પુત્રી-મલ્લી
કુમારીના જન્મોત્સવ પ્રસંગે ખૂબજ નવાઈ પમાડે તેવો શ્રીદામકાન્ડ જોયો હતો

नार्हति । मल्लीकुमार्या यदस्ति श्रीदामकाण्ड तस्य शोभासुगन्धादिगुणाना लक्षा-
शमपि प्राप्तुं न शक्नोति पद्मावत्याः श्रीदामकाण्डमित्यर्थः ।

ततः खलु प्रतिबुद्धिममात्यमेवमवादीत्-हे देवानुप्रिय ! कीदृशी खलु मल्ली
विदेहराजवरकन्या यस्याः खलु सत्रत्सरप्रतिलेखनके श्रीदामकाण्डस्य पद्मा
वत्या देव्या श्रीदामकाण्ड शतसहस्रतमामपि कला नार्हति ? । तत खलु सुबुद्धिः
प्रतिबुद्धिमिक्ष्वाकुराजमेवमवादीत्-हे स्वामिन् । विदेह राजवरकन्यका मल्लीमाम्नी

दामकाण्ड लक्षाश (लाखमा भाग भी सुन्दर और सुगन्धीत में नहीं
हैं) भी नहीं हैं (तएण पडिबुद्धी सुबुद्धि अमच्च एव वयासी) इस
प्रकार सुनने के बाद प्रतिबुद्धि ने सुबुद्धि अमात्य से ऐसा कहा-
(केरिसियाण देवाणुप्पिया ! मल्ली विदेहरायवर कन्या) हे देवानुप्रिय !
विदेह राजा की वह उत्तम कन्या मल्ली कुमार कैमो है कि
(जस्स ण सवच्छरपडिलेहणयसि सिरिदामगडस्स पउमावईए देवीए
सिरिदामगडे सयसहस्सत्तमपि कल न अग्घइ) जिस की वार्षिक जय
ती के श्रीदाम काण्ड के समक्ष पद्मावती देवी का यह श्रीदामकाण्ड
लक्षाश भी नहीं ज्ञात हो रहा है ।

(तएण सुबुद्धिपडिबुद्धि इक्खागुराय एव वयासी) इस तरह
सुनकर सुबुद्धि ने इक्ष्वाकु वशों में उत्पन्न प्रतिबुद्ध राजा से ऐसा कहा
(विदेहरायवरकन्या सुपहृदिय कुम्मुन्नयचारुचरणा वन्नओ) स्वा

(तस्स ण दिरीदामगडस्स इमे पउमावईए सिरिदामगडे सय सहस्सतमे
फल्ल ण अग्घइ)

तेनी सामे पद्मावती देवीनो आ श्रीदामकाण्ड लक्षाश पणु नथी ओटले
के सुगन्ध के सौंदर्य नेनी दृष्टिओ मल्लीकुमारीना जन्मोत्सव प्रसंगना
श्रीदामकाण्डनी सामे आ कुछ जनथी (तएण पडिबुद्धी सुबुद्धि अमच्च एव
वयासी) आरीते आलजीने प्रतिबुद्धिओ सुबुद्धि अमात्यने आ प्रभाओ कुछ-
(केरिसियाण देवाणुप्पिया ! मल्ली विदेहरायवरकन्या) हे देवानुप्रिय ! विदेह
राज पुत्री मल्लीकुमारी ओवी देवी छे के

“ जस्स ण सवच्छरपडिलेहणयसि सिरिदामगडस्स पउमावईएदे वीए सिरि
दामगडे सयसहस्सत्तम पि कल न अग्घइ ”

जेमना जन्मोत्सवना श्रीदामकाण्डनी सामे पद्मावती देवीनो आ श्रीदाम
काण्ड लक्षाश पणु लागतो नथी

(तएण सुबुद्धि पडिबुद्धि इक्खागुराय एव वयासी) आ रीने आलजीने
इक्ष्वाकुवशमा उत्पन्न प्रतिबुद्ध राजने सुबुद्धिओ कुछ (विदेहरायवरकन्या

સુપતિષ્ઠિતરૂપોઽનિતચારુચરણા, સુપતિષ્ઠિતૌ=પુષ્ટસંસ્થાનવતૌ=કર્મોઽધર્તૌ=કર્મ
પૃષ્ઠપદ્મપર્યુન્નતૌ ચારુ=સુન્દરૌ ચરણૌ યસ્યા મા તથા, વર્ણક=વર્ણન વિશેષતો
જમ્બૂદ્વીપમજ્જપ્ત્યાદૌ દ્રષ્ટવ્યમ્ ।

તતઃ સ્વલુ પ્રતિબુદ્ધિભૂપઃ સુસુદ્રેરમાત્યમ્યાન્તિકે એતમર્થે મલ્લીકુમારી સૌન્દ
ર્યાદિ ગુણવર્ણનરૂપ શ્રુત્વા=શ્રવણ ગોચરીકૃત્ય, નિશમ્ય=અર્થતોડવાર્થે શ્રીદામકા-
ળ્ડજનિતહર્ષે =શ્રીદામકાળ્ડગુણશ્રવણમજ્જાપ્રમોદઃ સન્ દૂત શબ્દયતિ આહ્વયતિ,
શબ્દયિત્વા એયમગાદીત્-હે દેવાનુપ્રિય ! ગચ્છ સ્વલુ ત્વ મિથિલા રાજધાની,
તત્ર સ્વલુ કુમ્ભકસ્ય રાજો દુહિતર પ્રભાવત્યા દેવ્યા આત્મજા મલ્લીં વિદેહવરરાજક

મિન્ । વહ વિદેહરાજ કી ઉત્તમ કન્યા મલ્લી કુમારી અચ્છે આકાર
વાલે, કર્મ કી પૃષ્ઠ કે સમાન ઉન્નત સુન્દર ચરણ વાલી હૈ । હસ કા
વિશેષ વર્ણન જમ્બૂદ્વીપ મજ્જાપ્રિ આદિ મેં કિયા ગયા હૈ ।

(તણ પડિબુદ્ધી સુબુદ્ધિસ્સ અમચ્ચસ્સ અતિણ એયમટ્ઠ સોચ્ચા
ણિસમ્મ, સિરિદામગલ્ડજણિતહાસે દૂય સદાવેહ) હસ પ્રકાર શ્રીદામ
કાલ્ડ કે ગુણો કે શ્રવણ સે અત્યધિક હર્ષિત હુણ પ્રતિબુદ્ધિ રાજા ને
સુબુદ્ધિ અમાત્ય કે સુખ સે મલ્લી કુમારી કે સૌન્દર્ય આદિ ગુણોં કા
વર્ણન સુનકર ઓર ઉસે હૃદય મેં નિશ્ચિત કર દૂત કો વુલાયા (સદા
વિત્તા એવ વયાસી) વુલાકર ઉસસે એમા કહા (ગચ્છાહિણ તુમ
દેવાણુપ્પિયા ! મિહિલ રાયહાણિ) હે દેવાનુપ્રિય ! તુમ મિથિલા નામ કી
રાજધાની કો જાઓ-(તત્થ ણ કુમ્ભગસ્સ રણ્ણો ધૂય પમાવર્હિણ દેવીણ

સુપદ્ધિય કુમ્મુન્નય ચારુચરણા વન્નઓ) હે સ્વામિન્ ! તે વિદેહ રાજાની
ઉત્તમકન્યા મલ્લીકુમારી સરસ આકારવાળા કાચમાની પીઠના જેવા સુદર
ઉન્નત ચરણવાળી છે (તેમણુ વિશેષ વર્ણન જમ્બૂદ્વીપ મજ્જાપ્રિ વગેરે મા કર
વામા આબુ છે

(તણ પડિબુદ્ધિ સુબુદ્ધિસ્સ અમચ્ચસ્સ અતિણ એયમટ્ઠ સોચ્ચા ણિસમ્મ સિરિ-
દામગલ્ડજણિતહાસે દૂય સદાવેહ)

આ પ્રમાણે સુબુદ્ધિ અમાત્યના મોઢેથી શ્રીદામકાળ્ડના ગુણ શ્રવણથી
તેમજ મલ્લીકુમારીના સૌન્દર્ય વગેરે ગુણોની ચર્ચા સાલગીને તેને હૃદયમા
અવધારિત કરીને ખુબજ હર્ષિત થયેલા પ્રતિબુદ્ધિ રાજાએ દૂતને બોલાવ્યો
(સદાવિત્તા એવ વયાસી) બોલાવીને તેને કહ્યું-(ગચ્છાહિ ણ તુમ દેવાણુપ્પિયા !
મિહિલ રાયહાણિ) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મિથિલાની રાજધાનીમા જાઓ ।

(તત્થણ કુમ્ભગસ્સ રણ્ણો ધૂય પમાવર્હિણ દેવીણ અત્તય મલ્લિન્ વિદેહવરરાય
કણ્ણમા મમ મરિયત્તાણ વરેહિં)

ન્યકા મમ ભાર્યાત્વેન વરય, અયમર્થ -હે દેવાનુપ્રિય ! મિથિલા ગત્વા કુન્ભવન્તપ
બ્રૂહિ-સાકેતનગરાધિપતિઃ પ્રતિબુદ્ધિનામાનૃપસ્તથ કન્યકા મલ્લીં ધર્મપત્નીત્વેન
ગ્રહીતુમિચ્છતિ, તદનુમન્યસ્વેતિ ।

યદ્યપિ ચ સા સ્વયં રાજ્ય શુલ્ક=મૂલ્ય યસ્યાઃ સા તથા, સ્વસ્ય નિરૂપમ
સુશીલાદિગુણવત્તયા સા યદિ સ્વ શુલ્કત્વેન રાજ્યમભિલેપેત્તદાઽહ સર્વં રાજ્ય
સમર્પયામીતિ ભાવઃ। તત શ્વલુ સ દૂતઃ પ્રતિબુદ્ધિના રાજા એમુક્તઃ સન્ હૃષ્ટતુષ્ટો

અત્તય મર્તિલ વિદેહવરરાયકળગમ મમ ભારિયત્તાએ વરેહિં) વહાં
કુભક રાજા કી પુત્રી મલ્લી કુમારી કો કિ જો પ્રભાવતી દેવી કે ગર્ભ
સે ઉત્પન્ન હુઈ હૈ મેરી ભાર્યા કે રૂપ સે વરો અર્થાત્ તુમ મિથિલા રાજ
ધાની મેં જાકર કુભક રાજા સે કહો કિ સાકેતાધિપતિ પ્રતિબુદ્ધિ રાજા
આપકી કન્યા મલ્લી કુમારી કો અપની ધર્મપત્ની બનાના ચાહતે હૈ-
સો આપ ઇસ કી સ્વીકૃતિ પ્રદાન કરો

(જહ વિય ણ સા સય રજ્જસુક્કા) યદ્યપિ મેં ઇમ વાત કો જાનતા
હૂં કિ વહ કન્યા રાજ્ય હી હૈ શુલ્ક જિસ કા એમી હૈ-અર્થાત્ વહ અનુ
પમ સુશીલાદિ ગુણો સે યુક્ત હોને કે કારણ અપને શુલ્કપને સે રાજ્ય
કી અભિલાષા યદિ કરેગી તો મેં ઉસે સમસ્ત અપના રાજ્ય બી
સમર્પિત કર દૂંગા ।

(તણ સે દૂણ પહિબુદ્ધિણા રન્ના એવ વુત્તે સમાણે હટ્ટં પહિ
સુણેહ) ઇમ પ્રકાર રાજા કા અભિપ્રાય હૃદયગમ કર વહ સુબુદ્ધિ
અમાત્ય વડા હી અધિક હર્ષિત એવ સતુષ્ટ હુઆ ઓર ઉસ ને મિથિલા
રાજધાની જાના સ્વીકાર કર લિયા । (પહિસુણિત્તા જેણેવ સણ મેહે

અને પ્રભાવતી દેવીના ઉદરથી જન્મ પામેલી કુભકરાજની પુત્રી કુમારીની
મારી વધૂના રૂપે યાચના કરો, એટલે કે તમે મિથિલા રાજધાનીમાં જઈને
કુભક રાજાને કહોકે સાકેતના અધિપતિ પ્રતિબુદ્ધિ રાજા તમારી પુત્રી મલ્લી
કુમારી ને પોતાનીવધૂ બનાવવા આહે છે તો તમે તેની સ્વીકૃતિ આપો

(જહવિયણ સા સય રજ્જસુક્કા) મલ્લીકુમારી અત્યંત સૌંદર્યવતી તેમજ
રાજ્ય જેનું શુદ્ધ (કિંમત) છે આવી અદ્ભુત સુશીલ વગેરે ગુણોવાળી કન્યા
છે એ વાત હું સારી પેઠે બાણુ છું એટલે કે અનુપમ ગુણવતી મલ્લી
કુમારી પોતાના શુદ્ધ રૂપે મારા રાજ્યને પણ માગશે તો હું માફ આપું
રાજ્ય તેને સમર્પિત કરવા તૈયાર છું

(તણ સે દૂણ પહિબુદ્ધિણા રન્ના એવ વુત્તે સમાણે હટ્ટં પહિસુણેહ)
આ રીતે રાજાને અભિપ્રાય હૃદયમાં ધારણ કરાને સુબુદ્ધિ અમાત્ય ખૂબ જ

ઽતિશયેન પ્રમુદિતો ભૂત્યા પ્રતિભૃણોતિ આત્મામહીકરોતિ, પ્રતિશ્રુત્ય=સ્વીકૃત્ય
 યત્રૈવ રદક ગૃહ યત્રૈવ ચાતુર્ધણ્ડોઽશ્વરથો વર્તતે તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય ચાતુ
 ધ્વણ્ડમશ્વરથ પ્રતિશ્રુત્ય=સંજયતિ, પ્રતિશ્રુત્ય ચાતુર્ધણ્ડમશ્વરથ સંજયીકૃત્ય
 દુરુદ્ઘ=સમારુદ્ઘઃ સન્ન યાત્ર-હયગજમદ્યામટ ચટયરેણ સહિતઃ સાકેતાત્ સાકેત
 નગરાત્ નિગચ્છતિ, નિર્ગત્ય યત્રૈવ વિદેહજનપદઃ યત્રૈવ મિથિલાનગરી તત્રવ પ્રધા-
 રયતિ ગમનાય=ગતુ પ્રવૃત્ત પ્રથિત્ત ઇત્યર્થઃ । ઇતિ પ્રતિબુદ્ધિનામકસ્ય રાજ્ઞઃ સમ્બ-
 ન્ધઃ કથિતઃ ॥ સૂ. ૧૭ ॥

જેણેવ ચાણ્ઘટે આસરહે તેણેવ ઉપાગચ્છત્) સ્વીકાર કર પહિછે
 વહ અને ઘર ગયા ।

વહા જાકર ફિર વહ જહાં ચાર ઘટો સે યુક્ત અશ્વરથ રચા થા
 ઘર્ષા ગયા (ઉપાગચ્છિત્તા ચાણ્ઘટ આસરહ પડિકપ્પાવેહ) વહાં જાકર
 ઉમ ને હસે ચાતુર્ધંટ રથ કો અચ્છી તરહ સંજિત કર વાયા (પડિ
 કપ્પાવિત્તા દુરુદ્ઘે જાત્ર હય ગય મદ્યા મહચ્છડ ગરેણ સાળ્યાઓ નિ
 ગચ્છત્) જત્ર રથ અચ્છી તરહ સંજિત હો ચુકા તો વહ ઘાદ મેં હસ
 પર આરુઢ હુઆ-ઔર હય, ગજ, મદ્યા મદ્યોં કે સમૂહ સે યુક્ત હોકર
 સાકેત નગર સે ઘાહિર નિકલા (નિગચ્છિત્તા જેણેવ વિદેહ જણવણ
 જેણેવ મિથિલા રાણહાણી તેણેવ પહારેથ ગમણાણ નિકલ કર ફિર વહ
 જહા વિદેહ જનપદ ઔર હસ મેં મી જહા વહ મિથિલા રાજધાની થી
 હસ ઔર ચલ દિયા । સૂત્ર “ ૧૭ ”

હર્ષિત તેમજ સતુષ્ઠ થયો અને તેણે મિથિલા રાજધાની જવાની રાખની
 આજ્ઞા સ્વીકારી (પડિમુણિત્તા જેણેવ સણ મેહે જેણેવ ચાણ્ઘટે આસરહે તેણેવ
 ઉપાગચ્છત્) સ્વીકારીતે સૌ પહેલા પોતાને ઘેર ગયો

ઘેર પહોચીને તે જ્યા આર ઘ ટડીઓ વાળો અશ્વરથ મૂકેલો હતો ત્યાં ગયો
 (ઉપાગચ્છિત્તા ચાણ્ઘટે આસરહ પડિકપ્પાવેહ) ત્યાં જઈને તેણે ચાતુર્ધંટ
 રથને સારી પેઠે શણગાવ્યો

(પડિકપ્પાવિત્તા દુરુદ્ઘે જાત્ર હયગય મદ્યા મહચ્છડગરેણ સાળ્યાઓ નિગચ્છત્)

જ્યારે રથ સારી રીતે તૈયાર થઈ ગયો ત્યારે તેના પર સવાર થયો અને
 હાથી ઘોડા મહાભટ્ટોના હજારી થોડાઓની સાથે સાથે સાકેત નગરથી
 બહાર નીકળ્યો

(નિગચ્છિત્તા જેણેવ વિદેહ જણવણ જેણેવ મહિલા રાણહાણી તેણેવ પહારેથ
 ગમણાણ)

નીકળીને તે જે તરફ વિદેહ જનપદ અને મિથિલા રાજધાની હતી
 તે તરફ ગયો ॥ સૂત્ર “ ૧૭ ” ॥

मूलम्—तेणं कालेण तेण समएणं अगनाम जणवए
 होत्था, तत्थण चपा नामं णयरी होत्था, तत्थण चंपाए नय-
 रीए चदच्छाए अगराया होत्था, तत्थ णं चम्पाए नयरीए अर-
 हन्नगपामोक्खा वहवे सजत्ता णावावाणियगा परिवसति अङ्गा
 जाव अपरिभूया, तएण से अरहन्नगे ससणोवासए यावि होत्था
 अहिगयजीवाजीवे वन्नओ, तएण तेसिं अरहन्नगपामोक्खाण
 सजुत्ता णावावाणियगाणं अन्नया कयाइ एगयओ सहिआणं
 इमे एयारूवे मिहो कहासलावे समुप्पजित्था—से य खलुअम्ह
 गणिम धरिम च मेज्ज च भडग गहाय लवणसमुदपोतवहणेण
 ओगाहित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्न एयमट्ट पडिसुणेति, पडिसुणित्ता
 गणिम च ४ गेण्हंति । गेण्हित्ता सगडसागडियं भरेति, भरित्ता
 सोहणंसि तिहिकरणदिवसनक्खत्तमुहुत्तासि विपुल असण०४उव-
 क्खडावेति मित्तणाइ० भोअणवेलाए भुजावेति जाव आपुच्छंति,
 आपुच्छित्ता सगडिसागडिय जोयति, जोइत्ता चपाए नयरीए
 मज्झ मज्झेणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छइ,
 उवागच्छित्ता सगडिसागडिय मोयति, मोइत्ता पोयवहणं सज्जेति,
 सज्जित्ता गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरेति, तट्टु-
 लाण य समियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य
 गोरसस्स य उदयस्स उदयमायणाण य ओसहाण य भेसज्जाण
 य तणस्स य कट्टस्स य आवरणाण य पहरणाण य अन्नेसिं च
 वहूण पोयवहणपाउग्गाणं दव्वाण पोयवहणं भरेति । सोहणंसि

તિહિકરણદિવસનવસ્તુત્તમુહુત્તસિ વિપુલ અસળઃ ઉવસ્વડાવેતિ,
 ઉવસ્વડાવિત્તા મિત્તળાઙ્ગ આપુચ્છંતિ, આપુચ્છિત્તા જેનેવ
 પોયટ્ટાણે તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ ॥ સૂ. ૧૮ ॥

ટીકા-અથ દ્વિતીયસ્ય ચન્દ્રચ્છાયનામ્નો નૃપમ્ય સમન્થ પ્રસ્તોતિ-‘તેણ કાલેણ’
 इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये अग्न नामा जनपद आसीत् । तत्र खलु
 चम्पा नाम नगरी असीत् तत्र खलु चम्पाया नगर्या चन्द्रचछायोऽग्नराज असीत् ।
 तत्र खलु चम्पार्या नगर्याम् अरहन्नगप्रमुखा गृह्यः सयात्रा नौकावाणिजका =
 सगतायात्रा सयात्रा तत्प्रधाना नौकावाणिजकाः-पोतवणिजः मिलित्वा देशान्तर
 गामिनो नौकया वाणिज्यकारिणः परिवसन्ति, कथभूतास्ते इत्याह-आदया = धन

‘તેણ કાલેણ તેણ સમણ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ-(તેણ કાલેણ તેણ સમણ) उस काल और उस समयमें
 (अगनाम जणवए होत्था) अगनामका जनपद था-(तत्थण) उस जनपद
 में (चपानाम नगरी होत्था) चपा नाम की नगरी थी (तत्थण चपाए
 नगरीए चदच्छाए अगराया होत्था) उस चपा नगरी में चन्द्रच्छाय
 नाम के अग देशाधिपति रहते थे ।

(तत्थण चपाए नगरीए अरहन्नग पामोक्खा बहवे सजत्ता गावा
 वणियगा परिवसति) और उसी चपा नगरी में अरहन्नक प्रमुख
 अनेक पोतवणिक जो साथ २ व्यापार के निमित्त परदेश की यात्रा-
 गमना गमन-करते रहते थे । नौकाओ द्वारा जो व्यापार करते हैं वे
 पोतवणिक कहलाते हैं । (अड्डा जाव अपरिभूया) ये सब धन धान्या

‘તેણ કાલેણ તેણ સમણ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(તેણ કાલેણ તેણ સમણ) તે કાળે અને તે સમયે (અગનામ
 જણવए होत्था) अगनामे जनपद હતું (तत्थण) તે जनपदमा (चपा नाम
 नगरी होत्था) चपा नामे नगरी હતી (तत्थण चपाए नगरीए चदच्छाए
 अगराया होत्था) તે चपा नगरीमा चन्द्रच्छाय नामना अधिपति रहेता હતા

(तत्थण चपाए नगरीए अरहन्नगपामोक्खा बहवे मजत्ताणावा वाणियगा
 परिवसति)

તે ચપા નગરીમા અરહન્નક પ્રમુખ ધણી પોતવાણિકો-કે-જેઓ વેપાર
 ખેડવા માટે દેશ પરદેશમા આવ જા કરતા રહેતા હતા નિવાસ કરતા હતા
 નૌકાઓ વડે જેઓ વેપાર કરે છે તેઓ પોતવણિક કહેવાય છે (अड्डा जाव

ધાન્યપૂર્ણા યાવદ્ અપરિભૂતા પૈ પરાભવિતુમશક્યા. । તત = તત્ર = તેષુ સ્વલુ
સોડરહન્નક શ્રમણોપાસક શ્રાવકશ્રાપ્યાસીત્, ન કેવલ ધનધાન્યાદિયુક્તેવાસીત્
કિંતુ-આર્હતાગમાનુરાગી શ્રમણાના સેવકશ્રાપ્યાસીદિત્યર્થઃ । પુનઃ કિં ભૂતો-
ડસાવિત્યાહ- ' અહિગયજીવાજીવે ' અભિગતજીવાજીવઃ = જીવાજીવતત્ત્વજઃ
વર્ણકઃ = અસ્ય વર્ણનમન્યત્રોક્તરીત્યાડવગન્તવ્યમ્ । તતઃ સ્વલુ તેષામહરન્નકપ્રમુખાણા
સંયાત્રાનોકાવાણિજકાના વ્યવસાયિકાનામ્, અન્યદા કદાચિત્ = એકસ્મિન્
કસ્મિંશ્ચિત્ સમયે, એકતઃ સહિતાનામ્ = એકત્ર સમિલિતાના અયમેતદ્રૂપઃ = વક્ષ્યમા-
ણસ્વરૂપ, મિથ કથાસલાપ પરસ્પરકથાલાપઃ સમુદપદ્યત = અભવત્ શ્રેયઃ

દિ સે પરિપૂર્ણ યાવત્ દૂસરો સે પરાભવિતુ અશક્ય થે (તણ સે
અરહન્નગે સમણોવાસણ યાવિ હોત્યા) હન મેં અરહન્નક શ્રમણોપાસક
મી યો । કેવલ યહ ધન ધાન્યાદિ સે પરિપૂર્ણ હી નહીં થા કિન્તુ આર્હત
આગમાનુરાગી ઔર શ્રમણ જનોં કા ઉપાસક મી થા ।

(અહિતગત જીવોજીવે વન્નઓ) જીવ કા કયા સ્વરૂપ હૈ,
અજીવ કા કયા સ્વરૂપ હૈ હસ વાત કા યહ જ્ઞાતા યા । હસ કા વિશેષ
વર્ણન અન્યત્ર કિયા ગયા હૈ ।

(તણ તેમિ અરહન્નગપામોક્ષાણં સજુત્તા ણાવા વાણિયમાણ
અન્નયા કયાહ ણગયઓ સહિઆણ હમે ણયારુવે મિહો કહાસલાવે
સમુપ્પજ્જિત્યા) કિસી એક દિન યે અરહન્નક પ્રમુખ સાયાત્રિક પોત
વણિક કિસી કાર્ય વશ જથ સવ કે સવ કિસી એક સ્થલપર એકત્રિત
હુણ તો ઊન્હો ને પરસ્પર મે વક્ષ્યમાણ રૂપ સે એસા વિચાર કિયા-

અપરિભૂયા) તેઓ બધા ધન ધાન્ય વગેરે સમસ્ત વૈભવોથી સપન્ન હતા
તેઓ બધા અપરાજેય હતા (તણ સે અરહન્નગે સમણોવાસણ યાવિ હોત્યા) આમા
એક અરહન્નક નામે શ્રમણોપાસક પણ હતા તે કેવળ ધન ધાન્યથીજ સમૃદ્ધ
નહતા પણ તે આર્હત આગમાનુરાગી અને શ્રમણજનોનો સેવક પણ હતા

(અહિત ગત જીવાજીવે વન્નઓ) જીવ અને અજીવ સ્વરૂપ વિષે તે
સંપૂર્ણ પણે જ્ઞાતા હતા (આ બાબતનું વિશેષ વર્ણન બીજા સ્થાને કરવામા
આવ્યું છે)

(તણ તેમિ અરહન્નગપામોક્ષાણ સજુત્તા ણાવા વાણિયમાણ અન્નયા કયાહ
ણગયઓ સહિઆણ હમે ણયારુવે મિહો કહાસલાવે સમુપ્પજ્જિત્યા)

એક દિવસે અરહન્નક પ્રમુખ બધા સાયાત્રિક પોતવણિક ડોઠ સ્થળે
એકઠા થયા અને તેઓએ પરસ્પર મળીને આ પ્રમાણે વિચાર કયો

खलु अस्माक गणिम गणयित्वा व्यवहारयोग्य यथा नालिकेरपूगीफलादिक,
धरिम यत् तुलाधृत व्यवहारयोग्य भवति तद् धरिमम्, मेय यत्-सेटि-
कादिभिर्मयिते तद् मेयम्, परिच्छेद्य यत्-गुणतः परिच्छेद्यते परीक्ष्यते वस्त्र
रत्नादि, तत् परिच्छेद्य, च भाण्डक चतुर्विध क्रयाणक गृहीत्वा लवणसमुद्र पोत
वहनेन अवगाहितुम्=उत्तरीतुम्, इति कृत्वा इति निश्चित्य, अन्योन्य=परस्परम्
एतमर्थं चतुर्विध क्रयाणक गृहीत्वा नौकायानेन लवणसमुद्रसतरणरूपमर्थं प्रतिश्रु-
त्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति । प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य गणिम च ४ गृह्णन्ति, गृहीत्वा शकटी
शाकटिक=लघुशकटमहाशकटानां समूहं च सज्जयन्ति-नूतनरज्ज्वाद्युपकरणैः

(सेय खलु अम्ह गणिम, धरिम, च मेज्ज च परिच्छेज्ज च भडग
गहाय लवणसमुद्र पोतवहणेण ओगाहित्तए) गणिम - गिनती करके
व्यवहार योग्य-जैसे नारियल, पूगीफल आदि, धरिम-तुला पर तौलकर
व्यवहार योग्य-जैसे सस्यादि, मेय सेटिकादि से प्रमाण कर व्यवहार
योग्य, और परिच्छेद्य-गुणसे परीक्षा कर व्यवहार योग्य-जैसे वस्त्र रत्न
आदि इन चार प्रकार के क्रयाणक को दो नौकाओंमें भर कर हम लोग
बाहर लवणसमुद्रको पार कर चलें-इसमें हम लोगोंको बहुत लाभ होगा ।

(त्ति कद्दु अन्नमन्न एयमद्व पडिसुणेति, पडिसुणित्ता गणिम च
४ गेण्हति, गेण्हित्ता सगडसागडिय भरेति) इस प्रकार परस्पर
विचार कर उन सब ने एक मत हो इस चतुर्विध क्रयाणक को लेकर
नौका से लवण समुद्र को पार करने रूप अर्थ को स्वीकार कर लिया ।

(सेય खલુ અમ્હ ગણિમ, ધરિમ ચ મેજ્જ ચ પરિછેજ્જ ચ ભડગ ગહાય
લવણસમુદ્ર પોતવહણેણ ઓગાહિત્તણ)

ગણિમ- ગણીને વ્યવહાર (વેપાર) કરી શકાય જેમ કે નારિયેળ,
સોપારી, વગેરે ધરિમ-ત્રાજવા માં ભેખીને વ્યવહાર (વેપાર) કરી શકાય
જેમકે ધાન વગેરે, મેય-માપના પ્રમાણથી વ્યવહાર (વેપાર) કરી શકાય
જેમકે તેલ વગેરે અને પરિચ્છેદ્ય-ગુણથી પરીક્ષા કરીને વ્યવહાર કરી શકાય
જેમકે વસ્ત્ર રત્ન વગેરે આ ચારે જાતની વસ્તુઓ વિક્રય માટે બે નૌકાઓમાં
લાદીને આપણે લોકો ખહાર લવણસમુદ્રને પાર કરીએ તો આપણને ખૂબ લાભ થશે

(ત્તિ કદ્દુ અન્નમન્ન એયમદ્વ પડિસુણેતિ, પડિસુણિત્તા ગણિમ ચ ૪ ગેણ્હતિ,
ગેણ્હિત્તા સગડસાગડિય ભરેતિ)

આ રીતે ચારે જાતની વેપારની વસ્તુઓ નૌકાઓમાં ભૂંડીને લવણસમુ-
દ્રને પાર કરવાની બધાએ સર્વસમ્મતિથી સ્વીકારી અને સ્વીકારીને તેઓએ

परिष्कुर्वन्ति, सज्जयित्वा गणिमस्य ४ भाण्डकस्य शकटीशारुटिक भरन्ति= पूरयन्ति । भृत्वा=पूरयित्वा शोभने तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुहूर्ते विपुल=विस्तीर्णम् अशनपानखाद्यस्वाद्य चतुर्विधमाहारमुपस्कारयन्ति = निष्पादयन्ति । मित्रज्ञातिप्रमुखान् भोजनवेलाया भोजयन्ति, यावद् आपृच्छन्ति स्म अरहन्नक प्रमुखाः स-यात्रानौकायाणिजका यात्रामसरे मित्रज्ञातीन् भोजयित्वा वाणिज्यार्थं नौकया समुद्रसतरणकामास्तान् मित्रज्ञातीन् स्वस्वानुमति प्रदानार्थं प्रार्थयन्ति स्मेत्यर्थः । आपृच्छय=समाध्यं शकटीशारुटिक योजयन्ति वृषभैः सह सयोजयन्ति सयोज्य चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव गम्भीरक गम्भीरकारण्य समुद्रतीरपतिं पोत-स्वीकार कर के फिर उन सघने चारों प्रकार के क्रयाणक को लिया-लेकर उसे नूतन रज्ज्वादि से परिष्कृत की गई गाड़ी और गाड़ों में भर दिया ।

(भरित्ता सोहणसि तिहिकरण दिवसनखत्तमुहृत्तसि विपुल असण ४ उवखडावेति) भर कर फिर उन्हो ने शुभतिथि, करण दिवस नक्षत्र रूप मुहूर्त में विपुल मात्रा में अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार को बनवाया - (मित्ताणाइ० भोजणवेलाए भुजावेति जाव आपुच्छति) जब वह बन कर तैयार हो चुका-तो उन्हो ने अपने २ मित्र, ज्ञाति आदि परिजनों को भोजन के अवसर पर भोजन करवाया और फिर उन से पूछा-हम लोग बाहर व्यापार के लिये जाना चाहते हैं- इसलिये आप लोग इस विषय में अपनी २ अनुमति प्रदान करे-इस तरह उन से प्रार्थना की- (अपुच्छित्ता) पूछ कर (सगडसागडियं जोयति, जोइत्ता चपाए नयरीए मज्झमज्जेण जेणेव गभीरए पोय

यारे जतनी वेयाणुनी वस्तुओने नवा दोरडाओवाणी गाडी तेमज् गाडाओमा भूडी

(भरित्ता सोहणसि तिहिकरणनखत्तमुहृत्तसि विपुल असण ४ उवखडावेति)

भरीने तेओओ शुभतिथि, उरए नक्षत्रउप मुहूर्तमा अशन, पान, खाद्य अने स्वाद्य आम यारे जतना आहार पुञ्ज प्रमाणमा जनावडाव्या (मित्ताणाइ ० भोजणवेलाए भुजावेति जाव आपुच्छति) यारे आहार तैयार थए गये। यारे तेओओ पोताना मित्र ज्ञाति वगेरे परिजनेने जमवाभाटे ओलावीने जमाडया अने जम्मा पछी तेमने तेओओ पूछथु " अमे जधा वेपार जेडवाभाटे जडार जवा धूडीये छीये "

ओथी तमे जधा अभने अनुमति आपो आरीने तेओओ तेमने विनती करी (आपुच्छित्ता) आज्ञा भेजवाने

(सगडसागडिय जोयति जोइत्ता चपाए नयरीए मज्झमज्जेण जेणेव

पत्तन=पोतनगर नौकारोहणम्यान वर्तते तत्रोपागच्छति, उपागत्य शकटी-
शाकटिक मुञ्चन्ति, शकटीशाकटिका समूहापरिषत् क्रयाणकादिक सर्वं वस्तु जात
मवतारयन्ति, मुक्त्वा=सर्वं वस्तुजात शकटेभ्योऽवतार्य पोतग्रहन=नौकायान
सज्जयन्ति यथोचितनूतनोपकरणैः परिष्कृत्य दृढीकुर्वन्ति, सज्जयित्वा=परिष्करणेन
दृढीकृत्य गणिमस्य च यावच्चतुर्विधस्य भाण्डरस्य=क्रयाणकस्य भरन्ति=गणिमादि
चतुर्विधक्रयाणकस्य स्थापनेन नौकायान पूरयन्ति स्मेत्यर्थः । तण्डुलानां च समि-
तस्य गोधूमस्य गोधूमचूर्णनिष्पन्नपक्वान्निशेषस्य च तैलकस्य च गुडस्य च घृत-
स्य च गोरसस्य च उदकस्य च उदकभाजनानां च औषधानां=त्रिकटुकादीनाम्
पट्टणे तेष्वेव उवागच्छति) फिर उन्हो ने क्रयाणको से भरी हुई गाड़ी
और गाड़ों को जुत बाधा-जुनवा कर फिर वे सब के सब चपा नगरी
के ठीक धीचों धीच के मार्ग से होकर जहा गभीरक नाम का जहाज
पर सवार होने का स्थान (चदरगाह) था वहा पर आये ।

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति, मोडत्ता पोयवहण सज्जेति
सज्जित्ता, गणिमस्स य जाव चउन्विहस्स भडगस्स भरेति) वहां आकर
उन लोगों ने अपनी २ गाड़ियों और गाड़ो को ढील दिया ढीलकर पोत
यानों को सज्जित किया-यथोचित नूतन उपकरणों से दृढ़ किया ।
सज्जित करके फिर बाद में उस चतुर्विध गणिमादि रूप क्रयाणक को
गाड़ियों और गाड़ो पर से उतार २ कर नौका यान में यथोचित स्थान
पर भर दिया (तण्डुलाणय सभियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य
घयस्स य गोरयस्स य उदयस्स य उदयमाणाय य ओसहाण य भेसज्जा

गभीरए पोयपट्टणे तेष्वेव उवागच्छति)

तेभने वेत्थाणुना भावसाभानथी लरेली गाडी अने गाडाने जेतया अने
त्यार पछी तेओ अधा च पा नगरीनी अराअर वत्थेवत्थना भागथी पसार
थधने न्या गभीरक नामनु वडाणु पर भेसवानु स्थान (महर) छतु त्या पडोत्था

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति मीडत्ता पोयवहण सज्जेति, सज्जित्ता
गणिमस्स य जाव चउन्विहस्स भडगस्स भरेति)

त्या पडोत्थीने तेओओ पोतपोतानी गाडीओ तेभज गाडाओने छोडीने
यथोचित नवीन उपकरणोथी वडाणु तैयार करु वडाणुने सुदृढ रीते
तैयार करीने तेओओ गाडी तेभज गाडाओनी वेत्थाणुनी अधी वस्तुओ वडाणुभा
यथास्थाने गोठवी दीधी

(तण्डुलाण य सभियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरयस्स य
उदयस्स य उदयमाणाय य ओसहाण य भेसज्जाण य तगस्स य, कट्टस्स य आव

અથવા-એકદ્રવ્યરૂપાણા ચ ભૈષજ્યાના પથ્યાનામાહારવિશેષાણામ્ અથવા દ્રવ્યસ યોગરૂપાણામ્ ચ તળસ્ય ચ કાષ્ઠસ્ય ચ આવરણાનામ્=અદ્ધરસકાદીના ચ પ્રહરણાના ચ સ્વદ્ધાદિશસ્ત્રાણા અન્યેષા ચ વહૂના પોતવહનપાયોગ્યાણા=નૌકાયાનોપનેયાનાં દ્રવ્યાણા=સ્થાપનેન પોતવહન=નૌકાયાન ભરન્તિ પૂરયન્તિ સ્મ । શોભને=શુભાવહે,

ળય તળસ્સ ય, કટ્ટસ્સ ય આવરણાળ ય પહરણાળ ય અન્નેસિં ચ વહૂણ પોયવહણપાઝગ્ગાળ દઘ્વાણ પોયવહણ ભરેતિ)

નૌકા યાન મેં ઉન્હોં ને ચાવલોં કો ભરા, ગેહુઓ કો ભરા, ગેહુઓ કે આંટે કો ઔર આટે સે નિપ્પન્ન પક્કવાન્ન વિશેષકો ભરા । તૈલ, ગુડ ઘૃત ગોરસ ભરા પાની ભરા પાની કે વર્તનો કો ભરા । ત્રિકુટ આદિ ઔષધિયોં કો ભરા પથ્યાહાર વિશેષ ભૈષજ્યોં કો ભરા, તૃળોં કો ભરા લકડિયો કો ભરા અગસ્સ આદિ આવરણોં કો, સ્વદ્ધ, આદિ શસ્ત્રોં કો તથા ઔર મી અનેક વસ્તુઓં કો જો પોત વહન કે યોગ્ય થી ભરા ।

હસ તરહ ઉન્હોં ને ઇન સમસ્ત વસ્તુઓં કો, યથોચિત સ્થાન પર સ્થાપિત ઉસ નૌકા યાન કો ભર દિયા । યહા પર જો ઔષધ ઔર ભૈષજ્ય યે દો શબ્દ પ્રયુક્ત હુએ હેં ઉન સે ઈસા મી અર્થ ઘોધ હોતા હૈ કિ ત્રિકુટ આદિ જો અલગ ૨ દ્રવ્ય હૈ વે ઔષધ ઔર ઇન કા સમુદાય રૂપ જો દ્રવ્ય હૈ-જૈસે ચૂર્ણ આદિ વહ ભૈષજ્ય હૈ । “ પોયવહણપાઝગ્ગાળ ” પદ કા યહ અર્થ હૈ કિ જો દ્રવ્ય નૌકા દ્વારા અઠ્ઠી તરહ ઢોયા-જા સકે વહ સઘ ઉન્હોં ને ઉસ મેં ભર દિયા । (સોહણસિ તિહિ કરણ

રણાળ ય, પહરણાળ ય, અન્નેસિં ચ વહૂણ પોયવહણપાઝગ્ગાળ દઘ્વાણ પોયવહણ ભરેતિ)

તેમણે ચોખ્ખા, ઘઉં, ઘઉંનોલોટ તેમજ ઘઉંના લોટથી બનાવવામા આવેલું પકવાન્ન વિશેષ, તેલ, ગોળ ઘી, ગોરસ, પાણી, પાણી ભરવાના વાસણો, ત્રિકુટ વગેરે ઔષધીઓ, પથ્યાહાર વિશેષ ભૈષજ્યો, ચારો, લાકડા, અગરસ વગેરે આવરણો, ખડગ વગેરે શસ્ત્રો અને બીજીપણુ ઘણી વડાણુ મા લઈજવા યોગ્ય બધી વસ્તુઓ વડાણુમા લાદી

આ પ્રમાણે તેમણે બધી વસ્તુઓને યથાસ્થાને ગોઠવીને વડાણુને સામા નથી ભરી દીધું અહીં ઉપર ‘ ભૈષજ્ય ’ અને ‘ ઔષધ ’ આ બે શબ્દો પ્રયુક્ત થયા છે તેથી અહીં આ પ્રમાણે પણ અર્થ થાય છે કે ત્રિકુટ વગેરે જે જુદા જુદા દ્રવ્યો છે તે ઔષધ અને આ બધાને એકઠા કરવા જેમકે ચૂર્ણ વગેરે તે ભૈષજ્ય છે “ પોયવહણપાઝગ્ગાળ ” પદનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે જે દ્રવ્ય નૌકાવડે મારી રીતે લઈ જઈ શકાય તે બધું તેમણે તેમા ભર્યું હતું

पत्तन=पोतनगर नौकारोहणम्यान र्वर्तते तत्रोपागच्छति, उपागत्य शकटी-
शाकटिक मुञ्चन्ति, शकटीशाकटिका समूहाग्निधत क्रयाणकादिक सर्वं वस्तु जात
मवतारयन्ति, मुक्त्वा=सर्वं वस्तुजात शकटेभ्योऽवतार्य पोतवहन=नौकायान
सज्जयन्ति यथोचितनूतनोपकरणैः परिष्कृत्य दृढीकुर्वन्ति, सज्जयित्वा=परिष्करणेन
दृढीकृत्य गणिमस्य च यावच्चतुर्विधस्य भाण्डकस्य=क्रयाणकस्य भरन्ति=गणिमादि
चतुर्विधक्रयाणकस्य स्थापनेन नौकायान पूरयन्ति स्मेत्यर्थः । तण्डुलानां च समि-
तस्य गोधूमस्य गोधूमचूर्णनिष्पन्नपक्वान्नशेषस्य च तैलकस्य च गुडस्य च घृत-
स्य च गोरसस्य च उदकस्य च उदकभाजनानां च औषधानां=त्रिकटुकादीनाम्
पट्टणे तेष्वेव उवागच्छति) फिर उन्हो ने क्रयाणको से भरी हुई गाड़ी
और गाड़ों को जुत बाधा-जुनवा कर फिर वे सब के सब चपा नगरी
के ठीक बीचों बीच के मार्ग से होकर जहा गभीरक नाम का जहाज
पर सवार होने का स्थान (बदरगाह) था वहा पर आये ।

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति, मोडित्ता पोयवहण सज्जेति
सज्जित्ता, गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भण्डगस्स भरेति) वहाँ आकर
उन लोगों ने अपनी २ गाड़ियों और गाड़ो को ढील दिया ढीलकर पोत
यानों को सज्जित किया-यथोचित नूतन उपकरणों से दृढ़ किया ।
सज्जित करके फिर बाद में उस चतुर्विध गणिमादि रूप क्रयाणक को
गाड़ियों और गाड़ो पर से उतार २ कर नौका यान में यथोचित स्थान
पर भर दिया (तण्डुलाणय सभियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य
घयस्स य गोरयस्स य उदयस्स य उदयमाणाय य ओसहाण य भेसज्जा

गभीरण पोयपट्टणे तेष्वेव उवागच्छति)

तेमने वेयाणुना भावसाभानथी लरेली गाडी अने गाडाने जेतथा अने
त्यार पळी तेओ अधा चपा नगरीनी जराजर वन्थोवन्थना भागंथी पसार
थमने न्या गभीरक नामनु वडाणु पर भेसवानु स्थान (बदर) हुतु त्या पडोव्या

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति माडित्ता पोयवहण सज्जेति, सज्जित्ता
गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भण्डगस्स भरेति)

त्या पडोथीने तेओओ पोतपोतानी गाडीओ तेमज गाडाओने छोडीने
यथोचित नवीन उपकरणोथी वडाणु तैयार करुं वडाणुने सुदृढ रीते
तैयार करीने तेओओ गाडी तेमज गाडाओनी वेयाणुनी अधी वस्तुओ वडाणुभा
यथास्थाने जोडवी दीधी

(तण्डुलाणय सभियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरयस्स य
उदयस्स य उदयमाणाय य ओसहाण य भेसज्जाण य तगस्स य, कट्टस्स य आव

અથવા-એકદ્રવ્યરૂપાણા ચ ભૈષજ્યાના પથ્યાનામાહારવિશેષાણામ્ અથવા દ્રવ્યસ યોગરૂપાણામ્ ચ તૃણસ્ય ચ કાષ્ઠસ્ય ચ આવરણાનામ્=અક્કરસકાદીના ચ મહરણાના ચ સ્વદ્વાદિશસ્ત્રાણા અન્યેષા ચ વહૂના પોતવહનપાયોગ્યાણા=નૌકાયાનોપનેયાનાં દ્રવ્યાણા=સ્થાપનેન પોતવહન=નૌકાયાન ભરન્તિ પૂરયન્તિ સ્મ । શોભને=શુભાવહે,

ણય તણસ્સ ય, કટ્ટસ્સ ય આવરણાણ ય પહરણાણ ય અન્નેસિં ચ વહૂણ પોયવહણપાઙ્ગાણ દઘ્વાણ પોયવહણ ભરેતિ)

નૌકા યાન મેં ઉન્હોં ને ચાવલોં કો ભરા, ગેહુઓ કો ભરા, ગેહુઓ કે આંટે કો ઓર આટે સે નિવ્વપન્ન પક્કવાન્ન વિશેષકો ભરા । તૈલ, ગુહ ઘૃત ગોરસ ભરા પાની ભરા પાની કે વર્તનોં કો ભરા । ત્રિકુટ આદિ ઔષધિયોં કો ભરા પથ્યાહાર વિશેષ ભૈષજ્યોં કો ભરા, તૃણોં કો ભરા લકઢિયોં કો ભરા અગસ્સ આદિ આવરણોં કો, સ્વદ્વા, આદિ શસ્ત્રોં કો તથા ઓર મીં અનેક વસ્તુઓં કો જો પોત વહન કે યોગ્ય થી ભરા ।

હસ તરહ ઉન્હોં ને ઇન સમસ્ત વસ્તુઓં કો, યથોચિત સ્થાન પર સ્થાપિત ઉસ નૌકા યાન કો ભર દિયા । યહા પર જો ઔષધ ઓર ભૈષજ્ય યે દો શબ્દ પ્રયુક્ત હુણ હેં ઉન સે એસા મીં અર્થ ઘોધ હોતા હૈં કિ ત્રિકુટ આદિ જો અલગ ૨ દ્રવ્ય હેં વે ઔષધ ઓર હન કા સમુદાય રૂપ જો દ્રવ્ય હૈં-જૈસે ચૂર્ણ આદિ વહ ભૈષજ્ય હૈં । “ પોયવહણપાઙ્ગાણ ” પદ કા યહ અર્થ હૈં કિ જો દ્રવ્ય નૌકા દ્વારા અઢી તરહ ઢોયા-જા સકે વહ સઘ ઉન્હોં ને ઉસ મેં ભર દિયા । (સોહણસિ તિહિ કરણ

રણાણ ય, પહરણાણ ય, અન્નેસિં ચ વહૂણ પોયવહણપાઙ્ગાણ દઘ્વાણ પોયવહણ ભરેતિ)

તેમણે ચોખા, ઘઉં, ઘઉંનોલોટ તેમજ ઘઉંના લોટથી બનાવવામા આવેલું પક્કવાન્ન વિશેષ, તેલ, ગોળ ઘી, ગોરસ, પાણી, પાણી ભરવાના વાસણો, ત્રિકુટ વગેરે ઔષધીઓ, પથ્યાહાર વિશેષ લૈષજ્યો, ચારો, લાડડા, અગરસ વગેરે આવરણો, ખડગ વગેરે શસ્ત્રો અને બીજીપણુ ઘણી વહાણુ મા લઈજવા ચોગ્ય બધી વસ્તુઓ વહાણુમા લાદી

આ પ્રમાણે તેમણે બધી વસ્તુઓને યથામ્યાને ગોઠવીને વહાણુને સામા નથી ભરી દીધુ અહીં ઉપર ‘ લૈષજ્ય ’ અને ‘ ઔષધ ’ આ બે શબ્દો પ્રયુક્ત થયા છે તેથી અહીં આ પ્રમાણે પણ અર્થ થાય છે કે ત્રિકુટ વગેરે જે ગુદા ગુદા દ્રવ્યો છે તે ઔષધ અને આ બધાને એકઠા કરવા જેમકે ચૂર્ણ વગેરે તે લૈષજ્ય છે “ પોયવહણપાઙ્ગાણ ” પદનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે જે દ્રવ્ય નૌકાવડે મારી રીતે લઈ જઈ રાકાય તે બધુ તેમણે તેમા ભર્યું હતું

पत्तन=पोतनगर नौकारोहणस्थान वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागस्य शकटी-
शाकटिक मुञ्चन्ति, शकटीशाकटिका समूहापरिषत् क्रयाणकादिक सर्वं वस्तु जात
मवतारयन्ति, मुक्ता=सर्वं वस्तुजात शकटेभ्योऽवतार्य पोतवहन=नौकायान
सज्जयन्ति यथोचितनूतनोपकरणैः परिष्कृत्य दृढीकुर्वन्ति, सज्जयित्वा=परिष्करणेन
दृढीकृत्य गणिमस्य च यावच्चतुर्विधस्य भाण्डकस्य=क्रयाणकस्य भरन्ति=गणिमादि
चतुर्विधक्रयाणकस्य स्थापनेन नौकायान पूरयन्ति स्मेत्यर्थः । तण्डुलानां च समि-
तस्य गोधूमस्य गोधूमचूर्णनिष्पन्नपक्वान्निशेषस्य च तैलकस्य च गुडस्य च घृत-
स्य च गौरसस्य च उदकस्य च उदकमाजनानां च औषधानां=त्रिकटुकादीनाम्

पट्टणे तेषां उवागच्छति) फिर उन्होंने ने क्रयाणको से भरी हुई गाड़ी
और गाड़ों को जुत बाधा-जुनवा कर फिर वे सब के सब चपा नगरी
के ठीक बीचों बीच के मार्ग से होकर जहा गभीरक नाम का जहाज
पर सवार होने का स्थान (बदरगाह) था वहा पर आये ।

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति, मोडित्ता पोयवहण सज्जेति
सज्जित्ता, गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरेन्ति) वहाँ आकर
उन लोगों ने अपनी २ गाड़ियों और गाड़ो को ढील दिया ढीलकर पोत
यानों को सज्जित किया-यथोचित नूतन उपकरणों से दृढ़ किया ।
सज्जित करके फिर बाद में उस चतुर्विध गणिमादि रूप क्रयाणक को
गाड़ियों और गाड़ो पर से उतार २ कर नौका यान में यथोचित स्थान
पर भर दिया (तण्डुलाणय सभियस्स य तेल्लयस्स य गुल्लस्स य
घयस्स य गौरयस्स य उदयस्स य उदयमाणण य ओसहाण य भेसज्जा

गभीरए पोयपट्टणे तेषां उवागच्छति)

तेमने वेयाणुना भावसाभानथी लरेली गाडी अने गाडाने नेतर्या अने
त्यार पछी तेओ अधा चपा नगरीनी जराजर वन्थोवन्थना भागथी पसार
थमने न्या गभीरक नामनु वडाणु पर भेसवानु स्थान (महर) डेतु त्या पडोअ्या

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति माडित्ता पोयवहण सज्जेति, सज्जित्ता
गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरेन्ति)

त्या पडोअ्याने तेओओ पोतपोतानी गाडीओ तेमज्ज गाडाओने छोडीने
यथोचित नवीन उपकरणोथी वडाणु तैयार करुं वडाणुने सुदृढ रीते
तैयार करीने तेओओ गाडी तेमज्ज गाडाओनी वेयाणुनी अधी वस्तुओ वडाणुभा
यथास्थाने जोडवी दीधी

(तण्डुलाण य सभियस्स य तेल्लयस्स य गुल्लस्स य घयस्स य गौरयस्स य
उदयस्स य उदयमाणण य ओसहाण य भेसज्जाण य तगस्स य, कट्टस्स य आव

અથવા-એકદ્રવ્યરૂપાણા ચ ભૈષજ્યાના પથ્યાનામાહારવિશેષાણામ્ અથવા દ્રવ્યસ-
યોગરૂપાણામ્ ચ તૃણસ્ય ચ કાષ્ઠસ્ય ચ આગ્ન્યાનામ્=અઙ્ગરસકાદીના ચ પ્રહરણાના
ચ સ્વદ્વાદિશસ્ત્રાણા અન્યેષા ચ વહૂના પોતવહનપાયોગ્યાણા=નૌકાયાનોપનેયાનાં
દ્રવ્યાણા=સ્થાપનેન પોતવહન=નૌકાયાન ભરન્તિ પૂરયન્તિ સ્મ । શોભને=શુભાવહે,
ળય તણસ્સ ય, કટ્ટસ્સ ય આવરણાળ ય પહરણાળ ય અન્નેસિં ચ
વહૂણ પોયવહ્ણપાઝગ્ગાળ દઘ્વાળ પોયવહ્ણ ભરેતિ)

નૌકા યાન મેં ઉન્હોં ને ચાવલોં કો ભરા, ગેહુઓ કો ભરા, ગેહુઓ
કે આંટે કો ઔર આટે સે નિષ્પન્ન પક્વાન્ન વિશેષકો ભરા । તૈલ, ગુડ
ઘૃત ગોરસ ભરા પાની ભરા પાની કે વર્તનો કો ભરા । ત્રિકુટ આદિ
ઔષધિયોં કો ભરા પથ્યાહાર વિશેષ ભૈષજ્યો કો ભરા, તૃણોં કો ભરા
લકડિયો કો ભરા અગસ્સ આદિ આવરણો કો, સ્વદ્વા, આદિ શસ્ત્રોં કો
તથા ઔર ભી અનેક વસ્તુઓં કો જો પોત વહન કે યોગ્ય થી ભરા ।

હસ તરહ ઉન્હોં ને ઇન સમસ્ત વસ્તુઓં કો, યથોચિત સ્થાન પર
સ્થાપિત ઉસ નૌકા યાન કો ભર દિયા । યહા પર જો ઔષધ ઔર
ભૈષજ્ય યે દો શબ્દ પ્રયુક્ત હુએ હેં ઉન સે એસા ભી અર્થ ઘોષ હોતા હૈ
કિ ત્રિકુટ આદિ જો અલગ ૨ દ્રવ્ય હેં વે ઔષધ ઔર ઇન કા સમુદાય
રૂપ જો દ્રવ્ય હૈ-જૈસે ચૂર્ણ આદિ વહ ભૈષજ્ય હૈ । “ પોયવહ્ણપાઝ-
ગ્ગાળ ” પદ કા યહ અર્થ હૈ કિ જો દ્રવ્ય નૌકા દ્વારા અઢી તરહ ઢોયા-
જા સકે વહ સય ઉન્હો ને ઉસ મેં ભર દિયા । (સોહણસિ તિહિ કરણ

રણાળ ય, પહરણાળ ય, અન્નેસિ ચ વહૂણ પોયવહ્ણપાઝગ્ગાળ દઘ્વાળ પોયવહ્ણ
ભરેતિ)

તેમણે ચોખા, ઘઉં, ઘઉંનોલોટ તેમજ ઘઉંના લોટથી બનાવવામા આવેલુ
પકવાન્ન વિશેષ, તેલ, ગોળ ઘી, ગોરસ, પાણી, પાણી ભરવાના વાસણો,
ત્રિકુટ વગેરે ઔષધીઓ, પથ્યાહાર વિશેષ ભૈષજ્યો, ચારો, લાકડા, અગરસ
વગેરે આવરણો, ખડગ વગેરે શસ્ત્રો અને બીજીપણુ ઘણી વહાણુ મા લઈજવા
ચોગ્ય બધી વસ્તુઓ વહાણુમા લાદી

આ પ્રમાણે તેમણે બધી વસ્તુઓને યથાસ્થાને ગોઠવીને વહાણુને સામા-
નથી ભરી દીધુ અહીં ઉપર ‘ ભૈષજ્ય ’ અને ‘ ઔષધ ’ આ બે શબ્દો
પ્રયુક્ત થયા છે તેથી અહીં આ પ્રમાણે પણ અર્થ થાય છે કે ત્રિકુટ વગેરે
જે ગુદા ગુદા દ્રવ્યો છે તે ઔષધ અને આ બધાને એકઠા કરવા જેમકે
ચૂર્ણ વગેરે તે ભૈષજ્ય છે “ પોયવહ્ણપાઝગ્ગાળ ” પદનો અર્થ આ પ્રમાણે છે
કે જે દ્રવ્ય નૌકાવડે મારી રીતે લઈ જઈ રાકાય તે બધુ તેમણે તેમા ભર્યું હતું

पत्तन=पोतनगर नौकासोहनस्थान र्वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शकटी-
 शाकटिकं मुञ्चन्ति, शकटीशाकटिका समूहापरिधित क्रयाणकादिक सर्वं वस्तु जात
 मवतारयन्ति, मुक्त्वा=सर्वं वस्तुजात शकटेभ्योऽवतार्य पोतग्रहन=नौकायान
 सज्जयन्ति यथोचितनूतनोपकरणैः परिष्कृत्य दृढीकुर्वन्ति, सज्जयित्वा=परिष्करणेन
 दृढीकृत्य गणिमस्य च यावच्चतुर्विधस्य भाण्डकस्य=क्रयाणकस्य भरन्ति=गणिमादि
 चतुर्विधक्रयाणकस्य स्थापनेन नौकायान पूरयन्ति स्मेत्यर्थः । तण्डुलानां च समि-
 तस्य गोधूमस्य गोधूमचूर्णनिष्पन्नपकान्नविशेषस्य च तैलकस्य च गुडस्य च घृत-
 स्य च गोरसस्य च उदकस्य च उदकभाजनानां च औषधानां=त्रिकटुकादीनाम्
 पट्टणे तेषां उवागच्छति) फिर उन्होंने ने क्रयाणको से भरी हुई गाड़ी
 और गाड़ों को जुत बाधा-जुनवा कर फिर वे सब के सब चपा नगरी
 के ठीक धीचों धीच के मार्ग से होकर जहा गभीरक नाम का जहाज
 पर सवार होने का स्थान (चदरगाह) था वहा पर आये ।

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति, मोडत्ता पोयवहण सज्जंति
 सज्जित्ता, गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरंति) वहां आकर
 उन लोगों ने अपनी २ गाड़ियों और गाड़ो को ढील दिया ढीलकर पोत
 यानों को सज्जित किया-यथोचित नूतन उपकरणों से दृढ़ किया ।
 सज्जित करके फिर बाद में उस चतुर्विध गणिमादि रूप क्रयाणक को
 गाड़ियों और गाड़ो पर से उतार २ कर नौका यान में यथोचित स्थान
 पर भर दिया (तण्डुलाणय समियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य
 घयस्स य गोरयस्स य उदयस्स य उदयमाणण य ओसहाण य भेसज्जा

गभीरए पोयपट्टणे तेषां उवागच्छति)

तेमने वेयाणुना भावसाभानधी लरेली गाडी अने गाडाने जेतथा अने
 त्थार पछी तेओ भधा चपा नगरीनी जराजर वच्चोवच्चना भागंधी पसार
 थधने ज्या गभीरक नामनु वडाणु पर जेसवानु स्थान (महर) डतु त्या पडोच्या

(उवागच्छित्ता सगडसागडिय मोयति माडत्ता पोयवहण सज्जंति, सज्जित्ता
 गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भडगस्स भरंति)

त्या पडोचीने तेओओ पोतपोतानी गाडीओ तेमज गाडाओने छोडीने
 यथोचित नवीन उपकरणेथी वडाणु तैथार कथुं वडाणुने सुदृढ रीते
 तैथार करीने तेओओ गाडी तेमज गाडाओनी वेयाणुनी अधी वस्तुओ वडाणुभा
 यथास्थाने जोडवी दीधी

(तण्डुलाण य समियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरयस्स य
 उदयस्स य उदयमाणण य ओसहाण य भेसज्जाण य तगस्स य, कट्टस्स य आव

त्तसि धूवसि पूइएसु ससुह्वाएसु, ससारियासु, वलयवाहासु
ऊसिएसु सिएसु झयग्गेसु, पडुप्पवाइएसु तूरेसु, जइएसु सव्वस-
उणेसु, गहिएसु रायवरसासणेसु, महया उक्किट्टिसीहणाय
जंयरवेण पक्खुभित्तमहासमुद्धरवभूयं पिव मेइणि करेमाणा
एगदिसि सजुत्ता नावा वाणियगा णावं दुरुद्धा ।

तओ पुस्समाणवो वक्कमुदाहु—हभो सव्वेसिमविभे अत्थ
सिद्धीओ उवट्ठिताइ कल्लाणाइ, पडिहयाइ सव्वपावाइं, जुत्तो
पूसो विजओ मुहुत्तो अय देसकालाओ, तओ पुस्समाणवेणं वक्के
उदाहिण हट्टतुट्ठा कुच्छिधारकन्नधारगम्भिज्जसंजाता णावा
वाणियगा वावारिसु तं नाव पुन्नुच्छगं पुण्णमुहि वधणेहिंतो
मुंचंति ॥ सू० १९ ॥

टीका—‘तएण तेसिं’ इत्यादि—ततस्तदनन्तर खलु तेषामरहन्नक प्रभु
खाणा यावत् नौकावाणिजकाना परिजना यावत् तादृशीभिर्वाग्भिरभिनन्दन्तश्चाभि
सस्तुवन्तश्चैव=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादिषुः—हे आर्य ! =हे पितामह ! तात ! हे पितः
हे मातुल ! हे भागिनेय ! भगवता महता समुद्रेण ‘अभिरन्विज्जमाणा’ २ अभि

‘तएण तेसिं अरहन्नग जाव’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (अरहन्नग जाव वाणियगाण परियणा
जाव तारिसेहिं वग्गूहिं अभिणदता य अभिसथुणमाणा य एव वयासी)
उन अरहन्नक यावत् अन्य और पोतवाणिजों के परिजनो ने यावत्
उस २ प्रकार की वाणियों द्वारा उन सबका अभिनन्दन एव सस्तवन
करते हुए उन से इस प्रकार कहा—(अज्ज ! ताय ! भाय ! माउल !
भाइणज्जे ! भगवया समुद्रेण अभिरन्विज्जे माणा २ चिर जीवह भइ

‘तएण तेसिं अरहन्नग जाव’ इत्यादि

टीकार्थ—“तएण” त्याग्याह “अरहन्नग जाव वाणियगाण परियणा जाव
तारिसेहिं वग्गूहिं अभिणदताय अभिसथुणमाणाय एव वयासी” ते अरहन्नक प्रभु
पोतवाणिजाना परिजनो तेभनु अनेक जतनी भगववाणीये वडे अभिनन्दन
अने सस्तवन कर्त्ता तेभने कडेवा लाग्या (अज्ज ! ताय ! भाय ! माउल !
भाणिज्जे भगवया समुद्रेण अभिरन्विज्जेमाणा २ चिरजीवह भइ च ते) हे आर्य !

તિથિકરણ દિવસ નક્ષત્રમુહૂર્તે વિપુલ-વિસ્તીર્ણમ્, અગ્નપાનપાનસ્વાદ્ય-ચતુર્વિ-
ધમાહારમુપસ્કારયન્તિ-સપાદયન્તિ, ઉપસ્કાર્ય મિત્રજ્ઞાતિમુસ્માન્ ભોજયિત્વાઽઽપૃ-
ચ્છન્તિ, સમુદ્રયાત્રાનુમતિપ્રદાનાર્થે પ્રાર્થયન્તિ આપૃન્ત્ય યત્ર પોતસ્થાન-નૌકા
યાનારોહણસ્થાન વર્તતે તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય ચ તત્ર સ્થિતાઃ ॥મૂ૦ ૧૮ ॥

મૂલમ્-તદ્દેવે તેસિં અરહન્નગ જાવ વાણિયગાળં પરિયણા
જાવ તારિસેહિં વગ્ગૂહિ અભિણંદંતા ચ અભિસથુણમાણા ચ
એવં વયાસી-અજ્જ તાય માય માઉલ ભાદ્દણજ્ઞે ભગવયા સમુદ્દેણ
અભિરવિલ્લખમાણા ૨ ચિરજીવહ ભદ્દ ચ મે પુણરવિલલ્લદ્દે કય-
કજ્ઞે અણહસમગ્ગે નિયગ ઘરં હવ્વમાગણ પાસામોત્તિકદ્દુ તાહિં
સોમાહિ, નિહ્ધાહિ દીહાહિં, સપ્પિવાસાહિ પપ્પુયાહિં દિટ્ઠીહિં
નિરીપ્પલ્લખમાણા મુહુત્તમેત્તં સચ્ચિટ્ઠતિ તઓ સમાણિણસુ પુપ્ફવ-
લિકમ્મે દિન્નેસુ સરસરત્તચ્ચદણદહર પચંગુલિતલેસુ, અણુવિલ્લ-

દિવસનક્ષત્રમુહૂર્તસિ વિપુલં અસળ ૪ ઉચ્ચલ્લડાવેતિ, ઉચ્ચલ્લડાવિત્તા,
મિત્તળાઈ૦ આપુચ્છતિ, આપુચ્છિત્તા જેણેવ પોયદ્દાણે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ)
જય સન પ્રકાર કા ચતુર્વિધ ક્રયાણક નૌકાયાન મેં ભરા જા ચુકા તથા
પુનઃ ઉન લોગોં ને અશનાદિ રૂપ ચતુર્વિધ આહાર નિપ્પન્ન કરવાયા,
ઔર કરવા કર અપને ૨ મિત્ર જ્ઞાતિ આદિ પરિજનોં કો જિમાયા જિમા
કર ઉન સે સમુદ્રયાત્રા કર ને કી અનુમતિ માગી-ઔર માગ કર ફિર
વે સબ કે સબ પોત વણિક્ક જહા નૌકા પર ચઢને કા સ્થાન થા વહા
આયે-ઔર આકર વહાં ઠહર ગયે । સૂત્ર “ ૧૮ ”

(સોદ્દેવસિ તિથિકરણદિવસનક્ષત્રમુહૂર્તસિ વિપુલ અસળ ૪ ઉચ્ચલ્લડાવેતિ, ઉચ્ચ
લ્લડાવિત્તા, મિત્તળાઈ૦ આપુચ્છતિ, આપુચ્છિત્તા જેણેવ પોયદ્દાણે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ

ત્યારે ત્યારે જાતની વેચાણ કરવાની વસ્તુઓ જહાજમા ભરાઈ ગઈ
ત્યારે તેમણે અશન વગેરે ત્યારે જાતનો આહાર તૈયાર કરાવડાવ્યો અને
કરાવડાવીને પોતપોતાના મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનોને જમાડ્યા અને જમા
ડીને તેમની પાસેથી સમુદ્રયાત્રા કરવાની આજ્ઞા માગી અને આજ્ઞા મેળવીને
તેઓ બધા પોતવણિકો બધા વહાણમા બેસવાનું વધવાનું સ્થાન હેતુ ત્યા
આવ્યા અને ત્યા આવીને તેઓ બધા ત્યા રોકાયા ॥ સૂત્ર “ ૧૮ ” ॥

दानादिकर्मसु, तथा-सरसरक्तचन्दन दर्दर पञ्चाङ्गुलितलेषु सरसरक्तचन्दनस्य दर्दरेण चपेटाऽऽकारेण पञ्चाङ्गुलितलेषु करतलाङ्गुलेषु दत्तेषु परीधानीयेषु उत्तरीयेषु वस्त्रेषु च सरसरक्तचन्दनानुलिप्तकरतलमुद्रणेषु कृतेष्वित्यर्थः । अनूत्क्षिप्ते=अनुप-
श्चात् ऊर्ध्वक्षिप्ते धूपे गुग्गुलादि धूपे कृते सति, पूजितेषु=धूपादिना समानितेषु समुद्रवातेषु समुद्रसम्बन्धिपवनेषु, तथा ससारितेषु स्थानान्तरादानीय यथोचित स्थाने निवेशितेषु वलयवाह्येषु=दीर्घकाष्ठरूपेषु बाहुषु, तथा उच्छिद्रतेषु उर्ध्वमुखमवस्थापितेषु सितेषु शुक्लेषु ध्वजाग्रेषु पताकाग्रेषु, तथा-पटुप्रवादितेषु पटुभिः पुष्पैः प्रवादितेषु, यद्वा-पटु यथा भवति तथा प्रवादितेषु तूर्येषु वाद्येषु, तथा जयिकेषु जयकारकेषु सर्वशकुनेषु=वायसरुतादिषु, तथा-गृहीतेषु=प्राप्तेषु राजवंशशासनेषु=समुद्रयात्रायै चम्पानगरीभूपस्याऽऽज्ञापत्रेषु तथा-महोत्कृष्टसिंहनाद

धूवसि, पूङ्गसु समुद्रवाएसु ससारियासु वलयवाहासु, उसिएसु सिएसु क्षयगगेसु, पटुप्पवाडएसु तूरेसु, जडएसु सन्वसउणेसु, गहिएसु रायवरसासणेसु) इसके बाद पुष्प अक्षत दानादिक कर्म जब समाप्त हो चुका, परिधानीय वस्त्रों पर सरस रक्त चन्दन के चपेटाकार से हाथे जब लगाये जा चुके, गुग्गुल आदि धूप अग्नि में डालकर जब उस का धूम किया जा चुका समुद्रीय हवाएँ जब धूपादि प्रदान द्वारा पूजित की जा चुकी दीर्घ काष्ठ रूप वलय (पतवार) स्थानान्तर से लाकर जब यथोचित स्थान पर रखे जा चुके, शुभ्र ध्वजाओं के अग्रभाग जब उर्ध्वमुख कर अवस्थापित हो चुके, चतुर बजाने वालों के द्वारा जब अच्छी तरह बाजे बजाये जा चुके जय कारक वायसरुतादि रूप सर्व शकुन जब अच्छी तरह से हो चुके और समुद्र यात्रा काने का आदेश पत्र जब चपा नगरी के राजा का प्राप्त हो चुका तब(महया उक्किट्टसी

अणुवित्तसि धूवसि पूङ्गसु समुद्रवाएसु ससारियासु वलयवाहासु उसिएसु सिएसु क्षयगगेसु पटुप्पवाडएसु तूरेसु जडएसु सन्व सउणेसु गहिएसु रायवरसासणेसु)

त्यार णाह पुष्प अक्षत दान वगेरे नी विधि प्रीथर्ध गध, परिधानीय वस्त्रो डिपर भरस लाल चन्दनना थापाओ लगावी लीधा, गुग्गुल वगेरे धूप अग्निमा नाभीने धूप करी लीधा, धूप वगेरे अपीने समुद्रना पवनोनी अर्थनानु काम पुश् थर्धगयु, भील स्थानेथी दीर्घकाष्ठरूप वलय ओटले के सूडान वगेरे वडाणु डिपर यथास्थाने मुगध गया, शुभध्वन्तओना अग्रभाग न्यारे उर्ध्वमुखना रूपे अवस्थापित थर्ध गया, कुगण वान्तवाणाओ वडे सरस वान्तओ वगाडवानु काम पति गयु, जय पमाडनारा डागडा वगेरे पक्षी ओना भागलिड गण्डो ओटले के सारा शुडन थर्ध गया अने चपानगरीना राज पासेथी समुद्रयात्रा करवानो पववानो " आदेश पत्र " तेओनी पासे आवी गये। त्यारे

રક્ષયમાણા ર=સુરક્ષયમાણાઃ૨ ચિર વ્રહ્માઞ્ઞીયત, મદ્રવ યુમાક મવતુ પુનર
પિ લઘ્યાર્થાન્ લઘ્વલાભાન્ કૃતકાર્યાન્ સમ્પાદિતસકલકૃત્યાન્ અનવસમગ્રાન્=
અનવાશ્વ તે સમગ્રાઃ અનવસમગ્રાસ્તાન્ દોષરહિતત્વાદનવા, યનેષુ પરિવારેષુ ચ
હામામાવાત્ સમગ્રાઃ તથાવિધાન્ યુમાન્ નિઝક=સ્વક્રીય, ગૃહ દ્વ્યમાગતાન્
શીઘ્રમાગતાન્ ત્રય પશ્યામઃ, ઇતિકૃત્યા=ઇત્યુક્તવા તામિ સૌમ્યાભિર્નિર્વિકારત્વાત્,
સ્નિગ્ધાભિઃ સસ્નેહત્વાત્, દીર્ઘાભિઃ દૂર યાવદઅલોકનાત્ ' સપ્તિવાસાર્હિ ' મપિ
પાસાભિઃ=દર્શનેચ્છાવતીભિઃ, ' પપ્પુયાર્હિ ' પપ્પુતાભિઃ=અશ્રુપૂર્ણાભિઃ દિદ્વીહિ
દૃષ્ટિમિ નિરીક્ષમાણા અવલોકમાના મુહૂર્તમાર્ગ સતિષ્ઠન્તે અરહન્નાદીનાં
પરિજના અશ્રુપૂર્ણદૃષ્ટિમિસ્તાન્ પશ્યન્તોમુહૂર્તમાર્ગ નિશ્ચલા અમવન્નિત્યર્થઃ ।
તતઃ ' સમાણિણસુ ' સમાપિતેષુ મમ્યર્ક સપાદિતેષુ પુષ્પવેલિકર્મસુ પુષ્પાક્ષત-

ચ,મે) હે આર્ય ! હે તાત ! હે ભ્રાતઃ ! હે મામા ! હે ભોગેનેઘ ! આપલોગ
હાસે ભગવાન્ વિશાલ સમુદ્ર સે ઘાર૨ સુરક્ષિત હોતે હુળ ચિરકાલ તક
જીવિત રહેં । આપ સવકા કલ્યાણ હો । (પુનરવિ લલ્લદ્દે, કય કજ્જે,
અળહસમગ્ગે નિયગ ઘર હવ્વમાગણ પાસામો) હમ લોગ લાભ સે-યુક્ત
સમ્પાદિત સકલ કાર્યોં વાલે વિના કિસી શારીરિક આદિ વાધા સે રહિત
ધન ઔર પરિવારો સે પરિપૂર્ણ હુળ આપ સવ કો ઘર પર શીઘ્ર આયા
હુઆ દેલ્લે । (ત્તિ કદ્દુ) એસા કહ કર વે વહા-(તા હિં સોમાહિં, નિદ્વાહિં,
દીહાહિં, સપ્તિવાસાર્હિં, પપ્પુયાર્હિં દિદ્વીહિં નિરીક્ષમાણા મુહુત્તમેત્ત
સચિદ્વતિ) સૌમ્ય સ્નિગ્ધ, દીર્ઘ, દર્શનેચ્છાવતી ઔર અશ્રુપૂર્ણ દૃષ્ટિયોં
સે ઉન્હેં દેલ્લતે હુળ ણક મુહૂર્ત તક વેઠે રહે । (તઓ સમાણિણસુ પુષ્પ
બલકર્મમેસુ દિન્નેસુ સરસરત્તચદણદહર, પચગુલિતલેસુ, અણુખિલત્તસિ

હિતાત ! હે લાઘ ! હે મામા ! હે ભાભુજ ! તમે બધા આ ભગવાન
વિશાળ સમુદ્રવડે વારવાર સુરક્ષિત થઇને ચિરકાળ સુધી જીવતા રહો
તમારુ કલ્યાણ થાએ " પુનરવિલલ્લદ્દે, કયકજ્જે, અળહસમગ્ગે નિયગ
ઘર હવ્વમાગણ પાસામો " અમે બધા તમને લાભન્વિત થયેના, બધા કાચોને
પાર પમાડનારા, કેઇ પણ બીજાની શારીરિક મુશ્કેલી વગર એટલે કે સ્વસ્થ
શરીરવાળા, ધન તેમજ પરિપૂર્ણ પરિવારથી યુક્ત થઇને ઘેર પાછા આવેલા
ભેઇએ " ત્તિકદ્દુ " આમ કહીને તેઓ ત્યાં ।

(તાર્હિં સોમાર્હિં નિદ્વાર્હિં દીહાર્હિં, સપ્તિવાસાર્હિં પપ્પુયાર્હિં, દિદ્વીર્હિં નિરી
ક્ષમાણા મુહુત્તમેત્ત સચિદ્વતિ)

૧ સૌમ્ય સ્નિગ્ધ, બહુવખત સુધી દર્શનની ઈચ્છાવાળી અને આસુ બીની
દૃષ્ટિઓથી તેમને ભેટા એક મુહૂર્ત સુધી, બેસી રહ્યા ।

(તઓ સમાણિણ સુપુષ્પ બલિકર્મમેસુ દિનેસુ સરસરત્તચદણદહરપચગુલિ તલેસુ,

दानादिकर्मसु, तथा-सरसरक्तचन्दन दर्दर पञ्चाङ्गुलितलेषु सरसरक्तचन्दनस्य दर्द-
रेण चपेटाऽऽकारेण पञ्चाङ्गुलितलेषु करतलाङ्कनेषु दत्तेषु परीधानीयेषु उत्तरीयेषु
वस्त्रेषु च सरसरक्तचन्दनानुलिप्तकरतलमुद्रणेषु कृतेष्वित्यर्थः । अनूत्क्षिप्ते=अनुप-
श्चात् ऊर्ध्वक्षिप्ते धूपे गुग्गुलादि धूपे कृते सति, पूजितेषु=धूपादिना समानितेषु
समुद्रवातेषु समुद्रसम्बन्धिपवनेषु, तथा ससारितेषु स्थानान्तरादानीय यथोचित
स्थाने निवेशितेषु वलयवाह्येषु=दीर्घकाष्ठरूपेषु बाहुषु, तथा उच्छिद्रतेषु उर्ध्वमुखम्
वस्थापितेषु सितेषु शुक्लेषु ध्वजाग्रेषु पताकाग्रेषु, तथा-पटुप्रवादितेषु पटुभिः
पुष्पैः प्रवादितेषु, यद्वा-पटु यथा भवति तथा-प्रवादितेषु तूर्येषु वाद्येषु, तथा
जयिकेषु जयकारकेषु सर्पशकुनेषु=वायसरुतादिषु, तथा-गृहीतेषु=प्राप्तेषु राज-
वंशशासनेषु=समुद्रयात्रार्थं चम्पानगरीभूपस्याऽऽज्ञापत्रेषु तथा-महोत्कृष्टसिंहनाद

धूवसि, पूङ्गसु समुद्रवाणसु ससारियासु वलयवाहासु, उसिएसु सिए-
सु झयगगेसु, पडुप्पवाडएसु तूरेसु, जडएसु सव्वसउणेसु, गहिएसु
रायवरसासणेसु) इसके बाद पुष्प अक्षत दानादिक कर्म जब समाप्त
हो चुका, परिधानीय वस्त्रों पर सरस रक्त चन्दन के चपेटाकार से हाथे
जब लगाये जा चुके, गुग्गुल आदि धूप अग्नि में डालकर जब उस का
धूम किया जा चुका समुद्रीय हवाएँ जब धूपादि प्रदान द्वारा पूजित की
जा चुकी दीर्घ काष्ठ रूप वलय (पतवार) स्थानान्तर से लाकर जब
यथोचित स्थान पर रखे जा चुके, शुभ्र ध्वजाओं के अग्रभाग जब
उर्ध्वमुख कर अवस्थापित हो चुके, चतुर बजाने वालों के द्वारा जब
अच्छी तरह बाजे बजाये जा चुके जय कारक वायसरुतादि रूप सर्व
शकुन जब अच्छी तरह से हो चुके और समुद्र यात्रा काने का आदेश
पत्र जब चपा नगरी के राजा का प्राप्त हो चुका तब(महया उक्किट्टसी

अणुक्खित्तसि धूवसि पूङ्गसु समुद्रवाणसु ससारियासु वलयवाहासु उसिएसु सिएसु
झयगगेसु पडुप्पवाडएसु तूरेसु जडएसु मव्व सउणेसु गहिएसु रायवरसासणेसु)

त्यार णाह पुष्प अक्षत दान वगेरे नी विप्पि प्रीथिं गध, परिधानीय
वस्त्रो उपर सरस लाल चन्दनना थापाओ लगावी लीधा, गुग्गुल वगेरे धूप
अग्निमा नाभीने धूप करी लीधा, धूप वगेरे अर्पिने समुद्रना पवनोनी
अर्थनानु काम पुइ थं गयु, णीज स्थानेथी दीर्घकाष्ठरूप वलय ओटले डे
सूझान वगेरे वडाणु उपर यथास्थाने मुकांठ गया, शुभध्वजओना अग्रभाग
ज्यारे उर्ध्वमुखना इपे अवस्थापित थं गया, कुराण वाजवाजाओ वडे
सरस वाजओ वगाडवानु काम पति गयु, जय पमाडनारा डागडा वगेरे पक्षी
ओना भागतिक गण्ढे ओटले डे सारा शुकन थं गया अने चम्पानगरीना
राज पानेथी समुद्रयात्रा करवाने पव्वाने " आदेश पत्र " तेओनी पासो
आवी गयो त्यारे

जयरवेण उच्चस्वरयुक्त जय जय भ्रनिता प्रभुभित्तमहासमुद्ररवभूतामिव वायु
प्रक्षोभजनितमहासागरध्वनिव्याप्तमिव मेदिनी = पृथ्वि प्रचुरनादवर्ती कुर्वाणा
एकदिशि एरुस्या दिशि सयामानीका वाणिजका नाव नौकायान दुरुद्धाः
आरोहति स्म ।

ततस्तदनन्तर ' पुस्समाणवो ' पुष्पमानव = मागधो मङ्गलपाठकः ' वक्कमु-
दाहु ' वाक्यमुदाह-मङ्गलवचनमुक्तवान् तदाह-हभो इत्यादि हे नौकायात्रिका
' सव्वेसिमविभे ' सर्वेषामपि युष्माकम् अर्थसिद्धयो भवतु, उपस्थितानि कल्या-
णानि भवन्तु तथा प्रतिहितानि सर्वपापानि भवन्तु=सर्वविघ्ना प्रतिहता विनष्टा
भवन्तिवत्यर्थः । ' जुत्तो ' युक्तः ' पूसो ' पुष्पः=पुष्पाख्यो नक्षत्रविशेषः अनुकू-
लेन चन्द्रमसा युक्त इत्यर्थः । पुष्पनक्षत्र यात्राया प्रशस्तम् तथ चोक्त-

हणायजयरवेण पक्खुभित्तमहासमुद्ररवभूयपिव मेइणि करेमाणा)
उत्कृष्ट सिंहनाद जैसी जय जय भ्वनि से वायु के प्रक्षोभ से जनित
महासागरकी ध्वनि से व्याप्त हुई की तरह मेदनी को करते हुए (सज्जु-
त्ता नावा वाणियगा एगदिसि णाव दुरुद्धा) वे सायात्रिक पोत वणिक
नौव पर सवार हुए ।

(तओ पुस्समाणवो वक्कमुदाहु) इतने में ही मङ्गल पाठक-चार-
ण-ने मङ्गल भ्वनि की (हभो सव्वेसि भविभे अत्थसिद्धीओ उवट्ठि-
ताइ कल्लाणाइ, पडियाउ सव्व पावाइ, जुत्तो पूसो, विजओ मुहुत्तो
अयदेसकालो) हे हे नौका यात्रिकों ! आप सबको अर्थ की सिद्धि हो,
सब कल्याण आपके लिये सदा उपस्थित रहें, समस्त प्रकार के विघ्न
आपकी इस मागलिक यात्रा में नाश हो पुष्प नक्षत्र का अनुकूल चन्द्र-
मा के साथ योग रहा है यात्रा में पुष्प नक्षत्र का योग प्रशस्त होता

(महया उक्किट्ठसीहणायजयरवेण पक्खुभित्तमहासमुद्ररवभूयपिव मेइणि करेमाणा)

पवनथी-क्षुब्ध महासागरना सर्वत्र व्याप्त थयेला ध्वनीनी जेभ सिङ्गनाइ
जय जय ध्वनिथी पृथ्वीने शण्डि करता (सज्जुत्तानावा वाणियगा एगदिसिणाव
दुरुद्धा) ते सभये मागलिकोअे अट्ठे के आरखोअे मङ्गलध्वनि ओ

(हभो सव्वेसिमविभे अत्थसिद्धीओ उवट्ठिताइ कल्लाणाइ पडियाइ
सव्वपावाइ, जुत्तो पूसो विजओ मुहुत्तो अयदेसकालो)

हे पोतवणिको ! तमने अधाने अर्थनी सिद्धि थाय तमने सदा कल्याणो
प्राप्त थाओ, मङ्गलयात्राना तमारा अधा विघ्नोनाश पाओ अत्थाइ चन्द्रनी
साथे पुष्पनक्षत्रनो अनुकूल योग थई रह्यो छे (यात्रामा पुष्पनक्षत्रनो योग

અપિ દ્વાદશમે ચન્દ્ર પુણ્યઃ સર્વાર્થસાધનઃ ॥ ઇતિ ॥

વિજયો મુહૂર્તોઽપુના વિચરતે, અય દેશકાલઃ=સમય પ્રસ્થાને શુભાવહ ઇત્યુ-
ક્ત-માગધેન । તતસ્તદનન્તર ' પુસ્સમાણવેણ ' પુણ્યમાનવેન માગધેન ' વક્ક '
વાક્યે=માદ્ગલિકવચને, ' ઉદાહિણ ' ઉદાહરતે ઉક્તે સતિ હૃષ્ટતુષ્ટા અતિશયેન
પ્રમુદિતા ' કુચ્છિધારકન્નધાર ગન્મિજ્જ સજ્જાણાવાવાણિયગા ' કુક્ષિધાર
કર્ણધાર ગર્મજ સયાત્રા નૌવાણિનકાઃ=કુક્ષિધારા નૌકાયાઃ પાર્શ્વતો નિયોજિતા
સચ્ચાલકાઃ, કર્ણધાર નાવિકાઃ પ્રધાનભૂતા નૌકાવાહકાઃ, ગર્મજાઃ=નૌમધ્યે
સ્થિત્વા યથાવસરકાર્યકર્તાર, સયાત્રાઃ=સગતાઃ સમિલિતાઃ સન્તો દેશાન્તર-
ગામિન, નૌ વાણિજકાઃ=નૌકયા વાણિજ્યકારિણ માણ્ડપતય. સર્વેતે વ્યાપૃત
વન્ત સ્વ સ્વ વ્યાપારે પ્રવૃત્તા સન્તઃ, તા નાવ પૂર્ણેસદ્ધા વિવિધક્રયાણમ્જાતૈઃ

હૈ-ઉક્તશ્ચ અપિ દ્વાદશમે ચન્દ્રે પુણ્યઃ સર્વાર્થસાધન । ઇમ સમય વિજય
મુહૂર્ત વર્ત રહા હૈ । પ્રસ્થાન કે લિયે યહ સમય શુભાવહ હૈ । (તઓ
પુસ્સમાણવેણ વક્કે ઉદાહિણ હૃષ્ટતુષ્ટા કુચ્છિધારકન્નધારગન્મિજ્જ
સજ્જાણાવાવાણિયગા વાવારિસુ) ઇસ તરહ પુણ્ય માનવ-ચારણ જવ
મગલ ધ્વનિ કર ચુકા-તવ હર્ષિત ઓર સતુષ્ટ હુણ કુક્ષિધાર-નૌકા કે
પાર્શ્વ મે નિયોજિત કિયે ગયે સચાલક જન, કર્ણધાર-સ્વેદિયાજન,
ગર્મજ-નૌકા કે મીતર વૈઠ કર અવસરાનુકૂલ કાર્ય કર્તા જન, ઓર
સાયાત્રિક જન-મિલકર પરદેશ જાને વાલે પોતવણિક્ કિ જિન કા
ક્રયાણક નૌકા મે મરા હુઆ યા-યે સવ કે સવ અપને ૨ વ્યાપાર-કાર્ય
મે પ્રવૃત્ત હો ગયે (ત નાવ પુન્નુચ્છગ પુણ્ણ મુહિવધણેહિંતો મુચતિ)
ઓર ઉસ નૌકા કો કિ જિસ કા સ યમાગ વિવિધ ક્રયાણકોં સે પૂર્ણ

પ્રશસ્ત હોય છે-કહ્યું પણ છે- ' અપિદ્વાદશમે ચન્દ્રે પુણ્ય સર્વાર્થસાધન '')
અત્યારે વિજયના મુહૂર્તનો સમય ચાલી રહ્યો છે પ્રસ્થાન માટે અત્યાર
નો વખત શુભાવહ છે

(તઓ પુસ્સમાણ વેણવક્કે ઉદાહિણ હૃષ્ટતુષ્ટા કુચ્છિધારકન્નધાર ગન્મિજ્જ
સજ્જાણાવાવાણિયગા વાવારિસુ)

આરીતે અત્યારે પુણ્યમાનનો-ચરણો-નો મગળ પાઠ થઈ ચૂકયો ત્યારે
હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થયેલા કુક્ષિધાર-નૌકાના પાર્શ્વભાગમા નિયુક્ત કરાયેલા
સચાલકો, કર્ણધાર-નૌકાચલાવનારાઓ, ગર્મજ-નૌકાના અંદરના ભાગમા
બેસીને અવસરાનુકૂળ કામ કરનારાઓ અને સાયાત્રિકનો-વેપારીઓ-કે
બેઠી વસ્તુઓને નૌકામા લાદેલી હતી, પોતપોતાના કામમા વળગી ગયા

(ત નાવ પુન્નુચ્છગ પુણ્ણમુહિં વધણેહિં તો મુચતિ)

અને જેના વચ્ચેના ભાગમા અનેક જાતની વેચાણની વસ્તુઓ ભરેલી

सभृतान्तराला, पूर्णमुखीं यथोचितसभृताग्रभागा बन्धनेभ्यः तीरस्थसकुबदरञ्जु
बन्धनग्रन्थिसुन्मुन्य मुञ्चन्ति=रिसर्जयन्ति ॥ सू० १९ ॥

मूलम्—तएणं सा नावा विमुक्कवंधणा पवणवलसमाहया
उस्सियसिया विततपक्खा इव गरुडजुवई गगासलिलतिक्खि
सोयवेगेहिं सखुव्वभाणी २ उम्मीतरंगमालासहस्साइं समइ-
च्छमाणी २ कइवएहिं अहोरत्तेहि लवणसमुद अणेगाइ जोयण
सयाइ ओगाढा, तएण तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं संजात्ताना
वावाणियगाणं लवणसमुद अणेगाइ जोयणसयाइं ओगाढाणं
समाणाण वहुइ उप्पाइयसयाइ पाउव्वभूयाइ, त जहा—अकाले
गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसदे, अभिक्खणं २ आगासे
देवयाओ नच्चति, एग च ण महं पिसायरूव पासति, तालजंघं
दिवंगयाहि वाहाहि मसिमूसगमहिसकालग भरियमेहवन्न
लंवोदु निगयग्गदत्त निल्लालियजमलजुयलजीह आऊसिय
वयणगडदेस चीणचिविटनासिय विगयभुग्गभुमय खज्जोयग-
दित्तचक्खुरागउत्तासणगं विसालवच्छ विसालकुच्छि पलवकुच्छि
पहसियपयलियपयडियगत्त पणच्चमाणं अप्फोडत्त अभिवयत
अभिगज्जत बहुसो २ अट्टट्टहासे विणिम्मुयत नीलुप्पलगवल-

भरा हुआ था तथा अग्रभाग भी जिस का यथोचित अनेक प्रकार की
संचालन सामग्री से व्याप्त हो रहा था तीर पर की कील में बंधी हुई
रस्सी के बंधन को खोलकर छोड़ दिया । सूत्र “ १९ ”

इती अने अग्रभागमा यथोचित जतजतनी संचालन सामग्री लरली इती

ओवा वहाणुने किनारा उपर ना थालवानु बंधन ओलीने मुक्ता करवाभा

आठ्यु ॥ सूत्र “ २० ” ॥

गुलिय अयसिकुसुमप्पगास खुरधार असिंगहाय अभिमुहमाव-
यमाण पासंति ॥ सू० २० ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि—ततस्तदनन्तर खलु सा नो विमुक्तबन्धना
बन्धेनरहिता पवनबलसमाहता=वायुवेगपेरिता ‘उस्सियसिया’ उच्छ्रितसितपटा
नौकाया वायुसग्रहार्थं बृहद्वस्त्रमुच्छ्रित कृत्वा निवध्यते, उन्निवृत्तशुक्लपटेन सा
नौः कीदृशीत्याह—‘विततपक्खा इव गरुडजुवई’ विततपक्षेव गरुडयुवतिः
विततपक्षा=प्रसारितपक्षा गरुडभार्या गगने गच्छन्ती, यथा भवति तद्वदित्यर्थः,
गङ्गासलिलतीक्ष्णस्रोतोवेगे गङ्गाजलस्य ये तीक्ष्णास्तीत्रा स्रोतोवेगाः=प्रवाहवे
गास्तैः सक्षुभ्यन्ती २ प्रेर्यमाणा २ समुद्रं प्रतीति भावः, ‘उम्मीतरङ्गमालासहस्साइ’
ऊर्मितरङ्गमालासहस्राणि ऊर्मयो महाकल्लोला बृहत्तरङ्गा, तरङ्गाः=ह्रस्वकल्लोलाः
लघुतरङ्गास्तेषा माला आवलयः तासा सहस्राणि, समति क्रामन्ती २ समुत्तरन्ती
२ कतिपयैर्वहुभिरहोरात्रै दिवसै रात्रिभिश्च लवणसमुद्र अनेकानि योजनशतानि

‘तएण सा नावा’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इस के बाद (विमुक्क बधणा) बन्धन से विमुक्त
हुई (सा नावा) वह नौका (पवणबलसमाहया) वायु के वेग से प्रेरित
होकर (गगासलिलतिक्खसोयवेगेहिं सखुब्भमाणी २) गंगा जल
के प्रवाह वेगों से बार २ इधर उधर क्षुब्धित होती हुई (उस्सियसिया)
अपने ऊपर वायु सग्रहार्थं धावे गये शुभ्रवस्त्र से (वितत पक्खा गरुड
जुवईइव) पक्षों को पसार कर आकाश में उड़ती हुई गरु युवती के
जैसी प्रतीत होने लगी । (उम्मीतरग मालासहस्साइ समइच्छमाणी
२ कइवएहिं अहोरत्तेहि लवण समुद अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढा)

‘तएण सा नावा’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्या० आ० (विमुक्कबधणा) बन्धन मुक्त थयेलु (सा नावा)
ते वडाएलु (पवणबलसमाहया) पवनना आधातोथी प्रेरित थयने (गगा
सलिलतिक्खसोयवेगेहिं सखुब्भमाणी) गगाना तीनप्रवाहथी क्षुब्धित थतु
(उस्सियसिया) पवन लगयने वडाएलुने गतिभणे जेवा पोताना अक्ख
सठथी “वितत पक्खा गरुडजुवई इव” पाओ प्रसादेली अने अकाशमा उडती
गरुड युवतीनी नेम लागतु छतु

(उम्मीतरग माला सहस्साइ समइच्छमाणी २ कइवएहिं अहोरत्तेहि लवण
समुद अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढा)

‘ ઓગાઢા ’ અગાદિતા તીર્ણા । તતસ્તદનન્તરં ચલુ તેષામ્ અરહન્નકપ્રમુખાણાં
સયાત્રા નૌવાણિજકાના લવણસમુદ્રમનેકાનિ યોજનશતાનિ અગાદિતાનાં તીર્ણાનાં
સતા વહ્નિ ‘ ઉપ્પાડયસયાહ ઉત્પાતશતાનિ પ્રાદુર્ભૂતાનિ । તાપુત્પાદશતાનિ
ઘર્ણયતિ--

‘ ત જહા ’ इत्यादि । तद् यथा-अकाले गर्जितं वर्षाकाल-विना मेघध्वनिः,
अकाले विद्युत् अकाले ‘ धणियसद्दे ’ स्तनितशब्दः मेघस्य गम्भीरध्वनिर्भूत्
तथा-अभीक्षण=पुन पुनः आकाशे देवता नृत्यन्ति तथा-एक च खलु महत् ब्रूत्
पिशाचरूप पश्यन्ति अरहन्नकप्रमुखाः संयात्रा नौ वाणिजकाः अकालमेघध्वनि
घडे वेग के साथ उर्मियों-महालहरों के तरंगों के-ओटी २ लहरों के-
माला सहस्र को उल्लंघन करती हुई वह नौका कितनेक दिनों के बाद
लवण समुद्र में अनेक योजनों तक पहुँच गई । (तण्णं तेसिं अरहन्नग
पामोक्खाणं सजत्तानावा वाणियगाण लवणसमुद्द अणेगाइ जोयण
सयाइ ओगाढाणं समाणाण घहइ उप्पाइयसयाइ पाउब्भूयाइ) इस के
बाद उन सायात्रिक अरहन्नक प्रमुख नौका धणिकों को जब कि वे
लवण समुद्र में अनेक सैकड़ों योजनों को पार कर चुके थे बहुत से
सैकड़ों उपद्रव सामने आने लगे ।

(त जहा) जैसे- (अकालेगज्जिए, अकाले विज्जुए, अकाले
धणियसद्दे, अभिक्खण २ आगासे देवयाओ नच्चति, एग च ण मह
पिसायरूव पासति) वर्षा काल के विना ही उस समय मेघध्वनि होने

ખૂબજતીવ્ર વેગે નાનામોટા સેકડો મોઝાઓ ને વટાવીને ૩૮લાક દિવસો
બાદ વહાણુ લવણસમુદ્રમા ઘણા થોજનો દૂર સુધી પહોચી ગયુ

(તણ તેસિં અરહન્નગપામોક્ખાણ સજત્તાનાવા વાણિયગાણ લવણસમુદ્દ
અણેગાઈ જોયણસયાઈ ઓગાઢાણ સમાણ વહૂઈ ઉપ્પાઈયસયાઈ પાઉબ્ભૂયાઈ)

ત્યાર બાદ સાયાત્રિક અરહન્નક પ્રમુખ પોતવલિકે લવણ સમુદ્રમા જ્યારે
સેકડો થોજનો સુધી દૂર પહોચીગયા ત્યારે સેકડો આફતો તેમની સામે
ઝખૂમવાલાગી (ત જહા) જેમ કે

(અકાલે ગજ્જિએ અકાલે વિજ્જુએ અકાલે ધણિયસદ્દે, અભિક્કણ ૨ આગાસે
દેવયાઓ નચ્ચતિ, એગચ ણ મહ પિસાયરૂવ પાસતિ)

વર્ષાકાળ હોવા ન છતા મેઘ ગર્જનાઓ થવા માડી, વીજળીઓ જખૂ
કવા લાગી અને મેઘનો ગભિર ધ્વનિ પણ થવા માડ્યો આકાશમા વારવાર
દેવતાઓ નાચતા જોવામા આવવા લાગ્યા,

विद्युद्विद्योतन पुनः पुनर्देवनृत्यप्रदर्शनपूर्वकमेक बृहत् पिशाचरूप विलोकयन्ति । स्मेत्यर्थः । कथम्भूत तत् पिशाचरूपमित्याह—‘ तालजघ ’ तालजङ्घ तालवृक्षव-
दीर्घे जङ्घे यस्य तत्तथा, दिव गताभ्या गगनस्पर्शिभ्या वाहुभ्या महादीर्घाभ्यां
वाहुभ्या युक्तमित्यर्थः । मपीमृश्वमहिषकालक मपी-कज्जल मूपको महिषश्च
प्रसिद्धः तद्वत् कालक कृष्णवर्ण यत्तत्तथा, भरियमेहवन्न ’ भृतमेघवर्ण = जलपूर्ण-
घनीभूतमेघघटावदतिश्याम, लम्बोष्ठ, निर्गताग्रदन्त निर्गतानि मुखाद्वहिर्भूतानि
अग्राणि अग्रभागा येषा ते निर्गताग्रास्तथा भूतादन्ता यस्य तथोक्तस्त, ‘ निल्ला
लियजमलजुयलजीह ’ निर्लालितयमलयुगलजिह्वम् निर्लालित - मुखाद्वहिष्कृत
यमल=सम युगल द्वय जिह्वयो र्येन तत्तथा, ‘आऊसियवयणगडदेस’ प्रविष्टवदन-

लगी, बिजली चमक ने लगी, और मेघ की गभीर ध्वनि भी होने लगी ।
बार २ आकाश में देवता नाचते हुए दिखलाई पड़ने लगे ।

तथा विशाल काय पिशाच का रूप भी दृष्टिगोचर होने लगा ।
(तालजघ दिव गयाहिं बाहाहिं मसिमूसग महिसकालग) इस पिशाच
की दोनों जघाँ तालवृक्ष के समान दीर्घ थी । दोनों बाहु मानो आका-
श को छूते थे । कज्जल, मूपक, और महिष के समान इस का वर्ण
काला था । (भरियमेहवन्न, लंबोष्ठ निर्गताग्रदन्त निल्ललिय जमलजुय-
लजीह, आऊसिय वयणगडदेस, चीण चिपिटनासिय विगय भुग्ग-
भग्ग भुमय) जल से भरी हुई घनी भूत मेघघटा की तरह इस का
शरीर अत्यन्त काला था । ओष्ठ बड़े लंबे थे । आगे के दाँत बाहर निकले
हुए थे । इस की जिह्वा के दोनों अग्र भाग एक ही साथ मुख से बाहिर

तेभञ्ज विशाण शरीरवाणा पिशाचनुश्य ५५ जेवामा आववा लाग्थु
(तालजघ दिव गयाहिं बाहाहिं मसिमूसग महिसकालग) ते पिशाचनी जने
साथणे तालवृक्षनी जेम लाणी हुती जने हाथ जाले आकाशने स्पर्शता
हाथ मेरा, उँदर जने पाडाना जेवे तेना रग काणे हुते ।

(भरियमेहवन्न, लंबोष्ठ निर्गताग्रदन्त निल्ललियजमलजुयलजीह, आऊ-
सियवयणगडदेस, चीणचिपिटनासिय विगयभुग्गभग्गभुमय)

पाणीथी लरली सान्द्र मेघ घटाज्जेनी जेम तेनु शरीर धल्लु काणु हुतु
होठ धल्लु लाणा जने नीचे लज्जता हुता आगजना हात जडार नीकणी
गयेला हुता तेनी ललना आगजना जने टेखा जेथी माथे मोथी जडार
नीकणी रखा हुता तेना जने गाल मोमा जेथीगयेला हुता

‘ ओगाढा ’ अरगाढिता तीर्णा । ततस्तदनन्तरं खलु तेषाम् अरहन्नकप्रमुखाणां सयात्रा नौवाणिजकानां लवणसमुद्रमनेकानि योजनशतानि अरगाढितानां तीर्णानां सता बहूनि । उप्पाइयसयाइ उत्पातशतानि प्रादुर्भूतानि । तांयुत्पादशतानि वर्णयति--

‘ त जहा ’ इत्यादि । तद् यथा-अकाले गर्जितं वर्षाकाल-विना मेघध्वनिः, अकाले विद्युत् अकाले ‘ थणियसहे ’ स्तनितशब्दः मेघस्य गम्भीरध्वनिभूत् तथा-अभीक्षण=पुन पुनः आकाशे देवता नृत्यन्ति तथा-एक च खलु महत् बृहत् पिशाचरूप पश्यति अरहन्नकप्रमुखाः सयात्रा नौ वाणिजकाः अकालमेघध्वनि

पड़े वेग के साथ उर्मियों-महालहरों के तरंगों के-छोटी २ लहरों के-माला सहस्र को उल्लंघन करती हुई वह नौका कितनेक दिनों के बाद लवण समुद्र में अनेक योजनों तक पहुँच गई । (तएण तेसिं अरहन्नग पामोक्खाणं सजत्तानावा वाणियमाण लवणसमुद्द अणेगाइ जोयण सयाइ ओगाढाणं समाणाण च्हइ उप्पाइयसयाइ पाउब्भूयाइ) इस के बाद उन सायात्रिक अरहन्नक प्रमुख नौका वाणिकों को जब कि वे लवण समुद्र में अनेक सैकड़ों योजनों को पार कर चुके थे बहुत से सैकड़ों उपद्रव सामने आने लगे ।

(त जहा) जैसे- (अकाले गज्जिए, अकाले विज्जुए, अकाले थणियसहे, अभिक्खण २ आगासे देवयाओ नच्चति, एग च ण मह पिसायरूव पासति) वर्षा काल के विना ही उस समय मेघध्वनि होने

भूजन्तीय वेगे नानामोटा सेकडो मोल्लओ ने वटावीने डेटलाक दिवसो भाद वडाए लवणसमुद्रमा धणा येज्जेने दूर सुधी पडोची गथु

(तएण तेसिं अरहन्नगपामोक्खाण सजत्तानावा वाणियमाण लवणसमुद्द अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढाण समाण च्हइ उप्पाइयसयाइ पाउब्भूयाइ)

त्यार भाद सायात्रिक अरहन्नक प्रमुख पोतवाणिज्जे लवण समुद्रमा न्यारे सेकडो येज्जेने सुधी दूर पडोचीगया त्यारे सेकडो आक्षतो तेमनी सामे अज्जमवालागी (त जहा) जेम के

(अकाले गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसहे, अभिक्खण २ आगासे देवयाओ नच्चति, एग च ण मह पिसायरूव पासति)

वर्षाकाल होवा न छता मेघ गर्जनाओ थवा भाडी, वीज्जणीओ ज्जु कवा लागी अने मेघने गलिर ध्वनि पण थवा भाड्यो आकाशमा वारवार देवताओ नायता जेवामा आववा लाग्या

विद्युद्विद्योतन पुनः पुनर्देवनृत्यप्रदर्शनपूर्वमेक वृद्धत् पिशाचरूप विलोकयन्ति । स्मेत्यर्थः । कथम्भूत तत् पिशाचरूपमित्याह—‘ तालजघ ’ तालजङ्घ तालवृक्ष-दीर्घे जङ्घे यस्य तत्तथा, दिव गताभ्या गगनस्पर्शिभ्या बाहुभ्या महादीर्घाभ्यां बाहुभ्या युक्तमित्यर्थः । मपीमृशमहिषकालक मपी-कज्जल मूपको महिषश्च प्रसिद्धः तद्वत् कालक कृष्णवर्ण यत्तत्तथा, भरियमेहवन्न ’ भूतमेघवर्ण = जलपूर्ण-घनीभूतमेघघटावदतिश्याम, लम्पोष्ठ, निर्गताग्रदन्त निर्गतानि मुखाद्वहिर्भूतानि अग्राणि अग्रभागा येषां ते निर्गताग्रास्तथा भूतादन्ता यस्य तथोक्तस्त, ‘ निल्ला लियजमलजुयलजीह ’ निर्लालितयमलयुगलजिह्वम् निर्लालित — मुखाद्वहिष्कृत यमल=सम युगल द्वय जिह्वयो र्येन तत्तथा, ‘ आऊसियवयणगडदेस ’ प्रविष्टवदन-

लगी, विजली चमक ने लगी, और मेघ की गभीर ध्वनि भी होने लगी । चार २ आकाश में देवता नाचते हुए दिखलाई पड़ने लगे ।

तथा विशाल काय पिशाच का रूप भी दृष्टिगोचर होने लगा । (तालजघ दिव गयार्हि बाहार्हि मसिमूसग महिसकालग) इस पिशाच की दोनों जघाँ तालवृक्ष के समान दीर्घ थी । दोनों बाहु मानो आकाश को छूते थे । कज्जल, मूपक, और महिष के समान इस का वर्ण काला था । (भरियमेहवन्न, लम्पोष्ठ निर्गताग्रदन्त निल्ललिय जमलजुयलजीह, आऊसिय वयणगडदेस, चीण चिपिटनासिय विगय भुगग भग्ग भुमय) जल से भरी हुई घनी भूत मेघघटा की तरह इस का शरीर अत्यन्त काला था । ओष्ठ बड़े लंबे थे । आगे के दाँत बाहर निकले हुए थे । इस की जिह्वा के दोनों अग्र भाग एक ही साथ मुख से बाहिर

तेमज्ज विशाण शरीरवाणा पिशाचनुत्थ पणु जेवामा आववा लाग्गु (तालजघ दिव गयार्हि बाहार्हि मसिमूसग महिसकालग) ते पिशाचनी जने माथणो तालवृक्षनी जेम लाणी हुती जने हाथ जणु आकाशने स्पर्शता हाथ भेग, उँदर जने पाडाना जेवो तेनो रग काणो हुते ।

(भरियमेहवन्न, लम्पोष्ठ निर्गताग्रदन्त निल्ललियजमलजुयलजीह, आऊसियवयणगडदेस, चीणचिपिटनासिय विगयभुगगभग्गभुमय)

पाणीथी लरेली सान्द्र मेघ घटाज्जोनी जेम तेनु शरीर धणु काणु हुतु हाँ धणु लाणा जने नीचे लणउता हुता आगणना हात जडाँ नीकणी गयेला हुता तेनी ललना आगणना जने टेखा जेटी माथे माथी जडाँ नीकणी रखा हुता तेना जने गाल भोमा जेमीगयेला हुता

ગળ્ડદેશ પ્રવિષ્ટો વદને ગાલ્ડદેશો કપોલભાગો यस્ય તત્તથા, 'ચીળચિપિટનાસિયં' ચીનચિપિટનાસિક, ચીના=દ્વસ્વા ચિપિટા ચ નાસિકા યમ્ય તત્તથા, 'વિગય ભુગભગ્નમય' વિકૃતભુગ્નમગ્નભ્રુવમ્ વિકૃતે સવિકારે ભુગ્ને મગ્ને=અતીવવક્રે ભ્રુવૌ यस્ય તત્ તથા, સ્વજોયગદિત્તચક્ષુરાગ' સ્વધોતકદીપ્તચક્ષુરાગ, સ્વધોતક-વદીપ્તચક્ષુરાગો લોચનસ્તત્ત્વ यस્ય તત્તથા, ઉત્તાસણગ' ઉત્તાસનક મયાનક વિશાલવક્ષસ્ક=વિસ્તીર્ણોઃ સ્થલ, વિશાલકુક્ષિ=વિસ્તીર્ણોદરમ્, પ્રલમ્બકુક્ષિ-દીર્ઘોદરમ્, 'પહસિયપયાલિય પયડિયગત્ત' પ્રહસિતપ્રચલિતપ્રપતિતગાત્રમ્ । પ્રહસિતાનિ પ્રવિકાસિતાનિ પ્રચલિતાનિ=પ્રકમ્પિતાનિ પ્રપતિતાનિ પ્રવર્પેણ શ્લથીભૂતાનિ ગાત્રાણિ यस્ય તત્તથા, પળચ્ચમાણ' પ્રનૃત્યત્ 'અપ્ફોડત' આસ્ફોટયત્, અભિવયત' અભિવ્રજત્, 'અભિગજ્જત' અભિગર્જત્, વહુસો' અદ્દહાસે વિણિમ્મુયત' વહુ

નિકલ રહે થે । દોનોં કપોલ હસકે મુખ કે ખીતર છુસે છુપ થે-અર્થાત્ દોનો ગાલ હસ કે પિચ કે છુપ થે ।

નાક હસ કી છોટી ઓર ચપટી થી । હસ કી દોનોં મોંહેં વિકૃત ભુગ્ન ઓર મગ્ન થી । અથવા ભુગ્ન મગ્ન થી અત્યન્ત વક્ર થી-(સ્વજોય-ગદિત્તચક્ષુરાગ, ઉત્તાસણગ વિશાલવચ્છ, વિશાલકુક્ષિ પલબકુક્ષિ પહસિયપયાલિય, પયડિયગત્ત) હસ કી આંખોં કી લલાઈ સ્વધોત (આગ્યા) કે સમાન દીપ્ત થી, ઊરસ્થલ (છાતી) હસ કા મયોત્પાદક થા, પેટ વિસ્તીર્ણ ઓર લવા ધા । શરીર હસ કા પ્રહસિત પ્રચલિત એવ શ્લથી ભૂત ઢીલા ધા । યહ ઉસ સમય, (પળચ્ચમાણ અપ્ફોડત, અભિવયત અભિગજ્જત, વહુસો ૨ અદ્દહાસે વિણિમ્મુયત) નૃત્ય કર રહા થા ।

અપની દોનોં મુજાઓં કા આસ્ફાલન (વજાતા) કર રહા થા । એસા જ્ઞાત હોતા થા કિ માનોં ગર્જના કરતા હુઆ સમક્ષ (સામને) હી

તેનુ નાક નાનુ અને ચપટુ હતુ તેની ખને ભમ્મરો વિકૃત ખડખચડી અને ભગ્ન હતી અથવા ભુગ્નભગ્ન અને વક્ર-ત્રાસી-હતી

(સ્વજોયગદિત્તચક્ષુરાગ ઉત્તાસણગ વિશાલવચ્છ, વિશાલકુક્ષિ પલબકુક્ષિ, પહસિય પયાલિય, પયડિયગત્ત)

તેની આખોની રતાશ આગિયા જેવી ચમકતી હતી તેનુ વક્ષસ્થળ ભયકર હતુ પેટ વિશાળ અને લાખુ હતુ તેનુ શરીર પ્રહસિત, પ્રચલિત અને શ્લથી ભૂત એટલે કે લખડી ગયેલુ હતુ ત્યારે

(પળચ્ચમાણ અપ્ફોડત અભિવયત, અભિગજ્જત, વહુસો ૨ અદ્દહાસે વિણિમ્મુયત)
તે નાચી રહ્યો હતો પોતાના ખને ભુખ્તઓનુ તે આસ્ફાલન (અકેળાવણુ)

શોડશ્વહાસ વિનિર્મુશ્વત્, ' નીલુપ્પલગવલગુલિય અયસિકુસુમપ્પગાસ ' નીલોત્પલ
ગવલગુલિકાતસીકુસુમપ્રકાશ=નીલોત્પલ=નીલકમલ, ગવલ=મહિષશૃંગ, ગુલિકા
=કૃષ્ણવર્ણવસ્તુવિશેષઃ પ્રસિદ્ધઃ, અતસીકુસુમમ્, અતસી=અલસીનામ્નાપ્રસિદ્ધો ધાન્ય-
વિશેષસ્તસ્ય કુસુમ=પુષ્પ, તદ્વત્ પ્રકાશો વર્ણો यस્ય સ તથા તમ્, નીલકમલાદિ-
સદશવર્ણમિત્યર્થઃ, સુરધાર ક્ષુરવાર ક્ષુરસ્યેવ ધારા यस્ય સ તત્તથા તમ્ અતિતીક્ષ્ણ
ધારમિત્યર્થઃ, અસિ = કૃપાળ, ગૃહીત્વા, અભિમુહમાવયમાણ ' અભિમુખમાપતત્
પશ્યન્તિ સર્વેઽપિ સાયાત્રિકાઃ અરહન્નકપ્રમુખા અવલોકન્તે સ્મ ॥ સુ૦ ૧૯ ॥

મૂલમ્—તદ્દા તે અરહણગવજ્ઞા સજ્જતાણાવાવાણિયગા ઇગં
ચ ણં મહ તાલપિસાય પાસતિ તાલજંઘં દિવં ગાયાહ વાહાર્હિં
ફુદ્ધસિર ભમરણિગરવરમાસરાસિમહિસકાલગં ભરિયમેહવન્ન
સુપ્પણહ ફાલસરિસજીહં લવોટ્ટુ ધવલવદ્ધઅસિલિટ્ટુ તિવલ્લ-
થિરપીણકુહિલદાઢોવગૂઢવયણં વિકોસિયધારાસિજુયલસમસ-

આ રહા છે । વાર વાર તો યહ અદ્વહાસ કરતા થા । (નીલુપ્પલગવલ
ગુલિય અયસિ કુસુમપ્પગાસ સુરધાર અસિ ગદાય અભિમુહ માવય
માણ પાસતિ) નીલકમલ, ગવલ—મહિષશૃંગ, ગુલિકા—કૃષ્ણ વર્ણક
વિશેષ, અલસી પુષ્પ, કે સમાન હસકા સારા શરીર અત્યત કાલા થા ।

યહ એક તલવાર લિયે હુણ થા, જિસ કી ધારા ક્ષુરા કી ધારા કે
સમાન તીક્ષ્ણ થી । ડન અરહન્નક પ્રમુખ સાયાત્રિકો ને ડસે હસ
તરહ સે દેખા કિ વહ ડસ તલવાર કો લેકર હમ લોગોં કી ઓર
આરહા છે । સૂત્ર “ ૨૦ ”

કરી રહ્યો હતો તેને જોઈને એમજ લાગતું હતું કે તે જાણે ગર્જના કરતો
સામે આવી રહ્યો હોય તે વાર વાર અદ્વહાસ “ખડખડાટ કરીને હસતું” કરતો હતો

(નીલુપ્પલગવલગુલિયઅયસિકુસુમપ્પગાસ સુરધાર અસિ ગદાય અભિમુહ
માવયમાણ પાસતિ)

નીલકમળ, ગવલ, ડપડાના ગુલિકા—કૃષ્ણવર્ણક વિશેષ, અળખીના પુષ્પની
જેમ તેનું શરીર ઘણું જાણું હતું

તેના હાથમા છરાનીધાર જેવી તીક્ષ્ણ ધારવાળી તલવાર હતી અરહન્નક
પ્રમુખ સાયાત્રિકોને એમ થયું કે તે પિશાચ હાથમા તલવાર લઈને તેમની
તરફ જ ધમી આવી રહ્યો છે ॥ સૂત્ર “ ૨૦ ” ॥

ગણ્ડદેશ પ્રવિષ્ટો વદને ગાંઠદેશો કપોલભાગો यस્ય તત્તથા, 'ચીનચિપિટનાસિયં' ચીનચિપિટનાસિય, ચીના=દુસરા ચિપિટા ચ નાસિકા ચમ્ય તત્તથા, 'વિગય ભુગમગમ્ય' વિકૃતભુગમમન્યુવમ્ વિકૃતે સવિકારે ભુગ્ને મગ્ને=અતીવવક્રે ભુવૌ यस્ય તત્ તથા, સ્વજ્જોયગદિત્તચક્ષુરાગ 'સ્વઘોતમ્વીક્ષુરાગ, સ્વઘોતક- વધીક્ષુરાગો લોચનસ્તત્તથા यस્ય તત્તથા, ઉત્તાસણગ' ઉત્તામનક મયાનક વિશા- લવક્ષરક=વિસ્તીર્ણોઃ સ્થલ, વિશાલકુક્ષિ=વિસ્તીર્ણોદરમ્, પ્રલમ્બકુક્ષિ-દીર્ઘોદ- રમ્, 'પહસિયપયાલિય પયડિયગત્ત' પ્રહસિતપ્રચલિતપ્રપતિતગાત્રમ્ । પ્રહસિતાનિ પ્રવિકાસિતાનિ પ્રચલિતાનિ=પ્રકમ્પિતાનિ પ્રપતિતાનિ પ્રવર્ષેણ શ્લથીભૂતાનિ ગા ગ્રાણિ यस્ય તત્તથા, પણચમાણ 'પ્રનૃત્યત્ 'અપ્ફોડત્ 'આસ્ફોટયત્, અભિવયત્ 'અભિવ્રજત્, 'અભિગજ્જત' અભિગર્જત્, વહુસો 'અટ્ટહાસે વિણિમ્મુયત' વહુ

નિકલ રહે થે । દોનોં કપોલ હસકે મુખ કે ખીતર ઘુસે હુણ થે-અર્થાત્ દોનોં ગાલ હસ કે પિચ કે હુણ થે ।

નાક હસ કી છોટી ઓર ચપટી થી । હસ કી દોનોં ખોંહેં વિકૃત ભુગ્ન ઓર મગ્ન થી । અથવા ભુગ્ન મગ્ન થી અત્યન્ત વક્ર થી-(સ્વજ્જોય ગદિત્તચક્ષુરાગ, ઉત્તાસણગ વિશાલવચ્છ, વિશાલકુક્ષિ પલબકુક્ષિ પહસિયપયાલિય, પયડિયગત્ત) હસ કી આંખોં કી લલાઈ સ્વઘોત (આગ્યા) કે સમાન દીક્ષ થી, ઊરસ્થલ (છાતી) હસ કા મયોત્પાદક થા, પેટ વિસ્તીર્ણ ઓર લઘા થા । શરીર હસ કા પ્રહસિત પ્રચલિત એવ શ્લથી ભૂત ઢીલા થા । યહ ઉસ સમય, (પણચમાણ અપ્ફોડત, અભિ વયત અભિગજ્જત, વહુસો ૨ અટ્ટહાસે વિણિમ્મુયત) નૃત્ય કર રહા થા ।

અપની દોનો ભુજાઓં કા આસ્ફાલન (ઘસાતા) કર રહા થા । એસા જ્ઞાત હોતા થા કિ માનો ગર્જના કરતા હુઆ સમક્ષ (સામને) હી

તેનુ નાક નાનુ અને ચપટુ હતુ તેની ખાને ભમ્મરો વિદુત ખડખડી અને ભગ્ન હતી અથવા ભુગ્નભગ્ન અને વક્ર-ત્રાસી-હતી

(સ્વજ્જોયગદિત્તચક્ષુરાગ ઉત્તાસણગ વિશાલવચ્છ, વિશાલકુક્ષિ પલબ કુક્ષિ, પહસિય પયાલિય, પયડિયગત્ત)

તેની આખોની રતાશ આગિયા જેવી ચમકતી હતી તેનુ વક્ષસ્થળ ભયકર હતુ પેટ વિશાળ અને લાઘુ હતુ તેનુ શરીર પ્રહસિત, પ્રચલિત અને શ્લથી ભૂત એટલે કે લખડી ગયેલુ હતુ ત્યારે

(પણચમાણ અપ્ફોડત અભિવયત, અભિગજ્જત, વહુસો ૨ અટ્ટહાસે વિણિમ્મુયત) તે નાચી રહ્યો હતો પોતાના ખાને ભુગ્નઓનુ તે આસ્ફાલન (અશ્ળાવણુ)

टीका-सर्वैः नौकास्थैः सायात्रिकैः पिशाचरूप दृष्ट, तत्रारहन्नकश्चावकवज्रैर्यत्कृत तद् दर्शयितुमुक्तमेव पिशाचस्वरूप सविशेष वर्णयन्नाह-‘तएण’ इत्यादि।

ततस्तदनन्तर खलु तेऽरहन्नकवज्रां सायात्रानौर्वाणिजकाः वक्ष्यमाणविशेषणक पिशाचस्वरूप पश्यति, दृष्ट्वा च भीतास्त्रस्ता बहूनामिन्द्रादीना बहूनि मान्यता शतानि कुर्वन्तस्तिष्ठन्तीति वाक्यार्थः। कीदृश पिशाचस्वरूप पश्यन्तीत्याह-‘एग च ण मह’ इत्यादि। एक च खलु महान्त तालपिशाचम्=अतिदीर्घत्वेन तालवृक्षकारः पिशाचस्तालपिशाचस्तम् पश्यन्ति, कथम्भूत तालपिशाचमित्याह-‘तालजघ’ इति तालवृक्षवदीर्घे जङ्घे यस्य स तालजङ्घस्तम्, दिवगताभ्या=गगनस्पर्शिभ्या बाहुभ्या युक्त, स्फुट शिरस=स्फुट स्फुटित बन्धनरहितत्वाद् विकीर्ण शिरः शिरोजातत्वाद् केशजाल यस्य स तथा त, ‘भमरणिगरवरमा-

‘तएण ते अरहणगवज्ज’ इत्यादि।

अब सूत्रकार इसी पिशाच के स्वरूप का पुनः विशेष वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि जितने भी उस नौका में सायात्रिक थे उन सबने एक अरहन्नक श्रावक के विना उस विकराल पिशाच को देखकर क्या २ किया उनकी कैसी स्थिति हुई इस बात को कहने के लिये पहिले वे उक्त पिशाच के स्वरूप को विशेष रूप से पुनः कहते हैं-

टीकार्थ-(तएण)इसके बाद (अरहन्नगवज्जा) एक अरहन्नक श्रावक के सिवाय (सजत्ताणावा वाणियगा) उन समस्त सायात्रिक पोत चणिकू जनो ने (एग च ण मह तालपिसाय पासति) एक बड़ा ताल वृक्ष के जैसा पिशाच ताल वृक्ष के समान लंबी २ जघाओं वाला था।

इस के दोनों बाहु मानो आकाश को स्पर्श कर रहे थे। इस के

‘तएण ते अरहणगवज्जा’ इत्यादि

टीकार्थ-सूत्रकार अही दृश पिशाचनु सविशेषवर्णन करवानी छिछाथी कडे छे के पिशाचने लेधने अरहन्नक श्रावक सिवायना आकीना भीज्ज णधा सायात्रिकेनी शु स्थिति थछ अने ते विकराण पिशाचनु रौद्र स्वरूप लेधने तेओओ शु शु कथु ओनु वर्णन करता पडेला ते पिशाचना स्वरूपनु विशेष रूपथी वर्णन हु अअही उरु छु-

“तएण” त्थार भाह “अरहन्नगवरज्जा” अरहन्नक श्रावकना सिवाय “सजत्ताणावा वाणियगा” णधा सायात्रिक पोतवर्णिक जनो ओ “एग च ण मह तालपिसाय पासति” मोटा तालवृक्ष जेवो अने ताल वृक्ष जेवी मोटी साथजो वाजो पिशाच लेथो।

तेना जने छाय आकाशने स्पर्शता छता छूटा पडेला तेना भाथाना वाज

रिसतणुयचंचलगलंतरसलोलचवलफुरुरंतानिह्यालियग्गजीहं
 अवयच्छियमहल्लविगयवीभच्छलालपगलंतरत्तताल्लय हिं-
 लुयसगव्भकदरविलंवअंजणगिरिस्स अग्गिजालुगिलंतवयणं
 आऊसियअक्खचम्मउड्डुगंडदेस चोणचिपिडवंकभग्गणासं
 रोसागयधमधर्मेतमारुतनिट्टुरखरफरुसञ्जुसिर ओभुग्गणासिय-
 पुड घाडुव्भडरइयभीसणमुह उद्धमुहकन्नसक्कुलिय महंत
 विगयलोमसखालगलवतचलियकन्न पिंगलदिप्पतलोयणं
 भिउडितडियनिडाल नरसिरमालपरिणद्धचिंधं विचित्तगोणस-
 सुवद्धपरिकर अवहोलत पुप्फुयायतसप्पविच्छुय गोधदरनउल-
 सरडविरइयविचित्तवेयच्छमालियागं भोगकूरकण्हसप्पधमधर्मे-
 तलवतकन्नपूर मज्जारसियाललइयखध दित्तवुघुयंत वूयकय
 कुंमलसिरं घटारवेण भीम भयकरं कायरजणहिययफोडणं
 दित्तमट्टहासं विणिम्मुयंत वसारुहिरपूयमसमलमलिणपोच्चड-
 तणुं उत्तासणय विसालवच्छ पेच्छता भिन्नणहरोममुहनयण
 कन्नवरवग्घचित्तकत्तीणिवसणं सरसरुहिरगयचम्मविततऊस
 वियवाहुजुयल ताहि य खरफरुसअसिणिद्धअणिट्टु दित्त असुभ
 अप्पिय अमणुन्न अक्कतवग्गुहि य तज्जयत पासति, त ताल-
 पिसायरूव एजमाणं पासति, पासित्ता भीया० संजायभय
 अन्नमन्नस्स कायं समतुरगेमाणा२ बहूणं इटाण य खदाण
 य रुद्धसिववेसमणणागाणं भूयाण य जक्खाण य अज्जकोट्टकि-
 रियाण य बहूणि उवाइयसयाणि ओवाइयमाणा२ चिद्धति ॥१॥

टीका-सर्वैः नौकास्थैः सायात्रिकैः पिशाचरूप दृष्ट, तत्रारहन्नकश्रावकवज्रैर्यत्कृत तद् दर्शयितुमुक्तमेव पिशाचस्वरूप सविशेष वर्णयन्नाह-‘तएण’ इत्यादि।

ततस्तदनन्तर खलु तेऽरहन्नकवज्रैः सायात्रानौर्वाणिजकाः वक्ष्यमाणविशेषणक पिशाचस्वरूप पश्यन्ति, दृष्ट्वा च भीतास्त्रस्ता बहूनामिन्द्रादीना बहूनि मान्यता शतानि कुर्वन्तस्तिष्ठन्तीति वाक्यार्थः। कीदृश पिशाचस्वरूप पश्यन्तीत्याह-‘एण च ण मह’ इत्यादि। एक च खलु महान्त तालपिशाचम्=अतिदीर्घत्वेन तालवृक्षकारः पिशाचस्तालपिशाचस्तम् पश्यन्ति, यथम्भूत तालपिशाचमित्याह-‘तालजघ’ इति तालवृक्षवद्दीर्घे जङ्घे यस्य स तालजङ्घस्तम्, दिवगताभ्या=गगनस्पर्शिभ्या वाहुभ्या युक्त, स्फुट शिरस=स्फुट स्फुटित बन्धनरहितत्वाद् विकीर्ण शिरः शिरोजातत्वाद् केशजाल यस्य स तथा त, ‘भमरणिगरवरमा

‘तएण ते अरहण्णगवज्ज’ इत्यादि।

अथ सूत्रकार इसी पिशाच के स्वरूप का पुनः विशेष वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि जितने भी उस नौका में सांयात्रिक थे उन सबने एक अरहन्नक श्रावक के बिना उस विकराल पिशाच को देखकर क्या २ किया उनकी कैसी स्थिति हुई इस बात को कहने के लिये पहिले वे उक्त पिशाच के स्वरूप को विशेष रूप से पुनः कहते हैं-

टीकार्थ-(तएण)इसके बाद (अरहन्नगवज्जा) एक अरहन्नक श्रावक के सिवाय (सजत्ताणावा वाणियगा) उन समस्त सांयात्रिक पोतवणिक जनों ने (एण च ण मह तालपिसाय पासति) एक बड़ा तालवृक्ष के जैसा पिशाच ताल वृक्ष के समान लंबी २ जघाओं वाला था।

इस के दोनों माहु मानो आकाश को स्पर्श कर रहे थे। इस के

‘तएण ते अरहण्णगवज्जा’ इत्यादि

टीकार्थ-सूत्रकार अही क्षण पिशाचनु सविशेषवर्णन करवानी छिछाथी ठडे छे के पिशाचने लेधने अरहन्नक श्रावक सिवायना आहीना भीज पधा सायात्रिकेनी शु स्थिति थध अने ते विकराण पिशाचनु रौद्र स्वरूप लेधने तेओओ शु शु उथु ओतु वणुन उरता पडेला ते पिशाचना स्वरूपनु विशेष रुपथी वणुन छु अअही उरु छु-

“तएण” त्थार आह “अरहन्नगवज्जा” अरहन्नक श्रावकना सिवाय “सजत्ताणावा वाणियगा” पधा सायात्रिक पोतवणिक जनो ओ “एण च ण मह तालपिसाय पासति” मोटा तालवृक्ष जेवो अने ताल वृक्ष जेवी मोटी साथजो वाजो पिशाच जेथो

तेना पने डाय आकाशने स्पर्शता छता छटा पडेला तेना माथाना वाण

रिसतणुयचंचलगलंतरसलोलचवलफुरुफुरतानिह्यालियग्गजीहं
 अवयच्छियमहल्लविगयवीभच्छलालपगलंतरत्तताल्लयं हिंयु-
 लुयसगव्वभकंदरविलवअंजणगिरिस्स अग्गिजालुगिलंतवयणं
 आऊसियअक्खचम्मउड्डुगंडदेस चीणचिपिडवंकभग्गणासं
 रोसागयधमधमेतमारुतनिट्टुरखरफरुसञ्जुसिर ओभुग्गणासिय-
 पुड घाडुव्वभडरइयभीसणमुह उद्धमुहकन्नसक्कुलिय महंत
 विगयलोमसखालगलवतचलियकन्न पिंगलदिप्पतलोयणं
 भिउडितडियनिडाल नरसिरमालपरिणद्धचिंध विचित्तगोणस-
 सुवद्धपरिकर अवहोलत पुप्फुयायतसप्पविच्छुय गोधदरनउल-
 सरडविरइयविचित्तवेयच्छमालियाग भोगकूरकण्हसप्पधमधमे-
 तलवतकन्नपूर मज्जारसियाललइयखंध दित्तबुधुयत घूयकय-
 कुंमलसिरं घंटारवेण भीम भयंकर कायरजणहिययफोडणं
 दित्तमट्टहास विणिम्मुयंत वसारुहिरपूयमसमलमलिणपोच्चड-
 तणुं उत्तासणय विसालवच्छ पेच्छतां भिन्नणहरोममुहनयण
 कन्नवरवग्घचित्तकत्तीणिवसणं सरसरुहिरगयचम्मविततऊस
 वियवाहुजुयलं ताहि य खरफरुसअसिणिद्धअणिट्टु दित्त असुभ
 अप्पिय अमणुन्न अक्कंतवग्गुहि य तज्जयत पासति, त ताल-
 पिप्पायरूव एजमाणं पासति, पासित्ता भीया० सजायभय
 अन्नमन्नस्स काय समतुरगेमाणा२ बहूणं इटाण य खदाण
 य रुद्धसिववेसमणणागाणं भूयाण य जक्खाण य अज्जकोट्टकि-
 रियाण य बहूणि उवाइयसयाणि ओवाइयमाणा२ चिद्धति ॥१॥

ધારી તયોરસ્યોઃ સ્વદૂગયોર્યુગલ=દ્વય તેન સમસદૃશ્યૌ-અતિતુલ્યે તનુકે-પતલે, ચન્નલ યથાભવતિ, યથાઽવિશ્રાન્ત ગલન્ત્યૌ=રસાતિલાલસત્વાત્ લાલાવિન્દૂનધઃ પાતયન્ત્યૌ, અતएव રસલોલે-રસાસ્વાદાનુરક્તે, ચપલે ચન્નલે, અતएव ફુરફુરાયમાણે-પ્રકમ્પમાને, નિર્લાલિતે મુખાદ્વહિષ્કૃતે, અગ્રજિહ્વે-અગ્રભૂતજિહ્વે જિહ્વાગ્રે યેન સ તથા તમ્ અતિદીર્ઘજિહ્વમિત્યર્થઃ તથા-‘ અવયચ્છિયમહલ્લવિગયવીભચ્છ લાલપગલતરત્તતાલુય ’ પ્રસારિતમહાવિકૃતવીભત્સલાલાપ્રગલદ્રક્તતાલુકમ્, પ્રસારિત મુખપ્રસારણેન દૃશ્યમાન મહાવિકૃત વીભત્સ લાલાભિઃ પ્રગલદ્રક્ત ચ તાલુયસ્ય સ તથા ત મુખપ્રસારણપ્રકટોભૂતમહાવિકૃતલાલાપૂર્ણરક્તતાલુવન્તમિત્યર્થઃ તથા-‘ હિંગુલુયસગબ્ધકદરવિલવઅજનગિરિસ્સ ’ હિંગુલુકસગર્ભકન્દરવિલામિત્રાઞ્જનગિરેઃ-હિંગુલકેન રક્તવર્ણવદ્રવ્યવિશેષેણ સગર્ભ=સાન્તરાલ કન્દરરૂપ વિલમિવ અઞ્જનગિરેઃ=કઞ્જલપર્વતસ્ય મુખપ્રસારેણ રક્તાતિદીર્ઘ જિહ્વા તાલુ યુક્તમુખ વિગ્રસ્ય હિંગુલક પુઞ્જસમ્ભૂતકન્દરસાદૃશ્યાદતિ કૃષ્ણવર્ણમહાવિશાલશરીરસ્યાઞ્જ-

ભાગ મ્યાન સે નિકાલી હુઈ તલવાર કે સમાન તીક્ષ્ણ થી । પતલિ થી । ચચલ થી । રસ મેં અતિલાલસાવાલે હોને કે કારણ ડન સે નિરન્તર લાર વહ રહી થી । રસ કે આસ્વાદન મે વે અનુરક્ત થે । ચચલ હોને કે કારણ વે કપ રહે થે । ઓર મુખ સે બાહિર નિકલે હુએ થે । તાત્પર્ય-ઈસ કી જીભ વહુત લઘી થી ।

(અવયચ્છિયમહલ્લવિગયવીભચ્છલાલપગલતરત્તતાલુય, હિંગુલુય સગબ્ધકદરવિલવઅજનગિરિસ્સ અગિજાલુગિલતવયણ) તાલુ ઇસ કા મુખ કે ફાડતે સમય દિશ્વલોઈ પડતા યા । મહા વિકરાલ થા । વીભત્સ થા । લાર સે ગીલા હો રહા યા ઓર લાલ થા । ઇસકા મુખ અજનગિરિ (કાલા પર્વત) કે હિંગુલક સે ભરે હુએ કદરા રૂપ વિલ કે

તેની જીભના અને આગળના ટેરવા મ્યાનમાથી બહાર ડાઢેલી તલવારની જેમ તીક્ષ્ણ હતા, પાતળા હતા ચચળ હતા અને વિષયના રસોને ગ્રહણ કરવા માટે અત્યંત લોહુપ તેમજ આતુર હોવા બદલ તેમાથી સતત લાળ ટપક્યા જ કરતી હતી તેઓ રસાસ્વાદમા અનુરક્ત હતા ચચળ હોવાને લીધે તેઓ ધ્રુજીરહ્યા હતા, અને મોથી બહાર નીકળી રહ્યા હતા મતલબ એ છે કે તેની જીભ ખૂબ લાખી હતી

(અવયચ્છિયમહલ્લવિગયવીભચ્છલાલપગલતરત્તતાલુય, હિંગુલુયસગબ્ધકદરવિલવઅજનગિરિસ્સ અગિજાલુગિલતવયણ)

મે પહોળું કરતી વખતે તેનું તાળવું દેખાતું હતું તે બીભત્સ હતું લાળથીભીનું થઈ જાયું હતું અને લાલચોળ હતું તેનું મો અજનગિરિ (કાળા પર્વત) ના હિંગુજોથી ભરેલી કદરાના દર બેધુ હતું તે બહુ વિશાળ અને

सरासिमहिसकालम् ' भ्रमरनिकरपरमापराशिमहिरकाङ्क=तत्र भ्रमरनिकर इव=
 भ्रमरसमूह इव परमापरापिरिव, महिष इव च यः कालकः=कृष्णवर्णकस्त, 'भरि
 यमेहवन्न' भृतमेघवर्ण=जलवर्णमेघघटावदतिनीलम्, 'सुप्पणह' शूर्पनख शूर्पवत्
 नखा यस्य स शूर्पनखस्त, फालपट्टगजिह्व, फालमिहाग्नौ प्रतापित बो-यम्,
 तत्सादृश्यं च वर्णदैर्घ्यदीप्त्यादिभिरिति, लम्बोष्ठ=दीर्घोष्ठ, 'धवलवट्ट' असिलिह
 तिक्वथिरपीणकुडिलदाढोमगूढवयण ' धवलवट्टाश्लिष्टतीक्ष्णस्थिरपीनकुडिलद
 ष्ढोपगूढवदन ' धवलाभिः=श्वेताभिः, वट्टाभिर्भर्तुलाभिरश्लिष्टाभिर्विरलाभिः ती
 क्ष्णाभिः स्थिराभिर्द्रढाभिः उपचितत्वेन पीनाभिः=स्थूलाभिः यकृतया कुटिलाभिश्च
 दष्टाभिरुपगूढ व्याप्त वदन यस्य स तथा तम् अतिनिशाकदष्टूमित्यर्थः, 'विको
 सियधारासिजुयलसमसरिसतणुय चचलगलतरसलोलचवलफुरफुरेतनिल्लालियग-
 जीह' विकोशितधारासियुगल समसदृशतनुकचञ्चलगलद्रसलोलचवलफुरफुरायमाण
 निर्लालिताग्रजिह्वम्, तत्र विकोशिता=अपनीताग्रणा धारा ययोस्तौ विकोशित

शिर के बाल बधन रहित होने से इधर उधर बिग्वरे हुए थे ! इस का
 वर्णभ्रमर समूह उडद की राशि और महिष के शृग जैसा काला था ।
 (भरिय मेहवन्न) जल से भरी हुई मेघ घटा के समान अत्यन्त श्याम था ।

(सुप्पणह, फाल सरिस जीह लम्बोष्ठ, धवलवट्ट आसिलिह तिक्व
 थिर पीणकुडिलदाढोमगूढवयण) नख इस के सूप (सूपड़ा) जैसे थे ।
 जिह्वा इस की अग्नि में लाल किये गये फाल के समान थी । ओष्ठ
 लम्बे २ थे । इसका मुख श्वेत, गोल, २ विरली, नुकीली, स्थिर-दृढ-स्थूल
 और कुटिल टेढ़ी २ दाढ़ों से युक्त था ।

(विकोसिय धारासिजुयल समसरिमतणुय चचल गलतरस
 लोल चवलफुरफुरेत निल्लालियगजीह) इस की जिह्वा दोनों अग्र

आभतेम विजेशर्ध गया डता तेनोरग लभराओना टोणा, अडहने डगळे
 अने पाडाना शिंगडा जेवो डाणे डतो " भरिय मेहवन्न " पाण्णीथी लरेली
 मेघनी घटाओनी जेम भूणज डाणे डतो

(सुप्पणह, फालसरिमजीह लम्बोष्ठ, धवलवट्ट, आसिलिह, तिक्वथिरपीण
 कुडिलदाढोमगूढवयण)

तेना नणे सूपडा जेवा डता तेनी लल अग्निमा दादयोण थर्ध
 गयेली डणनी डोस जेवी डती तेना डाढ दाणा डता तेनु मे सङ्केड गोण
 भटोण अणियाणी, मज्झूत मोटी तेमज्झ कुटिल त्रासी दाढो पाणु डतु

(विकोसिय धारासियजुयलसमसरिसतणुय चचलगलतरसलोलचवलफुर
 फुरेत निल्लालियगजीह)

ધારી તયોરસ્યોઃ સ્વદ્ગયોર્યુગલ=દ્વય તેન સમસદૃશ્યો-અતિતુલ્યે તનુકે-પ્રતલે, ચચ્ચલ યથાભવતિ, યથાઽવિશ્રાન્ત ગલન્ત્યૌ=રસાતિલાલસત્વાત્ લાલાવિન્દનધઃ પાતયન્ત્યો, અતएव રસલોલે-રસાસ્વાદાનુરક્તે, ચપલે ચચ્ચલે, અતएव ફુરફુરાય-માણે-પ્રકમ્પમાને, નિર્ઝાલિતે મુલાદ્વહિષ્કૃતે, અગ્રજિહ્વે-અગ્રભૂતજિહ્વે જિહ્વાગ્રે યેન સ તથા તમ્ અતિદીર્ઘજિહ્વમિત્યર્થઃ તથા-‘ અવયચ્છિયમહલ્લવિગયત્રીભચ્છ લાલપગલતરત્તતાલૂય ’ પ્રસારિતમહાવિકૃતત્રીભત્સલાલાપગલદ્રક્તતાલુકમ્, પ્રસારિત મુખપ્રસારણેન દૃશ્યમાન મહાવિકૃત ત્રીભત્સ લાલાભિઃ પ્રગલદ્રક્ત ચ તાલુ યસ્ય સ તથા ત મુખપ્રસારણપ્રકટોભૂતમહાવિકૃતલાલાપૂર્ણરક્તતાલુવન્તમિત્યર્થઃ તથા-‘ હિંગુલુયસગઘ્મકદરવિલવઅજનગિરિસ્સ ’ હિંગુલુકસગર્ભકન્દરવિલામિવાઞ્જનગિરેઃ-હિંદુલકેન રક્તવર્ણકદ્રવ્યવિશેષેણ સગર્ભ=સાન્તરાલ કન્દરરૂપ વિલમિવ અઞ્જનગિરેઃ=કઞ્જલપર્વતસ્ય મુખપ્રસારેણ રક્તાતિદીર્ઘજિહ્વા તાલુ યુક્તમુખ વિવરસ્ય હિંદુલક પુઞ્જસમ્ભૂતકન્દરસાદૃશ્યાદતિ કૃષ્ણવર્ણમહાવિશાલશરીરસ્યાઞ્જ-

ભાગ મ્યાન સે નિકાલી હુઈ તલવાર કે સમાન તીક્ષ્ણ થી । પતલિ થી । ચચલ થી । રસ મે અતિલાલસાવાલે હોને કે કારણ ઉન સે નિરન્તર લાર વહ રહી થી । રસ કે આસ્વાદન મે વે અનુરક્ત થે । ચચલ હોને કે કારણ વે કપ રહે થે । ઓર મુખ સે બાહિર નિકલે હુએ થે । તાત્પર્ય-ઈસ કી જીભ વહુત લબી થી ।

(અવયચ્છિયમહલ્લવિગયત્રીભચ્છલાલપગલતરત્તતાલૂય, હિંગુલુયસગઘ્મકદરવિલવઅજનગિરિસ્સ અગ્નિજાલુગ્નિલતવયણ) તાલુ ઇસ કા મુખ કે ફાડતે સમય દિલ્લોઈ પડતા યા । મહા વિકરાલ થા । ત્રીભત્સ યા । લાર સે ગીલા હો રહા થા ઓર લાલ થા । ઇસકા મુખ અજનગિરિ (કાલા પર્વત) કે હિંગુલક સે ભરે હુએ કદરા રૂપ વિલ કે

તેની જીભના બંને આગળના ટેરવા મ્યાનમાથી બહાર ડાઢેલી તલવારની જેમ તીક્ષ્ણ હતા, પાતળા હતા ચચળ હતા અને વિપયના રસોને ગ્રહણ કરવા માટે અત્યંત લોહુપ તેમજ આતુર હોવા બદલ તેમાથી સતત લાળ ટપક્યા જ કરતી હતી તેઓ રસાસ્વાદમા અનુરક્ત હતા ચચળ હોવાને લીધે તેઓ ધ્રુજીરહ્યા હતા, અને મોથી બહાર નીકળી રહ્યા હતા મતલબ એ છે કે તેની જીભ ખૂબ લાખી હતી

(અવયચ્છિયમહલ્લવિગયત્રીભચ્છલાલપગલતરત્તતાલૂય, હિંગુલુયસગઘ્મકદરવિલવઅજનગિરિસ્સ અગ્નિજાલુગ્નિલતવયણ)

મો પહોણુ કરતી વખતે તેનુ તાળવુ દેખાતુ હતુ તે બીભત્સ હતુ લાળથીભીનુ થઈ ડહુ હતુ અને લાલચોળ હતુ તેનુ મો અજનગિરિ (કાલા પર્વત) ના હિંગુજોથી ભરેલી કદરાના દર બેધુ હતુ તે બહુ વિશાળ અને

ष्ठुरस्वरपरुपशुपिरात्रभुग्ननासिकापुटम् रोपात् क्रोधादिवागतः प्रबलतया धमधमा यमानः धमधमेतिशब्द कुर्वन् मारुतो=वायुनिष्ठुरस्तीव्रः स्वरपरुपः=अतिकर्कशः पर मदुःसहः, शुषिरयो =रन्प्रयोर्यस्य तत्तथा, तदेव भूतम्-अवभुग्न-प्रक्र नासिकापुट यस्य तथा तम् भस्त्रावद्धमवमायमानश्वासोच्छ्वासपूर्णवक्रनासिकायुक्तमित्यर्थः 'घाडु-ब्भडरइयभीपणमुह' घाटोद्धटरचितभीपणमुख=तत्र घाटाभ्या शिरोऽवयवविशेषा भ्याम् उद्धट विकराल दुर्दर्श रचितम् अतएव भीपण भयकर, मुख यस्य स तथा त विकृतभयानकमुखयुक्तम् 'उद्धमुहकन्नसक्कुलिय' ऊर्ध्वमुखकर्णशङ्कुलीकम्=ऊर्ध्वमुखे कर्णशङ्कुलीयौ कर्णपुटौ यस्य स तम् । तथा- 'महतविगयलोमसखालगलव तचलियकन्न' महाविकृतलोमशङ्खालग्नलम्बमानचलितकर्णम्, महान्ति विकृतानि असुन्दराणि लोमानि ययोस्तौ महाविकृतलोमानौ, तथा-तौ च शङ्खालग्नौ=शङ्ख = अक्षिप्रान्तभागस्तत्रालग्नौ=सलग्नौ तस्पर्शिनौ लम्बमानौ च चलितौ=चञ्चलौ च कर्णौ यस्य स तथा तम्, 'पिगलदिप्पतलोयण' पिङ्गलदीप्यमानलोचन=पिङ्गले कपिले,

था वह ऐसा मालूम देता था कि मानों बड़े क्रोध से आ रहा है-और इसी लिये वायु भरते समय भस्त्रा (धमनी) से जैसा धम र शब्द होते हैं उसी प्रकार का उस से भी धम धम ऐसा शब्द होता रहता था । वह तीव्र या अतिकर्कश या कठोर था । दुःसह था । उस का मुख शिर के अवयव विशेषों ने ऐसा ही दुर्दर्श बनाया था कि जिस से वह बड़ा भयकर लगता था ।

(उद्धमुहकन्नसक्कुलिय) इस के दोनों कर्णपुट ऊँचे उठे हुए थे । (महतविगयलोमसखालगलवतचलियकन्न) इन दोनों कानों के रोम इस के महा विकराल थे शङ्ख अक्षि प्रान्त भाग तक ये दोनों कान फैले हुए थे । इसीलिये ये बड़े लंबे थे और चञ्चल थे ।

नीकणतो हुतो ते ओम जणुतो हुतो के जणु णहु क्रोधमा लराधने ते साभे धमी आवतो डोय, ओधी न न्यारे ते श्वास लेतो हुतो त्त्यारे लस्त्रा (धमणु) माथी जेम ' धम ' धम शब्द थतो रडे छे तेवेज्जध्वनि थया हुतो ते तीव्र, उर्करा कठोर अने दुमड हुतो तेना मेना कड इया अवय वेथी ते दुर्दर्श अने मडा लयकर लागतो हुतो ।

(उद्धमुहकन्नसक्कुलिय) तेनी णने तरङ्गनी कानपटी उभे उपसेली हुती (महतविगयलोमसखालगलवतचलियकन्न) णने कान परना रुवाग मडाविक राण हुता आप्पना णणुओसुधी तेना णने कान इलायेला हुता ओटला माटे न ओओ लागा अने थयण हुता ।

નગિરિસામ્પાદ અજનગિરેઃ કન્દરમિત્ત તન્મુલ પ્રતિભાતીતિમાત્ર । ‘ અગ્નિજા-
લુગ્ગિલતરયણ ’ અગ્નિજાલોદ્ગિરિદ્ વદનમ્ અગ્નિજ્વાલા ઉદ્ગિરિદ્=વહિષ્કુર્વદ્=વ
દન મુલ્ય યસ્ય સ તથા તમ્, યસ્ય મુલાદ્ અગ્નિજ્વાલાનિમ્સરતિ તથાવિધમિત્યર્થઃ,
‘ આઝસિય અવલ્લચમ્મઃઉદ્ગડ્ડેસ ’ આયુપિતાલ્લચર્માપકૃષ્ટ ગણ્ડદેશમ્-આયુષિત્ત=
વલિયુક્તમ્ યદલ્લચર્મ-શુષ્કો જલાકર્ષણ કોશસ્તદ્વદપકૃષ્ટૌ=અન્તઃ પ્રપિષ્ઠૌ ગણ્ડદેશૌ
યસ્ય સ તથા તમ્, ‘ ચીણચિપિટવક્રભગ્ગણાસ ’ ચીનચિપિટ વક્રમગ્નનાસ=ચીના
=દ્રસ્યા, ચિપિટા=નિમ્ના, વક્રા=કુટિલા, ભગ્ના=ભગ્નેઃ અયોગનોપરિકુટ્ટનેન પ્ર
સૃતેઽ નાસા યસ્ય સ તથા ત, ચિપિટનાસિકાગ્નન્તમિત્યર્થ ‘ રોમાગયધમધમેત
મારુતનિદ્દુરલ્લરફરુસસુસિર ઓભુગ્ગણાસિયપુડ ’ રોપાગતધમધમાયમાનમારુતનિ

સમાન થા । યહ સ્વય અતિ વિશાલ ઔર અત્યત કાલે વર્ણ કા થા
હસ લિયે અજનગિરિ કે જૈસા થા-તથા હસ કી જિહ્વા ઔર તાલુયે
દોનોં અતિરક્ત થે હસ લિયે વે હિંદુલ કે સમાન લાલ થે ।

હસલિયે સૂત્રકાર ને હસ કે મુલ્ય કો અજનગિરિ કી હિંદુલક સે
ભરી હુઈ કદરા સે ઉપમિત કિયા હૈ । હસ કે મુલ્ય સે અત્યન્ત લાલ
જિહ્વા ઔર તાલુ વાલા હોને કે કારણ એસા જ્ઞાત હોતા થા કિ
માનો અગ્નિ કી ઉવાલા હી વાહર નિકલ રહી હૈ । (આઝસિયઅવલ્લ
ચમ્મ ઉદ્ગડ્ડેસ, ચીણચિપિટવક્રભગ્ગણાસ રોમાગયધમધમેતમારુત
નિદ્દુર લ્લરફરુસસુસિરઓભુગ્ગણાસિપુડ, ધાટુઞ્ઞમ્હરહયમ્મીસણમુહ)
હસ કે દોનાં કપોલ (ગોલ) પાની કો લીચ ને વાલે શુષ્ક વલિ
યુક્ત ચરસ કે સમાન મીતર કો ઘુસે હુળ થે । નામિકા હસ કી હસ્વ
ચિપટી થી । ટેહી હસ નાસિકા કે છેદોં સે જો શ્વાસોચ્છવાસ નિકલતા

અતિશય કાળારગતુ હતુ એટલા માટે જ તે અજનગિરિ જેવુ હતુ તેની
જીભ અને તાળવુ બન્ને ખૂબજ લાલ હતા એથી તેઓ હિંગજોક જેવા લાલ હતા

સૂત્રકારે અજનગિરિની હિંગજોકથી ભરેલી કદરાની તેના મોની જે
ઉપમા આપી છે તેની પાછળ એજ કારણ છે તેનુ તાળવુ અને જીભ ખૂબજ
લાલ હોવાથી એમ લાગતુ હતુ કે જાણે તેના મોમાંથી અગ્નિની જ્વાળાઓ
બહારનીડળી રહી હોય

(આઝસિય અવલ્લ ચમ્મ ઉદ્ગડ્ડેસ ચીણ ચિપિટવક્ર ભગ્ગણાસ રોમાગય ધમ
મેત મારુત નિદ્દુરલ્લર ફરુસ સુસિરઓ ભુગ્ગણાસિયપુડ ધાટુઞ્ઞમ્હરહયમ્મીસણમુહ

તેના બને ગાલ કેસની જેમ ડરચલીયોવાળા જેમ મોમાં પેસી ગયેલા
હતા નાક તેનુ નાનુ અને ચપટુ હતુ ત્રામા નાકના છિદ્રોથી શ્વાસોચ્છવાસ

षट्खरपरुपशुपिरात्रभुग्ननासिकापुटम् रोपात् क्रोधादिवागतं प्रबलतया धमयमा
यमानः धमयमेतिशब्द कुर्वन् मारुतो=वायुनिष्ठरस्तीव्रः खरपरुपः=अतिकर्कशः पर
मदुःसहः, शुपिरयो=रन्ध्रयोर्यस्य ततथा, तदेव भूतम्-अवभुग्न-प्रक नासिकापुट
यस्य तथा तम् भस्त्रावद्धमयमायमानश्चासोच्छ्वासपूर्णवक्रनासिकायुक्तमित्यर्थः 'घाडु-
ब्धडरइयभीमणमुह' पाटोद्धटरचितभीपणमुख=तत्र घाटाभ्यां शिरोऽवयवविशेषा
भ्याम् उद्धट विकराल दुर्दर्श रचितम् अतएव भीपण भयकर, मुख यस्य स तथा
त विकृतभयानकमुखयुक्तम् 'उद्धमुहकन्नसक्कुलिय' ऊर्ध्वमुखकर्णशङ्कुलीकम्=
ऊर्ध्वमुखे कर्णशङ्कुल्यौ कर्णपुटौ यस्य स तम् । तथा-'महतविगयलोमसखालगलव
तचलियकन्न' महाविकृतलोमशङ्खालग्नलम्बमानचलितकर्णम्, महान्ति विकृतानि
असुदराणि लोमानि ययोस्तौ महाविकृतलोमानौ, तथा-तौ च शङ्खालग्नौ=शङ्ख =
अक्षिप्रान्तभागस्तत्रालग्नौ=सलग्नौ सस्पर्शिनौ लम्बमानौ च चलितौ=चञ्चलौ च कर्णौ
यस्य स तथा तम्, 'पिगलदिप्पतलोयण' पिङ्गलदीप्यमानलोचन=पिङ्गले कपिले,

था वह ऐसा मालूम देता था कि मानो बड़े क्रोध से आ रहा है-और
इसी लिये वायु भरते समय भस्त्रा (धमनी) से जैसा धम र शब्द
होते हैं उसी प्रकार का उस से भी धम यम ऐसा शब्द होता रहता
था । वह तीव्र या अतिकर्कश या कठोर था । दुःसह था । उस का मुख
गिर के अवयव विशेषों ने ऐसा ही दुर्दर्श बनाया था कि जिस से वह
बड़ा भयकर लगता था ।

(उद्धमुहकन्नसक्कुलिय) इस के दोनो कर्णपुट ऊँचे उठे हुए
थे । (महतविगयलोमसखालगलवतचलियकन्न) इन दोनो कानों
के रोम इस के महा विकराल थे शख अक्षि प्रान्त भाग तक ये दोनों कान
फैले हुए थे । इसीलिये ये बड़े लंबे थे और चंचल थे ।

नीकणतो હતો તે એમ જણાતો હતો કે જાણે ખડુ ક્રોધમા ભરાઈને તે સામે
ધમી આવતો હોય, એથી જ જ્યારે તે શ્વાસ લેતો હતો ત્યારે ભસ્ત્રા
(ધમણ) માથી જેમ 'ધમ' ધમ શબ્દ થતો રહે છે તેવોજધ્વનિ થયા
હતો તે તીવ્ર, કર્કશ કઠોર અને દુ સહ હતો તેના મોના કદ રૂપા અવય-
વોથી તે દુર્દર્શ અને મહા ભયકર લાગતો હતો

(ઉદ્ધમુહકન્નસક્કુલિય) તેની બંને તરફની કાનપટ્ટી ઉચે ઉપસેલી હતી
(મહત્તવિગયલોમસખાલગલવત્તચલિયકન્ન) બંને કાન પરના રુવાળા મહાવિક
રાળ હતા આળના ખૂણાઓસુધી તેના બંને કાન ફેલાયેલા હતા એટલા
માટે જ એઓ લાંબા અને ચચળ હતા

युक्तप्रसर्पत्सर्पादिमालाधारिणमित्यर्थः । तथा-‘ भोगक्रूरकण्हसप्पधमधमेतलयतकन्न
पूर ’ भोगक्रूरकण्हसर्पत्रयमायमानलम्पमानकर्णपूरम्=भोगैः=फणैः क्रूरा भयक्रूरौ
भोगक्रूरौ, तौ च कण्हसर्पौ च भोगक्रूरकण्णासर्पौ, तौ च धमवमायमानौ=फुत्कुर्वन्तौ
तावेव लम्पमाने कर्णपूरे=कर्णालङ्कारविशेषौ यस्य स तथा तम्, तथा-परिवृतकण्हसर्प
कर्णभूषणमित्यर्थः ‘ मज्जारसियाललङ्घयखध ’ मार्जारशृगाललगितस्कन्धम्=मार्जार
शृगालालगिता सयोजिताः स्कन्धयोरेन स तथा तम्, ‘ दित्तधुधुयत धूयकयकुतल-
सिर ’ दीप्तधुधुर्कुर्वद्भूकृतकुमलशिरस्कम्=दीप्त-दीप्तस्वर यथाभवत्येव धुधुशब्द
कुर्वन्तो यौ धूका=उलूका तएव कृतः कुम्भलः शेखरकः शिरोभूषण शिरसि येन
स तथा तम्, शब्दायमानोलूकशिरोभूषणधारिणमित्यर्थः, तथा-घटारवेण भीम=
भयकरम्, घटानां शब्देन भीम भयकरम्, अतिभयानकम्, तथा-‘ कायरजण-
हिययफोडण ’ कातरजनहृदयस्फोटनम्=कातरजनानां भीरुजनानां यानि हृद

घर्णं सपन्न माला उस ने पहिरी हुई थी । (भोगक्रूरकण्हसप्पधम
धमेत लयतकन्नपूर) कर्णपूरो के स्थान पर इसने फणाचलि से भयकर
बने हुए, तथा फुत्कार करते हुए काले दो सर्पों को पहने रखे थे ।
(मज्जारसियाल लङ्घय खध) अपने दोनों स्कन्धों पर इसने मार्जार
और शृगालो को बैठा रखा था । (दित्तधुधुयतधूयकयकुतलसिर) दीप्त
स्वर जिस तरह से हो इस तरह से घू घू करते हुए उल्लुओं को इस
ने अपने शिर का आभूषण-मुकुट बनाया था । (घटारवेण भीम भय
कर कायरजणहियय फोडण दित्तमत्तट्टहास विणिम्मुयत वसारुहिर-
पूयम समलमलिणपोच्चडतणु) घटाओं के शब्द से यह भयकर बना
हुआ था । कातरजनों के हृदय का भयजनक होने से यह विदारक बना

वाणी भाषा तेले पडिरेली हुती (भोगक्रूरकण्हसप्पधमधमेतलयतकन्नपूर) कुड-
दोना स्थाने तेले क्षणाओथी लय कर तेमज्जार उरता थे डाणा माये पडे-
रेला हुता (मज्जारसियाललङ्घयखध) पोताना जने जला उपर तेले भिलाडा जने
शृगालने येमाडेला हुता (दित्तधुधुयत धूयकयकुतलसिर) मोटा साहे ‘ धू ’
‘ धू ’ करनार धूवडाने तेले पोतना माथाना आभूषणु ओटले के मुकुट बनाव्या हुता

(घटारवेण भीम भयकर जणहिययफोडण दित्त मत्तट्टहास विणिम्मुयत
वसारुहिरपूयमममलमलिणपोच्चडतणु)

घटना भीम ध्वनिथी ते लय कर लागतो हुतो कातर जनाने हृदयेना
लयथी विहीणु करनार डोवाथी ते ‘ विदारक ’ हुतो बार बार ते भडा लय कर उथ

દીપ્યમાને=ભાસ્વરે, લોચને યસ્ય સ તથા તમ્, માર્જાસ્વત્પદ્મીપ્તનેષ્વ મિત્યર્થઃ, તથા
 =‘ મિઝડિતડિયનિડાલ ’ શ્રુકૃટિતડિલ્લ્યાટ=શ્રુકૃટિઃ- શ્રુકૃતતા કોપકૃતા સૈવ
 તડિદ્ યસ્મિન્, તથાવિધ લલાટ, માલ્લ યસ્ય સ તથા તમ્ કોપાવેપેન ત્રિધુત્સદ્ધ
 મૂસમુલ્લસિતલલામયુક્તમિત્યર્થઃ । તથા-‘ નરસિરમાલપરિણદ્વિધ ’ નરશિરોમાલા
 પરિણદ્વિચિન્હ=નરશિરોમાલૈર્વ પરિણદ્વ=પરિધૃત ચિહ્ન=પિશાચત્વ વોધક લક્ષણયેન
 સ તથાત=નરતુણ્ડમાલા ધારિણમિત્યર્થઃ । તથા-‘ વિચિત્તગોણસસુવદ્ધપરિકર ’ વિચિ
 વ્રગોણસસુવદ્ધપરિકર=વિચિત્રૈઃ=વહુવર્ણવયુક્તૈઃ, ગોનસૈ=સર્પવિશેષૈઃ, સુવદ્ધઃ પરિ
 કર કવચો યેન સ તથા તમ્, ‘ અવહોલતપુપ્ફુયાયતસપ્પવિચ્છુય ગધુદરનઝલસરઢ
 વિરહ્યવિચિત્તવેયચ્છમાલિયાગ ’ અવધોલયત્ ફુત્કુર્મત્ સર્પટ્થિકગોધોન્દુરનકુલ
 સરટ્થવિરચિતવિચિત્રવૈકલ્પમાલિક=અવધોલયન્તઃ કિંચિન્ પ્રસર્પન્તઃ પૂત્કુર્વન્તઃ
 યે સર્પાઃ વૃશ્ચિકાઃ ગોધા ઝન્દુરા નકુલાઃ સરટ્થા તૈર્વિરચિતા વિચિત્રા વિવિધ
 વર્ણવતી, વૈકલ્પમાલિકાસ્કન્ધલમ્બિતમાલા યસ્ય સ તથા તમ્, સ્કન્ધદેશે ફુત્કાર

(પિંગલદિપ્તલોચન, મિઝડિતડિયનિડાલનરસિરમાલપરિણદ્વ
 વિધ વિચિત્તગોણસસુવદ્ધપરિકર અવહોલતપુપ્ફુયાયતસપ્પ વિચ્છુય
 ગોધદરનઝલસરઢવિરહ્ય વિચિત્તવેયચ્છમાલ યાગ) હસ કી દોનો
 આંખે માર્જાર (બિલી કી તરહ પીલી ઓર ચમકીલી યી । હસ
 કા લલાટ શ્રુ વક્રતા રૂપ વિજલી સે યુક્ત થા હસ ને પિશાચત્વ કે વો
 ધક નરમુલ્કી માલા રૂપ ચિહ્ન કો ધારણ કર રક્ષા થા । હસ ને જો
 કવચ પહિરા હુઆ થા-વહ અનેક વર્ણવાલે સર્પો સે વ્યાપ્ત હો રહા થા ।
 અથવા-કવચકે સ્થાનાપન્ન હસ ને વિવિધ વર્ણવાલે સર્પો કો અપને
 શરીર પર ધારણ કર રક્ષા થા ।

સ્કન્ધ દેશ મેં, ઇધર ડધર, સરકતે હુએ તથા ફુત્કાર કરતે હુએ સર્પો
 કી, વૃશ્ચિકો કી, ગોંદો કી, ઝન્દુરો કી, નકુલો કી, સરટો કી, વિવિધ

(પિંગલદિપ્તલોચન મિઝડિતડિયનિડાલ નરસિર-માલપરિણદ્વ વિધ
 વિચિત્તગોણસસુવદ્ધપરિકર અવહોલતપુપ્ફુયાયતસપ્પવિચ્છુયગોધદરનઝલસરઢવિરહ્ય
 વિચિત્તવેયચ્છમાલયાગ)

તેની બને આંખો બિલાડાની જેમ પીળી અને ચમકતી હતી વક્રભૂ
 (ભ્રમર) ૩૫ વીજળીથી તેનું કપાળ યુક્ત હતું પિશાચપણના પ્રમાણ રૂપે
 તેણે નરમુલ્કની માળા પહેરેલી હતી ઘણા રંગના સાપોથી તે આવેષિત હતો
 અથવા કવચના સ્થાને તેણે જાતજાતના રંગવાળા અનેક સાપોને શરીર ઉપર
 ધારણ કરેલા હતા

ખભા ઉપર આમતેમ હિલચાલ કરતા એટલે કે સન્કતા તેમજ કુત્સાર
 કરતા સાપો, વીંછીઓ, ઘો, ઉદરો, નાગિયાઓ, અને સરટોની અનેક રંગો

ऊर्ध्वीकृतभुजद्वयलम्बमानपक्षरद्रुधिरगजचर्मधारिणमित्यर्थः । तथा—‘ताहिय खर
फरुसअसिणिद्धअणिट्टदित्तअसुभअप्पियअमणुन्नअक्कतवग्गूहि य तज्जयत’ ताभिश्च
खरपरुपास्निग्धनिष्टदीप्ता शुभा प्रिया मनोज्ञा कान्तवाग्भिश्च तर्जयन्त=ताभिः
=तादृशीभिर्भयकराभिश्च, खरपरुपा=अतिरुर्कशा, अस्निग्धाः=स्नेहरहिता, अनि-
ष्टा=दुःश्रवत्वेनानीप्सिताः, दीप्ता=उपतापजनकत्वादुज्ज्वला, अशुभाः=अमङ्गला,
अप्रियाः-श्रुतिकटुत्वात्, अमनोज्ञा=मनोविकृतिजनकत्वात्, अकान्ताश्च विकृत
स्वरत्वाद् या वाचस्ताभिश्च तर्जयन्त=व्रस्तयन्त पश्यन्तिस्म । अथ पुनस्तत् ताल
पिशाचरूप ‘एज्जमाण’ एजमान=नावप्रति अभ्यागच्छत् पश्यन्ति, दृष्ट्वा भीताः,
व्रस्ताः, व्रसिताः, उद्विग्नाः, सजातभयाः अन्योन्यस्य=परस्परस्य, काय=शरीर,
‘समतुरगेमाणा २’ आश्लिष्यन्तः २ ग्रहणामिन्द्राणा च स्कन्दाना=कार्तिकेयाणा
च, रुद्रशिववैश्रमणनागाना नागो-भवनपतिविशेष, भूताना यक्षाना च भूतयक्षाः

णिद्ध अणिट्टदित्तअसुभअप्पियअमणुन्नअक्कत वग्गूहि य तज्जयत
पासइ) उस ताल पिशाच को भयकर, अत्यन्त कर्कश, स्नेह शून्य,
अनिष्ट, उपताप जनक, अमंगल रूप अप्रिय अमनोज्ञ, एव अकान्त
ऐसी अपनी वाणी से दूसरो को दुःखित करता हुआ उन लोगोने देखा।

(त ताल पिसायरूव एज्जमाण पासति, पासित्ता, भीया०
सजायभया अन्नमन्नस्स काय समतुरगेमाणा २ बहूण इदाणय खदाण
य रुदसिव वेसमणणागाण भूयाण य जक्खाण य अज्जकोट्ट किरि-
याण य बहूणि उवाइयसयाणि ओवाइयमाणा २ चिट्ठति) और साथ में
यह भी देखा की वह ताल पिशाच का रूप हम लोगों की और आ रहा

(ताहि य खरफरुस असिणिद्ध अणिट्टदित्त असुभअप्पियअमणुन्नअक्कत
वग्गूहिय तज्जयत पासइ)

ताल पिशाचने ते दोडोअे पोतानी लयकर, अत्यत ऊर्ध्व, स्नेह
रहित, अनिष्ट उपताप जनक, अमंगलरूप अप्रिय अमनोज्ञ, अने अकान्त
(भीतरस) वाणीथी भीतरने त्रास आपतो लेथे।

(त ताल पिमायरूव एज्जमाण पासति, पासित्ता, भीया० सजायभया,
अन्नमन्नस्स, काय समतुरगेमाणा २ ग्रहण इदाण य खदाण य रुदसिववेसमण
णागाण भूयाणय जक्खाणय अज्जकोट्ट किरिया य बहूणि उवाइयसयाणि ओवा
इयमाणा २ चिट्ठति)

યાનિ તેષા સ્ફોટન ભયજનકત્વેન વિદારક, તથા—‘દિત્તમટ્ટટ્ટહાસ ત્રિણિમ્પ્રયત’
 દિત્તમટ્ટટ્ટહાસમ્=ઉગ્રમટ્ટટ્ટહાસ ત્રિણિર્મુશ્ચન્ત=પર્કુર્વન્તમ્, તથા—‘વસારુહિરપૂયમસ
 મલમલિણપોચ્ચડતણુ’ વસારુહિરપૂયમાસમલ્મલિણપોચ્ચડતણુમ્=વસારુહિરપૂયમા
 સમલૈર્મલિના પોચ્ચડા આદ્રા ‘પચ પચ’ કુર્વાણા તનુઃ શરીર યસ્ય સ તથાતમ્,
 તથા—‘ઉત્તાસણય’ ઉત્તાસનકમ્=ઉદ્વેજક, વિશાલવક્ષસ્કમ્=ત્રિસ્તીર્ણવક્ષસ્થલકમ્
 ‘પેચ્છતાગિન્નણહરોમમુહનયણકન્નપરવગ્ધચિત્તકત્તીણીયસણ’ પ્રેક્ષ્યમાણાઽભિન્નનલ્લરો
 મમુલ્લનયનકર્ણવરવ્યાઘ્ર ચિત્ર કૃત્તિનિવસનમ્=તત્ર પ્રેક્ષ્યમાણા-દૃશ્યમાના અભિન્નાઃ
 =અચ્છિન્નનલ્લાશ્ચ રોમાણિ ચ મુલ્લ ચ નયને ચ કર્ણો ચ યસ્યા સા પ્રેક્ષ્યમાણાઽ
 ભિન્નનલ્લરોમમુલ્લનયનકર્ણા સા ચાસૌ વરવ્યાઘ્રસ્ય ચિત્રા-વિવિધકર્ણકા, કૃત્તિ
 શ્ચર્મ સૈવ નિવસન-પરિધાન વસ્ત્ર યસ્ય સ તથા તમ્ અલ્લવ્યાઘ્રચર્મપરિધાનમિત્ય
 ર્થઃ, તથા—‘સસરુહિરગયચમ્મવિતતઝમવિયવાહુજુલ’ સસરુહિરગયચર્મ વિ
 તતોચ્છૃતવાહુયુગલ=સસ-રુહિરાદ્રૈં યદ્ ગયચર્મ, તદ્ વિતત-વિસ્તારિત યત્ર તત્
 સસગયચર્મવિતત, તદેવ ભૂતમ્ ઉચ્છૃતમ્ ઉત્થાપિત વાહુયુગલ યેન સ તથા તમ્

હુઆ થા ઘાર ૨ યહ મહા ઉગ્ર, અટ્ટહાસ કર રહા થા । હસ કા શરીર
 વસા-ચર્મી, રુધિર, પૂય-પીપ, માસ ંવ મલ હન સે મલિન હો રહા થા ।
 ઔર મસક ને પર પચ પચ હસ પ્રકાર કા શબ્દ કરને લગતા થા ।

(ઉત્તાસણય, વિશાલવચ્છ પેચ્છતાભિન્નણહરોમમુહનયણકન્ન
 વરવગ્ધચિત્તકત્તીણિવસણ, સસરુહિરગયચમ્મવિતતઝમવિય વાહુ
 જુલ) હસે દેલ્લતે હી લોગ કોપ જાતે થે, । હસ કા વક્ષસ્થલ
 (છાતી) વહુત વિશાલ થા । હસ ને જો વ્યાઘ્ર કા વિવિધ વર્ણ વાલા
 ચર્મ રૂપ વસ્ત્ર પહિર રહા થા હસ મે સ્પષ્ટ રૂપ સે વ્યાઘ્ર કે અચ્છિન્ન નલ્લ,
 રોમ, મુલ્લ, નયન’ ઔર કાન દૃષ્ટિગત હો રહે થે । અપને ઉત્થા પિત
 કિયે હુએ વાહુ યુગલ મે હસ ને લમ્બા લૂન સે લથ પથ હુઆ
 મીલા ગય કા ચમડા ધારણ કર રહા થા । (તાહિયલ્લરફરુસઅસિ

અટ્ટહાસ કરતો હતો તેનું શરીર વસા-ચર્મી, લોહી, પીપ, માસ અને મળથી
 ખરડાયેલું હતું અને ભેરથી દબાવાથી (ફસડી જવાથી) ‘પચ’ પચ શબ્દ થતો હતો

(ઉત્તાસણય, વિશાલવચ્છપેચ્છતા ભિન્નણહરોમમુહનયણકન્નપરવગ્ધ ચિત્તકત્તી
 ણિયસણ, સસસહિરગયચમ્મ વિતત ઝમવિયવાહુજુલ)

તેને ભેરથી સાથે જ માણસો ધ્રુજવા માડતા હતા તેનું વક્ષસ્થળ
 ખૂબજ પહોળું હતું અનેક જાતના રંગોના પહેરેલા વાઘના ચામડાના વસ્ત્રમાં
 વાઘના આખા નખો, રુવાટા, મો આખે અને કાન સ્પષ્ટ રીતે દેખાઈ રહ્યા હતા
 ઉત્થા કરેલા બે હાથમાં તેણે લોહીથી ખરડાયેલું લાળુ હાથીનું ચામડું પહેરેલું હતું

कप्पइ, तव सीलव्वयगुणवेरमण पच्चवखाण पोसहोववासाइ
 चालित्तए वा एव खोभेत्तए वा खडित्तए वा भजित्तए वा
 उड्डित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइणं तुम सीलव्वय जाव
 ण परिच्चयसि तो ते अहं एय पोयवहणं दोहि अगलियाहिं
 गेणहामि, गिण्हित्ता सत्तट्ठतालप्पमाणमेत्ताइ उड्डु वेहास उव्वि-
 हामि, उव्विहित्ता अतो जलसि णिव्वोलेमि जेणं तुमं अट्ठ-
 दुहट्ठवसट्ठे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि
 तएणं से अरहन्नए समणोवासए त देव मणसा चेव एवं
 वयासी—अह णं देवाणुप्पिया । अरहन्नए णाम समणोवासए
 अहिगयजीवाजीवे नो खलु अह सक्के केणइ देवेण वा जाव
 निग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा तुम ण जा
 सद्धा त करेहित्तिकट्ठु अभीए जाव अभिन्नमुहरागणयणवन्ने
 अदीणविमणमाणसे निच्चले निप्फदे तुसिणीए धम्मज्झाणोव-
 गए विहरइ ॥ सू० २० ॥

टीका—अरहन्नकज्यै सायात्रिकैर्यथानुष्ठित तदुक्तम्, अधुनाऽरहन्नकेन
 पिशाचरूपमवलोक्य यत् कृत तदाह—‘तएण’ इत्यादि । ततस्तदा खलु स अरह-
 न्नक, अरहन्नकनामको मुख्य मायात्रिक, श्रमणोपासक’=श्रावकस्त दिव्यम्

तएण से अरहन्नए इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद मुख्य सायात्रिक अरहन्नक को छोड़ कर
 अन्य सांयात्रिकों ने जो २ किया उस के बाद (समणोवासए अरहन्नए)
 श्रमणोपासक अरहन्नक ने (त दिव्व पिसायरूव पासित्ता) जब दिव्य

‘तएण से अरहन्नए’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) अरहन्नक सिवायना पीता सायात्रिकोनी आवी डालत थध
 त्या२ भा, (समणोवासए अरहन्नए) श्रमणोपासक अरहन्नक
 पिसायरूव पासित्ता) इत्यादि ते दिव्य अपूर्वदृष्ट-अद्भुत-वि

—व्यन्तरभेदास्तेषाम्, तथा—आर्यकोटक्रियाणां च=आर्याप्रशान्तस्वभावा देव्यः, कोटक्रिया=चण्डिकारूपादेव्यः, तासां बहूनि उपयाचितशतानि=बहुविधानि मान्यताशतानि उपयाचमानाः २ कुर्यन्त २ स्तिष्ठन्ति ॥सू-२१॥

मूलम्—तएणं अरहन्नए समणोवासए तं दिव्वं पिसायरूवं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता अभीए अत्तत्थे अचल्लिए असंभंते अणाउले अणुव्विग्गे अभिन्नमुहराग णयणवन्ने अदीणविमण-माणसे पोयवहणस्स एगदेससि वत्थत्तेणं भूमिं पमज्जइ, पमज्जित्ता ठाण ठाइ, ठाइत्ता करयलओ एव वयासी—नमोत्थुणं अरहताणं जाव सपत्ताण, जइ ण अह एत्तो उवसग्गाओ सुचामि तो मे कप्पइ पारित्तिए अहणं एत्तो उवसग्गाओ ण सुंचामि, तो मे तहा पच्चवखाए यव्वे त्तिकट्टु सागार भत्त पच्चवखाइ, तएणंसे पिसायरूवे जेणेव अरहन्नए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहन्नग एव वयासी—ह भो । अरहन्नगा अपत्थियपत्थया जाव परिवज्जिया णो खलु

है इस घात को देख कर वे सब के सब भयभीत हो गये, डर गये, उद्विग्न हो गये । उन के प्रति प्रदेश मे भय का संचार हो गया । इस तरह होकर वे सब परस्पर में एक दूसरे के शरीर से चिपक गये । और अनेक इन्द्रों की स्कन्द की कार्तिकेय की रुद्र की शिव की वैश्रमण की नाग की भूत की यक्ष प्रशान्त स्वभाव वाली देवियों की तथा चण्डि का रूप देवियों की सैकड़ों प्रकार बार २ मान्यता करने लग गये । सूत्र “२१”

तादा पिशाच ने तेओओ पोतानी तरइ न आवतो ओओ आरीते ओओने तेओओ जधा लयन्नन्त थछगया, णीगया उद्विग्न थछगया तेभना आत्माना प्रतिप्रदेशमा लयन्तु सत्थरणा थछ गयु तेओओ लयणीत थछने ओक णीज्जने ओटी पडया, अने तेओओमाथी धण्णा इन्द्रोनी रुद्रनी, कार्तिडेयनी रुद्रनी, शिवनी, वैश्रमणुनी, नागनी, भूतनी, यक्षनी, प्रशान्त स्वभाववाणी देवीओनी तेभज्ज थडिक्काइय देवीओनी सैकडो प्रकारनी बारवार मानता मानवा लाग्या ॥ ॥ सूत्र “ २१ ” ॥

સ્થાન સંપાદ્યેભ્ય, યદિ સ્વલ્પહમ્ એતસ્માદુપસર્ગાદ્ પિશાચકૃતસકટાત્, નિર્વિ-
ધ્નો ભવામિ મુશ્ચામિ, તદા મે તથા=તાવત્પર્યન્તં પ્રત્યાખ્યાતવ્યમ્૦ ચતુર્વિધભક્ત
પ્રત્યાખ્યાન મયાઽનુષ્ઠેયમિત્યર્થ, ઇતિ કૃત્વા સાકારભક્ત=ચતુર્વિધમાહાર પ્રત્યા
ખ્યાતિ૦ । તતસ્તદનન્તર યત્લુ સ પિશાચરૂપધારી દેવ, યત્રૈવારહન્નક અરહન્નક
નામકઃ શ્રમણોપાસક' = શ્રાવકસ્તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્યારહન્નકમ્-એવ=
વક્ષ્યમાણપ્રકારેણાવાદીત્-હમો ! અરહન્નક ! હે અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! = અપ્રાર્થિત

એવ વચાસી) વૈઠ કર ઉસ ને અપને દોનો હાથોં કી અજલિ બનાઈ ।
ઔર ઉસે મસ્તક પર રગ્વ કર આવર્ત કરતે હુણ વહ્ ઇસ પ્રકાર કહ ને
લગા-(ણમોત્યુ ણં અરહતાણ જાવ સપત્તાણ) યાવત્ સિદ્ધગતિ કો
પ્રાપ્ત હુણ અર્હત પ્રભુઓ કો નમસ્કાર હો (જહણ અહ્ એત્તો ઉવસગ્ગાઓ
મુચામિ તો મે કપ્પદ પારિત્તણ)

યદિ મે ઇસ પિશાચ કૃત ઉપસર્ગ સે વચ ગયા તો હી અશનાદિ
ગ્રહણ કરુંગા (અહ્ ણ એત્તો ઉવસગ્ગાઓ ણ મુચામિ તો મે તદા પચ્ચ-
ક્ખાણ્યધ્વે) યદિ મે ઇસ ઉપસર્ગ સે નહી વચા તો મેરે તાવત્પર્યન્ત
ચતુર્વિધ આહાર કા ત્યાગ હૈ (ત્તિ કટ્ટહુ) એસા વિચાર કર (સાગાર
ભક્ત પચ્ચક્ખાઈ) ઉસને સાકાર ચતુર્વિધ આહારકા પ્રત્યાખ્યાન કર દિયા ।
અર્થાત્ સાગારી સધારા ક્રિયા - (તણ્ણ સે પિસાયરુવે જેણેવ અર
હન્નણ સમણોગામ્મણ તેણેવ ઉવાગચ્છહ) હમ કે યાદ વહ પિશાચ રૂપ
ધારી દેવ જહા વહ શ્રમણોપાસક અરહન્નક વૈઠા થા-વહા આયા

એસીને તેણે પોતાના ણને હાથની અજલિ બનાવી અને તેને મસ્તક ઉપર
મૂંછીને ફેરવતા તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો-“ ણમોત્યુર્ણં અરહતાણ જાવ
સપત્તાણ ” યાવત્-સિદ્ધગતિને પામેલા અર્હત પ્રભુઓને મારા નમસ્કાર છે.

(જહણ અહ્ એત્તો ઉવસગ્ગાઓ મુચામિ તો મે કપ્પદ પારિત્તણ)

એ હુ આ પિશાચના ઉપસર્ગોથી બચી જઈશ તોજ આહાર વગેરે
અહિણ કરીશ “ અહ્ ણ એત્તો ઉવસગ્ગાઓ ણ મુચામિ તો મે તદા પચ્ચક્ખાણ
યધ્વે ” આ ઉપસર્ગથી મારી રક્ષા નહિ થાય તો તાવત્પર્યન્ત ચારત્તતના
આહારનો હુ ત્યાગ કરે છુ “ ત્તિકટ્ટહુ ” આમ વિચારીને “ સાગર ભક્ત
પચ્ચક્ખાઈ ” તેણે આગર ચતુર્વિધ આહારનુ પ્રત્યાખ્યાન કર્યું

એટલે કે તેણે સાગારી અથારે કયો

(તણ્ણ સે પિસાયરુવે જેણેવ અરહન્નણ સમણોગામ્મણ તેણેવ ઉવાગચ્છહ)

ત્યાગ બાદ પિશાચ રૂપ ધારીદેવ જના અમણોપાસક બેસાડતા ત્યા આગ્યો.

अपूर्वदृष्टमद्भुतं पिशाचरूपम् एजमान=नाव प्रप्ति समागच्छन्त पश्यति, दृष्टाश्रमी
तः, भयरहितः, अग्रस्तः पासमपातः अचलितः, अपाप्तशोभः अवभ्रातः, सभ्रा
न्तिरहितः अनाकुलः, अव्यग्रः अनुद्विग्नः, अपक्रम्पः अभिन्नमुखरागनयनवर्णः=
अभिन्नौ-अविकृतौ मुखरागनयनवर्णौ यस्य स तथा, तस्य भयाभावान्मुख
रागोनयनवर्णश्चान्यथा न अदीनविमानो जातइत्यर्थः मानसः=अदीनविमनः-नदीन
दैन्यप्राप्त, नापि विमनः=दुर्मनः नापि विकृत मानस यस्य स तथा तस्य मनो-
ऽप्यन्यथा न जातमित्यर्थः, तथा भूतः सन् पीतवहनस्य नौकायानस्यैकदेशे=एक
भागे वस्त्रान्तेन=वस्त्राञ्चलेन खलु भूमिम्=उपवेशनस्थान प्रमार्जयति प्रमार्ज्य
स्थानम्-उपवेशनार्हं स्थानं सशोध्य जीवादिरहितं कृत्वा तत्र तिष्ठति=उपविशति,
स्थित्वा=उपविश्य करतलपरिगृहीत शिर आवर्त दशनख मस्तकेऽज्जालिं कृत्वा
एव =वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-नमोऽस्तु अर्हद्भ्यो यावत् सिद्धिगतिनामधेय

अपूर्वदृष्ट-अद्भुत-पिशाच रूप को (एज मान) नाव की तरफ आता
हुआ (पासइ) देखा-तो (पासित्ता देखकर वह (अभीष्ट) डरा नहीं
(अतत्थे) अग्रस्त नहीं हुआ (अचलिए) धैर्य से चलायमान नहीं हुआ
(असभते) घबराया नहीं (अणाउले) आकूल व्याकुल नहीं बना
(अणुव्विगो) उद्विग्न नहीं हुआ (अभिन्न मुखरागणयणवन्ने) उस
के मुख का राग और नयनों का वर्ण विकृत नहीं बना (अदीणविम
णमाणसे) उस का मन न दीन बना और न विकृत ही बना (पोयव
हणस्स एगदेससि वत्थ तेण भूमिं पमज्जइ) किंतु नौका यान के एक
तरफ वस्त्राञ्चल से भूमि को प्रमार्जित करने लगा- (पमजित्ता)
प्रमार्जित कर के फिर वह (ठाण ठाइ) बैठने के योग्य स्थान का
सशोधन कर उसे जीवादि रहित कर चहा बैठ गया। (ठाइत्ता करयलओ

“ एजमान ” पोताना वडाणु तरइ आवतु “ पासइ ” जेथु त्थारे “ पासित्ता ”
जेधने ते “ अभीष्ट ” लय पाभ्यो नडि, “ अतत्थे अग्रस्त थयो नडी, “ अचलिए ”
धैर्यथी विचालित थयो नडि, “ असभते ” गलरायो नडि, “ अणाउले व्याकुल
थयो नडि, (अणुव्विगो) उद्विग्न थयो नडि, (अभिन्नमुखरागणयणवन्ने)
तेना मोनो रगअने आभोना वणुंनभा जराये विकृत थयो नडि (अदीणविम
णमाणसे) तेनु मन दीन अन्थु नडि तेमज्ज विकृत थयु नडि
(पोयवहणस्स एगदेससि वत्थतेण भूमिं पमज्जइ) ते वडाणुना जेक तरइनी
भूमिने वस्त्रना छेडाथी प्रमार्जित करवा लाभ्यो (पमजित्ता) प्रमार्जित
करीने ते (ठाणठाइ) जेसवा योग्य स्थानतु सशोधन करीने स्थानने एव
वजेदथी रहित जनावीने त्या जेभीगयो (ठाइत्ता करयलओ एव वयासो)

=मिथ्यात्यागनिवर्तनम्, प्रत्याख्यान=पर्वदिनेषु हरितकायादि त्याज्यानामवश्य
परित्यागः, पोषधोपवासः=पोष=पुष्टिधर्मस्य वृद्धिं धत्त इति पोषव =चतुर्दश्यष्टम्य-
मावास्यापूर्णिमादिपूर्वदिनानुष्ठेयो व्रतविशेषः, एतेषा द्वन्द्वे तान् चालयितुं वा
करणयोगरूपेण परिवर्तयितुम्, एव क्षोभयितुं वा एतान् एव परिपालयामि,
अथवा परित्यजामीति क्षोभ कर्तुं, खण्डयितुं देशतो भङ्क्तु भङ्क्तु सर्वतो
वा उज्झितुं देशविरतेस्त्यागेन, वा परित्यक्तु सम्यक्त्वस्यापि त्यागात् वा, तद् यदि
खलु त्वं शीलव्रत० यावत् न परित्यजसि तदा तवाहमेतत् पीतवहन नौकायान
द्वाभ्यामङ्गुलीभ्या तर्जनीमध्यमाभ्या गृह्णामि, गृहीत्वा सप्ताष्टतालप्रमाणमा-
त्रान् गगनभागान् यावत्, ऊर्ध्वं विहायसि=गगने 'उन्विहामि' उद्विष्यामि=
प्रापयामि, 'उन्विहिता' उद्विष्य=ऊर्ध्वमाकाशे नीत्वा, 'अतो जलसि,' अन्त-

को, चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा आदि पर्वदिनों से अनुष्ठेय
व्रत विशेष रूप पोषध को अन्यथा करण योग रूप से परिवर्तित करने
की तुम इन्हें इस तरह से पालो अथवा इन का परित्याग कर दो इस
रूपसे उन्हें क्षुभित करने की उन्हें एक देश अथवा सर्वदेश से खंडित
करने की भग करने की देश विरति के छुड़वाने की अथवा सम्यक्त्व
के परित्याग से उन के त्याग करवाने की मुझ में शक्ति नहीं है । अतः
(जइणं तुम सीलव्वय जाव ण परिच्चयसि तो ते अह पोयवहण दोहिं
अगुलियाहि गेण्हामि) तुम इन शीलव्रत आदि को को स्वयं छोड़ दो-
यदि नहीं छोड़ोगे तो मैं तुम्हारी इस नौका को दो अगुलियों से-तर्जनी
और मध्यमा से-पकड़ लूँगा (गिण्हित्ता सत्ताट्ट तालप्पमाणमेत्ताइ उड्डु

अभास, पूनम वगेरे, पर्वना द्विमेमा अनुष्ठेय व्रतविशेष इय पोषधने,
अन्यथा करणयोग इयथी परिवर्तित करवानी, तमे आ वतो आ रीते आत्यरे
के आने परित्याग उरे आ प्रमाणे तेमने क्षुभित करवानी, तेमने एकदेश
अथवा सर्वदेशथी खंडित करवानी-लग उरवानी-देशविरतिना त्याग अथवा
सम्यक्त्वना परित्यागवी तेमने परित्यक्त करावडाववानी भागमा तागत नथी अथी

(जइणं तुम सीलव्वय जाव ण परिच्चयसि तो ते अह पोयवहण दोहिं
अगुलियाहि गेण्हामि)

तमे चोतानी भेजे आ शीलव्रत वगेरे ने त्याग उरे ने तमे आ
प्रमाणे करशे नडि तो हु तमारा वडावुने जे आगणीअथी अट्टे के तर्जनी
अने मध्यमा आगणीअथी-पकडी पाडीश

(गिण्हित्ता सत्ताट्टताल प्रमाण मेत्ताइ उड्डु वेहास उन्विहामि-उन्विहितां अतो

—यत् केनापि न प्रार्थित मरण, तत् प्रार्थित येन, स अपार्थितप्रार्थित । यद्वा-
हे तत्सम्बोधनम् हे मरणपार्यक !—अप्रस्थित प्रस्थित । अप्रस्थितः येन प्रस्थित इव
मुमूर्षुरित्यर्थस्तस्य सम्बोधनम्, हे मरणवाञ्छक ! यावत् इह यावच्छब्देन
' दुरतपतललक्षणा, हीनपुण्यचातुर्दशिया सिरिद्धिरिधीकिति ' इत्यन्तस्य सग्रहः ।
दुरन्तमान्तलक्षण ! दुरन्त विपाककटु प्रान्तम् अरसान लक्षण स्वभावो यस्य स
तथा, तस्यामन्त्रण, हीनपुण्य चातुर्दशिक । हीना क्षीणा पुण्या=चन्द्रकला शुभकार
कत्वात् यस्या सा हीनपुण्या=कृष्णपक्षीयेत्यर्थः, सा चामौ चतुर्दशी च हीनपुण्य
चतुर्दशी, तस्या जातः, तत्सम्बोधनम् हे भाग्यहीन इत्यर्थः । श्रीहीधी कीर्तिपरि
वर्जित । हे दरिद्र । हे निर्लज्ज । हे बुद्धिहीन ! हे कुलकलङ्कित ! श्रीः=लक्ष्मीः,
हीः=लज्जा, धी=बुद्धिः, कीर्तिः=यशः, ताभिः नो खलु कल्पते तवशीलव्रतगुण-
विरमणप्रत्याख्यानपौषधोपवासान्-तत्र शीलानि=सामायिकदेवावकाशिकपौषध-
तिथिसविभागाख्यानि, व्रतानि=पञ्चाणुव्रतानि, गुणाः=त्रीणिगुणव्रतानि, विरमण

(उवागच्छित्ता अरहन्नग एव वयासी) आकर उस ने अरहन्नक
से इस तरह कहा (ह भो अरहन्नगा अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिया)
हे अरहन्नक ! हे अप्रार्थित प्रार्थित । मरण की इच्छा करने वाला ।
यावत् शब्द से “ हे दुरन्त प्रान्त लक्षण ! हे हीन पुण्य चातुर्दशिक !
हे श्रीहीधी कीर्ति परिवर्जित ! हे कुल कलङ्कित ! (जो खलु कण्डू,
तव सीलव्ययगुण वेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइ चालित्तए वा
एव खोभेत्तए वा खडित्तए वा भजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइ
त्तएवा) मुझे तुम्हारे द्वारा पालित शीलो को व्रतो को गुणव्रतों को
मिथ्यात्व की विनिवृत्ति को पर्व दिनों में हरित काय आदि के परित्याग

“ उवागच्छित्ता अरहन्नग एव वयासी ” आवीने तेले अरहन्नकने आ प्रमाणे
कथ्यु—“ ह भो अरहन्नगा अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिया ” हे अरहन्नक !
हे अप्रार्थित प्रार्थित ! मृत्युने लेटवानी इच्छा राखनार ! ‘ यावत् ’ शब्दार्थी
हे दुरतप्रात लक्षण ! हे हीनपुण्य चातुर्दशिक ! हे श्रीहीधी कीर्ति परिवर्जित !
हे कुलकलङ्कित !

(जो खलु कण्डू, तव सीलव्ययगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइ चालित्तए
वा एव खोभेत्तएवा खडित्तए वा भजित्तएवा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तएवा)

तमारा वडे आचरित शीलाने, व्रताने, गुणव्रताने, मिथ्यात्वनी विनि
वृत्तिने, पर्वना हिवसोभा हरिकाय वगेरेना परित्यागने, औंश, आइम,

વચનાત્ 'ચાલિત્તણ' ચાલયિતુમ્=અન્યથાભાવ કારયિતુ વા, 'સ્વોમિત્તણ' સ્વોમયિતુ=સશયોત્પાદનેન લોભ કર્તુવા, તથા—'વિપરિણામિત્તણ' વિપરણમયિતુ =વિપરીતાધ્યવસાયોત્પાદનેનાપ્યન્યથાકર્તુ વા, કેનાપિ દેવાદિના શ્રાવકધર્માદ્ વિચાલયિતુ નાહ ગમ્ય ડતિ સત્તિસાર્થઃ । તત્ સ્વલુ યા=યાદૃશી શ્રદ્ધા વર્તેતે તત્— તથા કુરુ ત્વ યત્ કર્તુમિચ્છસિ તત્ કુરુષ્વેત્યર્થઃ 'ઇતિ કદ્દુ' ઇતિ કૃત્વા= ઇતિ સ્વાત્મન્યુત્તવા, અભીતઃ યાવદ્—અત્ર યાવન્નહ્વદેન 'અતત્યે, અચલિણ, અસંભતે અણાઉલે, અણુન્વિગ્ગે, હત્યેપા પદાના સગ્રહ', એતાન્યસ્મિન્નેવમૂત્રે વ્યાખ્યાતાનિ,

ણાઓ ચાલિત્તણ વા સ્વોમિત્તણ વા વિપરિણામિત્તણ વા તુમ ણ જા સદ્ધા ત કરહિ ત્તિ કદ્દુ અમીણ જાવ અમિન્નમુહરાગણયણવન્ને અદીણ વિમગમાણસે નિચ્ચલે નિપ્પદે તુસિણીણ, ધમ્મજ્ઞાણોવગણ વિહરહ) હે દેવાનુપ્રિય દેવ ! મેં અરહન્નક નામકા શ્રમણોપાસક શ્રાવક હું ।

જીવ અજીવ આદિ તત્ત્વોં કે સ્વરૂપ કો જાનને વાલા હું । કિસી મી દેવ મેં એસી શક્તિ નહીં હૈ જો મુજે હસ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન સે વિચલિત કર સકે ઉસ મેં અન્યથા ભાવ રૂપ સે પરિણમાસકે ક્ષુભિત કર સકે—સશયોત્પાદન સે મુજે ઉસ મેં સદિગ્ધ બના સકે તથા વિપરિણામી બના સકે—વિપરીત અધ્યવસાય કે ઉત્પાદન સે ઉસ મેં મુજે વિપરીત બુદ્ધિ વાલા કર સકે, તાત્પર્ય હસ કા યહી હૈ કિ કોહ મી દેવ એસા નહીં હૈ કિ જિસ કે દ્વારા મેં શ્રાવક ધર્મ સે વિચલિત કિયા જા સકૂ ।

હસલિયે હે દેવ ! તુમ્હારી જૈસી શ્રદ્ધા હો વૈસા તુમ કરો । હસ

સ્વોમિત્તણવા વિપરિણામિત્તણવા તુમણ જા સદ્ધા ત કરેહિ ત્તિ કદ્દુ અમીણ જાવ અમિન્નમુહરાગણયણવન્ને અદીણવિમગમાણસે નિચ્ચલે નિપ્પદે તુસિણીણ ધમ્મજ્ઞાણોવગણ વિહરહ)

હે દેવાનુપ્રિયદેવ ! હું અરહન્નક નામે શ્રમણોપાસક શ્રાવક છું

જીવ અજીવ વગેરેના તત્ત્વોના સ્વરૂપને જાણનાર છું । કોઈપણ દેવમા તાકાતનથી કે જે મને પોતાના નિર્ગુણપ્રવચનથી વિચિલિત કરી શકે, તેમા અન્યથા ભાવ રૂપથી પરિણમાવી શકે, ક્ષુભિતકરી શકે, સશય ઉત્પન્ન કરીને મને તેમા શંકાશીલ બનાવી શકે અને વિપરિણામી બનાવી શકે, વિપરીત અધ્યવસાયના ઉત્પાદનથી નિર્ગુણ પ્રવચન પ્રત્યે મને વિપરીત બુદ્ધિવાળો કરી શકે મતલબ એ છે કે કોઈપણ દેવમા આટલી તાકત નથી કે તે મને પોતાના શ્રાવક ધર્મથી ડગાવી શકે

એથી દેવ ! તમારી જેવી શ્રદ્ધા હોય તેમ કરો મનમા દેવને સંબોધીને

जले-जलमध्ये, ' णिवोलेमि ' निप्रोडयामि=निमज्जयामि, येन त्व ' अट्टदुहट-
वसट्टे ' आर्तदुर्घटवशात्=आर्तम्-आर्तध्यानम् दुर्घट=द्विंसादिदुर्घटनायुक्तत्वाद्
रौद्रध्यानार्त्त, तयोर्वशेन प्रतः-पीडितः, अतएव-'असमाहिपत्ते' असमाधिमाप्तः,
अकाले चैव=मरणकालात्पूर्वमेव जीरीतात् 'ववरोविज्जसि' व्यपरोपयिष्यसे-व्यप-
गतोभविष्यसि मरिष्यसीत्यर्थः । ततः पिशाचवचनश्रवणानन्तर सोऽरहन्नकः श्र-
मणोपासकः त देव पिशाचरूप मनसा चैव एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=पि-
शाचरूप देव स्वमनसि सम्बोध्य स्वात्मन्येव वक्ष्यमाणप्रकारेणोक्तशानित्यर्थः, हे
देवानुमिय । हे देव ! अह खलु अरहन्नको नाम श्रमणोपासकोऽभिगतजीवाजीवः
=जीवाजीवतत्त्वज्ञः, नो खलु अह शक्य केनापि देवेन वा यावत् नैर्ग्रन्व्यात् प्र

वेहास उव्विहामि-उव्विहिता अतो जलसि णिवोलेमि) और पकड़
कर सात आठ ताल प्रमाण आकाश भाग तक उसे ऊपर पानी में
डुबो दूंगा । (जेण तुम अट्टदुहटवसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चैव
जीवियाओ ववरोविज्जसि) जिससे तुम आर्त और दुर्घट-रौद्र-ध्यान
के वश से पीडित होते हुए असमाधि को प्राप्त हो जाओगे और मरण
काल से पहिले ही जीवन से रहित हो जाओगे ।

(तएणं से अरहन्नए समणो वासए त देव मणसा चैव एव वया-
सी) इस तरह उस पिशाच रूप धारी देव के वचन सुनने के बाद उस
श्रमणोपासक अरहन्नक ने उस देव से अपने मन ही मन ऐसा कहा-
(अह ण देवाणुप्पिया ! अरहन्नए णाम समणोवासए अहिगयजी-
वा जीवे नो खलु अह सक्के केणह देवेण वा जाव निग्गथाओ पावय-

जलसि णिवोलेमि)

अने पाडीने सात आठ ताल प्रमाण तेने उपर आकाशमा लई जईश

अने त्याथी पाणीमा डुबाडी भूडीश

(जे ण तुम अट्टदुहटवसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि)

ऐथी तमे आर्त्त अने दुर्घट-रौद्र-ध्यानथी पीडित थता असमाधिने

भेजवशे अने मृत्युकाण ना पडेला जे जिवन वगरना थई जशे

(तएण से अरहन्नए समणोवासए त देव मणसा चैव एव वयासी)

आरीते पिशाच रूपवाणा देवनी वात साबणीने श्रमणोपासक अरहन्नके

देवने पोताना मनमा जे आभमाणे कछु

(अहण देवाणुप्पिया ! अरहन्नए णाम समणोवासए अहिगयजीवाजीवे

नो खलु अह सक्के केणइ देवेण वा जाव निग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा

મૂલમ્-તણ્ણં સે દિઠ્ઠવે પિસાયરુવે અરહન્નગ સમણોવાસગં
દોચ્છંપિ તચ્છપિ એવં વયાસી-હં ભો । અરહન્નગાં અદીણ
વિમણમાણસે નિચ્ચલે નિપ્પદે તુસિણીણ ધમ્મજ્ઞાણોવગણ
વિહરહ, તણ્ણં સે દિઠ્ઠવે પિસાયરુવે અરહન્નગં ધમ્મજ્ઞાણો-
વગયં પાસહ, પાસિત્તા વલિયતરાગ આસુરુત્તે ત પોયવહણ દોહિ

દૃઢ બના રહતા હૈ તો હસ કા પરિણામ ઉસે વિપાકકાલ મે કટુ હી
ભોગના પડેગા-ઉસે દુરન્ત પ્રાન્ત લક્ષણ હમ સવોધન પદ સે વોધિત
કિયા હૈ । કૃષ્ણ પક્ષ કી ચતુર્દશી મેં ચન્દ્રકલા ક્ષીણ રહતી હૈ-હસલિયે
શુભ કારક ચન્દ્રકલા સે વિહીન હોને કે કારણ વહ ચતુર્દશી હીન પુણ્ય
માની જાતી હૈ દેવ કહતા હૈ કિ માલૂમ હોતા હૈ તેરા જન્મ હુઆ હૈ
અતઃ તૂ માગ્ય હીન હૈ । હમલિયે અરહન્નક શ્રાવક કો ઉસ ને હીન
પુણ્ય ચાતુર્દશિક હસ સવોધન પદ સે વોધિત કિયા હૈ । શ્રી હી આદિ
પ્રત્યેક મેં વર્જિત પદ કે સાથ સવોધન પદ લગાકર દેવ ને અરહન્નક
કો સવોધિત કિયા હૈ-જૈસે હે શ્રી વર્જિત હે હી વર્જિત આદિ । સામા-
યિક, દેશાવકાશિક, પૌષધ, અતિથિ સવિભાગ યે શીલ હૈ । અણુવ્રત
૫ હૈ । ગુણવ્રત ૩ હૈ । યહ સઽ શ્રાવક કા વર્મ હૈ । હસ તરહ ૪ શિક્ષા-
વ્રત, ૫ અણુવ્રત ઓર ૩ ગુણવ્રત યે ૧૨ પ્રકાર શ્રાવક ધર્મ કે યહાં
પ્રકટ કિયે ગયે હૈ । સૂત્ર “ ૨૨ ”

કાળમા પકિણામ કટુ જ ભોગવવુ પડશે આ બાણીને જ દેવે તેને “ દુર ત
પ્રાત લક્ષણુ ” આ પદથી સંબોધ્યો છે કૃષ્ણ પક્ષની ચૌદશના દિવસે ચંદ્રકલા
ક્ષીણરૂપે રહે છે એથી તે અમગણકારી ગણાય છે તે મગણકારી
નહીં હોવાથી તે ચૌદશ હીન પુણ્ય ગણાય છે દેવ તેને કહે છે કે તારો
જન્મ આવા સમયે જ થયો છે એથી તું અભાગિયો છે અરહન્નક શ્રાવકને
દેવે એટલા માટે જ હીનપુણ્યચાતુર્દશિક પદવડે સંબોધિત કર્યો છે શ્રી, હી
વગેરે દરેક પદની સાથે વર્જિત વિશેષણ લગાડીને જ દેવે અરહન્નકને સંબો-
ધિત કર્યો છે જેમ કે-“ હે શ્રીવર્જિત । હેહી વર્જિત । વગેરે સામાયિક,
દેશાવકશિક, પૌષધ, અતિથિસવિભાગ આ બધા શીલ છે અણુવ્રત પાત્ર છે
ગુણવ્રત ત્રણ છે આ બધો શ્રાવકનો ધર્મ છે આરીતે ચાર શિક્ષવ્રત, પાત્ર
અણુવ્રત, અને ત્રણ ગુણવ્રત આમ બાર પ્રકારનો શ્રાવક ધર્મ અહીં અર્થ
વામા આવ્યો છે ॥ સૂત્ર “ ૨૨ ” ॥

અભિન્નસુખરાગનયનવર્ણઃ=ભયાભાગાદપ્રતિઘ્તમુગ્ધનેત્રપતિભ, તથા-અશીનવિમનો
માનસ=ભયસશયરહિતત્યાત્ વિશાદવૈમનસ્યરહિતચિત્તઃ, અતપ્ત્વ-નિશ્ચલ'=સુધીરઃ
ધર્મે દૃઢતર इत्यर्थः, નિસ્પન્દઃ=કિંચિદપિત્તમ્પરહિતઃ, તૂળીક કૃતગાઠ્યયમઃ સ
મૌન इत्यर्थ ધર્મધ્યાનોપગતઃ ધર્મ યાનમેત્ર શરણ કૃત્ય તત્પરાયણઃ વિહરતિ=
આસ્તેસ્મ ॥મુ.૦૨૨॥

પ્રકાર દેવ કો મન મેં સયોધન કરકે ઉસ અરહન્તક શ્રમણોપાસક ને
મન હી મન કહા-ઔર અમીત, અત્રસ્ત, અચલિત, અમભ્રાન્ત, અના
કુલ, અનુદ્વિગ્ન, ચિત્ત ઘના રહા । નિર્ભય હોને કે કારણ ઉસ કે મુલ
ઔર નેત્ર કી કાતિ મે અન્તર નહી આયા ।

ભય ઔર સશય સે રહિત હોને કી વજહ સે ઉસ કા ચિત્ત વિષાદ
એવ વૈમનસ્ય સે રહિત રહા । હસીલિયે અપને ધર્મ મેં દૃઢ ઘના હુઆ વહ
જરા મી ઉસ સે વિચલિત નહી હુઆ । કિન્તુ ચુપચાપ મૌન ધારણ કર
એક ધર્મ ધ્યાન કો હી હસ સ્થિતિ મેં શરણ માન ઉસી મે વહ તત્પર
ઘના રહા । અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત આદિ જો સયોધન પદ સૂત્ર મેં આયે હૈં
ઉન કા અર્થ હસ પ્રકાર હૈ-જિસે કોહ મી નહીં ચાહતા હૈ એસા અપ્રા
ર્થિત મરણ હોતા હૈ ઉસે મી અરહન્તક શ્રાવક ચાહ રહા હૈ ।

હસલિયે દેવ ને ઉસે અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત હસ સયોધન સે સયોધિત
કિયા હૈ । દેવ ને યહ સમજ્ઞ કર કી યહ અરહન્તક અપને ધર્મ પર યદિ

। અરહન્તક શ્રમણોપાસકે પાતાના મનમા જ આમ કહ્યુ અને તે અમીત
અત્રસ્ત, અચલિત, અમભ્રાત, અનાકુળ, અનુદ્વિગ્ન, ચિત્તથી શાતથઈને એસી
રહ્યો તે નિર્ભય હતો તેથી તેના મો અને આખોની કાતિમા જરાયે પરિવર્તન
થયુ નહિ

ભય તેમજ સશય વગર હોવાથી તેનુ ચિત્ત વિષા અને વૈમનસ્ય
રહિત હતુ એથી જ તે પોતાના ધર્મ પ્રત્યે દૃઢભાવ રાખતો તે જરાએ
વિચલિત થયો નહિ, પણ ચુપચાપ મૌન ધારણ કરીને ફક્ત ધર્મધ્યાનને જ
આ સ્થિતિમા શરણ માનીને તેમા તે તટલીન થઈ ગયો. અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત
વગેરે જે સયોધન પદો સૂત્રમા આગ્યા છે તેનો અથ આગ્રમાણુ છે-કે જે
મરણ ને ભેટવાનુ કોઈપણુ ઇચ્છે નહિ તે મરણને અરહન્તક શ્રાવક ઇચ્છી રહ્યો
હતો એથી જ દેવે તેને અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત આ બીજાના સયોધનથી સયો
ધિત કર્યો છે અરહન્તક જે પોતાનો ધર્મને વળગી રહેશે તો તેનો વિષાક

ददधस्मे नो ददधस्मे ? सीलव्ययगुणे किं चालेति जाव परिच्चयइ
णो परिच्चयइ त्तिकट्टु, एव सपेहेमि, सपेहिता ओहि पउजामि,
पउंजित्ता देवाणुप्पिय ओहिणा आभोएमि, आभोइत्ता उत्तरपुर-
रिथमं० उत्तरविउठ्वियं० ताए उक्किट्ठाए गईए जेणेव समुदे
जेणेव देवाणुप्पिया । तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवा-
णुप्पियस्स उवसग्ग करेमि, नो चेव णं देवाणुप्पिया, भीया
वा०, त जण्णं सक्के देविदे देवराया वदइ सच्चेणं एसमट्ठे त
दिट्ठेणं देवाणुप्पियाण इड्ढी जुई जसे भाव परक्कमे लद्धे पत्ते
अभिसमन्नागए, त खामेमि णं देवाणुप्पिया । खमतु णं
देवाणुप्पिया । णाइ भुज्जो२ एवं करणयाए त्तिकट्टु पजलिउडे
पायवडिए एयमट्ठ विणएणं भुज्जो२ खामेइ, खामित्ता अर-
हन्नयस्स दुवे कुंडलजुयले दलयति, दलयित्ता जामेव दिसि
पाउठ्ठमूए तामेव दिसि-पडिगए ॥ सू० २३ ॥ -

टीका ।— ‘तएण से दिव्वे’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स दिव्यः
पिशाचरूपः=पिशाचरूपधारी, अरहन्नकम्० अरहन्नकनामक श्रमणोपासक=श्रावकं
‘दोच्च पि’ द्वितीयवारमपि, तच्चपि=तृतीयवारमपि, एवम्=उक्तप्रकरणेण अवा
दीत्-हमो । अरहन्नक० । अप्रार्थित प्रार्थित ! नो खलु कल्पते-तव शीलव्रत०

‘तएण से दिव्वे पिसायरूवे’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से दिव्वे पिसाय रूवे) उस पिशाचरूप
धारी देव ने (अरहन्नग समणोपासग) उस श्रमणोपासक अरहन्नक
से (दोच्चपि तच्च पि) दुबारा तिवारा भी (एव वयासी) ऐसा ही
कहा की हे अरहन्नक० । अप्रार्थित प्रार्थित । मुझ में ऐसी शक्ति नहीं

‘तएण से दिव्वे पिसायरूवे’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थायणाइ “से दिव्वे पिसायरूवे” ते पिशाचरूप धारी
देवे “ अरहन्नग समणोपासग ” श्रमणोपासक अरहन्नकधी “ दोच्चपि तच्च पि ”
भीलु अने त्रीलु वप्पत पणु “ एव वयासी ” आ प्रभाणु ७ कहु—“ हे
अरहन्नक० !, अप्रार्थित प्रार्थित तभारा शील विगेरे श्रावक धर्मने णदलवानी के

अगुलियाहि गिण्हइ, गिण्हित्ता सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नगं
एव वयासी-हं भो । अरहन्नगा । अप्पत्थियपत्थिया णो
खलु कप्पइ, तव सीलव्वय तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए विह-
रइ । तएणं से पिसायरूवे अरहन्नगं जाहे नो सचाएइ निर्गं-
थाओ० चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे
सते जाव निव्विन्ने त पोचवहणं सणिय२ उवरिं जलस्स
ठवेइ, ठावित्ता त दिव्व पिसायरूव पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता
दिव्वं देवरूवं विउव्वइ, विउट्ठित्ता अतल्लिक्खपडिवन्ने सखिं
खिणियाइ जाव परिहिए अरहन्नग समणोवासयं एव वयासी
-हं भो । अरहन्नगा । धन्नोऽसि णं तुम देवाणुप्पिया । जाव
जीवियफले जस्स णं तव निग्गथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती
लुद्धा पत्ता अभिसमन्नगया । एव खलु देवाणुप्पिया । सक्के
देविदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सभाए
सुहम्माए बहूणं देवाणां० मज्झगते सहया सद्देणं आइक्खइ४,
एव खलु जबूढीवे२ भारहे वासे चपाए नयरीए अर-
हन्नए समणोवासए अहिगयजीवाजीवे नो खलु सक्के केणइ
देवेण वा दाणवेण वा णिग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा
जाव विपरिणामेत्तए वा । तएण अह देवाणुप्पिया । सक्कस्स०
णो एयमट्ठु सद्वहामि०, तएण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव
समुप्पज्जेत्था, गच्छामि ण अरहन्नयस्स अतिये पाउव्वभवामि,
जाणामि ताव अह अरहन्नग कि पिग्गधम्मे ? नो पियधम्मे

मात्रान् यावत् ऊर्ध्वं गगने नीत्वाऽरहन्नके श्रावकमेवम्=उक्तप्रकारेण अवादीत्-
हभो ! अरहन्नक ! अप्रार्थित प्रार्थित ! नो खलु कल्पते तव शीलव्रतं तथैव=सो
ऽरहन्नकः पूर्ववदेव यावत् धर्मध्यानोपगतो विहरति=आस्ते स्म० ।

किसी भय के मौन सहित धर्म यान में ही मग्न देखा तो देख कर वह
उस पर क्रोध के आवेश से अत्यंत लाल पीला बन गया । और उस
पोतयान को उस ने अपनी दोनों अंगुलियों-मध्यमा एव तर्जनी अंगु-
लियों से-पकड़ लिया । (गिण्हत्ता सत्तट्ठत्ताइ जाव अरहन्नग एव
वयासी) पकड़ कर वह उसे ऊपर आकाश न सात आठ ताल प्रमाण
आकाश भाग तक ले गया-ले जाकर फिर उस में अरहन्न श्रावक को
इस प्रकार कहा - (ह भो अरहन्नगा । अपत्थियपत्थिया ! णो खलु
कप्पइ तव शीलव्वय तहेव धम्मज्झाणोवगए विहरइ) हे अरहन्नक !
हे अप्रार्थित प्रार्थित ! मुझे तुम्हारे इन शीलव्रत आदिकों को विचलित
आदि करना उचित नहीं है अतः तुम ही खुशी से उन्हें छोड़ दो-नहीं
तो मैं तुम्हारी इस नौका को यहा से पटक कर पानी में डुबो दूंगा-
जिस से तुम असमाधि प्राप्त होकर आर्तध्यानादि के वशवर्त्ति बन मर-
णकाल से पहिले मृत्युके वश हो जाओगे । देवके इस कह ने पर अर-
हन्नक श्रावकने कुछ भी ध्यान नहीं दिया प्रत्युत उसे मन ही मन

करीने धर्मध्यानमा न तट्ठीन जेथो त्थारे ते तेना उपर-क्रोधमा लराध
लाल पीणो थध गयो, अने तेणो वडाणुने पोतानी जे आगणीओ-मध्यमा
अने तर्जनी-वडे पडडी लीधु “ गिण्हत्ता सत्तट्ठत्ताइ जाव अरहन्नग एव वयासी ”
पकडीने ते वडाणुने सात आठ ताल प्रमाण जेटलु आकाशमा लधगये अने
लध जधने तेणो अरहन्नक श्रावकने आ प्रमाणे कधु

(ह भो अरहन्नगा ! अपत्थियपत्थिया ! णो खलु कप्पइ तवशीलव्वय
तहेव धम्मज्झाणोवगए विहरइ)

हे अरहन्नक ! हे अप्रार्थित प्रार्थित ! हे तमने पोताना शीलव्रत वगेरेथी
विचलित कइ ते थोअ न लेणाय अथी तमे शल्लभुशीथी पोतानी जेणे न
तेमने त्यजे नडितो तमारा वडाणुने हे अडिथी पटडीने पाणीमा डूपाडी
कइश जेथी तमे असमाधिने भेणवीने आर्तध्यान वगेरेना वशवती थशो
अने छेवटे मृत्युना समय पडेला न मृत्युने लेइशो देवनी आ वात पर
अरहन्नक श्रावके जराओ ध्यान आभ्यु नडि अने तेणो पोताना मनमा न

इत्यादि-येन त्वं मार्तदुर्घटवशात् अरमाधिप्राप्तः अवले चैव जीविताद् व्यपरो
 षयिष्यसे इत्यन्तं पूर्वोक्तमेववाक्यं द्वितीयतृतीयवारमप्युक्तवानित्यर्थः । तथापि
 सोऽरहन्नकः श्रावकः अदीन विमनो मानसः=विषादवैमनस्य रहितचित्तः,
 निश्चलः=धीरः, निस्पन्दः=भयाभावाद् धम्मरहितः=तण्णीकः=भयरहिततत्त्वेन
 संभयवार्ज्यापाररहितः यद्वा-कृतवाक् समयः, धर्मध्यानोपगतः, धर्मध्यानशरण-
 मुपागतः विहरति-आस्तेस्म० ।

ततस्तदन्तरं खलु स दिव्यः पिशाचरूपोऽरहन्नकः धर्मध्यानोगतं पश्यति,
 दृष्ट्वा बलिततरकम्=अत्यन्तम्० आशुरुप्तं=स्रष्टि क्रोधाविष्टस्तत् पोतवहन=नौका
 यनं, द्वाभ्यामङ्गलीभ्याम्=तज्जनीमध्यमाभ्यां गृह्णाति । गृहीत्वा सप्ताष्टतालप्रमाणं

हैं कि मैं तुम्हारे इन शीलदिकों का परिवर्तन आदि कर सकूँ अतः
 तुम स्वयं ही इन का परित्याग कर दो-तो ठीक है-नहीं तो मैं तुम्हारी
 नौका को पानी में डुबा दूँगा ।

इससे तुम, आर्त्त रौद्रध्यान के वशवर्ती होकर असमाधि को
 प्राप्त हो जाओगे-तथा मरण काल से पहिले ही जीवन से रहित हो
 जाओगे । इस तरह जैसा उस ने प्रथम वार कहा-द्वितीय और तृतीय
 वार भी अरहन्नक श्रावक को वैसा ही कहा-(तण्ण से दिव्वे पिसाय
 रुव्वे अरहन्नग धम्मज्झाणोवगय पासइ पसित्ता बलियतराग आसु-
 रुत्ते त पोयवहण दीहि अंगुलियाहिं गिण्हइ) इस के बाद जब उस
 पिशाचरूप धारी देव ने अपनी बात पर ध्यान नहीं देते हुए अरहन्नक
 श्रावक को विषाद वैमनस्य से रहित चित्त होकर निश्चल रूप से विना

तेमा केअ पणु जतने केरुअर उरवानी मारामा ताकात नथी, जे तमे पोतानी भेजेअ
 जेमने त्याग करे तो ठीक ! नहीं तो तमारा वडाणुने हु पाणीमा डुणाडीदधिश
 तेथी तमे आर्त्त रौद्र ध्यानना वशवतीं थधने असमाधिने प्राप्तउरशे।
 तेमअ मृत्युना समय पडेला अ मृत्युने लेटशे। आ प्रमाणे जेम तेले पडेवी
 वणत कहु डरु ते प्रमाणे अ भीणु अने त्रीणु वणत पणु अरहन्नक
 श्रावकने देवे कहु

(तण्ण से दिव्वे पिसायरुव्वे अरहन्नग धम्मज्झाणोवगय पासइ पासित्ता
 बलियतराग आसुरुत्ते त पोयवहण दीहि अंगुलियाहिं गिण्हइ)

तयार आइ पिशाचरूप धारी देवे अरहन्नक श्रावकने विषाद अने वैम-
 नस्य रहित चित्तवाणे थधने निश्चल रूपथी, लय वगर थधने, भौन धारणु

માત્રાન્ યાવત્ કર્ત્વં ગગને નીત્વાડરહન્નકે શ્રાવકમેવમ્=ઉક્તપ્રકારેણ અવાદીત્-
હમો ! અરહન્નક ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! નો સ્વલ્પ કલ્પતે ત્વ શીલવ્રતં તથૈવ=સો
ડરહન્નકઃ પૂર્વવદેવ યાવત્ ધર્મધ્યાનોપગતો વિહરતિ=આસ્તે સ્મ૦ ।

કિસી ભય કે મૌન સહિત ધર્મધ્યાન મેં હી મગ્ન દેસ્વા તો દેસ્વ કર વહ
ઉસ પર ક્રોધ કે આવેશ સે અત્યત લાલ પીલા બન ગયા । ઓર ઉસે
પોતયાન કો ઉસ ને અપની દોનો અંગુલિયોં-મધ્યમા એવ તર્જની અંગુ
લિયોં સે-પકડ લિયા । (ગિણિહત્તા સત્તદ્વતલાઈ જાવ અરહન્નગ એવ
વયાસી) પકડ કર વહ ઉસે ડપર આકાશ ન સાત આઠ તાલ પ્રમાણ
આકાશ ભાગ તક છે ગયા-છે જાકર ફિર ઉસ મેં અરહન્ન શ્રાવક કો
હસ પ્રકાર કહા - (હ મો અરહન્નગા ! અપત્થિયપત્થિયા ! ણો સ્વલ્પ
કપ્પઈ તવ સીલવ્વય તહેવ ધમ્મજ્ઞાણોવગણ વિહરઈ) હે અરહન્નક !
હે અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! મુઝે તુમ્હારે હન શીલવ્રત આદિકોં કો વિચલિત
આદિ કરના ઉચિત નહીં હૈં અતઃ તુમ હી સુશી સે ઉન્હે છોડ દો-નહીં
તો મેં તુમ્હારી હસ નૌકા કો યહા સે પટક કર પાની મેં ડુવો દૂર્ગા-
જિસ સે તુમ અસમાધિ પ્રાપ્ત હોકર આર્તધ્યાનાદિ કે વશવર્ત્તિ બન મર-
ણકાલ સે પહિલે મૃત્યુકે વશ હો જાઓગે । દેવકે હસ કહ ને પર અર-
હન્નક શ્રાવકને કુછ મી ધ્યાન નહીં દિયા પ્રત્યુત ઉસે મન હી મન

કરીને ધર્મધ્યાનમા જ તલ્લીન જોયો ત્યારે તે તેના ઉપર-ક્રોધમા લસાઈ
લાલ પીળો થઈ ગયો, અને તેણે વડાણને પોતાની બે આંગળીઓ-મધ્યમા
અને તર્જની-વડે પકડી લીધુ “ ગિણિહત્તા સત્તદ્વતલાઈ જાવ અરહન્નગ એવ વયાસી ’
પકડીને તે વડાણને સાત આઠ તાલ પ્રમાણ જેટલુ આકાશમા લઈ ગયો અને
લઈ જઈને તેણે અરહન્નક શ્રાવકને આ પ્રમાણે કહ્યું

(હ મો અરહન્નગા ! અપત્થિયપત્થિયા ! ણો સ્વલ્પ કપ્પઈ તવસીલવ્વય
તહેવ ધમ્મજ્ઞાણોવગણ વિહરઈ)

હે અરહન્નક ! હે આપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! હું તમને પોતાના શીલવ્રત વગેરેથી
વિચલિત કરૂં તે થોડું ન લેખાય એથી તમે રાજપુશીથી પોતાની મેળે જ
તેમને ત્યજો નહિતો તમારા વડાણને હું અહીંથી પટકીને પાણીમા ડૂબાડી
હથથ જેથી તમે અસમાધિને મેળવીને આર્તધ્યાન વગેરેના વશવર્ત્તિ થશો
અને છેવટે મૃત્યુના સમય પહોંચા જ મૃત્યુને લેઈશો દેવની આ વાત પર
અરહન્નક શ્રાવકે જરાએ ધ્યાન આપ્યું નહિ અને તેણે પોતાના મનમાં જ

તતસ્તદનન્તરં સ્વલુપિશાચરૂપઃ=પિશાચરૂપધારી દેવઃ, અરહન્નક યદા નો
શમ્નોતિ નૈર્ગ્રન્થ્યાત્ પ્રવચનાત્ ચાલયિતુ યા ક્ષોમયિતુ યા વિપરિણમયિતુ યા 'તાહે,
તદા સ પિશાચઃ 'સતે' શ્રાન્તઃ=પરિશ્રમ પ્રાપ્તઃ સ્થગ્નઃ, મનસા સ્વિન્ન ઇત્યર્થઃ,
યાવત્-અત્ર યાવત્ કરણેન-'તતે' પરિતતે ઇત્યનયો સગ્રહઃ । તાન્તઃ-શરીરેણ સ્વેદ
પ્રાપ્તઃ, પરિતાન્તઃ=સર્વથા સ્વિન્નઃ, 'નિઘ્વિન્ને' નિર્ગ્નિઃ=ઉપસર્ગકરણાત્
પ્રતિનિવૃત્ત, તત્ પોતવહન=નોંકાયાન, શનૈઃ શનૈરુપરિજલસ્ય, 'ઠવેઈ' સ્થાપ
યતિઃ 'ઠાવિત્તા' સ્થાપયિત્વા તદ્ દિવ્ય પિશાચરૂપ 'પડિસાહરઈ' પ્રતિસહરતિ

સમોદિત કર " મુજે ઇસ નિગ્રન્થ પ્રવચસે કોઈ બી દેવ વિચલિત નહીં
કર સકતા હૈ " તેસા હી વિચાર-કહા-તયા અડિગ ભાવસે નિર્મય
બન મૌન લિયે હુઈ અપને ધર્મધ્યાનમે હી વહ સ્થિર રહા ।

(તણં સે પિસાયરૂવે અરહન્નગ જાહે નો સચાણડ, નિગ્ગથાઓ
પાવયણાઓ ચાલિત્તણ વા સ્વોમિત્તણ વા વિપરિણા મિત્તણ વા તાહે સતે
જાવ નિઘ્વિન્ને ત પોયવહણ સણિય ઉવરિજલસસ ઠવેઈ) ઇસ તરહ વહ
પિશાચ રૂપ ધારી દેવ જય અરહન્નક શ્રાવક કો નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનઃ સે
ચલાને કે લિયે, ઉસ સે ક્ષુભિત કરને કે લિયે, વિપરિણમિત કરને કે
લિયે સમર્થ નહીં હો સકા તથા શ્રાન્ત ઓર અગ્ન મન સે સ્વિન્ન-હોકર
વહ ઉપસર્ગ કરને રૂપ અપને કૃત્ય સે પ્રતિ નિવૃત્ત હો ગયા । ઓર ધીરે ૨
આકાશ સે ઉતાર ઉસ પોતયાન કો ઉસ ને પાની કે ઉપર રાગ દિયા ।
(ઠાવિત્તા ત દિવ્ય પિસાયરૂવ પડિસાહરઈ)

વિચાર કરીને કહ્યું-“ આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનથી મને કોઈ પણ દેવ હટાવી
શકશે નહિ ” આમ વિચારી ને નિશ્ચિન્ન અને નિર્ભય થઈને તે મૌન પાળતો
તે પોતાના ધર્મધ્યાન માજ તલ્લીન રહ્યો

(તણ સે પિસાયરૂવે અરહન્નગ જાહે નો સચાણડ નિગ્ગથાઓ પાવયણાઓ
ચાલિત્તણ વા સ્વોમિત્તણ વા વિપરિણામિત્તણ વા તાહે સતે જાવ નિઘ્વિન્ને ત પોયવહ
ણ સણિય ઉવરિ જલસસ ઠવેઈ)

આ પ્રમાણે પિશાચ રૂપધારી દેવ જ્યારે અરહન્ન શ્રાવકને નિર્ગ્રન્થ
પ્રવચનથી વિચલિત કરવામા, તેનાથી ક્ષુભિત કરવામા, વિપરિણમિત કરવામા
શક્તિમાન થઈ શક્યો નહી ત્યારે શ્રાન્ત અને સ્થગ્નમનથી સ્વિન્ન થઈને ઉપ
સર્ગ કરવા રૂપ પોતાના કમથી પ્રતિનિવૃત્ત થઈ ગયો અને આકાશમાથી
ધીમેધીમે ઉતરીને તેણે વહાણ ને પાણી ઉપર મૂકી-મૂકી (ઠાવિત્તા ત દિવ્ય
પિસાયરૂવ પડિસાહરઈ)

વિલીનયતિ૦ । પ્રતિસહત્ય=પિશાચરૂપમન્તર્હિત કૃત્વા દિવ્ય=પ્રશસ્ત પરમસુદર
 દેવરૂપ વિકુર્વતિ પ્રાદુર્ભાવયતિ । વિકુર્વિત્વા = દિવ્ય દેવરૂપ પ્રાદુર્ભાવ્ય,
 અન્તરિક્ષપ્રતિપન્નઃ=આકાશસ્થિત, 'સર્વિસિળિયાઙ' સર્કિલ્લિણીકાનિ યાવદ્
 પ્રવરવસ્ત્રાણિ પરિહિતઃ, સ દેવોઽરહન્નક શ્રમણોપાસકમેવ=વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ,
 અવાદીત્-હમો ! અહો ! અરહન્નક ! ધન્યોઽસિ સ્વલુ ત્વ, હે દેવાનુપ્રિય ! યાવત્
 ત્વયા જન્મજીવિતફલ લબ્ધ, યસ્ય સ્વલુ ત્વ નિર્ગ્રન્થે પ્રવચને ઇમમેતદ્રૂપા પ્રતિ-
 પત્તિઃ=મમ્યક્શ્રદ્ધા લબ્ધા=ઉપાર્જિતા પ્રાપ્તા=સ્વાયત્તીકૃતા૦, અભિમમન્વાગતા=

રસકર ફિર ઉસને વહ અપના દિવ્ય પિશાચ કા રૂપ સમેટ લિયા-
 અન્તર્હિત કર લિયા- (પહિસાહરિત્તા દિવ્વ દેવરૂવ વિઝવ્વહ, વિઝવ્વિત્તા
 અતલિવ્વપહિવન્ને સર્વિસિળિયાઙ જાવ પરિહિં અરહન્નગ જાવ સમ-
 ણોવાસય એવ વયાસી) અન્તર્હિત કર કે ફિર વાદ મેં વહ અપને
 વાસ્તવિક દિવ્યરૂપ મેં આ ગયા ।

દિવ્યરૂપ મેં આકર કે ઉસને જો ઉસ સમય વસ્ત્રો કો ધારણ કર
 રખા થા-વે ક્ષુદ્ર ઘટિકાઓ સે યુક્ત વહે હી સુન્દર થે । આકાશ મેં રહ
 કર હી ઉસને શ્રમણોપાસક અરહન્નક સે હસ પ્રકાર કહા-(હ મો
 અરિહન્નગા ! ધનો સિ ણ તુમ દેવાણપ્પિયા ! જાવ જીવિયફલે જસ્સણ
 તવ નિગ્ગયે પાવયણે ઇમેયારૂવે પહિવત્તીલદ્ધા પત્તા અભિસમન્નાગયા)
 અહો અરહન્નક ! તુમ ધન્ય હો । હે દેવાનુપ્રિય ! તુમને યાવત્ જન્મ ઔર
 જીવન કા ફલ પ્રાપ્ત કર લિયા હૈ જો હસ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન મેં હસ પ્રકાર

મૂકીને તેણે પોતાનુ દિવ્ય પિશાચરૂપ અ તર્હિત કરી લીધુ

પહિસાહરિત્તા દિવ્વ દેવરૂવ વિઝવ્વહ, વિઝવ્વિત્તા અતલિવ્વપહિવન્ને સર્વિ-
 ણિયાઙ જાવ પરિહિં અરહન્નગ જાવ સમણોવાસય એવ વયાસી)

અન્તર્હિત કરીને તેણે પોતાના સાથા દિવ્ય રૂપને દરી ધારણા કરી લીધુ

દિવ્ય રૂપમા પહેરેલા તેના વસ્ત્રો નાની નાની ધૂધરીઓવાળા ખૂણખ સુદર
 હતા આકાશમાજ સ્થિર રહીને તેણે શ્રમણોપાસક અરહન્નકને આ પ્રમાણે કહ્યું-

(હ મો અરિહન્નગા યન્નોસિ ણ તુમ દેવાણપ્પિયા ! જાવ જીવિયફલે જસ્સ
 ણ તવ નિગ્ગયે પાવયણે ઇમેયારૂવા પહિવત્તીલદ્ધા પત્તા અભિસમન્નાગયા)

હે અરહન્નક તમે ધન્ય છો ! હે દેવાનુપ્રિય ! તમે અ પૂર્ણ પણે જન્મ
 અને જીવનનુ રૂપ મેળવેા લીધુ છે કેમ કે આ નિશ્ચય પ્રવચનમા આ રીતે

સમ્યગાસેવિતા વર્તતે૦ હે દેવાનુપ્રિય ! एवम्=अमुना प्रकारेण खलु शक्रो देवेन्द्र
=परमैश्वर्यशालीदेवानामिन्द्रः, देवराजः = देवानां राजा कान्त्यादिगुणाधिक्येन
विराजमानत्वाद्, सौधर्मे=सौधर्मनामके प्रथमे कल्पे, सौधर्मावतसके विमाने
सुधर्माया सुधर्माद्याया सभाया देवसभाया बहूनां देवाना मज्जगतः=मध्ये स्थितः
महता शब्देन=उच्चै स्वरेण, 'आइक्खई' आख्याति=सामान्यरूपेण ब्रवीति,
भापते=विशेषतः कथयति, प्रज्ञापयति=सामान्यतो बोधयति, प्ररूपयति, विशेषतः
प्रतिबोधयति० । किमित्याह ' एव खलु ' इत्यादिना ।

કો યહ સમ્યક શ્રદ્ધા પ્રાપ્ત કી હૈ ઓર ઉસે અપને આધીન કર લિયા
હૈ । તથો વહ શ્રદ્ધા હસ સમય તક બી તુમ્હારે દ્વારા અચ્છી તરફ
અચલ રૂપ મેં સેવિત હો રહી હૈ । (एव खलु देवाणुप्पिया । सक्के
देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्म वडिंसए विमाणे सभाए) सुह-
म्माए बहूण देवाण मज्झगए महया सद्देण आइक्खई ४) मैंने तुम्हारे
साथ ऐसा क्यों किया इसका कारण यह है कि हे देवानुप्रिय ! एक
दिवस परम ऐश्वर्यशाली देवों के इन्द्र शक्र देवराज ने सौधर्म नाम
के प्रथम कल्प में सौधर्मावतसक विमान में अनेक देवों के बीच में
बैठकर अपनी सुधर्मासभा में उच्चस्वर से पहिले तो सामान्य रूप
से, कहा, बाद में भाषण द्वारा विशेष रूप से कहा । पहिले सामान्य
रूप से समझाया, बाद में विशेषरूप से समझाया । उस मे उन्होंने ने
कहा- (एव खलु जंबूद्वीवे २ भारहे वासे चपाए नयरीए अरहन्नए सम

તમે સમ્યક શ્રદ્ધા મેળવી છે અને તેને સ્વાધીન બનાવ્યું છે અત્યાર સુધી
પણ તમે તે શ્રદ્ધા ને જ સારી રીતે અચળ રૂપે વાળી રહ્યા છે

(एव खलु देवाणुप्पिया । सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मव
डिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए बहूण देवाण मज्झगए महए सद्देण आइक्खई ४)

મે જે કંઈ તમારી સાથે વર્તન કર્યું છે તેની પાછળનું કારણ આ
પ્રમાણે છે કે હે દેવાનુપ્રિય ! એક દિવસે પરમ-એશ્વર્યશાળી દેવાના ઈન્દ્ર
શક્ર દેવરાજે સૌધર્મનામના પહેલા કલ્પમાં સૌધર્માવતસક વિમાનમાં ઘણા
દેવાની વચ્ચે બેસીને પોતાની સુધર્મા સભામાં બેઠા સાહે પહેલા તો સામાન્ય
રૂપે કહ્યું અને ત્યાર બાદ પોતાના ભાષણ વડે વિશેષ રૂપમાં કહ્યું તેઓ એ
પહેલા સામાન્ય અને ત્યાર પછી વિશેષ રૂપમાં સમજાવતા કહ્યું —

(एव खलु जंबूद्वीवे २ भारहे वासे चपाए नयरीए अरहन्नए समजोवासए

एव खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे जम्बूद्वीपनामके द्वीपे भारते द्वेपे=दक्षिणभरतक्षेत्रे चम्पाया नगर्याम् अरहन्नकः श्रमणोपासकोऽभिगतजीवाजीनो यावत्-सम्यक्त्व-मूलदेशविरतिलक्षणे धर्मे दृढचित्तो वर्तते, असौ नो खलु शक्यः केनापि देवेन वा दानवेन वा इदमुपलक्षणम्- विन्नरेण वा, किंपुरुषेण वा महोरगेण वा गन्धर्वेण वा इतिसंयोज्यम्० । तत्र देवो वैमानिको ज्योतिष्को वा दानवो भवनपति, इतरे किन्नरादयो व्यन्तरभेदाः, 'णिग्गथाओ' नैर्ग्रन्थ्यात् प्रवचनात् चालयितुं वा यावत् क्षोभयितुं वा, 'विपरिणामित्तए' विपरिणमयितुं=विपरीताध्यवसायोत्पत्ति-नेनान्यथाभाव जनयितुं वा । जम्बूद्वीपान्तर्गतभरतक्षेत्रे चम्पानगरी निवासी-अरह-न्नक नामकः श्रावको वे नापि देवादिना श्रावकधर्माच्चालयितुं न शक्यत इति भावः ।

જોવાસણ અહિગયજીવાજીવે નો સ્વલુ સવકે કેણહ દેવેણ વા દાણ વેણ વા ણિગ્ગથાઓ પાવયણાઓ ચાલિત્તણ વા જાવ વિપરિણામેત્તણ વા) દેવો-જમ્બૂદ્વીપ નામ કે દ્વીપ મેં દક્ષિણ ભરત ક્ષેત્ર મેં, ચપા નામ કી નગરી મેં જીવ અજીવ આદિ તત્ત્વોં કા જ્ઞાતા અરહન્નક નામ કા શ્રમણોપાસક સેઠ રહતા હૈ ।

यह सम्यक्त्व मूल देश विरति रूपधर्म में इतना दृढचित्त हैं कि यह किसी भी देव दानव, किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गन्धर्व द्वारा अपने निर्ग्रन्थ प्रवचनरूप गृहीत धर्म से विचलित नहीं किया जा सकता है।

क्षुभित नहीं किया जा सकता है । विपरीत अध्यवसाय के उत्पा-दन से उसमें अन्यथा भाव उत्पन्न नहीं किया जा सकता है इन में वैमानिक एव ज्योतिषी देवो का देव पद से तथा भवनपति का दानव पद से ग्रहण हुआ है । शेष किन्नरादिको का कि जो व्यन्तर देव हैं उपलक्षण से ग्रहण किया गया है ।

અહિગય જીવાજીવે નો સ્વલુ સવકે કેણહ દેવેણ વા દાણવેણ વા ણિગ્ગથાઓ પા વયણાઓ ચાલિત્તણ વા જાવ વિપરિણામેત્તણ વા)

જુઓ-જે જમ્બૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં દક્ષિણ ભરતક્ષેત્રમાં ચ પ નામની નગરીમાં જીવ અજીવ વગેરે તત્ત્વોને જાણનાર અરહન્નક નામે શ્રમણોપાસક સેઠ રહે છે,

તે સમ્યક્ત્વમૂળ દેશ વિરતિ રૂપ ધર્મમાં આટલો બધો સ્થિર ચિત્ત છે કે ગમે તે દેવ દાનવ, કિન્નર કિંપુરુષ મહોરગ, ગન્ધર્વ વડે પણ પોતાના નિર્ગ્રંથ પ્રવચન રૂપ ધર્મથી તે વિચલિત થતો નથી

ક્ષુભિત તેમજ વિપરીત અધ્યવસાયના ઉત્પાદનથી તેમાં બીજો ભાવ ઉત્પન્ન થતો નથી અહીંયા દેવપદથી વૈમાનિક અને જ્યોતિષી દેવોનું તેમજ દાનવપદથી ભવનપતિનું ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે

तत = इन्द्रदेवेन्द्रचनश्रवणान्तर खलु अह हे देवानुप्रिय ! शक्य नो ए
तमर्थं श्रद्धामि नो प्रत्येमि नो रोचयामि, श्रुतोक्तवाक्यार्थं मम विश्वासो न जात
इत्यर्थः । ततः खलु ममायमेतद्वृत्त = रक्ष्यमाणरूपः अभ्यर्थितः यावत्-चिन्तितः,
प्रार्थितः, कल्पितः, मनोगतः सकल्पः समुत्पद्यत = समभवत्-गच्छामि खलु अह
अस्यान्तिके = समीपे प्रादुर्भवामि, तावद् अहम् अरहन्नहं, शक्तेण प्रशमितोऽरहन्नहं
स कीदृशो वर्तते ' किं प्रियधर्मे ' किं प्रियधर्मा = प्रियो धर्मो यस्य स प्रियधर्मा,
प्रीतिभावेन मुखेन च धर्मस्य स्वीकारान् प्रियधर्मा वर्तते हिम्, अथवा ' नो प्रि
यधर्मे ' नो प्रियधर्मा स नास्ति प्रियधर्मा, तथा-हिमर्मा ' दृढधर्मे ' दृढधर्मा
विपत्सुपस्थितास्यपि धर्मस्यापस्तियागकरणात् दृढ = स्थिरः धर्मो यस्य स दृढधर्मा,

तात्पर्य इस का केवल एक यही है कि जवूद्रीप नाम का एक द्वीप
है । उस में भरत क्षेत्र नाम का क्षेत्र है । उस में चपा नाम की नगरी
है । यह अरहन्नक नाम का श्रावक उसी नगरी का निवासी है । वह
अपने धर्म में इतना अधिक दृढ है कि उसे अपने धर्म से विचलित कर
ने की किसी भी देव दानव में शक्ति नहीं है । (तएण अह देवाणुप्पि
या ! सक्कस्स० णो एयमट्ठ सद्वहामि० तएण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए
जाव समुप्पज्जेत्था) जब शक्र देवेन्द्र ने इस प्रकार कहा- तो उनके
कथन को सुननेके बाद हे देवानुप्रिय मुझे उनके उन वचनों पर विश्वास-
श्रद्धा नहीं हुई वे उनके वचन मुझे रचिकारक नहीं हुए । अतः मेरे
मनमें इस प्रकार का अभ्यर्थित, चिन्तित, प्रार्थित, कल्पित सकल्प उत्पन्न
हुआ (गच्छामि ण अरहन्नस्स अतिए पाउब्भवामि, जाणामि ताव अह

तात्पर्य-आ प्रभाणु छे के जवूद्रीपनामे द्वीप छे तेभा भरतक्षेत्र नामे
क्षेत्र छे ते क्षेत्रभा चपा नामे नगरी छे ते अरहन्नक श्रावक चपा
नामे नगरीभा वसे छे ते पोताना धर्माभा ओटलो भयो सुदृढ छे के देव
दानवभा पणु ताकात नथी के तेओ तेने पोताना धर्मथी छटावी शके

(तएण अह देवाणुप्पिया ! सक्कस्स० णो एयमट्ठ सद्वहामि० तएण मम इ
मेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था)

ज्यारे शक देवेन्द्रे आ प्रभाणु कह्यु त्यारे तेमनी बात सावणीने भने
तेमनी बात उपर श्रद्धा तेमज् विश्वास ओठो नहि भने तेमना वचन गम्या
पणु नहि ओथी मारा मनभा आ जतने अभ्यर्थित, चिन्तित, प्रार्थित,
कल्पित सकल्प उत्पन्न थयो

(गच्छामि ण अरहन्नस्स अतिए पाउब्भवामि जाणामि ताव अह अरहन्नं कि

अथवा—‘ नो ददधम्मे ’ नो ददधर्मा सोऽरहन्नको नास्ति ददधर्मा ? स च शील-
व्रतगुणान् किं चालयति=अपनयति यावत् परित्यजति, किं वा नो परित्यजति अत्र
यावत् करणात्-क्षोभयति किं वा नो क्षोभयति ? खण्डयति किं वा नो खण्डयति ?
उज्झति किं वा नो उज्झति ? इति बोध्यम् । इति कृत्वा=इत्येव मनसि विचार्य,
एव सपेक्षे, सपेक्ष्य अवधिम्=अवधिज्ञानं प्रयुञ्जे प्रेरयामि प्रयुज्य देवानुप्रियम् आ-
भोगयामि=पश्यामि । आभोग्य उत्तरपौरस्त्यम्-ईशानकोणदिग्भागं गच्छामि,
गत्वा, ‘ उत्तरविउव्विय ’ उत्तरवैक्रियं करोमि, कृत्वा तयोत्कृष्टया गत्या=देवस-
म्बन्धिन्या गत्या यत्रैव समुद्रः, यत्रैव देवानुप्रियस्तत्रैवोपागच्छामि, उपागत्य दे-

अरहन्नगं किं पियधम्मे ? नो पियधम्मे ददधम्मे नो ददधम्मे ? शील-
व्रतगुणे किं चालेति, जाव परिच्चयइ, णो परिच्चयइ) किं चलो अरह-
न्नक के पास चलें-और चलकर यह ज्ञात करें कि अरहन्नक को धर्म प्रिय
है, कि नहीं है, वह धर्म में दद है कि नहीं है । वह अपने शीलों को,
व्रतों को और गुणों को छोड़ता है अथवा नहीं छोड़ता है, उन्हें क्षुभित
करता है, या नहीं करता है, उनका खंडन करता है या नहीं करता है।
प्रवचन में एक देश से भी उस में अतिचार लगाता है या नहीं
लगाता है (त्तिमइदु एव सपेहेमि) हे अरहन्नक ! मैंने ऐसा विचार
किया (सपेहित्ता ओहिं पडजामि) विचार करके फिर मैंने अपने अव-
धिज्ञान को जोड़ा (पडजित्ता देवाणुप्पिय ओहिणा आभोएमि, आभो-
इत्ता उत्तरपुरत्थिम० उत्तर विउव्विय० ताए उक्किट्ठाए गइए जेणेव देवा-
णुप्पिया तेणेव उवागच्छामि) अवधिज्ञान को जोड़ कर मैंने उसके द्वारा
आप देवानुप्रिय को देखा ।

पियधम्मे नो ददधम्मे ? शीलव्रत गुण किं चालेति जाव परिच्चयइ, णो परिच्चयइ

के थालो अरहन्नकनी पासो जधये अने जउने तपास करीये के तेने
धर्म प्रिय छे के केम ? ते पोताना शीवाने, व्रताने अने गुणाने त्यजे छे के
केम ? तेमने क्षुभित करे छे के नहि ? तेमज तेमनु अउन करे छे के केम ?
प्रवचनमा ओक देशथी पणु तेमा अतिचार लागे छे के केम ? (ति कइ एव
सपेहेमि) हे अरहन्नक ! मे आ प्रमाणे विचार कर्यो (सपेहित्ता ओहिं
पडजामि) विचार करीने मे मारा अवधिज्ञानथी संगति भेसाडी

(पडजित्ता देवाणुप्पिय ओहिणा आभोएमि आभोइत्ता उत्तरपुरत्थिम० उत्तर
विउव्विय० ताए उक्किट्ठाए गइए जेणेव समुद्वे जेणेव देवाणुप्पिया तेणेव उवागच्छामि
अने तेनी संगति वडे देवानुप्रिय तमने मे लेया

तत = अत्र देवेन्द्र वचन श्रवणान्तरं खलु अहं हे देवानुप्रिय ! प्रक्रम्य नो प
तमर्थं श्रद्धां नो प्रत्येमि नो रोचयामि, इत्युक्तवाक्यार्थं मम विश्वासो न जात
इत्यर्थः । ततः खलु ममायमेतद्रूपं = उद्दिश्यमाणरूपः अभ्यर्थितः यावत्-चिन्तितः
प्रार्थितः, कल्पितः, मनोगतः सकल्पः समुद्रपथतः = समभवत्-गच्छामि खलु अहं
अवस्थान्तिके = समीपे प्रादुर्भवामि, तावद् अहम् अरहन्नस्मि, शत्रेण प्रशमितोऽरहन्नकः
स कीदृशो वर्तते ' किं प्रियधर्मे ' किं प्रियधर्मा = प्रियोधर्मो यस्य स प्रियधर्मा,
प्रीतिभावेन सुखेन च धर्मस्य स्वीकारान् प्रियधर्मा वर्तते किम्, अथवा ' नो प्रि
यधर्मे ' नो प्रियधर्मा स नास्ति प्रियधर्मा, तथा-किमर्मा ' दृढधर्मे ' दृढधर्मा
विपत्सुपस्थितास्वपि धर्मस्यापरित्यागकरणात् दृढ = स्थिर धर्मो यस्य स दृढधर्मा,

तात्पर्यं इस का केवल एक यही है कि जंबूद्वीप नाम का एक द्वीप
है । उस में भरत क्षेत्र नाम का क्षेत्र है । उस में चपा नाम की नगरी
है । यह अरहन्नक नाम का श्रावक उसी नगरी का निवासी है । वह
अपने धर्म में इतना अधिक दृढ है कि उसे अपने धर्म से विचलित कर
ने की किसी भी देव दानव में शक्ति नहीं है । (तएण अहं देवाणुप्पि
या ! सक्कस्स० णो एयमद्व सद्दहामि० तएण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए
जाव समुप्पज्जेत्था) जब शक्र देवेन्द्र ने इस प्रकार कहा- तो उनके
कथन को सुननेके बाद हे देवानुप्रिय मुझे उनके उन वचनों पर विश्वास-
श्रद्धा नहीं हुई वे उनके वचन मुझे रुचिकारक नहीं हुए । अतः मेरे
मनमें इस प्रकार का अभ्यर्थित, चिन्तित, प्रार्थित, कल्पित सकल्प उत्पन्न
हुआ (गच्छामि ण अरहन्नस्स अतिए पाउब्भवामि, जाणामि ताव अहं

तात्पर्य-आ प्रभाणुं छे के जंबूद्वीपनामे द्वीप छे तेभा भरतक्षेत्र नामे
क्षेत्र छे ते क्षेत्रभा चपा नामे नगरी छे ते अरहन्नक श्रावक चपा
नामे नगरीभा वसे छे ते पोताना धर्माभा अटलो भयो सुदृढ छे के देव
दानवभा पणु ताकात नथी के तेओ तेने पोताना धर्माथी छटावी शके

(तएण अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स० णो एयमद्व सद्दहामि० तएण मम इ
मेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था)

ज्यारे शक्र देवेन्द्रे 'आ प्रभाणुं कहुं त्यारे तेमनी वात सावणीने भने
तेमनी वात उपर श्रद्धा तेमज्ज विश्वास भेटो नहि भने तेमना वचन गम्या
पणु नहि अथी भारा मनभा आ जतनो अभ्यर्थित, चिन्तित, प्रार्थित,
कल्पित सकल्प उत्पन्न थये।

(गच्छामि ण अरहन्नस्स अतिए पाउब्भवामि जाणामि ताव अहं अरहन्नं किं

સ્વધર્મ દૃઢતારૂપ इति, पराक्रमः=धर्माश्रयनजन्यशक्तिविशेषः, लब्धः=उपार्जितः, प्राप्तः=स्वायत्तीकृतः, अभिसमन्वागतः=सम्यग्वासेवितः । अहो ! अरहन्नक ! भवतामृद्व्यादयो मया दृष्टा, यश्च पराक्रमो धर्माश्रयनालब्धः प्राप्तोऽभिसमन्वागतश्च सोऽपि मया दृष्ट इति भावः ।

तत्=तस्मात् क्षમયામि, खलु हे देवानुप्रियाः ! भवन्तः, हे देवानुप्रियाः ! क्षमन्तु भवन्त हे देवानुप्रिया ! क्षન્तुમર્હન્તિ भवन्तः । मत्कृताऽपराध क्षन्तु योग्या भवन्त इति भावः । नापि भूयोभूयः एव करणतया=पुनः पुनरेव न करिष्यामि, इति कृत्वा=एवमुक्त्वा, प्राञ्जलिपुट =सयोजिताञ्जली कृतकरद्वयपुटः, पादपतितः पञ्चाङ्गनमनपूर्वक चरणयोः पतितः सन् एतमर्थम्=स्वकृतापराधरूप विनयेन=विन-

રૂપ પુરુષકાર આપકા ધર્માશ્રયન જન્ય શક્તિરૂપ પરાક્રમ, જે સવ ગુણ મૈને દેખ લિયા । इन सव गुणों को आपने अच्छी तरह उपार्जित किया है ।

अच्छी तरह इन सव को आपने अपने आधीन बनाया है । और अच्छी तरह से इन सव गुणों को आपने सेवित किया है । (त खामेमि, ण देवाणुप्पिया ! खम तु ण देवाणुप्पिया ! णाड भुज्जो २ एव करणयाए त्तिकद्दु पजलिउडे पायवडिए एयमट्ठ विणएण भुज्जो २ खामेइ) अतः हे देवानुप्रिय ! आप को मैं खमाता हूँ । आप देवानुप्रिय मुझे क्षमा करे ! मैंने अभी तक जो आपके अपराध किये हैं मैं उन की आपसे क्षमा चाहता हूँ । आप मेरे अपराधों को क्षमा करने योग्य हैं । अब आगे मैं ऐसा नहीं करूँगा । इस प्रकार कह कर उस देवने अपने दोनों हाथों को जोड़ा और जोड़ कर फिर वह उस अरहन्नक श्रावक के चरणों में

આત્મિક બળ, તમારૂં ધર્મમાદૃઢરૂપ પુરુષકાર, ધર્મની આશ્રયનારૂપ તમારૂં પરાક્રમ આ બધા ગુણો મેં જોઈ લીધા છે તમે આ બધા ગુણો મારી પેઠે મેળવ્યા છે આ બધાને સારી પેઠે તમે પોતાને સ્વાધીન બનાવ્યા છે આ સર્વે ગુણોનું સેવન તમે સારી રીતે કર્યું છે

(ત खामेमि ण देवाणुप्पिया ! णाड भुज्जो २ एव करणयाए त्तिकद्दु पजलिउडे पायवडिए एयमट्ठ विणएण भुज्जो २ खामेइ)

એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમને હું ખમાવું છું દેવાનુપ્રિય તમે મને ક્ષમા કરો મેં જે કંઈ પણ તમારા અપરાધ કર્યા છે હું તેમની તમારાથી ક્ષમા ચાહું છું તમે મારા અપરાધો ક્ષમા કરવા યોગ્ય છો હવેથી ભવિષ્યમા કોઈ પણ વખત મારાથી આવું અયોગ્ય વર્તન થશે નહિ આ રીતે કહીને તે દેવે પોતાના બન્ને હાથ જોડ્યા અને ત્યારમાઠ તેણે અરહનના શ્રાવકના પગમા

વાનુપ્રિયસ્યોપસર્ગ કરોમિ । નો ચૈવ સ્વલુ દેવાનુપ્રિયાઃ ! મીતા વા પ્રસિતા વા
ઉદ્વિગ્ના વા સજાતમયા વા જાતાઃ । તદ્=તસ્માદ્ યત્ સ્વલુ શક્તો દેવેન્દ્રોદેવરાજો
વદતિ, સત્યઃ સ્વલુ ઇષોઽર્થો દૃષ્ટ । તદ્ તસ્માત્ દૃષ્ટા સ્વલુ દેવાનુપ્રિયાણાં મય
તામ્ ક્લદ્ધિઃ=ગુણાનામૈશ્વર્યમ્, ધૃતિઃ=આન્તર તેજઃ, યશઃ=ખ્યાતિઃ, યાવદ્-અથ
યાવચ્છન્દેનેદ દ્રષ્ટવ્યમ્ ચલ=શારીર પરાક્રમ, રીયમ્=આત્મિક ચલમ્, પુરુષકારઃ

દેવકર મેં દેશાન કોળ કી ઓર ગયા । વહા જાકર મેંને ઉત્તર વૈક્રિય
કી રચના કી-રચના કર ઉસ દેવભવ સમ્યધી ઉત્કૃષ્ટ ગતિ સે જહાં
સમુદ્ર થા ઓર જહાં આપ દેવાનુપ્રિય થે વહા મેં આયા (ઉવાગચ્છિતા
દેવાણુપ્રિયસ્સ ઉવસગ્ગ કરેમિ) આકર મેંને ફિર આપ દેવાનુપ્રિયકે ઉપર
ઉપસર્ગ કરના પ્રારંભ કરદિયા । (જો ચેવળ દેવાણુપ્રિયા મીયા વા ત
જળ્લણં સવકે દેવિંદે દેવરાયા વદહ સચ્ચે ણ ઇસમદ્દે) પરન્તુ આપ દેવાનુ
પ્રિય મીત નહીં હુએ, પ્રસ્ત નહીં હુએ પ્રસિત નહીં હુએ ઉદ્વિગ્ન નહીં હુએ
ઓર ન ઉત્પન્ન હુઆ હૈ મય જિસ કો ઇસ હી હુએ । હસ લિયે મેંને જૈસા
આપકે વિષય મેં શક્તદેવ રાજા દેવેન્દ્ર ને કહા યા વૈસા હી આપકો
દેલા-(ત દિદ્દેણ દેવાણુપ્રિયાણ ઇહ્હી, જુઈ જસે જાવ પરક્રમે, લદ્દે પત્તે
અભિસમન્નાગણ) અવ મેંને આપકે ગુણોં કા ઇશ્વર્ય દેવલિયા પ્રત્યક્ષ કર
લિયા । આપકી ધૃતિ-આન્તરતેજ, આપકી ખ્યાતિ યાવત્ શબ્દ સે આપ
કા શારીરિક પરાક્રમ, આપકા આત્મિક ચલ આપકા સ્વધર્મ મે દૃઢતા

જોધને હુ દેશાન કોણ તરફ ગયો ત્યા જોધને મે ઉત્તર વૈક્રિયની
રચના કરી, રચના કરીને તે દેવભવ સમ્યધી ઉત્કૃષ્ટ ગતિથી જ્યા સમુદ્ર હોતો
અને જ્યા દેવાનુપ્રિય તમે હોતા ત્યા આવ્યો

(ઉવાગચ્છિતા દેવાણુપ્રિયસ્સ ઉવસગ્ગ કરેમિ)

આવીને દેવાનુપ્રિય તમારા ઉપર ઉપસર્ગ (બાધા) શરૂ કર્યો

(જો ચેવળ દેવાણુપ્રિયા મીયા વા ત જળ્લણ સવકે દેવિંદે દેવરાયા વદહ
સચ્ચે ણ ઇસમદ્દે)

પણ દેવાનુપ્રિય તમે તેનાથી ડરો નથી, પ્રસ્ત થયા નથી, પ્રસિત થયા
નથી, ઉદ્વિગ્ન થયા નથી તેમજ તમારામાં ભય ઉત્પન્ન થયો નથી એથી તમારા
વિષે શકે દેવરાજે જે કંઈ કહ્યું છે તે તમને જોતા બરોબર લાગે છે

(ત દિદ્દેણ દેવાણુપ્રિયાણ ઇહ્હી, જુઈ જસે જાવ પરક્રમે લદ્દે પત્તે અભિસમન્નાગણ)

હવે મે તમારા ગુણોની સમૃદ્ધિ જોઈ લીધી છે તમારી ધૃતિ આતર
તેજ, તમારી પ્રસિદ્ધિ યાવત્ શબ્દ વડે તમારા શરીરનું શરાતન, તમારું

સ્વધર્મ દૃઢતારૂપ ઇતિ, પરાક્રમઃ=ધર્મારાધનજન્યશક્તિવિશેષઃ, લબ્ધઃ=ઉપાર્જિતઃ, પ્રાપ્તઃ=સ્વાયત્તીકૃતઃ, અભિસમન્વાગતઃ=સમ્યગાસેવિતઃ । અહો ! અરહન્નક ! ભવ તામૃદ્ધ્યાદયો મયા દૃષ્ટા, યથ્વ પરાક્રમો ધર્મારાધનાલ્લબ્ધઃ પ્રાપ્તોઽભિસમન્વાગતશ્ચ સોઽપિ મયા દૃષ્ટ ઇતિ ભાવઃ ।

તત્=તસ્માત્ ક્ષમયામિ, खलु हे देवानुप्रियाः । भवन्तः, हे देवानुप्रियाः ! क्षमन्तु भवन्त हे देवानुप्रिया ! क्षन्तुमर्हन्ति भवन्तः । मत्कृताऽपराध क्षन्तु योग्या भवन्त इति भावः । नापि भूयोभूयः एव करणतया=पुनः पुनरेव न करिष्यामि, इति कृत्वा=एवमुक्त्वा, प्राञ्जलिपुट =संयोजिताञ्जली कृतकरद्वयपुटः, पादपतित. पश्चाद्भनमनपूर्वक चरणयोः पतितः सन् एतमर्थम्=स्वकृतापराधरूप विनयेन=विन-

રૂપ પુરુષકાર આપકા ધર્મારાધન જન્ય શક્તિરૂપ પરાક્રમ, યે સઘ ગુણ મૈને દેખ લિયા । इन सव गुणों को आपने अच्छी तरह उपार्जित किया है ।

अच्छी तरह इन सव को आपने अपने आधीन बनाया है । और अच्छी तरह से इन सव गुणों को आपने सेवित किया है । (त खामेमि, ण देवाणुप्पिया ! खम तु ण देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्जो २ एव करणयाए त्तिकट्ठु पजलिउडे पायवडिए एयमट्ठ विणएण भुज्जो २ खामेइ) अतः हे देवानुप्रिय ! आप को मैं खमाता हूँ । आप देवानुप्रिय मुझे क्षमा करे ! मैंने अभी तक जो आपके अपराध किये हैं मैं उन की आपसे क्षमा चाहता हूँ । आप मेरे अपराधों को क्षमा करने योग्य है । अब आगे मैं ऐसा नहीं करूँगा । इस प्रकार कह कर उस देवने अपने दोनों हाथों को जोड़ा और जोड़ कर फिर वह उस अरहन्नक श्रावक के चरणों में

આત્મિક બળ, તમારૂં ધર્મમા દૃઢરૂપ પુરુષકાર, ધર્મની આરાધનારૂપ તમારૂં પરાક્રમ આ બધા ગુણો મેં જોઈ લીધા છે તમે આ બધા ગુણો મારી પેઠે મેળવ્યા છે આ બધાને સારી પેઠે તમે પોતાને સ્વાધીન બનાવ્યા છે આ સર્વે ગુણોનું સેવન તમે સારી રીતે કર્યું છે

(ત ખામેમિ ણ દેવાણુપ્પિયા ! ણાઈ ભુજ્જો ૨ એવ કરણયાએ ત્તિકટ્ઠુ પજલિઉડે પાયવડિએ એયમટ્ઠ વિણએણ ભુજ્જો ૨ ખામેઈ)

એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમને હું ખમાવું છું દેવાનુપ્રિય તમે મને ક્ષમા કરો મેં જે કંઈ પણ તમારા અપરાધ કર્યા છે હું તેમની તમારાથી ક્ષમા આહું છું તમે મારા અપરાધો ક્ષમા કરવા યોગ્ય છો હવેથી ભવિષ્યમા કોઈ પણ વખત મારાથી આવું અયોગ્ય વર્તન થશે નહિ આ રીતે કહીને તે દેવે પોતાના બન્ને હાથ જોડ્યા અને ત્યારમાઠ તેણે અરહન્નક શ્રાવકના પગમા

વાનુપ્રિયસ્યોપસર્ગ કરોમિ । નો ચેવ સ્વલુ દેવાનુપ્રિયાઃ ! મીતા વા પ્રસિતા વા
ઉદ્વિગ્ના વા સજાતમયા વા જાતાઃ । તદ્=તસ્માદ્ યત્ સ્વલુ શક્તો દેવેન્દ્રોદેવરાજો
વદતિ, સત્યઃ સ્વલુ ણ્ણોઽર્થો દૃષ્ટ । તદ્ તસ્માત્ દૃષ્ટા સ્વલુ દેવાનુપ્રિયાણાં મ્મ
તામ્ ઋદ્ધિઃ=ગુણાનામૈશ્વર્યમ્, ધૃતિઃ=આન્તર તેજઃ, યશઃ=ર્યાતિઃ, યાવદ્-અત્ર
યાવન્નન્દેનેદ દ્રષ્ટવ્યમ્ ચલ=શારીર પરાક્રમ, રીર્યમ્=આત્મિક ચલમ્, પુરુષકારઃ

દેવકર મેં દેશાન કોણ ફી ઓર ગયા । ચર્ણાં જાકર મેંને ઉત્તર વૈક્રિય
કી રચના કી-રચના કર ઉસ દેવભવ સમ્યન્ધી ઉત્કૃષ્ટ ગતિ સે જહાં
સમુદ્ર ધા ઓર જહાં આપ દેવાનુપ્રિય થે વહા મેં આયા (ઉવાગચ્છિતા
દેવાણુપિયસ્સ ઉવસગ્ગ કરેમિ) આકર મેંને ફિર આપ દેવાનુપ્રિયકે ઉપર
ઉપસર્ગ કરના પ્રારંભ કરદિયા । (ણો ચેવણ દેવાણુપિયા મીયા વા ત
જણ્ણં સવ્કકે દેવિંદે દેવરાયા વદહ સચ્ચે ણ ઇસમદ્દે) પરન્તુ આપ દેવાનુ
પ્રિય મીત નહીં હુણ, પ્રસ્ત નહીં હુણ પ્રસિત નહીં હુણ ઉદ્વિગ્ન નહીં હુણ
ઓર ન ઉત્પન્ન હુઆ હૈ મય જિસ કો ઇસ હી હુણ । ઇસ લિયે મેંને જૈસા
આપકે વિષય મેં શક્રદેવ રાજા દેવેન્દ્ર ને કહા થા વૈસા હી આપકો
દેલા-(ત દિદ્દેણ દેવાણુપિયાણ ઇહી, જુઈ જસે જાવ પરક્કમે, લદ્દે પત્તે
અભિસમન્નાગણ) અબ મેંને આપકે ગુણોં કા ઇશ્વર્ય દેવલિયા પ્રત્યક્ષ કર
લિયા । આપકી ધૃતિ-આન્તરતેજ, આપકી ર્યાતિ યાવત્ શબ્દ સે આપ
કા શારીરિક પરાક્રમ, આપકા આત્મિક ચલ આપકા સ્વધર્મ મે દૃઢતા

જોધને હુ ઇશાન કોણ તરફ ગયો ત્યા જોધને મે ઉત્તર વૈક્રિયની
રચના કરી, રચના કરીને તે દેવભવ સમ્યન્ધી ઉત્કૃષ્ટ ગતિથી જ્યા સમુદ્ર હતો
અને જ્યા દેવાનુપ્રિય તમે હતા ત્યા આવ્યો

(ઉવાગચ્છિતા દેવાણુપિયસ્સ ઉવસગ્ગ કરેમિ)

-આવીને દેવાનુપ્રિય તમારા ઉપર ઉપસર્ગ (બાધા) શરૂ કર્યો

(ણો ચેવ ણ દેવાણુપિયા મીયા વા તં જણ્ણં સવ્કકે દેવિંદે દેવરાયા વદહ
સચ્ચે ણ ઇસમદ્દે)

પણ દેવાનુપ્રિય તમે તેનાથી ડરો નથી, પ્રસ્ત થયા નથી, પ્રસિત થયા
નથી, ઉદ્વિગ્ન થયા નથી તેમજ તમારામાં લય ઉત્પન્ન થયો નથી એથી તમારા
વિષે શક્ર દેવરાજે જે કંઈ કહ્યું છે તે તમને જોતા બરાબર લાગે છે
(ત દિદ્દેણ દેવાણુપિયાણ ઇહી, જુઈ જસે જાવ પરક્કમે લદ્દે પત્તે અભિસમન્નાગણ)

હવે મે તમારા શુભોની સમૃદ્ધિ જોઈ લીધી છે તમારી ધૃતિ આતર
તેજ, તમારી પ્રસિદ્ધિ યાવત્ શબ્દ વડે તમારા શરીરનું શુરાતન, તમારું

पडिच्छित्ता मल्लीं विदेहवररायकन्न सदावित्ता त दिव्वं कुडल-
 जुयल मल्लीए विदेहवररायकन्नगाए पिणद्धइ पिणद्धित्ता पडि-
 विसज्जेइ तएणं से कुंभए राया ते अरहन्नगपामोक्खे नावा
 वाणियगे विउलेणं वत्थगंध जाव उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता
 रायमग्गमोगाढेइ आवासे वियरइ पडिविसज्जेइ, तएणं अरह-
 न्नग सजत्तगा जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवाग-
 च्छति, उवागच्छित्ता भडववहरणं करेति, करित्ता पडिभडं
 गिण्हति, गिण्हित्ता सगडी० भरेति, भरित्ता जेणेव पोयपट्टणे
 तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोतवहणं सज्जेति, सज्जित्ता
 भंड सकामेति, दक्खिणाणुकुलेणं वाउणा जेणेव चपा पोय-
 ट्ठाणे तेणेव पोय लवेति, लवित्ता सगडी० सज्जेति, सज्जित्ता
 तं गणिमं ४ सगडी० संकामेति, संकामित्ता जाव महत्थ पाहुड
 दिव्वं च कुडलजुयल गिण्हति, गिण्हित्ता जेणेव चंदच्छाए
 अगराया तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता त महत्थ जाव
 उवणेति, तएणं चदच्छाए अंगराया त दिव्वं महत्थं च कुडल
 युगल पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तं अरहन्नगपामोक्खे एव वयासी-
 -तुब्भे णं देवा०! वहूणि गामागार जाव आहिडह लवणसमुद्द
 च अभिक्खण २ पोयवहणेहि आगाहेह, त अत्थियाइ भे केइ
 कहिचि अच्छेरए दिट्ठपुब्बे ? तएणं ते अरहन्नगपामोक्खा
 चदच्छायं अगरायं एव वयासी-एव खलु सामी । अम्हे इहेव
 चम्पाए नयरिए अरहन्नपामोक्खा वहवे सजत्तगा णावा वा-
 णियगा परिवसामो, तएण अम्हे अन्नया कयाइ गणिमं च४

‘અભાવેન ભૂયોભૂય સમયતિ, સમયિત્યા અરહન્નકસ્ય દ્વે કુંડલયુગલે દદાતિ દત્વા
યસ્યા દિશઃ સ દેવઃ પ્રાદુર્ભૂતસ્તામેવ દિશ પ્રતિગત = દેવલોક ગત ઇત્યર્થઃ ॥ સૂત્ર ૨૩ ॥

મૂલમ્-તણ્ણં સે અરહન્નણ્ણ નિરુવસગ્ગમિતિ કટ્ટુ પઢિમં
પારેહ, તણ્ણં તે અરહન્નગપામોક્ખા નાવા વાણિયગા દક્ષિ-
ણાણુકૂલેણં વાણ્ણં જેણેવ ગંભીરણ પોયપટ્ટુણે તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ,
ઉવાગચ્છિત્તા પોયં લંવેતિ, લવિત્તા સગહિસાગહ સર્જેતિ, સ-
જિત્તા તં ગણિમ ૪ સગહિં સકામેતિ, સંકામિત્તા સગહીં
જોણંતિ, જોહિત્તા જેણેવ મિહિલા તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગ-
ચ્છિત્તા મિહિલાણ રાયહાણીણ વહિયા અમ્મુજ્જાણસિ સગહી-
સાગહ મોણહ, મોહિત્તામિહિલાણ રાયહાણીણ ત મહત્થ મહગ્ધ
મહરિહ વિઉલ રાયરિહં પાહુહ કુંડલજુયલં ચ ગિણહતિ, ગિ-
ણિહિત્તા મિહિલં અણુપવિસતિ, અણુપવિસિત્તા જેણેવ કુંભણ
તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા કરયલં ત મહત્થ દિવ્વ
કુંડલ જુયલ ઉવર્ણેતિ । તણ્ણ તેસિં સંજત્તગાણં જાવ પઢિચ્છહ,

પચાગ નમન પૂર્વક નમસ્કાર ક્રિયા નમસ્કાર કર ઉસને અપને અપરાધ
કી ઉસસે બહે વિનય કે સાથ વાર ૨ ક્ષમા કરાઈ । (સ્વામિત્તા)
ક્ષમા કરાકર (અરહન્નસ્સ) ઉસને અરહન્નક શ્રાવક કે લિયે (દુવે
કુંડલ જુયલે દલયતિ-દલયિત્તા-જામેવ દિસિં પાઉઝ્મૂણ તામેવ દિસિં
પઢિગણ) દો કુંડલ યુગલ દિયે । દેકર કે ફિર વહ જિસ દિશા સે
આયા થા-પ્રકટ હુઆ થા-ઉસી દિશા કી ઓર વાપિસ હો ગયા દેવ-
લોક કો ચલો ગયા । સૂત્ર “ ૨૩ ”

પચાગ નમનપૂર્વક નમસ્કાર કર્યા અને પોતાના અપરાધોની બહુ જ વિનય સાથે
વાર વાર ક્ષમા કરાવી (સ્વામિત્તા) ક્ષમા કરાવીને (અરહન્તસ્સ, તેણે અરહન્તક શ્રાવકને
(દુવેકુંડલજુયલે દલયતિ દલયિત્તા જામેવ દિસિં પાઉઝ્મૂણ તામેવ દિસિં પઢિગણ)

બે કુંડળોની જોડ આપી તે આપીને જે દિશામાથા આવ્યો હતો, પ્રકટ
થયો હતો તે જ દિશા તરફ દેવલોકમા જતો રહ્યો ॥ સૂત્ર “ ૨૩ ” ॥

उत्तरणस्थानं वर्तने, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च पोत=नाव, 'लवेति, लम्बयन्ति
तीरस्थाने वरुणेषु रज्ज्वादिभिर्निबध्य स्थिरी कुर्वति० । 'लवित्ता' लम्बयित्वा श
कटी शाकटिक=लघुश्च कटवृद्धश्च वटानां समूहं सज्जयन्ति=नवीनोपकरणरज्ज्वादिभिः
परिष्कुर्वन्ति, सज्जयित्वा तं गणिम धरिम मेयं परिच्छेद्य चतुर्विधं क्रयाणकसमूहं
शकटीशाकटिके 'सकामेति सक्रामयन्ति=स्थापयन्ति, सक्राम्य=तेऽरहन्नकं प्र-
मुखाः सायात्रिकाः शकटीशाकटिकं योजयन्ति=बलीवर्दादिभिर्योजितं कुर्वन्ति,
योजयित्वा शकटारूढास्ते यत्रैव मिथिला राजधानी वर्तते तत्रैवोपागच्छन्ति, उपा-
गत्य मिथिलाया राजधान्या बहिरग्रोद्याने=प्रधानोद्याने शकटीशाकटिकं मोचय-
ति=शकटेभ्यो बलीवर्दान् पृथक्कुर्वन्ति, मोचयित्वा मिथिलाया राजधान्या तन्म-

से जहा गभीर नाम का नौका के ठहरने का स्थान था (बदर गाह था)
वहा पहुँचे । (उवागच्छित्ता पोय लवेति) वहा पहुँच कर उन लोगों
ने नौका को खड़ा कर दिया-तीर स्थित अनेक खूंटों में रज्ज्वादि से
उसे बाँधकर स्थिर कर दिया । (लवित्ता सगडसागड सज्जेति) खड़ा
करके छोटी छोटी गाड़ियों को और गाड़ों को तैयार किया-नवीन
उपकरण एवं रज्ज्वादि से उन्हें सज्जित किया । (सज्जित्ता त गणिम
४ सगडि ४ सकामेति) सज्जित करके फिर उन्होंने उस गणिम, धरिम,
मेय एवं परिच्छेद्य रूप चतुर्विध-क्रयाणक को नौका से उतार कर उन
गाड़ी गाड़ों में भरा (सकामित्ता सगडी० जोएति, जोइत्ता जेणेव
मिहिला तेणेव उवागच्छति) भर कर फिर उन्होंने उन्हें जोता-जोत
कर जहा मिथिला नगरी थी वहाँ वे आये । (उवागच्छित्ता मिहिलाए
रायहाणीए बहिया अगुज्जाणमि सागडसगडी मोएइ मोइत्ता मिहिलाए
रायहाणीए त महत्थ महग्घ महरिह विउल रायरिह पाहुड कुडलजुयल

(उवागच्छित्ता पोय लवेति) त्या पडोथीने तेओओ नावने उली राणी
किनारानी होगीओथी तेने सारी रीते गाधी दीधी (लवित्ता सगड सागड
सज्जेति) त्यार पछी नानी गाडीओ तेमज मोटा गाडाओने होगीओ वगेरे
साधनेथी सज्ज कर्था (सज्जित्ता त गणिम ४ सगडि ४ सकामेति)
सज्ज कर्था गाह तेमणे गणिम, धरिम, मेय अने परिच्छेद्य रूप त्यार प्रका-
रनी वेयाणुनी वस्तुओने नावमाथी उतारीने गाडीओ अने गाडाओमा लरी

(सकामित्ता सगडी० जोएति, जोपत्ता जेणेव महिला तेणेव उवागच्छति)

सामान लर्था पछी तेमणे गाडीओ अने गाडाओने नेतर्था अने
नेतरीने न्या मिथिला नगरी उती त्या गया

(उवागच्छित्ता महिलाए रायहाणीए बहिया अगुज्जाणमि सागडीसागड

તહેવ અહીંનતિરિત્તં જાવ કુંભગસ્સ રન્નો ઉવળેમો, તણ
 સે કુંભણ મહીણ વિદેહરાયવરકન્નાણ ત દિઠ્ઠે કુંડલજુયલં
 પિણ્ણેહ, પિણ્ણિત્તા પઠિવિસજ્જેહ, ત ઇસણં સામી અમ્હેહિં
 કુંભગરાય ભવણંસિ મહી વિદેહં અચ્છેરણ દિઠ્ઠે તં નો સ્વહ
 અન્ના કાવિ તારિસિયા દેવકન્ના વા જાવ જારિસિયા ણં મહી
 વિદેહં, તણ ચદચ્છાણ તે અરહન્નગપામોક્ષે સઠ્ઠારેહ,
 સમ્માણેહ, સમ્માણિત્તા પઠિવિસજ્જેહ, તણં ચદચ્છાયે વાણિ-
 યગજણિયહરિસે દૂત સદ્ધાવેહ, જાવ જહ્વિય ણ સા સયં રજ્જ
 સુઠ્ઠા, તણ સે દૂતે હઠ્ઠ જાવ પહારેત્થ ગમણાણ ॥ સૂ. ૨૧।

ટીકા—‘તણ’ ઇત્યાદિ । તતસ્તનન્તર સ્વહ સોડરહન્નકઃ, ‘નિરૂપસર્ગમ્’
 ઉપસર્ગભાવો જાત, ઇતિ કૃત્વા=ઇતિવિજ્ઞાય પ્રતિપા=સાકારસસ્તારરૂપ નિયમ
 વિશેષ પારયતિ સ્મૃ. । તતસ્તદનન્તર સ્વહ તે ડરહન્નકપ્રમુખા નૌકાવાણિજકા.
 સાયાત્રિકાઃ દક્ષિણાનુકૂલેન વાતેન યત્રૈવ ગમ્भीરક ગમ્भीરનામક પોતપત્તન નૌકા

‘તણ સે અરહન્નણ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તણ) ઇસકે વાદ (સે અરહન્નણ) ઉસ અરહન્નક શ્રાવક
 ને (નિરૂપ સર્ગામિતિ કહુ) ઉપસર્ગ દૂર હો ગયા હૈ એસા જાનકર
 પઢિમ પારેહ) અપને સાકારી સથારે કો પારિત કિયા ।

(તણ તે અરહન્નગ પામોક્ષા નાવાવાણિયગા દક્ષિણાનુકૂલેણ
 વાણ જોગેવ ગમ્भीરણ પોયપટ્ટણે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ) ઇસકે અનન્તર
 વે સમસ્ત અરહન્નક પ્રમુખ સાયાત્રિક પોત વણિક્ દક્ષિણાનુકૂલ વાયુ

‘તણ સે અરહન્નણ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તણ) ત્યાર બાદ (સે અરહન્નણ) તે અરહન્નક શ્રાવકે નિરૂપસ
 ગામિતિ કહુ) ઉપસર્ગ (સકટ) જતો રહ્યો છે એમ માનીને (પઢિમ પારેહ)
 પોતાના સાકારી સથારને પારિત કયો

(તણ તે અરહન્નગપામોક્ષા નાવાવાણિયગા દક્ષિણાનુકૂલેણ વાણ જે
 ગમ્भीરણ પોયપટ્ટણે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ)

ત્યાર પછી બધા અરહન્નક પ્રમુખ સાયાત્રિક પોત વણિકો દક્ષિણાનુ
 કૂળ પવત્થી જ્યા ગમ્भीર નામે નાવને લાગરવાતુ બહર હવુ ત્યા પહોચ્યા

च प्रतीच्छति=गृह्णाति, प्रतीच्छय=गृहीत्वा च मल्लीं विदेहं राज-
ति, शब्दयित्वा च तद् दिव्य=मनोहर कुण्डलयुगल मल्लया विदेहं
। 'पिण्डेइ' पिण्डयति=पिण्ड करोति परिग्रापयतीत्यर्थः ।
सर्जयति=तां कन्यान्तः पुरे स्वभृत्यै प्रापयति, ततस्तदन्तर खलु
। तान् अरहन्नकप्रमुखान् नौकावाणिजकान् विपुलेन वत्सगन्ध-
समान्य यावत् उच्छुल्क=शुल्काभाय वितरति=ददाति । 'अरहन्न-
र्तुभ्यः क्रयविक्रयव्यवहारनियमित राजशुल्क मद्भृत्यैर्न ग्रहीव्य
प्रदत्तवानिति भावः । प्रीतीय=शुल्काभावविषयकमाज्ञापत्र दत्वा,

ग को भेट किये । (तण्ण कुभए तेसिं सजत्तगाण जाव
। डिच्छित्ता मल्ली विदेहवररायकन्न सदावेइ सदावित्ता तं
। जुयल मल्लीए विदेहवरराजकन्नगाए पिण्डेइ) कुभक राजा
प्रत्रिको की उस दिये हुए रत्नादि भेटको तथा कुण्डलद्वय
कर लिया-स्वीकार करने के बाद फिर विदेहवरराजकन्या
। री को बुलाया-बुलाकर वे दोनों दिव्य कुण्डल उस विदेह
या मल्लि कुमारी को पहिरा दिये ।

। द्वित्ता पडिविसज्जेइ) पहिराकर फिर उसे वहां से दूतों के
यान्तः पुर मे विसर्जितकर दिया । (तण्ण से कुभए राधा ते
। यामोक्खे नावावणिगघे विउले ण वत्थगध जाव उस्सुक्क
इसके बाद कुभक राजाने उन अरहन्नक प्रमुख साध्यात्रिकों को
। त्र, गधमाला, अलंकारों से सन्मान किया । सन्मान करके

ए तेसिं सजत्तगाण जाव पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्लीविदेह वररायकन्न
। वित्ता त दिव्य कुण्डलजुयल मल्ली विदेह वरराज कन्नगाए पिण्डेइ)

राज्ये ते सायात्रिकेनी रत्ना । रेनी लेट तेभज कुडोने

। यो पछी विदेहवर राजकन्या कुभारीने जोलावी अने

दिव्य कुडो। विदेहवरराजकन्या कुभारीने पडेशव्या

। डिविसज्जेइ) पडेशवीने ते । पाथे त्याधी कन्या

गणपामो

निउले ण वत्थ

गध

। डिस्सुल)

हार्थं महामयोजनक 'महग्ध' महार्थं=बहुमूल्यक, महार्थं महता योग्य विपुल विस्तीर्ण राजार्हं राजयोग्यं प्राभृतम्-उपहाररत्नादिक कुण्डलयुगल=देवेन दत्तं कुण्डलद्वयं च गृह्णन्ति, गृहीत्वा मिथिलामनुपविशन्ति । अनुपविश्य यत्रैव कुम्भकः =कुम्भकनामको मिथिलानरेशो वर्तते, तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य वस्तुपरिगृहीत शिर आवर्ते दशनस्य मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा तन्महार्थं प्राभृत रत्नादिक दिव्यं कुण्डलयुगलं च उपनयन्ति=राज्ञ पुस्तं स्थापयन्ति । ततस्तदा खलु कुम्भको राजा तेषाम्=अरहन्नकादीनां सायात्रिकार्णां नौकावाणिजकानां यावत् रत्नादि

ष्व गिण्हति, गिण्हित्वा मिथिल अणुपविसति) वहा आकर उन लोगोंने मिथिला राजधानी के बाहिर प्रधान बगीचे में उन गाड़ी गाड़ों को ढील दिया । ढील देने के बाद फिर उन्होंने मिथिला राजधानी में जाने के लिये उस महा प्रयोजन साधक, बहुमूल्य, महापुरुषों के योग्य रत्नादिकों को भेट (नजराने) को और देव प्रदत्त उन दोनों कुडलों को कि जो राजा के लायक थे लिया-और लेकर वे मिथिला राजधानी में गये (अणुपविसित्ता जेणेव कुम्भए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल० त महत्थ दिव्य कुडलजुयल उवर्णेति) वहा जाकर फिरवे जहा कुम्भक राजा थे वहां गये-वहा पहुंचकर उन सबने राजा को दोनों हाथों की अजलि कर और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार किया ।

बाद में साथ में लाया हुआ वह रत्नादिक रूप उपहार और कुडल

मोएइ मोइत्ता मिथिलाए रायहाणीए त महत्थ महग्ध महग्धि विउल रायरिई पाहुड कुडल जुयल च गिण्हति, गिण्हित्ता मिथिल अणुपविसति)

त्या पडोअीने तेभणु गाडीअो अने गाडाअोने छोडी दीधा अने त्यार आइ तेभणु मिथिला राजधानीमा जवा भाटे ते महाप्रयोजननी सिद्धि भाटे अहु किमती महापुरुषोने लायक अेवा रत्नो वगेरेनी भेट तथा देवे आपेवा अने कुडलोने डे अेअो राजने योग्य हुता ते लीधा अने लधने तेअो मिथिला राजधानीमा गया

(अणुपविसित्ता जेणेव कुम्भए तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता करयल० त महत्थ दिव्य कुडलजुयल उवर्णेति)

त्या जधने तेअो जया कुलक राज हुता त्या पडोअ्या, त्या पडोअीने तेअो अधाअे राजने अने हाथनी अजलि अनावीने अने तेने मस्तके भूझीने नमन अ्या पछी साथे लावेला रत्नो वगेरेना उपहार तेभज कुडलो तेभणु भेट अ्या

प्राभृत कुण्डलद्वय च प्रतीच्छति=गृह्णाति, प्रतीच्छत्य=गृहीत्वा च मल्लीं विदेहं राजं
वरकन्या शब्दयति, शब्दयित्वा च तद् दिव्य=मनोहर कुण्डलयुगल मल्ल्यां विदेहं
राजवरकन्यकाया 'पिण्डेइ' पिण्डयति=पिण्ड करोति परिग्रापयतीत्यर्थः ।
पिण्डयति प्रतिविसर्जयति=ता कन्यान्तः पुरे स्वभृत्यै प्रापयति, ततस्तदन्तर खलु
स कुम्भको राजा तान् अरहन्नरुप्रमुखान् नौकावाणिजकान् विपुलेन वस्त्रगन्ध-
माल्यावङ्कारेण समान्य यावत् उच्छुल्क=शुल्काभाज वितरति=ददाति । 'अरहन्न-
कादिभ्योव्यवहर्तृभ्यः क्रयविक्रयव्यवहारनियमित राजशुल्क मद्भृत्यैर्न ग्रहीव्य
मित्याज्ञापत्र प्रदत्तवानिति भावः । तृतीयं=शुल्काभावविषयकमाज्ञापत्र दत्वा,

उन्हों ने राजा को भेट किये । (तएण कुभए तेसिं सजत्तगाणं जावें
पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्ली विदेहवररायकन्न सदावेइ सदावित्ता तें
दिव्व कुडलजुयल मल्लीए विदेहवरराजकन्नगाए पिण्डइह) कुभक राजा
ने उन सायत्रिको की उस दिये हुए रत्नादि भेटको तथा कुण्डलद्वय
को स्वीकार कर लिया-स्वीकार करने के बाद फिर विदेहवरराजकन्या
मल्ली कुमारी को बुलाया-बुलाकर वे दोनों दिव्य कुण्डल उस विदेह
वरराजकन्या मल्ली कुमारी को पहिरा दिये ।

(पिण्डित्ता पडिविसज्जेइ) पहिराकर फिर उसे वहा से दूतों के
साथ कन्यान्तः पुर मे विसर्जितकर दिया । (तएण से कुभए राया ते
अरहन्नगपामोक्खे नावावणिगये विउले ण वत्थगध जाव उस्सुक्क
वियरइ) इसके बाद कुभक राजाने उन अरहन्नक प्रमुख सायत्रिका को
विपुल, वस्त्र, गन्धमाला, अलंकारों से सन्मान किया । सन्मान करके

(तएण कुभए तेसिं सजत्तगाण जाव पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्लीविदेह वररायकन्न
सदावेइ, सदावित्ता त दिव्व कुडलजुयल मल्लीए विदेह वरराज कन्नगाए पिण्डइह)

कु भउ राजाणे ते सायात्रिकोनी रत्तो वगेरेनी लेट तेमज कु डणोने
स्वीकार्या स्वीकार्या पछी विदेहुवर राजकन्या भट्टिकुमारीने जोलावी अने
जोलावीने अने दिव्य कु डणो विदेहुवरराजकन्या भट्टिकुमारीने पडेरान्या

(पिण्डित्ता पडिविसज्जेइ) पडेरानीने तेने दूतोनी साथे त्याथी कन्या
न्तपुरमा पडोथाडी

(तएण से कुभए राया ते अरहन्नगपामोक्खे नावावणियगे विउले ण वत्थ
गध जाव उस्सुक्क वियरइ)

त्यार पछी कु भउ राजाणे अरहन्नक प्रमुख सायात्रिकोनु विपुल वस्त्र गन्ध
माला अलंकारोंसे सन्मान करुं सन्मान करीने तेमनी वस्तुओंको कर (भेटेसूलें)

हार्थं महाप्रयोजनक 'महग्ध' महार्थं=बहुमूल्यक, महार्थं महता योग्य विष्णु
विस्तीर्ण राजार्ह राजयोग्य प्राभृतम्-उपहाररत्नादिक कुण्डलयुगल=देवेन दत्त
कुण्डलद्वय च गृह्णन्ति, गृहीत्या मिथिलामनुपविशन्ति । अनुपविश्य यत्रैव कुम्भक
=कुम्भकनामको मिथिलानरेशो वर्तते, तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतलपरिपृ
हीत शिर आवर्त दशनस्य मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा तन्महार्थं प्राभृत रत्नादिक दिव्य
कुण्डलयुगल च उपनयन्ति=राष्ट्र पुरतः स्थापयन्ति । ततस्तदा खलु कुम्भके
राजा तेषाम्=अरहन्नकादीनां सायात्रिकाणां नौकायाणिजकाणां यावत् रत्नादि

ष्वे गिण्हति, गिण्हित्ता मिहिल अणुपविसति) वहां आकर उन लोगों
ने मिथिला राजधानी के बाहिर प्रधान बगीचे में उन गाड़ी गाड़ों को
ढील दिया । ढील देने के बाद फिर उन्होंने मिथिला राजधानी में जाने
के लिये उस महा प्रयोजन साधक, बहुमूल्य, महापुरुषों के योग्य
रत्नादिकों को भेट (नजराने) को और देव प्रदत्त उन दोनों कुडलों को
कि जो राजा के लायक थे लिया-और लेकर वे मिथिला राजधानी में
गये (अणुपविसित्ता जेणेव कुम्भए तेणेव उवागच्छति, उवाग-
च्छित्ता करयल० त महत्थ दिव्य कुडलजुयल उवणेति) वहां जाकर
फिरवे जहां कुम्भक राजा थे वहां गये-वहां पहुंचकर उन सभने राजा
को दोनों हाथों की अञ्जलि कर और उसे मस्तक पर रखकर नम
स्कार किया ।

बाद में साथ में लाया हुआ वह रत्नादिक रूप उपहार और कुडल
मोएइ मोइत्ता मिहिलाए रायहाणीए त महत्थं महग्ध महग्धि विउल रायरिहं
पोहुड कुडल जुयल च गिण्हति, गिण्हित्ता मिहिल अणुपविसति)

त्या पडोअीने तेमणे गाडीअो अने गाडाअोने छोडी दीधा अने त्या
आड तेमणे मिथिला राजधानीमा जवा भाटे ते महाप्रयोजननी सिद्धि भाटे
अहु किमती महापुरुषोने लायक अेषा रत्नो वगेरेनी लेट तथा देवे आपेया
अने कुडलोने के लेअो राजने योग्य छता ते लीधा अने लघने तेअो
मिथिला राजधानीमा गया

(अणुपविसित्ता जेणेव कुम्भए तेणेव उवागच्छति उदागच्छित्ता करयल० त
महत्थं दिव्य कुडलजुयल उवणेति)

त्या जघने तेअो ज्या कुलके राजा छता त्या पडोअ्या, त्या पडोअीने
तेअो अधाअे राजने अने हाथनी अञ्जलि जनावीने अने तेने मस्तके मूछीने
नमन कर्या पछी साथे लावेला रत्नो वगेरेना उपहार तेमज कुडलो तेमणे लेट कया

पकरणरज्ज्वादिभिः परिष्कुर्वन्ति, सज्जयित्वा भाण्ड सक्रामयन्ति, स्थापयन्ति दक्षिणानुकूलेन वायुना यत्रैव चम्पापोतस्थान=चम्पानगरीसमीपे नौकाप्रतरणस्थान वर्तते तत्रैव पोत=नाव लम्बयन्ति=तीरस्थितानेकशङ्खेषु रज्ज्वादिभिर्वद्ध्वा स्थिरी कुर्वन्ति, लम्बयित्वा शकटीशाकटिक=लघुशकटवृहच्छकटाका समूह सज्जयन्ति=परिष्कुर्वन्ति, सज्जयित्वा तद् गणिम धरिम मेय परिच्छेद्य=चतुर्विध भाण्ड शकटी शाकटिके शकटसमूहे सक्रामयन्ति=स्थापयन्ति सक्राम्य यावद् महार्थं प्राभृत दिव्य देवेन दत्त कुण्डदयुगल च गृह्णन्ति, गृहीत्वा चम्पानगर्या प्रविष्टा चन्द्रच्छायःचन्द्रच्छायनामाऽङ्गराजः = अङ्गदेशाधिपतिस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तन्महार्थं यावद्

वहा आकर वे उन भवनो मे टहर गये-और वही रहते हुए वे अपनी क्रयाणक गणिमादिरूप वस्तुओं का विक्रय करने लगे । और उनके विक्रय से जो मूल्य उन्हें प्राप्त होता था उससे दूसरी अपने व्यवहार के उपयोगी वस्तुओं को खरीदने लगे । इस तरह जब उन का संग्रह होचुका तब उन लोगों ने गाड़ी और गाड़ो को उनसे भरा-और भरकर मिथिला नगरी से प्रस्थित होकर जहा गभीरक नाम का पोत पत्तन था वहाँ आये । वहाँ आकर उन्होंने नौकायान को सज्जित किया (सज्जिता भड सकामेति, दक्षिणानुकूलेण वाउणा जेणेव चपा पोयदृणे तेणेव पोय लयेति-लघित्ता सगडी० सज्जेति, सज्जित्ता त गणिम ४ सगडी० सकामेति सकामित्ता जाव महत्थ पाहुड दिव्व च कुडल जुयल गिण्हित्ता जेणेव चदच्छाए अगाराया तेणेव उवागच्छति) सज्जित

राजनी आजा भेणवीने अरहन्नक सायात्रिडे न्या राज भार्जनी पात्रे राज भडेल डते। त्या पडोव्या

त्या जधने तेओ भडेलभा रोडाया अने त्या रडीने ज तेओ पोतानी वेयाणु भाटेनी वस्तुओनु वेयाणु डरवा लाव्या वेयाणुथी तेओने जे डध रकभ भणती तेनाथी तेओ पोताना वेपार भाटेनी जीण वस्तुओनी जरीही दग्वा लाव्या आ प्रभाणे वस्तुओने म भड थये। त्यारे ते दोळेओ गाडीओ अने गाडाओभा वस्तुओ लरी अने आ प्रभाणे मिथिला नगरीथी प्रस्थान डरीने तेओ न्या गभीरक नामे पोत पत्तन डर्तु त्या गया त्या जधने तेओओ वडाणुने तैयार क्यु

(सज्जित्ता भड सकामेति दक्षिणानुकूलेण वाउणा जेणेव चपापोयदृणे तेणेव पोय लयेति लघित्ता सगडी० सज्जेति सज्जित्ता त गणिम ४ सगडी सकामेति सकामित्ता जाव महत्थ पाहुड दिव्व च कुडलजुयल गिण्हति गिण्हित्ता जेणेव चदच्छाए अगाराया तेणेव उवागच्छति)

‘रायमग्गमोगाढे’ राजमार्गमरगाढान् राजमार्गमपीपासस्थितान् आवासान् निवासस्थानानि वितरति=अरहन्नकादीनां यासार्थमाज्ञा ददाति, प्रति विसर्जयति =एव व्यसथा तदर्थं विधाय कुम्भको राजा स्वनिर्दिष्टानि यासस्थानानि गन्तु मादिशति स्मेत्यर्थः । ततः सल्ल अरहन्नक सायात्रिका यत्रैव राजमार्गमव गाहिता=राजमार्गसन्निकृष्टा आवासा=यासस्थानानि वर्तन्ते तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य राजदत्तभवनेषु निवसन्तस्ते भाण्डव्यवहरण=गणिमादिवस्य क्रयाणकव-स्तुजातस्य विक्रयं कुर्वन्तिस्म० । कृत्वा प्रातिभाण्ड=स्वकीय गणिमादिक भाण्डं विक्रीय तन्मूल्येन पुनरन्यत् क्रीत स्वोपयोगिस्तुजातरूप भाण्डं प्रतिभाण्डं, तद् गृह्णन्ति=सचिन्वन्ति, गृहीत्वा शकटी शकटिक भरन्ति=पूरयन्ति॥० भूया मिथि लानगरीतः प्रस्थिता सन्तः यत्रैव गम्भिरक गम्भीरकारय पोतपत्तन=नौकारोहण स्थानं वर्तते तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य पोतवहन=नौकायान सज्जयन्ति=नवीनो

उन की वस्तुओं पर से कर-टेक्स-माफ कर दिया। इन व्यवहारी अरहन्नकादिकों से क्रय विक्रय के व्यवहार पर नियमित राज शुल्क मेरे नौकर न लेवे इस प्रकार का आज्ञा पत्र उन्हें लिखकर दे दिया। (विय रिक्ता रायमग्गमोगाढेइ आवासे वियरइ, पडिविसज्जेइ) शुल्क भाव विषयक आज्ञापत्र प्रदान करके राजा फिर उन्हें राजमार्ग के समीप में रहे हुए राजकीय मकान ठहरने के लिये देदिये। इस प्रकार उनकी व्यवस्था करके बाद में कुम्भक राजा ने वहाँ से उन्हें विदा किया (तएणं अरहन्नग सज्जा जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे-तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता भडववहरणं करेति, करित्ता पडिभड गिण्हति गिण्हित्ता सगडी० भरेति, भरित्ता जेणेव गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता पोयवहणं सज्जेति) राजा से बिना विदा लेकर वे अरहन्नक सायात्रिक जन जहा राजमार्ग में राजकीय भवन थे वहाँ आये।

भाइ कथो वेपारी अरहन्नक प्रभुअ वजेरेनी पासोथी कय विक्रयना उपर भारा राज कुम्भकारीओ शुल्क(कर)ले नहि आ प्रभाणुनु आज्ञापत्र राजाओ तेमने लभी आभ्यु

(वियरित्ता रायमग्गमोगाढेइ आवासे वियरइ, पडिविसज्जेइ)

शुल्क भाइनु आज्ञापत्र तेमने आपीने राजाओ राजमार्गनी पासो आवेवो पोतानो भडेल तेमने उतरवा भाटे आभ्यो आ प्रभाणु अवस्था करीने कुलक राजाओ त्याथी तेमने विदाय कया

(तएण अरहन्नग सज्जा जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भडववहरणं करेति, करित्ता पडिभड गिण्हति गिण्हित्ता सगडी० भरेति, भरित्ता जेणेव गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोयवहणं सज्जेति)

प्रकारेणोक्तवान् हे देवानुप्रिया । यूय खलु बहून् ग्रामागरण्यावत्-अत्र यावत्क
रणादिद द्रष्टव्यम्० 'ग्रामाकरनगरखेटकर्वट मडम्बडोगमुत्त पत्तन निगमसन्निवेशान्'
इति तत्र ग्रामो जनपद, आकरः-सुवर्णाद्युत्पत्तिस्थानम् नगर-कररहित, खेट-
धूलीमाकार, कर्वटकुनगर, मडम्ब-दूरवर्ति सन्निवेशान्तर, द्रोगमुत्त-जलपथस्थ
लपथयुक्त, पत्तन - जलपथ - स्थलपथयोरेकतरेण युक्त, निगमो-वणिगूजनाधि
ष्ठित, सन्निवेशः-कटकादीनामावासः, तान् ग्रामादीन् 'आहिंडह' आहिण्ड
ध्वे=परिभ्राम्यथ, तथा लवणसमुद्र चामीक्ष्ण २ पोतवहनैः=नौकायानै, 'ओगाहेह'
अवगाहध्वे=तरथ, तत्=तस्माद् यूय कथयत-अस्ति चापि युष्माभिः किमपिकुत्र
चिद् आश्चर्य दृष्टपूर्वं पूर्व युष्माभिर्यत् किमप्याश्चर्य कुत्रचिद् दृष्टमस्ति, तान्मग्रे
वर्णयतेत्यर्थ । ततस्तदनन्तर खलु तेऽरहन्नकप्रमुखाः व्यवहारिणश्चन्द्रच्छायमङ्ग-
राजमेवमवादिषु =उक्षयमाणप्रकारेणोक्तवन्तः-हेस्वामिन् ! एव खलु वयमिहैव
चम्पाया नगर्याम् अरहन्नकप्रमुखा बहवः सायात्रा नौकावाणिजकाः परिवसामः,

सायात्रिक से इस प्रकार कहा-(तुम्हे ण देवाणुप्पिया बहूणि गामा
गर जाव आहिंडह, लवणसमुद्द च अभिक्खण २ पोयवहणेहिं
ओगाहेह) हे देवानुप्रियो ! आप लोग अनेक ग्राम आकर आदि में
परिभ्रमण करते रहते हो-तथा लवण समुद्र को भी नौका यानों से
चार २ पार करते रहते हो (त अत्थियाइ मे केइ कहिं चि अच्छेए दिट्ठ
पुब्बे ?) तो कहो यदि कहीपर आप लोगों ने कोई आश्चर्य देखा हो तो ।
(तएण ते अरहन्नग पामोक्खा चदच्छाय अगाराय एव वयासी) ऐसा
राजा की जिज्ञासा जानकर उन व्यवहारी अरहन्नक प्रमुखो ने अगदे-
शाधिपति उन चदच्छाय राजा से इस प्रकार कहा-(एव खलु सामी
अम्हे इहेव चपाए नयरीए अरहन्नग पामोक्खा बहवे सजत्तगा णावा

(तुम्हेण देवाणुप्पिया बहूणि गामागर जाव आहिंडह लवणसमुद्द च
अभिक्खण २ पोयवहणेहिं ओगाहेइ)

हे देवानुप्रियो ! तमे धणु गाम आकर वगेरेमा परिभ्रमणु करता न
रहे। छे। तेमन लवणसमुद्रने पणु वडाणु वडे वारवार पार करता रहे। छे।

(त अत्थियाइ मे केइ कहिचि अच्छेए दिट्ठपुब्बे ।) तमे डोछ पणु
नवाधनी वात नेछ डोछ तो बतावे।

(तएण अरहन्नगपामोक्खा चदच्छाय अगाराय एव वयासी)

अगदेशाधिपति राजा चदच्छायनी जिज्ञासा लणुने अरहन्नक, प्रमुजे
अ तेने आ प्रमाणु उछु-

(एव खलु सामी अम्हे इहेव चपाए नयरीए अरहन्नगपामोक्खा बहवे

प्राभृत दिव्य कुण्डलयुगल चोपनयन्ति, चन्द्रच्छायनृपस्याग्रे स्थापयतीत्यर्थः । तत्र खलु चन्द्रच्छायनृपोऽङ्गराजस्तद् दिव्य महार्थं कुण्डलयुगलं च प्रतीच्छति=पृच्छति, प्रतीच्छ्य गृहीत्वा तान् अरहन्नकपमुर्यान् नौकायाणि न कान् प्यमयादीन्-वक्ष्यमाण

करके उसमें गाड़ी और गाड़ों से उतर २ कर अपने मांडों को रखा । दक्षिणानुसूल वायु के चलने पर फिर वे वहा से चले-और चलकर जहां चपा नगरी के समीप में नौका के ठहरने का स्थान था वहां आकर वहाँ लोगों ने लगड़ डाल दिया अपनी नौका को ठहरा दिया ।

नौका को ठहरा कर फिर गाड़ी और गाड़ों को सज्जित किया-सज्जित करने के बाद उसमें से गणिमादि वस्तुओं को उतार २ कर उन गाड़ी और गाड़ों में भरा-भर कर फिर वे महार्थ साधक प्राभृत (भेट) को और दिव्य कुण्डलयुगल को लेकर चपा नगरी में प्रविष्ट हुए ।

वहा प्रविष्ट होकर जहा अगदेशाधिपति चदच्छाय राजा थे-वहा गये । (उवागच्छित्ता त महत्थ जाव उवणेति, तएण चदच्छाए अगाराया त दिव्व महत्थ च कुण्डलयुगल पडिच्छइ) वहा पहुँच कर उन लोगों ने उस महार्थ साधक भेट को और कुण्डलयुगल को राजा को भेट किया अगदेशाधिपति चदच्छाय राजा ने उस भेट एवं दिव्य महार्थ कुण्डल युगल को स्वीकार कर लिया- (पडिच्छित्ता ते अरहन्नकपामोक्खे एव वयासी) स्वीकार करके फिर उसने उन अरहन्नक आदि

तैयार करीने गाडीओ तथा गाडाओमाथी पोताना लाडोने तेमा भूक्या दक्षिणानुसूल पवन वडेवा लाग्यो तयारे तेओ त्याथी यादया अने चपा नगरीनी-पासे वडाएने उल्लु राभवाणी जग्या डती त्या लगर नाभ्यु अने वडाए उल्लु राभ्यु वडाए उल्लु राभीने गाडीओ अने गाडाओने तैयार करीने तेमा गण्ठिम वगेरे वस्तुओ वडाएमाथी उतारीने भूकी अने तयार पछी भडार्थ साधक लेट अने दिव्य कुण्डली नेड लधने चपा नगरीमा गया

त्या जधने जया अगदेशाधिपति चदच्छाय राजा डता त्या गया

(उवागच्छित्ता त महत्थ जाव उवणेति तएण चदच्छाए अगाराया त दिव्व महत्थ च कुण्डलयुगल पडिच्छइ)

त्या पडाथीने तेओओ भडार्थ साधक लेटने तेमज कुण्डली नेड राजने लेट करी अगेशना राजा चदछाये पणु ते लेट तेमज दिव्य भडार्थ कुण्डली नेडने स्वीकारी (पडिच्छित्ता ते अरहन्नकपामोक्खे एव वयासी) स्वीकार्यो पाद तेले अरहन्नक वगेरे सायानिडेने आ प्रमाणे उल्लु —

‘मल्लीए’ मल्ल्या = मल्लीनाम्न्या विदेहराजवरकन्यायाः = स्वरकन्यकायास्तद् दिव्य
कुण्डलयुगलं पिनद्वयति, पिनद्वय = परिधाप्य प्रतिविसर्जयति । हे स्वामिन् !
तदेषा खलु अस्माभिः कुम्भकस्य राज्ञो भवने, मल्ली विदेहराजवरकन्या = विदेह
राजस्य कुम्भकस्य परा सर्वगुणयुक्तरात् श्रेष्ठा कन्या, आश्चर्यं दृष्टम् = अवलोकितम् ।
तत् नो खलु अन्या काऽपि तादृशी देवकन्या वा यावत्-अत्र यावच्छब्देनेदं द्रष्टुं
व्यम्-‘असुरकन्या वा-नागकन्या वा यक्षकन्या वा गन्धर्वकन्या वा राजकन्या
वा’ इति । असुरकन्या वा नागकन्या वा यक्षकन्या वा गन्धर्वकन्या वा राजकन्या
वा, इति संस्कृतम्, तादृशी खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या, तादृशी मिथिलागी

(तएण से कुभए मल्लीए विदेहराजवरकन्याए त दिव्व कुण्डलयुगलं
पिणद्धेइ) भेट को स्वीकार करके उसी समय उन कुम्भक राजा ने अपनी
विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी को बुलाया-और बुलाकर वे दो
कुण्डल उसे पहिना दिये । (पिणद्धिता पडिविसर्ज्जेइ) और पहिना कर
फिर उसे कन्यान्तः पुर मे प्रति विसर्जित कर दिया । (त एसण सामी
अम्हे हिं कुभरायभवणसि मल्ली विदेह अच्छेरए दिट्ठे, त नो खलु
अन्ना कावि तारिसिया देव कन्या वा जाव जारिसियाण मल्ली विदेह०)
इस तरह हे स्वामीन् ! हमने कुम्भक राजा के भवन में सर्व गुण संपन्न
विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी रूप आश्चर्य देखा है ।

हमारी दृष्टि मे अन्य कोई भी ऐसी देव कन्या, असुर कन्या, नाग
कन्या, यक्ष कन्या, गन्धर्व कन्या अथवा राज कन्या आश्चर्य रूपा नहीं है

गया त्या जर्धने अमे तेननी सामे लेट तेमज्झ कानना कुण्डली नेउ भूझी
(तएण से कुभए मल्लीए विदेहराजवरकन्याए त दिव्व कुण्डलयुगलं पिणद्धेइ)
लेट स्वीकारीने तेज्झ वणते कुल्लक राज्ञे पोतानी विदेह राजवरकन्या
मल्ली कुमारीने पोलावी अने पोलावीने कुण्डलो तेने पडेरान्या (पिणद्धिता
पडिविसर्ज्जेइ,) अने पडेरानीने तेने कन्यान्त पुरमा भोक्खो दीधी

(त एसण सामी अम्हे हिं कुभरायभवणसि मल्ली विदेहअच्छेरए दिट्ठे त
नो खलु अन्ना कावि तारिसिया देवकन्या वा जाव जारिसियाण मल्लीविदेह०)
आ प्रभाणु हे स्वामी ! अमे कुल्लक राज्ञा मल्लीमा सर्वगुण संपन्न विदेह
राजवर कन्या मल्ली कुमारीना इयमा आश्चर्यं नेयु छे

अमारी सामे भीणु डोर्ध पणु देवकन्या असुर कन्या, नाग कन्या, यक्ष
कन्या, गन्धर्वकन्या, अथवा तो राजकन्या नहीं छे ने नेवी विदेह राजवर
कन्या मल्ली कुमारी नेवी आश्चर्य इया होय

ततः खलु त्रयमन्यदा कदाचिद् अन्यस्मिन् कस्मिन्समये गणिम च ४ गणि
मादि चतुर्विध क्रयाणक पोतग्रहने भूत्वा समुद्रे प्रस्थिताः, तथैव अहीनातिरिक्त=
न न्यूनाधिक, किंतु यथाष्ट तथैव भवतामग्रे कथयामः, यावत्=समुद्रेगच्छन्तो
वय गम्भीरपुरपत्तन=नौकावतरणस्थान प्राप्य गरुडसमूहे सर्व क्रयाणक भूत्वा
मिथिलायां नगर्यां वहिस्थाने गरुडसमूहमवस्थाप्य कुम्भरस्य राज्ञोदर्शनार्थं
मिथिला नगरीं प्रविष्टाः, यावत् - कुम्भरस्य राज्ञ माभूत दिव्य कुण्डलयुगल
चोपनयामः, कुम्भरकृपायोपहार वय प्रदत्तवन्त इत्यर्थः । तदा खलु स कुम्भरः

वणियगां परिवसामो, तण्ण अम्हे अन्नया कयाइ गणिम च ४ तहेव
अहीणमतिरिक्त जाव कुम्भरस्स रन्नो उवणेमो) स्वामीन् सुनो हम
अरहन्नक प्रमुख अनेक सायात्रिक पोतगणिक यही चपा नगरी में रहते हैं

हम लोग किसी एक समय, गणिमादि चतुर्विध क्रयाणक को पोत
वहन में भरकर यहा से समुद्रीय रास्ते से होकर मिथिला राजधानी
गये हुए थे । वहा हम ने जो कुछ देखा वह आपके समक्ष न न्यून रूप
में और न अधिक रूप में किन्तु जैसा देखा वैसा ही हम निवेदित
करते हैं-हम लोग नौका से यहाँ से प्रस्थित होकर गम्भीरक पोत पत्तन
पर पहुँचे वहा उतर कर हम लोगो ने समस्त अपना क्रयाणक शकटों
में भर दिया । वहा से चल कर फिर हम लोग मिथिला नगरी के बाहिर
एक उद्यान में गाडियों को रख कर कुम्भर राजा के दर्शन करने के
लिये मिथिला नगरी गये । वहाँ राजा के समीप पहुँच कर हम लोगो
ने उन के समक्ष अपनी भेट रख दी और कानो के दो कुण्डल भी

,सजत्तगा णावा वणियगा परिवसामो तण्ण अम्हे अन्नया कयाइ गणिम च ४ तहेव
अहीणमतिरिक्त जाव कुम्भरस्स रन्नो उवणेमो)

हे स्वामी ! अमे अरहन्नक प्रमुख अनेक सायात्रिक पोत वाणिज्य
अही अ पानगरीमा न रहिये छीअ

अमे केअ वणित गणिम वगेरे आर जतनी वेयाणुनी वस्तुओ पोत
वहन मा भूकीने अहीथी समुद्रमा भागेथी मिथिला राजधानीमा गया डता
त्या अमे के कछ जेथु छे ते तमारी सामे वधारे पडतु पणु नडि तेमज
ओछु पणु नडि ओटव के त्या जेवी रीते के रुपमा अमे जेथु छे ते
विषे तमारी सामे निवेदन करीये छीअ अमे दोके अहीथी वडाणु वडे प्रस्थान
करीने गम्भीरक पोतपत्तन उपर पडोअ्या त्या उतरीने अमे वेयाणुनी जधी
वस्तुओ गाडाओमा लरी त्वार पछी त्याथी आलीने मिथिला नगरीनी जडार
उद्यानमा गाडीओने उलीराणीने कुलक राजाना दर्शन माटे मिथिला नगरीमा

अत्र यावत् कदणादिदृष्टव्यम्-गच्छयित्वा चैवमनादीत्-हे देवानुप्रिय । त्वमिथिलाया नगर्या गत्वा कुम्भक राजानं ब्रूहि-तव कन्यका मल्ली चन्द्रच्छायो वाञ्छति ' इति । यद्यपि च खलु सा स्वयं राज्यशुल्का = राज्याधीनी, एव चेत्तस्याः समग्रं राज्यं समर्पयामीति भावः । ततस्तदनन्तरं खलु स दृतश्चन्द्रच्छायनृपाज्ञया हृष्टतुष्टः = प्रत्यन्तं प्रमुदितः सन् यावत् कतिपयं सैन्यसहितो रथारूढः प्राधारयद् गमनाय = गन्तुं प्रवृत्त इत्यर्थः । इति द्वितीयस्य चन्द्रच्छायनाम्नो नृपस्य सम्बन्धः कथितः ॥ सू० २४ ॥

मूलम्-तेण कालेणं तेणं समएण कुणाल नाम जणवए होत्था, तत्थ ण सावत्थी होत्था, तत्थ णं रुप्पी कुणालाहि-वई नाम राया होत्था, तस्स णं रुप्पिस्स धुया धारिणीए देवीए अत्तया सुवाहुनाम दारिया, होत्था, सुकुमाल० रूवेण य जोवणेणं लावणणेण यउक्किट्ठाउक्किट्ठसरीरा जाया यावि

अवर्णसे मल्ली कुमारीके ऊपर जिसका अनुराग उत्पन्न हो गया है ऐसे उस चन्द्रच्छाय राजा ने उसी समय दूत को बुलाया । बुला कर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम मिथिला नगरी में जाकर कुम्भक राजासे कहो कि आपकी पुत्री मल्ली कुमारी को चन्द्रच्छाय राजा चाहते हैं ।

यदि वह पुत्री मेरे समस्त राज्य को चाहेगी तो मैं उसे अपना समस्त राज्य समर्पित कर दूंगा । इस तरह वह दूत चन्द्रच्छाय राजा की आज्ञा से हर्षित एवं सतुष्ट होता हुआ कतिपय सैन्य सहित वहां से रथ पर आरूढ होकर मिथिला नगरी की ओर प्रस्थित हो गया । इस तरह यह द्वितीय चन्द्रच्छाय नामके राजा का संवत्स कह्यो । सूत्र " २४ "

चन्द्रच्छाय राजासे तबत न दूतने बोलाव्यो अने तेने कह्यो-हे देवानुप्रिय ! तमे मिथिला नगरीमा नधने कुम्भक राजाने उछोके तमारी पुत्री मल्ली कुमारी ने चन्द्रच्छाय राजा याहे छे

जे ते पुत्री भारा आया राजाने पण धिच्छे तो हु तेने पोतानु राज्य समर्पवा तैयारे छु आ रीते दूत चन्द्रच्छाय राजानी आज्ञाथी हर्षित तेमन सतुष्ट थतो नधी डेटलाक सैन्यनी साथे त्याथी रथ उपर सवार थधने मिथिला नगरी तरफ याव्यो आ प्रमाणे आ भील चन्द्रच्छाय नामना राजा ना संवत्स विषे कह्यो ॥ सूत्र " २४ " ॥

भरस्ये कुम्भरस्य कन्यका मल्ली दिव्याश्वर्यरूपा विगनते, नास्ति तादृशी
काऽपि देवकन्या तथा न सन्त्यसुरकन्यकाश्चः काश्चिदपि तत्सुन्या इति भावः ।

ततस्तदनन्तर खलु चन्द्रच्छायनामा नृपस्तान् अरहन्नकप्रभुग्यान् सत्कार
यति=वस्त्रादिना तेषां सत्कार करोति, सम्मानयति-मधुरवचनादिना प्रशंसति ।
सत्कृत्य समान्य प्रतिविसर्जयति । तेभ्योऽरहन्नकादिभ्यो व्यवहर्तृभ्यः क्रयविक्रय
व्यवहारेषु राजकीय शुल्क मदोयभृत्यैर्न ग्रहीतव्यमित्याज्ञापत्र दत्वा तान् विस
र्जयति स्मेत्यर्थः । ततः खलु चन्द्रच्छायो वाणिजकजनितदर्पः = अरहन्नकादि
वाणिजकवचनश्रवणेन मल्लीकुमार्या सजातानुरागः सन् दूत शब्दयति, यावद्=

जैसी कि विदेह राजपर कन्या मल्ली कुमारी है । (तण्णं चदच्छाए
ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेइ, सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता,
पडिविसज्जेइ, तण्णं चदच्छाए वाणियगजणियहरिसे दूत सदावेइ, जाव
जइ वि य ण सा सय रज्जसुक्का, तण्ण से दूते हट्ठे जाव
पहारेत्था गमणाए) इस प्रकार उन अरहन्नक प्रमुख सांघात्रिकों के
मुखों से मल्ली कुमारी रूप आश्चर्य श्रवण कर चदच्छाय राजा ने उन
अरहन्नक प्रमुख पोट वाणिकों का वस्त्रादि प्रदान द्वारा सत्कार किया
और मधुर वचनादि द्वारा उनकी बहुत २ प्रशंसा की ।

बाद में उन्हें अपने पास से राजकीय शुल्क माफ कर विसर्जित कर
दिया उन्हें इस प्रकार का “ मेरे भव्य जन इन अरहन्नक आदि व्यवहारी
जनों से क्रय विक्रय के व्यवहार में राजकीय शुल्क न लेवें आज्ञा पत्र
लिखकर दे दिया । पश्चात् उन अरहन्नक आदि वाणिजजनों के वचनों के

(तण्णं चदच्छाए ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेइ, सम्माणेइ सक्कारित्ता, स
म्माणित्ता पडिविसज्जेइ तण्णं चदच्छाए वाणियगजणियहरिसे दूत सदावेइ जाव
जइ वि य ण सासय रज्जसुक्का तण्ण से दूते हट्ठे जाव पहारेत्था गमणाए)

आ रीते ते अरहन्नक प्रभुण सांघात्रिकेना मेथी मल्लीकुमारी इय
आश्चर्य सालणीने चदच्छाय राजाणे अरहन्नक प्रभुण ते पोट वाणिकेना वस्त्र
वगेरे आपीने सत्कार कयो तेमण मधुर वचने। वडे तेमना भूणव वणाणु कयो
त्यार पाट राजकीय कर (भडिसूल) भाइ करीने तेमने विहाय करती
वज्जते “ भारा तमाम राजकर्मचारीओ अरहन्नक वगेरे वेपारीओ पासथा
कय विक्रयना व्यवहारमा राजकीय कर लेवो नडि ” आ जतनु आज्ञापत्र
लणी आभ्यु त्यार पछी अरहन्नक वगेरे वणिक जनोना मेथी सालणेला
वचनेथी मल्लीकुमारी उपर नेमना हृदयमा प्रेम उत्पन्न थयो छे, अथा ते

णेंति, तएणं सुवाहुदारिया जेणेव रूपी राया तेणेव उवा-
गच्छई उवागच्छित्ता पायगहणं करेइ, तएणं से रूपी राया
सुवाहुदारिय अंके निवेसेइ, निवेसित्ता सुवाहुदारियाए
रूवेण य जा० लाव० जाव विमिहिए वरिसघर सदावेइ,
सदावित्ता एव वयासी-तुमण्णं देवाणुप्पिया मम दोच्चेणं
बहूणि गामागरनगरगिहाणि अणुपविससि, त अत्थि ताइं
ते कस्सइ रन्नो वा ईसरस्स वा कहिचि एयारिसए मज्जणए
दिट्ठपुब्बे जारिसए ण इमीसे सुवाहुदारियाए मज्जणए ?
तएणं से वरिसधरे रूपि करयल० एव वयासी-एवं खलु
सामी । अह अन्नया तुब्भेण दोच्चेणं मिहिलं गए, तत्थ
ण मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए
मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मज्झणए दिट्ठे, तस्स ण मज्ज-
णगस्स इमे सुवाहुदारियाए मज्जणए सहस्सइमंपि कलं
न अग्घेइ, तएणं से रूपी राया वरिसघरस्स अंतिए एय-
मट्ठ सोच्चा णिसम्म सेसं तहेव मज्जणगजणितहास दूतं
सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-जाव जेणेव मिहिला नयरी
तेणेव पहारेत्थए गमणाए ॥ सू० २५ ॥

टीका—अथ तृतीयस्य रुक्मिनाम्नो नृपस्य सवन्ध प्रस्तौति—‘ तेणं कालेण ’
इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये कुणालो नाम जनपद = देशः, आसीत्,

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में
(कुणाल नाम जनपद होत्था) कुणाल नामका जनपद अर्थात् देश था ।

‘ तेण कालेण समएण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये (कुणाल नाम

होत्था, तीसे णं सुवाहुदारियाए अन्नया चाउम्मासियमज्ज-
 णए जाए यावि होत्था, तएणं से रुप्पी कुणालाहिवई
 सुवाहुदारियाए चाउम्मासियज्जणय उवट्ठिय जाणइ,
 जाणित्ता कोडुंविय पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी
 -एवं खल्ल देवाणुप्पिया । सुवाहुदारियाए कल्ल चाउम्मासि-
 यमज्जणए भविस्सइ, त कल्लं तुब्भेण रायमग्गमोगाढसि
 मंडवं जलथलयदसद्धवन्नमल्ल साहरेह जाव सिरिदामगंडं
 ओलइंति । तएणं से रुप्पी कुणालाहिवई सुवन्नगारसेणिं
 सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणु-
 प्पिया । रायमग्गमोगाढसि पुप्फमडवसि णाणाविहपच्च
 वन्नेहि तदुलेहि णगर आलिहइ, तस्स बहुमज्झदेसभाए
 पट्टए रयेह, रएइत्ता जाव पच्चप्पिणति, तएणं से रुप्पी
 कुणालाहिवई हत्थिक्खधवरगए चाउरगिणीए सेणाए
 महया भडचडगरयहयरविदपरिक्खित्ते अतेउरपरियालसप-
 रिबुडे सुवाहुं दारियं पुरओ कट्ठु जेणेव रायमग्गे जेणेव
 पुप्फमडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिक्खंधाओ
 पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पुप्फमडव अणुपविसइ, अणुपवि-
 सित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने, तएणं
 ताओ अते उरियाओ सुवाहुदारिय पट्टयसि दुरूहेति
 दुरूहित्ता सेयपीयएहि कलसेहि पहाणेंति, पहाणित्ता सव्वा-
 लकारविभूसिय करेंति करित्ता पिउणो पाय वदिउ उव

णेंति, तएणं सुवाहुदारिया जेणेव रूपी राया तेणेव उवा-
गच्छई उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ, तएणं से रूपी राया
सुवाहुदारिय अंके निवेसेइ, निवेसित्ता सुवाहुदारियाए
रूवेण य जा० लाव० जाव विम्हिए वरिसघर सदावेइ,
सदावित्ता एव वयासी-तुमण्णं देवाणुप्पिया मम दोच्चेणं
वहूणि गामागरनगरगिहाणि अणुपविससि, त अत्थि ताइं
ते कस्सइ रन्नो वा ईसरस्स वा कहिंचि एयारिसए मज्जणए
दिट्ठपुब्बे जारिसए णं इमीसे सुवाहुदारियाए मज्जणए ?
तएणं से वरिसधरे रुपि करयल० एव वयासी-एवं खलु
सामी । अह अन्नया तुब्भेण दोच्चेणं मिहिलं गए, तत्थ
ण मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए
मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मज्झणए दिट्ठे, तस्स ण मज्ज-
णगस्स इमे सुवाहुदारियाए मज्जणए सहस्सइमंपि कलं
न अग्घेइ, तएणं से रूपी राया वरिसघरस्स अंतिए एय-
मट्ट सोच्चा णिसम्म सेस तहेव मज्जणगजणितहास दूतं
सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-जाव जेणेव मिहिलानयरी
तेणेव पहारेत्थए गमणाए ॥ सू० २५ ॥

टीका—अथ तृतीयस्य रुक्मिनाम्नो नृपस्य सवन्ध प्रस्तौति—‘ तेण कालेण ’
इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये कुणालो नाम जनपद = देश,, आसीत्,

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में
(कुणाल नाम जनपद होता) कुणाल नामका जनपद अर्थात् देश था ।

‘ तेण कालेण समएण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये (कुणाल नाम

तत्र=तस्मिन् देशे खलु श्रावस्ती नाम नगरासीत् । तत्र=श्रावस्त्या नगरां खलु
 'रूपी' रुक्मी=रुक्मिनामा कुणालाधिपति=कुणालदेशाधिपतिर्नाम=मसिद्धः
 राजाऽऽसीत्० । तस्य खलु रुक्मिणी दुहिता=पुत्री धारिणीदेव्या आत्मजा=गर्भ-
 समुत्पन्ना, सुबाहुर्नाम=सुबाहुनाम्नी दारिका=स्वयं आसीत् । सा सुबाहुदारिका
 कीदृशीत्याह—'सुउमालपाणिपाया' सुकुमारपाणिपादा=सौमलकरचरणवती, तथा-
 रूपेण=आकृत्या वर्णेन च, यौवनेन=ताम्रप्येन, लावण्येन चोत्कृष्टा=उत्कर्षवती
 प्रधानेत्यर्थः, अतएव—उत्कृष्ट शरीरा=परमसुन्दराङ्गी यावत् सकलवनितागुणसम्पन्ना

(तत्थण सावत्थी नाम नगरी होत्था) उस जनपद-देश-में श्रावस्ती
 नाम की नगरी थी । (तत्थण रूपी कुणालाहिवई नाम राया होत्था-
 तस्सणं रूपिस्स धुया धारिणीए देवीए अत्तया सुबाहुनाम दारिया
 होत्था) उस श्रावस्ती नगरी में कुणाल देश के अधिपति जिन का नाम
 रुक्मी था रहते थे । इस रुक्मी राजा की एक पुत्री थी । जिस का
 नाम सुबाहु था ।

यह धारिणी देवी के गर्भ से उत्पन्न हुई थी । (सुकुमाल० रूपेण
 य जोव्वणे ण लावण्येण य उक्किट्ठा, उक्किट्ठ सरीरा जाया यावि होत्था)
 इस के हाथ और चरण ही अधिक सुकुमार थे । यह रूप-आकृति और
 वर्ण से यौवन से तथा लावण्य से सब में सुन्दर मानी जाती थी । इस
 कारण यह परम सुन्दराङ्गी थी और स्त्री सबधी समस्त गुणों से युक्त

जनपद होत्था) कुणाल नामे जनपद ओटले के देश હતો । (तत्थण सावत्थी
 नाम नगरी होत्था) તે जनપદ-દેશમાં શ્રાવસ્તી નામે નગરી હતી

(તત્થણ રૂપી કુણાલહિવઈ નામ રાયા હોત્થા તસ્સ ણ સપ્પિસ્સ ધુયા ધારિ-
 ãીં દેવીં અત્તયા સુબાહુ નામ દારિયા હોત્થા)

શ્રાવસ્તી નગરીમાં કુણાલ દેશના અધિપતિરુક્મી રહેતા હતા રુક્મી-
 રાજા ને એક પુત્રી હતી તેનું નામ સુબાહુ હતું

ધારિણી દેવીના ગલથી તેનો જન્મ થયો હતો

(સુકુમાલ૦ રૂપેણ ય જોવ્વણે ણ લાવણ્યેણ ય ઉક્કિટ્ઠા, ઉક્કિટ્ઠસરીરા જાયા
 યાવિ હોત્થા)

તેના હાથપગ ખૂબ જ સુકોમળ હતા તે રૂપ, આકૃતિ, યૌવન, તેમજ
 લાવણ્ય બધામાં સુદર ગણાતી હતી તેથી તે ખૂબજ સુદર અગોવાળી અને
 સૌ સખધી બધા શુભોચી યુક્ત હતી

जाता चाप्यासीत्० । तस्याः खलु सुबाहुदारिकाया अन्यदा कदाचित् चातुर्मासिक
मज्जनक=स्नान=स्नानमहोत्सवश्चाप्यभूत् ततस्तदनंतरं स रुक्मीकुणालाधिपतिः
सुबाहुदारिकाया =स्वपुत्र्याश्चातुर्मासिकमज्जनकमुपस्थितः जानाति० । ज्ञात्वा
कौटुम्बिकपुरुषान्= आज्ञाकारिणः पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा एव
मवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! एव खलु सुबाहुदारिकायाः मम पुत्र्याः कल्ये=प्रभाते
द्वितीयदिवसेत्यर्थः चातुर्मासिकमज्जनक चातुर्मासिकस्नानमहोत्सवो भविष्यति,
तत् तस्मात् कल्ये यूयं खलु राजमार्गमवगाढे=राजमार्गसन्निकृष्टे मण्डपे जलस्थ
लज्जदशार्धवर्णमालय=जलज स्थलज पञ्चवर्णपुष्पसमूहः सहरत=समानयत, यावत्-

थी । (तीसेण सुबाहु दारियाए अन्नया चाउम्मासियमज्जणए जाए यावि होत्था)
एक दिन इस सुबाहु पुत्री के चातुर्मासिक स्नान महोत्सव
का समय आया (तएण से रुपी कुणालाहिर्वई सुबाहु दारियाए चाउ-
म्मासिय मज्जणय उवट्ठिय जाणइ) कुणाल देशाधिपति रुक्मि राजा को
अपनी पुत्री सुबाहु दारिका के चातुर्मासिक स्नानोत्सव का जब यान
आया-तत्र (जणित्ता कौटुम्बिय पुरिसे सदावेइ) ऐसा जान कर उस ने
कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया- (सदावित्ता एव वयासी) और बुलाकर
उनसे ऐसा कहा- (एव खलु देवाणुप्पिया ! सुबाहु दारियाए कल्लं
चाउम्मासिय मज्जणए भविस्सइ) हे देवानुप्रियो ! कल प्रातः काल
सुबाहु दारिका का चातुर्मासिक स्नान होगा । (त कल्ल तुम्हेण रायम
ग्गमोगाढसि मडव जलयल दसद्धवन्न मल्ल साहरेइ) अतः तुम लोग
राज मार्ग के समीप मुख्य मण्डप में कल प्रातः काल ही जल, स्थल में

(तीसेण सुबाहुदारियाए अन्नया चाउम्मासिय मज्जणए जाए यावि होत्था)

એક દિવસે સુબાહુ પુત્રીને ચાતુર્માસિક સ્નાન મહોત્સવનો સમય આવ્યો.

(તણે સે કુણાલાહિર્વઈ સુબાહુ દારિયાએ ચાઉમ્માસિય મજ્જણય ઉવટ્ઠિય જાણइ)

કુણાલ દેશના રાજા રુક્મીને તેની પુત્રી સુબાહુને ચાતુર્માસિક સ્નાન

ત્સવનો બ્યારે વિચાર આવ્યો ત્યારે (જણિત્તા કૌટુમ્બિય પુરિસે સદાવેइ) તેણે

કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા (સદાવિત્તા એવ વયાસી) અને બોલાવીને આ

પ્રમાણે કહ્યું—

(એવખલુ દેવાણુપ્પિયા ! સુબાહુદારિયાએ સકલ્લ ચાઉમ્માસિયમજ્જણએ ભવિસ્સइ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! આવતી કાલે સવારે સુબાહુ દારિકાનું ચાતુર્માસિક સ્નાન થશે

(ત કલ્લ તુમ્હેણ રાયમગ્ગમોગાઢસિ મડવ જળા થલ દમદ્ધવન્નમલ્લ સાહરેइ)

એથી તમે આવતી કાલે સવારે રાજમાર્ગની પાસેના મુખ્ય મંડપમાં

તત્ર=તસ્મિન્ દેશે સ્થલુ શ્રાવસ્તી નામ નગર્યાસીત । તત્ર=શ્રાવસ્ત્યા નગર્યાં સ્થલુ
 'રુપ્પી' રુક્મી=રુક્મિનામા કુણાલાધિપતિઃ=કુણાલદેશાધિપતિર્નામ=પસિદ્ધઃ
 રાજાઽઽસીત્ ० । તસ્ય સ્થલુ રુક્મિણો દુહિતા=પુત્રી ધારિણીદેવ્યા આત્મજા=ગર્ભ
 સમુત્પન્ના, સુવાહુર્નામ=સુવાહુનામ્ની દારિકા=રન્યકા આસીત્ । સા સુવાહુદારિકા
 કીદશીત્યાહ—'સુઝમાલપાણિપાયા' સુકુમારપાણિપાદા=કોમલકરચરણવતી, તથા—
 રૂપેણ=આકૃત્યા વર્ણેન ચ, યૌવનેન=તારુણ્યેન, કારણ્યેન ચોત્કૃષ્ટા=ઉત્કર્ષવતી
 પ્રધાનેત્યર્થ, અતएव—ઉત્કૃષ્ટ શરીરા=પરમસુન્દરાઙ્ગી યાત્ સ્કલવનિતાગુણસપન્ના

(તત્થણ સાવત્થી નામ નગરી હત્યા) ડસ જનપદ-દેશ-મેં શ્રાવસ્તી
 નામ કી નગરી થી । (તત્થણ રુપ્પી કુણાલાહિવર્દ નામ રાયા હત્યા-
 તસ્સણ રુપ્પિસ્સ ધુયા ધારિણીઽ દેવીઽ અત્તયા સુવાહુનામ દારિયા
 હત્યા) ડસ શ્રાવસ્તી નગરી મેં કુણાલ દેશ કે અધિપતિ જિન કા નામ
 રુક્મી થા રહતે થે । ડસ રુક્મી રાજા કી ઁક પુત્રી થી । જિસ કા
 નામ સુવાહુ થા ।

યહ ધારિણી દેવી કે ગર્ભ સે ઉત્પન્ન હુઈ થી । (સુકુમાલ૦ રૂપેણ
 ય જોબ્બણે ણ લાવણેણ ય ઉક્કિદ્ધા, ઉક્કિદ્ધ સરીરા જાયા યાવિ હત્યા)
 ડસ કે હાથ ઔર ચરણ હી અધિક સુકુમાર થે । યહ રૂપ-આકૃતિ ઔર
 વર્ણ સે યૌવન સે તથા લાવણ્ય સે સવ મેં સુન્દર માની જાતી થી । ડસ
 કારણ યહ પરમ સુન્દરાઙ્ગી થી ઔર સ્ત્રી સબધી સમસ્ત ગુણો સે યુક્ત

જળવદ હત્યા) કુણાલ નામે જનપદ એટલે કે દેશ હતો (તત્થણ સાવત્થી
 નામ નગરી હત્યા) તે જનપદ-દેશમાં શ્રાવસ્તી નામે નગરી હતી

(તત્થણ રુપ્પી કુણાલહિવર્દ નામ રાયા હત્યા તસ્સ ણ સપ્પિસ્સ ધુયા ધારિ
 ણીઽ દેવીઽ અત્તયા સુવાહુ નામ દારિયા હત્યા)

શ્રાવસ્તી નગરીમાં કુણાલ દેશના અધિપતિરુક્મી રહેતા હતા રુક્મી
 રાજા ને એક પુત્રી હતી તેનું નામ સુવાહુ હતું
 ધારિણી દેવીના ગર્ભથી તેનો જન્મ થયો હતો

(સુકુમાલ૦ રૂપેણ ય જોબ્બણે ણ લાવણેણ ય ઉક્કિદ્ધા, ઉક્કિદ્ધસરીરા જાયા
 યાવિ હત્યા)

તેના હાથપગ ખૂબ જ સુકોમળ હતા તે રૂપ, આકૃતિ, યૌવન, તેમજ
 લાવણ્ય બધામાં સુદર ગણાતી હતી તેથી તે ખૂબજ સુદર અગોવાળી અને
 સ્ત્રી સબધી બધા ગુણોથી યુક્ત હતી

बहुमध्यदेशभागे पट्टक रचयत, रचयित्वा यावत् प्रत्यर्पयन्ति । हे स्वामिन् ! यथा देवेन समादिष्ट तथा सर्व साधितमस्माभिरित्येव ते कथयन्ति स्मेत्यर्थः । ततस्तदनन्तर खलु स रुक्मी कुणालाधिपतिर्हस्तिस्कन्धवरगतः=गजस्कन्धोपरि वरासने विराजमान, 'चाउरगिणीए' चतुरङ्गिण्या गजाश्वरथपटातिरूपया 'सेणाए' सेनया 'महया भडचडगडपहयरविंदपरिक्खत्ते' महामटचडगरपहयरवृन्दपरिक्षिप्तः महाभटानां चडगरः विच्छर्दः समर्दः अन्यजनदुष्पवेश्यः तथाविधो य पहयरः समुदायस्तस्थ वृन्द=समूहः तेन परिक्षिप्तः=परिवृतः, 'चडगर' इति 'पहयर' इति च देशीयः शब्द समूहार्थवाचकः । अतःपुरपरिवारसपरिवृतः सुबाहु=सुबाहु-राजमार्ग के समीप बने हुए पुष्प मडप में अनेक रंगों से रंगे हुए चावलो से नगर की रचना करो ।

(तस्स बहुमज्झदेसभाण पट्ठय रहेय) उसने ठीक बीचों बीच में एक पट्टक बनाओ—(रएइत्ता जाव पच्चप्पिणत्ति) पट्टक बनाकर उन लोगों ने राजा को इसकी पीछे खबरकर दी—उन्होंने कहा स्वामी ! जैसा कार्य करने के लिये आपने आज्ञा प्रदान की थी—वैसाही सब काम हमने कर दिया है इस प्रकार की राजा को सूचना कर दी—(तएण से रुप्पी कुणालाहिर्वई हत्थि खधवरगए चाउरगिणीए सेणाए महया भडचडगर पहयरविंदपरिक्खत्ते अतेउरपरियालसपरिवुडे सुबाहु दारिय पुरओ कट्टहु जेणेव रायमग्गे जेणेव पुप्फमडवे तेणेव उवागच्छइ) इस के बाद वे कुणालाधिपति रुक्मी राजा हाथी पर बैठ कर चतुरगिणी सेना के साथ २ महाभटों के समूह से कि जिस से भीतर और कोई दूसरा

“ हे देवानुप्रियो ! तमे सत्वरं राजमार्गं नी पासे अनाववाभा आवेला पुष्प-मडपमा अनेक रंग्नी रगायेला योआथी नगरनी रचना उरो ।

(तस्स बहुमज्झ देसभाए पट्ठय रहेय) तेनी अरोणर अधवन्थे ओक पट्टक अनावो । (रएइत्ता जाव पच्चप्पिणत्ति) आ प्रभाणु पट्टक अनावीने तेओओ राजने सूचना करी के हे स्वामी ! ने प्रभाणु काम करवानी तमे अभने आज्ञा आपी उती ते प्रभाणु अधु अमे तैयार करी दीधु छे

(तएण से रुप्पी कुणालाहिर्वई हत्थि खधवरगए चाउरगिणीए सेणाए महया भडचडगरपहयरविंदपरिक्खत्ते अहे उरपरियालसपरिवुडे सुबाहु दारिय पुरओ कट्टहु जेणेव रायमग्ग जेणेव पुप्फमडवे तेणेव उवागच्छइ)

त्यार पछी ते कुणालाधिपति रुक्मी राजा हाथी उपर सवार थईने चतुरगिणी सेनानी साथे साथे नेमा डोण्णथु चेमी राडे नहि तेवा भडा

અત્ર યાચ્છન્દેનેદ દ્રાવ્યમ્-પરંતુ સ્વલુ મહત્ શ્રીદામકાન્ડમુપનયત, તસ્ય મન્ડ
પસ્ય સ્વલુ વહુમધ્યદેશભાગે એક મહત્ શ્રીદામકાન્ડ યાચત્ પાટલાદિ પુષ્પસમૂહ
સહિત ગંધધાણિ મુશ્વત્ ઉછોચે અપલમ્બયતઃ ઇતિ તતસ્તે કૌટુમ્બિક પુરુષાસ્થયૈવ
મન્ડપમધ્યે ઉછોચે=ચન્દ્રાતપે શ્રીદામકાન્ડમપલમ્બયન્તિ॥ તત્ સ્વલુ સ રુક્મી
કુણાલાધિપતિઃસુવર્ણકારશ્રેણિ=સુવર્ણકારાન્ શબ્દયતિ, શત્રુચિત્ત્વા એવ=વક્ષ્યમાણ
પ્રકારેણાગાદીત્-ભો દેવાનુપ્રિયા ! સિપમેત્=શીવમેત્, રાજમાર્ગમત્રગાઠે=રાજ
માર્ગાડસન્ને પુષ્પમન્ડપે નનાવિધપદ્મયૈઃ=અનેકવિધેઃ પદ્મવર્ણરજ્જિતૈસ્તન્દુલૈ
ર્નગર આલિખત=શ્વયત સ્વસ્તિકાધાકારૈ શ્ચિત્રયતેત્યર્થ । તસ્ય લિખિતચિત્રસ્ય
ઉત્પન્ન હુણ પચ વર્ણ કે પુષ્પોં કો લાક્ષર ઉપસ્થિત કરો ।

(જાવ સિરિદામ ગઢે ઓલટિ) તથા એક વઢા મારી શ્રી દામકાન્ડ-
વહુત વઢી લચી પુષ્પમાલા-મી લાના । જો પાટલ (ગુલાબ) આદિ પુષ્પોં
સે ગુથા હુઆ હો ઓર જિસ મેં સે નામિકા કો તૃપ્તિ કરને બાલી
સુગંધ નિકલ રહી હો । ડસ મન્ડપ કે ઠીક ધીચો ધીચ ઉપર તને હુણ
ચદરવામે ઉસે લટકા દેના । ડસ તરહ રાજાકો આજ્ઞાનુસાર ડન કૌટુ
મ્બિક પુરુષો ને સઘ કાર્ય કર દિયા શ્રીદામ કાન્ડ કો વરા ઉપર ચદરવા
મેં લટકા દિયા । (તણ સે રુપ્પી કુણાલાહિવર્દ સુવન્નગારસેણિ સદા
વેદ, સદાવિત્તા એવ વયાસી સિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા ! રાયમગમો
ગાઠસિ પુષ્પમન્ડવસિ ણાણાવિહ પચવર્ણેહિં તદુલેહિં નગર આલિહહ)
ડસ કે બાદ ડસ કુણાલાધિપતિ રુક્મી રાજા ને સુનારોં કો બુલાયા-
ઓર બુલા કર ડનસે એસા કહા હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ શીઘ હો

જળ તેમજ સ્થળના પચવર્ણના પુષ્પો લાવો.

(જાવ સિરિદામગઢે ઓલટિ) તેમજ એક મોટો શ્રીદામકાન્ડ-મોટી
પુષ્પમાલા-પણ સાથે લાવો તે શ્રીદામકાન્ડ ગુલાબ વગેરે પુષ્પોથી ગુથાએલો
તેમજ નામિકા તૃપ્ત થાય તેવી સુવાસવાળો હોવો. બોધએ તેને મન્ડપની
બરોબર વચ્ચે ઉપર તાણવામા આવેલા ચદરવામા લટકાવશે આ પ્રમાણે
રાજાની આજ્ઞા સાલળીને તે રાજ પુરુષોએ તેમની આજ્ઞા પ્રમાણે જ કામ પુર
કરી આશુ શ્રીદામકાન્ડને અધવચ્ચે ચદરવામા લટકાવ્યો.

(તણ સે રુપ્પી કુણાલાહિવર્દ સુવન્નગારસેણિ સદાવેદ, સદાવિત્તા એવ
વયાસી સિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા ! રાયમગમોગાઠસિ પુષ્પમન્ડવસિ ણાણા
વિહ પચવર્ણેહિં તદુલેહિં નગરઆલિહહ)

ત્યારપછી કુણાલાધિપતિએ મોનીઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને કહ્યું--

बहुमध्यदेशभागे पट्टक रचयत, रचयित्वा यावत् प्रत्यर्पयन्ति । हे स्वामिन् ! यथा देवेन समादिष्ट तथा सर्वं साधितमस्माभिरित्येव ते कथयन्ति स्मेत्यर्थः । ततस्तदनन्तरं खलु स रुक्मी कुणालाधिपतिर्हस्तिस्कन्धवरगतः=गजस्कन्धोपरि वरासने विराजमान, 'चाउरगिणीए' चतुरङ्गिण्या गजाश्वरथपदातिरूपया 'सेणाए' सेनया 'महया भडचडगडपहयरविंदपरिक्खित्ते' महामटचडगरपहयरवृन्दपरिक्षिप्तः महामटानां चडगरः विच्छर्दः समर्दः अन्यजनदुष्पवेश्य' तथाविधो यः पहयरः समुदायस्तस्थ वृन्द=समूहः तेन परिक्षिप्तः=परिवृतः, 'चडगर' इति 'पहयर' इति च देशीयः शब्दः समूहार्थवाचकः । अतः पुरपरिहारसपरिवृतः सुबाहु=सुबाहु-राजमार्ग के समीप बने हुए पुष्प मडप में अनेक रंगों से रंगे हुए चावलो से नगर की रचना करो ।

(तस्स बहुमज्झदेशभाए पट्टय रहेय) उसने ठीक बीचो बीच में एक पट्टक बनाओ—(रएइत्ता जाव पच्चप्पिणाति) पट्टक बनाकर उन-लोगों ने राजा को इसकी पीछे खबर कर दी—उन्होंने कहा स्वामी ! जैसा कार्य करने के लिये आपने आज्ञा प्रदान की थी—वैसाही सब काम हमने कर दिया है इस प्रकार की राजा को सूचना कर दी—(तएणं से रुप्पी कुणालाहिर्वई हत्थि खधवरगए चाउरगिणीए सेणाए महया भडचडगर पहयरविंदपरिक्खित्ते अतेउरपरियालसपरिवुडे सुबाहु दारिय पुरओ कट्टु जेणेव रायमग्गे जेणेव पुप्फमडवे तेणेव उवागच्छइ) इस के बाद वे कुणालाधिपति रुक्मी राजा हाथी पर बैठ कर चतुरगिणी सेना के साथ २ महाभटों के समूह से कि जिस से भीतर और कोई दूसरा

“ हे देवानुप्रियो ! तमे सत्वरं राजभागांनी पामे जनाववामा आवेला पुष्प-मडपमा अनेउ रंगथी रंगावेल्ला योआया नगरनी रचना करे।

(तस्स बहुमज्झ देशभाए पट्टय रहेय) तेनी जरेणर अधवन्थे जेउ पट्टक जनावो (रएइत्ता जाव पच्चप्पिणाति) आ प्रमाणे पट्टक जनावीने तेजोअे राजाने सूचना करी के हे स्वामी ! जे प्रमाणे काम करवानी तमे अभने आशा आपी छती ते प्रमाणे अधु अमे तैयार करी दीधु छे

(तएण से रुप्पी कुणालाहिर्वई हत्थि खधवरगए चाउरगिणीए सेणाए महया भडचडगरपहयरविंदपरिक्खित्ते अहे उरपरियालसपरिवुडे सुबाहु दारिय पुरओ कट्टु जेणेव रायमग्ग जेणेव पुप्फमडवे तेणेव उवामच्छइ)

त्यार पछी ते कुणालाधिपति रुक्मी राजा हाथी उपर सवार थधने चतुरगिणी सेनानी साथे साथे जेमा डोछपणु चेमी गडे नहि तेवा भडा

નામ્ની દારિકા=પુત્રી, પુરત અગ્રે કૃત્વા યગૈર રાજમાર્ગે યગૈર પુષ્પમણ્ડપમ્તગૈ-
 વોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય હસ્તિસ્કન્ધાત્ પ્રત્યરોહતિ=પ્રત્યરતરતિ, પ્રત્યવસ્થા
 પુષ્પમણ્ડપમનુપ્રવિશતિ, અનુપ્રવિશ્ય સિંહાસનવરગતઃ 'પુરત્યાભિમુહ' પૌરસ્ત્યામિ
 મુખઃ પૂર્વદિશ્મુખઃ, 'સન્નિસન્ને' સન્નિપણ્ણઃ=ઉપવિષ્ટ । તતસ્તદનન્ર 'તાઓ'
 તાઃ, 'અતેઉરિયાઓ' અન્ત પુરવાસિન્વો વનિતા સુગાહુદારિકા પટ્ટકે 'દુરુહેતિ'
 દુરોહતિ=આરોહયન્તિ ઉપવેશયન્તીત્યર્થઃ । દુરુહ=આરોહ્ય શ્વેતપીતકૈઃ=રાજતસૌવર્ણેઃ
 કલ્પશૈ સ્નપયન્તિ,સ્નપયિત્વા સર્ગાલદ્વારવિભૂષિતા કુર્વન્તિ, કૃત્વા=ભૂષયિત્વા, પિતુઃ
 પાદૌ વન્દિતુમુપનયન્તિ તત સલુ સુગાહુદારિકા યગૈર રુક્મી રાજા તર્ગૈવોપાગ

મનુષ્ય ઘુસ નહીં સકતા હૈ તયા અન્ત પુર સે પરિઘૂત હોતે હુણ અપની
 પુત્રી સુગાહુદારિકા કો આગે કરકે જહાં રાજમાર્ગ કે સમીપ પુષ્પમંડપ
 થનાં હુઆ થા વર્હા આવે । (ઉવાગચ્છિત્તા હત્તિસ્વધાઓ પચ્ચોરુહહ,
 પચ્ચોરુહિત્તા પુષ્પમંડવ અણુપવિમ્મહ-અણુવિસિત્તા સીંહાસનવરગણ
 પુરત્યાભિમૂહે સન્નિમન્ને) વહા આકર વે દાથી કે સ્કથ સે નીચે ઉતરે ।
 ઉતર કર પુષ્પ મંડપ મેં ઉપવિષ્ટ હુણ । વહા જાકર વે પૂર્વદિશા કી તરફ
 મુખ કર કે શ્રેષ્ઠ સિંહાસન પર વૈઠ ગયે । (તર્ણ તાઓ અન્તે ઉરિયાઓ
 સુગાહુદારિય પટ્ટયતિ દુરુહેતિ, દુરુહિત્તા સેયપીયણ્તિ કલસેહિં ણ્હાવેતિ,
 ણ્હાવિત્તા સર્ગાલકારવિભૂસિય કરેતિ-કરિત્તા પિઝ્ઞો પાય વદિઝ
 ઉવર્ણેતિ) હસ કે વાદ ઉન અન્તઃ પુર નિવાસિની સ્ત્રિયોં ને સુગાહુદા-
 રિકા કો પાટ પર ચઢાયા-ઔર ચઢા કરકે-વૈઠા કર કે-ચાદી ઔર
 સુવર્ણ કે શ્વેત પીલે કલશોં સે ઉસે સ્નાન કરાયા-સ્નાન કરાને કે વાદ

ભટોના સમૂહની વચ્ચે તેમજ અન્ત પુરની સાથે પોતાની પુત્રી સુગાહુ દારિકાને
 આગળ રાખીને ત્યાં રાજમાર્ગની પાસે પુષ્પમંડપ હોતો ત્યાં ગયા

(ઉવાગચ્છિત્તા હત્તિસ્વધાઓ પચ્ચોરુહહ, પચ્ચોરુહિત્તા પુષ્પમંડવ અણુપવિસહ
 અણુપવિસિત્તા સીંહાસનવરગણ પુરત્યાભિમુહે સન્નિમન્ને)

ત્યાં આવીને તેઓ હાથીના ઉપરથી નીચે ઉતર્યા ઉતરીને તેઓ પુષ્પ
 મંડપની અંદર ગયા ત્યાં જઈને તેઓ પૂર્વ દિશા તરફ મોં કરીને એક
 ઉત્તમ આસન ઉપર બેસી ગયા

(તર્ણ તાઓ અતેઉરિયાઓ સુગાહુદારિય પટ્ટયતિ દુરુહેતિ દુરુહિત્તા સે
 યપીયણ્તિ કલસેહિં ણ્હાવેતિ, ણ્હાવિત્તા સર્ગાલકાર વિભાસિય કરેતિ કરિત્તા વિઝ્ઞો
 પાય વદિઝ ઉવર્ણેતિ)

ત્યારબાદ રણુવાસની સ્ત્રીઓએ સુગાહુ દારિકાને પટ્ટક ઉપર ચઢાવી અને
 તેના ઉપર બેસાડીને ચાદી તેમજ સોનાના સફેદ અને ગીળા પ્રત્યંગોની નેને

च्छति, उपागत्य पादग्रहण करोति । तत खलु स रुक्मीराजा सुबाहुदारिकामङ्के= उत्सङ्गे निवेशयति, निवेश्य सुबाहुदारिकाया रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च यावद् विस्मितः= आश्चर्य प्राप्तः, वर्षधर=वर्षधरपुरुष अन्तः पुररक्षक पण्डपुरुष शब्दयति= आह्वयति, शब्दयित्वा एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्=उक्तवान्- हे देवानुमिय ! त्व खलु मम दौत्येन=दूतो भूत्वा बहूनि ग्रामाकरनगरगृहाणि अनुप्रविशसि, तद् तम्माद्बृहि-अस्मिन्चापि त्वया कस्यचिद् राज्ञो वा ईश्वरस्य वा व्यवहारिणो वा मार्थग्राहस्य वा श्रिणो वा कुत्रचिद् ईदृश मज्जनक दृष्टपूर्व, फिर उसे समस्त अलकारो से विभूषित किया-विभूषित करके फिर वे उसे पिता के चरणों की वदना करने के लिये ले चली ।

(तएण सुबाहुदारिया जेणेव रूपी राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहण करेइ, तएण से रूपी राया सुबाहु दारिय अके निवेसेइ, निवेसित्ता सुबाहुदारियाए हवेण य जो० लाव० जाव विम्हिए वरिसधर सदावेइ) सुबाहु दारिका भी जहा रुक्मी राजा विराजमान थे-वहा आई वहां आकर के उसने पिता के चरणों में नमन किया इस के बाद राजाने उस सुबाहुदारिका को उठाकर अपनी गोद में बैठालिया बैठाकर उस सुबाहुदारिका के रूपसे यौवन से और लावण्य से विस्मित हुए उन राजा ने वर्षधर अत पुर के रक्षक नपुमक-कचुकी को बुलाया (सदावित्ता एव वयासी-तुमण्ण देवाणुप्पिया । मम दोच्चेण वहरिणि गामागरनगरगिहाणि अणुपविससि, त अत्थियाह ते कस्सइ

नवडावी, नवडावीने तेने अधा धरेण्णाओथी शणुगारी, शणुगारीने तेओ तेने पिताना यरहोना वदन भाटे लव गध

(तएण सुबाहु दारिया जेणेव रूपीराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहण करेइ, तएण से रूपीराया सुबाहुदारिय अके निवेसेइ, निवेसित्ता सुबाहुदारियाए हवेण य जो० लाव० जाव विम्हिए वरिसधर सदावेइ)

सुबाहु दारिका पणु नया रुक्मी राजा ओहा उता त्या आवी आवीने तेणे पिताना यरहोमा वदन उर्या त्यारणाव राजाओ सुबाहु दारिकाने उहा वीने पोताना ओणाभा ओमाडी दीधी ओमाडीने सुबाहु दारिकाना रूप, यौवन अने लावण्यथी विस्मय पावेला राजाओ वर्षधर शणुवामना रक्षक नपुसक-कचुकीने ओलाव्या

(सदावित्ता एव वयासी तुमण्ण देवाणुप्पिया । मम दोच्चे ण वहरिणि गामागरनगर गिहाणि अणुपविससि, त अत्थिया ते कस्सइ रणो वा इसरस्स वा कहि

यादृश खलु अस्याः सुबाहुदारिकाया मञ्जनकम् ? । यतस्तदनन्तर खलु स वर्ष
 धरः=अन्तःपुररक्षकः पण्डपुरुषः, रुक्मिण करतलपङ्क्तिगृहीत गिर आवर्त दक्षनस्व
 मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-एव खलु हे स्वामिन् ! अहम् अन्यदा=अन्य-
 स्मिन् समये युष्माकं दीत्येन=दूतो भूत्वा मिथिग राजधानीं प्रतिगतः, तत्र खलु
 मया कुम्भरस्य राज्ञो दृष्टितु=पुत्र्याः प्रभावत्या देव्या प्रभावतीदेव्या आत्म
 जायाः=अज्ञजातायाः मल्लयाः=मल्लीनाम्न्याः, विदेहराजपरमन्यकायाः यद् मञ्ज-
 नकं दृष्ट, तस्य खलु मञ्जनकस्य=मल्लीमञ्जनकस्य, इदं सुबाहुदारिकाया मञ्जनक
 शतसहस्रतमामपि=लक्षामपि कला=गोनाया अशु 'न अग्नेइ' नार्हति, न प्राप्नोती

रन्नो वा इसरस्स वा कहिं चि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुब्बे जारिसएण
 इमीसे सुबाहुदारियाण मज्जणए) बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानु
 प्रिय ! तुम हमारे दूत होकर अनेकग्रामों में आकरो में नगरों एव घरों
 में जाते रहते हो, तो कहो तुमने पहिले ऐसा स्नपन महोत्सव कही किसी
 राजा का किसी ईश्वर का किसी व्यवहारी का किसी सार्धवाहक अथवा
 किसी श्रेष्ठी का देखा है जैसा कि इस सुबाहु दारिका का यह हुआ है ।

(तएण से वरिसधरे रुप्पि करयल० एव वयासी-एव खलु सामी
 अह अन्नया कयाइ तुब्भेण दोच्चेण मिहिल गए, तत्थण मए कुम्भकस्स
 रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मज्जणए
 दिट्ठे, तस्स ण मज्जणगस्स इमे सुबाहुदारियाण मज्जणए सयसहस्स
 इमपि कल न अग्घेइ) ऐसा सुनकर उस वर्ष धरने दोनो हाथों की
 अञ्जलि बनाकर और उसे मस्तक पर चढ़ाकर रुक्मी राजा से इस

चि एयारिसए मज्जणए दिट्ठ पुब्बे जारिसए ण इमीसे सुबाहुदारियाए मज्जणए

जोलावीने तेमणे आ प्रभाणे कह्यु—“ हे देवानुप्रियो ! तमे अमारा
 हतना इपमा धर्या आभो, आकारो, नगरो अने धरोमा अवर-जवर करता रहे
 छे। तो अतावे के तमे पहिला अवे। सुबाहु दारिका जेवो स्नपन महोत्सव के।
 राजा, ईश्वर, के। व्यवहारी, के। सार्धवाह अथवा के। श्रेष्ठीने त्या जेथे छे ?

(तएण से वरिसधरे रुप्पि करयल० एव वयासी-एव खलु सामी ! अह
 अन्नया कयाइ तुब्भेण दोच्चेण मिहिल गए तत्थ ण मए कुम्भकस्स रन्नो धूयाए
 पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेह रायकन्नगाए मज्जणए दिट्ठे, तस्स ण
 मज्जणगस्स इमे सुबाहुदारियाए मज्जणए सयसहस्स इमपि कल न अग्घेइ)

आ प्रभाणे सालणीने ते वर्षधरे अने डायनी अजली अनावीने तेने
 मस्तके भूझीने रुक्मी राजने कह्यु हे हे स्वामी ! हे के। वयत तमारा इत

त्यर्थः । ततस्तदनन्तरं खलु स रुक्मी राजा वर्षधरस्य=वर्षधर पुरुषस्यान्तिके=समीपे
' एयमदृष्टु ' श्रुत्वा निगम्य ' सेस तद्देव ' शेष तथैव-शेषवृत्तान्तं चन्द्रच्छायनृप
वद् बोध्यमित्यर्थः । तथाचायं सम्बन्धः- स रुक्मी-त वर्षधर प्रत्येवमवादीत्-
हे देवानुप्रिय ! कीदृशी मल्ली वर्तते, तदा वर्षधर आह-नो खलु अन्या कापि
तादृशी देवकन्या वा यावत् यादृशी खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या, अत्र यावच्छ
वदेनासुरनागयक्षगन्धर्वादि कन्यकाः संग्राह्या, ततः खलु स रुक्मी वर्षधरपुरुष

प्रकारं कथा-हे स्वामिन् । मे किम्भी समयं आपका दूतं होकर मिथिला
नगरी गयी हुआथा-वहा मैने कुभक राजा की पुत्री कि जो प्रभावती
की कुक्षि से अवतरित हुई हे मल्ली कुमारी का जो विदेह राजा की
पुत्रियों में सर्वोत्तम है जैसा स्नान महोत्सव देखा उसके समक्ष यह
सुबाहुदारीका का मज्जनोत्सव लक्षाश-लाखमें अश को भी प्राप्त नहीं
कर सकता है । (तएण से रूपी राया वरिसवरस्स अतिए एयमदृष्टु
सोच्चा णिसम्म सेस तद्देव मज्जणगजणितहासे दूत सदावेद, सदा-
वित्ता एव वयासी जाव जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए)
इस के बाद रुक्मी राजाने जब वर्षधर (कचुकी पुरुष) के
मुख से ऐसी बात सुनी तो उसका विचार कर उसने चन्द्रच्छाय राज
की तरह अर्थात् राजा ने वर्षधरसे मल्ली कुमारी के विषय में अपनी
जिज्ञासा प्रकट की-पूछा वह कैसी है-तब वर्षधर ने उस से कहा-हे
देवानुप्रिय ! क्या कहें-जैसी वह है ऐसी तो कोई भी कन्या नहीं है-न
ऐसी कोई देव कन्या है न कोई असुर कन्या है, न कोई नाग कन्या है,

तरीके मिथिला नगरीमा गये। हुते। त्या मे प्रभावतीना गर्भथी जन्मेली
विदेह राजनी अधी पुत्रीओमा श्रेष्ठ दुल्ल राजनी पुत्री मल्ली कुमारीना
जेयो स्नान महोत्सव जेयो तेनी मांमे सुभाहु दारिकाने। स्नान महोत्सव
लक्षारा पणु उही शकय तेम नथी

(तएण से रूपीराया वरिसवरस्स अतिए अयमदृष्टु सोच्चा णिसम्म सेस तद्देव
मज्जणगजणितहासे दूत सदावेद, सदावित्ता एव वयासी जाव जेणेव महिला
नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

रुक्मी राजाओ वयादे वर्षधर (उचुकी पुरुष) ना भुजेथी आ प्रभाओ
वात सावणी त्यादे तेना विषे विचार करीने तेओ चन्द्रच्छाय राजनी जेम
ओरले के राजाओ वर्षधरने मल्ली कुमारीना सणधमा पोतानी छिछा जणु-
वता उछु के ते केवा छे ? त्यादे जवाणमा वयधरे उछु के छे देवानुप्रिय !
शु उछु ? जेवी ते कन्या छे तेवी तो कोर पणु नथी ओवी के। नथी देवकन्या

यादृश खलु अस्याः सुबाहुदारिकाया मज्जनकम् ? । यतस्तन्मन्तर खलु स वर्ष
 धरः=अन्तःपुररक्षकः पण्डपुरुषः, रत्रिमण करतलपनिगृहीत गिर आवर्त दक्षनस्य
 मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-एव खलु हे स्वामिन् ! अहम् अन्यदा=अन्य-
 स्मिन् समये शुष्मात् दौत्येन=दूतो भूत्वा मिथिन् राजधानीं प्रतिगतः, तत्र सख्य
 मया कुम्भारस्य राज्ञो दुहितु=पुत्र्याः प्रभावत्या देव्या प्रभारतीदेव्या आत्म-
 जायाः=अङ्गजातायाः मल्लयाः=मल्लीनाम्न्याः, विदेहराजपरमन्यकायाः यद् मज्ज-
 नकं दृष्ट, तस्य खलु मज्जनकस्य=मल्लीमज्जनकस्य, इदं सुबाहुदारिकाया मज्जनक
 शतस्रहसतमामपि=अक्षामपि कन्या=शोभाया अश 'न अग्नेइ' नार्हति, न प्राप्नोती

रक्षो वा हसरस्स चा कहिं चि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुव्वे जारिमएण
 इमीसे सुबाहुदारियाण मज्जणए) बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानु
 प्रिय ! तुम हमारे दूत होकर अनेकग्रामों में आकरो में नगरों एव घरों
 में जाते रहते हो, तो कहो तुमने पहिले ऐसा स्नपन महोत्सव कही किसी
 राजा का किसी ईश्वर का किसी व्यवहारी का किसी सार्धवाहक अथवा
 किसी श्रेष्ठी का देखा है जैसा कि इस सुबाहु दारिका का यह हुआ है ।

(तएण से वरिसधरे रुप्पि करयल० एव वयासी-एव खलु सामी
 अह अन्नया कयाइ तुब्भेण दोच्चेणं मिहिल गए, तत्थण मए कुम्भकस्स
 रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मज्जणए
 दिट्ठे, तस्स णं मज्जणगस्स इमे सुबाहुदारियाण मज्जणए सयसहस्स
 इमपि कल न अग्घेइ) ऐसा सुनकर उस वर्ष धरने दोनों हाथों की
 अञ्जलि बनाकर और उसे मस्तक पर चढ़ाकर रुक्मी राजा से इस

चि एयारिसए मज्जणए दिट्ठ पुव्वे जारिसए ण इमीसे सुबाहुदारियाए मज्जणए

जोलावीने तेमण्णे आ प्रभाण्णे उह्यु—“ हे देवानुप्रियो ! तमे अमार
 इतना उपमा धन्यु आभो, आकाशे, नगरे अने धरोमा अवर-ज्वर करता रहे
 छे। तो अतावे के तमे पहिला अवे। सुबाहु दारिका जेवे स्नपन महोत्सव के।
 राजा, ईश्वर, के। व्यवहारी, के। सार्धवाह अथवा के। श्रेष्ठीने त्या जेथे छे ?

(तएण से वरिसधरे रुप्पि करयल० एव वयासी-एव खलु सामी ! अह
 अन्नया कयाइ तुब्भेण दोच्चेण मिहिल गए तत्थ ण मए कुम्भकस्स रन्नो धूयाए
 पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेह रायकन्नगाए मज्जणए दिट्ठे, तस्स ण
 मज्जणगस्स इमे सुबाहुदारियाए मज्जणए सयसहस्सइमपि कल न अग्घेइ)

आ प्रभाण्णे सालणीने ते वर्षधरे ण ने डायनी अजली अनावीने तेने
 मस्तके भूझीने रुक्मी राजाने उह्यु हे हे स्वामी ! हे के। वयत तमार इत

मूलम्—तेणं कालेण तेणं समएण कासी नाम जणवए होत्था
तत्थ ण वाणारसी नाम नयरी होत्था, तत्थ णं सखे नाम
कासी राया होत्था, तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए
अन्नया कयाइ तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधी विसघ-
डिए यावि होत्था, तएण से कुभए राया सुवन्नगारसेणिं स-
दावेइ, सदावित्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया । इमस्स
दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधिं सघाडेह, तएणं सा सुवन्नगा-
रसेणी एयमट्ठ तहत्ति पडिसुणेइ २, पडिसुणित्ता त दिव्वं
कुडलजुयल गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवन्नगारभिसियासु णिवेसेइ,
णिवेसित्ता बहूहि आएहि य जाव परिणामेमाणा इच्छइ, तस्स
दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधि घडित्तए, नो चेवणं सचाएइ
सघडित्तए, तएणं सा सुवन्नगारसेणी जेणेव कुभए तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० वद्धावेत्ता एव वयासी—एव
खलु सामी । अज्ज तुब्भे अम्हे सदावित्ता जाव सधि सघाडेत्ता
एयमाण पच्चप्पिणह, तएण अम्हे त दिव्व कुडलजुयल गिण्हामो
जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ जाव नो सचाएसो सघाडित्तए,
तएण अम्हे सामी । एयस्स दिव्वस्स कुडलस्स अन्न सरिसय
कुडलजुयल घडेमो, तएण से कुभए राजा तीसे सुवन्नगारसेणीए
अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते तिवलियभिउडी नि-
डाले साहट्ठ एव वयासी—से केण तुब्भे कलायाण भवह ?
जे ण तुब्भे इमस्स कुडलजुयलस्स नो सचाएह सधिं सघा-

સત્કારયતિ, સન્માનયતિ, સત્કૃત્ય સમાન્ય પ્રતિવિસર્જયતિ, તતઃ સઽ સ રુક્મી
 કુણાલાધિપતિઃ—મજ્જનજનિતર્પ્પઃ = મત્લીમજ્જનકગુણશ્રવણમજાત તદ્વિષયકા-
 રાગઃ સન્ દૂત શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્—યાત્ અત્ર યાત્રત્કરણાદિદં
 દ્રષ્ટવ્યમ્ । હે દેવાનુપ્રિય ! શીઘ્રમેવ મિથિલાં રાજધાનીં ગત્વા કુંભક રાજાન
 બ્રૂહિ—‘ રુક્મી કુણાલદેશાધિપતિસ્તવ મન્યકા મહ્યો વાઙ્મતિ ’ ઇત્યાદિ । તત
 સ્વલુ રુક્મિણ આદેશાનુસારેણ સ દૂતો રચાસ્તઃ સન્ યત્રેવ મિથિલાનગરી, તત્રૈવ
 પ્રાધારયદ્ ગમનાય = ગન્તુ મવૃત્તઃ । ઇતિ તૃતીયસ્ય રુક્મિણો રાજઃ સમ્બધ
 કથિત ॥ સૂ. ૨૫ ॥

ન કોઈ યક્ષ કન્યા હૈ, ન કોઈ ગન્ધર્વ કન્યા હૈ આદિ ૨ ।

ऐसा वर्षधर से सुनकर रुक्मी राजा ने वर्षधर का सत्कार किया
 सन्मान किया । सत्कार सन्मान करके फिर उसे अपने पास से विस-
 र्जित कर दिया । बाद में कुणाल देशाधिपति उन रुक्मी राजा ने मल्ली
 कुमारी के मज्जनोत्सव तथा गुणों के श्रवण से हर्षित और उस कुमारी
 में अनुक्त चित्त हो कर दूत को बुलाया-बुलाकर फिर उससे ऐसा
 कहा-हे देवानुप्रिय ! तू म यहा से शीघ्र ही मिथिला राजधानी को जाओ
 और जाकर कुंभक राजा से कहो कि कुणाल देशाधिपति रुक्मी राजा
 तुम्हारी कन्या मल्ली कुमारी को चाहते हैं । इत्यादि

इस तरह अपने स्वामी की आज्ञा प्राप्त कर वह दूत रथ पर सवार
 हो जहा मिथिला नगरी थी उस ओर प्रस्थित हो गया । यह तृतीय
 राजा रुक्मी का संबध कहा गया है । सूत्र “ २५ ”

કે નથી અસુર કન્યા કે નથી યક્ષ કન્યા કે નથી ગન્ધર્વ કન્યા, વગેરે

આ રીતે વર્ષધરની વાત સાંભળીને રુક્મી રાજાએ વર્ષધરનો સત્કાર
 કર્યો અને સન્માન કર્યું સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમને પોતાની પાસેથી
 વિદાય કર્યા ત્યારપછી કુણાલ દેશાધિપતિ રુક્મી રાજાએ મત્લી કુમારીના
 મજ્જનોત્સવ તેમજ ગુણોના શ્રવણથી હર્ષિત તથા તે કુમારીમા અતુરક્ત ચિત્ત
 વાળા થઈને હૃતને બોલાવ્યો હૃતને બોલાવીને તેને કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિય ! તમે
 અહીંથી સત્વરે મિથિલા રાજધાનીમા જાઓ અને જઈને કુંભક રાજાને કહો કે
 કુણાલ દેશાધિપતિ રુક્મી રાજા તમારી કન્યા મલ્લી કુમારીને યાહે છે વગેરે

આ પ્રમાણે પોતાના સ્વામીની આજ્ઞા મેળવીને હૃત રથ ઉપર સવાર
 થઈને મિથિલા નગરી તરફ રવાના થયો આ રીતે તૃતીય રાજા રુક્મીનો સંબધ
 કહેવામા આવ્યો છે ॥ સૂત્ર ॥ ૨૫ ॥

मूलम्—तेणं कालेण तेणं समएण कासी नाम जणवए होत्था
तत्थ ण वाणारसी नाम नयरी होत्था, तत्थ णं सखे नाम
कासी राया होत्था, तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए
अन्नया कयाइ तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधी विसघ-
डिए यावि होत्था, तएण से कुभए राया सुवन्नगारसेणिं स-
दावेइ, सदावित्ता एवं वयासी—तुव्भे णं देवाणुप्पिया । इमस्स
दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधि सघाडेह, तएणं सा सुवन्नगा-
रसेणी एयमट्ठ तहत्ति पडिसुणेइ २, पडिसुणित्ता त दिव्वं
कुडलजुयल गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवन्नगारभिसियासु णिवेसेइ,
णिवेसित्ता वहूहि आएहि य जाव परिणामेमाणा इच्छइ, तस्स
दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधि घडित्तए, नो चेवणं सचाएइ
सघडित्तए, तएण सा सुवन्नगारसेणी जेणेव कुभए तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० वद्धावेत्ता एव वयासी—एव
खलु सामी । अज्ज तुव्भे अम्हे सदावित्ता जाव सधि सघाडेत्ता
एयमाण पच्चप्पिणह, तएण अम्हे त दिव्व कुडलजुयल गिण्हामो
जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ जाव नो सचाएमो सघाडित्तए,
तएण अम्हे सामी । एयस्स दिव्वस्स कुडलस्स अन्न सरिसय
कुडलजुयल घडेमो, तएण से कुभए राजा तीसे सुवन्नगारसेणीए
अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते तिवलियभिउडी नि-
डाले साहट्ठ एव वयासी—से केण तुव्भे कलायाण भवह ?
जे ण तुव्भे इमस्स कुडलजुयलस्स नो सचाएह सधि सघा-

सत्कारयति, सम्मानयति, सत्कृत्य समान्य प्रतिपि सज्जयति, ततः स दूत रुक्मी
कुणालाधिपति.—मज्जनजनितर्पणः = मल्लीमज्जनकगुणश्रवणसजात तद्विषयका-
रागः सन् दूत शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—यावत् अत्र यावत्करणादिद
द्रष्टव्यम् । हे देवानुप्रिय ! शीघ्रमेव मिथिला राजधानी गत्वा कुम्भक राजान
ब्रूहि—‘ रुक्मी कुणालदेशाधिपतिस्तत्र वन्यका मल्लीं वाञ्छति ’ इत्यादि । तत
खलु रुक्मिण आदेशानुसारेण स दूतो रथासुतः सन् यत्रैव मिथिलानगरी, तत्रैव
प्राधारयद् गमनाय = गन्तु प्रवृत्तः । इति तृतीयस्य रुक्मिणो राज्ञः सम्बन्ध
कथित ॥ सू० २५ ॥

न कोई यक्ष कन्या है, न कोई गन्धर्व कन्या है आदि २ ।

ऐसा वर्षधर से सुनकर रुक्मी राजा ने वर्षधर का सत्कार किया
सन्मान किया । सत्कार सन्मान करके फिर उसे अपने पास से विस
र्जित कर दिया । बाद में कुणाल देशाधिपति उन रुक्मी राजा ने मल्ली
कुमारी के मज्जनोत्सव तथा गुणों के श्रवण से हर्षित और उस कुमारी
में अनुरक्त चित्त हो कर दूत को बुलाया-बुलाकर फिर उससे ऐसा
कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम यहा से शीघ्र ही मिथिला राजधानी को जाओ
और जाकर कुम्भक राजा से कहो कि कुणाल देशाधिपति रुक्मी राजा
तुम्हारी कन्या मल्ली कुमारी को चाहते हैं । इत्यादि

इस तरह अपने स्वामी की आज्ञा प्राप्त कर वह दूत रथ पर सवार
हो जहा मिथिला नगरी थी उस ओर प्रस्थित हो गया । यह तृतीय
राजा रुक्मी का संबध कहा गया है । सूत्र “ २५ ”

के नथी असुर कन्या के नथी यक्षकन्या के नथी गन्धर्व कन्या, वगेरे

आ रीते वर्षधरनी बात साबणीने रुक्मी राजाये वर्षधरने सत्कार
क्यो अने सन्मान क्यु सत्कार तेमज्ज सन्मान करीने तेमने पोतानी चासेथी
विदाय क्यो तयारपणी कुणाल देशाधिपति रुक्मी राजाये मल्ली कुमारीना
मज्जनोत्सव तेमज्ज गुणोना श्रवणथी हर्षित तथा ते कुमारीमा अनुरक्त चित्त
वाणा थधने हतने ओलाव्यो हतने ओलावीने तेने कह्यु-हे देवानुप्रिय ! तमे
अर्द्धथी सत्वर मिथिला राजधानीमा जाओ अने जधने कुलक राजा ने कहे के
कुणाल देशाधिपति रुक्मी राजा तमारी कन्या मल्ली कुमारीने चाहे छे वगेरे

आ प्रमाणे पोताना स्वामीनी आज्ञा मेणवीने हत रथ उपर सवार
थधने मिथिला नगरी तरङ्ग रवाना थयो आ रीते तृतीय राजा रुक्मीने संबध
कहेवामा आव्यो छे ॥ सूत्र ॥ २५ ॥

रायवरकन्ना ? , तएण ते सुवन्नगारा सखराय एव वयासी-
णो खलु सामी । अन्ना काई तारिसिया देवकन्ना वा गधव्व-
कन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेहवररायकन्ना, तएणं
से संखे कूडलजुयलजणितहासे दूय सदावेइ, जाव तहेव
पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २६॥

टीका—अथ चतुर्थस्य शङ्खनामो नृपस्य सम्बन्धप्रस्तावमाह—‘तेणं कालेण’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये काशीनाम जनपद आसीत्, तत्र खलु शङ्खो नाम काशीराज आसीत् । ततस्तदनन्तर खलु तस्या मल्ल्या विदेहराजवरकन्याया, अन्यदा कदाचित्=अयस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, तस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि=सन्धान योजन, ‘विसघडिए’ विसघटितः=त्रुटितश्चाप्यभवत्, ततस्तदा खलु स कुम्भको राजा सुवर्णकारश्रेणि शब्दयति,

‘तेण कालेण तेण समएण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (काशी नाम जनपद होत्था) काशी नाम का देश था (तत्थण वारणा-
रसी नगरी होत्था) उसमें बनारसी नाम की नगरी थी (तत्थण सखे
नाम काशी राया होत्था) उसमें काशी देशाधिपति शख नाम का राजा
रहता था (तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ
तस्स दिव्वस्स कूडलजुयलस्स सधी विसघडिए यावि होत्था) एक
समय की बात है कि उस विदेह राज वर कन्या मल्ली कुमारी के उन
दिव्य कुडलों की सधी टूट गई—उन का जोड़ खुल गया ।

(तएण से कुभए राया सुवन्नगार सेणि सदावेइ सदावित्ता एव

‘तेण कालेण तेण समएण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—‘तेण कालेण तेण समएण’ ते वण्णते (काशी नाम जनपद
होत्था) काशी नामे देश उते । (तत्थण वाराणसी नगरी होत्था) तेभा णना
रस नामे नगरी उती । (तत्थण सखे नाम काशीराया होत्था) तेभा काशी
देशना अधिपति शख नामे राजा रहेते । उते ।

(तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ तस्स दिव्वस्स कु
डलजुयलस्स सधी विसघडिए यावि होत्था)

એક વખતની વાત છે કે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લી કુમારીના દિવ્ય
કુડળોનો સાધનો ભાગ તૂટી ગયો ।

डेतए ? सुवन्नगारे निव्विसए आणावेइ, तएण ते सुवन्नगारा
 कुभेण रण्णा निव्विसया आणत्तासमाणा जेणेव साइर गिहाइ
 तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सभंडामत्तोवगरणमायाए
 मिहिलाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निक्खमंति, निक्खमित्ता
 विदेहस्स जणवयस्स मज्झ मज्झेणं जेणेव कासी जणवए जेणेव
 वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अग्गुज्जा-
 णंसि सगडीसागड मोएति, मोडत्ता महत्थं जाव पाहुड गि-
 ण्हति, गिण्हित्ता वाणारसीए नयरीए मज्झ मज्झेण जेणेव
 कासीराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल० जाव
 एवं वयासी-अम्हेणं सामी ! मिहिलाओ नयरीओ कुभएणं
 रन्ना निव्विसया आणत्तासमाणा इह हव्वमागया त इच्छामो
 णं सामी ! तुब्भ वाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा
 सुहसुहेणं परिवसिउ । तएणं सखे कासीराया त सुवन्नगारे एव
 वयासी-किन्न तुब्भे देवाणुप्पिया ! कुभएणं रन्ना निव्विसया
 आणत्ता ? , तएण ते सुवन्नगारा सख एव वयासी-एव खलु
 सामी ! कुभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए
 मल्लीए कुडलजुयलस्स सधीं विसघडिए, तएणं से कुभए
 सुवन्नगारसेणि सदावेइ, सदावित्ता जाव निव्विसया आणत्ता,
 त एएण कारणेण सामी ! अम्हे कुभएण निव्विसया आणत्ता,
 तएण से सखे सुवन्नगारे एव वयासी-केरिसिया ण देवाणु-
 प्पिया ! कुभगस्सधूया पभावईदेवीए अत्तया मल्ली विदेह

रायवरकन्ना ? , तएण ते सुवन्नगारा सखरायं एव वयासी-
णो खलु सामी । अन्ना काई तारिसिया देवकन्ना वा गंधर्व-
कन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेहवररायकन्ना, तएणं
से संखे कूडलजुयलजणितहासे दूय सदावेइ, जाव तहेव
पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २६॥

टीका—अयं चतुर्थस्य शङ्खनामो नृपस्य सम्बन्धप्रस्तावमाह—‘ तेणं
कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये काशीनाम जनपद आसीत्,
तत्र खलु शङ्खो नाम काशीराज आसीत् । ततस्तदनन्तरं खलु तस्या मल्ल्या
विदेहराजवरकन्याया, अन्यदा कदाचित्=अयस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, तस्य
दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि =सन्धान योजन, ‘ विसघडिए ’ विसघटितः=
त्रुटितश्चाप्यभवत्, ततस्तदा खलु स कुम्भको राजा सुवर्णकारश्रेणिं शब्दयति,

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय
में (काशी नाम जनपद होत्था) काशी नाम का देश था (तत्थण वाणा-
रसी नगरी होत्था) उसमें बनारसी नाम की नगरी थी (तत्थण सखे
नाम काशी राया होत्था) उसमें काशी देशाधिपति शङ्ख नाम का राजा
रहता था (तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ
तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधी विसघडिए यावि होत्था) एक
समय की बात है कि उस विदेह राज वर कन्या मल्ली कुमारी के उन
दिव्य कुडलों की सधी टूट गई—उन का जोड़ खुल गया ।

(तएण से कुभए राया सुवन्नगार सेणिं सदावेइ सदावित्ता एव

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—‘ तेण कालेण तेण समएण ’ ते वप्यते (काशी नाम जनपद
होत्था) काशी नामे देश उतो (तत्थण वाराणसी नगरी होत्था) तेभा बनार-
सी नामे नगरी उती (तत्थण सखे नाम काशीराया होत्था) तेभा काशी
देशना अधिपति शङ्ख नामे राजा रहितो उतो ।

(तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ तस्स दिव्वस्स कु
डलजुयलस्स सधी विसघडिए यावि होत्था)

એક વખતની વાત છે કે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લી કુમારીના દિવ્ય
કુડળોનો સાધાનો ભાગ તૂટી ગયો ।

डेत्तए ? सुवन्नगारे निव्विसए आणावेइ, तएणं ते सुवन्नगारा
 कुभेणं रण्णा निव्विसया आणत्तासमाणा जेणेव साइर गिहाइ
 तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सभंडामत्तोवगरणमायाए
 मिहिलाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निक्खमति, निक्खमित्ता
 विदेहस्स जणवयस्स मज्झ मज्झेणं जेणेव कासी जणवए जेणेव
 वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अग्गुज्जा-
 णंसि सगडीसागड मोएति, मोइत्ता महत्थं जाव पाहुड गि-
 ण्हति, गिण्हित्ता वाणारसीए नयरीए मज्झ मज्झेण जेणेव
 कासीराया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल० जाव
 एवं वयासी-अम्हेणं सामी ! मिहिलाओ नयरीओ कुभएणं
 रन्ना निव्विसया आणत्तासमाणा इह हव्वमागया त इच्छामो
 णं सामी ! तुब्भ वाहुच्छायापरिग्गहिया निव्वभया निरुव्विग्गा
 सुहंसुहेणं परिवसिउ । तएणंसखे कासीराया त सुवन्नगारे एव
 वयासी-किन्न तुब्भे देवाणुप्पिया । कुभएणं रन्ना निव्विसया
 आणत्ता ? तएण ते सुवन्नगारा सख एव वयासी-एव खलु
 सामी ! कुभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए
 मल्लीए कुडलजुयलस्स संधीं विसघडिए, तएणं से कुभए
 सुवन्नगारसेणि सदावेइ, सदावित्ता जाव निव्विसया आणत्ता,
 त एएणं कारणेण सामी ! अम्हे कुभएण निव्विसया आणत्ता,
 तएणं से सखे सुवन्नगारे एव वयासी-केरिसिया ण देवाणु-
 प्पिया ! कुभगस्सधूया पभावईदेवीए अत्तया मल्ली विदेह

रायवरकन्ना ? , तएण ते सुवन्नगारा सखराय एव वयासी-
णो खलु सामी । अन्ना काई तारिसिया देवकन्ना वा गंधव-
कन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेहरायकन्ना, तएणं
से संखे कूडलजुयलजणितहासे दूयं सदावेइ, जाव तहेव
पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २६॥

टीका—अथ चतुर्थस्य शङ्खनामो नृपस्य सम्बन्धप्रस्तावमाह—‘तेणं
कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये काशीनाम जनपद आसीत्,
तत्र खलु शङ्खो नाम काशीराज आसीत् । ततस्तदनन्तर खलु तस्या मल्ल्या
विदेहराजवरकन्याया, अन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, तस्य
दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि=सन्धान योजन, ‘विसघडिए’ विसघटितः=
व्रुटितश्चाप्यभवत्, ततस्तदा खलु स कुम्भको राजा सुवर्णकारश्रेणिं शब्दयति,

‘तेण कालेण तेण समएण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय
में (काशी नाम जणवए होत्था) काशी नाम का देश या (तत्थण वाणा-
रसी नयरी होत्था) उसमें बनारसी नाम की नगरी थी (तत्थण सखे
नाम काशी राया होत्था) उसमें काशी देशाधिपति शख नाम का राजा
रहता था (तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ
तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधी विसघडिए यावि होत्था) एक
समय की बात है कि उस विदेह राज वर कन्या मल्ली कुमारी के उन
दिव्य कुडलों की सधी टूट गई—उन का जोड़ खुल गया ।

(तएण से कुभए राया सुवन्नगार सेणिं सदावेइ सदावित्ता एव

‘तेण कालेण तेण समएण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—‘तेण कालेण तेण समएण’ ते वप्पते (काशी नाम जणवए
होत्था) काशी नामे देश उते। (तत्थण वाराणसी नगरी होत्था) तेभा अन-
रस नामे नगरी उती (तत्थण सखे नाम काशीराया होत्था) तेभा काशी
देशना अधिपति शख नामे राजा रहते। उते।

(तएण तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइ तस्स दिव्वस्स कु
डलजुयलस्स सधी विसघडिए यावि होत्था)

એક વખતની વાત છે કે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લી કુમારીના દિવ્ય
કુડળોનો સાધાનો ભાંગ તૂટી ગયો।

शब्दयित्वा एवमवादीत्-हे देवाणुप्रियाः ! अयं दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं
 'सघाडेह' सघटयत सन्धानं संयोजनं कुरुत ततस्तदा खलु सा सुवर्णकारश्रेणिः
 एतम्=कुण्डलसन्धानकरणरूपम् अर्थ=कार्यं तथाऽग्निरिति कथयित्वा प्रतिशृणोति=
 स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य तद् दिव्यं कुण्डलयुगलं गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव
 'सुवन्नगारभिसियाओ' सुवर्णकारभिसियाः सुवर्णकाराणां वृषिका'=
 आमनानि-उपवेशनस्थानानि तत्रैवोपगच्छति, उपागत्य सुवर्णकारभिसियासु-सुवर्णकारो-
 पवेशनस्थानेषु निविशति=उपविशति निविश्य=उपविश्य, बहुभि' = अनेकविधै
 आयैः=साधनैः यावत्-अत्र यावत्करणात्-उपायैः=प्रयोगैः, स्थितिभि'=
 व्यवस्थाभिरिति बोध्यम् । परिणमयन्ति=पूर्वस्वरूपं सम्पादयन्ति सा सुवर्णकारश्रेणि-
 स्तस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं प्रटयितुमिच्छतीति पूर्वेण सम्बन्धः ।

वयासी तुब्भेण देवाणुप्पिया ! इमस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सन्धिं
 सघाडेह) तव कुम्भक राजा ने सुवर्णकारों को बुलाया और बुलाकर उन
 से ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम लोग इस दिव्य कुडल युगल की
 सधि को जोड़ दो (तएण मा सुवन्नगारसेणी एयमद्वु तहत्ति पडि
 सुणेइ २, पडि सुणित्ता त दिव्व कुडलजुयल गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव
 सुवन्नगारभिसियाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवन्नगार
 भिसियासु णिवेसइ, णिवेसित्ता बह्हिं आप्हिं य जाव परिणामे माणा
 इच्छइ तस्स दिव्वस्स कुडल जुयलस्स सधित्तए) उस सुवर्णकार श्रेणी
 ने कुडलों की सधि को जोड़ने रूप अर्थ को " तथास्तु कहकर स्वीकार
 कर लिया-और वे दोनों दिव्य कुडल राजा के पास से ले लिये । लेकर
 फिर वे सब जहां सुवर्णकारों के बैठने के स्थान थे वहां चले आये ।

(तएण ते कुम्भए राया सुवन्नगारसेणिं सदावेइ सदावित्ता एव वयासी तु
 व्भेण देवाणुप्पिया ! इमस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सन्धिं सघाडेह)

त्यारे कुम्भक राजाએ સોનીઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યું
 કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે આ દિવ્ય કુડળો નો સધિ ભાગ જોડી આપો

(તएण सा सुवन्नगार सेणी एयमद्वु तहत्ति पडिसुणेइ २ पडिसुणित्ता त
 दिव्व कुडलजुयल गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ तेणेव उवाग-
 च्छइ, उवागच्छित्ता सुवन्नगारभिसियासु णिवेसइ, णिवेसित्ता बह्हिं आप्हिं य
 जाव परिणामेमाणा इच्छइ तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधित्तए)

તે સોનીઓએ તથાસ્તુ કહીને કુડળો નો તૂટેલા ભાગને જોડવાની
 આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી અને અને દિવ્ય કુડળો રાજાની પાસેથી તેઓ એ
 લઈ લીધા લીધા પછી તેઓ યજ્ઞ બંધા સોનીઓને યજ્ઞવાના સ્થાન હતા

नो चैव खलु शक्नोति सप्रयितुम् तैः सुवर्णकारैस्तस्य त्रुटितस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि सधटयितुमनेकोपायाः कृताः, परंतु कुण्डल सन्धेर्यथोचित योजनाऽभावात्ते विफलप्रयत्ना अभूवन्निति भावः । ततस्तदनन्तरं खलु सा सुवर्णकारश्रेणिर्यत्रैव कुम्भक-मिथिलाराजः तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिवृहीत शिर आवृतं दशनख मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा=करद्वयं संयोज्य 'वद्धावेत्ता' वर्धयित्वा-'जयजये' ति शब्देनाभिनन्द्य, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे स्वामिन् । एव खलु अद्य यूयमस्मान् शब्दयथ, शब्दयित्वा यावत्=भवद्भिरेव वयमाज्ञप्ताः-'अस्य कु-

आकर उन स्थानों में बैठ गये-बैठकर उन लोगो ने अनेक सावनो से, अनेक उपायों से अनेक व्यवस्थाओं से उस दिव्य कुण्डल के युगल की संधि को जोड़ने की इच्छा की, परन्तु (नो चैवण सचाएड सघडित्तए, तएण सा सुवण्णगारसेणी जेणेव कुमए तेणेव उवागच्छइ) वे उस संधि को प्रयोजित रूप से जोड़ने में समर्थ नहीं हो सके-अतः उन का समस्त प्रयत्न विफल हुआ- । इस तरह विफल प्रयत्न वाले हुए वे लोग जहां मिथिलाधिपति कुम्भक राजा थे-वहां गये उवागच्छित्ता करयळ० वद्धावेत्ता एव वयासी) वहां जाकर उस सुवर्णकार श्रेणी ने दोनों हाथों को जोड़कर राजाको बधाई दी-जय हो विजय हो इस तरह उसका अभिनन्दन किया-बाद में इस प्रकार कहा- (एव खलु सामी ! अज्ज तुब्भे अम्हे सदावेह, सदावित्ता जाव सधि सघाडेत्ता एयमाण पच्चप्पिणह) स्वामिन् । आपने आज हमलोगों को बुलाया था और

त्या आग्या त्या तेओ णेडा अने णेसाने ते दोहाओ जल जलना माधने,
उपायो तेमज् अनेज् जलनी व्यवस्थाओथी णने कुडणोना तूटेला लागने
साधवाना प्रयत्नो उर्या पणु

(नो चैव ण सचाएड सघडित्तए, तएण सा सुवण्णगारसेणी जेणेव कुमए तेणेव उवागच्छइ)

तेओ कुडणोना तूटेला सधिलागने साधवामा समर्थं यथं शक्या
नहि अने तेओना णधा प्रयत्नो निष्फल अन्यथा आ प्रमाणे निष्फल प्रयत्न
वाणा तेओ णधा न्या मिथिलाधिपति कुलक राजा डत्ता त्या गया (उवाग-
च्छित्ता करयळ० वद्धावेत्ता एव वयासी) त्या जधने ते सोनीओओ णने
हाथ जोडी ने राजाने न्यथाओ न्यथाओ आ प्रमाणे ना राण्ढोथी अलि-
नदित्ता कथा अने तयार पछी ठडेवा लाग्या--

एव खलु सामी ! अज्ज तुब्भे अम्हे सदावेह सदावित्ता जाव सधि सघाडेत्ता
एयमाण पच्चप्पिणह)

કુણ્ડલયુગલસ્ય સન્ધિ સઘટયત, સન્ધિ સઘટય=ત્રુટિત સન્ધિ યોજિત્વા-એતામાક્ષાં
 =મમાક્ષિં પ્રત્યર્પયત ' इति, તતઃ સ્વલુ વય તદ્ દિવ્યં કુણ્ડલયુગલ ગૃહીમઃ,
 યત્રૈવ સુવર્ણકારવૃર્ષિકાઃ, યાત્-તત્રૈવોપાગન્ઢામઃ ઉપાગત્ય તત્રોપવિશ્ય વય કુણ્ડલ
 યુગલસ્ય સન્ધિ સઘટયિતુ પ્રયત્ન કૃત્વાત' પરતુ નો શક્તુમઃ સઘટયિતુ સયોજયિ
 તુમ્, તત' તસ્માત્ કારણાત્ સ્વલુ હૈ સ્વામિન્ ! એતસ્ય દિવ્યસ્ય કુણ્ડલસ્યાન્યત્
 સદશ કુણ્ડલયુગલ ઘટયામઃ=સ્વયામ', તતસ્તદનન્તર સ્વલુ સ કુમ્ભમો રાજા તસ્યાઃ
 સુવર્ણકારશ્રેણ્યાઃ સુવર્ણકારસમૂહસ્ય અન્તિકે=સમીપે, એતમર્થ=કુણ્ડલસન્ધિસઘટન

બુલાકર એસા કહા થા કિ તુમ લોગ હસ દિવ્ય કુણ્ડલ યુગલ કી સધિ
 કો કિ જો ટૂટ ગઈ હૈ-સ્વલુ ગઈ હૈ-ઠીક કર દો-જોડ દો-ઑર જોડકર
 હમારી હસ આક્ષિ કો પૂર્ણ કર હસ કી હમૈં સ્વલુ દો (તણ અમ્હે
 ત દિવ્ય કુણ્ડલયુગલ ગિણ્દામો-જેણેવ સુવન્નાગારભિસિયાઓ જાવ
 નો સચાએમો સઘડિત્તણ તણ અમ્હે સામી ! એયસ દિવ્યસ કુણ્ડલસ
 અન્ન સરિસય કુણ્ડલયુગલ ઘટેમો) હમને હસ દિવ્ય કુણ્ડલ યુગલ
 કો લે લિયા થા-ઑર લેકર હમ લોગ જહા સુવર્ણ કારોં કે બેઠ ને કા
 સ્થાન થા-વહા ચલે ગયે થે-વહાં ચેઠકર હમ લોગોં ને અનેક સાધનોં
 દ્વારા, અનેક ઉપાયોં દ્વારા ઑર અનેક વ્યવસ્થાઓં દ્વારા હસ કુણ્ડલ
 યુગલ કી સધિ કો જોડનેકા પ્રયત્ન કિયા-પરન્તુ યથોચિત રૂપસે જોડને
 મૈં હમ લોગ સફલ પ્રયત્ન નહીં હો સકે હૈ-અતઃ હૈ સ્વામિન્ ! આપકો
 આજ્ઞા હો તો હમ હસ દિવ્ય કુણ્ડલકે સમાન ઑર દૂસરા કુણ્ડલ યુગલ
 બના દેતે હૈં-(તણ સે કુમ્ભા રાયાતીસે સુવન્નગારસેળીએ અતિએ એયમટ્ટ

હે સ્વામિન્ તમે આજે અમને બોલાવ્યા હતા અને બોલાવીને કહ્યું
 હતું કે તમે લોકો આ દિવ્ય કુણ્ડલોને સધિ લાગ તૂટી ગયો છે તેને સારો
 કરી આપો, સાધી આપો અને સાધીને અમને ખબર આપો

(તણ અમ્હે ત દિવ્ય કુણ્ડલ યુગલ ગિણ્દામો જેણેવ સુવન્નાગારભિસિયા
 ઓ જાવ નો સચાએમો સઘડિત્તણ તણ અમ્હે સામી ! એયસ દિવ્યસ કુણ્ડલસ
 અન્ન સરિસય કુણ્ડલયુગલ ઘટેમો)

અમે તે કુણ્ડલની જોડને લીધી અને લઈને જ્યાં સોનીઓને બેવસાની
 જ્યાંઓ છે ત્યાં ગયા ત્યાં જોડીને અમે લોકોએ ઘણા સાધનો ઉપયોગને ઘણી
 વ્યવસ્થાઓ વડે આ બંને કુણ્ડલોના તૂટેલા ભાગને સાધવાના પ્રયત્નો કર્યા, પણ
 તેઓને યોગ્ય રીતે સાધવામાં અમે લોકો સક્ષમ થયા નથી, એથી હે સ્વામી !
 આપની આજ્ઞા હોય તો આ દિવ્ય કુણ્ડલોનેવાજ બીજા કુણ્ડલો ધી આપીએ

योग्यताराहित्यरूप श्रुत्या=शब्दत कर्णगोचरीकृत्य, निशम्य=अर्थतोऽवगम्य, 'आसुरुते' आशुरुतः=झटितिक्रोधाविष्टः, 'तिवलिय' त्रिवलिका=रेखात्रयाभिव्यक्ति कारिका, 'भिउडी' भ्रुकुटि वक्रोभूतभ्रुव, ललाटे=भाले सहत्य=प्राप्य-एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-अथ खलु यूय 'कलायाण' कलादाना-कलामाददत इति कलादा' स्वर्णकारास्तेषां के भयं ? न कोऽपीत्यर्थः ये खलु यूयमस्य कुण्डल युगलस्य नो शक्नुथ सन्धिं सघटयितुम् । ये खलु सुवर्णकारास्ते कलामात्र सुवर्णमादाय तद् वित्त्य राजादीना मनोहर कनकमयमाभूषणादिक रचयन्ति यूय तु त्रुटितस्य सुवर्णसन्धेः सवोजनेऽप्यसमर्थाः स्थ तर्हि कलादाकुलोद्भवा यूयमिति कथं

सोच्चा णिसम्म आसुरुते तिवलिय भिउडी निडाले साहट्टु एव वयासी) इम प्रकार उस सुवर्णकार श्रेणी के मुख से इस बात को सुनकर और उसे विचार कर वह कुभरु राजा उस पर झटिति क्रोध से लाल पीली आखों वाला हो गया-और भ्रुकुटि को मस्तक पर चढ़ाकर इस प्रकार बोला (से केण तुव्मे कलायाण भवइ ? जेण तुव्मे इमस्स कुडल जुयलस्स नो सचाएह सधिं सघाडेत्तए ?) जब तुम लोग इस कुडल युगल की सधि को ही नहीं जोड़ सकते हो तो फिर तुम सुवर्णकार कैसे ? जो सुवर्णकार होते हैं वे तो कलामात्र (थोड़ा) भी सोनेका पसार कर ऐसे २ आभूषण उसके बना देते हैं जो राजादिकोके मनको भी हरण कर लेते हैं।

तुम लोग तो दूटे हुए सुवर्ण की सधि को भी जोड़ने में अक्षम बन रहे हो तो फिर कैसे हम तुम्हें सुवर्णकारों के कुलों में उत्पन्न हुआ

तएण से कुभए राया तीसे सुवन्नगारसेणीए अतिए एयमट्टु सोच्चा णि सम्म आसुरुते तिवलिय भिउडी, निडाले साहट्टु एव वयासी)

आ रीते मोनीओना भुजेथी आ वात सासणीने अने ते विषे णरोअर विचारने कुलक राज तेओना उपर भूअअ क्रोधधी लाल पीणा थई गया अने लम्भरो उथी अढावीने आ प्रमाणे उडेवा लाग्या-

(सेकेण तुव्मे कलायाण भवइ ? जेण तुव्मे इमस्स कुडलजुयलस्स नो सचाएह सधिं सघाडेत्तए ?)

तमे आ णने कुडलोना तूटेला सुधिलागने न सधी राकवाभा अम भर्थ छे त्थारे तमे सुवर्णकार कर्छ रीने छे । जेओ सुवर्णकार डाय छे तेओ तो कला मात्र पणु सोनु डाय तेने इलावीने ओवा ओवा धरेणुओ तैयार करी आपे छे के जनाची राजओना मन पणु प्रस न थई जाय छे

तमे दोडो त्थारे तूटेला ओनानो साधो पणु जेडी शक्ता नथी त्थारे अमे तमने सुवर्ण करीना कुणमा जन्मेला क्या आधारे भानी ओ ? (सुव

મન્યે, હિતિ ભાવઃ । તતઃ સ કુમ્ભકો રાજા કિં કૃતવાન્ ? ઇત્યાહ- તે ' ઇત્યાદિ, તાન્ સુવર્ણકારાન્ ' નિવિસપ્ ' નિર્વિપયાન્ સ્વદેશતો નિષ્ક્રાન્તાન્ આજ્ઞાપયતિ ' મમ રાજ્યાદૃશિર્ગચ્છથ ' ઇત્યાજ્ઞાં દદાતિ સ્મેત્યર્થઃ ।

તત સ્વલ્પ તે સુવર્ણકારાઃ કુમ્ભેન=કુમ્ભકેન રાજા નિર્વિપયા સ્વદેશતો નિર્ગતાભવિતુમ્ આજ્ઞપ્તાઃ સન્તઃ યત્રૈવ સ્વાનિ મ્યાનિ ગૃહાણિ, તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય ' સમ્બડમત્તોવગરણમાયાણ ' સમ્બાઢામત્રોપક્રમમાદાય સ્વકીયભાઢ્ઢમાજનાધુપકરણ ગૃહીત્વા શકટસમૂહેઽવસ્થાપ્ય મિથિલાયા રાજધાન્યા મધ્યમધ્યેન નિષ્ક્રામન્તિ= નિર્ગચ્છન્તિ, નિષ્ક્રમ્ય વિદેહસ્ય જનપદસ્ય મધ્યમધ્યેન મ યે ભૂત્વા, યત્ર કાશીજનપદઃ, યત્રૈવ વારાણસી તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય ' અગુજ્ઞાણસિ'

માને । (સુવન્નગારે નિવિસપ્ આણવેહ) હસ તરહ કહ કર ઉસ કુ મ્ભક રાજા ને ઉન સુવર્ણકારોં કો અપને દેશ સે બહિર નિકલ જાને કી-આજ્ઞા દે દી । (તર્ણ સે સુવન્નગારા કુ મ્ભેર્ણ રન્ના નિવિસપ્ આણત્તા સમાણા જેણેવ સાઈ ૨ ગિહાહ તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ, ઉવાગચ્છિત્તા સમ્બડામત્તોવગરણમાયાણ મિથિલાણ રાયહાણીણ મજ્ઞ મજ્ઞેણ નિક્લમતિ) હસકે બાદ વે સુવર્ણકાર કુ મ્ભક રાજા સે અપને દેશ સે બહિર નિકલ જાને કે લિયે આજ્ઞાસ હોકર જહા અપને ૨ ઘર થે વહા આયે । વહા આકર ઉન્હોં ને અપને ૨ ભાડ ભાજન આદિ ઉપકરણો કો ગાડિયોં મેં ભરા ઓર ભરાકર મિથિલા રાજધાની કે વીચો વીચ સે હોકર નિકલે । (નિક્લમિત્તા વિદેહસસ જણવયસસ મજ્ઞ મજ્ઞેર્ણ જેણેવ કાસી જણવણ જેણેવ વાણારસી નયરી તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ) ઓર નિકલ વિદેહ જનપદ કે ખીતર સે હોકર જહા કાશી દેશ ઓર બનારસી નગરી થી વહા આયે ।

ગ્રગારે નિવિસપ્ આણવેહ) આ પ્રમાણે ડહીને કુલરાજાએ તે સુવર્ણકારાને પોતાના દેશની બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા આપી

તણ સે સુવન્નગારા કુમ્ભેર્ણ રન્ના નિવિસપ્ આણત્તા સમાણા જેણેવ સાઈ ૨ ગિહાહ તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ, ઉવાગચ્છિત્તા સમ્બડામત્તોવગરણમાયાણ મિથિલાણ રાયહાણીણ મજ્ઞ મજ્ઞેણ નિક્લમતિ)

ત્યાર પછી તે સોનીઓ કુલડ રાજાની પાસેથી પોતાના દેશમાંથી બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા સાંભળીને જ્યાં પોતાનું ઘર હતું ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેઓ એ પોતાના વાસણુ વગેરે સામાનને ગાડીઓમાં ભર્યો અને ભરીને મિથિલા રાજધાનીના રાજમાર્ગે થઈને નીકળ્યા

(નિક્લમિત્તા વિદેહસસ જણવયસસ મજ્ઞ મજ્ઞેર્ણ જેણેવ કાસી જણવણ જેણેવ વાણારસી નયરી તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ)

અને નીકળીને વિદેહ જન પદની વચ્ચે થઈ ને જ્યાં કાશીદેશ અને બનારસી નગરી હતી ત્યાં ગયા

અગ્રોદ્યાને=પ્રધાનોદ્યાને, સગડીસાગડ ' શકુટીશાકુટ =રુધુશકુટવૃહન્કુટાનાં
સમૂહ ' મોદતિ ' મોચયન્તિ શકુટેભ્યો વલીવર્દાન્ પૃથક્ કુર્વન્તિ મોચયિત્વા
મહાર્થ =મહાપ્રયોજનકયાવત્-મહાર્થ=મહામૂલ્યક મહાર્હ =મહતા રાજાદીના યોગ્ય,
મામૃતમ્=ઉપહાર ગૃહ્ણન્તિ, ગૃહીત્વા વારાણસ્યા નગર્યા મન્યમધ્યેન=વારાણસ્યા
નગર્યામધ્યે ભૂત્વા યજૈવ શઙ્ખ' શઙ્ખનામા કાશિરાજસ્તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ૦ ।
ઉપાગત્ય કરતલ૦યાત્ મસ્તકેઽન્જલિ કૃત્વા એવ=વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ અવાદીત્-
હે સ્વામિન્ ! એવ વચ્ચે સ્વલ્પ મિથિલાયા નગર્યા કુભકેન રાજા નિર્વિપયાઃ=સ્વ-
દેશ નિર્ગતા મરિતુમાજ્ઞતા સન્ત ઇહ ' હવ્યમાગયા ' હવ્યમાગતા શીત્રમાગતાઃ,

(ઉવાગચ્છિત્તા અગ્નુજ્જાણસિ સગડી સાગડ મોદતિ, મોદત્તા મહત્થ
જાવ પાહુડ ગિણ્હતિ, ગિણ્હિત્તા વાણારસીં નયરીં મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેવ
સચ્ચે કાસી રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છતિ) વહા આકર ઉન્હોને અપની ર
ગાડી ઓર ગાડો કો વહા કે વગીચે મે ઠહરા દિયા-ઓર ઠહરા
કર ફિર ચે સચ્ચ મહાર્થસાધક-કીમતી તથા રાજાદિકો કે યોગ્ય મેટ
કો લેકર વાનારસી નગરી કે વીચ સે હોકર જહા કાશી રાજ ઈશ્વ
રાજા થે વહા આયે । (ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ૦ જાવ એવ વયાસી-અમ્હેણ
સામી ! મિહિલાઓ-નયરીઓ કુમણરન્ના નિવ્વિસયા આણત્તા સમાણા
ઈહ હવ્યમાગયા) વહા આકર ઉન્હોને દોનો હાથો કો જોડ કર ઓર
ઉનકો અજઠિ કો માયેપર રચ્ચકર રાજા કો નમસ્કાર ક્રિયા, વાદ મેં
હસ પ્રકાર વે કહને લગે હે સ્વામિન્ ! હમલોગોં કો કુમક રાજા ને

ઉવાગચ્છિત્તા અગ્નુજ્જાણસિ સગડી સાગડ મોદતિ, મોદત્તા મહત્થ જાવ
પાહુડ ગિણ્હતિ, ગિણ્હિત્તા વાણારસીં નયરીં મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેવ સચ્ચે કાસી
રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છતિ)

ત્યા આવીને તેઓ એ પોત પોતાની ગાડીઓ તેમજ ગાડાઓને ત્યાના
ખાસ ઉદ્યાનમા રોક્યા અને રોકીને તેઓ બધા મહાર્થ સાધક બહુજ કીમતી
તેમજ રાજા વગરે ને યોગ્ય એવી ભેટ લઈને બનારસી નગરીની ઠીક વચ્ચે
થઈને ત્યા કાશીરાજ રાખરાજા હતા ત્યા ગયા

ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ૦ જાવ એવ વયાસી અમ્હેણસામી ! મિહિલાઓ નયરીઓ
કુમણરન્ના નિવ્વિસયા આણત્તા સમાણા ઇહ-હવ્યમાગયા)

ત્યા જઈને તેમણે બને હાથો ભેડીને અજલી મસ્તકે મૂકીને રાજાને વદન
કયા અને તેઓ કહેવા લાગ્યા-હે સ્વામિન્ ! કુલક ગમ્મએ અમને લોકાને
મિથિલાનગરીથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી છે મિથિલાનગરીની બહાર કહા

મન્યે, इति भावः । ततः स कुम्भको राजा किं कृतवान् ? इत्याह- ते ' इत्यादि, तान् सुवर्णकारान् ' निर्व्विषए ' निर्व्विषयान् स्वदेशतो विप्रान्तान् आज्ञापयति ' मम राज्यादूरहिर्गच्छय ' इत्याज्ञा ददाति स्मेत्यर्थः ।

तत खलુ ते सुवर्णकाराः कुम्भेन=कुम्भकेन राज्ञा निर्व्विषया स्वदेशतो निर्ग-
ताभवितुम् आज्ञप्ताः सन्तः यत्रैव स्वानि स्थानि गृहाणि, तत्रैवोपागच्छन्ति,
उपागत्य ' सभङ्गमत्तोवगरणमायाए ' सभाङ्गामत्तोपकरणमादाय स्वकीयभाण्डभाज-
नाधुपकरण गृहीत्वा शकटसमूहेऽवस्थाप्य मिथिलाया राजधान्या मध्यमभ्येन
निष्क्रामन्ति= निर्गच्छन्ति, निष्क्रम्य विदेहस्य जनपदस्य मध्यमभ्येन मये भूत्वा,
यत्र काशीजनपदः, यत्रैव वाराणसी तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य ' अगुज्जाणसि'

માને । (સુવર્ણગારે નિર્વિસય આણવેહ) હમ તરહ કહ કર ઉસ કુમ્ભક
રાજા ને ઉન સુવર્ણકારોં કો અપને દેશ સે વહિર નિકલ જાને કી-આજ્ઞા
દે દી । (તણે સે સુવર્ણગારા કુમ્ભેર્ણ રત્ના નિર્વિસયા આણત્તા સમા
ણા જેણેવ સાઈ ૨ ગિહાહ તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છત્તા સભઙ્ગામ
ત્તોવગરણમાયાએ મિથિલાએ રાયહાણીએ મજ્જ મજ્જેણ નિક્કમતિ)
इसके बाद वे सुवर्णकार कुम्भक राजा से अपने देश से बाहर निकल
जाने के लिये आज्ञप्त होकर जहा अपने घर थे वहा आये । वहां आकर
उन्हों ने अपने २ भाङ भाजन आदि उपकरणों को गाडियो में भरा
और भराकर मिथिला राजधानी के बीचो बीच से होकर निकले ।
(निकलमिता विदेहस्स जणवयस्स मज्झ मज्जेण जेणेव कासी जणवए
जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छति) और निकल विदेह जनपद
के भीतर से होकर जहा काशी देश और बनारसी नगरी थी वहा आये ।

ગ્રગારે નિર્વિસય આણવેહ) આ પ્રમાણે ડહીને કુલરાજાએ તે સુવર્ણકારાને
પોતાના દેશની બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા આપી

તણે સે સુવર્ણગારા કુમ્ભેર્ણ રત્ના નિર્વિસયા આણત્તા સમાણા જેણેવ સાઈ
૨ ગિહાહ તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છત્તા સભઙ્ગામત્તોવગરણમાયાએ મિથિલાએ
રાયહાણીએ મજ્જ મજ્જેણ નિક્કમતિ)

ત્યાર પછી તે સોનીઓ કુલક રાજાની પાસેથી પોતાના દેગમાથી બહાર
નીકળી જવાની આજ્ઞા સાંભળીને જ્યા પોતાનું ઘર હતું ત્યા આવ્યા ત્યાં
આવીને તેઓ એ પોતાના વાસણ વગેરે સામાનને ગાડીઓમાં ભરી અને
ભરીને મિથિલા રાજધાનીના રાજમાર્ગે થઈને નીકળ્યા

(નિકલમિત્તા વિદેહસ્સ જણવયસ્સ મજ્જ મજ્જેણ જેણેવ કાસી જણવए
જેણેવ વાણારસી નયરી તેણેવ ઉવાગચ્છતિ)

અને નીકળીને વિદેહ જન પદની વચ્ચે થઈ ને જ્યા કાશીદેશ અને
બનારસી નગરી હતી ત્યા ગયા

पुण्याः=प्रभावतीदेव्या आत्मजायाः=अज्ञातायाः, मल्ल्याः=मल्लीकुमारिकायाः,
कुण्डलयुगलस्य सन्धिसघटित =त्रुटितः । ततः खलु स कुम्भकः सुवर्णकार
श्रेणिम्=अस्मानित्यर्थः शब्दयति, शब्दयित्वा यावत्-अत्रायन् उब्देनेद् द्रष्टव्यम्-
तेनैव वयमाज्ञप्ताः-अस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि-सघटयत सन्धि सघटय=त्रुटित
सन्धि योजयित्वा, एतामाज्ञा=ममाज्ञप्तिं, प्रत्यर्पयत” इति ततः खलु वय तद् दिव्य
कुण्डलयुगल गृहीत्वा निजोपवेशनस्थानमागत्य तत्रोपविश्य नानाविधैरुपायैः पूर्व-
स्वरूप सम्पादयन्तस्तस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं सघटयितुं प्रयास कृतवन्तः, परन्तु
नो शक्नुमः सघटयितुम्, ततः खलु कुम्भकस्य राज्ञः पुरोगत्याऽस्माभिरेवमावेदि

धूयाण पभावइण देवीए अत्तयाण मल्लीए कुण्डलयुगलस्य सन्धि विसघ-
डिए-तएण से कुभए सुवन्नगारसेणि सदावेइ, सदावित्ता जाव निव्वि-
सया आणत्ता) हे स्वामीन् ! कुम्भक राजा की पुत्री कि जो प्रभावती
की कुक्षि से उत्पन्न हुई है और जिसका नाम मल्ली कुमारी है-के दो
कुडलों की सन्धि विघटित हो गई थी-सो कुम्भक राजाने हमसब सुवर्ण
कारों को बुलाया था-और ऐसा कहा था कि तुम लोग इन की सन्धि
को जोड़ कर ले आओ-हमलोगों ने उनकी आज्ञानुसार उन दोनों
कुडलों को लेलिया और लेकर हमलोग अपने २ बैठने के स्थान पर
बैठे आए-वहा बैठकर हमलोगों ने नाना प्रकार के उपायों से उन
कुडलों को पूर्वावस्थ बनाने के लिये त्रुटित सन्धि को जोड़ने का बहुत
प्रयास किया परन्तु यथावत् हमलोग उसे सन्धित नहीं कर सके अतः
हमलोग उनके समीप पहुँचे-और वहा जाकर उनसे प्रार्थना की कि

(एव खलु सामी ! कुम्भगरस्स रन्नो धूयाण पभावइए देवीए अत्तयाए मल्लीए
कुण्डलयुगलस्य सन्धि विसघडिए तएण से कुभए सुवन्नगारसेणि सदावेइ, सदा
वित्ता जाव निव्विसया आणत्ता)

हे स्वामीन् ! प्रभावती राज्ञीना गर्भाथी जन्म पावेली कुलक राजनी
पुत्री मल्ली कुमारीना जे कुडलोंने साधे तूटी गये। कुलक राजने जधा
सोनीओने बोलाव्या अने कहु के तमे बोले आ कुडलोनी सन्धिने जेडी
आये। अमेओ तेमनी पासेथी कुडलो लई लीधा अने लधने अमे जधा
पोतपोताना जेसपाना न्याने आवी गया त्या जेसीने अमेओ जत
जतना उपायोथी ते कुडलोने पडेलाना जेवा ज सारा जनावी आपवानी
ओटले के तूटेले। अघि लाग इगी जाधी आपवाभाटे धणु प्रयत्नो कर्था पणु
ते कुडलोने पूर्ववत् सारा करवामा समर्थ थई शक्या नई अमे बोले।
राजनी पासे गया अने तेमने विनति करी के हे भडाराज ! अमे जहु ज

તત્=તસ્માત્ इच्छामः खलु हे स्वामिन् ! युष्माकं बाहुच्छाया परिगृहीताः शुभ
च्छाया समाश्रिता अतएव निर्भयाः, निरुद्विग्नाः=उद्वेगरहिता, सुखं सुखेन=
अतिसुखेन परिवस्तुमिच्छाम इति पूर्वेण सम्बन्धः ।

ततस्तदनन्तर खलु शङ्ख काशिराजस्तान् सुवर्णकारानेवमवादीत्-हे देवानु-
प्रिया ! किं=कुत खलु यूयं कुम्भकेन राज्ञा निर्विषया आश्रिताः ? ततः खलु ते
सुवर्णकाराः शङ्खमेवमवादीत्-हे स्वामिन् । एव खलु कुम्भकम्प्य राज्ञो दुष्टितु =
मिथिलानगरी से बाहर चलेजाने की आज्ञा दी-सो हमलोग वहांसे
निर्वासित होकर यहां आये हैं-(त इच्छामोऽण सामी ! तुव्भं बाहु-
च्छाया परिगृहीया निव्भयानिव्विग्गा सुह सुणेह परिवसिउ) अतः हे
स्वामिन् ! आपकी बाहुच्छाया का आश्रय लेकर हमलोग यहां निर्भय
और निरुद्विग्न होकर शान्ति पूर्वक आनन्द के साथ रहना चाहते हैं
(तएण सखे कासीराया ते सुवन्नागारे एव वयासी) उनकी इस प्रकार
की बात सुनने के बाद काशी देशाधिपति शङ्ख राजा ने उनसे ऐसा
कहा-(किन्न तुव्भे देवाणुप्पिया ! कुभण्ण रत्ता निव्विसया आणत्ता)
हे देवानुप्रियो ! किस कारण से कुम्भक राजा ने आप लोगों को मिथि-
लानगरी से बाहर चले जाने की आज्ञा प्रदान की-

(तएण ते सुवन्नागारा सखं एव वयासी) सुवर्णकारों ने प्रत्युत्तरमें
शङ्ख राजा से इस प्रकार कहा-(एव खलु सामी ! कुम्भकस्स रत्तो

કવાની આજ્ઞા કરવાથી એથી અમે ત્યાંથી નિર્વાસિત થઈને અહીં આવ્યા છીએ
(તેં इच्छामो ऽण सामी ! तुव्भं बाहुच्छाया परिगृहीया निव्भया निरुद्विग्गा
'सुह सुणेण परिवसिउ)

એથી હે સ્વામિન્ ! તમારી બાહુચ્છાયાના આશ્રયમા અમે લોકો નિર્ભય
અને નિરુદ્વિગ્ન થઈને શાંતિથી સુખેથી અહીં રહેવા ઇચ્છા રાખીએ છીએ

(તएण सखे कासी राया ते सुवन्नागारे एव वयासी)

તેમની આ પ્રમાણે વિનતી સાંભળીને કાશી દેશાધિપતિ શંખ રાજાએ તેમને કહ્યું

(किन्न तुव्भे देवाणुप्पिया ! कुभण्ण रत्ता निव्विसया आणत्ता)

હે દેવાનુપ્રિયો ! કુભક રાજાએ તમને શા કારણથી મિથિલા નગરીની
બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી છે ?

(તएण ते सुवन्नागारा सख एव वयासी)

સોનીઓએ જવાબમાં શંખ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

पुण्याः=प्रभावतीदेव्या आत्मजायाः=अज्ञातायाः, मल्ल्याः=मल्लीकुमारिकायाः, कुण्डलयुगलस्य सन्धिसंघटित=त्रुटित । तत खलु स कुम्भकः सुवर्णकार श्रेणिम्=अस्मानित्यर्थः शब्दयति, शब्दयित्वा यावत्-अत्रयावत्-उद्देनेद् द्रष्टव्यम्-तेनैव वयमाज्ञप्ताः-अस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि-संघटयत सन्धि संघटय=त्रुटित सन्धि योजयित्वा, एतामाज्ञा=ममाज्ञप्तिं, प्रत्यर्पयत ” इति ततः खलु वय तद् दिव्य कुण्डलयुगल गृहीत्वा निजोपवेशनस्थानमागत्य तत्रोपविश्य नानाविधैरुपायैः पूर्व-स्वरूप सम्पादयन्तस्तस्मिन् कुण्डलयुगलस्य सन्धि संघटयितु प्रयास कृतवन्तः, परन्तु नो शक्नुमः संघटयितुम्, ततः खलु कुम्भकस्य राज्ञः पुरोगत्याऽस्माभिरेवमावेदि

धूयाण पभावइण देवीए अत्तयाण मल्लीए कुण्डलयुगलस्स संधी विसंघटिए-तएण से कुभए सुवन्नगारसेणि सदावेइ, सदावित्ता जाव निव्विसया आणत्ता) हे स्वामीन् ! कुम्भक राजा की पुत्री कि जो प्रभावती की कुक्षि से उत्पन्न हुई है और जिसका नाम मल्ली कुमारी है-के दो कुण्डलो की संधी विघटित हो गई थी-सो कुम्भक राजाने हमसब सुवर्ण कारों को बुलाया था-और ऐसा कहा था कि तुम लोग इन की संधी को जोड़ कर ले आओ-हमलोगों ने उनकी आज्ञानुसार उन दोनों कुण्डलो को लेलिया और लेकर हमलोग अपने २ बैठने के स्थान पर चले आए-वहा बैठकर हमलोगों ने नाना प्रकार के उपायों से उन कुण्डलों को पूर्वावस्थ बनाने के लिये त्रुटित संधी को जोड़ने का बहुत प्रयास किया परन्तु यथावत् हमलोग उसे संघटित नहीं कर सके अतः हमलोग उनके समीप पहुँचे-और वहा जाकर उनसे प्रार्थना की कि

(एव खलु सामी ! कुम्भकरस्स रन्नो वूयाए पभावइए देवीए अत्तयाए मल्लीए कुण्डलयुगलस्स संधी विसंघटिए तएण से कुभए सुवन्नगारसेणि सदावेइ, सदावित्ता जाव निव्विसया आणत्ता)

हे स्वामीन् ! प्रभावती राज्ञीना गर्भस्थी जन्म पाभेली कुलक राज्ञनी पुत्री भट्टेली कुमारीना जे कुण्डलोने साधो तूटी गयो । कुलक राज्ञे अथा सोनीअने ओलाव्या अने कहु ठे तमे ढोके आ कुण्डलोनी मधिने जेडी आपो अमेअमे तेमनी पासेथी कुण्डलो लई लीधा अने लधने अमे अथा पोतपोताना जेसवाना अथाने आवी गया । त्या जेसीने अमेअमे जलत जलना उपायेथी ते कुण्डलोने पडेलाना जेवा ज सारा जनावी आपवानी अटले के तूटेले । मधि लाग इरी साधी आपवा भाटे धण्णा प्रयत्नो कयो पण ते कुण्डलोने पूर्ववत् सारा करवाभा समर्थ थई शक्या नहि । अमे ढोके राज्ञनी पासे गया अने तेमने विनति करी के हे भट्टाराज ! अमे अहु ज

तम्-अस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं सघटयितुं प्रयासं कृतवन्तः, परंतु नो शक्नुमः सघटयितुम्, ततः खलु कुम्भकस्य राज्ञः पुरो गत्वाऽस्माभिरेव मयादित्-
अस्य दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं सघटयितुं प्रयत्नं कृतवन्तोऽपि यय नो शक्ताः सघटयितुम्, तस्मात् खलु हे स्वामिन् । एतत्सदृशमन्यत् कुण्डलयुगलं घटयामः इति । ततः क्रोधाविष्टेन कुम्भकेन राज्ञा एव 'निव्विसया' निर्व्विषया स्वदेशतो निर्गता भवितुम्, आज्ञप्ताः=आदिष्टाः ।

ततः स शङ्खः काशीराजः सुवर्णकारानेवमवादीत्-हे देवानुप्रिया । कीदृशी खलु कुम्भकस्य राज्ञो दुष्टिता=दुःखी प्रभावस्या देव्या आत्मना=अङ्गनाता, मल्ली

महाराज हमलोग प्रयत्न करने पर भी इस कार्यमें असफलित हो रहे हैं-अतः आपको आज्ञा हो तो हम इन्हीं कुण्डलों जैसा कुण्डल और यनादेवें-बस हमारा इतना ही कहना था कि राजा इकदम क्रोध के आवेश में आ गये-और हमलोगों को अपने देश से निकल जाने की आज्ञा दे बैठे । बस (त एएण कारणेण सामी ! अम्हे कु भएण निव्विसया आणत्ता-तएण से सखे सुवन्नगारे एव वयासी-केरिसिया ण देवाणुप्पिया ! कु भगधूया पभावइए देवीए अत्तया मल्ली विदेह रायवरकन्ना) हे स्वामीन् यही कारण है कि जिससे हमलोग कुम्भक राजा के द्वारा देश से निकल जाने के लिये आज्ञासह्य हैं-शख राजाने उन सुवर्ण करों को अपने राज्यमें बसनेके लिये खुशी से आज्ञाप्रदान की ।

इस प्रकार सुनने के अनन्तर उस शख राजा ने सुवर्णकारों से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियो ! कहो-कुम्भक राजा की वह विदेहवर

प्रयत्ने। कर्या छत्ता आ काममा अमे सक्ख थर्ध शक्या नद्धि अथी तमे आशा आपो तो आ कुडणो जेवा न् भील्ल जे कुडणो धडी आपीअे अमारी आ वात्त साबणीने रान्त अेकदम लावयेण थर्ध गमा अने अमने पोताना देशथी जडार न् वानी आशा आपी दीधी

(त एएण कारणेण सामी ! अम्हे कु भए णं निव्विसया आणत्ता तएणं से सखे सुवन्नगारे एव वयासी केरिसियाण देवाणुप्पिया ! कु भगधूया पभावइए देवीए अत्तया मल्ली विदेहरायवरकन्ना)

हे स्वामीन् । यस अे कारणुने लीधे न् कुल्ल रान्तअे अमने देशवटो आप्यो शय रान्तअे ते जधा सोनीअेने पोताना देशमा रडेवानी भुशीथी परवानगी आपी

सोनीअेनी आ जधी वात्त साबणीने शय रान्तअे तेमने कड्डु के-डे

વિદેહરાજવરકન્યા ? , તતઃ સ્વલુ તે સુવર્ણમારાઃ ગદ્ધ રાજાનમેવમવદન્-હે સ્વામિન્ ! નો સ્વલુ અન્યા કાચિત્ તાદૃશી દેવકન્યા વા ગન્ધર્વકન્યા વા યાવત્-અત્ર યાવન્હેનેદ વોઽયમ્-અસુરકન્યા નાગકન્યા યક્ષકન્યા વો ઇતિ, યાદૃશી સ્વલુ મલ્લી વિદેહરાજવરકન્યા મહ્લીમદૃશી કાઽપિ કન્યા લોકત્રયે નાસ્તીત્યર્થઃ । તતઃ સ્વલુ સ શદ્ધ' કાશીરાજઃ કુણ્ડલયુગલજનિતહર્ષઃ=કુણ્ડલયુગલમહત્ત્વશ્રવણમજા-તમલ્લોવિષયકાનુરાગ સન્ દૂત શબ્દયતિ, યાવત્-અત્ર યાવન્હેનેદ દ્રષ્ટવ્યમ્-શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્-હે દેવાનુપ્રિય ! શીઘ્રમેવ મિથિઞ્ઞા ગત્વા કુમ્ભક રાજાન

રાજ કન્યા મલ્લી કુમારી-કિ જિસકા જન્મ પ્રભાવતી કી કુક્ષિ સે હુઆ હૈ-કૈસી હૈ ? (તપણ તે સુવન્નગારા સગ્વરાય એવ વયાસી-ળો સ્વલુ સામી ! અન્ના કાઠ તારિસિયા દેવકન્ના વા ગન્ધર્વકન્ના વા જારીસિયાળ મલ્લી વિદેહવરાયકન્ના-તણ્ણ સે સઘે કુણ્ડલજુયલજણિતહાસે દૂય સદાવેદ, જાવ તહેવ પહારેત્ય ગમણાળ) ઇસકે પ્રત્યુત્તર મેં ડન સુવર્ણ કારોંને શાલ રાજા સે ઇસ પ્રકાર કહા હે સ્વામિન્ ! એસી તો કોઈ દેવ-કન્યા ભી નહીં હૈ, ગન્ધર્વ કન્યા ભી નહીં હૈ, અસુરકન્યા ભી નહીં હૈ, નાગકન્યા ભી નહીં હૈ ઓર ન કોઈ યક્ષ કન્યા હી હૈ કિ જૈસી વિદેહ વર રાજકન્યા મલ્લીકુમારી હૈ । તાત્પર્ય ઇસકા યહી હૈ કિ-મલ્લી કુમારી જૈસી કન્યા લોકત્રય મેં ભી નહીં હૈ । ઇસ પ્રકાર કુણ્ડલયુગલ કે મહત્ત્વ શ્રવણ સે મલ્લીકુમારી કે વિષય મેં જિસે અનુરાગ (ભાવ ઉત્પન્ન હો ચુકા હૈ એસે ડસ શાલ રાજાને દૂતકો બુલાયા-બુલાકર ડસ સે એસા કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! તુમ શીઘ્ર હી મિથિલા જાકર કુમ્ભક

દેવાનુપ્રિયો ! બતાવો કુણ્ડલ રાજના વિદેહવર રાજકન્યા મલ્લીકુમારી કે જેને જન્મ પ્રભાવતીના ગર્ભથી થયો છે તે કેવી છે ?

(તણ તે સુવન્નગારા સગ્વરાય એવ વયાસી-ળો સ્વલુ સામી ! અન્ના કાઠ તારિસિયા દેવકન્ના વા ગન્ધર્વકન્ના વા જારીસિયાળ મલ્લી વિદેહવરાયકન્ના-તણ્ણ સે સઘે કુણ્ડલજુયલજણિતહાસે દૂય સદાવેદ, જાવ તહેવ પહારેત્ય ગમણાળ)

તેના જવાબમા સોનીઓએ શાળ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-હે સ્વામીન્ ! જેવી વિદેહવર રાજકન્યા મલ્લીકુમારી છે તેવી તો દેવકન્યા પણ નથી, ગન્ધર્વકન્યા પણ નથી, અસુર કન્યા પણ નથી, નાગકન્યા પણ નથી અને યક્ષ કન્યા પણ નથી તાત્પર્ય એ છે કે-મલ્લીકુમારી જેવી કન્યા ત્રણે લોકોમા પણ નથી

આ રીતે કુણ્ડોના મહત્ત્વ વિષે વાત સાંભળતા જ મલ્લીકુમારીના ઉપર જેના મનમા અનુરાગ જન્મ પામ્યો છે એવા તે શાળ રાજાએ હૃતને ધોલાવ્યો અને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું-હે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મિથિલા નગરીમા મત્વરે

બ્રૂહિ-શઙ્ગઃ કાશિરાજસ્તર કન્યકા મલ્લી રાજ્ઞતિ ' ઇત્યાદિ । તથૈવ=પૂર્વોક્ત રુ-
ક્મિદૂતવત્ , પ્રાધારયદ્ ગમનાય=તતઃ શઙ્ગસ્ય કાશીરાજસ્યાજ્ઞયા સ દૂતો રથા
રૂઢ સન્ યજૈવ મિથિલાનગરી તજૈવ ગન્તુ પ્રવૃત્ત ઇત્યર્થઃ । ઇતિ ચતુર્થસ્ય શઙ્ગસ્ય
રાજ્ઞઃ સમ્બન્ધઃ કથિત ॥ સૂ. ૨૬ ॥

મૂલમ્-તેણ કાલેણ તેણ સમણં કુરુજણવણ હોત્થા, તત્થ
ણ હત્થિણાઉરનયરે અદીણસત્તુ નામં રાયા હોત્થા, જાવ વિહ-
રહ, તત્થ ણં મિહિલાણ કુભગસ્સ પુત્તેપભાવર્હણ અત્તણ મહ્છીણ
અણુજાણણ મલ્લદિન્નણ નામકુમારે જાવ જુવરાયા યાવિ હોત્થા
તણં મલ્લદિન્ને કુમારે અન્નયા કોહુંવિયં સદાવેહ, સદાવિત્તા
એવં વયાસી-ગચ્છહ ણ દેવાણુપ્પિયા । તુબ્ભે મમ પમદવર્ણંસિ
ણં મહ ચિત્તસમ્મ કરેહ અણેગ જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ, તણ સે
મલ્લદિન્ને ચિત્તગરસેણિ સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી-તુબ્ભે
ણં દેવાણુપ્પિયા । ચિત્તસમ્મ હાવભાવવિલાસ વિઠ્ઠોયકલિણર્હિ
રૂવેર્હિ ચિત્તેહ, ચિત્તિત્તા જાવ પચ્ચપ્પિણહ, તણં સા ચિત્તગર
સેણી તહત્તિ પહિસુણેહ, પહિસુણિત્તા જેણેવ સયાહ ગિહાહ
તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા, તૂલિયાઓ વન્નણ ચ ગિપિહહ,

રાજાસે કહો કિ કાશી દેશાધિપતિ શંખ રાજા આપકી કન્યા મલ્લી
કુમારી કો ચાહતે હૈ ઇત્યાદિ ।

હસ પ્રકાર અપને રાજા કાશી રાજ કી આજ્ઞા સે વહ દૂત રથ પર
આરૂઢ હોકર જહા મિથિલા નગરી થી ઉસ ઓર ચલ દિયા । હસ તરહ
વહ ચતુર્થ શંખ રાજા કા વૃત્તાન્ત પ્રકાર કહા ગયા હૈ । સૂત્ર " ૨૬ "

પહોચો અને કુભક રાજાને કહો કે કાશી દેશાધિપતિ શંખ રાજા તમારી
કન્યા મલ્લીકુમારીને આહિ છે વગેરે

આ રીતે પોતાના રાજા કાશી રાજાની આજ્ઞા મેળવીને હવે રથ ઉપર
સવાર થયો અને જે તરફ મિથિલા નગરી હતી તે તરફ રવાના થયો । આ
રીતે આ થોથા શંખ રાજાને વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે ॥ સૂત્ર " ૨૬ " ।

गिणिहत्ता जेणेव चित्तसभा तेणेव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता
भूमिभागे विरचइ, विरंचित्ता भूमिं सज्जेइ, सज्जित्ता चित्तसमं
हावभाव जाव चित्तेउ पयत्ता यावि होत्था, तएणं एगस्स
चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगरलज्जापत्ता अभिसमन्नागया—
जस्स णं दुपयस्स वा चउप्पयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि
पासइ, तस्स णं देसाणुसारेण तयाणुरूव रूव निव्वत्तेइ,
तएणं से चित्तगरदारए मल्लीए जवणियतरियाए जालतरेण
पायगुट्ट पासइ, तएण तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेयं
खलु मम मल्लीए एवि पायगुट्टाणुसारेणं सरिसगं जाव गुणो
ववेय रूव निव्वत्तित्तेए, एव संपेहेइ, सपेहित्ता भूमिभागं सज्जेइ,
सज्जित्ता मल्लीएवि पायगुट्टाणुसारेण जाव निव्वत्तेइ, तएणं सा
चित्तगरसेणी चित्तसभ हावभाव जाव चित्तेइ, चित्तित्ता जेणेव
मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव जाव एतमाणत्तिय पच्चप्पिणइ,
तएण मल्लदिन्ने चित्तगरसेणि सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता
सम्माणित्ता विपुल जीवियारिह पीइदाण दलेइ, दलित्ता पडि-
विसज्जेइ । तएण मल्लदिन्ने अन्नया ण्हाए अतेउरपरियाल-
सपरिवुडे अम्मधार्इए सद्धि जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता चित्तसभ अणुपविसइ, अणुपविसित्ता हावभाव-
विलास विव्वोयकलियाड रूवाइ पासमाणे२ जेणेव मल्लीए
विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे णिव्वत्तिए तेणेव पहारेत्थ
गमणाए ॥ सू०२७ ॥

ટીકા-અય પશ્ચમસ્યાદીનશત્રુનામ્નો રાજ સમ્યન્ધમસ્તાયમાહ-‘તેણ કાલેણ’
 इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये कुरुजपदः=कुरु नामको देशः, आसीत्,
 तत्र=तस्मिन् देशे, हस्तिनापुरे-नगरे अदीनशत्रुर्नाम राजाऽऽसीत्०।यावद् विहरति
 -राज्य पालयन् स आस्त स्मेत्यर्थः ।

इतश्च तत्र खलु मिथिलाया कुम्भकस्य पुत्रः प्रभावत्या* आत्मजः=अनुजातः,
 मल्ल्याः=मल्लीकुमारिकाया अनुजातकः=लघुभ्राता, मल्लदत्तो नाम कुमारः,
 यावद्-राजनीतिकुशलो युवराजश्चाप्यभूत् । ततस्तदनन्तर मल्लदत्तः कुमारः

‘ તેણ કાલેણ તેણ સમણ ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તેણ કાલેણ તેણ સમણ) उस काल और उस समयमें (कुरु
 जणवए होत्था-तत्थण हत्थिणाउरनयरे अदीण सत्तू नाम राया होत्था
 जाव विहरइ) कुरु नाम का देश या-उस में हस्तिनापुर नाम के नगर
 में अदीन शत्रु नाम के राजा रहते थे । ये न्याय नीति के अनुसार
 अपने राज्य का परिपालन अच्छी तरह से करते थे । (तत्थ ण मिहि
 लाए कुभगस्स पुत्ते पभावइए अत्तए मल्लीए अणु जाणए मल्ल दिन्नए
 नाम कुमारे जाव जुवराया यावि होत्था) उस मिथिला नगरी में कु भक
 राजा के यहा प्रभावती से एक पुत्र और हुआ था-जिस का नाम मल्ल
 दत्त कुमार था यह मल्ली कुमारी का छोटा भाई था ।

राजनीति में यह विशेष निष्णात था । अत राजा ने इसे युवराज

‘ તેણ કાલેણ તેણ સમણ ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તેણ કાલેણ તેણ સમણ) તે કાળે અને તે સમયે

(કુરુજણવણ હોત્થા તત્થણ હત્થિણાઉરનયરે અદીણસત્તૂ નામ રાયા હોત્થા
 જાવ વિહરइ)

કુરુ નામે દેશ હતો તેમા હસ્તિનાપુર નામે નગરમા અદીનશત્રુ નામે
 રાજા રહેતો હતો તે ન્યાય અને નીતિને અનુસરીને રાજ્ય-શાસન
 ચલાવતો હતો

(તત્થ ણ મહિલાએ કુભગસ્સ પુત્તે પભાવइए अत्तए मल्लीए अणु जाणए मल्ल
 दिन्नए नामकुमारे जाव जुवराया यावि होत्था)

તે મિથિલા નગરીમા કુભક રાજાને ત્યા પ્રભાવતી રાણીના ગર્ભથી એક
 પુત્રનો જન્મ થયો હતો તેનું નામ મલ્લદત્તકુમાર હતું અને તે મલ્લીકુમારીનો
 નાનો ભાઈ હતો રાજનીતિમા તે ખૂબ જ નિષ્ણાત હતો એથી રાજાએ યુવ
 રાજપદે તેની નીમણુક કરી હતી

अन्यदा=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्समये, कौटुम्बिकपुरुषान् गच्छयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्- हे देवानुप्रियाः । गच्छत खलु यूय मम 'पमदवणसि' प्रमदवने = अन्तःपुरस्थितोद्याने, एका महती 'चित्तसभ' चित्रसभा=चित्रगृह 'करेह' कारयत चित्रसभाया विशेषणमाह- 'अणेग' इति-अणेगखभसयसनिविद्ध 'अनेकस्तम्भशतसनिविष्टम्, अनेके-अनेकप्रकारा नानावर्णदेदीप्यमानचाकचिक्यचञ्चक्षुश्चित्ताहादजनरुमणिगत-विचित्रशिल्परचना सुशोभिता ये स्तम्भाः सुवर्णमयस्तम्भाः, तेषां शतैः सनिविष्टम् =समन्वितम्, 'जाव पच्चप्पिणति' यावत् प्रत्यर्पयन्ति-कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव चित्रसभा कृत्वा मल्लदत्तस्य पुरः समागत्य तदाज्ञा निवेदयति, भवदाज्ञानुसारेण सर्वं सावितमस्माभिरिति कथयन्ति स्मेत्यर्थः । ततः खलु स मल्लदत्तश्चित्र-

का पद प्रदान कर दिया था । (तएण मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कौटु विय० सदावेइ सदावित्ता एव वयासी-गच्छहण देवाणुप्पिया । तुम्हे मम पमदवणसि एग मह चित्तसभ करेह अणेग जाव पच्चप्पिणति) एक दिन मल्लदिन्न कुमार ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर उन से ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम जाओ और प्रमदोद्यान में-अन्त पुर-स्थित बगीचे में एक बड़ा चित्रगृह बनाओ ।

वह अनेक सुवर्ण मय स्तम्भशत से समन्वित हो । इन स्तम्भों में नाना वर्ण के चमकीले मणि जड़े हुए हो । जो अपनी चाकचिक्य से चक्षु और चित्त के आह्लादक हो । इन मणियों द्वारा उन स्तम्भों में विचित्र शिल्प रचना की गई हो । इस प्रकार मल्लदत्त कुमार की आज्ञा प्राप्त कर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उसी के अनुसार चित्रगृह की रचना

(तएण मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कौटुविय० सदावेइ सदावित्ता एव वयासी गच्छहण देवाणुप्पिया । तुम्हे मम पमदवणसि एग मह चित्तसभ करेह अणेग जाव पच्चप्पिणति)

એક દિવસે મલ્લદિનકુમારે કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યું--કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે પ્રમદોદ્યાનમાં જાઓ અને ત્યાં રણુ-વાસના ઉગ્રાનમાં એક મોટું ચિત્રગૃહ તૈયાર કરો.

ચિત્રગૃહ સેકડો સોનાના થાલલાવાળું હોયુ જોઇએ તે થાલલાઓમાં ચમકતા ઘણા મણિઓ જડેલા હોવા જોઇએ પોતાના પ્રકારથી જેનારાની આંખોને આજી દે તેવું તેમજ ચિત્તને આહ્લાદ આપનાર હોયુ જોઇએ મણિઓ વડે તેના થાલલાઓમાં જતજતના ગિટપની રચના કરવામાં આવેલી હોવી જોઇએ આ રીતે મલ્લદત્ત કુમારની આજ્ઞા મેળવીને કૌટુમ્બિક પુરુષોએ

કરત્રેર્ણિ=ચિત્રકારાન્ શન્દયતિ, શન્દયિત્વૈરમયાદીત્- હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! યૂયં સ્વહ
ચિત્રસમા=ચિત્રગૃહ 'દાવભાવવિલાસવિવ્યોયકલિર્ણિ' દાવભાવવિલાસવિવ્યોકકલિતૈઃ
=શૃંગારભાવાભ્યા સજાતા સ્ત્રીચેષ્ટા દાવઃ, ભાવો મનોવિકાર, વિલાસો દાવભેદઃ
વિવ્યોકઃ-અભિમતપ્રાપ્તાવપિગર્વાદનાદરઃ, અયમપિ દાવભેદઃ । અન્યૈત્વેવમાહુ —

દાવો મુલવિકારઃ સ્યાદ્ ભાવશ્ચિત્તસમુદ્ભવઃ ।

વિલાસો નેત્રજો જ્ઞેયો વિભ્રમો ભૂ સમુદ્ભવઃ ॥૬૩॥

કરકે ઉસે સ્વચર દી કિ આપકી આજાનુસાર હમને સવ કામ કર લિયા હૈ ।

(તણસે મલ્લદિન્ને ચિત્તગરસેર્ણિ સદાવેહ, મદાવિત્તા એવ વયાસી)
હસકે વાદ ઉસ મલ્લદત્ત કુમાર ને ચિત્રકારોં કો બુલવાયા ઓર બુલા
કર ઉનસે હસ પ્રકાર કહા—(તુભેણ દેવાણુપ્પિયા ! ચિત્તસમ દાવભાવ
વિલાસ વિવ્યોયકલિર્ણિ રૂવેર્ણિ ચિત્તેહ ચિત્તિત્તા જાવ પચ્ચપ્પિણહ)
હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમલોગ ચિત્રગૃહ કો દાવ, ભાવ, વિલાસ, એવ વિવ્યોક
યુક્ત ચિત્રો સે ચિત્રિત કરો । સ્ત્રિયો કી જો ચેષ્ટા શૃંગાર એવ મનો
વિકાર જન્ય હોતી હૈ—ઉસ કા નામ દાવ હૈ । માનસિક વિકૃતિકા નામ
ભાવ હૈ । વિલાસ દાવ કા હી એક પ્રકાર હૈ । અભિ મત (ઇચ્છિત) કી
પ્રાપ્તિ હોને પર ભી જો ગર્વ સે ઉસ મેં અનાદર હોતા હૈ—ઉસ કા નામ
વિવ્યોક હૈ । યહ ભી દાવ કા હી એક ભેદ હૈ । ઇન દાવ ભાવાદિકોં કે
વિષય મેં કોઈ ૨ એસા ભી કહતે હૈં કિ મુલ્લ કા જો વિકાર હોતા હૈ
વહ દાવ હૈ, ચિત્ત સે જો વિકાર ઉત્પન્ન હોતા હૈ, વહ ભાવ હૈ । નેત્ર

તેમની આજ્ઞા પ્રમાણે જ ચિત્રગૃહનું નિર્માણ કરીને તેમને ખબર આપી કે
આજ્ઞા મુજબ અમારે પણ કામ પુરું કરી નાખ્યું છે

(તણ સે મલ્લદિન્ને ચિત્તગરસેર્ણિ સદાવેહ સદાવિત્તા એવ વયાસી)

ત્યારબાદ મલ્લદત્ત કુમારે ચિત્રકારોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યું કે—

(તુભે ણ દેવાણુપ્પિયા ! ચિત્તસમ દાવભાવવિલાસવિવ્યોયકલિર્ણિ રૂવેર્ણિ
ચિત્તેહ, ચિત્તિત્તા જાવ પચ્ચપ્પિણહ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે ચિત્રગૃહને હાવ, ભાવ, વિલાસ અને વિવ્યોકવાળા
ચિત્રોથી ચિત્રિત કરો । સ્ત્રીઓની શૃંગાર અને મનોવિકાર જન્યને ચેષ્ટાઓ
હાવ કહે છે માનસિક વિકૃતિનું નામ ભાવ છે અભિમત (ઇચ્છિત) ની
પ્રાપ્તિ હોવા છતાં પણ ગવથી જે તે અનાદર હોય છે તેનું નામ વિવ્યોક
છે તે પણ હાવનો જ એક પ્રકાર છે આ હાવ, ભાવ વગેરેના વિષે કેવલાક
આ પ્રમાણે પણ કહે છે કે મોનો વિકાર જ હાવ છે, ચિત્તથી જ નહીં તે

एतैर्हावादिभिः कलितैर्युक्तैः, रूपैः=चित्रविशेषै चित्रयत=चित्रित कुरुत,
चित्रयित्वा यावत् प्रत्यर्पयत=ममाज्ञा मपादितेति मा कथयतेत्यर्थः । ततस्तदनन्तर
खलु सा चित्रकारश्रेणिः=तथेति=‘ तथाऽस्तु ’ इत्युक्त्वा प्रतिशृणोति=स्वीकुरु-
ते स्म । प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्वकानि गृहाणि, तत्रैवोपागच्छति उपागत्य ‘ तूलियाओ
वन्न ए य ’ तूलिका वर्णकाश्च=तूलिका =केशमप्यश्चित्रलेखनकूर्चिकाः, वर्णकान्=
पञ्चवर्णकद्रव्याणि, च गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव चित्रसभा तत्रैवानुपविशति, अनुपविश्य
भूमिभाग=चित्रविरचनस्थान ’ विरचइ ’ वेवेक्ति=अत्रोत्थ चित्रणीयमिति कृत्वा
रेखादिभिर्भित्त्यादौ विभाग करोति, ‘ विरचित्ता ’ विविच्य=भूमिं सज्जयति

સે જો ભાવ ઉત્પન્ન હોતા હૈ વહ વિલાસ એવ શ્રુ સે જો ઉત્પન્ન હોતા હૈ
વહ વિભ્રમ હૈ । જય હસ પ્રકાર કે ચિત્રોં સે વહ ચિત્રગૃહ ચિત્રિત હો
જાવે-તથા હમેં હસ કી સ્વર દો- (તણ મા ચિત્તગરસેણી તહત્તિ
પડિસુણેઈ, પડિસુણિત્તા જેણેવ સયાઈ ગિહાઈ તેણેવ ઉવાગચ્છઈ ઉવા
ગચ્છિત્તા તૂલિયાઓ વન્નણય ગિણ્હઈ, ગિણ્હિત્તા જેણેવ ચિત્તસમા
તેણેવ અણુપવિસઈ) હસ કે વાદ હસ ચિત્રકાર શ્રેણિ ને “ તથાસ્તુ ”
હસ પ્રકાર કહકર મલ્લદત્ત કુમાર કી આજ્ઞા કો સ્વીકાર કર લિયા-
ઔર સ્વીકાર કરકે ફિર વે સવ કે સવ અપને ૨ ઘર આ ગયે-વહા
આકર ઉન્હોં ને અપની ૨ તૂલિકાઓં કો ઔર વર્ણકો-પચવર્ણ વાલે
દ્રવ્યોં કો લિયા-લેકર જહા-વહ ચિત્રગૃહ યા ઉમ ઔર ચલ દિયે ।
વહા આકર વે હસ કે અન્દર ગયે (અણુપવિસિત્તા ભૂમિભાગે વિરચેઈ
વિરચિત્તા ભૂમિ સજ્જેઈ, સિજ્જિત્તા ચિત્તસમ હાવ ભાવ જાવ ચિત્તેઝ

ભાવ છે, નેત્રથી જે ભાવ ઉત્પન્ન હોય છે તે વિલાસ અને ભવાથી જે ઉત્પન્ન
હોય છે તે વિભ્રમ છે બ્યારે આ પ્રમાણે તે ચિત્રગૃહ ચિત્રિત થઈ બીય
ત્યારે અમને તમે સૂચિત કરજો

(તણ સા ચિત્તગરસેણી તહત્તિ પડિસુણેઈ પડિસુણિત્તા જેણેવ સયાઈ ગિહાઈ
તેણેવ ઉવાગચ્છઈ ઉવાગચ્છિત્તા તૂલિયાઓ વન્નણયગિણ્હઈ, ગિણ્હિત્તા જેણેવ ચિત્ત-
સમા તેણેવ અણુપવિસઈ)

ત્યારપછી તે ચિત્રકારોએ તથાસ્તુ’ (સાઈ) આ પ્રમાણે કહીને મલદત્ત
કુમારની આજ્ઞા ને સ્વીકારી લીધી અને ત્યારપછી તેઓ બધા પોતપોતાને ઘર
આવી ગયા ત્યાં આવીને તેઓએ પોતપોતાની પીંછીઓ અને વર્ણકો એટલે-
કે પાંચ રંગવાળા દ્રવ્યોને આથે લીધા અને લઈને જે તરફ ચિત્રગૃહ હતું
તે તરફ રવાના થયા ત્યાં પહોંચીને તેઓ તેમા પ્રવિષ્ટ થયા

અણુપવિમિત્તા ભૂમિભાગે વિરચેઃ વિરચિત્તા ભૂમિ સજ્જેઈ, સિજ્જિત્તા ચિત્ત

मार्जनादिभिः परिष्करोति, सञ्जयित्वा चित्तमभा ' हावभाव-जाव ' हावभाव-
यावत्=हावभावविज्ञासमिन्मोकरञ्जितैः, रूपैः=चित्रविशेषैः, ' चित्तेउ ' चित्रयितु
' पयत्ता ' प्रयत्ता चाप्यभवत् । सा चित्रकारेण्येणिश्चित्रगृह हावभावादियुक्त चित्र-
विशेषैश्चित्रयितु प्रवर्ततेस्म ' इत्यर्थः ।

ततः=तत्र खलु एकस्य चित्रकारस्य इमेयारूपा इयमेतद्रूपा=वक्ष्यमाणस्वरूपा
चित्रकरलब्धि =चित्रकरणविशिष्टशक्ति', मनसि यादृश रूपं चिन्तयति तादृशं करोत्येव
भूता लब्धिः, लब्धा=उपार्जिता, प्राप्ता=स्वायत्तिकृता, अभिसमन्वा गता=सम्यगासे-

पयत्ता यावि होत्था) अन्दर प्रविष्ट होकर सयसे पहिले उन्होंने ने चित्र
रचने के स्थान को रेखादि द्वारा अंकित किया

यहा इस प्रकार का चित्र काटना चाहिये इस प्रकार के विचार से
भित्ति के ऊपर रेखा आदि खींचकर उन्होंने ने उस का विभाग किया-
विभाग कर के फिर वहा की भूमि को उन्होंने ने साफ किया-साफ कर
के फिर वे चित्रकार उस चित्रगृह को हाव भाव आदि वाले चित्र
विशेषों से चित्रित करने में लग गये । (तएण एगस्स चित्तगस्स इमे
यारूवे चित्तगर लद्धी लद्धा, पत्ता अभि समन्नागया-जस्सण दुपयस्स
वा चउपयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्सण देसाणु-
सारेण तयाणुरूव रूव निव्वत्तेइ) इन में एक चित्रकार ऐसा था जिसमें
चित्र करने की विशिष्ट शक्ति थी । इस ने इस शक्ति को पहिले से ही

सभ हाव भाव जाव चित्तेउ पयत्ता यावि होत्था)

तेमा प्रवेशीने तेओओ सौ पडेला चित्र जनाववानी जग्या उपर
रेखाओ जनावी

अडीं आ प्रभाणे चित्र तैयार करवानु छे आ प्रभाणे विचार करीने
लीत वगेरे उपर रेखाओ वगेरे होरीने तेमने विलाजन कथुं, विलाजन
करीने ते स्थानने तेओओ स्वच्छ जनावु स्वच्छ जनावीने ते चित्रकारे
चित्रगृहने डाव लाव वगेरेना विशेष चित्रोथी चित्रित करवा लाग्या।

(तएण एगस्स चित्तगस्स इमेयारूवे चित्तगरलद्धी लद्धा, पत्ता अभिममन्ना
गया, जस्सण दुपयस्स वा चउपयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्स
ण देसाणुसारेण तयाणुरूव रूवं निव्वत्तेइ)

आ जधाओमा ओइ चित्रकार ओवो पणु छतो छे तेमा चित्र तैयार
करवानी विशेष शक्ति छती तेणु पोतानी चित्र जनाववानी असाधारण ।

विता, यस्य, खलु द्विपदस्य-मनुष्यादेर्ना चतुष्पदस्य गवादेर्वा, अपदस्य=चरण
रहितस्य सपदीवृक्षादेर्वा, एकदेगमपि एकाङ्गमपि पश्यति तस्य खलु देशानुसारेण
चक्षुर्गोचरीकृतैरुद्देशानुसारेण 'तयाणुरुव' तदनुरूप दृष्ट द्विपदादियोग्य, रूप चित्र
'निव्वत्तेइ' निर्वर्तयति=रचयति । ततस्तदनन्तर खलु स चित्रकरदारको मल्ल्याः=
मल्लीकुमारिकाया, 'जवणियतरियाए' यवनिकान्तरिताया =यवनिकया - पर
दारुयेन आवरणपटेन, अन्तरिताया-व्यवहिताया परदाभ्यन्तरस्थिताया इत्यर्थः ।
जालान्तरेण=गवाक्षरन्ध्रेण पदाङ्गुष्ठ पश्यति-दृष्टवान् । तत खलु तस्य चित्रकारस्य=
चित्रकारदारकस्य, अयमेतद्रूपः=अयं वक्ष्यमाणस्वरूप, यावद्=विचारः समुदपद्यत-
श्रेयः=श्रेयस्करम् अभ्युदयजनक, खलु मम मल्ल्या अपि पादाङ्गुष्ठानुसारेण सदृशक=
मल्लीसमान यावद्-गुणोपपेत=मल्ल्या अङ्गेषु यत्र ये सौन्दर्यादिगुणाः तैः समन्वित,

उपार्जित किया था-प्राप्त किया-था-उस में यह विशेष चतुर था,
इस का इसे अच्छा अभ्यास था ।

यह जिस मनुष्यके, चतुष्पद गवादिके, अपद सर्पादि अथवा वृक्षादि
के जिस किसी एक एक भाग को देख लेता तो उसी के अनुसार यह
उस का पूर्ण चित्र अंकित कर देता था । (तएण से चित्तगरदारए
मल्लीए जवणियतरियाए जालतरेण पायगुट्ट पासइ, तएण तस्स
चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेय खलु मम मल्लीए वि पायगुट्टाणु-
सारेण सरिसगं जाव गुणोववेय रूप निव्वत्तित्तए एव सपेहेइ) एक
दिन इस चित्रकार ने परदा के भीतर बैठी हुई मल्लिकुमारी के पैर
का अगूठा गवाक्ष छिद्र से देख लिया था सो उस के मन में ऐसा विचार
आया कि मेरे लिये यह श्रेयस्कर है कि मैं मल्ली कुमारीका भी पादा
ङ्गुष्ठानुसार यावत् गुणोपपेत उसी के जैसा चित्र बनाऊँ ।

પહેલેથી જ મેળવેલી હતી ચિત્રકળામાં તે ખૂબ જ પ્રવીણ તેમજ તેના તે
સારો અભ્યાસી હતો

તે ચિત્રકાર માણસના, ગાય વગેરે ચોપગાઓના, માપ વગેરે અપદોના
અથવા તો વૃક્ષ વગેરેના કેઈપણ એક ભાગ જોઈ લેતો અને ત્યારમાદ તે
પ્રમાણેના જ આબેહૂબ તેમના ચિત્ર દોરતો હતો

(તएण से चित्तगरदारए मल्लीए जवणियतरियाए जालतरेण पायगुट्ट
पासइ तएण तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेय खलु मम मल्लीए वि पाय-
गुट्टाणुमारेण सरिसगं जाव गुणोववेय रूप निव्वत्तित्तए एव सपेहेइ)

એક દિવસ તે ચિત્રકારે પહોળા પાછળ બેઠેલી મલ્લીકુમારીના પગના
અગૂઠા ગવાક્ષના ઢાણામાંથી જોઈ લીધો ત્યારે તેના મનમાં એમ થયું કે હું
મલ્લીકુમારીના પગના અગૂઠાના જેવું જ સુંદર ચિત્ર તૈયાર કરું

रूप=चित्र निर्वर्तयितु=रचयितुम् । एवम्=उक्तप्रकारेण, सप्रेक्षते=स चित्रकरदारकी विचारयतिस्म । सप्रेक्ष्य=मनसि स्मृश्य, भूमिभाग=चित्रकरणस्थान सज्जयति=मार्जनलेपादिना संस्करोति, सज्जयित्वा मल्लया अपि पादाङ्गुष्ठानुसारेण यावत्=सदृशक गुणोपपेत रूप निर्वर्तयति=रचयतिस्म । ततस्तदन्तर खलु सा चित्रकार-श्रेणिश्चित्रसभा 'हावभाव-जाव' हावभाव-यावत्=हावभावविलासविबोककलितैः रूपैः, चित्रैः 'चित्तेड' चित्रयति, चित्रयित्वा यत्रैव मल्लदत्त कुमारस्तत्रोपागच्छति, उपागत्य यावत् एतामाज्ञा प्रत्यर्पयति- हे स्वामिन् । भवदाज्ञानुसारेण चित्रगृह

मल्ली कुमारी के अग में जहा २ जो जो सौन्दर्यादि गुण है उन सब गुणों को उस मल्ली कुमारी के चित्र में अंकित करूँ । ऐसा जब उस ने विचार किया- (सपेक्षित्ता) तो उस विचार के अनुसार (भूमि भाग सज्जेड, सज्जित्ता मल्लीए वि पायगुष्ठानुसारेण जावि निव्वत्तेड, तएण सा चित्तगरसेणी चित्तसभ हावभावजाव चित्तेड, चित्तिता जेणेव मल्ल दिन्ने कुमारे तेणेव जाव एतमाणत्तिय पच्चप्पिणइ) उस ने वहाँ का भूमिभाग साफ किया-मार्जन, लेप आदि द्वारा उसे संस्कारित किया-संस्कारित करके फिर उस ने वहाँ मल्ली कुमारी का भी दृष्ट पादाङ्गुष्ठ के अनुसार बिलकुल हृद्यहृ जैसे के तैसा गुणोपपेत रूप-चित्र अंकित कर दिया ।

इसके बाद उस चित्रकारो की श्रेणी ने उस चित्रगृह को हावभाव विलास एव विबोक वाले रूपों से-चित्रों से अंकित कर दिया-चित्रित कर दिया-चित्रित कर फिर वे सब के सब मल्लदत्त कुमार जहा बैठा

मल्ली कुमारीना अगमा ज्जा ज्जा जे जे सौन्दर्याना शुल्लो छे ते ज्जा शुल्लोने ते मल्लीकुमारीना चित्रमा अंकित कइ आ प्रमाणे ज्ज्यारे तेले विचार कयो- (सपेक्षित्ता) अने ते विचार ने अनुसरता ज्

(भूमिभागं सज्जेड, सज्जित्ता मल्लीए वि पायगुष्ठानुसारेण जावि निव्वत्तेड तएणं सा चित्तगर सेणी चित्तसभ हावभाव जावचित्तेड, चित्तिता जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव जाव एतमाणत्तिय पच्चप्पिणइ)

तेले ते ज्ज्याने न्वछ ज्जावी अने मार्जन लेपन वगेरथी ते स्थानने साइ कयुं साइ कयो आइ तेले पडेला जेयेला मल्ली कुमारीना पगना अगूडा ना जेबु ज् आभेहूण शुल्लोपेत इय चित्र अंकित कयुं

त्यार आइ चित्रकारो जे ज्ज्यारे चित्रगृहने हावभाव विलास अने विबोका चित्रोथी चित्रित करी आभ्यु त्यारे तेज्जा ज्जा ज्जा मल्लीकुमारी

चित्रितमस्माभिरित्येव चित्रकारश्रेणि, कथयति स्मेत्यर्थः। ततः खलु मल्लदत्तश्चित्र-
कारश्रेणि 'सकारेइ' सत्कारयति, वचनादिना, समानयति=वस्त्रादिना। 'सका-
रित्ता' सत्कार्य-सत्कार कृत्वा 'सम्माणित्ता' समान्य विपुल=विस्तीर्ण 'जीवि-
यारिह' जीविकार्ह-वृत्तियोग्य, 'पीइदाण' प्रीतिदान-परमहर्षहतुक दान ददाति
दत्त्वा प्रतिविसर्जयति। ततः खलु मल्लदत्तोऽन्यदा-अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समथे
स्नातोऽन्तः पुरपरिवासपरिवृतः 'अम्म गार्इए' अम्माधात्र्या=उपमात्रा सार्धं यत्रैव
चित्रसभा=चित्रगृह वर्तते, तत्रोपागच्छति। उपागत्य चित्रसभामनुप्रविशति=
चित्रगृहे प्रवेश करोति, अनुप्रविश्य हावभावविलासप्रिवोक्तकलितानि रूपाणि=

धा-वहा आये-आकर के उन्होंने उससे कहा स्वामिन्! हमलोगो
आपकी आज्ञानुसार चित्र गृह को चित्रित कर दिया है-(तएण) इस
प्रकार चित्रकारो के मुख से सुनकर (मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगरसेणि-
सकारेइ, सम्माणेइ, सकारित्ता सम्माणित्ता, विपुलजीवियारिह पीइ-
दाण दलेइ, दलित्ता पडिविसज्जेइ) मल्लदत्त कुमारने उस चित्रकार
श्रेणी का सत्कार किया सम्मान किया। सत्कार सम्मान करके फिरउस
ने उसे विपुल जीविकाके योग्य प्रीतिदान दिया-और बाद मे उसे
विसर्जित कर दिया। (तएण मल्लदिन्ने अन्नया ण्हाए अतेउरपरियाल
सपरिवुडे अम्मगार्इए सद्धि जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ) इसके
पश्चात् किसी एक दिन वह मल्लदत्त कुमार स्नान कर के अन्तः पुर
परिवार से युक्त होकर अपनी अम्माधात्री के साथ जहा चित्रगृह था
वहाँ गया-(उवागच्छित्ता चित्तसभा अणुपविमइ अणुपविसित्ता हावभाव

कुमार जेठा डुता त्या आब्बा अने आवीने तेजोअे आ प्रमाणे उछु-डे
डे स्वामिन। तमारी आज्ञा मुज्जण अभोअे चित्रगृह तेमार डरी दीधु छे
(तएण) आ रीते चित्रकारो ना भोथी मालगीने

(मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगरसेणि सकारेइ, सम्माणेइ, सकारित्ता सम्माणित्ता,
विपुलजीवियारिह पीइदाण दलेइ, दलित्ता पडिविमज्जेइ)

मल्लदत्त कुमारे चित्रकारोनु मल्लदत्त तेमज्ज सम्मान उच्यु, सत्कार अने
सम्मान डरीने तेजे तेमने पुञ्जण प्रमाणमा अविकारयोग्य प्रीतिदान आच्यु
अने त्थार पछी तेजोअे नवानी रत्ता आपी

(तएण मल्लदिन्ने अन्नया ण्हाए अतेउरपरियाल सपरिवुडे अम्म गार्इए सद्धि
जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ)

त्थार पछी डोछ ओइ दिवस मल्लदत्त कुमार स्नान डरीने रणुवासना
परिवारने साथे लंने पोतानी अम्माधात्रीनी साथे नया चित्र गृह डतु रना गये।

ચિત્રાણિ પડ્યન્ યત્રૌ મલ્લયા વિદેહરાજવરકન્યાયાઃ, ' તયાણુરુવે ' તદનુરૂપ= તત્સદૃશ, રૂપ=ચિત્ર ' ણિવ્યત્તિય ' નિર્વર્તિત = રચિત માસોત્ તર્જીવ પ્રાધારયદ્ ગમનાય= ગન્તુ પ્રવર્તતેસ્મ ॥ સૂ. ૨૭ ॥

મૂલમ્—તણં સે મલ્લદિન્ને કૂમારે મલ્લીય વિદેહરાયવ-
કન્નાય તયાણુરુવે રૂવે નિવ્યત્તિય પાસઈ, પાસિત્તા ઇમેયારૂવે
અઙ્ગત્થિય જાવસમુપજિત્થા—એસ ણં મલ્લીવિદેહરાયવરકન્ન
ત્તિકટ્ટુ લજ્જિય વીડિય વિઅડે સણિયર પચ્ચોસવ્વઈ । તણ
મલ્લિદિન્ન અમ્મધાઈ પચ્ચોસક્કત પાસિત્તા એવવયાસી—કિન્નં
તુમ પુત્તા । લજ્જિય વીડિય વિઅડે સણિય સણિય પચ્ચોસક્કઈ ?

તણં સે મલ્લદિન્ને અમ્મધાઈ એવ વયાસી—ણો જુત્ત ણં
અમ્મો । મમ જેઠ્ઠાણ ભગિણીય દેવયભૂયાણ લજ્જાણિજ્ઞાણ મમ
ચિત્તગરણિવ્યત્તિય સમ્મ અણુપવિસિત્તણ ? , તણં અમ્મધાઈ
મલ્લદિન્ન કૂમાર એવ વયાસી—નો ચ્છલ્લ પુત્તા । એસ મલ્લી,
એસ ણ મલ્લીય વિદેહરાયવરકન્નાય ચિત્તગરણ તયાણુરુવે

વિલાસવિમ્બોયકલિયાઈ રૂવાઈ પાસમાણે જેણેવ મલ્લીય વિદેહરાયવર-
કન્નાય તયાણુરુવે ણિવ્યત્તિય તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણ) વહા જાકર ચિત્ર
ગૃહ મે પ્રવિષ્ટ હુઆ—પ્રવિષ્ટ હોકર હાવભાવ, વિલાસ એવ વિમ્બોયક સે
યુક્ત ઉન રૂપોંકો ચિત્રોં કો—ચારર દેવતા હુઆ વહ જહા વિદેહ રાજવ
રકન્યા કા તદનુરૂપ ચિત્ર વના હુઆ થા ઉસ ઓર ગયા ॥ સૂત્ર ૨૭ ॥

(ઉવાગચ્છિત્તા ચિત્તસમ્મ અણુપવિમ્મ અણુપવિસિત્તા હાવભાવ વિલાસવિમ્બોય
કલિયાઈ રૂવાઈ પાસમાણે ૨ જેણેવ મલ્લીય વિદેહરાયવરકન્નાય તયાણુરુવે-
ણિવ્યત્તિય તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણ)

ત્યા પહોચીને તે ચિત્રગૃહમા ગયો અને જઈને હાવભાવ વિલાસ
અને ણિમ્બોયવાળા તે ચિત્રોને જોતા તે જ્યા વિદેહ રાજવર કન્યાના જેણે
જ ચિત્ર દોરેલું હતું તે તરફ ગયો ॥ સૂત્ર “ ૨૭ ” ॥

रुवे णिवत्तिए । तएण मल्लदिन्ने अम्मधाईए एयमट्ठं
सोच्चा आसुरुत्ते एव वयासी-केसणं भो चित्तयरए अपत्थिय
पत्थिए जाव परिवज्जए जेणं मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवय-
भूयाए जाव निवत्तिए त्तिकट्ठु तच्चित्तगरवज्ज आणवेइ तएणं
सा चित्तगरसेणीइमीसे कहाए लच्छट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने
कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिय जाव
वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वयासी-एव खलुसामी । तस्स चित्तग-
रस्स इमेयारूवा चित्तगरलच्छी लच्छा पत्ता अभिसमन्नगया, जस्स
णं दुपयस्स वा जाव णिवत्तेइ, त माणं सामी । तुव्भे तच्चित्तगरं
वज्ज आणवेह, त तुव्भे णं सामी । तस्स चित्तगरस्स अन्न तथा
णुरूव दड निवत्तेह । तएण से मल्लदिन्ने तस्स चित्तगरस्स
सडासग छिदावेइ छिदावित्ता निव्विसय आणावेइ ॥ सू०२८ ॥

टीका—‘ तएण से ’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स मल्लदत्तः कुमारो
मल्लया विदेहराजवरकन्याया-स्वाग्रजाताया भगिन्याः ‘ तयानुरूप ’ तदनुरूप-
मल्लीसदृश रूप-रूप चित्र, ‘ निव्वत्तिय ’ निर्वर्तित-चित्रकारदारकेण रचित, पश्यति ।
दृष्ट्वा ‘ इमेयारूवे ’ अयमेतद्रूप-अय प्रदयमाणस्वरूपः, ‘ अज्जत्थिए ’ आ-ज्या-
त्तिकः-अ-मगतः, यावत्-सकल्प, ‘ समुपज्जित्था ’ समुद्रपयत-सजातः-एषा

‘ तएण से मल्लदिन्ने कुमारे ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ-‘ तएण ’ इसके बाद (से मल्लदिन्ने कुमारे) उस मल्लदत्त
कुमार ने (विदेहराजवरकन्याए मल्लीए तथाणुरूव निव्वत्तिय पासइ,
पासित्ता इमेयारूवे अज्जत्थिए जाव समुपज्जित्था) विदेह राज की वर-

‘ तएण से मल्लदिन्ने कुमारे ’ इत्यादि ।

टीकार्थ-‘ तएण ’ तयार ॥१६ (से मल्लदिन्ने कुमार) ते मल्ल दत्तकुमारे
(विदेह राजवरकन्याए मल्लीए तथाणुरूव निव्वत्तिय पासइ, पासित्ता इमे-
यारूवे अज्जत्थिए जाव समुपज्जित्था)

સ્વલુ મલ્લી વિદેહ રાજવરકન્યા, ડતિ કન્યા લજ્જિત' = સામાન્યતઃ, વ્રીડિતઃ = વિશેષતો લજ્જિતઃ, વ્યર્દઃ = સર્વથા લજ્જા માત્રઃ સન્ શનૈઃ શનૈઃ 'પચ્ચોસક્કઠ' પ્રત્યવપ્વસ્કતે = તસ્માત્ સ્થાનાત્ પતિનિવર્તતેસ્મ । તતસ્તદનન્તર મ્વલુ મહદત્ત = મહદત્ત કુમારમ્, 'અમ્માધાર્દ' અમ્મધાત્રી = માતૃપતિનિધિરૂપા ધાત્રીસ્તન્યાદિ દાતેન પોષિકા ઉપમાતેત્યર્થઃ, 'પચ્ચોસક્કત' પ્રત્યવપ્વસ્કમાન પથાનિવર્તમાન દૃષ્ટ્વા એવ = વક્ષ્યમાણ પ્રકારેણાવાદીત્-હે પુત્ર ! કિં = કસ્માત્કારણાત્ મ્વલુ ત્વં લજ્જિતો વ્રીડિતો વ્યર્દઃ = અત્યન્ત લજ્જિતઃ સન્ શનૈઃ શનૈ પ્રત્યવપ્વસ્કસે ? । તત્ સ્વલુ સ મહદત્તકુમારઃ અમ્માધાત્રીમેવમવાદીત્-'અમ્મો !' હે અમ્મ ! 'નો જુત્ત' નો યુક્ત = નો

કન્યા મલ્લીકુમારીકા કિ જો અપની ઘડી ઘટિન થી તદનુરૂપ ચિત્ર ચિત્ર-કાર દારક કે દ્વારા અદ્વિત કિયા ગ ગા ડ્યોં હી દેખા-તો દેખકર ઉસ કે મન મેં હસ પ્રકાર કા સકલ્પ ઉત્પન્ન હુઆ-(તણ મલ્લી વિદેહ રાયવરકન્નત્તિકટ્ટુ લજ્જિણ, વીડિણ વિઝહે સણિય ૨ પચ્ચોસક્કઠ) યહતો વિદેહરાજ કો વર કન્યા મલ્લી કુમારી હૈ । એસા વિચાર કરવહ પહિલે તો લજ્જિત હુઆ-ઘાદ મેં વિશેષરૂપ સે લજ્જિત હુઆ । ઓર હસ તરહ વહ દુઃખિત હોકર ધીરે ૨ વહા સે ચલદિયા । (તણ મલ્લદિન્ન અમ્મધાર્દ પચ્ચોસક્કત પાસિત્તા એવ વયાસી-કિન્ન તુમ પુત્તા લજ્જિણ વીડિણ વિઝહે સણિય ૨ પચ્ચોસક્કઠ ?) હસ તરહ મલ્લીદત્ત કુમાર કો વહા સે ધીમી ૨ ચાલ સે જાતા હુઆ દેખકર ઉસકી અમ્મા ધાય ને ઉસસે એસા કહા-જ્યો તુમ લજ્જિત-વ્રીડિત એવ વિશેષ લજ્જિત હોકર યહા સે ધીરે ૨ ચલે જા રહે હો-(તણ સે મલ્લદિન્ને

જ્યારે પોતાની મોટી બહેન વિદેહવર કન્યા મલ્લીકુમારીનું ચિત્રકારવડે દોરાયેલું આબેહૂબ ચિત્ર જોયું ત્યારે તે જોતાજ તેના મનમાં વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે (તણ મલ્લી વિદેહરાયવરકન્ન ત્તિકટ્ટુ લજ્જિણ વીડિણ વિઝહે સણિય ૨ પચ્ચોસક્કઠ)

આતો વિદેહરાજની વરકન્યા મલ્લીકુમારી જે આમ વિચારીને પહેલાતો તે લજ્જિત થયો અને ત્યાર બાદ તે ખૂબજ લજ્જિત થયો આ રીતે તે હુ ખી અવસ્થામાં ત્યાથી ધીમે ધીમે જતો રહ્યો

(તણ મલ્લદિન્ન અમ્મધાર્દ પચ્ચોસક્કત પાસિત્તા એવ વયાસી-કિન્ન તુમ પુત્તા લજ્જિણ વીડિણ વિઝહે સણિય ૨ પચ્ચોસક્કઠ ?)

આ રીતે મલ્લીકુમારને ત્યાથી ધીમે ધીમે જતો જોઈને તેની અબા ધાયે કહ્યું કે-તમે કેમ લજ્જિત-વ્રીડિત અને અવિશેષ વ્રીડિત થઈને અહીંથી ધીમે ધીમે જઈ રહ્યા છો (તણ સે મલ્લદિન્ને અમ્મધાર્દ એવ ...)

चित्त खलु मम ज्येष्ठाया भगिन्या गुरुदेवतभूतायाः, पूज्याया, लज्जनीयायाः= लज्जते यस्या सकाशात् मा लज्जनीया, 'कृत्य प्रत्ययस्य बाहुल्यत्वादपादाने-
ऽनीयर प्रत्ययः' तस्या अग्रे मम चित्रकरनिर्गतिता मभा=चित्रगृहम् अनुपवेष्टम्
अत्र खलु चित्रगृहे मम पूज्या ज्येष्ठा भगिनी मल्लीकुमारी स्थिताऽस्ति, तस्मादत्र
मम प्रवेशकरण नोचित मित्यर्थः । ततस्तदनन्तर खलु अम्माधात्रीमल्लदत्त कुमार
मेवादीत्- हे पुत्र ! नो खलु=निश्चयेन एषा मल्लीवर्तते, किंतु एतत् खलु मल्ल्या
विदेहराजवरकन्याया श्वित्रकरेण तदनुरूप रूप=चित्र निर्गतिता=रचितमस्ति ।
तस्मादत्र लज्जाकरण तव नोचितमिति भावः ।

अम्माधाई एव वयासी) इस प्रकार सुनकर उस मल्लदत्त कुमारने अम्मा-
धाय से ऐसा कहा-(णो जुत्त ण अम्मो ! मम जेद्दाण भगिणीए गुरुदेवभू-
आए मम चित्तगरणिव्वत्तिथ सभ अणुपविसित्तण) मुझे चित्र कार से
निवर्तित इस चित्रगृहमें प्रवेश करना उचित नहीं है, कारण यहा मेरी
गुरुदेव जैसा-पूज्य तथा जिसके समक्ष मे लज्जाना हूँ-जिनके सामने
आते जाते मुझे लज्जा आती है-ऐसी बड़ी वह्नि बैठी हुई हैं ।

तात्पर्य इसका यह है कि इस चित्रगृह में मेरी पूज्य वह्नि मल्ली
कुमारी बैठी हुई है इसलिये उनके समक्ष मुझे यहां प्रवेश करते हुए
लज्जा आती है । (तएण अम्माधाई मल्लदिन्न कुमार एव वयासी-नो
खलु पुत्ता एस मल्ली-एसण मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए चित्त
गरण तयाणुरुवे चित्ते णिव्वत्तिए) ऐसा सुनकर अम्माधात्री उपमाता
ने मल्लदत्त कुमारसे इस प्रकार कहा-हे पुत्र ! ये स्वयं मल्ली कुमारी
नहीं है-यह तो विदेहराजकी उत्तम कन्या उन मल्ली कुमारी का चित्र

आ प्रभाणे सावणीने ते मल्लदत्त कुमारे अण्माधाय ने आ प्रभाणे कहुं के-
(णो जुत्त ण अम्मो ! मम जेद्दाए भगिणीए गुरुदेवभूयाए लज्जणि-
ज्जाए मम चित्तगरणिव्वत्तिथ सभ अणुपविसित्तण)

चित्रकारो वडे चित्रित करवामा आवेला आ चित्रगृहमा प्रवेशवु भारा भाटे
उचित नथी डेमडे गुरुदेव जेवी पूजनीय तेमज्जे तेमनी सामे जता पणु हु
लज्जित थाउ छु जेवा भारा मोटा णडेन अही जेठा छे

मतलण जे छे के आ चित्रगृहमा भारी पूज्य-णडेन मल्ली कुमारी
जेठा छे जेथी तेमनी सामे जता मने लज्ज आवे छे

(तएण अम्माधाई मल्लदिन्न कुमार एव वयासी-नो खलु पुत्ता एसमल्ली
एसण मल्लीए विदेह रायवरकन्नाए चित्तगरण तयाणुरुवे चित्ते णिव्वत्तिए)

आ प्रभाणे सावणीने अण्माधाय उपमाता जे मल्लदत्त कुमारने कहुं के
के छे पुत्र ! आ जाने मल्लीकुमारी नथी पणु आ तो विदेहराजनी उत्तम

લઘ્યર્થ-જ્ઞાતાર્થ સતી યત્રૈવ મહુદત. કુમારસ્તગૌરોપાગન્ઠતિ, ઉપન્ગત્ય કરંતલ પરિગૃહીત યાગત્-શિર આવર્ત મસ્તકેઽઞ્જલિં કૃત્વા જયવિજય શબ્દેન વર્ધયતિ= અભિનન્દયતિ, વર્ધયિત્વા, એવમવાદીત્-હે સ્વામિન્ ! એવ ગ્વલુ તસ્ય ચિત્રકરસ્ય, ઇમેતદ્વૃપા=ચક્ષ્યમાણસ્વરૂપા ચિત્રકરલઘ્વિર્લઘ્વા=અર્જિતા પ્રાપ્તા=સ્વાયત્તીકૃતા અભિસમન્વાગતા=સમ્યગાસેવિતા, યસ્ય ગ્વલુ દ્વિપદસ્ય વા યાગત્-ચતુષ્પદસ્ય વા અપદસ્ય વા એકદેશમપિ પશ્યતિ તસ્ય ગ્વલુ દેશાનુસારેણ તદનુરૂપ રૂપ 'નિવ્વત્તેઈ' નિર્વર્તયતિ=રચયતિ, તત્=તસ્માત્ હે સ્વામિન્ ! મા ગ્વલુ યુય ત ચિત્રકર વધ્ય-

ચિત્તગરસેણી ઇમીસે કહાણ લદ્દદ્દા સમાણા જેણેવ મલ્લદિન્ને કુમારે તેણેવ ઉવાગન્ઠડ, ઉવાગન્ઠિત્તા કરચલપરિગાહિય જાવ વદ્ધાવેદ, વદ્ધાવિત્તા એવ વયાસી-એવ ગ્વલુ સામી ! તસ્સ ચિત્તગરસ્સ ઇમેયારૂવા ચિત્તગરલદ્ધીલદ્ધા, પત્તા અભિસમન્નાગયા તસ્સણ દુપયસ્સ વા જાવ ણિવ્વત્તેઈ) હસ પ્રકાર હસ ઉક્ત રૂપ કથા કા હાલ જય ઉસ ચિત્રકાર શ્રેણી કો માલૂમ હુઆ-તવ વહ જહા મલ્લદત્ત કુમાર યા વહાં પહુંચી પહુંચ કર ઉસને ઉસે દોનો હાથોં કી અજલિ બનાકર ઓર ઉસે મસ્તક પર ધરકર નમસ્કાર કરતે હુણ જય વિજય શબ્દોં ઠારા વધાઈ દી વધાઈ દેકર ફિર વહ હમ પ્રકાર કહને લગો-સ્વામિન્ ! હમ ચિત્રકાર કો હસ પ્રકાર કી યહ ચિત્રકાર લઘ્વિ પ્રાપ્ત હુઈ હૈ-ઉસ પર ઉસકા અધિ કાર જમ ગયા હૈ-ઉસ કા ઉસે અચ્છી તરહ અભ્યાન હો ચુકા હૈ-કિ જિસકી વજહ સે વહ કિસી ખી દ્વિપદ, ચતુષ્પદ, અપદ કા એક દેશ ખી દેસ્વકર ઉસકે અનુમાર તદનુરૂપ ચિત્રરચ દેતા હૈ । (ત માણ સામી ।

(તણ સા ચિત્તગરસેણી ઇમીસે કહાણ લદ્દદ્દા સમાણા જેણેવ મલ્લદિન્ને કુમારે તેણેવ ઉવાગન્ઠડ, ઉવાગન્ઠિત્તા કરચલપરિગાહિય જાવ વદ્ધાવેદ, વદ્ધાવિત્તા એવ વયામી એવ ગ્વલુ સામી ! તસ્સ ચિત્તગરસ્સ ઇમેયારૂવા ચિત્તગરલદ્ધી લદ્ધા, પત્તા અભિસમન્નાગયા તસ્સણ દુપયસ્સ વા જાવ ણિવ્વત્તેઈ)

આ ગીતે ચિત્રકારને ઉપરની બધી વિગતની બાણુ થઈ ત્યારે બ્યા મલ્લદત્ત કુમાર હતો ત્યા તેઓ પહોંચ્યા અને પહોંચીને બને હાથોની અબલી બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કરતા જય વિજયના શબ્દો ઉચ્ચારતા તેણે કહ્યું—હે હે સ્વામિન્ ! તે ચિત્રકારને આ પ્રમાણેની વિશેષ શક્તિ પ્રાપ્ત થઈ છે તે કલા ઉપર તેનો પૂરે પૂરો અધિકાર આવી ગયો છે તે સારી પઠે અભ્યસ્ત થઈ ગયો છે જેથી તે ઝોઈ પણ દ્વિપદ (માણુસ) ચતુષ્પદ (પશુ) અને અપદ (સાપ વગેરે) ના કોઈ પણ એક દેશમે ઝોઈને તે મુજબ નેના જેવું જ ચિત્ર દોરી આપે છે (ત માણ સામી ! તુમ્હે-

માજ્ઞાપયત-પ્રધાર્યમાજ્ઞાં મા કુરુતેત્યર્થઃ, તત્=તસ્માત્ હે સ્વામિન્ ! યુષ્મલ્લુ તસ્ય ચિત્રકરસ્યાન્ય તદનુરૂપ ચિત્રકરાપરાધસદૃશ, દણ્ડ ' નિવ્વત્તેહ ' નિર્વર્તયત=કુરુત । તતઃ=ચિત્રકરશ્રેણિસપિનયવચનશ્રવણાનન્તર, ચલુ સ મલ્લદત્તસ્તસ્ય - મલ્લીચિત્ર રચયિતુ, ચિત્રકરસ્ય ' સઢાસગ ' સન્દગ્ધકમ્=ઝરુજદ્ધયોઃ સન્નિ નાડીરૂપમિત્યર્થ, ' છિદાવેહ ' છેદયતિ-કર્તયતિસ્મ યત્તુ-' સઢાસગતિ ' હસ્તો છેદયતિસ્મ' હતિવ્યાખ્યાત-તદ જ્ઞાનવિઝૃમ્ભિતમ્-તેજીય ચિત્રકરેણ હસ્તિનાપુરે નગરે ગત્વા પુનર્મલ્લીચિત્ર રચિતમિત્યેતદર્થ મનિયોધકપૂલપાઠવિરોધાત્ હસ્તામાત્રે ચિત્રલેખના

તુબ્ધે તે ચિત્તાગર વજ્ઞ આણનેહ) હસલિયે હે સ્વામિન્ ! આપ ઉસ ચિત્રકાર કો મારને કી આજ્ઞા પ્રદાન ન કીજિયે (ત તુબ્ધેણ સામી ! તસ્સ ચિત્તાગરસ્સ અન્ન તયાણુરૂવ દહ નિવ્વત્તેહ, તણ્ણ સે મલ્લદિન્ને તસ્સ ચિત્તાગરસ્સ સઢાસગ ઈદાવેહ, ઈદાવિત્તા નિવ્વિસય આણવેહ) કિન્તુ હે નાથ ! આપ ઉસ ચિત્રકર કો રતાયે ગયે હસ ચિત્ર કે અનુસાર કિસી ઔર દૂસરે દહ કા નિર્ધારણકર દીજિયે-હસ પ્રકાર ચિત્રકાર શ્રેણી કે વચન સુનને કે વાદ મલ્લદત્ત કુમાર ને ઉસ મલ્લી કે ચિત્ર બનાને વાલે ચિત્રકાર કી ઝરુ ઔર જગાઔ કી સધિ કો છિદવા દિયા-કતરવા દિયા-

(જો " સઢાસગતિ " કિસી ર ટીકાકાર ને ંસા માન કર " ઉસ કે દોનોં હાથ કટવા દિયે " હસ પ્રકાર કા વ્યાખ્યાન કિયા હૈ વહ ટીક નહી જ્ઞાન હોતા હૈ-કારણ " હસી ચિત્રકાર ને હસ્તિનાપુર મૈં જાકર મલ્લી કુમારીકા ચિત્ર રચા હૈ " ંસા જો આગે મૂલપાઠ આનેવાલા ઉસ

ત ચિત્તાગર વજ્ઞ આણવેહ) ંથી હે સ્વામિન્ ! તમે તે ચિત્રકારને મારવાની આજ્ઞા માડી વાળો.

(ત તુબ્ધેણ સામી ! તસ્સ ચિત્તાગરસ્સ અન્ન તયાણુરૂવ દહ નિવ્વત્તેહ, તણ્ણ સે મલ્લદિન્ને તસ્સ ચિત્તાગરસ્સ સઢાસગ ઈદાવેહ, ઈદાવિત્તા નિવ્વિસય આણવેહ)

અને હે નાથ ! તમે ચિત્રકારને તે ચિત્ર બદલ બીજી ગમે તે સબ કરો આ પ્રમાણે ચિત્રકારોના વચન સાલળીને મલ્લદત્તકુમારે મલ્લીકુમારીનુ ચિત્ર બનાવનાર ચિત્રકારના ઈરુઁ-બધાઁના સાધાઁને કપાવી દીધા.

" સઢાસગતિ " આ પ્રમાણેના પાઠના આધાર લઇને કેટલાક ટીકાકારો આમ માનતા થયા છે કે તે ચિત્રકારના બને હાથ પણ કપાવવામા આવ્યા હતા પણ હકીકતમા આ વાત સત્યથી વેગળી છે કેમકે ં જ ચિત્રકાર આગળ હસ્તિનાપુરમા જઇને મલ્લીકુમારીનુ ચિત્ર

समवात् । छेदयित्वा 'निविसय' निर्विषयम्-विषयान्निर्गत स्वदेशात् बहिर्गन्तु-
मित्यर्थः, आज्ञापयति=आज्ञां दत्तवान् ॥ सू० २८ ॥

मूलम्—तएणं से चित्तगरए मल्लदिन्नेण निविसए आणत्ते
समाणे समडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ णयराओ णिक्ख-
मइ, णिक्खमित्ता विदेहजणवय मज्झ मज्झेण जेणेव कूरु-
जणवए जेणेव हत्थिणाउरनयरे तेणेव उवागच्छइ, उवा-
गच्छित्ता भडणिक्खेव करेइ, करित्ता चित्तफलं सज्जेइ, स-
जित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्ताए पायगुट्ठाणुसारेण एव
णिवत्तेइ, णिवत्तित्ता कक्खनरासि लुब्भइ, लुब्भित्ता महत्थ
जाव पाहुड गिण्हइ, गिण्हित्ता हत्थिणापुर नयर मज्झ मज्झेणं
जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त
करयल जाव वच्चाविता पाहुड उवणेइ, उवणित्ता
एव वयासी—एव खलु अह सामी ? मिहिलाओ राय-
हाणीओ कूभगस्स रन्नो पुत्तेणं पभावईए देवीए अत्तएणं
मल्लदिन्नेण कूमारेण निविसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए
तं इच्छामिण सामी । तुब्भ बाहुच्छाया परिगहिण जाव परि-
वसित्तए, तएण से अदीणसत्तू राया त चित्तगरदारयं एवं

का फिर विरोध आवेगा । हाथों के बिना चित्र लिखना कैसे बन सकता
है । जघा कटवा देने के बाद फिर उस ने उसे अपने देश से बाहर
चले जाने की आज्ञा दे दी । “ २८ ”

भूण पाठ आगण आवशे तेनी साथे हाथ कपाववानी उक्त वात भध
येसती नथी हाव वगर थित्र होगी न कर्त्त रीते राजाय ?

मल्लदिन्नेण कूमारेण निविसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए
तं इच्छामिण सामी ॥ सूत्र “ २८ ” ॥

वयासी-किन्न तुमं देवाणुप्पिया । मल्लदिण्णेणं निव्विसए
आणत्ते ? तएणं से चित्तयरदारए अदीसत्तूरायं एव वयासी-
एव खलु सामी । मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ चित्त-
गरसेणि सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-तुब्भे ण देवाणु-
णुप्पिया । मम चित्तसभ त चेव सव्व भाणियव्व जाव मम
छिदावेइ, छिदावित्ता निव्विसय आणवेइ, त एव खलु सामी !
मल्लादिण्णे कुमारेण निव्विसए आणत्ते ।

तएण अदीणसत्तू राया त चित्तगर एव वयासी - से
केरिसए णं देवाणुप्पिया । तुमे मल्लीए तयाणुरूवे रूवे नि-
व्वत्तिए ? तएणं से चित्तगरदारए कक्खतगाओ चित्तफलय
णीणेइ, णीणित्ता अदीणसत्तूस्स उवणेइ, उवणित्ता एव वयासी
-एसणं सामी । मल्लीए विदेहराजवरकन्नाए तयाणुरूवस्स
रूवस्स केइ आगारभावपडोयारे निव्वत्तिए, णो खलु सक्के
केणइ देवेण वा जाव मल्लीए विदेहरायवरकण्णगाए तयाणु-
रूवे रूवे निव्वत्तिए, तएण अदीणसत्तू पडिरूवजणियहासे
दूय सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी - तहेव जाव पहारेत्थ
गमणयाए ॥ सू० ॥

टीका—‘तएण से इत्यादि । ततस्तदन्तर खलु स चित्रकारी मल्लदत्तेन निर्वि-
पयः=देशनिर्गतो भवितुम् आज्ञाप्त सन् सभाण्डामत्रोपकरणमादाय=स्वगृहमागत्य

‘ तएण से चित्तगरए ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से चित्तगरए) वह चित्रकार (मल्ल दिन्ने
ण, निव्विसए आणत्ते समाणे) मल्लदत्त कुमारसे देशसे बाहिर निकल

‘ तएण से चित्तगरए ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्थारणाह (से चित्तगरए) चित्रकार (मल्लदिन्नेण निव्विसए
आणत्ते समाणे) मल्लदत्तकुमार वडे अपाओली देश अकार जवानी आता साओणीने

स्वकोय भाण्डाद्युपकरण गृहीत्वा मिथिलातो नगरीतो निष्क्रामति=रहिर्निस्परति
निष्क्रम्य विदेह जनपद=विदेहदेशस्य स यमध्येन-मध्ये भूत्वा प्राकृतत्वात् पठ्यते
द्वितीया, यत्रैव कुरुजनपदः=कुरुनामको देशः, यत्रैव हस्तिनापुर नगर, तत्रैवोपा-
गच्छति, उपागत्य 'भडणिकखेव' भाण्डनिक्षेप=भाण्डाद्युपकरणानां स्थापनं करोति
कृत्वा 'चित्तफलक' चित्रफलक=चित्रगोपपट्टकं यस्मिन् पट्टके चित्रं रचनीयं
तदित्यर्थः, सज्जयति=मार्जनलेपादिना सस्कीति, सज्जयित्वा मल्लया विदेहराज

जाने के लिये आजस होता हुआ (सभडमत्तोवगरणमायाए मिहि-
लाओ नगरीओ निखमड निखमिन्ता विदेह जणवय मज्झ मज्झेण
जेणेव कुरु जणवए जेणेव हत्थिणाउरनयरे तेणेव उवागच्छइ) अपने
घर आया-वहा आकर उसने अपने भाण्ड आदि उपकरणों को लिया-
और लेकर फिर वह मिथिला नगरीसे बाहिर निकल गया-निकल कर
वह विदेह जनपद के बीच से होकर जहा कुरु जनपद था और जहा
हस्तिनापुर नगर था-वहा आये- (उवागच्छित्ता भडनिकखेव करेइ,
करित्ता चित्तफलक सज्जेइ, सज्जित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए
पायगुट्टानुसारेण रुव निव्वत्तेइ) वहा आकर के उस ने अपने भांड
आदि उपकरणों को यथास्थान रख दिया-रखकर के फिर उसने चित्र
फलक को-जिस में चित्र रचा जाता है उस पट्टिये को-मार्जन लेप
आदि से ठीक ठाक किया-अर्थात् पहिले उसने उस पट्टि को साफ
किया पश्चात् उस पर रंग आदि का लेप लगाया ।

(सभडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ नगरीओ निखमड निखमिन्ता वि-
देह जणवय मज्झ मज्झेण जेणेव कुरुजणवए जेणेव हत्थिणाउरनयरे तेणेव उवागच्छइ
ते पोताने घेर आव्हे। अने त्याथी तेणे लाउ-वासणु वगेरे वस्तुओ लीधी
लधने मिथिला नगरीनी णडार नीउण्हे। अने नीकणीने विदेह जनपदनी वच्चे
थधने ज्या कुरुजनपद छुतु अने ज्या हस्तिनापुर नगर छुतु त्या गये।

(उवागच्छित्ता भडनिकखेव करेइ, करित्ता चित्तफलक सज्जेइ, सज्जित्ता म-
ल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायगुट्टानुसारेण रुव निव्वत्तेइ)

त्या लधने तेणे पोतानी लाउ वगेरे वस्तुओने उचित स्थाने गोठवी
लीधी अने गोठवाने चित्र द्वाकनु-ओखे के नेमा चित्र होरवामा आवे छे
ते पाटियानु-मार्जन लेपन वगेरे करीने तैयार क्युं मतवन्न आ प्रमाणे छे
के पडेला तेणे पाटियाने वच्चे णनायु तयारपछी गग वगेरेने लेप कर्यो

वरकन्यायाः पादाहुष्ठानुसारेण रूप=नदीय चित्र निर्वर्तयति । निर्वर्त्य 'कक्ख तरसि' कक्षान्तरे-कक्षस्य=बाहोर्मूलस्य अन्तरे=भ्राभ्यन्तरे 'दुप्पड' छुपति धरतीत्यर्थः । 'छुप्पित्ता' छुप्त्वा=धृत्वा 'महत्थ जाव' महार्थं यावत्-महार्थ, महार्ह, 'पाहुड' प्राभृतम्=उपहार, गृह्णाति, गृहीत्वा हस्तिनापुर नगर-हस्तिनापुरनगरस्य मध्यमध्येन यत्रैव-अदीनशत्रुराजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य त करतल-यावत् करतल परिगृहीत शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जपमयेति शब्देन वर्धयति=अभिनन्दयति, वर्धयित्वा प्राभृतमुपचयति=अग्रे म्थापयति उपनीय एव

बाद में विदेह राजवर कन्या मरिली कुमारी का उमके ऊपर पाद के अगुष्ठ के अनुसार तदनुरूप चित्र रचा । (गिण्वत्तित्ता कक्खतरसि छुम्भइ, छुम्भित्ता महत्थ जाव पाहुड गिण्हड, गिण्हित्ता, हत्थिणा पुर नयर मज्झ मज्झेण जेणेव अदीण सत्तूराया तेणेव उवागच्छइ) चित्र रचकर के फिर उसने उसे अपनी काँख में दयाया-दया कर महार्थ यावत् महार्थ प्राभृत (बहुत मूल्य भेट) लिया, और लेकर हस्तिनापुर नगर के बीचो बीच से होकर वह जहाँ अदीन शत्रु राजा थे वहाँ गया- (उवागच्छित्ता त करयल जाव बद्धावेइ, बद्धावित्ता पाहुड उवणेइ, उवणित्ता एव वयासी) वहाँ जाकर उसने दोनों हाथों की अञ्जलि घना कर और उसे मस्तक पर रख कर राजा को नमस्कार किया बाद में जय विजय आदि शब्दों द्वारा उन्हें बधाई दी । बधाई देकर उस ने लाये हुए भेट को उन के समक्ष रख दिया । रख देने के बाद फिर उस

त्यारणाइ चित्रकारे पगना अशुठाने अनुइप विदेह राजवर कन्या मरिली कुमारीनु आणेडुण चित्र दोरु

(गिण्वत्तित्ता कक्खतरसि छुम्भइ, छुम्भित्ता महत्थ जाव पाहुड गिण्हड गिण्हित्ता, हत्थिणापुर नयर मज्झ मज्झेण जेणेव अदीणसत्तूराया तेणेव उवागच्छइ)

चित्र दोर्या पछी चित्रने जगलमा दणावीने भुद्धार्थ साधक-जहुँ न भूयवान लेट लीधी अने लधने हस्तिनापुर नगरनी वन्ने धर्धने जया अदीनशत्रु राजा हुता त्या गये।

उवागच्छित्ता त करयल जाव बद्धावेइ बद्धावित्ता पाहुड उवणेइ उवाणित्ता एव वयासी त्या जधने तेणु जने हाथेनी अजली जनावीने तेने भाथे भूझीने राजा ने नमन कर्था अने त्यार भाइ तेणु 'जय विजय' वगेरे शब्दोर्था राजा ने वधाभणी आपी वधाभणी आपीने चित्रकारे पोतानी पासेनी लेट राजानी सामे भूझी लेट अर्पणु कर्था भाइ तेणु राजा ने आ प्रभाणु बिनति करी के

मवादीत्-हे स्वामिन् ! एव खलु अह मिथिलातो राजधानीत' कुम्भकस्य राज्ञः पुत्रेण प्रभावत्या देव्या आत्मजेन=भद्रजातेन, मल्लदत्तेन कुमारेण निर्विषय= देशान्निर्गन्तुम्=आज्ञप्तः सन् इह= अस्मिन् स्थाने, हव्य=शीतम् आगत । तत्= तस्मात् हे स्वामिन् ! इच्छामि खलु युष्माक वाहुच्छाया परिगृहीत'-भुजबलाश्रय गृहीत्वेत्यर्थः यावत् परिवस्तुम्, अत्र-यावच्छब्देन-निर्भय, निरुद्विग्नः सन्, सुख सुखेन, इतिरोभ्यम् । ततः खलु सोऽदीनशत्रुराजा, त चित्रकरदारकमेवमवादीत् हे देवानुप्रिय ! किं=कुतः, खलु त्व मल्लदत्तेन निर्विषयः-देशाद् परिगन्तुम्,

ने उन से इस प्रकार कहा-एव खलु अह सामी ! मिथिलाओ राय हाणीओ कुम्भकस्स रण्णो पुत्तेण, पभावईए देवीए अत्तएण मल्लदिन्नेण कुमारेण निर्विषए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए) हे स्वामिन् ! मिथिला राजधानी से वहा के कुम्भक राजा के पुत्र और प्रभावती के अगज मल्लदत्त कुमार से देश से निर्वासित किया गया यहा आये हैं ।

(त इच्छामिण सामी ! तुम्ह वाहुच्छाया परिगृहिए जाव परिवसित्तए) अतः हे स्वामिन् ! मैं आपकी भुजच्छाया का आश्रय लेकर यहां रहना चाहते हैं । यहा " यावत् " शब्द से " निर्भयः " निरुद्विग्नः सन् सुख सुखेन " इस पाठ का संग्रह किया गया है । (तएण से अदीणसत्तू राया त चित्तगरदारय एव वयासी-किन्न तुम देवाणु प्पिया ! मल्ल दिन्नेण निर्विषए आणत्ते) उस की इस प्रकार बात सुनकर अदीन शत्रु राजा ने उस चित्रकर दारक से इस प्रकार पूछा-

(एव खलु अह सामी ! महिलाओ रायहाणीओ कुम्भकस्स रण्णो पुत्तेण पभावईए देवीए अत्तएण मल्लदिन्नेण कुमारेण निर्विषए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए)

हे स्वामीन् ! मिथिला राजधानीना प्रभावती देवीना गर्भधी जन्म पायेला कुलठ राजाना पुत्र मल्लदत्तकुमारे भने देशवटो आय्यो छे तेथी हु अही तभारे शत्रु आय्यो छु

(त इच्छामि ण सामी ! तुम्ह वाहुच्छाया परिगृहिए जाव परिवसित्तए)

अथी हे स्वामी ! हु तभारी वाहुच्छायाना आश्रयभा अही रहेवा आहु छु अही ' यावत् ' पदथी ' निर्भय ' ' निरुद्विग्न सन् सुख सुखेन ' आ पाइने अश्रु करवाभा आय्यो छे

(तएण से अदीण सत्तूराया त चित्तगरदारय एव वयासी किन्न तुम देवाणु प्पिया ! मल्लदिन्नेण निर्विषए आणत्ते)

आ वान सालणीने अदीनशत्रु राजाओ चित्रगरदारकने आ प्रभावे छु

આજ્ઞા ? તતઃ સ ચિત્રકરદારક , અદીનશત્રુ રાજાનમેવમયાગીત-હે સ્વામિન્ !
 એવ યલુ મલ્લદત્ત કુમારોઽન્યદા યદાચિત્=અન્યસ્મિન્ વર્તિમચિત્ સમયે,
 ચિત્રકરશ્રેણિ ચિત્રકારાન્ શબ્દયતિ=શ્રાદ્ધતાન્ । શબ્દયિત્વા એવમવાગીત-હે
 દેવાનુપ્રિયાઃ ! યૂય યલુ મમ ચિત્રસભા ચિત્રયત ત ચેવ સઘ્વભાણિયઘ્વ ' તદેવ
 સર્વ ભણિતવ્યમ્-હહ ચિત્રકર વિષયક સકઠ પૂર્વોક્તમેવ વૃત્તાન્ત વાન્યમિત્યર્થઃ,
 ' જાવ મમ સડાસગ છિંદાવેઢ ' યાવન્મમ સન્દેશક છેદયતિ । ચિત્રયત ' ઇત્યાદિ,

હે દેવાનુપ્રિય ! તુમ કિમ કારણ સે મલ્લદત્તકુમાર સે નિર્વાસિત
 હોને કે લિયે આજ્ઞા કિયે ગયે હો (તણ્ણં સે ચિત્તયરદારણ અદીણ
 સત્તૂરાય એવ વયાસી-એવ યલુ સામી ! મલ્લદિન્ને કુમારે અણ્ણયા
 કયાઈ ચિત્તગરસેણિ સદાવેઢ, સદાવિત્તા એવ વયાસી-તુઘ્મેણ દેવા
 ણુપ્પિયા ! મમ ચિત્તસમ ત ચેવ સઘ્વ ભાણિયઘ્વ જાવ મમ સડાસગ
 છિંદાવેઢ છિંદાવિત્તા નિવ્વિસય આણવેઢ ત એવ યલુ સામી ! મલ્લ
 દિન્નેણં કુમારેણ નિવ્વિસયે આણત્તે) ઉસ ચિત્રકર દારક ને તવ
 અદીન શત્રુ રાજા સે કહા-હે સ્વામિન્ ! મલ્લદત્ત કુમાર ને કિસી એક
 સમય ચિત્રકારોં કી શ્રેણી કો બુલાયા ઔર બુલાકર ઉસ સે એમા કહા
 કિ હે દેવાનુપ્રિયોં ! તુમ લોગ મેરે ઇસ ચિત્રગૃહ કો ચિત્રિત કરો ઇસ
 તરહ પદિલે કી સવ ઘટના ઉસ ચિત્રકાર ને અદીનશત્રુ રાજા કો ઉરુ
 ઔર જઘાઓં કો છેદને તક કી સુના દો । છિંદયા કર ફિર ઉન્હોંને મુશ્કે

હે હે દેવાનુપ્રિય ! મલ્લદત્ત કુમારે તમને શા કારણથી દેશમાથી નિર્વાસિત
 થઈ જવાની આજ્ઞા આપી છે ?

(તણ્ણં સે ચિત્તયરદારણ અદીણ સત્તૂરાય એવ વયાસી-એવ યલુ સામી !
 મલ્લદિન્ને કુમારે અણ્ણયા કયાઈ ચિત્તગરસેણિ સદાવેઢ સદાવિત્તા એવ વયાસી-
 તુઘ્મે ણ દેવાણુપ્પિયા ! મમ ચિત્તસમ ત ચેવ સઘ્વ ભાણિયઘ્વ જાવ મમ સડાણ
 છિંદાવેઢ છિંદાવિત્તા નિવ્વિમય આણવેઢ ત એવ યલુ સામી ! મલ્લદિન્નેણં કુમા

छेदयित्वा निर्विषयम्=देशनिष्कासनमाज्ञापयति ' तदेव खलु हे स्वामिन् । अहं मल्लदत्तेन कुमारेण निर्विषय आब्रूतः ।

ततस्तदनन्तरं खलु अदीनशत्रु राजा तं चित्रकारमेव वक्ष्यमाण प्रकारेण, अवादीत् — हे देवानुप्रिय ! तत् कीदृशं खलु त्वया मल्लयास्तदनुरूपं रूपं =चित्रं निर्गतितम् ? ततः खलु स चित्रकरदारकः कक्षान्तरात् = बाहुमूलाभ्यन्तराद् चित्रफलकं यस्मिन् मल्लयाश्चित्रं लिखितमासीत् तदित्यर्थः, 'णीणेइ' नयति = वह्निर्नयति वह्निष्करोतीत्यर्थः, 'णीणिता' नीत्वा अदीनशत्रोः राज्ञ उपनयति=अग्रे स्थापयति, उपनीय, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे स्वामिन् । एष खलु मल्लया-पिदेहराजपरकन्यायाः पादाङ्गुष्ठानुसारेण तदनुरूपस्य तत्सदृशस्य रूपस्य चित्रस्य 'केड' कोऽपि कश्चित्, किञ्चिन्मात्रः 'आगार

देश से बाहर निकल जाने के लिये आज्ञा दे दी । इस तरह मल्लदत्त कुमार से निर्वासित होता हुआ-मैं यहाँ आया हूँ ।

(तएण अदीणसत्तूराया त चित्तगर एव वयासी-से केरिसएण देवाणुप्पिया ! तुमे मल्लीए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ? तएण से चित्तगरदारए कक्खनराओ चित्तफलय णीणेइ, णीणिता अदीणसत्तुस्स उवणेइ) चित्रकर की इस बात को कर्णपथ करके अदीनशत्रु राजा ने उस चित्रकार से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ? मल्लीकुमारी का चित्र तुमने तदनुरूप कैसा बनाया था । इस प्रकार राजा का वचन सुनकर उस चित्रकरदारक ने अपनी कक्षा के भीतर से दबे हुए उस चित्र फलक को कि जिसमें मल्लीकुमारीका चित्र अंकित किया हुआ था बाहर निकाला और बाहर निकाल कर उसे अदीनशत्रु राजा के समक्ष रख दिया । (उवणिता एव वयासी) रखकर वह फिर इस

देशभाषी બહાર જતા રહેવાનો હુકમ કર્યો છે ત્યાથી તેમની આજ્ઞા પ્રમાણે બહાર નીકળીને હું અહીં આવ્યો છું

(તएण અદીણ સત્તૂરાયા ત ચિત્તગર એવ વયાસી-સે કેરિસણ દેવાણુપ્પિયા ! તુમે મલ્લીએ તયાણુરૂવે રૂવે નિવ્વત્તિએ ? તएण से चित्तगरदारए कक्खनराओ चित्तफलय णीणेइ, णीणिता अदीणसत्तुस्स उवणेइ)

चित्रकारनी बात साबणीने अदीनशत्रु राजाએ તે ચિત્રકારને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! મલ્લીકુમારીનું આંગેહૂમ ચિત્ર તમે કેવું દોર્યું હતું ? આ રીતે રાજાના વચનો સાબળીને ચિત્રકારદારકે મલ્લીકુમારીના ચિત્રવાળું ફલક બગ લખાથી બહાર કહ્યું અને તેને અદીનશત્રુ રાજાની સામે મૂકી દીધું (ઉવણિતા એવ વયાસી) મૂકીને તેણે ગળતે કહ્યું કે--

આજ્ઞા ? તતઃ સ ચિત્રકરદારક , અદીનશત્રુ રાજાનમેયમવાદીત્-હે સ્વામિન્ !
 એવં ચલુ મલ્લદત્ત કુમારોઽન્યદા વદાચિત્=અન્યસ્મિન્ વસ્મિન્ચિત્ સમયે,
 ચિત્રકરશ્રેણિ ચિત્રધારાન્ શબ્દયતિ=શ્રાહતયાન્ । શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્-હે
 દેવાનુપ્રિયાઃ ! યૂય ચલુ મમ ચિત્રસભા ચિત્રયત ત ચેવ સર્વભાણિયન્વ ' તદેવ
 સર્વ ભણિતવ્યમ્-इह चित्रकर विषयक सकृत् पूर्वोक्तमेव वृत्तान्त वान्यमित्यर्थः,
 ' જાવ મમ સહાસગ છિદાવેહ ' યાગ્મમ સન્દેશક હેદયતિ । ચિત્રયત ' ઇત્યાદિ,

હે દેવાનુપ્રિય ! તુમ કિસ કારણ સે મલ્લદત્તકુમાર સે નિર્વાસિત
 હોને કે લિયે આજ્ઞા કિયે ગયે હો (તણ્ણં સે ચિત્તયરદારણ અદીણ
 સત્તૂ રાય એવ વયાસી-એવ ચલુ સામી ! મલ્લદિન્ને કુમારે અણગયા
 કયાહ ચિત્તગરસેણિ સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી-તુબ્હેણં દેવા
 ણુપ્પિયા ! મમ ચિત્તસભ ત ચેવ સર્વ ભાણિયન્વ જાવ મમ સહાસગ
 છિદાવેહ છિદાવિત્તા નિવ્વિસય આણવેહ ત એવ ચલુ સામી ! મલ્લ
 દિન્નેણં કુમારેણ નિવ્વિસયે આણત્તે) ઉસ ચિત્રકર દારક ને તવ
 અદીન શત્રુ રાજા સે કહા-હે સ્વામિન્ ! મલ્લદત્ત કુમાર ને કિસી એક
 સમય ચિત્રકારોં કી શ્રેણી કો બુલાયા ઓર બુલાકર ઉસ સે એમા કહા
 કિ હે દેવાનુપ્રિયોં ! તુમ લોગ મેરે હિસ ચિત્રગૃહ કો ચિત્રિત કરો હિસ
 તરહ પદિલે કી સવ ઘટના ઉસ ચિત્રકાર ને અદીનશત્રુ રાજા કો ઉરુ
 ઓર જઘાઓ કો હેદને તક કી સુના દો । છિદવા કર ફિર ઉન્હોંને મુક્કે

કે હે દેવાનુપ્રિય ! મલ્લદત્ત કુમારે તમને શા કારણથી દેશભાથી નિર્વાસિત
 થઈ જવાની આજ્ઞા આપી છે ?

(તણ્ણં સે ચિત્તયરદારણ અદીણ સત્તૂ રાય એવ વયાસી-એવ ચલુ સામી !
 મલ્લદિન્ને કુમારે અણગયા કયાહ ચિત્તગરસેણિ સદાવેહ સદાવિત્તા એવ વયાસી-
 તુબ્હે ણ દેવાણુપ્પિયા ! મમ ચિત્તસભ ત ચેવ સર્વ ભાણિયન્વ જાવ મમ સહાસગ
 છિદાવેહ છિદાવિત્તા નિવ્વિસય આણવેહ ત એવ ચલુ સામી ! મલ્લદિન્નેણં કુમા
 રેણ નિવ્વિસયે આણત્તે)

ચિત્રકરદારકે બ્યારે અદીનશત્રુ રાજાને કહ્યું કે હે સ્વામીન્ ! મલ્લદત્ત
 કુમારે એક વખતે ચિત્રકારોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યું કે હે
 દેવાનુપ્રિયો ! તમે મારા ચિત્રગૃહને ચિત્રિત કરો આ રીતે ચિત્રકારે અદીન
 શત્રુની સામે ઉરુઓ-જઘાઓને કપાવવા બુધીની બધી વિગત રજૂ કરી અને
 તેણે અતે આ પ્રમાણે કહ્યું કે જઘાઓને કપાવીને મલ્લદત્તકુમારે મને પોતાના

समुत्पन्न तद्विषयकानुरागवानित्यर्थः । एवभूतः सन् दूत शब्दयति शब्दयित्वा एवमवा
दीत्-‘तद्देव’ तथैव=काशीराजः शङ्खः स्वदूतमुक्तवान्, तद्वदित्यर्थः, यावत् प्राधारयद्
गमनाय=अदीनशत्रो राज्ञ आज्ञया स दूतो रथारूढः सन् यत्रैव मिथिला नगरी
तत्रैव गन्तुं प्रवृत्त इत्यर्थः । इति पञ्चमस्यादीनशत्रुनामकस्य राज्ञः सम्बन्धः
कथितः ॥ सू० २९ ॥

मूलम्-तेण कालेणं तेणं समएण पचाले जणवए कपिल्ले
पुरे नयरे, तत्थण जियसत्तू नाम राया पंचालाहिर्वई होत्था,
तस्सण जियसत्तूस्स धारिणी पामोक्ख देविसहस्स ओरेहे
होत्था, तत्थण मिहिलाए चोक्खा नामं परिठ्वाइया रिउव्वेदं
जाव परिणिट्ठिया यावि होत्था, तएण साचोक्खा परिठ्वाइया
मिहिलाए वहुण राईसर जाव सत्थवाह पभिइणं पुरओ दाण-
धम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पणवे-

है । (तएण अदीणसत्तू पडिख्वजणियहासे दूय सदावेड, सदावित्ता एव
वयासी तद्देव जाव पहारेत्थ गमणाए) इस प्रकार चित्रकर के मुख से
सुनकर राजा ने उसे अपने राज्य में रहने के लिये खुशी से आज्ञा
प्रदान कर दिया । चित्र के देखने से जिन्हें मल्लि विषयक अनुराग
उत्पन्न हो गया है ऐसे उन कुरुदेशाधिपति अदीन शत्रु राजा ने अपने
दूत को बुलाया-और, बुलाकर जिस प्रकार काशीराजा शङ्ख ने अपने
दूत से कहा था-उसी तरह इन्होंने भी उससे कहा । की आज्ञा प्राप्त
कर वह दूत रथ पर आरूढ़ हो जहाँ मिथिला नगरी थी उस ओर
चल दिया ॥ सूत्र २९ ॥

तएण अदीणसत्तू पडिख्वजणियहासे दूय सदावेड सदावित्ता एव वयासी
तद्देव जाव पहारेत्थ गमणाए)

आ रीते चित्रकारना मोथी बधी विगत सालणीने राज्ञे तेने पोताना
राज्यमा रडेवानी आज्ञा आपी दीधी चित्रने लेधने न अदीनशत्रु राज्ञना
भनमा मल्लिकुमारी भाटेने अनुराग उपन्न थय गये । राज्ञे तुरत ओक
दूतने ओनाये । अने नेम काशीराज शङ्खे पोताना दूतने कहु हुतु ते
प्रमाणे न तेले पणु पोताना दूतने कहु आज्ञा मेणवीने दूत रथ उपर अवार
थये अने ने तरइ मिथिला नगरी हुती ते तरइ रवाना यये ॥ सूत्र “ २९ ” ॥

ભાવાપહોયારે ' આકારભાવપ્રત્યવત્તારઃ=આકૃતિચેષ્ટયોરાવિર્ભાવઃ, નિવ્વત્તિર્' નિર્વર્તિત, પાદાઘ્નુષ્ઠામાત્રદર્શનાનુમિતત્વેન મત્કૃતચિત્રેણ પૂર્ણરૂપેનાકૃતિ ચેષ્ટયોરાવિર્ભાવઃ. કિંતુ સ્વસ્ત્ય એવ મકટોકૃત ક્ષયર્થઃ નો સ્વલુ શક્ય કેનાપિ દેવેન વ યાત્-દાનવેન વા ગન્ધર્વેણ વા યક્ષેણ વા મલ્લયા વિદેહરાજવરકન્યાયાસ્તદનુ-રૂપ રૂપ નિર્વર્તયિતુમ્, તસ્યા મલ્લયા વિદેહરાજવરકન્યાયાઃ સ્વરૂપ લોકોત્તર વર્ણનાતીત મસ્તિ, દર્શનાદેવ તત્સ્વરૂપસ્ય પૂર્ણ જ્ઞાન મપ્તિ શક્યતે, ઇતિ માત્રઃ । તતઃ સ્વલુ અદીનશત્રુઃ ' પટિરુવજણિયદાસે ' પ્રતિરૂપ જનિતહર્ષઃ=પ્રતિરૂપ=ચિત્ર તેન જનિતસ્તદર્શનસમુત્પન્નઃ, હર્ષઃ=મુચ્ચ કાર્યે કારણોપચારાદનુરાગોઽપિ હર્ષ ઇત્યુચ્યતે, મલ્લીપિપ્પકાનુરાગ ઇત્યર્થઃ, સ યસ્યાસ્તિ સ તથા, મલ્લીચિત્ર દર્શન

પ્રકાર ઘોલા-(એસળ સામી ! મલ્લીળ વિદેહરાજવરકન્યાળ તયાણુરુવ સ્સ રુવસ્સ કેહ આગારભાવપડિયારે નિવ્વત્તિર્,ળો સ્વલુ સક્કે કેળહ દેવે ણ વા જાવ મલ્લીળ વિદેહરાયવરકળ્ણાળ તયાણુરુવે રુવે નિવ્વત્તિર્) હે સ્વામિન્ ! મૈને વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લી કુમારી કે હસ પાદાઘ્નુષ્ઠા નુસાર સે અકિત કિયે ગયે ચિત્ર કા ધોઢા સારી-કિશ્ચિન્માત્ર-આકૃ તિર્એવ ચેષ્ટાકા આવિર્ભાવ ચિત્રણ કિયા હૈ-મૈને યહ ચિત્ર મલ્લીકુમારી કા,અ કિત કિયા હૈ-વહ અનેકે અગુષ્ઠ કો દેવકર અવશિષ્ટ અજ્ઞાદિ કા અનુમાન લગાકર વનાયા હૈ ।

- હસલિયે હસ ચિત્ર મેં કિશ્ચિન્માત્રા મેં હી અનેકે આકારાદિકા અ કન હુઆ હૈ પૂર્ણરૂપ સે નહીં । પૂર્ણરૂપ સે અને વિદેહરાજવરકન્યા મલ્લી કુમારી કે તદનુરૂપ ચિત્ર વનાને મે ન કોઈ દેવતા સમર્થ હૈ, ન કોઈ દાનવ સમર્થ હૈ, ન કોઈ ગન્ધર્વ સમર્થ હૈ ઓર ન કોઈ યક્ષ હી સમર્થ

(એસળ સામી ! મલ્લીળ વિદેહ રાજવરકન્યાળ તયાણુરુવસ્સ રુવસ્સ કેહ આગાર ભાવ પહોયારે નિવ્વત્તિર્ ણો સ્વલુ સક્કે કેળહ દેવેણ વા જાવ મલ્લીળ વિદેહરાયવર કળ્ણાળ તયાણુરુવે રુવે નિવ્વત્તિર્)

હે સ્વામીન્ ! વિદેહરાજ વર કન્યા મલ્લીકુમારીનુ તેમના પગના અશુ કાને જોધને જ તેમની આકૃતિ અને ચેહરાઓનો આછો ખ્યાલ આપતું ચિત્ર મેં દોર્યું છે તેમના અશુકાને જોધને જ બાકીના બધા અંગોનુ ચિત્રણ અનુમાનથી કરવામા આવ્યુ છે

એથી આ ચિત્રમા તેમના આકાર વગેરેનુ અકન ઓછી માત્રામા જ થયુ છે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીનુ આબેહૂળ ચિત્ર બનાવવાનુ સામર્થ્ય કોઈ દેવતામા નથી કે નથી કોઈ દાનવમા, નથી કોઈ ગાંધર્વમા કે નથી કોઈ યક્ષમા

समुत्पन्न तद्विषयकानुरागवानित्यर्थः । एवभूतः सन् दूतं गच्छति शब्दयित्वा एवमेवा
दीत्-‘तद्देव’ तथैव=काशीराजः शङ्खः स्वदूतमुक्तवान्, तद्वदित्यर्थः, यावत् प्राधारयद्
गमनाय=अदीनशत्रो राज्ञ आज्ञया स दूतो रथारूढः सन् यत्रैव मिथिला नगरी
तत्रैव गन्तुं प्रवृत्त इत्यर्थः । इति पञ्चमस्यादीनशत्रुनामकस्य राज्ञः सम्बन्धः
कथितः ॥ सू० २९ ॥

मूळम्-तेणं कालेणं तेणं समएण पचाले जणवए कपिल्ले
पुरे नयरे, तत्थण जियसत्तू नाम राया पचालाहिर्वई होत्था,
तस्सण जियसत्तस्स धारिणी पामोक्ख देविसहस्स ओरेहे
होत्था, तत्थण मिहिलाए चोक्खा नामं परिव्वाइया रिउव्वेदं
जाव परिणिट्ठिया यावि होत्था, तएण सा चोक्खा परिव्वाइया
मिहिलाए बहूण राईसर जाव सत्थवाह पभिइणं पुरओ दाण-
धम्म च सोयधम्मं च तिग्थाभिसेय च आघवेमाणी पणवे-

है । (तएण अदीणसत्तू पडिख्वजणियहासे दूय सदावेइ, मदावित्ता एव
वयासी तद्देव जाव पहारेत्थ गमणाए) इस प्रकार चित्रकर के मुख से
सुनकर राजा ने उसे अपने राज्य में रहने के लिये खुशी से आज्ञा
प्रदान कर दिया । चित्र के देखने से जिन्हें मल्लि विषयक अनुराग
उत्पन्न हो गया है ऐसे उन कुरुदेशाधिपति अदीन शत्रु राजा ने अपने
दूत को बुलाया-और, बुलाकर जिस प्रकार काशीराजा शङ्ख ने अपने
दूत से कहा था-उसी तरह इन्होंने भी उससे कहा । की आज्ञा प्राप्त
कर वह दूत रथ पर आरूढ़ हो जहाँ मिथिला नगरी थी उस ओर
चल दिया ॥ सूत्र २९ ॥

तएण अदीणसत्तू पडिख्वजणियहासे दूय सदावेइ सदावित्ता एव वयासी
तद्देव जाव पहारेत्थ गमणाए)

आ रीते चित्रकारना भोथी गधी विगत सासणीने राज्ञे तेने पोताना
गन्थमा रडेवानी आज्ञा आपी दीधी चित्रने लेधने ॥ अदीनशत्रु राजाना
भनमा भट्टिकुमारी भाटेने अनुराग उपन्न थय गये । राज्ञे तुरत ओक
इतने पोवाव्ये । अने जेम काशीराज श ओ पोताना इतने कहुं हुतु ते
प्रभावे ॥ तेले पणु पोताना इतने कहुं आज्ञा भेजवीने इत रथ उपर अवार
थये । अने जे तरइ मिथिला नगरी हुती ते तरइ रवाना थये ॥ सूत्र “ २९ ” ॥

ભાવાપહોયારે ' આકારભાવપત્યવત્તારઃ=આકૃતિચેષ્ટયોરાવિર્ભાવઃ, નિવ્યત્તિર્ ' નિર્વર્તિત, પાદાશ્લુઠામાત્રદર્શનાનુમિતત્વેન મત્કૃતચિત્રેણ પૂર્ણરૂપેનાકૃતિ ચેષ્ટયોરાવિર્ભાવ કિંતુ સ્વરૂપ એ પ્રકટીકૃત ઉત્પત્તિઃ નો સ્વરૂપ શક્ય કેનાપિ દેવેન વ યાવત્-દાનવેન વા ગન્ધર્વેણ વા યક્ષેણ વા મલ્લયા વિદેહરાજવરકન્યાયાસ્તદનુ-રૂપ રૂપ નિર્વર્તયિતુમ્, તસ્યા મલ્લયા વિદેહરાજવરકન્યાયા, સ્વરૂપ લોકોત્તર વર્ણનાતીત મસ્તિ, દર્શનાદેવ તત્સ્વરૂપસ્ય પૂર્ણ જ્ઞાન મશ્નિતુ શક્યતે, ડતિ માત્રઃ । તતઃ સ્વલુ અશ્વીનશત્રુઃ ' પટિરૂપજણિયદાસે ' પ્રતિરૂપ જનિતહર્ષઃ=પ્રતિરૂપ=ચિત્ર તેન જનિતસ્તદર્શનસમુત્પન્નઃ, હર્ષઃ=સુખ કાર્યે કારણોપચારાદનુરાગોઽપિ હર્ષ સ્ત્યુન્યતે, મલ્લીયિપયકાનુરાગ ડત્યર્થઃ, સ યસ્યામ્તિ સ તથા, મલ્લીચિત્ર દર્શન

પ્રકાર ઘોલા-(એસળ સામી ! મલ્લીય વિદેહરાજવરકન્યાએ તયાણુરૂપ સ્વસ્વસ્વ કેહ આગારભાવપહિયારે નિવ્યત્તિએ,ળો સ્વલુ સક્કે કેળહ દેવે ણ વા જાવ મલ્લીય વિદેહરાયવરકળ્ણાએ તયાણુરૂવે રૂવે નિવ્યત્તિએ) હે સ્વામિન્ ! મૈને વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લી કુમારી કે હસ પાદાશ્લુઠા નુસાર સે અકિત કિયે ગયે ચિત્ર કા ધોડા સાહી-કિશ્ચિન્માત્ર-આકૃ તિએવ ચેષ્ટાકા આવિર્ભાવ ચિત્રણ કિયા હૈ-મૈને યહ ચિત્ર મલ્લીકુમારી કા,અકિત કિયા હૈ-વહ અનેકે અશુષ્ઠ કો દેલ્લકર અવશિષ્ટ અજ્ઞાદિ કા અનુમાન લગાકર વનાયા હૈ ।

- હસલિયે હસ ચિત્ર મેં કિશ્ચિન્માત્રા મેં હી અનેકે આકારાદિકા અ કન હુઆ હૈ પૂર્ણરૂપ સે નહીં । પૂર્ણરૂપ સે અનેક વિદેહરાજવરકન્યા મલ્લી કુમારી કે તદનુરૂપ ચિત્ર વનાને મે ન કોઈ દેવતા સમર્થ હૈ, ન કોઈ દાનવ સમર્થ હૈ, ન કોઈ ગન્ધર્વ સમર્થ હૈ ઓર ન કોઈ યક્ષ હી સમર્થ

(એસળ સામી ! મલ્લીએ વિદેહ રાજવરકન્યાએ તયાણુરૂવસ્વસ્વસ્વ કેહ આગાર ભાવ પહોયારે નિવ્યત્તિએ ણો સ્વલુ સક્કે કેળહ દેવેણ વા જાવ મલ્લીએ વિદેહરાયવર કળ્ણાએ તયાણુરૂવે રૂવે નિવ્યત્તિએ)

હે સ્વામીન્ ! વિદેહરાજ વર કન્યા મલ્લીકુમારીનુ તેમના પગના અશુ ઠાને જોધને જ તેમની આકૃતિ અને ચેહરાઓનો આછો ખ્યાલ આપતું ચિત્ર મે દોર્યું છે તેમના અશુઠાને જોધને જ ખાકીના બધા અંગોનુ ચિત્રણ અનુમાનથી કરવામા આવ્યુ છે

એથી આ ચિત્રમા તેમના આકાર વગેરેનુ અકન એલી માત્રામા જ થયુ છે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીનુ આજેહુજ ચિત્ર બનાવવાનુ સામર્થ્ય કોઈ દેવતામા નથી કે નથી કોઈ દાનવમા, નથી કોઈ ગાન્ધર્વમા કે નથી કોઈ યક્ષમા

मल्लीए णो सचाएइ किचि वि पामोक्खमाइक्खित्तए तुसि-
णिया संचिट्ठइ, तएणं चोक्खं मल्लीए बहुओ दासचेडोओ
हीलेंति निदति खिसति गरहति अप्पेगइया होरुयालति
अप्पेगइया मुहमक्कडियाओ करेंति, अप्पेगइया वाघाडीओ
करेति, अप्पेगइया तज्जमाणीओ निच्छुभंति ।

तएण सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायकरकन्नाए दासचे-
डियाहि जाव गरहिज्जमाणी हीलिज्जमाणी आसुरुत्ता जाव
मिसिमिसेमाणी मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पओसमावज्जइ,
भिसिय गिण्हइ, गिणिहत्ता कणंतेउराओ पडिनिक्खमइ, परि-
निक्खमित्ता मिहिलाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता परिठ्वाइया
सपरिवुडा जेणेव पच्चालजणवए, जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कपिलपुरे बहूणं राईसर० जाव
परूवेमाणी विहरइ ॥ सू० ३० ॥

टीका—अथ पण्ठस्य जितशत्रुनाम्नो राज्ञः सम्बन्धप्रस्तावमाह—‘तेण
कालेण’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये पञ्चालः अतुना पञ्चापनाम्ना

इस तरह यह पञ्चमराजा का संबन्ध प्रकट किया है । अब छठेराजा
का सम्बन्ध प्रकट करने के लिये सूत्रकार कहते हैं:—

तेण कालेण तेण समएण इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में
(पंचाले जणवए कपिल्ले पुरे नयरे) पञ्चाल नामका देश (जो अभी पञ्चाव

आ रीते पञ्चमराजानो संबन्ध प्रकट करवाभा आये। छे डवे छठ्ठा
राजानो संबन्ध स्पष्ट करवा भाटे सूत्रकार कहे छे—

‘तेण कालेण तेण समएण’ इत्यादि

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते जाणे अने ते समये (पंचाले जणवए
कपिल्ले पुरे नयर) पञ्चाल नामे देग-जे अत्थारे पञ्चाव नामे प्रसिद्ध छे,

माणी परूवेमाणी उवदसेमाणी विहरइ, तएण सा चोक्खा
 परिवाइया अन्नया कयाई तिदडं च कुडिय च जाव धाउर-
 ताओ य गिण्हइ, गिणिहत्ता परिवाइगावसहाओ पडिनि-
 क्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पविरल परिवाइया सद्धि सपरिवुडा
 मिहिलं रायहाणिं मज्झमज्झेणं जेणेव कुंभगस्स रत्तो भवणे
 जेणेव कण्णतेउरे जेणेव मल्ली विदेहरायवरकन्ना तेणेव उवा-
 गच्छइ, उवागच्छित्ता उदयपरिफासियाए दवभोवरिपच्चथुयाए
 भिसियाए निसियइ, निसियित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए
 पुरओ दाणधम्मं च जाव विहरइ, तएण मल्ली विदेहरायवरकन्ना
 चोक्ख परिवाइय एव वयासी-तुवभेण चोक्खे किंमूलए धम्मे
 पन्नत्ते ? तएण सा चोक्खा परिवाइया मल्ली विदेहरायवर-
 कन्न एव वयासी-अम्हं णं देवाणुप्पिए । सोयमूलए धम्मे,
 जण्णं अम्हं किञ्चि असुइ भवइ, तएण उदएण य मट्ठियाए
 जाव अविग्घेण सग्ग गच्छासो, तएण मल्ली विदेहरायवरकन्ना
 चोक्ख परिवाइय एव वयासी-चोक्खा । से जहानामए केई
 पुरिसे रुहिरकयं वत्थ रुहिरेण चैव धोवेज्जा अत्थिण चोक्खा ।
 तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं धोवमाणस्स काई सोही ?,
 नो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव चोक्खा । तुवभेण पाणाइवाएण जाव
 मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि काई सोही, जहावतस्स रुहिरकयस्स
 वत्थस्स रुहिरेण चैव धोवमाणस्स, तएण सा चोक्खा परिवा-
 इया मल्लीए विदेहरायकन्नाए एव बुत्ता समाणा सकिया
 कखिया विइगिच्छिया भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था

મલ્લીએ ણો સચાણ્હ કિચિ વિ પામોક્કલમાહ્વિલ્લત્તે તુસિ-
ણિયા સંચિટ્ઠહ, તણ્ણં ચોક્કલ મલ્લીએ વહુઓ દાસચેડાઓ
હીલેંતિ નિદતિ સ્વિસતિ ગરહતિ અપ્પેગહ્યા હોરુયાલતિ
અપ્પેગહ્યા મુહમકકડિયાઓ કરેંતિ, અપ્પેગહ્યા વાઘાડીઓ
કરેંતિ, અપ્પેગહ્યા તજ્જમાણીઓ નિચ્છુભંતિ ।

તણ્ણં સા ચોક્કલા મલ્લીએ વિદેહરાયકરકન્નાએ દાસચે-
ડિયાહિ જાવ ગરહિજ્જમાણી હીલિજ્જમાણી આસુરુત્તા જાવ
મિસિમિસેમાણી મલ્લીએ વિદેહરાયવરકન્નાએ પઓસમાવજ્જહ,
મિસિય ગિણ્ણહ, ગિણિહત્તા કણંતેઊરાઓ પહિનિલ્લમહ, પરિ-
નિલ્લમિત્તા મિહિલાઓ નિગ્ગચ્છહ, નિગ્ગચ્છિત્તા પરિઠ્ઠાહ્યા
સપરિવુડા જેણેવ પચાલજણવણ, જેણેવ કપિલ્લપુરે નયરે તેણેવ
ઊવાગચ્છહ, ઊવાગચ્છિત્તા કપિલપુરે વહૂણં રાઈસરં જાવ
પરુવેમાણી વિહરહ ॥ સૂં ૩૦ ॥

ટીકા—અથ પઠ્ઠસ્ય જિતશત્રુનામ્નો રાજ્ઞ સમ્બન્ધપસ્તાવમાહ—‘તેણ
કાલેણ’ ઇત્યાદિ । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે પચ્ચાલ, અનુના પજાવનામ્ના

હસ તરહ યહ પચ્ચમરાજા કા સબ્ધ પ્રકટ ક્રિયા હૈ । અબ ઝઠેરાજા
કા સમ્બન્ધ પ્રકટ કરને કે લિયે સૂત્રકાર કહતે હૈં:—

તેણ કાલેણ તેણ સમણ્ણ ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—(તેણ કાલેણ તેણ સમણ્ણ) ડસ કાલ ઓર ડસ સમય મેં
(પચાલે જણવણ કપિલ્લે પુરે નયરે) પચ્ચાલ નામકા દેશ (જો અમી પજાવ

આ રતે પચ્ચમરાજાનો સબ્ધ પ્રકટ કરવામા આવ્યો છે હવે છઠ્ઠા
રાજાનો સબ્ધ સ્પષ્ટ કરવા માટે સૂત્રકાર કહે છે—

‘તેણ કાલેણ તેણ સમણ્ણ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(તેણ કાલેણ તેણ સમણ્ણ) તે ડાળે અને તે સમયે (પચાલે જણવણ
કપિલ્લે પુરે નયરે) પચ્ચાલ નામે દેશ—જે અત્યારે પાતળ નામે પ્રસિદ્ધ છે,

माणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी विहरइ, तएण सा चोक्खा
 परिवाइया अन्नया कयाई तिठडं च कुडिय च जाव धाउर-
 ताओ य गिण्हइ, गिणिहत्ता परिवाइगावसहाओ पडिनि-
 क्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पविरल परिवाइया सद्धि सपरिवुडा
 मिहिल रायहाणिं मज्झमज्झेणं जेणेव कुंभगस्स रत्तो भवणे
 जेणेव कण्णतेउरे जेणेव मल्ली विदेहरायवरकन्ना तेणेव उवा-
 गच्छइ, उवागच्छित्ता उदयपरिफासियाए दवभोवरिपच्चत्थुयाए
 भिसियाए निसियइ, निसियित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए
 पुरओ दाणधम्मं च जाव विहरइ, तएण मल्ली विदेहरायवरकन्ना
 चोक्ख परिवाइयं एव वयासी-तुब्भेण चोक्खे किंमूलए धम्मे
 पन्नत्ते ? तएण सा चोक्खा परिवाइया मल्लि विदेहरायवर-
 कन्न एव वयासी-अम्ह ण देवाणुप्पिए ! सोयमूलए धम्मे,
 जण्णं अम्ह किञ्चि असुइ भवइ, तएण उदएण य मट्टियाए
 जाव अविग्घेण सग्ग गच्छामो, तएण मल्ली विदेहरायवरकन्ना
 चोक्खं परिवाइय एव वयासी-चोक्खा ! से जहानामए केई
 पुरिसे रुहिरकयं वत्थ रुहिरेण चेव धोवेज्जा अत्थिण चोक्खा !
 तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं धोवमाणस्स काई सोही ?,
 नो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव चोक्खा ! तुब्भेण पाणाइवाएणं जाव
 मिच्छादंसणसल्लेणो नत्थि काई सोही, जहावतस्स रुहिरकयस्स
 वत्थस्स रुहिरेण चेव धोवमाणस्स, तएण सा चोक्खा परिवा-
 इया मल्लीए विदेहरायकन्नाए एव वुत्ता समाणा सकिया
 कखिया विइगिच्छिया भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था.

दान स्वशास्त्रानुसारेण शौचादि धर्माणां विधि नियमभेदादि प्ररूपणां कुर्वती उपदर्शयन्ती=स्वाचरणेन साक्षात् कारयन्ती, विहरति=आस्तेस्म ।

ततस्तदनन्तर सा चोक्षा परिव्राजिना अन्यथा कदाचित् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये त्रिदण्ड=दण्डत्रय च कुण्डिका=कमण्डलु च यावत्-यातुरक्तानि वस्त्राणि गृह्णाति, गृहीत्वा 'परिव्वाङ्गावसहायो' परिव्राजिकावसथात्=परिव्राजिकानां मठात् 'पडिनिक्खमइ' प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति, प्रतिनिष्क्रम्य 'पविरल परिव्वाङ्गा' पविरलपरिव्राजिकाभिः=अल्पसंख्यकसंन्यामिकाभिः सार्व=सह, सपरिवृता=युक्ता मिथिला राजधानीं मिथिलाया राजधान्या इत्यर्थः स यस्मै येन यत्रैव कुम्भकस्य राज्ञो भवनं यत्रैव 'कण्णते उरे' कन्यान्तः पुर, यत्रैव मल्ली विदेहरावरकन्या, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'उदयपरिफासियाए' उदरपरि

वह चोक्षा परिव्राजिका मिथिला नगरी में अनेक राजेश्वर, तलवर, कौटुम्बिक, माण्डविक, श्रेष्ठी, सार्थवाह आदिकों के समक्ष दान धर्म शौच धर्म, और तीर्थाभिषेक का कथन करती थी, उन्हें अच्छी तरह समझाती थी उस शौचादि धर्मों की अपने शास्त्रानुसारविधि नियम आदि के भेद से प्ररूपणा करती थी और अपने आचरण से साक्षात् उन का प्रदर्शन भी करती थी । (तएण सा चोक्खा परिव्वाङ्गा अन्नया कयाड त्रिदड च कुडिय च जाव धाउरत्ताओ य गिण्हइ, गिण्हत्ता परिव्वाङ्गावसहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता पविरलपरिव्वाङ्गासद्धि सपरिवुडा मिहिला रायहाणि मज्झ मज्झेण जेणेव कु भगस्स रन्नो भवणे जेणेव कण्णतेउरे जेणेव मल्ली विदेह रायवरकन्ना-तेणेव उवागच्छइ) एक दिन वह चोक्षा परिव्राजिका अपने त्रिदण्ड कमण्डलु, तथा गैरिक धातु से रक्त हुण वस्त्रों को लेकर

मिथिला नगरीमा चोक्षा परिव्राजिका धणा राजेश्वर, तलवर, कौटुम्बिक माण्डविक श्रेष्ठी सार्थवाह वगेरेनी सामे दानधर्म, शौचधर्म अने तीर्थस्थान विषे धर्म थर्या करती હતી તેમને તે સારી પેઠે શૌચ વગેરે ધર્મો તેમજ શાસ્ત્રાનુસાર વિધિ નિયમ વગેરેના લેદોની ખાખતમા સમજાવતી હતી અને બને બધા શૌચ વગેરે આચરણોને આચરીને પ્રત્યક્ષ રૂપમા તેનો દેખાવ કરતી હતી (તણ સા ચોક્ખા પરિવ્વાઙ્ગા અન્નયા કયાડ ત્રિદડ ચ કુડિય ચ જાવ ધાઉર ત્તાઓ ય ગિણ્હઈ, ગિણ્હિત્તા પરિવ્વાઙ્ગાવસહાઓ પડિનિક્કલમઈ, પડિનિક્કલમિત્તા પવિરલપરિવ્વાઙ્ગાસદ્ધિ સપરિવુડા મિહિલા રાયહાણિ મજ્જ મજ્જેણ જેણેવ કુભગસ્સ રન્નો ભવણે જેણેવ કણ્ણતેઉરે જેણેવ મલ્લી વિદેહરાયવર કન્નાતેણેવ ઉવાગચ્છટ)

એક દિવસ ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા પોતાના ત્રિદડ, કમડલુ તેમજ ગૈરિક

प्रसिद्ध जनपदः=देशः आसीत् तत्र= तस्मिन् देशे 'रुपिल्लपुरे' काम्पिल्यपुरे'
=काम्पिल्यपुरनामके, 'नगरे' नगर, जितशत्रुर्नाम राजा पञ्चालाधिपतिरासीत्,
तस्य खलु जितशत्रो राशो धारिणीप्रमुखा देवीसहस्रम् 'ओरोहे' अरोरे=अन्तः
पुरे आसन् ।

इतश्च मिथिलाया नगर्या खलु 'चोक्खा' चोक्षा=चोक्षानाम्नी परिव्राजिका
ऋग्वेद-यावत्-चतुर्वेद परिनिष्ठिता श्रुतिस्मृत्यादिसकलशास्त्राभिजा चाप्यासीत् ।
ततस्तदन्तर सा चोक्षा परिव्राजिका मिथिलायां नगर्या गृह्णा राजेश्वर-यावत्
राजेश्वरतलवरकौटुम्बिकमाण्डनिकुश्रेष्ठिसार्थवाहपभृतीनां पुरतः = अग्रे, दान-
धर्मं च शौचधर्मं च तीर्थाभिषेक तीर्थजलस्नानधर्मं च आरुयापयन्ती=आरुयानम्
-आरुयाता कुर्वती कथयन्तीत्यर्थः, प्रज्ञापयन्ती=सम्यग प्रोधयन्ती, प्ररूपयन्ती=

नामसे प्रसिद्ध है) था। उस देशमें कापिल्यपुर नामका नगर था। उसमें
पंचाल देश के अधिपति जित शत्रु राजा रहते थे। (तस्मिन् जियस
सुस्स धारिणी पामोक्ख देवीसहस्स ओरेहे होत्था) उस जित शत्रु
राजा के अन्तः पुर में धारिणी प्रमुख ? एक हजार देवियां थीं। (तत्थ
ण मिहिलाए चोक्खानाम परिव्वाइया रिउव्वेय जाव परिणिट्ठिया यावि
होत्था) इस तरह मिथिला नगरी में ऋग्वेद आदि चारों वेदों की तथा
स्मृति आदि समस्त शास्त्रों की परिज्ञाता चोक्षा नाम की परिव्रा
जिका भी रहती थी—(तएण सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाए बहूण
राइसर जाव सत्थवाहपभिइण पुरओ दाणधम्मच सोयधम्मच तित्था
भिसेयच आघवेमाणी पणवेमाणी परुवेमाणी उवदसेमाणी, विहरइ)

इतो ते देशमा कपिल्यपुर नामे नगर इत्तु तेमा पंचाल देशमा अधिपति
जितशत्रु राजा रहितो इति ।

(तस्मिन् जियससुस्स धारिणी पामोक्ख देविसहस्स ओरेहे होत्था)

जितशत्रु राजाना रत्तुवासमा धारिणी प्रमुख ओइ इत्तर रात्तीओ इती

(तत्थण मिहिलाए चोक्खानाम परिव्वाइया रिउव्वेय जाव परिणिट्ठिया
याविहोत्था)

मिथिला नगरीमा ऋग्वेद वगेरे आरे वेदो तेमज्ज स्मृति वगेरे भधा
शास्त्रोने ज्ञात्तुनारी ओक्षा नामे ओइ परिव्राजिका रहितो इती

(तएण सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाए बहूण राई सरजाव सत्थवाह
पभिइण पुरओ दाणधम्म च सोयधम्म च तित्थाभिसेय च अघवेमाणी पणवे
माणी परुवेमाणी उवदसेमाणी विहरइ)

चोक्षा परिव्राजका मल्ली विदेहराजवरकन्या मेवमवादीत्-हे देवानुप्रिये ! अस्माकं खलु शौचमूलको धर्मः प्रज्ञप्तः, यत् खलु अस्माकं किञ्चिदशुचिभवति, तत् खलु उदकेन=जलेन च मृत्तिकाया-यावत्-शुचिभवति, एतत् खलु वयं जलाभिषेकपूता त्मानः अविघ्नेन स्वर्गं गच्छामः ।

तत् = चोक्षापरिव्राजिकावचनश्रवणानन्तरं खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या चोक्षा परिव्राजिकामेव = वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे चोक्षे ! तद् ययानामक-इदं दृष्टान्तोपन्यासे-दृष्टान्तं प्रदर्शयामि तावदित्यर्थः-यथा कोऽपि पुरुषो रुधिर

(तएण सा चोक्खा परिव्वाडया मल्लि विदेहरायवरकन्न एव वयासी) प्रत्युत्तर मे उस चोक्षा परिव्राजिका ने विदेह राजवर कन्या उस मल्ली कुमारी से ऐसा कहा

(अम्हण देवाणुप्पिए । सोयमूलए धम्मे, जण्ण अम्ह किञ्चि असुइ भवइ तएण उदएण य मट्टियाए जाव अविग्घेण सग्ग गच्छामो तएण मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्ख परिव्वाडय एव वयासी) हे देवानुप्रिये ! हमारा धर्म शौच मूलक प्रज्ञप्त हुआ है । इसीलिये हमारी कोई वस्तु जब अशुचि हो जाती है-तब हम लोग उसे जल एवं मृत्तिका से पवित्र कर लेते हैं । इस तरह हम लोग जल स्नान से पवित्रात्मा होकर विना किसी विघ्न के शीघ्र ही स्वर्ग पहुँच जाते हैं ।

इस प्रकार चोक्षा का कथन सुनकर विदेह राज की उत्तम कन्या मल्ली कुमारी ने उस चोक्षा परिव्राजिका से ऐसा कहा- (चोक्खा-से

(तएण सा चोक्खा परिव्वाडया मल्लि विदेहरायवरकन्न एव वयामी)

जवाअभा चोक्षा परिव्राजिकाओ विदेह राजवर कन्याने आ प्रमाणे

कहुं छे—

(अम्हण देवाणुप्पिए । सोयमूलए धम्मे जण्ण अम्ह किञ्चि असुइ भवइ, तएण उदएण य मट्टियाए जाव अविग्घेण सग्ग गच्छामो तएण मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्ख परिव्वाडय एव वयासी)

हे देवानुप्रिये ! अमादेश धर्म शौच मूलक प्रज्ञप्त थयो छे ओटला भाटे अमारी जमे ते वस्तु ज्यारे अशुचि थऽ जय छे त्यारे अमे तेने पाणी अने भाटीथी पवित्र करीओ छीओ आ रीते अमे पाणीमा स्नान कराने पवित्रात्मा थऽ जय छे छीओ अने निर्विघ्न रूपे जलही स्वर्गमा पहुँचौ जय छे छीओ

आ रीते चोक्षानु कथन सावणीने विदेहराजानी उत्तम कन्या मल्ली कुमारीओ चोक्षा परिव्राजिकाने कहुं छे—

स्पृष्टायां=नलपक्षेपेण सिक्ता, दर्भोपरि 'पञ्चुत्थुयाए' प्रत्यस्तताया=प्रसारिताया
'मिसियाया' वृषिकायाम्=भागने निषीदति=उपविशति, निषध मल्ल्या
विदेहराजवरकन्यायाः पुरतो दानधर्मं च यावद् विहरति दानधर्मशौचधर्मादि-
कमाद्यापयन्ती प्रज्ञायन्ती सा चोक्षता परिव्राजिका आस्ते स्म ।

ततः खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या चोक्षा परिव्राजिकामेवमवादीत्-हे
चोक्षे ! तव खलु किं मूलो धर्मः प्रज्ञप्तः 'ततः=मल्लीवचन, श्रवणानन्तर खलु सा

परिव्राजकों के मठ से निकली और किनतीक परिव्राजिकायों को साथ
लेकर मिथिला राजधानी के बीचों बीच से होकर वह जहाँ कुम्भक
राजा का भवन था तथा उस में जहाँ कन्यान्तः पुर और उस में भी
विदेह राज की उत्तम कन्या मल्ली कुमारी थी वहाँ आई- (उवाग-
च्छित्ता उदय परि फासियाए दम्भोवरि पञ्चत्थुयाए भिसियाए निसियइ
वहाँ आकर वह जल से सिञ्चित हुए तथा दर्भ के ऊपर बिछाये गये
आसन पर बैठ गई । (निसियित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्याए पुरओ
दाणधम्म च जाव विहरइ) बैठकर उसने विदेह रायवर कन्याके समक्ष
दान, धर्म शौचधर्म आदि की कथा की-प्रवृत्तता की (तएण मल्ली वि
देहरायवर कन्या-चोक्ख परिवाइय एव वयासी) बाद में विदेह राज
की उत्तम कन्या मल्लीकुमारी ने उस चोक्षा परिव्राजिका से इस प्रकार
कहा-(तुम्हेण चोक्खे किं मूलए धम्मे पणत्ते ?) हे चोक्षे ! तुम्हारे
यहाँ धर्म किं मूलक (किस मूलक) प्रज्ञप्त हुआ है ।

रगेला वस्त्रोने लधने परिव्राजिकेना मठथी अड्डार नीकणी अने डेटवीक परि
व्राजिकाओनी साथे मिथिला राजधानी वन्थे थम्हने जया कुलकराजने। मडेव
हुतो तेमज जया कन्यान्त पुर अने तेमा पणु विदेहराजनी उत्तम कन्या
मल्लीकुमारी हुती त्या पडेथी

(उवागच्छित्ता उदय परिफासियाए दम्भोवरिपञ्चत्थुयाए भिसियाए निसियइ)

त्या आवीने ते पाण्णी छाटेला दर्भना उपर पाथरवाभा आवेला आसन
उपर भेसी गछ

(निसित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्याए पुरओ दाणधम्म च जाव विहरइ)
भेसीने तेले विदेहराजवर कन्यानी सामे दानधर्म, शौचधर्म वगेरेनी व्याख्या
करी (चोक्ख परिवाइय एव वयासी) त्थारपछी विदेहराजनी उत्तम कन्या मल्ली
कुमारीअे चोक्षा परिव्राजिकाने आ प्रभाले कछु के—' तुम्हेण चोक्खे किं मूल
धम्मे पणत्ते ?) हे चोक्षे ! तमाराभा धर्म किं मूलक प्रवृत्त करवाभा ' हे

किमन्यदुत्तर दास्यामी ' त्वेवमुत्तरविषयक वाञ्छायुक्ता । ' विङ्गिच्छिया ' विचिकित्सिता= ' अस्मिन्नुत्तरे दत्ते सति किं मल्लया अत्र श्रद्धोत्पत्त्यस्यते किं वा नोत्पत्त्यते ' इत्येव विचिकित्सा=सशयः, सजाता यस्या सा विचिकित्सिता, तथा- ' भेयसमावण्णा ' भेदसमापन्ना=अत्र भेदो मतेर्भङ्गः-मयाऽधुना किं कर्तव्यमिति निर्णयाभवाद् व्याकुलतारूपस्त समापन्ना संप्राप्ता, जाताचाप्यभवत् शङ्कितेत्यादि विशेषणचतुष्टयेन चोक्षा परिव्राजिका मल्लया समुचित दृष्टान्तेन दृढीकृत प्रश्न समायातु व्याकुलीजाता, इति भावः मल्लयाः ' णो सचाएइ ' नो

से धोने पर किसी भी प्रकार की शुद्धि नहीं होती है । (तएण सा चोक्खा परिवाइया मल्लीए विदेह रायवर कन्नाए एव बुत्ता समाणा सकिया कखिया विङ्गिच्छिया भेय समावण्णा जाया यावि होत्था) इस प्रकार विदेह राज की वर कन्या मल्ली कुमारी के द्वारा समझाई गई वह चोक्षा परिव्राजिका शका से युक्त बन गई, चोक्षा से युक्त बन गई, विचिकित्सा (फलके प्रति सदेह और भेद (अपने मतव्य को विच्छेद) से समापन्न हो गई । मनसे सोचकर यदि मैं मल्ली कुमारीको उत्तर दूँगी-तो न मालूम वह उत्तर मच्चा होगा कि नहीं होगा इस प्रकारका उसके हृदयमें छैधी भाव आनेसे वह चोक्षाशक्ति बन गई ।

यदि मेरा दिया हुआ उत्तर ठीक नहीं होगा-तो उस का उत्तर मैं क्या दूँगी-इस प्रकार वह उत्तर विषयक वाञ्छा से युक्त बन गई । मल्ली कुमारी को उत्तर देने पर भी कौन जाने उस में उस की श्रद्धा होगी-या नहीं होगी इस तरह वह विचिकित्सा-से युक्त बन गई ।

(तएण सा चोक्खा परिवाइया मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए एव बुत्ता सकिया कखिया विङ्गिच्छिया भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था)

आ प्रभाणु विदेहरायवर कन्या मल्लीकुमारी वडे भभन्तववाभा आवेली चोक्षा परिव्राजिका राकाथी युक्त थछ गइ, चोक्षाथी युक्त वछ गछ, विचिकित्सा (इण प्राप्ति विशे सदेह युक्त) अने लेह (पोतानी भान्यतानो नाश) समापन्न थछ गइ । मल्लीकुमारीने जवाणमा डु डेर पणु वस्तु रज्जू करीश तो ते भायी छशे डे डेम ? आ जतनी भुजवणुथी चोक्षानु भन शक्ति थछ गयु

“ जे भारो जवाण जरोअर नछि डोय तो जीने शे जवाण डू आपीश ? आ प्रभाणु ते जवाणना विशे वाञ्छायुक्त थछ गछ ” मल्लीकुमारीने जवाण आप्या छता पणु तेने भारो जवाण उपर विन्धास जेमगे डे डेम ? ” आ गीते ते विचिकित्सा युक्त थछ गइ “ आ परिस्थितिमा भागे शु करवु

કૃત=શોણિતલિપ્ત રક્ત રુધિરેણૈવ શોણિતલિપ્તસ્ય રક્તસ્ય રુધિરેણ ધાવ્યમાનસ્ય= પ્રક્ષાલ્યમાનસ્ય કાઽપિ શોધિઃ ? નાયમર્થઃમર્થઃ=રુધિરલિપ્તરક્તસ્ય રુધિરેણ કાપિ શુદ્ધિર્ન ભવતીત્યર્થઃ । ચોક્ષે ! એવમેવ=રુધિરમણ્ડલરક્તદૃષ્ટાન્તેનૈવ યુષ્માક સ્વછ પ્રાણાતિપાતેન યાવન્મિથ્યાદર્શનશલ્યેન=અષ્ટાદશપાપસ્થાનસેવનેન નાસ્તિ શુદ્ધિઃ= ન ભવતિ કાચિદપિ શુદ્ધિ રાત્મન હત્યથ , યયૈવ તસ્ય રુધિરકૃતમ્ય વસ્ત્રમ્ય રુધિ રેણૈવ ધાવ્યમાનસ્ય=પ્રક્ષાલ્યમાનમ્ય નાસ્તિ શુદ્ધિઃ । તતઃ સ્વલ્પ=તત્પશ્ચાત્ સા ચોક્ષા પરિગ્રાજિકા મલ્લયા વિદેશરાજરક્તન્યા એવમુક્તા સતિ 'સક્રિયા' શક્તિ 'કલિયા' કાસિતા=યદિ મનસિ ત્રિગર્યોત્તરન દાસ્યામિ તત્સર્મીચીન ભવિષ્યતિ નવા ? ' હતિ સશયયુક્તા । 'યદિ મઢિવાસ્તિપુત્ર સમ્યગ્ ન ભવેતર્હિ

જહા નામળ કેઈ પુરિસે રુહિરકય વત્થ રુહિરેણ ચેવ ધોવેઝ્જા અત્થિણ ચોક્ષા ! તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ રુહિરેણ ધોવ્વમાણસ્સ કાઈ સોહી ? નો ઇણદ્દે સમદ્દે એવામેવ ચોક્ષા ! તુબ્ભેણ પાણાઢ્ઢવાણ જાવ મિચ્છાદ સણસલ્લેણ નત્થિ કાઈ સોહી, જહા તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ રુહિરેણ ચેવ ધોવ્વમાણસ્સ) ચોક્ષે ! જૈસે કોઈ પુરુષ રુધિર (રૂન) સે લિપ્ત હુણ વસ્ત્ર કો રુધિર (રૂન) સે હી ધોવે-તો કયા ચોક્ષે ! ડસ રુધિર લિપ્ત વસ્ત્ર કો રુધિર સે ધોવે જાને પર કોઈ શુદ્ધિ હો સકતી હૈ ? । રુધિર સે લિપ્ત વસ્ત્ર કો રુધિર સે ધોવે પર શુદ્ધિ હોતી હૈ-ઘહ વાત તો કોઈ ભી સમજદાર પ્રાણી નહી માન સકતા હૈ । ડસી તરહ હે ચોક્ષે ! પ્રાણાતિપાત યાવત્ મિથ્યા દર્શન શલ્ય કે સેવન સે-અષ્ટાદશ પાપ-સ્થાનો કે સેવન સે-આપ લોગો કી આત્મા કી ભી કિસી તરહ સે શુદ્ધિ નહી હો સકતી હૈ । જૈસે ડસ રુધિર સે સને હુણ વસ્ત્ર કો રુધિર

(ચોક્ષા ! સે જહા નામળ કેઈ પુરિસે રુહિરકય વત્થ રુહિરેણ ચેવ ધોવે ઝ્જા, અત્થિણ ચોક્ષા ! તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ રુહિરેણ ધોવ્વમાણસ્સ કાઈ સોહી ? નો ઇણદ્દે, સમદ્દે એવામેવ ચોક્ષા ! તુબ્ભેણ પાણાઢ્ઢવાણ જાવ મિચ્છાદસણસલ્લેણ નત્થિકાઈ સોહી, જહા તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ રુહિરેણ ચેવ ધોવ્વમાણસ્સ)

હે ચોક્ષે ! જેમ કેઈ માણસ લોહીથી ખરડાએલા વસ્ત્રો લોહીથી જ ધોવે તો શુ લોહીથી ખરડાએલા વસ્ત્રો લોહીથી જ ધોવડાવવામા આવે તો તેની શુદ્ધિ થઈ ગઈ કહેવાય ? આ વાત તો ગમે તે વ્યક્તિ પણ સમજી શકે તેમ છે આ પ્રમાણે હે ચોક્ષે ! પ્રાણાતિપાત યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યના સેવનથી તમારા જેવા લોકો ની શુદ્ધિ કેઈપણ રીતે સંભવી શકે તેમ નથી જેમ પેલા લોહીથી ખરડાએલા વસ્ત્રની શુદ્ધિ લોહીથી થઈ શકતી જ નથી તેમજ મિથ્યાદર્શન શલ્યના સેવનથી પણ શુદ્ધિ થતી નથી

किमन्यदुत्तर दास्यामी ' त्वेवमुत्तरविषयक वाञ्छायुक्ता । ' विहगिच्छिया ' विचिकित्सिता= ' अस्मिन्नुत्तरे दत्ते सति किं मल्लया अत्र श्रद्धोत्पत्त्यस्यते किं वा नोत्पत्त्यते ' इत्येव विचिकित्सा=संशयः, सजाता यस्या सा विचिकित्सिता, तथा- ' भेयसमावण्णा ' भेदसमापन्ना=अत्र भेदो मतेर्भङ्गः-मयाऽधुना किं कर्तव्यमिति निर्णयाभवाद् व्याकुलतारूपस्त समापन्ना संप्राप्ता, जाताचाप्यभवत् शङ्कितेत्यादि विशेषणचतुष्टयेन चोक्षा परिव्राजिका मल्लया समुचित दृष्टान्तेन दृढीकृत मश्न समागतु व्याकुलीजाता, इति भावः मल्लयाः ' णो सचाएइ ' नो

से धोने पर किसी भी प्रकार की शुद्धि नहीं होती है । (तएण सा चोक्खा परिवाइया मल्लीए विदेह रायवर कन्नाए एव वुत्ता समाणा सकिया कखिया विहगिच्छिया भेय समावण्णा जाया यावि होत्था) इस प्रकार विदेह राज की वर कन्या मल्ली कुमारी के द्वारा समझाई गई वह चोक्षा परिव्राजिका शका से युक्त बन गई, चोक्षा से युक्त बन गई, विचिकित्सा (फलके प्रति सदेह और भेद (अपने मतव्य का विच्छेद) से समापन्न हो गई । मनसे सोचकर यदि मे मल्ली कुमारीको उत्तर दूगी-तो न मालूम वह उत्तर मच्छा होगा कि नहीं होगा इस प्रकारका उसके हृदयमें द्वैधी भाव आनेसे वह चोक्षाशक्ति बन गई ।

यदि मेरा दिया हुआ उत्तर ठीक नहीं होगा-तो उस का उत्तर मैं क्या दूगी-इस प्रकार वह उत्तर विषयक वाञ्छा से युक्त बन गई । मल्ली कुमारी को उत्तर देने पर भी कौन जाने उस में उस की श्रद्धा होगी-या नहीं होगी इस तरह वह विचिकित्सा-से युक्त बन गई ।

(तएण सा चोक्खा परिवाइया मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए एव वुत्ता सकिया कखिया विहगिच्छिया भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था)

आ प्रमाणे विदेहराजवत् कन्या मल्लीकुमारी वडे समजववाभा आवेली चोक्षा परिव्राजिका राकाथी युक्त थछ गछ, चोक्षाधी युक्त थछ गछ, विचिकित्सा (इण प्राप्ति विशे सदेह युक्त) अने लेह (पोतानी मान्यताने नाश) समापन्न थछ गछ मल्लीकुमारीने जवाणमा डु डोई पणु वस्तु रज्जू करीश तो ते साथी छशे के डेम ? आ जतनी मुळवणुथी चोक्षानु मन शक्ति थछ गछ

“ जो भारो जवाण जरोअर नहि होय तो जीने सो जवाण डू आपीश ? आ प्रमाणे ते जवाणना विशे वाञ्छायुक्त थछ गछ “ मल्लीकुमारीने जवाण आप्या छता पणु तेने भारो जवाण उपर विश्वास जेमगे के डेम ? ”

आ गीते ते विचिकित्सा युक्त थछ गछ “ आ परिस्थितिमा भारे शु करवु

शक्नोति कचिदपि 'पामोकख' प्रमोक्षम्=प्रमुच्यते प्रश्नान्तरनादनेनेति-प्रमोक्षः
 प्रश्नस्य परिहारम्, उत्तरमित्यर्थः 'आहक्खित्तए' आख्यातु=कथायितुम्, यदा
 चोक्खा परिव्राजिमा मल्लयाः प्रश्नस्योत्तरं यत्तुमममर्था जाता, तदा मा 'तुसि
 णीया' तूष्णीका=मौनावलम्बिनी भूत्वा 'सच्चिद्द' सतिष्ठते सस्थिता ।
 ततस्तदन्तरं खलु तां चोक्खा मल्लयापहृज्यो दासचेटिका = दासपूज्यः 'हीलेंति'
 हिलन्ति-अवमानयन्ति, निन्दति-जात्यागुद्राटनेन कुत्सन्ति, खिसन्ति-दोषकी
 र्त्तनेनोपहसन्ति, गर्हन्ते सर्वसमक्षं निद्रां कुर्वन्ति, अप्पेक्किमा एकाः काश्चित्-
 क्रोधयन्ति तस्याः कोपमुद्गायन्ति, अप्पेक्किमाः=एकाः काश्चित्-'मुहमक्कडियओ'
 मुखमर्कटिका=मुखानां तिर्यकानि कुर्वन्ति, अप्पेक्किमाः=एकाः काश्चित् 'वग्घा

अब इस समय मुझे क्या करना चाहिये इस तरह का वह निर्णय नहीं
 कर सकने के कारण व्याकुल बन जाने से भेद समापन्न बन गई ।

(मल्लीए णो सचाएड किं चि वि पामोकखा माहक्खित्तए तुसि
 णीया सच्चिद्द, तएण चोक्ख मल्लीए बहुओ दास चेडीओ हीलेंति,
 निन्दति, खिसति गरहति) अतः वह मल्ली कुमारी को कुठ भी प्रमोक्षा
 प्रश्न का उत्तर-नहीं दे सकी, किन्तु चुपचाप बैठी रही । जब चोक्खा की
 ऐसी हालत मल्ली कुमारी की दास चेटियों ने देखी तो वे उसका
 अपमान रूप हीलना करने लग गई । जाती आदि के उद्घाटन से उस
 से घृणा रूप निंदा करने लगी । दोषों के कीर्तनसे उस का उपहास रूप
 खिसना करने लगी । सबके समक्ष उसके अवर्ण वादरूप गर्हणा करने
 लगी (अप्पेगइया हेरूयालति, अप्पेगइया मुहमक्कडियाओ करेति अप्पे
 गइया वग्घाडीओ करेति, अप्पेगइया तज्जमाणीओ निच्छुभति) इन

लोभओ ? ” आ जतना विवेकनी शक्ति पणु तेनी नारा पाभी डती ओरी
 ते व्याकुल थधने लेह समापन्न अनी गल डती

(मल्लीए णो सचाएड किं चि वि पामोकखामाहक्खित्तए तुसिणीया सच्चिद्द,
 तएण चोक्ख मल्लीए बहुओ दासचेडीओ हीलेंति, निन्दति, खिसति गरहति)
 ओथी भटतीकुमारीने ते जवाणमा डर पणु डही शक्ती नडि ते साव भूगी
 थधने ओसी ज रही मल्लीकुमारीनी हाथ ओटीओओ ओक्षानी आ प्रमाणुनी
 स्थिति लेह त्थारे तेओ तेनी अपमानइय हीलना करवा लागी अति वगेरेनु
 उद्घाटन करीने तेनी घृणा इय निंदा करवा लागी तेना दोषे ने डहेती उपहास
 इय भिसना करवा लागी अधाना साथे तेनी अवर्णवाह इय गर्हणु करवा लागी

(अप्पेगइया हेरूयालति, अप्पेगइय मुहमक्कडियाओकरेति अप्पेगइया वग्घा-
 डीओ करेति, अप्पेगइया तज्जमाणीओ निच्छुभति)

डीओ' व्याप्राटिका=उपहासार्थं शब्दविशेषान् कुर्वन्ति, अप्येनिका एकाः काचित्
'तज्जमाणीओ' तर्जयन्त्यः - दुर्वचनतः, 'मम प्रश्नम्योत्तरं देहि, नो चेत् पश्चाद्
ज्ञास्यमि' इत्यादिना भीषयन्त्य इत्यर्थः । निच्छुभति निक्षिपन्ति=निस्सारयन्ति ।

ततस्तदन्तर सा चोक्षा परिव्राजिका मल्लया विदेहराजकन्याया दासचे-
टिकाभिः 'यावत्-द्वित्यमाना निन्द्यमाना गर्ह्यमाणा, आशुरुक्ता=शीघ्र क्रोधाविष्टा
यावत् 'मिममिसेमाणी' मिससमिन्ती क्रोधानलेन जाज्वल्यमाना मल्लया विदेह
राजवरकन्याया 'पओसमावज्जइ' प्रद्वेषमापद्यते=परमद्वेषवती जाता । तत सा

में से किसी एक ने उसे क्रोध उद्भावित-किया, किसी एक ने उस के
सामने अपना मुख मोड़ लिया, किसी एक ने उस की हँसी उड़ा ने के
लिये विज्ञेय शब्दों का प्रयोग किया, किसी एक ने दुर्वचनो से उसे
तर्जित किया, किसी एक ने " मेरे प्रश्न का उत्तर दे, नहीं तो पीछे
तुझे मालूम पड़ेगी " इस तरह कहकर उसे डराया और वहाँ से निकाल
दिया । (तएण सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए दासचेडि-
यार्हि जाव गरहिज्जमाणी हीलिज्जमाणी आसुरुक्ता जाव मिसि भिसे
माणी मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पओसमावज्जइ, भिसिय गिण्हइ,
गिण्हित्ता कण्णतेउराओ पडिनिक्खमइ) इस तरह विदेह राज कि
वरकन्यामल्ली कुमारी को दास चेटियो से अपमानित घृणित, और
निन्दित होती हुई वह चोक्षा परिव्राजिका, क्रोध से लाल हो गई, और
मिसमिसाती हुई क्रोध से जाज्वल्यमान होती हुई-वह विदेह राज की
उत्तम कन्या मल्ली कुमारी के ऊपर परम द्वेषवती बन गई ।

तेओभाथी डोछके तेने डोधित उरी, डोउओ तेनी सामेथा भो डेरवी वीधु डोछओ
तेनी भरकरी करवा विशेष शब्दोने प्रयोग उर्यो, डोछओ दुर्वचनोथी तेने
तिरस्कार उर्यो, डोछओ तेने " भारा सवालने जवाब आप नछितर तारी
अमर लछ लछशु " आ रीते जीक अतावी अने त्याथी अछार काढी भूझी
(तएण सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए दासचेडियार्हि जाव गरहिज्ज
माणी हीलिज्जमाणी, आसुरुक्ता जाव मिसि भिसे माणी मट्ठोए विदेह रायवरक-
न्नाए पओसमावज्जइ, भिसिय गिण्हइ, गिण्हित्ता कण्णतेउराओ पडिनिक्खमइ)

आ रीते विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारीनी दास चेटियोथी अपमानित,
घृष्टित अने निन्दित थती चोक्षा परिव्राजिका क्रोधमा लालथोण थरुगछ अने
क्रोधमा सगगती ते विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारी प्रत्ये भूमज धर्पाणु-द्वेष
करनारी थरु गछ

चोखा परिव्राजिका ' भिसिय ' वृषिका= जामन स्वीयमितिभाव, गृह्णाति
 गृहीत्वा ' कण्ठतेउराभो ' कन्यान्तः पुरात् मल्लया भवनात्, प्रतिनिष्क्रामति=
 निः सरति, प्रतिनिष्क्रम्य मिथिलातो निर्गच्छति, निर्गत्य परिव्राजिका सपरिवृता
 प्रविरलसन्यासिकाभिर्युक्ता, यत्रैव पञ्चालजनपदः=पञ्चालनामको देशोऽस्ति,
 यत्रैव=यस्मिन् देशे काम्पिल्यपुर नाम नगर, तत्र= तस्मिन् नगरे उपागच्छति,
 उपागत्यच काम्पिल्यपुरे नगरे बहूना राजेश्वरादीना पुरतः स्वमत यावद्-आख्या
 पयन्ती प्रज्ञापयन्ती प्ररूपयन्ती विहरति=आस्तेस्म ॥ सू० ३० ॥

मूलम्-तएणं से जियसत्तू अन्नदा कयाइं अंतेउरपरियाल
 सपरिवुडे एव जाव विहरइ, तएणं सा चोखा परिव्वाइया सप-

उस ने उसी समय वहा से अपना आमन उठाया-और उठाकर
 वह कन्यान्तः पुर से-मल्ली कुमारी के भवन से बाहिर निकल आई ।
 (पड़ि निक्खमिक्का) बाहिर निकलकर (महिलाओ निग्गच्छइ, निग्ग
 च्छित्ता परिव्वाइया सपरिवुडा जेणेव पचाल जणवए, जेणेव कपिल्लपुरे
 नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कपिल्लपुरे बहूण राईमर० जाव
 परूवेमाणी विहरइ) फिर वह मिथिला नगरी से चल दी ।

चलकर परिव्राजिकाओं को साथ में लिये हुए जहा पाचाल देश
 और उसमें जहा काम्पिल्य नगर था वहां आई । वहा आकर वह अपने
 मत की अनेक राजेश्वर आदिको के समक्ष आख्यापना और प्ररूपणाक
 रती हुई रहने लगी ॥ सू० ३० ॥

तेणु तरत ज पोतानु आमन त्याथी उपाडी लीधु अने कन्यान्त पुरथी
 ओटले डे मल्लीकुमारीना भडेवथी ते ञ्छार नीक्खणी गध (पडिनिक्खमिक्का)
 ञ्छार नीक्खणीने

(महिलाओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता परिव्वाइया सपरिवुडा जेणेव पचाल
 जणवए, जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कपिल्लपुरे बहूण
 राई सर० जाव परूवेमाणी विहरइ)

ते मिथिला नगरीमाथी आलती थध

परिव्राजिकाओनी साथे ते आलती आलती ते न्या पाचाल देश अने
 तेभा पणु न्या काम्पिल्यनगर डतु त्या आनी त्या आवीने ते पोताना धर्मनी
 धणु राजेश्वर वगेरेनी साथे आख्यापना, प्रज्ञापना अने प्ररूपणा करता
 रहेवा लागी ॥ सूत्र " ३० " ॥

रिवुडा जेणैव जितसत्तुस्स रण्णो भवणे जेणैव जितसत्तु तेणैव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जियसत्तु जएण विजएण वद्धावेइ ।
 तएण से जियसत्तु चोक्ख परिव्वाइय एज्जमाण पासइ पासित्ता
 सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता चोक्ख सक्कारेइ, सक्कारित्ता
 आसणेणं उवणिमतेइ, तएणं सा चोक्खा उदगपरिफासियाए
 जाव भिसियाए निसीयइ, जियसत्तुं राय रज्जे य जाव अतेउरे
 य कुसलोदत पुच्छइ, तएण सा चोक्खा जियसत्तस्स रत्तो
 दाणधम्म च जाव विहरइ, तएणं से जियसत्तु अप्पणो ओरो-
 हसि जाव विम्हिए चोक्ख एव वयासी-तुमंण देवाणुप्पिया ।
 वहूणि गामागार० जाव अडसि, वहूणि य राईसर० गिहाइं
 अणुपविससि, ते अत्थियाइ ते कस्सवि रत्तो वा जाव कहिचि
 एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमे मह अवरोहे ? तएणं
 सा चोक्खा परिव्वाइया जियसत्तु ईसिं अवहसिय करेइ, करित्ता
 एव वयासी-एव च सरिसए णं तुम देवाणुप्पिया । तस्स
 अगडदट्ठुरस्स ? , केण देवाणुप्पिए से अगडदट्ठुरे ? जियस ।
 से जहानामए अगडदट्ठुरे सिया तथेव बुद्धे अण्णं अगड वा
 तलाग वा सर वा सागर वा अपासमाणे चैव मण्णइ-अय चैव अगडे
 वा जाव सागरे वा । तएण त कूव अण्णे सामुद्दए दट्ठुरे हव्वमागए,
 तएणं से कूवदट्ठुरे त सामुद्ददट्ठुर एव वयासी-से केसणं
 तुम देवाणुप्पिया । कत्तो वा इह हव्वमागए ? तएणं से सा-
 मुद्दए दट्ठुरे त कूवदट्ठुर एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ।

अहं सामुदएददुरे, तएण से कूवददुरे तं सामुदय ददुर एव
 वयासी-के महलए णं देवाणुप्पिया । से समुदे ? तएणं से
 सामुदए ददुरे त कूवददुरं एव वयासी-महालए णं देवाणुप्पिया ।
 समुदे । तएणं से ददुरे पाएण लीह कड्डेइ, कड्डित्ता एव वयासी
 —एमहालएणं देवाणुप्पिया । से समुदे ? णो इणट्टे समट्टे,
 महालएणं से समुदे । तएणं से कूवददुरे पुरमत्थिमिलाओ
 तीराओ उप्पिडित्ता ण गच्छइ, गच्छित्ता एव वयासी-ए
 महालएणं देवाणुप्पिया । से समुदे ? णो इणट्टे समट्टे, तहेव
 एवामेव तुमपि जियसत्तु अन्नेसि वहूण राईसर जाव सत्थवा
 हपभिईण भज्ज वा भगिणीं वा धूय वा सुण्ह वा अपासमाणे
 जाणेसि जारिसए मम चेवणं ओरोहे तारिसए णो अणणस्स,
 त एव खलु जियस मिहिलाए नयरीये कुंभगस्स घूया पभा-
 वतीये अत्तया मल्ली नामति रुवेण य जुव्वणेण जाव नो खलु
 अण्णा काई देयकन्ना या जारिसिया मल्ली, मल्लीए विदेह
 राययरकन्नाए छिण्णस्स वि पायगुट्ठगस्स इमे तवोरोहे सयस
 हस्स तमपि कल न अग्घइ त्तिकट्टु जामेय दिस पाउवभूया तामेव
 दिस पडिगया, तएणं से जियसत्तु परिव्याइया जणियहासे दूरं
 सदायेइ, सदावित्ता जाव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ३१ ॥

टीका—‘ तएण से ’ इत्यादि । ततस्तदन्तर स जितशत्रु अन्यदा कदाचित्

‘ तएण से जियसत्तु अन्नया कयाइ ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से जियसत्तु, वह जितशत्रु (अन्नया कयाइ)

(तएण से जियसत्तु अन्नया कयाइ । इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थार णाइ (से जियसत्तु) जितशत्रु (अन्नया कयाइ) के।

=અન્યસ્મિન્ કર્મિશ્ચિન્ સમયે ' અતેરપરિચાલસપરિવુઢે ' અન્તઃ પુરપરિવાર સપરિવૃતઃ=અન્તઃ પુરસ્ય પરિવારેણ=સ્ત્રીજનૈઃસપરિવૃત યુક્ત, એવ યાવદ્ વિહરતિ-તિષ્ઠતિ । ' તણ ' તતઃ=તદા, શ્વલુ સા ચોક્ષા પરિત્રાજિકા પરિવૃતા=સ્વશિષ્ય-સન્યાસિકા સહિત યત્રૈવ જિતશત્રુ રાજ્ઞો ભવન=પ્રાસાદઃ, યત્રૈવ=યસ્મિન્નેવ સ્થાને જિતશત્રુ, તત્રૈવોપાગચ્છતિ, જિતશત્રુ જયેન-વિજયેન=જય વિજય શબ્દ કીર્તનેન ' વદ્ધાવેદ ' વર્ધયતિ । તતઃ શ્વલુ સ જિતશત્રુચોક્ષા પરિત્રાજિકામ્ એજમાનામ્=આગચ્છતી પશ્યતી, દૃષ્ટ્વા સિંહાસનાદભ્યુત્તિષ્ઠતિ, અભ્યુત્થાય ચોક્ષા સત્કરોતિ, સત્કૃત્ય આસનેન ' ઉવણિમતેદ્ ' ઉપનિમન્ત્રયતિ=ઉપવેશનાર્થં પ્રાર્થ-

કિસી એક દિન (અતેરપરિચાલમપરિવુઢે) અપને અન્તઃ પુર પરિવાર કે સાથ (એવ જાવ વિહરદ્) બેઠા હુઆ થા (તણ મા ચોક્ષા પરિવ્વા-હ્યા) હતને મેં વદ્ ચોક્ષા પરિત્રાજિકાઓંકે સાથર (જેણેવ જિતસત્તૂસ્સ રણ્ણો ભવણે જેણેવ જિયસત્તૂ તેણેવ ઉવાગચ્છદ્, ઉવાગચ્છિત્તા જિય-સત્તુ જણ વિજણ વદ્ધાવેદ) જહા જિતશત્રુ રાજા કા મહલ થા ઓર જહા વે જિતશત્રુ રાજા વિરાજમાન થે વહા આઈ આકર ઉસને ઉન્હેં જય વિજય શબ્દોંસે ધન્યવાદ દિયા-(તણ સે જિયસત્તૂ ચોક્ષ પરિવ્વાહ્ય એજમાણ પાસદ્, પાસિત્તા સીહામણાઓ અબ્બુદ્દેદ્, અબ્બુદ્ધિત્તા ચોક્ષ સકારેદ્, સકકારિત્તા આસણેણ ઉવણિમતેદ્) જાવ ચોક્ષાપરિત્રાજિકા કો જિતશત્રુ રાજાને આતે હુણ દેખ્વા થા-તો વદ્ દેખતે હી અપને સિંહા સન સે ઉઠ બેઠા થા-ઓર ઉઠકર ઉસને ચોક્ષા પરિત્રાજિકા કા આદર સત્કાર કિયા થા । આદર સત્કાર કરકે ઉસને ઉસે આસન પર

એક દિવસે (અતેરપરિચાલ સપરિવુઢે) પોતાના રણુવાસના પરિવારની સાથે (એવ જાવ વિહરદ્) બેઠો હતો (તણ સા ચોક્ષા પરિવાહ્યા) તેટલામા ચોક્ષા પરિત્રાજિકાઓની સાથે

(જેણેવ જિતસત્તૂસ્સ રણ્ણો ભવણે જેણેવ જિતસત્તૂ તેણેવ ઉવાગચ્છદ્, ઉવાગચ્છિત્તા જિયસત્તૂ જણ વિજણ વદ્ધાવેદ)

જ્યા જિતશત્રુ ગળનો મહેલ હતો અને જ્યા જિતશત્રુ રાજા બેઠો હતા ત્યા ગઈ ત્યા પહોંચીને તેણે રાજાને જય વિજય શબ્દોથી વધાવ્યા

(તણ સે જિયસત્તૂ ચોક્ષ પરિવ્વાહ્ય એજમાણ પાસદ્, પાસિત્તા સીહા સણાઓ અબ્બુદ્દેદ્, અબ્બુદ્ધિત્તા ચોક્ષ સકકારેદ્, સકકારિત્તા આસણેણ ઉવણિમતેદ્)

જિતશત્રુ ગળએ જ્યારે ચોક્ષા પરિત્રાજિકાને આવતી જોઈ ત્યારે તેઓ પોતાના સિંહાસન ઉપરથી ઊભા થયા અને ઊભા થઇને ચોક્ષા પરિત્રાજિકાનો તેઓએ આદર સત્કાર કર્યો આદર સત્કાર કરીને રાજાએ તેને આસન ઉપર બેસવા માટે કહ્યું

યતિ । તણ ચોક્ષા 'ઉદગપરિફાસિયાણ, ઉદગપરિસ્પૃષ્ટાયા' = જાન્ય પ્રક્ષેપેગ સિત્તાયાં
 યાવત્-દર્મોપરિ પ્રત્યાસ્તૃતાયા 'મિસિયાણ' વૃષિકાયાં નિમીયહ' નિમીદતિ = ઉપવિ
 શતિ । જિતશત્રુ રાજાન રાજ્યે ચ યાવદન્ત' પુરે ચ કુશલોદન્ત કુશલસમાચારં પૃચ્છતિ,
 તતઃ સ્વલુ સા ચોક્ષા જિતશત્રો રાજા. પુરતો દાનધર્મ ચ યાવદ્-શૌચધર્માદિકમા
 રૂપાપયન્તી પ્રજ્ઞાપયન્તી પ્રરૂપયન્તી વિહરતી = આસ્તે સ્મ । તતસ્તદનન્તર સ્વલુ સ
 જિતશત્રુઃ, આત્માનઃ સ્વસ્ય, 'ઓરોહસિ' અવરોધે = અન્તઃ પુરે યાવદ્ વિસ્મિતઃ =
 આશ્ચર્યયુક્તઃ સન્ ચોક્ષામ્ એવ = રક્ષણપ્રકારેણ, અવાદીત્-હે દેવાનુપિયે ! ત્વ
 સ્વલુ-બહુનિ, ગ્રામાકરં યાવત્ = ગ્રામાકરલેટકર્ણટાદીનિ અટમિ = ગચ્છાસિ બહુનિ

બેઠ જાને કે લિયે કહા-। (તણ સા ચોક્ષા ઉદગપરિફાસિયાણ જાવ મિસિયાણ નિસીયહ) અતઃ ચહ ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા જલસે સિચ્ચિત
 હુણ યાવત્ આસન પર બેઠ ગઈ ।

(જિયસત્તૂ રાય રજ્જે ય જાવ અતે ઉરેય કુસલોદત પુચ્છહ, તણ
 સા ચોક્ષા જિયસત્તુસ્સ રણ્ણો દાણધમ્મચ જાવ વિહરહ) બેઠને કે બાદ
 उसने जितशत्रु राजा से राज्य एव अत. पुर की कुशलवार्ता पूछी बाद
 में उसने जितशत्रु राजा के समक्ष दान धर्म शौच धर्म आदिका कथन
 किया, प्ररूपणा किया प्रज्ञापन किया, (तण से जियसत्तू अप्पणो
 ओरोहसि जाव विम्हिण चोक्ख एव वयासी) इसके बाद उस जितशत्रू
 राजा ने अपने अन्तः पुर में विस्मित होकर उस चोक्षा परिव्राजिका से
 इस प्रकार कहा- (तुमण देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागरं जाव अडसि
 बहूणि य राईसरं गिहाइ अणुपविससि) हे देवाणुप्रियो ! तुम अनेक

(તણ સા ચોક્ષા ઉદગપરિફાસિયાણ જાવ મિસિયાણ નિસીયહ)

ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા પાણી છાટેલા આસન ઉપર બેસી ગઈ

(જિયસત્તૂરાય રજ્જે ય જાવ અતે ઉરેય કુસલોદત પુચ્છહ તણ ચોક્ષા
 જિયસત્તુસ્સ રણ્ણો દાણધમ્મચ જાવ વિહરહ)

ત્યાર બાદ તેણે રાજાને રાજ્ય તેમજ રણુવાસની કુશળ વાર્તા પૂછી અને
 પરિવ્રાજિકાએ આ બધું કરીને જિતશત્રુ રાજાની સામે દાનધર્મ, શૌચધર્મ
 વગેરેનું કથન કર્યું, પ્રરૂપણું કર્યું અને પ્રજ્ઞાપન કર્યું

(તણ સે જિયસત્તૂ અપ્પણો ઓરોહસિ જાવ વિમ્હિણ ચોક્ખ એવ વયાસી)

રણુવાસમાં બેઠેલા રાજા જિતશત્રુએ તેની વાત સાંભળીને વિસ્મય પામતા
 પરિવ્રાજિકાને કહ્યું કે—

(તુમણ દેવાણુપ્પિયા ! બહૂણિ ગામાગરં જાવ અડસિ બહૂણિ ય રાઈસરં
 ગિહાઈ અણુપવિસસિ)

च ' राईसर० गिहाइ ' राजेश्वरादीना गृहाणि अनुप्रविशसि, तत्=तस्मात् कथय-
अस्ति चापि, ' ते ' त्वया कस्यापि राज्ञो वा यावत्- ईदृशोऽवरोधो दृष्टपूर्वः,
यादृशः खलु अयं समावरोधः ? अन्तःपुरम् ततस्तदनन्तरं खलु सा चोक्षा परिव्रा-
जिका जितशत्रुमीपदपहसितं करोति, कृत्वा एव ययामी ।

हे देवानुप्रिय ! एव च सदृशः खलु त्वं तस्य ' अगडददुरस्स ' अवटददुरस्य
=कूपमण्डकस्य । चोक्षाया वचनं श्रुत्वा जितशत्रुचोक्षा पृच्छति- ' केण ' इत्यादि ।
कः खलु हे देवानुप्रिये ! सोऽवटददुरः=कूपमण्डकः ? , चोक्षा परिव्राजिका कथं
यति-तद् यथानामकम् = यथानामकमितिपदं दृष्टान्तं प्रदर्शयामि तावदित्यर्थः ।

ग्राम, आकर, खेट कर्वट आदिस्थानों में जाती रहती हो, तथा अनेक
राजेश्वर आदि जनों के गृहों में प्रवेश भी करती रहती हो (त अत्थि-
याइ ते कस्स विरन्नो वा जाव कहिं चि एरिसए आरोहे दिट्ठिपुण्वे जारि-
सए ण इमे मह अवरोहे) तो कहो तुमनेकिसी राजा आदि का ऐसा
अन्तः पुर पहिले कभी कहिं देखा है ? कि जैसा मेरा यह अन्तः पुर है ।
(तएण सा चोक्खा परिव्वाइया जियसत्तू ईसि अवहासेय करेइ, करित्ता
एव वयासी) इस प्रकार सुनने के बाद उस चोक्षा परिव्राजिकाने पहि-
ले तो राजा को कुछ हँसाया बाद में हँसाते हुए उनसे ऐसा कहा-एव
च सरिसए ण तुम देवाणुप्पिया ! तस्स अगडददुरस्स) हे देवानुप्रिय !
तुम तो उस कूपमण्डक के समान हो ऐसी चोक्षा की बात सुनकर बीच
में ही राजा ने उससे कहा (केण देवाणुप्पिए से अगडददुरे ? देवानु-

हे देवानुप्रिये ! तमे वणु आभ, आकर, जेटकर्णट वगेरे स्थानेभा अपर
-अपर करता रहे। छ। तेमज वणु राज्ञेभा वगेरेना भडेयोभा पणु न्नाये छ।

त अत्थियाइ ते कस्स विरन्नो वा, जाव कहिं चि एरिसए आरोहे दिट्ठिपुण्वे
जारिसए ण इमे मह अवरोहे)

तो जाताये के भरा जेणे रणुवास कोछपणु राज वगेरेने। तमे
जेये छे

(तएण सा चोक्खा परिव्वाइया जियसत्तू ईसि अवहासेय करेइ, एव करित्ता वयासी)

आ रीते सासजाने चोक्षा परिव्राजिकाये पडेला तो राजने थोडा डमाव्ये
त्यार पछी डसावता तेमने कहु के-

(एव च सरिसए ण तुम देवाणुप्पिया ! तस्स अगडददुरस्स)

हे देवानुप्रिय ! तमे तो पेला इवाना हेडडा जेवा छे । चोक्षानी आ
वात ससजाने राज्ञे वग्थेथी न तेने कहु के (के ण देवाणुप्पिए से अगड

યથા-एकः कूपमण्डक. स्यात्=भासीत्, स खलु 'तत्थ' तत्र=तस्मिन् कूपे
जातः, तत्रैव कूपे एव 'बुद्धे' दृढ.=दृढिगतः, अन्यम्-'अगड' अवट=
कूप वा, 'तडाग' तडाग=कमलयुक्तागाधजलाशय वा, 'दह' दृढ=प्रसिद्ध,
'सर' सरः=सरोवर वा, सागर वा, अपश्यन्नेव मन्यते-अयमेवायतो वा यावत्
सागरो वा । एतस्मात् कूपान्महाजलस्थानमन्यन्नास्तीत्येव मनसि जानातीति
भाव । ततस्तदनन्तर खलु त कूपपति, 'अण्णे' अन्यः सामुद्रकः=समुद्रे जातः
'दददुरे' ददुरः=मण्डकः, हव्यमागतः=सहजगत्या समागतः । ततः खलु स
कूपददुरः=कूपमण्डक त 'सामुदददुर' सामुद्रनिर्गमिन मण्डकम् एव=वक्ष्यमाण
प्रकारेण अगदीत्-यथा क एष खलु त्व हे देवानुप्रिय ! 'कत्तो' कुतः=कस्मात्

प्रिय ! वह कूपमण्डक कैसा होता है ! (जियसत्तू ! से जहानामए अगड
दददुरे सियासे ण तत्थ जाए तथेव बुद्धे अन्नअगडवा तडाग वा दह वा
सर वा सागर वा अपासमाणे चेव मण्णइ अय चेव अगडे वा जाव
सागरे वा) इस प्रकार जितशत्रु राजा की बात सुनकर चोक्षा परिव्रा
जिका ने उससे कहा-जितशत्रो सुनो मैं तुम्हें समझाती हूँ-जसे कोई
एक कूपका मेंढक कि जो उसी में उत्पन्न हुआ हो और उसी में पलपुष
कर बड़ा हुआ हो वह जैसे अपने कुए के सिवाय और किसी-कुए
को, तडाग कमलयुक्त अगाध-सरोवर को द्रह को जलाशय विशेष
को, अथवा समुद्रको कभी नहीं देखता हुआ ऐसा ही मानता है कि
यही मेरा कुआ और दूसरा कुआ है ? यावत् सागर है ।

इस कुए के सिवाय और दूसरा कोई बड़ा भारी जलस्थान कहीं
पर नहीं है (तएण त क्व अण्णे सामुदए दददुरे हव्वमोगण-तएण

દદ્દુરે ?) હે દેવાનુપ્રિય ! કૂવાનો દેડકો કેવો હોય છે ?

(જિયસત્તૂ ! સે જહાનામએ અગડદદ્દુરે સિયા સે ણ તત્થ જાણે તથેવ બુદ્ધે
અન્ન અગડ વા તડાગ વા દહ વા સર વા સાગર વા અપાસમાણે ચેવ મણ્ણઈ અય
ચેવ અગડેવા જાવ સાગરે વા)

આ પ્રમાણે જિતશત્રુ રાજાની વાત મામળીને ચોક્ષા પરિવ્રાજકાએ તેને
કહ્યું કે જિતશત્રો ! સાભણો તમને હું બધી વાત સમજાવું છું જેમ કેઈ એક
કૂવાનો દેડકો કે જે કૂવામાં તે જન્મ્યો છે અને તે જ ત્યાજ ઉછર્યો છે તે જેમ પોતાના
કૂવા સિવાય બીજા કોઈપણ કૂવા, તડાગ-કમળોવળુ અગાધ સરોવર, દ્રહ જલાશય
વિશેષ અને મમ / જે સુ વખત ન બેવાથી એમ જ માને છે કે આ મારો

स्थानाद् वा इह हव्यमागत ? ततः खलु स सामुद्रको दर्दुरः त कूपदर्दुरमेव=
वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—हे देवानुप्रिय ! अह सामुद्रको दर्दुरः=समुद्रनिवासी
मण्डकोऽस्मि । ततः खलु स कूप दर्दुरस्त सामुद्र दर्दुरमेवमवादीत्—‘ के महालए’
कियन्महालयः=कियान विशालः खलु हे देवाणुप्रिय ! स समुद्र ? ततस्तदनन्तर
खलु स सामुद्रो दर्दुरस्त कूपदर्दुरमेवमवादीत् महालयः=अति विस्तीर्णः, खलु देवा-

से कूवदददुरे त सामुद्रदददुर एव वयासी) इस प्रकार की मान्यता वाले
उस मेढक के कुण्पर उसी समय में कोई दूसरा समुद्र में रहने
वाला मेढक आगया—उसे आया हुआ देखकर कूप के मेढक ने उस
समुद्र निवासी मेढक से कहा—(से केषण तुम देवाणुप्पिया ! कत्तो वा
इह हव्यमागत ?) हे देवानुप्रिय ! यह तुम कौन हो—इस समय
कहा से आरहे हो ? (तएण से सामुद्दे दददुरे त कूवदददुर एव वयासी
प्रत्युत्तर में उस समुद्र निवासी मेढक ने उस कूप मेढक से ऐसा कहा
(एव खलु देवाणुप्पिया ! अह सामुद्दे दददुरे) हे देवानुप्रिय ! मे
समुद्र का रहने वाला मेढक हूँ (तएण से कूव दददुरे त सामुद्दे
दददुर एव वयासी) उस के ऐसे वचन सुन कर कूप मेढक ने उस
समुद्र के निवासी दददुरे से इस प्रकार पूछा (के महालए ण देवाणु-
प्पिया ! से समुद्दे ?) हे देवानुप्रिय वह समुद्र कितना बड़ा है ? (तएण
से सामुद्दे दददुरे त कूवदददुर एव वयासी) प्रत्युत्तर में उस समुद्र
निवासी दर्दुर ने उस से ऐसा कहा—(एव खलु देवाणुप्पिया महालएण

सकुञ्चित विचार धरावता कूवाना देउकानी पासे भीजे ठोछ समुद्रमा रडेनारे।
देउके आव्ये। तेने आवेलो। नेछने कूवाना देउकाये समुद्रना देउकाने कहु—
(से केषण तुम देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्यमागत ?) हे देवानुप्रिय ?
तमे केछु छे ? अत्यारे तमे क्याथी आवे। छे ? (तएण से सामुद्दे दददुरे
त कूवदददुर एव वयासी) जवाअमा ते समुद्रमा रडेनारे। देउकाये कूवाना
देउकाने आ प्रमाणे कहु छे (एव खलु देवाणुप्पिया ! अह सामुद्दे दददुरे) हे
देवानुप्रिय ! हु समुद्रमा रडेनारे। देउके छु (तएण से कूवदददुरे त सामुद्दे
दददुर एव वयासी) तेनी आ प्रमाणे वात आलजाने कूवाना देउकाये ते समुद्रमा
रडेनारे। देउकाने आ प्रमाणे कहु छे (के महालए ण देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?)
हे देवानुप्रिय ? ते समुद्र केटलो भोटो छे ? (तएण से सामुद्दे दददुरे त
कूवदददुर एव वयासी) जवाअमा समुद्रना देउकाये तेने आ प्रमाणे कहु छे—

(एव खलु देवाणुप्पिया, महालए णं देवाणुप्पिया । समुद्दे, तएण से दददुरे

યથા-એકઃ કૂપમણ્ડકઃ સ્પાત્=આસીત્, સ સ્વલ્પ 'તત્થ' તત્ર=તસ્મિન્ કૂપે
જાતઃ, તત્રૈવ કૂપે એ 'બુદ્ધે' વૃદ્ધ=વૃદ્ધિગતઃ, અન્યમ્- 'અગડ' અવટ્=
કૂપ વા, 'તડાગ' તડાગ=કમલયુક્તાગાધજલાશય વા, 'દહ' દૂઢ=પ્રસિદ્ધ,
'સર' સરઃ=સરોવર વા, સાગર વા, અપશ્યન્નેય મન્યતે-અયમેવાવટો વા યાવત્
સાગરો વા । એતસ્માત્ કૂપાન્મહાજલસ્થાનમન્યન્નાસ્તીત્યેવ મનસિ જાનાતીતિ
ભાવ । તતસ્તદનન્તર સ્વલ્પ ત કૂપપતિ, 'અણ્ણે' અન્યઃ સામુદ્રકઃ=સમુદ્રે જાતઃ
'દદ્દુરે' દર્દુર=મણ્ડકઃ, હવ્યમાગતઃ=સહજગત્યા સમાગતઃ । તતઃ સ્વલ્પ સ
કૂપદર્દુરઃ=કૂપમણ્ડક ત 'સામુદ્રદદ્દુર' સામુદ્રનિગમિત મણ્ડકમ્ એવ=વક્ષ્યમાણ
પ્રકારેણ અવાદીત્-યથા ક એપ સ્વલ્પ ત્વ હે દેવાનુપ્રિય ! 'કત્તો' કુતઃ=કસ્માત્

પ્રિય ! વહ કૂપમણ્ડક કેસા હોતા હૈ ! (જિયસત્તુ ! સે જહાનામણ અગડ
દદ્દુરે સિયા સે ણ તત્થ જાણ તથેવ બુદ્ધે અન્નઅગડ વા તડાગ વા દહ વા
સર વા સાગર વા અપાસમાણે ચેવ મણ્ડક અથ ચેવ અગડે વા જાવ
સાગરે વા) હસ પ્રકાર જિતશત્રુ રાજા કી વાત સુનકર ચોક્ષો પરિવ્રા
જિકા ને ઉસસે કહા-જિતશત્રો સુનો મેં તુમ્હે સમજાતી હૂં-જસે કોઈ
એક કૂપકા મેંઢક કિ જો ઉસી મે ઉત્પન્ન હુઆ હો ઓર ઉસી મે પલપુષ
કર વઢા હુઆ હો ગ્રહ જૈસે અપને કુણ કે સિવાય ઓર કિસી-કુણ
કો, તડાગ કમલયુક્ત અગાધ-સરોવર કો દ્રહ કો જલાશય વિશેષ
કો, અથવા સમુદ્રકો કમી નહીં દેખતા હુઆ એસા હી માનતા હૈ કિ
યહી મેરા કુઆ ઓર દૂસરા કુઆ હૈ ? યાવત્ સાગર હૈ ।

હસ કુણ કે સિવાય ઓર દૂસરા કોઈ વડા ભારી જલસ્થાન કહીં
પર નહીં હૈં (તણ ત ક્વ અણ્ણે સામુદ્ર દદ્દુરે હવ્યમાગ-તણ

દદ્દુરે ?) હે દેવાનુપ્રિય ! કૂવાનો દેડકો કેવો હોય છે ?

(જિયસત્તુ ! સે જહાનામણ અગડદદ્દુરે સિયા સે ણ તત્થ જાણ તથેવ બુદ્ધે
અન્ન અગડ વા તડાગ વા દહ વા સર વા સાગર વા અપાસમાણે ચેવ મણ્ડક અથ
ચેવ અગડેવા જાવ સાગરે વા)

આ પ્રમાણે જિતશત્રુ રાજાની વાત સામળીને ચોક્ષા પરિવ્રાજકાએ તેને
કહ્યું કે જિતશત્રો ! સામળો તમને હું બધી વાત સમજાવું છું જેમ કેાઈ એક
કૂવાનો દેડકો કે જે કૂવામાં તે જન્મ્યો છે અને તે જ ત્યાજ ઉછર્યો છે તે જેમ પોતાના
કૂવા સિવાય બીજા કોઈપણ કૂવા, તડાગ-કમળોવળુ અગાધ સરોવર, દ્રહ જલાશય
વિશેષ અને સમુદ્રને કોઈપણ વખત ન જોનાથી એમ જ માને છે કે આ મારો
કૂવો જ બીજો કૂવો છે યાવત્ સાગર છે

આ મારા કૂવા સિવાય બીજું કોઈ મોટું સરોવર કે જળસ્થાન
જગતમાં નથી (તણ ત ક્વ અણ્ણે સામુદ્ર દદ્દુરે હવ્યમાગ) આ પ્રમાણે

स्थानाद् वा इह हव्यमागत ? , ततः खलु स सामुद्रको दर्दुरः त कूपदर्दुरमेव=
वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—हे देवानुप्रिय ! अह सामुद्रको दर्दुरः=समुद्रनिवासी
मण्डूकोऽस्मि । ततः खलु स कूप दर्दुरस्त सामुद्र दर्दुरमेवमवादीत्—‘ के महालए’
कियन्महालयः=कियान विशालः खलु हे देवाणुप्रिय ! स समुद्र ? , ततस्तदनन्तर
खलु स सामुद्रो दर्दुरस्त कूपदर्दुरमेवमवादीत् महालयः=अति विस्तीर्णः, खलु देवा-

से कूवदददुरे त सामुद्रदददुर एव वयासी) इस प्रकार की मान्यता वाले
उस मेंढक के कुण्पर उसी समय में कोई दूसरा समुद्र में रहने
वाला मेंढक आगया—उसे आया हुआ देखकर कूप के मेंढक ने उस
समुद्र निवासी मेंढक से कहा—(से वेषण तुम देवाणुप्रिया ! कत्तो वा
इह हव्यमागत ?) हे देवानुप्रिय ! यह तुम कौन हो—इस समय
कहां से आ रहे हो ? (तएण से सामुद्दे दददुरे त कूवदददुर एव वयासी
प्रत्युत्तर में उस समुद्र निवासी मेंढक ने उस कूप मेंढक से ऐसा कहा
(एव खलु देवाणुप्रिया ! अह सामुद्दए दददुरे) हे देवानुप्रिय ! मे
समुद्र का रहने वाला मेंढक हूँ (तएण से कूव दददुरे त सामुद्दय
दददुर एव वयासी) उस के ऐसे वचन सुन कर कूप मेंढक ने उस
समुद्र के निवासी दददुरे से इस प्रकार पूछा (के महालए ण देवाणु-
प्रिया ! से समुद्दे ?) हे देवानुप्रिय वह समुद्र कितना बड़ा है ? (तएण
से सामुद्दए दददुरे त कूवदददुर एव वयासी) प्रत्युत्तर में उस समुद्र
निवासी दर्दुर ने उस से ऐसा कहा—(एव खलु देवाणुप्रिया महालएण

स कुथित विचार धरावता कूवाना देउजानी पास जीले कोछ समुद्रमा रडेनारे
देउके आव्यो तेने आवेलो लेछने कूवाना देउकाये समुद्रना देउजाने छहु—
(से वेषण तुम देवाणुप्रिया ! कत्तो वा इह हव्यमागत ?) हे देवानुप्रिय ?
तमे कोछ छे ? अत्यारे तमे क्याथी आव्यो छे ? (तएण से सामुद्दे दददुरे
त कूवदददुर एव वयासी) जवाजमा ते समुद्रमा रडेनारा देउकाये कूवाना
देउजाने आ प्रमाणे छहु के (एव खलु देवाणुप्रिया ! अह सामुद्दए दददुरे) हे
देवानुप्रिय ! हु समुद्रमा रडेनारे देउके छु (तएण से कूवदददुरे त सामुद्दय
दददुर एव वयासी) तेनी आ प्रमाणे वात भाषणीने कूवाना देउकाये ते समुद्रमा
रडेनारा देउजाने आ प्रमाणे छहु के (के महालए ण देवाणुप्रिया ! से समुद्दे ?)
हे देवानुप्रिय ? ते समुद्र केटलो मोटो छे ? (तएण से सामुद्दए दददुरे त
कूवदददुर एव वयासी) जवाजमा समुद्रना देउकाये तेने आ प्रमाणे छहुके—

(एव खलु देवाणुप्रिया, महालए णं देवाणुप्रिया ! समुद्दे, तएण से दददुरे

નુપ્રિય ! સમુદ્રઃ, તતસ્તદનન્તરં खलु स ददुरः=रूपमण्डक, पादेन रेखा कर्षति, कृष्णा, एवमवादीत्-इयन्महालयः=एतावान् विस्तीर्णः खलु हे देवानुप्रिय ! स समुद्रः ?, तदा समुद्रमण्डक आह-‘ नायमर्थः समर्थः ’ इति अय रेखया निर्दिष्टो विस्तारः समुद्रविस्तार बोधयितु न शक्तइत्यर्थः । उक्तार्थे हेतुमाह-‘ महालय खलु स समुद्र ’ खलु=निश्चेन स समुद्रो महालयोऽति विस्तीर्णः समुद्रस्य महत्त्वं न केनापि निर्देष्टुं शक्यत इतिभावः । ततस्तदनन्तरं स स रूपददुरः पौरस्त्यात् =अग्रवर्तिनः, तीरादुत्पत्य=हृदयित्वा खलु गच्छति, = रूपस्य द्वितीयतीरमिति भावः । गत्वा एवमवादीत्-इयन्महालय =एतावान्विशाल, खलु हे देवानुप્રिय !

देવાણુપ્પિયા ! સમુદ્દે, તળણ સે દદ્દુરે પાણ્ણ લીહ કહેહ, કઢિત્તા એવ વયાસી, ઇ મહાલણ્ણ દેવાણુપ્પિયા ! સે સમુદ્દે ણો ઇણ્ણે સમ્મદ્દે મહાલણ્ણ સે સમુદ્દે) હે દેવાનુપ્રિય ! વહ સમુદ્ર તો વહુત બડા હૈ । હસ બાન કો સુનકર ઉસ રૂપ મેઢક ને અપને પેર સે એક રેખા રેખી ઓર રેંચકર વોલા હે દેવાનુપ્રિય ! વહ સમુદ્ર ઇતના ભારી વિશાલ હૈ । પ્રત્યુત્તર મે ઉસ સમુદ્રવાસી મેંઢક ને ઉસ રૂપ મેઢક સે કહા- નહીં વહ ઇતના વડા નહીં હૈ-વહ તો હસ સે ભી અધિક વડા હૈ અર્થાત્ રેખા સે નિર્દિષ્ટ જો વિસ્તાર હૈ વહ સમુદ્ર કે વિસ્તાર કો બતલાને મેં સમર્થ નહીં હો સકના હૈ-ઉસ કા વિસ્તાર તો કયા કહે-વહુત હી અધિક હૈ । (તળણ સે રૂવદદ્દુરે પુરત્થિમિલ્લાઓ તીરાઓ ઉપ્પિહિત્તા ણ ગચ્છહ, ગચ્છિત્તા એવ વયાસી ઇ મહાલણ્ણ દેવાણુપ્પિયા ! સે સમુદ્દે ણો ઇણ્ણે સમ્મદ્દે) સમુદ્રવાસી મેંઢક કી બાત સુનકર વહ રૂપ મેંઢક અપને અગ્રવર્તી તીર સે રૂપ કે દૂસરે તીર પર ઉછલ ગયા-વહા

પાણ્ણ લીહ કહેહ, કઢિત્તા એવ વયાસી ઇ મહાલણ્ણ દેવાણુપ્પિયા ! સે સમુદ્દે ણો ઇણ્ણે સમ્મદ્દે મહાલણ્ણ સે સમુદ્દે)

હે દેવાનુપ્રિય ! સમુદ્ર તો ખહુ વિશાળ છે

આ વાત સાંભળીને જ્ઞાના દેહકાએ પોતાના પગથી એક લીટી દોરી અને તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તે સમુદ્ર આટલો વિશાળ છે ? ત્યારે જવાબમાં સમુદ્રના દેહકાએ કહ્યું કે નહિ, તે આટલો મોટો નથી તે તો એના કરતા પણ વિશાળ છે એટલે કે લીટી દોરીને જે વિસ્તાર બતાવવામાં આવ્યો છે તે સમુદ્રની વિશાળતાને અકિત કરવામાં અસક્તિમાન છે તેનો વિસ્તાર તો ખૂબ જ વિશાળ છે

(તળણ સે રૂવદદ્દુરે પુરત્થિમિલ્લાઓ તીરાઓ ઉપ્પિહિત્તા ણ ગચ્છહ ગચ્છિત્તા એવ વયાસી, ઇ મહાલણ્ણ દેવાણુપ્પિયા ! સમુદ્દે ણો ઇણ્ણે સમ્મદ્દે)

स समुद्रः ? , एव कूपमण्डपस्य वचः श्रुत्वा समुद्रमण्डकं पुनराह—‘ नायमर्थं समर्थं ,
इति दर्शनादेव समुद्रस्य महत्त्वं ज्ञातं भवति ननु तत् कथमपि निर्देष्टुं वक्तुं च शक्यं
केनापीति भावः । तथैव=यथा स कूपमण्डपस्तद्वदेव, एवमेव = उक्त प्रकारेणैव,
त्वमपि हे जितशत्रो ! अन्येषां बहूनां राजेश्वर-यावत् सार्थवाहप्रभृतीनां भार्या वा
भगिनी वा दुहितर वा स्नुषा वा अपश्यन् जानासि-यादृशं ममैव खलु अवरोधः
=अन्तःपुर, तादृशं नो अन्यस्य ।

जाकर कहने लगा—हे देवानुप्रिय ! तुम्हारे द्वारा निर्दिष्ट वह समुद्र क्या
इतना बड़ा है ? इस प्रकार कूप मेंढक के वचन सुन कर उस सांमुद्रिक
मेंढक ने कहा—

भाई क्या बतलावें देखने से ही उस की महत्ता ज्ञात हो सकती
है । यह कहने की और निर्दिष्ट करने की बात नहीं है । उस का निर्देश
और कथन तो कोई कर ही नहीं सकता है । (तथैव एवामेव तुमपि
जियसत्तु ! अन्नेसिं बहूणं राईसर जाव सत्थवाह पमिईणं भज्ज वा
भगिणीं वा धूय वा सुण्ह वा अपासमाणे जाणेसि-जारिसए मम चेव-
ण ओरोहे तारिसए णो अण्णस्स) इसी तरह हे जितशत्रो ! तुमने
भी कभी और किसी राजेश्वर आदि सार्थवाह प्रभृतियों की भार्या को,
भगिनी को, दुहिता को, स्नुषा को देखा नहीं है—इसीलिये ऐसा मान
रहे हो कि जैसा अन्तः पुर हमारा है—वैसा और किसी का कहीं पर

समुद्रमा रडेनारा देडकानी वात सालणीने ते डूवाने। देडके पोते न्या भेडे डते।
ते डूवाना डिनारा उपरथी डूवाना भील डिनारा उपर डही गथे। अने त्या न्छने डडेवा
लाग्ये। डे डे देवानुप्रिय ! तमे ने समुद्रनी वात डरे। छे ते शु आटवे।
भोटो छे ? आ रीते डूवाना देडकानी वात सालणीने समुद्रना देडकाये डहु—

लाध शु डहीये ? समुद्रने लेवाथी न तेनी विशणतानु ज्ञान थ । शके
तेम छे भुपेथी डडेवानी अने लीटीये। वगेरेथी निर्देय ते। थध शके तेम न्छातुं नथी

(तथैव एवामेव तुमपि जियसत्तु ! अन्नेसिं बहूणं राई सरजाव सत्थवाह
पमिईणं भज्ज वा भगिणीं वा धूय वा अपासमाणे जाणेसि जारिसए मम चेवण
ओराहे तारिसए णो अण्णस्स)

आ प्रभाणे न डे जितशत्रो ! तमे पणु डेध दिवस भील डेध राजेश्वर
वगेरे तेम न्छ सार्थवाह वगेरेनी श्रीओने, भडेनने, डुडिताने, स्नुषा (पुत्रनी
वहु) ने लेध नथी ओटवे न तमे आम मानो छे डे भारा नेवे। रणुवास
भीने ड्याय डाय न नडि,

નુપ્રિય ! સમુદ્રઃ, તતસ્તદનન્તરં खलु स दर्दुरः=कूपमण्डक, पाटेन रेखा कर्षति, कृष्ण, एवमयादीत्-इयन्महालयः=एतावान् विस्तीर्णः खलु हे देवानुप्रिय ! स समुद्रः ?, तदा समुद्रमण्डक आह-‘ नाग्रमर्थः समर्थः ’ इति अथ रेखया निर्दिष्टो विस्तारः समुद्रविस्तार बोधयितु न शक्तइत्यर्थः । उक्तार्थे हेतुमाह-‘ महालय खलु स समुद्र ’ खलु=निश्चेन स समुद्रो महालयोऽति विस्तीर्णः समुद्रस्य महत्त्वं न केनापि निर्देष्टुं शक्यत इतिभावः । ततस्तदनन्तरं ख स कूपदर्दुरः पौरस्यात् =अग्रवर्तिनः, तीरादुत्पत्य=कूर्दयित्वा खलु गच्छति, = कूपस्य द्वितीयतीरमिति भावः । गत्वा एवमयादीत्-इयन्महालय =एतावान्विशाल. खलु हे देवानुप्रिय ।

देवाणુપ્પિયા ! સમુદ્દે, તણ સે દદ્દુરે પાણ લીહ કહેહ, કહિત્તા એવ વયાસી, ણ મહાલણ દેવાણુપ્પિયા ! સે સમુદ્દે ણો ઇણદ્દે મમદ્દે મહાલણ સે સમુદ્દે) હે દેવાનુપ્રિય ! વહ સમુદ્ર તો વહુત બડા હૈ । હસ વાન કો સુનકર હસ કૂપ મેઢક ને અપને પેર સે એક રેખા રેંચી ઓર રેંચકર ચોલા હે દેવાનુપ્રિય ! વહ સમુદ્ર ઇતના ભારી વિશાલ હૈ । પ્રત્યુત્તર મે હસ સમુદ્રવાસી મેંઢક ને હસ કૂપ મેઢક સે કહા- નહીં વહ ઇતના બડા નહીં હૈ-વહ તો હસ સે ભી અધિક બડા હૈ અર્થાત્ રેખા સે નિર્દિષ્ટ જો વિસ્તાર હૈ વહ સમુદ્ર કે વિસ્તાર કો બતલાને મેં સમર્થ નહીં હો સકના હૈ-હસ કા વિસ્તાર તો વ્યા રહે-વહુત હી અધિક હૈ । (તણ સે કૂવદ્દુરે પુરતિમિલ્લાઓ તીરાઓ ઉપ્પિહિત્તા ણ ગચ્છહ, ગચ્છિત્તા એવ વયાસી ણ મહાલણ દેવાણુપ્પિયા ! સે સમુદ્દે ણો ઇણદ્દે મમદ્દે) સમુદ્રવાસી મેંઢક કી વાત સુનકર વહ કૂપ મેંઢક અપને અગ્રવર્તી તીર સે કૂપ કે દૂસરે તીર પર ઉછલ ગયા-વહા

પાણ લીહ કહેહ, કહિત્તા એવ વયાસી ણ મહાલણ દેવાણુપ્પિયા ! સે સમુદ્દે ણો ઇણદ્દે મમદ્દે મહાલણ સે સમુદ્દે)

હે દેવાનુપ્રિય ! સમુદ્ર તો ખહુ વિશાળ છે

આ વાત સાંભળીને જ્વાના દેડકાએ પોતાના પગથી એક લીટી દોરી અને તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તે સમુદ્ર આટલો વિશાળ છે ? ત્યારે જવાબમાં સમુદ્રના દેડકાએ કહ્યું કે નહિ, તે આટલો મોટો નથી તે તો એના કરતા પણ વિશાળ છે એટલે કે લીટી દોરીને જે વિસ્તાર બતાવવામાં આવ્યો છે તે સમુદ્રની વિશાળતાને અકિત કરવામાં અશક્તિમાન છે તેનો વિસ્તાર તો ખૂબ જ વિશાળ છે

(તણ સે કૂવદ્દુરે પુરતિમિલ્લાઓ તીરાઓ ઉપ્પિહિત્તા ણ ગચ્છહ ગચ્છિત્તા એવ વયાસી, ણ મહાલણ ણ દેવાણુપ્પિયા ! સમુદ્દે ણો ઇણદ્દે મમદ્દે)

जिका - जनितहर्षः = चोक्षा पट्टिवाजिका - वचनश्रवणानन्तरसजातमहिलीविषय
कानुरागः, दूत शब्दयति, शब्दयित्वा 'जाय पट्टारेत्थगमणाए' आगत-मिथिलां
गन्तुमादिष्टवान् ततः स दूतस्तदाज्ञानुसारेण प्राधारयद् गमनाय मिथिला गन्तु
प्रवृत्तः। इति पण्णामपि राज्ञा सम्बन्धः पृथक् २ प्रोक्तः ॥ सू० ३१ ॥

मूलम्-तएण तेसि जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं
दूया जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थगमणाए, तएण छप्पि-
यदूया जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता
मिहिलाए अग्गुज्जाणसि पत्तेयं २ खधावारनिवेसं करीति,
करीत्ता मिहिलं रायहाणि अणुपविसंति, अणुपविसित्ता
जेणेव कुमए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पत्तेयं २ कर-
यलपरिगहिय सिरसावत्त दसनह मत्थए अंजलि कहुं
साणं २ राईण वयणाइ निवेदेति, तएण से कुमए तेसि
दूयाण अंतिए एयमट्ठ सोच्चा आसुरुत्ते जीव तिवलियं

थी उसी दिशा तरफ वापिस चली गई। चोक्षा परिव्राजिका के वचन
सुनने के बाद जिसे मल्ली कुमारी के विषय में अनुराग उत्पन्न हो गया
है ऐसे उस जितशत्रु राजा ने दूत को बुलाया-और उस से मिथिला
जाने के लिये कहा-वह दूत भी अपने राजा की आज्ञानुसार मिथिला
नगरी तरफ जाने के लिये वहा रवाना हो गया। सूत्र " ३१ "

तरफ पाछी जाती रही चोक्षा परिव्राजिका ने भी मल्लीकुमारीना मोक्ष
विशे प्रशसाजनक राखे साक्षीने जेना मनमा तेना भाटे अनुराग उत्पन्न
थये छे अथा ते जितशत्रु राजाओ इतने बोलावये अन्त तेने मिथिला निवा
भाटे आज्ञा करी इत पोताना राजाना दुःख प्रभावे मिथिला नगरी तरफ
जावा उपडी गये ॥ सूत्र " ३१ " ॥

તદેવ સ્વલુ હે જિતશત્રો ! મિથિલાયાં નગર્યાં કુમ્ભકસ્ય રાજો દુષિતાન્પુત્રી,
પ્રભાવત્યા આત્મજાન્મદ્રજાતા મલ્લી નામ ઇતિ, રૂપેણન્સુન્દગકૃત્યા ચ યૌવનેન
ચ યાત્ નો સ્વલુ ળયા કાપિ દેવકન્યા વા તાટગી વિચિતે, યાદશી મલ્લી ।
મલ્લ્યા વિદેહરાજવરકન્યાયાન્નિન્નસ્યાપિ પાદાન્નુષ્ઠસ્યાય તવાવરોધ સ્તતસહસ-
તમામપિ કલાન્લભાશમપિ નાર્હતિ ' ઇતિકૃત્વાન્નિત્યુત્તયા, સા ચોક્ષા પરિત્રાજિકા
યસ્યા દિશ પ્રાદુર્ભૂતા, તામેવ દિશ પ્રતિગતા । તતઃ સ્વલુ સ જિતશત્રુ પસ્ત્રિ-

મી નહીં હૈ । (ત એવ સ્વલુ જિયસત્તુ મિથિલાન નગરીન કુમ્ભગસ્સ
ધૂયા પ્રભાવતીન અત્તયા મલ્લી નામતિ-રૂપેણ ય જોવ્વણેણ જાવ નો
સ્વલુ અણ્ણા કાર્ઠ દેવકન્ના વા જારિમિયા મલ્લી) હસલિયે હે જિતશત્રો !
સુનો- મિથિલા નગરી મેં કુમ્ભક રાજા કી પુત્રી જો પ્રભાવતી કી કુક્ષિ
સે ઉત્પન્ન હુઈ હૈ મલ્લી કુમારી હૈ । વહ રૂપ ઓર યૌવન સે ઇતની અધિ
ક સુન્દરી હૈ કિ ઉસ કે સમક્ષ એસી કોઈ દેવ કન્યા આદિ કોઈ બી
કન્યા સુન્દરી નહીં હૈ-(મલ્લીન વિદેહરાયવરકન્નાન છિન્નગસ્સ વિ
પાયગુદ્ધસ્સ ઇમે તવારોહે સયસહસ્સતમપિ કલ ન અગ્ધઈ, ત્તિ કદ્દુ
જામેવ દિસ પાડબ્ધૂયા તામેવ દિસ પડિગયા તણ્ણ સે જિયસત્તુ પરિ
ઘ્વાઈયા જણિયદાસે દૂય સદાવેદ, સદાવિત્તો જાવ પહારેત્થ ગમણાન)
ઉસ વિદેહ રાજા કી ઉત્તમ કન્યા મલ્લી કુમારી કે કટે હુઈ પાદાન્નુષ્ઠ કે
એક લાગ્વ વે અશ વરાવર ૨ મી યહ આપકા અવરોધ અન્તપુર નહીં હૈ ।

હસ પ્રકાર કહકર વહ ચોક્ષા પરિત્રાજિકા જિમ દિશા સે આઈ

(ત એવ સ્વલુ જિયસત્તુ મિથિલાન નગરીન કુમ્ભગસ્સ ધૂયા પ્રભાવતીન અત્તયા મલ્લી
નામતિ રૂપેણ ય જોવ્વણેણ જાવ નો સ્વલુ અણ્ણા કાર્ઠ દેવકન્ના વા જારિસિયા મલ્લી)

એવલા માટે હે જિતશત્રો ! સાલળો, મિથિલા નગરીમા પ્રભાવતીના
ગર્ભથી જન્મેલી કુલક રાજાની પુત્રી મલ્લીકુમારી પોતાના રૂપ અને યૌવનથી
એટલી બધી સુંદરી છે કે તેની સામે તો દેવકન્યા પણ કંઈ જ નથી

(મલ્લીન વિદેહરાયવરકન્નાન છિન્નગસ્સ વિ પાયગુદ્ધસ્સ ઇમે તવારોહે સય
સહસ્સતમ પિ કલ ન અગ્ધઈ, ત્તિ કદ્દુ જામેવ દિસ પાડબ્ધૂયા તામેવ દિસિ
પડિગયા તણ્ણ સે જિયસત્તુ ! પરિઘાઈયા જણિયદાસે દૂય સદાવેદ સદાવિત્તા
જાવ પહારેત્થ ગમણાન)

વિદેહ રાજાની ઉત્તમ કન્યા મલ્લીકુમારીના કપાએલા અજૂઠાના એક
લાખમા લાગ બરાબર પણ આ તમારો અવરોધ જન (રણવાસ) નથી
આ પ્રમાણે કહીને ચોક્ષા પરિત્રાજિકા જે દિશાથી આવી હતી તે દિશા

निगच्छित्ता एगयओ मिलायति, मिलायित्ता जेणेव मिहिला
तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ३२ ॥

टीका—‘तएण तेसिं’ इत्यादि । ततस्तदन्तर तेषा जितशत्रुप्रमुखाणा
पण्णा राज्ञा दूता यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैव ‘माधारयद् गमनाय’ गन्तुमुद्यताः ।
तत खलु पडपि दूता यत्रैव मिथिला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य मिथिलाया
‘अग्गुज्जाणमि’ अग्रोद्याने=प्रधानोद्याने, प्रत्येक २ ‘खधावारनिवेश’ स्फुन्धावार-
निवेश=शिविरस्य ‘छावनी’ इति भाषा प्रसिद्धस्य निवेश स्थापन कुर्वन्ति, कृत्वा,
मिथिला राजधानीमनुप्रविशन्ति, यत्रैव कुम्भको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य

‘तएण तेसिं जियसत्तू पामोकखाण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इस के बाद (तेसिं जियसत्तू पामोकखाणं छण्ह
राईण) उन जितशत्रु प्रमुख छो हो राजाओ के (दूयां) दूत (जेणेव
मिहिला) जहा वह मिथिला नगरी थी (तेणेव पहारेत्थ गमणाए)
उस ओर अपने २ स्थान से चल दिये (तएणं छप्पियदूया जेणेव
मिहिला तेणेव उवागच्छति) चलते २ वे छो हो ही दूत एक
ही साथ जहा मिथिला नगरी थी वहा आये । (उवागच्छित्ता
मिहिलाए अग्गुज्जाणसि पत्तेय २ खधावारनिवेश करेंति, करित्ता मि
हिल रायहाणि अणुपविसति) वहा आकर मिथिलानगरी प्रधान उद्यान
में उन सवने अलग २ अपनी २ छावनी डाल दी । छावनी डालकर
फिर वे मिथिला नगरी में प्रवेश किया—(अणुपविसित्ता जेणेव कुम्भए

तएण तेसिं जियसत्तू पामोकखाण इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थारपछी (तेसिं जियसत्तू पामोकखाण छण्ह राईण)
जितशत्रु प्रमुख छो हो राजाओना (दूया) हुतो (जेणेव मिहिला) जहा मिथिला
नगरी छती (तेणेव पहारेत्थ गमणाए) ते तरक्ष पोतपोताना स्थानेथी उपडी
गया (तएण छप्पिय दूया जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति) ते छो हो हुतो
आलता आलता छो छो साथे ज जहा मिथिला नगरी छती त्या आवी पडोअ्या

(उवागच्छित्ता मिहिलाए अग्गुज्जाण मि पत्तेय २ खधावार निवेश करेंति,
करित्ता मिहिल रायहाणि अणुपविसति)

त्या पडेथीने बधाओ मिथिला नगरीना प्रधान उद्यानमा पोतपोतानो
पडाव नाओयो पडाव नाओथीने तेओ मिथिला नगरीमा गया (अणुपविसित्ता
जेणेव कुम्भए तेणेव उवागच्छति) अने जया कुम्भक राजा छता त्या पडोअ्या

भिउंढि एव वयासी-न देमिण अहं तुब्भ मल्लिं विदेहराय
 वरकण्णं तिकट्ठु ते छप्पिदूए असक्कारिय असम्माणिय अव-
 द्दारेण णिच्छुभावेइ । तएणं जियसत्तू पामोक्खाण छण्हं
 राईणं दूया कुभएण रत्ता असक्कारिया असम्माणिया अव-
 द्दारेणं णिच्छुभाविया जेणेव सगार जाणवया जेणेव सयाइं
 णगराइ जेणेव सगार रायाणो तेणेव उवागच्छति, उवाग-
 च्छित्ता करयल परि० एव वयासी-एव खलु सामी । अम्हे
 जियसत्तू पामोक्खाणं छण्ह राईणं दूया जमगसमग चेव
 जेणेव मिहिला जाव अवद्दारेणं निच्छुभावेइ, तं ण देइणं
 सामी । कुभए मल्लिं विदेहरायवरकन्न साणं २ राईणं
 एयमट्ठु निवेदेति ।

तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो तेसि दूयाणं
 अतिए एयमट्ठुं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता अणमणस्स
 दूयसपेसणं करेति, करित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणु-
 प्पिया । अम्ह छण्ह राईण दूया जमगसमगं चेव जाव
 निच्छूडा, त सेय खलु देवाणुप्पिया । अम्ह कुभगस्स जत्त
 गेणिहत्तए त्तिकट्ठु अणमणस्स एयमट्ठु पडिसुणेति, पडिसुणि-
 त्ता ण्हाया सण्णद्धा हत्थिखधवरगया सकोरट मल्लदामेण छत्तेणं
 धरिज्जमाणेणं, उद्धुव्वमाणार्हिं सेयवरचामरार्हिं महयाहय-
 गयरहपवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा
 सव्विड्डीए जाव रवेणं सएहिं० नगरेहिंतो जाव निग्गच्छति

निगच्छित्ता एगयओ मिलायंति, मिलायित्ता जणेव मिहिला
तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ३२ ॥

टीका—‘तएण तेसिं’ इत्यादि । ततस्तदन्तर तेषा जितशत्रुप्रमुखाणा
पण्णा राज्ञा दूता यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैव ‘माधारयद् गमनाय’ गन्तुमुद्यताः ।
तत खलु पडपि दूता यत्रैव मिथिला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य मिथिलाया
‘अग्गुज्जाणसि’ अग्रोद्याने=प्रधानोद्याने, प्रत्येक २ ‘खधावारनिवेश’ स्कन्धार-
निवेश=शिविरस्य ‘छावनी’ इति भाषा प्रसिद्धस्य निवेश स्थापन कुर्वन्ति, कृत्वा,
मिथिला राजधानीमनुप्रविशन्ति, यत्रैव कुम्भको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य

‘तएण तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इस के बाद (तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्ह
राईण) उन जितशत्रु प्रमुख छो राजाओं के (दूयां) दूत (जेणेव
मिहिला) जहा वह मिथिला नगरी थी (तेणेव पहारेत्थ गमणाए)
उस ओर अपने २ स्थान से चल दिये (तएण छप्पियदूया जेणेव
मिहिला तेणेव उवागच्छति) चलते २ वे छो ही दूत एक
ही साथ जहा मिथिला नगरी थी वहा आये । (उवागच्छित्ता
मिहिलाए अग्गुज्जाणसि पत्तेय २ खधावारनिवेश करेंति, करित्ता मि
हिल रायहाणि अणुपविससति) वहा आकर मिथिलानगरी प्रधान उद्यान
में उन सबने अलग २ अपनी २ छावनी डाल दी । छावनी डालकर
फिर वे मिथिला नगरी में प्रवेश किया—(अणुपविससित्ता जेणेव कुम्भए

तएण तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थारपछी (तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण)
जितशत्रु प्रमुख छो राजाओंना (दूया) हुतो (जेणेव मिहिला) न्ना मिथिला
नगरी छती (तेणेव पहारेत्थ गमणाए) ते तरक्ष पोतपोताना स्थानेथी उपडी
गया (तएण छप्पिय दूया जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति) ते छो हुतो
यावता यावता छो साथे ४ न्ना मिथिला नगरी छती त्या आवी पडोअ्या

(उवागच्छित्ता मिहिलाए अग्गुज्जाण मि पत्तेय २ खधावार निवेश करेंति,
करित्ता मिहिल रायहाणि अणुपविससति)

त्या पडेथीने पधाओ मिथिला नगरीना प्रधान उद्यानमा पोतपोतानो
पडाव नाअ्यो पडाव नाअीने तेओ मिथिला नगरीमा गया (अणुपविससित्ता
जेणेव कुम्भए तेणेव उवागच्छति) अने न्ना कुम्भ राजा छना त्या पडोअ्या

भिउंडि एवं वयासी-न देमिणं अह तुब्भ माहिं विदेहराय-
 वरकण्णं तिकट्टु ते छप्पिदूए असक्कारिय असम्माणिय अव-
 द्दारेण णिच्छुभावेइ । तएणं जियसत्तू पामोक्खाण छण्हं
 राईणं दूया कुभएणं रत्ता असक्कारिया असम्माणिया अव-
 द्दारेणं णिच्छुभाविया जेणेव सगा२ जाणवया जेणेव सयाइ२
 णगराइ जेणेव सगा२ रायाणो तेणेव उवागच्छति, उवाग-
 च्छित्ता करयल परि० एव वयासी-एवं खलु सामी । अम्हे
 जियसत्तू पामोक्खाणं छण्ह राईणं दूया जमगसमग चेव
 जेणेव मिहिला जाव अवद्दारेणं निच्छुभावेइ, त ण देइणं
 सामी । कुभए माहि विदेहरायवरकन्न साणं २ राईणं
 एयमट्टु निवेदेति ।

तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो तेसि दूयाणं
 अंतिए एयमट्टु सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता अणमणस्स
 दूयसपेसणं करेति, करित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणु-
 प्पिया । अम्ह छण्ह राईण दूया जमगसमगं चेव जाव
 निच्छूडा, त सेय खलु देवाणुप्पिया । अम्ह कुंभगस्स जत्त
 गेणिहत्तए तिकट्टु अणमणस्स एयमट्टु पडिसुणेति, पडिसुणि-
 त्ता णहाया सणद्धा हत्थिखधवरगया सकोरट मल्लदामेण छत्तेणं
 धरिजमाणेणं, उद्धुव्वमाणार्हिं सेयवरचामरार्हिं महयाहय-
 गयरहपवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिखुडा
 सव्विड्डीए जाव रवेणं सएहिं० नगरेहिंतो जाव निग्गच्छति

असंमोन्व, च 'अवदारेण' अपद्वारेण = भवनपश्चाद्भागस्थितलघुद्वारेण 'णिच्छुभान् वेद्' निःसारयति० ।

ततस्तदनन्तर खलु ते जितशत्रुप्रमुखाणा पण्णा राज्ञा दूताः कुम्भकेन राज्ञा असत्कारिताः असन्मानिता अपद्वारेण निःसारिता सन्तः यत्रैव स्वकाः २ = आत्मीयाः २, 'जाणवया' जानपदा = देशाः, यत्रैव स्वकानि २ नगराणि यत्रैव स्वकाः २ राजान आसन्, तत्रैवोपागच्छति, उपायुगत्य करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, एवमवादिषुः - हे स्वामिन्!

रिय अवदारेण णिच्छुभावेइ) हे दूतों ! मैं अपनी पुत्री विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी तुम्हारे राजाओं के लिये नहीं दूंगा " ऐसा कहकर उसने उन दूतों को न कोई सत्कार किया और न कोई सन्मान ही किया-किन्तु उन्हें भवन के पीछे भाग के छोटे से दरवाजे से बाहिर निकाल दिया । (तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुभएण रत्ता असत्कारिया असम्मानिया अवदारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगार जाणवया जेणेव सयाइ २ णगराइ जेणेव सगा २ रायाणो तेणेव उवागच्छति) इस तरह उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं के वे दूत कुम्भक राजा से असत्कृत एवं असमानित होते हुए जब महल के पिछले छोटे से द्वार से बाहिर निकाल दिये गये तब वे वहा से प्रस्थित होकर जहा अपना २ जनपद था, वहा अपने २ नगर थे और उनमें भी जहा अपने २ राजा ये वहा आ गये ।

असत्कारिय असम्मानिय अवदारेण णिच्छुभावेइ)

“ हे दूतो भारी पुत्री विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारी तमारा राजा ओने आपीश नछि ” आ प्रमाणे कहीने राजाओ दूतोनो केछि पणु रुपमा मत्कार अने सन्मान न उरता तेओने पोताना भडेलना पाछणना नाना आण्णुथी ञडार कही भूक्या

(तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुभएण रत्ता असत्कारियो असम्मानिया अवदारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगार जाणवया जेणेव सयाइ २ णगराइ जेणेव सगा २ रायाणो तेणेव उवागच्छति)

आ प्रमाणे जितशत्रु प्रमुख राजाओना ते दूतो कुलकरान्त पडे असत्कृत अने असमानित थता न्यारे भडेलना पाछला आण्णुथी ञडां कही भूक्या बीमा आण्णु थारे तेओ त्याची स्वाना वधने न्या तेमनो जनपद (देश) उते, न्या तेमनु नगर छु अने तेमा पणु न्या तेमना राजा उता त्या पडोव्या

प्रत्येक २ करेतल, परिगृहीत शिर मानतं मन्त्रकेऽर्जलि कृत्वा स्व ॥ म्बेरा, रोडा
 'वयणाह' वयनानि=रुथनानि निवेदयन्ति स्म । ततस्तदनन्तरं स कुम्भको सजा
 तेषा दूतानामन्तिके-समीपे, एतमर्थं 'जितशत्रुप्रमुखा' पठपि राजानो मली
 ठंठन्ति' इत्येतद्रूप वृत्तान्तं श्रुत्वा 'आसुरुत्ते' आसुरुत्त=शत्रु क्रोधाविष्टः,
 यावत्-त्रिमलिका=रेखाग्रयुतां भ्रुकुटि=भ्रुवः, मण्डिल्यं ललाटे कुर्वन् एव=वक्ष्य
 मणिप्रकारेण, अगदीत्=हे दूताः 'नो दास्यामि' खलु अहं युष्माकं राजस्य
 मल्ली विदेहराजवरकन्याम्' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा तान् पठपि दूतान् असत्कृत्य,
 तेषैव उवागच्छति) प्रवेश कर जहा कुम्भक राजा थे-वहा आये (उवा
 गच्छित्ता पत्तेय २ करयल परिगृहीय सिरसावत्त दसनह मत्थए अजलि
 कट्टु साण २ राईण वयणाणि निवेदेति) वहा आकरा उनं सबोने भिन्न
 २ रूप से, कुम्भक राजा को दोनों हाथों की अजलि बनाकर और उसे
 मस्तक पर रखकर नमस्कार किया-नमस्कार कर के फिर उन्होंने
 क्रमशः अपने २ राजा का कर्ण उसे सुनाया-(तएण से कुम्भ तेसिं
 दूयाण अन्तिण, एयमह सोच्चा आसुरुत्ते जावतिवलिय भिउडि एव
 वयासी) जितशत्रु प्रमुख छो हो हो नृपति मेरी पुत्री मल्लीकुमारी को
 चाह रहे हैं इस प्रकार का समाचार उन दूतों के पास से सुनकर
 वह कुम्भक राजा, इकदम क्रोधित हो गया-और, उसी समय उसकी
 त्रिलियुक्त भ्रुकुटि मस्तक पर चढ़ गई ।

इसी आवेश में उसने उन दूतों से इस प्रकार कहा-(न देमि णं
 अहं तुम्भ, मल्ली, विदेह, राघवरकण, ति कट्टु ते छप्पि, दूए, असक्का)

(उवागच्छित्ता पत्तेय २ करयलपरिगृहीय, सिरसावत्त, दसनह मत्थए
 अजलि कट्टु साण २ राईण, वयणाणि निवेदेति।)

॥ त्या जेने तेजो अधाये जुहा जुहा इयमा कुलक, राजने जने, डाथनी
 अजलि, जतावीने अने, तेने, भरतके भूडीने नमस्कार कर्वा अने नमस्कार करीने
 तेजोये वाराइरती पोतपोताना राजनी सदृशे तेमने कडी सलजाव्ये

(तएण से कुम्भ तेसिं दूयाण अतिए, एयमह सोच्चा आसुसत्तेजाव, तिव
 लिये भिउडि एव वयासी)

॥ जितशत्रु प्रमुख छये 'छ' राजा 'मारी' पुत्रा मल्लीकुमारीने 'चाडे' छे
 आ जतने सदृश इताना मोथी सालाजीने कुलक राजा 'जेकदम' शुक्से 'थडी' र
 गया, अने 'त्रले' देखाओवाणी तेमनी 'भ्रुकुटी' लभरो 'वडे थडी' गर्ध

॥ 'कथना' आवेशमा राजाये ते इताने कडी सलजाव्यु के—

॥ (न) देमि णं अहं तुम्भ, मल्ली विदेहराजवरकण, ति कट्टु ते छप्पि, दूए

असंमान्य, च 'अवदारेण' अपद्वारेण=भवनपश्चाद्भागस्थितलघुद्वारेण 'णिच्छुभावेइ' निःसारयति० ।

ततस्तदनन्तर खलु ते जितशत्रुप्रमुखाणा पण्णा राज्ञा दूताः कुम्भकेन राज्ञा असत्कारिता असन्मानिता अपद्वारेण निःसारिता सन्त यत्रैव स्वका २ = आत्मीयाः २, 'जाणवया' जानपदा = देशाः, यत्रैव स्वकानि २ नगराणि यत्रैव स्वकाः २ राजान आमन, तत्रैवोपागच्छति उपायुगत्य करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवतं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, एवमवादिषु - हे स्वामिन् !

रिय अवदारेण णिच्छुभावेइ) हे दूतों ! मैं अपनी पुत्री विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी तुम्हारे राजाओं के लिये नहीं दूंगा " ऐसा कहकर उसने उन दूतों को न कोई सत्कार किया और न कोई सन्मान ही किया-किन्तु उन्हें भवन के पीछे भाग के छोटे से दरवाजे से बाहर निकाल दिया । (तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुभएण रत्ता असत्कारिया असम्माणिया अवदारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगार जाणवया जेणेव सयाइ २ णगराइ जेणेव सगा २ रायाणो तेणेव उवागच्छति) इस तरह उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं के वे दूत कुम्भक राजा से असत्कृत एवं असमानित होते हुए जब महल के पिछले छोटे से द्वार से बाहर निकाल दिये गये तब वे वहा से प्रस्थित होकर जहा अपना २ जनपद था, वहा अपने २ नगर थे, और उनमें भी जहा अपने २ राजा थे वहा आ गये ।

असत्कारिय असम्माणिय अवदारेण णिच्छुभावेइ)

“ हे दूतो भारी पुत्रा विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारी तमारा राजा ओने आपीश नछि ” आ प्रमाणे कडीने राजाओ दूतोना डोछ पणु इपमा सत्कार अने सन्मान न उरता तेओने पोताना भडेलना पाछर्णना नाना पारण्णथी पडार कडी भूक्या

(तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुभएण रत्ता असत्कारियो असम्माणिया अवदारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगार जाणवया जेणेव सयाइ २ णगराइ जेणेव सगा २ रायाणो तेणेव उवागच्छति)

आ प्रमाणे जितशत्रु प्रमुख राजाओना ते दूतो कुलउरान्त वडे असत्कृत अने असमानित थता न्यारे भडेलना पाछला पारण्णथी पडार कडी भूक्या वीमा आब्या त्यारे तेओ त्यावी रवाना वधने न्या तेमनो जनपद (देश) छतो न्या तेमनु नगर छु अने तेमा पणु न्या तेमना राजा छता त्या पडोन्था

प्रत्येक २, करवल, परिगृहीत शिर आगतं मन्त्रकेऽजलिं कृत्वा स्वे ॥ स्वेनां रोगां
 ' वयणाड ' वयनानि=रुधनानि निवेदयन्ति स्म । ततस्तदनन्तरं स कुम्भको राजा
 तेषां दूतानामन्तिके-समीपे, एतमर्थं ' जितशत्रुप्रमुखा ' पठपि राजानो मही
 ठंठन्ति ' इत्येतद्रूपं वृत्तान्तं श्रुत्वा ' आसुरुत्ते ' आशुम्भ=शत्रु क्रोधाविष्टः,
 यावत्-त्रिवलिका=रेखाययुतां भ्रुकुटि=भ्रुयः मीटिल्यं ललाटे कुर्यात् त्वं=वक्ष्ये
 मणिप्रकारेण, अगदीत्=हे दूताः ' नो दास्यामि सद्यः अहं युष्माकं राजस्यो
 मल्ली विदेहराजवरकन्याम् ' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा तान् पठपि दूतान् असक्त्य,
 तेनैव उवागच्छति) प्रवेशं कर जहा कुम्भक राजा थे-वहा आये (उवा-
 गच्छित्ता पत्तेय २ करयल परिगृहिय सिरसावत्त दसनह मत्थए अजलि
 कट्टु साण २ राईणं वयणाणि निवेदेति) वहा आकर उन्नं सर्वोने भिन्न
 २ रूप से, कुम्भक राजा को दोनों हाथों की अजलि बनाकर और उसे
 मस्तक पर रखकर नमस्कार किया-नमस्कार कर के फिर उन्होंने क्र-
 मशः अपने २ राजा का कथन उसे सुनाया-(तएण से कुम्भए तेसिं
 दूयाण अन्तिए, एयमह सोच्चा आसुरुत्ते जाव तिवलिय भिउडि एव
 वयासी) ; जितशत्रु प्रमुख छहों ही नृपति मेरी पुत्री मल्लीकुमारी को
 चाह रहे हैं इस प्रकार का समाचार उन दूतों के पास से सुनकर
 वह कुम्भक राजा इकदम क्रोधित हो गया-और उसी समय उसकी
 त्रिवलियुक्त भ्रुकुटि मस्तक पर चढ़ गई ।

इसी आवेश में उसने उन दूतों से इस प्रकार कहा-(न देमि णं
 अहं तुम्भं, मल्ली, विदेह, रायवरकण्ण, ति कट्टु ते छप्पि, दूए, असक्का)

(उवागच्छित्ता पत्तेय २ करयलपरिगृहिय सिरसावत्त दसनह मत्थए
 अजलि कट्टु साण २ राईणं वयणाणि निवेदेति) ।

॥ त्या जडने तेजो, अधाजे जुहा, जुहा इमभा कुलक, राजने ण ने, डायनी
 अजलि, णतावीने, अने तेने, मस्तके भूडीने नमस्कार कर्या अने नमस्कार करीने
 तेजो, वासाइरती पोतपोताना राजनी सदृशे, तेमने कडी सलजाव्ये

(तएण से कुम्भए तेसिं दूयाण अन्तिए एयमह सोच्चा आसुरुत्ते जाव तिव-
 लियं भिउडि एव वयासी)

॥ एतशत्रु प्रमुख छहों ही राजा मेरी पुत्री मल्लीकुमारी ने चाहे छ
 आ जतने सदृश हताना मेथी सालजीने कुलक राजा, अकदम शत्रु से थकी
 गया, अने जले, देखाओवाणी तेमनी, भ्रुकुटी समिते, वक्ष थडी गड, ।

॥ क्रोधना आवेशमा राजा ने ते हताने कडी सलजाव्यु के— । । ।

॥ (न देमि णं, अहं, तुम्भं, मल्ली, विदेहरायवरकण्ण, ति, कट्टु ते, छप्पि, दूए

असंमोन्य, च 'अवदारेण' अपद्वारेण = भवनपश्चाद्भागस्थितलघुद्वारेण 'णिच्छुभावेइ' निःसारयंति० ।

ततस्तदनन्तर खलु ते जितशत्रुप्रमुखाणा पण्णा राज्ञा दूताः कुम्भकेन राज्ञा, असत्कारिताः असन्मानिता अपद्वारेण निःसारिता सन्तः यत्रैव स्वकाः २ = आत्मीयाः २, 'जाणवया' जानपदा = देशाः, यत्रैव स्वकानि २ नगराणि, यत्रैव स्वकाः २ राजान आसन्, तत्रैवोपागच्छति, उपायुगत्य करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, एवमवादिषुः - हे स्वामिन् !

रिय अवदारेण णिच्छुभावेइ) हे दूतों ! मैं अपनी पुत्री विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी तुम्हारे राजाओं के लिये नहीं दूंगा " ऐसा कहकर बसनें उन दूतों को न कोई-सत्कार किया और न कोई सन्मान-ही किया-किन्तु उन्हें भवन के पीछे भाग के छोटे से दरवाजे से बाहर निकाल दिया । (तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुभएण रत्ता असत्कारिया असम्माणिया अवदारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगार जाणवया जेणेव सयाइ २ णगराइ जेणेव सगा २-रायाणो तेणेव उवागच्छति) इस तरह उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं के वे दूत कुम्भक राजा से असत्कृत एवं असन्मानित होते हुए-जय महल के पिछले छोटे से द्वार से बाहर निकाल दिये गये तब वे वहा से प्रस्थित होकर जहा, अपना २ जनपद था, वहा अपने २ नगर थे, और उनमें भी जहा अपने २ राजा थे वहा आ गये ।

असत्कारिय असम्माणिय अवदारेण णिच्छुभावेइ)

" हे दूतो भारी पुत्री विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारी तमारा राजाओं ने आपीश नहि " आ प्रमाणे कहीने राजाओं दूतोंनो डोछ पणु इपमा सत्कार अने सन्मान न करता तेओने पोताना भडेलना पाछणना नाना भाण्णुथी अडार कही भूक्या

(तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुभएण रत्ता असत्कारिया असम्माणिया अपद्वारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगार जाणवया जेणेव सयाइ २ णगराइ जेणेव सगा २ रायाणो तेणेव उवागच्छति)

आ प्रमाणे उत्तराश्रु प्रमुख राजाओंना ते दूतो कुलउराज वडे असत्कृत अने असन्मानित थता न्यारे भडेलना पाछला भाण्णुथी अडार कही भूक्या वीमा आन्या त्यारे तेओ त्याची रवाना वधने 'न्यां तेमनो' जनपद (देश) 'डतो' न्या तेमनु नगर छु अने तेमा पणु न्या तेमना राजा डता त्या पडोन्त्या,

मत्येक २, करतल, परिगृहीत शिर आगतं, मन्त्रकेऽञ्जलिं कृत्वा स्व ता ग्नेर्वा राज्ञा
' वयणाह ' वयनानि=वयनानि निवेदयन्ति स्म । ततस्तदनन्तरं स कुम्भको राजा
तेषां दूतानामन्तिके-समीपे, एतमर्थं ' जितशत्रुप्रमुखा पडपि राजानो मही
ठेठन्ति ' इत्येतद्वप ' वृत्तान्ते श्रुत्वा ' आशुरुत्ते ' आशुरुत्त=शत्रु क्रोधान्तिष्ठः,
यावत्-त्रिवलिकां=रेखात्रययुतां भ्रुकुटिं=भ्रुवः मण्डिलं ललाटे कुर्वन् एवं=वश्यं
मणिपिकारेण, अरादीत्=हे दूताः ' नो दास्यामि' खलु अहं युष्माकं राजस्यो
मल्ली विदेहराजवरकण्णाम् ' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा तान् पडपि दूतान् असक्त्यै,

तेष्वेव उवागच्छति) प्रवेश कर जहा कुम्भक राजा थे-वहा आये (उवा-
गच्छित्ता पत्तेय २ करयल परिगृहीय सिरसावत्त दसनह मत्थए अजलि
कट्टु साण २ राईण वयणाणि निवेदेति) वहा आकरा उन सर्वोने भित्त
२ रूपसे, कुम्भक राजा को दोनों हाथों की अजलि बनाकर और उसे
मस्तक पर रखकर नमस्कार किया-नमस्कार कर के फिर उन्होंने के
क्रमशः अपने २ राजा का कान उसे सुनाया-(तएण से कुम्भ तैसि
दूयाण अन्तिए, एयमद्व सोच्चा आसुरुत्ते जावतिवलिय भिउडि एव
वयासी) जितशत्रु प्रमुख छो हो ही नृपति मेरी पुत्री-मल्लीकुमारी को
चाहरहे हैं इस प्रकार का समाचार उन दूतों के पास से सुनकर
वह कुम्भक राजा इकदम क्रोधित हो गया-और उसी समय उसकी
त्रिवलियुक्त भ्रुकुटि मस्तक पर चढ़ गई ।

इसी आवेश में उसने उन दूतों से इस प्रकार कहा-(न देमि ण
अहं तुम्भ, मल्ली, विदेह, रायवरकण्ण, ति कट्टु ते, छप्पिदए, असक्का ;

(उवागच्छित्ता पत्तेय २ करयलपरिगृहीय सिरसावत्त, दसनह मत्थए
अजलि कट्टु साण २ राईण वयणाणि निवेदेति))

त्या जघने तेओ अवाओ जुहा जुहा इममा कुलक, राजने णने, डायनी)
अजलि अतावीने अने तेने, भस्तके भूडीने नमस्कार कया अने नमस्कार करीने
तेओओ वाराइरती पोतपोताना राजनी सहेओ तेमने डडी सलणाओ
(तएण से कुम्भ तैसि दूयाण अन्तिए, एयमद्व सोच्चा आसुरुत्ते जावति
लिय भिउडि एव वयासी)

इति शत्रु प्रमुख छो हो राजा मोठी पुत्री मल्लीकुमारीने थाडे छे
आ जतने सदेश हताना मोठी सालगीने भ्रुकुटि राजा ओकदम गुस्से थडी
गया अने त्रिवलियुक्त भ्रुकुटि लमरे चढे थडी गयी

इति आवेशमा राजाओ ते हताने डडी सलणाओ के—

(न देमि ण अहं तुम्भ, मल्ली, विदेहरायवरकण्ण, ति कट्टु ते, छप्पिदए

असंमान्य, च 'अवहारेण' अपहारेण = भवनपश्चाद्भागस्थितलघुद्वारेण 'णिच्छुभान् वेद्' निःसारयति० ।

ततस्तदनन्तर खलु ते जितशत्रुप्रमुखाणा पण्णा राज्ञा दूताः कुम्भकेन राज्ञा असंस्कारिताः असम्मानिता अपहारेण निःसारिता सन्तः यत्रैव स्वकाः २ = आत्मीयाः २, 'जाणवया' जानपदा = देशाः, यत्रैव स्वकानि २ नगराणि यत्रैव स्वकाः २ राजान आसन्, तत्रैवोपागच्छति, उपायुगत्य करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, एवमवादिषुः -- हे स्वामिन् ।

रिय अवहारेण णिच्छुभावेइ) हे दूतो ! मैं अपनी पुत्री विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी तुम्हारे राजाओं के लिये नहीं दूंगा " ऐसा कहकर उसने उन दूतों को न कोई सत्कार किया और न कोई सम्मान ही किया - किन्तु उन्हें भवन के पीछे भाग के छोटे से दरवाजे से बाहर निकाल दिया । (तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुभएण रन्ना असंस्कारिया असम्मानिया अवहारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगार जाणवया जेणेव सयाइ २ णगराड जेणेव सगा २ रायाणो तेणेव उवागच्छति) इस तरह उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं के वे दूत कुम्भक राजा से असत्कृत एवं असमानित होते हुए जब महल के पिछले छोटे से द्वार से बाहर निकाल दिये गये तब वे वहां से प्रस्थित होकर जहां अपना २ जनपद था, वहां अपने २ नगर थे, और उनमें भी जहां अपने २ राजा थे वहां आ गये ।

असंस्कारिय असम्मानिय अवहारेण णिच्छुभावेइ)

" हे दूतो भारी पुत्री विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारी तमारा राजाओं ने आपीश नहि " आ प्रमाणे कहीने राजाओं दूतों ने उधर पणु इपमा सत्कार अने सम्मान न उरता तेओने पोताना भडेलना पाछणना नाना आण्णुथी णडार कही भूक्या

(तएण जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया कुभएण रन्ना असंस्कारिया असम्मानिया अवहारेण णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगार जाणवया जेणेव सयाइ २ णगराड जेणेव सगा २ रायाणो तेणेव उवागच्छति)

आ प्रमाणे उत्तराश्रु प्रमुख राजाओं ने ते दूतो कुलउरान्त वडे असत्कृत अने असमानित थता न्यारे भडेलना पाछला आण्णुथी णडां कही भूक्या वीमा आण्णु थारे तेओ त्यावी रवाना वधने न्या तेमने जनपद (देश) छतो, न्या तेमनु नगर छतु अने तेमा पणु न्या तेमना राजा छता त्या पडिअया

एव खलु त्रय जितशत्रुप्रमुखाणा पण्णा राज्ञा दूताः 'जमगसमग' युगपत्
 = एकस्मिन् काल एव, यत्रैव मिथिला यावत् - तत्रैव गत्वा स्वेषां स्वेषां
 राज्ञा वचनानि निवेदितवन्तः, तदा स कुम्भकः शीघ्र क्रोधाग्निष्टः सन् 'न दास्या
 म्यह मल्ली' मित्युक्त्वाऽस्मानसत्कृत्यासमान्य, अपद्वारेण 'निच्छुभावेइ' निःसा
 रयति=निष्कासयति स्मेत्यर्थः । तत=तस्माद् न ददाति हे स्वामिन् ! कुम्भको
 मल्लीं विदेर राजपरकन्याम् इत्युक्त्वा पडपि दूताः स्वेषां स्वेषां राज्ञामेतदुक्तमर्थं
 निवेदयन्ति कथयन्तिस्म ।

(उवागच्छिता करयलपरि० एव वयासी) वहा आकर उन्होंने उन्हें
 दोनों हाथों की अजलि घनाकर नमस्कार किया (एव खलु सामी !
 अम्हे जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया जमगसमग चेव जेणेव
 मिहिला जाव अवदारेण निच्छुभावेइ) हे स्वामिन् ! हम सब जितशत्रु
 प्रमुख छहों राजाओं के दूत एक ही समय जहा मिथिला नगरी थी-वहां
 पहुँचे-वहा पहुँचकर कुम्भक राजा के दर्शनार्थ उनके राजमहल में गये
 वहा जाकर हमलोगों ने सविनय अपने २ राजाओं के वक्तव्य उन्हें
 कहकर सुनाये सुनते ही वे कुम्भक राजा क्रोध से भर गये-और कहने
 लगे-हम अपनी पुत्री मल्ली कुमारी किसी को नहीं देगे ऐसा कहते
 हुए उन्हो ने वाद में हमलोगो को असत्कृत एव असमानित कर अपने
 महल से उसके पिछले छोटे से दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया ।

(उवागच्छिता करयल परि०" एव वयासी) त्या आवीने तेमले जने
 डाथेनी अजली अतावीने नमन कर्था

(एव खलु सामी ! अम्हे जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण दूया जमग
 समग चेव जेणेव मिहिला जाव अवदारेण निच्छुभावेइ)

अने ठह्यु हे स्वामिन् ! अमे जधा जितशत्रु प्रमुख छये छ राजाओंना
 हूतो अेकज समयमा ज्या मिथिला नगरी छती त्या पहुँच्यो, त्या पहुँ
 चीने कुलकराजना दर्शन माटे अमे राजमहलमा गया त्या पहुँचीने अमे
 बोझोने विनयनी साथे पोतपोताना राजानो सदेश तेमने कही सलजाव्यो
 कुलकराज ते सदेशाओने सलजताज असे थछ गया अने कडेवा लाव्या
 हे हु भारी पुत्री मल्लीकुमारी कोछने य आपीश नछि आम कहेता तेमले
 अमने असत्कृत तेमज असमानित करीने पोताना मडेवना पाछगना नाना
 भारघ्याथी जहार कही भूक्या

ततः खलु ते जितएत्रुप्रमुखाः षडपि राजानस्तेषां दूतानामन्तिके=समीपे, एतमर्थं श्रुत्वा=कर्णगोचरीकृत्य, निशम्य=अर्थमगम्य' आशुस्त्रा'=शीघ्र क्रोधा विष्टा 'अण्णमण्णस्स' अन्योन्यस्य=परस्परस्य दूतसंमेलनं कुर्वन्ति, कृत्वा एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अत्रादिषु -हे देवानुप्रिया ! एव खलु अस्माकं पण्णा राजा दूताः युगपदेव यावदसत्कृत्यासमान्यापद्वारेण 'णिच्छूढा' निक्षिप्ताः= निः

(त ण देहण सामी ! कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न साणं २ राईण एयमद्व निवेदेति) अत हे स्वामिन् ! आप निश्चय समझे-कुभ कराराज आपनी विदेह राजवरकन्या मल्लीकुमारी को नहीं देना है। ऐसा कहकर उन छहों दूतों ने इसी उक्त अर्थ की पुष्टी अपने २ राजाओं के समक्ष की। (तएण से जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायणो तेसिं दूयाण अन्तिए एयमद्व सोच्चा निसम्म असुरत्ता अण्णमण्णस्स दूय सपेसण करेति) इसके बाद उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने दूतों के मुखसे इस बात को सुनकर और उसे समझ कर क्रोधित हो अपने २ दूतों को एक दूसरे राजा के पास भेजा (करित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह उण्ह राईण दूया जमगसमग चेव जाव णिच्छूढा) भेज कर उन दूतों से यह समाचार कहलवाये-हे देवानुप्रियो ! देखो हम छहों राजाओं के दूत एक ही समय कुभक राजा के पास

(त ण देहण सामी ! कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न साणं २ राईण एयमद्व निवेदेति)

येथी हे स्वामिन् ! तमे थोक्कसपणे आ न्णथीतो हे कुलः पोतानी विदेहराजवर उन्हा मल्लीकुमारी आपणे नहि आ प्रभाणे कहीने छये हतोअे पोतपोताना राजाओंनी साथे पोताना मतनी पुष्टि करी

(तएण से जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायणो तेसिं दूयाण अतिए एयमद्व सोच्चा निसम्म आसुरत्ता अण्ण मण्णस्स दूयसपेसण करेति)

त्यारभाह एतशत्रु प्रमुख छये राजाओं हतोना भुजेथी आ प्रभाणे बात सावणीने अने तेने मशेअर समजने शुरूसे वया अने पोतपोताना हतोने अेक भीन राजनी पास भेजव्या

(करित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह राईण दूया जमग समगचेव जाव णिच्छूढा)

तेओअे ते हतोनी साथे आ नतने नदेश भेजव्ये हे हे देवानुप्रियो ! आपणा छये राजाओंना हतो अेकी वमत कुलउराजनी पास गया त्या तेणे

एव खलु वयं जितशत्रुप्रमुखाणां पण्णा राज्ञा दूताः 'जमगसमग' युगपत्
 = एकस्मिन् काल एव, यत्रैव मिथिला यावत् - तत्रैव गत्वा स्वेषां स्वेषां
 राज्ञा वचनानि निवेदितवन्तः, तदा स कुम्भकः शीघ्र क्रोधाविष्टः सन् 'न दास्या
 म्यहं मल्ली' मित्युक्त्वाऽस्मानसत्कृत्यासमान्य, अपद्वारेण 'निच्छुभावेऽ' निःसा
 रयति=निष्कासयति स्मेत्यर्थः । ततः=तस्माद् न ददाति हे स्वामिन् ! कुम्भको
 मल्लीं विदेर राजनरकन्याम् इत्युक्त्वा पडपि दूताः स्वेषां स्वेषां राज्ञामेतमुक्तमर्थं
 निवेदयन्ति कथयन्ति स्म ।

(उवागच्छित्ता करयलपरि० एव वयासी) वहा आकर उन्होंने उन्हें
 दोनों हाथों की अजलि बनाकर नमस्कार किया (एव खलु सामी ।
 अम्हे जियसत्तू पामोकखाण छण्ह राईण दूया जमगसमग चेव जेणेव
 मिहिला जाव अवदारेण निच्छुभावेड) हे स्वामिन् ! हम सब जितशत्रु
 प्रमुख छहों राजाओं के दूत एक ही समय जहा मिथिला नगरी थी-वहा
 पहुँचे-वहा पहुँचकर कुम्भक राजा के दर्शनार्थ उनके राजमहल में गये
 वहा जाकर हमलोगों ने सविनय अपने २ राजाओं के वक्तव्य उन्हें
 कहकर सुनाये सुनते ही वे कुम्भक राजा क्रोध से भर गये-और कहने
 लगे-हम अपनी पुत्री मल्ली कुमारी किसी को नहीं देगे ऐसा कहते
 हुए उन्होंने ने बाद में हमलोगों को असत्कृत एवं असमानित कर अपने
 महल से उसके पिछले छोटे से दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया ।

(उवागच्छित्ता करयल परि०" एव वयासी) त्या आवीने तेमळे अने
 डाथोनी अजली अतावीने नमन कर्था

(एव खलु सामी ! अम्हे जियसत्तू पामोकखाण छण्ह राईण दूया जमग
 समग चेव जेणेव मिहिला जाव अवदारेण निच्छुभावेड)

अने कहु हे स्वामिन् ! अमे अधा जितशत्रु प्रमुख छये छ राजाओंना
 हूतो अेक ज समयमा ज्या मिथिला नगरी छती त्या पडोव्या, त्या पडो
 यीने कुलकराजना दर्शन माटे अमे राजमहलमा गया त्या पडोव्याने अमे
 लोडोव्या विनयनी साथे पोतपोताना राजानो सदेश तेमने कही सलजाव्यो
 कुलकराज ते सदेशाओने सालणता ज गुरसे थड गया अने कडेवा लाव्या
 के हु भारी पुत्री मल्लीकुमारी केअने य आपीश नडि आम कडेता तेमळे
 अमने अमत्कृत तेमज असमानित करीने पोताना मडेलना पाछगना नाना
 भारध्यायी अडार कादी भूक्या

ततः खलु ते जितएत्रुप्रमुखाः षडपि राजानस्तेषां दूतानामन्तिके=समीपे,
एतमर्थं श्रुत्वा=ऋणगोचरीकृत्य निशम्य=अर्थमयमस्य' आशुरुक्ता'=शीघ्र क्रोधा
विष्टा 'अणमणस्स' अन्योन्यस्य=परस्परस्य दूतसंमेलनं कुर्वन्ति, कृत्वा एव=
वक्ष्यमाणप्रकारेण, अत्रादिपु-हे देवानुप्रिया ! एव खलु अस्माकं पण्णा राजा
दूताः युगपदेव यावदसत्कृत्यासमान्यापद्वारेण 'णिच्छूढा' निसिप्ताः= नि०

(त एव देवण सामी ! कुमए मल्लि विदेहराजवरकन्न साण २
राइण एयमद्व निवेदेति) अत हे स्वामिन् ! आप निश्चय समझे-कुभ
कराजा अपनी विदेह राजवरकन्या मल्लीकुमारी को नहीं देता है।
ऐसा कहकर उन छहों दूतों ने इसी उक्त अर्थ की पुष्टी अपने २ राजा
ओं के समक्ष की। (तएण से जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो तेसिं
दूयाण अन्तिए एयमद्व सोच्चा निसम्म असुरुत्ता अणमणस्स दूय
सपेसण करेति) इसके बाद उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने दूतों
के मुखसे इस बात को सुनकर और उसे समझ कर क्रोधित हो अपने
२ दूतों को एक दूसरे राजा के पास भेजा (करित्ता एव वयामी-एव
खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह उण्ह राईण दूया जमगसमगं चेव जाव णि-
च्छूढा) भेज कर उन दूतों से यह समाचार कहलवाये-हे देवानुप्रियों !
देखो हम छहों राजाओं के दूत एक ही समय कुभक राजा के पास

(त एव देवण सामी ! कुमए मल्लि विदेहराजवरकन्न साण २ राईण
एयमद्व निवेदेति)

अथी हे स्वामिन् ! तमे थोक्कसपण्णे आ नल्लीलो उ कुलउ पोतानी
विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारी आपसे नहि आ प्रभाण्णे कहीने छये हतोअ
पोतपोताना राजाओंनी साथे पोताना मतनी पुष्टि करी

(तएण से जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो तेसिं दूयाण अन्तिए एयमद्व
सोच्चा निसम्म असुरुत्ता अणमणस्स दूयसपेसण करेति)

त्यारभाह उतशत्रु प्रमुख छये राजाओं हतोना अथेथी आ प्रभाण्णे
बात सावणीने अने तेने भरोवर समझने शुरूसे थया अने पोतपोताना
हतोने अके भील राजनी पास भोक्क्या

(करित्ता एव वयामी एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह राईण दूया जमग
समगचेव जाव णिच्छूढा)

तेओअ ते हतोनी साथे आ नतने न देश भोक्क्यो उ हे देवानुप्रियो !
आपणा छये राजाओंना हतो अके वणते कुलउराजनी पास गया त्या तेथे

સારિતાઃ । તત્=તસ્માત્ શ્રેયઃ સ્વલુ હે દેવાનુપિયાઃ ! અસ્માક કુમ્ભકાય કુમ્ભક
પરાજયાય 'જત્' યાત્રા=યુદ્ધયાત્રા પ્રતીતુ=પ્રીતુ શ્રેય ઇતિ પૂર્વમ્બન્ધ' । ક્તિ
કૃત્વા=ઇતિ પરામૃશ્ય-વિચાર્ય, પરમ્પરસ્યૈતગ્ધં પ્રતિગૃણન્તિ, સ્વીકૃવન્તિ, ક્તિ
શ્રુત્ય, તે જિતશત્રુપ્રમુખાઃ પડપિ રાજાનઃ સ્નાતાઃ સન્નદ્વાઃ=યુદ્ધોપકરણ-કરણ
ધારણેન સંજીકૃતશરીરાઃ, ઠસ્તિસ્કન્ધરમ્ગતા =ગનોપરિમમારુઢાઃ, 'સકોરદ

પેહુંવે-વહાં! ઉસને હમલોગોં કે દૂતોં કો કોઈં ખી સત્કાર ઓર સન્માન
નહીં કિયોં-કિન્તુ ઉન્હે અપમાનિત કર અપને મહલં કે પિઝલે છોટ
દરવાજેં સે ઘાહિર નિકલવા દિયા-ત, અતઃ-(સેયં સ્વલુ દેવાણુપિયાં !
અમ્હ કુમ્ભગસ્સજત્ત ગેણિત્તણ ત્તિ કદ્દુ અણ્ણમણ્ણસ્સ ણયમદ્ધ પહિ
સુણેતિ, પહિસુણિત્તાં, ણ્ઠાયાં, સણ્ણદ્ધાં હત્થિકધવરગયા સકોરેટમલ્લ
દામેણ ઉત્તેણ ધરિજ્ઞમાણેણ ઉદ્ધુયમાણાહિં સેયવરચામરાહિં મહ્ધાં
દયગયરહપવરજોહકલિયાણ ચાઉરગિણીણ સેણાણ સદ્ધિં સપરિણુડા સન્ધિ
હીંજાવ નિગ્ગચ્છતિ) હમ લોગોં કો અવ યહીં કર્તવ્ય શ્રેયસ્કર હૈં કિં હમ
લોગ કુમ્ભક રાજા કો પરાજિત કરને કે લિયેં ઉન પર ચંદાઈ કરેં દે ।
હમ પ્રકાર કો જરેં ઉન સઘ વીં પરામર્શ હોં છુકોં તવ સબ મેં એક
મતેં હોં હેસ વાતેં કો માન લિયોં । મનેં લેને કે વાદ વેં જિતશત્રુ પ્રમુખ
સઘ હોં રાજાં નહીં થોકર યુદ્ધોપકરણોં સે સુસજ્જિત હોં ગયેં । ઓર
હાથિયોં કે ઇકધો પર આરુઢ હોઝર મહાન ૨ હયો સે-ગુજોં સે રથોં સે

આપણા દૂતોનો સત્કાર કે સન્માન કંઈજ કયું નથી, અને તેમને અપમાનિત
કરીમે પોતાના મહેલના પાછલા નાના બારણેથી બહાર કાઢી મોકલ્યા છે (ત) એથી
(સેયં સ્વલુ દેવાણુપિયાં ! અમ્હ કુમ્ભગસ્સ જત્ત ગેણિત્તણ ત્તિ કદ્દુ અણ્ણ
મણ્ણસ્સ ણયમદ્ધ પહિસુણેતિ, પહિસુણિત્તાં, ણ્ઠાયાં સણ્ણદ્ધાં, હત્થિકધવરગયાં સકો
રેટમલ્લદામેણ ઉત્તેણ ધરિજ્ઞમાણેણ ઉદ્ધુયમાણાહિં સેયવરચામરાહિં મહ્ધાં દય
ગયરહપવરજોહકલિયાણ ચાઉરગિણીણ સેણાણ સદ્ધિં સપરિણુડા સન્ધિ
હીંજાવ નિગ્ગચ્છતિ))

હવે અમારા માટે એક જ કર્તવ્ય, શ્રેયસ્કર લાગે છે કે અમે કુમ્ભક
રાજાને હરાવવા માટે તેમના ઉપર આક્રમણ કરીએ

બ્યારે આ પ્રમાણે બધાએ વિચાર કર્યો ત્યારે સહુએ એકમત થઈને -
આ નિર્ણય-સ્વીકારી લીધો ત્યારપછી જિતશત્રુ પ્રમુખ બધા રાજાઓ સ્નાન
કરીને, યુદ્ધ માટેના બધા સાધનોથી સુસજ્જ થઈ ગયા અને તેઓ બધા

मल्लदामेण 'सकोरुण्टमाल्यदाम्ना=कोरुण्ट पुष्पमाल्यदामयुक्तेन ' छत्तेण धरिज्ज
माणेण उद्धुन्वमाणार्हिं सेयवरचामराहिं' उत्रेण त्रियमाणेन स्वस्वभृत्येन उद्धू
यमानैः श्वेतवरचामरैश्चयुक्ता', 'महयाहयगजरदपरजोदकलियाए' महाहय-
गजरथप्रवरयोधकलितया=महान्तश्च हयगजरथप्रवरयोधाश्चेति समाहारद्वन्द्वः महा-
हयगजरथप्रवरयोध, सेनाङ्गत्वादेकवद्भान', तेन कलितया = युक्तया, अतएव-
चतुरङ्गिण्या सेनया सार्व सपरि कृता 'सन्विड्डीए' सर्वद्वर्था = राजचिह्नादि
रूपया युक्तः यावद्-रवेण = युद्धोत्साहवर्धकतुर्यादि शब्देन स्वकेभ्यः स्वकेभ्यो
नगरेभ्यो यावद् निर्गच्छन्ति, निगत्य, एकतः एकत्र-एकस्मिन् स्थाने मिलन्ति,
मिलित्वा ते जितशत्रुप्रमुखा पडपि राजानो यत्रैव मिथिलानगरी, तत्रैव प्राधारयन्
गमनाय=गन्तु प्रवृत्ता इत्यर्थः ॥ सू० ३२ ॥

प्रवर योधाओंसे कलित चतुरगिणी सेना को साथ लेकर अपने २ नगरों
से बाहिर निकले । हाथी पर जत्र ये राजा जन बैठे हुए थे उस समय
इन के ऊपर छत्र वारी भृत्यो ने कोरटक पुष्प माल्य दाम से युक्त छत्र
ताना हुआ था । चामर ढोरने वाले भृत्यजन उस समय इन के ऊपर
श्वेतवर चामर ढोर रहे थे । ये समस्त राजाजन राज्यार्थ आह्लाद जनक
रूप सर्वद्वि से युक्त होकर ही उत्साह वर्धक तुर्यादि के शब्दों द्वारा
सस्तुत होते हुए-अपने २ नगरों से निकले थे । (निगच्छित्ता एगया
ओ मिलायति-मिलायित्ता, जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए)
निकल कर ये सब एक स्थान पर मिल गये । मिलनेके बाद ये सब जितशत्रु
प्रमुख-छहों राजा फिर वहासे मिथिला नगरीकी ओर चल दिये । सू ३२।

हाथीओंना उपर सवार थधने भोटा घोडाओं, हाथीओं, रथो अने णडाइर
योद्धाओंनी अतुर गिणी सेना साथे लधने घोतपोताना नगरनी णडार नीकल्या
हाथीओं उपर न्यारे णधा रान्तओं णेडा डता ते वणते उत्रधारी लथ्येओं
तेभना उपर डेर टक पुष्पमाल्य दामवाणु छत्र धधुं डतु आभर ढेणनारा
लृत्यणने। ते समये तेभना उपर सङ्केह आभरे। ढेणता डता ते णधा रान्तओं
रान्त्यार्थ आह्लादिइप सर्वद्वियुक्त थधने उत्साह वधारनार तुर्यादिना शण्डो
वडे सस्तुत थता घोतपोताना नगरोथी णडार नीकल्या डता

(निगच्छित्ता एगयाओ मिलायति-मिलायित्ता, जेणेव मिहिला तेणेव
पहारेत्थ गमणाए)

णडार नीकणीने तेओं णधा ओक स्थाने ओकठा थथा ओकठा थधने तेओं णधा
उतशत्रु प्रमुख ओ रान्तओं त्याथा मिथिला नगरी तरङ्ग रवाना थथा ॥सू०३२॥

मूलम्—तएण से कुभए राया इमीसे कहाए लद्धहे समाणे
 बलवाउयं सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव०
 हय जाव सेणं सन्नाहेह जाव पच्चप्पिणइ, तएणं कुंभए
 ण्हाए सण्णद्धे हत्थिखंध० सकोरट० सेयवरचामराहि०
 महया मिहिल मज्झमज्झेणं णिज्जाइ, णिज्जित्ता विदेहं
 जणवय मज्झमज्झेणं जेणेव देस अते तेणेव उवागच्छइ,
 उवागच्छित्ता खधावरनिवेस करेइ, कृत्वा, जियसत्तूपामो-
 क्खा छप्पियरायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ
 तएण ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुंभए
 तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता कुभएण रत्ता संद्धि
 सपलगा यावि होत्था, तएण ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पि
 रायाणो कुभय राय हयमहियपवरवीरघाइयनिविडियचि-
 धद्धयप्पडाग किच्छप्पाणोवगय दिसो दिसि पडिसेहिंति,
 तएणसे कुभए जियसत्तूपामोक्खेहि छहि राईहि हयमहित
 जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अवले अवीरिए जाव
 आधारणिज्जमितिकट्टु सिग्धतुरिय जाव वेइय जेणेव मिहिला-
 तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिहिल अणुपविसित्ता
 मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ, पिहित्ता रोहसजे चिट्ठइ ॥सू०३३॥

टीका—‘ तएण ’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स कुम्भको राजाऽस्या

‘तएण से कुभए राया ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण इसके बाद (सें कुभए इमीसे कहाए लद्धहे समाणे बल

तएण से कुभएराया इत्यादि ॥

टीकार्थ—(त एण) त्थार ५४ी (से कुभए इमीसे कहाए लद्धहे समाणे बल

कथाया लब्धार्थः=ज्ञातार्थः। मन् 'वलयाउय' वलन्यापृत=सैन्यव्यापारपरायण=सैन्यनायकमित्यर्थः, शब्दयति, शब्दयित्वा एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत् भो देवानुप्रिय । क्षिप्रमेव 'हयजाव सेण' हय०यावत्-सैन्य-हयगजरथप्रवरयोध-कलित चतुरङ्गयुक्त सैन्य 'सन्नाहेह' सनाहय=सन्नद्ध कुरु-सज्जीकुर्वित्यर्थः । यावत् प्रत्यर्पयति, ततोऽसौ सेनापति सैन्य सज्जीकृत्य, कुम्भक राजान निवेदयति-हे स्वामिन् ! सैन्यमस्माभिः सन्नद्धीकृतमिति । ततस्तदनन्तरं स कुम्भको राजा स्नातः सन्नद्धः = युद्धोपकरणशस्त्रास्त्रकवचादि धारणेन सज्जीकृतशरीरः हस्ति-स्कन्धवरगतं सकोरण्टमाल्यदाम्ना=कोरण्टपुष्परचितमालायुक्तेन उगेण स्वभृत्येन

वाउय सदावेह) कुम्भक राजा को जय यह पता चला-तब उस ने अपने सेना नायकको बुलाया-(महावित्ता एव वयासी) बुलाकर उससे ऐसा कहा-(खिप्पामेव० हय गय जाव सेण सन्नाहेह जाव पच्चप्पिणह) भो देवानुप्रिय ! तुम जल्दी से जल्दी हय-गज-रथ एव प्रवर योधाओं से युक्त चतुरङ्गिणी सेना को सजाओ । और इस की हमें पीछे आकर खबर दो-सेना नायक ने ऐसा ही किया सेना सजा कर राजा को खबर दी कि हे स्वामिन् ! हमने आप की आज्ञानुसार सैन्य सज्जित कर दिया है । (तण्ण कुम्भए ण्हाए सन्नद्ध हत्थि खध० सकोरट० सेयवर चामराहिं महया मिहिल मज्झ मज्झेण णिज्जाह) इस के बाद कुम्भक राजा ने स्नान कर अपने शरीर को युद्धोपकरणों से-शस्त्र अस्त्र एव कवचादि के धारण से-सज्जित किया । बाद में हाथों के स्कन्ध पर

वाउय सदावेह) कुलक राजाने न्यारे आवातनी जलु थअ त्यागे तेले पोताना सेनापतिने बोलाव्यो (महावित्ता एव वयासी) बोलावीने तेने कहु—

(खिप्पामेव० हय गय जाव सेण सन्नाहेह जाव पच्चप्पिणह)

हे देवानुप्रियो ! तमे सत्तरे घोडा, हाथी, रथ अने णडाहूर योद्धाओं-वाणी चतुरङ्गिणी सेना तैयार करो अने अभने णणर आपो सेनापतिओ पोतानु काम पुइ कथुं, अने राजाने सूचना आपी के हे स्वामिन् ! तमारी आज्ञा प्रमाणे अमे सेना तैयार करी दीधी छे

(तण्ण कुम्भए ण्हाए सन्नद्ध हत्थि खध० सकोरट० सेयवरचामराहिं महया मिहिल, मज्झ मज्झेण णिज्जाह)

त्यारभाह कुलक राजाने स्नान कथुं अने पछी पोताना शरीरने युद्धना साधनोथी सुसज्ज कथुं ओटले के राजाने शस्त्र, अस्त्र, ज्वथ वगेरे धारण कथी तेओ हाथीनी उपर सवार थया, राजाने हाथा उपर सवार थयेला

मूलम्—तएण से कुभए राया इमीसे कहाए लद्धहे समाणे
 बलवाउयं सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव०
 हय जाव सेणणं सन्नाहेह जाव पच्चप्पिणइ, तएण कुंभए
 णहाए सणणद्धे हत्थिग्वध० सकोरट० सेयवरचामराहि०
 महया मिहिल मज्झमज्झेणं णिजाड, णिजित्ता विदेहं
 जणवय मज्झमज्झेणं जेणेव देस अते तेणेव उवागच्छइ,
 उवागच्छित्ता खधावरनिवेस करेइ, कृत्वा, जियसत्तूपामो-
 क्खा छप्पियरायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ
 तएण ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पिय रायाणो जेणेव कुभए
 तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता कुभएण रत्ता सद्धि
 सपलग्गा यावि होत्था, तएण ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पि
 रायाणो कुभय राय हयमहियपवरवीरघाइयनिविडियचि-
 धद्धयप्पडाग किच्छप्पाणोवगय दिसो दिसि पडिसेहिंति,
 तएणसे कुभए जियसत्तूपामोक्खेहि छहि राईहि हयमहित
 जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अवले अवीरिए जाव
 आधारणिज्जमितिकट्टु सिग्धतुरिय जाववेइय जेणेव मिहिला-
 तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिहिल अणुपविसित्ता
 मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ, पिहित्ता रोहसजे चिट्ठइ ॥सू०३३॥

टीका—‘तएण’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स कुम्भको राजाऽस्या

‘तएण से कुभए राया’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण इसके बाद (सें कुभए इमीसे कहाए लद्धहे समाणे बल

तएण से कुभएराया इत्यादि ॥

टीकार्थ—(त एण) त्थार ५४१ (से कुभए इमीसे कहाए लद्धहे समाणे बल

खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः पडपि राजानो यत्रैव कुम्भकस्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य
कुम्भकेन राज्ञा सार्धं 'सपलग्ना' सपलग्नाः—युद्धं कर्तुं प्रवृत्ताश्चाप्यभवन् । तत
स्तदनन्तरं खलु जितशत्रुप्रमुखाः पडपि राजानं कुम्भकं राजानं 'हयमहिय-
पवरवीरघाड्यनिविडियचिधद्वयच्छत्तपडाग' हतमथितप्रवरवीरघातित—निपतित
चिह्नध्वजच्छत्रपताक—इताः=मारिताः, मथिताः=विलोडिता—ताडिता तथा
घातिता घातम् आघातं व्यथा प्राप्ताः प्रवरवीराः=महाभटाः, यस्य स हतमथित
प्रवरवीरघातितः, आपत्त्याद् घातितशब्दस्य परप्रयोगः, निपातिताश्चिह्नध्वज
ताका यस्य स निपतितचिह्नध्वजच्छत्रपताकः, तत कर्मधारयः, तमेवभूतं नष्टसैन्य
ध्वजपताकमित्यर्थं 'किच्छप्पाणोवगय' कृच्छ्रपाणोपगत—कृच्छ्रे—कष्टे, प्राणा

उन छहों राजाओं की प्रतीक्षा करते हुए वे वहींपर युद्धके लिये कटिबद्ध
होकर ठहर गये । (तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव
कुभए तेणेव उवागच्छति) इतने में वे जितशत्रुप्रमुख छहों राजा जहां
वे कुम्भक राजा पहुँचे हुए थे—वहां आ गये ।

(उवागच्छित्ता कुभएण रन्ना सद्वि सपलग्ना यावि होत्था) आते ही
उन लोगोंने कुम्भकराजा के साथ युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया । (तएण
ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कुभय राय हयमहियपवरवीर
घाड्यनिविडियचिधद्वयप्पडाग किच्छप्पाणोवगय दिसो दिमि पडि से
हिंति) युद्ध में उन जितशत्रुप्रमुख छहों राजाओं ने कुम्भकराजा के
कितनेक वीरों को जान से मार डाला, कितनेक वीरों को बुरी तरह
पीटा, और कितनेक वीरों को घायल कर दिया । तथा राजचिह्न रूप
ध्वज—पताका एवं छत्र उसके जमीन पर गिरादिये । इस तरह उसके

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छति)
એટલામા તેઓ છએ છતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓ ન્યા કુભક રાજા હતા ત્યા પહોચ્યા

(ઉવાગચ્છિત્તા કુમ્ભણ રન્ના સદ્ધિ સપલગ્ના યાવિ હોત્યા) અને તેઓએ
તરત જ યુદ્ધ શરૂ કરી દીધું

(તएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कुभय राय हयमहिय पवरवीर
घाड्य निविडिय चिधद्वयप्पडाग किच्छप्पाणोवगय दिसोदिमि पडिसेहिंति)

યુદ્ધમા તેઓ જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ કુભક રાજાના કેટલાક
વીરોને જાનથી મારી નાખ્યા, કેટલાક વીરોને ભયકર રીતે ટીપી નાખ્યા,
અને કેટલાક વીરોને જખમી બનાવી દીધા તેમજ ગજ ચિહ્ન રૂપ ધ્વજ—

घ्रियमाणेन युक्तः, तथा-उद्धूयमानैः=वीज्यमानैः श्वतवरचामरैर्युक्तः तथा-महा
हयगजरथादियुक्तया चतुरङ्गिण्या सेनया सपरित्रत, सर्वद्वर्षा सपन्नः तूरीमेया
दिवाद्यमहानादेन मिथिलानगर्या मध्यमयेन 'णिज्जाह' निर्याति=निर्गच्छति।
निर्याय विदेहजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव देशान्तः स्वदेशस्य सीमा वर्तते,
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'खधावारनिवेश' सन्धावारनिवेश=सन्धावारस्य
शिविरस्य 'छावनी' इति भाषाप्रसिद्धस्य निवेश-स्थापन, कुर्वन्ति। कृत्वा स
कुम्भको राजा जितशत्रुप्रमुखान् पडपि राज्ञः 'पडिवाले माणे' प्रतीक्षमाणः, युद्धस-
ज्जः युद्धाय सज्ज शस्त्रास्त्रकवचवन्नेन युद्धार्थमुद्यतः सन्प्रतितिष्ठति। ततस्तदनन्तर

विराजमान हो गये। उन के बैठते ही। उत्र धारियों ने उन के ऊपर
कोरट पुष्पो की माला से विराजित उत्र धारण किया चमर ढोर ने
घालों ने उन के ऊपर श्वेत चमर ढोर ना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार
महागज, हय, रथादि से युक्त चतुरङ्गिणी सेना से घिरे हुए अपनी
पूर्ण तैयारीके साथ मिथिला नगरी के बीचसे होकर निकले। (णिगच्छि-
त्ता विदेह जनपद मज्झ मज्झेण जेणेव देम अते तेणेव उवागच्छइ)
निकल कर विदेह जनपद के बीच से होकर जहा अपने देश की सीमा
थी वहा पहुँचे।

(उवागच्छित्ता खधावारनिवेश करेइ) वहा पहुँच कर उन्होंने वहीं
अपनी छावनी स्थापित कर दी-(करित्ता जियसत्तू पामोक्खा छप्पिय
रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ) बादमें जितशत्रु प्रमुख

नेछने छत्रधारीओओ केरट पुष्पोनी भाणाथी शोभतु उत्र धर्यु आभरढोणनार
लृथ्येओ आभरे ढोणवानु शइ कथु आ नीते महागज हय रथ वगेरे तेभज
चतुरङ्गिणी सेना युक्त थछने पोतानि पूरी तैयारी साथे मिथिला नगरीनी
वन्नेना राजमार्ग उपरथी ओडार नीडण्वा

(णिगच्छित्ता विदेह जनपद मज्झ मज्झेण जेणेव देम अते तेणेव उवागच्छइ)
नीडणीने विदेह जनपदनी वन्ने थछने न्वा पोताना देशनी छट्ट छती त्या पडोअ्या
उवागच्छित्ता खधावारनिवेश करेइ) त्या पडोअ्याने तेओओ त्या न्सेनानी छावणी
नाथी (करित्ता जियसत्तू पामोक्खा छप्पिय रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे
पडिचिट्ठइ)

त्यारणाह जितशत्रु प्रमुख छओ राजओनी प्रतीक्षा करता तेओ त्याज
युद्धने भाटे कुम्भर कसीने रोकिया

खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः पडपि राजानो यत्रैव कुम्भकरस्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य कुम्भकेन राज्ञा सार्धं 'सपलङ्गा' सप्रलङ्गाः—युद्धं कर्तुं प्रवृत्ताश्चाप्यभवन् । ततस्तदनन्तरं खलु जितशत्रुप्रमुखाः पडपि राजानः कुम्भक राजानं 'हयमहिष-पवरवीरघाड्यनिविडियचिधद्वयच्छत्रपडाग' हतमथितप्रवरवीरघातित—निपतितचिह्नध्वजच्छत्रपताक—हताः=मारिताः, मथिताः=विलोडिता—ताडिताः, तथा घातिता घातम् आपात व्यथा प्राप्ताः प्रवरवीराः=महाभटा, यस्य स हतमथितप्रवरवीरघातितः, आपत्त्याद् घातितशब्दस्य परप्रयोगः, निपातिताश्चिह्नध्वजपताका यस्य स निपतितचिह्नध्वजच्छत्रपताकः, तत कर्मप्रारयः, तमेवभूत नष्टसैन्यध्वजपताकमित्यर्थ 'किच्छुष्पाणोवगय' कृच्छ्रुष्पाणोपगत—कृच्छ्रे—कष्टे, प्राणा

उन छहों राजाओ कीप्रतीक्षा करते हुए वे वहाँपर युद्धके लिये कटिबद्ध होकर ठहरगये । (तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छति) इतने में वे जितशत्रुप्रमुख छहों राजा जहाँ वे कुम्भक राजा पहुँचे हुए थे—वहाँ आ गये ।

(उवागच्छित्ता कुभएण रन्ना सद्धि सपलङ्गा यावि होत्था) आते ही उन लोगोंने कुम्भकराजा के साथ युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया । (तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कुभय राय हयमहिषपवरवीर घाड्यनिविडियचिधद्वयप्पडाग किच्छुष्पाणोवगय दिसो दिसिं पडि से हिंति) युद्ध में उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओ ने कुम्भकराजा के कितनेक वीरो को जान से मार डाला, कितनेक वीरों को बुरी तरह पीटा, और कितनेक वीरों को घायल कर दिया । तथा राजचिह्न रूप ध्वज—पताका एवं छत्र उसके जमीन पर गिरादिये । इस तरह उसके

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छति)
ओटलाभा तेओ छओ छतशत्रु प्रमुष्ण राजओ न्या डुलकराणा हता त्या पडोअ्या

(उवागच्छित्ता कुभएण रन्ना सद्धि सपलङ्गा यावि होत्था) अने तेओओ
तश्च न युद्धं शङ्कं करो दीधु

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कुभय राय हयमहिष पवरवीर घाड्य निविडिय चिधद्वयप्पडाग किच्छुष्पाणोवगय दिसोदिसिं पडिसेहिंति)

युद्धमा तेओ जितशत्रु प्रमुष्ण छओ राजओओ डुलक रज्जना डेटलाक
वीरोने ननथी मारी नाप्पा, डेटलाक वीरोने लयक रीते दीपी नाप्पा,
अने डेटलाक वीरोने नप्पमी पनावी दीधा तेमज्ज राज त्रिह ३५ ध्वज—

प्रियमाणेन युक्तः, तथा-उद्धूयमानैः=शीज्यमानैः श्वेतवरचापैर्युक्त' तथा-महा
हयगजरथादियुक्तया चतुरङ्गिण्या सेनया सपरित्रत, सर्वद्रव्या सपन्नः तूरीमेवा
दिवाधमहानादेन मिथिलानगर्या मध्यमयेन 'णिज्जाह' निर्याति=निर्गच्छति ।
निर्याय विदेहजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव देशान्तः स्वदेशस्य सीमा वर्तते,
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'खधावारनिवेश' स्वन्धावारनिवेश=स्कन्धावारस्य
शिविरस्य 'छावनी' इति भाषाप्रसिद्धस्य निवेश-स्थापन, कुर्वन्ति । कृत्वा स
कुम्भको राजा जितशत्रुप्रमुखान् पडपि राज्ञः 'पडिवाले माणे' प्रतीक्षमाणः, युद्धस-
ज्जः युद्धाय सज्ज शस्त्रास्त्रकवचवन्नेन युद्धार्थमुद्यतः सन् प्रतितिष्ठति । ततस्तदनन्तर

विराजमान हो गये । उन के बैठते ही । उन्न धारियों ने उन के ऊपर
कोरट पुष्पो की माला से विराजित उन्न धारण किया चमर ढोर ने
घालों ने उन के ऊपर श्वेत चमर ढोर ना प्रारम्भ कर दिया । इस प्रकार
महागज, हय, रथादि से युक्त चतुरङ्गिणी सेना से घिरे हुए अपनी
पूर्ण तैयारीके साथ मिथिला नगरी के बीचसे होकर निकले । (णिगच्छि
त्ता विदेह जणवय मज्झ मज्झेण जेणेव देम अते तेणेव उवागच्छइ)
निकल कर विदेह जनपद के बीच से होकर जहा अपने देश की सीमा
थी वहा पहुँचे ।

(उवागच्छित्ता खधावारनिवेश करेइ) वहा पहुँच कर उन्होंने वहीं
अपनी छावनी स्थापित कर दो- (करित्ता जियसत्तू पामोक्खा छप्पिय
रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ) बादमें जितशत्रु प्रमुख

नेधने छत्रधारीओओ केरट पुष्पोनी भाजाथी शोअतु छत्र धरु आभरढाणनार
भृत्योओ आभरो ढाणवानु शइ कथु आ रीते मडागज हय रथ वगेरे तेमज
चतुरङ्गिणी सेना युक्त थधने पोतानि पूरी तैयारी साथे मिथिला नगरीनी
वन्धेना राजभार्ग उपरथी गडार नीकण्या

(णिगच्छित्ता विदेह जणवय मज्झ मज्झेण जेणेव देम अते तेणेव उवागच्छइ)
नीकणीने विदेह जनपदनी वन्धे थधने न्या पोताना देशनी डड डती त्या पडोअथा
उवागच्छित्ता खधावारनिवेश करेइ) त्या पडोअथीने तेओओ त्या नसेनानी छावणी
नाथी (करित्ता जियसत्तू पामोक्खा छप्पिय रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे
पडिचिट्ठइ)

त्यारणाह जितशत्रु प्रमुख छओ राजओानी प्रतीक्षा करता तेओ त्याज
युद्धने भाटे कुम्भर कुसीने देखाया

खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः पडपि राजानो यत्रैव कुम्भकरस्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य
कुम्भकेन राज्ञा सार्धं 'सपलङ्गा' 'समलङ्गा'—युद्धं कर्तुं प्रवृत्ताश्चाप्यभवन् । तत
स्तदनन्तरं खलु जितशत्रुप्रमुखाः पडपि राजानं कुम्भकं राजानं 'हयमहिय-
पवरवीरघाइयनिविडियचिधद्वयच्छत्तपडाग' 'हतमथितप्रवरवीरघातित—निपतित
चिह्नध्वजच्छत्रपताक—हताः=मारिताः, मथिताः=विलोडिता.—ताडिताः, तथा
घातिता घातम् आपातं व्यथा प्राप्ताः प्रवरवीराः=महाभटाः, यस्य स हतमथित
प्रवरवीरघातितः, आपत्त्याद् घातितशब्दस्य परप्रयोगः, निपातिताश्चिह्नं चक्रप
ताका यस्य स निपतितचिह्नध्वजच्छत्रपताकः, तत कर्मधारयः, तमेवभूतं नष्टसैन्य
ध्वजपताकमित्यर्थं 'किञ्छप्पाणोवगय' कुच्छप्पाणोपगत—कुच्छे—कष्टे, प्राणा

उन छहों राजाओं की प्रतीक्षा करते हुए वे वहीं पर युद्ध के लिये कटिबद्ध
होकर ठहर गये । (तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव
कुभए तेणेव उवागच्छति) इतने में वे जितशत्रु प्रमुख छहों राजा जहां
वे कुम्भक राजा पहुँचे हुए थे—वहां आ गये ।

(उवागच्छित्ता कुभएण रन्ना सद्धि सपलङ्गा यावि होत्था) आते ही
उन लोगों ने कुम्भकराजा के साथ युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया । (तएण
ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कुभय राय हयमहियपवरवीर
घाइयनिविडियचिधद्वयप्पडाग किञ्छप्पाणोवगय दिसो दिसिं पडि से
हिंति) युद्ध में उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने कुम्भकराजा के
कितनेक वीरों को जान से मार डाला, कितनेक वीरों को बुरी तरह
पीटा, और कितनेक वीरों को घायल कर दिया । तथा राजचिह्न रूप
ध्वज—पताका एवं छत्र उसके जमीन पर गिरा दिये । इस तरह उसके

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छति)
ओटलाभा तेओ छओ जितशत्रु प्रमुखा राजाओ जया कुम्भकराज उता त्या पडोअथा

(उवागच्छित्ता कुभएण रन्ना सद्धि सपलङ्गा यावि होत्था) अने तेओअओ
तएत न युद्धं शङ्कं करो दीधु

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कुभय राय हयमहिय पवरवीर
घाइय निविडिय चिधद्वयप्पडाग किञ्छप्पाणोवगय दिसोदिसिं पडिसेहिंति)

युद्धमा तेओ जितशत्रु प्रमुखा छओ राजाओअओ कुम्भकं राजानां ओटलाक
वीराने जनथी मारी नाअथा, ओटलाक वीराने लयकर रीते दीपी नाअथा,
अने ओटलाक वीराने जणभी जनावा दीधा तेमज गज ग्रिह इय ध्वज—

ઉપગતા યસ્ય સ કુચ્છપ્રાણોપગતત્ત પ્રાણસઠ્ઠાપન્નમ્ ' દિશ દિશ ' = એકમ્બા
 દિશ:-અપરા દિશ-' પડિસેદ્દેતિ ' પ્રતિપેધયતિ=નિશ્ચયન્તિ તતસ્તદનન્તર સ્થુ
 સ કુમ્ભકો રાજા જિતશત્રુપ્રમુલૈઃ પદ્મભીરાજમિર્દતમથિત-યાત્ પ્રવરવીરધાત્તિ
 ચિહ્નધ્વજછત્રપતાકઃ કુચ્છપ્રાણોપગતઃ પ્રતિપિદ્ધ તન્ અસ્થામા=આત્મવલરહિતઃ,
 અવલઃ=સૈન્યરહિતઃ અત એવ ' અગ્રીરિણ ' = અગ્રીર્ય, = ઉત્સાહરહિત. । યાત્-
 'આધારણિજ્જ' અધારણીયમ્-આત્માધાર્યતે સ્થાપ્યતે યત્ર તદ્ ધારણીય, ન ધારણી
 યમિતિ વિગ્રહઃ, અધારણીય પરવલમ્-અત્ર શત્રુસૈન્યે મમાત્મધારણમશક્ત્વમિત્યર્થઃ ।
 હતિકૃત્વા-એવ વિચાર્ય, શીઘ્ર દ્વરિત યાત્ ચલિત વેગિત યત્રૈવ મિથિલા તત્રૈવો

પ્રાણ ઘટુત અધિક સકટ મે પડ ગયે । વહ વહા સે દૂસરી તરફ ભાગના
 મીં વાહતા થા-તો મીં ઉન્હોં ને ઉસે દૂસરી ઓર માગને નહીં દિયા ।
 (તણ્ણ સે કુમ્ભજિયસત્તૂ પામોમ્હેહિં છહિં રાઈહિં હયમહિતં જાવ
 પડિસેહિણ સમાણે અત્થામે અવલે અગ્રીરિણ જાવ આધારણિજ્જમિત્તિકદ્ધુ
 સિગ્ધ તુરિય જાવ વેહય જેણેવ મિહિલા તેણેવ ઉવાગચ્છહ) હસ તરફ
 જિતશત્રુ આદિ છહોં રાજાઓ સે હત મથિત તથા ધાતિત પ્રવરવીરવાલા
 ઓર નિપાતિત ચિહ્ન ધ્વજ પતાકા વાલા વહ કુમ્ભક રાજા જય સંકટ
 યુક્ત પ્રાણોવાલા વન ગયા ઓર યુદ્ધભૂમિ સે દૂસરી ઓર ભાગને કે
 લિયે અસમર્થ હો ગયા તથા આત્મવલ ઓર સૈન્યવલ સે રહિત બના
 હુઆ વહ ઉત્સાહ રહિત હો ગયા । એવ પરવલ કો અજેય માન કર
 વહા સે શીઘ્ર હી ત્વરા યુક્ત, વેગયુક્ત ચાલ સે જશ મિથિલા નગર મીં
 ઉસ તરફ આયા ।

પતાકા-અને છત્રને જમીન ઉપર નાખી દીધા આ રીતે તેના પ્રાણુ આકૃતમા
 ફસાઈ ગયા ત્યાથી તે ખીણ તરફ નાસી જવાની તૈયારી કરતા હતા ત્યારે
 હતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓએ તેને નાસી જવા દીધો નહિ

(તણ્ણ સે કુમ્ભજિયસત્તૂ પામોમ્હેહિં છહિં રાઈહિં હયમહિતં જાવ પડિ
 સેહિણ સમાણે અત્થામે અવલે અગ્રીરિણ જાવ આધારણિજ્જમિત્તિકદ્ધુ સિગ્ધ
 તુરિય જાવ વેહય જેણેવ મિહિલા તેણેવ ઉવાગચ્છહ)

આ રીતે હતશત્રુ વગેરે છએ રાજાઓથી હતા, મથિત તેમજ ધાતિત
 ચોદ્ધાઓવાળા અને નિપાતિત ચિહ્ન ધ્વજ પતાકાવાળા તે કુલક રાજાના પ્રાણુ
 પણ જ્યારે આકૃતમા ફસાઈ ગયા અને રણભૂમિમાથી નાસી જવાની પણ તક
 શુભાવી બેઠા ત્યારે આત્મબળ અને સૈન્યબળ વગર બનેલા તેઓ સાત નિરૂ
 ત્સાહી થઈ ગયા આખરે તેઓએ શત્રુપક્ષને અજેય સમજીને એકદમ જલ્દી
 વેગયુક્ત ઝડપભેર ચાલથી જ્યાં મિથિલા નગરી હતી તે તરફ ર... થયા

पागच्छति उपागत्य मिथिलामनुप्रविशति, अनुप्रविश्य मिथिलाया द्वाराणि
' पिहेइ ' पिदधाति=आवृणोति । पिधाय ' रोहसज्जे ' रोधमज्ज=रोधेन शत्रु-
भयाद् गमनागमनमार्गमवरुध्य सज्ज=रक्षां कुर्वन् तिष्ठति ॥ सू० ३३ ॥

मूलम्-तएण ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव
मिहिला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता मिहिल रायहाणि
णिस्सचार णिरुच्चार सव्वओ समता ओरुभित्ताणं चिट्ठति,
तएण से कुभए राया मिहिल रायहाणि रुद्ध जाणित्ता अव्व-
तरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए तेसि जियसत्तूपामो-
क्खाण छण्ह राईण अतराणिय छिट्ठाणिय विरहाणिय मम्मणिय य
अलभमाणेवहूहि आएहि य उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइया
ए हि य कम्मयाहि य परिणामियाहि य बुद्धीहि परिणामेमाणे
किञ्चि आय वा उवाय वा अलभमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झिया-
यइ । इम च णं मल्लीं विदेहरायवरकन्ना पहाया जाव वहूहि
खुज्जाहि सपरिवुडा जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
कुभगस्स पायग्गहण करेइ । तएण कुभए मल्लि विदेहरायवर-
कन्न णो आढाई नो परियाणाइ तुसिणीए सचिट्ठइ । तएण

वहा आते ही वह मिथिला नगरी मे प्रविष्ट हो गया । (अणुपवि-
सित्ता मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ) प्रविष्ट
होकर उसने मिथिला के द्वारों को बंद करवा दिया और शत्रु के भय
से आने जाने के मार्ग को रोक कर अपनी रक्षा करने में तल्लीन हो
गया ॥ सूत्र ३३ ॥

त्या आवता न मिथिला नगरीमा तेज्जो प्रविष्ट थया
(अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ)
प्रवेशीने तेमल्ले मिथिलाना दरवाज्जोने ण ध उवापी दीधा अने शत्रुनी
भीडथो आववा जवाना भागेने पणु शैलीने पोतानी रक्षा भाटे तेज्जो तत्पर
थई गया ॥ सूत्र " ३३ "

ઉપગતા यस્ય સ કૃત્તપ્રાણોપગતન્ત પ્રાણસકટાપન્નમ્ ' દિશ દિશ '—એકસા
 દિશ:-અપરા દિશ—' પડિસેહેતિ ' પ્રતિપેધયતિ=નિવારયન્તિ તતસ્તદનન્તર સ્થ
 સ કુમ્ભકો રાજા જિતશત્રુપ્રમુલૈઃ પદ્મીરાજભિર્હતમથિત-યાવત્ પ્રવરવીરવાલિ
 ચિહ્નધ્વજછત્રપતાકઃ કૃત્તપ્રાણોપગતઃ પ્રતિપિદ્ધ રાન્ અસ્યામા=આત્મચન્દ્રરહિતઃ,
 અવલઃ=સૈન્યરહિતઃ અત એવ ' અવીરિણ '—અવીર્યઃ=ઉત્સાહરહિતઃ । યાવત્—
 'આધારણિજ્જ' અધારણીયમ્—આત્માધાર્યતે સ્થાપ્યતે યત્ર તદ્ધ ધારણીય, ન ધારણી
 યમિતિ વિગ્રહઃ, અધારણીય પરવલમ્—અત્ર શત્રુસૈન્યે મમાત્મધારણમશક્ત્વમિત્યર્થઃ ।
 હતિકૃત્વા—એવ વિવાર્ય, શીઘ્ર સ્પરિત યાવત્ ચલિત વેગિત યત્રૈવ મિથિલા તર્જેવો

પ્રાણ યદ્વુત અધિક સકટ મેં પડ ગયે । વહ વહા સે દૂસરી તરફ માગના
 ખી ટાહતા થા-તો ખી ડન્હોં ને ઉસે દૂસરી ઓર માગને નહીં દિયા ।
 (તણ સે કુમ્ભ જિયસત્તૂ પામાઝ્ઘેહિં છહિં રાઢહિં હ્યમહિતઃ જાવ
 પડિસેહિણ સમાણે અત્યામે અવલે અવીરિણ જાવ આધારણિજ્જમિત્તિકદ્ધ
 સિગ્ધ તુરિય જાવ વેહ્ય જેણેવ મિહિલા તેણેવ ઉવાગચ્છહ) હસ તરફ
 જિતશત્રુ આદિ છહોં રાજાઓ સે હત મથિત તથા ધાતિત પ્રવરવીરવાલા
 ઓર નિપાતિત ચિહ્ન ધ્વજ પતાકા વાલા વહ કુમ્ભક રાજા જય સંકટ
 યુક્ત પ્રાણોવાલા વન ગયા ઓર યુદ્ધભૂમિ સે દૂસરી ઓર માગને કે
 લિયે અસમર્થ હો ગયા તવ આત્મવલ ઓર સૈન્યવલ સે રહિત બના
 હુઆ વહ ઉત્સાહ રહિત હો ગયા । એવ પરવલ કો અજેય માન કર
 વહાં સે શીઘ્ર હી ત્વરા યુક્ત, વેગયુક્ત ધ્વાલ સે જશ મિથિલા નગર થી
 ઉસ તરફ આયા ।

પતાકા-અને છત્રને જમીન ઉપર નાખી દીધા આ રીતે તેના પ્રાણ આક્રમ
 દ્વસાઈ ગયા ત્યાથી તે ખીજી તરફ નાસી જવાની તૈયારી કરતા હતા ત્યારે
 જિતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓએ તેને નાસી જવા દીધો નહિ

(તણ સે કુમ્ભ જિયસત્તૂ પામાઝ્ઘેહિં છહિં રાઢહિં હ્યમહિતઃ જાવ પડિ
 સેહિણ સમાણે અત્યામે અવલે અવીરિણ જાવ આધારણિજ્જમિત્તિકદ્ધ સિગ્ધ
 તુરિય જાવ વેહ્ય જેણેવ મિહિલા તેણેવ ઉવાગચ્છહ)

આ રીતે જિતશત્રુ વગેરે છએ રાજાઓથી હતા, મથિત તેમજ ધાતિત
 ચોદ્ધાઓવાળા અને નિપાતિત ચિહ્ન ધ્વજ પતાકાવાળા તે કુલક રાજાના પ્રાણ
 પણ જ્યારે આક્રમ દ્વસાઈ ગયા અને રણભૂમિમાથી નાસી જવાની પણ તક
 ગુમાવી બેઠા ત્યારે આત્મવળ અને સૈન્યવળ વગર બનેલા તેએ સાત નિર
 સ્વાહી થઈ ગયા આખરે તેઓએ શત્રુપક્ષને અજેય સમજીને એકદમ જલ્દી
 વેગયુક્ત અડપસેર ચાલથી જ્યા મિથિલા નગરી હતી તે તરફ રવાના થયા

पागच्छति उपागत्य मिथिलामनुप्रविशति, अनुप्रविश्य मिथिलाया द्वाराणि
' पिहेइ ' पिदवाति=आवृणोति । पिधाय ' रोहसज्जे ' रोधमज्ज=रोधेन शत्रु-
भयाद् गमनागमनमार्गमवरुध्य सज्ज=रक्षा कुर्वन् तिष्ठति ॥ सू० ३३ ॥

मूलम्-तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव
मिहिला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता मिहिल रायहाणि
णिस्सचारं णिरुच्चार सव्वओ समता ओरुभित्ताणं चिट्ठति,
तएण से कुभए राया मिहिल रायहाणि रुद्ध जाणित्ता अवभ-
तरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए तेसि जियसत्तूपामो-
क्खाण छण्हं राईणं अतराणिय छिद्दाणिय विरहाणिय मम्मणि य
अलभमाणेवहूहि आएहि य उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइया
ए हि य कम्मयाहि य परिणामियाहिय बुद्धोहि परिणामेमाणे
किचि आय वा उवाय वा अलभमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झिया-
यइ । इम च णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना पहाया जाव वहूहि
खुज्जाहि सपरिवुडा जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
कुभगस्स पायग्गहण करेइ । तएण कुभए मल्लि विदेहरायवर-
कन्न णो आढाई नो परियाणाइ तुसिणीए सचिट्ठइ । तएण

वहा आते ही वह मिथिला नगरी मे प्रविष्ट हो गया । (अणुपवि-
सित्ता मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ) प्रविष्ट
होकर उसने मिथिला के द्वारों को बंद करवा दिया और शत्रु के भय
से आने जाने के मार्ग को रोक कर अपनी रक्षा करने में तल्लीन हो
गया ॥ सूत्र ३३ ॥

त्या आवता न मिथिला नगरीमा तेओ प्रविष्ट थया
(अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ)
प्रवेशीने तेभए मिथिलाना दरवाजाओने णध उरावी दीधा अने शत्रुनी
भीकथो आववा जवाना भागेने पणु रोकने पोतानी रक्षा भाटे तेओ तत्पर
थई गया ॥ सूत्र " ३३ "

ઉપગતા यस્ય સ કુચ્છપ્રાણોપગતસ્ત પ્રાણસમટ્ટાપન્નમ્ ' દિશ દિશ ' = એકસા
 દિશ:-અપરા દિશ-' પડિસેહેતિ ' પ્રતિપેધયતિ=નિચારયન્તિ તતસ્તદનન્તર સ્થુ
 સ કુમ્ભકો રાજા જિતશત્રુપ્રમુલૈઃ પદ્મવીરાજમિર્હતમથિત-યાવત્ પ્રવરવીરવાક્તિ
 ચિહ્નધ્વજછત્રપતાકઃ કુચ્છપ્રાણોપગત' પ્રતિપિદ્ધ રાન્ અસ્થામા=આત્મચલરહિત,
 અવલઃ=સૈન્યરહિતઃ અત એવ ' અત્રીરિષ્ ' -અત્રીર્યઃ=ઉત્સાહરહિત । યાવત્-
 'આધારણિજ્જ' અધારણીયમ્-આત્માધાર્યતે સ્થાપ્યતે યત્ર તદ્ ધારણીય, ન ધારણી
 યમિતિ વિગ્રહઃ, અધારણીય પરચલમ્-અત્ર શત્રુસૈન્યે મમાત્મધારણમશક્તમિત્યર્થઃ ।
 હતિકૃત્વા-એવ ત્રિચાર્ય, શીઘ્ર ત્વરિત યાવત્ ચલિત વેગિત યત્રૈવ મિથિલા તત્રેવો

પ્રાણ ઘટ્ટ અધિક સકટ મેં પડ ગયે । વહ વહા સે દૂસરી તરફ ભાગના
 ખીંચાતા થા-તો ખીંચે ઉન્હોં ને ઉસે દૂસરી ઓર ભાગને નહીં દિયા ।
 (તત્ત્વેણ સે કુમ્ભક જિયસત્તૂ પામોઝ્ઘેહિં છહિં રાઈહિં હયમહિતં જાત્ર પડિ
 પડિસેહિષ્ સમાણે અત્થામે અવલે અત્રીરિષ્ જાવ આધારણિજ્જમિત્તિકદ્ધ
 સિગ્ધ તુરિય જાવ વેહય જેણેવ મિહિલા તેણેવ ઉચાગચ્છહ) હસ તમ્હ
 જિતશત્રુ આદિ છહોં રાજાઓ સે હત મથિત તથા ધાતિત પ્રવરવીરવાલા
 ઓર નિપાતિત ચિહ્ન ધ્વજ પતાકા વાલા વહ કુમ્ભક રાજા જ્ય સંકટ
 યુક્ત પ્રાણોવાલા બન ગયા ઓર યુદ્ધભૂમિ સે દૂસરી ઓર ભાગને કે
 લિયે અસમર્થ હો ગયા ત્ય આત્મચલ ઓર સૈન્યચલ સે રહિત બના
 હુઆ વહ ઉત્સાહ રહિત હો ગયા । એવ પરચલ કો અજેય માન કર
 વહા સે શીઘ્ર હી ત્વરા યુક્ત, વેગયુક્ત ચાલ સે જન્ મિથિલા નગર થી
 હસ તરફ આયા ।

પતાકા-અને છત્રને જમીન ઉપર નાખી દીધા આ રીતે તેના પ્રાણ આક્રમ
 ક્રસાઈ ગયા ત્યારથી તે ખીંચે તરફ નાસી જવાની તૈયારી કરતા હતા ત્યારે
 જિતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓએ તેને નાસી જવા દીધો નહિ

(તત્ત્વેણ સે કુમ્ભક જિયસત્તૂ પામોઝ્ઘેહિં છહિં રાઈહિં હયમહિતં જાત્ર પડિ
 સેહિષ્ સમાણે અત્થામે અવલે અત્રીરિષ્ જાવ આધારણિજ્જમિત્તિકદ્ધ સિગ્ધ
 તુરિય જાવ વેહય જેણેવ મિહિલા તેણેવ ઉચાગચ્છહ)

આ રીતે જિતશત્રુ વગેરે છએ રાજાઓથી હતા, મથિત તેમજ ધાતિત
 ચોદ્ધાઓવાળા અને નિપાતિત ચિહ્ન વ્વજ પતાકાવાળા તે કુલક રાજાના પ્રાણ
 પણ જ્યારે આક્રમ ક્રસાઈ ગયા અને રણભૂમિમાંથી નાસી જવાની પણ તક
 ગુમાવી બેઠા ત્યારે આત્મચલ અને સૈન્યચલ વગર બનેલા તેઓ સાત નિઃ
 સ્વાહી થઈ ગયા આખરે તેઓએ શત્રુપક્ષને અજેય સમજીને એકદમ જલ્દી
 વેગયુક્ત અડપણેર ચાલથી જ્યાં મિથિલા નગરી હતી તે તરફ રવાના થયા

‘णिस्सचार’ निः सचार=यथा जनाना प्रवेशनिर्गमरूप सचारस्तत्र न स्यात् तथा,
‘णिरुच्चार’ निरुच्चार-उत्-उ र् चरण=प्राकारस्योपरिभागेन गमनागमनरूप
जनाना यथा न भवेत् तथा, इदं दूय क्रिया विशेषण यद्वा-निरुच्चारम्-उच्चारः
पुरीष तद्विसर्गार्थं यज्जनाना वहिर्गमन तद्वहित यथा स्यात् तथा, सर्वत’ सर्व-
दिक्षु=समन्तात् सर्वविदिक्षु ‘ओरुभित्ताण’ अपरु य=वेष्टयित्वा तिष्ठन्तिस्म ।

ततस्तदन्तर खलु स कुम्भको राजा मिथिलां राजधानीमवस्थां ज्ञात्वा
‘अब्भतरियाए’ अभ्यन्तरिकायाम् = अभ्यन्तरवर्तिन्याम् उपस्थानशालायाम्-
आस्थानमण्डपे सभास्थान इत्यर्थः, सिंहासनवरगतः-राज्ञ प्रधानासनसमुपविष्टः,
तेषा जितशत्रुप्रमुखाणा पण्णा राज्ञाम् अन्तराणि=अवसराणि, छिद्राणि=दूषणानि,
विवरान्=एकान्तान्, मर्माणि=गुप्तदोषान् अत्र चकारो वाक्यालङ्कारपर, अलभ-
मिहिला-तेणेव उवागच्छति) जितशत्रु प्रमुख वे छहों राजा जिस
तरफ मिथिला नगरी थी उस ओर बढे (उवागच्छित्ता मिहिल रायहा-
णि णिस्सचार णिरुच्चार सव्वओ समता ओरुभित्ताण चिट्ठति) वहा
आकर उन्होंने ने उस मिथिला राजधानीको सब ओरसे घेर लिया-इससे
मनुष्योंका आना जाना रुक गया-यहा तक हो गया कि कोई भी व्यक्ति
कारण सर भी बाहर नहीं निकल सका (तएण से कुमए राया मिहिल
रायहाणि रुद्ध जाणित्ता अब्भतरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए)
इस के अनन्तर कुम्भक राजा ने अपनी राजधानी मिथिला नगरी
को शत्रुओं द्वारा रुद्ध जाना-तब किले की भीतर रहे हुए सभामण्डप
मे स्थित सिंहासन पर बैठकर वह (तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह
राईण अतराणि छिद्राणि य विरहाणि य मम्माणि य अलभमाणे) उन

जितशत्रु प्रमुख छथे राजाओ मिथिला नगरी तरफ बढ्या

(उवागच्छित्ता मिहिल रायहाणि णिस्सचार णिरुच्चार सव्वओ समता
ओरुभित्ताण चिट्ठति)

त्या मिथिला नगरीनी पासो आवीने ओभे तेओओ वेशे नाओओ आ
रीते भाणुसोनी अवर नवर सदतर णध यध गध

तएण से कुमए राया मिहिल रायहाणि रुद्ध जाणित्ता अब्भतरियाए उव-
ट्ठाणसालाए, सीहासणवरगए)

त्यारणाद न्यारे कुलक राजाओ पोतानी राजधानी मिथिला नगराने शत्रुओ वडे
घेराओली ओध त्यारे तेओ मिथिलानी अदर सलाम उमा सिंहासन उपर ओसीने

(तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण अतराणि छिद्राणि य विरहाणि
य मम्माणि य अलभमाणे)

मल्ली विदेहरायवरकन्नाकुभगं पववयासी-तुवभेण ताओ अण्णदा
 मम एज्जमाण जाव निवेसेह, किण्णं तुवभ अज्ज ओहय मण
 सकप्पे जाव झियायह?, तएणं कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न एवं
 वयासी-एव खल्ल पुत्ता तत्र कज्जे जियसत्तूपमुखेहि छहि राईहिं दूया
 सपेसिया, तेणं मए असक्कारिया जाव निच्छूढा, तएणं ते जि-
 यसत्तूपामोक्खा तेसि दूयाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा परिकुविया
 समाणा मिहिल रायहाणि निस्सचार जाव चिट्ठति । तएणं
 अह पुत्ता तेसि जियसत्तूपामोक्खाण छण्ह राईण अतराणि४
 अलभमाणे जाव झियामि, तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना
 कुंभय राय एव वयासी-माण तुवभ ताओ । ओहयमणसकप्पा
 जाव झियायह, तुवभेणं ताओ तेसि जियसत्तूपामोक्खाण छण्ह
 राईण पत्तेय रहसिय दूयसपेसे करेह, एगमेग एव वदह-तव
 देमि मल्लि विदेहरायवरकण्ण तिकट्ठु सज्जाकालसमयसि पविर-
 लमणुससि निसतसि पत्तेय २ मिहिल रायहाणि अणुप्पवेसेह
 अणुप्पवेसित्ता गवभघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए
 दुवाराइ पिहेह, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठह, तएणं कुभए एव०
 त चेव जाव पवेसेह, रोहसज्जे चिट्ठइ ॥ सू० ३४ ॥

टीका—‘तएण ते’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खल्ल जियसत्तूपमुखाः षडपि
 राजानो यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य मिथिला राजधानीं

‘तएण ते जियसत्तूपामोक्खा’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (जियसत्तूपामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव

(तएण ते जियसत्तूपामोक्खा) इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्था २ भा६ (जियसत्तूपामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव
 मिहिला तेणेव उवागच्छति)

‘णिससचार’ निः सचार=यथा जनाना प्रवेशनिर्गमरूप. सचारस्तत्र न स्यात् तथा,
‘णिरुच्चार’ निरुच्चार-उत्-उ र् चरण=माकारस्योपरिभागेन गमनागमनरूप
जनाना यथा न भवेत् तथा, ‘द दूय क्रिया विशेषण यद्वा-निरुच्चारम्-उच्चारः
पुरीष तद्विसर्गार्थं यज्जनाना तद्विर्गमन तद्वहित यथा म्यात् तथा, सर्वत’ सर्व-
दिक्षु=समन्तात् सर्वविदिक्षु ‘ओरुभित्ताण’ अत्रु-य=वेष्टयित्वा तिष्ठन्तिस्म ।

ततस्तदन्तर खलु स कुम्भको राजा मिथिलां राजधानीमवस्थां ज्ञात्वा
‘अवभतरियाए’ आभ्यन्तरिकायाम् = अभ्यन्तरप्रतिन्याम् उपस्थानशालायाम्-
आस्थानमण्डपे सभास्थान इत्यर्थ, सिंहासनवरगतः-राज्ञ प्रधानासनसमुपविष्टः,
तेषा जितशत्रुप्रमुखाणा पण्णा राज्ञाम् अन्तराणि=अवसराणि, छिद्राणि=दूषणानि,
विवरान्=एकान्तान्, मर्माणि=गुप्तदोषान् अत्र चकारो वाक्यालङ्कारपर, अलभ-

मिहिला-तेणेव उवागच्छति) जितशत्रु प्रमुख वे छहों राजा जिस
तरफ मिथिला नगरी थी उस ओर चढे (उवागच्छिता मिहिल रायहा-
णि णिससचार णिसच्चार सबओ समता ओरुभित्ताण चिद्धति) वहा
आकर उन्हों ने उस मिथिला राजधानीको सब ओरसे घेर लिया-इससे
मनुष्योंका आना जाना रुक गया-यहा तक हो गया कि कोई भी व्यक्ति
कारण सर भी बाहर नहीं निकल सका (तएण से कुमए राया मिहिल
रायहाणि रुद्ध जाणित्ता अवहाणसालाए सीहासनवरगए)
इस के अनन्तर कुम्भक राजा ने अपनी राजधानी मिथिला नगरी
को शत्रुओं द्वारा रुद्ध जाना-तत्र किले की भीतर रहे हुए सभामण्डप
मे स्थित सिंहासन पर बैठकर वह (तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह
राईण अतराणि छिद्राणि य विरहाणि य मम्माणि य अलभमाणे) उन

जितशत्रु प्रमुख छओ राजओ मिथिला नगरी तरह चढ्य।

(उवागच्छिता मिहिल रायहाणि णिससचार णिसच्चार सबओ समता
ओरुभित्ताण चिद्धति)

त्या मिथिला नगरीनी पासे आवीने ओमेर तेओओ वरे नाओओ आ
रीते भाणुसोनी ओवर ओवर सदतर गध थध गध

तएण से कुमए राया मिहिल रायहाणि रुद्ध जाणित्ता अवभतरियाए उव
हाणसालाए, सीहासनवरगए)

त्यारणाह ओधारे कुलक राजओ पोतानी राजधानी मिथिला नगरने शत्रुओ वडे
घेराओली ओध त्यारे तेओ किल्लानी ओहर सलाम उभा सिंहासन ओपर ओसीने

(तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण अतराणि छिद्राणि य विरहाणि
य मम्माणि य अलभमाणे)

मल्लो विदेहरायवरकन्नाकुभर्ग एव वयासी-तुवभेण ताओ अण्णदा
 मम एज्जमाण जाव निवेसेह, किण्णं तुवभ अज्ज ओहय मण
 सकप्पे जाव झियायह?, तएणं कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न एवं
 वयासी-एवं खलु पुत्ता तय कज्जे जियसत्तूपमुखोहि छहि राईहिं दूया
 सपेसिया, तेणं मए असक्कारिया जाव निच्छूढा, तएण ते जि
 यसत्तूपामोक्खा तेसि दूयाण अतिए एयमट्ट सोच्चा परिकुविया
 समाणा मिहिलं रायहाणि निस्सचार जाव चिट्ठति । तएणं
 अह पुत्ता तेसि जियसत्तूपामोक्खाण छण्ह राईण अंतराणि४
 अलभमाणे जाव झियामि, तएण सा मल्लो विदेहरायवरकन्ना
 कुंभय राय एव वयासी-माण तुवभ ताओ । ओहयमणसकप्पा
 जाव झियायह, तुवभेणं ताओ तेसिं जियसत्तूपामोक्खाण छण्ह
 राईणं पत्तेय रहसिय दूयसपेसे करेह, एगमेग एव वदह-तव
 देमि मल्लि विदेहरायवरकण्णं तिकट्टु सझाकालसमयसि पविर-
 लमणुसासि निसत्तसि पत्तेय २ मिहिल रायहाणिं अणुप्पवेसेह
 अणुप्पवेसित्ता गवभघरणसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए
 दुवाराइ पिहेह, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठह, तएणं कुभए एवं०
 त चेव जाव पवेसेह, रोहसज्जे चिट्ठइ ॥ सू० ३४ ॥

टीका—‘ तएण ते ’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु जियशत्रुममुखा. षडपि
 राजानो यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य मिथिला राजधानीं

‘ तएण ते जियसत्तू पामोक्खा ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा) इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्था २ भा६ (जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव
 मिहिला तेणेव उवागच्छति)

‘ इम च ण ’ अस्मिन् काले खलु, अत्रार्पत्वात्मन्मयर्थे द्वितीया मल्ली विदे-
हराजवरकन्या स्नाता यावद् पद्मीभिः ‘ खुज्जाहि ’ कुज्जाभिः=वक्रसस्थानाभि-
र्दासीभिः सपरिवृता यत्र कुम्भको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य राज पाद-
ग्रहण — चरणस्पर्शपूर्वक नमन करोति । ततस्तदनन्तर खलु कुम्भको राजा मल्लीं
विदेहराजवरकन्या ‘ णो आढाइ ’ नो आद्रियते नो परिजानाति, ‘ मल्ली समा-
गता ’ इत्यपि न जानाति तूष्णीकः मौनभावसहितः सतिष्ठतेस्म । ततस्तदन्तर

दुःखित होने लगा (इम च ण मल्ली विदेहरायवरकन्या, ण्हाया जाव बहूहिं
खुज्जाहिं सपरिवुडा जेणेव कुम्भए तेणेव उवागच्छइ) इसी समय विदेह
राजवरकन्या मल्ली कुमारी स्नान कर वस्त्राभरणो से अलकृत शरीर
होकर अनेक वक्र सस्थान वाली दासियोंके साथ जहां कुम्भकराजा थे वहां
आई । (उवागच्छित्ता कुम्भगस्स पायगगहण करेइ) आकर उसने अपने
पिता कुम्भक राजा के चरणों में नमे (तएणं कुम्भए मल्लिं विदेहरायव-
रकन्न णो आढाइ णो परियाणाइ, तुसिणीए सच्चिद्वइ) परन्तु व्यग्रचित्त
होने से विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी का कुम्भक राजा ने कोई
आदर नहीं किया और उसे इस यातका ही पना चला कि मल्लीकुमारी
आई हैं । केवल वह मौनभाव धारण किये हुए चुपचाप बैठा रहा (तएणं
मल्ली विदेहरायवरकन्या कुम्भग एव वयासी) पिता की इस परिस्थिति

(इम च ण मल्ली विदेहरायवरकन्या ण्हाया जावबहूहिं खुज्जाहिं सपरि-
वुडा जेणेव कुम्भए तेणेव उवागच्छइ)

आ अरसाभा विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारीअे स्नान उरुं अने त्थार
पद्मी वस्त्रो, आलरहो तेमए अलङ्कारोथी अलकृत थधने धएी वक्र सस्थान
वाणी दासीअोनी साथे कुलक राजनी पासो गर्ध

(उवागच्छित्ता कुम्भगस्स पायगगहण करेइ) अने त्था न्धने तेअे पोताना
पिता कुलक राजाना अरहोभा नमन उरुं

(तएण कुम्भए मल्लिं विदेहरायवरकन्न णो आढाइ, णो परियाणाइ,
तुसिणीए सच्चिद्वइ)

व्याकुल चित्तवाणा कुलक राजाअे विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारीअे
आदर कथो नडि के मत्तार कथो नडि राजने तो मात्र आटलु न जान
थयु के मल्लीकुमारी आवी छे

राजा साव भूगा थने जेसी न रहा (तएण मल्ली विदेहरायवर
कन्या कुम्भग एव वयासी) पितानी आवी डालत नेधने विदेहराजवर कन्या
मल्लीकुमारीअे तेमने पूछु के—

માન = અપાપ્તુમ્, વદ્ભિઃ = , આયે = ઇન્દ્રિયસિદ્ધિઉપાયે - સાધનં ચ 'ઉત્પત્તિયાહિ' ઔત્પત્તિકાભિ = સ્વાભાવિકીભિઃ - ગાસ્ત્રાભ્યાસેન વિનેય સમુત્પન્નાભિરિત્યર્થ, 'વેણ ઇયાહિ' વૈનયિકીભિઃ = વિનયતઃ પ્રાપ્તાભિઃ, 'કમ્મયાહિ' કાર્મિકાભિઃ = અભ્યાસ લબ્ધાભિશ્ચ અત્રાપિ ચકારા ગ્રામ્યાઝઙ્ગાર વોષકાઃ, વૃદ્ધિભિઃ 'પરિણામેમાણે ૨' પરિણમયન્ પરિણમનકુર્વન્ - અમાત્યૈઃ સદ્ વિચારયન્નિત્યર્થઃ, કમપિ આય વા ઉપાય વા અલભમાનઃ 'ઓહ્યમણસકપ્પે' અપહતમનઃ સકલ્પઃ = વિધ્વસ્તમનોરથઃ સન્ યાવત્ 'શિયાયહ' ધ્યાયતિ = અર્તધ્યાન કુર્વન્નાસ્તેસ્મ ।

જિતશત્રુ પ્રમુખ છઠો રાજાઓં કે અવસરોં કો, દૂષણોં કો વિવરોં કો
 એવ ગુણદોષોં કો દેખને કી તારુ મેં રહને લગા-પરન્તુ જબ અપને હન
 શત્રુઓં કે ઉસે અવસર દૂષણ આદિ દેખને મેં નહીં આયે તથ ઉસને
 બહુહિં, આયેહિં ય, ઉવાળહિં ય, ઉત્પત્તિયાહિં ય, વેણડયાહિં ય, કમ્મ
 યાહિં ય પરિણામિયાહિં ય બુદ્ધીહિં પરિણામેમાણે ૨) અનેકવિધ ઇષ્ટ
 સિદ્ધિકારક ઉપાયોં સે ઉન્હે પરાસ્ત કરને કી વાત સોચી તથા ઔત્પ
 ત્તિકી, વૈનયિકી, કાર્મિકી એવ પરિણામિ કી બુદ્ધિયોં સે મત્રિયોં કે
 સાથ બેઠકર ઘાર ૨ હસ વાત કા વિચાર મી ક્રિયા પરન્તુ હમ સ્થિતિ
 મેં ઉસે (કિં ચિ આય વા ઉવાય વા અલભમાણે) જબ ઇષ્ટ સિદ્ધિકારક
 કોઈ મી ઉપાય નજર નહીં આયા તવ વહ (ઓહ્યમણસકપ્પે જાવ
 શિયાયહ) અપહત મનઃ સકલ્પ હોકર અર્તધ્યાન કરને લગ ગયા-

જિતશત્રુ પ્રમુખ છઠે રાજાઓના અવસરોને, દૂષણોને, વિવરોને અને
 ગુણ દોષોને જોવા માટે લાગ જોતા બેસી રહ્યા પણ જ્યારે આ કામમાં
 પણ તે સફળ થઈ શક્યા નહિ એટલે કે શત્રુ પક્ષના દૂષણો વગેરે તે જાણી
 શક્યા નહિ ત્યારે તેમણે

(બહુહિં, આયેહિં ય ઉવાયેહિં ય ઉત્પત્તિયાહિય, વેણડયાહિય, કમ્મયાહિય,
 પરિણામિયાહિય, બુદ્ધીહિં પરિણામે માણે ૨)

જાતજાતના ઇષ્ટ સિદ્ધિ કરનારા ઉપાયોથી તેઓને હરાવવાની વાત ઉપર
 વિચાર કર્યો, તેમજ ઔત્પત્તિકી, વૈનયિકી, કાર્મિકી અને પારિણામિકી બુદ્ધિ
 ઓથી મત્રીઓની સાથે બેસીને વારંવાર આ સમસ્યા ઉપર મત્રણા પણ
 કરી પણ એવી જાણીર હાલતમાં તેઓને (કિં ચિ આય વા ઉવાય વા અલભમાણે

જ્યારે ઇષ્ટ સિદ્ધિ માટેના કોઈ પણ ઉપાય જણાયો નહિ ત્યારે (ઓહ્યમણ
 સકપ્પે જાવ શિયાયહ) હું ખી થઈને આર્તધ્યાન કરવા લાગ્યા

‘ इम च ण ’ अस्मिन् काले खलु, अत्रार्पत्वात्मपत्त्यर्थे द्वितीया मल्ली विदेह राजवरकन्या स्नाता यावद् गृहीभिः ‘ खुज्जाहि ’ कुञ्जाभिः=वक्रसस्थानाभिर्दासीभिः सपरिवृता यत्र कुम्भको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य राज पादग्रहण — चरणस्पर्शपूर्वक नमन करोति । ततस्तदनन्तर खलु कुम्भको राजा मल्ली विदेहराजवरकन्या ‘ णो आढाइ ’ नो आद्रियते नो परिजानाति, ‘ मल्ली समागता ’ इत्यपि न जानाति तूष्णीकः मौनभावसहितः सतिष्ठतेस्म । ततस्तदनन्तर

दुःखित होने लगा (इम च ण मल्ली विदेहरायवरकन्या, ण्हाया जाव बहूहि खुज्जाहि सपरिवुडा जेणेव कुम्भ तेणेव उवागच्छइ) इसी समय विदेह राजवरकन्या मल्ली कुमारी स्नान कर वस्त्राभरणो से अलंकृत शरीर होकर अनेक वक्र सस्थान वाली दासियोंके साथ जहाँ कुम्भकराजा थे वहाँ आई । (उवागच्छिता कुम्भगस्स पायगगहण करेइ) आकर उसने अपने पिता कुम्भक राजा के चरणों में नमो (तएणं कुम्भ मल्लि विदेहरायवरकन्न णो आढाइ णो परियाणाइ, तुसिणीए सचिट्ठइ) परन्तु व्यग्रचित्त होने से विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी का कुम्भक राजा ने कोई आदर नहीं किया और उसे इस बातका ही पता चला कि मल्लीकुमारी आई हैं । केवल वह मौन भाव धारण किये हुए चुपचाप बैठा रहा (तएणं मल्ली विदेहरायवरकन्या कुम्भ एव वयासी) पिता की इस परिस्थिति

(इम च ण मल्ली विदेहरायवरकन्या ण्हाया जावबहूहि खुज्जाहि सपरिवुडा जेणेव कुम्भ तेणेव उवागच्छइ)

आ अरसाभा विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारीके स्नान करुं अने त्यार पछी वस्त्रो, आभरणो तेमजे अलङ्कारोथी अलङ्कृत थधने धणी वक्र सस्थान वाली दासीकेनी साथे कुलक राजनी पासो गइ

(उवागच्छिता कुम्भगस्स पायगगहण करेइ) अने त्या जधने तेखे पोताना पिता कुलक राजनी अरखोभा नमन करुं

(तएण कुम्भ मल्लि विदेहरायवरकन्न णो आढाइ, णो परियाणाइ, तुसिणीए सचिट्ठइ)

व्याकुल चित्तवाणा कुलक राजके विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारीने आदर कर्यो नहि के सत्कार कर्यो नहि राजने तो मात्र आटलु ज्ञान थयु के मल्लीकुमारी आनी छे

राज साव भूजा थज्जिने जेसी ज रह्यो (तएण मल्ली विदेहरायवर कन्या कुम्भ एव वयासी) पितानी आवी छालत जेज्जिने विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारीके तेमने पूछ्यु के—

મહી વિદેહરાજયરકન્યા કુમ્ભકં રાજાનમેવ=તત્પ્રમાણપ્રકારેણ, અવાદીત્-હે તાત !
 યુવ સ્વલુ અન્યદા=અન્યસ્મિન્ સમયે મામ્ ' ઇજ્જમાણ ' ઇજ્જમાનામ્ આગચ્છન્તી
 યાવત્-દૃષ્ટ્વા, આદિયન્તે, પરિજાનીય, ઉત્સન્ને ' નિવેસેહ ' નિવેશયથ, કિં=કેન
 કારણેન સ્વલુ યુવમધોપહતમનઃ સકલ્પો યાવત્-ધ્યાયથ=શર્ત્તયાન કુરુથ ? તત્
 =મહીવચનશ્રવણાનન્તર કુમ્ભકો રાજા મહી વિદેહરાજયરકન્યામેવમવાદીત્-
 હે પુત્રિ ! એવ સ્વલુ તવ કાર્યે વિવાહરૂપ કાર્ય નિમિત્તીકૃત્યેર્થઃ, જિતશત્રુપ્રમુલે,
 પદ્મીરાજભિર્દૂતાઃ સમેપિતાઃ, તે સ્વલુ મયા ' અસત્કારિયા ' અપત્કૃતાઃ=અનાદૃતા

કો દેખકર उस विदेहवरराजकन्या मलिकुमारी ने उन से पूछा-(तुम्हे
 ण ताओ अण्णया मम एज्जमाण जाव निवेसेह, किण्ण तुब्भ अज्जे
 ओहयमण सकप्पे जाव झियायह) हे तात ! पहिले जब कभी आप मुझे
 आती हुई देखते थे तो उस समय मेरा आदर करते थे-मुझे जानछेते
 थे, और अपनी गोद में बैठा लेते थे-परन्तु आज क्या कारण है जो
 आप अपहतमन. सकल्प होकर चिन्ताग्रस्त बैठे हुए है

(तएण कुमए मल्लि विदेहराजवरकन्न एव वयासी) इस प्रकार
 सुन कर राजाने अपनी विदेह राजवर कन्या मलीकुमारी से कहा -
 (एव स्वलुपुत्ता । तव कज्जे जिय सत्तूप्पमुखेहिं छहिं राई हिं दूया सपे
 सिया तेण मए असक्कारिया जाव निच्छुडा, तएण ते जियसत्तू पामो
 क्खा तेसिं दूयाण अतिए एयमद्व सोच्चा परिकुविया- समाणा मिहिल
 रायहाणि निस्सचार जाव चिद्धति) हे पुत्रि ! तुम्हारे साथ वैवाहिक -

(तुम्હે ण ताओ અણયા મમ ઇજ્જમાણ જાવ નિવેસેહ કિણ્ણ તુબ્ભ અજ્જે
 ઓહયમણ સકપ્પે જાવ ઝિયાયહ

હે પિતા ! પહેલાં જમે ત્યારે મને આવતી જોતા ત્યારે મારા તમે
 આદર કરતા હતા, મને જાણી લેતા હતા અને મને પોતાના ખોળામાં બેસા-
 ડતા હતા પણ આજે શુ કારણ છે કે તમે ઉત્સ યદને આર્તધ્યાનમાં બેઠા છો
 (તણ કુમળમલ્લિ વિદેહરાજવરકન્ન એવ વયાસી) આ રીતે રાજાએ વિદેહ
 રાજવર કન્યાની વાત સાંભળીને તેણે કહ્યું કે -

(એવ સ્વલુ પુત્તા તવ કજ્જે જિયસત્તૂપ્પમુલેહિં છહિં રાઈહિં દૂયા સપેસિયા, તેણ
 મણ અસવકારિયા જાવ નિચ્છુડા, તણ તે જિયસત્તૂ પામોક્ખા તેસિં દૂયાણ અતિએ
 ઇયમદ્વ સોન્ના પરિકુવિયા સમાણા મિહિલ રાયહાણિ નિસ્સચાર જાવ ચિદ્ધતિ)

यावत्-असमानिता अपद्वारेण 'निच्छृढा' निक्षिप्ताः-निःसारिताः । तत खलु ते जितशत्रुप्रमुखास्तेषा दूतानामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा 'परिकुत्रिया' परिकुपिताः = अतिशयेन क्रोधाविष्टाः 'समाणा' सन्त, मिथिला राजधानी निःसचार यावत्-निरुच्चार=सर्वतः समन्तादवरु य 'चिद्रुति' तिष्ठन्ति । ततस्तस्मात् कारणात् खल्वह हे पुत्रि ! तेषा जितशत्रु प्रमुखाणा पण्णा राज्ञा अन्तराणि ४ अलभ मानो यावद् बहुभिरायैरुपायैरौत्पत्तिकयादिबुद्धिभिश्च परिणमयन् कमप्यायमुपाय वा अलभमान अपहतमनः सकल्पः सन् 'क्षियामि' ध्यायामि=भार्तध्यान करोमि ।

सबन्ध जोडने के लिये जितशत्रु प्रमुख छहो राजाओने अपने २ दूत मेरे पास भेजे थे

मैंने उनके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया-और उनके उन दूतोंको अनोदत एव असमानित कर महल के पीछे के दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया उन दूतो से जब इन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने इस परिस्थिति को सुना तो वे बहुत अधिक कुपित हुए । और इसी लीये उन्होंने ने अब मिथिला राजधानी को सब तरफ घेर लिया है । जिस का परिणाम यह हुआ कि लोगो का आना रुक गया और वह कारणवश बाहिर नही आनी जाती है । (तएण अह पुत्ता तेसिं जियसत्तू पामो-क्खाण छण्ह राईण अतराणि ४ अलभमाण जाव क्षियामि) इसलिये हे पुत्रि ! मे अभी तक उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओ के अन्तर आदि को-अवसर आदि को देखने की ताकमे रहा आया-परन्तु मुझे उसका

हे पुत्रि ! जितशत्रु प्रमुख छहो राजाओओ तमारी साथे लग्न उरवाना विचारथी भारी पासे हूतो नोडइया हुता

मे तेभना प्रस्तावने स्वीकार्यो नहि अने तेभना हूतोना अनादर अने असमान उरीने भडेलना पाछणना नाना पारखेथी तेओने पडार कडावी भूक्या पोताना हूतोनी पासेथी आ पधी विगत जाणीने जितशत्रु प्रमुख छहो राजाओ भूमज शुभसे थया, अने हुवे तेओओ मिथिला नगरीने चारे पानुथी घेरी लीधी छे तेना परिणामे लोकेनी अपर जवर पध थध गध छे केधपिणु कारणसर लोडे पडार जध शकता नयी ओवी लयकर परिस्थिति लेखी थज छे (तएण अह पुत्ता तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण अतराणि अलभमाणे जाव क्षियामि)

ओटला भाटे हे पुत्रि ! हुओ सुधी पणु हु जितशत्रु प्रमुख छहो राजाओना अन्तर वगेरेने ओटले के अवसर वगेरेनी लागभा रह्यो पणु भने

મહ્તી વિદેહરાજવરકન્યા કુમ્ભકુરાનાનમેવ=સ્વમાગમત્કારેણ, અસાદોત્-હે તાત !
 યૂયં સ્વલુ અન્યદા=અન્યસ્મિન્ સમયે મામ્ ' ઇજ્જમાણ ' ઇજ્જમાનામ્ આગચ્છન્તી
 યાવત્-દૃષ્ટ્વા, આદિયન્તે, પરિજાનીય, ઉત્સન્ને ' નિવેસેહ ' નિવેગયય, કિં=કેન
 કારણેન સ્વલુ યૂયમધોપહતમનઃ સકલ્પો યાવત્-ધ્યાયય=શર્તિયાન કુરુય ? તવ
 =મહ્તીવચનશ્રવણાનન્તર કુમ્ભકો રાજા મલ્લી વિદેહરાજવરકન્યામેવમત્તાદીત્-
 હે પુત્રિ ! એવ સ્વલુ તવ કાર્યે વિરાહસ્વ કાર્યં નિમિત્તીકૃત્યેર્થઃ, જિતશત્રુપ્રમુલ્લેઃ
 પદ્મીરાજમિદ્દતાઃ સમેષિતાઃ, તે સ્વલુ મયા ' અમરારિયા ' અમરકૃતાઃ=અનાદૃતા

કો દેવકર ઉસ વિદેહવરરાજકન્યા મલ્લિકુમારી ને ઉન સે પૂઠા-(તુમ્હે
 ણ તાઓ અણ્ણયા મમ ઇજ્જમાણ જાવ નિવેસેહ, કિણ્ણ તુબ્બ અજ્જે
 ઓહયમણસકપ્પે જાવ સ્થિયાયહ) હે તાત ! પહિલે જય કમ્મી આપ મુણ્ણે
 આતી હુઈ દેવતે થે તો ઉસ સમય મેરા આદર કરતે થે-મુણ્ણે જાનછેતે
 થે, ઓર અપની ગોદ મેં ઘેઠા લેતે થે-પરન્તુ આજ કયા કારણ હૈ જો
 આપ અપહતમનઃ સકલ્પ હોકર ચિન્તાગ્રસ્ત વૈઠે હુણ હૈ

(તણ્ણ કુમ્ભક મલ્લિ વિદેહરાયવરકન્ન એવ વયાસી) ઇમ પ્રકાર
 સુન કર રાજાને અપની વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી સે કહા -
 (એવ સ્વલુપુત્તા । તવ કજ્જે જિય સત્તૂપ્પમુલ્લેહિં છહિં રાઈ હિં દૂયા સપે
 સિયા તેણ મણ્ણ અસકકારિયા જાવ નિચ્છુઠા, તણ્ણ તે જિયસત્તૂ પામો
 વલા તેસિં દૂયાણ અતિણ્ણ એયમદ્ધ સોચ્ચા પરિકુવિયા- સમાણા મિહિલ
 રાયદાર્ણિ નિસ્સચાર જાવ ચિદ્ધતિ) હે પુત્રિ ! તુમ્હારે સાથ વૈવાહિક

(તુમ્હે ણ તાઓ અણ્ણયા મમ ઇજ્જમાણ જાવ નિવેસેહ કિણ્ણ તુબ્બ અજ્જે
 ઓહયમણ સકપ્પે જાવ સ્થિયાયહ

હે પિતા ! પહેલા ગમે ત્યારે મને આવતી બેતા ત્યારે મારો તમે
 આદર કરતા હતા, મને બાણી લેતા હતા અને મને પોતાના બોળામા બેસા
 હતા હતા પણ આજે શુ કારણ છે કે તમે હવેસ થઈને આર્તધ્યાનમા બેઠા છો
 (તણ્ણ કુમ્ભકમલ્લિ વિદેહરાયવરકન્ન એવ વયાસી) આ રીતે રાજાએ વિદેહ
 રાજવર કન્યાની વાત સાંભળીને તેણે કહ્યું કે-

(એવ સ્વલુ પુત્તા તવ કજ્જે જિયમત્તૂપ્પમુલ્લેહિં છહિં રાઈહિં દૂયા સપેસિયા, તેણ
 મણ્ણ અસકકારિયા જાવ નિચ્છુઠા, તણ્ણ તે જિયસત્તૂ પામોવલા તેસિં દૂયાણ અતિણ્ણ
 એયમદ્ધ સોચ્ચા પરિકુવિયા સમાણા મિહિલ રાયદાર્ણિ નિસ્સચાર જાવ ચિદ્ધતિ)

यावत्-असमानिता अपद्वारेण 'निच्छृढा' निक्षिप्ताः-निःसारिताः । तत खलु ते जितशत्रुप्रमुखास्तेषा दूतानामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा 'परिकुपिया' परिकुपिताः = अतिशयेन क्रोधाविष्टाः 'समाणा' सन्त, मिथिला राजधानी नि सचार यावत्-निरुच्चार=सर्वतः समन्तादवरु य 'चिद्वृत्ति' तिष्ठन्ति । ततस्तस्मात् कारणात् खल्वह हे पुत्रि! तेषा जितशत्रु प्रमुखाणा पण्णा राज्ञा अन्तराणि ४ अलभ मानो यावद् बहुभिरायैरुपायैरौत्पत्तिकयादिबुद्धिभिश्च परिणमयन् कमप्यायमुपाय वा अलभमान अपहतमनः सकल्पः सन् 'झियामि' ध्यायामि=आर्तभ्यान करोमि ।

सब-ध जोड़ने के लिये जितशत्रु प्रमुख छहो राजाओंने अपने २ दूत मेरे पास भेजे थे

मैंने उनके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया-और उनके उन दूतोंको अनादृत एव असमानित कर महल के पीछे के दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया उन दूतों से जब इन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने इस परिस्थिति को सुना तो वे बहुत अधिक कुपित हुए । और इसी लीये उन्होंने ने अब मिथिला राजधानी को सब तरफ घेर लिया है । जिस का परिणाम यह हुआ कि लोगो का आना रुक गया और वह कारणवश बाहिर नहीं आती जाती है । (तएण अह पुत्ता तेसिं जियसत्तू पामो-क्खाण छण्ह राईण अतराणि ४ अलभमाण जाव झियामि) इसलिये हे पुत्रि ! मैं अभी तक उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं के अन्तर आदि को-अवसर आदि को देखने की ताकमे रहा आया-परन्तु मुझे उसका

हे पुत्रि ! जितशत्रु प्रमुख छहो राजाओंने तमारी साथे लग्न करवाना विचारथी भारी पासे हूतो नोकड्या हुता

मे तेमना प्रस्तावने स्वीकार्यो नहि अने तेमना हूतोना अनादर अने असमान करीने भडेलना पाछणना नाना पारखेथी तेओने पडार कडावी भूक्या पोताना हूतोनी पासेथी आ पधी विगत जलणीने जितशत्रु प्रमुख छहो राजाओं भूम ज शुरसे थया, अने हुवे तेओओ मिथिला नगरीने आरे पाजुथी घेरी लीधी छे तेना परिष्ठाओे दोडोनी अवर जवर पध थध गध छे कोधपणु कारणसर दाडो पडार जध शज्ता नयी ओवी लयकर परिस्थिति जेथी थज छे (तएण अह पुत्ता तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह राईण अतराणि अलभमाणे जाव झियामि)

ओटला भाटे हे पुत्रि ! हुओ सुधी पणु हु जितशत्रु प्रमुख छहो राजाओंना अन्तर वगेरेने ओटले के अवसर वगेरेनी लागभा रह्यो पणु भने

તતસ્તદનન્તરં ચલુ સા મલ્લી વિદેહરાયવરકન્યા કુમ્ભક રાજાનમ્ એવં
 વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ, અગ્રાદીત્-હે તાત ! ગૂપ્ત ચલુ મા અપહતમન સકલ્પો યાવત્-
 ધ્યાયથ, હે તાત ! ગૂપ્ત ચલુ તેષાં જિતશત્રુપ્રમુખાણા વળ્લા રાજા પ્રત્યેકં રહસિ
 દૂતસપ્રેષણ કુરુત, એવૈરુ પ્રત્યેય વદત-‘ તા=તુભ્ય દાસ્યામિ મહીં વિદેહરાજસ
 કન્યામ્ ’ ઇતિ કૃત્વાન્વિયુક્તવા, સન્યાકાલસમયે - સૂર્યેઽસ્તગતેતતિ ‘ પવિરભ-
 મણ્સસિ ’ પ્રવિરભનુપ્યે-માર્ગાદો વચિદ્ વચિદ્ પ્રવિરભા અલ્પા મનુષ્યા વચ
 સ તથા ઇસ્મિન્, રાત્રિસદ્ભાવે સતોત્યર્થ તથા નિશાન્તે=નનકલકલે ધ્વનિવર્જિતે.

કોઈ મી છિદ્ર આદિ નહોં મિલ રતા હૈ । મૈને અનેક વિધ ઉપાયોં સે
 ઉન્હેં પરાસ્ત કરને કા વિચાર મી કિયા-ઓત્પત્તિ કી આદિ બુદ્ધિયોં સે
 સચિવોં કે સાથ ઉન્હેં વશ કરને કી મત્રણા મી કી પરન્તુ મુજે કલ મી
 ઉપાય હન્હે વશ યો પરાસ્ત કરને કા નજર નહોં આ રહા હૈ-અતઃ
 અપહતમનઃ સકલ્પ વાલા ધના હુઆ મેં હમ સમય ચિન્તાગ્રસ્ત હો
 રહા હૈ । (તણ સા મહી વિદેહરાયવરકન્ના કુમ્ભ રાય એવ વયાસી)
 હમ પ્રકાર અપને પિતા કુમ્ભક રાજા કી વાત સુનકર ઉસ વિદેહરાજ
 વર કન્યા ને ઉન સે કહા - (માળ તુભે તાઓ ! ઓહ્યમણસકપ્પા
 જાવ જિયાયહ) હે તાત ! આપ અપહત મનઃ સકલ્પ હોકર યાવત્
 ચિન્તિત ન વને મેં હસ વિષયમેં આપકો ઉપાય વતલાતી હૈ (તુભેળ
 તાઓ તેસિં જિય સત્તૂ પામોકલાળ છળ્હ રાયાળ પત્તેય રહસિય દૂય
 સંપેસે કરેહ) હે પિતાજી ! વહ ઉપાય યહ હૈ કિં આપ ઉન જિતશત્રુ
 પ્રમુખ રાજાઓ મેં સે પ્રત્યેક રાજા કે પાસ એકાન્ત મેં અપના દૂત

અત્યાર સુધી તેમણે એક પણ છિદ્ર (ખામી) ની જાણ થઈ શકી નહિ થઈ
 હાથેથી તેમને હરાવવાના વિચારો પણ મેં કર્યા છે, ઔત્પત્તિકી વગેરે
 બુદ્ધિઓથી મત્રીઓની સાથે વિચારણા પણ કરી છે પણ મને તેઓને ક્વાધીન
 બનાવવા કે હરાવવા માટેનો કોઈ એક પણ ઉપાય જણાતો નથી એથી
 અપહતમન સકલ્પવાળો હું આત્મધ્યાનમાં તદ્દલીન થઈને બેઠો છું (તણ
 સા મલ્લી વિદેહરાયવરકન્ના કુમ્ભ રાય એવ વયાસી) આ રીતે પોતાના
 પિતા કુલક રાજાની વાત સાંભળીને વિદેહરાજવર કન્યાએ તેમને કહ્યું કે-
 (માળ તુભે તાઓ ! ઓહ્યમણસકપ્પા જાવ જિયાયહ) હે તાત ! અત્યારે
 તમે ચિંતામગ્ન છો એટલે તેને દૂર કરવા માટે હું એક ઉપાય બતાવું છું
 (તુભેળ તાઓ તેસિં જિયસત્તૂ પામોકલાળ છળ્હ રાયાળ પત્તેય રહસિય
 દૂયસંપેસે કરેહ) હે પિતા ! તમે જિતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓમાંથી કોઈક રાજાની
 પાસે એકાન્તમાં પોતાનો દૂત મોકલો.

प्रति निशान्ते जनानां निद्रोपगतत्वेन सर्वथा जनध्वनिमचाररहिते यस्मिन् काले कोऽपि मार्गे दूत न पश्येदिति भावः, प्रत्येक मिथिला राजधानीमनुप्रवेशयत, अनुप्रवेश्य गर्भगृहेषु अभ्यन्तरवर्तिभवनेषु अनुप्रवेशयत, ततो मिथिलाया राजधान्या द्वाराणि पिधत्, आच्छादयत पिधाय रोधसज्जः—रोधेन प्रतिरोधेनाऽऽत्मरक्षा कुर्वन् तिष्ठत । ततः—मल्लीनाकयश्रवणानन्तर सल्लु कुम्भको राजा मल्ल्या

भेजिये (एगमेग एव बद्ध-तव देमि मल्लि विदेहरायवरकण्ठ त्तिरुद्ध सञ्जाकालसमयसि पचिरलमणूससि निसतसि पडि निसतसि पत्तेय २ मिहिल रायहाणि अणुप्पवेसेह) वह दूत जाकर उन प्रत्येक से ऐसा-कहे कि हम अपनी पुत्री विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी तुम्हें देंगे । ऐसा कहकर (दूतो से कहलवा कर) फिर उन राजाओं में से प्रत्येक राजा को आप ऐसे सध्याकाल के समय में—जब कि सूर्य बिलकुल अस्त हो गया हो—रात्रि का समय आ गया—हो मार्ग में भी कहीं कहीं पर ही थोड़े से मनुष्य का संचार हो रहा हो—मकान भी मनुष्यों की कल कल ध्वनि से रहित हो चुके हो—सबों के निद्राधीन बन जाने से जिन में से जन ध्वनि बिलकुल ही नहीं प्रकट हो रही हो अपनी मिथिला नगरी में घुलवाई ये—उन्हें प्रवेश कराईये (अणुप्पवेसित्ता गम्भघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइ पिहेह पिह्तिता रोहसज्जे चिद्धह तण्ण कुम्भए एवत चेव जाव पवे सेह, रोहसज्जे चिद्धह) प्रवेश करवा कर उन्हें आप गर्भ गृहों में—ठहरा दीजिये ।

(एगमेग एव बद्ध तव देमि मल्लि विदेहरायवरकण्ठ त्तिरुद्ध सञ्जाकाल समयसि पचिरलमणूससि निसतसि पडि निसतसि पत्तेय २ मिहिल रायहाणि अणुप्पवेसेह)

ते दूत तेमनी पासे जधने दरेडने आ प्रमाणे छडे के अमारी कन्या विदेहरायवर कन्या मल्लीकुमारी तमने आपीशु आ प्रमाणे दूत वडे दरेकनी पासे सहेश भोक्खीने ते शन्तओमाथी दरेकने तमे सध्याकाणना समये न्यारे सुरज भरोभर अस्त थर गयो डोय रात्रिनो वणत थर गर डोय, मार्गमा भहु न थोडा माणुसोनी अव नवर थवा भाडी डोय, माणुसोना घोघाटथी धरो पणु न्यारे सात थर गया डोय त्यारे मिथिला नगरीमा ओलावे।

(अणुप्पवेसित्ता गम्भघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइ पिह्तिता रोहसज्जे चिद्धह तण्ण कुम्भए एव० त चेव जाव पवेसेह, रोहसज्जे चिद्धह)
ओलावीने तेओने तमे गल गूढोमा रेडे।

તતસ્તદનન્તર યત્નુ સા મલ્લી વિદેહરાજવરકન્યા કુમ્ભક રાજાનમ્ એવ-
વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ, અગ્રાદીત્-હ તાત ! યૂય યત્નુ મા અપહતમન સકલ્પો યાવત્-
ધ્યાયથ, હે તાત ! યૂય યત્નુ તેષા જિતશત્રુપણ્ડ્યાણા પળ્લા રાજા પ્રત્યેકં શક્તિ
દૂતસપ્રેષણ કુરુત, એકેક પ્રત્યેક રદત-‘ તા=નુમ્ય દાસ્યામિ મટ્ટીં વિદેહરાજક
કન્યામ્ ’ હિતિ કૃત્વા=શ્લેષુક્તયા, સન્યાકાઠસમયે - ધૂર્યેઽસ્તગતેસતિ ‘ પત્રિભ-
મણૂસસિ ’ મત્રિભમનુપ્યે-માર્ગાર્થો યચિદ્ યચિદ્ મત્રિભા અલ્પા મનુષ્યા યત્ર
સ તથા ભમ્મિનઃ, રાત્રિસદ્ભાવે સતોત્યર્થે તથા નિશાન્તે=જનકઠકલે ધ્વનિવર્જિતે.

કોઈં ખી છિદ્ર આદિ નહોં મિલ રતા હૈં । મૈંને અનેક વિધ ઉપાયોં સે
ઉન્હેં પરાસ્ત કરને કા વિચાર ખી ક્રિયા-ઔત્પત્તિ કી આદિ ધુદ્ધિયોં સે
સચિવોં કે સાથ ઉન્હેં વશ કરને કી મત્રણા ખી કી પરન્તુ મુઝે કછ ખી
ઉપાય હન્હેં વશ યો પરાસ્ત કરને કા નજર નહોં આ રહા હૈં-અતઃ
અપહતમનઃ સકલ્પ વાલા ધના હુઆ મૈં ડસ સમય ચિન્તાગ્રસ્ત હો
રહા હૈં । (તણ સા મલ્લી વિદેહરાયવરકન્યા કુમય રાય એવ વયાસી)
હમ પ્રકાર અપને પિતા કુમક રાજા કી વાત સુનકર ડસ વિદેહરાજ
વર કન્યા ને ડન સે કહા - (માળ તુબ્હે તાઓ ! ઓહયમણસકપ્પા
જાવ જિયાયહ) હે તાત ! આપ અપહત મનઃ સકલ્પ હોકર યાવત્
ચિન્તિત ન થને મૈં હસ વિષયમેં આપકો ઉપાય વતલાતી હૈં (તુબ્હેણ
તાઓ તેસિં જિય સત્તૂ પામોક્ષાણ છળ્હરાયાળ પત્તેય રહસિય દૂય
સપેસે કરેહ) હે પિતાજી ! વહ ઉપાય યહ હૈં કિ આપ ડન જિતશત્રુ
પ્રમુખ રાજાઓ મૈં સે પ્રત્યેક રાજા કે પાસ ઇકાન્ત મૈં અપના દૂત

અત્યાર સુધી તેમનુ એક પણ છિદ્ર (ખામી) ની જાણ થઇ શકી નહિ ધણુ
ઉપાયોથી તેમને હરાવવાના વિચારો પણ મેં ક્યાં છે, ઔત્પત્તિકી વગેરે
ધુદ્ધિઓથી મત્રીઓની સાથે વિચારણા પણ કરી છે પણ મને તેઓને સ્વાધીન
બનાવવા કે હરાવવા માટેનો કોઈ એક પણ ઉપાય જણાતો નથી એથી
અપહતમન સકલ્પવાળો હું આર્તધ્યાનમા તાલીન થઈને બેઠો છું (તણ
સા મલ્લી વિદેહરાયવરકન્યા કુમય રાય એવ વયાસી) આ રીતે પોતાના
પિતા કુલક રાજાની વાત સાંભળીને વિદેહરાજવર કન્યાએ તેમને ડહુ કે-
(માળ તુબ્હે તાઓ ! ઓહયમણસકપ્પા જાવ જિયાયહ) હે તાત ! અત્યારે
તમે પિતામગ્ન છો એટલે તેને હાર કરવા માટે હું એક ઉપાય બતાવુ છું
(તુબ્હેણ તાઓ તેસિં જિયસત્તૂ પામોક્ષાણ છળ્હરાયાળ પત્તેય રહસિય
દૂયસપેસે કરેહ) હે પિતા ! તમે જીતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓમાથી દરેક રાજાની
પાસે એકાતમા પોતાનો દૂત મોકલો

भूया समाणा सएहि २ उत्तरिज्जएहि णासाइ पिहेंति, पिहित्ता
परम्मुहा चिट्ठति, तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियस-
त्तूपामोक्खे एवं वयासी—किण्णं तुब्भ देवाणुप्पिया । सएहिं २
उत्तरिज्जेहि जाव परम्मुहा चिट्ठह ?, तएणं ते जियसत्तूपा-
मोक्खा मल्ली विदेहरायवरकन्न एवं वयति—एवं खलु देवाणु-
प्पिए । अम्हे इमेणं असुभेण गंधेण अभिभूया समाणा सएहिं २
जाव चिट्ठामो ।

तएणं मल्ली विदेहरायकन्ना ते जियसत्तूपामोक्खे एवं
वयासी—जइ ता देवाणुप्पिया । इमीसे कणग० जाव पडिमाए
कल्लाकल्लि ताओ मणुण्णाओ असण पाण खाइमसाइमाओ
एगमेगे पिंडे पविस्सप्पमाणे २ इमेयारूवे असुभे पोग्गलपरिणामे
इम्मस्स पुण ओरालिय सरीरस्स खेलासवस्स वंतासव्वस्स
पित्तासवस्स रुक्खसोणियपूयासवस्स दुरूवऊसासनीसासस्स दुरू-
वमुत्तपूइयपुरिस्सपुण्णस्स सडणपडण विद्धंसणधम्मस्स केरिस्सए
परिणामे भविस्सइ ?, तं मा ण तुब्भे देवाणुप्पिया । माणुस्स
एसु कामभोगेसु सज्जह रज्जह गिज्झह मुज्झह अज्झोववज्जह,
एव खलु देवाणुप्पिया । तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे
अवरविदेहवासे सलिलावइसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए
महव्वलपामोक्खा सत्तवि य वालवयसया रायाणो होत्था, सह-
जाया जाव पव्वइया, तएण अह देवाणुप्पिया । इमेण कार-
णेण इत्थीनामगोय कम्म निव्वत्तेमि जइण तुब्भ चोत्थं उव-
सपज्जित्ताण विहरइ, तएण अह छट्ट उवसंपज्जित्ताणं विहरामि.

વિદેહરાજવરકન્યાયા ઇમ્=ઉક્તપ્રકારેણોક્ત સન્ તદેવ=તથેવ કૃત્વા યાત્-
જિતશત્રુપ્રમુખાન્ પટપિ રાતઃ પ્રવેશયતિ, પ્રવેશ્ય રોષસઙ્ગસ્તિષ્ઠતિ ॥મુ૦ ૩૪॥

મૂલમ્—તદ્દેવં તે જિયસન્નૂપામોક્ષ્વા છાપિયરાયાણો કલ્હં
પાઉપ્પમાયાણ રયણીણ જલતે સૂરિણ જાલંતરેહિં કણગમય
મત્થયછિહુ પડમુપ્પલપિહાણ પડિમં પાસદ્, ઇસુણ મહ્લી વિદે-
હરાયવરકણત્તિકદ્દુ મહ્લીણ વિદેહરાયવરકન્નાણ રૂવે ય જોઠ્ઠવણે
ય લાવણે ય મુચ્છિયા ગિઢ્ઠા ગઢિયા અઙ્ગોવવણ્ણા અણિ
મિસાણ દિટ્ઠીણ પેહમાણાર ચિટ્ઠતિ ।

તદ્દેવં સા મલ્લી વિદેહરાયવરકન્ના પહાયા જાવ સઠ્ઠા-
લકારવિભૂમિયા વહૂહિ સુજ્ઞાહિં જાવ પરિવિસન્તા જેણેવ જાલ-
ઘરણ જેણેવ કણયપડિમા તેણેવ ઉવાગચ્છદ્, ઉવાગચ્છિન્તા
તીસે કણગપડિમાણ મત્થયાઓ ત પડમ ઉવણેદ્, તદ્દેવં ગંધે
ણિહ્ધાવદ્, સે જહાનામણ અહિમહેતિ વા જાવ અસુમતરાણ
ચેવ । તદ્દેવં તે જિયસન્નૂપામોક્ષ્વા તેણં અસુમેણં ગંધેણં અભિ-

વાદ મેં મિથિલા રાજધાની કે દ્વારોં કો બન્દ કરવા દીજિયે । હસ
પ્રકાર ઉન્હેં ઘરા રોક કર આપ અપની આત્મ રક્ષા કરિયે । મહ્લી કુમારી
કે હન વચનો કો સુનને કે વાદ કુમક રાજા ને વિદેહ રાજવર કન્યા
ઉસ અપની પુત્રી મલ્લીકુમારી કે કહે અનુસાર વૈસા હી કિયા । અર્થાત્
દુતોં દ્વારા ઉન સઘ કો અપને ઘર્હાં બુલવા લિયા એવ ઉન્હેં તલ ઘરોં મેં
ઠહરા દિયા । સૂત્ર “ ૩૪ ”

ત્યાર પછી મિથિલા રાજધાનીના દરવાજાઓ બંધ કરાવડાવી દે, આ
રીતે તેઓને અહીં બંધ કરીને તમે આત્મરક્ષા કરો । વિદેહરાજવર કન્યા
મલ્લીકુમારીના વચનો સાંભળીને કુલક રાજાએ તેણીએ કહ્યું તે મુજબ જ કયું
એટલે કે ક્રૂરતા વડે તેઓ બંધાને પોતાને ત્યાં બોલાવી લીધા અને ગર્ભગૃહમાં
તેઓને રાકી લીધા ॥ સૂત્ર “ ૩૪ ” ॥

भूया समाणा सएहि २ उत्तरिज्जएहि णासाइं पिहोति, पिहित्ता
परम्मुहा चिट्ठति, तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियस-
त्तूपामोक्खे एवं वयासी—किण्णं तुव्वं देवाणुप्पिया । सएहिं २
उत्तरिज्जेहि जाव परम्मुहा चिट्ठह ?, तएणं ते जियसत्तूपा-
मोक्खा मल्ली विदेहरायवरकन्न एवं वयति—एव खलु देवाणु-
प्पिए । अम्हे इमेणं असुभेणं गधेणं अभिभूया समाणा सएहिं २
जाव चिट्ठामो ।

तएणं मल्ली विदेहरायकन्ना ते जियसत्तूपामोक्खे एवं
वयासी—जइ ता देवाणुप्पिया । इमीसे कणग० जाव पडिमाए
कल्लाकल्लि ताओ मणुण्णाओ असण पाण खाइमसाइमाओ
एगमेगे पिंडे पविस्सप्पमाणे २ इमेयारूवे असुभे पोग्गलपरिणामे
इम्मस्स पुण ओरालिय सरीरस्स खेलासवस्स वंतासव्वस्स
पित्तासवस्स सुक्खसोणियपूयासवस्स दुरूवऊसासनीसासस्स दुरू-
वमुत्तपूइयपुरिस्सपुण्णस्स सडणपडण विद्धंसणधम्मस्स केरिस्सए
परिणामे भविस्सइ ?, त मा ण तुव्वं देवाणुप्पिया । माणुस्स
एसु कामभोगेसु सज्जह रज्जह गिज्झह मुज्झह अज्झोववज्जह,
एव खलु देवाणुप्पिया । तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे
अवरविदेहवासे सलिलावइसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए
महव्वलपामोक्खा सत्तवि य वालवयसया रायाणो होत्था, सह-
जाया जाव पव्वइया, तएण अह देवाणुप्पिया । इमेण कार-
णेण इत्थीनामगोय कम्म निव्वत्तेमि जइण तुव्वं चोत्थं उव-
सपज्जित्ताण विहरइ. तएण अह छट्ट उवसपज्जित्ताण विहरामि.

सेसं तहेव सव्व, तएण तुव्वे देवाणुप्पिया ! कालमासे कालं
किञ्चा जयंते विमाणे उववण्णा, तत्थं णं तुव्वे देसूणाइं वत्ती-
साइं सागरोवमाइं ठिई, तएणं तुव्वं ताओ देवलोयाओ अणंतरे
अयं अइत्ता इहेव जंव्वदीवेरजावसाइंर रज्जाइ उवसपज्जित्ताणं
विहरइ, तएण अहं देवाणुप्पिया ! ताओ देवलोयाओ आउ
अखएणं जाव दारियत्ताए पच्चायाया ।

किं थ तयं पम्हुट्टु जं थ तया भो जयत पवरामि ।

वुत्था समयं निवद्ध देवा ! तं संभरह जाइ ॥सू०३५॥

टीका—‘तएण ते’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः
अपि राजान कल्ये—द्वितीयदिवसे ‘पाउप्पभायाए’ प्रादुः प्रभाताया=प्रादुर्भूतः
सजातः, प्रभातः—प्रातः कालो यस्याः सा प्रादुः प्रभाता तस्याम् अवसान प्राप्ता
यामित्यर्थः रजन्या=रात्रौ, ‘जलते सूरिए’ ज्वलति—उदिते सूर्ये, सुवर्णनिर्मिता
मस्तकछिद्रा—मस्तकोपरिभागे छिद्रयुक्तां ‘पउमुप्पलपिहाण’ पद्मोत्पलविधाना=
छिद्रोपरि कमलाच्छादनयुक्तां, प्रतिमा=प्रतिकृतिं पश्यन्ति, दृष्ट्वा, ‘एसा—राउ
मल्ली विदेहराजवरकन्या वर्तते’ इति कृत्वा=इतिज्ञात्वा, मल्लया विदेहराजवर

तएण ते जियसत्तू पामोक्खा इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो
कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जलते सूरिए) उन जितशत्रु प्रमुख उहाँ
राजाओं ने दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी और सूर्य का उदय
अच्छी तरह हो चुका तब (जाल तरेहिं) खिडकियों के रन्ध्रों से
(कणगमय मत्थयछिइइ पउमुप्पलपिहाण पडिम पासइ) कनक मय
उस प्रतिकृति को कि जिस के मस्तक में छिद्र था और वह छिद्र जिस

(तएण जियसत्तू पामोक्खा इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्वारा ॥ (ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कल्ल
पाउप्पभायाए रयणीए जलते सूरिए) ते जितशत्रु प्रमुख छप्पे राज्ञोऽप्ये
दिवसे त्वारे रात पूरी थई अने सूरज उदय पाये त्वारे (जाल तरेहिं)
आरीओना काण्ठाओभायी (कणगमय मत्थयछिइइ पउमुप्पलपिहाण पडिम
पासइ) नेना भायाभा काण्ठु डेतु तेवी सोनानी प्रातिकृति (भूति) ने लेध

(एसणं मल्ली विदेहरायवरकण्णत्तिकइइ मल्लीए) रुवे य

कन्याया रूपे=मनोहाराकारे च यौवने वयसि लावण्ये-यौवनवयोजनितकान्ति
प्रशेपे च मूर्च्छिता-रूपयौवनलावण्यदर्शनेन मोहिताः, 'गिद्धा' गृद्धाः=लोलुपाः,
'गदिया' ग्रथिताः=निप्रद्विचिता, अभ्युपपन्ना=अत्यन्तासक्ताः अनिमेषया निमेष-
पातरहितया दृष्ट्या प्रेक्षमाणा २ अनुक्षण पुनः पुनर्विलोकयन्तस्तिष्ठन्ति स्म ।

ततस्तदनन्तर खलु सा मल्ली विदेहराजवरकन्या स्नाता यावत्-सर्वालकार-
विभूषिता बह्वीभिः कुब्जिकाभि र्यावत्-दासीभिः 'परिक्लिप्ता' परिक्षिप्ता=
परिवेष्टिता यत्रैव जालगृह गणाक्षयुक्त गृह, यत्रैव कनकप्रतिमा=स्वकीया सुवर्ण-

का पद्मोत्पल से ढका हुआ था देखा (एमण मल्ली विदेह रायवर कण्ण
त्ति कट्टु मल्लीए विदेह रायवरकन्नाए रुवे य जोव्वणे य लावण्णे य मु-
च्छिठ्या गिद्धा गदिया अज्झोववण्णा अणिमिसाए दिट्ठए पेहमाणा २ चिट्ठति

देख कर अरे ! यह तो विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी हैं, ऐसा
जान कर वे सब उस विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी के रूप यौवन
एव लावण्य पर मूर्च्छित हो गये-मोहित हो गये, लोलुप हो गये । उन
में उन का चित्त बर गया । इस तरह अत्यन्त आसक्त होकर वे सब
के सब अनिमेष दृष्टि से बार २ उस की तरफ देखते रहे । (तएण
सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया जाव सव्वालकारविभूसिया बह्वहिं
खुज्जहिं जाव परिक्लिप्ता जेणेव जालधरणे जेणेव कणयपडिम तेणेव
उवागच्छइ) इस के पश्चात् विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी स्नान
आदि कर के समस्त अलकारों से विभूषित शरीर हो अनेक कुब्जक
सस्थान वाली दामियों के साथ २ जहां वह जाल गृह और उस में भी
जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिठ्या गिद्धा गदिया अज्झोववण्णा अणिमिसाए-दिट्ठिए
पेहमाणा २ चिट्ठति)

नेधने " अरे आ तो विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारी न छे " आभ
लणीने तेओ णधा विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारीना इय यौवन अने लाव
ण्यना प्रभावथी मूर्छित थछ गया मोहित थछ गया लोलुप थछ गया तेमां
तेभनु चित्त थोटी गयु आ गीते णूणज आसक्ता थछने तेओ णधा बार बार
तेनी तरङ्ग लेता रह्या

(तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया जाव सव्वालकारविभूसिया बह्वहिं खु-
ज्जहिं जाव परिक्लिप्ता जेणेव जालधरणे जेणेव कणयपडिमं तेणेव उवागच्छइ)

सेसं तहेव सव्व, तएण तुव्वमे देवाणुप्पिया ! कालमासे कालं
किञ्चा जयंते विमाणे उववण्णा, तत्थं णं तुव्वमे देसूणाइं वत्ती-
साइं सागरोवमाइं ठिई, तएणं तुव्वम ताओ देवलोयाओ अणंतरं
चयं चइत्ता इहेव जवूदीवेर जावसाइंर रज्जाइ उवसपज्जित्तणं
विहरइ, तएण अहं देवाणुप्पिया ! ताओ देवलोयाओ आउ-
क्खएणं जाव दारियत्ताए पच्चायाया ।

किं थ तयं पम्हुट्टं ज थ तया भो जयत पवरमि ।

बुत्था समयं निवद्धं देवा । तं संभरह जाइ ॥सू०३५॥

टीका—‘तएण ते’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः
यडपि राजान कल्ये—द्वितीयदिवसे ‘पाउप्पभायाए’ प्रादुः प्रभाताया=प्रादुर्भूतः
सजातः, प्रभातः—प्रातः कालो यस्याः सा प्रादुः प्रभाता तस्याम् अवसान प्राप्ता
यामित्यर्थः रजन्या=रात्रौ, ‘जलते सूरिए’ ज्वलति—उदिते सूर्ये, सुवर्णनिर्मिता
मस्तकछिद्रा—मस्तकोपरिभागे छिद्रयुक्तां ‘पउमुप्पलपिहाण’ पद्मोत्पलपिधाना=
छिद्रोपरि कमलाच्छादनयुक्तां, प्रतिमा=प्रतिकृतिं पश्यन्ति, दृष्ट्वा, ‘एपा—खलु
मल्ली विदेहराजवरकन्या वर्तते’ इति कृत्वा=इतिज्ञात्वा, मल्लया विदेहराजवर

तएण ते जियसत्तू पामोक्खा इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो
कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जलते सूरिए) उन जितशत्रु प्रमुख छोटे
राजाओं ने दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी और सूर्य का उदय
अच्छी तरह हो चुका तब (जाल तरेहिं) खिडकियों के रन्ध्रों से
(कणगमय मत्थयछिइड पउमुप्पलपिहाण पडिम पासइ) कनक मय
उस प्रतिकृति को कि जिस के मस्तक में छिद्र था और वह छिद्र जिस

(तएण जियसत्तू पामोक्खा इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्याग आदि (ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कल्ल
पाउप्पभायाए रयणीए जलते सूरिए) ते जितशत्रु प्रमुख छोटे राजाओं ने
द्विसे न्यारे रात पूरी थई अने सूरज उदय पाभ्यो त्यारे (जाल तरेहिं)
भारीओना काण्ठाओभाथी (कणगमय मत्थयछिइड पउमुप्पलपिहाण पडिम
पासइ) नेना भाथाभा काण्ठा उतु तेवी सोनानी प्रातकृति (भूति) ने लेध
(एसणं मल्ली विदेहरायवरकण्ठात्तिकइड मल्लीए) रवे य

ततस्तदन्तर खलु सा मल्ली विदेहराजवरकन्या तान् जितशत्रुप्रमुखान् राक्ष
एव=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत् हे देवानुप्रियाः ! किं=केन कारणेन खलु यूय
स्वकैरुत्तरीयै यावत्-नासिका पिदाय पराङ्मुखास्तिष्ठथ ? ततः खलु ते जितश-
त्रुप्रमुखाऽऽ मल्लीं विदेहराजवरकन्याम्, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण वदन्ति-हे देवानु-
प्रिये ! एव खलु वयमनेनाशुभेन-अनिष्टतरेण दुरभिगा गन्धेन, अभिभूताः सन्तः
स्वकैः २ यावत्-उत्तरीयैः स्व स्व नासिका पिदाय पराङ्मुखाः, 'चिद्वामो'
तिष्ठामः=स्थिताः स्मः ।

(पिहित्ता परम्मुहा चिद्वति' तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्या ते
जियसत्तू पामोक्खे एव वयासी) और दूसरी तरफ मुग्व करके बैठ
गये । जब मल्ली कुमारी विदेहराजवर कन्या ने उन्हें इस प्रकार देखा
तो वह बोली- (किण्ण तुब्भ देवाणुप्पिया ! सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं
जाव परम्मुहा चिट्ठह तएण ते जियसत्तू पामोक्खा मल्लीं विदेह रायवर
कन्न एव वयति) हे देवानु प्रियो ! आप लोग क्यों अपने अपने उत्त
रीय वस्त्रों से अपनी २ नाक को ढक कर और पुतली की और से
मुँह फेरकर बैठ गये हैं । मल्ली कुमारी विदेहराजवर कन्या की इस
प्रकार बात सुन कर उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने उससे ऐसा कहा
(एव खलु देवाणुप्पिए अम्हे इमेण असुभेण गधेण अभिभूया
समाणा सएहिं २ जाव चिद्वामो) हे देवानुप्रिये ! हमलोगों से यह
अशुभ गध सहन नहीं हो रही है अतः हम लोग अपने २ उत्तरीय

(पिहित्ता परम्मुहा चिद्वति तएण सा मल्ली विदेहरायवरकन्या त जियसत्तू
पामोक्खे एव वयासी)

अने तेओ भवा भो हेरीने जेसी गया ल्यादे विदेहराजवर कन्या
मल्लीकुमारी तेओने आ प्रमाणे करता जेया ल्यादे तेओ कहु—

(किण्ण तुब्भ देवाणुप्पिया ! सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा चिट्ठह
तएण ते जियसत्तू पामोक्खा मल्ली विदेहरायवरकन्न एव वयति)

हे देवानुप्रियो ! तमे दोऊो आ शरधुथी पोतानु नाउ उत्तरीयवअना छेडाधी
दाणीने प्रतिमाना तरधुथी भो हेरवा जेसी गया छो ?

विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारीनी आ बात स लणीने छतशत्रु प्रमुख
छओ राजओओ तेने कहु—

(एव खलु देवाणुप्पिए अम्हे इमेण असुभेण गधेण अभिभूया समाणा
सएहिं २ जाव चिद्वामो)

મયી પ્રતિકૃતિઃ, તત્રૈરોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય તસ્યાઃ કનકપ્રતિમાયાઃ મસ્તકાત્
તત્-પિધાનરૂપ પદ્મમ્ 'અવણેઈ' અપનયતિ=દૂરીકરોતિ, પદ્માવસારણેન કનકમય
પ્રતિકૃતેર્મસ્તકોપરિસ્થિતરન્ત્રમુદ્ઘાટયતીત્યર્થઃ । તતસ્તદનન્તરં તલ્લુ ગન્ધઃ=દૂર
ભિગન્ધઃ, 'ણિદ્ધાવઈ' નિર્ધાવતિ=શીઘ્રં વહિર્નિઃસરતિ, તદ્ યથા નામકમ્-
તથાહિ-યથા-'અહિમહેતિ યા' અહિમૃતક ઇતિ યા મૃતમર્પસ્ય તોત્રદુર્ગન્ધઃ પ્રસ-
રતિ, તદ્વદિત્યર્થઃ, સ યાત્ર-ગોમૃતકડવ, શ્વમૃતકડવેત્યાદિનોધ્યમ્ 'એતોત્રિ'=
એતસ્માદપિદુર્ગન્ધાત્ અશુભતર એવ-નત્યન્તં મનો વિકૃતિનનકસ્તીવતરો દુઃસહશ્ચૈવ
ધર્તેતે । તત્ તલ્લુ તે જિતશત્રુપ્રમુખાસ્તેનાશુભેન ગન્ધેનાભિભૂતાઃ સન્ત સ્વકૈ સ્વકૈ-
રુત્તરીયૈઃ ઉત્તરીયવસ્ત્રૈઃ, 'ણાસાઈ' નાસિકાઃ પિદધતિ=આચ્છાદયતિ પિધાય
'પરમ્મુહા' પરાહ્મુખાઃ પરાવર્તિતમુખાસ્તિષ્ઠન્તિસ્મ ।

જહા વહ સુવર્ણમયી પ્રતિમા થી વહા આઈ । (ઉવાગચ્છિત્તા તીસે કણગ
પડિમાળ મત્થયાઓ ત પડમ અવણેઈ) વહા આકાર કે ઉસ ને ઉસ
કનક મય પુતલી કે મસ્તક સે ઉસ કમલ કો દટાયા (તણ ગધે
ણિદ્ધાવઈ) ઢકકન કે દટતે હી ઉસ મેં સે વહુત મારી દુર્ગન્ધ નિકલી
(સે જહાનામળ અહિમહેતિ વા જાવ અસુભતરાળ ચેવ) વહ દુર્ગન્ધ એસી
અશુભતર થી કિ જૈસી મરે દુણ સર્પ કે સહે શરીર કી હોતી હૈ-તથા
ગોમૃતક એવ શ્વમૃતક, કી હોતી હૈ । (તણ તે જિયસત્ત પામોવલા
તેણ અસુમેળ ગધેળ અભિભૂયા સમાળા સણહિં ૨ ઉત્તરિજ્જેહિં ણાસાઈ
પિહેતિ) ઉસ દુર્ગન્ધ કે નિકલતે હી ઉન જિતશત્રુ પ્રમુખ છદોં રાજાઓ
ને અપને ૨ ઉત્તરીય વસ્ત્રાચલોં સે અપની ૨ નાક કો ઢક લિયા ।

(મૂર્તિ) હતી ત્યા ગઈ (ઉવાગચ્છિત્તા તીસે કણગપડિમાળ મત્થયાઓ ત પડમ)
અવણેઈ) ત્યા આવીને તેણે તે સોનાની પ્રતિમાપર રહેલું સોનાના કમળવાળું
ઢાકણું ઉઘાડ્યું (તણ ગધે ણિદ્ધાવઈ) ઢાકણું દૂર થતા જ તેમાથી અત્યંત
ખરાબ દુર્ગન્ધ નીકળવા લાગી સે જહાનામળ અહિમહેતિ વા જાવ અસુભતરાળ ચેવ)
તે દુર્ગન્ધ એટલી ખરાબ હતી કે મરેલા સાપના સડી ગયેલા શરીરની તેમજ
ગોમૃતક અને શ્વમૃતકની હોય છે

(તણ તે જિયસત્ત પામોવલા તેણ અસુમેળ ગધેળ અભિભૂયા સમાળા સણ
હિં ૨ ઉત્તરિજ્જેહિં ણાસાઈ પિહેતિ)

દુર્ગન્ધ ખડાર આવતાની સાથે જ જિતશત્રુ પ્રમુખ છદ્મે રાજાઓએ

ગોતાના ઉત્તરીયવસ્ત્રના છેરાથી ગોતગોતાન નાક ઢાકી દીધું

વાયોર્નિર્ગમનં નિઃ શ્વાસઃ તૌ દૂરૂપાવનિષ્ઠૌ યસ્ય સ તથા, તસ્ય દૂરૂપમૂત્રપૂતિ-
કંપુરીપ પૂર્ણસ્ય=દૂરૂપેણ પૂતિકેન અનિષ્ટગન્ધવતા પુરીપેણ પૂર્ણસ્ય, તથા તત્ર-
શટનપટનવિધ્વંસનધર્મસ્ય=શટન-કુષ્ઠાદિરોગાદિભ્યાદેઃ પતનં જ્વરાદિના શૈથિલ્યં,
વિધ્વસન=નાશઃ એતે શટનાદયો ધર્માઃ સ્વભાવા યસ્યે સ તસ્ય, કીદૃશ પરિણામો
ભવિષ્યતિ? અંશનાદ્યાહારાદુધ્વૃતસ્યૈકેઋગ્રાસસ્ય પ્રતિદિવમ પ્રતિકૃતૌ પ્રક્ષિપ્તસ્ય ચદિ

પુરિસ પુણસ્સ સંહણ પહણ વિદ્ધસણ ધમ્મસ્સ કેરિસણ પરિણામે ભવિ-
સ્સઃ) હસ ઔદારિક શરીર કા પુદ્ગલ પરિણમન ઉસકી અપેક્ષા મી
અધિકતર અનિષ્ટ દુર્ગંધ વાલા નહીં હોગા કયા ? અવશ્ય હોગા-કયોંકી
યહ કફ કા આશ્રય ભૂત હૈ । સમય ૨ પર હસસે વમન કા નિસ્સરણ
હોતા રહતા હૈ । પિત્ત મી હસ સે નિકલતા રહતા હૈ । શુક્ર, શોણિત,
એવ પીવ હસ મેં વાહિર વહતા હૈ । હસકા જો શ્વાસ ઓર ઉચ્છ્વાસ હૈ
વે મહા દુરૂપ-અનિષ્ટતર હૈ । યહ દુરૂપ મૂત્ર એવ અનિષ્ટ ગંધ વાલે મેલ
સે સદા ભરા રહતા હૈ । યહ શટન, પટન, તથા વિધ્વંસન ધર્મ વાલા હૈ ।
કુષ્ઠાદિ રોગ દ્વારા જો હસ કે અગુલિ આદિ અવયવ ગિર જાતે હૈ ઉસ
કા નામ શટન હૈ । જ્વરાદિ અવસ્થા સે જો હસમેં શિથિલતા આ જાતી
હૈ ઉસ કા નામ પટન હૈ । નાશ હોને કા નામ વિધ્વસન હૈ । કારણે
હસ કા હસ પ્રકાર હૈ કિ અંશનાદિ રૂપ ચતુર્વિધ આહાર સે ઉત્પન્ન હુએ
એક ૨ ગ્રાસ કા જો પ્રતિદિન હસ પ્રતિકૃતિ મેં પ્રક્ષિપ્ત ક્રિયા જાતા હૈ

(હમસ્સ પુણ ઓરાલિય સરીરસ્સ સ્વેલાસવસ્સ વત્તાસવસ્સ પિત્તાસવસ્સ સુક
સોણિય પૂયાસવસ્સ દુરૂવ ઉસાસનીસાસસ્સ દુરૂવમુત્ત પૂઝયપૂરિસ પુણસ્સ સંહણ
પહણ વિદ્ધસણ ધમ્મસ્સ કેરિસણ પરિણામે ભવિસ્સઃ)

આ ઔદારિક શરીરનુ પુદ્ગલ પરિણમન તેના કરતા પણ વધુ અનિષ્ટ
દુર્ગંધવાળુ થશે નહિ ? અરે ! ચોક્કસ થશે કેમકે આ કંકરુ આશ્રય છે આમાથી
વારવાર વમનનુ નિસ્સરણ થતુ રહે છે પિત્ત પણ આમાથી નીકળતુ રહે છે
શુક્ર, શોણિત (લોહી) અને ૫૩ આમાથી બહાર વહેતુ રહે છે આમાથી
એના શ્વાસોચ્છ્વાસ મહા દુરૂપ અનિષ્ટતર છે આ શરીર દુરૂપ મૂત્ર અને
અનિષ્ટ દુર્ગંધવાળા મળથી હ મેશા ભરાએલુ રહે છે આ શરીર શટન, પટન,
તેમજ વિધ્વસન ધર્મવાળુ છે કોઈ વગેરે રોગ વડે જે શરીરના આગળાંચો
વગેરે અવયવો ખરી પડે છે તેનુ નામ શટન છે ઘડપણને લીધે શરીરમા જે
શિથિલતા આવે છે તેને પટન કહેવાય છે નારા થવું તે વિધ્વસન કહેવાય
છે આનુ કારણ બતાવવામા આવેલો કોણિયો જે એક એક કરીને દરેકજે
આ પૂતળીમા નાખવામા આવ્યો છે તે બ્યારે આરુ તીવ્ર અનિષ્ટતર દુર્ગંધ

તતસ્તદનન્તર તેર્પા રાજાં વચન શ્રુત્વા સલ્લ મલ્લો વિદેહરાજવરકન્યા તાન્
જિતશત્રુપ્રમુખાન્ રાજાઃ પ્રત્યેવમગદોત્-હે દેવાનુપ્રિયા ! યદિ તાવત્ અસ્યાં કનક
મય્યા યાવત્-પતિમાયા ' કલ્લાકલિલ ' વલ્યાકન્યે=પતિદિવસ તસ્માદ્ મનોહ્રાદ્
અશનપાનલાઘસ્યાઘાત્=ચતુર્વિધાઽઽહારાદ્ એકૈકઃ પિણ્ડઃ=ગ્રાસઃ પ્રક્ષિપ્યમાણઃ'
અયમેતદ્રૂપઃ=મનોવિકૃતિકારકસ્તીવતરો દુઃસહો દુર્ગન્ધઃ, અશુભઃ=અનિષ્ટતરઃ
પુદ્ગલપરિણામો જાત , તર્હિ પુનરોદારિકશરીરસ્ય શ્લેષ્માસ્રસ્ય=યમ્માત્ કફપ્રસ્રાવો
ભવતિ તસ્ય, યાન્તાસ્રવસ્ય=યાન્તમ્-ઉદ્ગીર્ણં તસ્યાસ્રવઃ પ્રસ્રાવો યસ્માદ્ ભવતિ
તસ્ય, પિત્તાસ્રવસ્ય=પિત્તસ્યાસ્રવો નિ' સરણ યાવત્ તસ્યેત્યર્થ . તથા શુક્રશોનિત-
પૂયાસ્રવસ્ય દુરુપોન્છગ્રાસ નિ'શ્વાસસ્ય=ગાત્રવાયુમહળમુન્છગ્રાસઃ શરીરાન્તર્ગતસ્ય

વસ્ત્રાચલોં સે નાક ઢક ઓર હસ તરફ મુંદ કર ફેર કર બેઠ ગયે હૈં ।
(તદ્દા મલ્લો વિદેહરાજવર કન્યા તે જિયસત્ પામોક્ષે એવ વચાસી)
હૈસ કે અનન્તર વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લી કુમારી ને ઉન જિતશત્રુ
પ્રમુખ રાજાંસે કહા—(જહતા દેવાણુપ્રિયા ! હમીસે કળમ ૦ જાવ
પડિમાએ કલ્લા કલિલ તાઓ માણુગાઓ અસળપાળલાહમસાહમાઓ
એમમેમે પિંડે પત્રિલ્પમાણેર હમેયારુવે અસુમે પોગલપરિણામે) હે દેવા
નુપ્રિયો ! હસ કનકમયી પુનલી મે મનોહ્ર અશન, પાન, લાઘ એવ સ્વાથ
રૂપ ચતુર્વિધ આહારકા ઢાલા ગયા ઇકરે ગ્રાસ જવ્ હસ પ્રકારકા મનોવિ-
કૃતિ જનક અશુભ તર પુદ્ગલ પરિણામરૂપ દુર્ગંધવાલા બન ગયા હૈં તો ।

(હમસ્સ પુળ ઓરાલિયસરીસ્સ લેગ્રાસવસ્સ વતાસવસ્સ પિત્તા
સવસ્મ સુક્કસોણિયપૂયાસવસ્સ- ઝમાસનીસાસસ્સ દુરુવમુત્તપુઙ્ગ

હે દેવાનુપ્રિયે ! આ ખરાખ ગધ અમારા માટે અસહ્ય થઈ પડી છે
એથી અમે પોતપોતાના ઉત્તરીયના છેડાથી નાક દબાવીને અને આ તરફથી
મે ફેરવીને બેસી ગયા છીએ (તદ્દા મલ્લી વિદેહરાજવર કન્યા તે જિયસત્
પામોક્ષે એવ વચાસી) ત્યારપછી વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીએ જિતશત્રુ
પ્રમુખ રાજાઓને કહ્યું કે—

(જહતા દેવાણુપ્રિયા ! હમીસે કળમ ૦ જાવ પડિમાએ કલ્લા કલિલ તાઓ
માણુગાઓ અસળપાળલાહમ સાહમાઓ એમમેમે પિંડે પત્રિલ્પમાણેર હમેયારુવે
અસુમે પોગલપરિણામે)

હે દેવાનુપ્રિયે ! આ સોનાની પૂતળીમા મનોહ્ર અશન પાન, આઘ
અને સ્વાથ રૂપ ચાર જાતના આહારનો ન ખાએલો એક એક ઢોળીયો બનાવે
આ પ્રમાણે મનોવિકૃતિજનક અશુભતર પુદ્ગલ પરિણામ રૂપ દુર્ગંધવાળો
બન ગયો છે ત્યારે—

वायोर्निर्गमनं निः श्वासः तौ दूरुपायनिष्ठौ यस्य स तथा, तस्य दूरुपमूत्रपूति-
कंपुरीष पूर्णस्य=दूरुपेण पूतिकेन अनिष्टगन्धवता पुरीषेण पूर्णस्य, तथा तत्र-
शटनपटनविध्वंसनधर्मस्य=शटन-कुण्ठादिरोग। कुल्यादेः पतने ज्वरादिना शैथिल्य,
विध्वंसन=नाशः एते शटनादयो धर्माः स्वभावा यस्य स तस्य, कीदृश परिणामो
भविष्यति? अशनाद्याहारादुद्धृतस्यैकैरग्रासस्य प्रतिदिनम प्रतिकृतौ प्रक्षिप्तस्य यदि

पुरिस पुणस मंडण पडण विद्धसण धम्मसं केरिसण परिणामे भवि-
स्सऽ) इस औदारिक शरीर का पुद्गल परिणमन उसकी अपेक्षा भी
अधिकतर अनिष्ट दुर्गंध वाला नहीं होगा क्या ? अवश्य होगा-क्योंकी
यह कफ का आश्रय भूत है । समय २ पर इससे वमन का निस्सरण
होता रहता है । पित्त भी इस से निकलता रहता है । शुक्र, शोणित,
एव पीव इस में बाहिर बहता है । इसका जो श्वास और उच्छ्वास हैं
वे महा दुरुप-अनिष्टनर हैं । यह दुरुप मूत्र एव अनिष्ट गंध वाले मल
से सदा भरा रहता है । यह शटन, पटन, तथा विध्वंसन धर्म वाला है ।
कुष्ठादि रोग द्वारा जो इस के अगुलि आदि अवयव गिर जाते हैं उस
का नाम शटन है । ज्वरादि अवस्था से जो इसमें शिथिलता आ जाती
है उस का नाम पटन है । नाश होने का नाम विध्वंसन है । कारण
इस का इस प्रकार है कि अशनादि रूप चतुर्विध आहार से उत्पन्न हुए
एक २ ग्रास का जो प्रतिदिन इस प्रतिकृति में प्रक्षिप्त किया जाता है

(इमस्स पुण ओरालिय सरीरस्स खेळासवस्स वत्तासवस्स पित्तासवस्स सुक्ख सोणिय पूयासवस्स दुरुव उप्पासनीसासस्स दुरुवमुत्त पूडयपूरित पुण्णस्स सडण पडण विट्ठसण धम्मस्स केरिसण परिणामे भविस्सइ)

આ ઔદારિક શરીરનું પુદ્ગલ પરિણમન તેના કરતા પણ વધુ અનિષ્ટ દુર્ગંધવાળું થશે નહિ ? અરે ! ચોક્કસ થશે કેમકે આ કંઈનું આશ્રય છે આમાથી વારંવાર વમનનું નિસ્સરણ થતું રહે છે પિત્ત પણ આમાથી નીકળતું રહે છે શુક્ર, શોણિત (લોહી) અને પણ આમાથી બહાર વહેતું રહે છે આમાથી એના શ્વાસોચ્છવાસ મહા દુરૂપ અનિષ્ટતર છે આ શરીર દુરૂપ મૂત્ર અને અનિષ્ટ દુર્ગંધવાળા મળથી હંમેશા ભરાયેલું રહે છે આ શરીર શટન, પતન, તેમજ વિધ્વસન ધર્મવાળું છે દોઢ વગેરે રોગ વડે જે શરીરના આગળાંચો વગેરે અવયવો ખરી પડે છે તેનું નામ શટન છે ઘડપણને લીધે શરીરમાં જે શિથિલતા આવે છે તેને પતન કહેવાય છે નાશ થવું તે વિધ્વસન કહેવાય છે આનું કારણ બતાવવામાં આવેલો કોળિયો જે એક એક કરીને દરરોજ આ પૂતળીમાં નાખવામાં આવ્યો છે તે જ્યારે આવું તીવ્ર અનિષ્ટતર દુર્ગંધ

પુદ્ગલપરિણામસ્તીવતરોઽનિષ્ટતરોદુર્ગન્ધઃ પ્રસરતિ, તર્હિ પુનરસ્યૌદારિકશરીરસ્ય શ્લેષ્માદિનાનાવિષમલપૂર્ણસ્ય શટનપટનપિરસનસ્વભાવસ્ય પુદ્ગલપરિણામસ્તસ્માદ પ્યઽધિકતરોઽનિષ્ટદુર્ગન્ધો ભવિષ્યતીત્યર્થઃ । તસ્માત્ હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! यूयं खलु मानुष्यकेषु कामभोगेषु मा 'सज्जह' मा सज्जत-सङ्गं नो कुरुत, 'मा' इत्यस्य प्रत्येकमपिसम्बन्ध । 'रज्जह' रज्जपत-राग मा कुरुत, 'गिज्झह' गर्धध्वम् गृद्धि तृष्णा मा कुरुत, 'मुज्झह' मुग्धत मोह नो कुरुत विषयदोष मा विस्मरतेत्यर्थः, 'अज्झोववज्जह' अध्पुपपद्यध्यम्=कामभोगाना ध्यान मा कुरुते-त्यर्थः । हे देवानुप्रियाः ! एव खलु यूय ययमितस्तृतीये भवग्रहणे अपरविदेहवर्षे पश्चिभीयमहाविदहक्षेत्रे सलिलावत्यां सलिलावतीनामके विजये वीतशोकायां राजधान्या महाबलप्रमुखाः सप्तापि च बालवयसया राजानः=राजकुलवृहीतजन्मानः

યદિ હસ પ્રકાર કા તાત્ર અનિષ્ટતર દુર્ગંધ રૂપ પુદ્ગલ પરિણામ હૈ તો ફિર હસ ઔદારિક શરીર કા કિ જો શ્લેષ્માદિ નાના વિષ મલ સે પરિપૂર્ણ હો ગ્હા હૈ તથા શટન પટન એવ વિધ્વસન જિસ કા સ્વાભાવિક ધર્મ હૈ પુદ્ગલ પરિણામ હસ સે ભી અધિક તર અનિષ્ટ દુર્ગંધ વાલા હી હોગા

(ત મા ણ તુભે દેવાણુપ્પિયા ! માણુસસણુસુ કામભોગેસુ સજ્જહ, રજ્જહ ગિજ્ઝહ, મુજ્ઝહ, અજ્ઝોવવજ્જહ) હસલિયે હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ મનુષ્ય ભવ સરધી કામ ભોગો મેં મત પેંસો, ઉન મેં રાગ ભાવ મત કરો તૃષ્ણા મત વઢામો, મુગ્ધ મત બનો ઔર ન હન કા ધ્યાન હી કરો । (એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! તુમ્હે અમ્હે હમાઓ તચ્ચે ભવગ્રહણે અવર વિદેહવાસે સલિલાવહસિ વિજય વીયસોગાણ રાયહાણીણ મહ બલપામોક્ષવા સત્તવિય બાલવયસયા રાયાણો હોત્થા) હે દેવાનુપ્રિયો !

૩૫ પુદ્ગલ પરિણામવાળુ થાય ત્યારે આ ઔદારિક શરીરનુ કે જે શ્લેષ્મ વગેરે ઘણા મળેાથી ભરાએલુ છે-અને શટન, પટન, અને વિધ્વસન જેનુ સ્વાભાવિક ધર્મ છે-પુદ્ગલ પરિણામ એના કરતા પણ વધુ અનિષ્ટ દુર્ગંધવાળુ હશે જ

(ત મા ણ તુભે દેવાણુપ્પિયા ! માણુસસણુસુ કામભોગેસુ સજ્જહ, રજ્જહ ગિજ્ઝહ, મુજ્ઝહ, અજ્ઝોવવજ્જહ)

એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે મનુષ્યભવના કામ ભોગોમા હસાશેા નહિ, તેમા રાગ ઉત્પન્ન કરેા નહિ, તેના પ્રતિ તૃષ્ણાનુ વર્દન કરેા નહિ, મુગ્ધ થાએા નહિ અને તેનો કોઈ દિવસ પણ વિચાર કરેા જ નહિ

(એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! તુમ્હે અમ્હે હમાઓ તચ્ચે ભવગ્રહણે અવરવિદેહ વાસે સલિલાવહસિ વિજય વીયસોગાણ રાયહાણીણ મહબલપામોક્ષવા સત્તવિય બાલવયસયા રાયાણો હોત્થા)

‘होत्था’ सजाता कीदृशाः ? इत्याह—‘सहजाया’ सहजाता=सहोत्पन्ना, यावत्-सहवर्षिताः सहक्रीडितकाः, ‘पव्यइया’ प्रव्रजिताः=सहैव दीक्षां गृहीतवन्त इत्यर्थः । ततः खलु हे देवानुप्रिया ! अह ‘इमेण कारणेण’ वक्ष्यमाणेन कारणेन स्त्रीनामगोत्र कर्म निव्वत्तेमि’ निर्वर्तयामि=अर्जयामि तस्मिन् भवे मया स्त्रीनामगोत्र कर्ममित्यर्थः । येन कारणेन स्त्रीनामगोत्रकर्म निर्वर्तितं तदाह—‘जइण’ इत्यादि । यदि खलु यूय चतुर्थ=चतुर्थभक्त तप, उपसपद्य विहरथ, ‘तए’ ततः=तदा खलु अह पष्ठ=पष्ठभक्ततप, उपसपद्य विहरामि=तिष्ठामि । शेषं तथैव सर्वम्,

हम तुम आज से तीसरे भव में पश्चिम महा विदेहक्षेत्र में सलिलावती नाम के विजय में वर्तमान वीतशोका नाम की राजधानी में “पालव यस्य” सात राजपुत्र थे । उस समय हम लोगों का नाम महाबल आदि था (सहजाया जाव पव्यइया) हम सब साथ ही उत्पन्न हुए थे—और साथ ही बड़े हुए थे । साथ ही धूलि क्रीडा में रत रहा करते थे । निमित्त पाकर हम सातों ने ही उस समय दीक्षा धारण की थी । (तएण अह देवाणुप्पिया । इमेण तुव्व चोत्थ उवसपज्जित्ताण विहरई तएण अह छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरामि सेस तहेव सव्व) मैंने उस भव में इस कारण से स्त्री नाम गोत्रकर्म का बध किया कि तुम सब लोग यदि चतुर्थ भक्त करते तो हम भी तुम्हारे साथ चतुर्थ भक्त ही करते परन्तु कोई बहाना बनाकर पारणा के दिन भी छट्ठ आदि तपस्या कर लिया करते । यह सब विषय इसी अध्ययन में पहिले स्पष्ट किया जा चुका है ।

हे देवानुप्रियो ! हु अने तमे आनर्थी त्रीण भवमा पश्चिम भू-विदेहक्षेत्रमा सलिलावती नामना विजयमा विप्रमान वीतशोका नामनी राजधानीमा ‘पालवस्य’ सात राजपुत्रो जाता ते समये अमारा नामो महाबल वगेरे जाता (सहजाया जाव पव्यइया) अमे णधा साथे ज्ज न्भ्या जाता अने साथे साथे ज्ज मोटा थया जाता भाटीमा पण आपण्णे णधा साथे साथे ज्ज न्भ्या जाता समय आवता आपण्णे साते ज्जण्णो दीक्षा धारण करी डती

(तएण अह देवाणुप्पिया । इमेण कारणेण इस्त्रीनामगोत्रकम्म निव्वत्तेमि जइण तुव्व चोत्थ उवसपज्जित्ताण विहरई तएण अह छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरामि सेस तहेव सव्व)

ते भवमा आ कारणथी स्त्रीनाम गोत्र कर्मनो णध कयो तमे णधा न्यारे अनुर्यभक्त करता त्थारे हु पण तमारी साथे अनुर्यभक्त तो करतो ज्ज पण गमे ते णडाना छेडण पारणाना दिवसे पण छट्ठ वगेरे तपस्याओ करतो रहते डतो (आ विपेनु णधु वणुन आ अध्ययनमा पहेलाज्ज करवामा आच्यु छे)

પુદ્ગલપરિણામસ્તીતરોઽનિષ્ટતરોદુર્ગન્ધઃ મસરતિ, તર્હિ પુનરસ્યૌદારિકશરીરસ્ય શ્લેષ્માદિનાનાવિષમલપૂર્ણસ્ય શટનપતનધિંસનસ્વમાસ્ય પુદ્ગલપરિણામસ્તસ્માદ પ્યઽધિકતરોઽનિષ્ટદુર્ગન્ધો મવિવ્યતીત્યર્થઃ । તસ્માત્ હે દેવાનુપ્રિયાઃ । યૂયં સ્વ માનુષ્યકેષુ કામભોગેષુ મા 'સજ્જહ' મા સજ્જત-સજ્જ નો કુરુત, 'મા' इत्यस्य प्रत्येकमपिसम्भ्रन् । 'रज्जह' रज्जत=राग मा कुरुत, 'गिज्झह' गर्भध्वम् गृद्धि तृष्णा मा कुरुत, 'मुज्झह' मृद्यत मोह नो कुरुत विषयदोष मा विस्मरतेत्यर्थः, 'अज्झोववज्जह' अघ्युपपद्यध्यम्=कामभोगाना ध्यान मा कुरुते-त्यर्थः । हे देवानुप्रियाः । एव खलु यूय यममितस्तृतीये भयग्रहणे अपरविदेहवर्षे पश्चिभीयमहाविदेहक्षेत्रे सलिलावत्यां सलिलावतीनामके विजये वीतशोकायां राजधाया महाबलप्रमुखाः सप्तापि च बालवयसया राजानः=रानकुलगृहीतजन्मानः

यदि इस प्रकार का तोत्र अनिष्टतर दुर्गन्ध रूप पुद्गल परिणाम है तो फिर इस औदारिक शरीर का कि जो श्लेष्मादि नाना विषमल से परिपूर्ण हो रहा है तथा शटन पटन एव विध्वसन जिस का स्वाभाविक धर्म है पुद्गल परिणाम इस से भी अधिकतर अनिष्ट दुर्गन्ध वाताही होगा

(त मा ण तुब्भे देवाणुप्पिया । माणुस्सएसु कामभोगેસુ સજ્જહ, રજ્જહ ગિજ્ઝહ, મુજ્ઝહ, અજ્ઞોવવજ્જહ) इसलिये हे देवानुप्रियो ! तुम लोग मनुष्य भव सन्धी काम भोगों में मत फँसो, उन में राग भाव मत करो तृष्णा मत बढ़ाओ, मुग्ध मत बनो और न इन का ध्यान ही करो । (एव खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चवे भवग्गहणे अवर विदेहवासे सलिलावइसि विजण वीयसोगाए रायहाणीए मह बलपामोक्खा सत्तविय बालवयसया रायाणो होत्था) हे देवानुप्रियो !

૩૫ પુદ્ગલ પરિણામવાળુ થાય ત્યારે આ ઔદારિક શરીરનું કે જે શ્લેષ્મ વગેરે ધણા મળેથી ભરાયેલું છે-અને શટન, પતન, અને વિધ્વસન જેનું સ્વાભાવિક ધર્મ છે-પુદ્ગલ પરિણામ એના કરતા પણ વધુ અનિષ્ટ દુર્ગન્ધવાળું હશે જ

(ત મા ણ તુબ્ભે દેવાણુપ્પિયા । માણુસ્સેસુ કામભોગેસુ સજ્જહ, રજ્જહ ગિજ્ઝહ, મુજ્ઝહ, અજ્ઞોવવજ્જહ)

એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે મનુષ્યભવના કામ ભોગોમાં ફસાશો નહિ, તેમાં રાગ ઉત્પન્ન કરો નહિ, તેના પ્રતિ તૃષ્ણાનું વર્ધન કરો નહિ, મુગ્ધ થાઓ નહિ અને તેનો કોઈ દિવસ પણ વિચાર કરો જ નહિ

(એવં સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! તુમ્હે અમ્હે ઇમાઓ તચ્ચે ભવગ્ગહણે અપરવિદેહ વાસે સલિલાવइसि વિજણ વીયસોગાए રાયહાણીए મહબલપામોક્ખા સત્તવિય બાલવયસયા રાયાણો હોત્થા)

‘होत्था’ सजाता कीदृशाः ? इत्याह—‘सहजाया’ सहजाता=सहोत्पन्ना, यावत्-सहवर्षिताः सहक्रीडितकाः, ‘पव्यइया’ प्रव्रजिताः=सहैव दीक्षां गृहीतवन्त इत्यर्थः । ततः खलु हे देवानुप्रिया ! अह ‘इमेण कारणेण’ वक्ष्यमाणेन कारणेन स्त्रीनामगोत्र कर्म निवृत्तेमि’ निर्वर्तयामि=अर्जयामि तस्मिन् भवे मया स्त्रीनामगोत्र कर्ममित्यर्थः । येन कारणेन स्त्रीनामगोत्रकर्म निर्वर्तितं तदाह—‘जइण’ इत्यादि । यदि खलु यूय चतुर्थ=चतुर्थभक्त तप, उपसपद्य विहरथ, ‘तए’ ततः=तदा खलु अह पण्ठ=पण्ठभक्ततप, उपसपद्य विहरामि=तिष्ठामि । शेषं तथैव सर्वम्,

हम तुम आज से तीसरे भव में पश्चिम महा विदेह क्षेत्र में सलिलावती नाम के विजय में वर्तमान वीतशोका नाम की राजधानी में “यालव यस्य” सात राजपुत्र थे । उस समय हम लोगों का नाम महाबल आदि था (सहजाया जाव पव्यइया) हम सब साथ ही उत्पन्न हुए थे—और साथ ही बड़े हुए थे । साथ ही धूलि क्रीडा में रत रहा करते थे । निमित्त पाकर हम सातों ने ही उस समय दीक्षा धारण की थी । (तएण अह देवाणुप्पिया ! इमेण तुव्व चोत्थ उवसपज्जित्ताण विहरई तएण अह छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरामि सेस तहेव सब्ब) मैंने उस भव में इस कारण से स्त्री नाम गोत्रकर्म का बध किया कि तुम सब लोग यदि चतुर्थ भक्त करते तो हम भी तुम्हारे साथ चतुर्थ भक्त ही करते परन्तु कोई बहाना बनाकर पारणा के दिन भी छट्ठ आदि तपस्या कर लिया करते । यह सब विषय इसी अध्ययन में पहिले स्पष्ट किया जा चुका है ।

हे देवानुप्रियो ! हु अने तमे आलथी त्रीन भवमा पश्चिम मडा-विदेहक्षेत्रमा सलिलावती नामना विजयमा विप्रमान वीतशोका नामनी राजधानीमा ‘यालवयस्य’ सात राजपुत्रो हुता ते समये अमारा नामो महाबल वगेरे हुता (सहजाया जाव पव्यइया) अमे अधा साथे न न भ्या हुता अने साथे साथे न मोटा थया हुता माटीमा पण आपण्णे अधा साथे साथे न भ्या हुता समय आवता आपण्णे साते नण्णाओ दीक्षा धारणु करी हुती

(तएण अह देवाणुप्पिया ! इमेण कारणेण इत्थीनामगोयकम्म निवृत्तेमि जइण तुव्व चोत्थ उवसपज्जित्ताण विहरई तएण अह छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरामि सेस तहेव सब्ब)

ते लवमा आ कारणथी स्त्रीनाम गोत्र कर्मनो अध कथो तमे अधा न्यारे अनुर्थलक्ष्ता करता त्थारे हु पण तमारी साथे अनुर्थलक्ष्ता तो करतो न पण गमे ते भडाना छेडण पारणाना दिवसे पण छट्ठ वगेरे तपस्याओ करतो रहेतो हुतो (आ विपेनु अधु वणु न आ अध्ययनमा पहेला न करवामा आच्यु छे)

અરિમ નેવાધ્યયને પ્રાગુત્તમ-દોધ્યમ્ । તતસ્તદનન્તર રુદ્ધુ હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! યુર્ષ કાલમાસે કાલ કૃત્વા જય-તે વિમાને ઉત્પન્નાઃ=દેવભવ પ્રાપ્તાઃ, તન્ન રુદ્ધુ યુષ્માકં દેશેનાનિ દ્વાત્રિંશત્સાગરોપમાનિ રિથતિઃ, તતઃ રુદ્ધુ યુય તરમાદેવલોકાદનન્તરં વય=દેવશરીર, ત્યક્ત્વા હૈદ=અરિમન્નેવ જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે જન્મલબ્ધા યાવત્-
સ્થાનિ ૨ રાજ્યાનુપસપ્થ વિહરથ, તતસ્તદનન્તર રુદ્ધુ હે દેવાનુપ્રિયા ! તસ્માદ્ દેવલોકાદાયુક્ષ્યેણ ચ્યુત્વા યાવત્--'દારિયત્તાપ' દારિકતયા પુત્રીમાથેન 'પચ્ચાયાયા' પ્રત્યાયાતા=સજાતા-અથ તાન જિતશત્રુમમુખાન્ પટપિરાજ્ઞઃ પુનઃ

(તદ્દેવે દેવાણુપ્રિયા ! કાલમાસે કાલ કિચ્ચા જયતે વિમાણે ઉવવણ્ણા-તત્થણ તુભે દેસૂણાહ વત્તીસાહ સાગરોવમાહ ઠિઈ, તદ્દેવે તાઓ દેવલોયાઓ અણતર વય વહિત્તા હેવ જમ્બૂદ્વીપે ૨ જાવ સાહ ૨ રજ્જાહ ઉવસપજ્જિત્તાણ વિહરહ) હે દેવાનુપ્રિયો ! આપ લોક કાલ માસ મેં મૃત્યુ કે અવસર મેં કાલ કર-જયન્ત વિમાન મેં દેવ પર્યાય સે ઉત્પન્ન હુએ । વહાં આપ સવ કી કુછ કમ ૩૨ વત્તીસ સાગર કી સ્થિતિ હુઈ । જય યહ સ્થિતિ સમાપ્ત હો ચુકી-તો વસી સમય આપ લોક વહાં સે વચ્ચકર હસી જમ્બૂદ્વીપ મેં ઉત્પન્ન હો ગયે-ઔર અપને ૨ રાજ્યોં કા ભોગ કરને ન્હો । (તદ્દેવે દેવાણુપ્રિયા ! તાઓ દેવલોયાઓ આઠવણ્ણ જાવ દારિયત્તાપ પચ્ચાયાયા) તુમ લોકોં કે ચ્યુત હોને કે વાદ હે દેવાનુપ્રિયો ! મેં ભી વસ દેવલોક સે આયુક્ષ્ય હો જાને કે કારણ ચ્યુત હુઆ-ઔર ચ્યુત હોકર કન્યા રૂપ સે ઉત્પન્ન હો ગયા હૂં ।

(તદ્દેવે દેવાણુપ્રિયા ! કાલમાસે કાલ કિચ્ચા જયતે વિમાણે ઉવવણ્ણા તત્થણ તુભે દેસૂણાહ વત્તીસાહ સાગરોવમાહ ઠિઈ, તદ્દેવે તાઓ દેવલોયાઓ અણતરં વય વહિત્તા હેવ જમ્બૂદ્વીપે ૨ જાવ સાહ ૨ રજ્જાહ ઉવસપજ્જિત્તાણ વિહરહ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે કાળ માસમા મૃત્યુના વખતે કાલ કરીને જ્યત વિમાનમા દેવપર્યાયથી જન્મ પામ્યા ત્યા તમારી બધાની બત્રીસ (૩૨) સાગરની સ્થિતિ કરતા કંઈક ઓછી ઓટલી સ્થિતિ થઈ જ્યારે આ સ્થિતિ પૂરી થઈ ત્યારે તરત જ તમે ત્યાંથી ચલીને આ જમ્બૂદ્વીપમા ઉત્પન્ન થયા છે અને પોતપોતાના રાજ્યોનું શાસન ચલાવવા લાગ્યા છે

(તદ્દેવે દેવાણુપ્રિયા! તાઓ દેવલોયાઓ આઠવણ્ણ જાવ દારિયત્તાપ પચ્ચાયાયા)

ત્યારબાદ હે દેવાનુપ્રિયો ! હું પણ દેવલોકમાથી આયુક્ષ્ય હોવા બદલ આવીને અહીં પુત્રી રૂપમા જન્મ પામી છું

पूर्वजन्मवृत्तान्त स्मारयन्ती मल्ली यदबोचत् तद् गाथया प्राह—किं थ तय इत्यादि।
भो राजानः किं तद् विस्मृत युष्माभिः तदा=तस्मिन् काले पूर्वभवे जय तमवरे=
जयन्तनामकेऽनुत्तरविमाने 'देवाः' देवाभूत्वा 'बुत्था' यूयन् उपितः = निवास
कृतवन्तः, 'थ' इति यात्र्यालङ्कारे 'समयनिबद्धा=वयं परस्परेण प्रतिबोधनीया'
इत्येव सकेतेन निबद्धा = परिगृहीता, ता देवसम्बन्धिनी जाति जन्म 'समरह'
सस्मरतेति ॥ सू० ३४ ॥

मूलम्—तएणं तेसि जियसत्तपामोक्खाण छण्हं रायाण म-
ल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सुभेणं
परिणामेण पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहि विसुज्झमाणीहि
तयावरणिज्जाणं० कम्माणे खओवसमेण ईहावोहमग्गणगवेसणं
करेमाणाण सणिज्जाइस्सरणे समुप्पन्ने एयमट्ठं सम्म अभि-
समागच्छति, तएणं मल्ली अरहा जियसत्तपामोक्खे छप्पि
रायाणो समुप्पणजाइस्सरणे जाणित्ता गव्वमघराण दाराइ विहा-
डावेइ, तएणं ते जियसत्तपामोक्खा जेणेव मल्ली अरहा तेणेव

इसी पूर्वोक्त-पूर्वजन्मके वृत्तान्त को उन छह जितशत प्रमुख राजाओं
को याद कराती हुई मल्ली कुमारीने जो कुछ कहा वही गाथा द्वारा सूत्र-
कार प्रदर्शित करते हैं—वह गाथा “ किं थ तय पम्हुट्ट ” इत्यादि यह है ।
इसका तात्पर्य यह है—हे राजाओं ! क्या आपलोग वह पूर्वभव भूल
गये कि जिसमें हम सबलोग जयन्त नामके अनुत्तर विमान में देव होकर
रहे हैं । सो “ हम परस्पर से एक दूसरे को प्रतिबोधित करेंगे ” ऐसी
प्रतिज्ञासे प्रतिबद्ध उस देव भवसम्बन्धी जन्मको अब याद करो ॥सू० ३५॥

आ पूर्वजन्मनी विगत छये उत्तरात्रु प्रमुण राज्ञोने पतावती
मल्लीकुमारीये ने कछ उछु छे ते अड्डी सूत्रकार गाथा द्वारा स्पष्ट करे छे—
(किं थ तय पम्हुट्ट) इत्यादि

अने। अर्थ आ प्रभावे थाय छे के, हे राज्ञो। शु तमे लोका पूर्व
जयने लूली गया छे के न्यारे अमे अथा जयन्त नामना अनुत्तर विमानमा
देव थऽने रह्या हता तो “ अमे अक जीजने प्रतिबोधित करीशु ” आ
प्रभावे प्रतिज्ञाबद्ध थऽने भेजववा ते देवसवना जन्मने तमे याद करे ॥सू “ ३५ ”॥

અરિમન્નેવાધ્યયને પ્રાગુત્તવદોખ્યમ્ । તતરતદનન્તર મ્હલુ હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! યુર્ષ કાલમાસે કાલ કૃતા જયન્તે વિમાને ઉત્પન્નાઃ=દેવભવ માતાઃ, તન્ન મ્હલુ યુષ્માક દેશોનાનિ દ્વાત્રિંશત્સાગરોપમાનિ સ્થિતિઃ, તતઃ મ્હલુ યુય તરમાદેવલોકાદનન્તરં વય=દેવશરીર, ત્યક્ત્વા હૈદ્ર=અરિમન્નેય જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે જ મલ્લઘા યાવત્-
સ્થાનિ ૨ રાજ્યાનુપસપ્થ વિહરથ, તતરતદનન્તર સ્વત્વહ હે દેવાનુપ્રિયા ! તસ્માદ્ દેવલોકાદાયુ ક્ષયેણ ચ્યુત્વા યાવત્--'દારિયત્તાપ્' દારિયતયા પુત્રીભાવેન 'પચ્ચાયાયા' પ્રત્યાયાતા=સજાતા-અથ તાન જિતશત્રુમુખાન્ પડપિરાઇઃ પુનઃ

(તદ્દેવે દેવાણુપ્રિયા ! કાલમાસે કાલ કિન્ચા જયતે વિમાણે ઉવવણ્ણા-તત્થણ તુન્ને દેસૂણાહ વત્તીસાહ સાગરોવમાહ ઠિઈ, તદ્દેવે તાઓ દેવલોયાઓ અણતરં વય વહ્ત્તા હૈવેવ જમ્બૂદ્વીવે ૨ જાવ સાહર રજ્જાહ ઉવસપજ્જિત્તાણ વિહરહ) હે દેવાનુપ્રિયો ! આપ લોક કાલ માસ મેં મૃત્યુ કે અવસર મેં કાલ કર-જયન્ત વિમાન મેં દેવ પર્યાય સે ઉત્પન્ન હુએ । વહા આપ સય કી કુછ કમ ૨૨ વત્તીસ સાગર કી સ્થિતિ હુઈ । જય યહ સ્થિતિ સમાપ્ત હો ચુકી-તો ઉસી સમય આપ લોક વહાં સે વચ્ચકર હસી જમ્બૂદ્વીપ મેં ઉત્પન્ન હો ગયે-ઔર અપને ૨ રાજ્યોં કા ભોગ કરને લગે । (તદ્દેવે દેવાણુપ્રિયા ! તાઓ દેવલોયાઓ આઠવણ્ણ જાવ દારિયત્તાપ્ પચ્ચાયાયા) તુમ લોગો કે ચ્યુત હોને કે વાદ હે દેવાનુપ્રિયો ! મેં મી ઉસ દેવલોક સે આયુક્ષય હો જાને કે કારણ ચ્યુત હુઆ-ઔર ચ્યુત હોકર કન્યા રૂપ સે ઉત્પન્ન હો ગયા હૂં ।

(તદ્દેવે દેવાણુપ્રિયા ! કાલમાસે કાલ કિન્ચા જયતે વિમાણે ઉવવણ્ણા તત્થણં તુન્ને દેસૂણાહ વત્તીસાહ સાગરોવમાહ ઠિઈ, તદ્દેવે તાઓ દેવલોયાઓ અણતરં વય વહ્ત્તા હૈવેવ જમ્બૂદ્વીવે ૨ જાવ સાહર રજ્જાહ ઉવસપજ્જિત્તાણ વિહરહ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે કાળ માસમાં મૃત્યુના વખતે કાલ કરીને જ્ય ત વિમાનમાં દેવપર્યાયથી જન્મ પામ્યા ત્યા તમારી બધાની બત્રીસ (૩૨) સાગરની સ્થિતિ કરતા કંઈક ઓછી ઓટલી સ્થિતિ થઈ જ્યારે આ સ્થિતિ પૂરી થઈ ત્યારે તરત જ તમે ત્યાંથી ચલીને આ જમ્બૂદ્વીપમાં ઉત્પન્ન થયા છે અને પોતપોતાના રાજ્યોનું શાસન ચલાવવા લાગ્યા છે ।

(તદ્દેવે દેવાણુપ્રિયા ! તાઓ દેવલોયાઓ આઠવણ્ણ જાવ દારિયત્તાપ્ પચ્ચાયાયા)

ત્યારબાદ હે દેવાનુપ્રિયો ! હું પણ દેવલોકમાંથી આયુક્ષમ હોવા બદલ આવીને અહીં પુત્રી રૂપમાં જન્મ પામી છું

પૂર્વજન્મવૃત્તાન્ત સ્મારયન્તી મહી યદવોચત્ તદ્ ગાથયા પ્રાહ-કિં થ તય ઇત્યાદિ।
મો રાજાનઃ કિં તદ્ વિસ્મૃત યુગ્માભિઃ તદા=તસ્મિન્ કાલે પૂર્વભવે જય તપવરે=
જયન્તનામકેડનુત્તરવિમાને 'દેવાઃ' દેવાભૂત્વા 'બુત્યા' યૂયન્ ઉપિતઃ = નિત્યાસં
કૃતવન્તઃ, 'થ' ઇતિ વામ્યાલઙ્કારે 'સમયનિવદ્ધા=વયં પરસ્પરેણ પ્રતિબોધનીયા'
ઇત્યેવ સકેતેન નિવદ્ધાં = પરિગૃહીતા, તા દેવસમ્બન્ધિની જાતિ જન્મ 'સમરહ'
સસ્મરતેતિ ॥ સૂ૦ ૩૪ ॥

મૂલમ્-તણ્ણં તેસિ જિયસત્તપામોક્ષાણ છળહં રાયાણ મ-
હીણ વિદેહરાયવરકન્નાણ અતિણ એયમટ્ઠં સોચ્છા ણિસમ્મ સુમેણં
પરિણામેણ પસત્થેણં અજ્ઞવસાણેણં લેસાહિ વિસુજ્જમાણીહિ
તયાવરણિજ્જાણં કમ્માણે સ્વઓવસમેણ ઈહાવોહમગ્ગણગવેસણં
કરેમાણાણ સપિણજ્જાહસરણે સમુપ્પન્ને એયમટ્ઠ સમ્મં અભિ-
સમાગચ્છતિ, તણ્ણં મલ્લી અરહા જિયસત્તપામોક્ષે છપ્પિ
રાયાણો સમુપ્પણજાહસરણે જાણિત્તા ગઠ્ઠમઘરાણ દારાહ વિહા-
ડાવેહ, તણ્ણં તે જિયસત્તપામોક્ષા જોણેવ મહી અરહા તેણેવ

इसी पूर्वोक्त-पूर्व जन्मके वृत्तान्त को उन छह जितशत्रु प्रमुख राजाओं
को याद कराती हुई मल्ली कुमारीने जो कुछ कहा वही गाथा द्वारा सूत्र-
कार प्रदर्शित करते हैं-वह गाथा “ किं थ तय पम्हुट्ट ” इत्यादि यह है ।
इसका तात्पर्य यह है-हे राजाओं ! क्या आपलोग वह पूर्वभव भूल
गये कि जिसमें हम सबलोग जयन्त नामके अनुत्तर विमान में देव होकर
रहे हैं । सो “ हम परस्पर से एक दूसरे को प्रतिबोधित करेंगे ” ऐसी
प्रतिज्ञासे प्रतिबद्ध उस देव भवसम्बन्धी जन्मको अब याद करो ॥सू० ३५॥

આ પૂર્વજન્મની વિગત છએ છતરાત્રુ પ્રમુખ રાજાઓને યાદાવતી
મલ્લીકુમારીએ જે કંઈ કહ્યું છે તે અહીં સૂત્રકાર ગાથા દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે-
(કિંથ તય પમ્હુટ્ટ) ઇત્યાદિ

એનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે કે, હે રાજાઓ શું તમે લોકો પૂર્વ
ભવને ભૂલી ગયા છો કે ન્યારે અમે બધા જયન્ત નામના અનુત્તર વિમાનમાં
દેવ થઈને રહ્યા હતા તો “ અમે એક બીજાને પ્રતિબોધિત કરીશું ” આ
પ્રમાણે પ્રતિજ્ઞાબદ્ધ થઈને એળવવા તે દેવભવના જન્મને તમે યાદ કરો ॥સૂ “૩૫”॥

અરિમનેવાધ્યયને પ્રાગુત્તવદોધ્યમ્ । તતરતદનન્તર રુત્તુ હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! યુર્ષ
કાલમાસે કાલ વૃત્તા જયન્તે વિમાને ઉત્પન્નાઃ=દેવભવં પ્રાપ્તાઃ, તપ્ત રુત્તુ યુષ્માકં
દેશેનાનિ દ્વાત્રિશત્સાગરોપમાનિ સ્થિતિઃ, તતઃ રુત્તુ યુય તરમાદેવલોકાદનન્તર
વય=દેવશરીર, ત્યક્ત્વા રૂદૈર=અરિમનેઽ જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે જમલગ્ધા યાવત્-
સ્થાનિ ૨ રાજ્યાનુપસપદ્ય વિહરથ, તતરતદનન્તર રુત્ત્વહ હે દેવાનુપ્રિયા ! તસ્માદ્
દેવલોકાદાયુક્ષ્યેણ ચ્યુત્યા યાવત્--'દારિયત્તાણ' દારિયતયા પુત્રીભાવેન
' પચ્ચાયાયા ' પ્રત્યાયાતા=સજાતા-અથ તાન્ ક્રિતશત્રુમમુખાન્ પટપિરાગ્નઃ પુનઃ

(તદ્દેવે દેવાણુપ્રિયા ! કાલમાસે કાલ કિચ્ચા જયન્તે વિમાણે
ઉવવણ્ણા-તત્થણ તુબ્બે દેસૂણાઙ્ગ વત્તીસાઙ્ગ સાગરોવમાઙ્ગ ટિઙ્ગ, તદ્દેવે
તુબ્બે તાઓ દેવલોયાઓ અણતર વય ચ્ચિત્તા રૂદ્ધેવ જમ્બૂદ્વીપે ૨ જાવ
સાઙ્ગ રજ્જાઙ્ગ ઉવસપજ્જિત્તાણ વિહરઙ્ગ) હે દેવાનુપ્રિયો ! આપ લોક કાલ
માસ મેં મૃત્યુ કે અવસર મેં કાલ કર-જયન્ત વિમાન મેં દેવ પર્યાય સે
ઉત્પન્ન હુએ । વહા આપ સય કી કુછ કમ ૩૨ વત્તીસ સાગર કી સ્થિતિ
હુઈ । જય યહ સ્થિતિ સમાપ્ત હો ચુકી-તો ઉસી સમય આપ લોક વહા
સે વચકર હસી જમ્બૂદ્વીપ મેં ઉત્પન્ન હો ગયે-ઔરઅપને ૨ રાજ્યોં કા ભોગ
કારને ન્હોગે । (તદ્દેવે દેવાણુપ્રિયા ! તાઓ દેવલોયાઓ આઠકલ્પ
ણ જાવ દારિયત્તાણ પચ્ચાયાયા) તુમ લોગોં કે ચ્યુત હોને કે બાદ
હે દેવાનુપ્રિયો ! મેં બી ઉસ દેવલોક સે આયુક્ષ્ય હો જાને કે કારણ ચ્યુત
હુઆ-ઔર ચ્યુત હોકર કન્યા રૂપ સે ઉત્પન્ન હો ગયા હૂં ।

(તદ્દેવે દેવાણુપ્રિયા ! કાલમાસે કાલ કિચ્ચા જયન્તે વિમાણે ઉવવણ્ણા
તત્થણ તુબ્બે દેસૂણાઙ્ગ વત્તીસાઙ્ગ સાગરોવમાઙ્ગ ટિઙ્ગ, તદ્દેવે તાઓ દેવલોયાઓ
અણતર વય ચ્ચિત્તા રૂદ્ધેવ જમ્બૂદ્વીપે ૨ જાવ સાઙ્ગ રજ્જાઙ્ગ ઉવસપજ્જિત્તાણ વિહરઙ્ગ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે કાળ માસમા મૃત્યુના વખતે કાલ કરીને જ્ય ત
વિમાનમા દેવપર્યાયથી જન્મ પામ્યા ત્યા તમારી બધાની બત્રીસ (૩૨)
સાગરની સ્થિતિ કરતા કંઈક ઓછી ઓટલી સ્થિતિ થઈ જ્યારે આ સ્થિતિ
પૂરી થઈ ત્યારે તરત જ તમે ત્યાંથી ચલીને આ જમ્બૂદ્વીપમા ઉત્પન્ન થયા છે
અને પોતપોતાના રાજ્યોનું શાસન ચલાવવા લાગ્યા છે

(તદ્દેવે દેવાણુપ્રિયા! તાઓ દેવલોયાઓ આઠકલ્પણ જાવ દારિયત્તાણ પચ્ચાયાયા)

ત્યારબાદ હે દેવાનુપ્રિયો ! હું પણ દેવલોકમાથી આયુક્ષ્ય હોવા બદલ
આવીને અહીં પુત્રી રૂપમા જન્મ પામી છું

सकारेइ जाव पडिविसजेइ, तएण ते जियसत्तूपामोक्खा कुंभ-
एण रणणा विसज्जित्ता समाणा जेणेव साइर रज्जाइ जेणेव
नगराइं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सगाइ रज्जाइं उव-
सपज्जित्ता विहरति, तएणं मल्ली अरहा 'सुवच्छरावसाणे
निक्खमिस्सामि' ति मणं पहारेइ ॥ सू० ३६ ॥

टीका—'तएण तेसि' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु तेषा जितशत्रुप्रमुखाणां
पण्णा राज्ञा, मल्लया विदेहराजवरकन्याया अन्तिके=ममीपे 'एयमट्ठ' एतमर्थ=
पूर्वभगवृत्तान्तरूपमुक्तमर्थं श्रुत्वा=आकर्ण्य, निशम्य=हृद्यार्थ्य, शुभेन परिणामेन
प्रशस्तेनाध्यवसायेन लेश्याभिः 'विसुज्झमाणीहिं' विशुध्यतीः 'तयावरणिज्जाण'
तदावरणीयानां=ज्ञानावरणीयादीना, कर्मणा क्षयोपशमेन 'ईहावोहमग्गगवेसण'
इहाऽपोहमार्गेण गवेसणम्-ईहा-अर्थ विशेष प्रियकरसमालोचनाभिषु वो मतेव्या-

'तएण तेसि जियसत्तू पामोक्खाण' इत्यादि

(तएण) इस के बाद (तेसि जियसत्तूपामोक्खाणं छण्ह रायाण
मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म, सुभेण
परिणामेण पसत्थेणं अज्झवसाणेण लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावर
णिज्जाणं० कम्माण खओवसमेण ईहावोयमग्गणगवेसणकरेमाणार्ण
सण्णि जइस्सरणे समुप्पन्ने) उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं को जब
उन्हो ने विदेहराजवरकन्या मल्ली कुमारी से इस प्रकार सुना और
उसका मन से अच्छी तरह विचार किया-तो शुभ परिणाम से प्रशस्त
अध्यवसाय से लेश्याओं की विशुद्धि से, तथा तदावरणीयकर्मों के

'तएण तेसि जियसत्तू पामोक्खाण' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेसि जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह रायाण मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए
अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म, सुभेण परिणामेण पसत्थेण अज्झवसाणेण लेसाहिं
विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाण० कम्माण खओवसमेण ईहावोयम गणगवेसण
करेमाणार्ण सण्णिजाइस्सरणे समुप्पन्ने)

एतशत्रु प्रमुखा छओ राजाओओ ल्यारे विदेहराजवर कन्या मल्ली
कुमारीना मुअथी आ णधी पूर्वलवनी विगत सालणी अने मनभा तेना उपर
सारी चेठे विचार कथो ल्यारे शुभ परिणामथी, प्रशस्त अध्यवसायथी लेश्या-
ओनी विशुद्धिथी तेमअ तदावरणीय कर्मना क्षयोपशमथी, ईहा, अपोह,

उवागच्छति, उवागच्छिता तएण महव्वलपामोक्खा सत्तविय
 वालवयंसा एगयओ अभिसमन्नागयायावि होत्था तएणं मल्ली
 अरहा ते जियसत्तप्पामोक्खे छप्पियरायाणो एवं वयासी-
 एव खलु देवाणुप्पिया । ससारभयउविग्गा जाव पव्वयामि, तं
 तुब्भे णं किं करेह किं च ववसह जाव किं भे हियसामत्थे ?,
 तएणं जियसत्तप्पामोक्खा मल्लि अरह एव वयासी — जइणं
 तुब्भे देवाणुप्पिए ससार जाव पव्वयह अम्हे णं देवाणुप्पिए!
 के अण्णे आलंघणे वा आहारे वा पडिवधे वा जह चेव णं
 देवाणुप्पिए । तुब्भे अम्हेइओ तच्चेभवग्गहणे बहुसु कज्जेसु
 य मेढी पमाण जाव धम्मधुरा होत्था, तहा चेव णं देवाणु-
 प्पिये ! इप्पिहपि जाव भविस्सह, अम्हे वि य णं देवाणु० ससार
 भयउविग्गा जाव भीया जम्मणमरणाण देवाणुप्पियाण सद्धिं
 मुडा भवित्ता जाव पव्वयामो । तएण मल्ली अरहा ते जियस-
 त्तपामोक्खे एव वयासी-जण्ण तुब्भे ससार जाव मए सद्धिं
 पव्वयह, त गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया सएहिं रज्जेहि जेठ्ठे
 पुत्ते रज्जे ठावेह, ठावित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ
 दुरुहह दुरुढा समाणा मम अतिय पाउब्भवह, तएण ते
 जियसत्तप्पामोक्खा मल्लिस्स अरहओ एयमट्ठ पडिसुणोति, तएणं
 मल्ली अरहा ते जियसत्त० गहाय जेणेव कुभए तेणेव उवाग-
 च्छइ, उवागच्छिता कुभगस्स पाएसु पाडेइ, तएण कुभए ते
 जियसत्तप्पामोक्खे विपुलेण असण४

सकारेइ जाव पडिविसजेइ, तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा कुंभ-
एण रणणा विसज्जित्ता समाणा जेणेव साइर रज्जाइ जेणेव
नगराइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगाइ रज्जाइं उव-
सपज्जित्ता विहरति, तएणं मल्ली अरहा 'सुवच्छरावसाणे
निक्खमिस्सामि' ति मणं पहारेइ ॥ सू० ३६ ॥

टीका—'तएण तेमि' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु तेषा जितशत्रुप्रमुखाणा
पण्णा राज्ञा, मल्ल्या विदेहराजवरकन्याया अन्तिके=ममीपे 'एयमट्ठ' एतमर्थ=
पूर्वभयवृत्तान्तरूपमुक्तमर्थं श्रुत्वा=आकर्ण्य, निशम्य=हृद्यधार्य, शुभेन परिणामेन
प्रशस्तेनाध्यवसायेन लेश्याभिः 'विसुज्झमाणीहिं' विशुध्यतीः 'तयावरणिज्जाण'
तदावरणीयाना=ज्ञानावरणीयादीना, कर्मणा क्षयोपशमेन 'इहावोढमग्गगवेसण'
इहाऽपोढमार्गेण गवेसणम्-ईहा-अर्थ विशेष विरयकसमालोचनाभिमुखो मतेव्या-

'तएण तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण' इत्यादि

(तएण) इस के बाद (तेसिं जियसत्तूपामोक्खाण छण्ह रायाण
मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म, सुभेण
परिणामेण पसत्येणं अज्झवसाणेण लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावर
णिज्जाणं० कम्माण खओवसमेणं ईहावोयमग्गणगवेसणकरेमाणार्ण
सण्णि जइस्सरणे समुप्पन्ने) उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं को जब
उन्हो ने विदेहराजवरकन्या मल्ली कुमारी से इस प्रकार सुना और
उसका मन से अच्छी तरह विचार किया-तो शुभ परिणाम से प्रशस्त
अध्यवसाय से लेश्याओं की विशुद्धि से, तथा तदावरणीयकर्मों के

'तएण तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेसिं जियसत्तू पामोक्खाण छण्ह रायाण मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए
अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म, सुभेण परिणामेण पसत्येण अज्झवसाणेण लेसाहिं
विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाण० कम्माण खओवसमेण ईहावोयम गणगवेसण
करेमाणण सण्णिजाइस्सरणे समुप्पन्ने)

एतशत्रु प्रमुख छथे राजाओथे तयारे विदेहराजवर कन्या मल्ली
कुमारीना सुभधी आ भधी पूर्वभवनी विगत सालणी अने मनमा तेना उपर
सारी चेठे विचार कथो तयारे शुभ परिणामथी, प्रशस्त अध्यवसायथी लेश्या-
ओनी विशुद्धिथी तेमज तदावरणीय कर्मोना क्षयोपशमथी, ईहा, अधोऽह,

પારઃ, વિચાર इत्यर्थ । स चात्र—“ किं मल्लो कथित पूर्वभववृत्तान्तस्तथा संजातः, अपिच देवभव माप्य जयन्तविमाने किं ययमवस्थिता आस्मे ” त्वेवरूपो बोध्य । अपोह-निश्चय, स चेत्थम्-उक्तविचारे निरन्तरसञ्चनाया बुद्धे. परिणाम खल्वेवमभवत्—‘ मल्ल्युक्तरीत्या निश्चयेन यय सप्तानगाराः पूर्वभवे तपोऽनुष्ठानं कृतवन्तः, तत्प्रमाणान्च जयन्तविमाने देयत्वेन संजाता ” इति । ईहापोहाभ्यां

क्षયોપશમ સે ઈહા, અપોહ માર્ગેણ એવ ગવેષણ કરને પર સજિ જાતિ સ્મરણ જ્ઞાન ઉત્પન્ન હો ગયા । અર્થ વિશેષ કો વિષય કરને વાલી સમાલોચના કી તરફ છુકના હુઆ જો મતિ વ્યાપારરૂપ વિચાર હોતા હૈં ઉસકા નામ ઈહા હૈં । યદા હસકા સમન્વય હસ તરહ સે સમજના ચાહિયે-મલ્લી કુમારી ને જો પૂર્વભવીય વૃત્તાન્ત કહા હૈં વહ યયા ઉસી તરહ સે હુઆ હૈં

કયા દેવ ભવ કો પ્રાપ્તકાર હમ લોગ જયન્ત વિમાન મેં સાથ રહે હૈં ? ઈહા કે ઘાદ જો નિશ્ચય રૂપ યોધ હોતા હૈં ઉસકા નામ અપોહ હૈં-હસકા સબધ યદા હસ પ્રકાર સે જાનના ચાહિયે-જવ ઉક્ત વિચાર મેં બુદ્ધિ સલગ્ન હો ગઈ તો ઉસકા પરિણામ હસ પ્રકાર નિકલા-ઠીક હૈં-મલ્લી કુમારી કે કથનાનુસાર હમ સાતોં અનગારોં ને તપોઅનુષ્ઠાન નિયમતઃ ક્રિયા હૈં-હસસે ઉસકે પ્રભાવ સે હમ લોગ કાલ માસ મેં કાલકર જયન્ત વિમાન મેં દેવ કી પર્યાય અવદ્ય ઉત્પન્ન હુઅ હૈં । હસ પ્રકાર કા ઈહિત અર્થ મેં જો નિશ્ચયાત્મક વિચાર હોતા હૈં વહી અપોહ હૈં ।

માર્ગણ અને ગવેષણ કરવાથી તેમને સતી-જાતિ સ્મરણ જ્ઞાન થયું અર્થ વિશેષને વિષમ બનાવીને સમાલોચના તરફ વળતો જે મતિવ્યાપાર રૂપ વિચાર હોય છે તે ‘ ઇહા ’ છે અહીંયા ઇહા વિષેનો સબધ આ રીતે સમજવો જોઈએ કે મલ્લીકુમારીના મુખેથી પૂર્વલવની વિગત સાંભળીને રાજાએના મનમાં જે આ પ્રભાણેના વિચારો ઉત્પન્ન થયા કે મલ્લીકુમારીએ જે પૂર્વલવનું વૃત્તાન્ત કહ્યું છે તે શું અરેખર તેમજ હશે !

દેવલવ મેળવીને શું અમે બધા એકી સાથે જયન્ત વિમાનમાં રહ્યા છીએ ? ઇહા પછી જે નિશ્ચય રૂપ યોધ થાય છે તેનું નામ અપોહ છે, તેનો સબધ અહીં આ પ્રભાણે સમજવો જોઈએ કે જ્યારે પૂર્વલવના વિચારોમાં બુદ્ધિ સલગ્ન થઈ ગઈ ત્યારે તેના પરિણામમાં તેઓના મનમાં આ પ્રભાણેના નિશ્ચય થયો કે ‘ ઠીક છે ’ મલ્લીકુમારીના કહેવા મુજબ અમે સાતે અને ગારોએ મળીને નિયમ પૂર્વક તપસ્યા કરી છે તેના પ્રભાવથી અમે હોકો કાળ માસમાં કાળ કરીને જયન્ત વિમાનમાં દેવની પર્યાયથી ચોક્કસપણે જન્મ પામ્યા હોઈશું ” એ અર્થમાં જે નિશ્ચયાત્મક વિચાર ઉત્પન્ન હોય છે તે જ અપોહ

નિશ્ચિતોર્થો માર્ગણગવેષણાભ્યા દૃઢીભવતીત્યત્આહ — ‘ મરગણગવેષણ ’ इति, માર્ગણ-ઈદાપોદ્દાભ્યા નિશ્ચિતાર્થેઽન્વયધર્માલોચનઅન્વયઃ-સદ્ભાવ-યથા-અસ્માસુ સપ્તસુ પરસ્પર સુહૃદ્ભાવ વિષયવિરાગદર્શનેન પૂર્વભવે સદાવસ્થાનપૂર્વક તપશ્ચરણ, તદનુ જયન્તવિમાનાવસ્થાન દૃઢ નિશ્ચીયતે, ગવેષણમ્-ઈદાપોદ્દાભ્યા નિશ્ચિતેઽર્થે વ્યતિરેકધર્માલોચનમ્ વ્યતિરેકો નામ-અભાવઃ, યથા-અસ્માસુ સપ્તસુ યદિ પરસ્પરસુહૃદ્ભાવો ન સ્યાત્, તથા યદિ વિષયવિરાગો ન સ્યાત્, તર્હિ પૂર્વભવસમ્બન્ધિ સદાવસ્થાનપૂર્વક તપશ્ચરણ જયન્તવિમાનાવસ્થાન ચ ન સ્યાત્, इत्येवमन्वयव्यतिरेक-ધર્માલોચનાદુક્તાર્થસ્ય નિશ્ચયો દૃઢતરો ભવતીતિ તત્તદેવમીદાઽપોદ્દામાર્ગણગવેષણં

ईहा और अपोह से निश्चिन किया गया पदार्थ मार्गण और गवेषण से दृढ हो जाता है । मार्गण शब्द का अर्थ है ईहा । और अपोह से निश्चिन हुए अर्थ में अन्वय धर्म की पर्यालोचना करना । जैसे ऐसा विचार आता कि इन सातोमें जय परस्पर में सुहृद्भाव (मैत्री भाव) और विषय विराग देखा जाता है तो इस से यह बात दृढरूप से निश्चित हो जाती है कि इन लोगो ने सदावस्थान पूर्वक तपश्चरण किया है और बाद में जयन्त विमान में ये उत्पन्न हुए हैं । गवेषण शब्द का अर्थ है ईहा और अपोह से निश्चिन हुए पदार्थ में व्यतिरेक धर्म की आलोचना करना । जैसे इन सातों में यदि परस्पर में सुहृद्भाव तथा विषय विराग नहीं होता तो पूर्वभव में इन का साथ २ रहकर तपश्चरण करना, तथा जयन्त विमान में उत्पन्न होना भी नहीं होता ।

इस तरह अन्वय और व्यतिरेक धर्म की आलोचना से उक्तार्थ का निश्चय दृढतर हो जाता है । सजी जीवों के पूर्व भव का ही स्मरण इस

ઇહા અને અપોહથી નિશ્ચિત કરાએલો પદાર્થ માર્ગણ તેમજ ગવેષણથી દૃઢ થઈ જાય છે માર્ગણ શબ્દનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે ઇહા અને અપોહથી નિશ્ચિત થયેલા અર્થમાં અન્વય ધર્મની પર્યાલોચના કરવી જેમકે અત્યારે સાતેમાં પરસ્પર મિત્રભાવ અને વિષય વિરાગ (વિશેષ રાગ) જોવાય છે ત્યારે એનાથી આ વાત ચોક્કસપણે પુષ્ટ થાય છે કે આ લોકોએ સદાવસ્થાનપૂર્વક પૂર્વભવમાં તપશ્ચરણ કર્યું છે અને ત્યારબાદ તેઓ જયન્ત વિમાનમાં ઉત્પન્ન થયા છે ‘ ગવેષણ ’ શબ્દનો અર્થ છે, ઇહા અને અપોહથી નિશ્ચિત થયેલા પદાર્થમાં વ્યતિરેક ધર્મની આલોચના કરવી જેમકે આ માનેમાં હમણા એડ ખીજા માટે સુહૃદ્ભાવ તેમજ વિષય વિરાગ હોત નહિ તો પૂર્વભવમાં તેમનું સાથે રહીને તપ કરવું તેમજ જયન્ત વિમાનમાં જન્મ પામવું પણ થાત નહિ આ રીતે અન્વય અને વ્યતિરેક ધર્મની આલોચનાથી ઉપર વર્ણવેલામાં આવેલા અર્થનો નિશ્ચય દૃઢ રૂપે થઈ જાય છે સતી જીવોના પૂર્વભવનું સ્મર

પારઃ, વિચાર इत्यर्थ । स चात्र—“ किं मरणो कथित पूर्वमवृत्तान्तस्तथा सजातः, अपिच देवभव प्राप्य जयन्तविमाने किं ययमवस्थिता आस्मे ” त्वेवरूपो बोध्य । अपोह—निश्चयः, स चेत्थम्—उक्तविचारे निरन्तरसम्भवाया बुद्धेः परिणाम खल्वेवमभवत्—“ मल्ल्युक्तरीत्या निश्चयेन यय सप्तानगाराः पूर्वभवे तपोऽनुष्ठानं कृतवन्तः, तत्प्रभावाच्च जयन्तविमाने देवत्वेन सजाता ” इति । ईहापोहाभ्यां

क्षયોપશમ સે ર્હા, અપોહ માર્ગેણ એવ ગવેષણ કરને પર સજિ જાતિ સ્મરણ જ્ઞાન ઉત્પન્ન હો ગયા । અર્થ વિશેષ કો વિષય કરને વાલી સમાલોચના કી તરફ છુટના હુઆ જો મતિ વ્યાપારરૂપ વિચાર હોતા હૈં ઉસકા નામ ર્હા હૈં । યદા હસકા સમન્વય હમ તરહ સે સમજના ચાહિયે—મલ્લી કુમારી ને જો પૂર્વભવીય ઘૃત્તાન્ત કહા હૈં વદ યયા ઉસી તરહ સે હુઆ હૈં

કયા દેવ ભવ કો પ્રાપ્તકર હમ લોગ જયન્ત વિમાન મેં સાથ રહે હૈં ? ર્હા કે ઘાદ જો નિશ્ચય રૂપ યોધ હોતા હૈં ઉસકા નામ અપોહ હૈં—હસકા સવધ યદા હસ પ્રકાર સે જાનના ચાહિયે—જઘ ઉક્ત વિચાર મેં બુદ્ધિ સલગ્ન હો ગઈ તો ઉસકા પરિણામ હસ પ્રકાર નિકલા—ઠીક હૈં—મલ્લી કુમારી કે કથનાનુસાર હમ સાતોં અનગારોં ને તપોઅનુષ્ઠાન નિયમતઃ કિયા હૈં—હસસે ઉસકે પ્રભાવ સે હમ લોગ કાલ માસ મેં કાલકર જયન્ત વિમાન મેં દેવ કી પર્યાય અવરૂપ ઉત્પન્ન હુઈ હૈં । હસ પ્રકાર કા ર્હિત અર્થ મેં જો નિશ્ચયાત્મક વિચાર હોતા હૈં વહી અપોહ હૈં ।

માર્ગણ અને ગવેષણ કરવાથી તેમને સરી-મતિ સ્મરણ જ્ઞાન થયું અર્થ વિશેષને વિષમ બનાવીને સમાલોચના તરફ વળતો જે મતિવ્યાપાર રૂપ વિચાર હોય છે તે ‘ ઇહા ’ છે અહીંયા ઇહા વિષેનો સબધ આ રીતે સમજવો જોઈએ કે મલ્લીકુમારીના મુખેથી પૂર્વલવની વિગત સાંભળીને રાજાએના મનમાં જે આ પ્રમાણેના વિચારો ઉત્પન્ન થયા કે મલ્લીકુમારીએ જે પૂર્વલવનું ઘૃત્તાન્ત કહ્યું છે તે શું ખરેખર તેમજ હશે ।

દેવલવ મેળવીને શું અમે બધા એકી સાથે જયન્ત વિમાનમાં—રહ્યા છીએ ? ઇહા પછી જે નિશ્ચય રૂપ બોધ થાય છે તેનું નામ અપોહ છે, તેનો સબધ અહીં આ પ્રમાણે સમજવો જોઈએ કે જ્યારે પૂર્વલવના વિચારોમાં બુદ્ધિ સલગ્ન થઈ ગઈ ત્યારે તેના પરિણામમાં તેઓના મનમાં આ પ્રમાણેનો નિશ્ચય થયો કે ‘ ઠીક છે ’ મલ્લીકુમારીના કહેવા મુજબ અમે સાતે અનગારોએ મળીને નિયમ પૂર્વક તપસ્યા કરી છે તેના પ્રભાવથી અમે લોકો કાળ માસમાં કાળ કરીને જયન્ત વિમાનમાં દેવની પર્યાયથી ચોક્કસપણે જન્મ પામ્યા હોઈશું આ રીતે ઇહિત અર્થમાં જે નિશ્ચયાત્મક વિચાર ઉત્પન્ન હોય છે તે જ અપોહ છે

નિશ્ચિતોર્થો માર્ગણગવેષણાભ્યા દૃઢીભવતીત્યત્તઆહ — ' મમગણગવેષણ ' इति, માર્ગણ-ઈદાપોદ્દાભ્યા નિશ્ચિતાર્થેઽન્વયધર્માલોચનઅન્વયઃ-સદ્ભાવ-યથા-અસ્માસુ સપ્તસુ પરસ્પર સુહૃદ્ભાવ વિષયવિરાગદર્શનેન પૂર્વભવે સદાવસ્થાનપૂર્વક તપશ્ચરણ, તદનુ જયન્તવિમાનાવસ્થાન દૃઢ નિશ્ચીયતે, ગવેષણમ્-ઈદાપોદ્દાભ્યા નિશ્ચિતેઽર્થે વ્યતિરેકધર્માલોચનમ્ વ્યતિરેકો નામ-અભાવઃ, યથા-અસ્માસુ સપ્તસુ યદિ પર સ્પરસુહૃદ્ભાવો ન સ્યાત્, તથા યદિ વિષયવિરાગો ન સ્યાત્, તર્હિ પૂર્વભવસમ્બન્ધિ સદાવસ્થાનપૂર્વક તપશ્ચરણ જયન્તવિમાનાવસ્થાન ચ ન સ્યાત્, इत्येवमन्वयव्यतिरेक-ધર્માલોચનાદુક્તાર્થસ્ય નિશ્ચયો દૃઢતરો ભવતીતિ તદેવમીદાઽપોદ્દામાર્ગણગવેષણં

ईहा और अपोह से निश्चिन किया गया पदार्थ मार्गण और गवेषण से दृढ हो जाता है । मार्गण शब्द का अर्थ है ईहा । और अपोह से निश्चिन हुए अर्थ में अन्वय धर्म की पर्यालोचना करना । जैसे ऐसा विचार आता कि इन सातोमें जब परस्पर में सुहृद्भाव (मैत्री भाव) और विषय विराग देखा जाता है तो इस से यह बात दृढरूप से निश्चित हो जाती है कि इन लोगो ने सदावस्थान पूर्वक तपश्चरण किया है और बाद में जयन्त विमान में ये उत्पन्न हुए हैं । गवेषण शब्द का अर्थ है ईहा और अपोह से निश्चिन हुए पदार्थ में व्यतिरेक धर्म की आलोचना करना । जैसे इन सातोमें यदि परस्पर में सुहृद्भाव तथा विषय विराग नहीं होता तो पूर्वभव में इन का साथ २ रहकर तपश्चरण करना, तथा जयन्त विमान में उत्पन्न होना भी नहीं होता ।

इस तरह अन्वय और व्यतिरेक धर्म की आलोचना से उक्तार्थ का निश्चय दृढतर हो जाता है । सजी जीवों के पूर्व भव का ही स्मरण इस

ઈહા અને અપોહથી નિશ્ચિત કરાએલો પદાર્થ માર્ગણ તેમજ ગવેષણથી દૃઢ થઈ જાય છે માર્ગણ શબ્દનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે ઈહા અને અપોહથી નિશ્ચિત થયેલા અર્થમાં અન્વય ધર્મની પર્યાલોચના કરવી જેમકે અત્યારે સાતેમાં પરસ્પર મિત્રભાવ અને વિષય વિરાગ (વિશેષ રાગ) જોવાય છે ત્યારે એનાથી આ વાત ચોક્કસપણે પુષ્ટ થાય છે કે આ લોકોએ સદાવસ્થાનપૂર્વક પૂર્વભવમાં તપશ્ચરણ કર્યું છે અને ત્યારબાદ તેઓ જયન્ત વિમાનમાં ઉત્પન્ન થયા છે ' ગવેષણ ' શબ્દનો અર્થ છે, ઈહા અને અપોહથી નિશ્ચિત થયેલા પદાર્થમાં વ્યતિરેક ધર્મની આલોચના કરવી જેમકે આ માનેમાં હમણા એક ખીજા માટે સુહૃદ્ભાવ તેમજ વિષય વિરાગ હોત નહિ તો પૂર્વભવમાં તેમનું સાથે રહીને તપ કરવું તેમજ જયન્ત વિમાનમાં જન્મ પામવું પણ થાત નહિ આ રીતે અન્વય અને વ્યતિરેક ધર્મની આલોચનાથી ઉપર વર્ણવેલામાં આવેલા અર્થનો નિશ્ચય દૃઢ રૂપે થઈ જાય છે સજી જીવોના પૂર્વભવનું સ્મર

यूय संसारभयोद्धिना यावत् पत्रजघ=पत्रजित्यथ, अम्माक खलु हे देवानुप्रियाः !
 किमन्यदालम्बन वा सहायो वा कोऽन्य आधारी वा=आश्रयो वा, कः प्रतिबन्धो
 अकार्यकरणे प्रतिरोधकः सन्मार्गे स्थापयितु धर्मोपदेशक इत्यर्थः वा, यथैव खलु
 हे देवानुप्रियाः ! यूयमस्माकमितस्तृतीयभवग्रहणे बहुषु धार्येषु च मेधिः मेधिव-
 दालम्बनम्-आधारी वा किं च यूय प्रमाण=युष्माननुसृत्य वयमास्मेत्यर्थः, यावद-
 चक्षुर्भूतः=नेत्रवत् समविषममार्गदर्शकाः, धर्मधुरा =धुरङ्गधुरः धर्मस्य धुर =वाक्का
 धर्मप्रवर्तका इत्यर्थः । अस्माकं धर्मरक्षका यूयमास्त, तथैव खलु हे देवानुप्रियाः !

की ऐसी बात सुनकर उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने उन मल्ली
 अरिहत से इस प्रकार कहा—(जइणं तुम्हे देवाणुप्पिण ससार जाव
 पव्वयह, अम्हे णं देवाणुप्पिण ! के अण्णे आलवणे वा आहारे वा
 पडिवधे वा तह चेवण देवाणुप्पिण ! तुम्हे अम्हे इओ तच्चे भव
 गगहणे बहुसु कज्जेसु य मेढीपमाणं जाव धम्मधुरा होत्था) हे देवा
 नुप्रिये ! जब तुम संसार के भय से उद्धिग्न होकर यावत् दीक्षा
 समय अंगीकार करना चाहती हो तो हे देवानुप्रिये ! कहो फिर हमें
 तुम्हारे सिवाय अब और कौन दूसरा सहाय करने वाला होगा—कौन
 हमारा आलवनभूत होगा कौन हमारा आधार होगा कौन हमें अकार्य
 करने से मना करने वाला होगा—कौन सन्मार्ग में स्थापित करने के लिये
 धर्म का उपदेश दाना होगा— । जिस प्रकार आप आज से तीसरे भव
 में हमारे लिये अनेक कार्यों में मेधि की तरह आलवन रूप हुए आधार
 भूत हुए प्रमाणभूत हुए, सम विषम मार्ग का दर्शक होने से चक्षुर्भूत

મહલી અરિહતના આ પ્રમાણે વિચારે સાલણીને તે જીતશત્રુ પ્રમુખ
 છએ રાજાઓએ મહલી અરિહતને કહ્યું કે

(જડણ તુમ્હે દેવાણુપ્પિણ સસાર જાવ પવ્વયહ, અમ્હે ણ દેવાણુપ્પિણ ! કે
 અણ્ણે આલવણે વા આહારે વા પડિવધે વા તહ ચેવ ણ દેવાણુપ્પિણ ! તુમ્હે અમ્હે
 ઇઓ તચ્ચે ભવગગહણે વહુસુ કજ્જેસુ ય મેઢી પમાણ જાવ ધમ્મધુરા હોત્થા)

હે દેવાનુપ્રિય ! સંસાર ભયથી વ્યાકુળ થઇને જ્યારે તમે પોને દીક્ષા
 સમય સ્વીકારવા ઇચ્છો છો ત્યારે હે દેવાનુપ્રિયે ! જતાવો તમારા વગર અમારો
 સહાયક બીજો કોણ હશે ? અમારો આવબન કોણ હશે ? અમારો આધાર
 કોણ હશે ? ખોટા કામ કરતા અમને રોકનાર કોણ હશે ? અમારા જેવા ને
 સન્માર્ગ તરફ વાળનાર ધર્મના ઉપદેશક કોણ હશે ? જેમ આજથી પહેલાના
 ત્રીજા ભવમા અમારા માટે ધણા કામોમા તમે મેધિની જેમ આલબન રૂપ
 થયા, આધાર ભૂત થયા પ્રમાણ ભૂત થયા, સમવિષમ માર્ગને જતાવનાર હોવા
 બદલ ચક્ષુભૂત થયા, ધર્મના માર્ગમા પ્રવૃત્તિ કરાવનાર

‘ इहिं पि ’ इदानीमपि यावद् भविष्यथ । वयमपि खलु हे देवानुप्रिया ! ससार भयोद्विग्ना यावद् भीता ‘ जम्ममरणाण ’ जन्ममरणेभ्यः आर्पित्वात्पञ्चम्यर्थे पण्ठी, ‘ देवाणुप्पियाण ’ देवानुप्रियै युष्माभिः सार्द्धं मुण्डा भूत्वा यावत्-प्रत्र जाम् = दीक्षा ग्रहीष्यामः, ततः-जितशत्रुप्रमुखाणा तेषा वचन श्रुत्वा, खलु मल्ली अहन् तान् जितशत्रुप्रमुखान् एवमवादीत्-यदि खलु यूय ससारभयोद्विग्नाः यावद् मया सार्धं प्रत्रजथ, तत्=तस्मात् गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः । स्वेपु स्वेपु राज्ञेषु ज्येष्ठान् पुत्रान् राज्ये स्थापयत, स्थापयित्वा पुरुषमहस्रवाहिनी शिविकाः दूरोदत=आरोदत, दूरुढाः सन्तो ममान्तिकपादुर्भवत आगच्छत । ततस्तदनन्तर

हुण, वमं का वुरा रूप हुए-धर्ममार्ग से प्रवृत्ति कराने वाले हुए (तहा चेव ण देवाणुप्पिए ? इहिं पि जाव भविस्सह) उसी प्रकार हम भव में भी आप ही होवे (अम्हे वि य ण देवाणु० ससारभयउन्विग्गा जाव भीया जम्ममरणाण देवाणुप्पियाण सद्धि मुडा भवित्ता जाव पव्वयामो) इसलिये-हम भी हे देवानुप्रिये ! ससारभय से उद्विग्न बने हुए यावत् जन्म मरण से भीत हुए आप देवानुप्रिय ! के साथ ही मुडित होकर यावत् जिन दीक्षा ग्रहण करेंगे ।

(तएणं मल्ली अरहा ते जियसत्तू पामोक्खे एव वयासी-जणं तुब्भे ससार जाव मए सद्धि पव्वयह, त गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएहिं २ रज्जेहिं जेहे पुत्ते रज्जे ठावेह ठावित्ता पुरिससहस्स वाहिणीओ सीयाओ दुरूह) इस के बाद मल्ली अरिहत ने उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं से इस प्रकार कहा-यदि तुम सब ससारभय से उद्विग्न

थया (तहा चेव ण देवाणुप्पिए ! इहिं पि जाव भविस्सह) ते प्रभाण्णे आ लवमा पणु तमे न् अमने धर्मा प्रवृत्ति उरावनार थाओ

(अम्हे वि य ण देवाणु० ससारभयउन्विग्गा जाव भीया जम्ममरणाणं देवाणुप्पियाण सद्धि मुडा भवित्ता जाव पव्वयामो)

ओटला भाटे हे देवानुप्रिये ! ससार लयथी व्याकुल तेमन् नन्म मरणुना लयथी तन्त थयेना अमे पणु हे देवानुप्रिय तमारी साथे न् मुडित थमने जिन दीक्षा स्वीकारीशु

(तएण मल्ली अरहा ते जियसत्तू पामोक्खे एव वयासी- जणं तुब्भे ससार जाव मए सद्धि पव्वयह, त गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएहिं २ रज्जेहिं जेहे पुत्ते रज्जे ठावेह, ठावित्ता पुरिससहस्स वाहिणीओ सीयाओ दुरूह)

त्यार पछी भटनी अरिहते शत्रु प्रमुख राजाओं ने आ प्रभाण्णे उल्लु हे ले तमे अधा ससार लयथी व्याकुल थमने भारी साथे जिन दीक्षा ग्रहण

यूय संसारभयोद्धिना यावत् पत्रजय=पत्रजिप्यय, अम्माफ रलु हे देवानुप्रियाः । किमन्यदात्मन वा सहायो वा कोऽन्य आचारो वा=आश्रयो वा, कः प्रतिबन्धो अकार्यकरणे प्रतिरोधकः सन्मार्गे स्थापयितु धर्मोपदेशक इत्यर्थः वा, यथैव खलु हे देवानुप्रियाः । यूयमस्माकमितस्तृतीयभवग्रहणे बहुषु वार्येषु च मेधिः मेधिव दालम्भनम्-आचारो वा किं च यूय प्रमाण=युष्माननुसृत्य वयमास्मेत्यर्थः, यावद-चक्षुर्भूतः=नेत्रवत् समविषममार्गदर्शकाः, धर्मधुरा =धुरङ्गधुरः धर्मस्य धुरः=वाक्का धर्मप्रवर्तका इत्यर्थः । अस्माकं धर्मरक्षका यूयमास्त, तथैव खलु हे देवानुप्रिया ।

की ऐसी बात सुनकर उन जितशत्रु प्रसुप्त छहों राजाओं ने उन मछी अरिहत से इस प्रकार कहा-(जइणं तुब्भे देवाणुप्पिए ससार जाव पव्वयह, अम्हे ण देवाणुप्पिए ! के अण्णे आलवणे वा आहारे वा पडिवधे वा तह चेवणं देवाणुप्पिए ! तुब्भे अम्हे इओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढीपमाणं जाव धम्मधुरा होत्था) हे देवा नुप्रिये ! जब तुम ससार के भय से उद्धिग्न होकर यावत् दीक्षा संयम अगीकार करना चाहती हो तो हे देवानुप्रिये ! कहो फिर हमें तुम्हारे सिवाय अब और कौन दूसरा सहाय करने वाला होगा-कौन हमारा आलवनभूत होगा कौन हमारा आधार होगा कौन हमें अकार्य करने से मना करने वाला होगा-कौन सन्मार्ग में स्थापित करने के लिये धर्म का उपदेश दाता होगा- । जिस प्रकार आप आज से तीसरे भव में हमारे लिये अनेक कार्यों में मेधि की तरह आलवन रूप हुए आधार भूत हुए प्रमाणभूत हुए, सम विषम मार्ग का दर्शक होने से चक्षुर्भूत

मछली अरिहतना आ प्रमाणे विचारो आलणीने ते एतशत्रु प्रसुप्त छहो राजाओओ मछली अरिहतने कह्यु हे

(जइणं तुब्भे देवाणुप्पिए ससार जाव पव्वयह, अम्हे ण देवाणुप्पिए ! के अण्णे आलवणे वा आहारे वा पडिवधे वा तह चेव ण देवाणुप्पिए ! तुब्भे अम्हे इओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढी पमाणं जाव धम्मधुरा होत्था)

हे देवानुप्रिय ! ससार लयथी व्याकुल थयने न्यारे तमे योने दीक्षा सग्रभ स्वीकारवा छुओछो त्यारे हे देवानुप्रिये ! जतावे तभारा वगर अमारो सहायक नीने कोणु डोशे ? अमारो आवणन कोणु डोशे ? अमारो आधार कोणु डोशे ? जोटा काम करता अभने रोकनार कोणु डोशे ? अमारो जेवा ने सन्मार्ग तरङ्ग वाणनार धर्मना उपदेशक कोणु डोशे ? जेम आन्यथी पडेलाना त्रीज लवमा अमारो भाटे धणा कामेमा तमे मेधिनी जेम आलवन रूप थया, आधार भूत थया प्रमाण भूत थया, समविषम मार्गने जतावनार होवा जइल यक्षुभूत थया, धर्मनी धुराङ्ग थया, धर्मना मार्गमा प्रवृत्ति करावनार

ક્ષારેણ મત્કરોતિ, યાવત્-ત્રતિવિસર્જયતિ । તત્ત્વત્તે જિતશત્રુપ્રમુખા કુમ્ભકેન
રાજા વિવર્જિતાઃ મન્તઃ, યત્રેવ સ્થાનિ ૨ રાજ્યાનિ, યત્રેવ નગરાણિ તત્રીયોપાગ
ચ્છન્તિ, ઉપાગત્વ સ્થાનિ ૨ રાજ્યાન્પુરસાગ્ર વિહરન્તિ । તતઃ સ્વદ્ધ મહત્તી ઓઠન
સંવચ્છારમાણે 'મયસ્તસારસાને=વર્ષદૂર્ગ સત્થા ' નિસ્તમિસ્મામિ ' તિ ' નિસ્ત-
મિત્થામીતિ દીક્ષા ગ્રહીત્થામીતિ મનસિ પ્રચાર્યતિ=નિશ્ચિનોતિ સ્મ ॥ સુ. ૩૬॥

કુમ્ભક રાજાને બી ઉન જિતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓ કા વિપુલ અજ્ઞાનાદિ
રૂપ ચતુર્વિધ આજ્ઞા સે તથા પુરુષ, વસ્ત્ર, ગત્ર માત્ર્યાદિ સે મત્કાર
ક્રિયા । (જાવ પહિવિમગ્જેટ) યાવત કિર ઉન્હે વિવર્જિત કર દિયા ।
(તપ્પણ તે જિયમત્તુ પામોક્કવા કુમ્ભક રાજા વિવર્જિતતા સમાણા
જેણેવ સાઠ સાઠ રજ્જાઠ જેણેવ નગરાઠ તેણેવ ઉપાગચ્છતિ ઉપાગચ્છિ-
ત્તા મગાઠ રજ્જાઠ ઉપમવર્જિતતા વિહરન્તિ તપ્પણ મહત્તી ઓઠના સવન્ન
રાવમાણે નિસ્તમિસ્મામિ તિ મળ પહારેટ) કુમ્ભક રાજા કે દ્વારા વિ-
સર્જિત હોતે હુણ જિતશત્રુ પ્રમુખ રાજા જહાં અપને ૨ રાજ્ય ઝોર ઉન
મેં બી જહાં અપને ૫ મહત્ત યે વટા આયે । વટા આકર ઘે સુધ અપને ૨
રાજ્ય કાચો મેંમલગ્ન હો ગયે ।

ઘર્ષે સમાપ્ત હોને પર દીક્ષા પ્રારણ થઈતા જેમા મહિ પ્રમુખે નિશ્ચિત
વિચાર કર લિયા । સૂચ " ૩૬ "

આહારોવા તેમજ પુરુષ, વસ્ત્ર, ગત્ર, માત્ર્યા વગેરેવા નિહાર દેયો (જાવ
પહિવિમગ્જેટ) ત્યારબાદ તેઓને વિનાય દર્શા

(તપ્પણ તે જિયમત્તુ પામોક્કવા કુમ્ભક રાજા વિવર્જિતતા સમાણા જેણેવ
સાઠ સાઠ રજ્જાઠ જેણેવ નગરાઠ તેણેવ ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગચ્છિત્તા મગાઠ રજ્જાઠ
ઉપમવર્જિતતા વિહરન્તિ, તપ્પણ મહત્તી ઓઠના સવન્નરાવમાણે નિસ્તમિસ્મામિ તિ
મળ પહારેટ)

કુમ્ભક રાજાને ત્યારી વિનાય થઈને હુણવતુ પ્રમુખ રાજાઓ ન્યાં પોત
પોતાનુ રાજ્ય અને તેમા પળુ ન્યાં પોતપોતાના મહેલો દત્તા ત્યાં જયા ત્યાં
જામને તેઓ બધા પોત પોતાના રાજગણમા પહેલાઈ ગયા

એમ ઘર્ષ પછી દીક્ષા પ્રારણ કરીશ, મહત્ત પ્રમુખે આ જાનને ચોક્કસ
વિચાર કરી લીધો હતો ॥ સૂચ " ૩૬ " ॥

खलु ते जितशत्रुप्रमुखा 'मल्लिस्त अरहतो' मल्लया उरितः, एतमर्थ=उक्तमर्थं प्रतिशृण्वन्ति, स्वीकुर्वन्ति स्म ।

ततः खलु मल्ली अर्हन्, तान् जितशत्रुप्रमुखान् पडपि राज्ञो गृहीत्वा=सार्धनीत्या यज्ञेय कुम्भको राजा तत्रोपागच्छति, उपागत्य कुम्भकस्य पादयोः 'पाडेइ' पातयति=प्रणमयति, ततः खलु कुम्भको राजा तान् जितशत्रुप्रमुखान् विपुलेन=प्रचुरेण, अशनपानत्याग्रस्याग्नेन=चतुर्विंशऽऽहारेण, पुष्पस्रामाल्याल

होकर मेरे साथ जिन दीक्षाधारण करना चाहते हो तो हे देवानुप्रियो ! जाओ और अपने अपने राज्य में पहिले अपने अपने ज्येष्ठ पुत्र को स्थापित करो-स्थापित करके फिर पुरुष सहस्र चाहिनी शिबिकाओं पर बैठो- (दुख्खा समाणा मम अतिय पाडभवइ) उन पर बैठे हुए फिर हमारे पास आओ । (तएण ते जियसत्तू पामोक्खा मल्लिस्त अरहओ एयमहं पडिसुणेति) इस प्रकार उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं ने मल्ली अरिहत की इस घात को स्वीकार कर लिया । (तएण मल्ली अरहा-ते जियसत्तू गहाय जेणेव कुभए-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता कुभगस्स पाएसु पाडेइ, तएण कुभए ते जियसत्तू पामोक्खे विपुलेण असण ४ पुप्फवत्थगधमल्लालकारेण सक्कारेइ) इस के पश्चात् उन मल्ली अरिहत ने उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं को अपने साथ लिया और लेकर वे जहा कुम्भक राजा थे वहा पहुँचे वहा पहुँच कर उन्होंने ने कुम्भक राजा के चरणोंमें झुका कर उन से वदना करवाई ।

करवा धम्मता डो तो डे देवानुप्रियो ! पोत पोताना राजन्मा तमे नत्थो अने त्या पडेइ राजगादीओ पोतपोताना मोटा पुत्रने जेसाडो अने पछी पुरुष सहस्रवाहिनी पालणीओमा जेसो (दुख्खा समाणा मम अतिय पाडभवइ) अने भारी पासे आवे ।

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा मल्लिस्त अरहओ एयमहं पडिसुणेति)

मल्ली अरिहतनी आ वातने पधा एतशत्रु प्रमुख राजन्ओओ स्वीकारी दीधी

तएण मल्ली अरहा ते जियसत्तू गहाय जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता कुभगस्स पाएसु, पाडेइ, तएण कुभए ते जियसत्तू पामोक्खे विपुलेण असण ४ पुप्फवत्थगधमल्लालकारेण सक्कारेइ)

त्यारणाइ मल्ली अरहते एतशत्रु प्रमुख राजन्ओने पोतानी साथे दीधी अने लधने तेओ न्या कुलक राज डता त्या गया त्या जधने कुलक राजन्ना अरओमा वदन कराव्या

कुलक राजन्ने पधु एतशत्रु प्रमुख राजन्ओने विपुल अशन २५ आर

ङ्कारेण सत्करोति, यावत्-प्रतिप्रसर्जयति । ततः खलु ते जितशत्रुप्रमुखा कुम्भकेन
राज्ञा विसर्जिताः मन्त्रः, यत्रैव स्वानि २ राज्यानि, यत्रैव नगराणि तत्रैवोपाग
च्छन्ति, उवागच्छ स्वानि २ राज्यान्पुरसाय विहरन्ति । ततः खलु मल्ली अहं
संवच्छरावसाणे 'सवत्सरावसाने=वर्षपूर्णे सत्या ' निखलमिस्सामि ' ति ' निष्क-
मिष्यामीति दीक्षा ग्रहीष्यामीति मनसि प्रारयति=निश्चिनोति स्म ॥ सू० ३६॥

कुम्भकराजाने भी उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं का विपुल अशनादि
रूप चतुर्विध आहार से तथा पुष्प, वस्त्र, गन्ध माल्यादि से सत्कार
किया । (जाव पडिविसज्जेइ) यावत् किं उन्हें विसर्जित कर दिया ।
(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा कुम्भए ण रण्णा विसज्जित्ता समाणा
जेणेव साइ साइ रज्जाइ जेणेव नगराइ तेणेव उवागच्छति उवागच्छि
त्ता सगाइ रज्जाइ उवसपज्जित्ता विहरति तएण मल्ली अरहा सवच्छ
रावसाणे निखलमिस्सामि ति मण पहारेइ) कुम्भक राजा के द्वारा वि
सर्जित होते हुए जितशत्रु प्रमुख राजा जहाँ अपने २ राज्य और उन
में भी जहाँ अपने ५ महल थे वहाँ आये । वहाँ आकर वे सब अपने २
राज्य कार्यों में लग्न हो गये ।

वर्ष समाप्त होने पर दीक्षा धारण करूँगा ऐसा महि प्रभुने निश्चित
विचार कर लिया । सूत्र " ३६ "

आहारोथा तेभञ्ज पुष्प, वस्त्र, गन्ध, माल्य वगैरेथा सत्कार कर्था (जाव
पडिविसज्जेइ) त्यागणाइ तेओने विहाय कर्था

(तएण ते जियसत्तू पामोक्खा कुम्भए ण रण्णा विसज्जित्ता समाणा जेणेव
साइ साइ रज्जाइ जेणेव नगराइ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सगाइ रज्जाइ
उवसपज्जित्ता विहरति, तएण मल्ली अरहा सवच्छरावसाणे निखलमिस्सामि ति
मण पहारेइ)

कुम्भक राजाने त्यागी विहाय थाने जितशत्रु प्रमुख राजाओं तथा पोट
पोतानु राज्य अने तेमा पणु न्या पोतपोताना महेत्ता हुता त्या गया त्या
ज्जने तेओ जधा पोतपोताना राजजाजमा परोवाई गया

ओठ वर्ष पछी दीक्षा धारण करीश, मल्ली प्रभुओ आ जतने ओळख
विचार करी लीयो हुतो ॥ सूत्र " ३६ " ॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेण समएण सकस्तासणं चलइ, तएणं
सके देविदेइ आसण चलिय पासइ, पासित्ता ओहिं पउजइ,
पउजित्ता मल्लिं अरहं ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता इमेया
रूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु जवूद्दीवे दीवे
भारहे वासे मिहिलाए कुंभगस्स रन्नो भवणासि मल्ली अरहा
निक्खमिस्साइ त्ति मणं पहारेइ, त जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नम-
णागयाण सक्काणइ अरहताण निक्खममाणाण इमेयारूव अत्थ
सपयाणं दलित्तए, त जहा—

तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीति च होंति कोडिओ ।

असिति च सयसहस्सा इंदा दलयंति अरहाण ॥ १ ॥

एवं संपेहेइ, संपेहित्ता वेसमेण देव सदावेइ सदावित्ता एव वयासी
—एवं खलु देवाणुप्पिया ! जवूद्दीवे दीवे भारहे वासे जाव असीति
च सयसहस्साइ दलइत्तए, त गच्छह णं देवाणुप्पिया । जवु-
द्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुभगभवणसि इमेयारूवे
अत्थसपदाणं साहराहि, साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं
पच्चप्पिणाहि, तएण से वेसमाणे देवे सक्केण देविदेण देवराएण
एव वुत्ते हट्ठे करयल जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जभए देवे
सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ।
जवूद्दीव दीव भारहं वासं मिहिल रायहाणि कुभगस्स रन्नो
भवणंसि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीयि च

आसिय च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थसपयाणं साहरेइ,
 साहरित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणेह, तएण ते जंभगा
 देवा वेसमणेणं एवं वुत्ता समाणा हट्टुट्ठा जाव पडिसुणेति,
 पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमति,
 अवक्कमित्ता जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वति, विउव्वि-
 त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जवूहीवे दीवे
 जेणेव भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुभगस्स
 रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुभगस्स रत्तो
 भवणसि तिन्नि कोडिसिया जाव साहरंति, साहरित्ता जेणेव
 वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव
 पच्चप्पिणंति, तएण से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविदे देवराया
 तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणइ,
 तएणं मल्ली अरहा कल्लाकल्लि जाव मागअहो पायरा सो
 त्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पथियाण य पहियाण य
 करोडियाण य कप्पडियाण य एगमेगं हिरण्णकोडि अट्ठ य
 अणूणाइ सयसहस्साइं इमेयारूव अत्थसपदाण दलयइ, तएणं
 से कुभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थ२ तहि२ देसे२ बहूओ
 महाणससालाओ करेइ, तत्थ णं बहवे मणुयादिणगभइभत्तवे
 यणा विपुल असणं पाणं खाइमसाइम उवक्खडेंति, उवक्खडित्ता
 जे जहा आगच्छति त जहा—पथिया वा पहिया वा करोडिया
 वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिडित्था वा तेसिं य तहा

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएण सक्कस्सासण चलयइ, तएणं सक्के देविदेइ आसण चलय पासइ, पासित्ता ओहिं पउजइ, पउजित्ता मल्लि अरहं ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता इमेया रूपे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु जंबूदीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभगस्स रत्तो भवणासि मल्ली अरहा निक्खमिस्साइ त्ति मणं पहारेइ, त जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाण सक्काणरे अरहताण निक्खममाणानं इमेयारूप अत्थ सपयाणं दलित्तए, त जहा—

तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीति च होंति कोडिओ ।

असिति च सयसहस्सा ईदा दलयति अरहाण ॥ १ ॥

एवं संपेहेइ, संपेहित्ता वेसमणं देव सदावेइ सदावित्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया। जंबूदीवे दीवे भारहे वासे जाव असीति च सयसहस्साइ दलइत्तए, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया । जंबूदीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभगभवणसि इमेयारूपे अत्थसंपदाणं साहराहि, साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, तएण से वेसमाणे देवे सक्केणं देविदेण देवराएण एव वुत्ते हट्ठे करयल जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जभए देवे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी—गच्छह णंतुब्भे देवाणुप्पिया । जंबूदीव दीवं भारहं वास मिहिल रायहाणि कुंभगस्स रत्तो भवणांसि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीति च

आसिय च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थसपयाणं साहरेइ,
 साहरित्ता सम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणेह, तएण ते जंभगा
 देवा वेसमणेणं एव वुत्ता समाणा हट्टतुट्ठा जाव पडिसुणेति,
 पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति,
 अवक्कमित्ता जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइ विउव्वति, विउव्वि-
 त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जवूदीवे दीवे
 जेणेव भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुभगरस्स
 रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुभगरस्स रन्नो
 भवणंसि तिन्नि कोडिसिया जाव साहरंति, साहरित्ता जेणेव
 वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव
 पच्चप्पिणंति, तएण से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविदे देवराया
 तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणइ,
 तएणं मल्ली अरहा कल्लाकल्लि जाव मागअहो पायरा सो
 त्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पथियाण य पहियाण य
 करोडियाण य कप्पडियाण य एगमेगं हिरण्णकोडि अट्ट य
 अणूणाइ सयसहस्साइं इमेयारूव अत्थसपदाण दलयइ, तएणं
 से कुभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थर तहि२ देसे२ बहूओ
 महाणससालाओ करेइ, तत्थ णं बहवे मणुयादिणगभइभत्तवे
 यणा विपुल असणं पाणं खाइमसाइम उववखडेंति, उववखाडित्ता
 जे जहा आगच्छति त जहा—पथिया वा पहिया वा करोडिया
 वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहित्था वा तेसिं य तहा

मूलम्—तेणं कालेणं तेण समण सक्कस्सासण चलइ, तएणं सक्के देविदेइ आसण चलिय पासइ, पासित्ता ओहिं पउजइ, पउजित्ता मल्लि अरह ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता इमेया रूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एव खलु जबूदीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभगस्स रन्नो भवणासि मल्ली अरहा निक्खमिस्साइ त्ति मण पहारेइ, त जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नम णागयाण सक्काणइ अरहंताण निक्खममाणाण इमेयारूप अत्थ सपयाणं दलित्तए, त जहा—

तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीति च होंति कोडिओ ।

असिति च सयसहस्सा इंदा दलयंति अरहाण ॥ १ ॥

एवं संपेहेइ, संपेहित्ता वेसमणे देव सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! जबूदीवे दीवे भारहे वासे जाव असीति च सयसहस्साइ दलइत्तए, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया । जबु-दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुभगभवणंसि इमेयारूवे अत्थसपदाण साहराहि, साहरित्ता खिप्पामेवमम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, तएणं से वेसमाणे देवे सक्केण देविदेण देवराएणं एव वुत्ते हट्ठे करयेल जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जभए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी—गच्छह णा तुब्भे देवाणुप्पिया! जबूदीव दीव भारहं वास मिहिल रायहाणि कुभगस्स रन्नो भवणंसि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीयि च

आसिय च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थसपयाणं साहरेइ,
 साहरित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणेह, तएण ते जंभगा
 देवा वेसमणेणं एव वुत्ता समाणा हट्टतुट्ठा जाव पडिसुणेंति,
 पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभागं अवक्कमंति,
 अवक्कमित्ता जाव उत्तरवेउठ्ठियाइं रूवाइ विउव्वति, विउठ्ठि-
 त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जबूदीवे दीवे
 जेणेव भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुभगस्स
 रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुभगस्स रत्तो
 भवणसि तिन्नि कोडिसिया जाव साहरंति, साहरित्ता जेणेव
 वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव
 पच्चप्पिणंति, तएण से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविदे देवराया
 तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणइ,
 तएणं मल्ली अरहा कल्लाकल्लि जाव मागअहो पायरा सो
 त्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पथियाण य पहियाण य
 करोडियाण य कप्पडियाण य एगमेगं हिरण्णकोडि अट्ठ य
 अणूणाइ सयसहस्साइ इमेयारूव अत्थसपदाण दलयइ, तएणं
 से कुभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थ२ तहि२ देसे२ बहूओ
 महाणससालाओ करेइ, तत्थ णं बहवे मणुयादिण गभइ भत्तवे
 यणा विपुल असणं पाणं खाइम साइम उवक्खडेति, उवक्खडित्ता
 जे जहा आगच्छति त जहा—पथिया वा पहिया वा करोडिया
 वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहित्था वा तेसिं य तहा

आसत्थस्स वीरत्थस्स सुहासणपरगयस्स तं विपुलं असणं४ परि-
भाएमाणा परिदेसेमाणा विहरति, तएणं मिहिलाए सिंघाडग जाव
वहुजणो अपणमणस्स एवमाइ वसइ एवं भासइ, एवं पन्नवेइ, एवं
परूवेइ, एवं खलु देवाणु० । कुंभगस्स रणणो भण्णंसि सव्व-
कामगुणिय किमिच्छिय विपुलं असणं४ बहुणं समणाण य
जाव परिविसज्जइ ।

“ वरवरिया घोसिज्जइ, किमिच्छियं दिज्जइ बहुविहीयं ।

सुरअसुरदेवदाणव नरिद महियाण निक्खमणे ॥१॥

तएणं मल्ली अरहा सव्वच्छरेणं तिन्निकोडिसया अट्ठासीति
च होंति कोडिओ असिति च सयसहस्साइ इमेयारूवं अत्थ
संपयाणं दलइत्ता निक्खमामिति मणं पहारेइ ॥ सू० ३७ ॥

टीका—‘ तेण कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये सौधर्मस्ये
शुक्रस्य=इन्द्रस्य आसन चलस्मिन्, ततः खलु शक्रो देवेन्द्र=देवाना मध्ये परमैश्व
र्यवान् देवराज आसन चरित पश्यति, दृष्ट्वा ‘ ओहि ’ अवधि ‘ पउजइ ’ प्रयुङ्क्ते,
केन कारणेन ममामन चरतीत्येतस्मिन् विषये स्वकीयोपगम नयति स्वेत्यर्थः ।
प्रयुज्य=अवधितानेन ‘ आभोएइ ’ आभोगयति=विकीरयति, मल्ली अहन् सप्रति

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीका १—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में
(सक्कस्सासण चलइ) इन्द्र का आसन चलायमान हुआ (तएण सक्के
देविंदे देवराया आसण चालिय पासइ, पासित्ता ओहि पउजइ, पउजि
त्ता मल्लि अरह ओहिणा आभोएइ) देवों के बीच में परम ऐश्वर्यवान्

“ तेण कालेण तेण समएण ” इत्यादि ॥

टीका २ (तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते वખते (सक्क
स्सासण चलइ) इन्द्रनु आसन राती छिथु

(तएण सक्के देविंदे देवराया आसण चालिय पासइ, पासित्ता ओहि पउ
जइ, पउजित्ता मल्लि अरह ओहिणा आभोएइ)

નિષ્ક્રમણ કર્તુમુદ્યક્તો વર્તત इति विजानाति स्मेत्यर्थ । ' આમોદ્તા ' આમોગ કૃત્વા ' હમેયાસ્ત્વે ' અયમેતદ્રૂપઃ=વક્ષ્યમાણસ્વરૂપ', વાધ્યાત્મિક =આત્મનિષ્ઠઃ, યાવત્ સત્ત્વ' સમુદપત્યત=સજાતઃ-એવ સ્વલુ જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે મધ્ય જમ્બૂદ્વીપે ભારતે ભરતક્ષેત્રે દક્ષિણાર્ધ ભરતે, વર્ષે મિથિલાયા રાજધાન્યા કુમ્ભકસ્ય રાજો ભવને મલ્લી અર્હન્ મનસિ પ્રધારયતિ-" નિષ્ક્રામિષ્યામિ=અહ દીક્ષા ગ્રહીષ્યામિ"

શક્ર દેવરાજ ને જ્યોં હી અપને આસન કો ચલાયમાન દેખા-તો દેખ કર ઉસને અપને અવધિજ્ઞાન કો જોડા-જોડ કર મલ્લી અરિહત કો ઉસને અવધિજ્ઞાન સે દેખા ।

યહા અવધિજ્ઞાન કો જોડને કા તાત્પર્ય યહ હૈ કિ જલ ઇન્દ્રને અપને આસન કો ચલાયમાન દેખા તો " કિસ કારણ સે મેરા આસન કપા-યમાન હો રહા હૈ" હસ વિષયમેં અપને ઉપયોગ કો લગાયા । હસ પ્રકાર સે અવધિજ્ઞાન-ઉપયોગ કા લગાના હી અવધિજ્ઞાન કા જોડના હૈ । (આમોદ્તા હમેયાસ્ત્વે અજ્ઞતિયે જાવ સમુપજિજત્યા-એવ સ્વલુ જમ્બૂ દ્વીપે દીવે ભારહે વાસે મિહિલાય કુમ્ભગસ્સ રણ્ણો ભવણસિ મલ્લી અરહા નિવ્વમિસ્સામિત્તિ મણ પહારેહ) મલ્લી અરિહત સપ્રતિ નિષ્ક્રમણ કરને કે લિયે ઉદ્યુક્ત હો રહે હૈ-એસા જાન કરકે ઉસકે મન મેં હસ પ્રકાર કા યહ મનોગત સત્ત્વ ઉત્પન્ન હુઆ-હસ જમ્બૂદ્વીપ નામકે દ્વીપ મેં ભારત વર્ષ ક્ષેત્ર મેં મિથિલા નામકી નગરી મેં કુમ્ભક રાજા કે ભવન

બધા દેવોમા પરમ અશ્વર્યવાન દેવરાજ ઇન્દ્રે ત્યારે પોતાનુ આસન ડાલતુ જોયુ ત્યારે તેઓએ અવધિજ્ઞાનના મળધથી મલ્લી અરિહતને જોયા અહીં અવધિજ્ઞાનને જોડવાનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે ત્યારે ઇન્દ્રે પોતાના આસનને ડગમગ થતુ જોયુ ત્યારે ગા કારણથી માર આસન ડાલતુ થયુ છે ? " આ વિશે પોતાનો ઉપયોગ (ધ્યાન) ને લગાવ્યો આ ગીતે અવધિજ્ઞાનને ઉપયોગમા લગાવણુ જ અવધિજ્ઞાનને જોડવુ તેમ કહેવાયછે

(આમોદ્તા, હમેયાસ્ત્વે અજ્ઞતિયે જાવ સમુપજિજત્યા એવ સ્વલુ જમ્બૂ દ્વીપે દીવે ભારહે વાસે મિહિલાય કુમ્ભગસ્સ રણ્ણો ભવણસિ મલ્લી અરહા નિવ્વમિસ્સામિત્તિ મણ પહારેહ)

મલ્લી અરિહત હવે નિષ્ક્રમણના માટે તૈયાર થઈ રહ્યા છે આમ જાણીને તેના મનમા આ જાતનો મનોગત સત્ત્વ ઉદ્ભવ્યો કે આ જ જમ્બૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમા, મિથિલા નામની નગરીમા, કુલકરાજના ભવનમા મલ્લીનામના અરિહત પ્રભુ ' હુ દીક્ષા ધ્યાણુ કરીશ ? " આ પ્રમાણે વિચાર કરી રહ્યા છે

इति । तत्=तस्मात् 'जीयमेय' जीतमेतन्-जीत-मर्यादा-परम्पराऽऽगत आचारः
एतत्-एवमस्ति-यद्-'तीयपञ्चुप्पन्नमगागयाण' अतीत प्रत्युत्पन्नागगतानां
=भूतवर्तमानभाविना, कालत्रयवर्तिनामित्यर्थः शक्राणं देवेन्द्राणां देवराजानाम्
यद्-अर्हतां भगवता निष्क्रामतामिमामेतद्गुण=वक्ष्यमाणाम् 'अथसपयाण' अथ
सपया ' इति लुप्त द्वितीयान्तम्-अथसपद् खलु दातुम् यदा-अर्हन्तो भगवन्तो
निष्क्रमणाभिमुख्यं भवन्ति, तदा तेषां मातापितृगृहेऽर्थसपदमुपनयन्ति देवेन्द्रा
इति मर्यादाऽस्तीत्यर्थः । इन्द्राः कियद्द्रव्यं ददतीत्याकाङ्क्षायामाह-त जहा-
इत्यादि-तद् यथा ।

तिष्णेव य कोटिमया अट्टासीति च होति कोडीओ ।

असिति च सयसहस्रा इदा दलयति अरहाण ॥ ૧ ॥

ત્રીણ્યેવ ચ કોટિશતાન્યષ્ટાશીતિશ્ચ ભવન્તિ કોટયઃ ।

અશીતિશ્ચ શતપદસ્રાણિ ઇન્દ્રા દદતિ અર્હતામ્ ॥ ૧ ॥

ગ્રીણિ કોટિશતાત્રિ, અષ્ટાશીતિ કોટયઃ, અશીતિશતપદસ્રાણિ સ્વર્ણદીનારાણિ
તીર્થકરાણાં નિષ્ક્રમણે વાર્ષિકદાનાય દાતવ્યાનિ ભવન્તિ તાનીન્દ્રા અર્હતાં ભવને
દદતિ=અર્પયતિ ।

મેં મહી નામ કે અરિહત પ્રભુ “મેં દીક્ષા ધારણ કરુંગા” એસા વિચાર
કર રહે છે (ત જીયમેય તીયપચ્ચુપ્પન્નમણાગયાણ સવકાણ ૩ અરહ
તાણં ભગવતાણ નિસ્સમમાગાનાં હમેયારુવ અથ સપયાણ દલિત્તણ)
હસ લિયે કાલત્રયવર્તી દેવેન્દ્રોં કા પરમ્પરાગત યહ આચાર હૈ કિ વે
દીક્ષા લેને કે લિયે તત્પર હુણ તીર્થકર પ્રભુઓં કે માતા પિતાઓં કે ઘર
અર્થ સપત્તિ પ્રદાન કરે દેવેન્દ્ર જો અર્થ સપત્ પ્રદાન કરતે છે (ત જહા)
ઉસે કા પ્રમાણ હસ પ્રકાર હૈ ત્રીન સૌ કરોડ, અટ્ટાસી કરોડ, ઓર
અસ્સી લાખ સ્વર્ણ દીનારે । વાર્ષિક દાન મેં તીર્થકરોં કે નિષ્ક્રમણ કે
સમય મેં હતના દ્રવ્ય ઇન્દ્ર ઉન કે ભવન પર લાકર રખતે છે ।

(ત જીયમેય તીય પચ્ચુપ્પન્નમણા ગયાણ સવકાણ ૩ અરહતાણં ભગવતાણ
નિસ્સમમાણાનાં હમેયારુવ અથસપયાણ દલિત્તણ)

એટલા માટે કાળત્રયવર્તી દેવેન્દ્રોના પરપરાથી ચાલતો આવેલો આ
પ્રમાણનો આચાર છે કે તેઓ દીક્ષા લેવા માટે તૈયાર થયેલા તીર્થ કર પ્રભુઓના
માતા-પિતાઓને અર્થ સપત્તિ અર્પણ કરે તે પ્રમાણે ઇન્દ્ર અર્થ સપત્તિ અર્પે
છે (ત જહા) તેનું પ્રમાણ આ પ્રમાણે છે “ત્રણસો કરોડ, ધ્વિશી કરોડ અને
એશી લાખ સ્વર્ણમુદ્રાઓ વાર્ષિક દાનમાં, તીર્થ કરોના નિષ્ક્રમણના વખતે
આટલું દ્રવ્ય ઇન્દ્ર તેમને ઘેર પહોંચાડે છે

एव सपेक्षते=विचारयतिस्म । सपेक्ष्य वैश्रमण देव शब्दयति, शब्दयित्वा, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिय ! एव खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे 'यावत्-अशीतिशतसहस्राणि दातुम्' अर्हता भगवता निष्क्रमता त्रीणि कोटिशतानि अष्टाशीति कोटी अशीतिशतसहस्राणि दातु सर्वेषामिन्द्राणा मर्यादाऽस्तीति भावः । तत्=तस्माद् गच्छ खलु देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकमयने इमामेतद्रूपामर्थसपद खलु 'साहसहि' सहर=मापय । सहस्रं क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव मम 'एयमाणत्तिय' आज्ञप्तिकां प्रत्यर्पय=ममाज्ञायाः प्रत्यर्पणं कुरु ।

ततस्तदनन्तर खलु स वैश्रमणो देवः शक्रेण देवेन्द्रेण देवराजेनैवमुक्तो हृष्टः करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावत् 'पडिसुणेइ' प्रतिशृणोति=एव " करिष्यामि " इत्युक्त्या स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य, जृम्भकान्

(एव सपेहेइ, सपेहित्ता वेसमण देव सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी) ऐसा विचार उस शक्र देवेन्द्र ने किया । कर के फिर उसने वैश्रमणदेव-कुवेर-को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-(एव खलु देवाणुप्पिया । जम्बूद्वीपे दीपे भारहे वासे जाव असीति च सयसहस्साइ दलइत्तए) हे देवानुप्रिय ! इस जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में भारत वर्ष क्षेत्र में मिथिला नाम की नगरी है । उस के राजा कुम्भक के महल में मल्ली नाम की तीर्थंकर प्रभु हैं वे दीक्षा लेने का विचार कर रहे हैं । इसलिये इन्द्रों का यह परम्परागत नियम है कि वे उन के निष्क्रमण महोत्सव के समय तीन सौ करोड़, अष्टासी करोड़, और अस्सी लाख स्वर्ण दीनारों वार्षिक दान में देने के लिये उन के माता पिता के भवन

(एव सपेहेइ, सपेहित्ता वेसमण देव सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी)

ते शक्र देवेन्द्रे आ प्रभावे विचार कर्यो अने तयारणाइ तेणे वैश्रमणुदेव बुझेने ओलाव्यो, ओलावीने तेने कहु—

(एव खलु देवाणुप्पिया । जम्बूद्वीपे दीपे भारहे वासे जाव असीति च सय सहस्साइ दलइत्तए)

हे देवानुप्रिय ! आ जम्बूद्वीप नामना द्वीपमा भारतवर्ष क्षेत्रमा मिथिला नामनी नगरी छे त्याना राजा कुम्भकना महलमा भदनी नामना तीर्थंकर प्रभु छे तेओ दीक्षा लेवाने विचार करी ग्या छे ओला भाटे इन्द्रोने आ जतने परपरायी बालते आवते नियम छे के तेओ तेमना निष्क्रमण महोत्सवना वખते त्रयुसो करोड, अष्टाशी करोड अने अशी लाख सोना भडारे वार्षिक दानना रूपमा तेमने त्या घेर पडैथाउ

इति । तत्=तस्मात् 'जीयमेय' जीतमेतत्-जीत-मर्यादा-परम्पराऽऽगत आचार
एतत्-एवमस्ति-यद्-'तीयपञ्चुष्पन्नमगागयाणं' अतीत प्रत्युत्पन्नानागतार्थ
=भूतवर्तमानभावितानां, कालत्रयवर्तिनामित्यर्थः सक्राणं देवेन्द्राणां देवराजानां
यद्-अर्हतां भगवता निष्कामतामिमामेतद्भूपा=वक्ष्यमाणाम् 'अथसपयाणं' अथ-
सपया ' इति लुप्त द्वितीयान्तम्-अर्थसपद् खलु दातुम् यदा-अर्हन्तो भगवन्तो
निष्क्रमणाभिमुखो भवन्ति, तदा तेषा मातापित्रोर्गृहेऽर्थसपदमुपनयन्ति देवेन्द्रा
इति मर्यादाऽस्तीत्यर्थः । इन्द्राः कियद्द्रव्य ददतीत्याकाङ्क्षायामाह-त जहा-
इत्यादि-तद् यथा ।

तिष्णेय य कोटिमया अट्टासीति च होति कोडीओ ।

असिति च सयसहस्रा इडा दलयति अरहाण ॥ ૧ ॥

ત્રીષ્ણેય ચ કોટિશતાન્યષ્ટાશીતિથ્ય ભવન્તિ કોટય' ।

અશીતિથ્ય શતપદસ્રાણિ ઇન્દ્રા દદતિ અર્હતામ્ ॥ ૧ ॥

શ્રીણિ કોટિશતાત્રિ, અષ્ટાશીતિ કોટયઃ, અશીતિશતપદસ્રાણિ સ્વર્ણદીનારાણિ
તીર્થકરાણાં નિષ્ક્રમણે વાર્ષિકદાનાય દાતવ્યાનિ ભવન્તિ તાનીન્દ્રા અર્હતાં ભવને
દદતિ=અર્પયતિ ।

મેં મહી નામ કે અરિહત પ્રભુ “મેં દીક્ષા ધારણ કરૂંગા” એસા વિચાર
કર રહે હૈં (ત જીયમેય તીયપચ્ચુપ્પન્નમગાગયાણ સવક્રાણ ૩ અરહ
તાણં ભગવતાણ નિસ્સમમાગાનાં હમેયારૂવ અથ સપયાણ દલિત્તણ)
હસ લિયે કાલત્રયવર્તી દેવેન્દ્રો કા પરમ્પરાગત યહ આચાર હૈ કિ વે
દીક્ષા લેને કે લિયે તત્પર હુણ તીર્થકર પ્રભુઓં કે માતા પિતાઓં કે ઘર
અર્થ સપત્તિ પ્રદાન કરે દેવેન્દ્ર જો અર્થ સપત્ પ્રદાન કરતે હૈં (ત જહા)
ઉસં કા પ્રમાણ હસ પ્રકાર હૈ ત્રીન સૌ કરોડ, અટ્ટાસી કરોડ, ઓર
અસ્સી લાખ સ્વર્ણ દીનારે) વાર્ષિક દાન મેં તીર્થકરોં કે નિષ્ક્રમણ કે
સમય મેં હતના દ્રવ્ય ઇન્દ્ર ઉન કે ભવન પર લાકર રખતે હૈં ।

— (ત જીયમેય તીય પચ્ચુપ્પન્નમગા ગયાણ સવક્રાણં ૩ અરહતાણં ભગવતાણં
નિસ્સમમાગાનાં હમેયારૂવ અથસપયાણ દલિત્તણ)

એટલા માટે કાળત્રયવર્તી દેવેન્દ્રોના પરપરાથી ચાલતો આવેલો આ
પ્રમાણેનો આચાર છે કે તેઓ દીક્ષા લેવા માટે તૈયાર થયેલા તીર્થકર પ્રભુઓના
માતા-પિતાઓને અર્થ સપત્તિ અર્પણ કરે તે પ્રમાણે ઇન્દ્ર અર્થ સપત્તિ અર્પે
છે (ત જહા) તેનું પ્રમાણ આ પ્રમાણે છે “ત્રણસો કરોડ, ઇક્કાસી કરોડ અને
એકી લાખ સ્વર્ણમુદ્રાઓ વાર્ષિક દાનમાં, તીર્થકરોના નિષ્ક્રમણના વખતે
આટલું દ્રવ્ય ઇન્દ્ર તેમને ઘેર પહોંચાડે છે

एव सपेक्षते=विचारयतिस्म । सपेक्ष्य वैश्रमण देव शब्दयति, शब्दयित्वा, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिय । एव खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे 'यावत्-अशीतिशतसहस्राणि दातुम्' अर्हता भगवता निष्क्रमता त्रीणि कोटिशतानि अष्टाशीति कोटी अशीतिशतसहस्राणि दातु सर्वेषामिन्द्राणा मर्यादाऽस्तीति भावः । तत्=तस्माद् गच्छ खलु देवानुप्रिय । जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भक मवने इमामेतद्भूपामर्थसपद खलु 'सोह-राहि' सहर=पापय । सहस्र क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव मम 'एयमाणत्तिय' आज्ञप्तिका प्रत्यर्पय=ममाज्ञायाः प्रत्यर्पण कुरु ।

ततस्तदनन्तर खलु स वैश्रमणो देवः शक्रेण देवेन्द्रेण देवराजेनैवमुक्तो हृष्टः करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावत् 'पडिसुणेड' प्रतिशृणोति=एव "करिष्यामि" इत्युक्त्वा स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य, जृम्भकान्

(एव सपेहेइ, सपेहिच्चा वेसमण देव सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी) ऐसा विचार उस शक्र देवेन्द्र ने किया । कर के फिर उसने वैश्रमणदेव-कुवेर-को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-(एव खलु देवाणुप्पिया । जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वासे जाव असीति च सयसह-स्साइ दलइत्तए) हे देवानुप्रिय ! इस जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में भारत वर्ष क्षेत्र में मिथिला नाम की नगरी है । उस के राजा कुम्भक के महल में मल्ली नाम की तीर्थंकर प्रभु हैं वे दीक्षा लेने का विचार कर रहे हैं । इसलिये इन्द्रों का यह परम्परागत नियम है कि वे उन के निष्क्रमण महोत्सव के समय तीन सौ करोड़, अठ्ठासी करोड़, और अस्सी लाख स्वर्ण दीनारों वार्षिक दान में देने के लिये उन के माता पिता के भवन

(एव सपेहेइ, सपेहिच्चा वेसमण देव सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी)

તે શક દેવેન્દ્રે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો અને ત્યારબાદ તેણે વૈશ્રમણદેવ કુબેરને બોલાવ્યો, બોલાવીને તેને કહ્યું—

(एव खलु देवाणुप्पिया । जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वासे जाव असीति च सय सहस्साइ दलइत्तए)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ જમ્બૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમાં મિથિલા નામની નગરી છે ત્યાંના રાજા કુલકના મહેલમાં મલ્લી નામના તીર્થંકર પ્રભુ છે તેઓ દીક્ષા લેવાનો વિચાર કરી રહ્યા છે એટલા માટે ઇન્દ્રોનો આ જાતનો પરપરાયો ચાલતો આવતો નિયમ છે કે તેઓ તેમના નિષ્ક્રમણ મહોત્સવના વખતે ત્રણસો કરોડ, ઇક્યાશી કરોડ અને એવી લાખ સોના મહોત્સ વાર્ષિક દાનના રૂપમાં તેમને ત્યાં ઘેર પહોંચાડે

इति । तत्=तस्मात् 'जीयमेय' जीतमेतत्-जीत-मर्यादा-परम्पराऽऽगत आचारः
एतत्-एवमस्ति-यद्-'तीयपञ्चुप्पन्नमगागयाण' अतीन प्रत्युत्पन्नानामतानां
=भूतवर्तमानभाविना, काञ्चयवर्तिनामित्यर्थः शक्राणं देवेन्द्राणां देवराजानाम्
यद्-अर्हतां भगवता निष्क्रामतामिमांसेतदूपा=वक्ष्यमाणाम् 'अथसपयाण' अथ-
सपया ' इति लुप्त द्वितीयान्तम्-अर्थसपद् खलु दातुम् यदा-अर्हन्तो भगवन्तो
निष्क्रमणाभिमुख्यं भवन्ति, तदा तेषां मातापित्रोर्गृहेऽर्थसपदमुपनयन्ति देवेन्द्रा
इति मर्यादाऽस्तीत्यर्थः । इन्द्राः कियद्द्रव्यं ददतीत्याकाङ्क्षायामाह-त जहा-
इत्यादि-तद् यथा ।

तिष्णेय य कोटिपया अट्ठासीति च होति कोटीओ ।

असिति च सयसहस्रा इडा दलयति अरहाण ॥ ૧ ॥

ગ્રીણ્યેવ ચ કોટિશતાન્યષ્ટાશીતિથ્ય ભવન્તિ કોટયઃ ।

અશીતિથ્ય શતપદસ્રાણિ ઇન્દ્રા દદતિ અર્હતામ્ ॥ ૧ ॥

ગ્રીણિ કોટિશતાત્રિ, અષ્ટાશીતિ કોટયઃ, અશીતિશતસહસ્રાણિ સ્વર્ણદીનારાણિ
તીર્થકરણાં નિષ્ક્રમણે વાર્ષિકદાનાય દાતવ્યાનિ ભવન્તિ તાનીન્દ્રા અર્હતાં ભવને
દદતિ=અર્પયતિ ।

મેં મહી નામ કે અરિહત પ્રભુ “ મેં દીક્ષા ધારણ કરૂંગા ” એસા વિચાર
કર રહેં હેં (ત જીયમેય તીયપચ્ચુપ્પન્નમગાગયાણ સવ્કાણ ૩ અરહ
તાણં ભગવતાણ નિઃસ્રવમમાગાનાં હમેયારૂવ અથ સપયાણ દલિત્તણ)
હસ લિયે કાલત્રયવર્તી દેવેન્દ્રોં કા પરમ્પરાગત ચહ આચાર હૈ કિ વે
દીક્ષા લેને કે લિયે તત્પર છુણ તીર્થકર પ્રભુઓં કે માતા પિતાઓં કે ઘર
અર્થ સપત્તિ પ્રદાન કરે દેવેન્દ્ર જો અર્થ સપત્ પ્રદાન કરતે હેં (ત જહા)
ઉસે કા પ્રમાણ હસ પ્રકાર હૈ ત્રીન સૌ કરોડ, અટ્ઠાસી કરોડ, ઓર
અસ્સી લાખ સ્વર્ણ દીનારેં) વાર્ષિક દાન મેં તીર્થકરોં કે નિષ્ક્રમણ કે
સમય મેં હતના દ્રવ્ય ઇન્દ્ર ઉન કે ભવન પર લાકર રખતે હેં ।

(ત જીયમેય તીય પચ્ચુપન્નમગા ગયાણ સવ્કાણ ૩ અરહતાણં ભગવતાણં
નિઃસ્રવમમાગાનાં હમેયારૂવ અથસપયાણ દલિત્તણ)

એટલા માટે ઠાણત્રયવર્તી દેવેન્દ્રોના પરપરાથી ચાલતો આવેલો આ
પ્રમાણનો આચાર છે કે તેઓ દીક્ષા લેવા માટે તૈયાર થયેલા તીર્થ કર પ્રભુઓના
માતા-પિતાઓને અર્થ સપત્તિ અર્પણ કરે તે પ્રમાણે ઇન્દ્ર અર્થ સપત્તિ અર્પે
છે (ત જહા) તેણે પ્રમાણ આ પ્રમાણે છે “ ત્રણસો કરોડ, ઇશ્વારી કરોડ અને
ઐશી લાખ સ્વર્ણમુદ્રાઓ વાર્ષિક દાનમાં, તીર્થ કરોના નિષ્ક્રમણના વખતે
આટલું દ્રવ્ય ઇન્દ્ર તેમને ઘેર પહોંચાડે છે.

एव सपेक्षते=विचारयतिस्म । सपेक्ष्य वैश्रमण देव शब्दयति, शब्दयित्वा, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिय ! एव खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे 'यावत्-अशीतिशतसहस्राणि दातुम्' अर्हता भगवता निष्क्रमता त्रीणि कोटिशतानि अष्टाशीति कोटी अशीतिशतसहस्राणि दातु सर्वेषामिन्द्राणामर्यादाऽस्तीति भावः । तत्=तस्माद् गच्छ खलु देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकमवने इमामेतद्रूपामर्थसपद खलु 'साहस्रसहस्र' 'सहर=पापय । सहस्र क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव मम ' एयमागच्छिय ' आज्ञप्तिका प्रत्यर्पय=ममाज्ञायाः प्रत्यर्पण कुरु ।

ततस्तदनन्तर खलु स वैश्रमणो देवः शक्रेण देवेन्द्रेण देवराजेनैवमुक्तो हृष्टः करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावत् ' पण्डिसुणेड ' प्रतिशृणोति=एव " करिष्यामि " इत्युक्त्वा स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य, जृम्भकान्

(एव सपેહેઠ, સપેહિત્તા વૈસમણ દેવ સદાવેઠ, સદાવિત્તા એવ વયાસી) એસા વિચાર ઉસ શક્ર દેવેન્દ્ર ને કિયા । કર કે ફિર ઉસને વૈશ્રમણદેવ-કુવેર-કો બુલાયા-બુઝાકર ઉસસે એસા કહા-(એવ લલુ દેવાણુપ્પિયા । જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે ભારહે વાસે જાવ અસીર્તિ ચ સયસહસ્રાઈ દલહત્તણ) હે દેવાનુપ્રિય ! હસ જમ્બૂદ્વીપ નામ કે દ્વીપ મેં ભારત વર્ષ ક્ષેત્ર મેં મિથિલા નામ કી નગરી હૈ । ઉસ કે રાજા કુમ્ભક કે મહલ મેં મહી નામ કી તીર્થકર પ્રભુ હૈં વે દીક્ષા લેને કા વિચાર કર રહે હૈં । હસલિયે ઇન્દ્રોં કા યહ પરમ્પરાગત નિયમ હૈ કિ વે ઉન કે નિષ્ક્રમણ મહોત્સવ કે સમય ત્રીન સૌ કરોડ, અઠાસી કરોડ, ઓર અસી લાખ સ્વર્ણ દીનારેં વાર્ષિક દાન મેં દેને કે લિયે ઉન કે માતા પિતાં કે ભવન

(એવ સપેહેઠ, સપેહિત્તા વૈસમણ દેવ સદાવેઠ, સદાવિત્તા એવ વયાસી)
તે શક્ર દેવેન્દ્રે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો અને ત્યારબાદ તેણે વૈશ્રમણદેવ કુવેરને બોલાવ્યો, બોલાવીને તેને કહ્યું—

(એવ લલુ દેવાણુપ્પિયા ! જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે ભારહે વાસે જાવ અસીર્તિ ચ સય સહસ્રાઈ દલહત્તણ)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ જમ્બૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમાં મિથિલા નામની નગરી છે ત્યાંના રાજા કુલકના મહેલમાં મહની નામના તીર્થકર પ્રભુ છે તેઓ દીક્ષા લેવાનો વિચાર કરી રહ્યા છે એટલા માટે ઇન્દ્રોનો આ જાતનો પણ પરાવી ચાલતો આવતો નિયમ છે કે તેઓ તેમના નિષ્ક્રમણ મહોત્સવના વખતે ત્રણસો કરોડ, ઇકચાશી કરોડ અને એશી લાખ સોના મહેરો વાર્ષિક દાનના રૂપમાં તેમને ત્યાં ઘેર પહોંચાડે

देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा परमादीत्-हे देवानुमियाः । गच्छत स्वच्छं पूर्वं
जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकस्य राज्ञो
भवने-त्रीणि कोटिशतानि, अष्टाशीतिकोटीः, अशीतिशतसहस्राणि, इमामेतद्द्रुषा
मर्थसपद "साहरह" सहरत=मापयत सहस्रं ममाज्ञसिक्तां मत्पर्ययत । ततः स्तु
तेजुम्भकादेवाः, 'वेसमणेण' वैश्रमणेन=एवमुक्ताः सन्तो दृष्टुं यावत् प्रति
शृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य, 'उत्तरपुरतियम' उत्तरपौरस्त्यम्=ईशान-
कोणरूप 'दिसोभाग' दिग्भागम्, 'अवक्रमति' अक्रामन्ति, गच्छन्ति,
अवक्रम्य=गत्वा यावत्-उत्तरवेउग्वियाड रुगड 'उत्तरवैक्रियाणि रूपाणि विकु
र्वन्ति विकुर्वगा कुर्वन्ति 'विकुर्वित्ता' विकुर्वित्ता, 'विकुर्व' इति सौत्रो धातु,
तेन ल्यव न भवति । तयोत्कृष्टया गत्या=दिव्यगत्या देवसम्बन्धि 'वीडवयमाणा'
व्यतिव्रजन्तः आगच्छन्तः यत्रैव जम्बूद्वीप द्वीपः, भारत वर्ष, यत्रैव मिथिला
राजधानी, यत्रैव कुम्भकस्य राज्ञो भवन, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कुम्भकस्य
राज्ञो भवने त्रीणि कोटिशतानि यावत्-अष्टाशीतिकोटी, अशीतिलक्षाणि इमामेतद्-
रूपामर्थमप्यद 'साहरति' सहरन्ति=मापय । सहस्र-यत्रैव वैश्रमणो देवस्त
त्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनख शिरावर्तै मस्तकेऽञ्जलिं

पर पहुँचावें (तं गच्छहण देवाणुप्पिया ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारहे वासे
मिहिलाए कुम्भकभवणसि इमेयाख्वे अत्थ सपदाण साहराहि) अत
हे देवानुमिय ! तुम जाओ-और जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में स्थित भारत
वर्ष क्षेत्र में वर्तमान मिथिला नगरी के कुम्भक राजा के भवन पर इतनी
पूर्वोक्त अर्थ सपत्ति को पहुँचाओ (साहरित्ता विप्पामेव मम एयमाण
स्सिय पच्चप्पिणाहि) पहुँचा कर पीछे हमें इस की ग्ववर दो । (तएण
से वेसमणे देवे सक्केण देविंदेण देवराएण एव बुत्ते हट्ठे करयल जाव
पडि सुणेइ) शक्र देवेन्द्र देव राज के द्वारा इस प्रकार आज्ञापित किये

(त गच्छहण देवाणुप्पिया ' जम्बू द्वीपे द्वीपे भारहे वासे मिहिलाए कुम्भक
भवणसि इमेयाख्वे अत्थसपदाण साहराहि)

ओटला भाटे छे देवानुमिय ! तमे जज्जे अने जज्जुद्वीप नामना द्वीपमा
स्थित भारतवर्ष क्षेत्रमा विद्यमान मिथिला नगरीना कुलक राजाना लवन उपर
उह्या भुज्ज अर्थ सपत्ति ओटले के द्रव्य तेमने त्या पडोयाडो (साहरित्ता
विप्पामेव मम एयम) (पडोयाडीने तमे अभने सूचित करे)
(तएण से वेसमणे देवे सक्केण देविंदेण देवराएण एव बुत्ते हट्ठे करयल
जाव पडिसुणेइ)

कृत्वा यावत्-प्रत्यर्पयन्ति, भवदीयाज्ञानुसारेण सर्वसाधितमस्माभिरिति निवेदयन्ति स्म । ततस्तदनन्तरं खलु स वैश्रमणो देवो यत्रोऽशक्रो देवेन्द्रो देवराजस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतमपरिगृहीत दशनम् यावत् प्रत्यर्पयन्ति ।

गये उस वैश्रवण देव ने हर्षित एव सतुष्ट होते हुए अपने दोनों हाथों की अजलि बना कर उसे मस्तक पर रखवा और नमस्कार कर देवेन्द्र की बात स्वीकार कर ली । “ मैं ऐसा ही करूँगा ” इस प्रकार कह कर उस ने उन की आज्ञा मान ली ।

(पडि सुणित्ता जमए देवे सदावेइ सदावित्ता एव वयासी-गच्छह ण तुम्हे देवाणुप्पिया ! जवूदीव दीव भारह वास मिहिल रायहाणि कुभं गस्स भवणसि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीय च कोडीओ आसे यं च सयसहस्साइ अयमेयारूव अत्थ सपयाण साहरेइ) आज्ञा मानकर फिर उम ने जृम्भकदेवों को बुलाया और बुला कर उन से ऐसा कहा- हे देवानुप्रियो ! तुम जवूदीप नाम के इस द्वीप में स्थित भारत वर्ष क्षेत्रान्तर्गत मिथिला नाम की राजधानी में जाओ-और जाकर वहा के कुम्भक राजा के महल में तीन सौ अट्ठासी करोड ८०, अस्सी लाख सुवर्ण दीनारे पहुँचाओ (साहरित्ता) पहुँचा कर (मम एयमाणात्तिय पच्चप्पिणेह) फिर मुझे इस आज्ञा पूर्ति की पीछे खबर दो । (तएण

शक्र देवेन्द्र देवराज वडे आ प्रभाणु आज्ञापित थयेला वैश्रवण देव कुणेर छर्षित तेमए सतुष्ट थयने पोताना थने डाथेनी अजली जनावीने तेने भरतके भूडीने नमस्कार उयां अने देवेन्द्रनी आज्ञा स्वीकारी लीधी “ हु आभं अ करीश ” आ प्रभाणु कहीने तेमनी तेणे आज्ञा स्वीकारी

(पडिसुणित्ता जमए देवे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुम्हे देवाणुप्पिया ! जवूदीव दीव भारह वाम मिहिल रायहाणि कुभगस्स भवणमि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीय च कोडीओ आसे यं च सयसहस्साइ अयमेयारूव अत्थसपयाण साहरेइ)

आज्ञा स्वीकारीने तेणु जलक देवाने जालाव्या अने जालावीने तेजोने आ प्रभाणु कहु के-डे देवानुप्रियो ! तमे अजवूदीप नामना द्वीपमा स्थित भारतवर्ष क्षेत्रमा वर्तमान मिथिला नामनी राजधानीमा जाओ अने जधने त्याना कुलक राजता भडेलमा त्रयुसे करोड, छक्याशी करोड, ऐशी लाख सेना भडारे पडायाडे (मम एयमाणात्तिय पच्चप्पिणेह) पछायाडया जाड भारी आज्ञा प्रभाणु स पूरुपणु काम पूर थय गयु छे तेनी भने भयर आयो

देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमादीत्—हे देवानुप्रियाः ! गच्छत स्वस्त्यं पृथं
जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकस्य राज्ञो
भवने=त्रीणि कोटिशतानि, अष्टाशीतिकोटी, अशीतिशतसहस्राणि, इमामेतद्भूष-
मर्थसपद "साहरह" सहरत=प्रापयत सहस्रं ममाहसिक्तां प्रत्यर्पयत । ततः स्वस्त्यं
तेजुम्भकादेवाः, 'वेसमणेण' वैश्रमणेन=एवमुक्ता. सन्तो दृष्टुं यावत् प्रति
शृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य=श्रीकृत्य, 'उत्तरपुरत्तियम्' उत्तर पौरस्त्यम्=ईशान-
कोणरूप 'दिसोभाग' दिग्भागम्, 'अप्रवमति' अप्रकामन्ति, गच्छन्ति,
अवक्रम्य=गत्वा यावत्—'उत्तरवेउच्चियाड रुगाइ' उत्तरवैक्रियाणि रूपाणि विकु-
र्वन्ति विकुर्वगा कुर्वन्ति 'विकुर्वित्ता' विकुर्वित्वा, 'विकुर्व' इति सौत्रो धातु,
तेन ल्यब न भवति । तयोत्कृष्टया गत्या=दिव्यगत्या देवसम्यन्धि 'वीड्वयमाणा'
व्यतिव्रजन्तः आगच्छन्तः यत्रैव जम्बूद्वीप द्वीपः, भारत वर्ष, यत्रैव मिथिला
राजधानी, यत्रैव कुम्भकस्य राज्ञो भवन, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कुम्भकस्य
राज्ञो भवने त्रीणि कोटिशतानि यावत्—अष्टाशीतिकोटी, अशीतिलक्षाणि इमामेतद्भू-
षामर्थमप्यद 'साहरति' सहरन्ति=प्रापय । सहस्रं—यत्रैव वैश्रमणो देवस्त
त्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनख शिरावर्त मस्तकेऽञ्जलि

पर पहुँचावें (त गच्छहण देवाणुप्पिया ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारहे वासे
मिहिलाए कुम्भकभवणसि इमेयारूवे अत्थ सपदाण साहराहि) अत
हे देवानुप्रिय ! तुम जाओ—और जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में स्थित भारत
वर्ष क्षेत्र में वर्तमान मिथिला नगरी के कुम्भक राजा के भवन पर इतनी
पूर्वोक्त अर्थ संपत्ति को पहुँचाओ (साहरित्ता विप्पामेव मम एयमाण
त्तिय पच्चप्पिणाहि) पहुँचा कर पीछे हमें इस की खबर दो । (तएण
से वेसमणे देवे सक्केण देविंदेण देवराएण एव बुत्ते हट्ठे करयल जाव
पडि सुणेइ) शक्र देवेन्द्र देव राज के द्वारा इस प्रकार आज्ञापित किये

(त गच्छहण देवाणुप्पिया ' जम्बू द्वीपे द्वीपे भारहे वासे मिहिलाए कुम्भक
भवणसि इमेयारूवे अत्थसपदाण साहराहि)

ओटला भाटे हे देवानुप्रिय ! तमे ज्ञाओ अने जम्बूद्वीप नामना द्वीपमा
स्थित भारतवर्ष क्षेत्रमा विद्यमान मिथिला नगरीना कुलक राजाना भवन उपर
कहा भुज्ज अर्थ संपत्ति ओटले के द्रव्य तेमने त्या पडोयाडो (साहरित्ता
विप्पामेव मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणाहि) पडोयाडीने तमे अभने सूचित करो

(तएण से वेसमणे देवे सक्केण देविंदेण देवराएण एव बुत्ते हट्ठे करयल
जाव पडिसुणेइ)

તતસ્તદનન્તર ત્વલુ મલ્લી અર્હન્ ' કટ્ટાકલ્લિલ ' કલ્યાકલ્લયે=પ્રતિદિવસ ' જાવ માગહઓ પાયરાસોત્તિ ' યાવત્-માગધક પ્રાતરાણ, મગધદેશમન્વન્ધિન પ્રાતરાણિ-પ્રામાતિક ભોજનકાલ યાવત્ આરમ્મ પ્રહરદ્વયપર્યન્ત વહુમ્મયઃ ' સળાહાણ ય ' સનાથેમ્મ-સ્વસ્વામિકેમ્મયથ ' અળાહાણ ય ' અનાથેમ્મયથ=રક્કેમ્મયથ, ' પથિયાગ ય ' પાન્થિકેમ્મયઃ પન્થાન નિત્ય ગચ્છન્તીતિ પાન્થાસ્ત એવ પાન્થિકાસ્તેમ્મયથ, ' પહિયાણ ય ' પથિકેમ્મયઃ-પથિ ગચ્છન્તીતિ પાથિકાસ્તેમ્મયથ, ' કરોડિયાણ ય ' કારોડિકેમ્મયઃ=કરોટથા કપાલેન ચરન્તીતિ કરોટિકાસ્તેમ્મયથ, ' સ્વપ્પરધારી ' હિતિમાપાપ્રસિદ્ધેમ્મયથ, ' કપ્પડિયાણ ય ' કોર્પટિકેમ્મય-કર્પટસ્વરન્તીતિ કાર્પટિકાસ્તેમ્મયઃ, કન્થાધારિ-ભિક્ષુકેમ્મય, એકમેઝ્ઝહિરણ્યકોટિમ્, તથા- ' અટ્ટ ચ સા જેનેવ વેસમણે દેવે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિન્ના કરયલ્લ જાવ પચ્ચપ્પિણતિ) રસ્થકર ફિર વે જહાં વૈશ્રમણ દેવ થા વહાં ગયે વહા જાકર ઉન્હો ને હાથ જોડકર " આપકી આજ્ઞાનુસાર હમને કુમ્મક રાજા કે ભવન અર્થ સપદા પહુન્ચા દી હૈ, એસી સ્થવર ઉસે પીછે કર દી । (તણ મલ્લી અરહા કલ્લાકલ્લિલ જાવ માગહઓ પાયરાસોત્તિ વહુણ સળાહાણ ય અળાહાણ ય પથિયા ય પહિયાણ ય કરોડિયાણ ય કપ્પડિયાણ ય એગમેઝ્ઝ હિરણ્યકોટિ અટ્ટ ય અણૂણાહ સયસહસ્સાહ હમેઘારુવ અત્થ સંપદાણ દલ્લયહ) હસકે બાદ મલ્લી અરિહત પ્રમુ ને કલ્યાકલ્લય-પ્રતિ-દિન પ્રાતઃ સમય સે લેકર દોપહર તક અપને સનાથોં કો, અનાથોં કો, પન્થિકોં કો, પથિકોં, સ્વપ્પર ધારિયો કો, કન્થા ધારિયો કો પ્રતિદિવસ ૧ વર્ષ તરુ ૧ કરોડ ૮૦ અસ્મી લાલ્લ સ્વર્ણ દીનારેં દી ।

(સાહરિન્ના જેનેવ વેસમણે દેવે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિન્ના કરયલ્લ જાવ પચ્ચપ્પિણતિ)

મૂકથા પેછી તેઓ જ્યા વૈશ્રમણ દેવો હતા ત્યા ગયા, ત્યા જધને તેઓએ હાથ જોડીને " તમારી આજ્ઞા મુજબ અમેએ કુલ્લ રાજાના લવનમા અર્થ-સપત્તિ પહોંચાડી દીધી છે " આ પ્રમાણેની સૂચના કરી

(તણ મલ્લી અરહા ! કલ્લાકલ્લિલ જાવ માગહઓ પાયરાસોત્તિ વહુણ સળાહાણા ય અળાહાણ ય પથિયાણય પરિયાણ ય કરોડિયાણ ય કપ્પડિયાણય એગમેઝ્ઝ હિરણ્યકોટિ અટ્ટ ય અણૂણાહ સયસહસ્સાહ હમેઘારુવ અત્થસંપદાણ દલ્લયહ) ત્યારબાદ મલ્લી અરહત પ્રમુએ કલ્યાકલ્લય દરરોજ અવારના પખતથી માડીને બપોરસુધી ઘણા સનાથોને, અનાથોને, પાથોને અને પથિકોને, સ્વપ્પરધારીઓને, કન્થાધારીઓને એક વર્ષ સુધી એક કરોડ એસી લાખ સોના મહોરો આપી,

તે જમગા દેવા વેસમણેણ ણવ ઘુત્તા સમાણા હઠ્ઠ તુટ્ટા જાવ પહિસુણેતિ, પહિસુણિત્તા ઉત્તરપુરત્થિમ દિસીમાગ અવક્રમંતિ, અવક્રમિત્તા જાવ ઉત્તર વેઽવિયાહ, રુવાહ વિઽવ્યતિ) હસ કે યાદ વૈશ્રમણ દેવ કે દ્વારા હસ તરહ અજ્ઞાપિત હુણે ઉન જૃમ્ભક દેવો ને હર્ષિત ણવ સતુષ્ટ હોકર ઉસ કી આજ્ઞા કો માત્ર લિયા-સ્વીકાર કર લિયા-। સ્વીકાર કર વે હૃશાન કોણ કી ઓર ગયે । વહા જાકર ઉન્હો ને ઉત્તર વૈક્રિય રૂપો કી વિકુર્વણા કી-(વિઽવિત્તા તાણે ઉઝિઠ્ઠાણે જાવ વીહવયમાણા જેણેવ જબૂદીવે દીવે મારહે વાસે જેણેવ મિહિલા રાયહાણી, જેણેવ કુમ્ભગસ્સ રણોભવણે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ) વિકુર્વણા કરકે ફિર વે ઉસ દેવ ગતિ સબન્ધી ઉત્કૃષ્ટ ગતિ સે યાવત્ ચલતે હુણે જહા જબૂદીપ નામ કા દ્વીપ મારત વર્ષ નામ કા ક્ષેત્ર, ઉસ મેં મો જહા મિથિલા નામ કી રાજધાની ઉસમેં મો જહા કુમ્ભક રાજા કા રાજ પ્રાસાદ યા-વહા આયે ।

(ઉવાગચ્છિત્તા કુમ્ભગસ્સ રણો ભવણસિ તિન્નિ કોહિસયા જાવ સાહરતિ) વહા આકર ઉન્હો ને કુમ્ભક રાજા કે ભવન મેં ત્રીનસો અઢાસીકરોડ ઓર ૮૦ લાખ સુવર્ણ દીનારસે મહાર મર દિયા । (સાહરિ-

(તણે જમગા દેવા વેસમણેણ એવ ઘુત્તા સમાણા હઠ્ઠ તુટ્ટા જાવ પહિસુણેતિ, પહિસુણિત્તા ઉત્તરપુરત્થિમ દિસીમાગ અવક્રમંતિ અવક્રમિત્તા જાવ ઉત્તર-વે ઽવિયાહ રુવાહ વિઽવ્ય તિ)

ત્યારબાદ વૈશ્રવણ દ્વારા આજ્ઞાપિત વયેલા જૃમ્ભક દેવોએ હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થઈને તેની આજ્ઞાને માની લીધી એટલે કે તેની આજ્ઞા સ્વીકારી સ્વીકાર્યા બાદ તેઓ ઈશાન કોણ તરફ ગયા ત્યાં જઈને તેઓએ ઉત્તર વૈક્રિય રૂપોની વિકુર્વણા કરી

(વિઽવિત્તા તાણે ઉઝિઠ્ઠાણે જાવ વીહવયમાણા જેણેવ જબૂદીવે દીવે મારહે વાસે જેણેવ મિહિલા રાયહાણી, જેણેવ કુમ્ભગસ્સ રણો ભવણે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ)

વિકુર્વણા કર્યા પછી તેઓ દેવગતિ સબન્ધી ઉત્કૃષ્ટ ગતિથી ચાલતા જ્યાં જબૂદીપ નામે દ્વીપ, મારતવર્ષ નામે ક્ષેત્ર અને તેમા પણ જ્યાં મિથિલા નામની રાજધાનીમા કુલક રાજાનો મહેલ હતો ત્યાં ગયા

(ઉવાગચ્છિત્તા કુમ્ભગસ્સ રણો ભવણસિ તિન્નિ કોહિસયા જાવ સાહરતિ) ત્યાં જઈને તેઓએ કુલક રાજાના મહેલમા ત્રણસો ઈંચાશીકરોડ અને એથી સાથે સોનામહોરો સહાર-ખજાનામા મૂકી દીધી

पान्थिका वा, पथिका वा कारोटिका वा कार्पटिका वा 'पासडत्था वा' पाखण्डस्थाः
पाखण्डधर्मस्थिता, तथा-गृहस्था वा, तेसिं च=तेपाम्=आगताना, चकारः-
समुच्चयार्थः, तथा तत्र तत्र देशे देशेऽवस्थितस्य च-आश्वस्थस्य विश्वस्थस्य सुखा-
सनवरगतस्य तद् विपुलमशन पान खाद्य खाद्य 'परिभाएमाणा' परिभाजयन्त.
=विभाग कुर्वन्त' 'परिवेसेमाणा' परिवेषयन्तः=भोजनपात्रे स्थापयन्त. विह-
रन्ति=ये खलु मिथिलानगर्या तत्र तत्र देशे देशे बहवो मनुष्या विपुलस्याशनादि
चतुर्विधाऽऽहारस्य निष्पादका आसन्, ते पान्थिकादिभ्यः तत्तद्देशायस्थितेभ्यश्च
विपुलस्याशनाद्याहारस्य परिवेषण कुर्वन्तस्तिष्ठन्ति स्मेत्यर्थः ।

ततस्तदनन्तर खलु मिथिलाया शृङ्गाटकादौ देशे देशे यावत्-बहुजनोन्यस्य
=परस्परमेवम् आख्याति=कथयतिस्म, एव 'भासइ' भापत्ते, साश्चर्यं वक्ति, अपूर्वं

चतुर्विध आहार को पका कर वहाँ जो जैसे आते थे (तजहा) यथा
-चाहे वे (पथियावा पथिया वा करोडिया वा, कप्पडिया वा पासडत्था
वा गिहत्था वा) पाथिक जन हो चाहे पथिक जन हो, खर्पर वारी भि-
क्षुक हो चाहे कथाधारी भिक्षुक हो पाखडी धर्म में स्थित हो, चाहें गृह
स्थजन हो, (तेसिय-तहा आसत्थस्म, वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स
त विपुल असण ४ परिभाएमाणा परिवेसे माणा विहरति) उन सबको
तथा अन्य और भी उस उस देश में रहें हुए मनुष्यों को, आश्वस्थों को,
विश्वस्तों को, एव सुखासनवरगतो को उस विपुल अशनादिरूप
आहार को पोट देते थे तथा वही पर जिमा देते थे ।

(तएण मिहिलाए मिघाडग जाव बहुजणो अणमणस्स एवमाइ
क्खइ, एव मामइ एव पन्नवेइ, एव परुवेइ, -एव खलु देवाणु० ।

आहारो तैयार करीने त्या गमे तेवा भाणुमे आवता (त जहा) जेमके
(पथिया वा पथिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहत्था वा)

पाथिक जन, अप्परधारी भिक्षुक, कथाधारी भिक्षुक, पाखडी धर्मने आश्वन्नारा
अने गृहस्थीओ गमे ते जत पथना लोके त्या आवता

(तेसिय तहा आसत्थस्स, सुहासणवरगयस्स त विपुल असण ४ परिभाए
माणा परिवेसेणा विहरति)

तेओ अधाने तेमज ते देशमा रडेनारा भील धणु भाणुमेने, आश्व
स्थाने, विश्वस्तोने अने सुखासनवर गतोने ते पुण्ण प्रभाणुमा अनाववाभा
आवेले आहार पडे यवामा आवतो डतो तेमज तेओने त्याज्ज जमाडवामा
पणु आवता डता

(तएण मिहिलाए रि प.डग जाव बहु जणो अणमणस्स एवमाइक्खइ, एवं

અન્યૂનાનિ પૂર્ણાનિ શતસહસ્રાણિ 'અથાણિ' એકકોટિમણ્ડપાણિ ચ મ્વર્ણશીનારામિ
 હમાગેતદ્દૂષામર્થસમ્પદં 'દલયદ્' દદાતિ ।

તતસ્તદનન્તર સલુ કુમ્ભકો રાજા મિથિલાયાં રાજધાન્યા તત્ર તત્ર=અવાન્તર
 પુરાદો, તથા તસ્મિન્ તસ્મિન્ દેશેદેશે=શૃંગાટકાદો પદ્મીર્મહાનસગાન્ધાઃ ઓદનાદીનાં
 પાકગૃહાણિ=કારયતિ । તતઃ સલુ વહ્યો મનુષ્યાઃ તે કવ્યભૂતા ઇત્યાહ-'દિવ્ન
 મહ્મત્તવેયણા' ઇતિ, દત્તભૃતિમત્તવેતનાઃ=દત્ત ભૃતિમત્તલક્ષણ દ્રવ્ય ભોજનસ્વરૂપ
 વર્તન મૂલ્ય યેભ્યસ્તે તથા, યદ્વા-ભૃત્તિર્મરણ પોષ્યવર્ગાર્થમન્નાદિક, મત્ત-સ્વ
 ભોજનાર્થ, વેતન-અશનાદિ સસ્કારકરણપારિશ્રમિક ચ તાનિ દત્તાનિ ભૃતિમત્ત
 વેતનાનિ યેભ્યસ્તે તથા, વિપુલમશનપાનસ્વાદ્યમ્-'ઉવક્લહેતિ' ઉપસ્કુર્વન્તિ
 ચતુર્વિધાહાર નિષ્પાદયન્તિ, ઉપસ્કૃત્ય, યે યદ્વાડગચ્છન્તિ 'તજહા' તદ્ યથા-

પ્રતિદિન-નિત્ય-માર્ગ ચલને વાલે વ્યક્તિ યદ્વા પાન્થિક શબ્દ સે,
 તંથા જય કમ્પી માર્ગ ચલને વાલે વ્યક્તિ પથિક શબ્દ સે ગૃહીત હુવ હૈ ।
 (તેણ સે કુમ્ભ મિથિલાય રાયહાણીય તત્થ ૨ તર્હિ ૨ દેસે ૨ વહુઓ
 મહાણસસાલાઓ કરેહ, તત્થણ વહવે મણુયા, દિન્નમહ્મત્તવેયણા
 વિપુલ અસણ પાણ સ્વાદમ સાદમ ઉવક્લહેતિ ઉવક્લહિત્તા જે જહા
 આગચ્છહ) હસ કે અનન્તર ડન કુમ્ભક રાજા ને મિથિલા રાજધાની મેં
 જર્હાં તદ્વા અવાન્તર પુર આદિ મેં-ડસ પ્રદેશ મેં શૃંગાટક આદિ રાસોં
 મેં અનેક રસોઈ ઘર સ્થાપિત કરવા દિયે, ડનમેં અનેક રસોઈયે અશન
 પાન આદી રૂપ ચતુર્વિધ આહાર વિપુલ માત્રા મેં બનાતે થે ।

હસકે ઉપલક્ષ્ય મેં ડન્હે તથા ડનકે પોષ્ય વર્ગ કે લિયે વહા સે મો
 જન મિલના થા ઓર ડન મોજન બનાને વાલોં કે લિયે વહાં સે વેતન
 મ્પી મિલતા થા । વે વિપુલ માત્રા મેં અશન પાન, સ્વાદ્ય, સ્વાદ્ય તથા રૂપ

દરરોજ નિત્ય રસ્તે ચાલતા રહેનારાઓ અહીં 'પાથિક' શબ્દથી તેમજ
 કેઈકે દિવસ રસ્તે ચાલનારાઓ 'પથિક' શબ્દથી સમજવા લેઈએ

(તેણ સે કુમ્ભ મિથિલાય રાયહાણીય તત્થ ૨ તર્હિ ૨ દેસે ૨ વહુઓ
 મહાણસમાલાઓ કરેહ, તત્થણ વહવે મણુયા, દિન્નમહ્મત્તવેયણા વિપુલ અસણ
 પાણ સ્વાદમ સાદમ ઉવક્લહેતિ, ઉવક્લહિત્તા જે જહા આગચ્છહ)

ત્યારબદ્ કુલક રાજાએ મિથિલા નગરીમા બધે અવાન્તરપુર વગેરેમા
 તે પ્રદેશોમા શૃંગાટક વગેરે રસ્તાઓમા ઘણા રસોઈ ઘરો સ્થાપિત કરાવડાવ્યા
 તેઓમા ઘણા રસોઈયાઓ અશન, પાન વગેરે રૂપમા પુષ્કળ પ્રમાણમા ચાર
 બાતના આહારો તે ૧૨ કરતા હતા

એના બદલ તેઓને તથા તેમની સાથેના બીજા માણસોને ત્યાંથી લોજન
 મળતું હતું અને રસોઈ તૈયાર કરનાર માણસોને પગાર પણ મળતો હતો
 તેઓ પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદના રૂપમા બાતના

पान्थिका वा, पथिका वा कारोटिका वा कार्पटिका वा 'पासडत्था वा' पाखण्डस्थाः
पाखण्डधर्मस्थिता, तथा-गृहस्था वा, तेसिं च=तेषाम्=आगतानां, चकारः-
समुच्चयार्थः, तथा तत्र तत्र देशे देशेऽवस्थितस्य च-आश्वस्थस्य विश्वस्थस्य सुखा-
सनवरगतस्य तद् विपुलमशनं पानं खाद्यं खाद्यं 'परिभाष्यमाणं' परिभाषयन्तः
=विभागं कुर्वन्तः 'परिवेसेयमाणं' परिवेषयन्तः=भोजनपात्रे स्थापयन्तः विह-
रन्ति=ये खलु मिथिलानगर्या तत्र तत्र देशे देशे गृहो मनुष्या विपुलस्याशनादि
चतुर्विधाऽऽहारस्य निष्पादका आसन्, ते पान्थिकादिभ्यः तत्तद्देशावस्थितेभ्यश्च
विपुलस्याशनाद्याहारस्य परिवेषणं कुर्वन्तस्तिष्ठन्ति स्मेत्यर्थः ।

ततस्तदनन्तरं खलु मिथिलाया शृङ्गाटकादौ देशे देशे यावत्-बहुजनोन्यस्य
=परस्परमेवम् आख्याति=कथयतिस्मिन्, एव 'भाष्य' भाष्ये, साध्वर्यं वक्ति, अपूर्वं

चतुर्विध आहार को पका कर वहाँ जो जैसे आते थे (तजहा) यथा-
चाहे वे (पथियावा पथिया वा करोडिया वा, कप्पडिया वा पासडत्था
वा गिहत्था वा) पाथिक जन हो चाहे पथिक जन हो, खर्पर वारी भि-
क्षुक हो चाहे कथाधारी भिक्षुक हो पाखण्डी धर्म में स्थित हो, चाहें गृह-
स्थजन हो, (तेसिय-तहा आसत्थस्स, वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स
त विपुल असण ४ परिभाष्यमाणं परिवेसे माणा विहरति) उन सबको
तथा अन्य और भी उस उस देश में रहें हुए मनुष्यों को, आश्वस्थों को,
विश्वस्तों को, एवं सुखासनवरगतों को उस विपुल अशनादिरूप
आहार को पोट देते थे तथा वही पर जिमा देते थे ।

(तएण मिहिलाए मिघाडग जाय बहुजणो अणमणस्स एवमाइ-
क्खइ, एव मामइ एव पन्नवेइ, एव परुवेइ, एव खलु देवाणु० ।

आहारों तैयार करीने त्या गमे तेवा भाषुमे आवता (तजहा) जेभडे
(पथिया वा पथिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहत्था वा)
पाथिक जन, अप्परधारी भिक्षुक, कथाधारी भिक्षुक, पाखण्डी धर्मने आश्वस्थाना
अने गृहस्थीओ गमे ते वत पथना लोके त्या आवता

(तेसिय तहा आसत्थस्स, सुहासणवरगयस्स त विपुल असण ४ परिभाष्य-
माणा परिवेसेणा विहरति)

तेओ अधाने तेभज ते देशमा रहेनारा जीव धणु भाषुमेने, आश्व-
स्थाने, विश्वस्तोने अने सुखासनवरगतोने ते पुण्डण प्रमाणमा जनाववामा
आवेले आहार वडे अवाभा आवतो डतो तेभज तेओने त्याज जमाडवामा
पणु आवता डता

(तएण मिहिलाए रिण्डग जाय बहु जणो अणमणस्स एवमाइक्खइ, एवं

अन्यूनानि पूर्णानि शतसहस्राणि ' = लक्षानि एककोटिमष्टशानि च मूर्धन्यदीनाराणि
इमां गेहद्वयमर्थसम्पद ' दलयइ ' ददाति ।

ततस्तदनन्तर खलु कुम्भको राजा मिथिलायां राजधान्या तत्र तत्र = अवान्तर
पुरादौ, तथा तस्मिन् तस्मिन् देशेदेशे = गृहाटकादौ यदीमेहानसशालाः ओदनादीनां
पाकगृहाणि = कारयति । ततः खलु बहवो मनुष्याः ते कथंभूता इत्याह - ' दिव्य
भइभक्तवेयणा ' इति, दत्तभृतिभक्तवेतनाः = दत्त भृतिभक्तलक्षण द्रव्य भोजनस्वरूप
वर्तन मूल्य येभ्यस्ते तथा, यद्वा - भृत्तिर्मरण पोष्यगार्थिमन्नादिक, भक्त - स्व
भोजनार्थ, वेतन - अशनादि सस्कारकरणपारिश्रमिक च तानि दत्तानि भृतिभक्त
वेतनानि येभ्यस्ते तथा, विपुलमशनपानखाद्यखाद्यम् - ' उवखडैति ' उपस्कुर्वन्ति
चतुर्विधाहार निष्पादयन्ति, उपस्कृत्य, ये यथाऽऽगच्छन्ति ' तजहा ' तद् यथा -

प्रतिदिन-नित्य-मार्ग चलने वाले व्यक्ति यहां पान्थिक शब्द से,
तथा जय कभी मार्ग चलने वाले व्यक्ति पथिक शब्द से गृहीत हुए हैं।
(तएण से कुम्भ मिथिलाए रायहाणीए तत्थ २ तहिं २ देसे २ बहुओ
महाणससालाओ करेइ, तत्थण बहवे मणुया, दिन्नभइभक्तवेयणा
विपुल असण पाण खइम साइम उवखडैति उवखडित्ता जे जहा
आगच्छइ) इस के अनन्तर उन कुम्भक राजा ने मिथिला राजधानी में
जहाँ तहा अवान्तर पुर आदि में - उस प्रदेश में शृगाटक आदि रास्तों
में अनेक रसोई घर स्थापित करा दिये, उनमें अनेक रसोइये अशन
पान आदी रूप चतुर्विध आहार विपुल मात्रा में बनाते थे ।

इसके उपलक्ष्य में उन्हें तथा उनके पोष्य वर्ग के लिये वहा से भो
जन मिलता था और उन भोजन बनाने वालों के लिये वहा से वेतन
भी मिलता था । वे विपुल मात्रा में अशन पान, खाद्य, स्वाद्य तथा रूप

हररोज नित्य रस्ते आलता रडेनाराओ अही ' पथिक ' शब्दथी तेमज
केअई द्विस रस्ते आलनाराओ ' पथिक ' शब्दथी समजवा लेधये

(तएण से कुम्भ मिथिलाए रायहाणीए तत्थ २ तहिं २ देसे २ बहुओ
महाणससालाओ करेइ, तत्थण बहवे मणुया, दिन्नभइभक्तवेयणा विपुल असण
पाण खाइम साइम उवखडैति, उवखडित्ता जे जहा आगच्छइ)

त्यारण इ कुम्भको राजा मिथिला नगरीमा अये अवान्तरपुर वगेरेमा
ते प्रदेशोमा शृगाटक वगेरे रस्ताओमा धण्ण रसोई धरे स्थापित करावडाओमा
तेओमा धण्ण रसोईयाओमा अशन, पान वगेरे इपमा पुञ्जण प्रमाणुमा आरे
जतना आडारे तैगार करता डता

ओना जइल तेओने तथा तेमनी साथेना जील माणुसोने त्यांथी बोजन
भगतुं डनुं अने रसोई तैगार करनार माणुसोने पगार पणु भगतो डतो
तेओ पुञ्जण प्रमाणुमा अशन, पान, आद्य अने स्वाधना इपमा जतना

पान्थिका वा, पथिका वा कारोटिका वा कार्पटिका वा 'पासडत्था वा' पाखण्डस्याः
पाखण्डधर्मस्थिता, तथा-गृहस्था वा, तेसिं च=तेषाम्=आगतानां, चकारः-
समुच्चयार्थः, तथा तत्र तत्र देशे देशेऽवस्थितस्य च-आश्वस्थस्य विश्वस्थस्य सुखा-
सनवरगतस्य तद् विपुलमशनं पानं खाद्यं खाद्यं 'परिभाषमाणा' परिभाषयन्तः
=विभागं कुर्वन्तः 'परिवेसेमाणा' परिवेषयन्तः=भोजनपात्रे स्थापयन्तः. विह-
रन्ति=ये खलु मिथिलानगर्या तत्र तत्र देशे देशे गृहो मनुष्या विपुलस्याशनादि
चतुर्विधाऽऽहारस्य निष्पादका आसन्, ते पान्थिकादिभ्यः तत्तद्देशावस्थितेभ्यश्च
विपुलस्याशनाद्याहारस्य परिवेषणं कुर्वन्तस्तिष्ठन्ति स्मेत्यर्थः ।

ततस्तदनन्तरं खलु मिथिलाया गृह्णाटकादौ देशे देशे यावत्-बहुजनोन्यस्य
=परस्परमेवम् आख्याति=कथयतिस्मिन्, एव 'भासइ' भाषते, साश्चर्यं वक्ति, अपूर्वं

चतुर्विध आहार को पका कर चर्हा जो जैसे आते थे (तजहा) यथा-
चाहे वे (पथियावा पथिया वा करोडिया वा, कप्पडिया वा पासडत्था
वा गिहत्था वा) पाथिक जन हो चाहे पथिक जन हो, खर्पर वारी भि-
क्षुक हो चाहे कथाधारी भिक्षुक हो पाखण्डी धर्म में स्थित हो, चाहे गृह-
स्थजन हो, (तेसिय-तहा आसत्थस्स, वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स
त विपुल असण ४ परिभाषमाणा परिवेसे माणा विहरति) उन सबको
तथा अन्य और भी उस उस देश में रहें हुए मनुष्यों को, आश्वस्थों को,
विश्वस्तों को, एवं सुखासनवरगतों को उस विपुल अशनादिरूप
आहार को पोट देते थे तथा वही पर जिमा देते थे ।

(तएण मिहिलाए मिघाडग जाव बहुजणो अणमणस्स एवमाइ-
क्खवइ, एव भामइ एव पन्नवेइ, एव पखवेइ, -एव खलु देवाणु० ।

आहारो तैयार करीने त्या गमे तेरा भाणुमे आवता (त जहा) जेभडे
(पथिया वा पथिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहत्था वा)
पाथिक जन, अप्परधारी भिक्षुक, कथाधारी भिक्षुक, पाखण्डी धर्मने आश्वस्थजन
अने गृहस्थीओ गमे ते जत पथना दोके त्या आवता

(तेसिय तहा आसत्थस्स, सुहासणवरगयस्स त विपुल असण ४ परिभाष-
माणा परिवेसेणा विहरति)

तेओ जधाने तेभज ते देशभा रडेनारा पील धणु भाणुमेने, आश्व-
स्थाने, विश्वन्तोने अने सुखासनवर गतोने ते पुण्ण प्रमाणुभा जनाववाभा
आवेले। आहार पडे यवामा आवतो डतो तेभज तेओने त्याज जमाडवामा
पणु आवता डता

(तएण मिहिलाए रि प डग जाव बहु जणो अणमणस्स एवमाइक्खवइ, एवं

અન્યૂનાનિ પૂર્ણાનિ શતમહસ્રાગિ ' = લક્ષાણિ એકકોટિમણ્ડલાણિ ચ મર્ણદીનારામિ
 હમામેતદ્ભૂપામર્થસમ્પદ ' દલયઈ ' દદાતિ ।

તતસ્તદનન્તર ચલુ કુમ્મકો રાજા મિથિલાયાં રાજધાન્યા તત્ર તત્ર = અવાન્તર
 પુરાદો, તથા તસ્મિન્ તસ્મિન્ દેશેદેશે = શૃંગાટકાદો પહીર્મદાનસગાલાઃ ઓદનાદીનાં
 પાકગૃહાણિ = કારયતિ । તતઃ ચલુ વહ્યો મનુષ્યાઃ તે કવંધૂતા ઇત્યાદિ - ' દિન્ન
 મહ્મત્તવેયણા ' ઇતિ, દત્તભૃતિમત્તવેતનાઃ = દત્ત ભૃતિમત્તલક્ષણ દ્રવ્ય ભોજનસ્વરૂપ
 વર્તન મૂલ્ય યેભ્યસ્તે તથા, યદ્વા - ભૃત્તિર્મરણ પોષ્યવર્ગાર્થમન્નાદિક, મત્ત - સ્વ
 ભોજનાર્થ, વેતન - અશનાદિ સસ્કારકરણપારિશ્રમિક ચ તાનિ દત્તાનિ ભૃતિમત્ત
 વેતનાનિ યેભ્યસ્તે તથા, ત્રિપુલમશનપાનલાઘવાદયમ્ - ' ઉવચ્છલ્લેતિ ' ઉપસ્કુર્વન્તિ
 ચતુર્વિધાહાર નિષ્પાદયન્તિ, ઉપસ્ક્રત્ય, યે યથાઽઽગચ્છન્તિ ' તજઠા ' તદ્ યથા -

પ્રતિદિન-નિત્ય-માર્ગ ચલને વાલે વ્યક્તિ યદાં પાન્થિક શબ્દ સે,
 તથા જય કમી માર્ગ ચલને વાલે વ્યક્તિ પથિક શબ્દ સે ગૃતીત હુઈ હૈ ।
 (તેણ સે કુમળ મિથિલાણ રાયહાણીણ તત્થ ૨ તર્હિ ૨ દેસે ૨ વહૂઓ
 મહાણસસાલાઓ કરેઈ, તત્થણ વહવે મણુયા, દિન્નમહ્મત્તવેયણા
 વિપુલ અસણ પાણ ચાઈમ સાઈમ ઉવચ્છલ્લેતિ ઉવચ્છલ્લિત્તા જે જહા
 આગચ્છઈ) હસ કે અનન્તર ડન કુમ્મક રાજા ને મિથિલા રાજધાની મેં
 જહાં તહા અવાન્તર પુર આદિ મેં-ડસ પ્રદેશ મેં શૃંગાટક આદિ રાસોં
 મેં અનેક રસોંઈ ઘર સ્થાપિત કરવા દિયે, ડનમેં અનેક રસોંઈયે અશન
 પાન આદી રૂપ ચતુર્વિધ આહાર વિપુલ માત્રા મેં વનાતે થે ।

હસકે ઉપલક્ષ્ય મેં ડન્હે તથા ડનકે પોષ્ય વર્ગ કે લિયે વહા સે મો
 જન મિલના થા ઓર ડન મોજન વનાતે વાલોં કે લિયે વહાં સે વેતન
 મી મિલતા થા । વે વિપુલ માત્રા મેં અશન પાન, ચાઘ, સ્વાઘ તથા રૂપ

દરરોજ નિત્ય રસ્તે ચાલતા રહેનારાઓ અહીં ' પાથિક ' શબ્દથી તેમજ
 કોઈક દિવસ રસ્તે ચાલનારાઓ ' પથિક ' શબ્દથી સમજવા લેઈએ

(તેણ સે કુમળ મિથિલાણ રાયહાણીણ તત્થ ૨ તર્હિ ૨ દેસે ૨ વહૂઓ
 મહાણસસાલાઓ કરેઈ, તત્થણ વહવે મણુયા, દિન્નમહ્મત્તવેયણા વિપુલ અસણ
 પાણ ચાઈમ સાઈમ ઉવચ્છલ્લેતિ, ઉવચ્છલ્લિત્તા જે જહા આગચ્છઈ)

ત્યારણ દ કુલક રાજાએ મિથિલા નગરીમા બધે અવાન્તરપુર વગેરેમા
 તે પ્રદેશોમા શૃંગાટક વગેરે રસ્તાઓમા ઘણા રસોઈ ઘરો સ્થાપિત કરાવડાવ્યા
 તેઓમા ઘણા રસોઈયાઓ અશન, પાન વગેરે રૂપમા પુષ્કળ પ્રમાણમા ચાદે
 બાતના આહારો તે ૧૨ કરતા હતા

એના બદલ તેઓને તથા તેમની સાથેના બીજા માણસોને ત્યાંથી ભોજન
 મળતું હતું અને રસોઈ તૈયાર કરનાર માણસોને પગાર પણ મળતો હતો
 તેઓ પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાધના રૂપમા બાતના

पान्थिका वा, पथिका वा कारोटिका वा कार्पटिका वा 'पासडत्था वा' पाखण्डस्याः
पाखण्डधर्मस्थिता, तथा-गृहस्था वा, तेसिं च=तेषाम्=आगतानां, चकारः-
समुच्चयार्थः, तथा तत्र तत्र देशे देशेऽवस्थितस्य च-आश्वस्थस्य विश्वस्थस्य सुखा-
सनवरगतस्य तद् विपुलमशनं पानं खाद्यं खाद्यं 'परिभाषमाणा' परिभाषयन्तः.
=विभागं कुर्वन्तः 'परिवेसेमाणा' परिवेषयन्तः=भोजनपात्रे स्थापयन्तः. विह-
रन्ति=ये खलु मिथिलानगर्या तत्र तत्र देशे देशे बहवो मनुष्या विपुलस्याशनादि
चतुर्विधाऽऽहारस्य निष्पादका आसन्, ते पान्थिकादिभ्यः. तत्तद्देशावस्थितेभ्यश्च
विपुलस्याशनाद्याहारस्य परिवेषणं कुर्वन्तस्तिष्ठन्ति स्मेत्यर्थः ।

ततस्तदनन्तरं खलु मिथिलायां शृङ्गाटकादौ देशे देशे यावत्-बहुजनोन्यस्य
=परस्परमेवम् आख्याति=कथयतिस्मिन्, एव 'भासइ' भाषते, माश्वर्यं वक्ति, अपूर्वं

चतुर्विध आहार को पका कर वर्हा जो जैसे आते थे (तजहा) यथा
-चाहे वे (पयियावा पहिया वा करोडिया वा, कप्पडिया वा पासडत्था
वा गिहत्था वा) पाथिक जन हो चाहे पथिक जन हो, खर्पर वारी भि-
क्षुक हो चाहे कथाधारी भिक्षुक हो पाखण्डी धर्म में स्थित हो, चाहें गृह-
स्थजन हो, (तेसिय-तहा आसत्थस्म, वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स
त विपुल असण ४ परिभाषमाणा परिवेसे माणा विहरति) उन सबको
तथा अन्य और भी उस उस देश में रहें हुए मनुष्यों को, आश्वस्थों को,
विश्वस्थों को, एवं सुखासनवरगतों को उस विपुल अशनादिरूप
आहार को पोट देते थे तथा वहीं पर जिमा देते थे ।

(तएण मिहिलाए मिघाडग जाय बहुजणो अणमणस्स एवमाइ-
क्खइ, एव मामइ एव पन्नवेइ, एव पखवेइ, -एव खलु देवाणु० ।

आहारो तैयार करीने त्या गमे तेवा भाषुमे आवता (त जहा) जेभडे
(पयिया वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहत्था वा)
पाथिक जन, अपरधारी भिक्षुक, कथाधारी भिक्षुक, पाखण्डी धर्मने आश्वस्थाना
अने गृहस्थीओ गमे ते जत पथना लोकें त्या आवता

(तेसिय तहा आसत्थस्स, सुहासणवरगयस्स त विपुल असण ४ परिभाष-
माणा परिवेसेणा विहरति)

तेओ जधाने तेभज ते देशभा रहेंनारा जीन धणु भाषुमेने, आश्व-
स्थाने, विश्वस्थाने अने सुखासनवर गताने ते पुष्कण प्रभाषुमा जनाववाभा
आवेले आहार वडे अवाभा आवतो हुतो तेभज तेओने त्याज जमाउवाभा
पणु आवता हुता

(तएण मिहिलाए रिं गडग जाय बहु जणो अणमणस्स एवमाइक्खइ, एवं

ભોજનદાન, ન શ્રુત નાવિદ્યપ્રતિપાદ્યર્થેર્વક ચર્ણયતીત્યર્થ । એવ ' પન્નવેડ ' પ્રજ્ઞાપયતિ વિસ્તારેણ પ્રોધયતિ, એવ ' પન્નવેડ ' પરુપયતિ-મદ્દષ્ટાન્ત ચર્ણયતિ, કિમાગ્યાતીત્યાહ- ' એવ ચલુ ' ઇત્યાદિ-એવ ચલુ હે દેવાનુપ્રિયા ! કુમ્મકસ્ય રાજ્ઞો ભવને ' સન્નકામગુણિય ' સર્વકામગુણિત=સર્વેન્દ્રિયસુખજનક ' કિમિચ્છય ' કિમિચ્છન્નમ્=ચ્છાનુસાર વિપુલમગનપાનપાદ્યમ્યાન્ન ચદ્દમ્પ' શ્રમણેભ્યો બ્રાહ્મણે ભ્યશ્ચ, યાત્ત્વ યથા સમાગતેભ્યઃ સનાથાનાથપાન્થિકાદિભ્ય પરિવેષ્યતે ।

“ વરવરિયા ઘોસિજ્જહ કિમિચ્છય દિજ્જણ વહુવિહીય ।

સુરઅસુરદેવદાણવ નરિદમહિયાણ નિવલ્લમણે ॥૧॥ ”

‘વરવરિયા’ વરવરિકા-વર વર=યાચસ્ય યાચસ્ય ઇતિ ઘોષણા, ‘ ઘોસિજ્જહ ’

કુમ્મગસ્સ રણ્ણો ભવણમિ મચ્ચ કામગુણિય કિમિચ્છય વિપુલ અસણ ૪ વહુણ સમણાણ ચ જાવ પરિવેસિજ્જેહ) હસ કારણ મિથિલો નગરી મેં શ્રુગાટક આદિ સ્થાનોં પર અનેક જન મિલ ર કર એક દૂસરે સે એસા કહને લગે, આશ્ચર્ય યુક્ત હોકર હસ પ્રકાર યોલને લગે-વિસ્તાર પૂર્વક હસ પ્રકાર એક દૂસરે કો સમજાને લગે, તથા દૃષ્ટાન્ત દેકર ર હસ પ્રકાર ચર્ણન કરને લગે-હે દેવાનુપ્રિયો ! કુમ્મક રાજા કે ભવન પર સર્વેન્દ્રિય સુખ જનક, અશન પાન, સ્વાદ્ય એવ સ્વાદ્યરૂપ ચતુર્વિધ આહાર અનેક શ્રમણોં કે લિયે, બ્રાહ્મણોં કે લિયે યાત્ત્વ સમાગતોં કે લિયે, સનાથો અનાથોં કે લિયે ઓર પાંથિકોદિકોં કે લિયે હચ્છાનુસાર દિયા જાતા હૈ (વરવરિયા ઘોસિજ્જહ, કિમિચ્છય દિજ્જણ વહુ વિહીય, સુર અસુર દેવ દાણવનરિદ મહિયાણ નિવલ્લમણે) સુર અસુર, દેવ, દાનવ, એવ નરેન્દ્રોં દ્વારા પૂજ્ય તીર્થકરોં કે નિષ્ક્રમણ કે

માસહ એવ પન્નવેડ, એવ પરુવેડ, એવ ચલુ દેવાણુ ૦ ? કુમ્મગસ્સ રણ્ણો ભવણમિ સન્નકામગુણિય કિમિચ્છય વિપુલ અસણ ૪ વહુણ સમણાણ ચ જાવ પરિવેસિજ્જેહ)

એના લીધે મિથિલા નગરીના શ્રુગાટક વગેરે સ્થાનોમા નાગરિકોના ટોળે ટોળા એકઠા થઇને આશ્ચર્ય પામતા વિસ્તારપૂર્વક એક-બીજાને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા, સમજાવવા લાગ્યા તેમજ દૃષ્ટાન્તો આપીને આ પ્રમાણે વર્ણન કરવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિયો ! કુલક રાજાના મહેલમા સર્વેન્દ્રિય સુખજનક અશન, પાન, પાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચાર જાતનો આહાર ધણા શ્રમણો, બ્રાહ્મણો, સમાગતો, સનાથો, અનાથો અને પાંથિકો વગેરેને માટે ઇચ્છા મુજબ આપવામા આવે છે

વરવરિયા ઘોસિજ્જહ, કિમિચ્છય દિજ્જણ વહુવિહીય, સુર અસુર દેવ, દાણવનરિદ મહિયાણ નિવલ્લમણે)

સુર, અસુર, દેવ, દાનવ અને નરેન્દ્રોવડે પૂજ્ય તીર્થકરોના નિષ્ક્રમણના સમયે “ માગો, માગો ” આ જાતની ઘોષણા કરવામા આવી છે વધી

घोष्यते किमिच्छय=किमिच्छकम् इच्छानुसार दीयते बहुविक्रियम् । सुरासुरदेव दानजनरेन्द्र महिताना=अर्हता तीर्थकराणा निष्क्रमणे ॥ १ ॥

ततः खलु मल्ली अर्हन् अस्य—‘मण पहारेड’ मनसि प्रधारयति, इत्यनेन सम्बन्ध । किं प्रधारयतीत्याह—‘सवच्छरे’ सवत्सरे खलु त्रीणि कोटिशतानि अष्टा दश च भवन्ति कोटयः । अशीतिशतसहस्राणि स्वर्णदीनाराणि तीर्थकरनिष्क्रमणे दातव्यानि भवन्ति इमामेतद्रूपामर्थमपद खलु दत्त्वा निष्क्रमामि दीक्षा ग्रहीष्यामि इति ॥ सू० ३७ ॥

मूळम्—तेण कालेणंतेण समएण लोगंतिया देवा वभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणे पत्थडे सएहि२ विमाणेहि सएहि२ पासायव-डिसएहि पत्तेय२ चउहि सामाणियसाहस्सीहि तिहि परिसाहिं सत्तहि अणिएहि सत्तहि अणियाहिवईहि सोलसहि आयरक्ख-देवसाहस्सीहि अत्तेहि च वहुहि लोगतिएहि देवेहि सहि संप-रिवुडा महया हयनट्टगीयवाइय जाव रवेण दिठ्वाइ भोगभोगाइ

समय में “मागो मागो,” ऐसी घोषणा कराई जाती है और अनेक प्रकार का किमिच्छक (तुम्हारी क्या इच्छा है) दान भी दिया जाता है । (तएण मल्ली अरहा सवच्छरेण तिन्नि कोडिसया अट्ठासीति च होति कोडीओ असिन्ति च सयसहस्साइ इमेयारुव अत्थ सपयाण दलइत्ता निक्खमोमिति मण पहारेड) अवमरला अरिहत ने “एक साल में तीन सौ करोड़—तीन अरब अट्ठासी करोड़ ८० लाख स्वर्ण दीनारें तीर्थकर निष्क्रमण (दीक्षा अवसर पर) में दातव्य होती है सौ में इतनी अर्थ संपत्ति देकर दीक्षा ग्रहण करूँगा” ऐसा मन में निश्चित विचार किया । सूत्र “३७”

नतनु ‘किमिच्छ’ (तुम्हारी शु इच्छा है ?) दान पणु आपवाभा आवे छे

(तएण मल्ली अरहा सवच्छरेण तिन्नि कोडिसया अट्ठासीति च होति कोडीओ असिन्ति च सयसहस्माइ इमेयारुव अत्थसपयाण दलइत्ता निक्खमो मितिमण पहारेड)

हुवे मल्ली अरहते “अेठ वर्षमा तणुमे उरोड, तणु अणअ, अडयारी करोड ऐसी लाख मोना भोला तीर्थकर निष्क्रमण (दीक्षाना समये) मा आपवाभा आवे छे तो हु आटली अर्थ संपत्ति आपीने अ दीक्षा ग्रहण करीश” आ प्रमाणे मनमा बोझनपणे विचार उये ॥ सूत्र “३७”

भुजमाणा विहरति, त जहा—‘ सारस्सयमाइच्चा वड्ढि—वरुणा
य गदतोया य । तुसिया अट्ठावाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठाय
॥ १ ॥ ” तएणं तेसि लोयतियाणं देवाणं पत्तेयं२ आसणाइं
चलति तहेव जाव अरहताणं निक्खममाणाण सवोहण करेत्त
एत्ति त गच्छामो णअम्हेवि मल्लिस्स अरहओ सवोहण करेमि
त्तिकट्ठु एव सपेहेत्ति, सपेहित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभाय अव-
क्कमति, अवक्कमित्ता वेउत्ठिवियसमुग्घाएण समोहणति, समो
हणित्ता सखिज्जाइं जोयणाइ एव जहा जभगा जाव जेणेव
मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रत्तो भवणे जेणेव मल्ली
अरहा तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता अतल्लिक्खपडिवन्ना
सखिंखिणियाइ जाव वत्थाइं पवरपरिहिया करयल० तहिं
इट्ठाहि जाव वग्गूहि एवं वयासी—बुज्झाहि भयव । लोगनाहा ।
पवत्तेहि धम्मतित्थं जीवाणं हियसुहनिस्सेयसकर भविस्सइ
त्तिकट्ठु दोच्चपि तच्चंपि एवं वयति, वयित्ता मल्लि अरह
वदति नमसंति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिसि पाउब्भूया
तामेव दिसि पडिगया । तएण मल्ली अरहा तेहि लोगति-
एहि देवेहि सवोहिएसमाणे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवा०
करयल० इच्छामि णं अम्मयाओ । तुब्भेहि अब्भणुत्ताए
समाणे मुडे भवित्ता जाव पव्वइत्ताए, अहासुह देवा० । मा
पडिवध करेहि, तएणं कुंभएकोडुवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता
एव वयासी—खिप्पामेव अट्ठसहस्स सोवणिगयाणं जाव भोमे

जाणांति, अण्णं च महत्थ जाव तित्थयराभिसेय उवट्टवेह जाव
उवट्टवेति, तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिदे जाव
अच्चुयपज्जवसाणा आगया, तएणं सक्के ३ आभिओगिए देवे
सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी-खिप्पामेव अट्टसहस्स सोव-
णिणयाणं जाव अण्णं च त विउल उवट्टवेह जाव उवट्टवेति,
तेवि कलसा ते चेव कलसे अणुपविट्ठा, तएणं से सक्के देविदे
देवराया कुभराया य मल्लिं अरह सीहासणं पुरत्थाभिमुह नि-
वेसेइ अट्टसहस्सेणं सोवणिणयाण जाव अभिसिचइ, तएण
मलिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया देवा मिहिलं
च सव्विभतरवाहिरिय जाव सव्वओ समता परिधावंति, तएणं
कुभए राया दोच्चपि उत्तरावक्कमण जाव सव्वालकारविभू-
सिय करेइ, करित्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव
वयासी-खिप्पामेव मणोरम सीयं उवट्टवेह, ते उवट्टवेति तएणं
सक्के ३ आभिओगिए० खिप्पामेव अणेगखभ० जाव मणोरमं
सीयं उवट्टवेह जावसावि सीया त चेव सीय अणुपविट्ठा ॥सू० ३६॥

टीका—‘ तेण कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये लोका-
न्तिका देवा ब्रह्मलोके कल्पे रिष्टविमानप्रतरे स्वकेषु स्वकेषु विमानेषु स्वकेषु

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उक्त काल और उस समय में
(लोगतिया देवा ब्रह्मलोके कल्पेरिष्टविमाण पत्यडे) लोकान्तिक देवों
के जो ब्रह्मलोक नाम के कल्प में स्थित रिष्ट विमान पात्यडे में वर्तमान

(तेण कालेण तेण समएण) इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये (लोगतिया देवा
ब्रह्मलोके कल्पे रिष्टविमाणपत्यडे) लोकान्तिक देवा के जे जेयो ब्रह्मलोके नामना
कल्पमास्थित रिष्ट पात्यडामा रहेला

સ્વકેપુ પ્રાસાદાગ્રતસકેપુ પ્રત્યેક ૨ ચતુર્થિઃ સામાનિકમદસૈ, તિસ્રમિઃ પરિષદ્ધિઃ
સપ્તભિરનીકૈ = હસ્ત્યશ્વરથપદાતિમહિપગન્વર્વનાટ્યરૂપૈઃ સપ્તકુટકૈઃ સપ્તભિરનીકા
ધિપતિભિઃ, પોઢશભિરાત્મરક્ષકદેવસદસૈઃ, અયૈશ્વ વહુભિર્લોકાન્તિકૈર્દેવૈઃ સાર્ધ
સંપરિવૃતાઃ, 'મહયા' મહતા 'અહયનટ્ટગીયવાહય રવેણ' અહત નૃત્યગીતવાદિશ્ચ
રવેણ=અહતઃ=અમતિહત, નૃત્યગીતવાદિત્રાણા યો રવઃ = મધુરધ્વનિમ્ત્તેન મોગ
ભોગાન્=દિવ્યમુખભોગાન્=શુજ્ઞાના વિહરન્તિ-આસતે। તદ્યથા તેષા નામાન્યાઈ-

“ સારસ્વતમાઈન્ધ્રા, વહ્નિ વરુણા ય ગદતોયા ય ।

તુસિયા અન્વાગ્રાહા, અગ્નિગન્ધા ચેવરિષ્ટા ય ॥૧॥ ” ઇતિ ॥

(૧) સારસ્વતાઃ, (૨) આદિત્યાઃ, (૩) વહ્નયઃ, (૪) વરુણાશ્ચ, (૫) ગર્ત્તનો

(સર્ણિ ૨ વિમાણેર્હિ, સર્ણિ ૨ પામાયવડિસર્ણિ પત્તેય ૨ ચડર્હિ
સામાણિયસાહસ્સીર્હિ તિર્હિ પરિસર્હિ સત્તર્હિ અણિર્ણિ સત્તર્હિ અણિ
યાહિવર્હિર્હિ સોલસર્હિ આયરસ્વદેવસાહસ્સીર્હિ અન્નેર્હિ વહ્ર્હિ લોગત-
ર્ણિ દેવેર્હિ સર્હિ સપરિવુડા) અપને ૨ વિમાનોં મેં રહે દુણ અપને ૨
શ્રેષ્ઠ પ્રાસાદો મેં અલગ ૨ ચાર ૨ હજાર સામાનિક દેવોં કે સાથ, ત્રીન ૨
પરિપદાઓં કે સાથ, સાત ૨ અનીકોં કે સાથ, સાત ૨ અનીકાધિપતિયોં
કે સાથ સોલહ ૨ આત્મ રક્ષક દેવોં કે સાથ તથા ઓર મી અન્ય લોકા
ન્તિક દેવોં કે સાથ રહતે હેં (મહયા હયનટ્ટગીયવાહય, જાવ રવેણ
દિવ્વાઈ મોગમોગાઈ શુજમાણા વિહરતિ) એવ જો નૃત્ય ગીત, તથા
વાજોં કી અપ્રિતિહત ધ્વનિ પૂર્વક દિવ્ય મોગોં મોગા કરતે હેં । (ત
જહા) इन लौकान्तिक देवो के आठ भेद होते है वे आठ भेद ये हैं-
१ सारस्वत २ आदित्य, ३ वह्नि, ४ वरुण-५ गर्तनोय, ६ तुषित,

(સર્ણિ, ૨ વિમાણેર્હિ ૨ પામાયવડિસર્ણિ પત્તેય ૨ ચડર્હિ સામાણિય
સાહસ્સીર્હિ તિર્હિ પરિસર્હિ સત્તર્હિ અણિર્ણિ સત્તર્હિ અણિયાહિવર્હિ આયરસ્વ
દેવ સાહસ્સીર્હિ અન્નેર્હિ વહ્ર્હિ લોગતર્ણિ દેવેર્હિ સર્હિ સ પર્વિવુડા)

પોતપોતાના વિમાનોમાના ઉત્તમ પ્રાસાદોમા જુદાજુદા ચાર હજાર સામા
નિક દેવોની સાથે, ત્રણ ત્રણ પન્ધિદાઓની સાથે, સાત સાત અનીકોની સાથે,
સાત સાત અનીકાધિપતીઓની સાથે, સોળ સોળ આત્મરક્ષક દેવોની સાથે
તેમજ બીજા પણ લૌકાતિક દેવોની સાથે રહે છે

(મહયા હયનટ્ટગીય વાહય જાવ રવેણ દિવ્વાઈ મોગમોગાઈ શુજમાણા વિહરતિ)

અને જેઓ નૃત્ય, ગીત તેમજ વાજાઓની અપ્રક્રિત ધ્વનિપૂર્વક દિવ્ય
ભોગોનો ઉપભોગ કરતા રહે છે (ત જહા) આ લૌકાતિક દેવોના આઠ
ભેદો હોય છે તે આ પ્રમાણે છે-૧ સારસ્વત. ૨ આદિત્ય, ૩ વહ્નિ ૪ વરુણ,

યાથ, (૬) તુપિતાઃ, (૭) અવ્યાવાધાઃ, (૮) આગ્નેયાથ, એતેઽષ્ટૌ કૃષ્ણરાજ્ય
વકાશાન્તરસ્થાયિ-વિમાનાઽટકવાસિનઃ, તથા (૯) રિપ્તાશ્ચ = રિપ્તાશ્ચ વિમાન-
પ્રતરવાસિનઃ ।

તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ તેષા લોકાન્તિકાના દેવાના પ્રત્યેકર આસનાનિ ચલન્તિ
તથૈવ યાવત્-સૌધર્મેન્દ્રવદેવાધિ પ્રયુજ્જતે, પ્રયુજ્ય મલ્લીમર્હન્તમાભોગયતિ તતઃ
સ્વલ્વેર્નં સકલ્પઃ સમુદપત્યત-મલ્લી અર્હન્નિષ્ક્રમિતુમિચ્છતિ, એવ મર્યાદાઽસ્તિ

૭ અવ્યાવાધ ૮ આગ્નેય યે આઠ લૌકાન્તિક દેવ કૃષ્ણ રાજ્ય
ભિન્ન ૨ આઠ વિમાનોં મેં રહતે હૈ । તથા જો રિપ્ત હૈં વે રિપ્ત નામક વિમા-
ન પ્રતર મેં રહતે હૈં । (તણ) સો (તેસિં લોયતિયાણ દેવાણ પત્તેય ૨
આસનાઈ ચલતિ) હન લૌકાન્તિક દેવોં કે પ્રત્યેક કે આસાન કપિત હુણ ।

(તહેવ જાવ અર ત્તાણં દેવાણ નિશ્ચલમમાણાણ સમોદ્ધનં કરેત્તણ
સ્તિ ત ગચ્છામોણ અમ્હે વિ મલ્લિસ્સ અરહઓ સમોદ્ધન કરેમિ ત્તિકદ્ધુ
એવ સપેહેંતિ) અતઃ ઇન્હો ને સવ ને અપને ૨ અવધિજ્ઞાન સે વિચાર
કિયા કિ હમારે આસન કપિત વયો હુણ હૈં સો જિસ તરહ સે સૌધ-
ર્મેન્દ્ર ને અપને આસન કપિત હોને કા કારણ જાન લિયા થા ઉસી
પ્રકાર ઇન્હોં ને ભી જોન લિયા । હસ તરહ કારણ જાનકર ઇન્હોં કે મન
મેં એસા વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ કિ મહી અર્હન્ ઘર સે નિકલ ને કી-દીક્ષા
અગીકાર કરને કી હચ્છા કર રહે હૈં સો હમ લૌકાન્તિક દેવોં કી એસી

૫ ગર્ભતોય, ૬ તુપિત, ૭ અવ્યાવાધ, ૮ આગ્નેય એ આઠ લૌકાતિક દેવ
કૃષ્ણરાજ્ય બુદ્ધા બુદ્ધા આઠ વિમાનોમા રહે છે તેમજ જે રિપ્ત છે તેઓ
રિપ્ત નામક વિમાન પ્રતરમા રહે છે (તણ) તે આ પ્રમાણે (તેસિં લોયતિ
યાણ દેવાણ પત્તેય ૨ આસનાઈ ચલતિ) આ બધા લૌકાતિક દેવોમાથી દરેકના
આસનો ડાલવા માડ્યા

(તહેવ જાવ અરહતાણ દેવાણ નિશ્ચલમમાણાણ સમોદ્ધન કરેત્તણ તિ ત ગચ્છા
મોણ અમ્હે વિ મલ્લિસ્સ અરહઓ સમોદ્ધન કરેમિ તિ કદ્ધુ એવ સપેહેંતિ)

એટલા માટે આ બધા દેવોએ પોતપોતાના અવધિજ્ઞાન વડે વિચાર કર્યો
કે અમારા આસનો શા માટે ડાલવા માડ્યા છે ? તેા જેમ ઇન્દ્રે પોતાના
આસનને ડાલવાનું ઇચ્છુ બણ્યું હતું તે પ્રમાણે આ બધાએએ પણ બાણી લીધુ

આ પ્રમાણે કારણની ખાત્રી કરીને તેમના મનમા આ બાતનો વિચાર
ઉદ્ભવ્યો કે મહા અર્હન્ ઘેરથી નીકળી જવાની-દીક્ષા સ્વીકારવાની ઇચ્છા
કરી રહ્યા છે, તેા આ સમયે અમારા જેવા બધા લૌકાતિક દેવોની એવી

क्लिणीकानि=क्षुद्रवण्टिकायुक्तानि यावद् वस्त्राणि 'पवर परिहिया' प्रवरेण विधिना परिहिताः दिव्यवस्त्रधारिण इत्यर्थः, करतलपरिगृहीतदशनख शिर आवर्त मस्तके-
ऽञ्जलिं कृत्वा ताभिरिष्टाभि कमनीयाभिर्वाग्भिरेवमवादीत्—हे भगवन् ! हे लोक-
नाथ ! ' बुज्झाहि ' बोधय, भव्यजीवान् प्रवर्तय धर्मतीर्थचतुर्वधिसन्धरूप
धर्मतीर्थप्रवर्तनस्य फलमाह—' जीवाण ' इत्यादि, जीवाना ' हियसुहनिस्सेय
सकर ' हितसुखनिश्चयसकर, हितकर - नरकनिगोदादि दुःखनिवारकत्वात्,

धा—उस में भी जहा मल्ली अर्हत विराजमान थे वहां आये । (उवा
गच्छित्ता अतलिक्खपडिवन्ना सखिखिणियाड जाव वत्थाड पवरपरि
हिया करयल० तार्हि इट्ठाहि जाव वग्गुहि एव वयासी—बुज्झाहि भयव ।
लोगनाहा ! पवत्ते हि धम्मतित्थ जीवाण हियसुहनिस्सेयसकर भवि
स्सइ) वहां आकर भी वे नीचे नहीं उत्तरे किन्तु आकाशमें अधर खड़े
बोले । उस समय उन्होंने ने बड़े सुन्दर वस्त्र जो कि क्षुद्र किकिणियों से
युक्त थे पहिर रखे थे । अवर रहे हुए ही उन्होंने दोनों हर्थाकी अञ्जलि
बना और उसे मस्तक पर रख वहीं से मल्लि अर्हत को नमस्कार
किया चाद मे बड़ी मीठी ० मनोहर वाणियों द्वारा उन से इस प्रकार
कहा—हे भगवान् हे लोक नाथ ! भव्यजीवो को आप समझाओ चतुर्विध
सघरूप धर्मतीर्थ की आप प्रवृत्ति करो । इससे जीवों नरक निगोद
आदि के दुःखों से छुटकर वह धर्मतीर्थ हितकारी होगा । स्वर्ग आदि

(उवागच्छित्ता अतलिक्खपडिवन्ना सखिखिणियाड जाव वत्थाड पवर
परिहिया करयल० तार्हि इट्ठाहि जाव वग्गुहि एव वयासी बुज्झाहि भयव । लोगनाहा
पवत्तेहि धम्मतित्थ जीवाण हिय सुय निस्सेयसकर' भविस्सइ)

त्या पडोत्थीने तेओ। नीचे उतर्या नडि पद्य आकाशभा न् अद्धर उला
रहीने ओस्या—देवोओ ते वणने सुद्ध वस्त्रा पड़ेरेला इत' तेमना वओ नानी
नानी धूधरीओथी शोभता इता आकाशभा अद्धर रहीने न तेओओ पोताना
णने छाथोनी अजली जनावी अने तेने मस्तके भूकीने त्याथी न मल्ली
अडं तने नमस्का० उयो त्थारपछी पूज न भीडा अने मनोहर वयनो द्वारा
तेओ। तेमने विनती करता 'डेवा लाग्या—' हे भगवन् ! हे लोकनाथ ! तमे
भव्यजोवोने ज्ञान आपो चतुर्विध सघ उप धर्मतीर्थनी तमे प्रवृत्ति करो
ओनाथी ओवोने नरक निगोद वगेरेना इ ओथी भुज्ज उरावीने हितकारी धर्म
तीर्थ तरइ तेमने उन्मुण्ड करो ते धर्मतीर्थ ते बोडोना भागे स्वर्ग वगेरेना
अमद (अतीव) आनन्द आपनार डोवाथी सुभकर थगे तेमन भुज्जि

लोकान्तिरुदेयानां, यद् अर्हतां नि
 बोधयितुमित्यर्थः, तद्=तस्माद् गन्ध
 कुर्म इति कृत्वा एव संप्रेक्षन्ते=वि-
 ईशानकोणम् अवक्रामति, अवक्रम्य
 कुर्वन्ति । समग्रदृश्य सरयातानि योऽ
 रत्नमय कुर्वन्ति-कृत्वा च एव यथा
 दिव्यगत्या यावत्-यज्ञेय मिथिला राज
 मल्ली अर्हन् तत्रैरोपागच्छति उपगत

मर्यादा हैं कि वैराग्य की मन में
 तब उन्हें सन्बोधन करना-यह कहन्
 उचित अवसर है । इसलिये हम लं
 सन्बोधन करें । ऐसा विचार कर (
 मति, अवक्रमित्ता वेउद्विग्यसमु
 सखिज्जाइ जोयगाड एव जमगा उ
 कुभगस्स रण्णो भवणे, जेणेय मत्
 सब के सब लोकान्तिक देव ईशान
 वैक्रिय समुद्धात से उत्तर वैक्रिय की
 ने अपने अत्मप्रदेशो को रत्नमय
 बाद में जूभक देवों की तरह
 से जहा मिथिला राजधानी थी-

भयांदा (प्रणालिका) डोय छे के
 उद्भव के तरत न तेमने सन्बोध
 करवी के छे भगवन ! दीक्षा अड
 ओटले अमे पणु त्या न्धये अने

(उत्तर पुरत्थिम दिसीभाय
 एण समोहणति, समोहणित्ता, सर्
 मिथिला जेणेय कुभगस्स रण्णो
 तेओ न्धा लौकाति
 वैकीय 'समुद्धातथी उत्तर वे
 आत्मप्रदेशोने रत्नमय ददा
 त्यारपछी अलक देवे
 न्धा मिथिला राजधानी
 मल्ली अर्हत विराजमान

केऽञ्जलिं कृत्वा, एवमवादीत्—इच्छामि खलु हे अम्ब ! हे तात ! युष्माभिरभ्य-
नुज्ञातः सन् गुण्डो भूत्वा यावत् प्रयजितुम्, मातापितरावृचतु.—हे देवानुप्रिय !
यथासुख भवेत तथा कुरु, मा प्रतिग्रह=विलम्ब मा कुरु । ततः=मल्लीमहन्ति
मेवमुक्त्वा, खलु स कुम्भकः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्
क्षिप्रमेवाष्टसहस्रम्—अष्टाधिकसहस्र(१००८) सौवर्णिमाना यावद० अत्र यावदित्य

थे—वहां आये । वहां आकर उन्होंने ने पहिले उन्हें दोनों हाथ जोड़ कर
चरणों में नमस्कार किया । बाद में वे बोले—कि हे अम्ब हे तात ! मैं
आप लोगो से आज्ञा लेकर मंडित हो यावत् दीक्षा लेना चाहती हूँ आ
पकी आज्ञासे मुझे दीक्षा लेना है इस प्रकार मल्ली अरिहतकी बात सुन
कर उन के माता पिता दोनों ने उन से “ यथासुख देवानुप्रिय ! ”
जैसे तुम्हें सुख हो—तुम वैसा करो—इसी मत करो ऐसा कहा । (तएण
कुम्भक कौटुम्बिक पुरिसे सदावेद, सदावित्ता एव वयासी खिप्पामेव
अष्ट सहस्र सोवणिग्याण जाव भोमेज्जाणति, अण्ण च महत्थ जाव
तित्थयराभिसेय उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेति) इस के बाद कुम्भक राजाने
अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुला कर उनसे ऐसा कहा—हे
देवानु प्रियो ! तुम लोग गीघ ही १००८ सुवर्ण निमित्त कलशों को
रूप्यमये कलशोंको मणिमय कलशों को सुवर्ण रूप्य निर्मित कलशोंको,
सुवर्ण मणि निर्मित कलशों को, रूप्यमणि निर्मित कलशों को, स्वर्ण,

मातापिताना चरणाभा नमस्कार कर्था त्थारणाह तेओ उहेवा लाग्या डे डे
मातापिता । हु तनारी आशा मेजवीने मुडित यज्जे दीक्षा थडुलु करवा
थाहु छु ” मल्ली अहं तना मेथा आ प्रभाए वात मालणीने तेमना माता
पिताओओ तेमने उहु “ यथासुख देवानुप्रिय । ” ओट्ये डे डे देवानुप्रिये !
तमने जेम सुख प्राप्त वाय तेम करे अने मोडु करे नडि

(तएण कुम्भक कौटुम्बिकपुरिसे सदावे, सदावित्ता एव वयासी खिप्पामेव
अष्टसहस्र सोवणिग्याण जाव भोमेज्जाणति, अण्ण च महत्थ जाव तित्थय-
राभिसेय उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेति)

त्थारपछी कुम्भक राजा ने पोता ॥ कौटुम्बिक पुरुषो ने जोलाओ अने
जोलावीने तेमने आ प्रभाए उहु डे डे देवानुप्रियो ! तमे लोके सत्वरे ओक
हत्तर आ० (१००८) मोनाना उगशे, आनीना उगशे, मणिमय उगशे,
सोना अने आदीथी जनावेशा उगशे, मोना अने मणिओथी जनावेशा

સુલ્લકર સ્વર્ગાધિમન્દાનન્દજનમત્સ્યાત્, નિઃશ્રેયસકર-મોક્ષપાપમત્સ્યાત્, મલિન્ધ
તીતિ કૃત્વા=ઉવત્સા, દ્વિતીયચારમપિ, તૃતીયચારમપિ एव वदन्ति, ઉવત્સા, મલ્લીમ્
અહંન્ત વન્દન્તે નમસ્યન્તિ, વદિત્સા નત્સા યસ્યા एव दिश मादुर्भूतास्तामेव
પ્રતિગતાઃ ।

તતસ્તદનન્તર ગ્વલુ મલ્લી અહન્ તૈર્લોકાન્તિર્દેવૈઃ સર્વોધિતઃ મન્ યૈવ
માતાપિતરૌ તૈર્લોકાગચ્છતિ, ઉપાગમ્ય કરત્ત્વપરિગૃહીત દગ્ધનમ્ શિરભાવર્ત મસ્ત

કા અમન્દ અત્યન્ત અનન્દ કા પ્રદાતા હોને સે નત્ ધર્મતીર્થ ઉન્હે સુલ્લ
કર હોગા । તથા મુક્તિ પ્રાપ્તિ ના કારણ હોને સે વદ્ધ ધર્મતીર્થ ઉન ભવ્ય
જીવો કો નિઃશ્રેયસકર હોગા (તિકદ્દુ દોચ્ચપિ તચ્ચપિ एव वयति,
वयित्त। मल्लि अरह वदति, नमसति, वदित्सा नमसित्सा जामेव दिसि
पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया) હસ પ્રકાર કદ્દ કર ઉન લોકાન્તિક
દેવો ને દુવારા તથા તિવારા મ્હી ણેસા હી કદ્દા-કદ્દ કર ફિર ઉન્હો ને
મલ્લી અરિહત્ત કો વદના કી-નમસ્કાર કિયા । વદના નમસ્કાર કરકે
ફિર વે જિસ દિશા સે પ્રકટ હુણ થે ઉસી દિશા કી તરફ ચલે ગયે ।

(તણ મલ્લી અરહા તેહિં લોગતિણ્હિં દેવેહિં સર્વોહિણ સમાણે
જેણેવ અમ્મા પિયરો તેણેવ ઉવાગચ્છતિ-ઉવાગચ્છિત્તા કરયલં ઇચ્છામિ
ણ અમ્મયાઓ ! તુબ્હેહિં અબ્બણુણ્ણાણ સમાણે મુઢે ભવિત્તા જાવ પવ્વહ
ત્તણ, અહાસુહ દેવાણુમ્મા પડિવધ કરેહિ) હસ પ્રકાર ઉન લોકાન્તિક
દેવો દ્વારા સર્વોધિત હોતે હુણ વે મલ્લી અરહત્ત જહા અપને માતા પિતા

મેળવવાનુ કારણ હોવા બદલ તે ધર્મતીર્થ તે સહ્ય જીવોના માટે નિશ્રેયસ્કર થશે

(તિકદ્દુ દોચ્ચપિ एव वयति, वयित्ता मल्लि अरह वदति, नमसति, वदित्सा
नमसित्ता जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया)

આ રીતે કહીને તે લોકાતિક દેવોએ ખીજ અને ત્રીજ વખત પણ આ
પ્રમાણે જ વિનતી કરી વિનતી કરીને મલ્લી અહંતને તે દેવોએ વદન અને
નમસ્કાર કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને તેઓ જે દિશા તરફથી પ્રગટ
થયા હતા તે દિશા તરફ જ જતા રહ્યા

(તણ મલ્લી અરહા તેહિં લોગતિણ્હિં દેવેહિં સર્વોહિણ સમાણે જેણેવ
અમ્માપિયરો તેણેવ ઉવાગચ્છતિ-ઉવાગચ્છિત્તા કરયલં ઇચ્છામિ ણ અમ્મયાઓ
તુબ્હેહિં અબ્બણુણ્ણાણ સમાણે મુઢે ભવિત્તા જાવ પવ્વહત્તણ, અહા સુહ દેવાણુમ્મા
પડિવધ કરેહિ)

આ પ્રમાણે લોકાતિક દેવો વડે સર્વોધિત થતા મલ્લિ અરહત બધા
પોતાના માતાપિતા હતા ત્યા આન્ના ત્યા આવીને તેઓએ મી પડેલા પોતાના

કેડાલિ કૃત્વા, એવમવાદીત્—ઇન્ઝામિ ગ્વલુ હે અમ્વ ! હે તાત ! યુષ્માભિરમ્ય-
જુજ્ઞાતઃ સન્ ગુણ્ડો ભૂત્વા યાવત્ પ્રવ્રજિતુમ્ , માતાપિતરાવૃચતુ.—હે દેવાનુપ્રિય !
યથાસુખ ભવેત્ તથા કુરુ, મા પ્રતિગ્રન્ધ=વિલમ્બ મા કુરુ । તતઃ=મહ્લીમર્હન્ત
મેવમુક્ત્વા, સ્વલુ સ કુમ્ભઠ્ઠ. કૌટુમ્બિકપુરુષાન્ શબ્દયતિ શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્
ક્ષિપમેવાષ્ટસહસ્તમ્—અષ્ટાધિસસહસ્ત(૧૦૦૮) સૌવર્ગિયના યાવદ્૦ અત્ર યાવદિત્ય

થે—વહા આયે । વહા આકર ઉન્નો ને પહિલે ઉન્હેં દોનો હાથ જોડ કર
ચરણો મેં નમસ્કાર કિયા । તાદ ઈં લે બોલે—કિ હે અમ્વ હે તાત ! મેં
આપલોગો સે આજ્ઞા લેકર મહિત હો યાવત્ દીક્ષા લેના ચોહતી હૂં આ
પત્ની આજ્ઞાસે મુજે દીક્ષા લેના હૈ હસ પ્રકાર મહ્લી અરિહતકી વાત સુન
કર ઉમ કે માતા પિતા દોનો ને ઉન સે “ યથાસુખ દેવાનુપ્રિય । ”
જૈસે તુમ્હેં સુખ હો—તુમ વૈમ્વા કરો—રેમી મત કરો એસા કહા । (તણ
કુમ્બક કૌટુમ્બિક પુરિસે સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી સ્વિપ્પામેવ
અટ્ઠસહસ્સ સોવર્ણિયાણ જાવ મોમેજજાણતિ, અણ્ણ ચ મહત્થ જાવ
તિત્થયરામિસેય ઉવટ્ઠવેહ જાવ ઉવટ્ઠવેંતિ) હસ કે બાદ કુમ્બક રાજાને
અપને કૌટુમ્બિક પુરુષોં કો બુલાયા ઔર બુલા કર ઉનસે એસા કહા—હે
દેવાનુ પ્રિયો ! તુમ લોગ શીઘ્ર હી ૧૦૦૮ સુવર્ણ નિમિત્ત કલશોં કો
રુપ્યમંય કલશોંકો મણિમય કલશોં કો સુવર્ણ રુપ્ય નિર્મિત્ત કલશોંકો,
સુવર્ણ મણિ નિર્મિત્ત કલશોં કો, રુપ્યમણિ નિર્મિત્ત કલશોં કો, સ્વર્ણ,

માતાપિતાના ચરણોમા નમસ્કાર કર્યા ત્યારબાદ તેઓ કહેવા લાગ્યા કે હે
માતાપિતા ! હું તમારી આજ્ઞા મેળવીને મુહિત થઈને નીક્ષા થકુણ કરવા
આહુ છું ” મહ્લી અહંતના મોથી આ પ્રમાણે વાત સાંભળીને તેમના માતા
પિતાઓએ તેમને કહ્યું “ યથામુખ દેવાનુપ્રિય । ” એટલે કે હે દેવાનુપ્રિયે !
તમને જેમ મુખ પ્રાપ્ત થાય તેમ કરો અને મોડું કરો નહિ

(તણ કુમ્બક કૌટુમ્બિકપુરિસે સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી સ્વિપ્પામેવ
અટ્ઠસહસ્સ સોવર્ણિયાણ જાવ મોમેજજાણતિ, અણ્ણ ચ મહત્થ જાવ તિત્થય
રામિસેય ઉવટ્ઠવેહ જાવ ઉવટ્ઠવેંતિ)

ત્યારપછી કુમ્બક રાજાએ પોતાના કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને
બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો સત્વરે એક
હજાર આ. (૧૦૦૮) સોનાના કાશો, ચાનીના કાશો, મણિમય કાશો,
સોના અને ચાલીથી બનાવેલા કાશો, સોના અને મણિઓથી બનાવેલા

नेनेद बोध्यम्-रूप्यमयाणा, मणिमयाणा, सुवर्णरूप्यनिर्मिताना तृणमणिनिर्मिताना, रूप्यमणिनिर्मिताना, स्वर्णरूप्यरत्नमयानामिति । भौमेयानाम् पार्थिवानां घटानामिति अन्यच्च महार्थं यावत्-तीर्थकराभिषेकम् तीर्थकरनिष्क्रमणाभिषेकसाधनम् ' उवद्वेह ' उपस्थापयत, प्रापयत, यावत्-उपस्थापयन्ति ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये चमरोऽसुरेन्द्र' यावद्-अन्युत पर्यवसानाः=चमरेन्द्रादारभ्याच्युतेन्द्रपर्यन्ताधतुः पट्टि सत्यका इन्द्राः, आगताः । ततस्तदनन्तर खलु शक्रो देवेन्द्रो देवराज'=मौधर्मन्द्र, आभियोगिकान् देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेवाष्टसहस्र सौवर्णिकानां यावत्-अन्यच्च तद्

रूप्य, मणि निर्मित कलशों को मिट्टी के कलशों को तथा और भी महार्थ-महा प्रयोजन साधक भूत-तीर्थ कर-निष्क्रमणाभिषेक (दिक्षाके) साधनों को उपस्थित करो । राजा की इस प्रकार आज्ञा प्राप्त कर उन लोगो ने आजानुसार सब साधनो को उपस्थित कर दिया ।

(तेण कालेण तेण समएण चमरे असुरिंदे जाव अचुयपज्जवसाणा आगया, तएण सक्के ३ आभियोगिए देवे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी) उस काल में और उस समय में चरमेन्द्र से लेकर अच्युतेन्द्र पर्यन्त ६४ इन्द्र आ गये । इस के अनन्तर शक्र देवेन्द्र देव राज ने-सौधर्मेन्द्र ने-आभियोगिक देवों को बुलाया-और बुलाकर उन से इस प्रकार कहा-(खिप्पामेवअट्टसहस्स सौवणिग्गोण जाव अण्ण च त विउल उवद्वेह, जाव उवद्वेवेति) तुम लोग शीघ्र ही १००८, सुवर्ण आदि के निमित्त कलशों को तथा और भी विपुल मात्रा में तीर्थकर

आवेला उणशो, सोना आदी अने भण्डिओथी जनावेला उणशो, भाटीना उणशो तेभज्ज जीज्ज पणु महार्थ-महाप्रयोजन साधकभूत-तीर्थ कर निष्क्रमणाभिषेकना साधनो लावो राजनी आ प्रभाणु आज्ञा भेजवीने तेओओ आज्ञा सुणज्ज जधा साधनो लई आओया

(तेण कालेण तेण समएण चमरे असुरिंदे जाव अचुयपज्जवसाणा आगया, तएण सक्के ३ अभियोगिए देवे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी)

ते काले अने ते समये चरमेन्द्रथी भाटीने अच्युतेन्द्र सुधीना योसठे ईन्द्रो आवी पडोआया

त्यारभाइ शक देवेन्द्र अने देवराज-मौधर्मेन्द्रे आलियौगिक देवोने ओलाओया अने ओलावीने तेभने आ प्रभाणु इधु के—

(खिप्पामेवअट्टसहस्स सौवणिग्गोण जावअण्ण च त विउल उवद्वेह जाव उवद्वेवेति)

तमे दोडो मत्वरे ओक उल्लर आठ (१००८) सोना वगैरथा जनावनामा आवेला उणशो तेभज्ज जीज्ज पणु तीर्थ करेना अलिषेक भाटेना आ

विपुल तीर्थकराभिषेकमावनमुपस्थापयत, यावद्-उपस्थापयन्ति । तेऽपि देवो-
पस्थापिताः सर्वेऽपि कलशास्तानेव-कुम्भकोपस्थापितानेव कलशान् अनुप्रविष्टाः,
दिव्याः कलशा दिव्यानुभावेन कुम्भककलशेषु प्रविष्टास्तेन कुम्भककलशानां
शोभतिशयं सजात इति भावः ।

ततस्तदनन्तरं खलु स शक्रो देवेन्द्रो देवराजः कुम्भको राजा च मल्लीमर्हन्तं
सिंहासने पौरस्त्याभिमुख=पूर्वदिशाऽभिमुख निवेशयति=उपवेशयति । अष्टसह-
स्रेण=अष्टाधिकसहस्रेण, सौवर्णिकानां यावत् अभिषिञ्चति, अष्टाधिकसहस्रसंख्यकैः
प्रत्येक कलशैः सौवर्णिकादि स्नपयतीत्यर्थः ततस्तदनन्तरं खलु मल्लया भगवतो-

के अभिषेक के साधनों को उपस्थित करो । उन सब ने वैसा ही किया ।
(ते वि कलसा ते चेव कलसे अणुपविष्टा, तएण से सक्के देविंदे देव-
राया कुभराया य मल्लि अरह सीहासणं पुरत्थाभिमुख निवेसेह) इस
तरह कुम्भक राजा द्वारा उपस्थापित कलशों के साथ २ वे सब दिव्य
कलशएक जगह मिलाकर रख दिये गये ।

इससे कुम्भक राजा के कलशों की शोभा और अधिक बढ़ गई ।
बाद में शक्र देवेन्द्र देवराज ने और कुम्भक राजा ने मल्ली अर्हन्त को
सिंहासनके उपर पूर्वाभिमुख करके बैठा दिया । (अष्टसहस्रेण सौवर्णि-
याण जाव अभिसिञ्चइ, तएण मल्लीसस भगवओ अभिसेए वट्टमाणे
अप्पेगइया, देवा मिहिल च सम्भितरवाहिरिय जाव सव्वओ समता
परिधावति) बैठा ने के बाद फिर उन्होंने ने उन १००८, सुवर्ण आदि के-
प्रत्येक कलशों से उनका अभिषेक किया ।

प्रमाणुमा लावे तेओ जधाओ तेम ज् उथुं

(ते वि कलसा ते चेव कलसे अणुपविष्टा, तएण से सक्के देविंदे देवराया
कुभराया य मल्लि अरह सीहासणं पुरत्थाभिमुख निवेसेह)

आ गीते कुलकराज वडे भूकाओला उणशेनी साथे ज् ते दिव्य कणशे
पणु ओक ज् स्थाने गोणी दीधा

ओनाथी कुलक राजना उणशेनी शोला भूम ज् वधी गध तयार पधी
शक देवेन्द्र देवराज अने कुलक राजाओ मल्ली अर्ह तने सिंहासन उपर पूर्व
दिशा तरइ ओ राणीने ओसाडी दीधा

(अष्ट सहस्रेण सौवर्णियाण जाव अभिसिञ्चइ, तएण मल्लीसस भगवओ
अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया, देवा मिहिल च सम्भितरवाहिरिय जाव सव्वओ
समता परिधावति)

ओसाडीने तेओओ ओक उणर आठ मोना वगेरेना हरेके हरेक कणशथी
तेमनो अभिषेक उथो

નેનેદ વોધ્યમ્-રૂપ્યમયાના, મણિમયાનાં, સુવર્ણરૂપ્યનિર્મિતાના તુર્ણમણિનિર્મિતાના, રૂપ્યમણિનિર્મિતાના, સ્વર્ણરૂપ્યરત્નમયાનામિતિ । મૌમેયાનામ્ પાર્થિવાનાં ઘટાનામિતિ અન્યન્ચ મહાર્થે યાવત્-તીર્થકરાભિષેકમ્ તીર્થકરનિષ્ક્રમણાભિષેક સાધનમ્ ' ઉવદ્વેહ ' ઉપસ્થાપયત, પ્રાપયત, યાવત્-ઉપસ્થાપયન્તિ ।

તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે ચમરોઽસુરેન્દ્રઃ યાવદ્-અચ્યુત પર્યવસાનાઃ= ચમરેન્દ્રાદારમ્યાચ્યુતેન્દ્રપર્યન્તાધતુઃ પટ્ટિ સચ્ચકા ઇન્દ્રાઃ, આગતાઃ । તતસ્ત્વ દનન્તર સ્વલુ શક્રો દેવેન્દ્રો દેવરાજ=સૌધર્મેન્દ્ર, આભિયોગિકાન્ દેવાન્ શ્વચ્ચયતિ, શ્વચ્ચયિત્વા એવમવાદીત્-ક્ષિપમેવાષ્ટસહસ્ત્ર સૌવર્ણિકાનાં યાવત્-અન્યન્ચ તદ્

રૂપ્ય, મણિ નિર્મિત કલશોં કો મિટ્ટી કે કલશોં કો તથા ઓર મી મહાર્થ-મહા પ્રયોજન સાધક ભૂત-તીર્થ કર-નિષ્ક્રમણાભિષેક (દિક્ષાકે) સાધનોં કો ઉપસ્થિત કરો । રાજા કી હસ પ્રકાર આજ્ઞા પ્રાપ્ત કર ઉન લોગો ને આજ્ઞાનુસાર સઘ સાધનો કો ઉપસ્થિત કર દિયા ।

(તેણ કાલેણ તેણ સમયે ચમરે અસુરિંદે જાવ અચ્ચુયપજ્જવસાણા આગયા, તેણ સચ્ચકે ૩ આભિયોગિએ દેવે સદાવેદ, સદાવિત્તા એવ વયાસી) ઉસ કાલ મેં ઓર ઉસ સમય મેં ચરમેન્દ્ર સે લેકર અચ્ચુતેન્દ્ર પર્યન્ત ૬૪ ઇન્દ્ર આ ગયે । હસ કે અનન્તર શક્ર દેવેન્દ્ર દેવ રાજ ને-સૌધર્મેન્દ્ર ને-આભિયોગિક દેવોં કો ઘુલાયા-ઓર ઘુલાંકર ઉન સે હસ પ્રકાર કહા-(ક્ષિપ્પામેવઅઠ્ઠસહસ્ત્ર સૌવર્ણિયાણ જાવ અણ્ણ ચ ત વિડલ ઉવદ્વેહ, જાવ ઉવદ્વેતિ) તુમ લોગ શીઘ્ર હી ૧૦૦૮, સુવર્ણ આદિ કે નિમિત્ત કલશો કો તથા ઓર મી વિપુલ માત્રા મેં તીર્થકર

આવેલા કળશે, સોના ચાદી અને મણિચોથી બનાવેલા કળશે, માટીના કળશે તેમજ ખીજા પણ મહાર્થ-મહાપ્રયોજન સાધકભૂત-તીર્થ કર નિષ્ક્રમણાભિષેકના સાધનો લાવો રાજાની આ પ્રમાણે આજ્ઞા મેળવીને તેઓએ આજ્ઞા મુજબજ બધા સાધનો લઈ આવ્યા

(તેણ કાલેણ તેણ સમયે ચમરે અસુરિંદે જાવ અચ્ચુયપજ્જવસાણા આગયા, તેણ સચ્ચકે ૩ આભિયોગિએ દેવે સદાવેદ, સદાવિત્તા એવ વયાસી)

તે કાળે અને તે સમયે ચરમેન્દ્રથી માટીને અચ્યુતેન્દ્ર સુધીના ચોસઠે ઇન્દ્રો આવી પહોંચ્યા

ત્યારબાદ શક્ર દેવેન્દ્ર અને દેવરાજ-સૌધર્મેન્દ્રે આભિયોગિક દેવોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(ક્ષિપ્પામેવઅઠ્ઠસહસ્ત્ર સૌવર્ણિયાણ જાવ અણ્ણ ચ ત વિડલ ઉવદ્વેહ જાવ ઉવદ્વેતિ)

તમે લોકો તત્કરે એક હાતર આઠ (૧૦૦૮) સોના વગેરેથી બનાવવામા આવેલા કળશે તેમજ ખીજા પણ તીર્થ કરના અભિષેક માટેના સાધનો

न्द्रो देवराज - आभियोग्यान् देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्-हे देवा
नुप्रिया । क्षिप्रमेव ' अणेगखभ० जात्र मणोरम सीय उगट्टवेह ' अनेकस्तम्भशत
सनिविष्टां यावद्-मनोरमा शिविकाम् उपस्थापयत, यावत् सापि शक्रो देवेन्द्रो
पस्तापितापि शिविका तामेव-कुम्भकोपस्थापितामेवशिविकामनुप्रविष्टा दिव्यानु-
भावेनेति भावः । सू० ३८ ॥

मूलम्-तएण मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्टेइ अब्भु-
ट्टित्ता जेणैव मणोरमा सीया तेणैव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
मणोरम सीय अणुपयाहिणी करेमाणा मणोरम सीय दुरुहइ,
दुरुहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाहिमुहे सन्निसन्ने, तएण कुभए
अट्टारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—
तुब्भे णं देवाणुप्पिया । णहाया जाव सव्वालकारविभूसिया
मल्लिस्स सीय परिवहह जाव पगिवहति, तएण मक्के दावदे
देवराया मणो० माए दक्खिणिल्ल उवत्थिल्ल वाह गणहइ, ईसाणे
उत्तरिल्ल गेणहइ, चमरे दाहिणिल्ल हेट्ठिल्ल, वली उत्तरिल्लं
हेट्ठिल्ल, अवसेसा देवा जहारिह मणोरम सीय परिवहति ।
' पुव्वि उक्खित्ता माणुस्सेहि तो हट्ठरोमकूवेहि । पच्छावहति
सीय, असुरिदसुरिद नागिदा ॥ १ ॥ चलच्चवलकुडलधरां,

देवराज ने भी आभियोगिक देवों को बुलाया-और उनसे अनेक स्तम्भ
शत युक्त शिविका (पालखी) ले आने को कहा-उन्होंने भी शीघ्रवैसी ही
शिविका (पालखी) लाकर वहाँ उपस्थित कर दी। वह शिविका अपने दिव्य
प्रभाव से कुम्भक राजा की शिविका के साथ मिल गई । सूत्र " ३८ "

शक्र देवेन्द्र देवराजो पणु आभियोगिक देवाने बोलाव्या अने तेभने सेकडा
थाबलाओवाणी पालखी लाववाने। कुम्भ कर्था ते बोके। पणु सत्तरे पालखी
लई आव्या देवराजनी ते पालखी पोतानी दिव्य प्रभाथी कुलक राजानी
पालखी साथे मणी गइ ॥ सूत्र " ३८ " ॥

अभिषेक के वर्तमानेऽप्येककाः=अप्येके-केचन देवा. मिथिलां राजधानीं च साम्य
न्तरं वाह्य=अन्तर्गृहीतं यावत्-सर्वतः=समन्तात्=दिशु विदिशु परिधावन्ति=
हर्षातिशयेन कर्दन्ति स्म । ततस्तदनन्तरं कुम्भको राजा द्वितीयवारमपि ' उत्तरा
वक्रमण ' उत्तरावक्रमणम्=उत्तराभिमुखं मन्त्री निवेश्य यावत्-सर्वान्कारविभूषितान्
करोति । कृत्वा, कौटुम्भिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा, परमवादीत्-दे देवा
नुमियाः ! सिधमेव मनोरमा शिविकामुपस्थापयत । ततस्तदनन्तरं खलु शक्रो देवे

इस प्रकार जब मल्ली अर्हत का अभिषेक हो रहा था-तब कितनेक
देव हर्षातिशयके वशावर्ती होकर मिथिला नगरीमें भीतर और बहार सब
ओर-इधर से उधर कूद रहे थे । (तएण कुम्भ राया दोन्वचपि उत्तराव
क्क्रमण जाव सञ्चालकारविभूसिय करेइ करित्ता कोडुवियपुरिसे सदावेइ
सदावित्ता एव वयासी) जब अभिषेक किया समाप्त हो चुकी-तब कुम्भक
राजाने दूसरी बार फिर मल्ली अरिहन को पूर्वकी ओर मुख करके सिंहा
सन पर बैठाया-और उन्हें समस्त अलकारों से विभूषित किया बाद में
कौटुम्भिक पुरुषों को बुलाकर उनसे ऐसा कहा-(खिप्पामेव मनोरम सो
य उवट्टवेह, ते उवट्टवेति तएण सक्के १ आभियागिए ० खिप्पामेव
अणेव खम ० जाव मनोरम सीय उवट्टवेह जाव सा वि सीया त चेव
सीय अणुपविट्ठा) तुम लोग शीघ्र ही अनेक स्तम्भ शत युक्त एक शिविका
को उपस्थित करो-उन लोगों ने भी राजा की आज्ञानुसार शीघ्र
वैसीही शिविका लाकर उपस्थित कर दी । इस के अनन्तर शक्र देवेन्द्र

આ પ્રમાણે જ્યારે આખાજી મટલી અર્હતનો અભિષેક થઈ રહ્યો હતો
ત્યારે મિથિલા નગરીની બહાર અને અંદર ચોમેર હર્ષાતિરેકથી ડેટલાક દેવ-
તાઓ આમતેમ ફરી રહ્યા હતા

(તएण कुम्भ राया दोन्वचपि उत्तरावक्रमण जाव सञ्चालकारविभूसिय करेइ
करित्ता कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी)

જ્યારે અભિષેકની વિધિ પૂરી થઈ ત્યારે કુલક રાજાએ બીજી વખત
મટલી અર્હતને પૂર્વની તરફ મો રાખીને બેસાડ્યા અને તેમને બધા ધરે
જાઓથી શણગાર્યા ત્યારપછી કૌટુ બિક પુરોને બોલાવીને તેઓને હુકમ કર્યો કે

((खिप्पामेव मनोरम सीय उवट्टवेह, ते उवट्टवेति, तएण सक्के १ आभियो
(गिए० खिप्पामेव अणेव खम० जाव मनोरम सीय उवट्टवेह जाव सावि
सीया त चेव सीय अणुपविट्ठा)

તમે લોકો સેકડો થાલલાઓવાળી એક પાવખી મત્વરે લાવો કૌટુ બિક
પુરો પણ જણીથી રાજાની આજ્ઞા મુજબ પાવખી લઈ આ

न्द्रो देवराज -आभियोग्यान् देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्-हे देवा
नुप्रिया । क्षिप्रमेव ' अणेगत्वमजाव मणोरम सीय उवट्टवेह ' अनेकस्तम्भशत
सनिविष्टा यावद्-मनोरमा शिविकाम् उपस्थापयत, यावत् सापि शक्रो देवेन्द्रो
पस्तापितापि शिविका तामेव-कुम्भकोपस्थापितामेवशिविकामनुप्रविष्टा दिव्यानु-
भावेनेति भावः । सू० ३८ ॥

मलम्-तएण मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्टेइ अब्भु-
ट्टित्ता जेणैव मणोरमा सीया तेणैव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
मणोरम सीय अणुपयाहिणी करेमाणा मणोरमं सीय दुरुहइ,
दुरुहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाहिमुहे सन्निसन्ने, तएण कुभए
अट्टारस सेणिप्पसेणीओ सदावेइ सदावित्ता एव वयासी—
तुव्वे णं देवाणुप्पिया । पहाया जाव सव्वालकारविभूसिया
मल्लिस्स सीय परिवहह जाव पग्विहति, तएण मक्के दावदे
देवराया मणोमाए दक्खिणिल्ल उवरिल्ल वाह गणहइ, ईसाणे
उत्तरिल्लं गेणहइ, चमरे दाहिणिल्ल हेट्टिल्ल, वली उत्तरिल्ल
हेट्टिल्ल, अवसेसा देवा जहारिह मणोरम सीय परिवहति ।
' पुव्वि उक्खित्ता माणुस्सेहि तो हट्टरोमकूवेहि । पच्छावहंति
सीयं, असुरिंदसुरिद नागिंदा ॥ १ ॥ चलच्चवलकुडलधरां,

देवराज ने भी आभियोगिक देवों को बुलाया-और उनसे अनेक स्तम्भ-
शत युक्त शिविका (पालखी) ले आने को कहा-उन्होंने भी शीघ्रवैसी ही
शिविका (पालखी) लाकर वहाँ उपस्थित कर दी। वह शिविका अपने दिव्य
प्रभाव से कुम्भक राजाकी शिविका के साथ मिल गई। सूत्र " ३८ "

शक्र देवेन्द्र देवराजो पणु आभियोगिक देवाने बोलाव्या अने तेभने मेळो
थावलाओवाणी पालखी लाववानो हुम्भ कर्यो ते बोडो पणु सत्तरे पालखी
लई आव्या देवराजनी ते पालखी पोतानी दिव्य प्रभावी कुलक राजानी
पालखी साथे मणी गछ ॥ सूत्र " ३८ " ॥

सच्छदविउव्वियाभरणधारी । देविंददाणविंदावहंति सीय
जिणिदस्स ॥ २ ॥ ” तएण मल्लिस्स अरहओ मणोरम सीयं
दुरुढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्टुमंगलगा पुरओ
अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया एव निग्गमो जहा जमालिस्स, तएणं
मल्लिस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पे० देवा मिहिल मग्भि-
तरवाहिरियं आसियसंमज्जिओवलित्तं जहा उववाईए जाव
परिधावति, तएण मल्ली अरहा जेणेव सहस्संववणे उज्जाणे
जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ
पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता आभरणालकारं सुंचइ, त पभावाई
पडिच्छइ । तएण मल्ली अरहा सयमेव पचसुट्ठियं लोय करेइ ।
तएणं सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता
खीरोदगसमुदे पक्खिवइ । तएणं मल्ली अरहा ‘णमोऽत्थुणं
सिद्धाण त्तिकट्ठु सामाइयचरित्तं पडिवज्जइ, जं समय च णं
मल्ली अरहा चरित्त पडिवज्जइ तं समयं च णं देवाण माणु-
स्साण य णिग्घोसे तुरियनिणायगीयवाइयनिग्घोसे य
सक्कस्स वेयण सदेसेण णिलुक्के यावि होत्था । ज समय च णं
मल्ली अरहा सामाइय चरित्त पडिवन्नं त समय च णं मल्लिस्स
अरहओ माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवनाणे समुप्पन्ने ।
मल्लीणं अरहा जे से हेमत्ताणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे
पोससुद्धे, तस्स णं पोससुद्धस्स एकारसीपक्खेणं पुव्वण्हकाल-
समयासि अट्टमेणं भत्तेण अपाणएणं अम्मिणीद्धि नक्खत्तेणं

जोगमुवागएणं तिहि इत्थीसएहि अविंभतरियाए परिसाए,
तिहि पुरिससएहि वाहिरियाए परिसाए सद्धि मुडे भवित्ता पव्व-
इए । मल्लि अरहं इमे अट्ठ रायकुमारा अणुपव्वइसु-तं जहा
—“ णंदेय णदिमित्ते सुमित्त वलमित्त भाणुमित्ते य । अमरवइ,
अमरसेणे, महसेणे, चेव अट्ठमए ॥ १ ॥ ” तएणंसे भवणवइ ४
मल्लिस्स अरहओ निक्खमणमहिम करेति, करित्ता जेणेव नंदी
सरवरे० अट्ठाहिय करेति करित्ता जाव पडिगया । तएण मल्ली
अरहा जं चेव दिवस पव्वाइए तस्सेव दिवसस्स वरण्हकाल-
समयंसि असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहास-
नसवरगयस्स सुहेण परिणामेणं पसत्थेहि अज्झवसाणेहि पस-
त्थाहि लेसाहि विसुज्झमाणीहि तथावरणकम्मरयविकरणकर
अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे
समुप्पन्ने ॥ सू० ३९ ॥

टीका—‘ तएण मल्ली ’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु मल्ली अहंन् सिंहासना
दभ्युत्तिष्ठति अभ्युत्थाय यत्रैव मनोरमाशिविका तत्रैवापागच्छति, उपागत्य मनो-
रमा शिविका ‘ अणुपयाहिणी करेमाणा ’ अणुप्रदक्षिणी कुर्वाणा=आनुरूप्येन

‘ तएण मल्ली अरहा—इत्यादि । ’

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (मल्ली अरहा सींहासणाओ अब्भुट्ठेइ)
मल्ली अहंत सिंहासन से उठे (अब्भुट्ठित्ता जेणेव मनोरमा सीया तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मनोरम सीय अणुपयाहिणी करेमाणा मनो-
रम सीय दुरुइइ, दुरुहित्ता सींहासणवरगये पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने)

“ तएण मल्ली अरहा ” इत्यादि

टीकार्थ—‘ तएण ’ त्थारमाइ (मल्ली अरहा सींहासणाओ अब्भुट्ठेइ) मल्ली अहं त
सिंहासन उपरथी उवा यथा

(अब्भुट्ठित्ता जेणेव मनोरमा सीया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मनोरम
सीय अणुपयाहिणी करेमाणा मनोरम सीय दुरुहित्ता सींहासणवरगए पुरत्थाभि
मुहे सन्निसन्ने)

सच्छदविउव्वियाभरणधारी । देविंददाणविंदावहति सीय
जिणिदस्स ॥ २ ॥ ” तएण मल्लिस्स अरहओ मणोरम सीय
दुरुढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्टमंगलगा पुरओ
अहाणुपुव्वीए संपट्टिया एवं निग्गमो जहा जमालिस्स, तएण
मल्लिस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पे० देवा मिहिल मग्भि-
तरवाहिरियं आप्तियसंमज्जिओवलित्तं जहा उववाईए जाव
परिधावति, तएण मल्ली अरहा जेणेव सहस्संववणे उज्जाणे
जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ
पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता आभरणालकारं मुंचइ, त पभावई
पडिच्छई । तएण मल्ली अरहा सयमेव पचमुट्ठियं लोय करेइ ।
तएण सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता
खीरोदगसमुद्धे पक्खिवइ । तएणं मल्ली अरहा ‘णमोऽत्थुणं
सिद्धाणं त्तिकट्ठु सामाइयचरित्तं पडिवज्जइ, जं समय च णं
मल्ली अरहा चरित्तं पडिवज्जइ तं समय च णं देवाण माणु-
स्साण -य णिग्घोसे तुरियनिणायगीयवाइयनिग्घोसे य
सक्कस्स वेयणं सदेसेण णिलुक्के यावि होत्था । ज समयं च णं
मल्ली अरहा सामाइय चरित्तं पडिवन्नं त समय च णं मल्लिस्स
अरहओ माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवनाणे समुप्पन्ने ।
मल्लीणं अरहा जे से हेमताणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे
पोससुद्धे, तस्स णं पोससुद्धस्स एकारसीपक्खेणं पुव्वण्हकाल-
समयसि अट्टमेणं भत्तेण अपाणएण अस्सिणीहि नक्खत्तेणं

तत खलु शक्रो देवेन्द्रो देवराजो मनोरमायाः शिविमाया दक्खिणिल्ल=
दाक्षिणात्य-दक्षिणदिग्भागस्थम्, 'उवरिल्ल' उपरितन उपरिभागस्थ 'वाह'
वाहु=दण्ड गृह्णाति ईशानः-ईशानेन्द्र- 'उत्तरिल्ल' उत्तरदिग्भास्थम् उपरितन
वाहु=दण्डगृह्णाति, चमर'=चमरेन्द्रः 'दाहिणिल्ल' दाक्षिणात्य=दक्षिणदिग्भागस्थ
'हेट्टिल्ल' अधस्तन दण्ड गृह्णाति, वली=वलोन्द्रः 'उत्तरिल्ल' उत्तरीयम्=उत्त-
रभागस्थम् अधस्तन दण्ड गृह्णाति अशेषा देवाः भवनपति-व्यन्तर-ज्योतिष्क
वैमानिकेन्द्राः, 'जहारिह' यथाऽहं-यथायोग्य स्व स्व योग्यताऽनुसार मनोरमा
शिविका परिवहन्ति ।

“पुर्व्वि उक्खित्ता माणुस्सेहिं तो हट्ठरोमकूवेहि ।

पच्छा वहति सीय असुरिंद-सुरिन्द-नागिंदा ॥ १ ॥

वाह गेण्हइ, ईसाणे उत्तरिल्ल वाह गेण्हइ चमरे दाहिणिल्ल
हेट्टिल्ल, वली उत्तरिल्ल हेट्टिल्ल अवसेसा देवा जहारिह मनोरम सीय
परिवहति) बाद मे शक्र देवेन्द्र देव राजा ने उस मनोरमा शिविका के
दक्षिण दिग्भागवर्ती ऊपरके दण्डे को पकड़ा, ईशानेन्द्र ने उत्तर दिग्भा-
गस्थ ऊपर के दण्डे को पकड़ा चमरेन्द्र ने दक्षिणदिग्भागवर्ती नीचे
के दण्डे को पकड़ा ।

अवशिष्ट भवन पति, व्यन्तर ज्योतिष्क एव वैमानिक इन्द्रो ने
अपनी २ योग्यताके अनुसार उस शिविका का परिवहन किया । (पुर्व्वि
उक्खित्ता माणुस्सेहिं तो हट्ठ रोमकूवेहिं । पच्छावहति सीय असुरिंद
सुरिंद नागिंदा) सत्र से प्रथम हर्षके वश से रोमाश्च युक्त हुए मनुष्यों
ने उस शिविका को अपने स्कंधों पर रखा-बाद में असुरेन्द्रों ने, सुरेन्द्रों

(तएण सक्के देविंदे देवराया मनोरमाए दक्खिणिल्ल उवरिल्ल
वाह गेण्हइ, ईसाणे उत्तरिल्ल वाह गेण्हइ चमरे दाहिणिल्ल हेट्टिल्ल वली०
उत्तरिल्ल हेट्टिल्ल अवसेसादेवा जहारिह मनोरम सीय परिवहति)

त्यार भाह राक देवेन्द्र देवराजे ते मनोरम पालभीना दक्षिण भागुना
हडाने आये, ईशानेन्द्रे उत्तर दिशा तरङ्गना उपरना हडाने आये, चमरेन्द्रे
दक्षिण दिशा तरङ्गना नीचेना हडाने आये, वलीन्द्रे उत्तर दिशा तरङ्गना
हडाने आये।

भाडीना अधा भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिक इन्द्रोअे
पोतपोतानी योग्यता मुज्ज्ज पालभीनु परिवडन कयुं

(पुर्व्वि उक्खित्ता माणुस्सेहिं तो हट्ठरोम कूवेहिं पच्छा वहति सीय असुरिंदसुरिंदनागिंदा)

पुलकित अने डुपधेला थयेला भाणुसेअे भीथी पडेला पालभीने पोताना

સ્વશુભવાઠછયા-સ્વદક્ષિણભાગે કુર્વતી, મનોરમાં શિવિકા ' દુરુહડ ' દુરોહતિ= આરોહતિ, દુરુહ મિહાસનવરગતઃ પૌરસ્ત્યામિમુરયઃ=પૂર્વદિદ્મુરયઃ સન્ સન્નિષ્પન્નઃ। તતઃ સ્વલુ કુમ્ભકોઽષ્ટાદશ ' સેણિપ્પસેણીઓ ' શ્રેણિ-પ્રશ્રેણી =શિવિકાવાહકાન્ -અવાન્તરજાતીયપુરુષાન્ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્=હે દેવાનુપ્રિયા ! યુય સ્વલુ સ્નાતા યાવત્-સર્ગલક્ષ્મીરિભૂષિતાઃ મલ્લયાઃ શિવિકા પરિવહત, સ્કન્ધોપરિધારયત યાવત્-પરિવહન્તિ ।

ઉઠકર વે જતાં વહ મનોરમ શિવિકાથી વહાં ગયે । વહાં જાકર વે ઉસ મનોરમ શિવિકા કો અપને શુભ કી વાઠછા સે અપને દક્ષિણ ભાગ મેં કરતે હુણ ઉસ શિવિકા પર આરુઢ હો ગયે આરુઢ હો કર ફિર વે પૂર્વ દિશા કી તરફ મુલ્લ કર કે ઉસ પર રલ્લે હુણ સિંહાસન પર બેઠ ગયે । (તણ કુમ્ભ અઢારસસેણિપ્પસેણીઓ સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી) હસ કે બાદ કુમ્ભક રાજા ને ૧૮, શ્રેણી પ્રશ્રેણી જનો કો-શિવિકા વાહક ૧૮ પ્રકાર કે અવાન્તર જાતીય પુરુષો કો બુલાયા-ઑર બુલા કર ઉન સે એસા કહા-(તુબ્મેણ દેવાણુ પ્પિયા ! પ્હાયા જાવ સબ્બાલકાર વિભૂસિયા મલ્લીસ્સ સીય પરિવહહ, જાવ પરિવહતિ) હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ સ્નાન કર તથા સમસ્ત અલકારોં સેવિભૂષિત હોકર મલ્લી અર્હત કી પાલસી કો ઉઠાઓ રાજા કી હસ પ્રકાર આજ્ઞા પાકર ઉન લોગો ને ઉસ પાલસી કો અપને ૨ સ્કન્ધો પર ઉઠા કર રલ્લ લિયા (તણ સક્કે દેવિદે દેવરાયા મનોરમાણ દક્ષિણિલ્લ ઉવરિલ્લ

અને ઉભા થઈને જ્યાં મનોરમ પાલખી હતી ત્યાં પહોંચ્યા ત્યાં પહોંચીને તેઓ તે મનોરમ પાલખીને આત્મશ્રેયની ઇચ્છાથી પોતાની જમણી બાજુએ રાખીને તે મનોરમ પાલખી ઉપર ચઢીને તેઓ પૂર્વદિશા તરફ મોકરીને તેના ઉપર મૂકેલા સિંહાસન ઉપર બેસી ગયા.

(તણ કુમ્ભ અઢારસસેણિપ્પસેણીઓ સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી) ત્યાર પછી કુલક રાજાએ અઢાર શ્રેણી પ્રશ્રેણીજનોને પાલખી ઉચકનારા અઢાર પ્રકારના અવાતર જાતિના પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આજ્ઞા આપ્યો કે—

(તુબ્મે ણ દેવાણુપ્પિયા ! પ્હાયા જાવ સબ્બાલકારવિભૂસિયા મલ્હિસ્સ સીય પરિવહહ જાવ પરિવહતિ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સ્નાન કરો અને ત્યારબાદ બધા અલકારોથી અલકૃત થઈને મલ્લી અર્હતની પાલખીને ઉચકે રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે જ લોકોએ તરત સ્નાન કરીને પાલખીને પોતપોતાના ખભા ઉપર ઉચકી લીધી

અષ્ટસંખ્યકાનિ મજ્જલાનિ પુરતઃ=અગ્રે ' અશણુપુવ્વીણ ' યથાનુપૂર્વા=અનુક્રમેણ
પ્રસ્થિતવાનિ-વલિત્તાનિ, એવ તેવાં નામાનિ-(૧) સોવત્થિય ' સ્વસ્તિકઃ, (૨)
સિરિવચ્છા ' શ્રીવત્સઃ, (૩) ણદિયાવત્ત ' નન્દ્યાવર્તઃ, (૪) વદ્ધમાણગ ' વર્ધમાનઃ
(૫) ભદ્દાસણ ' ભદ્દાસનમ્ (૬) ' કલસ ' કલશ, (૭) ' મચ્છ ' મત્સ્યયુગ્મમ્,
(૮) ' દપ્પણ ' દર્પણમેતિ । એવ નિર્ગમો ય જમાલિસ્સ જમાલિવન્નિર્ગમનં=નિર્ગમન
વર્ણન વિજ્ઞેયમ્ ।

તતઃ સ્વલ્લુ મલ્લી અર્હતો નિષ્ક્રામતઃ=નિઃક્રમણ કુર્વતઃ, અપ્પેઠ્ઠા -કેચન-
દેવા સ્વસ્ત્યૈક્રિયશક્ત્યા મિથિયા રાજયાનોમ્-' સર્વિમતરવાહિરિય ' સામ્યન્ત-
રવાહ્યામ્ = અન્તર્વહિઃ ' આમિત્તપમજ્જિઓવલિત્ત ' આસિત્તપમાર્જિતોપલિપ્પામ્
આસિત્તા=દૂર્જનલક્ષણેરભિપિત્તામ્, પથ્થાત્ સમાર્જિતામ્=કચવરાગ્રપનયનેન સશો-
ધિતામ્, તતઃ ઉપલિપ્પા સ્વટ્ઠિકા ચૂર્ણાદિના સંલિપ્પા કુર્વન્તિ, કૃત્વા યાવત્-પરિ-
ધાવન્તિ=હર્ષોત્કર્ષેણેતસ્તતઃ કુર્વન્તિ ।

આરૂઢ હુણ મલ્લી અર્હતકે આગે સવ સે પહિલે ક્રમાનુસાર આઠ ૨ મગલ
દ્રવ્ય ઉપસ્થિત હુણ । ઉનકે નામ યે હૈં

(૧) સોવત્થિય-સ્વસ્તિક (૨) સિરિવચ્છા-શ્રી વત્સ (૩) ણદિયાવત્ત
-નન્દિકાવર્ત (૪) વદ્ધમાણગ-વર્ધમાન (૫) ભદ્દાસણ-ભદ્દાસન (૬)
કલસ-કલશ (૭) મચ્છ-મત્સ્ય યુગ્મ (૮) ઓર દપ્પણ-દર્પણ
(એવ નિર્ગમો જહા જમાલિસ્સ) મલ્લી અર્હત કે નિર્ગમ કા વર્ણન જ-
માલિકે નિર્ગમ કી તરહ હી જાનના ચાહિયે । (તણ મલ્લીસ્સ અર-
હઓ નિસ્સલ્લમમાણસ્સ અપ્પે ૦ દેવા મિહિલ સર્વિમતરવાહિરિય આસિ
ય સમજ્જિઓવલિત્ત જહા ઉવવાઈણ જાવ પરિધાવતિ) જવ મલ્લિ અર્હત
કા નિષ્ક્રમણ હો રહા થા ઉસ સમય કિતનેક દેવો ને અપની વૈક્રિયશ-

(૧) સોવાત્થિય,-સ્વસ્તિક, (૨) સિરિવચ્છા-શ્રીવત્સ, (૩) ણદિયાવત્ત-
નન્દિકાવર્ત (૪) વદ્ધમાણગ-વર્ધમાન, (૫) ભદ્દાસણ-ભદ્દાસન, (૬) કલસ-
કલશ, (૭) મચ્છ-મત્સ્યયુગ્મ, (૮) અને દપ્પણ-દર્પણ (અરીમો) (એવ
નિર્ગમો જહા જમાલિસ્સ) મલ્લી અર્હતના નિર્ગમનુ વર્ણન જમાલિના નિર્ગ-
મની જેમ જ જણવું જોઈએ

(તણ મલ્લિસ્સ અરહઓ નિસ્સલ્લમમાણસ્સ અપ્પે ૦ દેવા મિહિલ સર્વિમતર
વાહિરિય આસિયસમજ્જિઓવલિત્ત જહા ઉવવાઈણ જાવ પરિધાવતિ)

જ્યારે મલ્લી અર્હતની નિષ્ક્રમણવિધિ ચાલતી હતી ત્યારે કેટલાક દેવોએ
પોતાની વૈક્રિય શક્તિ વડે મિથિલા રાજધાનીની અદર અને ખડાર ખાધે જળ

ચલચલકુડલધરા સન્નદ વિઠવિયામરણધારી ।

દેવિદ દાળવિદા વહતિ સીય જિણિદસ્મ ॥ ૨ ॥

‘પુલ્લિ’ પૂર્વ ‘ઉવિવત્તા’ વલિક્ષ્ણા સ્કન્ધોપરિનીતા મનુષ્યૈ, સા શિવિકા, મનુષ્યૈ કથમૂતૈરિત્યાહ-‘હટ્ટરોમકૂવેદિ’ હટ્ટરોમકૂવૈ હર્ષવશેન રોમાશ્ચયુક્તૈઃ, પથાત્-અસુરેન્દ્ર-સુરેન્દ્ર-નાગેન્દ્રાઃ શિવિકા વહન્તિ-સ્કન્ધોપરિનયન્તિસ્મ ॥ ૧ ॥ દેવેન્દ્ર-દાનવેન્દ્રા જિનેન્દ્રસ્ય શિવિકાં વહન્તિ ’ ઇત્યન્વયઃ । તે દેવેન્દ્રાદયઃ કથમૂતૈરિત્યાહ-ચલેત્યાદિ ચલચલ કુડલધરા.=ચલાચ તે ચપલ કુડલધરાશ્ચેતિ વિગ્રહ । પુનઃ કિં મૂતા ઇત્યાહ-‘સન્નદવિઠવિયામરણધારિણઃ ’ સ્વન્નદ વિકુર્ચિતામરણધારિણ.=સ્વન્નદેન-સ્વેચ્છયા વિકુર્ચિતાનિ-વૈક્રિય શક્તિસમુત્પાદિતાનિ આમરણાનિ-મૂપગાનિ ધારયિતુ શીલ યેવા તે તથા મૂતાઃ ॥ ૨ ॥

તતઃ સ્વલુ મલ્લયા અર્હતો મનોરમા શિવિકા દુરુઢસ્ય=સમારુઢસ્ય સતઃ ‘તપ્પ ઢમયાણ’ તત્પથમતયા=સર્વત પૂર્વમ્ હમાનિ અષ્ટાષ્ટમઙ્ગલકાનિ=અષ્ટગણિતાનિ

ને ઓર નાગેન્દ્રોં ને રચા । (ચલચલકુડલધરા સન્નદવિઠવિયામરણધારી, દેવિદ દાળવિદા વહતિ સીય જિણિદસ્મ) હન દેવેન્દ્રા દિકોં કે કુડલ ડસ સમય હધર સે ડધર અત્યન્ત ચચલ હો રહે થે । ડન્હોં ને જો આમરણ ધારણ કર રચે થે વે અગની હચ્છાનુસાર વૈક્રિય શક્તિ સે સમુત્પાદિત કિયે હુણ થે । હસ તરહ દેવેન્દ્રોં ઓર દાનવેન્દ્રો ને જિનેન્દ્ર કી શિવિકા કો અપને ૨ સ્કન્ધો પર રચા । (તણ મલ્લીસસ અરહઓ મનોરમ સીય દુરુઢસસ સમાળસસ તપ્પઢમયાણ હમે અટ્ટ ઢમગલગા પુરઓ અહાણુપુવ્વીણ સપઢિયા) હસ કે અનન્તર ડસ મનોરમ શિવિકા પર

ખલા ઉપર ઉચકી, ત્યારપછી અસુન્દ્રોએ, સુરેન્દ્રોએ અને નાગેન્દ્રોએ ઉચકી (ચલચલ કુડલધરા, સન્નદવિઠવિયામરણધારી, દેવિદ દાળવિદા વહતિ સીય જિણિદસ્મ)

તે વખતે દેવેન્દ્ર વગેરેના કુડળો આમ તેમ ખૂળ હાલી રહ્યા હતા

ધારણ કરેલા આભરણોને દેવોએ પોતાની ઇચ્છા મુજબ વૈક્રિય શક્તિ વડે ઉત્પન્ન કરેલા હતા આ પ્રમાણે દેવેન્દ્રો અને દાનવેન્દ્રોએ જિનેન્દ્રની પાલખી પોતપોતાના ખલે ઉચકી હતી

(તણ મલ્લિસસ અરહઓ મનોરમ સીય દુરુઢસસ સમાળસસ તપ્પઢમયાણ હમે અટ્ટ અટ્ટમંગલગા પુરઓ અહાણુપુવ્વીણ સપઢિયા)

ત્યારખાલ મનોરમ પાલખી ઉપર બેઠેના મલ્લી અહ તની સામે સૌ પ્રથમ અનુક્રમે આઠ આઠ મંગળ દ્રવ્યો મૂકવામા આવ્યા-તે દ્રવ્યોના નામો આ પ્રમાણે છે.

ततः रलु इन्द्रो देवे द्रो देवराजो मल्ल्या अर्हतः वेशान् प्रतीच्छति लुञ्जितान्
 वेशान् स्वे धरति प्रतिपद्य, क्षीरोदरमुद्रे प्रक्षिपति । तत रलु मल्ली अर्हन-
 ' णमोऽत्युण सिद्धाण ' णमोऽतु रलु रिद्धेभ्यः ' ति कृत्वा सामायिकचारित्र
 प्रतिपद्यते=प्राप्नोति । यस्मिन् समये च रलु मल्ली अर्हन चारित्र प्रतिपद्य,
 तस्मिन्नेव समये रलु देवाना मनुष्याणा च ' णिग्धोसे ' निर्घोषः शब्दः, ' तुरिय
 णिणाय गीयवाइय निग्धोसे य' तूर्यनिनादगीतवादित्र निर्घोषश्च=वाद्यगीतध्वनिश्च,
 शक्रवचनसंदेशेन=शक्रेन्द्राज्ञया, ' णिलुक्के ' निलीन =तिरोहितः निवृत्त चाप्यभवत् ।

(तएण सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ पडिच्छि
 त्ता खीरोदग्ग समुद्वे पक्खिवइ) उन मल्लिं प्रभुके लुचित वेशोंको शक्र
 देवेन्द्र देवराज ने अपने वस्त्र मे रग्व लिया और रखकर क्षीर सागर मे
 उन्हे प्रक्षिप्त कर दिया । (तएण मल्ली अरहा " णमोत्युण सिद्धाणत्ति
 कट्टु सामाइयचरित्त पडिवज्जइ) मल्ली अर्हत्तने " सिद्धों को नम-
 स्कार हो " ऐसा पाठ बोल कर सामायिक चारित्र को धारण किया ।
 (ज समय च ण मल्ली अरहा चरित्त पडिवज्जइ त समय च ण देवाण मा-
 णुस्साण य णिग्धोसे तुरिय निणाय गीयवाइयनिग्धोसे य सक्कस्स
 वयणसदेसण णिलुक्के यावि होत्था) जिस समय मल्ली अर्हत ने
 चारित्र को अंगीकार किया था उस समय देवों और मनुष्यों का निर्घोष
 हुआ था तथा बाजों एवं गीतों की जो ध्वनि हुई थी वह सब शक्रेन्द्र
 की आज्ञा से बन्द कर दी गई ।

(तएण सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ पडिच्छित्ता खीरोदग्ग-
 समुद्वे पक्खिवइ)

ते मल्ली प्रभुना लुचित वाणोने शक्र देवेन्द्र देवराजे पोताना वस्त्रमा
 लध लीधा अने लधने क्षीर सागरमा तेणोने नाणो दीधा

(तएण मल्ली अरहा " णमोत्युण त्ति कट्टु सामाइय चारित्त पडिविसज्जइ)

मल्ली अर्हत्ते " सिद्धोने भारा नमस्कार ' आ पाठनु वाचन करता
 सामायिक चारित्र धारणु कथुं

(ज समय च ण मल्ली अरहां चरित्त पडिवज्जइ, त समय च ण देवाण
 माणुस्साण य णिग्धोसे तुरिय निणाय गीयवाइयनिग्धोसे य सक्कस्स वयण
 सदेसण णिलुक्के याविहोत्था)

ज्यारे मल्ली अर्हत्ते चारित्रने। स्वीकार कथो त्यारे देवे। अने भाणु
 सेना थयेसा डुप निर्वापने तेभज वात्तओ अने गीताना ध्वनिने शक्रेन्द्रे
 पोताना डुकभथी णध करावी दीधा

તતઃ સ્વલુ મલ્લી અર્હન્ યત્રૈવ સહસ્રામ્રવગમુગ્રાન યત્રૈવાશોકવરપાદપઃ,
તત્રૈવોગગચ્છતિ, ઉવાગત્ય શિરિકાત પ્રત્યવરોઢતિ પ્રત્યવરુદ્ધાભરણાલકારં મુચ્ચતિ
તદાભરણાલકાર પ્રમાવતી=મલ્લ્યા જનની પ્રતિચ્છતિ વસ્ત્રાશ્ચલે ધારયતિ તત્
સ્વલુ મલ્લી અર્હન્ સ્વયમેવ=સ્વહસ્તેનૈવ પચ્ચમુષ્ટિક લોચ શિરઃ કેશલુચ્ચન કરોતિ।

ત્તિ સે મિથિલા રાજધાની કો ખીતર ઘાહિર મે જલકળો સે સિશ્ચિત કર
દિયા થા, કૂઢા કરકટ કે અપનયન સે ઉસે તિલકુલ સાફ સુથર કર
દિયા થા ઓર ચૂના આદી સે ઉસે લીપ પોત દિયા થા। યાવત્ હર્ષોત્કર્ષ
સેવે હધર ઉધર ઉસમેં હચ્છાનુસાર સ્ત્રૂવ કૂદે ઓર ઉઝલે થે।

ઔપપાતિક સૂત્ર મેં નિષ્ક્રમણ કા જૈસા વર્ણન યદા ખી જાનના
ચાહિયે। (તણ મહત્રી અરહા જેજેવ સહસ્સવવળે ઉજ્જાળે જેજેવ અ
સોગવરપાયવે તેજેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા સીયાઓ પચ્ચોરુહહ,
પચ્ચોરુહિત્તા આભરણાલકાર મુચ્ચહ, ત પમાવર્હ પહિચ્છર્હ) યે મલ્લી
અર્હત જહા સહસ્રામ્રવન નામકા ઉદ્યાન ઓર ઉસમે જહા અશોક વૃક્ષ
થા વદા પહુંચે વહાં પહુંચ કર વે ઉસ શિરિકા સે નીચે ઉતરે ઉતર કર
હન્હોને અપને આભરણ ઓર અલકારોં કો ઉતારા-ઉતારે હુણ ઉન આ
ભરણ ઓર અલકારોં કો ઉનકી માતા પ્રમાવતી ને અપને વસ્ત્રાશ્ચલ મેં
રખ લિયા (તણ મલ્લી અરહા સયમેવ પચ્ચમુષ્ટિય લોચ કરેહ) હસકે
ઘાદ ઉન મલ્લી અર્હત ને અપને કેશોં કા પચ્ચમુષ્ટિ લોચ કિયા।

સિચન કથું હતું કચરો વગેરે વાળીને તેને સ્પર્શ બનાવી અને ચુના વગેરેથી
ઘેળી નાખ્યું હતું યાવત્ હર્ષધેવા થઇને તેઓ ખૂબ ઇચ્છા મુજબ ઉછળ્યા
અને કૂદા હતા.

ઔપપાતિક સૂત્રમા નિષ્ક્રમણનું વર્ણન કરવામા આવ્યું છે, અહીં પણ તે
મુજબ જ સમજી લેવું જોઈએ.

(તણ મલ્લી અરહા જેજેવ સહસ્સવવળે ઉજ્જાળે જેજેવ અસોગવરપાયવે
તેજેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા સીયાઓ - પચ્ચોરુહહ, પચ્ચોરુહિત્તા આભરણાલકાર
મુચ્ચહ, ત પમાવર્હ પહિચ્છર્હ)

મલ્લી અર્હત જ્યા સહસ્રામ્રવન નામે ઉદ્યાન અને તેમા પણ જ્યા અશોક
નામે વૃક્ષ હતું ત્યા પહોંચ્યા, ત્યા પહોંચીને તેઓ પાલખીમાથી નીચે ઉતર્યા,
નીચે ઉતરીને તેમણે પોતાના આભરણ અને ઘરેણાઓ ઉતાર્યા મલ્લી અર્હતના
આભરણ અને ઘરેણાઓને તેમના માતા પ્રમાવતીએ પોતાના વસ્ત્રના છેડામા
લપ્ત લીધા (તણ મલ્લી અરહા સયમેવ પચ્ચમુષ્ટિય લોચ કરેહ) ત્યારપછી મલ્લી
અર્હતે પોતાના વાળોનું પચ્ચમુષ્ટિ લુચન કયું.

ततः रलु इको देवे द्रो देवराजो मल्ल्या अर्हतः केशान् प्रतीच्छति लुञ्जितान्
 केशान् वस्त्रे धरति प्रतिपद्य, क्षीरोदरमुद्रे प्रक्षिपति । तत रलु मल्ली अर्हन-
 'णमोऽत्युण सिद्धाण' नमोऽतु रलु रिद्धेभ्यः । ति कृत्वा सामायिकचारित्र
 प्रतिपद्यते=प्राप्नोति । यस्मिन् समये च रलु मल्ली अर्हन चारित्र प्रतिपन्न
 तस्मिन्नेव समये रलु देवाना मनुष्याणा च 'णिग्धोसे' निर्घोषः शब्दः, 'तुरिय
 णिणाय गीयवाइय निग्धोसे य' तूर्यनिनादगीतवादित्र निर्घोषश्च=प्राद्यगीतध्वनिश्च,
 शक्रवचनसदृशेन=शक्रेन्द्राज्ञया, 'णिलुक्के' निलीन=तिरोहितः निवृत्त चाप्यभवत् ।

(तएण सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ पडिच्छि
 त्ता खीरोदग समुद्धे पक्खिवइ) उन मल्लि प्रभुके लुचित केशोंको शक्र
 देवेन्द्र देवराज ने अपने वस्त्र में रग्व लिया और रखकर क्षीर सागर में
 उन्हें प्रक्षिप्त कर दिया । (तएण मल्ली अरहा ' णमोत्थुण सिद्धाणस्ति
 कट्ठु सामाइयचरित्त पडिवज्जइ) मल्ली अर्हत्तने " सिद्धों को नम-
 स्कार हो " ऐसा पाठ बोल कर सामायिक चारित्र वो धारण किया ।
 (ज समय च ण मल्ली अरहा चरित्त पडिवज्जइ त समय च ण देवाण मा-
 णुस्साण य णिग्धोसे तुरिय निणाय गीयवाइयनिग्धोसे य सक्कस्स
 वयणसदेसण णिलुक्के यावि होत्था) जिस समय मल्ली अर्हत ने
 चारित्र को अंगीकार किया था उस समय देवों और मनुष्यों का निर्घोष
 हुआ था तथा बाजों एवं गीतों की जो ध्वनि हुई थी वह सब शक्रेन्द्र
 की आज्ञा से बन्द कर दी गई ।

(तएण सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ पडिच्छित्ता खीरोदग
 समुद्धे पक्खिवइ)

ते मल्ली प्रभुना लुचित बाणोने शक्र देवेन्द्र देवराजे पोताना वस्त्रमा
 लव लीधा अने लवने क्षीर सागरमा तेजोने नाणो दीधा

(तएण मल्ली अरहा ' णमोत्थुण ति कट्ठु सामाइय चारित्त पडिविसज्जइ)

मल्ली अर्हते " सिद्धोने भारा नमस्कार " आ पाठनु वाचन करता
 सामायिक चारित्र धारणु कथु

(ज समय च ण मल्ली अरहा चरित्त पडिवज्जइ, त समय च ण देवाण
 माणुस्साण य णिग्धोसे तुरिय निणाय गीयवाइयनिग्धोसे य सक्कस्स वयण
 सदेसण णिलुक्के याविहोत्था)

ज्यारे मल्ली अर्हते चारित्रने। स्वीकार कथो त्यारे देवो अने भाषु
 सोना थयेला उप निर्घोषने तेमज वाजओ अने गीतोना ध्वनिने शक्रेन्द्रे
 पोताना डकभथी पध करावी दीधा

યસ્મિન્ સમયે ચ સ્વલુ મલ્લી અર્હન્ સામાયિક ચારિત્રે પ્રતિપન્નઃ=પ્રાપ્તવાન, તસ્મિન્ સમયે ચ મલ્લ્યા અર્હતો માનુષ્યધર્માદુત્તારં=પ્રધાન મન પર્યવજ્ઞાન સમુત્પન્નમ્, ગૃહસ્થદશાયાં જ્ઞાનત્રયમાસીત્ ચારિત્રગૃહણાનન્તર તુ તદાનીમેવ ચતુર્થજ્ઞાનમભવદિતિ ભાવઃ । મલ્લી સ્વલુ અર્હન્ ' જેસે ' યઃ સઃ હેમન્તાના માર્ગશીર્ષાદિ માસચતુષ્ટયાત્મકાનાં શીતકાલાનામ્ દ્વિતીયો માસઃ ચતુર્થે પક્ષઃ-માર્ગશીર્ષસ્યા ઘપક્ષતથતુર્થઃ પક્ષ ' પોસ સુધ્ધે ' પૌષ શુદ્ધઃ, પૌષમાસસ્ય શુક્રઃ પક્ષઃ, તસ્ય સ્વલુ પૌષશુદ્ધસ્ય એકારસીપવ્સેણ ' એકાદશીપક્ષે સ્વલુ એકાદશીતિયેઃ પક્ષ-અર્ધા

(જ સમય ચ ણ મલ્લી અરહા ચરિત્ત પટિવજ્જહ ત ણ મલ્લિસ્સ અરહાઓ માણુસધમ્માઓ ઉત્તરિણ મળપજ્જવગાળે સમુપન્ને) સામાયિક ચારિત્ર કો અગીકાર કરતે હી મલ્લી અર્હતકો ચૌથા મન પર્યવજ્ઞાન ઉત્પન્ન હો ગયા । ગૃહસ્થ અવસ્થા મેં મલ્લી અર્હત કે મનિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન ઓર અવધિજ્ઞાન યે ત્રીન જ્ઞાન જન્મ જાત થે । પરન્તુ ડ્યો હી ઇન્હોને ચારિત્રે ગ્રહણ ક્રિયા ઉસી સમય ઇનકો મનઃ પર્યવજ્ઞાન ઉત્પન્ન હો ગયા । (મલ્લી ણ અરહાજે સે હેમતાળ દોચ્ચે માસે ચઉત્થે પવ્સેપોસ સુદ્ધે, તસ્સ ણ પોસસુદ્ધસ્સ એકારસીપવ્સેણ પુવ્વળ્લકાલસમયસિ અદ્દમેણં ભત્તેણં અપાણણ અસ્સિણીહિં નવ્સત્તેણ જોગમુવાગણં તિહિં ઇત્થી સણ્હિં અન્નિમતરિયાણ પરિસાણ તિહિં પુરિસસણ્હિં બાહિરિયાણ પરિસાણ સદ્ધિં મુદે ભવિત્તા પવ્વહણ) મલ્લી અર્હત ને જિસ સમય સર્વ વિરતિરૂપ ચારિત્ર અગીકાર ક્રિયા થા ઉસ સમય હેમતકાલકા દ્વિતીય માસ થા, ચૌથા પક્ષ થા ઉસકા નામ પૌષ માસ થા-પૌષ માસકા શુક્ર

(જ સમય ચ ણ મલ્લી અરહા ચરિત્તં વટિવજ્જહ ત સમય ચ ણ મલ્લિસ્સ અરહાઓ માણુસધમ્માઓ ઉત્તરિણ મળપજ્જવનાળે સમુપન્ને)

સામાયિક ચારિત્રને સ્વીકારતાની સાથે જ મલ્લી અર્હતને ચોથું મન પર્યવજ્ઞાન ઉત્પન્ન થઈ ગયું ગૃહસ્થ અવસ્થામાં મલ્લી અર્હતને મનિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન અને અવધિજ્ઞાન આ ત્રણે જ્ઞાન જન્મજાત હતા પણ જ્યારે તેઓએ ચારિત્ર ગ્રહણ કર્યું ત્યારે તેમને મન પર્યવજ્ઞાન થઈ ગયું

(મલ્લી ણ અરહાજેસે હેમતાળ દોચ્ચે માસે ચઉત્થે પવ્સે પોસસુદ્ધે તસ્સ ણ પોસસુદ્ધસ્સ એકારસી પવ્સે ણ પુવ્વળ્લકાલસમયસિ અદ્દમેણ ભત્તેણ અપાણણ અસ્સિણીહિં નવ્સત્તેણં જોગમુવાગણં તિહિં ઇત્થીસણ્હિં બાહિરિયાણ પરિસાણ સદ્ધિં મુદે ભવિત્તા પવ્વહણ)

મલ્લી અર્હતે જ્યારે સર્વ વિરતિ રૂપ ચારિત્ર સ્વીકાર્યું, ત્યારે હેમત કાળનો બીજો મહીનો હતો ચોથું પચ્ચવાસિયુ હતું તે મહિનાનું નામ પૌષ

शकाले, पूर्वाह्नकालसमये, अष्टमेन भक्तेन 'अपाणएण' अपानकेन जलरहितेन अश्विनीनक्षत्रेण 'जोग' - योग=चन्द्रयोगत् उपागतेन त्रिभि स्त्रीशतैः आभ्यन्तरि-
कया परिपदा, सार्धं तथा-त्रिभि' पुरुषशतैः बाह्यया परिपदा सार्धं मुण्डो भूत्वा
प्रव्रजितः=दीक्षा गृहीतवान् । मल्लया अर्हत् आभ्यन्तरिका परिपत् स्त्रीभिः,
अन्येषा तीर्थकराणां पुरुषैराभ्यन्यस्त्रिका परिपत् सज्जाता । मल्लीमर्हन्तमिमे
वक्ष्यमाणा अष्ट राजकुमारा अनुव्रजिताः, तद् यथा-तेषा नामान्ये वम्—

णदे य णदिमित्ते, सुमित्त वलमित्त भाणुमित्ते य ।

अमरवड अमरसेणे, महसेणे चेव अट्टमए ॥ १ ॥

पक्ष था एकादशी का दिन था, पूर्वाह्नकालका समय था । अपानक चौविहार
अष्टम भक्त इन्होंने धारण कर रखा था अश्विनी नक्षत्रका चन्द्रमाके
साथ शुभ योग वर्त रहा था ।

तीन सौ इनकी आभ्यन्तर परिपदकी आर्षिका थी और बाह्य परि-
षद के तीन सौ पुरुष थे । सो उन सबके साथ इन्होंने दीक्षा धारण
की थी । अन्यतीर्थकरो की आभ्यन्तर परिषद में स्त्रिया नहीं रहीं हैं
ये तो इन्हीं की आभ्यन्तर परिषद में कहीं गई हैं । वहां तो आभ्यन्तर
परिषदा में पुरुष ही रहे हैं । (मल्लि अरह इमे अट्ट रायकुमारा अणु-
पव्वइसु-त जहा - णदे य णदिमित्ते सुमित्त वलमित्त भाणुमित्तेय,
अमरवड अमरसेणे महसेणे चेव अट्टमए) मल्ली अर्हन्त ने जिस समय
दीक्षा धारण की उस समय इनके साथ जो आठ राजकुमार दीक्षित
हुए थे—उनके नाम ये हैं ।

इतु पोष भडिनामो शुक्ल पक्ष इतो, अगियारसमो द्विस इतो, पूर्वाह्न
काणमो वणत इतो, अपानक अष्टम लक्ष्ता तेमणे धारणु करेणु इतु अश्विनी
नक्षत्रमो चन्द्रनी साथे शुभयोग थरु रह्यो इतो

तेमनी आभ्यतर परिषदानी त्रयुसो आर्षि'ठाओ इती अने बाह्य परि-
षदानी त्रयुसो पुइयो इता तेओ अधानी साथे तेमणे दीक्षा धारणु करी इती
भील तीर्थ करानी आभ्यतर परिषदामा स्त्रीओ न इती ओमनी आभ्यतर
परिषदामा स्त्रीओ विवे वरु'न करेव छे भील तीर्थ करानी परिषदामा मात्र
पुरुषो न रह्या छे

(मल्लि अरह इमे अट्टरायकुमारा अणुपव्वइसु त जहा णदेय णदिमित्ते
सुमित्तवलमित्तभाणुमित्तेय । अमरवड, अमरसेणे महसेणे चेव अट्टमए)

ये वणते मल्ली अर्हन्ते दीक्षा धारणु करी इती ते अमये तेमनी साथे न
दीक्षित थयेवा आठ राजकुमाराना नामो आ प्रमाणे छे—(१) नन्दकुमार,

(१) नन्दः—नन्दकुमार (२) नन्दिमित्र—नन्दिमित्रकुमारः, (३) सुमित्र—सुमित्रकुमारः, (४) बलमित्रः—बलमित्रकुमारः, (५) भानुमित्रः—भानुमित्रकुमारः, (६) अमरपति,—अमरपतिकुमारः, (७) अमरसेन—अमरसेनकुमारः, (८) महासेनः—महासेनकुमार इति ।

ततस्तदनन्तर खलु ते भवनपत्यादयश्चतुर्विधा देवा मल्ल्या अर्हतो निष्क्रमण-महिमानं कुर्वन्ति, कृत्वा यत्रैव नन्दीश्वर नामाद्वीपस्तत्राष्टाहिकाम्=अष्टाहसाय-सुत्सवं कुर्वन्ति कृत्वा च यावत्-यस्यादिश मधुर्भूतास्ता दिश प्रतिगताः, ततः खलु मल्ली अर्हन् यस्मिन्नेव दिवसे प्रयजितः=दीक्षा गृहीतवान् तस्यैव दिवसस्य पश्चाद्, पराह्णकाल, समये-पश्चिमे महरे, अशोकवरपादपम्याधः पृथिवीशिलापट्टके

(१) नन्दकुमार (२) नन्दिमित्र कुमार (३) सुमित्र कुमार (४) बालमित्र कुमार (५) भानुमित्र कुमार (६) अमरपति कुमार (७) अमरसेन कुमार और (८) महासेन कुमार । (तएण से भवण वड् ४ मल्लिस्स अरहओ निस्सवमणमहिमं करेति, करित्ता जेणेव नदी सरवरे० अट्ठाहियं करेति, करित्ता जाव पडिगया) भवनपति आदि चारों प्रकार के देवों ने मल्ली अर्हत के निष्क्रमण महोत्सव की खूब २ महिमा की और करके फिर वे आठ घां जो नदीश्वर द्वीप है वहाँ गये वहाँ जाकर उन्होंने अष्टाहिक महोत्सव किया । यह महोत्सव आठ दिनों तक लगातार होता है । अष्टाहिक महोत्सव करके फिर वे जिस दिशा से प्रकट हुए थे उसी दिशा तरफ वापिस चले गये । (तएण मल्ली अरहा ज चेव दिवस पव्वाइए तस्सेव दिवसस्स वरण्हकाल समयसि असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयसि) सुहासणवरगं

(२) नन्दि मित्रकुमार, (३) सुमित्रकुमार, (४) बालमित्र कुमार, (५) भानुमित्र कुमार, (६) अमरपति कुमार, (७) अमरसेन कुमार, (८) महासेन कुमार ।

(तएण से भवणवड् ४ मल्लिस्स अरहओ निस्सवमणमहिमं करेति, करित्ता जेणेव नदीसरवरे० अट्ठाहियं करेति करित्ता जाव पडिगया)

भवनपति-वगेरे' आर जतना देवोओ मल्ली अर्हतना निष्क्रमण मडो'त्सवना भूषण महिमा जाये अने त्यार्पणी तेओ आठमा नदीश्वर द्वीपमा गया त्या पडोयीने तेभण्णे अष्टाहिक मडोत्सव उचोये आ मडोत्सव आठ दिवसे' सुधी सतत उठवाये छ' अष्टाहिक' मडोत्सव जाये पूरे थये त्यारे तेओ जे दिशा तरईथी प्रगटायियाउता ते दिशा तरई जता रह्या

(तएण मल्ली अरहा ज चेव दिवस पव्वाइए, तस्सेव दिवसस्स वरण्हकाल समयसि असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयसि सुहासणवरगयस्स सुहेणं परिणा

सुखासनवरगतस्य शुभेन परिणामेन 'पसत्येहि' प्रशस्तै = श्रेष्ठै - शुभैः, 'अज्ज्ञ-
वसाणे' अध्यवसानै = आत्मपरिणामै, प्रशस्ताभिः लेख्याभिः 'विमुञ्जमाणीहि'
विशुद्ध्यन्तीभिः तयावरणकर्मरयविकरणकर' तदावरणकर्मरजोविकरणकर-ज्ञाना-
वरणीयादिकर्मरजोविक्षेपक 'अपुञ्चकरण' अपूर्वकरणम् = अष्टमगुणस्थानकम् अनु-
प्रविष्टस्यानन्त विषयानन्तत्वात्, यावत्-अनुत्तर-समस्तज्ञानप्रवांन, निर्व्याघातम्-
अप्रतिहत, निरावरण=आयिक, कृत्स्न=सर्वार्थग्राहकत्वात्, प्रतिपूर्ण=सकलाशयु-
क्तत्वात् पूर्णचन्द्रवत्, 'केवलवर नाणदसणे' केवलवर ज्ञानदर्शन समुत्पन्नम्॥सू० ३९॥

यस्स, सुहेण परिणामेण पसत्येहि अज्ज्ञवसाणेहि पसत्याहि लेसाहि
विमुञ्जमाणीहि तयावरणकम्मस्स विकरणकर अपुञ्चकरण अणु
पविट्ठस्स अणत्ते जाव केवलवरनाणदसणे समुप्पन्ने) मल्ली अहंत
ने जिस दिन दीक्षा धारण की उसी दिन पश्चिम प्रहर में अशोक
वृक्षने नीचे रहे हुए पृथिवी शिलापट्टक पर सुखासन से विराजमान
उन्हे शुभ परिणाम प्रशस्त अध्यवसान-आत्म परिणाम-एव विशुद्ध
-प्रशस्त-लेख्याओ के प्रभावसे समस्त, ज्ञानावरणीय दर्शनावणीय
मोहनीय और अन्तराय कर्मरूप रजके विक्षेपक अनन्त केवलज्ञान और
केवलदर्शन उत्पन्न हो गये । अर्थात् दीक्षा लेते ही एक प्रहरके बाद
केवलज्ञान पाए । क्षपकश्रेणी पर आरूढ हुई आत्माओं को ही
ये दोनों केवलज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त होते हैं अन्य को नहीं
-तथा यह श्रेणी ८वे अपूर्वकरण गुणस्थान से ही प्रारम्भ होती है
अन्य गुणस्थान से नहीं मल्ली अहंत ने भी इसी - श्रेणी पर आरोहण

मेण पसत्येहि अज्ज्ञवसाणेहि पसत्याहि लेसाहि विमुञ्जमाणीहि तयावरणकम्मरय-
विकरणकर अपुञ्चकरण अणुपविट्ठस्स अणत्ते जाव केवलवरनाणदसणे समुप्पन्ने)

જે દિવસે મલ્લી અહીં તે દીક્ષા ધારણ કરી તે જ દિવસે છેલ્લા પહોરમાં
અશોક વૃક્ષની નીચે પૃથ્વી શિલાપટ્ટક ઉપર સુખાસન પૂર્વક બેઠેલા તેઓને
શુભ પરિણામ પ્રશસ્ત અધ્યવસાન આત્મપરિણામ અને વિશુદ્ધ પ્રશસ્ત લેશ્યાઓના
પ્રભાવથી સમસ્ત જ્ઞાનાવરણીય દર્શનાવરણીય મોહનીય અને અતરાય કર્મરૂપ
રજતુ વિક્ષેપક અનન્ત કેવળ જ્ઞાન અને કેવળ દર્શન ઉત્પન્ન થયું ક્ષપક શ્રેણી
ઉપર આરૂઢ થયેલા આત્માઓને જ આ કેવળ જ્ઞાન અને કેવળ દર્શન મળે
છે બીજાઓને નહીં, તેમ જ આ શ્રેણી આઠમા અપૂર્વકરણ ગુણ સ્થાનથી જ
આરંભે છે, બીજા કોઈપણ ગુણસ્થાનથી નહીં. મલ્લી અહીં તે પણ આ શ્રેણી

મૂલમ્—તેણ કાલેણં તેણ સમણ સઠ્ઠવદેવાણં આસણઈ
 ચલંતિ સમોસઠા કેવલમહિમં કરેતિ કરિત્તા જેણેવ નદીસરઁ
 અટ્ટાહિય મહામહિમં કરેતિ કરિત્તા જામેવ દિસ પાંડઁ પરિસા
 ણિગગયા કુભણિ નિગ્ગચ્છઈ । તણં તે જિયસત્તુપાં છપ્પિ-
 જેટ્ટપુત્તે રજ્જે ઠાવેત્તા પુરિસસહસ્સવાહિણીઓ સીયાઓ દુરુહા
 સંઠિવઙ્કીણ જેણેવ મલ્લી અં જાવ પઞ્જુવાસતિ । તણં મલ્લી
 અં તીસે મહઈ મહાલયાણં કુભગસ્સ તેસિ ચં જિયસત્તુ પાણુ-
 વણાણં ધમ્મ કહેઈ । પરિસા જામેવં દિસીં પાંડઁભૂયા તમેવ
 દિસિ પડિગયા । કુંભણ સમણોવાસણે જાણે । પમાવંઈય । તણં
 જિયસત્તુપાં છપ્પિરાયા ધમ્મ સોચ્ચા એવ વયાસી—આલિત્તેણ

કરે દિયા થા તમી જાકર ઉન્હેં 'ઇનકીપ્રાપ્તિ હુઈ યહી થાત' 'અપુલ્લકરન
 અણુપવિટ્ઠસ્સ' 'ઇન પદોદ્ધારા પ્રદર્શિત કી ગઈ હૈ' । "અણતે જાવ" યહો
 જો "જાવ" પદ રખા ગયા હૈ ઉસસે "અનુત્તર નિર્વ્યાધાતમ્ નિરાવરણં
 , કૃત્સ્ન, પ્રતિપૂર્ણ' 'ઇન પદોં કા ગ્રહણ કિયા ગયા હૈ । યે દોનોં અનત
 વિષયોં કો જાનતે હૈં ઓર દેખતે હૈં ઇસલિયે યે અનત હૈં । સમસ્ત
 જ્ઞાને ઓર દર્શનોં મેં યે પ્રધાન હૈં ઇમલિયે અનુત્તર હૈં । અપ્રતિહત
 હોને' સે યે દોનોં નિર્વ્યાધાત, ક્ષાયિક હોને સે નિરાવરણ સર્વાર્થ ગ્રાહક
 હોને સે કૃત્સ્ન, સકલોંશ યુક્ત હોને સે પૂર્ણ ચન્દ્ર કી તરહ પ્રતિપૂર્ણ કહે
 ગયે હૈં ॥ સૂત્ર ૩૯ ॥

'ઉપર આરોહણ કરી દીધું હતું ત્યારે જ તેમને એમની પ્રાપ્તિ થઈ હતી એ જ
 વાત—“અપુલ્લકરણ અણુપવિટ્ઠસ્સ” આ પદોદ્ધારે દર્શાવવામા આવી છે “અણતે
 જાવ” અહીં જે “જાવ” પદ છે તેનાથી “અનુત્તર નિર્વ્યાધાત નિરાવરણ,
 'કૃત્સ્ન, પ્રતિપૂર્ણ, આ પદો અહણ કરવામા આવ્યા છે આ બંને અનત વિષ
 'યોને જાણે છે અને જુએ છે એટલા માટે તેઓ અનત છે સમસ્ત જ્ઞાન અને
 દર્શનોમા તેઓ પ્રધાન છે એટલા માટે અનુત્તર છે અપ્રતિહત હોવા બદલ
 આ બંને નિર્વ્યાધાત, ક્ષાયિક હોવાથી નિરાવરણ, સર્વાર્થ ગ્રાહક હોવાથી કૃત્સ્ન,
 સકલાશયુક્ત હોવાથી પૂર્ણ ચન્દ્રની જેમ પ્રતિપૂર્ણ કહેવામા આવ્યા છે ૩૬

भते । लोए पलित्तेणं भते लोए जाव पठवइया, चोदसपुव्विणो
अणते केवले० सिद्धा ।

तएण मल्ली अरहा सहसंववणाओ निक्खमइ, निक्ख-
मिक्का वहिया जणवयविहार विहरह । मल्लिस्सणं भिसगपामो-
क्खा अट्ठावीस गणा, अट्ठावीसगणहरा होत्था । मल्लिस्सण
अरहओ चत्तालीस समणसाहस्सीओ उक्कोसेण, वधुमइपामो-
क्खाओ पणपणं अज्जिया साहस्सीओ उक्को०, सावयाणं एगा
सायसाहस्सी, चुलसीइ सहस्सा सावियाण तिन्नि सयसाहस्सीओ
पण्णट्ठि च सहस्सा, छस्सया चोदसपुव्वीण, वीससया ओहि-
नाणीण, वत्तीस सया केवलणाणीण, पणतीण सया वेउव्वियाणं,
अट्ठसयामणपज्जवणाणीणं, चोदससया वाईणं, वीस सया अणुत्तरो-
ववाइण । मल्लिस्स अरहओ दुविहा अंतगडभूमी होत्था त जहा
—जुयंतकरभूमी, परियायतकरभूमी य । जाव वीसइमाओ पुरिस-
जुगाओ जुयतकरभूमी । दुवासपरियाए अतमकासी । मल्लीणं
अरहा पणुवीस धणूइ मुड्ड उच्चत्तेणं । वण्णेणं पियगुसमे सम-
चउरससठाणे, वज्जरिसभणारायसघयणे, मज्झदेसे सुह सुहेणं
विहरित्ता जेणेव सम्मए पठवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
समेयसेलसिहरे पाओवगमणुववण्णे । मल्लीण अरहा एग वाससय
अगारवासमज्जे वसित्ता पणपण वाससहस्साइ वाससयऊणाइं
केवल्लिपरियाग पाउणित्ता पणपण वाससहस्साइसव्वा उय पालु-
इत्ता जे से गिम्हाण पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेतसुद्धे, तस्स णं

चेत्तसुद्धरस चउत्थीए भरणीए णखत्तेणं अद्धरत्तकालसमयसि
 पचहि अजियासएहिं अट्ठिभतरियाए परिसाए, पंचहिं अणगार
 सएहि वाहिरियाए परिसाए, मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं
 वग्घारियपाणी स्त्रीणे वयणिजे आउए नामे गोए सिद्धे। एवं
 परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जवुदीवे पण्णत्तीए नंदी-
 सरे अट्ठाहिया महिमा जाव पडिगया। एव खलु जवू। सम
 णेणं भगवया महावीरेण अट्ठमस्स नामज्जेयणस्स अयमट्ठे
 पण्णत्ते तिवेमि ॥ सू० ४० ॥

टीका—‘तेण कालेण’ इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये सर्वदेवना-
 शक्रस्य देवेन्द्रस्य तथाऽन्येषा सर्वेषामिन्द्राणां च, आसनानि चलन्ति स्म। तदा
 ऽवधिं प्रयुज्य मल्लया अर्हतं केवलोत्पत्तिं ज्ञात्वा यत्रैव मल्ली अर्हन् तत्रैव ‘समो

‘तेण कालेण तेन समएण’ इत्यादि।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएणं) उस काल और उस समय
 में (सर्वदेवाण आसणाइ चलति, समोसढा केवल महिम करेंति)
 करित्ता जेणेव नदीसरे० अट्ठाहिय महामहिम करेंति, करित्ता जामेव
 दिसपाउ० परिसा णिगया कुभएवि निग्गच्छइ) समस्त देवों के शक्र
 देवेन्द्र के तथा अन्य समस्त इन्द्रों के आसन कपायमान हुए।
 आसनोके कपित होने का क्या कारण है इस प्रकार जब जाननेकी उन्होंने
 ने इच्छा की तो उसी समय उन्होंने ने अपने ३ अविधिज्ञान से देखा

‘तेण कालेण तेणं समएणं’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—तेण कालेण तेण समएण ते काले अने ते समये
 (सर्वदेवाण आसणाइ चलति, समोसढा केवलमहिम करेति करित्ता जेणेव
 नदी सरे० अट्ठाहिय महामहिमकरेति, करित्ता जामेव दिस पाउ० परिसाणिगया
 कुभए वि निग्गच्छइ)

अथ देवताओंना, शक्र देवेन्द्रना तेमन्नी, अथ-इन्द्रोना आसने।
 डालवा भाउया तेमन्ना आसने। शा कारणथी उगभगवा भाउया छे ? आ नतनी
 न्यारे तेमन्ना मनमा जिज्ञासा उत्पन्न भई ल्यारे तरतन् तेमन्ने पोतपोतादु

सदा ' समवसृताः=आगताः, आगत्य ' केवलमहिम् ' केवलज्ञानोत्सव कुर्वन्ति, कृत्वा यत्रैव नन्दीश्वरो द्वीपस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य ' अष्टाहिम् ' अष्टाहिका म हिमान अष्टदिवस्साध्यमुत्सव कुर्वन्ति, कृत्वा यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतास्तामेव दिशः प्रतिगताः । तदनन्तर परिपत्-मिथिलाराजवान्या जनसमूहः मल्ल्या अर्हतोऽ वन्दनार्थं निर्गता-मिथिलाराजधानीतो निःसृता । कुम्भफोऽपि निर्गच्छति स्म ।

ततः खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः पिडप राजानः स्व स्व ज्येष्ठपुत्रं राज्ये स्थापयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिविकाः समाहूय सर्वकद्व्या सर्वैश्वयेण सकलबलेन सहिता यत्रैव मल्ली अर्हन् तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यावत्-पर्युपासते ।

की मल्ली अर्हत को केवल ज्ञान की उत्पत्ति हुई है । सो जहां मल्ली अर्हत थे वे सध वहा पर आये-आकर उन्हो ने केवलज्ञान की महिमा का उत्सव किया उत्सव कर जहा नदीश्वर द्वीप था फिर वे वहां आये वहां आकर उन्हों ने लगातार आठ दिन तक उत्सव किया । उत्सव कर के फिर वे जिस दिशा से प्रकट हुए थे उसी दिशा की तरफ चले गये । इस के बाद मिथिला राजधानीसे जन समुदाय मल्ली अर्हत को वदना करने के लिये निकला । कुम्भक राजा भी निकले । (तएण ते जियसत्तूपा० छप्पि जेठपुत्ते रज्जे ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ आरुद्धा सन्निव्हीए जेणेव मल्ली अ० जाव पज्जुमासति) इसके अनन्तर वे जितशत्रु प्रमुख छहों राजा अपनेर ज्येष्ठ पुत्रको राज्यपदमें स्थापित कर पुरुष सहस्र वाहिनी शिविकापर आरुढ़ हो सर्व कद्वि एव सकलबल

अवधिशान जेउयु अवधिशानथी तेओओ जणयु के मल्ली अर्हतमा केवण ज्ञाननी उत्पत्ति थछ छे तेओओ जथा न्या मल्ली अर्हत छता त्या आओया त्या पडोथीने तेओओ केवणज्ञानना महिमानो उत्सव उज्जये। उत्सव उज्जये पछी तेओओ नदीश्वर द्वीपमा गया, त्या जधने तेओओओ मतत आठ दिवस सुधी उत्सवो उज्ज० । उत्सवनी समाप्ति पछी तेओओ जे दिशा तरङ्गथी प्रगट थया छता ते दिशा तरङ्ग जता रछा । त्यारणाह मिथिला राजधानीथी मल्ली अर्हतना वदन भाटे जनसमुदाय नीकज्ये। कुलक राजा पणु नीकज्ये।

(तएण ते जियसत्तूपा० छप्पि जेठे पुत्ते ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ अरुद्धा सन्निव्हीए जेणेव मल्ली अ० जाव पज्जुमासति)

त्यारपछी जितशत्रु प्रमुख छओ राजाओ पोतपोताना भोग पुत्रने राज गादीओ जेमाजीने पुरुष सहस्रवाहिनी पावथीओमा जेमीने सर्वकद्वि अने

તતઃ સ્વલુ મલ્લી અર્હત તસ્યા મહાતિ મહાલયાયા'—અતિવિસ્તીર્ણાયાઃ પર્વદોષો
કુમ્ભકસ્ય રાજસ્તથા તેષાં ચ જિતશત્રુપ્રમુખાગા રાજાં ધર્મ = કથયતિ, પરિણ
યસ્યા એવ દિશઃ પ્રાદુર્ભૂતાઃ, તામેવ દિશ પ્રતિગતા। કુમ્ભક શ્રમણો પાસકો જાત,
દેશપિરતિરૂપ ધર્મ સ્વીકૃતવાન, પ્રતિગતઃ। પ્રભાવતી ચ શ્રમણો પાસિકા જાત,
પ્રતિગતા પ્રભાવતી કુમ્ભકો સ્વસ્થાન ગતવન્તૌ। તત સ્વલુ જિતશત્રુપ્રમુખાઃ પદમિ
રાજાનો ધર્મ શ્રુત્વા, પ્રતિબુદ્ધા એવમવાદિષુ ' આલિત્તેણ મતે લોણ પલિત્તેણ મતે

કે સાધ જહા મલ્લી અર્હત વિરાજમાન યે ત્થા આયે ત્થાં આકર ડન સબ્બે
મલ્લી અર્હત કી અચ્છી તરહ ઉપાસના કી। (તણ મલ્લી તીસે મહ
મહાલયાણ ૦૦૦૦ ધમ્મ કહહ) હસકે વાદ મલ્લી અર્હત ને ડસ
અતિ વિસ્તીર્ણ જનમેદિની કે સમક્ષ કુમ્ભક રાજા તથા જિતશત્રુ પ્રમુખ
ડન ડ્રહો રાજાઓ કે સમક્ષ શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મકા ઉપદેશ દિયા।
(પારિસા જામેવ દિસિં પાંતામે દિંપહિં) ઉપદેશ સુનકર ત્થ જનમે
દિનીરૂપ પરિપદા જિસ દિશાસે આઈ થી ડસી દિશા તરફ ત્થ વાપિસ
ચલી ગઈ। (કુમ્ભક સમણોવાસણ જાણ) કુમ્ભક રાજા શ્રમણોપાસક બન
ગયે। અર્થાત્ દેશપિરતિરૂપ ધર્મ ડન્હોને સ્વીકાર કર લિયા। (પ્રભાવઈય)
પ્રભાવતી ધી શ્રમણોપાસિકા બન ગઈ।

(તણ જિયસત્તૂપ્પાં છપ્પિ રાયા ધમ્મ સોચ્ચા એવ વયાસી)
હસકે વાદ ડસ જિતશત્રુ પ્રમુખ છહો રાજાઓ ધર્મ કા ઉપદેશ સુનકર
પ્રતિબુદ્ધ હો હસ પ્રકાર કહા—(અલિત્તેણ મતે ! લોણ પલિત્તેણ

સકળ બળની સાથે જ્યા મલ્લી અર્હત વિરાજમાન હતા ત્યા પહોચ્યા ત્યાં
પહોચીને તેઓ બધાએ મલ્લી અર્હતની સારી પેઠે ઉપાસના કરી

(તણ મલ્લી અંતીસે મહહ મહાલયાણ ધમ્મ કહહ) ત્યાર પછી
મલ્લી અર્હતે તે વિશાળ જન સમુદાય, તેમજ કુલક રાજા અને જિતશત્રુ
પ્રમુખ તે છએ રાજાઓની સામે શ્રુત ચારિત્ર રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો
(પરિમા જામેવ દિસિં પા તામેવ દિસિં પહિં) ઉપદેશ સાંભળીને જનસમુદાય
જે દિશા તરફથી આવ્યો હતો તે દિશા તરફ પાછો જતો રહ્યો (કુમ્ભક
સમણોવાસણ જાણ) કુલક રાજા શ્રમણોપાસક થઈ ગયા હતા એટલે કે
દેશ વિરતિરૂપ ધર્મનો તેઓએ સ્વીકાર કર્યો હતો (પ્રભાવઈય) પ્રભાવતી
પણ શ્રમણોપાસિકા થઈ ગયા

(તણ જિયસત્તૂપ્પાં છપ્પિ રાયા ધમ્મ સોચ્ચા એવ વયાસી) ત્યાર પછી જિતશત્રુ
પ્રમુખ છએ રાજાઓએ ધર્મનો ઉપદેશથી પ્રતિબુદ્ધ થઈને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(આલિત્તેણ મત ! લોણ પલિત્તેણ મતે ! લોણ જાત પવ્વહયા એન્ના પુન્નિ

લોપ' હિતિ હે ભદન્ત ! ભગવન્ ! 'અલીતે' આદીપ્તઃ=આ=સમન્તાદ્ દીપ્તઃ=જ્વ-
લિતઃ સ્વલ્પ લોકઃ, તથા હે ભદન્ત ! 'પલિતે' પ્રદીપ્તઃ=પ્રકર્ષેણ જ્વલિતઃ-
સ્વદિર કાર્પાસકાષ્ઠાગ્નિજ્વાલયેવ તીવ્રજ્વાલયા યુક્તઃ સ્વલ્પ લોકઃ, જન્મજરા
મરણાદિદુઃસ્વાનિ વહસ્તીવ્રજ્વાલા ઇવાસ્મિન્ લોકે જીવાન્ પ્રદહન્તીત્યર્થઃ ।
યાવત્-પ્રવ્રજિતાઃ=યથા કશ્ચિદાદીપ્તે ગૃહે પ્રસુપ્ત નર વોધયેત્ તથા હે ભગવન્-
આદીપ્તે લોકે મોહનિદ્રાવશગતાનસ્માન્ પ્રતિચોદ્ય યુગ્માભિઃ શ્રેયસ્કરો મોક્ષમાર્ગ
પ્રદર્શિત તસ્માદ્ ભવતામન્તિકે પ્રવ્રજિષ્યામઃ' હિત્યુક્ત્વા તે પડપિ રાજાનઃ પ્રવ્ર-
જિતાદીક્ષા ગૃહીતવન્તઃ । તતશ્ચતુર્દશપૂર્વિણઃ=ચતુર્દશપૂર્વધારિણો ભૂત્વાઽનુક્ર-

ભતે લોપ જાવ પવ્વહ્યા ચોદસપુવ્વિણો અણતે કેવલે સિદ્ધી) હે
ભદત ! યહ ચતુર્ગતિ રૂપ લોક આ - સમન્તાત્ - જ્વલિત હો રહા હૈ ।
હે ભદત ! યહ લોક અત્યત જ્વલિત હો રહા હૈ । કાર્પાસ કાષ્ઠ કી
અગ્નિજ્વાલાકે સમાન તીવ્ર જ્વાલાસે યહ લોક વ્યાપ્ત હો રહા
હૈ અગ્નિ કી તીવ્ર જ્વાલા જૈસે જન્મ, જરા ંવ મરણ આદિ કે દુઃસ્વ
જીવોકો સદા ઉસ લોક મેં જલાતે રહતે હૈં । હે ભગવાન ! જૈસે કોઈ
વ્યક્તિ ઘર મેં આગ લગ જાને પર ઉસમેં સુપ્ત હુએ વ્યક્તિ કો સચેત
કર દેતા હૈ-હસી તરહ આદીપ્ત હુએ હસ લોક મેં મોહ-નિદ્રાધીન બને હુએ
હમ લોગોં કો પ્રતિચોદિત કર આપને શ્રેયસ્કર મોક્ષમાર્ગ પ્રદર્શિત
કિયા હૈ- હસલિયે હમ આપકે પાસ દીક્ષા અગીકાર કરેંગે । હસ પ્રકાર
કહ કર ઉન જિતશત્રુ પ્રમુખ છહોં રાજાઓં ને મલ્લી અર્હત કે સમીપ
દીક્ષા ધારણ કરલી । ચૌદહ પૂર્વ કે પાઠી હોકર ઉન્હો ને નિરતિચાર

ણો અણતે કેવલે૦ સિદ્ધા)

હે ભદન્ત ! આસમન્તાત્ (ચોમેર) આ ચતુર્ગતિરૂપ લોક સળગી રહ્યો
છે હે ભદન્ત ! આ લોક અત્યત જ્વલિત થઈ રહ્યો છે ૩ અને લોકડાની
અગ્નિ જ્વાળાઓની પેઠે તીવ્ર જ્વાળાઓથી આ લોક વ્યાપ્ત થઈ રહ્યો છે
અગ્નિની તીવ્ર જ્વાળાઓની જેમ હુ મેશા જન્મ, જરા (ઘડપણ) મરણ વગેરેના
હુ ખો આ લોકને સળગાવતા રહે છે હે ભગવન્ ! જેમ કોઈ માણસના ઘરમા
અગ્નિ સળગી ઉઠે ત્ય રે સૂતેલા માણસને ખીજે કોઈ જાગ્રત કરે છે તે પ્રમાણે જ
પ્રજ્વલિત થતા આ લોકમા મોહ નિદ્રાવશ થયેલા અમારા જેવા લોકોને જોધ
આપીને તમે શ્રેયસ્કર મોક્ષ માર્ગ બતાવ્યો છે તેથી અમે હવે તમારી પાસેથી
દીક્ષા ધારણ કરીશુ આ પ્રમાણે વિનિતિ કરીને જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજા
ઓએ મલ્લી અર્હતની પાસેથી દીક્ષા સ્વીકારી લીધી ચૌદ પૂર્વના પાઠી થડને
તેમણે નિરતિચાર ચારિત્રનુ પાલન કર્યું અને આ પ્રમાણે ધીમે ધીમે અનુક્રમે

મેળ નિરતિચાર ચારિત્ર પાલયિત્યાગ્નન્ત કેવલ=કેવલારજ્ઞાનદર્શન યાવત્-સિદ્ધાઃ
સિદ્ધિસ્થાન ગતાઃ ।

તતસ્તદનન્તર સ્વલ્પ મણી અર્હન્ સહસ્રામ્રવણાન્ નિષ્ક્રામતિ=નિર્ગચ્છતિ,
નિષ્ક્રામ્ય વહિર્જનપદવિહારં વિહરતિ । મલ્લયા સ્વલ્પ મિષગપ્રમુખાઃ અષ્ટાવિંશતિ
ગણાઃ, અષ્ટાવિંશતિર્ગણધરાઅમયન્ । મલ્લયાઃ સ્વલ્પ અર્હતશ્રત્યારિંશત શ્રમણસહસ્રાણિ
' ઉક્કોસેણ ' ઉત્કર્ષેણ ઉત્કૃષ્ટા શ્રમણસપદમયત્ । તથા-વન્ધુમતિપ્રમુખાઃ પચ્ચ

ચારિત્ર કા પાલન કિયા । ઓર હમ તરહ ધીરેર ક્રમજાઃ વે છહોંકે
છહોં કેવલ જ્ઞાન ઓર કેવલ દર્શનકે અધિકારિ યન ગયે ઓર અન્તમેં
સિદ્ધસ્થાન પર પહુંચ ગયે । -(તણ મલ્લી અરહા સહસ્રવણાઓ
નિક્કરહ) મલ્લી અર્હત ઉસ સહસ્રામ્ર વનસે યાહર નિકલે (નિક્કમિત્તા
વહિયા જળવયવિહાર વિહરહ) નિકલકર ઉન્હોંને યાહરકે જનપદોં મેં
તીર્થકર પરમ્પરાકે અનુસાર વિહાર કરના પ્રારમ્બ કરદિયા । (મલ્લિસ્સણ
' મિસગપામોક્ષા અઢ્ઢાવીસ ગણા, અઢ્ઢાવીસ ગણહરા, હોત્થા મલ્લિસ્સણ
અરહઓ વત્તાલીસ સમણસાહસ્સીઓ ઉક્કોસેણ વધુમહપામોક્ષાઓ
પણપન્નઅજ્જિયા સાહસ્સીઓ ઉક્કોસેણ સાવયાણ ઇમાસાય
સાહસ્સી ચુલસીહ સહસ્સા સાવિયાણ તિન્નિસયસાયસીઓ પણ્ણઢ
ચ સહસ્સા) હન મણી અર્હત કે મિષગ પ્રમુખ ૨૮, ગણ (ગચ્છ)
થે ઓર ૨૮, ગણધર થે । ઉત્કૃષ્ટ સે હન મલ્લી અરહત પ્રમુ
કી શ્રમણ સપત્તિ ૪૦ હજાર કી થી । તથા ઉત્કૃષ્ટ કી અપેક્ષા વધુમતી

તેઓ છએ છ રાજાઓ કેવળજ્ઞાન અને કેવળદર્શન માટે અધિકારી થઈ ગયા
અને છેવટે સિદ્ધસ્થાને પહોંચી ગયા (તણ મલ્લી અરહા સહસ્રવણાઓ નિક્કમહ)
મલ્લી અર્હત તે સહસ્રામ્રવણી બહાર નીકળ્યા (નિક્કમિત્તા વહિયા જળવય
વિહાર વિહરહ) નીકળીને બહારના જનપદોમા તેમણે તર્થ કર પર પરા સુજળ
વિહાર કરવો શરૂ કર્યો

(મલ્લિસ્સ ણ મિસગપામોક્ષા અઢ્ઢાવીસ ગણા, અઢ્ઢાવીસ ગણહરા, હોત્થા
મલ્લિસ્સણ અરહઓ વત્તાલીસ સમણ સાહસ્સીઓ ૦ ઉક્કોસેણ વધુમહ પામોક્ષાઓ
પણપણ અજ્જિયાસાહસ્સીઓ ઉક્કોસેણ સાવયાણ ઇમા સાય સાહસ્સી, ચુલ
સીહ સહસ્સા સાવિયાણ, ઇમા સાય સાહસ્સી ચુલસીહ સહસ્સા સાવિયાણ
તિન્નિસય સાયસીઓ પણ્ણઢ ચ સહસ્સા)

મલ્લી અર્હતને મિષગ પ્રમુખ અઢ્ઢાવીશ (૨૮) ગણ (ગચ્છ) હતા
અને અઢ્ઢાવીશ (૨૮) ગણધર હતા ઉત્કૃષ્ટથી મલ્લી અર્હત પ્રભુની શ્રમણ
સપત્તિ ચાલીસ હજાર હતી તેમજ ઉત્કૃષ્ટની અપેક્ષાએ બધુમતી પ્રમુખ ૫૫

પચ્ચાશત્ અર્થિકાસહસ્રાણિ ઉત્કર્ષેણ, ઉત્કૃષ્ટા સાધ્વીસમ્પત્ પચ્ચપચ્ચાશત્સહસ્રપરિ-
મિતા જાતેત્યર્થઃ, તથા-શ્રાવકાણામેશ્વરશતસહસ્રાણિ=એક લક્ષમ્, 'ચુલસીતિ'
ચતુરશીતિઃ સહસ્રાણિ, શ્રમણોપામકસંપદભૂત્ । તથા-શ્રાવિકાણાં ત્રીણિગતસહ
સ્રાણિ=ત્રીણિ લક્ષાણિ, પચ્ચપષ્ટિસહસ્રાણિ ઉત્કર્ષેણ, તથા-પટ્શતાનિ ચતુર્દશ
પૂર્વિણા-ચતુર્દશ પૂર્વધારિણા, તથા-વિંશતિશતાનિ અવધિજ્ઞાનિના, તથા-પચ્ચત્રિ-
શત્-શતાનિ 'વેડવિયાણ' વૈકુર્નિકાણા=વૈક્રિયલબ્ધિધારિણા, તથા-અષ્ટશતાનિ
-મનઃ પર્યવજ્ઞાનિના, તથા-ચતુર્દશશતાનિ વાદિના, તથા-વિંશતિશતાનિ અનુત્ત-
ત્તરોપપાતિકાનામ્ । મલ્લયા અર્હતઃ 'અતગઢભૂમી' અન્તકૃદ્ભૂમિઃ=અન્તકૃત -

આદિ ૬૫ હજાર આર્થિકાઈ થી । ડનકે શ્રાવકો કી સંખ્યા ૧ લાખ ૮૪
હજાર થી । શ્રાવિકાઈ ડનકી ૩, લાખ ૬૫, હજાર થી । (છસ્સયા ચોદસ
પુઁવીણ, વીમસયા ઓહિનાળીણ વત્તીસ સયા કેવલણાળીણ પળતીણ
સયા વેડવિયાણ, અટ્ટસયા મળપજ્જવણાળીણ ચોદસ મયાવાઈણ વીસ
સયા અણુત્તરોવવાઈણ (૬૦૦, ચતુર્દશ પૂર્વ કે ધારી મુનિ ગળ થે ।
વીસ સૌ અર્થાત્ ૨૦૦૦, અવધિજ્ઞાનીં યે । ૩૨ સૌ અર્થાત્ ૩, હજાર
દો સૌ કેવલ જ્ઞાની થે ૩૬ સૌ વૈક્રિય લબ્ધિ કે વારી થે । ૮૦૦, સૌ મન
પર્યાવ જ્ઞાની થે । ચૌદહ સૌ વાદી થે । વીમ સૌ અનુત્તરોપપાતિક થે ।
(મલ્લિસ્મ અરહઓ દુવિહા અતગઢભૂમી ય જાવ વીસહમાઓ પુરિસ
જુગાઓ જુયતકર ભૂમી) ડન મલ્લીઅર્હત કી અતઃ કૃદ્ભૂમિ-ડસી ભવ
સે મોક્ષ જાનેવલો કા કાલ-દો પ્રકારકી યી-(૧) યુગાન્તકર ભૂમિ

હજાર આર્થિકાઓ હતી તેમના શ્રાવકોની સંખ્યા એક લાખ ચૌદાસી હજાર
હતી અને ત્રણ લાખ પાસઠ હજાર તેમની શ્રાવિકાઓ હતી

(છસ્સયા ચોદસ પુઁવીણ વીસસયા ઓહિનાળીણ વત્તીસ સયા કેવલણાળીણ
પળતીમ સયા વેડવિયાણ અટ્ટ સયા મળ પજ્જવણાળીણ, ચોદસ સયા વાઈ ણ
વીસ સયા અણુત્તરોવવાઈયાણ)

છમે ચતુર્દશ પૂર્વનાધારી મુનિગણે હતા ૨૦ સો એટલે કે બે હજાર
અવધિજ્ઞાની હતા ૩૨ સો એટલે કે ત્રણ હજાર બસો કેવળજ્ઞાની હતા ૩૫
સો વૈક્રિય લબ્ધિનાધારી હતા આઠસો મન પર્યાવજ્ઞાની હતા ૧૪ સો વાદી
હતા ૨૦ સો અનુત્તરોપપાતિક હતા

(મલ્લિસ્મ અરહઓ દુવિહા અતગઢભૂમી ય જાવ વીસહમાઓ પુરિસજુગાઓ
જુયતકરભૂમી)

મલ્લી અર્હતથી અતકૃદ્ભૂમિ-તે ભવમા જ મોક્ષ મેળવનારાઓનો
કાળ-બે પ્રકારની હતી (૧) યુગાન્તકર ભૂમિ (૨) પર્યાયાન્તકર ભૂમિ ભૂમિ

भवान्तकारिण तस्मिन्नेव जन्मनि मुक्तिर्नामिनः, तेषा भूमिः-कालः, कालस्य चाधारत्वेन कारणत्वाद् भूमित्वेन व्यपदेश । द्विविधा=द्विप्रकारा, अभवत्, तद् यथा-युगान्तकरभूमिः, पर्यान्तकरभूमिश्च । यावद्-विंशतितमात् पुरुषयुगाद् युगान्तकरभूमिः-अत्र द्वितीयार्थे पञ्चमी यावद् विंशतितम पुरुषयुगं-विंशतितम शिष्य यावदित्यर्थः । युगानि-कालमानविशेषाः, तानि क्रमानुसारिणि, युगानीव युगानि, युगसादृश्याद् गुरुशिष्यप्रशिष्यादिरूपाः पुरुषा अपि युगानि व्यवहियन्ते, तैः प्रमितायाऽन्तकरभूमि स, युगान्तकरभूमिः । मल्लोजिादारभ्य तत्तीर्थं पट्टानुपट्ट क्रमेण विंशतितम पट्टपुरुष यावत् साधवः सिद्धा अभूवन्, ततः पर सिद्धिगमन व्यवच्छेदोऽभूदिति भावः । पर्यायान्तकरभूमिमाह-‘दुवासपरियाए अन्तमकासी’ इति, द्विवर्षपर्यायेऽन्तमकार्पीत्-इति अनेन-वाक्येन पर्यायान्तकरभूमिः प्रोच्यते । पर्यायस्तीर्थकरस्य केवलित्वं कालस्तमाश्रित्य याऽन्तकरभूमिः सा पर्यायान्तकर

(૨) પર્યાયાન્તકર ભૂમિ । ભૂમિ શબ્દ સે કાલ તથા યુગ શબ્દ સે ગુરુ શિષ્ય પ્રશિષ્યાદિ રૂપ પુરુષોં કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । અતઃ હન ગુરુ શિષ્ય પ્રશિષ્યાદિ રૂપ પુરુષોં કો આરમ્ભ કર જિસ મેં ઉસી ભવ સે મોક્ષ જાને વાંલોંકા પ્રમાણ પ્રમિત કિયા જાવે વહ યુગાન્તકર ભૂમિ હૈ એમા યુગાન્તકર ભૂમિ શબ્દકા વાચ્યાર્થ નિકલતા હૈ મલ્લી જિનસે લગાકર હનકે તીર્થમેં પટ્ટાનુપટ્ટ ક્રમસે વિંશતિતમ પટ્ટપુરુષ તક (વીસપેઢિ)સાધુ સિદ્ધ હો ચુકે હૈં । ઉસકે વાદ સિદ્ધિ મેં જાનેકા વ્યવચ્છેદ હો ગયા । (દુવાસપરિયાએ અતમકાસી) હસ વાક્યસે પર્યાયાન્તકર ભૂમિ સૂત્રકાર ને પ્રકટ કી હૈ ।

તીર્થકર કી કેવલી અવસ્થા કે પર્યાયરૂપ સમય કો લેકર જો અન્ત કર ભૂમિ હોતી હૈ ઉસકા નામ પર્યાયાન્તકર ભૂમિ હૈ એસા હસ શબ્દકા

શબ્દથી કાળ તેમજ યુગ શબ્દથી ગુરુ-શિષ્ય પ્રશિષ્ય વગેરે પુરુષોનુ અહુલ્ય થયુ છે એથી આ બધા ગુરુ શિષ્ય પ્રશિષ્ય વગેરે પુરુષોને આરભીને જેમા તે ભવથી જ મોક્ષ મેળવનારાઓનુ પ્રમાણુ પ્રમિત (કેટલુ છે તેની ગણતરી) કરવામા આવે તે યુગાન્તકર ભૂમિ શબ્દનો વાચ્યાર્થ થાય છે મલ્લીજીનથી માડીને એમના તીર્થમા પટ્ટાનુપટ્ટ ક્રમથી વિશતિતમપટ્ટ પુરુષ સુધી સાધુઓ સિદ્ધ પદ પામી ચૂકયા છે ત્યારપછી સિદ્ધિમા જવા માટે વ્યવચ્છેદ થઇ ગયો (દુવાસ પરિયાએ અતમકાસી) આ વાક્યથી સૂત્રકારે પર્યાયાન્તકર ભૂમિ પ્રકટ કરી છે

તીર્થ કરની કેવળી અવસ્થાના પર્યાયરૂપ સમયથી લઇને જે અન્તકર ભૂમિ હોય છે, તેનુ નામ પર્યાયાન્તકર ભૂમિ છે આ શબ્દનો વાચ્યાર્થ આ પ્રમાણે જ

भूमिः । मल्लया अर्हतः केवलज्ञानस्य द्विवर्ष-पर्यायेसती तत्तीर्थे साधु अन्तमका-
पीत्-भवान्तमकरोत् न ततः पूर्वं कश्चिदपीत्यर्थः ।

मल्ली खलु अर्हन् पञ्चविंशतिर्धनूपि ऊर्ध्वम् उच्चत्वेन=मल्लया अर्हतः शरीरमुच्च-
त्वेन पञ्चविंशतिर्धनुः परिमितमासीदित्यर्थः । वर्णेन प्रियगुसमः नीलवर्ण इत्यर्थः ।
समचतुरस्रसस्थानः, वज्रक्रुपभनाराचसहमन मध्यदेशे ग्रामानुग्राम सुखसुखेन विहृत्य
यत्रैव समेतः पर्वतस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, समेतशैलशिखरे पादपोपगमनोपपन्न
पादपोपगमन सस्तारक स्वीकृतवान् । मल्ली खलु अर्हन् एक वर्षशतम् अगारवासमध्ये

वाच्यार्थ निकलता है । मल्ली अर्हत को केवल ज्ञान उत्पन्न हुए जब
दो वर्ष हो गये तब उसके बाद ही उनके तीर्थ में अपने भवको अन्त
कर साधुजनों ने मुक्ति लाभ किया । इसके पहिले कोई साधु मुक्ति
मे नहीं गया । यही पर्यायान्त करभूमि है । (मल्ली ण अरहा पणुवीस
धणूइ मुड्डु उच्चत्तेण) इन मल्ली अरहत के शरीरकी ऊँचाई २५ धनुष
प्रमाण थी । (वण्णे ण प्रियगुसमे, समचउरससठाणे, वज्जरिसभणाराय
सघयणे) शरीर का वर्ण प्रियगु के समान नील था । सस्थान सम
चतुरस्र था । सहनन वज्र क्रुपभ नाराच था (मज्झ देसे सुह सुहेण
विहरित्ता जेणेव सम्मेए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समेय
सेलसिहरे पाओवगमणुववण्णे) मध्य देश में सुख शान्ति पूर्वक विहार
कर ये प्रभु जहाँ समेत पर्वत था वहाँ आये । आकर उसी समेत शैल
शिखर पर पादपोपगमन सथारा उन्होंने ने धारण किया । (मल्ली ण अ

थाय छे मल्ली अर्ह तने केवलज्ञान उद्भवन्तु, तेना जे वर्ष पछी न तेमना
तीर्थमा पोताना लवमा अतउर साधुजनोअे मुक्ति लाभ मेजन्थे । अेना
पडेला जेछ साधुअे मुक्ति मेजवी नथी, अे न पर्यायान्तउर भूमि छे मल्ली ण
अरहा पणुवीस धणूइ मुड्डु उच्चत्तेण) मल्ली अर्ह तना शरीरनी उचाछ २५
धनुष प्रमाण छती (वण्णेण प्रियगुसमे, समचउरससठाणे, वज्जरिसभणाराय
सघयणे) शरीरनो रंग प्रियगुना जेवो नीलो छतो । सस्थान समचतुरस्र
छतु सहनन वज्र क्रुपभ नाराय छतु

(मज्झदेसे सुह सुहेण विहरित्ता जेणेव सम्मेए पव्वए तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता समेयसेलसिहरे पाओवगमणुववण्णे)

सुख शांतिपूर्वक मध्य देशमा विहार करीने मल्ली प्रभु समेत पर्वत
उपर पडेअ्या त्या पडेअीने तेअोश्रीअे समेत शैल शिखर उपर पादपोप
गमन सथारे धारण अर्थे

उपित्वा=स्थित्वा पञ्चपञ्चाशद्वर्षमहस्याणि वर्षशतानि यावत्-केवलपर्याय पाल
यित्वा, पञ्चपञ्चाशद्वर्षमहस्याणि सर्वायुः क पाठयित्वा यः सः ग्रीष्माणा ग्रीष्मकालानां
चैत्रादिमासचतुष्टयरूपाणा प्रथमो मास द्वितीयः पक्ष चैत्रशुद्ध = चैत्रशुक्लः, तस्य
खलु चैत्रशुद्धस्य चतुर्थ्यां भरण्या नक्षत्रे भरणीनामकनक्षत्रे खलु च-द्रयोगमुपागते=
चन्द्रे भरणी नक्षत्रस्थिते सतीत्यर्थः । अर्धरात्रिकात्समये पञ्चभिरार्यिकाशतैराभ्य-
न्तरिकया परिषदा, पञ्चभिरनगाशतैर्वाहया परिषदा सह, मासिकेन भक्तेन=भक्त-

रहा एग वाससय अगारवासमज्जे वसित्ता पण पण्णवास सहस्साइ
वाससय ऊणाइ केवलपरियाग पाउणित्ता पणपण्णवाससहस्साइ सव्वा
उय पालइत्ता) ये मल्ली अर्हत प्रभु १ सौ वर्ष घर में रहे-याद में दी
क्षित होकर सौ वर्ष कम ५५, हजार वर्षतक केवल पर्याय में रहे । इस
तरह ५५ हजार वर्ष तक समस्त आयु को भोग कर (जे से गिम्हाण
पहमे मासे दोच्चे पक्खे चेत सुद्धे, तस्सण चेतसुद्धस्स चउत्थीए
भरणीए णक्खत्ते ण अद्धरत्ता कालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं अ
विभतरियाए परिसाए पचहिं अणगारसएहिं वाहिरियाए परिसाए मासि
एण भक्तेण अपाणएण वग्धारियपाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे
गोए सिद्धे) उन्हो ने ग्रीष्म काल के प्रथम मास में द्वितीय पक्षमें अर्थात्
चैत्र शुक्ल पक्ष में उस में भी चतुर्थी तिथि के दिन जब कि भरणी नक्षत्र
का चंद्रमा के 'साथ योग' हो रहा था - अर्द्ध रात्रि के समय में
आभ्यन्तर परिषदा थी पाचसौ अनगारो के साथ १ महिने का पानर

(मल्ली ण अरहा एग वाससय अगारवासमज्जे वसित्ता पण पण्णवास
सहस्साइ वाससयऊणाइ केवलपरियाग पाउणित्ता पणपण्णवाससहस्साइ सव्वा
उय पालइत्ता)

मल्ली अर्हत प्रभु १ सौ वर्ष घरमा रह्या त्यारपुछी दीक्षा अडणु करीने
पप ऊत्तर वर्षमा ओकसो वर्ष ओछा ओटले के ४६०० वर्षनु आयुध्य लोगवीने
केवली पर्यायमा रह्या आ रीते पप पयावन ऊत्तर वर्षनु आयुध्य लोगवीने

(जे से गिम्हाण पहमे मासे दोच्चे पक्खे चेत सुद्धे, तस्स ण चेत सुद्धस्स
चउत्थीए भरणीए णक्खत्ते ण अद्धरत्तकालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं
अविभतरियाए परिसाए पचहिं अणगारसयेहिं वाहिरियाए परिसाए मासि
एण भक्तेण अपाणएण वग्धारि य पाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे)

तेमणे ग्रीष्मकाणना पडिला मडिनाना जीव पण्णवाडीयामा ओटले के
चैत्र शुक्ल पक्षमा तेमा पणु ओथना दिवसे ज्यारे लखी नक्षत्रने अद्रनी
साथे योग थर्ह रह्यो हुतो, अर्द्ध रात्रिमा वणते आभ्यन्तर परिषद हुती त्यारे
पाचसो आर्यिकाओनी साथे १ मडिनानु पान रडित लहत प्रत्याभ्यानु करीने

प्रत्याख्यानेन, अपानकेन=पानरहितेन चतुर्विधाहारपरित्यागेनेत्यर्थ, व्याधारित
पाणिः=प्रलम्बितभुजद्वयः, क्षीणे=प्रणष्टे सति वेदनीये आयुष्के नाम्नि गोत्रे च
कर्मणि-सिद्धिः=सिद्धि गतः । एव परिनिर्वाणमहिमाभणितव्या-यथा जम्बूद्वीप
प्रज्ञप्त्याम्, यथा ऋषभस्य निर्वाणमहिमा प्रोक्तस्तथा मल्लिजिनस्यापि बोध्य-
इत्यर्थः । नन्दीश्वरे=नन्दीश्वरद्वीपे अष्टाहिका महिमा=अष्टाहंसाध्यमहोत्सव देवै-
कृतः । कृत्वा यावत्-प्रतिगताः=यस्यादिशः प्रादुर्भूतास्ता दिश प्रतिगताः=
प्रतिनिवृत्ताः ।

हित भक्त प्रत्याख्यान करके दोनो हाथ फैलाये हुए अवशिष्ट वेदनीय
आयु नाम एव गोत्र कर्मके नष्ट होते हैं सिद्धि अवस्था प्राप्त करली ।
(एव परिनिर्वाणमहिमा भाणियन्वा जहा जम्बूद्वीपपणत्तीण) जिस
प्रकार जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में ऋषभ देव के निर्वाण का महिमा प्रकट की
गई है उसी तरह इन मल्लि भगवान के निर्वाण की भी महिमा जान
नी चाहिये । (नदीसरे अष्टाहिया महिमा जाव पडिगया) देवताओं ने
मल्लि प्रभु के इस निर्वाण कल्याणक की महिमा नदीश्वर द्वीप में ८
दीन तक लगातार उत्सव कर के मनाई । बादमे वे वहासे जिस दिशासे
प्रकट हुए थे उस दिशाको वापिस चले गये अब सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामी
से कहते हैं (एव खलु जम्बू ! समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स ना-
यज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते त्तिवेमि) हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर
ने कि जो सिद्धिस्थान के अधिपति बन चुके है इस आठवें जाताध्य

अने डाथे इलावता अवशिष्ट वेदनीय, आयु, नाम अने गोत्र कर्मनो नाश
यता न सिद्धि अवस्था मेणवी लीधी

(एव परिनिर्वाणमहिमा भाणियन्वा जहा जम्बूद्वीपपणत्तीण)

जे प्रभाणे न जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तिमा ऋषभदेवनो महिमा आलोणवामा आव्ये
छे ते प्रभाणे न मल्ली लगवानना निर्वाणुनो महिमा पणु न्णुवे न्नेधये
(नदीसरे अष्टाहिया महिमा जाव पडिगया) मल्ली प्रभुना आ निर्वाणुना उट्ठयाणु
कारक महिमानो उत्सव देवताओओ नदीश्वर द्वीपमा सतत आठ दिवसो सुधी
उज्जये त्थारपणी तेओ त्थाथी जे दिशाभाथी प्रगट्थया उता ते दिशा तरङ्ग
पाछा नता ग्हा उवे सुधर्मास्वामी न जम्बूस्वामीने उडे छे—

(एव खलु जम्बू ! समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स नायज्झयणस्स
अयमट्ठे पणत्ते त्तिवेमि)

डे न जम्बू ! श्रमणु लगवान महावीरे-डे जेओ सिद्धिस्थानना अधिपति

उपित्वा=स्थित्वा पञ्चपञ्चाशद्वर्षमहस्त्राणि वर्षशतानि यावत्-केवलपर्याय पाल
यित्वा, पञ्चपञ्चाशद्वर्षमहस्त्राणि सर्वायुः कपालयित्वा यः सः ग्रीष्माणा ग्रीष्मकालानां
चैत्रादिमासचतुष्टयस्थाणां प्रथमो मासः द्वितीयः पक्षः चैत्रशुद्धः=चैत्रशुक्लः, तस्य
खलु चैत्रशुद्धस्य चतुर्थ्या भरण्या नक्षत्रे भरणीनामकनक्षत्रे खलु चन्द्रयोगमुपागते=
चन्द्रे भरणी नक्षत्रस्थिते सतीत्यर्थः । अर्धरात्रिकालसमये पञ्चमिरार्यिकाशतैराभ्य
न्तरिकया परिषदा, पञ्चभिरनगाशतैराह्वया परिषदा सह, मासिकेन भक्तेन=भक्त-

रहा एग वाससय अगारवासमज्झे वसित्ता पण पण्णवास सहस्साइ
वाससय ऊगाइ केवलपरियाग पाउणित्ता पणपण्णवाससहस्साइ सव्वा
उय पालइत्ता) मे मल्ली अर्हत प्रभु १ सौ वर्ष घर में रहे-बाद में दी
क्षित होकर सौ वर्ष कर्म ५५, हजार वर्ष तक केवल पर्याय में रहे । इस
तरह ५५ हजार वर्ष तक समस्त आयु को भोग कर (जे से गिम्हाण
पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत सुद्धे, तस्सण चेतसुद्धस्स चत्थीए
भरणीए णक्खत्ते ण अद्धरत्ता कालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं अ
भिमतारियाए परिसाए पचहिं अणगारसएहिं बाहिरियाए परिसाए मासि
एण भक्तेण अपाणएण वग्धारियपाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे
गोए सिद्धे) उन्हो ने ग्रीष्म काल के प्रथम मास में द्वितीय पक्ष में अर्थात्
चैत्र शुक्ल पक्ष में उस में भी चतुर्थी तिथि के दिन जब कि भरणी नक्षत्र
का चंद्रमा के साथ योग हो रहा था - अर्द्ध रात्रि के समय में
आभ्यन्तर परिषदा की पाचसौ अनगारो के साथ १ महिने का पानर

(मल्ली ण अर्हा एग वाससय अगारवासमज्झे वसित्ता पण पण्णवास
सहस्साइ वाससय ऊगाइ केवलपरियाग पाउणित्ता पणपण्णवाससहस्साइ सव्वा
उय पालइत्ता)

मल्ली अर्हत प्रभु १ सौ वर्ष घर में रहा त्थारपणी दीक्षा ग्रहण करीने
पण्ण ऊत्तर वर्षमा ओकसो वर्ष ओछा ओटले के ४८०० वर्षनु आयुष्य लोगवीने
केवली पर्यायमा रहा आ रीते पण्ण पथावन ऊत्तर वर्षनु आयुष्य लोगवीने

(जे से गिम्हाण पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत सुद्धे, तस्सण चेत सुद्धस्स
चत्थीए भरणीए णक्खत्ते ण अद्धरत्तकालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं
अभिमतारियाए परिसाए पचहिं अणगारसयेहिं बाहिरियाए परिसाए मासि
एण भक्तेण अपाणएण वग्धारि य पाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे)

तेमणे ग्रीष्मकालना पडेला भडिताना पीणा पण्णवाडीयामा ओटले के
चैत्र शुक्ल पक्षमा तेमा पण्ण चोथना दिवसे ज्यारे लरणी नक्षत्रने अद्रनी
साथे योग थई रह्यो हुतो, अर्द्ध रात्रिना वणते आभ्यन्तर परिषद हुती त्थारे
पाचसो आर्यिकाओनी साथे १ भडितानु पानर इति लकत प्रत्याभ्यास करीने

પ્રત્યાખ્યાનેન, અપાનકેન=પાનરહિતેન ચતુર્વિધાહારપરિત્યાગેનેત્યર્થ, વ્યાધારિત
પાણિઃ=પલમ્બિતભુજદ્વયઃ, ક્ષીણે=પ્રણટે સતિ વેદનીયે આયુષ્કે નામ્નિ ગોત્રે ચ
કર્મણિ-સિદ્ધઃ=સિદ્ધિ ગતઃ । એવ પરિનિર્વાણમહિમાભણિતવ્યા-યથા જમ્બૂદ્વીપ
પ્રજ્ઞપ્ત્યામ્, યથા ઋષભસ્ય નિર્વાણમહિમા પ્રોક્તસ્તથા મલ્લિજિનસ્યાપિ વોધ્ય-
ઈત્યર્થઃ । નન્દીશ્વરે=નન્દીશ્વરદ્વીપે અઘ્તાહિકા મહિમા=અઘ્તાદસાધ્યમહોત્સવ દેવૈ.
કૃતઃ । કૃત્વા યાવત્-પ્રતિગતાઃ=યસ્યાદિગઃ પ્રાદુર્મૂતાસ્તા દિશ પ્રતિગતાઃ=
પ્રતિનિવૃત્તાઃ ।

હિત ભક્ત પ્રત્યાખ્યાન કરકે દોનો હાથ ફેલાયે હુએ અવશિષ્ટ વેદનીય
આયુ નામ એવ ગોત્ર કર્મકે નષ્ટ હોતે હીં સિદ્ધિ અવસ્થા પ્રાપ્ત કરલી !
(એવ પરિનિર્વાણમહિમા ભાણિયવ્વા જહા જમ્બૂદ્વીપપણ્ણત્તીણ) જિસ
પ્રકાર જમ્બૂદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિ મેં ઋષભ દેવ કે નિર્વાણ કા મહિમા પ્રકટ કી
ગઈ હૈ ઉસી તરહ ઇન મલ્લી ભગવાન કે નિર્વાણ કી ભી મહિમા જાન
નીચાહિયે । (નદીસરે અઘ્તાહિયા મહિમા જાવ પહિગયા) દેવતાઓં ને
મલ્લી પ્રભુ કે હસ નિર્વાણ કલ્યાણક કી મહિમા નદીશ્વર દ્વીપ મેં ૮
દીન તક લગાતાર ઉત્સવ કર કે મનાઈ । વાદમે વે વહાસે જિસ દિશાસે
પ્રકટ હુએ થે ઉસ દિશાકો વાપિસ ચલે ગયે અવ સુધર્માસ્વામી જમ્બૂસ્વામી
સે કહતે હૈં (એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણ અદ્દમસ્સ ના-
યજ્ઞયણસ્મ અયમદ્દે પણ્ણત્તે ત્તિવેમિ) હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન્ મહવીર
ને કિ જો મિદ્ધિસ્થાન કે અધિપતિ બન ચુકે હૈં હસ આઠવે જ્ઞાતાધ્ય

ખને હાથો ફેલાવતા અવશિષ્ટ વેદનીય, આયુ, નામ અને ગોત્ર કર્મનો નાશ
થતા જ સિદ્ધિ અવસ્થા મેળવી લીધી

(એવ પરિનિર્વાણમહિમા ભાણિયવ્વા જહા જમ્બૂદ્વીપપણ્ણત્તીણ)

જે પ્રમાણે જ જમ્બૂદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિમા ઋષભદેવનો મહિમા આલેખવામા આવ્યો
છે તે પ્રમાણે જ મલ્લી ભગવાનના નિર્વાણનો મહિમા પણ જાણવો જોઈએ
(નદીસરે અઘ્તાહિયા મહિમા જાવ પહિગયા) મલ્લી પ્રભુના આ નિર્વાણના કલ્યાણ
કારક મહિમાનો ઉત્સવ દેવતાઓએ નદીશ્વર દ્વીપમા સતત આઠ દિવસો સુધી
ઉજવ્યો ત્યારપછી તેઓ ત્યાથી જે દિશામાથી પ્રગટ થયા હતા તે દિશા તરફ
પાછા જતા રહ્યા હવે સુધર્માસ્વામી જમ્બૂસ્વામીને કહે છે—

(એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણ અદ્દમમ્મ નાયજ્ઞયણસ્સ
અયમદ્દે પણ્ણત્તે ત્તિવેમિ)

હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ સિદ્ધિસ્થાનના અધિપતિ

उपित्वा=स्थित्वा पञ्चपञ्चाशद्वर्षमहत्स्राणि वर्षशतानि यावत्-केवलपर्याय पाल
यित्वा, पञ्चपञ्चाशद्वर्षमहत्स्राणि सर्वायुष्क पाठयित्वा यः सः ग्रीष्माणा ग्रीष्मकालानां
चैत्रादिमासचतुष्टयरूपाणां प्रथमो मासः द्वितीयः पक्ष चैत्रशुद्ध = चैत्रशुक्लः, तस्य
खलु चैत्रशुद्धस्य चतुर्थ्या भरण्या नक्षत्रे भरणीनामकनक्षत्रे खलु चन्द्रयोगमुपागते=
चन्द्रे भरणी नक्षत्रस्थिते सतीत्यर्थः । अर्धरात्रिकालसमये पञ्चभिरार्यिकाशतैराभ्य-
न्तरिकया परिषदा, पञ्चभिरनगारशतैराप्या परिषदा सह, मासिकेन भक्तेन=भक्त

रहा एग वाससय अगारवासमज्जे वसित्ता पण पणगवास सहस्साइ
वाससय ऊगाइ केवलिपरियाग पाउणित्ता पणपणगवाससहस्साइ सन्वा
उय पालइत्ता) ये मल्ली अर्हत प्रभु १ सौ वर्ष घर में रहे-बाद में दी
क्षित होकर सौ वर्ष कर्म ५५, हजार वर्ष तक केवलि पर्याय में रहे । इस
तरह ५५ हजार वर्ष तक समस्त आयु को भोग कर (जे से गिम्हाण
पहमे मासे दोच्चे पक्खे चेत सुद्धे, तस्सण चेतसुद्धस्स चात्थीए
भरणीए णक्खत्ते ण अद्धरत्ता कालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं अ
ब्भित्तारियाए परिसाए पचहिं अणगारसएहिं बाहिरियाए परिसाए मासि
एण भत्तेण अपाणएण वग्धारियपाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे) उन्हो ने ग्रीष्म काल के प्रथम मास में द्वितीय पक्ष में अर्थात्
चैत्र शुक्ल पक्ष में उस में भी चतुर्थी तिथि के दिन जब कि भरणी नक्षत्र
का चंद्रमा के साथ योग हो रहा था - अर्द्ध रात्रि के समय में
आभ्यन्तर परिषदा थी पाचसौ अनगारो के साथ १ महिने का पानर

(मल्ली ण अरहा एग वाससय अगारवासमज्जे वसित्ता पण पणगवास
सहस्साइ वाससयऊगाइ केवलि परियाग पाउणित्ता पणपणगवाससहस्साइ सन्वा
उय पालइत्ता)

मल्ली अर्हत प्रभु १ सौ वर्ष घर में रहा त्थारपणी दीक्षा ग्रहण करीने
पण ऊत्तर वर्षमा ओकसो वर्ष ओछा ओटले के ४६०० वर्षनु आयुध लोगवीने
केवली पर्यायमा रहा आ रीते पण पत्थावन ऊत्तर वर्षनु आयुध लोगवीने

(जे से गिम्हाण पहमे मासे दोच्चे पक्खे चेत सुद्धे, तस्सण चेत सुद्धस्स
चात्थीए भरणीए णक्खत्ते ण अद्धरत्तकालसमयसि पचहिं अज्जिया सएहिं अ
ब्भित्तारियाए परिसाए पचहिं अणगारसयेहिं बाहिरियाए परिसाए मासि
एण भत्तेण अपाणएण वग्धारि य पाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे)

तेमणे ग्रीष्मकाणना पडेला भडिनाना जीण पणवाडीयामा ओटले के
चैत्र शुक्ल पक्षमा तेमा पणु योथना दिवसे न्यादे लरणी नक्षत्रने अर्द्ध
साथे योग थई रह्यो छतो, अर्द्ध रात्रिना वअते आभ्यन्तर परिषद छती त्थार
पांचसो आर्यिकाओनी साथे १ भडिनानु

પ્રત્યાખ્યાનેન, અપાનકેન=પાનરહિતેન ચતુર્વિધાહારપરિત્યાગેનેત્યર્થ , વ્યાધારિત-
પાણિ:=મલમ્બિતભુજદ્વયઃ, ક્ષીણે=પ્રણપ્તે સતિ વેદનીયે આયુષ્કે નામ્નિ ગોત્રે ચ
કર્મણિ-સિદ્ધઃ=સિદ્ધિ ગતઃ । એવ પરિનિર્વાણમહિમાભણિતવ્યા-યથા જમ્બૂદ્વીપ
પ્રજ્ઞપ્ત્યામ્, યથા કૃપભસ્ય નિર્વાણમહિમા પ્રોક્તસ્તથા મલ્લિજિનસ્યાપિ વોધ્ય-
હત્યર્થ. । નન્દીશ્વરે=નન્દીશ્વરદ્વીપે અષ્ટાદિકા મહિમા=અષ્ટાદસાધ્યમહોત્સવ દેવૈ.
કૃતઃ । કૃત્વા યાવત્-પ્રતિગતાઃ=યસ્યાદિશઃ પ્રાદુર્મૂતાસ્તા દિશ પ્રતિગતાઃ=
પ્રતિનિવૃત્તાઃ ।

હિત ભક્ત પ્રત્યાખ્યાન કરકે દોનો હાથ ફેલાયે હુએ અવશિષ્ટ વેદનીય
આયુ નામ એવ ગોત્ર કર્મકે નષ્ટ હોતે હીં સિદ્ધિ અવસ્થા પ્રાપ્ત કરલી !
(એવ પરિનિર્વાણમહિમા ભાણિયવ્વા જહા જમ્બૂદ્વીપપણ્ણત્તીણ) જિસ
પ્રકાર જમ્બૂદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિ મેં કૃપભ દેવ કે નિર્વાણ કા મહિમા પ્રકટ કી
ગઈ હૈ ઉસી તરહ્ ઇન મલ્લી ભગવાન કે નિર્વાણ કી ભી મહિમા જાન
નીચાહિયે । (નદીસરે અઢાહિયા મહિમા જાવ પહિગયા) દેવતાઓં ને
મલ્લી પ્રભુ કે હસ નિર્વાણ કલ્યાણક કી મહિમા નદીશ્વર દ્વીપ મેં ૮
દીન તક લગાતાર ઉત્સવ કર કે મનાઈ । બાદમે વે વહાસે જિસ દિશાસે
પ્રકટ હુએ થે ઉસ દિશાકો વાપિસ ચલે ગયે અવ સુધર્માસ્વામી જમ્બૂસ્વામી
સે કહેતે હૈં (એવ સ્વલ્લુ જમ્બૂ ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ અટ્ટમસ્સ ના
યજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે ત્તિવેમિ) હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન્ મહવીર
ને કિ જો સિદ્ધિસ્થાન કે અધિપતિ બન ચુકે હૈં ઇસ આઠવેં જાતાધ્ય

અને હાથો ફેલાવતા અવશિષ્ટ વેદનીય, આયુ, નામ અને ગોત્ર કર્મનો નાશ
થતા જ સિદ્ધિ અવસ્થા મેળવી લીધી

(એવ પરિનિર્વાણમહિમા ભાણિયવ્વા જહા જમ્બૂદ્વીપપણ્ણત્તીણ)

જે પ્રમાણે જ જમ્બૂદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિમા કૃપભદેવનો મહિમા આલેખવામા આવ્યો
છે તે પ્રમાણે જ મલ્લી ભગવાનના નિર્વાણનો મહિમા પણ જાણવો જોઈએ
(નદીસરે અઢાહિયા મહિમા જાવ પહિગયા) મલ્લી પ્રભુના આ નિર્વાણના કહયાણ
કારક મહિમાનો ઉત્સવ દેવતાઓએ નદીશ્વર દ્વીપમા સતત આઠ દિવસો સુધી
ઉજવ્યો ત્યારપછી તેઓ ત્યાથી જે દિશામાથી પ્રગટ થયા હતા તે દિશા તરફ
પાછા જતા રહ્યા હવે સુધર્માસ્વામી જમ્બૂસ્વામીને કહે છે—

(એવ સ્વલ્લુ જમ્બૂ ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ અટ્ટમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ
અયમદ્દે પણ્ણત્તે ત્તિવેમિ)

હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ સિદ્ધિસ્થાનના અધિપતિ

उपित्वा=स्थित्वा पञ्चपञ्चाशद्वर्षमहस्याणि वर्षशतानि यावत्-केवलपर्याय पाल
यित्वा, पञ्चपञ्चाशद्वर्षमहस्याणि सर्वायुक्त पाठयित्वा यः स. ग्रीष्माणा ग्रीष्मकालानां
चैत्रादिमासचतुष्टयरूपाणां प्रथमो मास द्वितीयः पक्ष चैत्रशुद्ध = चैत्रशुक्लः, तस्य
खलु चैत्रशुद्धस्य चतुर्थ्या भरण्या नक्षत्रे भरणीनामकनक्षत्रे खलु चन्द्रयोगमुपागते=
चन्द्रे भरणी नक्षत्रस्थिते सतीत्यर्थः । अर्धरात्रिकालसमये पञ्चमिरार्यिकाशतैराभ्य-
न्तरिकया परिपदा, पञ्चभिरनगाशतैर्यातया परिपदा सह, मासिकेन भक्तेन=भक्त-

रहा एग वाससय अगारवासमज्झे वसित्ता पण पण्णवास सहस्साइ
वाससय ऊणाइ केवलपरियाग पाउणित्ता पणपण्णवाससहस्साइ सव्वा
उय पालइत्ता) मे मल्ली अर्हत प्रभु १ सौ वर्ष घर में रहे-याद में दी
क्षित होकर सौ वर्ष कर्म ५५, हजार वर्ष तक केवल पर्याय में रहे । इस
तरह ५५ हजार वर्ष तक समस्त आयु को भोग कर (जे से गिम्हाणं
पढ्मे मासे दोच्चे पक्खे चेत सुद्धे, तस्सण चेतसुद्धस्स चात्थीए
भरणीए णक्खत्ते ण अद्धरत्ता कालसमयसि पचहिं अज्जिया सणहिं अ
भिमतारियाए परिसाए पचहिं अणगारसएहिं वाहिरियाए परिसाए मासि
एण भक्तेण अपाणएण वग्धारियपाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे
गोए सिद्धे) उन्हो ने ग्रीष्म काल के प्रथम मास में द्वितीय पक्ष में अर्थात्
चैत्र शुक्ल पक्ष में उस में भी चतुर्थी तिथि के दिन जब कि भरणी नक्षत्र
का चंद्रमा के साथ योग हो रहा था - अर्द्ध रात्रि के समय में
आभ्यन्तर परिपदा थी पाचसौ अनगारो के साथ १ महिने का पानर

(मल्ली ण अरहा एग वाससय अगारवासमज्झे वसित्ता पण पण्णवास
सहस्साइ वाससयऊणाइ केवलपरियाग पाउणित्ता पणपण्णवाससहस्साइ सव्वा
उय पालइत्ता)

मल्ली अर्हत प्रभु १ सौ वर्ष, घरमा रह्या त्य रपणी दीक्षा अडणु करीने
पण ऊणर वर्षमा ओकसो वर्ष ओछा ओटले के ४६०० वर्षनु आयुष्य लोगवीने
केवली पर्यायमा रह्या आ रीते पण पयावन ऊणर वर्षनु आयुष्य लोगवीने

(जे से गिम्हाणं पढ्मे मासे दोच्चे पक्खे चेत सुद्धे, तस्स ण चेत सुद्धस्स
चात्थीए भरणीए णक्खत्ते ण अद्धरत्तकालसमयसि पचहिं अज्जिया सणहिं
अभिमतारियाए परिसाए पचहिं अणगारसयेहिं वाहिरियाए परिसाए मासि
एण भक्तेण अपाणएण वग्धारि य पाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे)

तेमणे ग्रीष्मकालना पडेला मडिनाना जीण पण्णवाडीयामा ओटले के
चैत्र शुक्ल पक्षमा तेमा पणु ओथना दिवसे ज्यादे लक्ष्मी नक्षत्रने अर्द्ध रात्रि
साथे योग थई रह्यो हुतो, अर्द्ध रात्रिना वभते आभ्यन्तर परिपद हुती तयारे
पाचसो आर्यिकाओनी साथे १ मडिनानु पान रडित लक्ष्म प्रत्याभ्यास करीने

॥ अथ नवमम् अध्ययनम् ॥

गतमष्टमं अध्ययनं, साम्प्रत नवमं प्रारभ्यते, अस्य पूर्वेण सहाय सम्बन्ध —
पूर्वस्मिन् मायावतोऽनर्थः प्रोक्तः, २६ च भोगेष्वविरतिमतोऽनर्थो विरतिमतश्चार्थः
प्रोच्यते, इति सम्बन्धेनायातस्यास्येदमादिसूत्रम्—‘जइण भते’ इत्यादि ।

मूलम्—जइण भते । समणेणं जाव संपत्तेणं अट्टमस्स णाय-
ज्झयणस्स अयमट्टे पणत्ते नवमस्स णं भंते । नायज्झयणस्स
समणेणं जाव संपत्तेण के अट्टे पणत्ते ? एव खलु जवू । तेणं
कालेण २ चंपा नाम नयरी पुण्णभद्दे चेइए तत्थणं माकदी
नाम सत्थवाहे परिवसइ, अइहे जाव अपरिभूए, तस्से ण भद्दा

—नववा अध्ययन प्रारम्भ—

अष्टम अ अध्ययन समाप्त हुआ । अब नौवां अध्ययन प्रारम्भ होता
है इस अध्ययनका पूर्व अध्ययनके साथ इस तरहसे संबन्ध है पूर्व अध्य-
यन में कहा गया है कि जो साधु मायावी होते हैं वे अनर्थ के पात्र
होते हैं अर्थात् यदि उसके महाव्रतों में थोड़ा सा भी माया शल्य है तो
वे उसे यथावत् फल जनक नहीं होते हैं—अब सूत्रकार इस अध्ययन
द्वारा यह प्रकट करेंगे कि जो साधु भोगों से विरक्त नहीं होता है वह
अनर्थका स्यान् होता है और जो विरक्त होता है वह अपने प्रयोजनरूप
अर्थको प्राप्त कर लेता है । इसी सम्बन्धको लेकर प्रारम्भ हुए इस अध्ययन
का यह प्रथम सूत्र है (जइण भते । समणेण जाव सत्तण) इत्यादि ।

॥ नवमु अध्ययन प्रारम्भ ॥

આઠમું અધ્યયન પુરૂ થયું છે નવમું અધ્યયન હવે આરંભ થાય છે
આઠમા અધ્યયનની સથે આ અધ્યયનનો સંબંધ આ પ્રમાણે છે કે આઠમા
અધ્યયનમા એ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવી છે કે જે સાધુઓ માયાવી હોય
છે તેઓ અનર્થના પાત્ર હોય છે એટલે કે જે તેના મહાવ્રતોમા થોડું પણ
માયાશલ્ય (માયા રૂપ કાટો) હોય ત્યારે તેઓ તેમા યોગ્ય ક્ષણના અધિકારી
થતા નથી હવે સૂત્ર ૧૨ આ અધ્યયનમા એ વાત સ્પષ્ટ કરવા ઇચ્છે છે કે
જે સાધુ ભોગોથી વિરક્ત થતો નથી તે અનર્થનું સ્થાન ધર્મ પડે છે અને જે
વિરક્ત હોય છે તે પેતાના પ્રયોજન રૂપ અર્થને મેળવી લે છે આ વિષયને
લઈને પ્રારંભ થતા નવમા અધ્યયનનું આ પહેલું સૂત્ર છે—

સુધર્માસ્વામી પ્રાહ--‘ एवं खलु जन्तू ’ इत्यादि । एवं खलु हे जन्तू ! अत्र
णेन भगवता महावीरेण-यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तेन, अष्टमस्य
ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थ उक्तरूपो भावः प्रज्ञप्त कथितः इति ब्रवीमि अस्य
व्याख्यान पूर्ववत् ॥ सू० ४० ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्गुरुभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितकलितके-
लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहच्छ-
त्रपतिकोलहापुरराजप्रदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोलहापुरराज
गुरु-शालग्रहचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाङ्ग-
व्रतिविरचिताया ‘ ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ’ सूत्रस्यानगारधर्ममृतव-
र्षिण्याख्याया व्याख्याया अष्टममध्ययन सपूर्णम् ॥ ८ ॥

અન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ અર્થ પ્રરૂપિત ક્રિયા હૈ । અતઃ જૈસા પ્રશુને અપ
ને મુસ્તારચિન્દ સે કહો ઓર જૈસા ઉનસે મૈને સુના-વૈસા હી યહ તુમે
સે કહા હૈ । સૂ૦ “ ૪૦ ”

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસીલાલશ્રી મહારાજ કૃત “ જ્ઞાતા-
ધર્મકથાસૂત્ર ” કી અનગારધર્મમૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યા કા આઠવા
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૮ ॥

થઈ ગયેલા છે-આઠમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ ઉપર લખ્યા મુજબનો અર્થ નિરૂ-
પિત કર્યો છે એટલા માટે પ્રભુએ પોતાના મુખારવિદથી જે પ્રમાણે મને
કહ્યો અને મેં સાંભળ્યો તે પ્રમાણે જ તમને મેં કહ્યો છે ॥ સૂત્ર ૪૦ ॥

આઠમું અધ્યયન સમાપ્ત ।

તણ તે મારુંદીદારણ અમ્માપિયરો જાહે નો સચાણંતિ વહૂહિ
આઘવણાહિ પળવણાહિ ચ આઘવિત્તણ વા પન્નવિત્તણ વા તાહે
અકામા ચેવ એમદ્દ અણુજાણિત્યા । તણ તં મારુંદિયદારગા
અમ્માપિકહિ અઠ્ઠમણુપણાયા સમાણા ગણિમં ચ ધરિમં ચ
મેઝજં ચ પારિચ્છેઝજં ચ જહા અરહણગસ્સ જાવ લવણસમુદ્દં
વહૂહ જોઅણસયાહ ઓગાઢા ॥ સૂ૦ ૧ ॥

ટીકા—શ્રી જમ્બુસ્વામી પૂછતિ—યદિ સ્વલુ ભદન્ત ! શ્રમણેન યાવત્સમ્પ્રા-
પ્તેન—અષ્ટમસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્યાયમર્થ પ્રજ્ઞપ્તઃ, નવમસ્ય સ્વલુ ભદન્ત ! જ્ઞાતાધ્યય-
નસ્ય શ્રમણેન યાવત્સમ્પ્રાપ્તેન કોઽર્થ પ્રજ્ઞપ્ત ? શ્રી સુધર્માસ્વામી પ્રાહ—એવ સ્વલુ
જમ્બુ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ મમયે ચમ્પાનામનગરી । પૂર્ણભદ્રં ચૈત્યમ્ । તત્ર
સ્વલુ મારુન્દીનામ સાર્થવાહ પરિવસતિ ‘અહુ’ આઢ્ય = પ્રભૂતધનધાન્યસપન્ન,
‘જાવ અપરિભૂણ’ યાવદપરિભૂત કેનાઽપ્યપરિભવનીય—સર્વજનમાન્ય इत्यर्थ ।
તસ્ય સ્વલુ ભદ્રાનામ માર્યા । તસ્યા, સ્વ માર્યાયા આત્મજો દ્વો સાર્થવાહદારકો

ટીકાર્થ—જમ્બુસ્વામી શ્રી સુધર્માસ્વામીસે પૂછતે હૈં કિ (મતે) ભદન્ત !
(જઙ્ઘણ સમણેણ જાવ સપત્તેણ અઢ્ઠમસ્સ ણાયઙ્ઘયણસ્સ અયમદ્દે પળત્તે
નવમસ્સણ કેઅદ્દે પળત્તે) યદિ શ્રમણ ભગવાન્ મહવીરને કિ જો સિદ્ધિ
સ્થાન કે ભોક્તા બન ચુકે હૈં અષ્ટમ જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે
અર્થ પ્રતિપાદિત કિયા હૈં તો હે ભદન્ત ! ઉન્હી શ્રમણ ભગવાન મહાવીર
ને કિ જો સિદ્ધિસ્થાન કે અધિપતિ બન ચુકે હૈં નૌવે જ્ઞાતાધ્યયન કા
કયા ભાવ અર્થ પ્રતિપાદિત કિયા હૈં ? (એવ સ્વલુ જમ્બુ ! તેણ કાલેણ ૨
ચવા નમ નયરી, પુણ્ણમદ્દે ચેહણ, તત્થણ મારુન્દી નામ સત્થવાહે

ટીકાર્થ—‘ જઙ્ઘણ મતે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ ’ इत्यादि ॥

જમ્બુ સ્વામી સુધર્માસ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે કે (મતે !) હે ભદન્ત !

(જઙ્ઘણ સમણેણ જાવ સપત્તેણ અઢ્ઠમસ્સ અયમદ્દે પળત્તે નવમસ્સ ણ મતે !
નાયઙ્ઘયણસ્સ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પળત્તે ?)

જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીર—કે જેઓ સિદ્ધસ્થાનના ઉપભોક્તા થઈ
ચૂક્યા છે—આઠમા જ્ઞાતાધ્યયનનો અર્થ ઉપર કહ્યા મુજબ નિરૂપિત થયો છે
તો નવમા જ્ઞાતાધ્યયનનો અર્થ તેઓએ કેવી રીતે પ્રગટ કયો છે ?

(એવ સ્વલુ જમ્બુ ! તેણ કાલેણ ૨ ચવા નામ નયરી પુણ્ણમદ્દે ચેહણ, તત્થણ

नामं भारिया, तीसेणं भद्दाए अत्तया दुवे सत्थवाहदारया होत्था,
 तं जहा—जिणपालिए य जिणरक्खिए य, ततेणं तेसिं मागं-
 दियदारगाण अत्तया कयाई एगयओ साहियाणं इमेयारूवे
 मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एवं, खलु अम्हे लवणसमुदं
 पोयवहणेण एक्कारसवारा ओगाढा सवत्थ वि य णं लद्धट्ठ
 कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि निययघर हव्वमागया त सेयं
 खलु अम्हे देवाणुप्पिया । दुवालसमपि लवणसमुदं पोतवह-
 णेणं ओगाहित्तए—त्तिकट्ठु अणमणणस्स एयमट्ठ पडिसुणेति
 पडिसुणित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवाग-
 च्छित्ता एव वयासी—एव खलु अम्हे अम्मयाओ । एक्कारस
 वारा तं चेव जाव निययं घरं हव्वमागया, तं इच्छामो णं
 अम्मयाओ । तुब्भेहि अव्वभणुण्णाया समाणा दुवालसम लव
 णसमुदं पोयवहणेण ओगाहित्तए । तएण ते मागंदियदारए
 अम्मापियरो एव वयासी—इमे य ते जाया । अज्जग जाव
 परिभाएत्तए त अणुहोह ताव जाया । विउले माणुस्सए इड्डी
 सक्कारसमुदए, कि भे सपच्चवाएण निरालवणेण लवणसमु-
 द्दोत्तारेणं ?, एव खलु पुत्ता । दुवालसमी जत्ता, सावसग्गा यावि
 भवइ, तं माणं तुब्भे, दुवे पुत्ता । दुवालसमपि लवणं जाव
 ओगाहेह, माहु तुब्भ सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ, तएणं मागं-
 दियदारगा अम्मापियरो दोच्चपि तच्चपि एव वयासी—एव खलु
 अम्हे अम्मयाओ । एक्कारसवारा लवण जाव ओगाहित्तए,

‘ઓગાઢા’ અવગાહિતવન્તૌ=ઉત્તીર્ણૌ, સર્વત્રાપિ ચ સ્વલ્પ સર્વયાત્રાસુ આવા
‘લઢ્ઢા’ લઢ્ઢાર્થૈ=પ્રાપ્તપ્રચુરધનો, ‘કયકજ્ઞા’ કૃતકાર્યો=સાધિતધનોપા-
ર્જનાદિસકલકાર્યૈ, ‘અણહસમગ્ગા’ અનઘસમગ્રૌ = તસ્કરાદિહેતુકવિઘાતરહિત-
સર્વસ્વૌ સતૌ પુનરપિ નિજગૃહ હવ્યમાગતૌ=સર્વથા સકુશલ સમાયાતૌ, તત્=
તસ્માત્ ‘સેય’ શ્રેયઃ=ઉચિત સ્વલ્પ આવયોઃ દેવાણુપ્રિયઃ ? ‘દુવાલસમપિ’
દ્વાદશમપિ વાર લવણસમુદ્ર પોતવહ્નેનાવગાહિતુમ્, ‘ત્તિકદ્દુ’ इति कृत्वा=इति
विचार्याऽन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिश्रुणुतः = સ્વીકુરુતઃ પ્રતિશ્રુત્ય યત્રૈવ અમ્વાપિતરૌ
મદ્રા માકન્દી ચ સ્તઃ, તત્રૈવોપાગચ્છતઃ, ઉપાગત્યૈવમગાદિષ્ટામ્-एव स्वल्प आवा

લવણસમુદ્ર પોયવહ્નેણ એકારસવારો ઓગાઢા સવ્વત્થ વિ ય ણ લઢ્ઢા
કયકજ્ઞા અણહસમગ્ગા પુનરવિ નિયયઘર હવ્યમાગયા) જહાજ
દ્વારા હમ લોગ લવણ સમુદ્ર સે હોકર ૧૧ વાર પરદેશ જા ચુકે હૈ-જત્ર
૨ હમ લોગ વાહર પરદેશ ગયે-તત્ર ૨ હમને વર્હા પર પ્રચુર ધન કમાયા
હૈ ઓર કૃત કાર્ય હોકર વર્હા સે નિર્વિઘ્ન રૂપ મેં અપને ઘર પાપિસ સકુ
શલ આયે હૈ-(ત સેય સ્વલ્પ અમ્હ દેવાણુપ્રિયા । દુવાલ સમપિ લવણ
સમુદ્ર પોતવહ્નેણ ઓગાહિત્તણ) इतलिये हे देवाणुप्रिय अव १२वी
वार भी हम लोग जहाज द्वारा लवण समुद्र से होकर वाहर व्यपार कर
ने के लिये चले-तो अच्छा है । (त्तिकदु अणमणस्स एयमद्व पडि
सुणेति) इस प्रकार का विचार कर उन दोनों ने एक दूसरे की बात को
मान लिया (पडिसुणित्ता जेणेव अम्मा पियरो तेणेव उवागच्छइ उवा
गच्छित्ता एव वयासी एव स्वल्प अम्मयाओ एकारस वारा त चेव जाव

(एव स्वल्प अम्हे लवणसमुद्र पोयवहणेण एकारसवारा ओगाढा सव्वत्थ
वि य ण लद्धा कयकज्जा अणह-समग्गा पुनरवि निययघर हव्यमागया)

વહાણુ વડે અમે દોઢા ૧૧ વખત દેશાવર ખેડવા નીકળ્યા હતા અને
આ પ્રમાણે ત્યાંથી પુરૂણ ધન મેળવ્યું છે અમે પોતાના વેપારના ખૂણુરૂપે
સફળ થઈને સકુશળ પાછા ઘેર ફર્યા છીએ

(તં સેય સ્વલ્પ અમ્હ દેવાણુપ્રિયા ! દુવાલસમપિ લવણસમુદ્ર પોતવહ્નેણ ઓગાહિત્તણ)

એટલા માટે હે દેવાણુપ્રિય ! ૧૨મી વખત પણ આપણે વહાણુમાં બેઠીને
લવણ સમુદ્રમાં થઈને વેપાર કરવા દેશાવર માટે નીકળી પડીએ તો સાફ થાય.

ત્તિ કદ્દુ અણમણસ્સ એયમદ્વ પડિસુણેતિ)

આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેઓએ એક મત થઈને આ વાત સ્વીકારી લીધી

(પડિસુણિત્તા જેણેવ અમ્માપિયરો તેણેવ ઉવાગચ્છइ उवागच्छित्ता एव वयासी

આસ્તામ્, 'ત જહા' તથા=તથાહિ-જિનપાલિતશ્ચ જિનરક્ષિતશ્ચ । તતઃ સ્થ
તપોર્માન્દિકદારકયોરન્યદા યદાચિત્ એકત સદિતાનામયમેતદ્વા મિથઃ કથા
સમુલ્લાપઃ સમુદપથત-એવ સ્વલુ આગા લ્પણસમુદ પોતવદનેન એકાદશચારાન્

પરિવસદ્ અદ્દે જાવ અપરિભૂણ, તસ્સ મદ્દા નામ મારિયા) હસ પ્રકાર
જવ્વુ સ્વામી કા પ્રદને સુન કર શ્રી સુધર્મા સ્વામી ઉન્હે સમજાતે હૈંકિ
જવ્વુ ! સુનો-તુમ્હારે પ્રદન કા ઉત્તર હસ તરહ સે હૈં, ઉસ કાલ ઓર ઉસ
સમય મે ચપા નામકી નગરી થી । ઉસમેં પૂર્ણમદ્ર નામકા ઉદ્યાન યા ।
ઉસ ચપા નગરી મેં માકદી નામકા સાર્થવાહ રહતા થા । યહ ધનધાન્ય
સે સ્વૈર્લભ્ય પૂર્ણ થા । અતઃ અપરિ ભવનીય થા । કોઈં બી મનુષ્ય હસકા તિરસ્કાર
નહીં કર સુકતા થા-સર્વજન માન્ય થા । હનકી માર્યાકા નામ મદ્દા થા ।
(તીસેણ મદ્દાણ અત્તયા દુવે સત્થવાહ દારયા હોત્યા ત જહા જિણપાલિણ્ય
જિણ રક્ષિણ્ય વ) ઉસ મદ્દા કે દો પુત્ર થે, (૧) જિન પાલિત (૨) જિનરક્ષિત
(તત્તેણ તેસિં માગદિય દારગાણ અન્નયા કયાઈં એગયઓ સહિયાણં હમે
યાસ્વે મિહો કહાસમુલ્લાવે સમુપ્પજિત્યા) એક દિન કી વાત હૈંકિ
જવ્વુ યે દોનો માકદી સાર્થવાહ કે પુત્ર એક જગહ મિલકર બેઠે હુએ થે-
તવ હનમેં પરસ્પર મેં હસ પ્રકાર કી વાતચીત ચલી-(એવ સ્વલુ અમ્હે

માકદીનામ સત્થવાહે પરિવસદ્ અદ્દે જાવ અપરિભૂણ, તસ્સ મદ્દા નામ મારિયા)
આ રીતે જ જુ સ્વામીના પ્રશ્નને સાંભળીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને
સમજાવતા કહે છે કે હે જ જુ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ
પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે ચપા નામે નગરી હતી તેમા પૂર્ણભદ્ર
નામે ઉદ્યાન હતું માકદી નામે એક સાર્થવાહ તે ચપા નગરીમા રહેતો હતો
તે ધનધાન્યથી પૂર્ણરૂપે સમૃદ્ધ હતો, એટલા માટે તે અપરિભવનીય હતો
કોઈં પણ માણસની શક્તિ નહોતી કે તેનો તિરસ્કાર કરી શકે તે સર્વજન
માન્ય હતો તેમના પત્નીનું નામ ભદ્રા હતું

(તીસેણ મદ્દાણ અત્તયા દુવે સત્થવાહ દારયા હોત્યા ત જહા જિણપાલિ
ણ્ય જિણરક્ષિણ્ય વ)

તે ભદ્રાને બે પુત્રો હતા-જિનપાલિત અને જિન રક્ષિત

(તત્તેણ તેસિં માગદિયદારગાણ અન્નયા કયાઈં એગયઓ સહિયાણ હમેયા
સ્વે મિહો કહાસમુલ્લાવે સમુપ્પજિત્યા)

એક દિવસે માકદી સાર્થવાહના બે પુત્રો એક જગ્યાએ બેઠા હતા
ત્યારે તેઓ પરસ્પર વાત ચીત કરવા લાગ્યા કે

સદ્ગ્રહઃ, અસ્ય છાયા—‘આર્યકપ્રાર્યકપિતૃપ્રાર્યકાગત ચ વહુ હિરણ્ય ચ સુવર્ણ ચ કાસ્ય ચ દૂષ્ય’ ચ વિપુલધનકનકરત્નમણિમૌક્તિકશ્લિષિલાપ્રવાલરક્તરત્નાદિકં સત્સારસ્વાપતેયમ્, અલ યાવત્ આસપ્તમાત્ કુલવશ્યાત્ પ્રકામદાતુ, પ્રકામ ભોક્તુ, પ્રકામ ” ઇતિ । ‘અજ્જયપજ્જયપિપ્પજ્જયાગણ’ આર્યકપ્રાર્યકપિતૃપ્રાર્યકાગતમ્, આર્યક-પિતામહ, પ્રાર્યક-પિતુઃ પિતામહઃ, પિતૃપ્રાર્યક = પિતુઃ પ્રપિતામહઃ, તેભ્યઃ સકાશાદ્ આગત-પરમ્પરાયા પ્રાપ્ત, ‘વહુ’ પ્રમાણતો વહુલ ‘હિરણ્ય’ હિરણ્ય=રજત, ‘સુવર્ણ’ સુવર્ણ=પ્રતીત, ‘કસ’ કાસ્ય=ધાતુવિશેષઃ, ઉપલક્ષણ તામ્રાદીનામ્, ‘દૂસ’ દૂષ્ય=વસ્ત્ર ચીનાશુકાદિક ‘વિહલ’ વિપુલ=પ્રચુર ધનક-ગણ ‘ધન’=ગણાદિ, કણક=ધન્ય, ‘રયણ’ રત્નાનિ = વર્કેતનાદીનિ, ‘મણિ’ મણયઃ=ચન્દ્રકાન્તાદ્યાઃ, ‘મૌક્તિય’ મૌક્તિકાનિ પ્રતીતાનિ, ‘સસ્તા’ શસ્ત્રા=દક્ષિ-ણાવર્ત્તઃ, પ્રસિદ્ધાઃ, યત્પ્રભાગાદ વિપ્ન નિવૃત્તિઃ કુશલપ્રવૃત્તિશ્ચ ભવતિ ‘સિલ્પ-વાલ’ શિલાપ્રવાલાનિ=વિદુમાણિ, ‘રક્તરયણ’ રક્તરત્નાનિ=પદ્મરાગાઃ, તાન્યાદૌ-યસ્ય તત્તાદૃશ ‘સત્સારસ્વાપતેય’ સત્સારસ્વાપતેય, સત્=વિદ્યમાન સ્વાધીન-મિત્યર્થઃ, ‘સાર’=પ્રધાન સ્વાપતેય=દ્રવ્ય, ‘અલાહિ’ અલ=પરિપૂર્ણમ્ અસ્તિ નિયત્પરિમિતમ્ ? ઇત્યાહ-‘જાવ’ ઇત્યાદિના, ‘જાવ’ યાવત્=યાવત્પરિમિતમ્ ‘આસપ્તમાઓ કુલવસાઓ’ આસપ્તમાત્ કુલવશ્યાત્=અદ્યતનાદારભ્ય ભવિષ્યત્સ-

નિરાલવણેણ લવણસમુદોત્તારેણ) इस प्रकार अपने दोनों पुत्रों के वचन सुनकर उनसे मोता पिता ने इस प्रकार कहा—हे पुत्रों अपने यह आर्यक प्रार्यक एव पितृप्रार्यकों से चला आया बहुत सा हिरण्य सुवर्ण, कासा तांजा आदि तथा चीन आदि के वस्त्र, गाय भैस आदि घन, गेहूँ आदि धान्य, कर्केतनादि रत्न, चन्द्रकान्त आदि मणिगण, मौक्तिक, दक्षिणावर्त शस्त्र, सूगा, पद्मराग आदि उत्तम से उत्तम द्रव्य खूब भरा पड़ा है—इस पर अपने मित्राय किसी और दूसरे का अधिकार नहीं हैं । वह प्रमाण में इतना अधिक है कि आजकी पीढ़ीसे लेकर

સમુદાયે કિ મે સપચ્ચવાણેણ નિરાલવણેણ લવણસમુદોત્તારેણ)

આ પ્રમણે પોતાના બંને પુત્રોની વત સાલણીને માતપિતાઓએ આ રીતે કહ્યું કે હે પુત્રો ! આપણે ઘેર આર્યક, પ્રાર્યક અને પિતૃ પ્રાર્યકોથી એકઠું કરેલું ખૂબજ સોનું, ડાસું, તાણું વગેરે તેમજ ચીન વગેરે દેશોના વસ્ત્રો, ગાય, ભેસ વગેરે ધન, ઘઉં વગેરે ધાન્ય, કર્કેતન વગેરે રત્નો, ચન્દ્રકાન્ત વગેરે મણિઓ, મોતીઓ, દક્ષિણાવર્ત શસ્ત્ર, પદ્મરાગ વગેરે ઉત્તમોત્તમ દ્રવ્ય પુષ્કળ પ્રમાણમાં ભર્યું છે આ નિયતિ ઉપરનુબીજ કોઈને અધિકાર નથી અને તે પ્રમાણમાં એટલી બધી છે કે તમારી આજની પેઢીથી

हे अम्बतातौ ! एकादशवारान् तदेव यावत् निजक गृह दृश्यमागतौ, तद् इच्छावः
खलु हे अम्बतातौ ! युष्माभिरभ्यनुज्ञातौ सन्तौ द्वादश वार समुद्र पोतवहनेन-
अवगाहितु=समुत्तर्तु समुद्रयात्रा कर्तुमभिलषाम इत्यर्थः ।

तत खलु तौ माकन्दिकदारकौ अम्बापितरौ एवमादिष्टाप्-उद च ते 'जाया'
जातौ=हे पुत्रौ । 'ते' युवयोः 'अज्जग जाव' आर्यक यावत्, अत्र यावच्छब्देन
'अज्जयपज्जय-पिउपज्जयागए य बहु हिरण्णे य सुवण्णे य कसे य दूमे य
विउलधणकणगरयणमणिमोत्तिप सखसिलप्पवान्तरत्तरयणमाइए सत्तसारसावएज्जे
अन्नाहि जाव आमत्तमाओ कुञ्जमाओ पक्काम दाउ, पक्काम मोत्तु, पक्काम " इति

नियय धर हव्व मागया-त इच्छामो ण अम्भयाओ तुम्हे हि अम्भणु
ण्णाया समाणा दुवालसम लवणसमुद्ध पोषवहणेण ओगाहित्तए)
मान कर फिर वे दोनों जहाँ माना पिता थे वहा गये वहा जाकर उनसे
इस प्रकार कहा-हे मात तात । हम लोग ११ वार पोतवहन द्वारा ल
वण समुद्र से होकर बाहर परदेश में व्यापार करने के लिये जा चुके हैं
वहा हमने अच्छी तरह से प्रचुर धन कमाया है और विनो किमी विघ्न
बाधा के वहा से वापिस घर सकुशल लौट आये हैं अर हमारा विचा
र १२^{वी} वार भी पोतवहन द्वारा लवण समुद्र को पार कर बाहर पर-
देश मे व्यापार करने के लिये जानेका हो रहा है सो हम आपकी इस
विषय में आज्ञा चाहते हैं-(तएण ते मागदियदारए अम्बापियरो एव
वयासी-इमेय ते जाया । अज्जग जाव परिभाएत्तए त अणुहोह ताव
जाया । विउले माणुस्सएइड्ढीसक्कारसनुदए, किं भे सपच्चवाएण

एव खलु अम्भयाओ एकवारमवारा त चेव जाव नियय धर हव्वमागया त
इच्छामोण अम्भयाओ तुम्हेहि अम्भगुग्गाया समाणा दुवालसम लवणसमुद्ध पोष
वहणेण ओगाहित्तए)

એક મત થઇને તેઓ જને ત્યાથી માતા પિતાની પાસે ગયા અને
તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે માતા પિતા ! અમે અચાર સુધીમા
અગિયાર વખત વડાણ વડે લવણ સમુદ્રમા થઇને બહાર પરદેશમા વેપાર
કરવા ગયા છીએ ત્યા જઈને અમેાએ પુષ્કળ પ્રમાણમા ધન મેળવ્યું છે અને
ત્યાથી પાછા હોમ કુશળ નિર્વિઘ્ન રૂપે ઘેર આવી છીએ હમણા અમારો
વિચાર વડાણ વડે જ ૧૨ મી વખત લવણ સમુદ્રને પાર કરીને પરદેશમા
વેપાર કરવા માટે જનાનો થઈ રહ્યો છે તો એ માટે અમે તમારો આજ્ઞા
માંગીએ છીએ

(તણ તે માગદિયદારણ અન્નાપિયરો ણ વયાસી-ઇમેય તે જાયા ।
અજ્જગ જાવ પરિભાણ્તણ ત અણુહોહ તાવ જાયા । વિઉલે માણુસ્સણ સક્કાર

वस्तुवर्जितेन वा 'लवणसमुद्रोत्तारेण' लवणसमुद्रोत्तारेण = लवणसमुद्रोत्तरणेन 'किं' किं प्रयोजनम् ? न किमपीत्यर्थः, युवाभ्यामनैवस्थातव्यं न कुत्रापि गन्तव्यमिति भा० । पुनश्च-एव खलु 'पुत्ता' हे पुत्रौ । द्वादशी यात्रा 'सोवसग्गा' सोपसर्गा=सोपद्रवा विन्धवहुला चापि भवति 'त' तत्=तस्मात् मा खलु हे पुत्रौ युवा द्वावपि द्वादश 'लवण० जाव' लवण यावत्-लवणसमुद्र पोतवहनेन अवगाहेथाम्, युवाभ्या द्वादशवार समुद्रावगाहनं न कर्त्तव्यमित्यर्थः, माहु 'न खलु युवयोः शरीरस्य 'वायत्ती' व्यापत्तिः=विनाशः 'भविस्सइ' भविष्यति, 'युवयोः शरीरे काऽपि व्यापत्तिर्न भवतु' इत्यभिप्रायोऽस्माकमिति भावः । -

ततः खलु माकन्दिकदारकौ अम्बापितरौ द्वितीयमपि तृतीयमपि चारमेवमवादिष्टाम्-एव खलु आवा हे अम्बतातौ । एकादशवारान् 'लवण जाव' लवणं य है । कारण इसका यही है कि तुम दोनों यही पर रहो कहीं भी मत जाओ । (एव खलु पुत्ता ! दुवालसमी जत्ता सोवसग्गा यावि भवइ त माण तुब्भे दुवे पुत्ता दुवालसमपि लवण० जाव ओगाहेह माहु तुब्भे सरीरस्स वायत्ती भविस्सइ) दूसरी बात एक यह भी है कि हे पुत्रों ! बारहवी यात्रा सोपसर्ग-विन्धवहुल-भी होती है । इसलिये हे पुत्रों ! तुम अब १२ वी बार लवणसमुद्र की पोत चहन से यात्रा मत करो । मत तुम्हारे शरीर पर किसी भी प्रकार की व्यापत्ति आओ । यही हमारी भावना है । (तएण मागदियदारगा अम्मापियरो दोच्चपि एव वयासी) ऐसा सुनकर उन माकदि दारकों ने अपने उन माता पिता से दुवारा तिबारा भी ऐसा ही कहा-(एव खलु अम्हे अम्मयाओ

त्यारे तेमाथी रक्षा भेजवी शक्य तेवा आधारेनो पणु न्या सह तर अलाव छे येना लवणु ममुद्रने येजगीने वेपार करवाथी शे लाख छे ? मतलब ये छे के तमे जने पुत्रो अर्द्धी न रहे, क्याये लगे नहि

(एव खलु पुत्ता ! दुवालसमीजत्ता सोवसग्गा यावि भवइ त माण तुब्भे दुवे पुत्ता ! दुवालसमपि लवण० जाव ओगाहेह माहु तुब्भे सरीरस्स वायत्ती भविस्सइ)

अने भीजु ये के छे पुत्रो ! १२ वी यात्रामा विधेनो पणु अहुं नउता रहे छे येथी छे पुत्रो ! दुवे तमे १२वी वणत पोत चहनथी लवणु समुद्रनी यात्रानो विचार भाडी वाणो तमारा शरीर उपर केछ पणु लतनी आइत आवे नहि अमारी ये न लावना छे

(तएण मागदियदारगा अम्मापियरो दोच्चपि तच्चपि एव वयासी)

आ प्रभाणे सालणीने भाइदी दारकेये भीजु अने त्रीजु बार पणु पोताना मता पिताने येम न कह्यु के

સમપુરુષપર્યન્ત 'પકામં દાઽ' પકામ દાતુમ્=દીનદુઃસ્વિમ્યોઽત્યર્થે વિતરીતુમ્,
 એવ પકામ ભોક્તુમ્=અત્યર્થે સ્વસ્યોપભોગાર્થમ્, પકામમ્=અત્યર્થે 'પરિમાણ્'
 પરિમાજયિતુ=દાયાદાદિભ્યો વિમાના વર્તુમ્, પૂર્વપરમ્પરાપ્રાપ્તમિદ દ્રવ્ય હે પુત્રો !
 યુવયોર્મયિવ્યત્સસમપુરુષપર્યન્ત પકામદાનાર્થે પરિપૂર્ણમસ્તીતિ ભાવ । 'તં'
 તત્—તસ્માદ્ યુવામ્ 'અણુહોઃ' અનુભવત 'તાવ' ઠાવત્=પ્રથમ 'જાયા'
 જાતૌ=હે પુત્રો ! ત્રિપુલ્=મત્સ્ય માનુષ્ક=મનુષ્યસમ્બન્ધીયમ્ 'હ્રીસકારસમુદય'
 ઋદ્ધિસત્કારસમુદયમ્, ઋદ્ધિયા-ચક્ષુઃ સુવર્ણાદિના, સત્કારઃ=જનકૃતબહુમાનસ્તસ્ય
 સમુદયઃ-ઘાહુલ્ય તમ્, મનુષ્યસમ્બન્ધિન ઋદ્ધિસત્કારસમુદાયસ્યાનુભવ કુરુત
 યુવામિતિ ભાવઃ, અતઃ 'મે' યુવયોઃ 'સપચ્ચવાણ' સપત્યપાત્રેન=વિધનબહુલેન
 'નિરાલયણે' નિરાલમ્બનેન=નિષ્કારણેન, વિધનવાધોપસ્થિતૌ ત્રાણાર્થમાલમ્બનીય

તુમ્હારી સાત પીઠી તક કે લોગ ઉસે દીન દુ સ્વિયોં કો દાન મેં દેવેં બેઠે
 ૨ ઇચ્છાનુસાર લાવેં પીવે હિસ્સેદારોં મેં ઉસકા વિભાગ મી વર દેવે
 તૌમી વશ પરમ્પરા સે ચલા આયા હુઆ યહ દ્રવ્ય કમી સમાપ્ત નહીં
 હો સકતા હૈ-હે પુત્ર ! તુમ્હારી સાત પીઠી તક કે પુરુષોં કો યહ દાના
 દિક મેં વિતરણ કરને કે લિયે પર્યાપ્ત હૈં । પિતામહ-દાદા કા નામ
 આર્યક હૈ । પિતા કે પિતા કે પિતા કો નામ પ્રાર્યક હૈ । પિતા કે પ્રપિ
 તામહ કા નામ પિતૃ પ્રાર્યક હૈં યહ સબ પાઠ "પરિમાણ્" કે પહિલે
 કા યાવત્ શબ્દ સે યહ ગૃહીત હુઆ હૈ । ઇસ ઝિયે હે પુત્રોં ! તુમ
 દોનોં પહિલે મનુષ્ય ભવસમ્બન્ધી ઋદ્ધિ સત્કાર સમુદાય કા અનુભવ
 કરો । વિધન બહુલ તથા વિધનવાધા કે ઉપસ્થિત હોને પર ત્રાણ કે લિયે
 આલમ્બનીયવસ્તુ સે વર્જિત એસે લવણ સમુદ્ર કે ઉત્તરણ સે કયા તાત્પ

માડીને સાત પેઠી સુધીના લોકો ગરીબ તેમજ દુ ખી માણસોને દાનમા આપે,
 જેસીને ઈચ્છા મુજબ ખાય, પીવે લોગવે અને લાગ પડાવનાશઓમા પણ
 તેની વહેચણી કરે છતાંએ વશપરપરાથી સમજાવેથી સપત્તિ સમાપ્ત થઈ
 જવાની નથી હે પુત્ર ! તમારી સાત સાત પેઠી સુધીના પુત્રોને માટે આ
 સપત્તિ દાન વગેરેના રૂપમા વિતરણ કરવા માટે પણ પર્યાપ્ત છે પિતામહ
 એટલે કે દાદાને આર્યક કહે છે, પિતાના પિતા અને તેના પણ પિતાનું નામ
 પ્રાર્યક છે પિતાના પ્રપિતામહનું નામ પિતૃ પ્રાર્યક છે આ પાઠ અહીં
 "પરિમાણ્" ના પહેલાના 'યાવત્' શબ્દ વડે ગ્રહણ કરવામા આવ્યો છે
 એટલા માટે હે પુત્રો ! તમે બંને પહેલા મનુષ્ય લવના ઋદ્ધિ સત્કાર સમુ
 દાયનો અનુભવ કરો બહુ વિધો યુક્ત તેમજ વિધો બાધાઓ આવી પડે

વસ્તુવર્જિતેન વા 'લવણસમુદ્રોત્તારેણ' લવણસમુદ્રોત્તારેણ = લવણસમુદ્રોત્તરણેન 'કિં' કિં પ્રયોજનમ્ ? ન કિમપીત્યર્થઃ, યુવાભ્યામગ્રૈવસ્થાતવ્ય ન કુત્રાપિ ગન્તવ્યમિતિ ભા : । પુનશ્ચ-એવ સ્વલુ 'પુત્તા' હે પુત્રો ! દ્વાદશી યાત્રા 'સોવસગ્ગા' સોપસર્ગા=સોપદ્રવા વિન્ધવહુલા ચાપિ ભવતિ 'ત' તત્=તસ્માત્ મા સ્વલુ હે પુત્રો યુવા દ્વાવપિ દ્વાદશ 'લવણં જાવ' લવણ યાવત્-લવણસમુદ્ર પોતવહનેન અવ ગાહેથામ્, યુવાભ્યા દ્વાદશવાર સમુદ્રાવગાહન ન કર્તવ્યમિત્યર્થઃ, માહુ 'ન સ્વલુ યુવયોઃ શરીરસ્ય 'વાવત્તી' વ્યાપત્તિઃ=વિનાશઃ 'ભવિસ્સઙ્' ભવિષ્યતિ, 'યુવયોઃ શરીરે કાઽપિ વ્યાપત્તિર્ન ભવતુ' इत्यभिप्रायोऽस्માકમિતિ ભાવઃ ।

તતઃ સ્વલુ માકન્દિકદારકૌ અમ્વાપિત્તરૌ દ્વિતીયમપિ તૃતીયમપિ વારમેવમવાદિષ્ટામ્-એવ સ્વલુ આવા હે અમ્વતાતૌ ! એકાદશવારાન્ 'લવણ જાવ' લવણ ર્ય હૈ । કારણ ડસકા યહી હૈ કિ તુમ દોનોં યહી પર રહો કહી બી મત જાઓં । (એવ સ્વલુ પુત્તા ! દુવાલસમી જત્તા સોવસગ્ગા યાવિ ભવહ ત માણ તુબ્હે દુવે પુત્તા દુવાલસમપિ લવણં જાવ ઓગાહેહ માહુ તુબ્મ સરીરસ્સ વાવત્તી ભવિસ્સઙ્) દૂસરી યાત્રા એક યહ બી હૈ કિ હે પુત્રો ! વારહવી યાત્રા સોપમર્ગ-વિન્ધવહુલ-બી હોતી હૈ । ફસલિયે હે પુત્રો ! તુમ અવ ૧૨ વી વાર લવણસમુદ્ર કી પોત વહન સે યાત્રા મત કરો । મત તુમ્હારે શરીર પર કિસી બી પ્રકાર કી વ્યાપત્તિ આઓ । યહી હમારી ભાવના હૈ । (તણ માગદિયદારગા અમ્માપિયરો દોચ્ચપિ એવ વયાસી) એસા સુનકર ડન માકદિ દોરકોં ને અપને ડન માતા પિતા સે દુવારા તિવારા બી એસા હી કહા-(એવ સ્વલુ અમ્હે અમ્મયાઓ

ત્યારે તેમાથી રક્ષા મેળવી શકાય તેવા આધારોનો પણ જ્યા સદતર અભાવ છે એના લવણ સમુદ્રને એળગીને વેપાર કરવાથી શો લાભ છે ? મતલબ એ છે કે તમે બંને પુત્રો અહીં જ રહો, ક્યાએ જાઓ નહિ

(એવ સ્વલુ પુત્તા ! દુવાલસમીજત્તા સોવસગ્ગા યાવિ ભવહ ત માણ તુબ્હે દુવે પુત્તા ! દુવાલસમપિ લવણં જાવ ઓગાહેહ માહુ તુબ્મ સરીરસ્સ વાવત્તી ભવિસ્સઙ્)

અને બીજુ એ કે હે પુત્રો ! ૧૨ મી યાત્રામા વિધેનો પણ બહુજ નડતા રહે છે એથી હે પુત્રો ! હવે તમે ૧૨મી વખત પોત વહનથી લવણ સમુદ્રની યાત્રાનો વિચાર માડી વાળો તમારા શરીર ઉપર કોઈ પણ જાતની આફત આવે નહિ અમારી એજ ભાવના છે

(તણ માગદિયદારગા અમ્માપિયરો દોચ્ચપિ તચ્ચપિ એવ વયાસી)

આ પ્રમાણે સાભળીને માકદી દારકોએ બીજુ અને ત્રીજુ વાગ પણ પોતાના મતા પિતાને એમ જ કહ્યું કે

સમપુરુષપર્યન્ત 'પકામં દાઽ' મકામ દાતુમ્=દીનદુઃસ્થિભ્યોઽત્યર્થે વિતરીતુમ્,
 એવ મકામ ભોક્તુમ્=અત્યર્થે સ્વસ્યોપભોગાર્થમ્, મકામમ્=અત્યર્થે 'પરિભાષત્'
 પરિભાજયિતુ=દાયાદાદિભ્યો વિભાજં કર્તુમ્, પૂર્વપરમ્પરાપ્રાપ્તમિદ દ્રવ્ય હે પુત્રી!
 યુવયોર્મૈત્રિવ્યત્સસમપુરુષપર્યન્ત મકામદાનાદર્થે પરિપૂર્ણમસ્તીતિ ભાવ । 'તં'
 તત્—તસ્માદ્ યુવામ્ 'અણુહોઠ' અનુભવત 'તાવ' ટાવત્=પ્રથમં 'જાયા'
 જાતૌ=હે પુત્રી ! વિપુલ=મધુર માનુષ્ક=મનુષ્યસમ્બન્ધીયમ્ 'હ્રીસકારસમુદય'
 ઋદ્ધિસત્કારસમુદયમ્, ઋદ્ધિયા-વસ્ત્ર સુવર્ણાદિના, સત્કારઃ=જનકૃતશ્રદ્ધામાનસસ્ય
 સમુદયઃ-બાહુલ્ય તમ્, મનુષ્યસમ્બન્ધિન ઋદ્ધિસત્કારસમુદાયસ્યાનુભવ કુલ્લ
 યુવામિતિ ભાવઃ, અતઃ 'મે' યુવયોઃ 'સપચ્ચવાણ' સમત્યપાયેન=વિઘ્નબહુલેન
 'નિરાલમ્બણે' નિરાલમ્બનેન=નિષ્કારણેન, વિઘ્નવાધોપસ્થિતૌ ત્રાણાર્થમાલમ્બનીય-

તુમ્હારી સાત પીઠી તક કે લોગ ઉસે દીન દુ સ્થિયોં કો દાન મેં દેવેં બેઠે
 ૨ હચ્છાનુસાર સ્વાવેં પીવે હિસ્સેદારો મેં ઉસકા વિભાગ મી વર દેવે
 તૌમી વશ પરમ્પરા સે ચલા આયા હુઆ યહ દ્રવ્ય કમી સમાસ નહીં
 હો સકતા હૈ-હે પુત્ર ! તુમ્હારી સાત પીઠી તક કે પુરુષોં કો યહ દાના
 દિક મે વિતરણ કરને કે લિયે પર્યાપ્ત હૈં । પિતામહ-દાદા કા નામ
 આર્યક હૈ । પિતા કે પિતા કે પિતા કો નામ પ્રાર્યક હૈ । પિતા કે પ્રપિ
 તામહ કા નામ પિતૃ પ્રાર્યક હૈં યહ સય પાઠ "પરિભાષત્" કે પહિલે
 કા યાવત્ શબ્દ સે યહા ગૃહીત હુઆ હૈ । હિસ મિયે હે પુત્રોં ! તુમ
 દોનોં પહિલે મનુષ્ય ભવસમ્બન્ધી ઋદ્ધિ સત્કાર સમુદાય કા અનુભવ
 કરો । વિઘ્ન બહુલ તથા વિઘ્નવાવા કે ઉપસ્થિત હોને પર ત્રાણ કે લિયે
 આલમ્બનીયવસ્તુ સે વર્જિત એસે લવણ સમુદ્ર કે ઉત્તરણ સે કયા તાત્પ

માડીને સાત પેઠી સુધીના લોકો ગરીબ તેમજ હુ ખી માણસોને દાનમા આપે,
 બેસીને ઈચ્છા મુજબ ખાય, પીવે લોગવે અને લાગ પડાવનાશઓમા પણ
 તેની વહેચણી કરે છતાં વશપરપરાથી સમજાવેલી સપત્તિ સમાપ્ત થઈ
 જવાની નથી હે પુત્ર ! તમારી સાત સાત પેઠી સુધીના પુત્રોને માટે આ
 સપત્તિ દાન વગેરેના રૂપમા વિતરણ કરવા માટે પણ પર્યાપ્ત છે પિતામહ
 એટલે કે દાદાને આર્યક કહે છે. પિતાના પિતા અને તેના પણ પિતાનું નામ
 આર્યક છે પિતાના પ્રપિતામહનું નામ પિતૃ આર્યક છે આ પાઠ અહીં
 "પરિભાષત્" ના પહેલાના 'યાવત્' શબ્દ વડે અંતરૂ કરવામા આવ્યો છે
 એટલા માટે હે પુત્રો ! તમે અને પહેલા મનુષ્ય ભવના ઋદ્ધિ સત્કાર સમુ
 દાયને અનુભવ કરો બહુ વિઘ્નો યુક્ત તેમજ વિઘ્નો બાધાઓ આવી પડે

વસ્તુવર્જિતેન વા 'લવણસમુદોત્તારેણ' લવણસમુદોત્તારેણ = લવણસમુદોત્તરણેન 'કિં' કિં પ્રયોજનમ્ ? ન ક્ષિમપીત્યર્થઃ, યુવાભ્યામન્નૈવસ્થાતવ્ય ન કુત્રાપિ ગન્તવ્યમિતિ ભા : । પુનશ્ચ-એવ સ્વલુ 'પુત્તા' હે પુત્રો ! દ્વાદશી યાત્રા 'સોવસગ્ગા' સોપસર્ગા=સોપદ્રવા વિન્નગહુલા ચાપિ ભવતિ 'ત' તત્=તસ્માત્ મા સ્વલુ હે પુત્રો યુવા દ્વાવપિ દ્વાદશ 'લવણં જાવ' લવણ યાવત્-લવણસમુદ્ર પોતવહનેન અવગાહેથામ્, યુવાભ્યા દ્વાદશવાર સમુદ્રાવગાહન ન કર્તવ્યમિત્યર્થઃ, માહુ 'ન સ્વલુ યુવયોઃ શરીરસ્ય 'વાયત્તી' વ્યાપત્તિઃ=વિનાશઃ 'ભવિસ્સહ' ભવિષ્યતિ, 'યુવયોઃ શરીરે કાઽપિ વ્યાપત્તિર્ન ભવતુ' इत्यभिप्रायोऽस्माकमिति ભાવઃ ।

તતઃ સ્વલુ માકન્દિકદારકૌ અમ્વાપિતરૌ દ્વિતીયમપિ તૃતીયમપિ ચારમેવમવાદિષ્ટામ્-એવ સ્વલુ આવા હે અમ્વતાતૌ ! એકાદશવારાન્ 'લવણ જાવ' લવણર્થ હૈ । કારણ ડસકા યહી હૈ કિ તુમ દોનોં યહી પર રહો કહી ભી મત જાઓં । (એવ સ્વલુ પુત્તા ! દુવાલસમી જત્તા સોવસગ્ગા યાવિ ભવહ ત માણ તુભે દુવે પુત્તા દુવાલસમપિ લવણં જાવ ઓગાહેહ માહુ તુભ સરીરસ્સ વાયત્તી ભવિસ્સહ) દૂસરી વાત એક યહ ભી હૈ કિ હે પુત્રો ! ચારહવી યાત્રા સોપમર્ગ-વિન્ધવહુલ-ભી હોતી હૈ । ઇસલિયે હે પુત્રો ! તુમ અવ ૧૨ વી વાર લવણસમુદ્ર કી પોત વહન સે યાત્રા મત કરો । મત તુમ્હારે શરીર પર કિસી ભી પ્રકાર કી વ્યાપત્તિ આઓ । યહી હમારી ભાવના હૈ । (તણ માગદિયદારગા અમ્માપિયરો દોચ્ચપિ એવ વયાસી) એમા સુનકર ઉન માકદિ દોરકોં ને અપને ઉન માતા પિતા સે દુવારા તિચારા ભી એસા હી કહા-(એવ સ્વલુ અમ્હે અમ્મયાઓ

ત્યારે તેમાથી રક્ષા મેળવી શકાય તેવા આધારોનો પણ જ્યા સદતર અભાવ છે એના લવણ સમુદ્રને એળગીને વેપાર કરવાથી શો લાભ છે ? મતલબ એ છે કે તમે બંને પુત્રો અહીં જ રહો, ક્યાએ જાઓ નહિ

(એવ સ્વલુ પુત્તા ! દુવાલસમીજત્તા સોવસગ્ગા યાવિ ભવહ ત માણ તુભે દુવે પુત્તા ! દુવાલસમપિ લવણં જાવ ઓગાહેહ માહુ તુભ સરીરસ્સ વાયત્તી ભવિસ્સહ)

અને બીજુ એ કે હે પુત્રો ! ૧૨ મી યાત્રામા વિધેનો પણ બહુજ નડતા રહે છે એવી હે પુત્રો ! હવે તમે ૧૨મી વખત પોત વહનથી લવણ સમુદ્રની યાત્રાનો વિચાર માડી વાળો તમારા શરીર ઉપર કોઈ પણ જાતની આફત આવે નહિ અમારી એજ ભાવના છે

(તણ માગદિયદારગા અમ્માપિયરો દોચ્ચપિ તચ્ચપિ એવ વયાસી)

આ પ્રમાણે સાલગીને માકદી દારકોએ બીજુ અને ત્રીજી વાર પણ પોતાના મતા પિતાને એમ જ કહ્યું કે

यावत्-लवणसमुद्रमग्राहितवन्तो यावत् तच्छ्रेयः खलु आधयोद्दीदशं वार पोत वहनेन लवणसमुद्रमग्राहितुमिति ॥

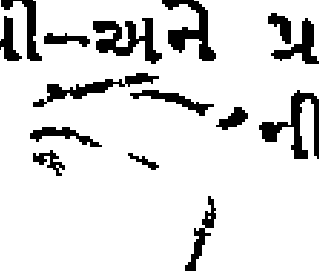
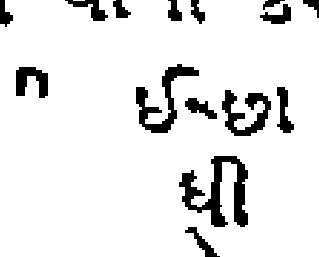
ततः खलु तौ मायन्दिपदारकौ अम्मापितरौ यदा नो शक्नुतः बहोभिः 'आधवणाहि' आख्यापनाभिः=सामान्योक्तिभिः, 'पणवणाहि य' प्रज्ञापनाभिः=विशेषोक्तिभिश्च 'आधवित्तए वा' आख्यापयितु सामान्यत प्रतिबोधयितु वा 'पणवित्तए वा' प्रज्ञापयितु=विशेषतः प्रतिबोधयितुं वा लवणसमुद्रोत्तरणतो निवर्त्तयितुं न शक्नुत इत्यर्थः, तदा 'अकामाचेव' अकामैव=इच्छारहितैव सती एतम्=उत्तमर्थम् 'अणुजाणिस्था' अनुजानीत=स्वीकृतवन्तौ । ततः खलु

एककारसवारा लवण जाव ओगाहत्तए) कि हे मात तात । जब हम लोगों ने लवण समुद्र की ११ बार पोत वहन द्वारा यात्रा करली है-तो अब १२ वीं बार उसकी यात्रा करने में क्या भय है । इसलिये १२ वीं बार उसकी पोत वहन द्वारा यात्रा करना भी हम लोगों के लिये श्रेय स्कर ही है । आप हमारी कोई चिन्ता न करे । (तएण ते मागदीदारए अम्मापियरो जाहे नो सचाए ति बहूहि आधवणाहि पणवणाहि य आधवित्तए वा पन्नवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमद्व अणुजाणिस्था) इस तरह जब अपने दोनों पुत्रों को वे माता पिता अनेक विध आख्यापनाओं से, सामान्य कथन से, प्रज्ञापनाओं से-विशेष कथन से समझाने बुझाने में समर्थ नहीं हो सके लवण समुद्र की यात्राके उनके विचार को नहीं बदल सकें तब उन्होंने ने उन्हें इच्छा नहीं होने पर भी इस अर्थ की-लवण समुद्र की पोत वहन द्वारा यात्रा करने की स्वीकृती

(एव खलु अम्हे अम्मयाओ ! एककारसवारालवण जाव ओगाहत्तए)

हे माता पिता ! अमे ११ वખत लवण समुद्रनी यात्रा करी आव्या छीअे तो १२ भी वખत यात्रा करवाभा लय शानो डोय ? १२ भी वખतनी वडाणु वडे यात्रा अभास माटे तो मगणजारी न थरे अभासी तमे डोई पणु नतनी थिता करता नडि

(तएण ते मगदीदारए अम्मापियरो जाहे नो सचाएति बहूहि आध वणाहि पणवणाहि य आधवित्तए वा पन्नवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमद्व अणुजाणिस्था)

आ प्रमाणे पोताना अने पुत्रोने तेओ अनेकविध आख्यापनोथी सामान्य कथनथी-अने प्रज्ञापनाओथी-विशेष कथनथी समजववाभा असमर्थ थई गया, लव  नी यात्रा करवाना तेभना निश्चयने तेओ देरवी शय्या नडि थारे रे,  छिछा न डोवा छता वडाणु वडे लवणसमुद्रनी यात्रा करवा

તૌ માકન્દિકદારકૌ અમ્માપિતમ્યામભ્યનુતાતૌ મન્તૌ એકદ્વિત્રિચતુરાદિસસ્યાક
મેણ ગણપિત્વા દીયમાન ત્રયાણક=નારિકેર પૂગીફલાદિકમ્, 'મેઝ્જ ચ'
મેય ચ=યત્ પલ-સેટિકા-હસ્તાદિના માન કૃત્વા દીયમાન વસ્તુજાત-દુગ્ધઘૃત-
તૈલવસ્ત્રાદિકમ્, 'પારિચ્છેઝ્જ' પરિચ્છેય ચ=પ્રત્યક્ષતો નિરૂપાદિ પરીક્ષયા યદ્દી-
યમાન તત્-સુવર્ણમણિમુક્તાદિચ્, એતત્સર્વં ધરિમધરિમાદિક વસ્તુજાત ગૃહીત્વા
'જહા અરહણ્ણગમ્સ' યથા અરહન્નકમ્ય યથા=યેન પ્રકારેણ અરહન્નકમ્ય=અસ્યૈ
વાપ્તમા યયને વર્ણિતસ્ય શ્રાવકસ્ય વર્ણન તૈવાત્ર પિત્તેય, 'જાવ' યાવત્ લવણસ

દેદી । (તણ તે માગદિય દારગા અમ્મા પિઝ્ઠિ અમ્મણુણાયા સમાણા
ગણિમ ચ ધરિમ ચ મેઝ્જ ચ પારિચ્છેઝ્જ ચ જહા અરહણ્ણગમ્સ જાવ
લવણસમુદ્ધ વહ્ઠ્ઠ જોયણસયાઠ ઓગાઢા) ઇસ તરહ માના પિતા સે
આજ્ઞાપિત હુણ વે દોનોં માકદી સાર્યવાહ કે પુત્ર, ગણિમ, ધરિમ, મેય
ઔર પરિચ્છેય રૂપ ત્રયાણક વસ્તુનોં કો પોતમેં ભરકર અરહન્નક
સાર્યવાહ કી તરહ અનેક યોજનોં તક લવણ સમુદ્રમે નિકલ ગયે । એક
દો તોન ચાર ઇસ રૂપ સે ગિનકર જો વસ્તુ લી જાતી હૈ વહ ગણિમ હૈ
જૈસે નારિકેલ, સુપારી આદિ । જો તૈલ કર દી જાવ વહ ધરિમ હૈ
ઔર નાપકર દી જાતી હૈ વહ મેય-જૈસે દુગ્ધ, ઘૃત, તૈલ, વસ્ત્ર,
આદિ । જો પ્રત્યક્ષસે પરીક્ષિત કર યા કસૌટી આદિ પર કસ કર
દી જાતી હૈ વહ પરિચ્છેય હૈ-જૈસે સુવર્ણ મણિ મુક્તા આદિ । અરહન્નક
શ્રાવકકા વર્ણન હસી જાના યવનકે અષ્ટમ અધ્યયનમેં કિયા હૈ ॥ સૂ ૧ ॥

(તણ તે માગદિયદારગા અમ્માપિઝ્ઠિ અમ્મણુણાયા સમાણા ગણિમ
ચ ધરિમ ચ મેઝ્જ ચ પારિચ્છેઝ્જ ચ જહા અરહણ્ણગમ્સ જાવ લવણસમુદ્ધ વહુદ્ધ
જોયણમયાઠ ઓગાઢા)

આ ગીતે બને માકદી સાર્યવાહના પુત્રો માતાપિતાની આજ્ઞા મેળવીને
ગણિમ, ધરિમ, મેય અને પરિચ્છેય ઉપ વેચાણુ માટેની વસ્તુઓને વહાણુમા
લગીને અરહન્નક સાર્યવાહની જેમ ઘણા યોજનોં સુધી લવણ સમુદ્રમા પહોંચી
ગયા ગણુત્રી કરીને જે વસ્તુઓ આપવામા આવે છે તે 'ગણિમ' છે જેમ
કે નારિયેર, સોપારી વગેરે જે તોલ ઢગીને અને માપ કરીને આપવામા
આવે છે તે 'ધરિમ' છે, માપ ઢગીને અપાય તે મેય છે-જેમ કે દૂધ, ધી,
તેલ, અને વસ્ત્ર વગેરે જે પ્રત્યક્ષ રૂપે પરીક્ષા કરીને ઢોઢી વગેરે ઉપર કસીને
અપાય છે તે પરિચ્છેય છે-જેમ કે મોતુ, મણિ, મોતી, વગેરે અરહન્નક શ્રાવકનુ
વણુન જ્ઞાતાધ્યયનનાજ આઠમા અધ્યયનમા કરવામા આવ્યું છે ॥ સૂત્ર ૧ ॥

यावत्-लवणसमुद्रमवगाहितवन्तो यावत् तन्त्रेयः खलु आवयोर्द्वादशं वारं पोत वहनेन लवणसमुद्रमवगादितुमिति ॥

ततः खलु तौ मागन्दिवदारकौ अम्मापितरौ यदा नो शक्नुतः वहीभिः 'आधवणाहिं' आख्यापनाभिः=सामान्योक्तिभिः, 'पणवणाहिं य' प्रज्ञापनाभिः=विशेषोक्तिभिश्च 'आधवित्तए वा' आख्यापयितु सामान्यतः प्रतिबोधयितु वा 'पणवित्तए वा' प्रज्ञापयितु=विशेषतः प्रतिबोधयितु वा लवणसमुद्रोत्तरणतो निवर्त्तयितु न शक्नुत इत्यर्थः, तदा 'अकामाचेव' अकामैव=इच्छारहितैव सती एतम्=उक्तमर्थम् 'अणुजाणित्था' अनुजानीत=स्वीकृतवन्तौ । ततः खलु

एककारसवारा लवण जाव ओगाहत्तए) कि हे मात तात ! जब हम लोगो ने लवण समुद्र की ११ बार पोत वहन द्वारा यात्रा करली है-तो अब १२ वीं बार उसकी यात्रा करने में क्या भय है । इसलिये १२ वीं बार उसकी पोत वहन द्वारा यात्रा करना भी हम लोगों के लिये श्रेयस्कर ही है । आप हमारी कोई चिन्ता न करें । (तएण ते मागदीदारण अम्मापियरो जाहे नो सचाए ति बहूहिं आधवणाहिं पणवणाहिं य आधवित्तए वा पणवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठ अणुजाणित्था) इस तरह जब अपने दोनों पुत्रों को वे माता पिता अनेक विध आख्यापनाओं से, सामान्य कथन से, प्रज्ञापनाओं से-विशेष कथन से समझाने बुझाने में समर्थ नहीं हो सके लवण समुद्र की यात्राके उनके विचार को नहीं बदल सकें तब उन्होंने इच्छा नहीं होने पर भी इस अर्थ की-लवण समुद्र की पोत वहन द्वारा यात्रा करने की स्वीकृती

(एव खलु अम्हे अम्मयाओ ! एककारसवारालवण जाव ओगाहत्तए)

हे माता पिता ! अमे ११ वर्षत लवण समुद्रनी यात्रा करी आव्या छीअे तो १२ भी वर्षत यात्रा करवामा लय शाने छीय ? १२ भी वर्षतनी वडाए वडे यात्रा अमारा भाटे तो भगणजारी न थसे अमारी तमे डेअ पए जतनी चिंता करवा नहि

(तएण ते मगदीदारण अम्मापियरो जाहे नो सचाएति बहूहिं आधवणाहिं पणवणाहिं य आधवित्तए वा पणवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठ अणुजाणित्था)

आ प्रमाणे पोताना जने पुत्रोने तेओ अनेकविध आख्यापनाथी सामान्य कथनथी-अने प्रज्ञापनाओथी-विशेष कथनथी समझववामा असमर्थ थई गया, लवण समुद्रनी यात्रा करवाना तेमना निश्चयने तेओ देखी शक्या नहि तारे तेओओ पोतानी छिछा न होवा छता वडाए वडे लवणसमुद्रनी यात्रा करवानी आज्ञा आपी दीधी।

તો માકન્દિકદારકો અમ્માપિતૃભ્યામભ્યનુજ્ઞાતૌ સન્તૌ એકદ્વિત્રિચતુરાદિસંખ્યાક્રમેણ ગણયિત્વા દીયમાનં ક્રયાણક=નાલિકેર પૂગીફલાદિકમ્, 'મેઝ્જ ચ' મેયં ચ=યત્ પલ-સેટિકા-હસ્તાદિના માન કૃત્વા દીયમાન વસ્તુજાત-દુગ્ધધૃત-તૈલવસ્ત્રાદિકમ્, 'પારિચ્છેજ્જ' પરિચ્છેત્ર ચ=પ્રત્યક્ષતો નિક્ષપાદિ પરીક્ષયા યદી-યમાન તત્-સુવર્ણમણિમુક્તાદિક્ ચ, એતત્સર્વં ધરિમ પરિમાદિક વસ્તુજાત ગૃહીત્વા 'જહા અરહણ્ણગસ્સ' યથા અરહન્નકમ્પ યથા=યેન પ્રકારેણ અરહન્નકમ્પ=અસ્યૈ વાપ્તમા યયને વર્ણિતસ્ય શ્રાવકસ્ય વર્ણન તથૈવાત્ર વિજ્ઞેય, 'જાવ' યાવત્ લવણસ

દેદી । (તણ તે માગદિય દારગા અમ્મા પિક્કહિં અઙ્ગણુણાયા સમાણા ગણિમ ચ ધરિમ ચ મેઝ્જ ચ પારિચ્છેજ્જ ચ જહા અરહણ્ણગસ્સ જાવ લવણસમુદ્ધ વહુઢ જોયણસયાઢ ઓગાઢા) । इस तरह माता पिता से आज्ञापित हुए वे दोनों माकदी सार्थवाह के पुत्र, गणिम, धरिम, मेय और परिच्छेद्य रूप क्रयाणक वस्तुओं को पोतमें भरकर अरहन्नक सार्थवाह की तरह अनेक योजनों तक लवण समुद्रमें निकल गये । एक दो तीन चार इस रूप से गिनकर जो वस्तु दी जाती है वह गणिम है जैसे नारिकेल, सुपारी आदि । जो तैल कर दी जाय वह धरिम है और नापकर दी जाती है वह मेय-जैसे दुग्ध, घृत, तैल, वस्त्र, आदि । जो प्रत्यक्षसे परीक्षित कर या कसौटी आदि पर कस कर दी जाती है वह परिच्छेद्य है-जैसे सुवर्ण मणि मुक्ता आदि । अरहन्नक श्रावकका वर्णन इसी ज्ञाता ययनके अष्टम अध्ययनमें किया है ॥सू. १॥

(તણ તે માગદિયદારગા અમ્માપિક્કહિં અઙ્ગણુણાયા સમાણા ગણિમ ચ ધરિમ ચ મેઝ્જ ચ પારિચ્છેજ્જ ચ જહા અરહણ્ણગસ્સ જાવ લવણસમુદ્ધ વહુઢ જોયણસયાઢ ઓગાઢા)

આ રીતે બંને માકદી સાર્થવાહના પુત્રો માતાપિતાની આજ્ઞા મેળવીને ગણિમ, ધરિમ, મેય અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ વેચાણ માટેની વસ્તુઓને વહાણમાં ભરીને અરહન્નક સાર્થવાહની જેમ ઘણા યોજનો સુધી લવણ સમુદ્રમાં પહોંચી ગયા । ગણતરી કરીને જે વસ્તુઓ આપવામાં આવે છે તે 'ગણિમ' છે જેમ કે નારિયેર, સોપારી વગેરે । જે તોલ કરીને અને માપ કરીને આપવામાં આવે છે તે 'ધરિમ' છે, માપ કરીને અપાય તે મેય છે-જેમ કે દૂધ, ધી, તૈલ, અને વસ્ત્ર વગેરે । જે પ્રત્યક્ષ રૂપે પરીક્ષા કરીને કસોટી વગેરે ઉપર કસીને અપાય છે તે પરિચ્છેદ્ય છે-જેમ કે સોનું, મણિ, મોતી, વગેરે અરહન્નક શ્રાવકનું

मुद्र वह्नि योजनशतानि 'ओगाढा' अग्राढी=अग्राहितवन्तौ नौकाया तेन
गतवन्तामित्यर्थः ॥ सू० १ ॥

मूलम्—तएण तेसि मागंदियदारगाणं अणेगाइं जोयणस
याइं ओगाढाणं समणाण अणेगाइ उप्पाइयसयाइं पाउब्भू-
याति, तं जहा—अकाले गज्जिय जाव थणियसद्दे कालियावाए
तत्थ समुट्टिए, तएणं सा णावा तेषं कालियावाएणं आहुणि-
ज्जमाणी२ सचालिज्जमाणी२ सखोभिज्जमाणी२ सलिलतिक्ख-
वेगेहि आयट्ठिज्जमाणी२ कोट्टिमसि करयलाहए विव तेदूसए,
तत्थेव२ ओवयमाणी य उप्पयमाणी य, उप्पयमाणीविव धर-
णीयलाओ सिद्धविज्जाविज्जाहरकन्नगा, ओवयमाणीविव गग-
णतलाओ भट्टविज्जाविज्जाहरकन्नगा, विपलायमाणीविव महा
गरुलवेगवित्तासिया भुयगवरकन्नगा, धावमाणीविवमहाजण-
रसियसद्दवित्तरथा ठाणभट्टा आसकिसोरी, णिगुजमाणीविव
गुरुजणदिट्ठा वराहा सुयणकुलकन्नगा, घुम्ममाणीविव वीचोपहार-
सयतालिया गलियलवणाविव गगणतलाओ रोयमाणिविव
सलिलगंदिविप्पइरमाणघोरसुवाएहि णवग्रह उवरमयभत्तुया
विलवमाणीविव परचक्करायाभिरोहिया परममहब्भयाभिद्रुया
महापुरवरी ज्ञायमाणाविव कवडच्छोभप्पओगजुत्ता जोगपरि-
व्वाइया णिसासमाणीविव महाकतारविणिग्गयपरिस्संता
परिणयवया अम्मया सोयमाणीविव तवचरणखीणपरिभोगा
च्चयणकाले देववरवहूसत्तुणिणयकट्टकूवरा भग्गमेढीमो-
डियसहस्समाला सूलाइयवकपरिमासा फलहतरतडतडेतफुट्टत-
सधिवियलतलोहकीलिया

तसवगत्ता आमगमल्लगभूया अकयपुण्णजणमणोरहोविव चित्ति-
ज्जमाणगुरुई हाहाकयकणधारणावियवाणियगजणकम्मगारवि-
लविया णाणाविहरयणपणियसंपुण्णा बहूहिं पुरिससएहिं रोय-
माणेहि कंद० सोय० तिप्प० विलवमाणेहि एगं मह अतो
जलगय गिरिसिहरमासायइत्ता सभग्गकूवतोरणा मोडियझय
दंडा वलयसयखंडिया करकरकरस्स तत्थेव विद्व उवगया,
तएणं तीए णावाए भिज्जमाणीए वहवे पुरिसा विपुलपणियं
भडमायाए अंतोजलंमि णिमज्जावि य होत्था ॥ सू० २ ॥

टीका—ततः खलु तयोर्माकन्दिदारकयोरनेकानि योजशतानि यावल्लवण
समुद्रमवगाहितयोः सतो 'अणेगाइ' अनेकानि=नानाविधानि 'उप्पाइयसयाइ'
उत्पातशतानि=उपद्रशतानि प्रादुर्भूतानि, 'तजहा' तद्यथा—'अकालेगज्जिए'
अकाले गर्जितम्=असमये मेघगर्जनम् १, 'जाव' यावत्—'अकाले विज्जुए'
अकाले विद्युत्=असमये विद्युद्विद्योतनम् २, 'अकाले थणियसद्दे' अकाले स्तनि

'तएण तेसिं मागदिय दारगाण' इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तण्ण) इसके घाद (तेसिं मागदियदारगाण) उन माकदीके
पुत्रों को जब कि वे (अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढाण समगाण) लवण
समुद्र में अनेक योजनो तक निकल चुके थे (अणेगाइ उप्पाइयसयाइ
पाउब्भूयाइ) अनेक-सैकड़ों उत्पात प्रादुर्भूत हुए (त जहा) जैसे (अकाले
गज्जिय जाव थणियसद्देकालियावाए तत्थ समुट्टिए) असमय में मेघ-
गर्जना हुई। यावत्-अकाल में विजली चमकने लगी। विना समय के

(तएण तेसिं मागदियदारगाण ' इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तण्ण) त्थारपणी (तेसिं मागदियदारगाण) माकदी पुत्रोने-
के लिये तेथे। (अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढाण समगाण लवण समुद्रमा
धत्ता येज्जना सुधी हर पडेथी गया हुता (अणेगाइ उप्पाइयसयाइ
पउब्भूयाइ) धत्ता मे कडोनी स ज्जामा उत्पातो थवा भाड्या (त जहा) जेभ
के (अकाले गज्जिय जाव थणियसद्दे कालियावाए तत्थ समुट्टिए) अणो
मेघ गर्जना थवा भाडी, यावत्-अणो आकशमा चीजणी अणूकवा भाडी वर्षाकाण
हुतो नाड छताये लय कर गर्जनाये थवा भाडी अणो ज लय कर व वाओडाथी
वातावरण आकात थर्ग गयु

તશબ્દઃ=અસમયે નિહુરગર્જનમ્ ૩, 'કાલિયાવાણ' કાલિકાવાત=અસમયે મહાવાતથ ૪, તત્ર સમુત્થિત' । તતઃ સ્વલ્પ સા 'ળાવા' નૌકા=યસ્યા માકન્દિક-દારકૌ સ્થિતૌ, તેન કાલિકાવાતેન 'આહુણિજ્જમાણી ૨' આધુયમાના ૨ પુનઃ પુનઃ કમ્પમાના 'સચાલિજ્જમાણી ૨' સચ્ચાલ્યમાના ૨=સ્થાનાત્-સ્થાનાતર નયનેન મુહુર્મુહુઃ પ્રચાલ્યમાના, 'સલ્લોભિજ્જમાણી' મહ્લોભ્યામાના=અધોનિપ-ત્યપુનરુત્પન્નત્વેન પુનઃ પુનઃ લોભ પ્રાપ્યમાણા 'સલિલતિક્લવવેગેહિ' સલિલતી-ક્ષણવેગૈઃ-જલતીવ્રતરંગવેગૈઃ 'આયદ્વિજ્જમાણી ૨ આવર્ત્યમાના ૨' इतस्ततो वार वार चक्राकारेण भ्राम्यमाणा 'कोट्टिमि' કુટ્ટિમે=પાપાણવદ્ભૂમૌ 'કરયલાહણ' કરતલાહતઃ=હસ્તતલાસ્ફાલિત. 'તેદૂસણ વિવ' કન્દુકફિવ 'તત્થેવ ૨' તત્રૈવ-તત્રૈવ-'ઓવયમાણીણ' અવપતન્તી = અધઃ પતન્તી 'ઉપ્પયમાણીય' ઉત્પતન્તી=

હી ઘનઘોર ગર્જના હોને લગી । 'વિના કાલકે હી ભયકર આંધી આ ગડ । (તણ સા ળાવા તેણકાલિયાવાણ આહુણિજ્જમાણી ૨ સચાલિ જ્જમાણી સચાલિજ્જમાણી સલ્લોભિજ્જમાણી ૨ સલિલતિક્લવવેગેહિ આયદ્વિજ્જમાણી ૨ કોટ્ટિમસિ કરયલાહણ વિવ તેદૂસણ તત્થેવ ૨ ઓવ યમાણીય ઉપ્પયમાણીય) હમ કારણ વહ નૌકા ઉસ અકાલિક ભયકર આંધી સે વાર વાર કપિત હો ઉઠી વાર ૨ એક સ્થાન સે દૂસરે સ્થાન પર ડગમગાતી હુઈ આને જાને લગી । વાર વાર કમી વહ નીચે આતી તો કમી ઝવર ઉઠતી ।

જલ કે તીક્ષ્ણવેગ સે વહ કમી ૨ વાર ૨ ચક્રાકાર સે ઇધર ઉધર ઘૂમને લગ જાતી । જિસ પ્રકાર પાપાણવદ્ ભૂમિ ઝવર ગેદ હાથસે આ હત હોકર નીચે ઝંચે વાર ૨ ઉઝલતી હૈ ઉસી તરહ વહ નૌકા મી કમી

(તણ સા ળાવા તેણ કાલિયાવાણ આહુણિજ્જમાણી ૨ સચાલિજ્જમાણી સચાલિજ્જમાણી સલ્લોભિજ્જમાણી ૨ સલિલતિક્લવવેગેહિ આયદ્વિજ્જમાણી કોટ્ટિમસિ કરયલાહણવિવ તેદૂસણ તત્થેવ ૨ ઓવયમાણીય ઉપ્પયમાણીય)

અસમયના વાવાઝોડાથી વહાણ સતત ડગમગવા લાગ્યું, વાર વાર એક જગ્યાએથી ખસીને બીજા સ્થાને ડગમગતું જવા લાગ્યું સતત રૂપમાં કોઈ વખત તે નીચે તો કોઈ વખત ઉપર આ રીતે નીચે ઉપર થવા માડ્યું

પાણીના તીવ્ર વેગથી ક્યારેક તે નાવ વાર વાર પેડાની જેમ આમતેમ ફરવા માડી જેમ પથ્થરવાળી નાકર જમીન ઉપર ઢોલ હાથ વડે ફેંકાય અને તે વારવાર નીચે ઉપર થાય તેમજ નાવ પણ નીચે ઉપર ઉઠવા

ऊर्ध्वगच्छन्तीच, तथा सिद्धविद्याविद्याधरकन्यकेव धरणीतलाद् उप्पयमाणी' उत्प-
न्ती=ऊर्ध्वमुच्चन्ती, 'भट्टविज्जा' अपविद्या=विस्मृतविद्या प्रियावरकन्यकेव गगन
तलाद् 'ओवयमाणी' अवपतन्ती=अधोनिपतन्ती, 'महागरुडवेगवित्तासिया'
महागरुडवेगप्रियामिता=महागरुडवेगेन भयाक्रान्ता 'भूयगवरकन्यगाविव' भुजग-
वरकन्यकेव नागकन्येव 'विपलायमाणी' विपलायन्ती, 'महाजणरसियसद्वित्तत्था'
महाजनरसितशब्दवित्तस्ता=जनसमूहकोलाहलशब्देनभीता 'ठाणभट्टा' स्थानभ्रष्टा
=स्वस्थानच्युता 'आसकिसोरीविव' अश्वक्शिरीव=अश्ववत्सावत् 'धावमाणी'
धावमाना, गुरुजणदिट्ठावराहा' गुरुजनदृष्टापराया=गुरुजनैः=मातापितृ-श्वशुरा-

२ वहीं २ चार २ नीचे ऊँचे उछलने लगती। (सिद्धविज्जाधरणीयला-
ओ उप्पयमाणी विज्जाहरकन्यगा इव) उस समय वह नौका ऐसी
जात होती थी कि मानो सिद्ध विद्यावाली कोई विद्यावर कन्या ही धर-
णीतल से निकलकर ऊपरको उठ रही है (भट्ट विज्जाहरकन्यगागगणत-
लाओ ओवयमाणी विव) या जिसकी विद्याभ्रष्ट हो चुकी है जिसे
विद्या विस्मृत हो गई है-ऐसी कोई विद्यावर कन्या मानो आकाश से
नीचे उतर रही है-(महागरुडवेगवित्तामिया विपलायमाणी भूयग
वरकन्यगाइव) या गरुड़ के भयोत्पादक वेगसे आक्रान्त हुड मानों कोई
नागकन्या ही इवर उधर भाग रही है (महाजणरसियसद्वित्तत्था ठाण-
भट्टा धावमाणी आस किसोरी विव) या जनसमूह के कोलाहल से
भय भीत होकर मानों कोई घोड़ी की बछेरी ही अपने ध्यान से भ्रष्ट
होकर इधर उधर दौडती फिर रही है (गुरुजणदिट्ठावराहा णिगुज माणी-

(सिद्धविज्जाधरणीयलाओ उप्पयमाणी विज्जाहरकन्यगा इव) ते वप्पते
भोजओमा उछलती ते नाव सिद्ध विद्यावाणी डोछ विद्याधर कन्या पृथ्वी
उपरवी नीडणीने उपर उठती डोय तेम लागती डती (भट्ट विज्जा विज्जाहर
कन्यगा गगणतलाओ ओवयमाणीविव अथवा तो विद्याभ्रष्ट थयेली, विद्या विस्मृत
थयेली ओवी डोछ विद्याधर कन्या आकाशभाथी नीचे उतरती डोय, (महागरु-
डवेगवित्तासिया विपलायमाणी भूयगवरकन्यगा इव) अथवा तो गरुडना
भयोत्पादक वेगथी आकात थयेली डोछ नागकन्या न आभतेम नासभाग
उरती डोय, (महाजणरसियसद्वित्तत्था ठाणभट्टा धावमाणी आसकिसोरी
विव) अथवा तो भाणुमोना घोघाटथी लयलीत थडने डोछ घोडीनु वछेइ तणे
लाभायी नाभीने आभतेम डूडतु उछलतु डोय, (गुरुजणदिट्ठा वरहा णिगुज
माणी सुयणकुलकन्यगा विव) अथवा तो डुडुणना वडाओ नेओनु शुडु

દિભિર્દૃષ્ટઃ=અવલોકિતઃ અપરાધઃ=અસત્યવચનાદિરૂપો યસ્યાઃ સા તથોક્તા 'સુય-
ણકુલકન્નગાવિવ' સુજનકુલકન્યકેવ=કુલવતીકન્યેવ 'ણિગુજમાણી' વિગુજન્તી
=અવ્યક્તશબ્દકુર્વતી, અધોનમન્તી યા, 'વીચીપહારસયતાલિયાવિવ' વીચીપહાર-
શતતાડિતેવ=અનેકશતજલતરંગપહારૈસ્તાડિતેવ 'ઘુમ્મમાણી' ઘૂર્ણમાના=થર-
થરેતિ કમ્પમાના, 'ગગણતલાઓ' ગતનતલાત્ 'ગલિયવધનાવિવ' ગલિતવન્ધ
નેવ=ત્રુટિતવન્ધનેવ-આકાશાત્ ટિત્વા પતિતેવદૃશ્યમાનેત્યર્થઃ, રોયમાણીવિવ
સલિલગઠિવિપ્પરમાણધોરસુવાણ હૈ ણવવહુ ઉવરયમત્તુયા 'રુદતીવસલિલગ્રન્થિ
વિપકિરદ્ ધોરાશ્રુપાતૈર્નવવધૂરુપરતભર્તૃકા, 'ઉવરયમત્તુયા' ઉપરતભર્તૃકા=મૃતભ-
ર્તૃકા નવવધૂરિવ=નવપરિણીતા વનિતેવ=સલિલભિન્નાગ્રન્થિય સલિલગ્રન્થિય=
સલિલાર્દ્રગ્રન્થયઃ, તેભ્યોવિપકિરન્તઃ=ક્ષરન્તિઃ, જલવિન્દવઃ તણ્વ ધોરાશ્રુપાતાસ્તૈ

સુયણ કુલકન્નગાવિવ) યા ગુરુજનો દ્વારા જિસકા અસત્ય વચ્ચનાદિરૂપ
અપરાધ દેખ લિયા ગયા હૈ એસી કોઈ કુલવતી કન્યા હી માનોં લજ્જા-
વશ નીચે કી ઓર છુકી જા રહી હૈ । (વીચીપહાર સયતાલીયા વિવ
ઘુમ્મમાણી) હજારોં જલતર ગો કે પ્રહારોં સે તાડિત હોને કી વજહ સે
હી માનો થર થર કંપતી હુઈ વહ નૌકા (ગગણતલાઓ ગલિયવધના
વિવ) એસી દિખલાઈ દે રહી થી કિ વન્ધન ટૂટ જાને સે આકાશ સે
ગિર સી પડી હો ।

અર્થાત્-જિસ પ્રકાર વધન ટૂટ જાને સે કોઈ વસ્તુ ઊપર સે નીચે
ગિર પડતી હૈ-ઉસી તરહ યહ નૌકા ભી અપના વધન ટૂટ જાને સે માનોં
આકાશ સે-ઊપર સે-નીચે ગિર પડી હૈ । (રોયમાણીવિવ સલિલ
ગઠિ વિપ્પરમાણ ધોરસુવાણિ ણવવહુ ઉપર યમત્તુયા) જિસ પ્રકાર
અપને પતિદેવ કે મરજાને પર નવોઢા ઑંસુઓં કો વહાતી હુઈ રોતી હૈ

બોલવુ વગેરે અપરાધો બાણી ગયા છે તેવી કોઈ લાજથી મો નીચુ ધાલીને
કુળવતી કન્યા જતી હોય, (વીચીપહારસયતાલિયા વિવ ઘુમ્મમાણી) હબરે
મોબ્બાના પ્રહારથી અથડાઈને થર થર પ્રજતી તે નાવ (ગગણતલાઓ ગલિય
વધના વિવ) એવી લાગતી હતી કે બહે દોરી તૂટી જવાથી આકાશમાથી
નીચે પડી ગઈ હોય

એટલે કે જેમ બધન તૂટી જવાથી કોઈ વસ્તુ ઉપરથી નીચે આવી પડે
છે તેવી જ રીતે બહે કે આ નાવ પણ બધન તૂટી જવાથી આકાશમાથી
નીચે પડી ગઈ ન હોય ?

(રોયમાણીવિવ સલિલ ગઠિવિપ્પરમાણા ધોરસુવાણિ ણવવહુ ઉપરયમત્તુયા)

પોતાના પતિના મૃત્યુ પામ્યા બાદ જેમ કોઈ નવોઢા-બુવાન પત્ની-

રુદતીવ, 'વિલવમાળી વિવ પરચક્રાયાભિરોહિયાપરમમહાભયાભિદ્રુયામહાપુરવરી' વિલપન્તીવ પરચક્રરાજાભિરુદ્ધા પરમમહાભયાભિદ્રુતામહાપુરવરી-શત્રુભૂતૈઃ પરચક્ર રાજૈરભિતઃ સર્વતો રુદ્ધા પરિવેષ્ટિતા, અતएव પરમમહાભયાદભિદ્રુતા તત્રત્યજનાના-ભયાર્તાના સર્વદિક્ષુ કોલાહલપૂર્વક યદ્ અભિદ્રવણ પલાયન તેનાભિદ્રુતા અતएव વિલપન્તી જનાના સભયકોલાહલૈઃ વિલાપ કુર્વતીવ યથા મહાપુરવરી મહાનગરી

उसी प्रकार उस नौका से भी सलिल से आर्द्र हुई सधियों से जल विन्दु समूह टपटप वरस रहा था-अतः मालूम पड़ता था कि मानों यह आसुओ को छोड़ती हुई रोही रही है । (विलवमाणी विव परचवक्र रायाभिरोहिया परममहम्भयाभिद्रुया महापुरवरी) जिस प्रकार शत्रू भूत परचक्र राजाओ से सर्व ओर से घिरी हुई कोई महानगरी बहुत अधिक भयसे अभिद्रुत होती हुई विलाप करती है अर्थात् जब कोई महानगरी शत्रु भूत राजाओ के द्वारा चारों ओर से घेरली जाती है तब वहा का प्रत्येक जन भय से आर्त होकर जहा जिस से भागते बनता है वह वहां रोता विलपना हुआ भाग जाता है-जनता मे इस से अधिक अधिक विक्षोभ उत्पन्न होकर हाय २ आदिका शब्द उसके मुख से स्वतः निकलने लगता है अतः वह नगरी जैसे उससे आकुल व्याकुल बनजाती है-उसी प्रकार इस नौका में बैठे हुए यात्रियों के मुख से भी इस आपत्ति के समय मे हाय २ आदि शब्दों के कोलाहल से वहां का वातावरण आकुल व्याकुल बन रहा था अतः सूत्रकार ने इस नौका के

આખોમાથી શ્રાવણ, ભાદરવાના જેમ આસુઓની ધારા વહાવતી ઉભી હોય તેમજ તે વહાણ પણ પાણીથી ભીનુ થઈને સાધાઓમાથી સતત જળપ્રવાહ વહાવી રહ્યું હતું એટલે એમ જણાતું હતું કે તે રહતું જ ન હોય !

(विलवमाणीविव परचक्ररायाभिरोहिया परममहम्भया भिद्रुया महापुरवरी)

શત્રુ બની ગયેલા બીજા બહારના ઘણા રાજાઓથી ઘેરાયેલી કોઈ મહા નગરી અત્યંત ભયત્રસ્ત થઈને વિલાપ કરવા માડે છે એટલે કે બ્યારે કોઈ મહાનગરી શત્રુ રાજાઓથી એમેર ઘેરાઈ બંધ છે ત્યારે નગરીમા રહેનારી દરેક વ્યક્તિ જેમ ભયભીત થઈને જના જેને નાસી જવાનું સરખ પડે છે ત્યા તે રહતી વિલપતી નાની બંધ છે, પ્રજાજનોમા એનાથી ખૂબજ ત્રાસ ઉત્પન્ન થઈ બંધ છે અને તેઓના મોથી 'હાય' 'હાય' ના શબ્દો પોતાની મેળે નીકળવા માડે છે આ પ્રમાણે તે નગરી જેમ વ્યાકુળ થઈ બંધ છે તેમ જ નાવમા બેઠેલા યાત્રીઓના મોથી નીકળતા 'હાય', 'હાય' ના શબ્દોથી ત્યાનું વાતાવરણ વ્યાકુળ થઈ રહ્યું હતું સૂત્રકારે આ નાવને અનેક દુશ્મન

ભવતિ, તદ્વત્, 'શાયમાણીવિવ કવલ્લચ્છોભપ્પઓગજુત્તા જોગપરિવ્વાહયા' કપટ
 છદ્મપ્રયોગયુક્તા યોગપરિવ્રાજકાધ્યાયન્તીત્ત્વ કપટધ્યાન=કુર્વન્તીત્ત્વ, અતएત્ત્વ પરમકપટ-
 પ્રયોગયુક્તા યોગપરિવ્રાજિકેવ=યોગિનીવદશ્યમાના, 'ળીસાસમાણીવિવ મહાકતાર
 વિણિગ્ગયપરિસ્સતા પરિણયવયા અમ્મયા' નિઃશ્વસતીત્ત્વ મહાકાન્તારવિનિર્ગતપરિશ્રાન્તા
 પરિણતવયસ્કા અમ્મયા યથા મહાકાન્તારવિનિર્ગતેન=મહાવનપિનિર્ગમનેનાપરિશ્રન્તા=
 સ્વિન્ના પરિણતવયસ્કા=વૃદ્ધાવસ્થાપન્ના અમ્મેવ=પુત્રવતી માતેત્ત્વ નિઃશ્વસતીત્ત્વ ઝઘ્વાધો-

વિષય મેં એસી કલ્પના કી હૈ કિ માનોં યહ નૌકા પરચક્ર કે રાજાઓં
 સે સર્વ ઓર સે રોકી હુઈ મહાનગરી કે સમાન અત્યન્ત ભય સે અભિ
 દ્રૂત બન કર વિલાપ હી કર રહી હૈ । (શાયમાણી વિવ કવલ્લચ્છોભ
 વ્પઓગજુત્તા જોગપરિવ્વાહયા) યહ નૌકા વકવત્ કપટ ધ્યાનકરને
 વાલી યોગ પરિવ્રાજિકાકે સમાન દિલ્લાર્દ દેતી થી-જિસ પ્રકાર કપટ
 સે ધ્યાન કરને વાલી પરિવ્રાજિકા ક્ષણ ભર કે લિયે કમી સ્થિર હો જાતી
 હૈ ઓર કમી અસ્થિર-એક સી વૃત્તિ ઉસકી નહી રહતી ડસી તરહ તરોઝોં
 સે ચલ્લ બનાં હુઈ વહ નૌકા મી ક્ષણ ભરકે લિયે સ્થિર હો જાતી થી
 ઓર ફિર અસ્થિર બન જાતી થી એક સી વૃત્તિ ઉસકી નહો થી ।

(ળીસાસમાણી વિવ મહા કતાર વિણિગ્ગય પરિસ્સતા પરિણયવયા
 અમ્મયા) મહા ભયકર જગલ મેં ઝઘી નીચી ભૂમિ પર ચલને સે પરિ
 શ્રાન્ત હુઈ જૈસે વૃદ્ધાવસ્થાપન પુત્ર વતી માતા દીર્ઘ નિશ્વાસો કો છોડ

રાત્તઓથી આકાત થયેલી તેમજ લયત્રસ્ત થયેલી મહાનગરીની સરખામણી
 એટલા માટે જ કરી છે

(શાયમાણી વિવ કવલ્લચ્છોભપ્પઓગજુત્તા જોગપરિવ્વાહયા)

આ નાવ બગલાની જેમ કપટ ધ્યાન કરનારી યોગ પરિવ્રાજિકાની જેમ
 લાગતી હતી એટલે કે જેમ કપટ ધ્યાન કરનારી પરિવ્રાજિકા થોડી ક્ષણો માટે
 સ્થિર થઈ જાય છે અને પછી તરત જ અસ્થિર મનવાળી થઈ જાય છે તે
 સ્થિરતાપૂર્વક મનને સ્થિર રાખી શકતી નથી તેમ આ નાવ પણ મોત્તઓથી
 ચચળ થઈને થોડી ક્ષણો સ્થિર બની જતી અને પાછી તરત જ અસ્થિર થઈ
 જતી હતી, એક સરખી સ્થિતિમા રહી રાઝતી જ નહોતી

(ળીસાસમાણી વિવ મહાકતારવિણિગ્ગયપરિસ્સતા પરિણયવયા અમ્મયા)

મહા ભયકર વનવગડામા ઉચી નીચી ધરતી પર ચાલનારી પશ્ચિન્ત
 થયેલી, ધરડી થયેલી પુત્રવતી માતા જેમ દીર્ઘ નિશ્વાસો બહાર ઠાઠતી લય

ગમનપતી, 'સોયમાળી વિવ તવ ચરણસ્ત્રીણપરિભોગા ચયણકાલે દેવવરવહુ' શોચન્તીવ તપશ્ચરણસ્ત્રીણપરિભોગા ચ્યવનકાલે દેવવરવહુઃ-તપશ્ચરણસ્ત્રીણપરિભોગા=મુક્તતપ-શ્ચરણફલઃ ચ્યવનકાલે=દેવભવસ્થિતિસમયસમયે દેવવરવહુરિવ શોચન્તી=તદ્વસ્થિ તજનવિદાદયોગાત્ શોક કુર્વતીવ દૃશ્યતે । પુનઃ સા નૌકા કીદૃશી જાતા ઇત્યાદિ- 'સચુણિયકઢ્ઢકૂવરા' ઇત્યાદિ । 'સચુણિયકઢ્ઢકૂવરા' સચૂર્ણિતકાષ્ઠકૂવરા સચૂર્ણિતાનિ=અત્યર્થ ચૂર્ણી ભૂતાનિ કાષ્ઠાનિ કૂવર ચ=મુસ યસ્યાઃ સા તથા, 'ભગ્ગમેઢી' ભગ્ગમેધિઃ ભગ્ગ= ટિત મેધિઃ=સકલનૌકાધારભૂતઃ સ્તમ્ભો યસ્યા સા તથા, 'મોહિયમહસ્સમાલા' મોહિતસહસ્સમાલા-મોહિતઃ=ભગ્ગઃ સહસ્સમાલઃ=સહસ્સસરયજનાચારભૂતો માલઃ=ઉપરિતનભાગો યસ્યા સા તથા, 'સૂલાઈયવક્રપરિમાસા' શૂલાચિતવક્રપરિમાસા શૂલાચિતિવ=શૂલારોપિતિવ વક્રઃ=કુન્નઃ પરિમાસઃ

તી હુઈ લઢલઢાને લગ જાતી હૈ-ઉસી પ્રકાર યહ નૌકા ભી તરગો સે આહત હોકર માનો શ્રકાવટ કી વજહ સે હી ચલને મેં લઢલઢા રહી થી । (સોયમાળી વિવ તવચરણસ્ત્રીણપરિભોગા ચયણકાલે દેવવરવહુ) તપશ્ચરણકા જિસને ફલ ભોગ લિયા હૈ-ઔર અવ જિસકે ચ્યવન કા સમય આ ગયા હૈ એસી દેવાજ્ઞના જિસ પ્રકાર શોક સે વ્યાકુલ-ચચલ-વન જાતી હૈ ઉસી પ્રકાર યહ નૌકા ભી ત્રિલકુલ ચચલ વન ગઈ થી । (સચુણિય કઢ્ઢકૂવરા) ઉસ સમય હસ નૌકા કે કષ્ઠ ઔર કૂવર મુસ-ચૂર્ણી ભૂત વન ચુકે થે । (ભગ્ગમેઢી) હસકા અપના સકલ આધાર ભૂત સ્તમ્ભ દટ ચુકા યા । (મોહિય સહસ્સ માલા) સહસ્સસરયજનો કા આધાર ભૂત ઉપરિતન ભાગ હસકા ભગ્ગ હો ચુકા યા । (સૂલાઈ યવક પરિમાસા) શૂલ પર આરોપિત કિયે હુએ કે સમાન હસકા પરિ-

ડીયા ખાવા માડે છે તેમજ તે નાવ પણ મોત્તએથી અથડાઈને બાણે કે થાડીને લથડીયા ખાવા ન માડી હોય ।

(સોયમાળી વિવ તવચરણસ્ત્રીણપરિભોગા ચયણકાલે દેવવર વહુ)

તપત્તુ ફળ જેણે ભોગવી લીધુ છે અને હવે પતન થવાનો સમય આવવાથી દેવાગના જેમ શોક વ્યાકુલ-ચચળ થઈ બાધ છે, તે પ્રમાણે જ આ નાવ પણ ચચળ બની ડુગઈ હતી (સ ચુણિયકઢ્ઢકૂવરા) મોત્તએથી અથડાતા અથડાતા ત્યા સુધી નાવના કાષ્ઠ અને કૂવર-મુખ નાગ પામ્યા હતા (ભગ્ગમેઢી) નાવનો આધાર ભૂત સ્તમ્ભ (થાલડો) તૂટી પડ્યો હતો (મોહિયસહસ્સમાલા) હજારો માણસો ન્યા આત્રય મેળવી રાડે તવો નાવનો ઉપરનો ભાગ તૂટી ગયો હતો (સૂલાઈયવક્રપરિમાસા) શૂલ ઉપર મૂકવામા

=काष्ठविशेषो यस्याः सा तथा, 'फलहतरतडतडेतफुट्टतसत्रिविगलतलोहकीलिया' फलमान्तरेषु सयोजितफलकविवरेषु 'तडतडे' ति शब्दं कुर्वन्त्यः, स्फुटन्तो=निघटमाना सन्धयः, अतएव विगलन्त्यो=निस्सरन्त्यो लोहकीलिका यस्या सा तथा, 'सव्वगवियभिया' सर्वाङ्ग विजृम्भिता=सर्वाङ्गैः=सर्वावयवैः विजृम्भिता=विघटतमुखा जाता या सा तथा, 'पडिमडियरज्जू' परिशटितरज्जुः=गलितरज्जुवती अतएव 'विसरतसव्वगत्ता' विसरत्सर्वगात्रा=विशीर्यमाणसर्वावयवा, आम गमल्लगभूया' आमकमल्लभूता=अपक्वशरावसदृशा, 'अकयपुण्णजणमणोरहो विव' अकृतपुण्यजनमनोरथ इव, अकृतपुण्यः=हीनपुण्यो यो जनस्तस्य मनोरथ इव 'चित्तिज्जमाणगुरुइ' चिन्त्यमानगुर्वी चिन्त्यमाना- 'कथमेतामापद तरिप्यामी' ति-विचार्यमाणेव गुर्वी=चिन्ताभारणेव गुरुका, 'हाहाकयरुण्णधारणावियवाणिय

मास काष्ठविशेष देहा हो गया था । (फलहतरतडतडेतफुट्टतसत्रिविगलतलोहकीलिया) काष्ठके पट्टियोको परस्पर जोड़नेके लिये जो सधियों में लोहेके बड़े कीले लगे हुए थे वे सब जब उसकी सधिया-जाड़ विघटित हो गई तब उनमें बाहर निकल आये थे (सव्वगवियभिया) अतः समस्त इसके जुड़े हुए अवयव खुल गये थे । (परिसडियरज्जू) जितनी भी इस में रस्सिया लगी हुई थी वे सब की सब गल चुकी थीं । (विसरतसव्वगत्ता) इससे समस्त जोड़ खुल गये थे । (आम गमल्लगभूया) यह कच्चे मिट्टी के शरवाके समान हो गई थी । (अकयपुण्ण जणमणोरहो विव) अकृत पुण्य वाले मनुष्य के मनोरथ के समान यह निष्फल बन गई थी । (चित्तिज्जमाण गुरुइ) मैं इस आपत्ति को अब कैसे पार करूँगी इस चिन्ता से ही मानो यह बहुत भारी

आवेदानी जेभ परिभाम नामनु काष्ठ विशेष-त्रासु थय गयु डंतु (फल हतर तडतडे त फुट्ट त स धि विगल तलोहकीलियो) लाड्डाना पाटीयाओने ओक भीजनी साथे तेनो साधा भेणववा जे दोअउना भोटा भीलाओ काममा देवाय छुंते अथा पाटियाओ न्हारे नु । जुदा थय गया त्थारे अडार नीकणी आव्या डता (सव्वग वियभिया) आ प्रभावे नावना अथा जेडाओला साधाओ जुदा थय गया डता (परिसडियरज्जू) तेनी अधी दोरीओ डडोवाय थूकी डती (विसरतसव्वगत्ता) तेना अथा साधाओ छुग पडी गया डता (आम गमल्लगभूया) ते भाटीना काया डोडियानी जेभ थय गय डती (अकयपुण्ण जण मणोरहाविव) ओय पणु द्विसे जेले ओकेय पुण्यनु काम करुं नथी ओवा भायुसना मनोरथनी जेभ ते निष्फल थय गय डती (चित्तिज्जमाण गुरुइ) आवी पडेवी आइतनो सामनो हु डेवी रीते करीश ? के आ

ગજળક્રમ્મગારવિલવિઆ ' હાહાકૃતર્ણધારનાવિકવાણિજક્રમ્નકર્મકરવિલપિતા
 હાહાકૃતૈ = હાહાકારયુક્તૈઃ કર્ણધારૈ = નિર્ચામકૈઃ, નાવિકૈ = પોતવાહકૈ, વાણિજક-
 જનૈ = વ્યાપારિજનૈઃ, કર્મકરૈ = ભૂત્યૈઃ વિલપિતા = વિલાપયુક્તા - કર્ણ મારાદીના હાહા
 કારેણ વિલાપ કુર્વતીવેત્યર્થઃ 'ળાળાવિહરયણપણિયસપુળ્ળા' નાનાવિધૈઃ રત્નૈ.પળ્યૈશ્ચ =
 વિક્રમ્યવસ્તુજાતૈઃ સમ્પૂળ્ળા = સમ્ભૂતા, વહુભિઃ પુરુષશતૈઃ રુદ્ધિ કન્દ્ધિઃ શોચ્છિઃ,
 'તિપ્પમાળેહિ' તેપમાનૈઃ = અશ્રુણિ મુશ્ચ્છિ વિલપદ્ધિઃ, = વિલાપ કુર્વદ્ધિઃ, એક મહત્
 ' અતોજલગય ' અન્તર્જન્મગત = જલમધ્યસ્થિત ગિરિશિખરમાસાધ્ય = સપ્રદ્ય ' સમગ્ગ
 ક્રૂવતોરણા ' સમગ્નક્રૂવતોરણા - સમગ્નઃ = ત્રુટિતઃ ક્રૂપઃ = ક્રૂપસ્તમ્ભઃ - યત્ર સિતપટો

ચન ઠઈ થી (હા હા કયકળધારણા વિવ વાણિયગજળક્રમ્મગાર
 વિલવિયા) ઇસ મેં જો કર્ણ ધાર, નાવિક, વ્યાપારિજન એવ નૌકર-
 ચાકર વૈઠે હુએ થે વે સવ કે સવ હાહાકાર કરતે હુએ વિલાપ કર રહે
 થે— અતઃ એસાં માલૂમ હોતા થા કિં ડનકે હાહાકાર વિલાપો સે યહ
 નૌકો સ્વય વિલાપ કર રહી હૈં । (ળાળા વિહરયણપણિય સપુળ્ળા) અ-
 નેક પ્રકાર કે રત્નો સે એવ પળ્ય દ્રવ્યોં સે—વિક્રેય્યવસ્તુઓં સે—યહ
 નૌકા ભરી હુઈ થી । (રોયમાળેહિં કદ૦ સોય તિપ્પ૦ વિલવમાળેહિં
 વહૂહિં પુરિસળહિં એગ મહ અતોજલગય ગિરિસિહરમાસાધ્યડત્તા) રુદન
 કરનેવાલે, આક્રન્દન કરનેવાલે, શોક કરનેવાલે, આસુઓં કો વહાને-
 વાલે એસે સૈકડોં પુરુષોં સે ભરી હુઈ યહ નૌકા એક વડે ભારી જલકે
 મીતર રહે હુએ ગિરિકે શિખર સે ટકરા ગઈ—ટકરાતે હી (સમગ્ગક્રૂવ-

અતની ચિતાથી જ તે નાવ ભારે વળનહાર થઈ પડી હતી (હા હા કય
 કળધારણ વિવ વાણિયગજળક્રમ્મગારવિલવિયા)

તેમા બેઠેલા કર્ણધાર, નાવિક, વેપારીઓ અને બીજા નોકર ચાકરો હાથ,
 હાથ, કરીને વિલાપ કરી રહ્યા હતા એથી એમ લાગતું હતું કે બાણે તેઓના
 વિલાપથી જ આ નાવ ચોતે વિલાપ કરતી ન હોય ! (ળાળાવિહરયણ પણિય
 સપુળ્ળા) ઘણી અતના રત્નો અને વેચાણની વસ્તુઓથી આ નાવ પૂરેપૂરી ભરી
 હતી (રોયમાળેહિં કદ૦ સોય૦ તિપ્પ૦ વિલવમાળેહિં વહૂહિં પુરિસળહિં એગ મહ
 અતોજલગય ગિરિસિહરમાસાધ્યડત્તા)

રડનારા, કરુણ આક્રંદ કરનારા શોકથી પીડાતા, ચોધાર આસુઓ
 વહેવડાવનારા, વિલાપ કરનારા એવા સેકડો માણસોથી ચિકાર ભરેલી તે નાવ
 આખરે પાણીની અદરના જ પર્વત શિખર (ખડક) સાથે અવડાઈ પડી અને
 અથડાતાની સાથે જ (સમગ્ગક્રૂવતોરણા તેના ક્રૂપસ્તમ્ભો અને તેા ભૂા તૂટી

बध्यते सः, तथा तोरणानि च त्रुटितानि यस्याः सा तथा—‘मोडियन्नयदडा’ मोटि
तध्वजदण्डा=त्रुटितध्वजकाण्डा, ‘वलयसयखडिया’ वलकशतखण्डिता वलफाना=
दीर्घदाखणा शतानि खण्डितानि यस्याः सा, ‘करकरस्स’ करकरेति शब्दकुर्वाणा
तत्रैव समुद्रे ‘विद्व=विलयम् उपगता=प्राप्ता जले बुडितेत्यर्थः । ततः खलु
तस्या नौकाया भिद्यमानाया=त्रुडिताया सत्या गहव’ पुरुषा. ‘विउन्नयणिय’ विपु
लपणित=विपुल=प्रचुर पणित=पण्यद्रव्य विक्रय द्रव्यम् यस्मिन् तत् तादृश भाण्ड-
मादाय ‘अतोन्नलसि’ अन्तर्जले=जलमध्ये ‘निमज्जाविय’ निमग्नाः=त्रुडिता अपि
चाभूवन् ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएण ते मागदियदारगा छेया दक्खा पत्तट्ठा कुसला
मेहावी णिउणसिप्पोवगया बहुसु पोतवहणसुपराएसु कथक-
रणं लद्धविजया अमूढा अमूढहत्था एगं मह फलगखड आसा-
देति, जंसि च ण पदेससि से पोयवहणे विवन्ने तसि च णं
पदेससि एगे मह रयणदीवे णाम दीवे होत्था अणेगाइ जो-
यणाइ आयामविकखभेणं अणेगाइ जोअणाइ परिवखेवेण

तोरणा) इसके कूपस्तम्भ और तोरण भग्न हो गये (मोडियन्नयदडा)
ध्वजा दण्ड टूट गया (वलयसयखडिया) बडे २ लव्हे २ सैकड़ो काष्ठख-
ण्डित हो गये (करकरस्सतत्थेव विद्व उवगया) और यह कर २ शब्द
करती हुई वहीं पर डूब गई । (तएण तीए णावाए भिज्जमाणीए वहवे
पुरिसा विपुलपणिय भडमायाए अतोन्नलमि णिमज्जाविय होत्था) इस
तरह उस नौका के डूब जाने पर अनेक पुरुष प्रचुरपण्य द्रव्यवाले भाण्ड
को लेकर जलके बीच में निमग्न हो गये ॥ सूत्र २ ॥

गया (मोडियन्नयदडा) ध्वज दण्ड टूटी गये (वलयसयखडिया) मोटा
मोटा विशाण दाभा से कड़ो काष्ठ टूटी गया (करकरस्स तत्थेव विद्व उवगया)
अने ते नाव ‘ कर कर ’ शब्द करती त्या पाणीमा डूबी गई

(तएण तीए णावाए भिज्जमाणीए वहवे पुरिसा विपुलपणिय भडमायाए
अतोन्नलमि णिमज्जाविय होत्था)

आ रीते नाव डूबी जवाथी धणा भाण्डसे पुण्डण प्रमाणमा द्रव्येथी
सरेखा पासछो साथे पाणीमा निमग्न थी गया ॥ सूत्र “ २ ” ॥

णाणादुमसंडमंडिउदेसे सस्सिरीए पासाइए ४, तस्स णं बहुम-
 ज्झदेसभाए तत्थ णं एगे महं पासायवडेसए होत्था अब्भु-
 ग्गयमूसियए जाव सस्सिरीए सुरूवे पासाईए ४, तत्थणं
 पासायवडेसए रयणदीवे देवया नामं देवया परिवसति पावा
 चंडा रुद्धा साहासिया, तस्स णं पासायवडिंसयस्स चउदिसि
 चत्तारि वणसंडा किण्हा किण्हाभासा, तएणं ते मार्गदियदारगा
 तण फलयखडेण उव्वुज्झमाणार रयणदीव तेणं सवूढा यावि
 होत्था, तएणं ते मार्गदियदारगा थाह लभंति लभित्ता मुहुत्त-
 तर आससंति आससित्ता फलखड विसज्जेति विसज्जित्ता
 रयणद्वावे उत्तरति उत्तरित्ता फलाण मग्गणगवेसणं करेति
 करित्ता फलाइं गिण्हंति गिण्हित्ता आहारेंति आहारित्ता णालि-
 एराण मग्गणगवेसणं करेति करित्ता नालिएराइं फोडेति फोडित्ता
 नालिएरतेल्लेणं अणमणस्स गत्ताइ अब्भगेति अब्भगित्ता
 पोक्खरणी ओगाहिति ओगाहित्ता जलमज्जण करेति करित्ता जाव
 पच्चुत्तरति पच्चुत्तरित्ता पुढविसिलापट्टयसि निसीयति निसोइत्ता
 आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया चपानयरिं अम्मापिउ
 आपुच्छण च लवणसमुदोत्तारं च कालियवायसमुत्थण च पोत-
 वहणविवत्ति च फलयखडस्स आसायण च रयणदीवुत्तार च
 अणुचितेमाणार ओहयमणसंकप्पा जाव झियायेन्ति, तएण
 सा रयणदीवदेवया ते मार्गदियदारए ओहिणा आभोएइ
 आभोइत्ता असिफलगवग्गहत्था सत्तट्ठतालप्पमाण उड्ड वेहास

उप्पयइ२ ताते उक्किट्ठाए जाव देवगईए वीइवयमाणी२ जेणेव
 मागदियदारए तेणेव आगच्छइ आगच्छित्ता आसुरुत्ता ते
 मागदियदारए खरफरुसनिट्ठुरवयणेहि एवं वयासी—ह भो
 मागदियदारया । अप्पत्थियपत्थया जइ णं तुब्भे मए सद्धि
 विउलाइ भोगभोगाइं भुजमाणा विहरह तो भे अत्थि जीविअ,
 अहण्ण तुब्भे मए सद्धि विउलाइ भोगभोगाइं भुजमाणा नो
 विहरह तो भे इमेणं निलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगा-
 सेणं असिणा खुरधारेण असिणा रत्तगडमसुयाइ माउयाहि
 उवसोहियाइ तालफलाणीव सीसाइं एगंते एडेमि, तएणं ते
 मागदियदारगा रयणदीव देवयाए अतिए सोच्चाभीया करयल०
 एव जण्णं देवाणुप्पिया । वइस्ससि तस्स आणाउववायवयण-
 निद्देसे चिट्ठिस्सामो, तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागदिय-
 दारए गेण्हति२ जेणेव पासायवडिसए तेणेव उवागच्छइ२
 असुभपोग्गलावहार करेइ२ सुभपोग्गलपक्खेव करेइ करित्ता
 पच्छा तेहि सद्धि विउलाइ भोगभोगाइं भुजमाणा विहरति
 कल्लाकल्लि च अमयफलाइं उवणेइ ॥ सू०३ ॥

टीका—ततः खलु तौ माकन्किदारकौ ' छेया ' छेहौ=चतुरौ ' दक्खा ' दक्षौ=निपुणौ, ' पत्तट्ठा ' प्राप्तार्थौ=प्राप्त =ज्ञातः अर्थः=भारो याभ्या तौ ' कुसला '

‘ तएण ते मागदिय दारगा ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (ते मागदियदारगा) उनदोनों माकदि
 यदारकों ने कि जो (छेया, दक्खा, पत्तट्ठा, कुसला, मेहावी, निउणसिप्पो

‘ तएण ते मागदियदारगा ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थार भाद (ते मागदियदारगा) तेओ भ ने मागदिय
 दारकोओ—के ओओ।

कुशलौ=सफलकलाविज्ञौ 'मेधावी' मेधाविनौ=सुधियो निउणसिप्पोवगया 'निपुणशिल्पोपगता=तरणादिविधानिपुणौ बहुषु=अनेकेषु 'पोयवहणसपरायेषु' पोतवहनसपरायेषु = पोतवहनस्य=नौकातरणस्य सपरायेषु = विघ्नेषु समुपस्थितेषु 'कयकरणा' कृतकरणौ=कृतकार्यौ बहुशोऽनुभूतसतरणकार्यौ, 'लद्धविजया' लब्धविजयौ=समुद्रपारगमनेन प्राप्तविजयौ 'अमूढा' अमूढौ=तरणादिक्रिया विवेकसम्पन्नौ 'अमूढहत्था' अमूढहस्तौ=तरणक्रियाकुशलहस्तौ एकमहत् फलकखण्डकाष्ठमयम् 'आमादेति' आसादयत =आलम्बितयन्तौ० । यस्मिंश्च खलु प्रदेशे तत् पोतवहन=प्रवहण 'विवन्ने' विपन्न=भग्न तस्मिंश्च खलु तस्मिन्नेव प्रदेशे एको महान् रत्नद्वीपो नाम द्वीपः 'होत्या' आसीत्, स कीदृशः ? इत्याह-

वगया, बहुषु पोतवहणसपराएसु कयकरणा, लद्धविजया अमूढा, अमूढहत्था एग मह फलगखड आसादेति) बडे चतुर थे, दक्ष थे, भावों को जानने वाले थे, सकल कलाओं के ज्ञाता थे, मेधावी थे, तरणादिविद्या में विशिष्ट योग्यता सन्ना थे, पोत संचालन में उपस्थित हुए विनो को पार करने वाले थे, अर्थात् ऐसी स्थितिमें जिन्होंने सस्तरण कार्य अनेक बार अभ्यस्त कर रखा था, समुद्रपार करने में जिन्हे विजय मिली थी, तरणादि क्रिया का विवेक जिन्हें बहुत अच्छी तरह था, जिनके हाथ तैरने में कभी थकने नहीं थे-जो तरण क्रिया में बडे कुशल थे, एक बडे भारी काष्ठफलक खड को प्राप्त कर लिया । (जमिच ण पदेसमि से पोयवहणे विवन्ने तसिच ण पदेससि एगे मह रयणदीवेणाम दीवे होत्या,अणेगाइ जीअणाति आयामविक्खभेण अणेगाइ जीअ-

(उया, दक्खा पत्तट्ठा, कुसला मेधावी निउण सिप्पोवगया बहुषु पोतवहणसपराएसु कयकरणा, लद्धविजया अमूढा अमूढहत्था एग मह फलग खडआमादेति

गूण ७ चतुर होता दक्ष होता, लावेने जलानारा होता, गंधी जगामा निष्पुत होता, मेधावी होता तरवा वगेरेनी जगामा निष्पुत होता, पोत संचालनमा वर्ये आवी पडेला विघ्ने हर करी शकवानी शक्ति धरावता होता ओटवे डे ओवी परिस्थितिमा पण डिमत न डारतागमे ते रीते तगीने पण समुद्र पार करवामा शक्तिराणी होता तरवानी क्रियामा जेओ विशेष कुशल होता, तरती वणने पण जेमना हाथो डो पण स्थितिमा थाकता ७ नडि तरवामा जेओ गूण ७ कुराण होता-ओक मोटा लाकडाना पाटियाने पडडी लीधु

(जमि च ण पदेससि से पोयवहणे विवन्ने त सि च ण पदेससि एगेमह रयणदीवे णाम दीवे होत्या, अणेगाइ जीअणाइ परिकखेवेण णाणा दुमसडमडि-उदेसे सस्तिरीए पासाइए ४)

‘अणेगाइ’ इत्यादि-अनेकानि योजनानि आयामविष्कम्भेण=दैर्घ्यपरिणाहेन, अनेकानि योजनानि परिक्षेपेण=परिधिना, नानाद्रुमपण्डमण्डितोद्देश=अनेकवन पण्डमण्डितप्रदेश‘ सश्रीक=शोभासम्पन्न’, प्रासादीय’-मनः प्रसन्नता हेतुत्वात्, दर्शनीय=नेत्राह्लादकत्वात्, अभिरूपः=अपूर्वसौन्दर्ययुक्तात्, प्रतिरूपः=प्रशस्नाकृति-कत्वात्० । तस्य खलु द्वीपस्य बहुमध्यदेशभागे=मध्यस्थले तत्र खलु एको महान् प्रासादावतसकःश्रेष्ठप्रासादो आसीत्०। स कीदृशः ? इत्याह-‘अब्भुगय ! इत्यादि -‘अब्भुगय’ अभ्युद्गतः=विशाल ‘ऊसियए’ उच्चिन्नतकः=गगनतलस्पर्शी यावत् सश्रीकः-सुरूप’=शोभनाकारः प्रासादीयः ४ । तत्र खलु प्रासादावतसके रत्न द्वीपदेवता नाम देवता ‘रयणादेवी’ इति प्रसिद्धा देवी परिवसति=निवास

णाइ परिवखेवेण णाणाद्रुमसडमंडिउद्देशे सस्सिरीए पासाइए ४) जिस प्रदेश में वह पोतचहन भग्न हुआ था, उसी प्रदेश में एक बड़ा मारी रत्नद्वीप नाम का द्वीप था। इसका आयाम और विष्कम्भ अनेक योजन का था। परिधि भी इसकी अनेक योजन की थी। नाना प्रकार के वृक्षों के समूह से इस का भीतरी बाहिरी प्रदेश हरा भरा बना हुआ था। यह द्वीप बहुत ही शोभासम्पन्न था। मन को प्रसन्न करनेवाला था। दर्शनीय था। तथा अपूर्व सौन्दर्य से युक्त था। एवं आकृति में भी यह बड़ा अभिराम था। (तस्स ण बहुमज्झदेसभाए तत्थ ण एगे मह पासा यवडेसए होत्था-अब्भुगयमूसियए जाव सस्सिरीए सुरूवे पासाईए ४) इस द्वीप के ठीक मध्य भाग में एक विशाल श्रेष्ठ प्रासाद था। यह बहुत अधिक ऊँचा था। अपनी ऊँचाई से यह आकाश तक को स्पर्श करता था। बहुत सुन्दर था। दर्शनीय आदि विशेषणों वाला था। (तत्थ ण

नाव जया डूधी डुती तेनी आसपासना प्रदेशमा ओक बहुत मोटो रत्नद्वीप नामे द्वीपडुतो आ द्वीपने आयाम अने विष्कम्भ घण्टा योजना सुधी विस्तार पाभेडो डुतो आ द्वीपनी परिधि पणु घण्टा योजने सुधीनी डुती घण्टी जतना वृक्षोना समूडोथी ते द्वीपने अहर अने णडारने लाग दीडो छम देखातो डुतो ते द्वीप भूण न सु र डुतो मनोहर डुतो, मनने प्रसन्न करे तेवो डुतो, दर्शनीय डुतो अपूर्व सौन्दर्यथी ते युक्त डुतो तेमज आकारमा पणु ते अत्यंत सुंदर डुतो।

(तस्स ण बहुमज्झदेसभाए तत्थ ण एगे मह पासायवडेसए होत्था-अब्भुगय मूसियए जाव सस्सिरीए सुरूवे पासाईए ४)

ते द्वीपनी वर्ये ओक विशाल उत्तम भडेल डुतो ते भूण न डियो डुतो पोतानी डियाथी ते आकाशने पणु स्पर्शतो डुतो ते भूण न सुंदर डुतो, दर्शनीय वगेरे विशेषताओथी युक्त डुतो।

करोति । सा कीटगी ? इत्याह—‘ पात्रा ’ इत्यादि—‘ पात्रा ’ पात्रा=पापकर्मकत्री
स चण्डा=अत्यन्तलोपशीला, सौद्रा=हिंसादिकूरकर्मकारिणी, साहसिका=अविचार्य
कारिणी । तस्य खलु प्रामादायतमकस्य चतुर्दिशु चत्वारो वनखण्डा आसन्, ते
कीटगाः ? इत्याह—‘ किण्हा ’ इत्यादि—कृष्णा =नूतनमेववर्णाः, कृष्णावभासाः=
प्रतिहरितत्वेनावभासमानकृष्णकान्तय, इत्यादि । ततः खलु तौ मारुन्दिदारकौ
तेन फलखण्डेन ‘ उव्वुज्झमाणा २ ’ उदुह्वमानो २ उपरिजले गहन्तो २ तरन्तो २,
रत्नद्वीपान्ते खलु=रत्नद्वीपवर्मीपे ‘ समुद्रा ’ समुद्रो=समागतौ चाप्यास्ताम् ।

ततः खलु तत्र तौ मारुन्दिदारकौ ‘ याह ’ रताय=समुद्रतललभेते=पादाभ्या
स्पृष्टवन्तौ लब्ध्वा मुहूर्तान्तरम्=अन्तर्मुहूर्तेषु आश्रितः=विश्राम कुरुतः, आश्रित्य

पासायवडेसए रयणदीवे देवया नाम देवया परिवसति, पात्रा, चडा
रुद्रा, साहसिया तस्स ण पासायवडिसयस्स चउदिसि चत्तारिवणसडा
किण्हा, किण्हाभासा, तएण ते नागदियदारगा तेण फलयाखडेण उव्वु
ज्झमाणा २ रयणदीवनेणं समुद्रा यावि होत्था) उस श्रेष्ठ प्रासाद में
रत्न द्वीप देवता नाम की एक देवी कि जिम् का प्रसिद्धनाम ‘ रत्नदेवी ’
“ ऐमा या ” रहती थी ॥

यह अत्यन्त पापकर्म करती थी, सदा गुस्से में भरी रहती थी, हिं-
सादिकूरकर्म करने में बड़ी निपुणमति थी—जो मन में आता वही कर
डालती थी । उस श्रेष्ठ प्रासाद की चारों दिशाओं में चार वनखण्ड थे ।
वे नवीन मघ के वर्ण समान काले थे और सदा हरे भरे रहने के कार-
ण उनकी कांति भी काली ही निकलती थी । ये दोनों मारुदी दारक
उस फलक खंड की सहायता से जल पर—तैरते हुए—उस रत्नद्वीप के

(तत्थण पासायवडेसए रयणदीवे देवया नाम देवया परिवसति, पात्रा
चडा रुद्रा साहसिया तस्स ण पासायवडिसयस्स चउदिसि चत्तारिवणसडा, किण्हा
किण्हाभासा, तएण ते नागदियदारगा तेण फलयाखडेण उव्वुज्झमाणा २
रयणदीव तेण समुद्रा यावि होत्था)

ते श्रेष्ठ भडेलमा रत्नद्वीप देवता न भनी एक देवी—उन्हे ‘ रयणा देवी ’
नामे प्रसिद्धि पावेली हुती—रहेती हुती उमेशा ते शुक्लामा न रहेती हुती
ते डिमा वगेरे कूर कर्मो उरवामा भूषण न यतुर हुती ते धम्मि मुत्तम
आचरण करती हुती ने उत्तम भडेलनी आदे दिशाओ तग्ग आर वनपण्ड
हुता तेओ नवा वाहणता रगता जेवा श्याम हुता अने उमेशा लीला छम
रहेवा भव्य तेमनी जति पणु श्याम रगनी न हुती अने मारुदी दारके
साकडा उपर तरता तरता रत्न द्वीपनी पासे आवी पडेल्या हुता

ફલગ્રાહ 'વિસર્જેતિ' લિસર્જયતઃ=પરિત્યક્તવન્તી, વિસર્જ્ય રત્નદ્વીપમ્ ઉત્તરતઃ=
પાસૌ ઉત્તીર્ય=પાપ્ય ફલાના માર્ગણગવેષણ કુરુત =ઇતસ્તત્' ફલાનિ ગવેષિતવન્તો,
કૃત્વા ફલાનિ ગૃહીતઃ, ગૃહીત્વા આહારતઃ=શુક્તવન્તી, તદનુ નાલિકેરાણા માર્ગ-
ણગવેષણ કુરુતઃ, કૃત્વા નાલિકેરાણિ સ્ફોટયતઃ, તત નાલિકેરતૈલેન અન્યોન્યસ્ય

પાસ મેં આ પહુંચે। (તણ તે માગદિયદારગા થાહ લભતિ, લભિત્તા મુહુ
ત્તંતર આસસતિ, આસસિત્તા ફલગ્રાહ વિસર્જેતિ, વિમર્જિત્તારયણદ્વીવ
ઉત્તરતિ, ઉત્તરિત્તા ફલાણ મગગગવેસણ કરેતિ) વહા આતે હી ઉન્હે
સ્થઞ મિલ ગયા-વાહ મિલતે હી ઉન્હોને વહાં એક મુહુર્ત્ત તક વિશ્રામ
કિયા, વિશ્રામ કરકે ફિર ઉસ કાઠ ગ્રહ કો છોડ દિયા। છોડ કરકે
ફિર વે દોનો રત્નદ્વીપ મેં ઉતર-ગયે-વહા જાકર ઉન્હાને ફલો કી ડધર
ઉધર માર્ગણગવેષણા કી-(કરિત્તા ફલાઃ ગિળ્હતિ, ગિળ્હિત્તા આહાર
રેતિ આહારિત્તા નાલિગ્રાણમગણગવેસણ કરેતિ, કગિત્તા નાલિગ્રાહ
ફોડેતિ, ફોડિત્તા નાલિગ્રાણતૈલેણ-અણમણસ્સ ગત્તાઈઅન્ભર્ગેતિ, અ
ન્ભર્ગિત્તા પોક્કરણી ઓગાહિતિ, ઓગાહિત્તા જલમજ્જણ કરેતિ, કરિત્તા
જાવ પચ્ચુત્તરતિ, પચ્ચુત્તરિત્તા પુઢવિસિલાપટ્ટયસિ નિસીયતિ, નિસીઈત્તા
આસત્થા વીસત્થા) માર્ગણા ગવેષણા કરને સે ઉન્હે ફળ મિલ ગયે।
મિલતે હી ઉન્હોને ઉનકા આહાર કિયા। જથ ઉનકા પેટ અચ્છી તરહ
ભર ચુકા તથ ફિર ઉન્હોને નારિકેલ ફલો કી-નારિયલોં કી-તલાશ

(તણ તે માગદિયદારગા થાહ લભતિ, લભિત્તા મુહુત્તર આસસતિ,
આસસિત્તા ફલગ્રાહ વિસર્જેતિ, વિમર્જિત્તારયણદ્વીવ ઉત્તરતિ ઉત્તરિત્તા ફલાણ
મગગગવેસણ કરેતિ)

ત્યા પહોચતા જ તેઓને સ્થળ મળી ગયું, સ્થળ મળતા જ તેઓએ
એક મુહૂર્ત્ત ત્યા વિસામો લીધો અને ત્યાર પછી લાડડાને છોડી દીધું પાણી
માથી તેઓ બે રત્ન દ્વીપમાં આવ્યા અને આમ તેમ ફળો શોધવા લાગ્યા

(કરિત્તા ફલાઃ ગિળ્હતિ, ગિળ્હિત્તા આહારેનિ આહારિત્તા નાલિગ્રાણ
મગગગવેષણ કરેતિ કરિત્તા નાલિગ્રાહ ફોડેતિ ફોડિત્તા નાલિગ્રાણતૈલેણ
અણમણસ્સ ગત્તાઈ અન્ભર્ગેતિ અન્ભર્ગિત્તા પોક્કરણી ઓગાહિતિ, ઓગાહિત્તા
જલમજ્જણ કરેતિ, કરિત્તા જાવ પચ્ચુત્તરતિ, પચ્ચુત્તરિત્તા પુઢવિસિલાપટ્ટયસિ
નીસીયતિ, નિસીઈત્તા આસત્થા વીસત્થા)

શોધ કરતા કરતા તેમને ફળો મળી ગયા તેમણે ફળોનો આહાર કર્યો
અયારેફળોના આહારથી તેઓ ધરાઈ ગયા ત્યારે નાળિયેરના ફળોની શોધ કરવા
લાગ્યા આખરે નાળિયેરના ફળો તેઓએ મેળવ્યા અને તેને ફેડીને અહરથી

परस्परस्य ' गत्ताड ' गात्राणि=अङ्गोपाङ्गानि अभ्यञ्जयतः=मर्दयतः, तदनु पुष्करिणी=वापीं अवगाहेते=अतः प्रविशत, अवगाह्य जलमञ्जन=स्नान कुरुत', कृत्वा यावत् प्रत्युत्तरतः=वापीतो वहिर्निस्सृतौ, प्रत्युत्तीर्य=वहिर्निस्सृत्य पृथिवीशिलापट्टे निपीदतः=उपविष्टौ, निषद्य ' आसत्या ' आस्वस्थौ=ईषत्स्वस्थौ ' वीसत्या ' विस्वस्थौ रमणीयनिर्भयस्थान मत्वा विशेषेण विश्राम प्राप्तौ सुखासनवरगतौ=सुखदासने समुपविष्टौ सन्तौ चम्पानगरीम्, अम्बापित्रा पृच्छन्तम्=समुद्रोत्तरणविषये तन्निषेधेऽपि द्वित्रिवार तदाज्ञायाचनच, लवणसमुद्रोत्तार च, कालिकावातसमुत्थान

की-तलश करने पर वे भी उन्हें मिल गये । मिलते ही उन्होंने उन्हें फोडा-फोड कर उनमेंसे तेल निकाला-तेलनिकाल कर परस्पर में उन्होंने एक दूसरेके शरीर पर उससे मर्दन कीया-मर्दन करनेके बाद फिरवे पुष्करिणी में प्रविष्ट हुए-प्रविष्ट होकर उसमें उन्होंने ने स्नान किया स्नान करके फिर वे उससे ऊपर आये । ऊपर आकर पृथिवी शिलापट्टक पर बैठ गये । बैठकर वे वहाँ अश्वस्त बने । बाद में (सुहासणवरगया) सुखद आसन से बैठ कर उन दोनों ने (चम्पानगरिं अम्मापिउ आपुच्छण लवणसमुद्रोत्तारण च कालियवायसमुत्थणं च पोत वहणविवर्त्तिच फलयखडस्स आसायण च रयणदीवुत्तार च अणुचिते माणा २ ओहयमणसकप्पा जाव झियार्येति) चम्पानगरी का माता पिता से पूछने का-लवण समुद्र कि यात्रा करने के विषय में पूछने पर और उनके निषेध करने पर पुनः दुबारा तिवारा उनसे आज्ञा प्राप्त करने का-लवण समुद्र में उतरने का कालिका वायु के उत्थान का पोतके डूब जानेका फलक खड की प्राप्ति

तेल ढाढीने भूमज सरस रीते ओक भीजना शरीरे तेल ओणवा लाग्या भरोणर तेलनी भादिश करीने तेओ पुष्कण्णिमा उत्तर्या अने उत्तरीने तेओओ स्नान कर्युं स्नान करीने तेओ णडार आव्या अने ओक शिला उपर ओसी गया त्या ओसीने तेओ आश्वस्त विश्वस्त णन्या अने त्थार पछी (सुहासण वर गया) सुखासन पूर्वक ओसीने तेओ णने

(चम्पानगरिं अम्मापिउ आपुच्छण लवणसमुद्रोत्तारण च कालिय वाय समुत्थण च पोतवहणविवर्त्ति च फलयखडस्स आसायण च रयणदीवुत्तार च अणुचितेमाणा २ ओहयमणसकप्पा जाव झियार्येति

थ पा नगरीनो, लवण समुद्रनी यात्रा करवा भाटे मातापिताओ ओकभी ना छेवा छता ओ त्रण वणत तेनी तेज वात तेमनी सामे भूडीने आसा भेजववानो, लवण समुद्रमा यात्रा करवानो, अडाणे वावाओडाथी नाव रखी

च, पोतवहनविपत्तिव, फलकवण्डस्याऽऽपादन=स्वीकरणच, रत्नद्वीपोत्तारच 'अणु
चित्तेमाणा' अनुचिन्तयन्तौ=पुनः पुनः स्मरन्तौ 'ओढयमणसरूपा' अपहृतमनः
सरूपौ=आर्तध्यानसम्पन्नौ यावत् 'श्रियाणति' भयायत=पूर्ववृत्तान्त स्मृतवन्तौ।
ततः खलु तस्मिन् समये सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिकदारकौ 'ओहिणा'
अवधिना=अवधिज्ञानेन 'आभोएइ' आभोगयति=पश्यति, आभोगयित्वा=दृष्ट्वा
'असिफलगवग्गहत्था' असिफलकव्यग्रहस्ता=असिना=तीक्ष्णसङ्गेन फलकेन='ढाल'
इति प्रसिद्धेन व्यग्रो = चञ्चली हस्तौ यस्याः सा तथा, सत्तट्टतालपमाण'
सप्ताष्टतालपमाण, सप्ताष्टताडवृक्षपरिमितम्, 'उड्डु' ऊर्म्म=ऊर्ध्वभाग 'वेहासं'
वैहायस=गगनसम्प्रन्धिकम्-अत्युच्चैराकाशे 'उप्पयइ' उत्पतति,=उच्छलति, उत्पत्य
तया=प्रमिद्वया उत्कृष्टया यावद् देवगत्या 'वीहवयमाणी' व्यतिप्रजन्ती २ =

का और उसके सहारे से रत्न द्वीपमें आकर उतर जानेका बार-बार विचार-स्मरण किया। स्मरण करते २ अपने मनोरथ की पूर्ति न होनेके कारण वे दोनों आर्त ध्यान में पड़ गये। (तएण सा रयणदीवदेवया ते मागदिदारए ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता असिफलगवग्गहत्था सत्तट्टतालपमाण उड्डु वेहास उप्पयइ २ ताहे उक्किट्ठाए जाव देव गईए वीहवयमाणी २ जेणेव मागदियदारए तेणेव आगच्छइ, आग च्छित्ता आसुम्भत्ता ते मागदियदारए खरफरुसनिट्टुखयणेहि एव वयासी) इतने में उस रत्नद्वीप की देवी ने उन दोनों मागदिदारकों को अपने अवधिज्ञान से देखा-देख कर वह तलवार और ढाल को हाथों में लेकर आकाश में सात आठ ताल वृक्ष प्रमाण ऊपर तक उछली उछल कर फिर वह उस उत्कृष्ट देव सबधि गति से शीघ्रता पूर्वक चलती २

जवानो, लाड्डु भेजवीने तेनी सहायथो तरता तरता रत्नद्वीपमा आवीने
उतग्वा सुधीने वारवार तेओ विचार करवा लाग्या आ अधी घटनाओतु
तेओ स्मरण करवा लाग्या आभ स्मरण करता करता न्यारे पोताना मनोरथो
सक्षण थता न लेया त्यारे तेओ आर्तध्यानमा पूणी गया।

(तएण सा रयणदीवदेवया ते मागदिदारए ओहिणा अभोए इ, अभोइत्ता असिफलगवग्गहत्था सत्तट्टतालपमाण उड्डु वेहास उप्पयइ २ ताहे उक्किट्ठाए जाव देव गईए वीहवयमाणी २ जेणेव मागदियदारए तेणेव आगच्छइ, आग च्छित्ता आसुम्भत्ता ते मागदियदारए खरफरुस निट्टुखयणेहि एव वयासी)

ओटलाभा ते रत्न द्वीपनी देवीओ ते जने भाकदी दारकेने पोताना
अवधिज्ञानथो जेध लीधा जने जेधने ते तरवार जने ढाल हाथमा लधने
आकाशमा सात आठ ताल वृक्ष प्रमाण ऊपर उछली जने त्यारभाइ ते

શીઘ્રમભિગચ્છન્તી યત્રૈવ માકન્દિકદારકૌ તત્રવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય 'આસુ
રતા' આશુરતા=શીઘ્ર ક્રુદ્ધા સતી તૌ માકન્દિકદારકૌ સ્વરપરપર્નિષ્ઠુરવચનૈ =
વર્કશકઠોરરુક્ષવચનૈરેતમવાદીન્—'હમો' इति सगर्वमामन्त्रणम्, હમો માકન્દિક
દારકૌ । યુગમ્ 'અપ્પત્થિયપત્થયા' અપ્રાર્થિયપ્રાર્થકૌ=મરણગાઝકૌ રતઃ, યદિ
સ્વલુ યુવા મયા માર્દ્વ વિપુલાન્ ભોગભોગાન્=શબ્દાદિવિષયાન્ ભૂજાનો વિહરત
'તો' તદા 'મે' યુવયોરુભયોરસ્તિ જીવિતમ્, અથ સ્વલુ યુવા મયા માર્દ્વ
વિપુલાન્ ભોગભોગાન્ ભુજાનો નો વિહરન્ત 'તો' તદા 'મે' યુવયોર્દ્વયોરપિ
અનેન 'નીલુપ્પલગવલગુલિય—અયસિકુસુમપ્પગાસેણ' નીલોત્પલગવલ્ગુલિકાઽ
તસીકુસુમપ્રમાણેન—નીલોત્પલ=નીલકમલ, ગવલ=મહિપશૃંગ, ગુલિકા=નીલી
'ગુલી' इति प्रसिद्धा, અતસીકુસુમમ્ — 'અલસી' इति प्रसिद्ध धान्यवि

જહા વે દોનો મરુદી સાર્યવાહ કે દારક થે વહા આઈ વર્હા આકર વહ
ક્રોધ સે ક્રોધિત હુઈ ઓર ડન માકદીદારકો સે વર્કશ-કઠોર એવ
રુક્ષ વચન બોલતી હુઈ હસ પ્રકાર કહને લગી—(હ મો માગદિદારયા !
અપત્થિય પત્થિયા જઈણ તુબ્હે મણ સદ્ધિ વિડલાઈ ભોગભોગાઈ ભુજ
માણા નો વિહરહ તો મે હમેણ નીલુપ્પલગવલગુલિયઅયસિયકુસુમ
પ્પમાસેણ અસિણા સુરધારેણ અસિણા રત્તગહમસુયાઈ માડયાહિ
ઉવસોહિયાઈ તાલ ફલાણીવસી સાઈ એગતે એહેમિ) અરે ઓ માગદી
કે દારકો ! માલૂમ પડતા હૈં કે તૂમ દોનો અપ્રાર્થિત-મૃત્યુ-કે પ્રાર્થક-
બાળક બન રહે હો— । યદિ તુમ લોગ મેરે સાથ વિપુલ શબ્દાદિ વિષયો
કો ભોગો તવ હી તુમ દોનોં કા જીવન સુરક્ષિત બચ સકતા હૈં યદિ
મેરે સાથ વિપુલ શબ્દાદિ વિષયોકો નહીં ભોગ સકતે હો તો દેખો—નીલ

ઉત્કૃષ્ટ દેવની ગતિથી અડપથી ચાલતી ચાલતી જ્યા તેઓ જ ને માકદી
સાથવાહના પુત્રો હતા ત્યા આવી પહોચી અને વર્કશ-કઠોર તેમજ રુક્ષ
વચનોનો પ્રયોગ કરતી માકદી દારકોને આ પ્રમાણે કહેવા લાગી કે—

(હ મો માગદિદારયા ! અપત્થિયપત્થિયા જડણ તુબ્હે મણ સદ્ધિ વિડલાઈ
ભોગભોગાઈ ભુજમાણા નો વિહરહ તો મે હમેણ નીલુપ્પલગવલગુલિય અયસિય
કુસુમપ્પગાસેણ અસિણા સુરધારેણ અસિણા રત્તગહ મસુયાઈ માડયાહિ ઉવસોહિ
યાઈ તાલ ફલાણીવ સીસાઈ એગતે એહેમિ)

અરે ઓ માકદી દારકો ! મને લાગે છે કે તમે અપ્રાર્થિત મૃત્યુને
કાંઈ રહ્યા છો હવે ને તમે મારી સાથે રહીને પુણ્ય પ્રમાણુમા શબ્દાદિ
વિષયોને લોગવવા માટે તૈયાર થાઓ તો જ તમારું જીવન બચી શકે તેમ
છે, ને તમે મારી સાથે શબ્દ વગેરે વિષયોને લોગવામા અચાનક ને ને

શેષપુષ્પ, તદ્વત્ પ્રકાશઃ=અતિશયમવર્ણો यस્ય સ તથા, તેન 'સુરધારેણ' શુર
ધારેણ શુરવત્તીક્ષ્ણધારેણ 'અસિના' અસિના=લઢ્ઢેન 'રત્તગડમસુયાઈ' રત્તગડ-
શ્મશ્રુકે રત્તૌ=તરુણાવસ્થત્વેન લાલિમાયુક્તૌ ગણ્ડૌ=કપોલૌ, શ્યામાનિ શ્મશ્રૂણિ ચ
અયોસ્તે, 'માઝ્યાઈ' માતૃકામ્યા=સ્વસ્વ માતૃમ્યા 'ઉપમોહ્યાઈ' ઉપશોભિતે
શ્રદ્ધાર્થસમારચિતકેશવેશત્વાદપૂર્વશોભાસમ્પન્ને 'સીસાઈ' શીર્ષે=ઉભયોર્મસ્તકૌ
'તાલફલાણીય' તાલફલેઐવ ઊત્ત્વા એકાન્તે 'એદેમિ'=પ્રક્ષિપાપિ । તતઃ સ્વલુ-
તૌ માકન્દિકદારકૌ રત્નદ્વીપદેવતયા અન્તિકે એતદ્વચન શ્રુત્યા ભીતૌ કરતલપરિ

કમલ, મહિષ શૃગ, નીલી, અલમી પુષ્પ કે સમાન અતિશય શ્યામ
વર્ણ વાલી હસ તલવાર સે કિ જો છુરા કી ધાર કે સમાન તીક્ષ્ણ ધાર
વાલી હૈ તુમ દોનોં કે મસ્તકોં કો કિ જો તરુણાઈ સે લાલ હુએ કપોલોં
સે યુક્ત હૈં, તથા અપતી ૨ જનનિયોં-માતાઓં-દ્વારા જિન પર શોભા
નિમિત્ત સમારચિત કેશવેશ સે અપૂર્વ સૌદર્ય વાલા હૈ, તાલ ફલ કે
સમાન કાટકર એકાન્ત સ્થાન મેં ફેકદૂગી (તણ તે માગદિય દારગા
રયણદીવ દેવયાએ અતિએ સોચ્ચા મીયા કરયલ. એવ જણ દેવાણુ
પિયા ! વહસ્સસિ તસ્સ આણા ઉવવાયવયણનિદેસે ચિદ્વિસ્સામો-ત-
ણ સા રયણદીવદેવયા તે માગદિયદારણ ગેળહતિ, ૨ જેણેવ પાસાયવ
હિંસણ તેણેવ ઉવાગચ્છહ ૨ અસુખ પોગ્ગલાવહારકરેહ ૨ સુખપોગ્ગલ
પવ્વેવ કરેહ કરિત્તા પચ્છાતે હિં વિઝલાહ ભોગભોગાહ ભુજમાણિ વિહરહ
કલ્લાકલ્લિં ચ અમય ફલાહ ઉવણેહ) હસ પ્રકાર વે દોનોં માકદો દારક

બુઝો નીલકમળ, મહિષશૃગ, નીલી અળશીના પુષ્પની જેમ ખૂબજ શ્યામ
રંગવાળી આ તરવારથી-કે જે છરાની ધારના જેવી તીક્ષ્ણ ધારવાળી છે-તમારા
અનેના માથાએ કે જેએ જવાનીથી લાલ લાલ થયેલા કપોલોવાળા છે,
કાળી દાઢી અને મૂછોથી શોભી રહ્યા છે તેમજ પોતપોતાની માતાએ વડે
કેશ વિન્યાસ કરવાથી અપૂર્વ સૌદર્યથી જેઓ દીપી રહ્યા છે તાલફળની જેમ
કાપીને હુ નિર્જન સ્થાન ફેકી દઈશ

(તણ તે માગદિયદારગા રયણદીવદેવયાએ અતિએ સોચ્ચા મીયા કરયલ.
એવ જણ દેવાણુપિયા ! વહસ્સસિ તસ્સ આણા ઉવવાયવયણનિદેસે ચિદ્વિસ્સામો
તણ સા રયણદીવદેવયા તે માગદિયદારણ ગેળહતિ ૨ જેણેવ પાસાયવહિંસણ
તેણેવ ઉવાગચ્છહ ૨ અસુખપોગ્ગલાવહાર કરેહ ૨ સુખપોગ્ગલપવ્વેવ કરેહ
કરિત્તા પચ્છાએહિં વિઝલાહ ભોગ ભોગાહ ભુજમાણી વિહરહ કલ્લાકલ્લિં ચ
અમયફલાહ ઉવણેહ)

गृहीत गिरजापत्तं दशनख मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादिष्टाम्-एव च य खलु कञ्चित्प्रेयाणामपि प्रेष्य हे देवानुप्रिये । त्वमस्मदर्थं वदिष्यसि यदुत 'युवयोरय माराय' इति, तदा 'तस्स' तस्यापि 'आणाउवयायवयणनिद्देसे' आज्ञोपपा- तवचननिर्देशे-आज्ञा=विधेयतयाऽऽदेशः, उपपातः=सेवा, वचनम्=अनियत आदेश- एव निर्देशः=नियतार्थमुत्तरम्, एतेषा समाहारः, तत्र स्थास्याय=उपस्थास्यावः किं पुनर्भवत्याः ? तदनुमत्या तत्र दामानुदासस्यापि दासत्व स्वीकरिष्याव इति भावः । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिकद्वारकौ गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव स्वस्य प्रासादावतसकः=प्रधानवासभवन तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तयोः शरीरे अशुभपुद्गलापहार करोति, कृत्वा शुभ पुद्गलप्रक्षेप करोति कृत्वा पश्चात् ताभ्यां

रयण देवी (रत्नद्वीपदेवी) के वचन सुनकर भयभीत हो गये । पश्चात् उन्हो ने दोनों होयोंकी अजलि बनाकर और उसे अपने मस्तक पर रख- कर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये । आपका यदि कोई नौकर का भी नौकर होगा और आप उसकी सेवा करनेके लिये भी हमसे कहेंगी-तो हम उसकी भी आज्ञा सेवा, आदेश और निर्देश करने के लिये कटि बद्ध हूँ-तो फिर आपकी सेवा करने आदि की तो बात ही क्या है ।

आपकी आज्ञा से तो हम आपके दासों के भी दासों की दासता स्वीकार करने के लिये तैयार है । तो फिर आपकी दासता के लिये तो कहना ही क्या है । इस प्रकार माकदी-द्वारको की बात सुनकर उस रयणादेवी (रत्न द्वीप देवी) ने उन्हें अपने साथ लिया और लेकर वह अपने श्रेष्ठ प्रासाद में आ गई । वहा आकर उसने उन दोनों के शरीर में से अशुभ पुद्गलों को दूर किया और शुभ पुद्गलों को डाल दिया ।

रयणादेवीना वचनो साज्जणीने जने माकदी द्वारको लयलीत थर्छ गया तेओ जनेओ छायोनी अजली जनावी अने तेने मस्तके भूझीने आ प्रमाणे कहु डे डे देवानुप्रिये । तभारा नोकर ने पणु कोछ नोकर डोय अने तभे अभने तेनी नोकरा पणु करावशे तो अभे तेनी पणु आज्ञा, आदेश अने हुकम प्रमाणे अनुसरवा तैयार छीओ तो तभारी सेवानी बात न री कडेवी ?

तभारा हुकमयी तो अभे तभारा दासोना दासोनी दासता स्वीकारवा तैयार छीओ तो तभारी दासता भाटे डवे अभादे कडेवानुज शु रडे ? आ प्रमाणे माकदी द्वारकोनी बात साज्जणीने रयणा देवी (रत्न द्वीप देवी) ओ तेओने पोतानी माथे लीधा अने लधने ते पोताना ओक सौथी आग भडेवमा गछ त्या जधने तेओ तेमना जरीरमाथी अशुल पुद्गलो हर ज्या अने शुल

सार्धं विपुलान्=भोगभोगान्=शब्दादिविषयान् भुजाना विहरति=आस्तेस्म,
'कल्लाकल्लिच' कल्याकलिय=प्रतिदिनं च अमृतफलानि=अमृततुल्यफलानि 'उव-
णेइ' उपनयति=आनीय ददाति, तौ च प्रतिदिन तानि फलानि भुजानौ तथा
सार्धं कामभोगान् सेवमानौ तिष्ठतः इति भावः ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तएणं सा रयणदीवदेवया सक्कवयणसंदेसणं सुट्ठि-
एणं लवणाहिवइणा लवणसमुद्दे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठिय-
व्वेत्ति जं किंचि तत्थ तणं वा पत्त वा कट्ठं वा कयवर वा
असुइं पूतिय दुरभिगंधमचोक्खं तं सव्वं आहुणिय२ तिसत्त-
खुत्तो एगते एडेयव्वंतिकट्ठुणिउत्ता, तएण सा रयणदीवदेवया
ते मागंदियदारए एवं वयासी—एवं खल्लु अह देवाणुप्पिया ।
सक्क० सुट्ठिएणं त चेव जाव णिउत्ता, तं जाव अह देवा० ।
लवणसमुद्दे जाव एडेमि ताव तुब्भे इहेव पासायवडिंसए सुह-
सुहेण अभिरममाणा चिट्ठह, जइ णं तुब्भे एयसि अंतरंसि
उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे
पुरच्छिमिल्ल वणसड गच्छेज्जाह, तत्थण दो ऊऊ सया साहीणा
त जहा-पाउसे य वासारत्तेय,—(गाहा) तत्थ उ कदलसिलिधदंतो
णिउरवरपुप्फपीवरकरो । कुडयज्जुणणविसुरभिदाणो पाउसउ-

पश्चात् उन दोनो के साथ विपुल भोग भोगों—शब्दादि विषयों को
—भोगने लगी । प्रतिदिन वह उन्हें अमृत फलों को लाकर देती और
वे दोनों उन्हें खाते । इस प्रकार वे दोनों सार्धवाह दारक उसके साथ
वहा कामभोगों को भोगते हुए रहने लगे । “सू० ३”

पुद्गलोने भूझी दीधा त्थार पछी रयणा देवी तेओ । अनेनी साथे विपुल काम
भोगो शब्द वगेरे विषयोने । उपभोग करती रहैवा लागी । उभेशा ते तेओ ।
अनेने अमृत इणो लावीने आपती अने तेओ । पणु इणो आता आ रीते
अने सार्धवाह पुत्रो तेनी साथे काम भोगो भोगवता रहैवा ॥ ३ ॥

ऊगयवरो साहिणो ॥१॥ तत्थ य-सुरगोवमणिविचित्तो ददुदुर
कुलरसियउज्जररवो । वरहिणविदपरिणद्धसिहरो वासारत्तो
उऊपव्वतो साहिणो ॥२॥ तत्थणं तुव्वमे देवाणुप्पिया । बहुसु
वावीसु य जाव सरसरपतियासु बहुसु आलीघरणसु य माली-
घरणसु य जाव कुसुमघरणसु य सुह सुहेणं अभिरममाणा
विहरेज्जाह, जइणं तुव्वमे एत्थवि उव्विग्गा वा उस्सुया वा
उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुव्वमे उत्तरिह्ल वणसड गच्छेज्जाह,
तत्थ णं दो ऊऊ सया साहीणा तं० सरदो य हेमंतो य, तत्थ उ
सणसत्तवण्णकउओ नीलुप्पलपउमनलिणसिगो । सारसचक्र-
वायरवित्तघोसो सरयऊऊगोवती साहीणो ॥१॥ तत्थ य सिय-
कुदधवलजोण्हो कुसुमितलोद्धवणसडमडलतलो । तुसारदग-
धारपीवरकरो हेमंतऊऊससी सया साहीणा ॥ २ ॥ तत्थणं
तुव्वमे देवाणुप्पिया । वावीसु य जाव विहरेज्जाह, जइणं तुव्वमे
तत्थवि उव्विग्गा वा जाव उस्सुया वा भवेज्जाह तो णं तुव्वमे
अवरिह्ल वणसड गच्छेज्जाह, तत्थणं दो ऊऊ साहीणा, तं जहा
वसते य गिम्हे य, तत्थ उ सहकारचारुहारो किंसुयकणिण-
यारासोगमउडो । ऊसिततिलगवउलायवत्तो वसतउऊणरवती
साहीणो ॥ १ ॥ तत्थ य पाडलसिरीससलिलो मालियावासति-
यधवलवेलो । सीयलसुरभि अनिलमगरचरिओ गिम्हऊऊसा-
गरो साहीणो ॥ २ ॥ तत्थ णं बहुसु जाव विहरेज्जाह, जइ णं
तुव्वमे देवा० । तत्थ वि उव्विग्गा उस्सुया भवेज्जाह तओ तुव्वमे
जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह, मम पाडिवालेमा-

सार्धं विपुलान्=भोगभोगान्=शब्दादिविषयान् भुञ्जाना विहरति=आस्तेस्म,
'कल्लाकल्लिच' कल्याकल्लिय=प्रतिदिनं च अमृतफलानि=अमृततुल्यफलानि 'उव-
णेइ' उपनयति=भानीय ददाति, तौ च प्रतिदिन तानि फलानि भुञ्जानौ तथा
सार्धं कामभोगान् सेवमानौ विपुतः इतिभारः ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तएणं सा रयणदीवदेवया सक्कवयणसदेसणं सुट्ठि-
एणं लवणाहिवइणा लवणसमुद्धे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठिय-
व्वेत्ति जं किंचि तत्थ तणं वा पत्त वा कट्ठं वा कयवर वा
असुइं पूतियं दुरभिगंधमचोक्खं त सव्वं आहुणिय२ तिसत्त-
खुत्तो एगते एडेयव्वंतिकट्ठुणिउत्ता, तएणं सा रयणदीवदेवया
ते मागंदियदारए एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया !
सक्क० सुट्ठिएणं त चेव जाव णिउत्ता, तं जाव अह देवा० !
लवणसमुद्धे जाव एडेमि ताव तुब्भे इहेव पासायवडिसए सुह-
सुहेण अभिरममाणा चिट्ठह, जइ णं तुब्भे एयसि अंतरंसि
उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे
पुरच्छिमिल्ल वणसड गच्छेज्जाह, तत्थण दो ऊऊ सया साहीणा
त जहा-पाउसे य वासारत्तेय,—(गाहा) तत्थ उ कदलसिलिधदंतो
णिउरवरपुप्फपीवरकरो । कुडयज्जुणणविसुरभिदाणो पाउसउ-

पश्चात् उन दोनों के साथ विपुल भोग भोगों—शब्दादि विषयों को
—भोगने लगी । प्रतिदिन वह उन्हें अमृत फलों को लाकर देती और
वे दोनों उन्हें खाते । इस प्रकार वे दोनों सार्धवाह दारक उसके साथ
वहा कामभोगों को भोगते हुए रहने लगे । “सू० ३”

पुद्गलोने भूझी दीधा त्यार पछी रयणा देवी तेओ जनेनी साथे विपुल काम
लोगो शण्ड वगेरे विषयेनो उपलोग करती रडेवा लागी डमेशा ते तेओ
जनेने अमृत इणो लावीने आपती जने तेओ पणु इणो आता आ रीते
जने सार्धवाड पुत्रो तेनी साथे काम लोगो लोगवता रडेवा सूत्र ३ ॥

किमर्थ ? मित्याह—‘जकिंचि’ इत्यादि । यत्किञ्चित् तृण वा, पत्र वा, काष्ठं वा, कचवर वा, अशुचि=विष्टा, पूतिक=अर्धपकशोणित, दुरभिगय=दुर्गन्धयुक्त वस्तुजातम् ‘अचोक्ख’ अचोक्षम्=अपवित्र तिष्ठति तत्सर्वम् ‘तिसत्तखुत्तो’ तिसमकृत्यः=एकत्रिंशतिवारम्० ‘आहुणिय २’ आधूय २ अपनीय २ एकान्ते ‘एडेयव्व’ त्यक्तव्यम् इति कृत्वा इत्य ऋत्तुं ‘णिउत्ता’ नियुक्ता=अधिकृता=आज्ञप्तेत्यर्थः । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिदारकौ एवमवादीत्—एव खलु देवानुप्रियो ! शक्रवचनसदेशेन सुस्थितेन० तदेव यावत्—अहं नियुक्ता, तद् यावदहं देवानुप्रियो ! लवणसमुद्रे ‘जाव’ यावत्—यावन्तुद्धेन तत्र गत्वा

चारों तरफ से चक्कर लगाओं (ज किंचि तत्थ तणवा पत्तवा कट्ट वा कयवर वा असुड पूतिय दुरभिगधमचोक्ख त सव्व आहुणिय आहुणिय तिसत्तखुत्तो एगते एडेयव्व ति ऋत्तु निउत्ता) उसमें जो कुछ भी तुम्हें वहा तृण, पत्र, काष्ठ, कूडा, विष्टा अर्धपक शोणित अथवा दुर्गन्धित वस्तु अदि अपवित्र पदार्थ नजर आवें उन सबको तुम एकत्रिस बार मे वहा से हटा २ कर एकान्त मे डाल देना " इस काम पर नियुक्त किया । (तएण सा रयणदीवदेवया ते मागदियदारण एव वयासी—एव खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्क० सुट्टिएण त चेव जाव णिउत्ता) इसके बाद उस रत्न द्वीप देवता—रयणा देवीने उन माकदी दारकों से ऐसा कहा—देवानु प्रियो ! मैं सौवर्मेन्द्र की आज्ञा से लवणाधिपति सुस्थित देवके द्वारा २१ बार लवण समुद्र के चारो ओर चक्कर लगाने के लिये आज्ञप्त की गई हूँ अतः (त जाव अहं देवाणु ० लवणसमुद्रे

(ज किंचि तत्थ तणवा पत्तवा कट्ट वा कयवर वा असुड पूतिय दुरभिगध मचोक्ख त सव्व आहुणिय आहुणिय ति खुत्तो एगते एडेयव्व ति ऋत्तु निउत्ता)

अने तेमा गमे त्या तृण, पत्र, काष्ठ, कचरो, विष्टा अर्धपक शोणित (लोही) अथवा तो दुर्गन्धित वस्तु अपवित्र पदार्थ देणाय तो तेने तमे अेकवीश वणत इरता इरता त्याथी लवने अेजातमा हर इेडी हो सुस्थित देवे देवन्दनी आशाथी आ काम रयणादेवीने सोप्पु

(तएण सा रयणदीवदेवया ते मागदियदारण एव वयासी एव खलु अहं देवाणुप्पिया सक्क० सुट्टिए ण त चेव जाव णिउत्ता)

त्यार पछी ते रत्नद्वीप देवता रयणा देवीअे माकदीदरकोने कह्यु के डे देवानुप्रियो ! मने सौधर्मेन्द्रनी आशाथे लवणाधिपति सुस्थित देव वडे लवण समुद्रनी आरे णाणुअे अेकवीशवार अक्कर भारवानी आशा भणी छे अेटला भाटे

णार चिट्ठेज्जाह, माण तुव्भे दक्खिणिह्ठ वणसंड गच्छेज्जाह,
तत्थ ण सहं एगे उग्गविसे चडविसे घोरविसे महाविसे अइकाय
मुहाकाए जहा तेयनिसग्गे मसिमहिसामूसाकालए नयणवि
सेरोसपुण्णे अजणपुजनियेरप्पगासे रत्तच्छे जमलजुयलचंचल-
चलतजीहे धरणि यलवेणिभूए उक्कडफुडकुडिलजडिलकक्खडवि-
यडफडाडोवकरणदच्छे लोगाहारधम्ममाणधम्मधर्मेतघोसे अणा-
गलियचंडतिव्वरोसे समुहि तुरिय चवल धम्मधम्मतदिट्ठीविसे
सप्पे य परिवसति, माण तुव्भ सरीरगस्से वावत्ती भविस्सइ,
ते मागदियदारए दोच्चपि तच्चपि एव वयइ वइत्ता वेउव्वियसमु-
ग्घाएण समोहइ समोहणित्ता ताए उक्किट्ठाए लवणसमुद्द
तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठिय पयत्ता यावि होत्था ॥ सू०४ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता=रत्नद्वीपदेवी
‘सक्कवयणसदेसेण’ शक्रवचनसदेशेन=शक्रेन्द्राज्ञया ‘सुट्ठिएण’ सुस्थितेन=
सुस्थितनामकदेवेन, ‘लवणाहिण्डणा’ लवणाधिपतिना=लवणसमुद्रस्वामिना नियु-
क्तेत्यन्वयः नियोजनप्रकारमाह—लवणसमुद्र ‘तिसत्तखुत्तो’ त्रिसप्तकृत्य—एकविं-
शतिवारम् ‘अणुपरियट्ठियव्वे’ अनुपर्यटितव्यः समन्तात्परिभ्रमणीयः इति,

“तएण सा रयण दीव देवया” इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सक्कवयणसदेसेण) देवेन्द्रकी आज्ञासे
(लवणाहिण्डणा) लवणाधिपति (सुट्ठिएण) सुस्थित देवने (सा-
रयणदीवदेवया) उस रत्नद्वीप देवता-रयणा देवी को (लवणस-
मुद्दे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठिय व्वेत्ति) लवणसमुद्र के तुम २१ बार

(तएण सा रयणदीव देवया ‘इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थार आह (सक्कवयणसदेसेण) देवेन्द्रकी आज्ञाथी (लवणा-
हिण्डणा) लवण समुद्रना अधिपति (सुट्ठिएण) सुस्थित देवे (सा रयणदीवदेवया)
ते रत्न द्वीप-देवता-रयणा देवीने लवणसमुद्दे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठिय व्वेत्ति)
६६७ के लवण समुद्रकी आरे आनुम्मे तमे ओकगीश वप्पत अक्खर लगावे।

किमर्थ ? मित्याह—‘जकिंचि’ इत्यादि । यत्किञ्चित् तृण वा, पत्र वा, काष्ठं वा, कचवर वा, जगुचि=विष्टा, पूतिक=अर्धपकशोणित, दुरभिगध=दुर्गन्धयुक्त वस्तुजातम् ‘अचोक्ख’ अचोक्षम्=अपवित्र तिष्ठति तत्सर्वम् ‘तिसत्तखुत्तो’ त्रिसप्तकत्व.=एकत्रिंशतिवारम्० ‘आहुणिय २’ आहूय २ अपनीय २ एकान्ते ‘एडेयव्व’ त्यक्तव्यम् इति कृत्वा इत्य ऋत्तुं ‘णिउत्ता’ नियुक्ता=अधिकृता=आज्ञातेत्यर्थः । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिदारकौ एवमवादीत्—एव खलु देवानुप्रियो ! शक्रवचनसदेशेन सुस्थितेन० तदेव यावत्—अहं नियुक्ता, तद् यावद्दहं देवानुप्रियो ! लवणसमुद्रे ‘जाव’ यावत्—यावच्छब्देन तत्र गत्वा

चारों तरफ से चक्कर लगाओं (ज किंचि तत्थ तणवा पत्तवा कट्ट वा कचवर वा असुड पूतिय दुरभिगधमचोक्ख त सव्व आहुणिय आहुणिय तिसत्तखुत्तो एगते एडेयव्वति कट्टु निउत्ता) उसमे जो कुछ भी तुम्हें वहा तृण, पत्र, काष्ठ, कडा, विष्टा अर्धपक शोणित अथवा दुर्गन्धित वस्तु अदि अपवित्र पदार्थ नजर आवें उन सबको तुम एकतीस बार मे वहा से हटा २ कर एकान्त में डाल देना " इस काम पर नियुक्त किया । (तएण सा रयणदीवदेवया ते मगदियदारण एव वयासी—एव खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्क० सुट्टिएण त चेव जाव णिउत्ता) इसके बाद उस रत्न द्वीप देवता—रयणा देवीने उन माकदी दारकों से ऐसा कहा—देवानु प्रियो ! मे सौधर्मेन्द्र की आज्ञा से लवणाधिपति सुस्थित देवके द्वारा २१ बार लवण समुद्र के चारो ओर चक्कर लगाने के लिये आजस की गई हूँ अतः (त जाव अहं देवाणु ० लवणममुद्रे

(ज किंचि तत्थ तणवा पत्तवा कट्ट वा कचवर वा असुड पूतिय दुरभिगध मचोक्ख त सव्व आहुणिय आहुणिय ति खुत्तो एगते एडेयव्व ति ऋट्टु निउत्ता)

अने तेभा गमे त्या तृण, पत्र, काष्ठ, कचरा, विष्टा अर्धपक शोणित (लोही) अथवा तो दुर्गन्धित वस्तु अपवित्र पार्थ देणाय तो तेने तमे ओकवीश वज्रत करता करता त्याथी लघने ओजातमा हर देडी हो सुस्थित देवे देव-द्वीप आज्ञा १ आ काम रयणादेवीने सोप्यु

(तएण सा रयणदीवदेवया ते मागदियदारण एव वयासी एव खलु अहं देवाणुप्पिया सक्क० सुट्टिए ण त चेव जाव णिउत्ता)

त्यार पछी ते रत्नद्वीप देवता रयणा देवीने माकदीदरकोने कुछ के डे देवानुप्रियो ! अने सौधर्मेन्द्रनी आज्ञाथे लवणाधिपति सुस्थित देव वडे लवण समुद्रनी आरे जायुने ओकवीशवार चक्कर मारवानी आज्ञा भणी छे ओटला माटे

તૃણાદિકમપનીય ચૈકાન્તે ત્યજામિ તાવદ્ યુવામ્ હૈવ પ્રાસાદાવતસકે સુલ્લસુલે
નાભિરમમાણૌ તિષ્ઠતમ્, યદિ લલુ યુવામ્, પતસ્મિન્નતરે 'ઉન્વિગ્ગાવા' ઉદ્વિ
ગ્નોવા=ભત્રાવસ્થાનેન લિન્નો, 'ઉસ્સુયા વા=ઉત્કઠિતૌ મનોરજ્જનમનસ્કાવિત્યર્થઃ,
'ઉપ્પુયા વા' ઉત્પ્લુતૌ ક્રીડોત્કઠિતમાનસૌ વા 'ભવેજ્જાહ' ભવેતમ્ યદ્યત્રા-
સ્થાનેન યુવયોર્મનસ્યુદ્વેગ ઉત્કઠ ધ્રીડનેચ્છા વા ભવેત્ 'તોણ' તદા લલુ યુવા
'પુરત્થિમિલ્લ' પૌરસ્ત્ય=પૂર્વદિશાસસ્થિત વનપણ્ડમ્=ઉદ્યાન 'ગચ્છેજ્જાહ' ગચ્છત
યુવાભ્યા રમ્ય પૂર્વદિશોદ્યાન ગન્તવ્યમિત્યર્થઃ, યતોઠિ તત્ર લલુ ઠી ઋતૂ સદા
'સાહીણા', સ્વાધીની=વર્તમાનોસ્ત, તદ્યથા- 'પાઉસેય વાસારત્તેય' પ્રવૃદ્ધ
વર્ષારાત્રશ્ચ । તત્ર પ્રાવૃદ્ધ-અપાઢ શ્રાવણૌ વર્ષારાત્રઃ-ભાદ્રપદાશ્વિનો, તરિમિન્ વનપણ્ડે

જાવ એડેમિ-તાવ તુબ્બે હૈવ પાસાયવહિસે સુહ સુહેણ અભિરમમાણા
ચિદ્દહ જહ્ણ તુબ્બે એયસિ અતરસિ ઉન્વિગ્ગા વા ઉસ્સુયા વા ઉપ્પુયા વા
ભવેજ્જાહ તોણ તુબ્બે પુરચ્છિમિલ્લ વણસડ ગચ્છેજ્જાહ)મેં જવતક ૨૧ વાર
ચક્કર લગાકર વહાકે તૃણ કાષ્ઠ આદિ દૂર ફેંકનેકે કામમેં લગી રહૂ તવ
તક હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ દોનોં હસી શ્રેષ્ઠ પ્રાસાદમેં આનન્દસે રહના । યદિ
યહાં રહતેર તુમ્હારે ચિત્ત ઉદ્વિગ્ન હો જાવે અથવા મનોરજનકે લિયે ઉત્ક-
ઠિત હો જાવે અથવા ક્રીડાકરને કે લિયે લાલાયિત થન જાવે તો તુમ
દોનોં પૂર્વ દિશા મેં સસ્થિત ઉદ્યાન મેં ચલે જાના (તત્થણ દો ઝ ઝ
સયા સાહીણા ત જહા પાઉસેય વાસારત્તે ય) વહા સદા દો ઋતુએ
વર્તમાન રહતી હેં । એકતો પ્રાવૃદ્ધ ઋતુ દૂસરી વર્ષા રાત-આષાઢ શ્રાવણ
યે નો મહિને પ્રાવૃદ્ધ ઋતુ કે હેં-તથા ભાદ્રપદ એવ આશ્વિન યે દો માસ

(ત જાવ અહ દેવાણુ૦ લવણસમુદ્દે જાવ એડેમિ-તાવ તુબ્બે હૈવ પસાય-
વહિસે સુહ સુહેણ અભિરમમાણા ચિદ્દહ જહ્ણ તુબ્બે એયસિ અતરસિ ઉન્વિગ્ગાવા
અસ્સુયા વા ઉપ્પુયાવા ભવેજ્જાહ તો ણ તુબ્બે પુરચ્છિમિલ્લ વણસડ ગચ્છેજ્જાહ)

હુ બ્યા સુધી સમુદ્રના એકવીશ ચકકર મારી ત્યાના તૃણ કાષ્ઠ વગેરેને દૂર
ફેંકવાના કામમા પરોવાઈ રહુ ત્યા સુધી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બને આજ
શ્રેષ્ઠ મહેલમા સુખેથી રહેલો અહીં રહેતા બે તમને કટાળો આવવા લાગે,
મન તમારૂં ઉદ્વિગ્ન થઈ બંધ મનોરજન કરવાની તમારી ઈચ્છા થાય કે ક્રીડા
કરવાની ઉત્કટ અભિલાષા તમારામા ઉત્પન્ન થાય તો બંને પૂર્વ દિશાના
ઉદ્યાનમા જતા રહેલો (તત્થણ દો ઝ ઝ સયા સાહીણા ત જહા પાઉસેય વાસા
રત્તેય) તે ઉદ્યાનમા હરહ મેશા બે ઋતુઓ હાજર રહે છે એક પ્રાવૃદ્ધ ઋતુ
બંને બીજી વર્ષા અપાઢ શ્રાવણ આ બે મહિના પ્રાવૃદ્ધ ઋતુના છે અને
ભાદ્રપદ અને આસો આ બે મહિના વર્ષા ઋતુના છે

શ્રાવણાદિ માસચતુષ્ટયસદૃશો રમણીયઃ સમય સદા વર્તત્ત્વમિતિભાવઃ । અત્ર વનપણ્ડે
પ્રાવૃદ્ધઋતુર્ગજરૂપકેણ વર્ણ્યતે-તત્રતુ=તસ્મિન્ ' પાઝસઝઝગયવરો ' પ્રાવૃદ્ધઋતુગ-
જવર ' સાહીણો ' રવાધીનઃ અરિતસ્ત્વેન સ્વાયત્ત સદા વર્તત્તે । સ કીદૃશ ?
ઇત્યાદિ- ' કદલસિલિઘદતો ' કદલસિલિન્ધ્રદન્તઃ-કન્દલાઃ=નૂતનલતા, તત્પ્ર-
ધાનાઃ સિલિન્ધ્રાઃ યે પ્રાવૃષ્ટિ પુષ્પ્યન્તિ શ્વેતકુસુમયુક્તાશ્ચ ભવન્તિ તત્પ્ર ધવલત્વ-
સાધર્મ્યાત્ દત્તા યમ્ય સ તથોક્તા, પુનઃ ' ણિઝરવરપુષ્પપીવરકરો ' નિકુરવર-
પુષ્પપીવરકરઃ નિકુર =વૃક્ષવિશેષસ્તસ્ય વરપુષ્પાણિ=આયામત્વેન-એકૈકોપરિ નિસ્સૃ-
તાનિ શુણ્ડાકારેણ પરિણતાનિ તાન્યેવ પીવરઃ=સ્થૂલઃ કરઃ=શુણ્ડા યસ્ય સ તથોક્તઃ।
પુનઃ ' કુઢયઙ્ગુણનીવસુરભિદાણો ' કુટલાર્જુનનીપસુરભિદાનઃ-કુટજાર્જુનનીપવૃક્ષ-
પુષ્પાણિ, તેષા સુરભિઃ=સુગન્ધઃ સ એવદાન=મદજલ યસ્ય સ તથોક્ત । એતાદૃશો
વર્ષા ઋતુ ગજરાજઃ સદૈવ તત્ર વર્તત્ત્વમિતિભાવઃ ॥ ૧ ॥ અથ વર્ષાઋતુઃ પર્વત,

વર્ષા રાત્રી કે હૈં । (તત્પ્ર ૩-કદલા સિલિઘદતો ણિઝરવરપુષ્પપીવર
કરો, કુઢયઙ્ગુણનીવ સુરભિદાણો પાઝસ ઝઝ, ગયવરો સાહીણો " ૧ ")
इन चार महिनो में जैसा समय रमणीय रहता है-वैसा समय वहां
सदा रमणीय बना रहता है । सूत्रकार वनपण्ड वर्तमान प्रावृड ऋतु का
गज के रूपक से वर्णन करते हुए कहते हैं-कि कदल-नवीन लताएँ
और सिलिध्र-जो वर्षा में फूलते हैं और फूल जिनका सफेद होता है
-ये दोनों ही जिसके दात हैं । निकुर-वृक्ष विशेष-के उत्तम पुष्प ही
जिसके पीवर शूण्डादृढ हैं तथा कुटज अर्जुन एवं नीप वृक्षोंके पुष्पोंकी
सुगंधि ही जिसका मदजल है ऐसा वर्षाऋतु रूप गजराज उस वनमें सदा
विचरण करता रहता है । निकुरवृक्षके पुष्प एक एकके ऊपर निकलते हैं ।

(તત્પ્ર ૩ કદલસિલિઘદતો ણિઝરવરપુષ્પપીવરકરો કુઢયઙ્ગુણનીવ સુર-
ભિદાણો પાઝસ ઝ ઝ ગયવરો સાહીણો ॥ ૧ ॥)

એ આર મહિનામા વાતાવરણ જેવું સોહામણું રહે છે તેવું ત્યા હરહ મેશા
સોહામણું રહે છે સૂત્રકાર વનપણ્ડમા વર્તમાન પ્રાવૃદ્ધ ઋતુનું હાથીના રૂપકથી
વર્ણન કરતા કહે છે કે-કદલ-નવી લતાઓ-અને સિલિધ્ર-કે જે વર્ષા કાળમા
ફૂલે છે અને જેના ફૂલ સફેદ હોય છે-આ બંને જ જેના દાતો છે નિકુર-
વૃક્ષ વિશેષ-ના ઉત્તમ પુષ્પો જ જેની સુડાળ સૂદ છે તેમજ કુટજ, અર્જુન
અને નીપ વૃક્ષોના પુષ્પોની સુવાસ જ જેનો મદ છે વર્ષા ઋતુ રૂપી એવો
ગજરાજ તે વનમા હ મેશા વિચરણ કરતો જ રહે છે નિકુર વૃક્ષના પુષ્પો
કનાઉ પર નીકળે છે

તૃણાદિકમપનીય ચૈકાન્તે ત્યજામિ તાવદ્ યુવામ્ હૈવ પ્રાસાદાવતસકે સુત્રસુત્રે
નાભિરમમાણો તિષ્ઠતમ્, યદિ સ્વલુ યુવામ્, એતસ્મિન્નતરે 'ઉન્વિગ્માવા' ઉદ્ધિ
ગ્નોવા=અત્રાવસ્થાનેન સ્વિન્નો, 'ઉસ્સુયા વા=ઉત્ક્રાંતિતૌ મનોરજનમનસ્કાવિત્યર્થઃ,
'ઉપ્પુયા વા' ઉત્પ્લુતૌ ક્રીડોત્ક્રાંતિતમાનસૌ વા 'ભવેજ્જાહ' ભવેતમ્ યઘત્રા-
સ્થાનેન યુવયોર્મનસ્યુદ્વેગ ઉત્ક્રાંઠ ક્રીડનેચ્છા વા ભવેત્ 'તોણ' તદા સ્વલુ યુવાં
'પુરત્થિમિલ્લ' પૌરસ્ત્ય=પૂર્વદિશાસસ્થિત વનપણ્ડમ્=ઉદ્યાન 'ગચ્છેજ્જાહ' ગચ્છત
યુવાભ્યા રમ્ય પૂર્વદિશોદ્યાન ગન્તવ્યમિત્યર્થઃ, યતોદિ તત્ર સ્વલુ દ્વૌ ઋતૂ સદા
'સાહીણા' સ્વાધીનો=વર્તમાનોસ્ત, તદ્યથા- 'પાઉસેય વાસારત્તેય' પ્રવૃદ્ધ
વર્ષારાત્રથ । તત્ર પ્રાવૃદ્ધ-અષાઢ શ્રાવણો વર્ષારાત્રઃ-ભાદ્રપદાશ્વિનો, તસ્મિન્ વનપણ્ડે

જાવ એદેમિ-તાવ તુભે હૈવ પ્રાસાદાવતસકે સુહ સુહેણ અભિરમમાણા
ચિદ્દહ જઙ્ઘણ તુભે એયસિ અતરસિ ઉન્વિગ્મા વા ઉસ્સુયા વા ઉપ્પુયા વા
ભવેજ્જાહ તોણ તુભે પુરચ્છિમિલ્લ વણસડ ગચ્છેજ્જાહ)મેં જઘતક ૨૧ વાર
ચક્કર લગાકર વહાકે તૃણ કાષ્ટ આદિ દૂર ફેંકનેકે કામમેં લગી રહૂ તવ
તક હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ દોનોં હસી શ્રેષ્ઠ પ્રાસાદમેં આનન્દસે રહના । યદિ
ઘર્હા રહતેર તુમ્હારે ચિત્ત ઉદ્ધિગ્ન હો જાવે અથવા મનોરજનકે લિયે ઉત્ક્ર-
ાંતિત હો જાવે અથવા ક્રીડાકરને કે લિયે લાલાયિત ઘન જાવે તો તુમ
દોનોં પૂર્વ દિશા મે સસ્થિત ઉદ્યાન મેં ચલે જાના (તત્થણ દો ઝ ઝ
સયા સાહીણા ત જહા પાઉસેય વાસારત્તે ય) વહા સદા દો ઋતુએ
વર્તમાન રહતી હૈં । એકતો પ્રાવૃદ્ધ ઋતુ દસરી વર્ષા રાત-આષાઢ શ્રાવણ
યે નો મહિને પ્રાવૃદ્ધ ઋતુ કે હૈં-તથા ભાદ્રપદ એવ આશ્વિન યે દો માસ

(ત જાવ અહ દેવાણુ૦ લવણસમુદ્દે જાવ એદેમિ-તાવ તુભે હૈવ પ્રાસાદ
વતસકે સુહ સુહેણ અભિરમમાણા ચિદ્દહ જઙ્ઘણ તુભે એયસિ અતરસિ ઉન્વિગ્માવા
અસ્સુયા વા ઉપ્પુયાવા ભવેજ્જાહ તો ણ તુભે પુરચ્છિમિલ્લ વણસડ ગચ્છેજ્જાહ)

હુ જ્યા સુધી સમુદ્રના એકવીશ ચકકર ભારી ત્યાના તૃણ કાષ્ટ વગેરેને દૂર
ફેંકવાના કામમા પડેવાઈ રહુ ત્યા સુધી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બંને આજ
શ્રેષ્ઠ મહેલમા સુખેથી રહેજો અહીં રહેતા જો તમને કટાણો આવવા લાગે,
મન તમારૂં ઉદ્ધિગ્ન થઈ જાય મનોરજન કરવાની તમારી ઈચ્છા થાય કે ક્રીડા
કરવાની ઉત્કટ અભિલાષા તમારામા ઉત્પન્ન થાય તો બંને પૂર્વ દિશાના
ઉદ્યાનમા જતા રહેજો (તત્થણ દો ઝ ઝ સયા સાહીણા ત જહા પાઉસેય વાસા
રત્તેય) તે ઉદ્યાનમા હરહ મેશા જે ઋતુઓ હાજર રહે છે એક પ્રાવૃદ્ધ ઋતુ
અને બીજી વર્ષા અષાઢ શ્રાવણ આ જે મહિના પ્રાવૃદ્ધ ઋતુના છે અને
ભાદ્રપદો અને આસો આ જે મહિના વર્ષા ઋતુના છે

યુવા દેવાનુપ્રિયૌ વહીપુ વાપીપુ ચ યાવત્ 'સરસરપતિયાસુ' સરઃ સર પક્તિ
 વાસુ પરપર સલગ્નેષુ વહુષુ સરસુ, યત્રૈવસ્માત્સરસોઽન્યસ્મિન્ તસ્માદપરસ્મિન્,
 એવ સચરણપરમ્પરયેદક સચરતિ, તાસુ । વહુષુ 'આલિઘરણસુ ય' આલિગૃહેષુ
 આલિઃ=રમ્યવનસ્પતિવિશેષસ્તસ્ય ગૃહેષુ 'જાવ' યાવત્-યાવચ્છવ્દેન-કદલીગૃ-
 હેષુ ચ લતાગૃહેષુ ચ-અચ્છળગૃહેષુ ચ પ્રેક્ષણગૃહેષુ ચ પ્રસાધનગૃહેષુ ચ મોહનગૃહેષુ
 ચ શાલા (શાખા) ગૃહેષુ ચ જાલગૃહેષુ ચ ઇતિ સગ્રહઃ, કુસુમગૃહેષુ=પુષ્પગૃહેષુ
 ચ સુખસુખેન=સુખપૂર્વકમ્ 'અભિરમમાણા' અભિરમમાણૌ=ક્રીડા કુર્વાણૌ વિહ-
 રત=તિષ્ઠતમ્ ।

પુત્રોં કો વહ રચનાદેવી સમક્ષા રહી છે । ઓર સાથ મેં યહ બી
 કહ રહી છે કિ (તત્થળ તુભે દેવાણુપ્પિયા ! વહુસુ વાવી સુ ય
 જાવ સરસરપતિયાસુ વહુસુ આલીઘરણસુ ય માલીઘરણસુ ય જાવ
 કુસુમધરણસુ ય સુહ સુહેણં અભિરમમાણા વિહરેજ્જાહ) હે દેવા-
 નુપ્રિયો ! વહા તુમ અનેક વાપિકાઓં મેં યાવત્ અનેક સર સર પક્તિયોં
 મેં અલિઘરોં મે કદલી ગૃહોં મેં લતા ગૃહોં મેં અચ્છળ ગૃહોં મેં પ્રેક્ષણ
 ગૃહોં મેં, પ્રસાધન ગૃહોં મેં, મોહન ઘરોં મેં, શાખા ગૃહોં મેં, જાલ ગૃહોં મેં,
 તથા પુષ્પ ગૃહોં મેં, સુખપૂર્વક ક્રીડા કરતે હુણ અપને સયમ કો વ્યતીત
 કરતે રહના । અનેક તાલાવ જહા પક્તિ વદ્ધ શ્રેણીમેં સ્થિત રહતે હં ઉસ
 કા નાગ સરપક્તિ છે । હન પક્તિ આકાર સ્થિત તાલાવો મેં એક
 એક દુસરે તાલાવ કા જલ આતા જાતા રહતા છે । રમ્યવનસ્પતિ વિશેષ
 કે જો ગૃહ હોતે હં ઉનકા નામ આલિ ગૃહ છે । (જહ્ણ) યદિ (તુભે

પુત્રોને રચણા દેવી સમક્ષવી રહી હતી-અને આ પ્રમાણે આગળ કહેવા લાગી હતી કે
 (તત્થળ તુભે દેવાણુપ્પિયા ! વહુસુ વાવીસુ ય જાવ સરસરપતિયાસુ વહુસુ આલી-
 ઘરણસુ ય માલીઘરણસુ ય જાવ કુસુમધરણસુ ય સુહ સુહેણ અભિરમમાણા વિહરેજ્જાહ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! ત્યાં તમે ઘણી વાપિકાઓ (વાવો) મા યાવત્ ઘણી
 સર મગ્ધ પક્તિઓ (સરોવરો) મા, આલિઘરોમા, કદલીગૃહોમા, લતાગૃહોમા,
 અચ્છળગૃહોમા, પ્રેક્ષણગૃહોમા, પ્રસાધનગૃહોમા, મોહનઘરોમા, શાખાગૃહોમા,
 જાલગૃહોમા તેમજ પુષ્પગૃહોમા સુખેથી ક્રીડા કરતા પોતાના સમયને પસાર
 કરતે જ્યાં ઘણા તળાવો એક પછી એક આમ અનુક્રમે પકિતબદ્ધ હોય છે તેનું
 નામ સર સરપક્તિ છે આ પક્તિ આકારમા સ્થિત તળાવોમાં એક બીજાના
 તળાવનું પાણી આવતું જતું રહે છે રમ્ય વનસ્પતિ વિશેષના જે ગૃહો હોય
 છે તે આલિગૃહ કહેવાય છે (જહ્ણ) એ

રૂપકેણ વર્ણયતે—‘તત્થય’ તત્ત્વચ=તત્ત્વૈષ=વનપણ્ડે વર્ષારાત્રઋતુપર્વતઃ સ્વાધીનો
 વર્તત્તત્ત્વેણ સમ્પન્ધઃ । સમીદૃશ ? ક્ત્યાહ—‘સુરગોપમણિવિત્તો’ સુગોપમણિ
 વિચિત્ર’—સુરગોપા=ઇન્દ્રગોપાઃ વર્ષાકાલે સમુત્પદમાના રક્તવર્ણાં જીવ વિશેષાસ્ત-
 એવમણય’=પદ્મસાગાદયસ્તૈર્નિચિત્ર=કર્ણુરો યઃ સ તથા । ‘દદુરકુલસિયડ્ઞરરવો’
 દદુરકુલરસિતોઽઞ્જરવઃ=દર્દુરકુલ=મણ્દુરકસમૃદ્ધસ્તસ્ય રસિત=નિરન્તર શબ્દ, તદેવ
 ડ્ઞરરવઃ=નિર્ઞરશબ્દો યન્ન સ તથા । ‘વરહિણવિંદપરિણદ્ધસિહરો’ વર્હિવૃન્દપ
 રિણદ્ધશિખર’—વર્હિવૃન્દેન=મયૂરસમૂહેન પરિણદ્ધા’=યુક્તાઃ ઘૃક્ષાસ્મણ શિખરાણિ
 યન્ન સ તથા । એતાદૃશો વર્ષારાત્રપર્વતરત્તત્ત્વ સદૈવ વર્તત્તત્ત્વેણ ક્તિભાવઃ ॥ ૨ ॥ તત્ત્વ સ્વલુ

હસ લિયે વે લઘાઈમેં શુણ્ડાદડ જૈસે પ્રતીત હોતે હૈ । (તત્થય
 -સુરગોવ મણિવિચિત્તો દદુર કુલરસિય ડ્ઞરરવો । વરહિણવિંદ
 પરિણદ્ધસિહરો વાસારત્તો ઝઝ પવ્વતો સાહીણો) હસ આર્યા દ્વારા
 સૂત્રકાર વર્ષાઋતુ કા પર્વત કે રૂપક સે વર્ણન કરતે હૈ—વે કહતે હૈ કિ
 વર્ષા કાલ મે ઇન્દ્રગોપ નામક કીડા ઉત્પન્ન હોકર ઇધર ઉધર ચમક
 તે હુણ રાત્રિમેં દિગ્વલાઈ પડતે હૈ ।—સો યે ઇન્દ્રગોપ કીડે હી જિસ વર્ષા
 ઋતુ રૂપ પર્વત મેં પદ્મરાગ આદિ મણિયોં કે સ્થાનાપન્ન હૈ । તથા પવત
 નિર્ઞરો (ઝરના) કે શબ્દોં વાલા હોતા હૈ સો હસ વર્ષા ઋતુ રૂપ
 પર્વત મેં દર્દુરો કા જો નિરન્તર શબ્દ હોતા રહતા હૈ વહી માનો નિર્ઞરો
 કા શબ્દ હૈ । વર્ષા ઋતુ મેં મયૂરો સે ઘૃક્ષ યુક્ત રહા કરતે હૈ વયોં કિ
 ઘૃષ્ટિ હોનેપર વે ઉન પર ઉડ કર વેઠ જાતે હૈ—સો યે મયૂર યુક્ત ઘૃક્ષ
 હી જિસ વર્ષા ઋતુ રૂપ પર્વત કી ચીટિયા હૈ । એસા વર્ષા રાત્ર રૂપ પર્વત
 ઉસ વન મેં સદા કાલ રહતા હૈ । યહ વાત ઉન દોનોં સાર્યવાહ

એટલા માટે નિકુરવૃક્ષનાં પુષ્પોં લબાઈની દૃષ્ટિએ સૂઢ જેવા લાગે છે

(તત્થય સુરગોવ મણિવિચિત્તો દદુરકુલરસિયડ્ઞરરવો । વરહિણ
 વિંદપરિણદ્ધમિહરો વાસારત્તો ઝઝ પવ્વતો સાહીણો)

આ આર્યા વડે સૂત્રકાર વર્ષા ઋતુ પર્વતના રૂપકથી વર્ણન કરે છે
 તેઓ કહે છે કે વર્ષાકાળે ઇન્દ્રગોપ નામે કીડા ઉત્પન્ન થાય છે અને તે આમ
 તેમ ચમકતો રાત્રમાં દેખાય છે આ ઇન્દ્રગોપ કીડાઓ જ વર્ષાઋતુ રૂપ પર્વતમાં
 પદ્મરાગ વગેરે મણિઓના રૂપમાં છે પર્વતોમાં નિર્ઞરો (ઝરણાઓ) નો
 ધ્વનિ થતો રહે છે તો આ વર્ષાઋતુ રૂપ પર્વત ઉપર દેડકાઓનો જ નિરન્તર
 શબ્દ થતો રહે છે તેજ ઝરણાઓના શબ્દના રૂપમાં છે વર્ષાઋતુમાં ઘૃક્ષો
 ઉપર મોરો ઉડી ઉડીને બેસી જાય છે તો એ મોરો જેના ઉપર બેઠાલા છે
 એવા ઘૃક્ષો જ વર્ષાઋતુ રૂપ પર્વતના શિખરો છે એવો વર્ષાઋતુ રૂપ પર્વત
 તે વનમાં હંમેશા નિવાસ કરતો રહેતો હતો આ વાત તેઓ બને આ વાહ

યુવા દેવાનુપ્રિયૌ વહીષુ ચાપીષુ ચ યાવત્ 'સરસરપતિયાસુ' સરઃ સર પટ્તિકાસુ પરપર સલગ્નેષુ વહુષુ સરસુ, યત્રૈવસ્માત્સરસોઽન્યસ્મિન્ તસ્માદપરસ્મિન્, એવ સચરણપરમ્પરયોદક સચરતિ, તાસુ । વહુષુ 'આલિઘરણસુ ચ' આલિઘરણેષુ આલિઃ=રમ્યવનસ્પતિવિશેષસ્તસ્ય ગૃહેષુ 'જાવ' યાવત્-યાવચ્છન્દેન-કદલીગૃહેષુ ચ લતાગૃહેષુ ચ-અચ્છળગૃહેષુ ચ પ્રેક્ષણગૃહેષુ ચ પ્રસાધનગૃહેષુ ચ મોહનગૃહેષુ ચ શાલા (શાખા) ગૃહેષુ ચ જાલગૃહેષુ ચ ઇતિ સગ્રહઃ, વુસુમગૃહેષુ=પુષ્પગૃહેષુ ચ સુખસુખેન=સુખપૂર્વકમ્ 'અભિરમમાણા' અભિરમમાણૌ=ક્રીડા કુર્વાણૌ વિહરત=તિષ્ઠતમ્ ।

પુત્રોં કો વહ રચનાદેવી સમજા રહી છે । ઓર સાથ મેં યહ બી કહ રહી છે કિ (તત્થળ તુબ્મે દેવાણુપ્પિયા ! વહુસુ વાવી સુ ય જાવ સરસરપતિયાસુ વહુસુ આલીઘરણસુ ચ માલીઘરણસુ ચ જાવ કુસુમધરણસુ ચ સુહ સુહેણં અભિરમમાણા વિહરેજ્જાહ) હે દેવાનુપ્રિયો ! વહા તુમ અનેક વાપિકાઓં મેં યાવત્ અનેક સર સર પત્તિકો મેં અલિઘરોં મે કદલી ગૃહોં મે લતા ગૃહોં મેં અચ્છળ ગૃહોં મેં પ્રેક્ષણ ગૃહોં મે, પ્રસાધન ગૃહોં મેં, મોહન ઘરોં મે, શાખા ગૃહોં મેં, જાલ ગૃહોં મે, તથા પુષ્પ ગૃહોં મે, સુખપૂર્વક ક્રીડા કરતે હુણ અપને સયમ કો વ્યતીત કરતે રહના । અનેક તાલાવ જહા પત્તિક વદ્ધ શ્રેણીમેં સ્થિત રહતે હે ઉસ કા નાગ સરપત્તિક છે । હન પત્તિક આકાર સ્થિત તાલાવો મેં એક એક દુસરે તાલાવ કા જલ આતા જાતા રહતા છે । રમ્યવનસ્પતિ વિશેષ કે જો ગૃહ હોતે હેં ઉનકા નામ આલિ ગૃહ છે । (જહ્ણ) યદિ (તુબ્મે

પુત્રોને રચણા દેવી સમજાવી રહી હતી-અને આ પ્રમાણે આગળ કહેવા લાગી હતી કે (તત્થળ તુબ્મે દેવાણુપ્પિયા ! વહુસુ વાવીસુ ય જાવસરસરપતિયાસુ વહુસુ આલી ધરણસુ ચ માલીઘરણસુ ચ જાવ કુસુમધરણસુ ચ સુહ સુહેણ અભિરમમાણા વિહરેજ્જાહ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! ત્યા તમે ઘણી વાપિકાઓ (વાવો) મા યાવત્ ઘણી સર સરપત્તિકાઓ (સરોવરો) મા, આલિઘરોમા, કદલીગૃહોમા, લતાગૃહોમા, અચ્છળગૃહોમા, પ્રેક્ષણગૃહોમા, પ્રસાધનગૃહોમા, મોહનઘરોમા, શાખાગૃહોમા, જાવગૃહોમા તેમજ પુષ્પગૃહોમા સુખેથી ક્રીડા કરતા પોતાના સમયને પસાર કરો ન્યા ઘણા તળાવો એક પછી એક આમ અનુક્રમે પકિતબદ્ધ હોય છે તેનું નામ અર સરપત્તિક છે આ પકિત આકારમા સ્થિત તળાવોમા એક બીજાના તળાવનું પાણી આવતું જતું રહે છે રમ્ય વનસ્પતિ વિશેષના જે ગૃહો હોય છે તે આલિગૃહ કહેવાય છે (જહ્ણ) ને

યદિ સ્વલ્પ પુતર્યુગામ્ ' તત્થત્તિ ' તત્રાપિ=પૂર્વદિશાવનપણ્ડેઽપિ ઉદ્ધિગ્નો વા,
 ઉત્સુકો વા, ઉત્પલ્લુતો=ક્રીડાર્થિનો વા ભવત તદા સ્વલ્પ યુવા દ્વાપિ ' ઉત્તરિલ્લ '
 ઉત્તરીયમ્=ઉત્તરદિક્સંસ્થિત વનપણ્ડ 'ગચ્છેજ્જાહ' ગચ્છતમ્, યુવાભ્યા તત્ર ગન્ત
 વ્યમિત્યર્થ તત્ર સ્વલ્પ દ્વો ઋતુ સદા સ્વાધીનો વર્તેતે, તત્રથા-શરદ્વ હેમન્તશ્ચ, તત્ર
 શરદ્ઋતુઃ=કાર્તિકમાર્ગશીર્ષરૂપઃ, હેમન્તર્તુશ્ચ=પૌષમાઘરૂપ ઇતિ । અથ શરદ્ઋતુ
 વૃષભરૂપકેણ વર્ણયતિ-તત્ર તુ વનપણ્ડે ' સરયત્ત ગોચર્ડ ' શરદ્ઋતુગોપતિઃ શરદ્-
 ઋતુરૂપોવૃષભઃ ' સાહિણો ' સ્વાધીનઃ સ્વાયતઃ સદા વર્તેતે, ઇત્યગ્રેણ સમન્વયઃ ।
 સ કીદશઃ ? ઇત્યાહ—' સળસત્તવળ્લકઝઑ ' સનસપ્તર્ણકુદ્, સનઃ=વલ્કલપ
 ધ્રાનો વનસ્પતિવિશેષઃ, સપ્તર્ણઃ=સપ્તચ્છદાભિધનસ્પતિવિશેષઃ તયો પુષ્પાણ્યપિ

એત્થવિ ઉન્વિગ્ગા વા ઉસ્સુયા વા ઉપ્પુયા વા ભવેજ્જાહ, તોર્ણ તુવ્ભે ઉત્ત
 રિલ્લ વળસડ્ ગચ્છેજ્જાહ, તત્થ ણ્ ડો ઝઙ્ગસયા સાહીણા, તંસરદો ય
 હેમતો ય, તત્થ ઉ-સળસત્તવળ્લકઝઑ નીલુપ્પલપ્પમનલિણસિગો ।
 સારસ ચક્કવાયરવિત્તઘોસો સરય ઝઙ્ગ ગોવતી સાહીણો) તુમ દોનોંજનોં
 કા પૂર્વદિશા કે વનપણ્ડ મેં મન ન લગે, ચિત્ત ઉદ્ધિગ્ન વન જાય, મનોર-
 જન ન હો અથવા ઓર અધિક ક્રીડા કરને કે લિયે મન ઉત્કઠિત વન
 જાય તો તુમ વહા સે ઉત્તર દિશા મેં રહે હુણ વનપણ્ડ મેં ચલે જાના ।
 વહા સદા દોઋતુએ વર્તમાન રહતી હૈ-૧ શરદ ઋતુ ૨. હેમત ઋતુ, કાર્-
 તિક ઓર માર્ગશીર્ષ યે દો મહિને શરદઋતુ કેહૈ, પૌષ ઓર માઘ યે
 દો મહિને હેમન્તઋતુ કે હૈ । રચનાદેવી શરદઋતુ કા વૃષભ કે રૂપક સે
 ઓર હેમતઋતુકા ચન્દ્રમાકે રૂપકસે વર્ણન કરતી હુઈ ઉન્હે સમજાતી હૈ

(તુવ્ભે એત્થપિ ઉન્વિગ્ગા વા ઉસ્સુયા વા ઉપ્પુયા વા ભવેજ્જાહ તો ણ તુવ્ભે
 ઉત્તરિલ્લ વળસડ્ ગચ્છેજ્જાહ, તત્થ ણ્ ડો ઝઙ્ગ સયા સાહીણા તં સરદો
 ય હેમતો ય તત્થ ઉ સળસત્તવળ્લકઝઑ નીલુપ્પલપ્પમનલિણસિગો । સારસ
 ચક્કવાયરવિત્ત ઘોસો સરય ઝઙ્ગ ગોવતી સાહિણો)

પૂર્વ દિશા તરફના વનપણ્ડમા તમને ગમતુ ન હોય, ચિત્ત ઉદ્ધિગ્ન થઈ
 જતુ લાગતુ હોય, ત્યા તમારુ મનોરજન થતુ ન હોય, કે વધારે ક્રીડા કરવા
 માટે મન ઉત્કઠિત થઈ જતુ હોય તો તમે ત્યાથી ઉત્તર દિશા તરફ આવેલા
 વનપણ્ડમા જતા રહે જો ત્યા હર હમેશા બે ઋતુઓ હાજર રહે છે-(૧) શરદઋતુ
 અને (૨) હેમતઋતુ કાર્તિક અને માર્ગશીર્ષ આ બે માસ શરદઋતુના છે
 તેમજ પૌષ અને માઘ આ બે માસ હેમતઋતુના છે રચના દેવી તેઓ
 શરદઋતુ વૃષભના રૂપકથી અને હેમતઋતુ ચન્દ્રમાના રૂપકથી નિરૂપિત કરતા

सनसप्तपर्णानि, तान्येव गोलाकारोन्नतत्वसाधर्म्यात् ककुत्-स्कन्धदेशो यस्य स तथोक्ता । पुन 'नीलोत्पलपञ्चमनल्लिङ्गसिङ्गो' नीलोत्पलपञ्चनलिनशृङ्गः-नीलोत्पलपञ्चनलिनानि=नीलकमलविशेषास्तान्येव तीक्ष्णोन्नततया शृङ्गाकारपरिणतत्वात् शृङ्गे यस्य स तथोक्तः । पुनः-'सारसचक्रवाकरत्रियघोसो' सारसचक्रवाकरुतयोपा-सारसचक्रवाकरपक्षिणा रुतमेव=शब्द एव उच्चैस्त्वगाम्भीर्यसादृश्याद् घोषो = ध्वनिर्यस्य स तथोक्तः । एतादृशः शरदऋतु वृषभस्तत्र सदैव विद्यत इति भावः ॥१॥

सम्प्रति हेमन्तऋतु राशिरूपकेण माह-'तत्थउ' तत्र तु वनपण्डे 'हेमत ऊऊ ससी' हेमन्तऋतुशशी=हेमन्तर्तु रूपश्चन्द्र सदा स्वामीन इत्युत्तरेण सम्बन्धः । स कीर्णः ? इत्याह-'मियकुद ववळ जोण्हो' सितकुन्दधवलज्योत्स्नः-सितकुन्दानि = श्वेतपुष्पाणि तान्येव धरला=उज्ज्वल ज्योत्स्ना=चन्द्रिका यस्य स तथोक्तः । पुन -'कुसुमियलोद्वणसडमडलतलो कुसुमितलोधवनपण्डमण्डलतल -कुसुमितः= पुष्पित लोधवनपण्डः, स एव श्वेतत्वसाधर्म्यात् - मण्डलतल = विम्ब यस्य स तथोक्तः । 'तुपारदगधारपीवरकरो' तुपारदकधारापीवरकरः - तत्र तुपारा= हिमकणा, 'दकधारा' = जलविन्दुप्रवाहास्ता एव दैर्घ्य शैत्यसादृश्यात् पीवराः= पुष्टा कूराः = मिरणा यस्य स तथोक्तः । एव भूतो हेमन्तर्तु रूपश्चन्द्रस्तत्र सदैव वर्तत इत्यर्थः ॥ २ ॥

कहती है-कि देखो शरदऋतुको हमने वृषभका रूप इसलिये दिया है कि इस ऋतुमें सन और सप्तपर्ण फूलते हैं इनके फूल गोल आकारके और ऊँचे होते हैं । सो ये पुष्प ही जिस ऋतुका वृषभके ककुद (खदौला) है । नीलोत्पल आदि कमल ही जिस के शृङ्ग हैं । सारस और चक्रवाक पक्षियों के शब्द ही जिसकी ध्वनि है ऐसा शरदऋतु रूप वृषभ उस वन में सदा विचरण करता रहता है । (तत्थ य सिय कद ववलजोण्हो कुसुमिय लोद्वणसडमडल तलो साहीणो) सितकुद-श्वेतपुष्प-ही जिस की धवलज्योत्स्ना (चांदनी) है, कुसुमित लोधवनखड्डी जिसका मडल है, हिमकण और विन्दु प्रवाह ही जिस की पुष्ट किरणें हैं ऐसा

समन्तत्र छे ते लुओ शरदऋतुने अभे वृषभतु इय ओटला भाटे आप्यु छे के आ ऋतुमा रापु अने सप्तपर्ण भीये छे ओभना पुष्पो गोणाकरना तेमज्जो आ छे तो आ पुष्पो शरदऋतु इय वृषभनी पाध (ककुद) छे नीलोत्पल वगेरे कमलो न्नेना सिंगडा छे सारस अने चक्रवाक पक्षीओ ना शब्दो न्नेना ध्वनि छे ओयो शरदऋतु इय वृषभ ते वनमा उभेरा विचरतो न्ने रडे छे (तत्थ य सियकद धवल जोण्हो कुसुमितलोद्वणसड मडल तलो साहीणो) सितकुद-सङ्केत पुष्पो न्नेनी स्वच्छ चन्द्रिका (चांदनी) छे, भीने लोधवन न्नेना मडल छे, हिमकण अने पाणीना पडेता टीपाओ

તત્ર સ્વલુ યુવા હે દેવાનુપ્રિયો ! વહોપુ વાપીપુ ચ યાવદ્ અમિરમમાણી
વિહરતમ્ = તત્ર ક્રીડા કુર્વન્તી તિષ્ઠતમ્ ।

યદિ સ્વલુ યુવા તત્રાપિ=ઉત્તરીયવનપણ્ડેઽપિ ઉદ્વિગ્નો વા યાવદ્ ઉત્પ્લુતો વા
ભવેત તત્રા સ્વલુ યુગમ્ ' અવરિલ્લ ' અપરીય = પશ્ચિમદિશાસમ્બન્ધિત વનપણ્ડ
ગચ્છતમ્, તત્ર સ્વલુ દ્વૌ ઋતૂ સ્વાધીનો=સ્વાયત્તો સર્વદા વર્તમાનો સ્ત', તદ્યથા-
વસન્તથ ગ્રીષ્મથ, વસન્તઃ=ફાલ્ગુનચૈત્રલક્ષણ', ગ્રીષ્મઃ=વૈશાખજ્યેષ્ઠઋક્ષણઃ । પૂર્વ
વસન્તઋતુ નરપતિરૂપકેણ વર્ણયતિ-'તત્થુ' તત્ર તુ પશ્ચિમદિગ્વર્તિવનપણ્ડે વસન્તર્તુ

હેમતઋતુ રૂપ ચન્દ્રમા ઉસવન મેં સદા પ્રકાશિત રહતા હૈ । (તત્થ ણ
તુભ્મે દેવાણુપ્પિયા ! વાવીસુ ય જાવ વિહરેજ્જાહ) હે દેવાનુપ્રિયો ! વહા
અનેક વાપિકાઈ યાવત્ પુષ્પઘર મી હૈ । સો તુમ ડનમેં મી આનદ સે
વિહાર કરના । (જહણ તુભ્મે તત્થ ઉદ્વિગ્ગા વા જાવ ડસ્સુયા વા મ્હે-
જ્જાહ તો ણ તુભ્મે અવિરિલ્લ વણસહ ગચ્છેજ્જાહ-તત્થ ણ દો ઝઝ
સાહીણા) યદિ તુમ દોનોં જનોં કા મન ઉત્તરીયવનપણ્ડ મેં મી ન લગે-
વહા વહ ઉદ્વિગ્ન યાવત્ ઉત્પ્લુત હો જાવે-તો તુમ દોનોં પશ્ચિમ દિશા
સમ્બન્ધી વનખડમેં ચલે જાના । વહાં દો ઋતુઈ સદા વર્તમાન રહતી હૈ
(ત જહા-વસન્તે ગિમ્હે ય, તત્થ ડ-સહકાર ચારુહારો, કિસુય કણિયા
રાસોગમડહો, ડસિત તિલગ વડલાયવત્તો વસત ડઝ્ઞરવહ સાહીણો)
વે દો ઋતુઈ ગ્રીષ્મ ઓર વસન્ત હૈ ।

ફાલ્ગુન ચૈત્ર યે દો મહિને વસન્તઋતુ કે હૈ । વૈશાખ ઓર જ્યેષ્ઠ
યે દો માસ ગ્રીષ્મઋતુ કે હૈ । હસ પશ્ચિમદિશા સમ્બન્ધી વનખડ મેં વસ

નેની પુટ કિરણો છે એવો હેમતઋતુ રૂપ ચન્દ્ર તે વનખા હમેશા પ્રકાશતો
રહે છે (તત્થ ણ તુભ્મે દેવાણુપ્પિયા ! વાવીસુ ય જાવ વિહરેજ્જાહ હે દેવાનુ
પ્રિયો ! ત્યા ધણુ વાવો યાવત્ પુષ્પગૃહો પશુ છે તમે તેઓમા પશુ વિહાર કરને

(જહણ તુભ્મે તત્થ ઉદ્વિગ્ગા વા જાવ ડસ્સુયા વા મ્હેજ્જાહ તો ણ તુભ્મે
અવિરિલ્લ વણસહ ગચ્છેજ્જાહ-તત્થ ણ દો ઝઝ સાહીણા)

ઉત્તરના વનખડમા પશુ ને તમને ખરેખર ગમે નહિ, ઉદ્વિગ્ન થઈ
યાવત્ ઉત્પ્લુત થઈ જાય ત્યારે તમે ખને પશ્ચિમ દિશાના વનખડમા જતા
રહેને ત્યા ખે ઋતુઓ સદા મોજુદ રહે છે

(ત જહા વસન્તે ગિમ્હે ય, તત્થ ડ સહકાર ચારુહારો, કિસુય કણિયા
રાસોગમડહો ડસિત તિલગ વડલાયવત્તો વસત ઝઝ ણરવહ સાહીણો)

તે ઋતુઓ ગ્રીષ્મ અને વસન્ત છે શગણ અને ચૈત્ર ત્યા ખે માત્ર
વસન્ત ઋતુના છે ત્યારે વૈશાખ અને જેઠ ત્યા ખે માત્ર ગરમીની ઋતુના

નરપતિઃ=વસન્તઋતુરૂપો રાજા સ્વાધીનો વર્તત इति सम्बन्धः । स कीदृशः ? इत्याह—
 ‘सहकारचारुहारो’ सहकारचारुहारः—सहकाराणि—सहकार पुष्पाणि—आम्रमञ्जर्यः,
 तान्येव बहुत्वसद्भावेन हाराकार परिणतत्वाच्चारुः=सुन्दरो हारो यस्य स तथा । पुनः
 —‘किंसुयमणियारासोगमउडो’ किंशुककर्णिकाराशोऽमुकुटः—किंशुकानि=पला
 शकुसुमानि, कर्णिकाराणि=कर्णिकारपुष्पाणि, अशोकानि=अशोकपुष्पाणि तान्येव
 मुकुटाकारपरिणतत्वान्मुकुट=किरीट यस्य स तथा । ‘ऊसियतिलगजउलायवत्तो’
 उच्छ्रिततिलकजकुलातपत्रः—उच्छ्रितानि=उन्नतानि तिलकजकुलानि=तिलकजकुल-
 पुष्पाणि, तान्येव आतप=उत्राकारपरिणतत्वेन उत्र यस्य स तथोक्तः । एतादृशो
 वसन्तर्त्तनरपतिस्तत्र स्वाधीनः सदा वर्तते ॥ १ ॥ अथ ग्रीष्मऋतुः सागररूपकेण
 वर्ण्यते—‘तत्थय’ तत्र च पश्चिमदिग्वनपण्डे ‘गिम्हउउसागरो’ ग्रीष्मर्तुरूपः
 सागरः=समुद्रः स्वाधीनः=स्वायत्तत्वेनानवरत वर्तमानोऽस्ति । स कीदृशः ?
 इत्याह—‘पाडलसिरीससलिलो’ पाटलशिरीषसलिलः—पाटलशिरीषाणि=पाटला
 शिरीषपुष्पाणि, तान्येव जल सादृश्यात्सलिल=जलराशिरूप यस्य स तथा । ‘मल्लि
 यमासतियधवल्बेलो’ मल्लिकावासन्तिका जलवेलाः—मल्लिका वासन्तिका च लता-

ન્તઋતુ નરપતિ કે સમાન સદા વિચરણ કરતી રહતી હૈ—સહકાર (આ
 મ્ર) કી મજરિયા હી હસ વસન્તઋતુ રૂપી રાજા કે સુન્દર હાર હૈ । કિ
 શુક—કર્ણિકાર એવ અશોકકે પુષ્પ હી હસ રાજા કે મુકુટ હૈ । ઉન્નત
 તિલક વૃક્ષ એવ વકુલ વૃક્ષ કે પુષ્પ હી હસકે છત્ર હૈ । (તત્થ ય—પાડલ
 સિરીસસલિલો મલ્લિયવાસતિયધવલવેલો, સીયલસુરભિઅનિલ મગ-
 રચરિઓ ગિમ્હઝઝ સાગરો સાહીળો) હસ પશ્ચિમદિશા સમ્બન્ધી
 વનપડ મેં ગ્રીષ્મઋતુ સમુદ્ર કે સામાન સદા પસરા રહતા હૈ—ગુલાબ ઓર
 શિરીષ પુષ્પ યે હસ ગ્રીષ્મઋતુ રૂપ સમુદ્ર કે જલ હૈ । મલ્લિકા એવ વાસ

છે, આ પશ્ચિમ દિશાના વનમા વસન્તઋતુ નરપતિ (રાજા) ની જેમ હ મેશા
 વિચરણ કરતી રહે છે સહકાર (આમ્રો) ની મજરીઓ આ વસન્તઋતુ
 રાજાના સુદર હારો છે કિંશુક કર્ણિકાર (કનેર) અને અશોકના પુષ્પો જ આ
 રાજાના મુકુટ છે જિયા તિલક વૃક્ષો અને વકુલ વૃક્ષોના પુષ્પો જ એના છત્ર છે

તત્થ ય પાડલસિરીસસલિલો મલ્લિયા વાસતિ ય ધવલવેલો સીયલસુરભિ
 અનિલમગરચરિઓ ગિમ્હ ઝ ઝ સાગરો સાહિળો)

તે પશ્ચિમ દિશાના વનખડમા ગ્રીષ્મઋતુ સમુદ્રની જેમ હ મેશા પ્રસરાયેલો
 રહે છે ગુલાબ અને શિરીષના પુષ્પો જ આ ગરમીની ઋતુ રૂપ સમુદ્રના પાણી
 છે મલ્લિકા અને વાસતિકા લતા જ જેના કિનારાઓ છે ઠંડા અને સુવાસિત

તત્ર સ્વલુ યુવા હે દેવાનુપ્રિયો ! વહીપુ વાપીપુ ચ યાવદ્ અમિરમમાણી
વિહરતમ્ = તત્ર ક્રીડા કુર્વન્તી તિષ્ઠતમ્ ।

યદિ સ્વલુ યુવા તત્રાપિ=ઉત્તરીયવનવણ્ડેઽપિ ઉદ્વિગ્નો વા યાવદ્ ઉત્પ્લુતો વા
ભવેત તત્રા સ્વલુ યુવામ્ ' અવરિહ્લં ' અપરીય = પશ્ચિમદિશાસમ્બન્ધિઋ વનવણ્ડં
ગચ્છતમ્, તત્ર સ્વલુ દ્વૌ ઋતૂ સ્વાધીનો=સ્વાયત્તૌ સર્વદા વર્તમાની સ્તઃ, તથથા-
વસન્તશ્ચ ગ્રીષ્મશ્ચ, વસન્તઃ=ફાલ્ગુનચૈત્રલક્ષણ, ગ્રીષ્મઃ=વૈશાખજ્યેષ્ઠલક્ષણઃ । પૂર્વ
વસન્તઋતુ નરપતિરૂપકેણ વર્ણયતિ-'તત્થુ' તત્ર તુ પશ્ચિમદિગ્વર્તિવનવણ્ડે વસન્તર્તુ

હેમતઋતુ રૂપ ચન્દ્રમા ઉસવન મેં સદા પ્રકાશિત રહતા હૈ । (તત્થ ણ
તુભ્મે દેવાણુપ્પિયા ! વાવીસુ ય જાવ વિહરેજ્જાહ) હે દેવાનુપ્રિયો ! વહા
અનેક વાપિકાઈ યાવત્ પુપ્પઘર ભી હૈ । સો તુમ ઝનમેં ભી આનદ સે
વિહાર કરના । (જહણ તુભ્મે તત્થ ઉદ્વિગ્ગા વા જાવ ઝસુયા વા ભવે-
જ્જાહ તો ણ તુભ્મે અવિરિહ્લ વણસહ ગચ્છેજ્જાહ-તત્થ ણ દો ઝઝ
સાહીણા) યદિ તુમ દોનોં જનોં કા મન ઉત્તરીયવનવણ્ડ મેં ભી ન લગે-
વહા વહ ઉદ્વિગ્ન યાવત્ ઉત્પ્લુત હો જાવે-તો તુમ દોનોં પશ્ચિમ દિશા
સમ્બન્ધી વનવણ્ડમેં ચલે જાના । વહાં દો ઋતુઈ સદા વર્તમાન રહતી હૈ
(ત જહા-વસન્તે ગિમ્હે ય, તત્થ ડ-સહકાર ચારુહારો, કિસુય કણિયા
રાસોગમઝહો, ડસિત તિલગ વડલાયવત્તો વસત ઝઝણરવહ સાહીણો)
વે દો ઋતુઈ ગ્રીષ્મ ઓર વસન્ત હૈ ।

ફાલ્ગુન ચૈત્ર યે દો મહિને વસન્તઋતુ કે હૈ । વૈશાખ ઓર જ્યેષ્ઠ
યે દો માસ ગ્રીષ્મઋતુ કે હૈ । ઇસ પશ્ચિમદિશા સબન્ધી વનવણ્ડ મેં વસ

નેની પુષ્ટ કિરણો છે એવો હેમતઋતુ રૂપ ચન્દ્ર તે વનમા હેમશા પ્રકાશતો
રહે છે (તત્થ ણ તુભ્મે દેવાણુપ્પિયા ! વાવીસુ ય જાવ વિહરેજ્જાહ હે દેવાનુ
પ્રિયો ! ત્યા ઘણાં વાવો યાવત્ પુપ્પઘરો પણ છે તમે તેઓમા પણ વિહાર કરો

(જહણ તુભ્મે તત્થ ઉદ્વિગ્ગા વા જાવ ઝસુયા વા ભવેજ્જાહ તો ણ તુભ્મે
અવિરિહ્લ વણસહ ગચ્છેજ્જાહ-તત્થ ણ દો ઝઝ સાહીણા)

ઉત્તરના વનવણ્ડમા પણ જો તમને ખરેખર ગમે નહિ, ઉદ્વિગ્ન થઈ
યાવત્ ઉત્પ્લુત થઈ જાય ત્યારે તમે જને પશ્ચિમ દિશાના વનવણ્ડમા જતા
રહેજો ત્યાં જો ઋતુઓ સદા મોજુદ રહે છે

(ત જહા વસન્તે ગિમ્હે ય, તત્થ ડ સહકાર ચારુહારો, કિસુય કણિયા
રાસોગમઝહો ડસિત તિલગ વડલાયવત્તો વસત ઝઝણરવહ સાહીણો)

તે ઋતુઓ ગ્રીષ્મ અને વસન્ત છે ફાલ્ગુ અને ચૈત્ર આ બે માસ
વસન્ત ઋતુના છે ત્યારે વૈશાખ અને જ્યેષ્ઠ આ બે માસ ગ્રીષ્મની ઋતુના

નરપતિઃ=વસન્તઋતુરૂપો રાજા સ્વાધીનો વર્તતે इति सम्बन्धः । स कीदृशः ? इत्याह—
 'सहकारचारुहारो' सहकारचारुहारः—सहकाराणि—सहकार पुष्पाणि—आम्रमञ्जर्यः,
 तान्येव बहुत्वसद्भावेन हाराकार परिणतत्वाच्चारुः=सुन्दरो हारो यस्य स तथा । पुनः
 —'किंशुककण्ठिगाराशोऽमुकुटः—किंशुकानि=पला
 शकुसुमानि, कर्णिकाराणि=कर्णिकारपुष्पाणि, अशोकानि=अशोकपुष्पाणि तान्येव
 मुकुटाकारपरिणतत्वान्मुकुटः=किरीट यस्य स तथा । 'ऊसियतिलगण्डलायवत्तो'
 उच्छिन्नतिलकमकुलातपनः—उच्छिन्नतानि=उन्नतानि तिलकमकुलानि=तिलकवकुल-
 पुष्पाणि, तान्येव आतप=उत्राकारपरिणतत्वेन उत्र यस्य स तथोक्तः । एतादृशो
 वसन्तर्त्तनरपतिस्तत्र स्वाधीनः सदा वर्तते ॥ १ ॥ अथ ग्रीष्मऋतुः सागररूपकेण
 वर्ण्यते—'तत्थय' तत्र च पश्चिमदिग्वनपण्डे 'गिम्हउउसागरो' ग्रीष्मर्तुरूपः
 सागरः=समुद्रः स्वाधीनः=स्वायत्तत्वेनानवरत वर्त्तमानोऽस्ति । स कीदृशः ?
 इत्याह—'पाडलसिरीससलिलो' पाटलशिरीषसलिलः—पाटलशिरीषाणि=पाटला
 शिरीषपुष्पाणि, तान्येव जल सादृश्यात्सलिलः=जलराशिरूप यस्य स तथा । 'मल्लि
 यवासतियधवन्वेलो' मल्लिकावासन्तिकाधवलवेलः—मल्लिका वासन्तिका च लता

ન્તઋતુ નરપતિ કે સમાન સદા વિચરણ કરતી રહતી હૈ—સહકાર (આ
 મ્ર) કી મજરિયાં હી હસ વસન્તઋતુ રૂપી રાજા કે સુન્દર હાર હૈ । કિ
 શુક—કર્ણિકાર એવ અશોકકે પુષ્પ હી હસ રાજા કે મુકુટ હૈ । ઉન્નત
 તિલક વૃક્ષ એવ વકુલ વૃક્ષ કે પુષ્પ હી હસકે છત્ર હૈ । (તત્થ ય—પાડલ
 સિરીસસલિલો મલ્લિયવાસતિયધવલવેલો, સીયલસુરભિઅનિલ મગ
 રચરિઓ ગિમ્હઝઝ સાગરો સાહીણો) હસ પશ્ચિમદિશા સમ્બન્ધી
 વનપડ મેં ગ્રીષ્મઋતુ સમુદ્ર કે સામાન સદા પસરા રહતા હૈ—ગુલાબ ઓર
 શિરીષ પુષ્પ યે હસ ગ્રીષ્મઋતુ રૂપ સમુદ્ર કે જલ હૈ । મલ્લિકા એવ વાસ

છે, આ પશ્ચિમ દિશાના વનમાં વસતઋતુ નરપતિ (રાજા) ની જેમ હ મેશા
 વિચરણ કરતી રહે છે સહકાર (આમ્રો) ની મજરીઓજ આ વસતઋતુ
 રાજાના સુદર હારો છે કિંશુક કર્ણિકાર (કનેર) અને અશોકના પુષ્પો જ આ
 રાજાના મુકુટ છે જી આ તિલક વૃક્ષો અને વકુલ વૃક્ષોના પુષ્પોજ એના છત્ર છે
 તત્થ ય પાડલસિરીસસલિલો મલ્લિકા વાસતિ ય ધવલવેલો સીયલસુરભિ
 અનિલમગરચરિઓ ગિમ્હ ઝઝ સાગરો સાહિણો)

તે પાશ્ચિમ દિશાના વનમાં હમાં ગ્રીષ્મઋતુ સમુદ્રની જેમ હ મેશા પ્રસરાયેલો
 રહે છે ગુલાબ અને શિરીષના પુષ્પોજ આ ગરમીની ઋતુ રૂપ સમુદ્રના પાણી
 છે મલ્લિકા અને વાસતિકા લતા જ જેના કિનારાઓ છે ઠંડો અને સુવાસિત

વિશેષઃ, તા એવ તરદ્વાકારપરિણતત્વાદ્ ધન્યો=શુભ્રા વેલા यस્ય સ તથા । 'સીય
લસુરભિ અનિલમગરચરિયો' શીતલસુરમ્યનિલમકરચરિતઃ - શ્રીતલઃ સુરભિશ્ચ
યોનિલઃ=વાયુઃ સ એવ ઇતસ્તતોભ્રમણસાદૃશ્યાત્ મકરચરિત=મકરમચ્ચારો યત્ર સ
તથોક્તઃ । એવમિધો ગ્રીષ્મઋતુસાગરસ્તત્ર સદૈવ વિદ્યત ઇતિ ॥ તત્ર સ્વલુ ત્રદ્વીપુ ત્રાપીપુ
યાત્રદ્ અભિરમમાણૌ વિહરતમ્=ક્રીડન્તૌ તિષ્ઠતમ્ । લોકે તુ માર્ગગીર્ણાદિક્રમેણ
દ્વૌ દ્વૌ માસૌ હેમન્તશિશિર-વસન્તગ્રીષ્મ-વર્ષા-શરત્સઙ્ગકાઃ પદ્મ ઋતવો ગણ્યન્તે ।
યદિ સ્વલુ યુવા દેવાનુપ્રિયૌ । તત્રાપિ=પાશ્ચિમદિગ્વનપણ્ડેડપિ ઉદ્ધિગ્નો ઉત્પ્લુતૌ

નિતિ કા લતાયે હી જિસ કી વેલાઈ હૈ-તટ હૈ-શીતલ સુરભિ પવન હી
જિસમેં મગરોં કા સચાર હૈ । એસા ગ્રીષ્મઋતુ રૂપ સાગર ઉસ વનસદ
મેં સદા વર્તમાન રહતા હૈ । (તત્થ ણ મહુસુ જાવ વિહરેજ્જાહ) વહીંપર
અનેક વાપિકાઈ આદિ મી હૈ । સો ઊન મેં મી તુમ દોનોં આનન્દ
કે સાથ વિચરણ કરતે રહના । (જઈણ તુમ્હે દેવોં—તત્થ વિ—
ઉવ્વિગ્ગા, ઉસ્સુયા મવેજ્જાહ, તઓ તુમ્હે જેણેવ પાસાયવડિંસણ
તેણેવ ઉવાગચ્છેજ્જાહ, મમ પડિવાલે માણા ૨ ચિદ્દેજ્જાહ, માણ તુમ્હે
દક્કિલ્લિલ્લ વનસદ ગચ્છેજ્જાહ તત્થ ણ મહ એગે ઉગ્ગવિસે ચડવિસે
ઘોરવિસે, મહાવિસે, અહકાય મહાકાણ જહા તેય નિસગ્ગે મસિમહિ
સામૂસા કાલણ નયણવિસરોસપુણે અજણપુજનિયરપ્પગાસે રત્તચ્છે
જમલજુયલચચલચલતજીહે, ધરણિયલવેણિભૂણ, ઉવ્વકકડુડકુડિલ
જડિલકકલ્લવિયડફળાડોવકરણદચ્છે, લોગાહારધમ્મમાણધમ
ધમેતયોસે અણાગલિયચડતિવ્વરોસે સમુહિં તુરિય ચવલ ધમ

પવન જ જેમા મગરોનુ સચરણ છે એવો ગ્રીષ્મ ઋતુ રૂપ સાગર તે વનસદ
સદા હાજર રહે છે (તત્થ ણ મહુસુ જાવ વિહરેજ્જાહ) ત્યાજ ઘણી વાવો
વગેરે છે તમે ણને તેઓમા પણ સુખેથી વિહાર કરતા રહેજો

(જઈણ તુમ્હે દેવોં તત્થ વિ ઉવ્વિગ્ગા ઉસ્સુયા મવેજ્જાહ તઓ તુમ્હે
જેણેવ પાસાયવડિંસણ તેણેવ ઉવાગચ્છેજ્જાહ, મમ પડિવાલે માણા ૨ ચિદ્દેજ્જાહ
માણ તુમ્હે દક્કિલ્લિલ્લ વનસદ ગચ્છેજ્જાહ તત્થ ણ મહ એગે ઉગ્ગવિસે ચડવિસે
ઘોરવિસે મહાવિસે અહકાયમહાકાણ જહા તેય નિસગ્ગે મસિ મહિસામૂસાકાલણ
નયણવિસરોસપુણે અજણપુજનિયરપ્પગાસે રત્તચ્છે જમલજુયલચચલચલત જી હે,
ધરણિયલવેણિ ભૂણ ઉવ્વકકડુ પુડકુડિલ જડિલકકલ્લ વિયડફળાડોર કરણ
દચ્છે લોગાહાર ધમમાણધમ્મધમેતયોસે અણાગલિયચડતિવ્વરોસે સમુહિં તુરિય
ચવલ ધમધમત દિહીવિસે સપ્પે ય પરિવસદ)

હો દેવાનુપ્રિયો ! ત્યા પણ તમને જો ગમે નહિ તમે આજ ઉત્તમ મહેલમા

વા ભવેત તદા રુહુ યુવા ચત્રૈવ પ્રાસાદાવતસક'—સ્વાવાસમ્ભવન તત્રૈવ ઉપાગચ્છત
પુનઃ સ્વપ્રાસાદાવતસકે સમાગત્ય સ્થાતવ્યમિત્યર્થઃ, 'મમ' મા ચ 'પડિવાલે-
માણા ૨' પ્રતિપાલયન્તૌ ૨=પ્રતીક્ષમાણૌ ૨ તિષ્ઠત, કિન્તુ મા રુહુ યુવા
'દક્ષિણિણુ' દાક્ષિણાત્ય=દક્ષિણદિશાસમ્યન્ધિક વનપણ્ડ ગચ્છત=યુવાભ્યા
દક્ષિણદિગ્વર્તિતવનપણ્ડે ન ગન્તવ્યમિત્યર્થઃ । કસ્માત્? इत्याह—तत्र रूहू महानेनः—
'उग्रविसे' उग्र विष यस्य स तथोक्त । विषस्य-उग्रत्वं दुर्जरत्वात् । एवमग्रेऽपि
सयोज्यम् । एव 'चण्डविसे' चण्डविषः, चण्डत्वं झटिति प्रतिप्रदेश व्यापकत्वात् ।
'घोरविसे' घोरविष, घोरत्व परम्परातः पुरुषसहस्रस्यापि घातकत्वात् । 'महा
विसे' महानिष, महत्त जम्बूद्वीप परिमितशरीरस्यापि विनाशनत्वात् । 'अइ
काए' अतिकायः—अन्यसर्पापेक्षया दीर्घशरीरत्वात्, महाकायः—अन्यसर्पापेक्षया
स्थूल शरीरत्वात् । 'मसिमहिसमूसात्रालए' मपीमहिपमूपाकालकः—मपी=कज्जल,
महिप प्रमिद्धः, मूपा=सुवर्ण द्रावणपात्रविशेषः, एतेषां द्व द्वे मपीमहिपमूपा.

ઘમતદિટ્ટીવિસે સપ્પે ય પરિવસહ) યદિ હે દેવાનુપ્રિયો 'તુમ્હારા વહા
ન લગે—ઉદ્ધિગ્ન એવ ઉત્સુક ઘન જાવે તો ફિર તુમ અપને હસી શ્રેષ્ઠ
પ્રાસાદ મેં વાપિસ આ જાના ઓર યહી પર રહતે હુએ હમારી પ્રતીક્ષા
કરના । દક્ષિણ દિશા સવન્ધી વનપણ્ડ મેં મત જાના । કારણ વહા
એક એસા વડો ભારી સર્પ રહતા હૈ કિ જિસ કા વિષ વહુત અધિક
દુર્જર હોને સે ઉગ્ર હૈ । વહુત ઝીઘ પ્રતિ પ્રદેશમેં ફેલ જાને સે ચણ્ડ હૈ ।
પરમ્પરા સે પુરુષ સહસ્ર કા ઘાતક હોને સે ઘોર હૈ, જમ્બૂદ્વીપ કે વરાવર
શરીર કા ભી વિનાશક હોને સે મહાનુ હૈ । અન્ય સર્પો કી અપેક્ષા
યહ સર્પ વહુત લગા હૈ । તથા વહુત સ્થૂલ હૈ । મપી—કજ્જલ—મહિપ—
એસા ઓર મૂપા—સુવર્ણ કે પિઘલાને કા પાત્ર વિશેષ કે સમાન યહ
અત્યન્ત શ્યામવર્ણ વાલા હૈ । હિસ કી દોનોં ઑંઘો મેં વિષ રહતા હૈ

પાછા આવતા રહેલે અને અહીંજ રહીને ભારી રહીને દક્ષિણ દિશાના
વનખડમા તમે જતા નહિ કેમ કે ત્યાં એક બહુ મોટો સાપ રહે છે તેનું
ઝેર ખૂબ જ દુર્ધર હોવા બદલ ઉશ્ચે છે પ્રતિ પ્રદેશમા તે સત્વરે પ્રસરી બીધ
છે એટલા માટે તે યહ છે પરપરાથી જ તે પુરુષ સહસ્રને મારનારો હોવાથી
ઘોર છે જ જમ્બૂદ્વીપ જેટલા પ્રમાણના શરીરનો પણ તે નાગ કરી શકે તેમ છે
તેથી તે મહાનુ છે બીજા સાપો કરતા તે બહુ જ લાંબો તેમજ ખૂબ જ મોટો
છે મપી—કાજળ, મહિપ—ભેસો, અને મૂપા—સોનાને ઓગળાવવા માટેનું પાત્ર
વિશેષ—ની જેમ તે ખૂબ જ કાળા રંગ વાળો છે તેની બને આખોમા પણ

વિશેષઃ, તા એવ તરજ્ઞાકારપરિણતત્વાદ્ ધનન્તી=શુભ્રા વેલા યસ્ય સ તથા । 'સીય
લસુરભિ અનિલમગરચરિયો' શીતલસુરભ્યનિલમકરચરિતઃ - શીતલઃ સુરભિશ્ચ
યોઽનિલઃ=વાયુઃ સ એવ ઇતસ્તતોભ્રમણસાદૃશ્યાત્ મકરચરિત=મકરમશ્ચારો યત્ર સ
તથોક્તઃ । એવત્રિધો ગ્રીષ્મઋતુસાગરસ્તત્ર સદૈવ વિદ્યત ઇતિ૦ । તત્ર સલુ બદ્ધીપુ ત્રાપીપુ
યાવદ્ અભિરમમાણૌ વિહરતમ્=ક્રીડન્તૌ તિષ્ઠતમ્ । લોકે તુ માર્ગગીર્ષાદિક્રમેણ
દ્વૌ દ્વૌ મામૌ હેમન્તશિશિર-વસન્તગ્રીષ્મ-વર્ષા-શરત્સઙ્ગઃ પદ્મ શ્રતયો ગણ્યન્તે ।
યદિ સલુ યુવા દેવાનુપ્રિયૌ । તત્રાપિ=પાશ્ચિમદિગ્વનપન્થેઽપિ ઉદ્વિગ્નો ઉત્પ્લુતૌ

નિતિ કા લતાયે હી જિસ કી વેલાઈ હૈ-તટ હૈ-શીતલ સુરભિ પવન હી
જિસમેં મગરોં કા સ ચાર હૈ । એસા ગ્રીષ્મઋતુ રૂપ સાગર ઉસ વનસદ
મેં સદા વર્તમાન રહતા હૈ । (તત્થ ણ બહુસુ જાવ વિહરેજ્જાહ) યહીંપર
અનેક વાપિકાઈ આદિ બી હૈ । સો उन में भी तुम दोनों आनन्द
के साथ विचरण करते रहना । (જહણ તુબ્હે દેવો-તત્થ વિ-
ઉવિગ્ગા, ઉસ્સુયા ભવેજ્જાહ, તઓ તુબ્હે જેણેવ પાસાયવડિંસણ
તેણેવ ઉવાગચ્છેજ્જાહ, મમ પડિવાલે માણા ૨ ચિટ્ઠેજ્જાહ, માણ તુબ્હે
દક્ષિણિલ્લ વનસદ ગચ્છેજ્જાહ તત્થ ણ મહ ણમે ઉગ્ગવિસે ચડવિસે
ઘોરવિસે, મહાવિસે, અઙ્કાય મહાકાણ જહા તેય નિસગ્ગે મસિમહિં
સામૂસા કાલણ નયણવિસરોસપુણે અજણપુંજનિયરપ્પગાસે રત્તચ્છે
જમલજુયલચ્ચલચલનજીહે, ધરણિયલવેણિભૂણ, ઉક્કડ પુડકુડિલ
જડિલકકલ્લડ વિયડક ણાડોર કરણ દચ્છે, લોગાહાર ધમ્મમાણધમ
ધમેતથોસે અનાગલિયચ્ચડતિવ્વરોસે સમુહિં તુરિય ચવલ ધમ

પવન જ જેમા મગરોતુ સચરણ છે એવો ગ્રીષ્મ ઋતુ રૂપ સાગર તે વનખડમા
સદા હાજર રહે છે (તત્થ ણ બહુસુ જાવ વિહરેજ્જાહ) ત્યાજ ધણી વાવો
વગેરે છે તમે ણને-તેઓમા પણ સુખેથી વિહાર કરતા રહેજો

(જહણ તુબ્હે દેવો-તત્થ વિ' ઉવિગ્ગા ઉસ્સુયા ભવેજ્જાહ તઓ તુબ્હે
જેણેવ પાસાય'વડિંસણ તેણેવ ઉવાગચ્છેજ્જાહ, મમ પડિવાલે માણા ૨ ચિટ્ઠેજ્જાહ
માણ તુબ્હે દક્ષિણિલ્લ વનસદ ગચ્છેજ્જાહ તત્થ ણ મહ ણમે ઉગ્ગવિસે ચડવિસે
ઘોરવિસે મહાવિસે અઙ્કાયમહાકાણ જહા તેય નિસગ્ગે મસિ મહિસામૂસાકાલણ
નયણવિસરોસપુણે અજણપુંજનિયરપ્પગાસે રત્તચ્છે જમલજુયલચ્ચલચલત જી હે,
ધરણિયલવેણિ ભૂણ ઉક્કડ પુડકુડિલ જડિલકકલ્લડ વિયડક ણાડોર કરણ
દચ્છે લોગાહાર ધમમાણધમ્મધમેતથોસે અનાગલિયચ્ચડતિવ્વરોસે સમુહિં તુરિય
ચવલ ધમધમત દિહીવિસે સપ્પે ય પરિવસદ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! ત્યા પણ તમને જો ગમે'તકિ તમે આજ ઉત્તમ મહેલમા

વા ભવેત તદા રુહુ યુવા યત્રૈવ પ્રાસાદાવતસક' = સ્વાવાસભવન તત્રૈવ ઉપાગચ્છત
પુનઃ સ્વપ્રાસાદાવતસકે સમાગત્ય સ્થાતવ્યમિત્યર્થઃ, 'મમ' મા ચ 'પડિવાલે
માળા ૨' પ્રતિપાલ્યન્તૌ ૨ = પ્રતીક્ષમાણૌ ૨ તિષ્ઠત, વિન્તુ મા રુહુ યુવા
'દક્ષિણિણ' દાક્ષિણાત્ય = દક્ષિણદિશાસમ્યન્ધિક વનપણ્ડ ગચ્છત = યુવાભ્યા
દક્ષિણદિગ્વર્તિતવનપણ્ડે ન ગન્તવ્યમિત્યર્થઃ । કરમાત્ ? इत्याह-तत्र खलु महानेन:-
'उग्रविसे' उग्र विष यस्य स तथोक्त । विषस्य-उग्रत्व दुर्जरत्वात् । एवमग्रेऽपि
सयोज्यम् । एव 'चण्डविसे' चण्डविषः, चण्डत्वं झटिति प्रतिप्रदेश व्यापकत्वात् ।
'घोरविसे' घोरविष, घोरत्व परम्परातः पुरुषसहस्रस्यापि घातकत्वात् । 'महा
विसे' महाविष, महत्तज्जम्बूद्वीप परिमितशरीरस्यापि विनाशनत्वात् । 'अङ्
काए' अतिकायः-अन्यसर्पापेक्षया दीर्घशरीरत्वात्, महाकायः-अन्यसर्पापेक्षया
स्थूल शरीरत्वात् । 'मसिमहिममूसाभालए' मपीमहिममूपाकालकः-मपी=कज्जल,
महिष प्रसिद्ध, मूपा=सुवर्ण द्रावणपात्रविशेषः, एतेषां द्वन्द्वे मपीमहिममूपा.

ઘમતદિટ્ટીવિસે સપ્પે ચ પરિવસહ) યદિ હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ્હારા વહા
ન લગે-ઉદ્ધિગ્ન એવ ઉત્સુક થન જાવે તો ફિર તુમ અપને હસી શ્રેષ્ઠ
પ્રાસાદ મેં વાપિસ આ જાના ઓર યહી પર રહતે હુએ હમારી પ્રતીક્ષા
ફરના । દક્ષિણ દિશા સવન્ધી વનપણ્ડ મેં મત જાના । કારણ વહાં
એક એસા વડો ભારી સર્પ રહતા હૈ કિ જિસ કા વિષ વહુત અધિક
દુર્જર હોને સે ઉગ્ર હૈ । વહુત ગીઘ્ર પ્રતિ પ્રદેશમેં ફેલ જાને સે ચણ્ડ હૈ ।
પરમ્પરા સે પુરુષ સહસ્ર કા ઘાતક હોને સે ઘોર હૈ, જમ્બૂદ્વીપ કે વરાચર
શરીર કા ભી વિનાશક હોને સે મહાન્ હૈ । અન્ય સર્પો કી અપેક્ષા
યહ સર્પ વહુત લગા હૈ । તથા વહુત સ્થૂલ હૈ । મપી-કજ્જલ-મહિષ-
મૈસા ઓર મૂપા-સુવર્ણ કે પિઘલાને કા પાત્ર વિશેષ કે સમાન યહ
અત્યન્ત શ્યામવર્ણ વાલા હૈ । હસ કી દોનોં ઑંચો મેં વિષ રહતા હૈ

પાછા આવતા રહેજો અને અહીંજ રહીને મારી રહ જોજો દક્ષિણ દિશાના
વનખંડમાં તમે જતા નહિ કેમ કે ત્યાં એક ખડુ મોટો સાપ રહે છે તેનું
ઝેર ખૂબ જ દુર્ધર હોવા બદલ ઉગ્ર છે પ્રતિ પ્રદેશમાં તે સત્વરે પ્રસરી જાય
છે એટલા માટે તે ચડ છે પરપરાથી જ તે પુરુષ સહસ્રને મારનારો હોવાથી
ઘોર છે જમ્બૂદ્વીપ જેટલા પ્રમાણના શરીરનો પણ તે નાશ કરી શકે તેમ છે
તેથી તે મહાન્ છે બીજા સાપો કરતાં તે ખડુ જ લાખો તેમજ ખૂબ જ મોટો
છે મપી-કાજળ, મહિષ-લેસો, અને મૂપા-સોનાને ઓગળાવવા માટેનું પાત્ર
વિશેષ-ની જેમ તે ખૂબ જ કાળા રંગવાળો છે તેની બંને આંખોમાં પણ

વિશેષઃ, તા એવ તરઙ્ગાકારપરિણતત્વાદ્ ધન્યો=શુભ્રા વેલા यस્ય સ તથા । 'સીય
લસુરભિ અનિલમગરચરિયો' શીતલસુરભ્યનિલમકરચરિતઃ - શીતલઃ સુરભિશ્ચ
યોઽનિલઃ=વાયુઃ સ એવ ઇતસ્તતોભ્રમણસાદૃશ્યાત્ મકરચરિત=મકરમશ્ચારો યત્ર સ
તથોક્તઃ । એવત્રિધો ગ્રીષ્મઋતુસાગરસ્તત્ર સદૈવ વિદ્યતે ઇતિ ॥ તત્ર સલુ ત્રદ્વીપુ ત્રાપીણ
યાવદ્ અભિરમમાણૌ વિહરતમ્=ક્રીડન્તૌ તિષ્ઠતમ્ । લોકે તુ માર્ગશીર્ષાદિક્રમેણ
દ્વૌ દ્વૌ માસૌ હેમન્તશિશિર-વસન્તગ્રીષ્મ-વર્ષા-શરત્સઙ્ગકાઃ પદ્મ શ્રતપો ગણ્યન્તે ।
યદિ સલુ યુવા દેવાનુપ્રિયૌ । તત્રાપિ=પાશ્ચિમદિગ્વનપન્થેઽપિ ઉદ્ગિર્ના ઉદ્પ્લુતૌ

ન્તિ કા લતાયે હી જિસ કી વેલાઈ હૈં-તટ હૈ-શીતલ સુરભિ પવન હી
જિસમેં મગરોં કા સ ચાર હૈં । એસા ગ્રીષ્મઋતુ રૂપ સાગર ઉસ વનસડ
મેં સદા વર્તમાન રહતા હૈ । (તત્થ ણ બહુસુ જાવ વિહરેજ્જાહ) રહીંપર
અનેક વાપિકાઈ આદિ બી હૈ । સો उन में भी तुम दोनों आनन्द
के साथ विचरण करते रहना । (जहण तुम्हे देवा०—तत्थ वि—
उव्विग्गा, उस्सुया भवेज्जाह, तओ तुम्हे जेणेव पासायवडिंसए
तेणेव उवागच्छेज्जाह, मम पडिवाले माणा २ चिट्ठेज्जाह, माण तुम्हे
दक्खिणिल्ल वनसड गच्छेज्जाह तत्थ ण मह एगे उग्गविसे चडविसे
घोरविसे, महाविसे, अइकाय महाकाए जहा तेय निसग्गे मसिमहि
सामूसा कालए नयणविसरोसपुण्णे अजणपुजनिघरप्पगासे रत्तच्छे
जमलजुयलचचलचलनजीहे, धरणिगलवेणिभूए, उक्कड पुडकुडिल
जडिलकक्खड विघडफणाडोवकरणदच्छे, लोगाहारधम्ममाणधम
धमेतपोसे अणागलियचडतिव्वरोसे समुहिं तुरिय चवल धम

પવન જ જેમા મગરોનુ સચરણ છે એવો ગ્રીષ્મ ઋતુ રૂપ સાગર તે વનખડમા
સદા હોજર રહે છે (તત્થ ણ બહુસુ જાવ વિહરેજ્જાહ) ત્યાજ ધણી વાવો
વગેરે છે તમે ણને તેઓમા પણ સુખેથી વિહાર કરતા રહેજો

(જહણ તુમ્હે દેવા૦ તત્થ વિ' ઉવ્વિગ્ગા ઉસ્સુયા ભવેજ્જાહ તઓ તુમ્હે
જેણેવ પાસાય'વડિંસए તેણેવ ઉવાગચ્છેજ્જાહ, મમ પડિવાલે માણા ૨ ચિટ્ઠેજ્જાહ
માણ તુમ્હે દક્ખિણિલ્લ વનસડ ગચ્છેજ્જાહ તત્થ ણ મહ એગે ઉગ્ગવિસે ચડવિસે
ઘોરવિસે મહાવિસે અહકાયમહાકાए જહા તેય નિસગ્ગે મસિ મહિસામૂસાકાલए
નયણવિસરોસપુણ્ણે અજણપુજનિયરપ્પગાસે રત્તચ્છે જમલજુયલચચલ્લચલત જી હે,
ધરણિયલવેણિ ભૂए ઉક્કડ પુડકુડિલ જડિલકક્કલ્લ વિઘડફ નાડોવ કરણ
દચ્છે લોગાહાર ધમમાણધમ્મધર્મેતપોસે અનાગલિયચડતિવ્વરોસે સમુહિં તુરિય
ચવલ ધમધમત દિઢીવિસે સપ્પે ય પરિવસદ')

હે દેવાનુપ્રિયો ! ત્યા પણ તમને જો ગમેનહિ તમે આજ ઉત્તમ મહેલમા

કરે=લોહતાપનસ્થાને 'ભટ્ટી' ઇતિ ભાષાપ્રમિલ્લે ધમાયમાનઃ=ચરિતાપ્યમાનો લોહઃ
તદ્વદ્ યદ્ ધમધમાયમાનો=ધમ-ધમેતિ કુર્વન્ ધોષ.=શબ્દો यस્ય સ તથા ।
'અનાકલિતચણ્ડતીવ્રોસે' અનાકલિતચણ્ડતીવ્રોષઃ, અનાકલિતઃ=અપરિ-
મિતઃ ચણ્ડતીવ્રઃ=અત્યન્તોગો રોષો यस્ય સ તથા । 'સમુદ્ધિ' શ્વમુલ્લિકા=
શ્વમુલ્લિકાસ્વેવાડચરણ શુન ઇવ ભવણમ્, 'તુરિય' ત્વરિતમ્, 'ચવલ' ચપલ યથા
સ્યાત્તથા 'ધમધમતદિદ્વિવિસે' ધમધમાયમાનદૃષ્ટિવિષઃ-ધમધમાયમાન=જાજ્વ-
લ્યમાનમ્ દૃષ્ટૌ વિષ યસ્ય સ તથોક્તઃ, એતાદૃશ સર્પથ તત્ર પરિવસતિ, તસ્માદ્
'માણ' મા શ્વલ્લુ યુત્ત્રા તત્ર ગન્ડતમિતિ સમ્પન્નઃ । અન્યથા-તત્ર ગમને-યુવયો
શરીરસ્યે વ્યાપત્તિ મિષિષ્યતિ । એવ સા તૌ માકન્દિકદારકૌ 'દોચ્ચપિ તચ્ચપિ'
દ્વિતીયમપિ તતીયમપિ ત્રાર દ્વિત્રિશારમિત્યર્થઃ, એવ વદતિ, એવમુક્ત્વા વૈક્રિય
સમુદ્ધાતેન 'સમોદ્ધનહ' સમવદન્તિ વૈક્રિયસમુદ્ધાત કરોતીત્યર્થઃ, 'સમોદ્ધનિત્તા
સમવહત્ય=સમુદ્ધાત કૃત્વા તયા=દેવપ્રસિદ્ધયા ઉત્કૃષ્ટયા ગત્યા લવણમમુદ્ર ત્રિસ-
પ્તકૃત્વઃ=અકર્ષિતિવારમ્ 'અણુપરિયદ્વેષ' અનુપરિયદ્વિતુ પરિતોડદિતુ પ્રવૃત્તા
ચાપ્યાસીત ॥ સુ૦ ૪ ॥

ઉગ્રરોષ હૈ ચર અનાકલિત-અપરિમિત-હૈ । કુત્તે કે ભોંકને કે સમાન
હસ કી આવાજ નિકલતી હૈ । યહ ત્વરા સપન્ન ઔર વદ્ધત હી ચપલ
હૈ । હસ કી દૃષ્ટિ મેં વિષ સદા જાજ્વલ્યમાન રહતા હૈ (માણ તુભ
સરીરગસ્સ વાવત્તી મિષિસ્મહ, તે માગદિયદારણ દોચ્ચપિ તચ્ચપિ એવ
વયહર વેડવિવિયસમુદ્ધાણ સમોદ્ધનહર તાણ ઉચ્ચિકઢાણ લવણસમુદ્ધ
ત્તિસત્તલુત્તો અણુપરિયદ્વેય પવત્તા યાવિ હોત્યા) હસ લિયે તુમ દોનોં
વહાં મત જાના । નહીં તો તુમ્હારે શરીરકી કુશલતા નહીં રહેગી । હસી
પ્રકાર ઉસ રચણા દેવી ને ઉન માકન્દિકદારકોં કો દુવારા મી-તિથારા
મી-સમદ્ધાયો બુદ્ધાયા ફિર સમદ્ધા બુદ્ધાકર ઉસ ને વૈક્રિય સમુદ્ધાત

ઉગ્રરોષ અનાકલિત-અપરિમિત-હે કૂતરાની ભસવાની જેમ તેનો અવાજ
નીકળતો રહે છે આ ત્વરા સપન્ન અને ખૂબ જ ચપલ છે એની આખમા
ઝેર હમેશા જાજ્વલ્યમાન રહે છે

(માણ તુભ સરીરગસ્સ વાવત્તી મિષિસ્મહ તે માગદિયદારણ દોચ્ચપિ તચ્ચપિ
એવ વયહર વેડવિવિયસમુદ્ધાણ સમોદ્ધનતિ ર તાણ ઉચ્ચિકઢાણ લવણ-
મમુદ્ધત્તિ સત્ત લુત્તો અણુપરિયદ્વેય પવત્તા યાવિ હોત્યા)

એટલા માટે તમે બને ત્યા જતા નહિ નહિતર તમારા શરીરનુ કુશળ
રહેશે નહિ આ પ્રમાણે જ તે રચણા દેવીએ માકન્દિકાન્કેને બે વાર ત્રણ
વાર સમજાવ્યા અને સમજાવવાનુ કામ પતાવીને તેણે વૈક્રિય સમુદ્ધાત કર્યો

તા ઇવ ષાલકઃ=શ્યામદર્ણઃ ' નયનવિસરોસપુણ્ણે ' નયનવિપરોષપૂર્ણઃ - નયનયો વિપરોષશ્ચ, તામ્યા પૂર્ણઃ ' અજળપુજ નિયરપ્પગાસે ' અજ્ઞનપુજનિકરપ્રકાશઃ-
 ષઽજલપુજાના નિકરઃ= રાશિઃ તદ્વત્પ્રકાશઃ=ચાન્તિર્દસ્ય સ તથોક્તઃ-અત્યન્ત
 શ્યામ इत्यर्थः । ' રત્તચ્છે ' રક્તાક્ષઃ = રક્તનેત્ર । ' જમલજુયલચચલચલતજીહે'
 યમલયુગલચચલચલજિહ્વ - યમલે=સહપર્તિનો યુગલે=ઉમે ચચલે=ચપલે ચલન્ત્યો
 પુન પુનર્વહિર્નિસ્સરન્ત્યો જિહ્વે यस્ય સ તથા । ' ધરણીયલવેણિભૂષ ' ધરણિતલવેણી
 ભૂત અતિદૈર્ઘ્યશ્યામત્વાદિસાદૃશ્યાત્ પૃથિવ્યા કૈશવાશસદૃશઃ ' ઉવકડફુડ
 કુટિલજટિલવક્રવડવિયડફડાડોવકરણદચ્છે ' ઉત્કટસ્ફુટકુટિલજટિલ વર્કશ-
 વિકટસ્પટાટોપકરણદક્ષઃ - ઉત્કટઃ = વલવતાઽ પિ ધ્યસયિતુમશક્યઃ, સ્ફુટઃ
 વ્યક્તઃ કુટિલઃ=વક્ર, જટિલઃ-સિંહવત્ શટાયુક્તઃ, વર્કશ=કઠોરઃ, વિકટશ્ચ=
 ભયદુરો યઃ ફટાટોપ=ફળાડન્નરઃ તસ્ય કરણે વિસ્તારણે દક્ષઃ=નિપુણઃ । લોહા
 ગરધન્નમાણગ્રમધમત ઘોસે ' લોહાકરધમાયમાન ધમધમાયમાન ઘોષ - લોહા

યજ્ઞ થડા ગુસ્સે ઘાજ હૈ । કજ્જલ પુજ કી રાશિ કે સમાન યહ બિલકુલ
 કાલા હૈ । હમ કે દોનોં નેત્ર સદા લાલ રહતે હૈં । હસ કી સાથ ર રહી
 હુઈ દોનોં ચચલ જિહ્વાઈ ચાર ર બાહર નિકલની રહતી હૈં । અત્યન્ત
 દીર્ઘ એવ શ્યામ હોને કે કારણ યહ દેગ્વને મેં એસા લગતા હૈ કિ જૈસે
 માનો પૃથિવી રૂપ સ્ત્રી કી વેળી ચોટી હી હો । વલવાન્ પુરુષ મી જિસે
 નષ્ટ નહીં કર સક્તા હૈ જો વ્યક્ત હૈ, કુટિલ-વક્ર-હૈ, સિંહ કે સમાન
 શટાં સપન્ન હૈ, વર્કશ હૈ, ઓર વિકટ-ભયકર હૈ-એસી અપની ફળા
 કે ફેલાને મેં યહ વડા મારી દક્ષ હૈ । મઘી મેં તપતે હુળ લોહે કા જૈસે
 ધમ ધમ શબ્દ હોતા હૈ ડસી પ્રકાર હસ સે નિકલા હુઆ શબ્દ મી ધમ
 ધમ એસી આવાજ કરતા હુઆ હી નિકલતા હૈ । હમ કા અત્યન્ત જો

ઝેર રહે છે તે બહુ જ ક્રોધી છે ઝાઝળતા સમૂહની જેમ સાવ કેળો છે તેના
 બને નેત્રો હ મેશા રાતા રહે છે તેની સાથે રહેનારી બને બુલો ચચળ
 તેમજ વાર વાર બહાર નીકળતી રહે છે બહુ લાળો અને કાળો હોવાથી તે
 જોવામા એવો લાગે છે કે બહુ પૃથ્વી રૂપી સ્ત્રીની વેણી (ચોટી) જ ન
 હોય બળવાન પુરુષ પણ જેને નષ્ટ કરી શકતા નથી, જે વ્યક્ત છે, કુટિલ
 વક્ર-છે, સિંહની જેમ શટા સપન્ન (કેશવાળી) છે, વર્કશ છે, અને વિકટ-
 ભયકર-છે એવી યોતાની રૂણાને રૂલાવવામા તે ભારે દક્ષ છે ભઠ્ઠીમા તપા
 વવામા આવેલા લોખંડનો જેમ ' ધમ ધમ ' ધ્વનિ થાય છે તે પ્રમાણે જ
 તેમાથી નીકળતો ધ્વનિ પણ ' ધમ ધમ ' અવાજ કરતો ' ધમ ધમ ' તેનો

કરે=લોહતાપનસ્થાને 'ભટ્ટી' इति भाषाप्रमिद्धे ध्मायमानः=शरिताप्यमानो लोहः
तद्वद् यद् धमधमायमानो=धम-धमेति कुर्वन् धोषः=शब्दो यस्य स तथा ।
'अणागलियचंडतिव्वरोसे' अनाकलितचण्डतीत्रोपः, अनाकलितः=अपरि-
मितः चण्डतीत्रः= अत्यन्तोगो रोपो यस्य स तथा । 'समुहिं' श्वमुखिका=
श्वमुखस्येवाऽऽचरणं शुन इव भणम्, 'तुरिय' त्वरितम्, 'चवल' चपल यथा
स्यात्तथा 'धमधमतदिट्ठिप्पिसे' धमधमायमानदृष्टिप्पिः-धमधमायमान=जाज्व-
ल्यमानम् दृष्टौ पिप्प यस्य स तथोक्तः, एतादृश सर्पश्च तत्र परिवसति, तस्माद्
'माण' मा खलु युवा तत्र गच्छतमिति सम्बन्धः । अन्यथा-तत्र गमने-युवयो
शरीरस्य व्यापत्तिं भविष्यति । एव सा तौ माकन्दिकदारकौ 'दोच्चपि तच्चपि'
द्वितीयमपि तृतीयमपि चार द्वित्रिशरमित्यर्थः, एव वदति, एवमुक्त्वा वैक्रिय
समुद्घातेन 'समोहणइ' समवदन्ति वैक्रियसमुद्घातं करोतीत्यर्थः, 'समोहणित्ता
समवहत्य=समुद्घातं कृत्वा तथा=देवप्रसिद्धया उत्कृष्टया गत्या लवणममुद्रं त्रिस-
प्तकं च=एकविंशतिवारम् 'अणुपरियट्ठेउ' अनुपर्यटितुं परितोऽटितुं प्रवृत्ता
चाप्यासीत् ॥ सू० ४ ॥

उग्ररोપ है वह अनाकलित-अपरिमित-है । कुत्ते के भोकने के समान
इस की आवाज निकलती है । यह त्वरा सपन्न और बहुत ही चपल
है । इस की दृष्टि में विष सदा जाज्वल्यमान रहता है (माण तुब्भ
सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ, ते मागदियदारए दोच्चपि तच्चपि एव
वयइ २ वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ २ ताए उक्किट्ठाए लवणसमुद्घ-
त्तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठेय पयत्ता यावि होत्था) इस लिये तुम दोनों
वहाँ मत जाना । नहीं तो तुम्हारे शरीरकी कुशलता नहीं रहेगी । इसी
प्रकार उस रथणा देवी ने उन माकदि दारकों को दुवारा भी-तिथारा
भी-समझाया बुझाया फिर समझा बुझाकर उस ने वैक्रिय समुद्घात

ઉગ્રરોપ અનાકલિત-અપરિમિત-છે ફૂતરાની ભસવાની જેમ તેનો અવાજ
નીકળતો રહે છે આ ત્વરા સપન્ન અને ખૂબ જ ચપલ છે એની આખમા
ઝેર હોમેશા જાજ્વલ્યમાન રહે છે

(માણ તુબ્ભ સરીરગસ્સ વાવત્તી ભવિસ્સइ તે માગદિયદારए दोच्चपि तच्चपि
एव वयइ २ वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणति २ ताए उक्किट्ठाए लवण-
ममुदत्ति सत्त खुत्तो अणुपरियट्ठेय पयत्ता यावि होत्था)

એટલા માટે તમે બંને ત્યા જતા નહિ નહિતર તમારા શરીરનુ કુથળ
રહેશે નહિ આ પ્રમાણે જ તે રથણા દેવીએ માકદીદારકોને બે વાર ત્રણ
વાર સમજાવ્યા અને સમજાવવાનુ કામ પતાવીને તેણે વૈક્રિય મસુદ્ધાત કર્યો

यह बड़ा गुस्से धाज है । वज्रल पुज की रोशि के समान यह बिलकुल काला है । हम के दोनों नेत्र सदा लाल रहते हैं । इस की साथ २ रही हुई दोनों चंचल जिह्वाँ चार २ बाहर निकलनी रहती हैं । अत्यन्त दीर्घ एव श्याम होने के कारण यह देखने में ऐसा लगता है कि जैसे मानो पृथिवी रूप स्त्री की वेणी चोटी ही हो । बलवान् पुरुष भी जिसे नष्ट नहीं कर सकता है जो व्यक्त है, कुटिल-वक्र-है, सिंह के समान शठा सपन्न है, कर्कश है, और विकट-भयकर है-ऐसी अपनी कणा के फैलाने में यह बड़ा भारी दक्ष है । भट्टी में तपते हुए लोहे का जैसे धम धम शब्द होता है उसी प्रकार इस से निकला हुआ शब्द भी धम धम ऐसी आवाज करता हुआ ही निकलता है । इस का अत्यन्त जो

ઝેર રહે છે તે બહુ જ કોપી છે ઢાઢળના સમૂહની જેમ સાવ કાળો છે તેના બને નેત્રો હંમેશા રાતા રહે છે તેની સાથે રહેનારી બને જીભો ચ ચળ તેમજ વારવાર બહાર નીકળતી રહે છે બહુ લાંબો અને કાળો હોવાથી તે જોવામા એવો લાગે છે કે બાણે પૃથ્વી રૂપી સ્ત્રીની વેણી (ચોટી) જ ન હોય બગવાન પુરુષ પણ જેને નષ્ટ કરી શકતા નથી, જે વ્યક્ત છે, કુટિલ વક્ત્ર-છે, સિંહની જેમ શટા સપન (કેશવાળી) છે, કર્કશ છે, અને વિકટ-લય કર-છે એવી પોતાની રૂણાને ફેલાવવામા તે ભારે દક્ષ છે બહુમા તપાવવામા આવેલા લોખંડનો જેમ, ' ધમ ધમ ' ધ્વનિ થાય છે તે પ્રમાણે જ તેમાથી નીકળતો ધ્વનિ પણ ' ધમ ધમ ' અવાજ કરતો ~ ~ તેનો

કરે=લોહતાપનસ્થાને 'ભટ્ટી' ઇતિ ભાષાપ્રમિલ્લે ધમાયમાનઃ=ચરિતાપ્યમાનો લોહઃ
તદ્વદ્ યદ્ ધમધમાયમાનો=ધમ-ધમેતિ કુર્વન્ ધોપ.=શબ્દો यस્ય સ તથા ।
'અનાકલિતચણ્ડતીવ્રોષે' અનાકલિતચણ્ડતીવ્રોષઃ, અનાકલિતઃ=અપરિ-
મિતઃ ચણ્ડતીવ્રઃ=અત્યન્તોગ્રો રોષો यस્ય સ તથા । 'સમુહિં' શ્વમુલિકા=
શ્વમુલસ્યેવાઽઽચરણ શુન ઇવ ભપણમ્, 'તુરિય' ત્વરિતમ્, 'ચત્તલ' ચપલ યથા
સ્થાત્તથા 'ધમધમતદિદ્વિવિસે' ધમધમાયમાનદૃષ્ટિવિષઃ-ધમધમાયમાન=જાજ્વ-
લ્યમાનમ્ દૃષ્ટો વિષ યસ્ય સ તથોક્તઃ, એતાદૃશ સર્પથ તત્ર પરિવસતિ, તસ્માદ્
'માણ' મા સ્વલ્પ યુવા તત્ર ગન્ઠતમિતિ સમ્યન્વઃ । અન્યથા-તત્ર ગમને-યુવયો
શરીરસ્ય વ્યાપત્તિ ભવિષ્યતિ । એવ સા તૌ માકન્દિકદારકૌ 'દોચ્ચપિ તચ્ચપિ'
દ્વિતીયમપિ તતીયમપિ ત્રાર દ્વિત્રિત્રારમિત્યર્થઃ, એવ વદતિ, એમુક્ત્વા વૈક્રિય
સમુદ્ઘાતેન 'સમોદ્ઘાત' સમવહન્તિ વૈક્રિયસમુદ્ઘાત કરોતીત્યર્થઃ, 'સમોદ્ઘાતિતા
સમવહત્ય=સમુદ્ઘાત કૃત્વા તયા=દેવપ્રસિદ્ધયા ઉત્કૃષ્ટયા ગત્યા લવણમમુદ્ર ત્રિસ-
ત્કૃત્વઃ=એકત્રિંશતિવારમ્ 'અણુપરિચદ્વેઝ' અનુચરિતુ પરિતોઽટિતુ પ્રવૃત્તા
ચાપ્યાસીત ॥ સુ૦ ૪ ॥

હમરોય હૈ વહ અનાકલિત-અપરિમિત-હૈ । કુત્તે કે ભોંકને કે સમાન
હસ કી આવાજ નિકલતી હૈ । યહ ત્વરા સપન્ન ઓર વટુત હી ચપલ
હૈ । હસ કી દૃષ્ટિ મેં વિષ સદા જાજ્વલ્યમાન રહતા હૈ (માણ તુઝમ
સરીરગસ્સ વાવત્તી ભવિસ્સહ, તે માગદિયદારણ દોચ્ચપિ તચ્ચપિ એવ
વયહર વેડવિયસમુઘાણ સમોદ્ઘાતર તાણ ઉચ્ચિકઢાણ લવણસમુદ્ઘ
ત્તિસત્તલુત્તો અણુપરિચદ્વેઝ પવત્તા યાવિ હોત્યા) હસ લિયે તુમ દોનોં
વહાં મત જાના । નહીં તો તુમ્હારે શરીરકી કુશલતા નહી રહેગી । હસી
પ્રકાર હસ રચના દેવી ને હન માકદિ દારકોં કો દુવારા બી-તિયારા
બી-સમઝાચો વુઝાયા ફિર સમઝા વુઝાકર હસ ને વૈક્રિય સમુદ્ઘાત

ઉચ્ચરોય અનાકલિત-અપરિમિત-છે કુતરાની ભસવાની જેમ તેનો અવાજ
નીકળતો રહે છે આ ત્વરા સપન્ન અને ખૂબ જ ચપલ છે એની આખમા
ઝેર હમેશા જાજ્વલ્યમાન રહે છે

(માણ તુઝમ સરીરગસ્સ વાવત્તી ભવિસ્સહ તે માગદિયદારણ દોચ્ચપિ તચ્ચપિ
એવ વયહર વેડવિયસમુઘાણ સમોદ્ઘાતિર તાણ ઉચ્ચિકઢાણ લવણ-
મમુદ્ઘત્તિ સત્ત લુત્તો અણુપરિચદ્વેઝ પવત્તા યાવિ હોત્યા)

એટલા માટે તમે અને ત્યા જતા નહિ નહિતર તમારા શરીરનુ કુથળ
રહેશે નહિ આ પ્રમાણે જ તે રચણા દેવીએ માકદીકાન્ડેને જે વાર ત્રણ
વાર સમજાવ્યા અને સમજાવવાનુ કામ પતાવીને તેણે વૈક્રિય સમુદ્ઘાત કર્યો

मूलम्—तएणं ते मागंदियदारिया तओमुहुत्तंतरस्स
पांसायवडिसए सइ वा रइं वा धिइ वा अलभमाणा अणम-
मण्णं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया । रयणदीवदेवया
अम्हे एव वयासी-एव खलु अह सक्कवयणसदेसेणं सुट्टिएणं
लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सइ, त सेयं खलु अम्ह
देवाणुप्पिया । पुरच्छिमिल्लं वणसंड गमित्तए, अणमण्णस्स
एयमट्ठ पडिसुणेति२ जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवा-
गच्छंति२ तत्थ णं वावीसु य जाव अभिरममाणा आलीघर-
एसु य जाव विहरंति, ततेण ते मागंदियदारया तत्थवि सइं
वा जाव आलभमाणा जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवा०२
तत्थ णं वावीसु य जाव आलिघरएसु य जाव विहरंति, ततेणं
ते मागंदियदारया तत्थवि सति वा जाव अलभ० जेणेव पच्च-
त्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवा०२ जाव विहरति, तएण ते मा
गंदिय० तत्थवि सति वा जाव अलभ० अणमण्ण एव वयासी
-एव खलु देवाणुप्पिया । अम्हे रयणदीवदेवया एव वयासी-
एवं खलु अह देवाणुप्पिया । सक्कस्स वयणसदेसेण सुट्टिएणं
लवणाहिवहिणा जाव माण तुब्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सति
तं भवियठव एत्थकारणेणं, त सेय खलु अम्ह दक्खिणिहं

किया । समुद्रात करके फिर वह उस प्रसिद्ध देवगति से २१ बार लवण
समुद्र के चारों ओर पर्यटन करने में प्रवृत्त हो गई ॥ सू० ४ ॥

समुद्रात करीने ते पोतानी प्रसिद्ध देव गतिथी ओकवीश वणन लवणसमुद्रनी
थारे णाणुओ भ्रमण करवाभा प्रवृत्त थई गर ॥ सूत्र “ ४ ”

वणसडं गमित्तए त्तिकट्टु अपणमणस्स एयमट्ट पडिसुणेति २
जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं
गंधे निज्जाति से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अणिट्ठतराए
चेव, तएणं ते मागंदियदारया तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया
समाणा सएहिंर उत्तरिज्जेहिं आसातिं पिहेतिर जेणेव दक्खि-
णिल्ले वणसंडे तेणेव उवागया तत्थणं महं एग आघायणं
पासति अट्ठियरासिसयसकुल भीमदरिसणिज्ज एगं च तत्थ
सूलायतय पुरिस कलुणाइ कट्टाई विस्सराइ कुजमाण पासति,
पासित्ता भीता जाव सजातभया जेणेव से सूलातियपुरिसे तेणेव
उवागच्छतिर ते सूलाइय एव वयासी-एसणं देवाणुप्पिया ।
कस्साघयणे तुमं च णं के कओ वा इहं हव्वमागए केण वा
इमेयारूव आवत्ति पाविए ? , तएणं से सूलाइयए पुरिसे मागं-
दियदारए एव वयासी-एसणं देवाणुप्पिया । रयणदीवेदेव-
याए आघयणे अहणं देवाणुप्पिया । जवूदीवाओ दीवाओ
भारहाओ वासाओ कागदीए आसवाणियए विपुल पणियभं-
डमायाए पोतवहणेण लवणसमुद्द ओयाए, तएण अह पोय-
वहणविवत्तीए निव्वुडुभंडसारे एग फलगखड आसाएमि, तएण
अह उवुज्झमाणेर रयणदी वतेणं सवूडे, तएण सा रयणदीवदे-
वया मम ओहिणा पासइर मम गेणहइर मए सडिं विपुलाइ
भोगभोगाइ भुजमाणी विहरति, तएण सा रयणदीवदेवया
अणया कयाई अहालहुसगसि अवराहसि परिकुविचा समाणी
मम एयारूव आवत्ति पावइ, त ण णज्जति णं देवाणुप्पिया ।

मूलम्—तएणं ते मागंदियदारिया तओमुहुत्तंतरस्स
पासायवडिसए सइ वा रइं वा धिइ वा अलभमाणा अणम
मण्णं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया । रयणदीवदेवया
अम्हे एव वयासी-एव खलु अह सक्कवयणसंदेसेणं सुट्टिणं
लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सइ, तं सेय खलु अम्हं
देवाणुप्पिया । पुरच्छिमिल्लं वणसड गमित्तए, अणमण्णस्स
एयमट्ठ पडिसुणेति२ जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवा-
गच्छंति२ तत्थ णं वावीसु य जाव अभिरममाणा आलीघर-
एसु य जाव विहरंति, ततेणं ते मागंदियदारया तत्थवि सइं
वा जाव आलभमाणा जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवा०२
तत्थ णं वावीसु य जाव आलिघरएसु य जाव विहरंति, ततेणं
ते मागंदियदारया तत्थवि सति वा जाव अलभ० जेणेव पच्च-
त्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवा०२ जाव विहरति, तएणं ते मा
गंदिय० तत्थवि सति वा जाव अलभ० अणमण्ण एव वयासी
--एव खलु देवाणुप्पिया । अम्हे रयणदीवदेवया एव वयासी-
एवं खलु अह देवाणुप्पिया । सक्कस्स वयणसंदेसेण सुट्टिणं
लवणाहिवहिणा जाव माण तुब्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सति
तं भवियव्व एत्थकारणेणं, त सेय खलु अम्ह दक्खिणिहं

क्रिया । समुद्रात करके फिर वह उस प्रसिद्ध देवगति से २१ बार लवण
समुद्र के चारों ओर पर्यटन करने में प्रवृत्त हो गई ॥ सू० ४ ॥

समुद्रात करीने ते पोतानी प्रसिद्ध देव गतिथी ओकवीश वणन लवणसमुद्रनी

चारे णाणुओ भ्रमण करवामा प्रवृत्त थई गई ॥ सूत्र " ४ " ॥

पश्चात् मुहूर्तान्तरात्=यटिकाद्वयरूपमुहूर्तान्तरमित्यर्थं प्रासादामतमके 'सइ वा' स्मृति अतिव्याकुलचित्तनया भविष्यत्कालिकसुखबाहुल्यरूपा वा, 'रइ वा' रति=मनोमुद वा 'धिइ वा' धृति=चित्तस्वास्थ्य वा 'अलभमाणा' अलभमानौ सन्तौ अन्योन्यमेवमयादिष्टाम्-एव खलु हे देवानुप्रिय ! रत्नद्वीपदेवता आगमेव मवादीत्-एव खलु अहं शक्रवचनसंदेशेन सुस्थितेन लवणाधिपतिना यावद् व्यापत्तिर्भविष्यति, 'त' तत्=तस्मात्कारणात् श्रयः खलु आवयो हे देवानुप्रिय ! पौरस्त्य=पूर्वस्या दिशिस्थित वनपण्ड गन्तुम् । अन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिश्रुणुतः=

दारया) उन दोनो माकदी के पुत्रो ने (तओ मुहूर्ततरस्स पासाय वडिसए सइ वा रइ वा धिइ वा अलभमाणा अणमण एव वयासी) एक मुहूर्त भी उस श्रेष्ठ प्रासाद में अति व्याकुलित चित्त होने के कारण भविष्यत्कालिक सुख बाहुल्य रूप स्मृति को मनोमुद (मन को प्रसन्न करने वाला) रूप रति को और चित्तस्वास्थ्य रूप धृति को नहीं पाते हुए परस्पर में ऐसा विचार किया- (एव खलु देवाणुप्पिया ! रयणद्दीवदेवया अम्हे एव वयासी) हे देवानुप्रिय ! रयणा देवी ने हम लोगो से ऐसा कहा है कि (एव खलु अहं सकवयणसदेसेण सुट्टिएण लवणाहिचइणा जाव वावत्ती भविस्सइ-त सेय खलु अहं देवाणुप्पिया ! पुरच्छि मिल्ल वणसड गमित्तए) " मुझे शक्रेन्द्र की आज्ञानुसार लवण समुद्राधिपति सुस्थित देव ने ऐसा आदेश दिया है कि मैं २१ घार लवण समुद्र की प्रदक्षिणा करूँ " इत्यादि से लेकर

(तओ मुहूर्ततरस्स पासायवडिसए सइ वा रइ वा धिइ वा अलभमाणा अणमण एव वयासी)

ते भडेलमा ओक मुहूर्त नेटला प्रमाणुना समयमा पणु शाति भेजवी नडि तेओ व्याकुल चित्त होवाथी भविष्यमा प्राप्त थनारा सुण इय स्मृतिने मनोमुद (मनने आन हित करनार) इय रतिने अने चित्त स्वास्थ्य इय धृति प्राप्त न करता ओक भीजनी साथे विचार करवा लाग्या (एव खलु देवाणुप्पिया ! रयणद्दीव देवया अम्हे एव वयासी) हे देवानुप्रिय ! रयणा देवीओ अभने कह्यु छे के

(एव खलु अहं सकवयण सदेसेण सुट्टिएण लवणाहिचइणा जाव वावत्ती भविस्सइ-त सेय खलु अहं देवाणुप्पिया ! पुरच्छि मिल्ल वणसड गमित्तए)

मने शक्रेन्द्रनी आज्ञाथी प्रेरणने लवणसमुद्रना अधिपति सुस्थित देव दुकम कर्यो छे के भारे ओकवीश वणत लवण समुद्रनी प्रदक्षिणा करवी वगेरेथी

तुम्हंपि इमेसि सरीरगाण का मण्णे आवत्ती भविस्सइ ? तएणं ते मागदियदारया तस्स सूलाइयगस्स अंतिए एयमत्थं सोच्चा णिसम्म वलियतरं भीया जाव संजायभया सूलाइतय पुरिस एवं वयासी—कहणं देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवे देवयाए हत्थाओ साहरिथि णित्थरिज्जामो ? तएण से सूलाइयए पुरिसे ते मागंदिय० एव वयासी—एसणं देवाणुप्पिया । पुरच्छिमिल्ले वणसडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नाम आसरू वधारी जक्खे परिवसति, तएण से सेलए जक्खे चोदसट्ठमुद्धि-ट्ठुण्णमासिर्णासु आगयसमए पत्तसमये महयार सदेण एव वदति कं तारयामि कं पालयामि ? त गच्छह णं तुब्भे देवा-णुप्पिया । पुरच्छिमिल्ल वणसड सेलगस्स जक्खस्स महारिह पुप्फच्चणियं करेह करित्ता जाणुपायवडिया पजलिउडा विणएण पज्जुवासमाणा चिट्ठह, जाहेण से सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एव वदेज्जा—क तारयामि क पालयामि ? ताहे तुब्भे वदह—अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि, सेलए भे जक्खे पर रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहरिथि णित्थारेज्जा, अण्णहा भे न याणामि इमेसि सरीरगाणं का मण्णे आवई भविस्सइ ॥सू०५॥

टीका—‘ तएण ते ’ इत्यादि—ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ ततः=

‘ तएण ते मागदिय दारया ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) उस रयणा देवीके चले जाने के बाद (ते मागदिय

(तएण ते मागदिय दारया ‘ इत्यादि

टीकार्थ—(नएण) त्या२ ५४ी (ते मागदियदारया) जने भाऊदीना पुत्रोअे

वनपण्डस्तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य तत्र खलु वापीयु च यावद् आलिगृहेषु च यावद् विहरतः । ततः खलु तौ माकन्दिदारकौ तत्रापि स्मृतिं वा यावद् अलभमानौ यत्रैव पाश्चान्यौ वनपण्डस्तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य यावद् विहरतः । ततः खलु तौ माकन्दिदारकौ तत्रापि स्मृतिं वा यावद् अलभमानौ अन्योन्यमेवमवादिष्टाम्-एव खलु हे देवानुमिय ! आवा रत्नद्वीपदेवता-एवमवदत्-एव खलु अहं देवानुमियो ! शक्रस्य वचनमन्देशेन सुस्थितेन लवणाधिपतिना यावत् मा खलु युवयोः

सघन्धी वनपण्ड या वहा आये । वहा आकर उन्हो ने बावडिओं में स्नान किया-यावत् आलिघरों में क्रीडा किया । (तएण ते मागदियदारगा तत्थ वि सह वा जाव अलभ० जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसडे तेणेव उवा० २ जाव विहरति) परन्तु जब उन्हें वहा भी स्मृति आदि रूप कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ तो वे वहाँ से निकल कर पश्चिम दिशा सघन्धी वनपण्ड या वहा आये ।

वहा आकर उन्हो ने बावडिओं में स्नान किया और आलिघरों आदि में परिभ्रमण किया । (तएण ते मागदिय० तत्थ वि सह वा जाव अलभ० अणमण एव वयासी) फिर भी उन माकदी-के उन दोनों पुत्रों को वहा शांति आदि कुछ भी नहीं मिला जब इस प्रकार की परिस्थिति उन्हो ने देखी तो परस्पर में ऐसा विचार किया (एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवया एव वयासी-एव खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स वयणसदेसेण सुट्ठएण लवणाहियड्डणा जाव माण

वनपण्डमा पडोअ्या त्या पडोअ्याने तेओअे वावोमा स्नान कथुं यावत् आलिघरोमा क्रीडाओ करी

(तएण ते मागदियदारगा तत्थ सह वा जाव अलभ० जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसडे तेणेव उवा० २ जाव विहरति)

पथु त्या पथु तेमने ज्यारे स्मृति वगेरे इय कथं पथु सुण मज्जु नडि त्यारे तेओ त्याथी नीकणीने पश्चिम दिशाना वनपण्डमा पडोअ्या

पश्चिम दिशाना वनपण्डमा जधने तेओअे वावोमा स्नान कथुं अने आनिघरो वगेरेमा विचरणा कथुं

(तएण ते मागदिय० तत्थावि सह वा जाव अलभ० अणमण एव वयासी)

त्या पथु पडोअ्यानी जेमज माकदी पुत्रोने कथं पथु जननी शांति वणी नडि आवी परिस्थितिमा तेओअे परस्पर मणीने विचार कथे क

(एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवया एव वयासी- एव खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स वयणसदेसेण सुट्ठएण लवणाहियड्डणा जाव माण

સ્વીકૃત., પ્રતિશ્રુત્ય=સ્વીકૃત્ય યનૈવ પીરત્યો વનપંડસ્તત્રૈવોપાગચ્છતઃ, ઉપાગમ્ય તત્ર સ્વલુ વાપીષુ ચ યાત્રદ્ અભિરમમાણો આલિગૃહેષુ ચ યાત્રદ્ વિહરતઃ । તતઃ સ્વલુ તૌ માકન્દિકદારકૌ તનાપિ સ્મૃતિં વા યાત્રદ્ અલભમાનો યત્રૈવોત્તરીયો

શરીર કા વિશ્વસ ન હો યદા તક કા રચના દેવી કા સથ કથન યદાં
इन दोनों की बात चीत में लगा लेना चाहिये । इसलिये हे देवानुप्रिय !
हम लोगो को यही अब उचित है कि हम लोग पूर्वदिशा सवन्धी वन
खंड में चलें । (अण्ण मण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति २ जेणेव पुरच्छि
मिल्ले वनसड तेणेव उवागच्छति २ तत्थ ण वावीसु य जाव अभिर-
ममाणा आलीघरएसु य जाव विहरति) इस प्रकार परस्पर में किये
इस विचार को उन दोनों ने मान लिया और मान कर जहां पूर्वदिशा
सवन्धी वनपड था वहां गये-वहां जाकर उन्होंने ने बावड़ी आदि में
खूब मन चाहा क्रीडा की राद में वे रम्य वनस्पति विशेष के घरों
आदि में क्रीडा करने लगे । (तएण मागदियदारया तत्थ वि सतिं वा
जाव अलभ० जेणेव उत्तरिल्ले वणसडे तेणेव उवागच्छति तत्थ ण
वावीसु य जाव आलिघरएसु य जाव विहरति) परन्तु उन माकरी
दारकों को वहा जब भविष्यत्कालीन सुख बाहुल्य रूप स्मृति आदि
कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ तो वे वहा से निकल कर जहा उत्तर दिशा

માડીને તમારુ શરીર નષ્ટ થાય નહિ ત્યાં સુધીની રચના દેવીની ઉપર કદા
મુજબની બધી વિગત અહીં સમજાવવી જોઈએ એવી હે દેવાનુપ્રિય ! હવે
અમને એજ યોગ્ય દેખાય છે કે અમે પૂર્વ દિશાના વનખંડમાં જઈએ

(અણ્ણ મણ્ણસ્સ એયમટ્ઠ પડિસુણેતિ ૨ જેણેવ પુરચ્છિમિલ્લે વનસડે તેણેવ
ઉવાગચ્છતિ ૨ તત્થ ણ વાવીસુ ય જાવ અભિરમમાણા આલિઘરેસુ ય જાવ
વિહરતિ)

આ પ્રમાણે બંને એક બીજાના વિચારથી સમત થયા અને ત્યાર પછી
જ્યાં પૂર્વ દિશાનો વનખંડ હતો ત્યાં ગયા, ત્યાં જઈને તેઓએ વાવો વગેરેમાં
ખૂબ જ પ્રમાણમાં ક્રીડાઓ કરી અને પછી તેઓ ત્યાંના જ રમ્ય વનસ્પતિ
વિશેષના ગૃહો વગેરેમાં ક્રીડા કરવા લાગ્યા

(તएण मागदियदारया तत्थ वि सतिं वा जाव अलभ० जेणेव उत्तरिल्ले
वणसडे तेणेव उवागच्छ ति तत्थ ण वावीसु य जाव आलिघरण सु य जाव विहरति)

પણ માકરી દારકોને ત્યાં પણ જ્યાંને ભવિષ્યતુ સુખ બાહુલ્ય રૂપ
સ્મૃતિ વગેરે ઈર્ષ મળ્યું નહિ ત્યારે તેઓ ત્યાંથી નીકળીને ઉત્તર દિશાના

तत्र-गमनमार्गे गन्धः ' निद्धाइ ' निर्धारति=सायेग समायाति, कीदृशो गन्धः ?
इत्याह-' से जहानामए ' तद् यथनामरुद्र-तथाहि-' अहिमडेइ वा ' अहिमृतक
इति वा=मृतसर्पकलेवरमिति वा यावत् ' एत्तो वि ' तस्मादपि मृतसर्पादिकलेव
रादपि ' अणिट्तराए चेव ' अनिष्टतर एव=यन्नामश्रवणेऽपि मनोऽतिविकृत
जायते । ततः खलु तौ माकन्दिदारकौ तेनाशुभेन गन्धेन ' अभिभूयसमाणा '
अभिभूतौ=व्याकुलौ सन्तौ स्पर्शेन उत्तरीयेण=उत्तरासङ्गेन ' दुपट्ठा ' इति प्रसिद्धेन
आस्य=मुखैरुद्देशरूपं स्व स्व नामिकामित्यर्थः ' पिहेति ' पिधत्तः=समाच्छादयतः,
पिधाय=नासिकामाच्छाद्य यत्रैव दाक्षिणात्यो वनपण्टस्तत्रैवोपागमौ । तत्र खलु

उन्होंने आपस में निश्चित भी कर लिया । (पडिसुणिता जेणेव दक्खि
णिल्ले वणसडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए-तएण गधे निद्धाति से जहा
नामए अहिमडेइवा जाव अणिट्तराए चेव, तएण ते मागदियदारया ते-
ण असुभेण गधेणं अभिभूया समाणा मएहिं २ उत्तरिज्जेहि आसार्ति
पिहेति २ जेणेव दक्खिणिल्ले वणसडे तेणेव उवागया तत्थण मह एग
आघायण पासति) विचार निश्चित कर फिर वे दोनों जहा दक्षिणदिशा
सम्यन्धी वनपड था उस ओर चल दिया । चलते २ उन्हें मार्ग में बहुत
बड़ी दुर्गन्ध आई । जैसी दुर्गन्ध मृत सर्प आदि सडे हुए कलेवर से
आती है उससे भी अधिक अनिष्टतर वह दुर्गन्ध थी ।

इस के अनन्तर उन दोनों माकदिके दारकों ने उस अशुभ गन्धसे
व्याकुल होकर अपने अपने मुख के एक देशरूप भाग नासिका को दु-
पट्टे के एवदेश से ढक लिया । ढक कर फिर वे दक्षिण दिशा सम्यन्धी

(पडिसुणिता जेणेव दक्खिणिल्ले वणसडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए-तएण गधे,
निद्धाति से जहा नामए अहिमडेइवा जाव अणिट्तराए चेव तएण ते मागदिय
दारया तेणं असुभेण गधेण अभिभूया समाणा मएहिं २ उत्तरिज्जेहि आसार्ति पिहेति २
जेणेव दक्खिणिल्ले वणसडे तेणेव उवागया तत्थण मह एग आघायण पासति)

अने त्थार पछी तेઓ અને જે તરફ દક્ષિણ દિશા સમ્યન્ધી વનખડ
હતો તે તરફ રવાના થયા રસ્તામા ચાલતા ચાલતા તેઓને એકદમ ખરાબ
દુર્ગંધ આવી મરીને સડી ગયેલા સાપના શરીરની જે જેવી અનિષ્ટતા દુર્ગંધ
હોય છે તેવી જે તે દુર્ગંધ પણ હતી માડદી દારકોએ તે અશુભ ગંધથી
વ્યાકુળ થઈને પોતાના મોના એક દેશ રૂપ ભાગ નાકને ખેસતા છોડાથી ઢાકી
ઢીધું ઢાકીને તેઓ આગળ દક્ષિણ દિશાના વનખડમા ગયા ત્યાં જતા જે
તેઓએ એક શૂળી ચઢાવવાની જગ્યા જોઈ

શરીરસ્ય વ્યાવર્તિર્ભવિષ્યતિ, 'ત' તત્=તસ્માત્-સારણાદ્ ભવિતવ્યમત્ર કારણેન, તચ્છ્રેય સ્વલુ આયયો દાક્ષિણાત્ય વનપ્લ્લ ગન્તુમ્, 'ઇતિકદદુ' ઇતિકૃત્વા ઇતિનિચાર્ય અન્યોન્યસ્યૈતમથં પ્રતિશ્રુણુત, પ્રતિશ્રુત્ય યત્રૈવ દાક્ષિણાત્યો વનપ્લ્લસ્તત્રૈવ 'પદારેત્ય ગમણાણ' પ્રધારયતો ગમનાય=ગન્તુ પ્રવૃત્તૌ પ્રસ્થિતાવિત્યર્થઃ । તતઃ સ્વલુ=તદત્ર

તુભ સરીરગસ્સ વાચ્તી ભવિસ્સહ ત ભવિયવ્ય એત્ય કારણેન ત સેય સ્વલુ અમ્હ દક્ષિણિલ્લ વણમહ ગમિત્તણ ત્તિકદ્દુ અણમણસ્સ એયમદ્દ પહિસુણેતિ) હે દેવાનુપ્રિય ઘર તો તુમ્હે જાન હી હૈ કિ રચણદ્વીપ દેવતા-રચણાદેવી-ને જો હમલોગોં સે એમા કહા થા કિ મુજે શક્રેન્દ્ર કી આજ્ઞા સે લવણાધિપતિ સુસ્થિત દેવને લવણસમુદ્ર કી ૨૧ વાર પર્યટના કરને કે લિયે કહા હૈ ઇત્યાદિ ૨ । સો તુમ દક્ષિણદિશા સમ્બન્ધી વનપહ કે સિવાય ત્રીન દિશા સમ્બન્ધી વનપહોં મેં હી ચિત્ત કે ઉદ્વિગ્ન આદિ હોને પર જાના વહા કી વાવહિઓં આદિ મેં બી સ્નાન આદિ કર અપને મન કો આનદિત કરના દક્ષિણદિશા સમ્બન્ધ વનપહ મેં નહી જાના વહા ઇક મહાકાય વિકરાલ સર્પ રહતા હૈ । કહી એમા ન હો કિ વહા જાને પર ઉસકે દ્વારા તુમ્હારી મૃત્યુ હો જાય-સો ઉસકે હસ કથન મેં કોઈન કોઈ કારણ અવશ્ય હોના ચાહિયે । અત્ત હસ કારણ કી જાચ કે લિયે હમેં દક્ષિણદિશા સમ્બન્ધી વનપહ મેં જાના શ્રેષ્ઠ સ્કર હૈ । એસા ઉન્હોંને પરસ્પર મેં વિચાર કિયા । ઓર હસ વિચાર કો

તુભ સરીરગસ્સ વાચ્તી ભવિસ્સહ ત ભવિયવ્ય એત્ય કારણેન ત સેય સ્વલુ અમ્હ દક્ષિણિલ્લ વણમહ ગમિત્તણ ત્તિકદ્દુ અણમણસ્સ એયમદ્દ પહિસુણેતિ)

હે દેવાનુપ્રિય ! એ વાત તમે જાણતા જ હશે કે રત્નદ્વીપના દેવતા રચણા દેવીએ અમને આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે શક્રેન્દ્રની આજ્ઞાથી પ્રેરાઈને લવણ સમુદ્રના અધિપતિ સુસ્થિત દેવે એકવીશ વાર સમુદ્રની ચારે બાજુ ચારે પરિભ્રમણ કરવું છે વગેરે તો તમે દક્ષિણ દિશા તરફના વનપ્લહ સિવાય બાકીના ત્રણે દિશાના વનપ્લહોમા ચિત્ત ઉદ્વિગ્ન થાય ત્યારે જલો ત્યાની વાવો વગેરેમા સ્નાન વગેરે કરીને પોતાના મનને પ્રમત્ત કરજો દક્ષિણ દિશા તરફના વનપ્લહમા તમારે જવું નહીં કેમ કે ત્યાં એક મોટો મહાકાળ વિકરાળ સાપ રહે છે કઈ એવું થાય નહિ કે તમે ત્યાં જાઓ અને તેની લપેટમા આવીને તમારું મૃત્યુ થઈ જાય તો તેનો આ વાતમા કઈક રહસ્ય એછમ હોવું જોઈએ એટલા માટે આ રહસ્ય વિશે ત્યાં જઈને આપણે કઈક જાણવું તો જોઈએ જ આમ પરસ્પર વિચાર કરીને તેઓએ ત્યાં જવાનો મહમ વિચાર પણ કરી જ લીધો

मेवमवादिष्टाम्-एतत्खलु हे देवानुप्रिय । कस्यात्रातन=वधस्थानम् ? त्वं च खलु-
कोऽपि कुतो वा कस्मात्स्थानात् इह हव्यमागतः समागतः ? केन वा इमामेत
द्रूपामापत्तिं प्रापितः ? । ततः खलु स शूलारोपितः=शूलारोपितः पुरुषो माकन्दि-
दारकावेवमवदत्-एव खलु हे देवानुप्रियो रत्नद्वीपदेवताया आघातन=रत्नद्वीप
देवतया स्थापित वधस्थानम्-अहं खलु हे देवानुप्रियो ! जम्बूद्वीपात्=जम्बूद्वीपा-
भिधानाद् द्वीपाद् भारताद् वर्षाद्=भरतक्षेत्रात् माकन्दीनगर्या ' आसवाणियए '
अश्ववाणिजकः=अश्वव्यापारी विपुल ' पणियभाण्ड ' पणितभाण्ड=विक्रेय वस्तु-
जातम्, आदाय=गृहीत्वा पोतवहनेन लवणसमुद्रम् ' ओचाए ' अत्रयातः=अत्रगा

प्रकार कहा-(एस ण देवाणुप्पिया ! कस्साघयणे तुम च णं केकओवा इह
हव्वमागए केणवा इमेयारूव आवत्ति पाविए ? तएण से सुलाइयए पुरिसे
मागदियदारए एववयासी-एसण देवाणुप्पिया ! रयणदीव देवयाए आघ
यणे अहण देवाणुप्पिया ! जम्बूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ काग
दीए आसवाणियाए विपुल पणिय भडमायाए पोतवहणेण लवणसमुद्र
ओचाए) हे देवानुप्रिय ! 'कस्साघयणे' यह शूली स्थान किसका है । तुम
कौन हो ? यहा कहासे आये हो ? और किसने तुम्हें इस आपत्तिमे डाला
है । उन की इस घात को सुनकर उस शूलारोपित पुरुष ने उन दोनों
माकन्दी-दारकों से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियो ! यह शूली स्थान
रयणादेवीका है, मैं हे देवानुप्रियो ! जम्बूद्वीप नाम के द्वीपमे वर्तमान भरत
क्षेत्रस्थ माकन्दी नाम की नगरी का निवासी अश्ववणिक्-घोड़ों का
व्यापारी हूँ । मैं वहा से विक्रेयवस्तु समुद्र को लेकर नौकाद्वारा इस

(तएण देवाणुप्पिया ! कस्साघयणे तुम च णं केकओवा इह हव्वमागए
केणवा इमेयारूव आवत्ति पाविए ? तएण से सुलाइयए पुरिसे मागदियदारए
एववयासी-एसण देवाणुप्पिया ! रयणदीव देवयाए आघयणे अहण देवाणु
प्पिया ! जम्बू दीवाओ दीवा-ओ भारहाओ वासाओ कागदीए आसवाणिआए
विपुल पाणिय भडमायाए पोतवहणेण लवणसमुद्र ओचाए)

हे देवानुप्रिय ! आ शूलारोपित केन हो ? तमे ज्ञेयं हो ? अहो तमे
कथाथी आया हो ? अने ज्ञेयं तमागी आवी छालत उरी हो ? तेओनी वात
सालणीने शूली उपलब्धता भावसे माकन्दीदारकेने आ प्रभावे कथुं हे हे
देवानुप्रियो ! आ शूलारोपित रयणा देवीनु हे हे देवानुप्रियो ! हे जम्बूद्वीप
नामना द्वीपमा विद्यमान भरतक्षेत्रमे माकन्दी नामनी नगरीमे रहीश हो हे
अश्ववणिक्-घोड़ाने व्यापारी-हो, तथाही हे देवाणुनी वस्तुओ साथे लवण
समुद्रमे आ लवण समुद्रमा यात्रा करते आये हो (तएण अहं पोत

महदेकम् 'आघायण' आघातनम्=आघातस्थान तथस्थानमित्यर्थः पश्यतः, - तत् स्थान कीदृशम् ? इत्याह- 'अद्वियरासिसयसकुल' अस्थिराशिशतमङ्कुम्-अस्थना राशिः=पुञ्जः, तेषां शतानि, तैः सङ्कुल=व्याप्तम् 'भीमदरिसणिज्ज' भीमदर्शनी यम्-दर्शनमात्रेऽपि भयजनकम् । पुनश्च तत्रैक 'सूलाइतय' शूलाचितक=शूलारो- पित पुरुष 'कलुणाइ' करुणानि=करुणाजनकानि 'कट्टाइ' कष्टानि=हृदयदुःखोत्पादकानि 'विस्मराइ' विस्मराणि=विकृतध्वनिकानि वचनानि 'कुज्जमाण' कुजन्तम्=अव्यक्तरूपेणोच्चरन्त पश्यतः । दृष्ट्वा च भीतो 'जाव' यावत्-यावच्छब्देन-व्रस्तौ व्रसितौ=त्रास प्राप्तौ उद्विग्नौ इति, 'सजायभया' सञ्जातभयौ=प्राप्त भयौ तौ यत्रैव स शूलाचितपुरुषस्तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य त शूलचित पुरुष

उस वनपड मे गये । वहा जाते ही उन्होंने ने एक शूली चढानेका का स्थान देखा । (अद्वियरासिसयसकुल भीमदरिसणिज्ज एगच तत्थ सूलाइतय पुरिस कलुणाइ कट्टाइ विस्मराइ कुज्जमाण पासति पासित्ता भीया जाव सजातभया जेणेव से सूलातियपुरिसे तेणेव उवागच्छति) जिस में सैकड़ों दृष्टियों के ढेर लगे हुए थे । एव जो देखने में बड़ा भयप्रद था । वही पर उन्होंने ने शूली पर चढे हुए एक पुरुष को देखा जो बहुत बुरी तरह चिला चिला रहा था । उसके इस चिल्लाने की आवाज को सुनकर हृदय मे दया का प्रवाह बहने लग जातो था । साथ २ में चित्तमें दुःख भी होने लगता था । उसको देखकर ये दोनों भयभीत हो गये । त्रास एव उद्वेगसे युक्त बन गये । इसी स्थितिमें ये दोनों जहां वह शूलीपर चढा हुआ पुरुष था, वहा पहुँचे (उवागच्छित्ता) वहा पहुँच कर (त सूलाइय एव वयासी) उन्होंने ने उस शूलारोपित मनुष्य से इस

(अद्वियरासिसयसकुल भीमदरमणिज्ज एग च तत्थ सूलाइतय पुरिस कलुणाइ कट्टाइ कुज्जमाण पासति पासित्ता भीया जाव सजातभया जेणेव से सूलातियपुरिसे तेणेव उवागच्छति)

त्या से कडो डाँडाओना ढगला पड्या हुता त्यानु दृश्य ओकदम लयप्रद हुतु तेओओ त्या शूणी उपर चढेजा ओक भाणुसने जेये। के जे गडुज्ज अराज रीते करुणु कदन करी रह्यो हुतो। तेनी करुणा लया अवाजने सालगीने हृदयमा हथाने। प्रवाह बडेवा लागने। हुतो अने साथे साथे तेनी ओवी हुदशा जेधने मनमा हुण पणु थतु हुतु तेओ जने तेने जेधने उरी गया त्रास अने उद्वेग युक्त थय गया आ प्रमाणे तेओ जने जया ते भाणुस शूणी उपर लटक्यो रह्यो हुतो त्या गया (उवागच्छिता) त्या जधने (त सूलाइय एव वयासी) तेओओ शूणी उपर लटकता भाणुसने आ प्रम

તા સતી મામેતદ્રૂ ગમાપત્તિ પ્રાપયતિ તન્ન જ્ઞાયતે સ્વતુ હે દેવાનુપ્રિયૌ । યુવયોરપ્ય-
નયોઃ શરીરયો કા=કીદશી આપત્તિર્ભાવિષ્યતિ ?, इति 'मन्ने' मन्ये=चिन्तयामि ।

તતઃ સ્વતુ સ શૂલાચિતપુરુષસ્તૌ માકન્દિદારકૌ એવમગદીત્-એવ સ્વતુ
હે દેવાનુપ્રિયૌ ! પૌરસ્ત્યે વનપણ્ડે શૈલકસ્ય યક્ષસ્ય યક્ષાયતને શૈલકો નામ અશ્વ

સમય મેરે દ્વારા ઉસકા થોડા સા અપરાધ વન ગયા સો ઉસ થોડે
સે અપરાધ કે ઘન જાને પર વહ ઘટુન અધિક ક્રુપિત હો ગર્હ ।
ક્રુપિત હોકર ઉસને મ્હે ફિર હસ ક્વિપત્તિ મેં ઢાલ દિયા હૈ । અતઃ
હૈ દેવાનુપ્રિયૌ । તુમ દોનોં કે શરીર કી ખી કૈસી દશા હોગી યહ કૌન
જાન સકતા હૈ-મેં હસીકા વિચાર કરરહા હૂં । (તર્ણ તે માગદિય
દારયા તસ્સ સૂલાહયગસ્સ અતિઃ ઇયમદ્વ સોચ્ચા ગિસમ્મ વલિયતરં
ભીયા જાવ સજાયમયા સૂલાહસય પુરિસ એવ વયાસી) હસ તરહ ઉસ
શૂલારોપિત પુરુષ કે સુખ સે હસ ઘાત કો સુનકર ઓર ઉસકા અઠ્ઠી
તરહ હ્રદય સે વિચાર કર વે દોનોં માકન્દી-દારક ચચિનતર- અત્યન-
ભયભીત હો ગયે યાવત્ ભયત્રસ્ત હોકર ઉન્હોં ને ફિર ઉસ શૂલારોપિત
પુરુષ સે હસ પ્રકાર કહા (કહણ દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હે રયણદીવ
દેવયાણ હત્થાઓ સાહત્થિ ગિત્થરિજ્જામો ?) હે દેવાનુપ્રિય ! હમ લોગ
કૈસે હસ રયણા દેવો કે હાથ સે શીત્ર સાક્ષાત્ છૂટ સકને હૈં- (તર્ણ
સે સૂલાહયણ પુરિસે તે માગદિય૦ એવ વયાસી એમણં દેવાણુ પ્પિયા ! પુર

તેણે ઈચ્છા મુજબ કામ લોગો લોગળ્યા કોઈ એક વખતે મારાથી સહેજ
ભૂલ થઈ ગઈ તે મારી સહેજ ભૂલથી પણ અત્યધિક ગુસ્સે થઈ ગઈ અને
તેણે ત્યાર પછી મારી આવી હાલત કરી છે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમારા
શરીરની પણ શી દશા થશે ? તે કોણ જાણી શકે તેમ છે હું અત્યારે એજ
વિચાર કરી રહ્યો છું

(તર્ણ તે માગદિયદારયા તસ્સ સૂલાહયગસ્સ અતિઃ ઇયમદ્વ સોચ્ચા
ગિસમ્મ વલિયતર ભીયા જાવ સજાયમયા સૂલાહમય પુરિસ એવ વયામી)

આ શૂળી ઉપર લટકતા માણસના મોથી આ બધી વિગત જાણીને
તેના ઉપર ખૂબ જ ગભીરતાથી વિચાર કરીને તેઓ બને માકન્દી દારકો
ખૂબ જ-ભયભીત થઈ ગયા યાવત્ ભયત્રસ્ત થઈને તેઓ બનેએ શૂળી ઉપર
લટકતા માણસને આ પ્રમાણે કહ્યું કે

(કહણ દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હે રયણદીવદેવયાણ હત્થાઓ સાહત્થિ ગિત્થરિજ્જામો)
હે દેવાનુપ્રિય ! રયણા દેવીના હાથમાથી અમે જતલી કેવા રીતે મુક્ત
પ શકીએ ?

હિતવાન્ । તતઃ સ્વલુ અહ 'પોત્તવહ્નવિવત્તી' પોત્તવહ્નવિવત્તી, નૌઘાયાં મગ્નાયાં
સત્યાં 'નિબ્બુહ્મહસારે' નિબ્બુહ્મહસારઃ જલનિમગ્નવસ્તુસારઃ, એક ફળક-
સ્વળમાસાદયામિ । તતઃ સ્વલુ અહ 'ઉબ્બુજ્ઞમાણે ૨ ઉદ્બુધ્યમાનઃ ૨ ઉત્તરન્ ૨
રત્નદ્વીપાન્તે=રત્નદ્વીપસમીપે સ્વલુ 'સવૂઢે' સન્બૂઢ=તીર પ્રાપ્તઃ । તતઃ સ્વલુ સા
રત્નદ્વીપદેવતા મામ્ 'ઓહિણા' અવધિન=અવધિજ્ઞાનેન મર્યતિ, દૃષ્ટા મા ગૃહ્ણતિ,
ગૃહીત્વા મયા સાર્દ્ધં વિપુલાન્ ભોગભોગાન્=શબ્દાદિવિષયાન્ 'શુજમાણી' શુજાના
'વિહરઈ' વિહરતિ=આસ્તેસ્મ । તતઃ સ્વલુ સા રત્નદ્વીપદેવતા, અન્યથા કદાચિત્
'અહાલહુસગસિ' યથાલઘુસ્વકે યથાપ્રકારકે લઘુસ્વરૂપે સ્તોકમાત્રેઽપરાધે પરિકુપિ

લવણસમુદ્ર મેં ઉત્તરા (તણ્ણ અહ પોયવહ્નવિવત્તી) આગ્યવશાત્
મેરી નૌકા હસ સમુદ્ર મેં ટકરા જાને સે હૂધગઈ । (નિબ્બુહ્મહસારે એક
ફળગલ્લ આસામિ) હસ તરહ જિસકા સમસ્ત વસ્તુસાર જલનિમગ્ન હો
જુકા હૈ એસે મુજ્જે વહી પર એક કાષ્ઠફલક પ્રાપ્ત હો ગયા । (તણ્ણ અહ
ઉબ્બુજ્ઞમાણે ૨ રયણદીવ તેણ સવૂઢે) ઉસકી મહાધતાસે તૈરતાહુઆમેં હસ
રત્નદ્વીપકે પાસ આપહુંચા । (તણ્ણ સા રયણદીવદેવયા મમ ઓહિણા પાસઈ)
હતને મેં ઉસ રત્નદ્વીપદેવી ને મુજ્જે અપને અવધિજ્ઞાન સે દેખ લિયા-
(પાસિત્તા મમ ગેળહઈ, ગેળિહત્તા મમ સદ્ધિ વિપુલાઈ ભોગભોગાઈ શુજ
માણી વિહરઈ તણ્ણ સા રયણદીવદેવયા અળગયા કયાઈ અહાલહુસગસિ
અવરાહસિ પરિકુવિયા સમાણી મમ ઇયારૂવ આવત્તિ પાવેઈ ત ન
ળજ્જહ્ણ દેવાણુપ્પિયા ! તુમ્હપિ હમેસિ સરીર ગાળ કા મળ્લે આવસી
ભવિસ્સઈ ?) દેખકર ઉસને મુજ્જે અપને પાસ રલ્લ લિયા । રલ્લકર
મેરે સાથ ઉસને મન ચાહે રૂવ કાનભોગોંકો ભોગા । કિસી એક

વહ્ન વિવત્તી) હુર્લાગ્યથી ભારી નાવ આ સમુદ્રમા અથડાઈને ડૂબી ગઈ
(નિબ્બુહ્મહસારે એક ફળગ-લ્લ આસામિ) આ રીતે વેચાણની લધી જ
વસ્તુઓ જ્યારે પાણીમા ડૂબી ગઈ ત્યારે પાણીમાજ એક લાકડુ મને મળી
ગયું (તણ્ણ અહ ઉબ્બુજ્ઞમાણે ૨ રયણદીવ તેણ સવૂઢે) તેના ઉપર તરતો હું
આ રત્નદ્વીપની પાસે આવી પહોંચ્યો (તણ્ણ સા રયણદીવદેવયા મમ
ઓહિણા પાસઈ) એટલામા તે રત્નદ્વીપ દેવીએ મને પોતાના અવધિજ્ઞાનથી જોઈ લીધો

(પાસિત્તા મમ ગેળહઈ, ગેળિહત્તા મમ સદ્ધિ વિપુલાઈ ભોગભોગાઈ શુજમાણી
વિહરઈ તણ્ણ સા રયણદીવદેવયા અળગયા કયાઈ અહાલહુસગસિ અવરાહસિ પરિ-
કુવિયા સમાણી મમ ઇયારૂવ આવત્તિ પાવેઈ ત ન ળજ્જતિ ણ દેવાણુપ્પિયા ! તુમ્હપિ
હમેસિ સરીરગાળ કામળ્લે આવત્તી ભવિસ્સઈ ?)

જોધને તેણે મને પોતાની પાસે રાખી લીધો અને રાખીને

તા સતી મામેતદ્ભૂતમાપત્તિ પ્રાપયતિ તન્ન જ્ઞાયતે સ્વતુ હે દેવાનુપ્રિયૌ । યુવયોરપ્ય નયોઃ શરીરયો કા=કીદૃશી આપત્તિર્ભાવિષ્યતિ ? , ઇતિ 'મન્ને' મન્યે=ચિન્તયામિ ।

તતઃ સ્વતુ સ શૂલાચિતપુરુષસ્તૌ માકન્દિદારકૌ એવમગદીત્-પપ સ્વતુ હે દેવાનુપ્રિયૌ ! પૌરસ્ત્યે વનપથે શૈલકસ્ય યક્ષસ્ય યક્ષાયતને શૈલકો નામ અશ્વ

સમય મેરે દ્વારા ઉસકા થોડા સા અપરાધ વન ગયા સો ઉસ થોડે સે અપરાધ કે ઘન જાને પર વહ ઘટુન અધિક ક્રુપિત હો ગઈ । ક્રુપિત હોકર ઉસને મધ્ધે ફિર હસ વિપત્તિ મેં ઢાલ દિયા હૈ । અતઃ હૈ દેવાનુપ્રિયૌ । તુમ દોનો કે શરીર કી ખી કૈસી દશા હોગી યહ કૌન જાન સકતા હૈ-મેં હસીકા વિચાર કરરહા હૂં । (તર્ણ તે માગદિય દારયા તસ્સ સૂલાહયગસ્સ અતિ ણયમદ્ધ સોચ્ચા ગિસમ્મ વલિયતરં ભીયા જાવ સંજાયમયા સૂલાહસય પુરિસ એવ વયાસી) હસ તરહ ઉસ શૂલારોપિત પુરુષ કે મુખ સે હસ વાત કો સુનકર ઓર ઉસકા અઠ્ઠી તરહ હૃદય સે વિચાર કર વે દોનોં માકન્દી-દારક ચચિનતર-અત્યંત-ભયભીત હો ગયે યાવત્ ભયત્રસ્ત હોકર ઉન્હોં ને ફિર ઉસ શૂલારોપિત પુરુષ સે હસ પ્રકાર કહા (કહણં દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હે રયણદીવ દેવયાણ હત્થાબો સાહત્થિ ગિત્થરિજ્જામો ?) હે દેવાનુપ્રિય ! હમ લોગ કૈસે હસ રયણા દેવો કે હાથ સે શીત્ર સાક્ષાત્ છૂટ સકને હૈ- (તર્ણ સે સૂલાહયણ પુરિસે તે માગદિયં એવ વયાસી એમણ દેવાણુ પ્પિયા ! પુર

તેણે ઈચ્છા મુજબ કામ લોગો લોગવ્યા કેઈ એક વખતે મારાથી સહેજ ભૂલ થઈ ગઈ તે મારી સહેજ ભૂલથી પણ અત્યધિક ગુસ્સે થઈ ગઈ અને તેણે ત્યાર પછી મારી આવી હાલત કરી છે એવા હે દેવાનુપ્રિયો ! તમારા શરીરની પણ શી દશા થશે ? તે કેણુ જાણી શકે તેમ છે હું અત્યારે એજ વિચાર કરી રહ્યો છું

(તર્ણ તે માગદિયદારયા તસ્સ સૂલાહયગસ્સ અતિ ણયમદ્ધ સોચ્ચા ગિસમ્મ વલિયતરં ભીયા જાવ સંજાયમયા સૂલાહસય પુરિસ એવ વયાસી)

આ શૂળી ઉપર લટકતા માણસના મોથી આ બધી વિગત જાણીને તેના ઉપર ખૂબ જ ગભીરતાથી વિચાર કરીને તેઓ અને માકન્દી દારકે ખૂબ જ-ભયભીત થઈ ગયા યાવત્ ભયત્રસ્ત થઈને તેઓ અનેએ શૂળી ઉપર લટકતા માણસને આ પ્રમાણે કહ્યું કે

(કહણ દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હે રયણદીવદેવયાણ હત્થાબો સાહત્થિ ગિત્થરિજ્જામો) હે દેવાનુપ્રિય ! રયણા દેવીના હાથમાથી અમે જલ્દી કેવા રીતે મુક્ત શકીએ ?

રૂપધારી યક્ષઃ પરિવસતિ=વર્તેતે । તતઃ સ્વલુ સ શૈલકો યક્ષઃ ' ચોદસદ્વિદિઠ-
પુણ્ણમાસિણીસુ ' ચતુર્દશ્યદ્વિદિષ્ટપૌર્ણમાસીપુ-ચતુર્દશ્યામષ્ટમ્યામ્ ' ઉદિષ્ટ '
તિ અમાત્રાસ્વાયા પૂર્ણિમાયા ચ તિથૌ ' આગયમમણ ' આગતસમયે=આસન્નીભૂતા
વસરે ' પત્તસમણ ' માત્તસમયે ઉપલબ્ધાવસરે સાલાદેવાવસરે, યથોચિતસમય
સમ્પાપ્યેત્યર્થ મહતા મહતા શબ્દેન=ઉચ્ચૈઃ સ્વરેણ એવ વદતિ-' ક તારયામિ ?
ક પાલયામિ=રક્ષયામિ?, इति, ' ત ' તત્ તસ્માત્ ગચ્છત સ્વલુ યુગા હે દેવાનુપ્રિયો !
પૌરુસ્ત્ય વનપન્ડ, શૈલકસ્ય યક્ષસ્ય ' મહરિદ્ધ ' મહાર્દ્ધા મહાયોગ્યા ' પુષ્કચ્ચણિય '

ચિદ્ધિમિલ્લે વળસડે સેલગસ્સ જક્કલ્લસ્સ જક્ક્યાયયણે સેલણ નામ આ
સરુવધારી જક્કલ્લે પરિવસહ) ઉન કી હસ પ્રકાર કી થાત સુનકર ઉસ
શૂલારોપિત પુરુષ ને ઉન માકદી દારકોં સે હસ પ્રકાર કરા । હે દેવાનુ
પ્રિયો ! પૂર્વ દિશા કી વનપન્ડ મેં એક શૈલકયક્ષ કા યક્ષાયતન હૈ ।
ઉસ મેં અશ્વરૂપ ધારી શૈલક નામકા યક્ષ રહતા હૈ । (તણ્ણ સે સેલ્લણ
જક્કલ્લે ચોદસદ્વિદિઠપુણ્ણમાસિણીસુ આગયસમણ પત્તસમણ મહયા ૨
સદ્દેણ એવ વચ્છ, ક તારયામિ, ક પાલયામિ ? ત ગચ્છહ ણ તુઞ્ઞમે દેવાણુ
પ્પિયા ! પુરચ્ચિદ્ધિમિલ્લ વળસડ સેલગસ્સ જક્કલ્લસ્સ મહરિદ્ધ પુષ્કચ્ચણિય
કરેહ, કરિત્તા જાણુવાયવડિયા પજ્જલિડડા ત્રિણણ પજ્જુવાસમાણા
ચિદ્ધહ, જાહેણ સેલ્લણ જક્કલ્લે આગતસમણ પત્તસમણ એવ વદેજ્જા ક
તારયામિ ક પાલયામિ ? તાહે તુઞ્ઞમે વચ્છ અમ્હે તારયાહિ અમ્હે પાલ
યાહિ) વદ્દ શૈલક યક્ષ ચતુર્દશી, અષ્ટમી, અમાવસ્યા એવ પૂર્ણમાસી

(તણ્ણ સે સૂલાદ્યણ પુરિસે તે માગદિયં એવ વચાસી એસગ દેવાણુપ્પિયા !
પુરચ્ચિદ્ધિમિલ્લે વળસડે સેલગસ્સ જક્કલ્લસ્સ જક્ક્યાયયણે સેલણ નામ આસરુવ
ધારી જક્કલ્લે પરિવસદ્)

તેઓની આ પ્રમાણેની વાત સાંભળીને તે શૂળી ઉપર લટકતા પુરુષે
માકદી દારકોને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! પૂર્વ દિશાના વનપન્ડમાં એક શૈલક
યક્ષનું યક્ષાયતન છે ત્યાં અશ્વરૂપધારી શૈલક નામે યક્ષ રહે છે

(તણ્ણ સે સેલ્લણ જક્કલ્લે ચોદસદ્વિદિઠપુણ્ણમાસિણીસુ આગયમમણ પત્ત
સમણ મહયા ૨ સદ્દેણ એવ વચ્છ, ક તારયામિ ક પાલયામિ ? ત ગચ્છહ ણ
તુઞ્ઞમે દેવાણુપ્પિયા ! પુરચ્ચિદ્ધિમિલ્લ વળસડ સેલગસ્સ જક્કલ્લસ્સ મહરિદ્ધ પુષ્ક
ચ્ચણિય કરેહ, કરિત્તા જાણુવાયવડિયા પજ્જલિડડા ત્રિણણ પજ્જુભાવમાણા
ચિદ્ધહ, જાહેણ સેલ્લણ જક્કલ્લે આગતસમણ પત્તસમણ એવ વદેજ્જા ક તારયામિ
ક પાલયામિ ? તાહે તુઞ્ઞમે વચ્છ અમ્હે તારયાહિ અમ્હે પાલયાહિ)

पुण्यार्चनिका कुरुत, कृत्वा जानुपादपतिर्ता=जानुनीपादौच भूमौ निधाय विनम्री
भूतौ पजलिउडा' प्राञ्जलिपुटौ सयोजितकरपुटौ, हस्तौ सयोज्येत्यर्थः 'विणएण'
विनयेन=नम्रभावेन 'पञ्जुवासमाणा' पर्युपासीना=त सेवमानौ तिष्ठतम्, यदा
खलु स शैलको यक्ष आगतसमये=अवमरे समागते प्राप्तममये=उपलब्धासवरे एव
वदेत्- 'क तारयामि क पालयामि ?' इति तदा युवा वदतम्- हे शैलक यक्ष !
आवा तारय, आवा पालय । शैलको 'भे' युवाभ्यामाराधितो यक्ष 'पर'
समर्थ', स युवा रत्नद्वीपदेवताया हस्तात् 'साहत्थि' साक्षात् 'णित्थारेज्जा'
निस्तारयिष्यति=पार नेष्यति, सङ्कटान्मोचयिष्यतीत्यर्थः, अन्यथा=एवमकरणे 'भे'
युवयोः न जानामि अनयोः शरीरयोः का=कीदृशी आपत्तिर्भविष्यति ?, इति
'मन्ने' मन्ने=अहं चिन्तयामि ॥ सू० ५ ॥

के दिन उचित समय प्राप्त होने पर बड़े जोर से ऐसा कहता है कि
मैं किसको तारू किसकी रक्षा करूँ ? इस लिये हे देवानुप्रियो!
तुम दोनों पूर्वदिशा सन्धी वनषड में जाओ और वहा उस शैलक
यक्ष की आराधना करो । आराधन करके फिर उस के समक्ष दोनों
घुटनों को और पैरों को टेककर- भूमिपर रखकर- अत्यन्ननमे हुए
बड़े विनय के साथ दोनों हाथों को जोड़ कर उसकी उपासना करने
में लग जाओ । जब वह शैलक यक्ष अवसर आने पर वैसा कहे कि मैं
किसे तारू किसे रक्षित करूँ ? तो तुम दोनों कहना हे शैलक यक्ष !
हम दोनों को यहा से तारों हमारी रक्षा करो । (सेलए भे जक्खे
पर रयण दीव देवयाण हत्थाओ साहत्थि णित्थारेज्जा अण्णहा भे न
याणामि इमेसि सरीरगाण का मण्णे आवई भविस्सइ) इस तरह तुम

ते शैलक यक्ष ओ श, आठम, अभावस्था अने पुनमना दिवसे उचित
समय प्राप्त थता णहु भोट्थी आ प्रभाणु उडे छे के डोने हु पार पडोयाहु ?
डोनी हु रक्षा कर ? अटला भोट्थे छे देवानुप्रियो ! तमे णने पूर्व दिशाना
वनषडमा लओ अने त्या ते शैलक यक्षनी आराधना करे आराधना करीने
तेनी सामे णने घुटणो अने पणो टेकाने घणु नम्र राण्डोमा विनयनी
साथे णने हाथ जोडीने तेनी उपासना करवा लागे । ज्वारे ते शैलक-यक्ष
समय आवता आ प्रभाणु उडेवा लागे के डोने हु पार उताइ अने-डोनी
रक्षा कर ? त्वारे तमे णने विनती करना उडेने डे-डे शैलक यक्ष ! अमे
अनेने अडोथी पार उतारे अभरी रक्षा करे ।

सेलए भे जक्खे पर रयणदीवदेवयाण हत्थाओ साहत्थि णित्थारेज्जा
अण्णहा भे न याणामि इमेसि सरीरगाण का मण्णे आवई भविस्सइ)

રૂપધારી યક્ષઃ પરિવસતિ=વર્તેતે । તતઃ સ્વલુ સ શૈલકો યક્ષઃ ' ચોદસદ્વુદિદ્વ-
પુણ્ણમાસિણીસુ ' ચતુર્દશ્યદ્વુદિદ્વપૂર્ણમાસીપુ-ચતુર્દશ્યામષ્ટમ્યામ્ ' ઉદિષ્ટ '
તિ અમાત્રાસ્યાયા પૂર્ણિમાયા ચ તિથી ' આગયમમણ ' આગતસમયે=આસન્નીભૂતા
વસરે ' પત્તસમણ ' પ્રાપ્તસમયે ઉપલબ્ધાવસરે સાક્ષાદેવાવસરે, યથોચિતસમય
સમ્પાપ્યેત્યર્થ મહતા મહતા શબ્દેન=ઉચ્ચૈઃ સ્વરેણ એવ વદતિ-' ક તારયામિ ?
ક પાલયામિ=રક્ષયામિ?, इति, ' ત ' તત્ તસ્માત્ ગચ્છત સ્વલુ યુગા હે દેવાનુપ્રિયો !
પૌરસ્ત્ય વનપન્ડ, શૈલકસ્ય યક્ષસ્ય ' મહરિદ્ ' મહાર્દી મહાયોગ્યા ' પુષ્કચ્ચણિય '

ચિદ્ધમિલ્લે વળસડે સેલગસ્સ જક્ષસ્સ જક્ષવાયયણે સેલણ નામ આ
સરુવધારી જક્ષે પરિવસદ્) ઉન કી હસ પ્રકાર કી યાત સુનકર ઉસ
શૂલારોપિત પુરુષ ને ઉન માકદી દારકોં સે હસ પ્રકાર કહા । હે દેવાનુ
પ્રિયો ! પૂર્વ દિશા કી વનપન્ડ મેં એક શૈલકયક્ષ કા યક્ષાયતન હૈ ।
ઉસ મેં અશ્વરૂપ ધારી શૈલક નામકા યક્ષ રહતા હૈ । (તણ્ણ સે સેલણ
જક્ષે ચોદસદ્વુદિદ્વપુણ્ણમાસિણીસુ આગયસમણ પત્તમમણ મહયા ૨
સદ્દેણ એવ વચ્છ, ક તારયામિ, ક પાલયામિ ? ત ગચ્છહ ણ તુબ્ધે દેવાણુ
પ્પિયા ! પુરચ્છિમિલ્લ વળસડ સેલગસ્સ જક્ષસ્સ મહરિદ્ પુષ્કચ્ચણિય
કરેહ, કરિત્તા જાણુવાયવડિયા પજ્જલિડડા ત્રિણણ પજ્જુવાસમાણા
ચિદ્ધહ, જાહેણ સેલણ જક્ષે આગતસમણ પત્તમમણ એવ વદેજ્જા ક
તારયામિ ક પાલયામિ ? તાહે તુબ્ધે વચ્છ અમ્હે તારયાહિ અમ્હે પાલ
યાહિ) વદ શૈલક યક્ષ ચતુર્દશી, અષ્ટમી, અમાવસ્યા એવ પૂર્ણમાસી

(તણ્ણ સે સૂલાદ્યણ પુરિસે તે માગદિયં એવ વગસી એસગ દેવાણુપ્પિયા !
પુરચ્છિમિલ્લે વળસડે સેલગસ્સ જક્ષસ્સ જક્ષવાયયણે સેલણ નામ આસરુ
ધારી જક્ષે પરિવસદ્)

તેઓની આ પ્રમાણેની વાત સાંભળીને તે શૂળી ઉપર લટકતા પુરુષે
માકદી દારકોને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! પૂર્વ દિશાના વનપન્ડમાં એક શૈલક
યક્ષનું યક્ષાયતન છે ત્યાં અશ્વરૂપધારી શૈલક નામે યક્ષ રહે છે

(તણ્ણ સે સેલણ જક્ષે ચોદસદ્વુદિદ્વપુણ્ણમાસિણીસુ આગયસમણ પત્ત
સમણ મહયા ૨ સદ્દેણ એવ વચ્છ ક તારયામિ ક પાલયામિ ? ત ગચ્છહ ણ
તુબ્ધે દેવાણુપ્પિયા ! પુરચ્છિમિલ્લ વળસડ સેલગસ્સ જક્ષસ્સ મહરિદ્ પુષ્ક
ચ્ચણિય કરેહ, કરિત્તા જાણુવાયવડિયા પજ્જલિડડા ત્રિણણ પજ્જુવાસમાણા
ચિદ્ધહ, જાહેણ સેલણ જક્ષે આગતસમણ પત્તમમણ એવ વદેજ્જા ક તારયામિ
ક પાલયામિ ? તાહે તુબ્ધે વચ્છ અમ્હે તારયાહિ અમ્હે પાલયાહિ)

तो भे अहं पिट्ठातो विहुणामि, अहणं तुब्भे रयणदीवदेव-
याए एयमट्ठं णो आढाह णो परियाणह णो अवयक्खहतो
भे रयणदीवेदेवया हत्थाओ साहत्थि णित्थारेमि, तएणं ते
मागंदियदारया सेलगं जक्खं एवं वयासी जणणं देवाणुप्पिया ।
वइस्सइ तस्स णं उववायवयणिहेसे चिट्ठिस्सामो, तएणं से
सेलए जक्खे उत्तरपुरत्थिमं दिसीभाग अवक्कमइ२ वेउव्वि-
यसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणित्ता सखेज्जाइ जोयणाइं दंडं
निस्सरेइ निरसरित्ता दोच्चंपिवेउव्वियसमु०२एगं महं आसरूवं
विउव्वइ२ ते मागंदियदारए एव वयासी-हं भो मागंदिया ।
आरुह णं देवाणुप्पिया । मम पिट्ठसि, तएणं ते मागंदिय०
हट्ठ० सेलगस्स जक्खस्स पणाम करेति२ सेलगस्स पिट्ठि
दुरुढा, तएण से सेलए ते मागंदिय० दुरुढे जाणित्ता तत्त-
ट्ठतालप्पमाणमेत्ताइ उड्डु वेहास उप्पयति, उप्पइत्ता य
त्ताए उक्किट्ठाए तुरियाए देवगईए लवणसमुदं मज्झमज्झेणं
जेणेव जवूदीवे दीवे जेणेव भारहेवासे जेणेव चंपानयरी
तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘तएण ते’ इत्यादि । ‘तएण’ ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ
तस्य शूलान्तिसस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निश्चय्य शीघ्रं, चण्डं=प्रबल, चपल,

‘तएण ते मागदिय०’ इत्यादि ।

टीका ३—(तएण) इसके बाद (ते मागदिय दारया) वे दोनों माकदी
के दारक (तस्स सूलाइयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा) उस शूलारोपित

‘तएण ते मागदिय’ इत्यादि ।

टीका ४—(तएण) त्थारपजी (ते मागदियदारया) तेन्ना अने भाइ दी दारकेन्ने
(तस्स सूलाइयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा) शूली उपर बटक्ता पुइयनी वात

मूलम्—तएण ते मागदिय० तस्स सूलाइयस्स अंतिए
 एयमट्ठ सोच्चा निसम्म सिग्घ चंड चवलं तुरियं वेइयं
 जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसडे जेणेव पोक्खरिणि तेणेव उवा०
 पोक्खरिणि ओगाहति२ जलमज्जणं करेति२ जाइं तत्थ
 उप्पलाइं जाव गेण्हति२ जेणेव सेलगस्स जम्बस्स जक्खा-
 ययणे नेणेव उ०२ आलोए पणाम करेति२ महरिह पुप्फ-
 च्चणियं करेति२ जाणुपायवडिया सुस्सूममाणा णमसमाणा
 पज्जुवासंति, तएणं से सेलए जक्खे आगतसमये पत्तस-
 मए एव वयासी-क तारयामि क पालयामि ?, तएण ते
 मागंदियदारया उट्ठाए उट्ठेति उट्ठित्ता करयल० एव वयासी
 —एव खलु देवाणुप्पिया । तुव्भं मए सद्धिं लवणसमुद्ध-
 मज्झं२ वीइवयमणाण सा रयणदीवदेवया पावा चडा रुद्धा
 खुद्धा साहसिया बहूहि खरएहि य मउएहि य अणुलोमेहि
 य पडिलोमेहि य सिगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहि य
 उवसग्गं करेहिइ, त जइ णं तुव्भे देवाणुप्पिया । रयणदी-
 वदेवयाए एयमट्ठ आढाह वा परियाणह वा अवयक्खह वा

दोनों के द्वारा आराधित हुआ वह शैलक यक्ष तुम दोनों के रयणा-
 देवी के हाथ से साक्षात् निस्तारित करवा देगा—अर्थात् उस के सकट
 से तुम्हें छुडवा देगा—नहीं तो कौन कह सकता है कि तुम्हारे शरीर की
 क्या दशा हो। मैं इसी बात का विचार कर रहा हूँ। सूत्र “ ५ ”

आ प्रभाण्णे तमारा वडे आराधायेक्षा ते सैवक यक्ष २ एवा देवीना लपेट-
 भाथी साक्षात् त ने जनेने मुक्त करशे अटक्के के तेना सकटभाथी तमने
 ते छे।।वशे नडित० तमारा शरीरनी शी दशा यशे ? ते केषु जण्णी शके
 तेम छे हु अे न विचार करी रह्यो छु ॥ सूत्र “ ५ ” ॥

तो भे अहं पिट्ठातो विहुणामि, अहणं तुब्भे रयणदीवदेव-
याए एयमद्वं णो आढाह णो परियाणह णो अवयक्खहतो
भे रयणदीवेदेवया हत्थाओ साहत्थि णित्थारेमि, तएणं ते
मागंदियदारया सेलगं जक्खं एवं वयासी जणं देवाणुप्पिया ।
वइस्सइ तस्स णं उववायवयणिद्देसे चिट्ठिस्सामो, तएणं से
सेलए जक्खे उत्तरपुरत्थिम दिसीभागं अवक्कमइ२ वेउव्वि-
यसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणित्ता सखेज्जाइं जोयणाइं दंडं
निस्सरेइ निरसरित्ता दोच्चंपिवेउव्वियसमु०२एणं महं आसरूवं
विउव्वइ२ ते मागंदियदारए एवं वयासी-हं भो मागंदिया ।
आरुह णं देवाणुप्पिया । मम पिट्ठसि, तएणं ते मागंदिय०
हट्ठं सेलगस्स जक्खस्स पणाम करेत्ति२ सेलगस्स पिट्ठिं
दुरूढा, तएण से सेलए ते मागंदिय० दुरूढे जाणित्ता सत्त-
ट्ठतालप्पमाणमेत्ताइ उड्डु वेहास उप्पयत्ति, उप्पइत्ता य
त्ताए उक्किट्ठाए तुरियाए देवगईए लवणसमुदं मज्झमज्झेणं
जेणेव जवूदीवे दीवे जेणेव भारहेवासे जेणेव चंपानयरी
तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘तएण ते’ इत्यादि । ‘तएण’ ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ
तस्य सूत्रान्तिसंस्थान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निश्चय्य शीघ्रं, चण्डं=प्रमल, चपल,

‘तएण ते मागंदिय०’ इत्यादि ।

टीका १—(तएण) इसके बाद (ते मागंदिय दारया) वे दोनों माकंदी
के दारक (तस्स सूलाइयस्स अतिए एयमद्व सोच्चा) उस सूलारोपित

‘तएण ते मागंदिय’ इत्यादि ।

टीका २—(तएण) तथारूपी (ते मागंदियदारया) तेजो ण ने भाइदी दारकेओ
(तस्स सूलाइयस्स अतिए एयमद्व सोच्चा) शूली उपर दृष्टता पुश्पनी वात

ત્વરિત, 'વેદ્ય' વેગિત=સવેગ યથામ્યાત્તથા શીઘ્રાતિશીઘ્રમિત્યર્થઃ યત્રૈવ પૌર-
સ્ત્ય વનપણ્ડ, યત્રૈવ પુષ્કરિણી=ગાપી તત્રૈવોપાગચ્છતઃ, ઉપાગત્ય પુષ્કરિણીમવગા
હેતે=અતઃ પ્રવિશતઃ, અવગામ્ય જલમઙ્ગન=મલસ્નાન કુરુતઃ, કૃત્વા યાનિ તત્ર
ઉત્પલાનિ વા પન્નાનિ વા યાવદ્ ગૃહીતઃ, ગૃહીત્વા યત્રૈવ શૈલકસ્ય યક્ષસ્ય યક્ષાપ
તનં તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય 'આલોઽ' આલોકે યક્ષદર્શને સતિ પ્રણામ
કુરુતઃ, કૃત્વા મહાહં=મહાયોગ્યા પુષ્પાર્ચનિકા કુરુત, કૃત્વા જાનુપાદપતિતૌ=
વિનમ્રકાપૌ 'સુસ્મૃસમાણા' શુશ્રૂષમાણૌ=યક્ષસેવાં કુર્વાણૌ 'જમસમાણા' નમ
સ્યન્તૌ=નમસ્કાર કુર્વાણૌ 'પઙ્ગુવાસતિ' પર્યુપાસાતેસ્મ, સેવા કૃતવન્તૌ । તતઃ
સ્વલુઃ સ શૈલકો યક્ષ આગતસમયે પ્રાપ્તસમયે પ્રમયાદીત્- 'ક તારયામિ કપાલા

પુરુષ કે મુખ સે ઇસ ઘાત કો સુનકર (નિસમ્મ) ઓર ઉસે અપને
ચિત્ત મેં નિશ્ચિત કર (સિગ્ધ ચડ ચવલ તુરિય વેદ્ય જેણેવ પુરચ્છિ-
મિલ્લે વળસડે જેણેવ પોક્ષરિણી તેણેવ ઉવાગચ્છદ્, ઉવાગચ્છિત્તા
પોક્ષરિણી ઓગાહતિ, ઓગાહિત્તા જલમઙ્ગળ કરેતિ, કરિત્તા જાહ
તત્થ-ઉપ્પલાહ જાવ ગેળ્હતિ, ગેળ્હિત્તા જેણેવ સેલગસ્સ જવ્વસ્સ જ-
વ્વાયયણે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા આલોઽ પળામ કરેતિ)
શીઘ્ર હી વહા સે બહુત જલ્દી ત્વરાયુક્ત ઘન જલ્દી ૨ દૌડતે હુણ્ સે
હોક્કર જેહા વહ પૂર્વ દિશા સબન્ધી વનપણ્ડ-તથા પુષ્કરિણી ખી વહાં
આયે । વહાં આકર ઉન્હોને પુષ્કરિણી મેં અવગાહન કિયા ફિર સ્નાન
કિયા । ફિર ઉસ સે કમલ થે વહાં સે લિયા ઓર લેકર જહાં
શૈલક યક્ષ કા યક્ષાયતન થા ઉસ ઓર ચલદિયે । વહા પહુંચતે હી
ઉન્હો ને યક્ષ કે દિવ્વલાહ પડતે નમસ્કાર કિયા । (કરિત્તા મહરિહ

સાલજીને (નિસમ્મ) અને તેને પોતાના મનમા ઠસાવીને

(સિગ્ધ ચડ ચવલ તુરિય વેદ્ય જેણેવ પુરચ્છિમિલ્લો વળસડે જેણેવ પોક્ષ
રિણી તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ ઉવાગચ્છિત્તા પોક્ષરિણી ઓગાહતિ, ઓગાહિત્તા જલ
મઙ્ગળ કરેતિ, કરિત્તા જાહ તત્થ-ઉપ્પલાહ જાવ ગેળ્હતિ, ગેળ્હિત્તા જેણેવ સેલગસ્સ
જવ્વસ્સ જવ્વાયયણે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા આલોઽ પળામ કરેતિ)

સત્પરે ત્યાથી શીઘ્ર ચાલથી દોડતા દોડતા બ્યા તે પૂર્વ દિશા સબન્ધી
વનપણ્ડ તેમજ પુષ્કરિણી હતી ત્યા પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેઓ પુષ્કરિણીમા
ઉતર્યા અને સ્નાન કર્યું પુષ્કરિણીમા જેટલા કમળો ખીલેલા હતા તેઓને
લઈ લીધા અને ત્યાર પછી શૈલક યક્ષના યક્ષાયતન તરફ સ્વાના થયા ત્યા
પહોચીને તેઓએ યક્ષની સામે જતા જ નમન કર્યું

यामि ? ' इति । तत खलु तौ माकन्दिदारकौ ' उट्टाए ' उत्थया स्वकीयो-
त्थानशक्त्या ' उट्टेति ' उत्तिष्ठतः, उत्थाय करतलपरिगृहीत शिरआवर्त दशनख
मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादिष्टाम्—' आवा तारय, आवा पालय ' इति । ततः
खलु स शैलको यक्षस्तौ माकन्दिदारकौ एवमवादीत्—एव खलु हे देवानुमियौ ।
युवयो मेया सार्द्धं लवणसमुद्र मध्यमध्येन=अन्तरामार्गेण ' वीक्ष्यमाणान् ' व्यति-

पुष्कचणिय करेति—करित्ता जाणु पायवडिया सुम्सुसमाणा णमसमाणा
पज्जुवासति, तण्ण से सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एव
वयासी—ऊ तारयामि क पालयामि तण्ण ते मागदियदारया उट्टाए
उट्टेति उट्टित्ता करयल० एव वयामी—अम्हे तारयाहिं अम्हे पालयाहिं)
नमस्कार कर फिर उन्होंने ने उस की आराधना—की । आराधन कर के
फिर वे दोनों अपने घुटने और पैर टेक कर उस के चरणों पर पड गये ।
इस प्रकार धार २ उस की सेवा करते हुए वे वहा रहने लगे—जब
उचित अवसर प्राप्त हुआ और उस शैलकयक्ष ने ऐसा कहा—कि—
मैं किस को तारू, किस को पार उतारू—तो उसी समय उठ कर इन दोनों
माकदी दारकों ने उस से दोनों हाथ जोड कर ऐसा कहा—आप हमें
तारिये हमें पार उतारिये—(तण्ण से सेलए जक्खे ते मागदिय० एवं
वयासी) उस दोना माकदी—दारकों की इस बात को सुनकर उस
शैलक यक्ष ने उन से ऐसा कहा— (एव खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भ
मएसद्धिं लवणसमुद्र मज्झ २ वीक्ष्यमाणान् सा रयणदीवदेवयो

(करित्ता महारिपुष्कचणिय करेति—करित्ता जाणुपायवडिया सुम्सुसमाणा
णमसमाणा पज्जुवासति, तण्ण से सेलए जक्खे आगत समए पत्तसमए एव वयासी
क तारयामि क पालयामि तण्ण ते मागदिय दारया उट्टाए उट्टेति उट्टित्ता
करयल० एव वयामी— अम्हे तारयाहिं अम्हे पालयाहिं)

नमन करीने तेओओ तेनी आराधना करी आराधना करीने तेओ ओ ने
जमीन उपर धूटणो टेकीने तेना थरणोभा आणोटी गया आ रीते बार बार
तेनी उपासना करता तेओ ओ ने त्या ज रडेया लाग्या न्यादे उचित समय
आव्यो त्यादे शैलक यक्षे ओम कहु—के केने हु तारू अने केने पार उतारू
तत ज माकदी दारके ओला थया अने ओने हाथ जोडीने यक्षने विनती
करवा लाग्या के तमे अमने तारे अने पार उतारे (तण्ण से सेलए जक्खे
ते मागदिय० एव वयासी) ओने माकदी दारकेनी विनती सालणीने शैलक
यक्षे तेओओने कहु के—

(एव खलु देवाणुप्पिया तुब्भ मए सद्धिं लवणसमुद्धं मज्झ २ वीक्ष्यमाणान्

अजतोः=गच्छतो सतो सा रत्नद्वीपदेवता पापा=पापिष्ठा चण्डा=कोपशीला,
 रुद्रा=क्रूरा क्षुद्रा=तुच्छस्वभावा साहसिका=अविचारितकारिणी बहुभि 'खरणहिय'
 खरकैः=कठोरै, 'मउएहिय' मृदुकैः=सुकोमलै, 'अणुओमेहिय' अनुलोमैः=
 'मनोऽनुकूलैः, 'पडिलोमेहिय' प्रतिलोमै=मनः प्रतिकूलभूतैश्च 'सिंगारेहिय'
 शृङ्गारैः=कामरागजनकैः 'कलुणेहिय' करुणैः=करुणाजनकैश्च 'उवसग्गेहिय' उप-
 सर्गैः=उपसर्गजनकवचनै. 'उवसग्ग' उपसर्गम्=उत्पात 'करेहिइ' कर्षिष्यति, तद्
 यदि खलु युगा हे देवानुप्रियो ! रत्नद्वीपदेवताया एतमर्थम् 'आढाहवा' आदि-

पावा चडा रुद्रा खुद्रा साहसिया, बह्हि खरणहिं य मउएहिं य अणु
 लोमेहि य पडिलोमेहि य सिंगारेहि य कलुणेहिं य उवसग्गेहिं य
 उवसग्ग करेहिइ) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग मेरे साथ लवण समुद्र में
 बीचों बीच के मार्ग से होकर चलो-जस समय वह पापिष्ठ, कोपशील,
 क्रूर, क्षुद्र एवं अविचारित कारिणी रयणा देवी तुम्हारे ऊपर अनेक
 कठोर, सुकोमल, मनोऽनुकूल, मनः प्रतिकूल कामराग जनक एवं करु
 णोत्पादक ऐसे उपसर्ग वचनों द्वारा उवसर्ग-उत्पात-करेगी । (त जइण
 तुब्भे देवाणुप्पिया ! रयणादीव देवयाए एयमट्ठ आढाह वा परियाणह
 वा अवयक्खह वा तो भे अह पिट्ठातो विहुणामि अहण तुब्भे रयण दीव
 देवयाए एयमट्ठ णो आढाह णो परियाणह णो अवयक्खह तो भे रयण
 दीव देवया हत्थाओ-साहत्थि णित्थरेमि) सो यदि हे देवानुप्रियो !
 तुम लोग रयणा देवी के इस उपसर्ग रूप अर्थ को आदर की दृष्टि से

ण सा रयणदीवदेवया पावा चडा रुद्रा खुद्रा साहसिया, बह्हि खरणहिं य
 मउएहिं य अणुलोहि य पडिलोमे हिं य सिंगारेहि य कलुणेहिं य उवसग्गेहिं
 य उवसग्ग करेहिइ)

हे देवानुप्रियो ! भारी साथे लवण समुद्रनी वचनेना मार्गमा थधने
 तमे आलशे। ते वणते ते पापिष्ठ, कोपशील, क्रूर, क्षुद्र अने अविचारितकारिणी
 रयणादेवी धणु। कठोर, सुकोमल, मनगमता, मनने प्रतिकूल, कामरागने उत्पन्न
 करेनाश अने करुणोत्पादक उपसर्ग वचने। वडे उपसर्ग-उत्पात करेशे

(त जइण तुब्भे देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए एयमट्ठ आढाहवा परि-
 याणहवा अवयक्खहवा तो भे अह पिट्ठातो विहणामि अहण तुब्भे रयणदीवदेवयाए
 एयमट्ठ णो आढाह णो परियाणाह णो अवयक्खह तो भे रयणदीवदेवया
 हत्थाओ साहत्थि णित्थरेमि)

ले हे देवानुप्रियो ! तमे लोको रयणा देवीना आ उपसर्ग रूप अर्थने
 सम्माननी दृष्टिअे लेशे। अट्ठे हे तेना वचनेने तमे सत्कारशे, स्वीकारशे।

येथे तदादर करिष्यथ', वा=अथवा 'परियाणह वा' परिजानीथः=स्वीकरिष्यथः
वा, अथवा 'अयक्खह वा' पश्यथ = अवलोकयिष्यथ 'तो' तदा 'मे' युवा-
मह 'पिठ्ठाओ' पृष्ठात्=मम पृष्ठभागात् 'विहुणामि' विधुनामि पातयिष्यामि ।
अथ खलु यदि युवा रत्नद्वीपदेवताया एतमर्थं नो आद्रियेथे, नो परिजानीथः,
'नो अयक्खह' ता प्रति नो पश्यतः, तदुपसर्गं सहिष्येथे इत्यर्थः 'तो' तदा
'मे' युवा रत्नद्वीपदेवताहस्तात् 'साहत्थि' स्वहस्तेन 'णित्थारेमि' निस्तार-
यामि=पार नेष्यामि । ततः खलु तौ माकन्दिवारकौ शैलक यक्षमेवमवादिष्टाम्-
य कञ्चन खलु हे देवानुप्रिय ! त्वमाराध्यत्वेन वदिष्यति, यत्खलु 'युवयोरय-
माराध्यः' इति तस्य खलु=तस्यैव उपपातनिर्देशे=सेवावचनाज्ञाया 'चिट्ठिस्सामो'
स्थास्याव किंपुनर्भवतः 'भवदाज्ञानुसारेणैव वर्त्तिष्यावहे इत्यर्थः । ततः खलु स
शैलको यक्षः 'उत्तरपुरत्थिम' उत्तरपौरस्त्यम् ईशानकोणसम्बन्धिन 'दिसीभाग'
दिग्भागम् 'अवक्कमइ' अपक्रामति=गच्छति अपक्रम्य वैक्रियसमुद्घातेन समव-
हन्ति, समवहत्य=वैक्रियसमुद्घात कृत्वा सङ्ख्येयानि योजनानि यावत् सङ्ख्येय

देखोगे-अर्थात् उन वचनों का आदर करोगे-उन्हें स्वीकार करोगे, उन
पर ध्यान दोगे, तो मैं अपने पृष्ठ भागसे तुम लोगको उतार दूंगा-नीचे
पटक दूंगा-और यदि तुम लोग उस रयणादेवी के इस उपसर्ग रूप अर्थ
का आदर नहीं करोगे, उन्हें स्वीकृत नहीं करोगे, उसकी तरफ नहीं देखोगे
-उसके द्वारा कृन् उपसर्गको सहन कर लोगे मैं तुम लोगोंको रयणादेवी
के हाथ से देखते २ छुड़ा दूंगा । (तएण ते मागदियदारया सेल्लग
जक्ख एववयासी-जण्ण देवाणुप्पिया । वइस्सइ तस्सण उववायवयणणि-
हेसे चिट्ठिस्सामो, तएण से सेलए जक्खे उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अव-
क्कमइ, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोदणइ २ सखेजाइं जोय-

अने तेना उपर विचार करेशे तो हु पोतानी पीठ उपरथी तमने उतारी
पाडीश अने नीचे ड्रे की दधिश अने ने तमे अने रयणा देवीना उपसर्ग रूप
ते वयनोना आदर उरेशे नडि, स्वीकारेशे नडि, तेनी तरफ नेशे नडि, ते
ने कर्थ पणु उपसर्ग-उत्पात-करे ते तमे अभी देखे तो हु तमने रयणा
देवीना हाथमाथी नेतनेतामा मुक्ता करावी दधिश

(तएण ते मागदियदारया सेल्लग जक्ख एव वयासी जण्ण देवाणुप्पिया ।
वइस्सइ तस्सण उववायवयणणिहेसे चिट्ठिस्सामो, तएण से सेलए जक्खे उत्तर
पुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोदणति२

योजनपरिमितमित्यर्थः दण्ड 'निस्सरेइ' निस्सारयति, निस्सार्य द्वितीयमपिनारं
वैक्रियसमुद्घातेन समरहन्ति, समरहत्य=द्वितीयमारं वैक्रियसमुद्घातं कृत्वा एकं
महत्-अश्वरूपं विकुर्वति-अश्वरूपस्य विकुर्वणां करोतीत्यर्थः, विकुर्वित्वा अश्वरूपं
कृत्वा तौ माकन्दिदरको एवमयदन्- 'हमो' हे देवानुप्रियौ माकन्दिदरको!

णाइ दंड निस्सरेइ, निस्सरित्ता दोच्चपि वेउव्वि ससु ० २ एगं मह
आसख्व विउव्वइ, २ ते मागदियदारण एव वयासी) शैलक यक्ष की
इस प्रकार की बात सुनकर उन माकदी दारकों ने उस शैलक यक्ष से
फिर इस प्रकार से कहा-हे देवानुप्रिय ! आप जिसके लिये हमें आरा
ध्यत्वेन कहेंगे-हम लोग उसी की सेवा करने में उसी के वचन मान
ने में और उसी की आज्ञानुसार वर्तमान करने में लग जावेंगे तो फिर
आपकी तो बात ही क्या है । आप तो हम से जैसे कहेंगे हम लोग
सर्वथा उसी के अनुसार चलेंगे । इस के बाद वह शैलक यक्ष ईशान
कोण सवन्धी दिग्भाग की ओर गया । वहां जाकर उस ने वैक्रिय
समुद्घात से उत्तर वैक्रिय की विकुर्वणा की-विकुर्वणा कर के फिर उस
ने अपने आत्मप्रदेशों का सख्यात योजन पर्यंत दण्डाकार रूप
में बाहिर निकला-निकाल कर के फिर दुबारा भी वैक्रिय समुद्घात
किया और फिर एक बड़े भारी अश्वरूप की । उस ने विकुर्वणा
की । अश्वरूप बनाकर फिर वह उन माकदी दारकों से बोला-

सखेजाइ जोयणाइ दंड निस्सरेइ, निस्सरित्ता दोच्चपि वेउव्वि ससु ० २ एगं
मह आसख्व विउव्वइ २ ते मागदिय दारण एव वयासी)

शैलक यक्षनी आ प्रमाणे वात सालणीने भाकुही दारकोअे तेने कहुँ के
हे देवानुप्रिय ! तमे अभने जे कहेने आराधवानो हुकमे करशे, अमे खेकि
तेनी सेवा करवामा, तेनी जे आज्ञा स्वीकारवामा अने तेनी आज्ञा प्रमाणे जे
आचरण करवामा-तत्पर थर्ज जेछु त्थारे तमारी तो वात जे शी उडेवी ?
तमे अभने जेम कडेशे तेम अमे सपूर्णपणे अनुसरेशु, त्थारमाह शैलक
यक्ष ईशान केणुना-दिगू लाग तरइ गये । त्या जेने तेखे वैक्रिय समुद्घातथी
उत्तर वैक्रियानी विकुर्वणा करी अने विकुर्वणा कर्या । माह तेखे पोताना आत्म-
प्रदेशोने सज्जात येजन सुधी दंडाकार रूपे अडार ठाढ़ा । अडार काढीने तेखे
भील वार पणु वैक्रिय समुद्घात कथे अने त्थार पछी तेखे ओक अहु मोटा
अश्वरूप (घोडाना रूप) नी विकुर्वणा करी अश्वरूप रूप अनावीने । तेखे भाकुही
दारकोने कहुँ के-

आरोहत खलु युग मम पृष्ठे । ततः खलु तौ माकन्दिद्वारकौ हृष्टपुष्टौ शैलकस्य
यक्षस्य प्रणाम कुरुतः, कृत्वा शैलकस्य पृष्ठ दूरुढौ पृष्ठ प्रदेशे समारूढौ । ततः
खलु स शैलकस्तौ माकन्दिद्वारकौ दूरुढौ=स्वपृष्ठादौ ज्ञात्वा 'सत्तद्वृत्तालप्यमा-
णमेत्ताइ' सप्ताष्टतालपमाणमोत्रान्=सप्ताष्टतालवृक्षपरिमितान् गगनभागान् यावत्
'उड्डुवेहास' ऊर्ध्वनिहायसि=उच्चैराकाशे 'उप्पयइ' उत्पतति, उष्पइत्ता, उत्पत्य च
तया प्रमिद्वया उत्कृष्टया त्वरितया देवगत्या लवणसमुद्र मध्यमध्येन यत्रैव
जम्बूद्वीपो द्वीप, यत्रैव भारती वर्ष=भारतक्षेत्र, यत्रैव चम्पानगरी तत्रैव प्रधार-
यति=गन्तु प्रवृत्त ॥ सू० ६ ॥

(ह भो मागदिया ! आरुह ण देवाणुप्पिया ! मम पिडुमि-तएणं ते
मागदिय० हट्ट० सेलगस्स जखस्स पणाम करेति करित्ता सेल-
गस्स पिड्ढि दुरुढा, नएण से सेलए ते मागदिय० दुरुढे जाणित्ता
सत्तद्वृत्तालप्यमाणमेत्ताइ उड्डु वेहास उप्पयइ, उप्पइत्ता य ताए-
उक्किट्ठाए तुरियाए देवगईए लवणसमुद मज्झ मज्झेण जेणेव जम्बूद्वीवे
द्वीवे जेणेव भारहेवासे जेणेव चपा नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए) अरे
ओ देवानुप्रिय माकदी दारको ! तुम दोनों मेरी पीठ पर चढ़ जाओ ।
इस के बाद वे दोनों माकदी दारक हर्षित एव सतुष्ट होते हुए प्रणाम
कर उस शैलक यक्ष की पीठ पर आरूढ़ हो गये । जब शैलक यक्ष ने
उन्हे अपनी पीठ पर चढ़ा जाना तो जानकर वह सात आठ ताल वृक्ष
प्रमाण बराबर क्षेत्रमें ऊपर आकाश में उछला । उछलता फिर वह
अपनी प्रसिद्ध उत्कृष्ट त्वरायुक्त देवगति से लवणसमुद्र के ठीक बीचों

(ह भो मागदिया ! आरुहण देवाणुप्पिया ! मम पिडुमि-तएणं ते माग-
दिय० हट्ट० सेलगस्स जखस्स पणाम करेति करित्ता सेलगस्स पिड्ढि दुरुढा,
तएण से सेलए ते मागदिय दुरुढे जाणित्ता सत्तद्वृत्तालप्यमाणमेत्ताइ उड्डु वेहाम
उप्पयइ, उप्पइत्ता य ताए उक्किट्ठाए तुरियाए देवगईए लवणसमुद मज्झमज्झे
ण जेणेव जम्बूद्वीवे द्वीवे जेणेव भारहेवासे जेणेव चपानयरी तेणेव पहारेत्थगमणाए)

अरे ओ देवानुप्रिय माकदी दारको ! तमो भारी पीठ उपर भेसी जाओ-
त्यार पत्री माकदी दारको हर्षित तेभज स तुष्ट यता प्रणाम करीने शैलक यक्षनी
पीठ उपर भेसी गया शैलक यक्ष तेओने पोतानी पीठ उपर सवार थछ गयेला
जाणीने ते सात आठ तालवृक्ष प्रमाण ढेटला क्षेत्रमा आकाशमा उड्यो अने
उड्योने ते पोतानी प्रसिद्ध उत्कृष्ट त्वरायुक्त देवगतिथी लवणसमुद्रनी गरोअरे

मू०—तएणं सा रयणदीवदेवया लवणसमुद्रं तिसत्त-
 खुत्तो अणुपरियट्ठइ जं तत्थ तणं वा जाव एडेइ, एडित्ता
 जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागाच्छइ उवागच्छित्ता ते मार्गं
 दियदारया पासायवडेंसए अपासमाणी जेणेव पुरच्छिमिह्हे
 वणसंडे जाव सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेतिर तेसिं
 मागदियदारगाणं कत्थइ सुइं खुइं वा पत्तिं वा अलभमाणी
 जेणेव उत्तरिल्ले एवं चेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी
 ओहि पउंजइ पउंजित्ता ते मार्गदियदारए सेलएणं सद्धिं लव-
 णसमुद्रं मज्झमज्झेण वीइवयमाणे पासइ पासित्ता आसुरुत्ता
 असिखेडग गेण्हइ गेण्हित्ता सत्तइ जाव उप्पयइ उप्पयित्ता
 ताए उक्किट्ठाए जेणेव मार्गदिय० तेणेव उवा० एवं वयासी—हं
 भो मार्गदिया० अप्पत्थियपत्थया किण्ण तुब्भे जाणह ममं
 विप्पजहाय सेलएण जक्खेण सद्धिं लवणसमुद्रं मज्झं मज्झेण
 वीइवयमाणा त एवमवि गए । जइण तुब्भे मम अवयक्खह
 तो भे अत्थि जीवियं, अहणं णावयक्खह तो भे इमेण नीलु-
 प्पलगवल जाव एडेमि, तएण ते मार्गदियदारया रयणदीव
 देवयाए अंतिए एयमट्ठ सो० णेस० अभीया अतत्था अणु-
 ठिन्नगा अक्खुभिया असभता रयणदीवदेवयाए एयमट्ठ नो

धीच के मार्ग से चलता हुआ जहा जबूद्धीप नाम का द्वीप और उसमें
 जहा भरत क्षेत्र और उसमें भी जहा चपानगरी थी उस ओर चल
 दिया ॥ सूत्र ६ ॥

वन्धेना मार्गमाथी पसार थतो न्या न् जबूद्धीप नामे द्वीप तेभन न्या भरत
 क्षेत्र अने तेमा पखु न्या चपा नगरी उती ते तरश्च खाना थये “६”॥

आढांति नो परि० णो अवयक्खति, आणाढायमाणा अपरि०
अणवयक्खमाणा सेलएण जक्खेण सद्धि लवणसमुद्धं मज्झंम-
ज्झेणं वीइवयंति, तत्तेणं सा रयणदीवदेवया ते मागदिय०
जाहे नो सचाएइ वट्टहि पडिलोमेहि य उवसग्गेहि य चालित्तए
वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा लोभित्तएवा ताहे महुरेहिं
सिगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गोहि य उवसग्गेउ पवत्ता यावि
होत्था, हं भो मागंदियदारगा । जइणं तुव्वमेहिं देवाणुप्पिया ।
मए सद्धि हसियाणि य रमियाणि य ललियाणि य कीलि
याणि य हिडियाणि य मोहियाणि य ताहे णं तुव्वमे सव्वाति
अमणेमाणा ममं विप्पजहाय सेलएणं सद्धि लवणसमुद्धं मज्झं-
मज्झेणं वीइवयह, तएणं सा रयणदीवदेवया जिणरक्खियस्स
मम ओहिणा आभोएइ आभोएत्ता एव वयासी—णिच्चपि य णं
अहं जिणपालियस्स अणिट्ठा५ निच्च मम जिणपालिए अणिट्ठे
५ निच्चपिय ण अहं जिणरक्खियस्स इट्ठा५ निच्चपिय णं मम
जिणरक्खिए इट्ठे५, जइणं मम जिणपालिए रोयमाणी कदमाणी
सोयमाणी तिप्पमाणी विलवमाणी णावयक्खइ किण्णं तुम
जिणरक्खिया । मम रोयमाणि जाव णावयक्खसि ?, तएण—

सा पवररयणदीयस्स देवया ओहिणा उ जिणरक्खियस्स मणं ।

नाऊण वधनिमित्त उवरि मागंदियदारगाणं दोणहपि ॥ १ ॥

दोसकलिया सलीलय णाणाविहचुण्णवासमीस दिव्व । घाण-

मण निव्वुइकर सव्वोउयसुरभिकुमुमवुट्ठि पमुच्चमाणी ॥ २ ॥

णाणामणिकणगरयणघटियखिखिणिणेऊरमेहलभूसणरवेण । दि-

सूत्रम्-तएणं सा रयणदीवदेवया लवणसमुद्धं तिसत्त-
 खुत्तो अणुपरियट्ठइ जं तत्थ तणं वा जाव एडेइ, एडित्ता
 जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागाच्छइ उवागच्छित्ता ते मार्गं
 दियदारया पासायवडिंसए अपासमाणी जेणेव पुरच्छिमिहे
 वणसडे जाव सब्बतो समंता मग्गणगवेसणं करेतिर तेसिं
 मागदियदारगाणं कत्थइ सुइं खुइ वा पत्तिं वा अलभमाणी
 जेणेव उत्तरिल्ले एवं चेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी
 ओहि पउंजइ पउंजित्ता ते मार्गदियदारए सेलएणं सद्धिं लव-
 णसमुद्धं मज्झमज्झेण वीइवयमाणे पासइ पासित्ता आसुरुत्ता
 असिखेडग गेण्हइ गेणिहत्ता सत्तट्ठ जाव उप्पयइ उप्पयित्ता
 ताए उक्किट्ठाए जेणेव मार्गदियं तेणेव उवां एवं वयासी-हं
 भो मागदियां अप्पत्थियपत्थया किण्णं तुब्भे जाणह मम
 विप्पजहाय सेलएणं जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्धं मज्झं मज्झेण
 वीइवयमाणा त एवमवि गए । जइणं तुब्भे मम अवयक्खह
 तो भे अत्थि जीवियं, अहणं णावयक्खह तो भे इमेण नीलु-
 प्पलगवल जाव एडेमि, तएणं ते मार्गदियदारया रयणदीव
 देवयाए अंतिए एयमट्ठ सों णेसं अभीया अत्तत्था अणु-
 ठिग्गा अवखुभिया असभता रयणदीवदेवयाए एयमट्ठ नो

धीच के मार्ग से चलता हुआ जहा जवूद्वीप नाम का द्वीप और उसमें
 जहा भरत क्षेत्र और उसमें भी जहा चपानगरी थी उस ओर चल
 दिया ॥ सूत्र ६ ॥

वन्धेना मार्गमाथी पसार यतो न्या न जवूद्वीप नामे द्वीप तेभज न्या भरत
 क्षेत्र अने तेभा पणु न्या चपा नगरी हुती ते तरश्च खाना थये ॥ सूत्र "६" ॥

कम्मदसगए अवयवखति मग्गतो सविलिय, तएण जिणर-
 विखय समुप्पन्नकलुणभावमच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइं अवयवखतं
 तहेवजक्खे य सेलए जाणिऊण सणियं२ उव्विहति नियग-
 पिट्ठाहि विगयसङ्गं, तएण सा रयणदीवदेवया निस्ससा कलुण
 जिणरविखय सकलुसा सेलगपिट्ठाहि ओवयंतदास । मओसित्ति
 जंपमाणी अप्पत्त सागरसलिलं गेपिहय वाहाहि आरसंत उड्डं
 उव्विहति अवरतले, ओवयमाण च मडलग्गेण पडिच्छित्ता-
 नीलुप्पलगवलअयसिप्पभासेण असिवरेणं खडाखडि करेति
 तत्थ विलवमाण तस्स य रारसवहियस्स घेत्तूण अगमंगाइं सरु
 हिराइं उक्खित्तवलि चउदिसि करेति सा पंजली पहिट्ठा ॥ सू०७ ॥

टीका—‘ तएण सा ’ इत्यादि—ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता लवणसमुद्र-
 त्रिसप्तकृत्वः=एकविंशतिवारम् अनुपर्यटति, अनुपर्यट्य यत्तत्र तृण वा यावत् सर्वं पत्र
 काष्ठादिक्रमपनीय—एकान्ते ‘ एडेइ ’ एडति=प्रक्षिपति, प्रक्षिप्य यत्रैव प्रासादावत-
 सकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तौ माकन्दिकदारकौ प्रासादावतसके—अपश्यन्ती

‘ तएण सा रयणदीवदेवया ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सा रयणदीवदेवया) उस रयणादेवी ने
 (लवण समुद्र तिसत्तखुत्तो अणुपरियटति) लवण समुद्र की २१ बार
 प्रदक्षिणा की—(ज तत्थ तण वा जाव एडेइ एडित्ता जेणेव पासायवडे
 सए तेणेव उवागच्छति) इस समय में उसे वहा पर जो तृणकाष्ठ पत्र
 आदि मिला उस-सबको वहा से हटाके दूर जाकर एकान्त स्थान में
 डाल दिया। डालकर फिर वह जहा अपना श्रेष्ठ प्रासाद था वहा आई-

‘ तएण सा रणदीव देवया ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्थारभाह (सा रयणदीव देवया) ते रयणादेवीअे(लवण
 समुद्र ति सत्तखुत्तो अणुपरियटति) लवण समुद्रनी अेकवीश वार प्रदक्षिणा करी
 (ज तत्थ तण वा जाव एडेइ एडित्ता जेणेव पासायवडेसए तेणेव उवागच्छइ)
 प्रदक्षिणा करती वण्णते रयणा देवीने त्या तृण, काष्ठ पत्र वगेरे अे उड्ड
 पण्ण जेवामा आण्णु तेने त्याथी हर अेकातमा इड्डी दीधु इड्डीने ते पानाना
 अण्णु भड्डसमा आपत्ती रही

साओ विदिसाओ पूरयंती वयणमिणं वेति सा साकलुसा ॥३॥
 होल-वसुल-गोल-णाह-दइत-रमण-कंत-सामिय-णिग्घिण
 णिच्छक्क । थिण्ण णिक्खिअ अकयण्णुय सिढिल भाव निह्ज्ज
 लुक्ख अक्खलुण जिणरक्खियं मज्झ हिययरक्खगा । ॥ ४ ॥ णहु
 जुज्जसि एक्खियं अणाहं अवधवं तुज्झचलणओवायकारियं उज्झिउ
 महण्णं । गुणसंकर ! अहं तुमं विहूणा ण समत्थावि जीविउ
 खणंपि ॥ ५ ॥ इमस्स उ अणेगइसमगरविविह सावयस-
 याउलधरस्स । रयणागरस्स मज्झे अप्पाणं वहेमि तुज्झ
 पुरओ एहि णियत्ताहि जइसिकुविओ खमाहि एक्कावराहं मे
 ॥ ६ ॥ तुज्झ य विगयघणविमलससिमडलागार सस्सिरीयं
 सारयनवकमलकुसुयकुवलयविमलदलनिकरसरिसनिभनयणं व-
 यणं पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउ जे अवलोएहि ताइओ
 मम णाह जो ते पच्छामि वयणकमलं ॥ ७ ॥ एव सप्पणय
 सरलमहुराइ पुणो२ कलुणाइ वयणाइ जंपमाणी सा पावा
 मग्गओ समणोइ पावहियया ॥ ८ ॥ तएणं से जिणरक्खिण
 चलमाणे तेणेव भूसणरवेण कण्णसुहमणोहरेणं तेहि य सप्प-
 णयसरलमहुरभाणिएहिं सजायविणराए रयणदीवस्स देवयाए
 तीसे सुदरथणजहणवयणकरचरणनयणलावन्नरूवजोव्वण-
 सिरिं च दिव्व सरभसउवगूहियाइ विव्वोयविलसियाणि य
 विहसिय सकडक्खदिट्ठिनिस्ससियमलियउवललियठियगमणप-
 णयखिजियपासाइयाणि य सरमाणे रागमोहियमई अवसे

कम्मदसगए अवयक्खति मग्गतो सविलिय, तएण जिणर-
क्खिय समुप्पन्नकलुणभावं मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइं अवयक्खत
तहेवजक्खे य सेलए जाणिऊण सणियं२ उव्विहति नियग-
पिट्ठाहि विगयसद्धं, तएण सा रयणदीवदेवया निस्ससा कलुण
जिणरक्खिय सकलुसा सेलगपिट्ठाहि ओवयंतदास । मओसित्ति
जंपमाणी अप्पत्तं सागरसलिलं गेपिहय वाहाहि आरसंत उड्ड
उव्विहति अवरतले, ओवयमाण च मडलग्गेण पडिच्छित्ता
नीलुप्पलगवलअयसिप्पभासेण असिवरेण खंडाखडि करेति
तत्थ विलवमाण तस्स य रारसवहियस्स घेत्तूण अगमंगाइं सरु
हिराइ उक्खित्तवलि चउदिसि करेति सा पंजली पहिट्ठा ॥ सू०७ ॥

टीका—‘ तएण सा ’ इत्यादि—ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता लवणसमुद्रः
त्रिसप्तकृत्वः=एकविंशतिवारम् अनुपर्यटति, अनुपर्यट्य यत्तत्र तृण वा यावत् सर्वं पत्र
काष्ठादिकमपनीय—एकान्ते ‘ एडेइ ’ एडति=प्रक्षिपति, प्रक्षिप्य यत्रैव प्रासादावत-
सकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तौ माकन्दिदरकौ प्रासादावतसके—अपश्यन्ती

‘ तएण सा रयणदीवदेवया ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सा रयणदीवदेवया) उस रयणादेवी ने
(लवण समुद्र तिसत्तखुत्तो अणुपरियटति) लवण समुद्र की २१ बार
प्रदक्षिणा की—(ज तत्थ तण वा जाव एडेइ एडित्ता जेणेव पासायवडे
सए तेणेव उवागच्छति) इस समय में उसे वहां पर जो तृणकाष्ठ पत्र
आदि मिला उस-सबको वहां से हटाके दूर जाकर एकान्त स्थान में
डाल दिया। डालकर फिर वह जहां अपना श्रेष्ठ प्रासाद था वहां आई-

‘ तएण सा रणदीव देवया ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्थारभाह (सा रयणदीव देवया) ते रयणादेवीणे(लवण
समुद्र ति सत्तखुत्तो अणुपरियटति) लवण समुद्रनी ओडवीश वार प्रदक्षिणा करी
(ज तत्थ तण वा जाव एडेइ एडित्ता जेणेव पासायवडेसए तेणेव उवागच्छइ)
प्रदक्षिणा करती वप्पते रयणा देवीने त्या तृण, काष्ठ पत्र वगेरे जे उड्ड
पणु जेवामा आण्यु तेने त्याथी दूर ओकातमा देडी दीधु देडीने ते पोणाना

म भेडमा आपत्ती रही

साओ विदिसाओ पूरयंती वयणमिणं वेति सा साकलुसा ॥३॥
 होल-वसुल-गोल-णाह-दइत-रमण-कंत-सामिय-णिग्घिण
 णिच्छक्क । थिण्ण णिक्खिअ अकयण्णुय सिढिल भाव निहज्ज
 लुक्ख अकलुण जिणरक्खिय मज्झं हिययरक्खगा । ॥ ४ ॥ णहु
 जुज्जसि एक्खियं अणाहं अवधव तुज्झचलणओवायकारिय उज्झिउ
 महण्णं । गुणसंकर । अहं तुमं विहूणा ण समत्थावि जीविउ
 खणंपि ॥ ५ ॥ इमस्स उ अणेगझसमगरविविह सावयस-
 याउलधरस्स । रयणागरस्स मज्झे अप्पाणं वहेमि तुज्झ
 पुरओ एहि णियत्ताहि जइसिकुविओ खमाहि एक्कावराहं मे
 ॥ ६ ॥ तुज्झ य विगयघणविमलससिमडलागार सस्सिरीयं
 सारयनवकमलकुसुयकुवलयविमलदलनिकरसरिसनिभनयणं व-
 यणं पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउ जे अवलोएहि ताइओ
 मम णाह जो ते पच्छामि वयणकमलं ॥ ७ ॥ एव सप्पणय
 सरलमहुराइ पुणो२ कलुणाइ वयणाइ जपमाणी सा पावा
 मग्गओ समणोइ पावहियथा ॥ ८ ॥ तएणं से जिणरक्खिअ
 चलमाणे तेणेव भूसणरवेण कण्णसुहमणोहरेणं तेहि य सप्प-
 णयसरलमहुरभणिएहि सजायविणराए रयणदीवस्स देवयाए
 तीसे सुदरथणजहणवयणकरचरणनयणालावन्नरूवजोव्वण-
 सिरि च दिव्व सरभसउवगूहियाइ विव्वोयविलसियाणि य
 विहसिय सकडवखदिट्ठिनिस्ससियमलियउवललियठियगमणप-
 णयखिज्जियपासाइयाणि य सरमाणे रागमोहियमई अवसे

માકન્દિકદારકૌ શૈલકેન સાર્દ્ધ લવણસમુદ્ર મધ્યમધ્યેન 'વીહવયમાણે' વ્યતિવ્ર-
જન્તૌ=ગન્ઠન્તૌ પશ્યતિ, દૃષ્ટ્વા 'આસુરુત્તા' અશુરુત્તા=શીઘ્રક્રુપિતા 'અસિખેડગ'
અસિખેટકમ્, અસિશ્વલજ્ઞ સ્વેટકથ્વ ફલકઃ 'ઢાલ' इति=સિદ્ધઃ એતયો સમાહારે-
અસિખેટકમ્ ગૃહ્ણતિ, ગૃહીત્વા 'સત્તદ્વજાવ' સપ્તાષ્ટ યાવત્, સપ્તાષ્ટતાલપમાણાન્
ગગનમાગાન્ યાવદ્ ઊર્ધ્વં વિદ્યાયસિ ઉત્પતતિ, ઉત્પત્ય તથા ઉત્કૃષ્ટયા દેવગત્યા
યત્રૈવ માકન્દિકદારકૌ તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્યૈવમવાદીત્-‘હમો’ હે માકન્દિક
દારકૌ ! ‘અપ્પત્થિયપત્થયા’ અપ્રાર્થિતપ્રાર્થકૌ=મરણાભિલાષિણૌ કિં સ્વલુ યુગ

ઉપયુક્ત ક્રિયા । (પડજિત્તા તે માગદિયદારણ સેલણ સદ્ધિ લવણસમુદ્ર
મજ્ઞ મજ્ઞેણ વીહવયમાણે પાસહ, પાસિન્ના આસુરુત્તા અસિખેડગં ગે-
ળહ, ગેળિહત્તા સત્ત અદ્દ જાવ ઉપ્પયહ ઉપ્પહત્તા તાણ ઉક્કિટ્ટાણ જેણેવ
માગદિય૦ તેણેવ ઉવા૦ ૨ એવ વયાસી-હમો માકદિય૦ અપ્પત્થિયપ-
ત્થિયા કિણ્ણ તુવ્વમે જાણહ મમ વિપ્પજહાય સેલણ એવમવિગણ)
ઉપયુક્ત કરકે ઉસને ઉન માકદીદારકૌ કો શૈલક કે સાથ લવણસમુદ્ર
મેં હોકર ઠીક વીચો વીચ કે માર્ગ સે જાતે હુણ દેખા । દેખકર વહક્રોધ
સે ક્રોધિત હો ગઈ । ઉસને ઉસી સમય અપની તલવાર ઓર ઢાલ ઉઠા
ઈ । ઉઠાકર વહ સાત આઠા તાલ વૃક્ષ પ્રમાણ ડપર કી ઓર આકાશ
મેં ઉછલી । ઉઝલકર ફિર વહ ઉત્કૃષ્ટદેવ સમ્પન્ધી ગતિ સે ચલ કર
જહા વે માકદી-દારક થે વહાં આઈ । વહા આકર ઉસને ઉનસે હસ
પ્રકાર કહા । અરે ઓ માકદિ-દારક ! માલૂમ પડતા હૈ તુમલોગ અપ્રા-
ર્થિત પ્રાર્થક બન રહે હો-જિસે કોઈ બી નહીં ચાહે વહ અપ્રાર્થિત-મૃત્યુ

(પડજિત્તા તે માગદિયદારણ સેલણ સદ્ધિ લવણસમુદ્ર મજ્ઞ મજ્ઞેણ વીહ-
વયમાણો પાસહ, પાસિન્ના, આસુરુત્તા આસિખેડગ ગેળહ, ગેળિહત્તા, સત્તઅદ્દ જાવ
ઉપ્પયહ ઉપ્પયિત્તા તાણ ઉક્કિટ્ટાણ જેણેવ માગદિય તેણેવ ઉવા૦ ૨ એવ વયાસી
હમો માકદિય૦અપ્પત્થિય પત્થયા કિણ્ણ તુવ્વમે જાણહ મમ વિપ્પજહાય સેલણ
એવમવિગણ)

ઉપયોગ કરીને તેણે માકદી દારડોને શૈલક યક્ષની સાથે લવણ સમુદ્રની
ઠીક વચ્ચેના માર્ગથી પસાર થતા જોયા જોતાની સાથે જ તે ગુસ્સે થઈ ગઈ
તેણે તરતજ પોતાની ઢાલ અને તગ્વાર હાથમા લીધી લઈને તે સાત આઠ
તાલવૃક્ષ જેટલુ આકાશમા જીએ ઉઠી, ઉઠીને તે ઉત્કૃષ્ટ દેવસંબંધી ગતિથી
સત્તરે બના માકદી દારડો હના ત્યા પહોચી ગઈ ત્યા પહોચીને તેણે
તેઓને એમ કહ્યું કે અરે ઓ ! માકદી દારડો ! મને લાગે છે કે તમે અપ્રા-
ર્થિત પ્રાર્થક બની રહ્યા છો એટલે કે મૃત્યુ જ એવી વસ્તુ છે કે તેને કોઈ

यत्रैव पौरस्त्य वनपण्ड यावत्सर्वतः समताद् मार्गगवेयणां करोति सामान्य विशेषतयाऽन्वेयति, कृत्वा तयोर्माकन्दिरुदारयोः कुत्रापि 'सुखा' श्रुति वा= वार्त्ता, 'सुखं वा' श्रुति=तत्सम्यन्धिनीं श्रुतिम्, अव्यक्तभाषणं तच्चिह्नं वा, 'पउत्ति वा' प्रवृत्ति=वृत्तान्तं वा 'अलभमाणी' अलभमाना=अप्राप्नुवन्ती सती यत्रैवोत्तरीये=उत्तरदिग्भवे वनपण्डे एवमेव=पूर्वरदेव पाश्चात्येऽपि यावद् अपश्यन्ती 'ओहिं' अवधिम्-अवधिज्ञानं 'पउजइ' प्रयुनक्ति=व्यापारयति, प्रयुज्यतौ

(उवागच्छित्ता ते मागदियदारया, पासायवडिसए अपासमाणी, जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसडे जाव सव्वओ समतामग्गणगवेसण करेइ करित्ता तेसिं मायदियदारगाण कत्थेइ सुइ खुइ वा पउत्ति वा अलभमाणी जे- भव उत्तरिल्ले वणसडे एवमेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहिं पउजइ) वहा आकर उसने उसमें माकड़ी दारकोंको नहीं देखा-सो इस कारण वह जहां पूर्वदिशा सम्बन्धी वनपण्ड था वहा आई वहां आ- कर उसने उनकी सबतरफ चारों ओर तपास की मार्गणा गवेयणा की- परन्तु वहा कहीं पर भी माकड़ी दारकों की उसे न कोई बात सुनने में आई और न उनकी चिह्नरूप छीक या अव्यक्त भाषण या कोई विशेष चिह्न ही देखने में आया। और न उनकी वहा उसे कोई खबर ही मिली-इस तरह इन सब बातोंको नहीं प्राप्त करती हुई वह जहा उत्तर दिशा सम्बन्धी वनपण्ड था वहा इसी तरह जहा पश्चिम दिशा सम्बन्धी वनपण्ड था वहा आई वहा कहीं पर भी उसे उनकी कोई बात बगैरह सुनने में देखने में जब नहीं आई-तब उसने अपने अवधिज्ञान को

(उवागच्छित्ता ते मागदियदारया पासायवडिसए अपासमाणी जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसडे जाव सव्वओ समतामग्गणगवेसण करेइ करित्ता तेसिं मायदियदारगाण कत्थेइ सुइ खुइ वा पउत्ति वा अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले वण- सडे एवमेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहिं पउजइ)

त्या आवीने तेणु भाउदी दारकेने जेया नडि त्थारे ते पूर्व दिशा तरइ वनपण्डमा पहुँची त्या तेणु तेओनी ओमेर तपास करी, मार्गणु गवेयणा करी पणु भाउदी दारकेना पत्तो भज्ये नडि रथणादेवीने भाउदी दारकेनी वातचीत पणु सालणवामा आवी नडि तेभज तेओनी डयातीना पणु डोळ थिहो जेभके छीक अथवा तो धीमेथी वातचीत वगेरे देखाया नडि आ रीते ते त्याथी उत्तर दिशा तरइना वनपण्डमा गछ त्थारपछी पश्चिम दिशाना वन पण्डमा ते गछ त्या- पणु रथणा देवीने तेओनी डोळ पणु वातचीत वगेरे सालणाम नडि त्थारे तेणु पोताना अवधिज्ञानना उपयोग कर्ये

માકન્દિદારકો શૈલકેન સાઠ્ઠ લવણસમુદ્ર મધ્યમધ્યેન 'વીરવચમાણે' વ્યતિવ્ર-
જન્તો=ગન્ઠન્તો પશ્યતિ, દૃષ્ટ્વા 'આસુરુતા' અશુરુતા=શીઘ્રક્રુપિતા 'અસિખેડગ'
અસિખેટકમ્, અસિશ્વલજ્ઞ સ્વેટકશ્ચ ફલકઃ 'ઢાલ' इति+सिद्धः एतयो समाहारे-
અસિખેટકમ્ ગૃહ્ણતિ, ગૃહીત્વા 'સત્તદ્વજાવ' સપ્તાષ્ટ યાવત્, સપ્તાષ્ટતાલપ્રમાણાન્
ગગનમાગાન્ યાવદ્ ઝર્ષ્વ વિહાયસિ ઉત્પતતિ, ઉત્પત્ય તયા ઉત્કૃષ્ટયા દેવગત્યા
યત્રૈવ માકન્દિદારકો તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્યૈવમવાદીત્-‘હમો’ હે માકન્દિક
દારકો ! ‘અપ્પત્થિયપત્થયા’ અપ્રાર્થિતપ્રાર્થકો=મરણાભિલાષિણો કિં સ્વલ યુગ

ઉપયુક્ત ક્રિયા । (પડજિત્તા તે માગદિયદારણ સેલણ સદ્ધિ લવણસમુદ્ર
મજ્ઝ મજ્ઝેણ વીરવચમાણે પાસહ, પાસિત્તા આસુરુતા અસિખેડગં ગે-
પ્પહ, ગેપ્પિત્તા સત્ત અદ્ધ જાવ ઉપ્પયહ ઉપ્પહિત્તા તાણ ઉક્કિદ્ધાણ જેણેવ
માગદિયં તેણેવ ઉવાં ૨ ઇવ વયાસી-હમો માકદિયં અપ્પત્થિયપ-
ત્થિયા કિણ્ણ તુવ્વમે જાણહ મમ વિપ્પજહાય સેલણ એવમવિગણ)
ઉપયુક્ત કરકે ઉસને ઉન માકદીદારકો કો શૈલક કે સાથ લવણસમુદ્ર
મેં હોકર ઠીક વીચો વીચ કે માર્ગ સે જાતે હુણ દેસા । દેસકર વહક્રોધ
સે ક્રોધિત હો ગઈ । ઉસને ઉસી સમય અપની તલવાર ઓર ઢાલ ઉઠા
ઈ । ઉઠાકર વહ સાત આઠા તાલ વૃક્ષ પ્રમાણ ઝપર કી ઓર આકાશ
મેં ઉછલી । ઉછલકર ફિર વહ ઉત્કૃષ્ટદેવ સમ્બન્ધી ગતિ સે ચલ કર
જહા વે માકદી-દારક થે વહાં આઈ । વહા આકર ઉસને ઉનસે હસ
પ્રકાર કહા । અરે ઓ માકદિ-દારક ! માલૂમ પડતા હૈ તુમલોગ અપ્રા-
ર્થિત પ્રાર્થક બન રહે હો-જિસે કોઈ મી નહીં ચાહે વહ અપ્રાર્થિત-મૃત્યુ

(પડજિત્તા તે માગદિયદારણ સેલણ સદ્ધિ લવણસમુદ્ર મજ્ઝ મજ્ઝેણ વીર-
વચમાણો પાસહ, પાસિત્તા, આસુરુતા આસિખેડગ ગેપ્પહ, ગેપ્પિત્તા, સત્તઅદ્ધ જાવ
ઉપ્પયહ ઉપ્પયિત્તા તાણ ઉક્કિદ્ધાણ જેણેવ માગદિય તેણેવ ઉવાં ૨ ઇવ વયાસી
હ મો માકદિયં અપ્પત્થિય પત્થયા કિણ્ણ તુવ્વમે જાણહ મમ વિપ્પજહાય સેલણ
એવમવિગણ)

ઉપયોગ કરીને તેણે માકદી દારડોને શૈલક યક્ષની સાથે લવણ સમુદ્રની
ઠીક વચ્ચેના માર્ગથી પસાર થતા જોયા જોતાની સાથે જ તે ગુસ્સે થઈ ગઈ
તેણે તરતજ પોતાની ઢાલ અને તરવાર હાથમા લીધી લઈને તે સાત આઠ
તાલવૃક્ષ જેટલું આકાશમા જાયે ઉછળી, ઉછળીને તે ઉત્કૃષ્ટ દેવસંબંધી ગતિથી
સત્તર જ્યાં માકદી દારડો હતા ત્યાં પહોંચી ગઈ ત્યાં પહોંચીને તેણે
તેઓને એમ કહ્યું કે અરે ઓ ! માકદી દારડો ! મને લાગે છે કે તમે અપ્રા-
ર્થિત પ્રાર્થક બની રહ્યા છો એટલે કે મૃત્યુ જ એવી વસ્તુ છે કે તેને કેઈ

જાનીય:-યત્ 'મમ' મા ' વિપ્રજહાય ' વિપ્રજાય=વિત્તિયક્રમ યૌત્રકેન યક્ષેણ સાર્દ
લવણસમુદ્ર મધ્યમધ્યેન ' યીર્વયમાણા ' વ્યતિવ્રજન્તી સ્વઃ તદ્ એવમપિ=અનેન
પ્રકારેણ યક્ષપૃષ્ઠાવલમ્બનેન ' ગણ ' આર્વા ગતૌ=ગૃહ પ્રાપ્તૌ, इति, યુગા જાનીય
તદ્ ભ્રાન્તૌસ્થઃ । યદિ સ્વલુ યુવા ' મમ ' મામ્ ' અવયવલ્લહ ' પદ્યત ' તો '
તદા ' મે ' યુગયોરસ્તિ જીવિતમ્, અથ સ્વલુ મા ન પદ્યત ' તો ' તદા ' મે '
યુગયોઃ અનેન ' નીલુપ્પલગવલ જાવ ' નીલોત્પલગવલ યાવન્ અતિશ્યામ સુતીક્ષ્ણ
સ્વજ્ઞેન શિરશ્ચિહ્નવા એકાન્ને એદેમિ=મક્ષિપામિ=દ્વયોરપિ શિરશ્ચેત્સ્યામીત્યર્થ ।
તતઃ સ્વલુ તા માકન્દિકદારકૌ રત્નદ્વીપદેવતાયા અન્તિતે એતમર્થ શ્રુત્વા નિશમ્ય
અભીતૌ અત્રસ્તૌ અનુદ્વિગ્નૌ, અસુગ્ધૌ અસમ્ભ્રાન્તૌ સન્તૌ રત્નદ્વીપદેવતાયા એતમર્થ

હૈ । ઉસ કે ભી તુમ ચાહને વાલે હો રહે હો । જો તુમલોગ મુક્ષે ઝોડકર
યક્ષ શૈલક કે સાગ લવણ સમુદ્ર કે ધીચ સે હોકર જા રહે હો । તો
કયા હસ તરહ કે જાને સે તુમલોગ હમ ઘર પહુંચ ગયે ? યહ માન રહે
હો સો યહ તુમ્હારા ભ્રમ હૈ । (જહણ તુમ્હે મમ અવયવલ્લહ તો મે અ-
ત્થિજીવિય અહળ ણાવયવલ્લહ તો મે હમેગ નીલુપ્પલગવલજાવએદેમિ)
યદિ તુમ મેરી ઓર દેખો-મુક્ષે ચાહો-તો હી તુમ્હારા જીવન બચ સકતા
હૈ-યદિ તુમ મુક્ષે નહીં ચાહતે હો-મેરી તરફ નહીં દેખતે હો-તો-દેખો
હસ નીલકમલ તથા મહિષ કે શૃંગકે જૈસે વર્ણવાલી-અતિશ્યામ સુતી-
ક્ષ્ણ તલવાર સે મેં અભી તુમ દોનોં કે મસ્તક કો છેદકર ઉસે એસે
સ્થાન મેં ઢાલ દૂગી કિ જહાં ઉસકા પતા ભી નહીં લગેગા । (તણ તે
માગદિયદારયો રયણદીવદેવયાણ અતિણ એયમદ્વ સોં ણીસં અભીયા

ઈચ્છતુ નથી તેની મૃત્યુ 'અપ્રાર્થિત' થયું અને તે માકદી દારજો તને ઈચ્છ
નાર થયા કેમકે તમે અને છોડીને યક્ષ શૈલકની સાથે લવણ સમુદ્રની 'વચ્ચે
થઈને જઈ રહ્યા છો તમે અત્યારે એમ સમજી રહ્યા હશે કે અમે હેમખેમ
(સકુશળ) પોતાને ઘેર પહોંચી ગયા છીએ તો તમે ભ્રમમા છો ।

(જહણ તુમ્હે મમ અવયવલ્લહ તો મે આત્થિ જીવિય અહળ ણાવયવલ્લહ
તો મે હમેગ નીલુપ્પલગવલ જાવ એદેમિ)

જો તમે અને જ ચાહો-અને જ જુઓ-તો તમારા જીવનની સલામતી છે
જો તમે અને ઈચ્છતા નથી, મારી તરફ જોતા નથી તો જુઓ આ નિલકમળ
તેમજ લેલના શિંગડા જેવા રંગની ખૂબ જ સ્થામ રંગવાળી તેજ તરવારથી
હુ તમારા અનેના માથા કાપીને એવી જગ્યાએ ફેંકી દઈશ કે તેની કોઈને
ખબર પણ પડી શકે નહિ

(સર્વ તે માગદિય દારયા રયણદીવદેવયાણ અતિણ

नो आद्रियेते नो परिजानीतः 'नो अवयवत्वति' नो पश्यतः, 'अणाढायमाणा' अनाद्रियमानो=तमर्थं प्रति-आदरं न कुर्वीणी 'अपरियमाणा' अपरिजानानो तमर्थमस्वीकुर्वीणी 'अणवयवत्वमाणा' तत्समुखमप्यपश्यन्तो शैलकेन यक्षेण सार्द्धं लवणसमुद्रं मध्यमध्येन 'वीडयति' व्यतिव्रजत =मुखपूर्वरु गच्छतः । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिदारको यदा नो शक्नोति बहुभिः 'पडिलोमेहिय' प्रतिभैश्च=प्रतिकूलैश्चसर्गैश्चालयितुं वा-क्षोभयितुं वा 'विपरिणामित्तए वा' विपरिणामयितुं=मनोवृत्तिं परावर्तयितुं 'लोभित्तए वा' लोभयितुं=लुब्धौ वक्तुं वा

अतत्था अणुन्विगा अक्खुमिया असभता रयणदीवदेवया एयमद्व नो आढति, णो परि० णो अवयवत्वति अणाढायमाणा अपरि० अणवयवत्वमाणा सेलएण जक्खेण सद्धिं लवणसमुद्रं मज्झं मज्झेण वीडयति) इस प्रकार वे माकंदी-दारक रयणा देवी के मुख से इस बात को सुन कर और उसे हृदय में अवधृत कर भयभीत नहीं हुए त्रस्त नहीं हुए उद्विग्न नहीं हुए क्षुब्ध नहीं हुए, सम्भ्रान्त नहीं हुए घबड़ाये नहीं-और न उन्होंने ने रयणा देवी के इस अर्थ को आदर की दृष्टि से देखा न उसे स्वीकार किया, और न उस तरफ लक्ष्य ही दिया । इस तरह उस के वचनों का अनादर करते हुए उन्हें स्वीकार नहीं करते हुए तथा उनकी ओर लक्ष्य नहीं देते हुए वे दोनों उस शैलक यक्ष के साथ लवणसमुद्र के बीच में चलते ही गये ।

(तएण सा रयणदीवदेवया ते मागदिय० जाहे णो सचाएति, षड्हिं पडिलोमेहिं य उवसग्गेहिं य चालित्तए वा खोभित्तए वा विप

अभीया अतत्था अणुन्विगा अक्खुमिया असभता रयणदीवदेवया एयमद्व नो आढति णो परि० णो अवयवत्वति अणाढायमाणा अपरि० अणवयवत्वमाणा सेलए जक्खेण सद्धिं लवणसमुद्रं मज्झं मज्झेण वीडयति)

माकंदी दारकाये रयणा देवीना भुजैथी आ प्रभावे सालागिने अने तेने हृदयमा धारण करीने लय पाव्या नडि त्रस्त थया नडि, उद्विग्न थया नडि क्षुब्ध थया नडि सम्भ्रात थया नडि, गलराया नडि अने तेओये रयणादेवीना अर्थने न तो सम्मानपूर्वक लेयो अने न तेनो स्वीकार क्यो ते तरफ तेओये सडज पण लक्ष्य आण्यु नडि लवण समुद्रनी वर्यो थडने तेओ ण ने शैलक यक्षनी साथे पोतानो पथ आपता ज गया

(तएण सा रयणदीवदेवया ते मागदिय० जाहे णो सचाएति, षड्हिं पडिलोमेहिं य उवसग्गेहिं य चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा लोभित्तए वा

તદા મધુરૈ ' સિંગારેહિય ' મૃદ્ધારૈઃ કામરાગોત્પાદકૈઃ ' કલ્પુણેહિય ' કરુણૈઃ
કરુણરસજનકૈશ્વોપસર્ગૈઃ ' ઉપસર્ગોઽપવત્તા યાવિ હોત્થા) ઉપસર્ગપિતુમ્ = ઉપસર્ગપિતુ મૃત્તા
ચાસ્પાતીન્ - હ મો દેવાનુપ્રિયો માકન્દિકદારકો ! યદિ સ્વલ્પ યુવાભ્યા મયા
સાર્દ્ધ ' હસિયાણિય ' હસિતાની ચ ' રમિયાણિય ' રતાનિ=રમણાનિ અક્ષાદિમિ-
ઘૂતાદિચેલનાનિ, ' લલિયાણિય ' લલિતાનિ ચ-ઈપ્સિતાનિ લીચ્યા મોજનાદિ-
રૂપાણિ ' કીલિયાણિય ' ક્રોડિતાનિ=જલાશ્વાદનાદિરૂપક્રોડનાનિ ' હિંદિયાણિય '

રિણામિત્તાણ વા લોમિત્તાણ વા તાહે મટુરેહિં સિંગારેહિં, કલ્પુણેહિં ય
ઉવસર્ગોહિં ય ઉવસર્ગોઽપવત્તા યાવિ હોત્થા) ઇસ તરહ જય વહ
રયણા દેવી ઉન માકદી દારકોં કો પ્રતિકૂલ અનેક ઉપસર્ગોં દ્વારા ચલો
યમાન કરને કે લિયે ક્ષુભિત કરને કે લિયે સમર્થ નહીં હો સકી તથ
ઉસને કામ રાગોત્પાદક, તથા કરુણારસ જનક ઉત્પાતોં દ્વારા ઉપદ્રવ
કરના પ્રારંભ કર દિયા । (હ મો માગદિયદારગા ! જહ્ણ તુઝમે હિં
દેવાણુપ્પિયા ! મણ સદ્ધિં હસિયાણિય રમિયાણિય લલિયાણિય
કીલિયાણિય, હિંદિયાણિય, મોહયાણિય ય તાહે ણ તુઝમે સન્વાર્તિ
અગ્ગેમાણા મમ વિપ્પજહાય સેલણ સદ્ધિં લવણમમુદ મજ્ઞ મજ્ઞે
ણ વીહવયહ તણ સા રયણદીવદેવયા જિણરવિલ્લયસ્સ મન ઓહિણા
આમોણ્હ, આમોણ્ત્તા એવ વયાસી) વહ કહને લગી અરે ઓ દેવાનુપ્રિય !
માકદી દારકોં । યદિ તુમ દોનોં ને મેરે સાથ હૈસી મજાક ક્રિયા હૈ,
કામ સુખોં કો મોગા હૈ, અથવા અક્ષાદિકોં દ્વારા ઘૂનાદિ ક્રીડાયેંકી
હૈ, સાથ ૨ બેઠકર ઇચ્છાનુસાર વિવિધ પ્રકાર કી મોજનાદિ કરને રૂપ

તાહે મહુરહિં સિંગારેહિં કલ્પુણેહિં ય ઉવસર્ગોહિં ય ઉવસર્ગોઽપવત્તા યાવિ હોત્થા)

રયણા દેવી માકદી દારકોને આ જાતના ધણા પ્રતિકૂળ ઉપસર્ગોથી વિચ

લિત કરવામા કે ક્ષુભિત કરવામા સમર્થ થઈ શકી નહીં ત્યારે તેણે કામરાગો

ઉત્પાદક તેમજ કરુણારસ જનક ઉત્પાતો વડે ઉપદ્રવો શરૂ કર્યા

(હ મો માગદિયદારગા ! જહ્ણ તુઝમે હિં દેવાણુપ્પિયા ! મણ સદ્ધિં હસિયાણિય રમિયા
ણિય લલિયાણીય કીલિયાણિય હિંદિયાણિય મોહયાણિય ય તાહે ણ તુ મે સન્વાર્તિ
અગ્ગેમાણા મમ વિપ્પજહાય સેલણ સદ્ધિં લવણમમુદ મજ્ઞ મજ્ઞેણ વીહવયહ તણ
સા રયણદીવદેવયા જિણરાવલ્લયસ્સ મમ ઓહિણા આમોણ્હ, આમોણ્ત્તા એવ વયાસી)

તે કહેવા લાગી કે હે દેવાનુપ્રિયો ! માકદી દારકો ! જો તમે બે મારી

સાથે હસી મજાક કરી છે, કામ સુખો ભોગવ્યા છે, અક્ષાદિજો વડે જુગાર
વગેરે ક્રીડાઓ કરી છે, સાથે સાથે બેમીને મનગમતી અનેક આહારો

હિન્ડિતાનિચ=ઉદ્યાનાદિપુ ભ્રમણાનિ 'મોહિયાણિય' મોહિતાનિ ચ=મોહનાનિ
કામરાગજનકદાવભાવાદીનિ કૃતાનિ 'તાહે' તદા-તાદૃશે સમયે પતાદશ સુખા
નુભવાવસ્થાયા સ્વલુ યુવા સર્ગાણિ=મયા સાર્દ્દ હસિતાદીનિ 'અણેગમાણા'
અગણય-તો=અનાદ્રિયમાણો 'મમ' મા નિરાયારા 'વિપ્પજદાય' વિપ્રહાય=પરિત્યજ્ય
શૈલકેન સાર્દ્દ લવણસમુદ્ર મમ્યમધ્યેન વ્યતિવ્રજથઃ=ગચ્છથ । તતઃ સ્વલુ પુનઃ સા
રત્નદ્વીપદેવતા જિનરક્ષિતસ્ય લઘુભ્રાતુઃ 'મણ' મનઃ=અન્તઃ કરગમ્ 'ઓહિણા'
અવધિના અવધિજ્ઞાનેન 'આભોણ' આભોગયતિ=પશ્યતિ આભોગયિત્વા=દૃષ્ટ્વા-
પ્રમવદત્-નિત્યમપિ ચ=પૂર્વમપિ સદૈવ ચ અહ જિનપાલિતસ્ય-તવજ્યેષ્ઠભ્રાતુઃ
અનિષ્ટા, અક્રાન્તા, અપ્રિયા અમનોજ્ઞા, અમનોમા=મનઃ પ્રતિહૂલાઽભવમ્, નિત્યં
ચ મમ જિનપાલિતઃ-અનિષ્ટઃ, અક્રાન્તઃ, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ, અમનોઽમ=મનઃ-
સ્વેદજનક આસીત્ । નિત્યમપિ ચ સ્વલુ અહ જિનરક્ષિતસ્ય તવ ઇષ્ટા યાવદ્ મનો
ઽમા, નિત્યમપિ ચ સ્વલુ મમ જિનરક્ષિતસ્ત્વમ્ ઇષ્ટો યાવદ્ મનોઽમ, યદિ સ્વલુ
યથા મા જિનપાલિતો રુદતી, ક્રન્દન્તી=શોક કુર્વાણા, 'તિપ્પમાણી' તેષમાનામ્=

લીલાઈ કી હૈં, જલાવગાહનાદિ રૂપ નાના પ્રકાર કી ચેષ્ટાઈ કી હૈં,
ઉદ્યાન આદિકોં મેં સાથ ૨ ભ્રમણ ક્રિયા હૈ, તથા કામ રાગ જનક દાવ
ભાવ આદિ ક્રિયાઈ કી હૈ તો ફિર ક્યોં અવ ડન સવ હસિતાદિ ચેષ્ટા-
ઓં કી ઉપેક્ષા કરકે તુમ દોનોં મુજે નિરાધાર છોડકર શૈલક કે સાથ
લવણ સમુદ્ર કે બીચ સે હોકર ચલે જા રહે હો । હસ પ્રકાર કહ કર ડસ
રચણા દેવી ને જિન રક્ષિત કે અન્તઃ કરણ કો અપને અવધિ જ્ઞાન કે
દ્વારા દેખા-દેખ કર વહ ફિર હસ તરહ કહને લગી-(ણિચ્ચપિ ય ણ
અહ જિણપાલિયસ્સ અણિટ્ઠા ૫, ણિચ્ચમમ જિણપાલિણ અણિટ્ઠે-નિચ્ચપિ
ય ણ અહ જિણરક્ખિયસ્સ ઇટ્ઠા, નિચ્ચપિ ણ અહ જિણરક્ખિય ઇટ્ઠે ૫,
જટ્ટણ મમ જિણપાલિણ રોચમાણી, કદ્દહાણી સોચમાણી તિપ્પમાણી વિલ
ચમાણી ણોવચક્ખવટ, કિણ તુમ જિણરક્ખિયા । મમ રોચમાણિ જાવ

વગેરે રૂપ લીલાઓ કરી છે, જલાવગાહન વગેરેની ઘણી જાતની ચેા ।ઓ કરી
છે સાથે સાથે ઉદ્યાન વગેરેમા કર્યા છે તેમજ કામરાગજનક હાવલાવ વગેરેની
ક્રિયાઓ કરી છે ત્યારે હવે શુ ડામ તે ણમ્રી હસિતાદિ ચેષ્ટાઓની ઉપેક્ષા
કરીને ૨ ને એકની નિરાધાર બતાવીને શૈલક યક્ષની સાથે લવણસમુદ્રની
વચ્ચે થાને જઈ ગયા છે । આ પ્રમાણે જહીને તે રચણા દેવીએ જીનરક્ષિતના
મનને પોતાના અવધિજ્ઞાન વડે જોયુ અને જોધને તે કરી કહેના લાગી કે-

(ણિચ્ચપિ ય ણ અહ જિણપાલિયસ્સ અણિટ્ઠા ૫ ણિચ્ચમમ જિણપાલિણ
અણિટ્ઠે નિચ્ચપિ ય ણ અહ જિણરક્ખિયસ્સ ઇટ્ઠા નિચ્ચપિ ય ણ મમ જિણરક્ખિય

विरहजनितार्तम्यान कुर्याणा, विप्यन्ती=विलाप कुर्याणा 'णावयक्खसि' न पश्यति
तथा किं खलु त्वमपि हे जिनरक्षित ! मां रुदतीं यावद् विलपन्ती 'णावयक्खसि'
न पश्यसि ' एव सा रत्नद्वीपदेवता सोषान्मम वदति स्मेति ।

ततः खलु तदनन्तरम्—अथ प्रयत्नितमानस जिनरक्षित विज्ञाय सा यद्वदति
तद् गाथाएकेनाह—

णावयक्खसि) यह तो निश्चित है कि मैं पहिले से जिनपालित के लिये
अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ एवं अमनोम-मनः प्रतिकूलवह
रही हूँ और जिनपालित भी मेरे लिये सदा अनिष्ट' अकान्त आदि रूप
घना रहा है, मैं तो जिन रक्षित के लिये ही सदा इष्ट आदि रूप रही
हूँ और जिनरक्षित मेरे लिये इष्ट आदि रूप सदा रहा है तो हे जिन
रक्षित ! यदि मुझ रोती हुई आक्रन्दन करती हुई, शोक करती हुई
विरह जनित आर्तध्यान करती हुई और विलाप करती हुई की और
जिन पालित नहीं देखता है तो क्या तुम भी मुझ रोती हुई यावत्
विलाप करती हुई की ओर नहीं देखते हो (तएण सा पवररयण-
दीवस्स देवया ओहिणा जिणरक्खियस्स मण नाऊण वधनिमित्त
उवरिं मागदिय दारगाण दोण्हपि ॥ १ ॥) इस तरह उस रयणादेवी
ने ताने मारते हुए जब कहा तब जिनरक्षित का मन चलायमान हो
गया । इस स्थिति में जो कुछ उस ने कहा वह मूत्रकार आठ गाथाओं

इदृष्टे ५, जइण मम जिणपालिए रोयमाणी, कदमाणी, सोयमाणी तिप्पमाणी,
विलवमाणी, णावयक्खसि, किण्ण तुम जिणराक्खिया ! मम रोयमणिं जाव णावयक्खसि)

એ વાત તો ચોક્કસ પણે કહી શકાય કે હું, શરૂઆતથી જ અનપાલિતને
માટે હમેશા અનિષ્ટ, અકાત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ, અને અમનોમ-મનને પ્રતિ
ક્રૂણ જ બની રહુ છું અને અનપાલિત પણ મારા માટે હમેશા અનિષ્ટ,
અકાત વગેરે જ રહ્યા છે હું તો અનરક્ષિતને માટે હમેશા ઇષ્ટ વગેરે રૂપમાં
રહી છું અને અનરક્ષિત મારે માટે ઇષ્ટ વગેરે રૂપમાં સદા રહી છે ત્યારે
હે અનરક્ષિત ! મને જો રડતી, આક્રંદ કરતી, શોક કરતી, વિરહમાં આર્તધ્યાન
કરતી અને આ રીતે વિલાપ કરતી કે અનપાલિત મારી સામુ જોતા નથી તો
શું તમે પણ મને રડતી યાવત્ વિલાપ કરતી જોતા નથી

(તएण सा पवररयणदीवस्स देवया ओहिणा ३ जिणरक्खियमण ना
ऊण वधनिमित्त उवरिं मागदिय दारगाण दोण्हपि “ १ ” ॥)

રયણા દેવીએ એ પ્રમાણે કટાક્ષ યુક્ત વચનો કહ્યા ત્યારે અનરક્ષિતનું
મન ડગમગવા લાગ્યું આવી પરિસ્થિતિમાં જે કંઈ તેણે કહ્યું તે નાર આક

सा प्रवर रत्नद्वीपस्य देवताऽवधिना तु जिनरक्षितस्य मनः । ज्ञात्वा वधनि-
मित्तम्=मारणार्थम् उपरि माकन्दिरुदारकयो द्वयोरपि ॥ १ ॥ ' दोसकलिया '
द्वेषकलिता=द्वेषयुक्ता ' सलीलय ' सलील=सलीड ' नानाविहचुण्णवासमीस '
नानाविधचूर्णवासमिश्र नानाविधाः चूर्णवासा=चूर्णगन्धाः-पिष्टगन्धद्रव्याणि,
तैर्मिश्रा=युक्ता दिव्याम् । घ्राणमनोनिवृत्तिकरां = प्राणमनोस्तृप्तिकरा तादृशी
सर्वकुसुरभिकुसुमवृष्टि=सर्वकृतुममुत्पन्नसुगन्धितपुष्पवृष्टि ' पमुचमाणी ' प्रमुञ्चन्ती
॥ २ ॥ नानामणिकनकरत्नघण्टिकाकिङ्किणीनूपुरमेखलाभूषणरवेण, तत्र-
नानाविधमणिकनकरत्नाना घण्टिकाः, किङ्किण्य.=शुद्धघण्टिका । नूपुर-चरण-
भूषणम्, मेखलाभूषण=कटिभूषणम्, तेषा रवेण=शब्देन मञ्जुलवनिना दिशो
विदिशश्च पूरयन्ती=सशब्द कुर्वन्ती वचनमिदं=वक्ष्यमाण व्रीति सा सकलुपा=

द्वारा कहते हैं-वह प्रवर रत्न द्वीप की देवता अवधिज्ञान से जिन रक्षित
के मन को जान कर मारने के लिये उन दोनों माकदी दारकों के ऊपर
(दोस कलिया) विद्वेषवती बन गई (सलीलय णाणाविहचुण्णवास
मीस दिव्य ! घ्राणमणनिवृद्धकर सव्योउयसुरभिकुसुमवृष्टिपमुच
माणी २) फिर उस ने उन के ऊपर बड़ी भारी लीला के साथ नाना
विधचूर्णवास मिश्रित एवं घ्राण और मन को तृप्ति कारक ऐसी दिव्य
सर्वकृतु सवन्धी सुरभित कुसुमों की वृष्टि की । (णाणा मणिकणगर-
यण घटियखिखिणिगेऊर मेहलमूसणरवेण ' दिसाओ विदिसाओ
पूरयती वयणमिण वेति सा साकलुसाइ) इस के बाद नाना प्रकार के
मणियोंकी, सुवर्णकी एवं रत्नोंकी घटिकाओंके क्षुद्र घटिकाओंके नूपुरों
के कटिभूषण के शब्द से-मञ्जुल आवाज से दिशाओ एवं विदिशाओं

गाथाओं वडे डडे छे-ते प्रवर रत्नद्वीपनी देवता अवविज्ञानथी अनरक्षितना
भननी बात समझने भारी नाभवाना विचारथी तेओ भने माकदी दारकों
ऊपर (दोसकलिया) द्वेष धरावती थई गई (सलीलय णाणाविहचुण्णवास-
दिव्य ! घ्राणमणनिवृद्धकर सव्योउय सुरभिकुसुमवृष्टि पमुचमाणी २) त्पार पछी
तेछे तेओना ऊपर ल रे लीलाओनी साथे धएली जतना सुगन्धित वृष्टिओने नाड
तेमज भनने तृप्त करे तेवा द्रव्येओ अने जधी कृतुओना सुगन्धित पु पोनी वर्षा करी

(णाणामणिकणगरयणघटियखिखिणिगेऊरमेहलमूसणरवेण । दिमाओ विदि-
साओ पूरयती वयणमिण वेति सा साकलुसाइ)

त्पार पछ धएली जतना मण्णिओनी, सोनानी अने रत्नोनी घटडीओना,
भूषरीओना, आभरेना, डहोराना शब्दधी मञ्जुल अवजधी दिशाओ तेमज

सपापा ॥ ३ ॥ तथाहि-दोत्र ! = हे सुग्ध !, वसुल = हे सुकुमार ! गोल = हे कठोर !
 हे नाथ ! दयित ! = हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण ! हे कान्त ! हे स्वामिन् ! हे
 निर्घृण ! हे स्नेहरहित !, निच्छक ! = हे अवसरज्ञानशून्य ! 'थिण्ण !' हे स्त्यान =
 हे निर्दयहृदय ! 'णिक्खिन्' निक्ख ! = हे निष्कृप ! 'अकयण्णुय' अकृतज्ञ !
 हे कृतोपकारानभिज्ञ ! हे कृतघ्न ! इत्यर्थः 'सिद्धिलभाव' शिथिलभाव ! = हे मन्द-
 भाव ! 'निल्लज्ज' हे निर्लज्ज ! 'लुक्ख' रक्ष ! = हे प्रेमशून्य ! 'अकल्लुण'
 अकरुण ! = हे निर्दय ! जिनरक्षित ! मम 'हिययरक्खगा' हृदयरक्षक ! = हे प्राण
 रक्षक ! ॥ ४ ॥ 'न हु जुज्जसि' न व युज्यसे नैवार्हसि न योग्योऽसि त्वम् एक-
 काम्-अनाया = निराधाराम्, अवन्धवाम् = अपहाया तव 'चलण ओवायकारिय'
 चरणवपातकारिका = वरणसेविका = नाम् 'उज्झिउ = त्यक्तुम्, कयम्भूताम् ? 'अहण्ण'

को वाचालित करती हुई उस पापिनी ने इस प्रकार कहा- (होलवसुल-
 गोलणाह, दइत, प्रिय, रमण, कत सामिय, णिग्घण णिच्छक, थिण्ण
 णिक्खिन् अकयण्णुयसिद्धिलभाव निल्लज्ज-लुक्ख, अकल्लुण जिणक्खिय
 मज्झ हिययरक्खगा ४) होल हे सुग्ध ! वसुल-हे सुकुमार ! गोल-हे
 कठोर ! हे नाथ ! दयित-हे दयालों ! हे प्रिय ! हे रमण, हे कान्त ! हे
 स्वामिन् ! हे निर्घृण-स्नेहरहित ! हे निच्छक-अवसरज्ञान शून्य ! थिण्ण
 हे निर्दयहृ य ! हे निष्कृप ! हे अकृतज्ञ कृतोपकारानभिज्ञ कृतघ्न-हे
 शिथिल भाव ! हे निर्लज्ज ! हे रक्ष-प्रेमशून्य, हे अकरुण-निर्दय ! जिन
 रक्षित ! तुम ही मेरे प्राण रक्षक हो अतः- (णहुज्जसि एकिय अणाह
 अवन्धव तुज्झ चलण ओवाय कारिय उज्झिउ अहण्ण गुणसकर ! अह
 तुमे विहणा ण समत्था वि जीविउ खण पि ५) तुम्हे मुझ चरण सेविका

विदिशाओने भुणरित करती ते पापीणीओ आ प्रभाणे कहु—

(होलवसुलगोलणाहदइतप्रिय, रयत, कत, सामिय, णिग्घण णिच्छक ! थिण्ण णिक्खिन्
 अकयण्णुय सिद्धिलभाव निलज्ज लुक्ख अकल्लुण जिणरक्खिय मज्झ हिययरक्खगा ४)

होल-हे सुग्ध !, वसुल-हे सुकुमार !, गोल-हे कठोर !, हे नाथ !,
 दयित-हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण ! हे कान्त ! हे स्वामीन् ! हे निर्घृण !
 स्नेहरहित ! हे निच्छक-अवसर ज्ञान शून्य ! थिण्ण-हे निर्दय हृदय ! हे
 निष्कृप ! हे अकृतज्ञ, करेला उपकारोने नहि माननारा, कृतघ्न-हे शिथिल
 भाव ! हे निर्लज्ज ! हे रक्ष ! हे प्रेमशून्य, हे अकरुण-निर्दय ! अनरक्षित !
 भारा प्राण रक्षक तमे न हो ओठला भाटे—

(ण हुज्जसि एकिय अणाह अवधर तुज्झ चलणओवायकारिय उज्झिउ
 अहण्ण गुणसकर ! अह तुमे विहणा ण समत्था वि जीविउ खणपिय)

अन्याम्=अपूर्णमनोरथाम् । ' गुणसकर ' गुणसङ्कर=हे गुणसागर ! अह ' तुमे
विहगा ' त्वयोर्विहीना=त्वद्वियुक्ता न समर्थाऽपि जीवितु क्षणमपि-त्वा विना
क्षणमपि न जीविष्यामीत्यर्थः ॥ ५ ॥ पश्य, अयुनैव अहम् ' इमस्स उ ' अस्य तु
' अणेगझसमगरविनिहसावयसयाकुलुगिठस्स ' अनेकज्ञपमकरवित्रियश्चापदशवा
कुलगृहस्य अनेके झपाः=मत्स्याः, मकराः=ग्राहाः, वित्रियश्चापदा=नानाविध-
हिंसकजलचरजन्तयः, तेषां शतानि, तैः आकुल=व्याप्त गृहम्=अन्तर्भागो यस्य स
तस्य रत्नाकरस्य=लवणसमुद्रस्य म ये आत्मान ' वहेमि ' वन्धि=नाशयामि तत्र
पुरतः, अत हे जिनरक्षित ! त्वम् एहि=आगच्छ ' नियत्ताहि ' निपत्तस्व पुरतो-
गमनात्, यद्यसि त्व केनापि कारणेन कुपित, तर्हि ' खमाहि ' क्षमस्व ' एका
वराह ' एकापरायम्-अज्ञानवशात्सज्जातमेकमपराध मे=मम ॥ ६ ॥ ' तुज्झय ' त्व

को असहाय निराधार अकेली छोड़ना योग्य नहीं है । मेरे अभीतक
कोई भी मनोरथ पूर्ण नहीं हुए हैं । हे गुणसागर ! मैं तुम्हारे बिना १
एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकती हूँ । (इमस्स ३ अणेगझसमगर
विविह सोवय सयाउलघरस्स । रयणागरस्स मज्झे अप्पाण वहेमि तुज्झ
पुरओएहिं नियत्ताहि जइसि कुविओ खमाहि एकावराहमे ६) देखो
मैं इसी समय अनेक प्रकार की-सैकड़ों मछलियों से मगरो से विविध
हिंसक जलचर जन्तुओं से व्याप्त हुए अन्तर्भाग वाले इस समुद्रके बीच
में तुम्हारे देखते २ अपने आपको डाल देती हूँ-अतः हे जिनरक्षिततुम
आओ-आगे मत बढ़ो, तुम यदि किसी कारण वश मेरे ऊपर कुपित
हो गये हो-तो मेरे अज्ञानवश हुए उस अपराधको क्षमा करो । (तुज्झ

भारा जेवी अरखोनी दानाने असहाय, निराधार अने अकेली भूडीने
जता रहेवु तभारा जेवाने भाटे योग्य कही शक्य नहिं हुअ भारी अके पण
धन्य पूरी थर्छ नहीं हे शुणु भागर ! तभारा वगर अके क्षण पण हु अवी
शकु तेम नहीं

(इमस्स उ अणेगझसमगरविनिहसावयसयाउलघरस्स । रयणागरस्स मज्झे
अप्पाण वहेमि तुज्झ पुरओएहिं नियत्ताहि जइसि कुविओ खमाहि एकावराहमे ६)

बुओ, हु अत्यारे न धणी जतनी से कडो भाछतीओ, मगरो, धणी
जतना हिंसक जलचर प्राणीओथी युक्त आ समुद्री वन्ये तभारी सामे न
हूणी भर हु भाटे हे अनरक्षित तमे आवो, आगण जशो नहिं गमे ते
कारणथी जे तमे भारा उपर नाराज थर्छ गया हो तो भारा अज्ञानथी थयेली
बूढोने तमे भाइ करे

सपापा ॥ ३ ॥ तथाहि-होल = हे मुग्ध !, वसुल = हे सुकुमार ! गोल = हे कठोर !
 हे नाथ ! दयित = हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण ! हे कान्त ! हे स्वामिन् ! हे
 निर्घृण ! हे स्नेहरहित !, निच्छक = हे अवसरज्ञानशून्य ! 'थिण' ! हे स्त्यान =
 हे निर्दयहृदय ! 'णिक्खि' ! नि क्ख = हे निष्कृप ! 'अकयण्णुय' ! अकृतज्ञ !
 हे कृतोपकारानभिज्ञ ! हे कृतघ्न ! इत्यर्थः 'सिद्धिलभाव' ! शिथिलभाव ! = हे मन्द
 भाव ! 'निल्लज्ज' ! हे निर्लज्ज ! 'लुक्ख' ! रुक्ख = हे प्रेमशून्य ! 'अकलुण' !
 अकरुण ! = हे निर्दय ! जिनरक्षित ! मम 'हिययरक्खगा' ! हृदयरक्षक ! = हे प्राण
 रक्षक ! ॥ ४ ॥ 'न हु जुज्जसि' ! न व युज्यसे नैवार्हसि न योग्योऽसि त्वम् एक-
 काम्-अनाया = निराधाराम्, अवान्धवाम् = अपहाया तव 'चलण ओवायकारिय' !
 चरणवपातकारिण = त्रणसेविका = नाम् 'उज्झिउ = त्यक्तुम्, कथम्भूताम् ? 'अहण्ण'

को वाचालित करती हुई उस पापिनी ने इस प्रकार कहा- (होलवसुल
 गोलणाह, दइत, प्रिय, रमण, कत सामिय, थिण्ण थिक्खि, अकयण्णुयसिद्धिलभाव निल्लज्ज-लुक्ख, अकलुण जिणक्खिय
 मज्झ हिययरक्खगा ४) होल हे मुग्ध ! वसुल-हे सुकुमार ! गोल-हे
 कठोर ! हे नाथ ! दयित-हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण, हे कान्त ! हे
 स्वामिन् ! हे निर्घृण-स्नेहरहित ! हे निच्छक-अवसरज्ञान शून्य ! थिण्ण
 हे निर्दयहृदय ! हे निष्कृप ! हे अकृतज्ञ कृतोपकारानभिज्ञ कृतघ्न-हे
 शिथिल भाव ! हे निर्लज्ज ! हे रुक्ख-प्रेमशून्य, हे अकरुण-निर्दय ! जिन
 रक्षित ! तुम ही मेरे प्राण रक्षक हो अतः- (नहुज्जसि एकिय अणाह
 अवधव तुज्ज चलण ओवाय कारिय उज्झिउ अहण्ण गुणसकर ! अह
 तुमे विहणा ण समत्था वि जीविउ खण पि ५) तुम्हें मुझ चरण सेविका

विदिशाओने सुणरित करती ते पापीणीओ आ प्रभाणे क्खु—

(होलवसुलगोलणाहदइतप्रिय, रयत, कत, सामिय, थिण्ण थिक्खि, अकयण्णुय सिद्धिलभाव निल्लज्ज लुक्ख अकलुण जिणक्खिय मज्झ हिययरक्खगा ४)

होल-हे मुग्ध !, वसुल-हे सुकुमार !, गोल-हे कठोर !, हे नाथ !,
 दयित-हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण ! हे कान्त ! हे स्वामिन् ! हे निर्घृण !
 स्नेहरहित ! हे निच्छक-अवसर ज्ञान शून्य ! थिण्ण-हे निर्दय हृदय ! हे
 निष्कृप ! हे अकृतज्ञ, कहेला उपकाशेने नहि माननारा, कृतघ्न-हे शिथिल
 भाव ! हे निर्लज्ज ! हे रुक्ख ! हे प्रेमशून्य, हे अकरुण-निर्दय ! अनरक्षित !
 भारा प्राण रक्षक तमे न छो ओटला भाटे—

(न हुज्जसि एक्किय अणाह अवधव तुज्ज चलण ओवायकारिय उज्झिउ
 अहण्ण गुणसकर ! अहं तुमे विहणा ण समत्था वि जीविउ खणपिय)

एवम्=अनेन पूर्वोक्तप्रकारेण 'सप्पणयसरलमहुराइ' सप्पणयसरलमधुरागि-स्नेह-
सहित सुखार्थबोधकानि मधुरागि च पुनः पुनः 'कलुगाइ' करुगानि=करुगरम-
जनकानि 'वयणाइ' वचनानि 'जपमाणी' जल्पन्ती सा पावा 'मागओ'
मार्गतः मार्गे इत्यर्थ 'समण्णेइ' समन्वेति=अश्वाद्गच्छति 'पावहियया' पाप
हृदया=कुटिलान्त करुणा का रत्नद्वीपदेवता ॥ ७ ॥

तत खलु स जिनरक्षितश्चलमनास्तनैव भूषणरवेण कर्मसुखदेन मनोहरेण, तथा
तैश्चैव सप्पणयसरसमधुरभणितैः सञ्जाताद्विगुणरागः=कामरागाकृष्ट सन् रत्नद्वीप-
स्या देवतायास्तस्याः सुन्दरस्तननयनवदनकरचरणनयनलावण्यरूपयौवनप्रिय
च दिव्याम्, तथा 'सरभसउवगूहियाइ' सरभसोऽवगूहितानि=ससम्भ्रनकृताश्चिह्न-
नानि, यानि च 'विब्बोयविलसियागिय' विब्बोय विलसितानि=विब्बोय=

सुखकमल को देखलूगी (एव सप्पणयसरलमहुराइ पुणो २ कलुगाइ
वयणाइ जपमाणी सा पावमगओ समण्णेइ, पावहियया ८) इस प्रकार
-कुटिलान्तकरणवाली वह रत्नद्वीपदेवता चार २ स्नेह सहित, सुखार्थ
बोधक, मधुर एव करुणारसजनक वचनो को बोलती हुई मार्ग में उस-
के पीछे २ चलने लगी । (तएण से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूष
णरवेण कणसुहमणोहरेण तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं
सजाय विणराए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुन्दरथण नहण वयण कर
चरणनयणलावन्नरूपजोव्वणसिरिं च दिव्व सरभसउवगूहियाइ विब्बो
य विलसियाणि० य विहसिय सकडक्खदिट्ठि निस्ससिय मलिय उवल्लिय
ठियगमण णयखिज्जिय पासाइयाणि य, सरमाणे रागमोहियमई अवसे
कम्मवसागए अवयक्खति मग्गतो सविलिय) इसके बाद कर्णेन्द्रिय को

(एव सप्पणयसरलमहुराइ पुणो २ कलुगाइ वयणाइ जपमाणी सा पाव
मगओ समण्णेइ पावहियया ८)

आ रीते कुटिल हृदयवाणी ते २ नद्वीप देवता बारबार स्नेहमयित,
सुखार्थ बोधक मधुर अने कर्ण-रसजनक वचनो उछेती भागभा तेने अनु
सरती आलस्य लागी

(तएण से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूषणरवेण कर्मसुखमणोहरेण
तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं सजायविणराए रयणदीवस्स देवयाए
तीसे सुन्दरथणनहण वयणकर-चरण-नयण-लावन्नरूप जाव्व णसिरिं च दिव्व
सरभसउवगूहियाइ विब्बोय विलसियाणि० य विहसिय सकडक्ख दिट्ठि निस्स-
सिय मलिय उवल्लिय ठियगमण णयखिज्जिय पासाइयाणि य सरमाणे
रागमोहियमई अवसे कम्मवसागए अवयक्खति मग्गतो सविलिय)

ચ ' વિગયઘગમિઠસમિમડલાગાર ' વિગયઘનવિમલશશિમળ્લાકારમ્-વિગયઘર્ન=મેઘરહિતમ્ અતઃવ વિમલ=નિર્મલ શશિમળ્લ=ચન્દ્રમળ્લ, તસ્યેવાકાર.= આકૃતર્યત્ય તત્તયાક્તમ્, સસ્તિરીય ' સત્રીક=શોભાસમ્પન્નમ્, ' સારયનવકમલ કુમુય કુવલયવિમલદલનિગરસરિસનિભનયણ' શારદનવકમલકુમુદકુવલય વિમલદલ નિકરસદશનિભનમનમ્ તત્ર શારદ=શરતકાલસમુત્પન્ન યન્નવ નૂતન કમલ=સૂર્ય-વિકાશિપદ્મ કુવલય=ચન્દ્રવિકાશિપદ્મ, તેષા વિમલદલનિકરઃ = નિર્મલદલસમૂહઃ, તત્સદ્દશે=તત્તુલ્યે નિમે-નિતરા દીપ્તિયુક્તે ચ નયને=નેત્રે યસ્મિન્ તત્ તથોક્તમ્, એતાદૃશશોભાસમ્પન્ન ' વયણ ' વદન=મુખમ્, ' પિવાસાગયાણ' પિવાસાગતાયા = દર્શનોત્સુક્યેન સમાગતાયાઃ શ્રદ્ધા=ચાઞ્છા મે=મમ ' પેચ્છિઝ ' પ્રેક્ષિતુ=ચિત્તો કિતુ વર્ત્તતે ' જે ' યસ્માત્ ' અવલોહિ ' અવગ્રોહય=પદ્ય ' તા ' તાવત્ ' રૂઝી મમ ' રૂઝી મમ=મમાભિમુખ ' ણાહ ' હે નાય ! ' જા ' યાવત્=યાવત્કાલ તે=તવ ' પેચ્છામિ ' પ્રેક્ષે=પદ્યામિ ' વયણકમલ ' વદનકમલ=મુખકમલમ્, ॥ ૭ ॥

ય વિગય ઘણ-વિમલ-સસિમડલાગાર સસ્તિરીય સારય નવકમલ કુમુય કુવલય-વિમલદલ-નિકરસરિસ-નિભનયણ વયણ પિવાસાગયાણ સદ્ધા મે પેચ્છિઝ જે અવગ્રોહિ તાહઓ મમ ણાહ જા તે પેચ્છામિ વયણ કમલ ૭) દર્શનની ઉત્સુકતા સે આઈ હુઈ મેરીઈચ્છા તુમ્હારે મુખ કો દેખવેને કે લિયે હો રહી હૈ । તુમ્હારા વહ મુખ મેઘ રહિત નિર્મલ ચન્દ્રમળ્લ કે સમાન આકૃતિ ચાલા એવ વિશિષ્ટ શોભા સપન્ન હૈ । રૂઝી શરદકાલીન નવીન કમલ, કુમુદ, એવ કુવલય કે દલનિકર કે સમાન અત્યન્ત દીપ્તિ શાલી હૈ । સૂર્યવિકાશીપદ્મ કા નામ કમલ, ચન્દ્ર વિકાશી પદ્મ કા નામ કુવલય હૈ । રૂઝીલિયે હે નાય ! રૂઝી તરફ તુમ મેરી ઓર દેખો જવતક તુમ મેરી ઓર દેખતે રહોગે-તવતક મે તુમ્હારે

(તુજ્ઞ ય વિગય ઘગવિમલસસિમડલાગાર સસ્તિરીય સારય નવ કમલ કુમુય-કુવલય-વિમલદલ-નિકર-સરિસ-નિભનયણ વયણ પિવાસા ગયાણ સદ્ધામે પેચ્છિઝ જે અવગ્રોહિ તાહઓ મમ ણાહ તે પેચ્છામિ વયણકમલ ૭)

દર્શનના ઉમળકાથી પ્રેરાઈને આવેલી મારી ઈચ્છા તમારા મુખને જોવાની થઈ રહી છે તમારૂં મુખ મેઘ રહિત નિમળ ચન્દ્રમળ્લની જેમ આકારવાળું અને સનિશેષ સૌંદર્ય યુક્ત છે અને નેત્રો શરદ-ઋતુના નવીન ઉમળ, કુમુદ અને કુવલયના દલનિકરની જેમ ઘણા દુતિમાન છે સૂર્ય વિકાશી પદ્મનું નામ કમલ, ચન્દ્ર વિકાશી પદ્મનું નામ કુવલય છે એટલા માટે હે નાય ! તમે મારી તરફ જુઓ જ્યાં સુધી તમે મારી તરફ જોતા રહેશો ત્યાં સુધી હું પણ તમારૂં મુખકમળ જોઈ રહશું

एवम्=अनेन पूर्वोक्तप्रकारेण 'सप्पणयसरलमहुराइ' सप्पणयसरलमधुराणि-स्नेह-
सहित सुखार्थबोधकानि मधुराणि च पुनः पुनः 'कलुगाइ' करुणानि=करुणरस-
जनकानि 'वयणाइ' वचनानि 'जपमाणी' जल्पन्ती सा पावा 'मग्गओ'
मार्गतः मार्गे इत्यर्थ 'समण्णेइ' समन्वेति=अश्वाद्गच्छति 'पावहियया' पाप
हृदया=कुटिलान्त करणा का रत्नद्वीपदेवता ॥ ७ ॥

तत खलु स जिजरक्षितश्चलमनास्तनैव भूषणरवेण कर्मसुखदेन मनोहरेण, तथा
तैश्चैव सप्पणयसरसमधुरभणितैः सञ्जाताद्विगुणरागः=रामरागाकृष्ट सन् रत्नद्वीप-
स्या देवतायास्तस्या, सुन्दरस्तनजघनवदनकरचरणनयनलावण्यरूपयौवनप्रिय
च दिव्याम्, तथा 'सरभसउवगूहियाइ' सरभसोवगूहितानि=ससम्भ्रनकृताञ्ज-
नानि, यानि च 'विव्वोयविलसियाणिय' विव्वोय विलसितानि=विव्वोय=

सुखकमल को देखलूगी (एव सप्पणयसरलमहुराइ पुणो २ कलुगाइ
वयणाइ जपमाणी सा पावमग्गओ समण्णेइ, पावहियया ८) इस प्रकार
-कुटिलान्तकरणवाली वह रत्नद्वीपदेवता बार २ स्नेह सहित, सुखार्थ
बोधक, मधुर एव करुणारसजनक वचनों को बोलती हुई मार्ग में उस-
के पीछे २ चलने लगी । (तएण से जिजरक्षिए चलमणे तेणेव भूस
णरवेण वणसुहमणोहरेण तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं
सजाय विणराए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुन्दरथण जहण वयण कर-
चरणनयणलावन्नरूपजोव्वणसिरिं च दिव्व सरभसउवगूहियाइ विव्वो
य विलसियाणि० य विहसिय सकडक्खदिट्ठि निस्ससिय मलिय उवल्लिय
ठियगमण पणयखिज्जिय पासाइयाणि य, सरमाणे रागमोहियमई अवसे
कम्मवसगए अवयक्खति मग्गतो सवल्लिय) इसके बाद कर्णेन्द्रिय को

(एव सप्पणयसरलमहुराइ पुणो २ कलुगाइ वयणाइ जपमाणी सा पाव
मग्गओ समण्णेइ पावहियया ८)

आ रीते कुटिल हू यमाणी ते २ नद्वीप देवता बारबार स्नेहमयित,
सुखार्थ बोधक मधुर अने कइया रसजनक वचनो उडैती मार्गमा तेने अनु
सरती आलना लागी

(तएण से जिजरक्षिए चलमणे तेणेव भूषणरवेण कर्मसुखमणोहरेण
तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं सजायविणराए रयणदीवस्स देवयाए
तीसे सुन्दरथणजहण वयणकर-चरण-नयण-लावन्नरूप जाव्व णसिरिं च दिव्व
सरभसउवगूहियाइ विव्वोय विलसियाणि० य विहसिय सकडक्ख दिट्ठि निस्स-
सिय मलिय उवल्लिय ठियगमण पणयखिज्जिय पासाइयाणि य सरमाणे
रागमोहियमई अवसे कम्मवसगए अवयक्खति मग्गतो सवल्लिय)

સ્ત્રીચેષ્ટા વિશેષાઃ, ત્રિલસિતાનિ=નેત્રવિકારાદિ લક્ષણાનિ ચ 'વિદ્યમિય મક્રડકાવ
દિદ્ધિનિરસસિયમલિય ઉત્તલ્લિયઠિયગમ્પણયણયલિજિયપાસાદ્યાણિ ય' વિદ્યસિત
સકટાક્ષદૃષ્ટિનિઃ શ્વસિતમન્તિ પન્તિસ્થિતગમનપ્રગયલિમિત પ્રસાદિતાનિ ચ-
વિદ્યસિતાનિ=હાસ્યાનિ, સકટાક્ષદૃષ્ટયઃ=સરિમારચિત્તોરનાનિ, નિઃ શ્વસિત=
નિઃ શ્વાસમોચનમ્, મલિતં=પુરુષામિલપિતમર્દનમ્, ઉત્તલ્લિતાનિ=ક્રીડાવિશેષ
રૂપાણિ, સ્થિતમ્=ભવનનિવસનાદિનમ્, ગમન=હસગત્યાસશ્ચરણમ્, પ્રગય=સ્નેહ,
વચનમ્, લિસન=રામકલહઃ, પ્રસાદિત=પ્રસન્નતારૂપમ્, એતાનિ સર્વાણિ ચ 'સર-
માણે', સ્મરન્=પુનઃ પુનઃ સ્મૃતિપથમાનયન્ 'રાયમોદિયમર્દ' રાગમોદિતમતિ.=
કામરાગમૂર્ચિહૃત્તમતિ', 'અવસે' અવશ=વિવશ કામપરાધીન' 'વસ્મવસગણ'
વર્મવશગત=વર્મગતિપરવશઃ સન્ અસૌ જિનરક્ષિતસ્તા 'અવયવસ્વઙ્' પશ્યતિ
'મગ્ગઓ' માર્ગતઃ પૃષ્ઠત 'સવિલિય' સત્રીડ=સલજ્જ દૃષ્ટવાનિત્યર્થ ।

સુરૂપ દેને વાળે ઔર મન કો દરણ કરને વાળે ઉન્હીં ભૂષણો કે શબ્દોં સે
તથા ઉન્હી સપ્રણય સરલ મધુર ભાષણો સે जिसका रागभाव क्षीणुणित
हो गया है ऐसा वह जिनरक्षित चंचल मनवाला बन गया । सो उस
रघुणादेवी के दोनों सुन्दरस्तनों की दोनों जघनो की, वदन की दोनों
करों की दोनो चरणों की, लावण्य की, रूप एव यौवन की दिव्य श्री
का तथा उसके ससभ्रमकृत आलिङ्गनों का, विव्धोक तथा विलासो का,
हास्य का, कटाक्षयुक्तदृष्टि विक्षेप का श्वासमोचन का, पुरुषाभिलषित
मर्दन का, क्रीडा विशेषरूप उपललितो का भवनादिको मे निवास करने
आदि का उसकी हसकी चालके समान गति का, उसके प्रणयवचनो
का, काम कलह का, उसकी प्रसन्नता का बार २ स्मरण करता हुआ वह
काम राग से मोहित मतिगाला बन गया । इस तरह काम से पराधीन

ત્યાર પછી કાનેને ગમતા અને મનને આકષનારા ઘરેણાઓના શબ્દોથી
તેમજ પ્રણયના સરળ મધુર વચનોથી જેનો રાગ ભાવ બમણો વધી ગયો છે
એવો તે જિનરક્ષિત ચચળ મનવાળો થઈ ગયો । તે રઘુના દેવીના બંને સુદર
સ્તનોનું, જઘનોનું, વદનનું બંને હાથોનું, બંને ચણોનું, લાવણ્યનું રૂપ તેમજ
યૌવનનું, વિવશીનું, તેના સમભ્રમકૃત આલિંગનોનું, વિવ્ધોકનું વિલાસોનું,
હાસ્યનું, કટાક્ષયુક્ત દૃષ્ટિ વિક્ષેપનું, શ્વાસ મોચનનું, પુરુષાભિલષિત મર્દનનું,
ક્રીડા વિશેષ રૂપ ઉપલલિતોનું ભવનો વગેરેમા રહેવા કરવાનું તેની હસ જેવી
ગતિનું, તેના પ્રણયપૂર્ણ વચનોનું કામકલહનું તેની પ્રસન્નતાનું વારવાર સ્મરણ
કરતો કામરાગથી મોહિત મતીવાળો થઈ ગયો । આ રીતે કામજન્ય થયેલો

ततः खलु जिनरक्षित समुत्पन्नकरुणभाव ता प्रति सजातदगार्द्रहृदयम्, अत एव 'मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइ' मृत्युगलत्थल्लानोदितमति, मृत्युना=मृत्युराक्ष सेन 'गलत्थल्ला' = मण्डप्रद्वणरूपा, तथा नोदिता=स्वदेशगमनवैमुरयतया मृत्यु मुखप्रवेशसमुत्पन्नकृता मतिर्यस्य स तया तम् 'अवयक्खत' ता रत्नद्वीपदेवतां पश्यन्त तथैव=तयारूपेणैव यक्षश्च शैलकः 'जाणिऊण' ज्ञात्वा 'सणियर' शन शनैः 'उव्विहत्' उद्विजहाति=उच्छालयति-'नियगपिट्ठाहि' निज पृष्ठाद् विगयसद्ध 'विगतश्रद्ध विगता=नष्टा श्रद्धा विश्वासो यथावचने यस्य स तम्, स यक्षस्त स्वपृष्ठात्पातयामासेत्यर्थः ।

ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता 'निस्ससा' नृशसा=निर्दया 'कलुण' करुण=दयनीयं जिनरक्षित 'सकलसा' सकलुपा=कलुपितहृदया शैलकपृष्ठात्

यना वह विचारा जिनरक्षित अशुभकर्म के चक्कर में पड़कर मार्ग में चलते २ उसकी ओर बार २ लज्जा सहित देखने लग गया । (तएण जिणरक्खिय समुत्पन्नकलुणभाव मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइ अवयक्खत' तहेव जक्खे य सेलए जाणिऊण सणियर उव्विहति नियग पिट्ठाहि विगय सद्ध) उत्पन्न हुआ है रयणा देवी के प्रति दया भाव जिसको ऐसे उस जिनरक्षित को कि जिस की मति कठ पकड़ कर मृत्यु रूपी राक्षस ने अपने मुख में प्रवेश के सम्मुख कर ली है रयणा देवी की ओर बार २ निहारता हुआ देवकर-जानकर धीरे २ अपनी पीठ पर से अपने वचनों में श्रद्धा विहीन जान उछाल दिया । पटक दिया (तएण सा रयणा दीवदेवया निस्ससा कलुण जिणरक्खिय सकलुसा सेलगपिट्ठाहि

जिन्नासे अनरक्षित अशुभ कर्मनी लपेटे भा आवीने भागभा चलते आलने। तेनी सामे बारबार लल्लयुद्ध थधने नेवा लाये।

(तएण जिणरक्खिय समुत्पन्नकलुणभाव मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइ अवयक्खत तहेव जक्खे य सेलए जाणिऊ ण सणियर उव्विहति नियग पिट्ठाहि विगयसद्ध)

रयणा देवीना भाटे नेना मनमा हया भाव जन्म्ये छे येवा ने उन रक्षितने-डे नेना मतिनु गणु हयावीने मृत्युइपी राक्षसे गणी जवा भाटे पोताना मोनी सामे करी लीधी छे-रयणादेवीनी तरङ्ग बारबार नेता लणीने, तेना (यक्षना) वचनोभा अश्रद्धाणु थध गयेले। भभएने धीमे धीमे उन रक्षितने यक्षे पोतानी पीठ उपरथी ड़ेडी दीधो पटडी दीधो।

(तएण सा रयणादीवदेवया निस्ससा कलुण जिणरक्खिय सकलुसा सेलगपिट्ठाहि ओवयत दास ! मओसिति जपमाणी अप्पत्त सागरसल्लिगेण्हिय वाढाहि

સ્ત્રીચેષ્ટા વિશેષાઃ, વિલસિતાનિ=નેત્રવિકારાદિ લક્ષણાનિ ચ 'વિહસિય મરુડકવ
 દિદ્ધિનિરસસિયમલિય ઉવલ્લિયટિયગમણપણયલ્લિજિયપાસાઠ્યાણિ ય' વિહસિત
 સમટાક્ષદૃષ્ટિનિઃ શ્વસિતમન્તિ પન્તિસ્થિતગમનપ્રગયલ્લિમિત પ્રસાદિતાનિ ચ-
 વિહસિતાનિ=હાસ્યાનિ, સમટાક્ષદૃષ્ટયઃ=સચ્ચિદ્રારવિજ્ઞોરનાનિ, નિઃ શ્વસિત=
 નિઃ શ્વાસમોચનમ્, મલિતં=પુરુષાભિલષિતમર્દનમ્, ઉવલ્લિતાનિ=ક્રીડાવિશેષ
 રૂપાણિ, સ્થિતમ્=ભવનનિવસનાદિકમ્, ગમન=હસગત્યાસશ્ચરણમ્, પ્રગય=સ્નેહ,
 વચનમ્, લિસન=રામકલહઃ, પ્રસાદિત=પ્રસન્નતારૂપમ્, એતાનિ સર્ગાણિ ચ 'સર-
 માણે', સ્મરન્=પુનઃ પુનઃ સ્મૃતિપથમાનયન્ 'રાગમોદિયમર્દ' રાગમોદિતમતિ.=
 કામરાગમૂર્ચ્છિત્તમતિ, 'અવસે' અવશ=વિવશ કામપરાધીન 'વમ્મવસગણ'
 વર્મવશગત=ર્મગતિપરવશઃ સન્ અસૌ જિનરક્ષિતસ્તા 'અવયવસ્વદ' પશ્યતિ
 'મગ્ગઓ' માર્ગત પૃષ્ઠત 'સવિલિય' સત્રીડ=સલજ્જ દૃષ્ટવાનિત્યર્થ ।

સુખ દેને વાળે ઔર મન કો દરણ કરને વાળે ઉન્હીં ભૂષણો કે શબ્દોં સે
 તથા ઉન્હી સપ્રણય સરલ મધુર ભાષણો સે જિસકા રાગભાવ ક્ષીણુનિત
 હો ગયા હૈ એમા વહ જિનરક્ષિત ચચલ મનવોલા બન ગયા । સો ઉસ
 રચણાદેવી કે દોનોં સુન્દરસ્તનોં કી દોનોં જધનો કી, વદન કી દોનોં
 કરોં કી દોનો ચરણો કી, લાવણ્ય કી, રૂપ એવ યૌવન કી દિવ્ય શ્રી
 કા તથા ઉસકે સસમ્રમકૃત આલિંગનો કા, વિવ્થોક તથા વિલાસો કા,
 હાસ્ય કા, કટાક્ષયુક્તદૃષ્ટિ વિક્ષેપ કા શ્વાસમોચન કા, પુરુષાભિલષિત-
 મર્દન કા, ક્રીડા વિશેષરૂપ ઉપલલિતો કા ભવનાદિકો મે નિવાસ કરને
 આદિ કા ઉસકી હસકી ચાલકે સમાન ગતિ કા, ઉસકે પ્રણયવચનો
 કા, કામ કલહ કા, ઉસકી પ્રસન્નતા કા વાર ૨ સ્મરણ કરતા હુઆ વહ
 કામ રાગ સે મોહિત મતિવાલા બન ગયા । હમ તરહ કામ સે પરાધીન

ત્યાર પછી કાનેને ગમતા અને મનને આકૃષ્ણનારા ઘરેણાઓના શબ્દોથી
 તેમજ પ્રણયના સરળ મધુર વચનોથી જેનો રાગ ભાવ બમણો વધી ગયો છે
 એનો તે જનરક્ષિત ચચળ મનવાળો થઈ ગયો । તે રચણા દેવીના બને સુદર
 સ્તનોનું, જવનોનું, વદનનું બને હાથોનું, બને ચ પોનું, લાવણ્યનું રૂપ તેમજ
 યૌવનનું, વિવ્યશ્રીનું, તેના સમશ્રમકૃત આલિંગનોનું, વિવ્થોકનું વિલાસોનું
 હાસ્યનું, કટાક્ષયુક્ત દૃષ્ટિ વિક્ષેપનું, શ્વાસ મોચનનું, પુરુષાભિલષિત મર્દનનું,
 ક્રીડા વિશેષ રૂપ ઉપલલિતોનું ભવનો વગેરેમા રહેવા કરવાનું, તેની હસ જેવી
 ગતિનું, તેના પ્રણયપૂર્ણ વચનોનું કામકલહનું તેની પ્રસન્નતાનું વારવાર સ્મરણ
 કરતો કામરાગથી મોહિત મતીવાળો થઈ ગયો । આ રીતે કામજ્ઞ થયેલો

तत्र 'विन्त्रमाण' विन्त्र-त=विलाप कुर्वन्तमित्यर्थ । तस्य च 'सरसवहियस्स' सर-
सवधितस्य साभिमान बध प्रापितस्य 'वेत्तूण' गृहीत्या 'अगमगाड' जङ्गाङ्गानि
अङ्गोपाङ्गानि=स्वचरणमस्तकादीनि सरुधिराणि=रुधिरलिप्तानि 'उक्खित्तवलि'
उत्क्षिप्तवलिम्=माराशप्रक्षेपणरूप वायसवलि-मिववलि 'चउदिसि' चतुर्दिक्षु
करोति सा 'पजली' प्राञ्जलि'=सयोजित करपुटा 'पहिट्ठा' प्रहृष्टा=हर्षितमनस्का
सती घातरूप स्याभिलषित कार्यं कृतवतीत्यर्थ ॥ सू० ७ ॥

मूलम्—एवामेव समणाउसो । जो अम्ह निग्गंथो वा
निग्गंथो वा आयरियउवज्झायाण अतिए पव्वइए समाणे
पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसायइ पत्थयइ पीहेइ
अभिलसइ से ण इह भवे चेव वहुण समणाणं४ जाय सं-
सार० अणुपरियट्ठिस्सति, जहा वा से जिणरक्खिए—'छलिओ
अवयक्खतो निरावयक्खो गओ अविग्घेण । तम्हा पवय-
णसारे निरावयक्खेण भवियव्व ॥ १ ॥ भोगे अवयक्खता
पडति ससारसायरे घोरे । भोगेहि निरवयक्खा तरति
ससारकत्तार ॥ २ ॥ सू० ८ ॥

टीका—'एवामेव' एवमेव=पूर्वोक्तदृष्टान्तेनैव 'समणाउसो ।' हे श्रमणा
अपने घातरूप अभिलषित कार्य को सपन्न करती हुई वह बहुत अधिक
हर्षित हुई । उस श्रमणादेवी ने साभिमान बध को प्राप्त हुए उस जिन
रक्षित के रुधिर लिप्त अग उपांगो की चारो दिशाओ में वायस बलिके
जैसी बलिकी और दोनो हाथो को जोड़कर फिर बड़ी आनन्द मग्न
हुई । ॥सू०७॥

'एवामेव समणाउसो' इत्यादि ।

टीकार्थ—(एवामेव) इसी तरह (समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणो !

करी नाञ्छा आ रीते पोताना घातकी छञ्छा पूरी करता ते अत्यधिक प्रसन्न
थई ते श्रमणा देवीओ बोलीथी जरडाञ्छेला कडडे कडडा थयेला अनरक्षितना
अगो, उपांगोने सगर्व आर दिशाओमा जगडा वगेरेने भाटे गलि रुपमा
दे की दीधा अने पछी अने डाथोने जेडीने ते आन हभग्न थई गई । सूत्र "७॥"

(एवामेव समणाउसो " इत्यादि ॥

टीकार्थ—(एवामेव) आ प्रभाषे (समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणो !

‘ओवयं त’ अयत्त तम्=समुद्रे पतन्तम्, ‘दास’ हे दास ! हे नीच ! ‘मओमि’
 मृनोऽसि त्वम्, इति उल्फती सती ‘अप्पत्त सागरसल्लि’ अयम् सागरसल्लि
 समुद्रीरममाप्तमेव मध्य एव ‘गेण्हिय वाहहि’ गृहीत्या बाहुभ्याम् । आरमन्त=
 सररुण रुदन्त=चीत्कुर्वन्तमिन्यर्थः ऊर्म्म ‘उव्विहड’ उच्छिज्जहाति=उच्छालयति
 अम्बरतले=गगनतले, ‘ओवयमाण च’ अयत्त च पश्चादधः पतन्त च ‘मडल
 ग्गेण’ ‘मण्डलाग्गेण=तद्गेण ‘पडिच्छित्ता’ प्रतिच्छिन्ना=छिन्ना नीलोत्पल गवलासी
 प्रकाशेन=अतिशयागेन असिबरेण=सुतीक्ष्णरम्भेण खण्डाखण्डि=खण्ड-खण्ड करोति

ओवयत्त दास ! मओसिति जपमाणी अप्पत्त सागरसल्लि गेण्हिय
 वाहहि आरसत्त उड्डु उव्विहति अम्बरतले, ओवयमाण च मडलग्गेण
 पडिच्छित्ता नीलुप्पलगवलअयसिप्पगासेण असिबरेण खडाखडिं
 करेइ तत्थ विलवमाण तस्स य सरस वहियस्स घेत्तूणअग मगार्ति
 सरुहिराइ उव्विहत्त वलि चउद्धिसिं करेइ सा पजली पहिद्धा) इसके
 बाद नृशस-हत्यारी-तथो कलुपित हृदयवाली उस रयणादेवीने शैलक
 यक्ष की पीठ से समुद्र में गिरते हुए जिनरक्षित को जब तक वह समुद्र
 में नहीं गिर पाया तब तक बीचमें ही अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया
 और करने लगी हे नीच अब तु मर गयो । इस प्रकार सुनकर सक
 रुण विलाप-चिह्नकार-करते हुए उस जिनरक्षित को उसने ऊपर उछाल
 दिया पश्चात् निचे गिरते समय उसने अपनी तलवार से दो टुकड़े कर
 दिये । दो टुकड़े करके फिर उसने नीलोत्पल, गवल एवं अतसी के पुष्प
 के जैसी वर्णवाली तीक्ष्ण तलवार से उसके खड्ग २ कर दिये । इस तरह

आरसत्त उड्डु उव्विहति अम्बरतले, ओवयमाण च मडलग्गेण पडिच्छित्ता नीलुप्पल
 गवल अयसिप्पगासेण असिबरेण खडाखडिं करेइ तत्थ विलवमाण तस्स य सरसव
 हियस्स घेत्तूण अगमगार्ति सरुहिराइ उव्विहत्त वलि चउद्धिसिं करेइ पजली पहिद्धा)

त्यारपणी नृशस-हत्यारी-तेमन् उलुपित हृदयवाणी रयणा देवीये वेलक
 यक्षनी पीठ उपरथी अभीने समुद्रमा पडता ज्ये। त्थारे ते समुद्रमा पडे नडि
 ते पडेला तेजे पोताना अने डाथेथी तेने पड्डी लीघी, अने ते कडेवा लागी
 डे डे नीय । डवे तु भराये न समन् रयणा देवीनी वात सालणीने अन
 रक्षित उड्डु विलाप करवा लाग्ये। ते देवीये ते स्थितिमा न तेने उपर
 उछाल्ये। अने त्थारपणी नीये पडता अनरक्षितना तेजे पोतानी तलवारथी
 जे कडडा करी नाञ्जा जे कडडा कर्या आन पण तेने नीलोत्पल, गवल अने
 अतसीना पुष्प जेवी रगवाणी तीक्ष्ण तलवारथी तेना शरीरना २ कडडा

तत्र 'विलम्बमाण' विरुद्धत=विलाप कुर्वन्तमित्यर्थ । तस्य च 'सरसवह्नियस्म' सर-
सवधितस्य साभिमान वध प्रापितस्य 'प्रेतूण' गृहीत्या 'अगमगाइ' जङ्गाङ्गानि
अङ्गोपाङ्गानि=रगचरणमस्तम्भादीनि समुधिराणि=रुविरलिप्तानि 'उत्खित्तमलि'
उत्खित्तमलिम्=आगशप्रक्षेपणरूप वायमवलि-मियवलि 'चउदिमि' चतुर्दिक्षु
करोति सा 'पजली' प्राञ्जलि =सयोजित करपुटा 'पहिट्टा' प्रहृष्टा=हर्षितमनस्का
सती प्रातरूप स्वाभिलषित कार्यं कृतवतीत्यर्थ ॥ सू० ७ ॥

मूलम्—एवामेव समणाउसो । जो अरुह निग्गंथो वा
निग्गंथो वा आयरियउवज्जायाण अंतिए पव्वइए समाणे
पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसायइ पत्थयइ पीहेइ
अभिलसइ से ण इह भवे चेव बहूण समणाण४ जाव स-
सार० अणुपग्घिहिससति, जहा वा से जिणरक्खिए—'छलिओ
अवयक्खतो निरावयक्खो गओ अविग्घेण । तम्हा पवय-
णसारे निरावयक्खेण भवियव्व ॥ १ ॥ भोगे अवयक्खता
पडंति ससारसायरे घोरे । भोगेहि निरावयक्खा तरंति
ससारकत्तारं ॥ २ ॥ सू० ८ ॥

टीका—'एवामेव' एवमेव=पूर्वोक्तप्रान्तेनैव 'समणाउसो !' हे श्रमणा
अपने घातरूप अभिलषित कार्य को सपन्न करती हुई वह बहुत अधिक
हर्षित हुई । उस रत्नादेवी ने साभिमान वध को प्राप्त हुए उस जिन
रक्षित के रुचिर लिस अग उपागो की चारों दिशाओ में वायस बलि के
जैसी बलिकी और दोनो हाथों को जोड़कर फिर बड़ी आनन्द मग्न
हुई । ॥सू०७॥

'एवामेव समणाउसो' इत्यादि ।

टीकार्थ—(एवामेव) इसी तरह (समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणो !

करी नाञ्छा आ रते पोताना घातकी धञ्ज पुरी करता ते अत्यधिक प्रसन्न
थर्ध ते रत्ना देवीओ बोलीथी णरडाओला कडडे कडडा थयेला अनरक्षितना
अगो, उपागोने सगर्ग्यार हिराओमा डागडा वगेदेने भाटे बलि रूपमा
इडी दीधा अने पछी अने डाधोने लेडीने ते आनन्दमग्न थर्ध गर्ध । सूत्र "७॥"

(एवामेव समणाउसो " इत्यादि ॥

टीकार्थ—(एवामेव) आ प्रभाषे (समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणो ।

આયુષ્મન્તઃ । યોઽસ્માક નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થી વા આચાર્યૈર્વા-પાયાનામન્તિકે
 પ્રવ્રજિતઃ સન્ પુનરપિ માનુષ્યકાન્ કામભોગાન્=પૂર્વત્યક્તાન્ ' આસાયઃ ' આસા-
 દયતિ=સ્વીકરોતિ, ' પત્થયઃ ' પ્રાર્થયતે=અપ્રાપ્તાન્ યાચતે, ' પીહેઃ ' સ્પૃહયતિ-
 ' અયાચિત-एवाय मल्ल भागान् ददाति तदा समीचीन स्यात् ' इत्यादि रूपां
 સ્પૃહા કરોતિ ' અભિલસઃ ' અભિલપતિ=દૃષ્ટાદૃષ્ટશબ્દાદિ-વિષયેષુ વાઙ્ઠા કરોતિ,
 સ સ્વલુ રૂઢ મત્ર એવ વહુના શ્રમણાના, વહીના શ્રમણીના, વહુના શ્રાવકાના
 વહીના શ્રાવિકાના મત્રે ' જાવ ' યાવત્-યાવન્નન્દેનેદ દૃષ્યમ્ - હીલનીય',
 નિન્દનીય , વિસનીયઃ=મર્ત્સનીયઃ, ગર્હણીય', પરિભવનીય =તિરસ્કરણીયો મત્રતિ,
 પરલોકેઽપિ ચ સ્વલુ આગમિષ્યતિ કાલે વહુનિ દૃષ્ટાનિ=કર્ણનાસાચ્છેદનરૂપાણિ
 પ્રાપ્નોતિ યાવત્-અનાદિકમ્-અનવદગ્રમ્=અનન્ત, દીર્ઘાધ્યાન=દીર્ઘમાર્ગ, દીર્ઘાદ્
 વા દીર્ઘકાલિક ચાતુરન્તસસારકાન્તાર=ચાતુર્ગતિકસસારાદયોમ્ ' અણુપરિચ્છિ-
 સ્સઃ ' અણુપરિચ્છિષ્યતિ=પુનઃ પુનર્ભ્રમિષ્યતિ, યથા વા સ જિનરક્ષિત' । અત્રાર્થે
 દૃષ્ટાન્તયોજનાગાથાદ્વયેનાહ—

(જો અમ્હ નિગ્ગથો વા નિગ્ગથી વા આચરિયુવજ્ઞાયાણ અતિણ પવ્વરૂણ) જો હમારા નિગ્ગન્થ અથવા નિગ્ગન્થી જન આચાર્ય તથા ઉપા-
 ધ્યાય કે પાસ પ્રવ્રજિત હોતા હુઆ (પુનરવિ માણુસણ કામભોગે
 આસાયઃ પત્થયઃ, પીહેઃ, અભિલસઃ) પુન મનુષ્ય મત્ર સવન્ધી કામ
 ભોગો પૂર્વત્યક્ત વૈષયિક સુખો કો-સ્વીકાર કર લેતા હૈં ઉનકી ચાહના
 કરતા હૈં “ વિના યાચના કિયે હી યહ મેરે નિયે ભોગો કો દેદેવે તો
 અચ્છા હૈં ” રૂસ પ્રકાર કી જો સ્પૃહા રૂચ્છા કરતા હૈં, યા દૃષ્ટાદૃષ્ટ
 શબ્દાદિ વિષયો મે વાઙ્ઠા કરતા હૈં (સે ણ રૂહ મવે ચેવ વહુણં સમણા
 ણં ૪ જાવ સસારં । અણુ પરિચ્છિસ્સઃ જહાવ સે જિનરક્ષિણ છલિઓ

(જો અમ્હ નિગ્ગથો વા નિગ્ગથી વા આચરિય ઉવજ્ઞાયાણ અતિણ પવ્વરૂણ)
 જે અમારો નિગ્ગન્થ કે નિગ્ગન્થી જન આચાર્ય તેમજ ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજીત થઈને

(પુનરવિ માણુસણ કામભોગે આસાયઃ પત્થયઃ, પીહેઃ, અભિલસઃ)

રૂરી તે મનુષ્યભવના કામભોગો-પ્રવ્રજીત થતી વખતે છોડેલા મનુષ્યભવના
 વિષમ સુખો-ને સ્વીકારે છે, તે સુખોની ઇચ્છા કરે છે “ હું વિષય સુખની
 એની પસંથી માગણી કરું નહિ ને એની મેળે તે મને વિષમ સુખો આપે
 તો કેટલું સારું થાય ” આ રીતે જે સ્પૃહા કરે છે, અથવા તો દૃષ્ટાદૃષ્ટ શબ્દ
 વગેરે વિષયોની ઇચ્છા કરે છે

(સે ણ રૂહ મવે ચેવ વહુણ સમણાણ ૪ જાવ સસારં । અણુપરિચ્છિસ્સઃ

“ છલિઓ અવયવસ્વતો, નિરાવયવસ્વો ગઓ અવિગ્ધેણ ।

તમ્હા પવયણસારે, નિરાવયવસ્વેણ ભવિયન્વ ॥ ૧ ॥

ભોગે અવયવસ્વતા, પડતિ સસારમાયરે ઘોરે ।

ભોગેદિ નિરાવયવસ્વા, તરતિ સસારકતાર ॥ ૨ ॥ ” ઇતિ ॥

અસ્ય વ્યાખ્યા—છલિતઃ=ચ્છિન્નઃ, કઃ ? અવયવસ્વતો ’ પશ્યન્ રત્નદ્વીપ દેવતામ્—અવલોકયન્ જિનરક્ષિતો વિપ્રતારિત । ય ‘નિરાવયવસ્વો ’ અપશ્યકઃ—તસ્યા દેવતાયા અદર્શક તા ન દૃષ્ટન્નિત્યર્થ, સ જિનપાલિત ગત=ગૃહ પ્રાપ્ત ‘ અવિગ્ધેણ ’ અવિદ્યનેન=નિર્વિવ્ર્ણતયા, સુસુખેન સ્વસ્થાન પ્રાપ્ત વાનિત્યર્થઃ । અથોપદેશમાહ—તસ્માત્ કારણાત્ પ્રવચનમારે=ચારિત્રેલગ્ને મતી ‘નિરાવયવસ્વેણ’

અવયવસ્વતો નિરાવયવસ્વો ગઓ અવિગ્ધે ણ ! તમ્હા પવયણસારે નિરાવયવસ્વેણ ભવિયન્વ) વહ હસ મય મેં હી અનેક શ્રમણો અનેકશ્રમણિયોં અનેક શ્રાવકોં એવ અનેક શ્રાવિકાઓં કે પીચ મેં હોલનીય હોતાહે, નિંદનીય હોતા હૈ, લિસનોય હોતા હૈ, તયા પરમવ મેં મી અનેક કર્ણનાસિકાચ્છેદન ઓદિ રૂપ દડોં કો ભોગતા હૈ એસા જીવ અનાદિ અનન્ત રૂપ હસ દીર્ઘ માર્ગ યા કાલ વાલે ચતુર્ગતિક સસાર કાન્તાર મેં પુનઃ પુનઃ શ્રમણ કરેગા । જિન રક્ષિત કા જો હમ વિષય મે દષ્ટાન્ત દિયા ગયા હૈ ઉસકી યોજના હસ પ્રકાર હૈ—જૈસે રચનાદેવી કી તરફ દેખતા હુઆ જિનરક્ષિત ઠગા ગયા—ઔર ઉમકી તરફ નહીં દેખતા જિનપાલિત શીઘ્ર અપને ઘર પહુંચ ગયા—હમ્ની તરફ ચારિત્ર કે પ્રાપ્ત કરલેને પર જો વ્યક્તિ શબ્દોદિ વિષયો કી વાઙ્છા સે રહિત હોતા હૈ

જઠાવ સે જિનરક્ષિત છલિઓ અવયવસ્વતો નિરાવયવસ્વો ગઓ અવિગ્ધેણ ! તમ્હા પવયણસારે નિરાવયવસ્વેણ ભવિયન્વ)

તે આ ભવમાજ ઘણા શ્રમણો અને શ્રમણીઓ તેમજ ઘણા શ્રાવકો અને શ્રાવિકાઓની સામે હીલનીય હોય છે, નિંદનીય હોય છે, ખિમનીય હોય છે (ભત્સનીય હોય છે) તિરસ્કાર કરવા યોગ્ય હોય છે, તથા ખીન્ન જન્મમા પણ ઘણા કાન, નાક કપાવવા વગેરે રૂપ સજ્જને લોગવતો રહે છે આ જાતનો જીવ અનાદિ અનન્તરૂપ આ દીર્ઘ માર્ગ અથવા કાળવાળા ચતુર્ગતિક સસાર કાતારમા વારવાર શ્રમણ કરશે અહીં જીનરક્ષિત વિશે જે દૃષ્ટાન્ત આપવામા આવ્યું છે તેને આ પ્રમાણે સમજવું જોઈએ જેમ ગ્યણા દેવીની તરફ જોતા જીનરક્ષિત ઠગાયો અને તેની તરફ ન જોતા જીનપાલિત એકદમ પોતાને ઘેર પહોંચી ગયો તેમજ ચારિત્ર મેળવવા બાદ જે માણસ શબ્દોદિ લોગોની ઈચ્છા

અપર્યક્તેન=પ્રાપ્તાપ્રાપ્ત-દૃષ્ટાદૃષ્ટશબ્દાદિ વિષયાણામદર્શકેણ શબ્દાદિવિષયવાચ્છે
રહિતેનેત્યર્થ મરિતવ્યમ્, ચારિત્ર મૂઢોત્તરા વિષયપ્રાસનામુ છેલ્લોડપિ મુનિના
મૂર્છા ન વિધાતવ્યેતિ માત્ર ॥ ૧ ॥ અતઃપર મોગે ' મોગાન્=શબ્દાદિકાન્
'અપર્યક્તતા' પશ્યન્ત્=વાઠઁક્રન્તો જીયાઃ પન્તિ સસારસાગરે ઘોરે । યે મોગેષુ
નિરવયવત્તાઃ' અપર્યક્તાઃ=વાઠ ડ્રાગદિતાઃ સન્તિ તે તરન્તિ પારયન્તિ સસારકાન્તાર
=મર્યાદવીમ્ ॥ ૨ ॥ મૃ. ૮ ॥

મૂલમ્-તણ સા રચણદ્વીવદેવયા જેણેવ જિણપાલિણ
તેણેવ ઉવાં વઢૂહિ અણુલોમેહિ ય પહિલોમેહિ ય સ્વરમ-
હુરસિગારેહિ કલ્હુણેહિ ય ઉવસમ્મેહિ ય જાહે નો સચાણ્ઠ
ચાલિત્તણ વા સ્વોમિં વિપ્પં તાહે સતા તતા પરિતતા
નિઠ્ઠિવણ્ણા સમાણા જામેવ દિસિ પાઉઠ્ઠમૂયા તામેવ દિસ
પહિગયા, તણ સે સેલણ જક્કલે જિણપાલિણ સાહ્મ લ-
વણસમુદ્ધ મહ્મમહ્મ્મેણ વીયવય્ઠ્ઠ ૨ જેણેવ ચપાનયરી તેણેવ
ઉવાગચ્છઠ્ઠ ઉવાગચ્છિત્તા ચપાણ નયરીણ અગ્ગુજ્ઞાણસિ
જિણપાલિય પિટ્ઠાતો ઓયારેઠ્ઠ ઓયારિત્તા એવ
વયાસી-એસણ દેવાનુપ્પિયા । ચપાનયરી દીસઠ્ઠ ત્તિક્કદ્ધુ
જિણપાલિય આપુચ્છઠ્ઠ આપુચ્છિત્તા જામેવ દિસિ પાઉઠ્ઠમુણ
તામેવ દિસિ પહિગણ ॥ સૂ. ૧ ॥

વહ્ન હમ્ન સસાર રૂપ અટવી સે પાર હો જાતા હૈ ઓર જો ઉસ અવસ્થા
મે શબ્દાદિ વિષય મોગોક્તી વાચ્છા કરતા હૈ વહ્ન સસાર રૂપ અટવી મે
હૂવતા રહતા હૈ-પહના રહતા હૈ । મૂત્ર " ૮ "

રાખતો નથી તે આ સસાર રૂપી અટવીની પાર પહોંચી જાય છે અને જે
શબ્દ વગેરે વિષય-ભોગોની રૂઝ કરે છે તે સસાર રૂપી અટવીમાં ફસાઈને
તેમાં જ રૂખતો રહે છે ॥ સૂત્ર " ૮ " ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि । ततः खलु तदनन्तरं जिनरचितवधानन्तरं सा रत्नद्वीपदेवता यत्रैव जिनपालितस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य बहुभिः—अनुलोमैः=अनुकूलैश्च, प्रतिशोमैः=प्रतिकूलैश्च ‘खरमहुरसिंगारेहिं’ खरमधुरशृङ्गारैः सरैः=कर्कशैः, मधुरैः=मिष्टैः कर्णसुखदैरित्यर्थः, शृङ्गारैः=शृङ्गाररसोत्पादकैः, करुणैश्च=करुणाजनकैः उपसर्गैरनुकूलरूपैश्च यदा त नो शक्नोति ‘चालित्तए वा’ चालयितुम्=अधीस्तामुत्पादयितुम्, ‘वोभित्तए वा’ लोभयितुम्=क्षुब्धं कर्तुम्, विपरिणामित्तए’ विपरिणमयितुम्=मनः परिणाम परानर्त्तयितुं न समर्थाऽभूत् तदा सा ‘सता’ शान्ता=शिथिला हतोत्साहा, श्रान्ता वा=परिश्रमिता तान्ता=स्विन्ना, परितान्ता=सर्वथा खेदमापन्ना ‘निव्विण्णा’ निर्विण्णा=विमनस्का सती यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता=समागता तामेव दिशं प्रतिगता=प्रतिनिवृत्ता ।

तएण सा रयणदीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवा वच्छड इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सारयणदीवदेवया) वह रयणा देवी (जेणेव जिणपालिए) जहा जिन पालित था (तेणेव उवागच्छड) वहा आई (वहहिं अणुलोमेहिं पडिलोमेहिं खरमहुरसिंगारेहिं कलुणेहिं य उवसग्गेहिं य जाहेनो सचाएहिं चालित्तए वा ग्वोमि० विप्प० ताहे सतातत्ता परितता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसि पाउ० तामेव दिस पडिगया) वहा आकर उन से अनेक अनुकूल प्रतिकूल, कर्कश, मधुर—कर्णसुखद—शृंगार रसोत्पादक, एवं करुणारस जनक उपसर्ग वचनो द्वारा उसे चलायमान करने का क्षुभित करने का और उमकी मोनवृत्ति को बदलने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु जब वह उसे चलायमान करने के लिये, क्षुभित करने के लिये एवं उस की मनोवृत्ति बदलने के लिये समर्थ नहीं हो सकी तब हतोत्साह परिश्रमित

तएण सा रयणदीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवागच्छड इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्था २५७ (सा रयणदीवदेवया) ते रयणा देवी (जेणेव जिणपालिए) त्था ७८ पालित हुने (तेणेव उवागच्छड) त्था आवी

(वहहिं अणुलोमेहिं कलुणेहिं य उवसग्गे हि य जाहे नो सचाएहिं चालित्तए वा ग्वोमि० विप्प ताहे सतातत्ता परितता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसि पाउ० तामेव दिस पडिगया)

त्था आवीने धणा मनुष्य, प्रति, कर्कश, मधुर, कर्णसुखद शृंगार रसोत्पादक, अने उरणा समजनक उपसर्ग वचनो वडे तेने पोताना निश्चयथी जालिना लुलित उरवाना अने तेनी मनोवृत्तिने देखी नाभवाना भूषण

तत खलु स शैलको यक्षो जिनपालितेन सार्द्धं लवणसमुद्र मध्यमध्येन
'वीक्ष्य इति वृत्तिप्रवृत्तिः=गच्छति, व्यतिप्रवृत्तिः यत्रैव चम्पानगरी तत्रैवोपागच्छति,
उपागत्य चम्पाया नगर्या 'अगुञ्जानसि' अगुञ्जाने=मुख्योद्याने जिनपालित
पृष्ठात् अतारयति, अतार्य-एतमयदत्-एपा=पुरोवर्त्तिनी खलु हे देवानुप्रिय !
चम्पानगरी दृश्यते, इति कृत्वा=उत्पुङ्गवा जिनपालितम् 'आपुच्छ' आपुच्छति=
तदनुज्ञा दृष्टाति, आपुच्छय यस्या एव दिग्ः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगत । सू० ९॥

खिन्न, परितान्त एव विमनस्क होता हुई वह जिस दिशा से आई थी
उसी दिशा की तरफ चली गई । (तएण से सेलए जक्खे जिणपालिण
सद्धि लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीडवयइ २ जेणेव चपा नयरी तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चपाए नयरीए अगुञ्जानसि जिणपालिय
पिट्ठाओ ओयारेइ, ओयरित्ता एव वयासी-एसण देवाणुप्पिया । दीसइ
त्ति कइहु जिणपालिय आपुच्छइ आपुच्छित्ता जामेव दिस्सि पाउब्भूए
तामेव दिस्सि पडिगए) इस के बाद वह शैलक यक्ष लवण समुद्र के
बीच में चलने लगा और चल कर जहाँ चपा नगरी थी-वहाँ आ पहुँचा
आकर के उसने चपा नगरी के प्रधान रगीचे में जिन पालित को अपनी
पीठ पर से उतार दिया । उतार करके फिर उसने उस से इस प्रकार
कहा-हे देवानुप्रिय ! यह चपा नगरी दिखलाई देनी है । ऐसा कह कर
फिर उसने जिनपालित से पूछा-और पूछ कर वह जिस दिशा से
प्रकट हुआ था-उसी दिशा की ओर वहाँ से चला गया । सूत्र ॥ ९ ॥

अथतो उर्या पणु ते त्या क्षायी नडि छेवटे ते इताश, थाडेली, जिन्न, परि
तात अने विमनस्क थाने ते जे दिशा तरक्षी आवी हुती ते जे दिशा तरक्ष
पाछी जती रही

(तएण से सेलए जक्खे जिणपालिण सद्धि लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीड
वयइ २ जेणेव चपानयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चपाए नयरीए अगु
ञ्जानसि जिणपालिय पिट्ठाओ ओयारेइ, ओयरित्ता एव वयासी एसण देवाणु-
प्पिया । चपानयरी दीसइ तिकहु जिणपालिय आपुच्छइ आपुच्छित्ता जामेव दिस्सि
पाउब्भूए तामेव दिस्सि पडिगए)

त्यार बाद ते शैलक यक्ष लवण समुद्रनी वर्ये थाने आगण वधतो ज
रह्यो अने अते जया चपा नगरी हुती त्या पडोव्यो तना पडोव्यीने चपा
नगरीना प्रधान उद्यानमा जिनपालितने पोतानी पीठ उपरथी नीचे उतारी
दीधो, उतारीने तेले जिनपालितने आ प्रमाणे कहु केडे देवानुप्रिय । आ सामे
चपा नगरी देखाय छे त्यारबाद यक्ष जिनपालितने जवा भाटे पूछथु अने
पूछीने ते जे दिशा तरक्षी आव्यो हुतो ते जे दिशा तरक्ष पाछो जतो ॥ ९ ॥

मूलम्—तएणं से जिणपालिए चप अणुपविसइ, अणुप-
विसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवा-
गच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं रोयमाणे जाव विल-
वमाणे जिणरक्खियवावत्ति निवेदेइ, तएणं जिणपालिए
अम्मापियरो मित्तणाइ जाव परियणेणं सद्धि रोयमाणो
ब्रह्मइ लोइयाइ मयकिच्चाइ करेति करित्ता कालेण विगय-
सोया जाया, तएण जिणपालिय अन्नया कयाइ सुहासण
वरगत अम्मापियरो एव वयासी—कहण्ण पुत्ता । जिणर-
क्खिए कालगए १, तएण से जिणपालिए अम्मापिऊणं
लवणसमुद्दोत्तार च कालियवायसमुत्थणं पोतवहणविवत्ति
च फलहखडआसायणं च रयणदीवुत्तार च रयणदीवदेवया
गिण्हणं च भोगविभूइ च रयणदीवदेवयाए आघायणं च
सूलाइयपुरिसदरिसणं च सेलगजक्खआरुहण च रयणदी-
वदेवया उवसग्ग च जिणरक्खियविवत्ति च लवणसमुद्दउ-
त्तरणं च चपागमण च सेलगजक्खआपुच्छण च जहामूय-
मवितहमसदिद्ध परिकहेइ, तएणं से जिणपालिए जाव
अप्पसोगे जाव विपुलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ।
तेण कालेण तेण समएण समणे० समोमढे, धम्म सोच्चा
पठवइए एक्कारसगवी मासिकयाएण सोहम्मे कप्पे दो
सागरोवमे, महाविदेहे सिञ्जिहिइ । एवामेव समणाउसो ।
जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरविआसायइ से ण जाव
वीइवइस्सइ जहा दा से जिणपालिए । एव खलु जवू ।

तत खलु स शैलको यक्षो जिनपालितेन सार्द्धं लवणसमुद्र मध्यमध्येन
'वीश्वयङ् व्यतिव्रजति=गच्छति, व्यतिव्रज्य यत्रैव चम्पानगरी तत्रैवोपागच्छति,
उपागत्य चम्पाया नगर्या 'अग्गुज्जाणसि' अग्रोद्याने=मुख्योद्याने जिनपालित
पृष्ठात् अवतारयति, अवतार्य-एवमवदत्-एषा=पुरोवर्तिनी खलु हे देवानुप्रिय !
चम्पानगरी दृश्यते, इति कृत्या=उत्पुस्त्या जिनपालितम् 'आपुच्छङ्' आपृच्छति=
तदनुज्ञा पृच्छति, आपृच्छ्य यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगत । सू० ९॥

खिन्न, परितान्त एव विमनस्क होता हुई वह जिस दिशा से आई थी
उसी दिशा की तरफ चली गई । (तएण से सेलए जक्खे जिणपालिएण
सद्धिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयङ् २ जेणेव चपा नयरी तेणेव
उवागच्छङ्, उवागच्छित्ता चपाए नयरीए अग्गुज्जाणसि जिणपालिय
पिट्ठाओ ओयारेङ्, ओयरित्ता एव वयासी-एसण देवाणुप्पिया ! दीसङ्
त्ति कट्ठु जिणपालिय आपुच्छङ् आपुच्छित्ता जामेव दिस्सि पाउब्भूए
तामेव दिस्सि पडिगए) इस के बाद वह शैलक यक्ष लवण समुद्र के
बीच में चलने लगा और चल कर जहा चपा नगरी थी-वहा आ पहुँचा
आकर के उसने चपा नगरी के प्रधान बगीचे में जिन पालिन को अपनी
पीठ पर से उतार दिया । उतार करके फिर उसने उम से इस प्रकार
कहा-हे देवानुप्रिय ! यह चपा नगरी दिखलाई देनी है । ऐसा कह कर
फिर उसने जिनपालिन से पूछा-और पूछ कर वह जिस दिशा से
प्रकट हुआ था-उसी दिशा की ओर वहा से चला गया । सूत्र ॥ ९ ॥

अथत्तो उर्या पणु ते त्या क्षवी नडि छेवटे ते हताश, थाकेली, भिन्न, परि
तात अने विमनस्क थछने ते जे दिशा तरङ्गथी आवी हुती ते जे दिशा तरङ्ग
पाछी जती रही

(तएण से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइ
वयङ् २ जेणेव चपानयरी तेणेव उवागच्छङ्, उवागच्छित्ता चपाए नयरीए अग्गु
ज्जाणमि जिणपालिय पिट्ठाओ ओयारेङ्, ओयरित्ता एव वयासी एसण देवाणु-
प्पिया ! चपानयरी दीसङ् तिकट्ठु जिणपालिय आपुच्छङ् आपुच्छित्ता जामेव दिस्सि
पाउब्भूए तामेव दिस्सि पडिगए)

त्यार आद ते शैलक यक्ष लवण समुद्रनी वन्थे थछने आगण वधतो ज
रह्यो अने अते जया थपा नगरी हुती त्या पडोव्यो त्या पडोव्यीने थपा
नगरीना प्रधान उद्यानमा अनुपालितने पोतानी पीठ उपरथी नीचे उतारी
दीधो, उतागीने तेछे अनुपालितने आ प्रमाणे कछु डे डे देवानुप्रिय ! आ साथे
थपा नगरी देखाय छे त्यारआद यक्ष अनुपालितने जवा भाटे पूछथु अने
पूछीने ते जे दिशा तरङ्गथी आव्यो हुनो ते जे दिशा तरङ्ग पाछो जतो ॥ ९ ॥

कुर्वन्ति, कृत्वा कालेन=कतिययदिवसानन्तरेण विगतशोकाः=शोकरहिता जाताः।
ततः खलु जिनपालितम् अन्यदा कदाचित् सुखासनपरगत=सुखोपविष्टम् अम्बा-
पितरौ एवमवादिष्टाम्-कथ=केन प्रकारेण खलु हे पुत्र ! जिनरक्षितः कालगतः=
मृतः ? ततः खलु स जिनपालिताऽम्बापित्रोः-लवणसमुद्रोत्तार च, कालिकवात-
समुत्थान, पोतवहनव्यापत्ति=नौकाभङ्ग च, फलकखण्डासादन=फलकखण्डावलम्बन
च, रत्नद्वीपोत्तार च, रत्नद्वीपदेवताग्रहण च, भोगविभूति=भोगसम्पत्ति च, रत्न-
द्वीपदेवतायाः 'आघायण' आघातन=वधस्थान च, सूत्राचितपुरुषदर्शन च,
शैलकयक्षारोहण च, रत्नद्वीपदेवतोपसर्ग च जिनरक्षितविपत्ति=जिनरक्षितमरण
लित, और उनके माता पिता ने मित्र जाति यावत् परिजनो के साथ
समस्त अनेक लौकिक मृतक कृत्य किये । (करित्ता कालेण विगय सोया
जाया) बाद में जैसे २ समय व्यतीत होता गया वैसे २ ये सब शोक
रहित बन गये और फिर बिलकुल शोक शून्य भी हो गये । (तएण
जिन पालिय अन्नया कयाइ सुहासणवरगय अम्मा पियरो एव वयासी
कहण्ण पुत्ता जिणरक्खिए कालगए) एक दिन की बात है कि जब
जिनपालित आनन्द से बैठा हुआ था तब माता पिता ने उस से पूछा
पुत्र ! जिनरक्षित किस प्रकार से काल कवलित हुआ ? (तएण से
जिनपालिए अम्मापिऊण लवणसमुद्रोत्तार च कालियवायसमु-
त्थण पोतवहणविवत्ति च फलहखडआसायण च रयणदीवुत्तार च
रयणदीवदेवया गिण्हण च भोगविभूइ च रयण दीवदेवयाएआधा-
यण च सूलाइय पुरिसदरिसण सेलगजक्ख आरुहण च रयण-

डरी (करित्ता कालेण विगय सोया-जाया) त्यारभाइ जेम जेम समय पसार
थतो गथो तेम तेम तेओ पोतानु हुण पणु लूदता गया अने छेवटे उन
रक्षित विशेनु हुण तेओना हुइय पटल उपरथी साव लुसार्थ गथु

(तएण जिनपालिय अन्नया कयाइ सुहासणवरगय अम्मापियरो एव वयासी
कहण्ण पुत्ता जिणरक्खिए कालगए)

न्यारे ओइ दिवसे उनपालित आनन्दपूर्वक जेठा हुतो त्यारे माता
पिताओओ तेने पूछ्यु हे हे पुत्र ! अनरक्षित कइ रीते भरखु पाभ्यो छे ?

(तएण से जिनपालिए अम्मापिऊण लवणसमुद्रोत्तार च कालियवायसमु-
त्थण पोतवहणविवत्ति च फलहखड आसायग च रयणदीवुत्तार च रयणदीव
देवयागिण्हण च भोगविभूइ च रयणदीवदेवयाए आघायण च सूलाइय
पुरिसदरिसण सेलगजक्खआरुहण च रयणदीवदेवया उवसर्ग च जिणरक्खिय-

समणेणं भगवया महावीरेणं नवमस्स नायज्झयणस्स अय-
मट्ठे पणत्ते तिवेमि ॥ सू० ९ ॥

॥ नवमं अज्झयण समत्त ॥

टीका—‘तएण जिणपालिए’ इत्यादि । ततः खलु जिनपालितश्चम्पामनु
प्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव स्वरु गृह यत्रैव अम्मापितरौ तत्रैवोपागच्छति,
उपागत्य अम्मापित्रोः समीपे रुदन् यावद् विष्पन्=विलाप कुर्वन् जिणरक्षितव्या-
पत्ति=जिणरक्षितमरण निवेदयति=रुधयति, ततः खलु स जिनपालिताम्मा
पितरौ च मित्रज्ञातियात्परिजनेन सार्द्धं रुदन्तः सर्वे नहन्ति लौकिकानि मृतकृत्यानि

‘तएण से जिन पल्लिए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से जिनपालिए चप अणुपविसइ, वह
जिन पालित चपा नगरी में अनुप्रविष्ट हुआ । (अणुपविसित्ता जेणेव
सए गेहे जेणेव अम्मा पियरो तेणेव उवागच्छइ, प्रविष्ट होकर वह जहाँ
अपना घर और उस में भी जहाँ अपने माता पिता थे वहाँ गया ।
(उवागच्छित्ता अम्मापिऊण रोयमाणे जाव विलवमाणे जिणरक्खिय
बावत्ति निवेदेइ, तएण जिणपालिए अम्मापितरो मित्तणाइ जाव परि-
यणेण सद्धि रोयमाणा बहहिं लोइयाइ मयकिच्चाइ करेति) वह जाकर
उस ने रोते हुए यावत् विलाप करते हुए माता पिता से जिनरक्षित
की मृत्यु हो जानेके समाचार कहे । इस के बाद रोते हुए उस जिनपा

‘तएणं से जिनपालिए’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थाख्याइ (से जिनपालिए चप अणुपविसइ) अन
पालित चपा नगरीमा गये।

(अणुपविसित्ता जेणेव सए गेहे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ)

त्था जधने न्था तेनु घर अने तेमां पणु न्था तेना मातापिता उता
त्था पडोअये।

(उवागच्छित्ता अम्मापिऊण रोयमाणे जाव विलवमाणे जिणरक्खियबावत्ति
निवेदेइ, तएण जिणपालिए अम्मापितरो मित्तणाइ जाव परियणेण सद्धि रोयमाणा
बहहिं लोइयाइ मम किच्चाइ करेति)

त्था तेणु उता यावत् विलाप करता येताना मातापिताने अनरक्षितना
मृत्युना समाचार कइया त्थायध्दी अनपालित अने मातापिताओअे उता
मित्रज्ञाति यावत् परिजनेने लेगा कगीने भरषु पछीनी यध्दी पियेओ पूरी

तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरः समवसृतः=चम्पाया
समागतः । जिनपालितो धर्मं श्रुत्वा प्रजित एकादशाङ्गवित्=आचाराङ्गादि शस्त्रा
ज्ञाननिपुणो जात । मासिकया सलेखनया कालं कृत्वा सौधर्मे कल्पे=प्रथमदेव-
लोके 'दो सागरोवमे' द्विसागरोपमक =द्विसागरोपमस्थितिकः देवो जातः ।
महाविदेहे सेत्स्यति=सिद्धो भविष्यति । एतमेव=अनेनैव प्रकारेण हे श्रमणा आंयु-
ष्मन्त ! योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा यावत् प्रजित सन् मानुष्यकान् कामभोगान्
परित्यक्तान् नो पुनरपि 'आसायड' आसादयति=प्राप्नोति नो सेवत इत्यर्थः, स
खलु यावद् 'वीडवइस्सड' व्यतिप्रजिष्यति=व्यतिक्रमिष्यति ससारस्य पार
गमिष्यतीत्यर्थः यथा वा स जिनपालितः । इत्थमत्र दृष्टान्तयोजना—

को-काम सुखो को भोगता हुआ अपने समय को व्यतीत करने लगे।
(तेण कालेण तेण समएण समणे० समोसडे, धम्म सोच्चा पव्वाइए, एक्का-
रसगवी मासिकेयाएण सोहम्मे कप्पे दो सागरोवमे, महाविदेहे
सिज्झहिइ-एवामेव समणाउसो । जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणे-
रवि आसायड, सेण जाव वीडवइस्सड, जहा वा से जिणपालिए ।
एव खलु जवू ! समणे ण भगवया महावीरेण नवमस्स नायज्झयणस्स
अयमहे पणत्ते त्तिवेमि) उसी काल और उसी समय में श्रमण
भगवान् महावीर चम्पा नगरी में आये । जिन पालित धर्म का उपदेश
सुन कर दीक्षित हो गया । ग्यारह अंग का धीरे २ वह ज्ञाता भी बन
गया । अन्त में एक मास की सलेखना की संलेखना से ६० साठ भक्तों
का छेदन कर जय काल किया-तां प्रथम देवलोक में दो सागरोपम की
स्थिति वाला देव में उत्पन्न हुआ । यह महा विदेह में सिद्धी गति को

पुत्रों को लोकावती सुजेथी पोताने वधत पमार करवा लाये।

(तेण कालेण तेण समएण समणे० समोसडे, धम्म सोच्चा पव्वाइए एक्का-
रसगवी मासिकेयाएण सोहम्मे कप्पे दो सागरोवमे महाविदेहे सिज्झहिइ-
एवामेव समणाउसो । जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणे-
रवि आसायड, से ण जाव वीडवइस्सड, जहा वा से जिणपालिए । एव खलु जवू ! समणे ण भगवया
महावीरेण नवमस्स नायज्झयणस्स अयमहे पणत्ते त्तिवेमि)

ते काले अने ते समये श्रमण भगवान् महावीर चम्पा नगरीमा आग्या
जिनपालित तेमने उपदेश सालणीने दीक्षित थउ गये। धीमे धीमे तेणे
अगियारे अणेनु ज्ञान मेजयी लीधु छेवटे ओउ भासरी तेणे सवेअना करी
सवेअनाथी ६० साठ लक्खोनु छेदन करीने काल उर्यो त्यारे प्रथम देवलोकाभा

च, स्वस्य लवणसमुद्रोत्तरण च, चम्पागमन पगटुर्यचम्पानगरी समागत च, शैल-
कयक्षपृच्छन=शैलकयक्षस्य जिनपालित प्रति स्वस्थानगमननिवेदन च, एतत्सर्वं
वृत्तान्तं 'जहाभूय' यथाभूत=यथाजातम्, 'अनिह' अत्रितथ=सत्यम्, 'अस-
दिद्ध' असदिग्ग-सदेहरहित परिकथयति । ततः सलु स जिनपालितो यावद्
'अप्पसोए' अल्पशोकः=विगतशोक. यावद् विपुलान् भोगभोगान्=शब्दादि
विषयान् भुञ्जानो विहरति० ।

दीवदेवयाउवसग्ग च जिणरक्खियवित्ति च लवणसमुद्र उत्तरण
च-चपागमण च सेलगजक्खआपुच्छण च जहाभूयमवितहमसदिद्ध
परिकहेइ) तब जिनपालित ने माता पिता से लवणसमुद्र में उतरने
से लेकर अचानक कालिक वायुका उठना नौका का नष्ट होना काष्ठ
फैलक का मिलना उसकी सहायता से रत्नद्वीप में उतरना वहा रयणा
देवी के द्वारा अपना ग्रहण होना उसके साथ भोग रूप विभूति का
भोगना, बाद में रयणा देवी के वधस्थान का देखना वहा शूलारोपित
पुरुष को देखना, शैलक यक्ष की पीठ पर चढ़ना रयणा देवी का उपसर्ग
करना, जिन रक्षित का मरण होना अपना लवणसमुद्र का पार करना
चंपा नगरी में पीछे आना और शैलकयक्ष का पुत्र कर अपने स्थान
वापिस चले जाना यहा तक का सब वृत्तांत जैसा हुआ था ठीक २
विना किसी सदेह के उस ने सुना दिया । (तएण से जिणपालिए
जाव अप्पसोगे जाव विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ) इस के
बाद शोक रहित बना हुआ वह जिनपालित विपुल शब्दादि विषयों

वित्ति च लवणसमुद्र उत्तरण च चपागमण च सेलगजक्खआपुच्छण च जहा
भूयमवितहमसदिद्ध परिकहेइ)

त्यारे अनपाविते मातापिताने लवण समुद्रमा यात्रा करती वधते
आश्रिता पर्वतनी अथडामणुथी नाव डूबी ज्वाना अकरमातथी भाडीने लाक
डानी सहायताथी रत्नद्वीपना किनारा सुधी पडोयवु रयणा देवीनी लपेटमा
इसाववु, तेनी साथे काम लोगे। लोगरवा, रयणा देवीना वधस्थानने जेवु,
शूणी उपर लटकता भाणुसने जेवु, शैलक यक्षना पीठ उपर जेसवु, रयणा
देवीने उत्पात करवे, अनरक्षितनु भरणु थवु सकुगण पोतानी लवण समुद्र
यात्रा पूरी करवी, चंपा नगरीमा आववु अने शैलक यक्षनु तेने पूछीने इरी
रत्नद्वीप तरइ रवाना थवु अडीं सुधीनी जेडे जेड वात तेणे कही सभणावी
(तएण से जिणपालिए जाव अप्पसोगे जाव विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ)
त्यारेणाह निश्चित थयेले अनपालित शब्द वगेरे विषयेने प्रभा

तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरः समंस्तुतः चम्पाया
समागतः । जिनपालितो धर्मं श्रुत्वा प्रजित एकादशाङ्गित्वाभावाद्वादि शस्त्रा
ज्ञाननिपुणो जातः । मासिकया सलेखनया कालं कृत्वा सौधर्मे कल्पे = पथमदव-
लोके 'दो सागरोवमे' द्विसागरोपमक = द्विसागरोपमस्थितिः देवो जातः ।
महाविदेहे सेत्स्यति = सिद्धो भविष्यति । एवमेव = अनेनैव प्रकारेण हे श्रमणा आर्यु
धन्त ! योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा यावत् प्रजितः सन् मानुष्यकान् कामभोगान्
परित्यक्तान् नो पुनरपि 'आसायड' आसादयति = प्राप्नोति नो सेवत इत्यर्थः, स
खलु यावद् 'वीडवडस्सड' व्यतिप्रजिष्यति = व्यतिक्रमिष्यति ससारस्य पार
गमिष्यतीत्यर्थः यथा वा स जिनपालितः । इत्थमत्र दृष्टान्तयोजना—

को-कामे सुखो को भोगता हुआ अपने समय को व्यतीत करने लगे।
(तेण कालेण तेण समएण समणे० समोसडे, धम्म सोच्चा पच्चाइए, एका
रसगवी मासिकयाएण सोहम्मे कप्पे दो सागरोवमे, महाविदेहे
सिज्झहिइ-एवामेव समणाउसो ! जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणे-
रवि आसायड, सेण जाव वीडवडस्सड, जहा वा से जिणपालिए !
एव खलु जवू ! समणे ण भगवया महावीरेण नवमस्म नायज्झयणस्स
अयमट्ठे पणत्ते त्तिवेमि) उसी काल और उसी समय में श्रमण
भगवान् महावीर चम्पा नगरी में आये । जिन पालित धर्म का उपदेश
सुन कर दीक्षित हो गया । ग्यारह अंग का धीरे २ वह ज्ञाता भी बन
गया । अन्त में एक मास की सलेखना की सलेखना से ६० साठ भक्तों
का छेदन कर जब काल किया-ता प्रथम देवलोक में दो सागरोपम की
स्थिति वाला देव में उत्पन्न हुआ । यह महा विदेह में सिद्धी गति को

लुभा लोगवतो सुजेथी पोताने वणत यमार डरवा लाग्ये।

(तेण कालेण तेण समएण समणे० समोसडे, धम्म सोच्चा पच्चाइए एका
रसगवी मासिकयाएण सोहम्मे कप्पे दो सागरोवमे महाविदेहे सिज्झहिइ-
एवामेव समणाउसो ! जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरवि आसायड, से ण
जाव वीडवडस्सड, जहावा से जिणपालिए ! एव खलु जवू ! समणेण भगवया
महावीरेण नवमस्म नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते त्तिवेमि)

ते क्षणे अने ते समये श्रमणु लगवान् महावीर अपानगरीमा आव्या
एनपालित तेमने। उपदेश सासणीने दीक्षित थड गये। धीमे धीमे तेले
अगियारे अंगानु ज्ञान भोगवी लीधु छेवटे ओड भासनी तेले स लेखना करी
स लेखनाथी ६० साठ लक्षणोनु छेदन करीने क्षण डर्यो त्यागे प्रथम देवलोकमा
जे सागरोपमनी स्थितिवाणा देव तरीडे ते उत्पन्न वये। अविष्यमा ते महा

યથા લાભાર્થિનો વણિજો તથા શિવસુખાર્થિનો જીવો । યથા સમુદ્રયાત્રા તથા સસારયાત્રા યથા રત્નદ્વીપદેવતા મહાપાપા તથા અવિરતિ રાપાતસુખા પરિણામદુઃખા । યથા - આઘાતસ્થાનભય તથા જન્મમરણભયમ્ । યથા રત્નાદેવી ચરિતાનુભવી શૂલારોપિતપુરુષસ્તથા અવિરતિ પરિણામવોધક ભયમ્ । યથા દેવીહસ્તાન્નિસ્તારકઃ શૈલકચક્ષસ્તથા ધર્મોપદેશકોઽન્નાવિરતિપરિણામજનિત

કો પ્રાપ્ત કરેગા । હસ તહર હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જો હમારા નિગ્રંથ શ્રમણ અથવા નિગ્રંથ શ્રમણી જન યાવત્ પ્રવ્રજિત હોતા હુઆ પરિત્યક્ત મનુષ્ય ભવ સથન્ધી કામભોગોં કા પુનઃ સેવન નહીં કરતા હૈ વહ જિન પાલિત કી તરહ હસ સસાર કે પાર પહુંચેગા । દૃષ્ટાન્ત કી યોજના યહા હસ પ્રકાર સે કર લેની ચાહિયે જિસ પ્રકાર લાભ કે અર્થો વણિક્ જન હોતે હૈં ઉસી પ્રકાર શિવ સુખ કે અર્થો જીવ હોતે હૈં । જિસ પ્રકાર સમુદ્ર યાત્રા હૈં ઉસી પ્રકાર સસાર યાત્રા હૈં । સમુદ્ર યાત્રા મેં જૈસે પાપિની રચના દેવી કા મિલાપ હુઆ-ઉસી પ્રકાર હસ સસાર યાત્રા મેં આપાત સુખ દાયક ઓર પરિણામ મેં દુઃખદાયક અવિરતિ કા જીવોં કો સમાગમ હો રહા હૈં । વહાં જૈસે વધ્યસ્થાન કા ભય જિન પાલિત એવ જિન રક્ષિત કો હુઆ, ઉસી તરહ હસ સસાર યાત્રા મેં ભી પ્રત્યેક જીવ કો જન્મમરણ કા ભય લગા હુઆ હૈં । જિસ પ્રકાર રચના દેવી કે ચરિત કા અનુભવી વહ શૂલારોપિત પુરુષ હમેં વહા દિખાઈ દેતા હૈં હસી પ્રકાર યહા ભી અવિરતિ કે પરિણામ કા વોધક ભય હમેં સતત સચેત કરતા

વિદેહમા સિદ્ધિ ગતિ મેળવશે આ રીતે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ શ્રમણ અથવા નિર્ગ્રંથ શ્રમણીજનો પ્રવ્રજીત થઈને દીક્ષા વખતે ત્યજેલા મનુષ્ય ભવ સથન્ધી કામભોગોનું ફરી સેવન કરતો નથી તે અનપાલિતની જેમ આ સસારને પાર થશે આ દૃષ્ટાન્તને અહીં આ રીતે બેમાડવું બેઠાં છે જેમ વણિકજનો (વેપારીઓ) લાભને ઈચ્છનારા હોય છે તેમ શિવસુખને ઈચ્છનારા હોય છે સમુદ્ર યાત્રાની જેમ જ આ સસાર યાત્રા પણ છે સમુદ્ર યાત્રામાં જેમ પાપણી રચણા દેવી મળી તેમ આ સસાર યાત્રામાં શરૂ આતમા સુખદાયક અને પરિણામમાં હુ ખદાયક અવિરતિનો સમાગમ આવે થતો રહે છે વધસ્થાનમાં જેમ અનપાલિત અને અનરક્ષિત ભયત્રસ્ત થયા તેમ આ સસાર યાત્રામાં પણ હરેકે હરેક આવે જન્મ-મરણની બીક રહે છે જેમ રચણા દેવીના ફૂર વ્યવહારને અનુભવનારો શૂળી ઉપર લટકતો માણસ તેમણે બેથે તેમ આ સસારમાં પણ અવિરતિના પરિણામનો બોધક ભય આપણને સતત સાવધ કરતો રહે છે જેમ દેવીની લપેટમાંથી મુક્ત કરનાર શૈલક ચક્ષુને

દુઃખ નિસ્તારકો ગુરુઃ । યથા દેવીમોહિતર્જિનરક્ષિતસ્તથા-અવિરતિમોહિતમતિ-
ર્મુનિઃ । યથા શૈલકરૂપાશ્વપૃષ્ઠચ્યુતો જિનરક્ષિતસ્તથા ગુરુપદિષ્ટજ્ઞાનાદિપશ્ચાચાર
બ્રહ્મો મુનિ । યથા રત્નાદેવ્યા તીક્ષ્ણકરવાલેન ગગને સ્વઙ્કશઃ કૃત તદગ્ન પરિતઃ
પ્રક્ષિપ્ત નાનાવિધમકુરાદિ શ્વાપદસકુલે સમુદ્રે પતતિ તથા-અવિરત્યા વિપમપરિણા-
મેન નરકાવાસે સ્વઙ્કશઃ કૃત શરીરમનુભવન્નમૌ જમજરામરણાધનન્તદુઃખસમાકુલે
સસારે નિપતતિ । યથા દેવી કૃતોપસર્ગૈરશ્લુઘ્ધો જિનપાત્તિઃ સ્વસ્થાન જીવિત-

રહતા હૈ । जिस प्रकार देवी के हाथ से छुड़ाने वाला वहां शैलक यक्ष
कहा गया है इसी प्रकार यहां भी धर्म के उपदेशक एव अविरति
परिणाम जनित दुःखसे निस्तारक ये गुरुजन प्रकट किये गये हैं । जिस
प्रकार जिन रक्षित देवी के द्वारा मोहित किया गया हमें कहा गया है
उसी प्रकार यहां भी अविरति के द्वारा मोहित मुनिजन समझाये
गये हैं । जिस प्रकार शैलकरूप अश्व की पीठ पर से जिन रक्षित
च्युत हुआ प्रकट किया गया है उसी प्रकार गुरुपदिष्ट ज्ञानादिक पांच
आचार से ब्रह्म बना हुआ मुनि यहां हमें समझाया गया है । जिस
प्रकार रत्ना देवी की तलवार से खंड २ किये गये जिन रक्षित के अग
उपाग इधर उधर प्रक्षिप्त होकर नाना विध मकरादिश्वापद से सकुल
हुए समुद्र में गिरे हैं उसी प्रकार अविरति के विपम परिणाम से
नरकावास में खंड २ किये गये शरीरका अनुभव करता हुआ भी यह
जीव जन्म, जरा, और मरण, आदि अनन्त दुःखों से व्याप्त हुए ससार
में पतित होता है । जिस प्रकार रघुना देवी कृत उपसर्गों से अश्लुब्ध

આપણે જોયો તેમ અહીં પણ ધર્મના ઉપદેશક અને અવિરતિ પરિણામ જનિત
દુઃખમાથી મુક્ત કરનારા ગુરુજનો પ્રગટ કરવામા આવ્યા છે જેમ દેવીના
મોહવાશની લપેટમા પડેલો અનરક્ષિત છે તેમજ અહીં પણ અવિરતિ વડે
મોહિત થયેલા મુનિઓ જોવામા આવે છે જેમ શૈલક યક્ષ રૂપી ઘોડાની પીઠ
ઉપરથી ખસી પડેલા અતરક્ષિતનુ વર્ણન ઉપર પ્રગટ કરવામા આવ્યું છે તેમજ
આ સસારમા પણ ગુરુપદિષ્ટ જ્ઞાન વગેરે પાત્ર આચારોથી બ્રહ્મ થયેલો મુનિ
સમજવો જોઈએ જેમ રત્નાદેવીની તલવારથી કાઢા થયેલા અનરક્ષિતના અગો
ઉપાગો ઘણી જાતના મગર વગેરે જોવાથી વ્યાપ્ત સમુદ્રમા આમતેમ ફેંકવામા
આવ્યા છે તેમજ અવિરતિના વિપમ પરિણામથી નરકવાસમા શરીરના કાકડાઓ
કરવામા આવે છે છતાંએ તે દુઃખને અનુભવતો આ જીવ જન્મ, જરા (ઘડપણ)
મરણ વગેરે અનન્ત દુઃખોથી વ્યાપ્ત થયેલા આ સસારમા ફરી આવી પડે છે
જેમ રચણા દેવીના ઉપસર્ગોથી અશ્લુબ્ધ થઈને અનપાતિત પોતાને ઘેર સંકુચળ

યથા લાભાર્થિનો વણિજો તથા શિવસુત્વાર્થિનો જીવો । યથા સમુદ્રયાત્રા તથા સસારયાત્રા યથા રત્નદ્વીપદેવતા મહાપાપા તથા અવિરતિ રાપાતસુખા પરિણામદુઃખા । યથા - આઘાતસ્થાનભય તથા જન્મમરણભયમ્ । યથા રત્નાદેવી ચરિતાનુભવી શૂલારોપિતપુરુષસ્તથા અવિરતિ પરિણામબોધક ભયમ્ । યથા દેવીહસ્તાન્નિસ્તારકઃ શૈલકચક્ષસ્તથા ધર્મોપદેશકોઽન્નાવિરતિપરિણામજનિત કો પ્રાપ્ત કરેગા । હસ તહર હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જો હમારા નિગ્રન્થ શ્રમણ અથવા નિગ્રન્થ શ્રમણી જન યાવત્ પ્રવ્રજિત હોતા હુઆ પરિત્યક્ત મનુષ્ય ભવ સથન્ધી કામભોગોં કા પુનઃ સેવન નહીં કરતા હૈ વહ જિન પાલિત કી તરહ હસ સસાર કે પાર પહુંચેગા । દૃષ્ટાન્ત કી યોજના યહા હસ પ્રકાર સે કર લેની ચાહિયે જિસ પ્રકાર લાભ કે અર્થો વણિક્ જન હોતે હૈં ઉસી પ્રકાર શિવ સુખ કે અર્થો જીવ હોતે હૈં । જિસ પ્રકાર સમુદ્ર યાત્રા હૈં ઉસી પ્રકાર સસાર યાત્રા હૈં । સમુદ્ર યાત્રા મેં જૈસે પાપિની રચણા દેવી કા મિલાપ હુઆ-ઉસી પ્રકાર હસ સસાર યાત્રા મેં આપાત સુખ દાયક ઓર પરિણામ મેં દુઃખદાયક અવિરતિ કા જીવોં કો સમાગમ હો રહા હૈં । વહાં જૈસે વધ્ધસ્થાન કા ભય જિન પાલિત એવ જિન રક્ષિત કો હુઆ, ઉસી તરહ હસ સસાર યાત્રા મેં ભી પ્રત્યેક જીવ કો જન્મમરણ કા ભય લગા હુઆ હૈં । જિસ પ્રકાર રચણા દેવી કે ચરિત કા અનુભવી વહ શૂલારોપિત પુરુષ હમે વહા દિખાઈ દેતા હૈં હસી પ્રકાર યહાં ભી અવિરતિ કે પરિણામ કા બોધક ભય હમેં સતત સચેત કરતા

વિદેહમા સિદ્ધિ ગતિ મેળવશે આ રીતે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ઐશ્ય શ્રમણ અથવા નિર્ઐશ્ય શ્રમણીજનો પ્રવ્રજીત થઈને દીક્ષા વખતે ત્યજેલા મનુષ્ય ભવ સથન્ધી કામભોગોનું ફરી સેવન કરતો નથી તે જનપાલિતની જેમ આ સસારને પાર થશે આ દૃષ્ટાન્તને અહીં આ રીતે બેસાડવું જોઈએ કે જેમ વણિકજનો (વેપારીઓ) લાભને ઈચ્છનારા હોય છે તેમ શિવસુખને ઈચ્છનારા જીવો હોય છે સમુદ્ર યાત્રાની જેમ જ આ સસાર યાત્રા પણ છે સમુદ્ર યાત્રામાં જેમ પાપણી રચણા દેવી મળી તેમ આ સસાર યાત્રામાં શરૂ આતમા સુખદાયક અને પરિણામમાં દુઃખદાયક અવિરતિનો સમાગમ જીવને થતો રહે છે વધસ્થાનમાં જેમ જનપાલિત અને જનરક્ષિત ભયત્રસ્ત થયા તેમ આ સસાર યાત્રામાં પણ દરેકે દરેક જીવને જન્મ-મરણની ખીડ રહે છે જેમ રચણા દેવીના ફર વ્યવહારને અનુભવનારો શૂળી ઉપર લટકતો માણસ તેમજુ જીવો તેમ આ સસારમાં પણ અવિરતિના પરિણામનો બોધક ભય આપણને સતત સાવધ કરતો રહે છે જેમ દેવીની લપેટમાંથી મુક્ત કરનાર શૈલક ચક્ષુને

અથ દશમમધ્યયનમ્ પ્રારમ્ભયતે ।

ગત નવમમ-યયનમ્, સામ્પ્રત દશમમારમ્ભયતે, તસ્ય પૂર્વેણ સહાય સમ્બન્ધઃ—
પૂર્વમવિરતિ-વિરતિમતોર્હાનિલાભો પ્રોક્તૌ, અત્રતુ પ્રમાદાપ્રમાદવતોર્ગુણહાનિ-તદ્
વૃદ્ધિરૂપાવનર્થાર્થોવર્ણયતિ, તત્ર જમ્બૂસ્વામી સુધર્મસ્વામિન પૃચ્છતિ—‘જરૂણ ભતે’
इत्यादि ।

મૂલમ્—જરૂણ ભતે । સમણેણં ૦ ણવમસ્સ ણાયઙ્ગયણસ્સ
અયમટ્ટે પપ્પત્તે દસમસ્સ કે અટ્ટે ૦ ?, એવ યલ્લુ જલ્લુ । તેણં
કાલેણ તેણ સમણં રાયગિદ્દે નગરે સામી સમોસઢે ગોયમસામી
એવ વયાસી—કહણ્ણ ભતે । જીવા વઢ્ઢતિ વા હાયાંતિ વા ?,
ગો ૦ । સે જહા નામણ વહુલપક્કલ્લસ્સ પાડિવયાચ્છદે પુણિમા-
ચ્છંદ પણિહાય હીણો વણ્ણેણ હીણે સોમ્મયણ હીણે નિચ્છયાણ

દશમ અધ્યયન પ્રારમ્ભ ।

નૌવા અધ્યયન સમાપ્ત હાં ચુકા—અવ દશમા અધ્યયન પ્રારમ્ભ હોતા
હૈ । હસ કા પૂર્વ અધ્યયન કે સાથ હસ પ્રકાર સચન્ધ હૈ—પહિલે અવિ-
રતિ વાલે કો હાનિ એવ વિરતિ વાલે કો લાભ કી પ્રાપ્તિ હોના કહા
ગયા હૈ અવ હસ અધ્યયન મેં યહ કહતે હેં કિ જો પ્રમાદિ હોતા હૈ
હસકે ગુણોંકે હાનિ હોતી હૈ, ઓર જો અપ્રમાદી હોતા હૈ હસ કે ગુણોં
કી વૃદ્ધિ હોતી હૈ । હસ તરહ ગુણ હાનિ ઓર તદ્ વૃદ્ધિ રૂપ અર્થ અનર્થ
કા વર્ણન સૂત્રકાર હસ અ યયન મેં કર રહે હૈ । જમ્બૂ સ્વામી હસી વાત
કો શ્રી સુધર્મા સ્વામી સે પ્રૂઝ રહે હેં ।

દશમુ અધ્યયન પ્રારભ

નવમુ અધ્યયન પુરૂ થયુ છે અને હવે દશમુ અધ્યયન પ્રારભ કરીએ
છીએ દશમા અધ્યયનનો એના પહેલાના અધ્યયન સાથે આ પ્રમાણેનો
સબંધ છે—પહેલાના અધ્યયનમા અવિરતિવાળાને હાનિ (નુકસાન) અને
વિરતિવાળાને લાભની પ્રાપ્તિ થાય છે તેમ દર્શાવવામા આવ્યુ છે હવે આ
અધ્યયનમા એ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવશે કે જે પ્રમાદી હોય છે તેના ગુણોને
હાનિ પહોચે છે અને જે અપ્રમાદી હોય છે તેના ગુણો વૃદ્ધિ પામે છે આ
રીતે સૂત્રકાર આ અધ્યયનમા ગુણોની હાની અને ગુણોની વૃદ્ધિરૂપ અર્થ અનર્થનું
વર્ણન કરી રહ્યા છે જમ્બૂ સ્વામી સુધર્માસ્વામીને એ જ વાત પૂછી રહ્યા છે—

સુખં ચે પ્રાપ્તઃ સન્ પશ્યાન્મોક્ષપદગામ્યમાત્, તથા-અવિરતિ કૃતોપસર્ગૈરક્ષુબ્ધ
સુસયમી-મુનિર્મોક્ષસ્થાન શિવસુખ ચ પ્રાપ્સ્યતીતિ ।

एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण नवमस्य ज्ञाताध्यायनस्य
अयम्पूर्वोक्त अर्थः=भावः प्रकृतः=रूपित । 'तिनेमि' इति त्रीमि पूर्वम् । सू० १९ ॥

इति श्री-निश्वसिख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धाचार्यपञ्चदशभाषाकलितकलितक-

लापात्रापर-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-यादिमानमर्दन-श्रीशाहूच्छ

प्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोल्हापुरराज

गुरु-गालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-वासीलाञ्छ-

प्रतिविरचिताया ‘ ज्ञाताधर्मकथा ’ सूत्रस्यानगारधर्माभूतव-

र्षिण्याख्याया व्याख्याया नवममध्ययनसंपूर्णम् ॥ ९ ॥

વનો જિને પાલિતે અવને સ્થાન પર સફુશલે લોટ આયા ઓર વહા ઉસ
ને અવને જીવન કા સુખ ભોગા-પશ્ચાત્ વહી મોક્ષપદ ગામી મી હુઆ
ઉસી તરહ અવિરતિ કૃત ઉપસર્ગોં સે અક્ષુબ્ધ વના હુઆ સુસયમી મુનિ
મોક્ષસ્થાન કો પ્રાપ્ત કરે શિવ સુખ કો ભોક્તા વનેગા । ડસ પ્રકારે હે
જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને હસ નવમ જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ-
પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રતિપાદિત કિયા હૈ । ઉસી કે અનુસાર યહ મૈને
તુમ્હે સમજાયા હૈ । સૂત્ર ॥ ૧૦ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત “ જ્ઞાતા-
ધર્મકથાજ્ઞસૂત્ર ” કી અનગારધર્માભૂતવર્ષિણી વ્યાખ્યા કા નવવા
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૯ ॥

પ્રાપ્તો, આવ્યો, ત્યા તેણે સુખેથી પોતાના દિવસો પસાર કર્યા અને છેવટે મોક્ષ
મેળવ્યો તેમજ અવિરતિકૃત ઉપસર્ગોંથી નિર્લીક થયેલો સુસયમી મુનિ મોક્ષ
સ્થાનને મેળવીને શિવમુખને ઉલ્લેખ કરશે આ રીતે હે જંબૂ ! શ્રમણ-
ભગવાન મહાવીરે નવમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે
તે મુજબ જ મેં તને બધી વિગત સમજાવી છે ॥ સૂ. ૧૦ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્માભૂતવર્ષિણી
વ્યાખ્યાનુ નવમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૯ ॥

टीका—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण नवमस्य ज्ञाता-
ध्ययनस्यायम्=पूर्वोक्तप्रकारः अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः=कथित, स मया श्रुतः, किन्तु
दशमस्य ज्ञाता ययनस्य कोऽर्थः=को भावः ? प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मास्वामी प्राह—एव
खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे नगरे 'सामी' स्वामी=
श्रीमहावीरस्वामी 'समोसढे समससुत =समागतः, तदा गौतमस्वामी एवमवादीत—
कथं खलु=केन प्रकारेण हे भदन्त ! जीवा 'वड्ढति वा' वर्द्धन्ते=वृद्धिमाप्नु-
वन्ति वा, 'हायति वा' हीयन्ते=हानिं प्रप्नुवन्ति वा ? जीवा द्रव्यतोऽनन्तत्वेन,
प्रदेशतश्चापि प्रत्येकमसङ्ख्यात प्रदेशत्वेनावस्थितपरिमाणत्वाद् वृद्धिहानिं प्राप्नु-
नार्हन्ति, किन्तु क्षान्त्यादिगुणानां वृद्ध्या वर्द्धन्ते, हान्या तु हीयन्त इति० ।

‘जइण भते ! समणेण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते) यदि हे भदन्त ! (समणेण० णवमसस णाय-
जयणसस अयमढ्ढे) श्रमण भगवान् महावीर ने नवम ज्ञाताध्ययन का
पूर्वोक्त रूप से यह अर्थ प्ररूपित किया है तो (दसमसस के अढ्ढे)० ?
दशवें ज्ञाताध्ययन का उन्होंने ने क्या भाव अर्थ कहा है ? हम प्रकार
जम्बू स्वामी के प्रश्न को सुनकर श्री सुधर्मास्वामी उन्हें समझाने के
अभिप्राय से कहते हैं कि (एव खलु जम्बू !) हे जम्बू सुनो तुम्हारे प्रश्न
का उत्तर इस प्रकार है—(तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नगरे
सामी समोसढे-गोयमसामी एव वयासी) उस काल में और उस
समय में राजगृह नाम के नगर में श्री भगवान् महावीर स्वामी पधारे
उस समय गौतम स्वामी ने उन से ऐसा पूछा (कइण भते ! जीवा
वड्ढति, वा हायति वा ? गो० से जहा नामण बहुलपक्खसस पाडिवया

“जइण भते ! समणेण” इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते !) जे हे भदन्त ! (समणेण० णवमसस णायजयणसस
अयमढ्ढे) श्रमण भगवान् महावीर ने नवमा ज्ञाताध्ययनने पूर्वोक्त रूपे अर्थ
निर्दिष्ट किये छे तो (दसमसस के अढ्ढे ?) दशमा ज्ञाताध्ययनने तेओओ गो-
भाव अर्थ निर्दिष्ट किये छे आ प्रमाणे जम्बू स्वामीना प्रश्नने सालीने
श्री सुधर्मास्वामी तेमने णधी वातनी स्पष्टता कएवाना छेनुया छे छे
(एव खलु जम्बू !) छे जम्बू भालणे तभारा प्रश्नने जवाण आ प्रमाणे छे छे
(तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नगरे सामी समोसढे गोयमसामी एव वयासी)
ते काले आने ते समये राजगृह नामे नगरमा श्री भगवान् महावीर स्वामीनी
पधराभणी थछ ते समये गौतम स्वामीओ तेमने प्रश्न किये छे—

(कइण भते ! जीवा वड्ढति, वा हायति वा ? गो० से जहानामण बहुल-

हीणे कंतीए एवंदितीए जुईए छायाए पभाए ओयाए लेस्साए
 मंडलेण तयाणतर च णं वीयाचंदे पाडिवय चंद पणिहाय
 हीणतराय वण्णेण जाव मंडलेण तयाणतरं च ण तइआचंदे
 विइयाचंद पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव मंडलेणं, एवं
 खलु एएण कमेण परिहायमाणे २ जाव अमावस्ताचदे चाउद्दसं-
 चंद पणिहाय नट्टे वण्णेणं जाव नट्टे मंडलेण, एवामेव सम
 णाउसो । जो अम्ह निग्गथो वा निग्गंथी वा जाव पठ्वइए
 समाणे हीणे खतीए एव सुत्तीए गुत्तीए अज्जवेण महवेणं
 लाघवेण सच्चेण तवेण चियाए अकिचयणयाए वभचेरवासेणं
 तयाणंतर च ण हीणतराए खतीए जाव हीणतराए वभचेर
 वासेणं, एव खलु एएण कमेण परिहायमाणे २ णट्टे खतीए
 जाव णट्टे वभचेरवासेणं, जहा वा सुक्कपक्खस्स पाडिवयाचदे
 अमावासाए चंद पणिहाय अहिए वण्णेण जाव अहिए मंड-
 लेणं तयाणतर च णं विइयाचदे पडिवयाचंद पणिहाय अहि-
 ययराए वण्णेणं जाव अहियतराए मंडलेणं एव खलु एएण
 कमेणं परिवुड्ढेमाणे २ जाव पुण्णिमाचदे चाउद्दसि चंद पणि-
 हाय पडिपुण्णे वण्णेण जाव पडिपुण्णे मंडलेण एवामेव सम-
 णाउसो । जाव पठ्वइए समाणे अहिए खतीए जाव वभ-
 चेर वासेण, तयाणतर च णं अहिययराए खतीए जाव वभ-
 चेरवासेण, एव खलु एएण कमेणं परिवुड्ढेमाणे २ जाव पडिपुन्ने
 वभचेरवासेण, एव खलु जीवा वड्ढति वा हायति वा, एव खलु
 जब्बु । समणेण भगवया महावीरेण दसमस्स णायज्झयणस्स
 अयमट्ठे पणत्ते त्तिवेमि ॥ सू० १ ॥

॥ दसम णायज्झयण समत्त ॥

टीका—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण नवमस्य ज्ञाता-
ध्ययनस्यायम्=पूर्वोक्तप्रकारः अर्थः=भावः प्रज्ञप्त =स्थित, स मया श्रुतः, किन्तु
दशमस्य ज्ञाता ययनस्य कोऽर्थः=को भावः ? प्रज्ञप्त ? । सुधर्मास्वामी प्राह—एव
खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे नगरे 'सामी' स्वामी=
श्रीमहावीरस्वामी 'समोसठे समसुत्त =समागतः, तदा गौतमस्वामी एवमवादीत—
कथं खलु=केन प्रकारेण हे भदन्त ! जीवाः 'वृद्धिं वा' वर्द्धन्ते=वृद्धिमाप्नु-
वन्ति वा, 'हायति वा' हीयन्ते=हानिं प्राप्नुवन्ति वा ? जीवा द्रव्यतोऽनन्तत्वेन,
प्रदेशतश्चापि प्रत्येकमसङ्ख्यात प्रदेशत्वेनावस्थितपरिमाणत्वाद् वृद्धिहानिं प्राप्तु-
नार्हन्ति, किन्तु क्षान्त्यादिगुणानां वृद्ध्या वर्द्धन्ते, हान्या तु हीयन्त इति० ।

‘जहण भते ! समणेण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(जहण भते) यदि हे भदन्त ! (समणेण० णवमस्स णाय-
ज्झयणस्स अयमट्ठे) श्रमण भगवान् महावीर ने नवम ज्ञाताध्ययन का
पूर्वोक्त रूप से यह अर्थ प्ररूपित किया है तो (दसमस्स के अट्ठे)० ?
दशवें ज्ञाताध्ययन का उन्होंने ने क्या भाव अर्थ कहा है ? इस प्रकार
जम्बू स्वामी के प्रश्न को सुनकर श्री सुधर्मास्वामी उन्हें समझाने के
अभिप्राय से कहते हैं कि (एव खलु जम्बू !) हे जम्बू सुनो तुम्हारे प्रश्न
का उत्तर इस प्रकार है—(तेण कालेण तेण समणेण रायगिहे नगरे
सामी समोसठे-गोयमसामी एव वयासी) उस काल में और उस
समय में राजगृह नाम के नगर में श्री भगवान् महावीर स्वामी पधारे
उस समय गौतम स्वामी ने उन से ऐसा पूछा (कहण भते ! जीवा
वृद्धि, वा हायति वा ? गो० से जहा नामण पटुलपक्खस्स पाडिवया

“जहण भते ! समणेण” इत्यादि ।

टीकार्थ—(जहण भते !) जे हे भदन्त ! (समणेण० णवमस्स णायज्झयणस्स
अयमट्ठे) श्रमण भगवान् महावीरे नवमा ज्ञाताध्ययनने। पूर्वोक्त इपे अर्थ
निश्चित क्योँ छे तो (दसमस्स के अट्ठे ?) दशमा ज्ञाताध्ययनने। तेओओ शे।
भाव अर्थ निरूपित क्योँ छे आ प्रमाणे जम्बू स्वामीना प्रश्नने सालगीने
श्री सुधर्मास्वामी तेमने णधी वातनी स्पष्टता कयाना छेनुया कडे छे छे
(एव खलु जम्बू !) छे जम्बू आलणे। तभारा प्रश्नने जवाण आ प्रमाणे छे छे
(तेण कालेण तेण समणेण रायगिहे नगरे सामी समोसठे गोयमसामी एव वयासी)
ते काले आने ते समये राजगृह नामे नगरमा श्री भगवान् महावीर स्वामीनी
पधराभणी थय ते समये गौतम स्वामीओ तेमने प्रश्न क्योँ छे—

(कहण भते ! जीवा वृद्धि, वा हायति वा ? गो० से जहानामण पटुल-

અત્યર્થે ભગવાન પૂર્વદાનિદૃષ્ટાન્તમાહ - હે ગૌતમ ! ' ૨૧ જહાનામણ ' તથા-નામકમ્-યથા ચ વહુલપક્ષસ્ય = ઋણપક્ષસ્ય ' પાઙિવ્યાચદે ' પ્રતિપ- પચ્ચન્દ્રઃ પૂર્ણિમાચન્દ્ર પ્રણિધાય-અપેક્ષ્ય, ' પ્રણિધાયે ' તિ ' અપેક્ષ્યે ' ત્યર્થક- મવ્યયમ્ ' પૂર્ણિમાચન્દ્રાપેક્ષ્યેત્યર્થઃ હીન = ન્યૂન, વર્ણન=શુભતારુપેણ, હીનઃ

ચદે પુણિમા ચદ પણિહાય હીણો વર્ણેણ હીણે સોમ્મયાણ હીણે નિદ્ધ યાણ હીણે કત્તીણ એવ દિત્તીણ જુઈણ છાયાણ પમાણ ઓયાણ લેસ્સાણ મહલેણ) હે ભદત ! જીવ કિસ પ્રકાર સે વઢતે હૈં ઓર કિસ પ્રકાર સે ઘટતે હૈં ? જીવ દ્રવ્ય કી અપેક્ષા અનત નેને સે ઓર પ્રદેશ કી અપેક્ષા પ્રત્યેક જીવ દ્રવ્ય અસહ્યાત પ્રદેશ વાલા હોને સે સદા અવસ્થિત પરિણામ વાલા કહા ગયા હૈં-અતઃ હસ સ્થિતિ મેં ન તો ડસ કી વૃદ્ધિ હો સકતી હૈં ઓર ન ડસ કી હાની હી । કિન્તુ યહા જો હસ પ્રકાર કા પ્રશ્ન કિયા ગયા હૈં ડસ કા મન હસ પ્રકાર હૈં, કિ જલ આત્મા મેં ક્ષાત્યાદિ ગુણો કી વૃદ્ધિ હો જાતી હૈં તો ડન કી વૃદ્ધિ સે " જીવ વઢતા હૈં " એસા માન લિયા જાતા હૈં ઓર જલ હન્દી આત્મિક ગુણો કી વૃદ્ધિ આત્મા મેં નહીં હોતી હૈં-કિન્તુ હાનિ રહતી હૈં તો હસ સે જીવ મેં હાનિ હો રહી હૈં એસા માન લિયા જાતા હૈં । હસી અપેક્ષા કો લેકર યહ પ્રશ્ન કિયા ગયા હૈં । અલ ભગવાન હાનિ કો સ્પષ્ટ કરને કે લિયે પહિલે ડસે હી દૃષ્ટાન્ત દ્વારા સમજાતે હૈં-લે કહતે હૈં-હે ગૌતમ ! જૈસે

પ્રલસસ પાઙિવ્યા ચદે પુણિમાચંદ પાણિહાય હીણો વર્ણેણ હીણે સોમ્મયાણ હીણે નિદ્ધયાણ હીણે કત્તીણ એવ દિત્તીણ જુઈણ છાયાણ પમાણ ઓયાણ લેસ્સાણ મહલેણ)

હે ભદત ! જીવો કેવી રીતે વૃદ્ધિ પામે છે અને કેવી રીતે ઁછા થાય છે ? જીવ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અનત હોવાથી અને પ્રદેશની અપેક્ષાએ દરેક જીવ દ્રવ્ય પ્રમદાવાળો હોવાથી હ મેશા અવસ્થિત પરિણામવાળો હોવામા આવ્યો છે એથી આવી સ્થિતિમા તેની વૃદ્ધિ થઈ શકે નહિ અને હાનિ પણ થઈ શકે નહિ પણ અહીં જે પ્રશ્ન કરવામા આવ્યો છે તેનો મતલબ આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે આત્મામા ક્ષાતિ વગેરે શુભો વૃદ્ધિ પામે છે ત્યારે તેમની વૃદ્ધિથી " જીવ વૃદ્ધિ પામે છે " આમ માનવામા આવે છે અને જ્યારે એજ આત્મિક શુભોની વૃદ્ધિ આત્મામા થતી નથી પણ વૃદ્ધિના સ્થાને હાનિ થવા માટે છે ત્યારે " જીવમા હાનિ થઈ રહી છે " એવુ માનવામા આવે છે આ અપેક્ષાથી આ પ્રશ્ન પૂછવામા આવ્યો છે ભગવાન હવે હાનિને સ્પષ્ટ કરવા માટે સૌ પહેલા દૃષ્ટાન્ત વડે સમજાવતા હો છે કે હે ગૌતમ ! જેમ કુણ્ણપક્ષની એકમનો ચદ્ર

‘સૌમ્યયા’ સૌમ્યતા=નેત્રાહ્વાદકતા, હીનઃ સ્નિગ્ધયા’ સ્નિગ્ધતા=સ્નેહોત્પાદકતા, હીન=ન્યૂનઃ ‘વતી’ કાન્ત્યા-કમનીયતા । એવમ્=અને પ્રમાણે હીનશબ્દઃ સર્વત્ર बोध्यः, यथा-हीनो दीप्त्या=प्रकाशेन, हीन ‘जुर्’ દુત્યા=વાચકિયેન, હીનઃ છાયયા=શોભયા, હીનઃ પ્રભયા=જ્યોતિષા, હીન ‘ઓયા’ ઓજસા=દાહશમનરૂપેણ, હીનઃ લેશયા=કિરણરૂપયા, હીનો=ન્યૂનો મણ્ડલેન=વૃત્તાડ્ડકતાયા, પૂર્ણિમાચન્દ્રાડ્ડકતાયા, પ્રતિપ્ત્વચન્દ્રઃ સર્વથા ન્યૂનો ભવતીત્યર્થઃ । તદનન્તર ચ સ્વલુ દ્વિતીયાચન્દ્ર પ્રતિપદ=પ્રતિપત્સમ્બન્ધિન ચન્દ્રે ‘પણિહાય’ પ્રણિધાય=અપેક્ષ્ય હીનતરો=ન્યૂનતરો વર્ણેન યાવદ્ મણ્ડલેન ભવતિ । તદનન્તર ચ સ્વલુ તૃતીયાચન્દ્રો દ્વિતીયાચન્દ્ર પણિધાય હીનતરો વર્ણેન યાવદ્

કૃષ્ણપક્ષ કી પ્રતિપદા કા ચન્દ્રમા પૂર્ણિમા કે ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા શુક્લતા રૂપ વર્ણ સે હીન હોતા હૈ, સૌમ્યતા-નેત્રાહ્વાદકતા-સે હીન હોતા હૈ, સ્નિગ્ધતા-સ્નેહોત્પાદકતા-સે હીન-ન્યૂન-હોતા હૈ, કાતિકમનીયતા સે હીન હોતા હૈ, હસી તરહ દીપ્તિ સે, -દ્યુતિ સે-(ચમક સે)-છાયા-શોભા સે) પ્રભા સે-(જ્યોતિ સે) દાહશમન રૂપ ઓજસ સે, કિરણ રૂપ લેશયા સે, એવ વૃત્તાકારરૂપ અપને પરિમંડલસે હીન રહતા હૈ-(તયાણતર ચ ણ ધીયાચદે પાઙિચય ચદ પણિહાય હીનતરાય વર્ણેણ જાવ મંડલેણ-તયા-ણતર ચ ણ તદ્આચદે વિહયા ચદ પણિહાય હીનતરાય વર્ણેણ જાવ મંડલે ણ એવ સ્વલુ એણ કમેણ પરિહાયમાણે ૨ જાવ અમાવસ્સા ચદે ચાઉદસ પણિહાય નદ્દે વર્ણેણ જાવ નદ્દે મંડલેણ) હસકે વાદ કૃષ્ણ પક્ષ કે પ્રતિપદા કે ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા દ્વિતીયા ચન્દ્રમા વર્ણ સે લેકર ઘાવત્ પરિમંડલ તક ઓર અધિક ન્યૂન બન જાતા હૈ-હસકે વાદ દ્વિતીયા કે ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા તૃતીયા કા ચન્દ્રમા વર્ણ સે લેકર પરિ-

પૂનમના ચન્દ્રની અપેક્ષા શુક્લતા રૂપ વર્ણથી હીન હોય છે સૌમ્યતા-એટલે કે નેત્રાહ્વાદકતાના શુણ્ણથી હીન હોય છે, સ્નિગ્ધતા-સ્નેહોત્પાદકતા-થી હીન-ન્યૂન-હોય છે, કાતિકમનીયતા-થી હીન હોય છે, આ રીતે દીપ્તિથી-દ્યુતિથી-(પ્રકાશથી), છાયા (શોભા) પ્રભાથી (જ્યોતિથી) દાહશમનરૂપ ઓજસથી કિરણ રૂપ લેશયાથી અને વૃત્તાકાર (ગોળાકાર) રૂપ પોતાના પરિમંડલથી હીન રહે છે

(તયાણતરચ ણ ધીયાચદે પાઙિચય ચદ પણિહાય હીનતરાય વર્ણે ણ જાવ મંડલે ણ તયાણતર ચ ણ તદ્આચદે વિહયાચદ પણિહાય હીનતરાય વર્ણેણ જાવ મંડલેણ એવ સ્વલુ એણ કમેણ પરિહાયમાણે ૨ જાવ અમાવસ્સા ચદે ચાઉદસ પણિહાય નદ્દે વર્ણેણ જાવ નદ્દે મંડલેણ)

ત્યાર પછી કૃષ્ણપક્ષની એકમના ચન્દ્ર કરતા બીજનો ચન્દ્ર વધુ પરિમંડળ વગેરે બધી વિશેષતાઓમા વધારે ન્યૂન થઈ પડે છે એ પછી બીજના ચન્દ્ર

અત્યર્થે ભગવાન પૂર્વહાનિદૃષ્ટાન્તમાહ - હે ગૌતમ ! ' રા જહાનામણ ' તથા-નામકમ્-યથા ચ વહુલપક્ષસ્ય = ઋણપક્ષસ્ય ' પાઙિવયાચદે ' પ્રતિપ- પચન્દ્રઃ પૂર્ણિમાચન્દ્ર પ્રણિધાય-અપેક્ષ્ય, ' પ્રણિધાયે ' તિ ' અપેક્ષ્યે ' ત્યર્થક- મવ્યયમ્ ' પૂર્ણિમાચન્દ્રાપેક્ષ્યેત્યર્થઃ હીન. = ન્યૂનઃ, વર્ણેન=યુક્તારૂપેણ, હીનઃ

ચદે પુણિમા ચદ પણિહાય હીણો વર્ણેણ હીણે સોમ્મયાણ હીણે નિદ્ધ યાણ હીણે કતીણ એવ દિત્તીણ જુઈણ છાયણ પમાણ ઓયાણ લેસ્સાણ મહલેણ) હે ભદત ! જીવ કિસ પ્રકાર સે વઢતે હૈં ઓર કિસ પ્રકાર સે ઘટતે હૈં ? જીવ દ્રવ્ય કી અપેક્ષા અનત નેને સે ઓર પ્રદેશ કી અપેક્ષા પ્રત્યેક જીવ દ્રવ્ય અસહ્યાત પ્રદેશ વાલા હોને સે સદા અવસ્થિત પરિણામ વાલા કહા ગયા હૈં-અતઃ હસ સ્થિતિ મેં ન તો ડસ કી વૃદ્ધિ હો સકતી હૈં ઓર ન ડસ કી હાની હી. કિન્તુ યહા જો હસ પ્રકાર કા પ્રશ્ન કિયા ગયા હૈં ડસ કા મત હસ પ્રકાર હૈં, કિ જથ આત્મા મેં ક્ષાત્યાદિ ગુણો કી વૃદ્ધિ હો જાતી હૈં તો ડન કી વૃદ્ધિ સે " જીવ વઢતા હૈં " એસા માન લિયા જાતા હૈં ઓર જથ હન્દી આત્મિક ગુણો કી વૃદ્ધિ આત્મા મેં નહીં હોતી હૈં-કિન્તુ હાનિ રહતી હૈં તો હસ સે જીવ મેં હાનિ હો રહી હૈં એસા માન નિયા જાતા હૈં. હસી અપેક્ષા કો લેકર યહ પ્રશ્ન કિયા ગયા હૈં. અથ ભગવાન હાનિ કો સ્પષ્ટ કરને કે લિયે પહિલે ડસે હી દૃષ્ટાન્ત દ્વારા સમજાતે હે-વે કહતે હૈં-હે ગૌતમ ! જૈસે

પ્રવક્કસ્સ પાઙિવયા ચદે પુણિમાચદ પાણિહાય હીણો વર્ણેણ હીણે સોમ્મયાણ હીણે નિદ્ધયાણ હીણે કતીણ એવ દિત્તીણ જુઈણ છાયણ પમાણ ઓયાણ લેસ્સાણ મહલેણ)

હે ભદત ! ઊવો કેવી રીતે વૃદ્ધિ પામે છે અને કેવી રીતે ઁછા થાય છે ? ઊવ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અનત હોવાથી અને પ્રદેશની અપેક્ષાએ દરેક ઊવ દ્રવ્ય પ્રમદાવાળો હોવાથી હ મેશા અવસ્થિત પરિણામવાળો કહેવામા આવ્યો છે એથી આવી સ્થિતિમા તેની વૃદ્ધિ થઈ રાકે નહિ અને હાનિ પણ થઈ શકે નહિ પણ અહીં જે પ્રશ્ન કરવામા આવ્યો છે તેનો મતલમ આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે આત્મામા ક્ષાતિ વગેરે ગુણો વૃદ્ધિ પામે છે ત્યારે તેમની વૃદ્ધિથી " ઊવ વૃદ્ધિ પામે છે " આમ માનવામા આવે છે અને જ્યારે એજ આત્મિક ગુણોની વૃદ્ધિ આત્મામા થતી નથી પણ વૃદ્ધિના સ્થાને હાનિ થવા માટે છે ત્યારે " ઊવમા હાનિ થઈ રહી છે " એવુ માનવામા આવે છે આ અપેક્ષાથી આ પ્રશ્ન પૂછવામા આવ્યો છે ભગવાન હવે હાનિને સ્પષ્ટ કરવા માટે સી પહેલા દષ્ટાંત વડે સમજાવતા હો છે કે હે ગૌતમ ! જેમ કુણ્ણપક્ષની એકમનો ચદ્ર

‘સૌમ્યયા’ સૌમ્યતા=નેત્રાહ્વાદકતા, હીનઃ નિદ્રયા’ સ્નિગ્ધતા=સ્નેહોત્પાદકતા, હીન=ન્યૂનઃ ‘વતી’ કાન્ત્યા-કમનીયતા । એવમ્=અને પ્રમાણે દીનશબ્દઃ સર્વત્ર વૃદ્ધિઃ, યથા-હીનો દીપ્ત્યા=પ્રમાણે, હીન ‘જુર’ દ્યુત્યા=ચાકચિક્ષેન, હીનઃ છાયા=શોભા, હીન પ્રમાણ=જ્યોતિષા, હીન ‘ઓયા’ ઓજસા=દાહશમનરૂપેણ, હીનઃ લેશ્યા=કિરણરૂપયા, હીનો=ન્યૂનો મણ્ડલેન=વૃત્તાડકતા, પૂર્ણિમાચન્દ્રાપેક્ષયા, પ્રતિપન્ચન્દ્રઃ સર્વથા ન્યૂનો ભવતીત્યર્થઃ । તદનન્તર ચ ચલુ દ્વિતીયાચન્દ્ર પ્રતિપદ=પ્રતિપત્સમ્બન્ધિન ચન્દ્ર ‘પણિહાય’ પ્રણિધાય=અપેક્ષ્ય હીનતરો=ન્યૂનતરો વર્ણેન યાવદ્ મણ્ડલેન ભરતિ । તદનન્તર ચ ચલુ તૃતીયાચન્દ્રો દ્વિતીયાચન્દ્ર પણિધાય હીનતરો વર્ણેન યાવદ્

કૃષ્ણપક્ષ કી પ્રતિપદા કા ચન્દ્રમા પૂર્ણિમા કી ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા શુક્લતા રૂપ વર્ણ સે હીન હોતા હૈ, સૌમ્યતા-નેત્રાહ્વાદકતા-સે હીન હોતા હૈ, સ્નિગ્ધતા-સ્નેહોત્પાદકતા-સે હીન-ન્યૂન-હોતા હૈ, કાતિકમનીયતા સે હીન હોતા હૈ, હમ્ની તરહ દીપ્તિ સે, -દ્યુતિ સે-(ચમક સે)-છાયા-શોભા સે) પ્રમા સે-(જ્યોતિ સે) દાહશમન રૂપ ઓજસ સે, કિરણ રૂપ લેશ્યા સે, એવ વૃત્તાકારરૂપ અપને પરિમંડલસે હીન રહતા હૈ-(તથાનતર ચ ણ ધીયાચદે પાડિવચ ચદ પણિહાય હીનતરાય વર્ણેણ જાવ મંડલેણ-તથા-નતર ચ ણ તડઆચદે વિઢ્યા ચદ પણિહાય હીનતરાય વર્ણેણ જાવ મંડલે ણ એવ ચલુ એણ કમેણ પરિહાયમાણે ૨ જાવ અમાવસ્સા ચદે ચાઉદસ પણિહાય નઠે વર્ણેણ જાવ નઠે મંડલેણ) હમકે વાદ કૃષ્ણ પક્ષ કી પ્રતિપદા કી ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા દ્વિતીયા ચન્દ્રમા વર્ણ સે લેકર યાવત્ પરિમંડલ તક ઓર અધિક ન્યૂન બન જાતા હૈ-હસકે વાદ દ્વિતીયા કી ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા તૃતીયા કા ચન્દ્રમા વર્ણ સે લેકર પરિ-

પૂનમના ચંદ્રની અપેક્ષા શુક્લતા રૂપ વર્ણથી હીન હોય છે સૌમ્યતા-એટલે કે નેત્રાહ્વાદકતાના શુભથી હીન હોય છે, સ્નિગ્ધતા-સ્નેહોત્પાદકતા-થી હીન-ન્યૂન-હોય છે, કાતિકમનીયતા-થી હીન હોય છે, આ રીતે દીપ્તિથી-દ્યુતિથી-(પ્રકાશથી), છાયા (શોભા) પ્રમાથી (જ્યોતિથી) દાહશમનરૂપ ઓજસથી કિરણ રૂપ લેશ્યાથી અને વૃત્તાકાર (ગોળાકાર) રૂપ પોતાના પરિમંડલથી હીન રહે છે

(તથાનતરચ ણ ધીયાચદે પાડિવચ ચદ પણિહાય હીનતરાય વર્ણે ણ જાવ મંડલે ણ તથાનતર ચ ણ તડઆચદે વિઢ્યાચદ પણિહાય હીનતરાય વર્ણેણ જાવ મંડલેણ એવ ચલુ એણ કમેણ પરિહાયમાણે ૨ જાવ અમાવસ્સા ચદે ચાઉદસ પણિહાય નઠે વર્ણેણ જાવ નઠે મંડલેણ)

ત્યાર પછી કૃષ્ણપક્ષની એકમના ચન્દ્ર કરતા બીજો ચન્દ્ર વધુ પરિમંડલ વગેરે બધી વિશેષતાઓમા વધારે ન્યૂન થઈ પડે છે એ પછી બીજાના ચન્દ્ર

અત્યર્થે ભગવાન પૂર્વદાનિદ્ર્યાન્તમાહ ~ હે ગૌતમ ! ' સે જહાનામણ' તથા-નામકમ્-યથા ચ મહુલપક્ષસ્ય = ક્ષણપક્ષસ્ય ' પાડિવયાચદે ' પ્રતિપ-
પચન્દ્રઃ પૂર્ણિમાચન્દ્ર પ્રણિધાય-અપેક્ષ્ય, ' પ્રણિધાયે ' તિ ' અપેક્ષ્યે ' સ્વર્થક-
મવ્યયમ્ ' પૂર્ણિમાચન્દ્રાપેક્ષ્યેત્યર્થઃ હીનઃ = ન્યૂનઃ, ઘર્ણન=ચુકતારૂપેણ, હીનઃ

ચદે પુણિમા ચદ પણિહાય હીણો વળ્લેણ હીણે સોમ્મયાણ હીણે નિદ્ર
યાણ હીણે કતીણ એવ દિત્તીણ જુઈણ છાયાણ પમાણ ઓયાણ લેસ્સાણ
મહલેણ) હે ભદત ! જીવ કિસ પ્રકાર સે વઢતે હે ઓર કિસ પ્રકાર
સે ઘટતે હે ? જીવ દ્રવ્ય કી અપેક્ષા અનત એને સે ઓર પ્રદેશ કી
અપેક્ષા પ્રત્યેક જીવ દ્રવ્ય અસંખ્યાત પ્રદેશ વાલા હોને સે સદા અવસ્થિત
પરિણામ વાલા કહા ગયા હૈ-અતઃ હસ સ્થિતિ મેં ન તો ઉસ કી વૃદ્ધિ
હો સક્તી હૈ ઓર ન ઉસ કી હાની હી । કિન્તુ યહા જો હસ પ્રકાર
કા પ્રશ્ન કિયા ગયા હૈ ઉસ કા મત હસ પ્રકાર હૈ, કિ જથ આત્મા મેં
ક્ષાત્યાદિ ગુણો કી વૃદ્ધિ હો જાતી હૈ તો ઉન કી વૃદ્ધિ સે " જીવ વઢતા
હૈ " એસા માન લિયા જાતા હૈ ઓર જથ હન્ધી આત્મિક ગુણો કી
વૃદ્ધિ આત્મા મેં નહીં હોતી હૈ-કિન્તુ હાનિ રહતી હૈ તો હસ સે જીવ
મેં હાનિ હો રહી હૈ એસા માન લિયા જાતા હૈ । હસી અપેક્ષા કો લેકર
યહ પ્રશ્ન કિયા ગયો હૈ । અથ ભગવાન્ હાનિ કો સ્પષ્ટ કરને કે લિયે
પહિલે ઉસે હી દ્ર્યાન્ત દ્વારો સમજાતે હૈ-વે કહતે હું-હે ગૌતમ ! જૈસે

પ્રવક્ષસ્સ પાડિવયા ચદે પુણિમાચંદ્ર પાણિહાય હીણો વળ્લેણ હીણે સોમ્મયાણ હીણે
નિદ્રયાણ હીણે કતીણ એવ દિત્તીણ જુઈણ છાયાણ પમાણ ઓયાણ લેસ્સાણ મહલેણ)

હે ભદત ! જીવો કેવી રીતે વૃદ્ધિ પામે છે અને કેવી રીતે ઓછા થાય
છે ? જીવ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અનત હોવાથી અને પ્રદેશની અપેક્ષાએ દરેક
જીવ દ્રવ્ય પ્રમદાવાળો હોવાથી હું મેંશા અવસ્થિત પરિણામવાળો કહેવામા આવ્યો
છે એથી આવી સ્થિતિમા તેની વૃદ્ધિ થઈ રહે નહિ અને હાનિ પણ થઈ શકે
નહિ પણ અહીં જે પ્રશ્ન કરવામા આવ્યો છે તેનો મતવચ આ પ્રમાણે છે
કે જ્યારે આત્મામા ક્ષાતિ વગેરે શુભો વૃદ્ધિ પામે છે ત્યારે તેમની વૃદ્ધિથી
" જીવ વૃદ્ધિ પામે છે " આમ માનવામા આવે છે અને જ્યારે એજ આત્મિક
શુભોની વૃદ્ધિ આત્મામા થતી નથી પણ વૃદ્ધિના સ્થાને હાનિ થવા માટે છે ત્યારે
" જીવમા હાનિ થઈ રહી છે " એવું માનવામા આવે છે આ અપેક્ષાથી આ
પ્રશ્ન પૂછવામા આવ્યો છે ભગવાન હવે હાનિને સ્પષ્ટ કરવા માટે સૌ પહેલા
દ્ર્યાન્ત વડે સમજાવતા હો છે કે હે ગૌતમ ! જેમ કુણ્ણપક્ષની એન્નમને ચદ્ર

દ્વાદશવિધેન ‘ચિયાણ’ ત્યાગેન=મુનિવૈયાટ્યકરગલક્ષણેન ‘અકિંચળયાણ’ અકિંચનતયા નિષ્પરિગ્રહતયા વમચેરવાસેન ‘બ્રહ્મચાર્યવાસેન-બ્રહ્મણિ=કામસેવન પરિત્યાગરૂપે ચરણ=વિચરણ ચર્ય બ્રહ્મચર્ય, તત્ર વાસસ્તેન નવવાટિકા વિષુદ્ધમૈથુન વિરમણરૂપેન ‘હીનઃ’ ઇતિ સર્વત્ર સમ્યન્નઃ ક્ષાન્ત્યાદિદશવિધશ્રમણ ધર્મરહિતો ભવતીત્યર્થઃ ।

તદનન્તર ચ સ્વલ્પ સ નિર્ગ્રન્થો વા૦ હીનતરઃ ક્ષાન્ત્યા યાત્ત્ હીનતો બ્રહ્મ ચર્યવાસેન । એવ સ્વલ્પ એતેન ક્રમેણ=ક્રમશઃ પરિહીયમાનઃ ૨ સન્ નટઃ=મર્ગયા રહિતઃ ક્ષાન્ત્યા, યાત્ત્ નટ્ટો બ્રહ્મચર્યવાસેનાપિ ભવતિ । ક્ષાન્ત્યાદિ સર્વગુણરહિતો ભવતીત્યર્થઃ, યથા ચન્દ્રા નિત્યરાહુસસર્ગેન કૃષ્ણપ્રતિપદમારભ્ય પ્રતિદિવમ કલાભિઃ ક્ષીયમાણઃ સન્ કૃષ્ણચતુર્દશ્યપેક્ષયાઽમાયાસ્યાયા વર્ગાદિના યાવન્મળ્હેન નટ્ટો

શનાદિ રૂપ ૧૨ પ્રકાર કે તપ સે, મુનિજનોં કી વૈયાવૃત્તિ કરને રૂપ ત્યાગ સે નિષ્પરિગ્રહ રૂપ અકિંચન્ય ધર્મ સે કામ સેવન પરિત્યાગ રૂપ બ્રહ્મચર્ય મે વાસ કર ને સે-નવ કોટિસે વિશુદ્ધ બને હુણ બ્રહ્મચર્ય કે પાલન સે-હીન હૈ-અર્થાત્ ક્ષાન્તિ આદિ રૂપ દશ પ્રકાર કે યતિ ધર્મ સે રહિત હૈ-(તયાણતર ચ ણ હીણતરાણ સ્વતીણ જાવ હીણતરાણ વમચેરવાસેણ એવ સ્વલ્પ ણણ કમેણ પરિહાયમાણે ૨ ણટ્ટે સ્વતીણ જાવ ણટ્ટે વમચેરવાસેણ) અથવા જો સાધુ યા સા ચી ક્ષાન્તિ સે લેકર બ્રહ્મચર્ય વે ઇસ તરહ ક્રમશઃ હીનર હોતે હુણ ક્ષાન્તિ આદિ વામસે હીનતર હૈ । સે લેકર બ્રહ્મચર્યવાસ પર્યંતકે સમસ્ત ગુણોસે રહિત હો જાતે હૈ । જિસ પ્રકાર નિત્ય રાહુ કે સસર્ગ સે કૃષ્ણપક્ષકી પ્રતિપદા સે લેકર પ્રતિદિન કલાઓ સે પરિક્ષીણ હોતા હુઆ ચન્દ્ર કૃષ્ણચતુર્દશી કી અપેક્ષા અમા

માર્હવથી, અત્પઉપાધિ રૂપ દ્રવ્ય લઘુતાથી, રાગદ્વેષરહિત રૂપ લાવલઘુતાથી અમૃષા લાવણ્ય રૂપ મત્યથી, અનશન વગેરે રૂપ ૧૨ પ્રમારના તપથી મુનિજનોની વૈયાવૃત્તિ કરવા રૂપ નાગથી નિષ્પરીગ્રહ રૂપ અકિંચન ધર્મથી, કામસેવન પરિત્યાગ રૂપ બ્રહ્મચર્યનું વક્ષણ્ય કરવાથી, નવ કોટિથી વિશુદ્ધ બનેલા બ્રહ્મચર્યના પાલનથી હીન છે, એટલે કે ક્ષાન્તિ વગેરે રૂપ દસ જાતના યતિધર્મથી હીન છે

(તયાણતર ચ ણ હીણતરાણ સ્વતીણ જાવ હીણતરાણ વમચેરવાસેણ એવ સ્વલ્પ ણણ કમેણ પરિહાયમાણે ૨ ણટ્ટે સ્વતીણ જાવ ણટ્ટે વમચેરવાસેણ)

અથવા જે સાધુ કે માનીઓ ક્ષાન્તિથી માડીને બ્રહ્મચર્યવાસ મુધીના ગુણોથી હીન છે તેઓ આ ચદ્રની પેઠેજ અનુક્રમે હીન થતા ક્ષાન્તિ વગેરેથી માડીને બ્રહ્મચર્યવાસ મુધીના સર્વે ગુણોથી રહિત થઈ જાય છે જેમ હુમેચા રાહુના સમર્ગથી કૃષ્ણપક્ષની એકમથી માડીને દરરોજ જળાઓની દૃષ્ટિએ ક્ષીણ થતા ચદ્ર કૃષ્ણપક્ષની ચૌદશની અપેક્ષા અમાસના દિવસે વર્ણ પરિમડળ વગેરે

મળ્ડલેન । એવ સલુ એતેન ક્રમેગ પરિહીયમાન ૨ યાવદ્ અમારાસ્યાચન્દ્રઃ ' ચાઉ દર્શિ ' ચાતુર્દશ=ચતુર્દશીસમ્યન્ત્રિને ચન્દ્રપાણિધાય=અપેક્ષ્ય ' નદ્દે ' નદ્દટઃ=વિલુપ્તઃ વર્ણેન યાવત્ નદ્દટો મળ્ડલેન=વૃત્તાકારરૂપેણ ।

' એવામેવ '—એવામેવ=અનેનૈવ પ્રમાણેન હે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ ! યોઽસ્માક નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થો વા યાવત્ પ્રવ્રજિતઃ સન્ હીનઃ ' સ્વતીએ ' જ્ઞાન્ત્યા=ક્ષમયા, એવ હીનઃ ' મુત્તીએ ' મુસ્ત્યા=નિર્લોભતયા ' મુત્તીએ ' મુસ્ત્યા=મનોયોગાદીના કુશલપ્રવૃત્તિલક્ષણયા, યોગનિરોધલક્ષણયા યા, ' અઙ્ગવેણ ' આર્જવેન=સ્ફટિકવદ્ બાહ્યાભ્યન્તરસરલભાવરૂપેણ, ' મદ્દવેણ ' માર્દવેન=નિરભિમાનતાલક્ષણેન, ' લાઘવેણ ' લાઘવેન=દ્રવ્યભાવલઘુતાસપન્નેન-તત્ર-દ્રવ્યતોઽલ્પોપધિકૃત્વેન ભાવતો રાગ દ્વેષરહિતત્વેન, ' સત્ત્વેણ ' સત્યેન=અમૃષાભાષણરૂપેણ, ' તવેણ ' તપસા=અશનાદિ

મળ્ડલ તક ઓર અધિક યૂન હો જાતા હૈ । હસ તરહ ક્રમશઃ હીન હી હોતા હુઆ અમાવસ્યા કા ચન્દ્રમા ચતુર્દશી કે ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા ધિલકુલ વર્ણ આદિ સે લગાકર અપને પરિમળ્ડલ તક વિલુપ્ત બન જાતા હૈ । (એવામેવ સમણાઉસો ! જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગથી વા જાવ પવ્વહ્ણ સમાણે હીણે સ્વતીએ એવ મુત્તીએ અઙ્ગવેણ, મદ્દવેણ, લાઘવેણ સત્ત્વેણ, તવેણ, ચિયાએ, અર્કિચણયાણ, વમ્મચેરવાસેણ) હસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા નિર્ગ્રન્થ અથવા નિર્ગ્રન્થીજન યાવત્ પ્રવ્રજિત હોતા હુઆ યદિ ક્ષમા સે હીન હૈ, મુક્તિ-નિર્લોભતા અથવા મનોયોગદિકોં કી કુશલ પ્રવૃત્તિ રૂપ અથવા યોગનિરોધ રૂપ શુષ્પિ સે સ્ફટિત કી તરહ બાહ્ય એવ આભ્યન્તર મેં સરલ પરિણામ રૂપ આર્જવ સે, નિરભિમાનતા રૂપ માર્દવ સે, અલ્પ ઉપધિ રૂપ દ્રવ્યલઘુતા સે રાગ દ્વેષરહિત રૂપ ભાવ લઘુતા સે, અમૃષાભાષણ રૂપ સત્ય સે, અન-

કરતા ત્રીજનો ચન્દ્ર વણું પરિમડળ બધી બાબતમા વધારે ન્યૂન થઈ જાય છે
આ ગીતે ધીમે ધીમે અનુક્રમે હીન થતા અમાસનો ચન્દ્ર ચૌદશના ચન્દ્ર ડરતા
વણું પરિમડળ વગેરેની દૃષ્ટિએ તદન વિલુપ્ત (અદૃશ્ય) થઈ જાય છે

(એવામેવ સમણાઉસો ! જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગથી યા જાવ પવ્વહ્ણ સમાણે હીણે સ્વતીએ એવ મુત્તીએ શુત્તીએ અઙ્ગવેણ, મદ્દવેણ, લાઘવેણ, સત્ત્વેણ તવેણ, ચિયાએ, અર્કિચણયાએ, વમ્મચેરવાસેણ)

આ રીતે જ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રન્થ અથવા નિર્ગ્રન્થી જન યાવત્ પ્રવ્રજિત થઈને જે ક્ષમારહિત છે, મુક્તિ-નિર્લોભતા અથવા મનોયોગ વગેરેની કુશળ પ્રવૃત્તિ રૂપ અથવા યોગ નિરોધ રૂપ શુષ્પિથી, સ્ફટિકની જેમ બાહ્ય તેમજ આભ્યન્તરમા સરલ પરિણામ રૂપ આર્જવથી રૂપ

દ્વાદશવિધેન ‘ચિયાણ’ ત્યાગેન=મુનિવૈયાટૃત્યકરગલક્ષણેન ‘અકિચ્ચણયાણ’ અકિચ્ચનતયા નિપ્પરિગ્રહતયા વમચેરવામેણ’ બ્રહ્મચાર્યવાસેન-બ્રહ્મણિ=કામસેવન પરિત્યાગરૂપે ચરણ=વિચરણ ચર્ય બ્રહ્મચર્ય, તત્ર વાસસ્તેન નવવાટિકા વિશુદ્ધમૈથુન વિરમણરૂપે ‘હીનઃ’ ઇતિ સર્વત્ર સમ્યગ્નઃ ક્ષાન્ત્યાદિદગવિગ્રમણર્મરહિતો ભવતીત્યર્થ ।

તદનન્તર ચ સ્વલુ સ નિર્ગ્રન્થો વા૦ હીનતરઃ ક્ષાન્ત્યા યાગત્ હીનતો બ્રહ્મ-ચર્યવાસેન । એવ સ્વલુ એતેન ક્રમેણ=ક્રમશઃ પરિહીયમાન’ ૨ સન્ નટ્ટઃ=સર્વથા રહિત ક્ષાન્ત્યા, યાગત્ નટ્ટો બ્રહ્મચર્યવાસેનાપિ ભવતિ । ક્ષાન્ત્યાદિ સર્વગુણરહિતો ભવતીત્યર્થ, યયા ચન્દ્રા નિત્યરાહુસસર્ગેણ કૃષ્ણપ્રતિપદમારભ્ય પ્રતિદિવસ કલાભિઃ ક્ષીયમાણઃ સન્ કૃષ્ણચતુર્દશ્યપેક્ષયાઽમાવાસ્યાયા વર્ણાદિના યાવન્મણ્ડલેન તથો

શનાદિ રૂપ ૮૨ પ્રકાર કે તપ સે, મુનિજનોં કી વૈયાટૃત્તિ કરને રૂપ ત્યાગ સે નિપ્પરિગ્રહ રૂપ અકિચ્ચન્ય વર્મ સે કામ સેવન પરિત્યાગ રૂપ બ્રહ્મચર્ય મે વાસ કર ને સે-નવ કોટિસે વિશુદ્ધ બને હુણ બ્રહ્મચર્ય કે પાલન સે-હીન હૈ-અર્થાત્ ક્ષાન્તિ આદિ રૂપ દશ પ્રકાર કે યતિ ધર્મ સે રહિત હૈ-(તયાણતર ચ ણ હીણતરાણ સ્વતીણ જાવ હીણતરાણ વમચે-રવાસેણ એવ સ્વલુ એણ ક્રમેણ પરિહાયમાણે ૨ ણટ્ટે સ્વતીણ જાવ ણટ્ટે વમચેરવાસેણ) અથવા જો સાધુ યા સાધી ક્ષાન્તિ સે લેકર બ્રહ્મચર્ય વે ઇસ તરહ ક્રમશઃ હીનર હોતે હુણ ક્ષાન્તિ આદિ વાસસે હીનતર હૈ । સે લેકર બ્રહ્મચર્યવાસ પર્યંતકે સમસ્ત ગુણોસે રહિત હો જાતે હૈ । જિસ પ્રકાર નિત્ય રાહુ કે સસર્ગ સે કૃષ્ણપક્ષકી પ્રતિપદા સે લેકર પ્રતિદિન કલાઓં સે પરિક્ષીણ હોતા હુઆ ચન્દ્ર કૃષ્ણચતુર્દશી કી અપેક્ષા અમા

માર્હવથી, અપ્પઉપાધિ ૩૫ દ્રવ્ય લઘુતાથી, રાગદ્વેષરહિત ૩૫ ભાવલઘુતાથી અમૃષા ભાષણ ૩૫ મત્યથી, અનશન વગેરે ૩૫ ૧૨ પ્રમારના તપથી મુનિજનોનાં વૈયાટૃત્તિ કરના ૩૫ ૮ ગથી નિપરીગ્રહ ૩૫ અકિચ્ચન ધર્મથી, કામસેવન પરિત્યાગ ૩૫ બ્રહ્મચર્યનું રક્ષણ કરનાથી, નવ કોટિથી વિશુદ્ધ બનેલા બ્રહ્મચર્યના પાલનથી હીન છે, એટલે કે ક્ષાન્તિ વગેરે ૩૫ દશ જાતના યતિધર્મથી હીન છે

(તયાણતર ચ ણ હીણતરાણ સ્વતીણ જાવ હીણતરાણ વમચેરવાસેણ એવ સ્વલુ એણ ક્રમેણ પરિહાયમાણે ૨ ણટ્ટે સ્વતીણ જાવ ણટ્ટે વમચેરવામેણ)

અથવા જે સાધુ કે સાધ્વીઓ ક્ષાન્તિથી માડીને બ્રહ્મચર્યવાસ મુધીના ગુણોથી હીન છે તેઓ આ ચંદ્રની પેઠેજ અનુક્રમે હીન થતા ક્ષાન્તિ વગેરેથી માડીને બ્રહ્મચર્યવાસ મુધીના સર્વે ગુણોથી રહિત થઈ જાય છે જેમ હુમેશા રાહુના સસર્ગથી કૃષ્ણપક્ષની એકમથી માડીને દરરોજ જળાઓની દૃષ્ટિએ ક્ષીણ થતો ચંદ્ર કૃષ્ણપક્ષની ચૌથની અપેક્ષા અમાસના દિવસે વર્ણ પરિમડા વગેરે

મણ્ડલેન । એવ સ્વલુ એતેન ક્રમેગ પરિહીયમાન ૨ યાવદ્ અમારાસ્યાચન્દ્ર 'ચાઉ
હસિ' ચાતુર્દશ=ચતુર્દશીસમ્યન્નિતે ચન્દ્રપાણિધાય=અપેક્ષ્ય 'નદ્દે' નપ્ટઃ=વિલુપ્ત,
વર્ણેન યાવત્ નપ્ટો મણ્ડલેન=વૃત્તાકારરૂપેગ ।

'એવામેવ'—એવમેવ=અનેનૈવ પ્રકારેન હે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ । યોડસ્માર્ક
નિર્ગ્રન્થો યા નિર્ગ્રન્થો વા યાવત્ પ્રવ્રજિતઃ સન્ હીનઃ 'સ્વતીએ' લાન્ત્યા=ક્ષમયા,
એવ હીનઃ 'મુત્તીએ' મુસ્ત્યા=નિર્લોભતયા 'મુત્તીએ' મુસ્ત્યા=મનોયોગાદીના
કુશલપ્રવૃત્તિલક્ષણયા, યોગનિરોધલક્ષણયા યા, 'અઝ્જવેણ' આર્જવેન=સ્ફટિકવદ્
વાહ્યાભ્યન્તરસરલભાવરૂપેણ, 'મહવેણ' માર્દવેન=નિરભિમાનતાલક્ષણેન, 'લાઘ
વેણ' લાઘવેન=દ્રવ્યભાવલઘુતાસપન્નેન—તત્ર—દ્રવ્યતોડલ્પોપવિકૃત્ત્વેન ભાવતો રાગ
દ્વેષરહિતત્ત્વેન, 'સન્ધેણ' સત્યેન=અમૃષાભાષણરૂપેણ, 'તવેણ' તપસા=અશનાદિ

મંડલ તક ઓર અધિક યૂન હો જાતા હૈ । હસ તરહ ક્રમશઃ હીન હી
હોતા હુઆ અમાવસ્યા કા ચન્દ્રમા ચતુર્દશી કે ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા
ચિલકુલ વર્ણ આદિ સે લગાકર અપને પરિમંડલ તક વિલુપ્ત બન જાતા
હૈ । (એવામેવ સમણાઉસો । જો અમ્હ નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થી વા જાવ
પવ્વહા સમાણે હીણે સ્વતિએ એવ મુત્તીએ અઝ્જવેણ, મહવેણ, લાઘવેણ
સન્ધેણ, તવેણ, ચિયાએ, અર્ચિચળયાએ, વમ્મચેરવાસેણ) હસી તરહ
હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા નિર્ગ્રન્થ અથવા નિર્ગ્રન્થીજન યાવત્
પ્રવ્રજિત હોતા હુઆ યદિ ક્ષમા સે હીન હૈ, મુક્તિ-નિર્લોભતા અથવા
મનોયોગદિકોં કી કુશલ પ્રવૃત્તિ રૂપ અથવા યોગનિરોધ રૂપ મુક્તિ સે
સ્ફટિત કી તરહ વાહ્ય એવ આભ્યન્તર મેં સરલ પરિણામ રૂપ આર્જવ
સે, નિરભિમાનતા રૂપ માર્દવ સે, અલ્પ ઉપધિ રૂપ દ્રવ્યલઘુતા સે
રાગ દ્વેષરહિત રૂપ ભાવ લઘુતા સે, અમૃષાભાષણ રૂપ સત્ય સે, અન-

કરતા ત્રીજનો ચન્દ્ર વણું પરિમંડળ બધી બાબતમા વધારે ન્યૂન થઈ બાક છે
આ રીતે ધીમે ધીમે અનુક્રમે હીન થતા અમાસનો ચન્દ્ર ચૌશના ચન્દ્ર કરતા
વણું પરિમંડળ વગેરેની દૃષ્ટિએ તદ્દત વિલુપ્ત (અદશ્ય) થઈ બાક છે

(એવામેવ સમણાઉસો ! જો અમ્હ નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થી વા જાવ પવ્વહા
સમાણે હોણે સ્વતીએ એવ મુત્તીએ મુત્તીએ અઝ્જવેણ, મહવેણ, લાઘવેણ, સન્ધેણ
તવેણ, ચિયાએ, અર્ચિચળયાએ, વમ્મચેરવાસેણ)

આ રીતે જ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રન્થ અથવા નિર્ગ્રન્થી
જન યાવત્ પ્રવ્રજિત થયેને જે ક્ષમારહિત છે, મુક્તિ-નિર્લોભતા અથવા મનોયોગ
વગેરેની કુશળ પ્રવૃત્તિ રૂપ અથવા યોગ નિરોધ રૂપ મુક્તિ, સ્ફટિકની જેમ
બાહ્ય તેમજ આભ્યન્તરમા સરલ પરિણામ રૂપ આર્જવથી નિરભિમાનતા રૂપ

મંડલેન=વૃત્તાકારતયા ભવતિ । તદનન્તર ચ ચ્વલુ દ્વિતીયાચન્દ્રઃ પ્રતિપચ્ચન્દ્ર પ્રણિધાય અધિકતરઃ પૂર્વદિનાપેક્ષયા વર્ણનાત્યધિકો ભવતિ યાવદ્ અધિકતરે મંડલેન ભવતિ । ક્રમશો વૃદ્ધિ પ્રાપ્નોતિ એવ ચ્વલુ એતેન ક્રમેણ ' પરિવૃદ્ધમાણે ૨ ' પરિવર્ધમાન ૨ પ્રતિદિન વૃદ્ધિ લભમાનો ૨ યાવત્ પૂર્ણિમાચન્દ્ર ' ' ચાઉદસિ ' ચાતુર્દશં ચતુર્દશી સમ્વન્ધિન ચન્દ્ર પ્રણિધાય ' પદ્મિપુણ્ણે ' પ્રતિપૂર્ણ=સમ્પૂર્ણ વર્ણેન યાવત્ પ્રતિપૂર્ણો મંડલેન-વૃત્તાકારરૂપેણ ભવતિ , પૂર્ણિમાચન્દ્ર સમ્પૂર્ણ-કલાપકલિતતયા પરિપૂર્ણ મંડલવાન ભવતીત્યર્થઃ ।

‘ એવામેવ ’ એવમેવ=એનેનૈવ પ્રકારેણ હે શ્રમણા આયુષ્મન્ત ! ‘ જાત્ર ? યાવત્-યોઽસ્માક નિર્ગ્રન્થો વા ૨ આચાર્યોપાધ્યાયનામન્તિકે પ્રવ્રજિતઃ સન્ અધિકઃ=વૃદ્ધિ સમ્પન્નઃ જ્ઞાન્ત્યા યાવદ્ અધિકો બ્રહ્મચાર્યયાસેન । તદનન્તર ચ ચ્વલુ

કી પ્રતિપદા કા ચન્દ્રમા અમાવાસ્યા કે ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા વર્ણસે લે કર મંડલ તક વર્ધમાન હોતા હુઆ અધિક હોતા હૈ, ઓર ઉસકે બાદ દ્વિતીયા કા ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા વર્ણ સે લેકર મંડલ તક અધિકતર હો જાતા હૈ-હસ તરહ કે ક્રમ સે જૈસે પ્રતિદિન વૃદ્ધિ કો પ્રાપ્ત કરતા હુઆ વહ ચન્દ્રમા જત્ર પૂર્ણિમા તિથિ તક પહુંચ જાતા હૈ તો ચતુર્દશી તિથિ કે ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા ઉસ દિન વર્ણ સે લેકર અપને મંડલ સે પરિપૂર્ણ થન જાતા હૈ । ઉસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા નિર્ગ્રન્થ સાધુ અથવા નિર્ગ્રન્થી સાધ્વી આચાર્ય ઉપાધ્યાય સે દીક્ષિત થનકર જ્ઞાન્તિ ગુણ સે લેકર બ્રહ્મચર્યવાસ તક કે ગુણો સે વૃદ્ધિસપન્ન હોતા હૈ ।

ઓર હસ તરહ હન સત્ર સે ધીરે ધીરે વહ પહિલે કી અપેક્ષા ઓર અધિકતર સમ્પન્ન થન જાતા હૈ । હસ પ્રકાર ક્રમશઃ સમ્પન્ન થનતા હુઆ

જેમ શુદ્ધ પક્ષની એકમનો ચંદ્ર અમાસના ચંદ્ર કરતા વધુ મંડળ વગેરેની અપેક્ષાએ વૃદ્ધિ પામે છે અને બીજાનો ચંદ્ર જેમ એકમના ચંદ્ર કરતા વધુ પરિમંડલ વિગેરેની અપેક્ષાએ વૃદ્ધિ પામે છે આ રીતેજ અનુક્રમથી હરરોજ વૃદ્ધિ પામતો ચંદ્ર જ્યારે પૂનમની તિથિ સુધી પહોંચી જાય છે ત્યારે ચૌદશના ચંદ્રની અપેક્ષાએ તે દિવસ વધુ પરિમંડળ વગેરેથી પરિપૂર્ણતા મેળવે છે આમ જ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા નિઘ્રન્થ સાધુ કે નિઘ્રન્થી સાધ્વી આચાર્ય ઉપાધ્યાયની પામેથી દીક્ષા મેળવીને જ્ઞાતિ ગુણથી માડીને બ્રહ્મચર્યવાસ સુધીના બધા ગુણોથી વૃદ્ધિસપન્ન થઈ જાય છે

અને આ રીતે આ બધા ગુણોથી ધીમે ધીમે તે પહેલા કરતા વધુ સપન્ન થઈ જાય છે આ વખણે અનુક્રમે ગુણ સપન્ન થતો તે જ્ઞાતિ બ્રહ્મ

મંગતિ, તથૈવ મુનિઃ કુગુરુસસર્ગાત્ અવસન્નપાર્શ્વસ્થાન્ સજ્ઞાત્, વાન્તસમ્યક્ત્વ સમ્યન્ધાત્, પ્રમાદસ્થાનસેવનાત્, ચારિત્રાવરણકર્મોદયાન્ચ ક્રમશઃ ક્ષાન્ત્યાદિ ગુણહાનિ પ્રાપ્તઃ સન્ નષ્ટો ભવતીતિ માત્ર ।

અથ વૃદ્ધિદૃષ્ટાન્તમાહ—

યથા વા શુક્લપક્ષસ્ય પ્રતિપન્ચન્દ્રોઽમાવાસ્યાયાશ્ચન્દ્ર પ્રણિધાય=અપેક્ષ્ય-
અમાવાસ્યા ચન્દ્રાપેક્ષયેત્યર્થ ‘અહિં’ અધિકો વર્ણેન યાવદ્ અધિકો=વર્ધમાનો
વસ્યા કે દિન વર્ણાદિ સે લેકર પરિમડલ તક કે અપને સમસ્ત ગુણો
સે નષ્ટ હો જાતા હૈ । ઉસી તરહ મુનિ કુગુરુકે સસર્ગ સે અવવા અવ
સન્ન પાર્શ્વસ્થાદિકી સગતિ સે સમ્યક્ત્વ કે છૂટ જાને કે કારણ ઓર
પ્રમાદસ્થાનો કે સેવન કરને કે કારણ ઉદિત હુળ ચારિત્ર મોહનીય કર્મ
કે પ્રભાવ સે ક્રમશઃ ક્ષાન્ત્યાદિગુણો કી હાનિ કો પ્રાપ્ત કરતા હુઆ નષ્ટ
હો જાતા હૈ । અવ સૂત્રકાર વૃદ્ધિ કો સ્પષ્ટ કરને કે લિયે ઉસે દૃષ્ટાન્ત
સે સમજાતે હૈ—(જાહાવા સુક્લપક્ષસ્ત પડિવયાચદે અમાવાસાએ ચંદ્ર
પણિહાય અહિં વર્ણેણ જાવ અહિં મડલેણ તયાણતર ચ ણ ચિદ્યા
ચદે પડિવયાચદ પણિહાય અહિયયરાણ વર્ણેણ જાવ અહિયયરાણ
મડલેણ—એવ સ્વલુ એણ કમેણ પડિવુઢેમાણે ૨ જાવ પુણિમા ચદે ચાઉ
દર્મિ ચદ પણિહાય પડિપુણે વર્ણેણ જાવ પડિપુણે મડલેણ, એવામેવ
સમાણાઉસો । જાવ પવ્વઢણ સમાણે અહિં સ્વતીણ જાવ વમચેરવાસેણ
તયાણતર ચ ણ અહિયયરાણ સ્વતિણ જાવ વમચેરવાસેણ એવ સ્વલુ
એણ કમેણ પરિવુઢે માણે ૨ વમચેરવાસેણ) જૈસે શુક્લ પક્ષ

પોતાના બધા ગુણોથી રહિત બની બાક છે તેમજ મુનિ પણ કુગુરુના સસર્ગથી
અથવા અવસન્ન પાર્શ્વસ્થ વગેરેની સગતિથી સમ્યક્ત્વ રહિત થઈને પ્રમાદ
સ્થાનોના સેવનથી ઉદય પામેલા ચારિત્ર મોહનીય કર્મના પ્રભાવથી અનુક્રમે
ક્ષાતિ વગેરે ગુણોથી રહિત થઈને નારા પામે છે હવે સૂત્રકાર વૃદ્ધિને સ્પષ્ટ
કરવાની ઇચ્છાથી દૃષ્ટાન્ત પૂર્વક અમંતવતા કહે છે—

(જાહાવા સુક્લપક્ષસ્ત પડિવયાચદે અમાવાસાએ ચંદ્ર પણિહાય અહિં વર્ણેણ
જાવ અહિં મડલેણ તયાણતર ચ ણ ચિદ્યાચદે પડિવયા ચદ પણિહાય અહિયય
રાણ વર્ણેણ જાવ અહિયયરાણ મડલેણ એવ સ્વલુ એણ કમેણ પડિવુઢે માણે ૨
જાવ પુણિમાચદે ચાઉદર્મિ ચદ પણિહાય પડિપુણે વર્ણેણ જાવ પડિપુણે મડલેણ,
એવામેવ સમાણાઉસો । જાવ પવ્વતિણ સમાણે અહિં સ્વતીણ જાવ વમચેરવાસેણ
તયાણતર ચ ણ અહિયયરાણ સ્વતીણ જાવ વમચેરવાસે ણ એવ સ્વલુ એણ કમેણ
પરિવુઢેમાણે ૨ વમચેરવાસેણ)

મળ્ડલેન=વૃત્તાકારતયા ભવતિ । તદનન્તર ચ સ્વલુ દ્વિતીયાચન્દ્રઃ પ્રતિપચ્ચન્દ્ર પ્રણિધાય અધિકતરઃ પૂર્વદિનાપેક્ષયા વર્ણનાત્પધિકો ભવતિ યાવદ્ અધિકતરો મળ્ડલેન ભવતિ । ક્રમશો વૃદ્ધિ પ્રાપ્નોતિ એવ સ્વલુ એતેન ક્રમેણ ' પરિવૃદ્ધમાણે ૨ ' પરિવર્ધમાન ૨ પ્રતિદિન વૃદ્ધિ લભમાનો ૨ યાવત્ પૂર્ણિમાચન્દ્રઃ ' ચાઉદસિ ' ચાતુર્દશં ચતુર્દશી સમ્બન્ધિન ચન્દ્ર પ્રણિધાય ' પલ્લિપુણ્ણે ' પ્રતિપૂર્ણ.=સમ્પૂર્ણો વર્ણેન યાવત્ પ્રતિપૂર્ણો મળ્ડલેન-વૃત્તાકારરૂપેણ ભવતિ , પૂર્ણિમાચન્દ્રઃ સકલ્કલા-કલાપકલિતતયા પરિપૂર્ણ મળ્ડલવાન ભવતીત્યર્થઃ ।

' એવામેવ ' એવમેવ=એનેનૈવ પ્રકારેણ હે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ । ' જાપ ? યાવત્-યોઽસ્માક નિર્ગ્રન્થો વા ૨ આચાર્યોપાધ્યાયનામન્તિકે પ્રવ્રજિતઃ સન્ અધિકઃ=વૃદ્ધિ સમ્પન્ન. જ્ઞાન્ત્યા યાવદ્ અધિકો બ્રહ્મચર્યવાસેન । તદનન્તર ચ સ્વલુ

કી પ્રતિપદા કા ચન્દ્રમા અમાવાસ્યા કા ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા વર્ણસે લે કર મળ્ડલ તક વર્ધમાન હોતા હુઆ અધિક હોતા હૈ, ઓર ઉસકે બાદ દ્વિતીયા કા ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા વર્ણ સે લેકર મળ્ડલ તક અધિકતર હો જાતા હૈ-હસ તરહ કે ક્રમ સે જૈસે પ્રતિદિન વૃદ્ધિ કો પ્રાપ્ત કરતા હુઆ વહ ચન્દ્રમા જવ પૂર્ણિમા તિથિ તક પહુચ જાતા હૈ તો ચતુર્દશી તિથિ કે ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા ઉસ દિન વર્ણ સે લેકર અપને મળ્ડલ સે પરિપૂર્ણ થન જાતા હૈ । ડસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો । જો હમારા નિર્ગ્રન્થ સાધુ અથવા નિર્ગ્રન્થી સાધ્વી આચાર્ય ઉપાધ્યાય સે દીક્ષિત થનકર જ્ઞાન્તિ ગુણ સે લેકર બ્રહ્મચર્યવાસ તક કે ગુણો સે વૃદ્ધિસપ્ન હોતા હૈ ।

ઓર હસ તરહ હન મય સે વીરે ધીરે વહ પહિલે કી અપેક્ષા ઓર અધિકતર સમ્પન્ન થન જાતા હૈ । હસ પ્રકાર ક્રમશઃ સમ્પન્ન થનતા હુઆ

જેમ શુભલ પક્ષની એકમનો ચંદ્ર અમાસના ચંદ્ર કરતા વર્ણ મળ્ડલ વગેરેની અપેક્ષાએ વૃદ્ધિ પામે છે અને બીજનો ચંદ્ર જેમ એકમના ચંદ્ર કરતા વર્ણ પરિમળ્ડલ વગેરેની અપેક્ષાએ વૃદ્ધિ પામે છે આ રીતેજ અનુક્રમથી હરેરોજ વૃદ્ધિ પામતો ચંદ્ર જ્યારે પૂનમની તિથિ સુધી પહોંચી જાય છે ત્યારે ચૌદશના ચંદ્રની અપેક્ષાએ તે દિવસ વર્ણ પરિમળ્ડલ વગેરેથી પરિપૂર્ણતા મેળવે છે આમ જ છે આયુષ્મન્ત શ્રમણો । જે અમારા નિર્ગ્રન્થ સાધુ કે નિર્ગ્રન્થી સાધ્વી આચાર્ય ઉપાધ્યાયની પામેથી દીક્ષા મેળવીને જ્ઞાતિ ગુણથી માડીને બ્રહ્મચર્યવાસ સુધીના બધા ગુણોથી વૃદ્ધિસપ્ન થઈ જાય છે

અને આ રીતે આ બધા ગુણોથી ધીમે ધીમે તે પહેલા કરતા વધુ સપ્ન થઈ જાય છે આ પ્રમાણે અનુક્રમે ગુણ સપ્ન થતો તે જ્ઞાતિ બ્રહ્મ

અધિકતરઃ=અત્યધિકઃ ક્ષાન્ત્યા યાવદ્ અસ્મિન્નસો બ્રહ્મચર્યવાસેન । એવ સ્વલુ
એતેન ક્રમેણ ' પરિવદ્ધમાણે ૨ ' પરિવર્ધમાનઃ ૨ ક્રમશો વૃદ્ધિસમ્પન્નો ભૂત્વા
યાવત્ ' પઙ્કિપુન્ને ' મતિપૂર્ણ =સમ્પન્નો બ્રહ્મચર્યવાસેન, ક્ષાન્ત્યાદિસર્વગુણસમ્પન્નો
ભવતીત્યર્થઃ ।

યથા ચન્દ્રો નિત્યરાહુસસર્ગાપગમેન શુક્લપ્રતિપદમારભ્ય પ્રતિદિવસે કલાભિ
વર્ધમાનઃ સન્ ક્રમેણ શુક્લચતુર્દશ્યપેક્ષયા પૂર્ણિમાયા વર્ણાદિના યાવન્મણ્ડલેન પરિ
પૂર્ણો ભવતિ તથૈવ મુનિ કુગુરસસર્ગાદિપરિત્યાગેન ચરિત્રાવરણકર્મક્ષયોપશમાદિના
ક્રમશઃ ક્ષાન્ત્યાદિ ગુણવૃદ્ધિ પાન્નુવન્ કેવલજ્ઞાનકેવલદર્શનાદિગુણૈઃ પરિપૂર્ણો
ભવતીતિ ।

એવ સ્વલુ=જીવા અનેન પ્રકારેણ ક્ષાન્ત્યાદિ ગુણવૃદ્ધયા વર્દ્ધન્તે વા તેષાં દાન્યા

વહ ક્ષાન્તિ ગુણ સે લેકર બ્રહ્મચર્યવાસ તક કે સમસ્ત ગુણો સે પરિપૂર્ણ
હો જાતા હૈ । જિસ પ્રકાર રાહુ કે સસર્ગ કે અપનયન સે શુક્લ પક્ષ કી
પ્રતિપદા સે લેકર પ્રતિદિન અપની કલાઓ સે અભિવર્ધમાન હોતા હુઆ
ચન્દ્રમા ક્રમશઃ શુક્લચતુર્દશી કી અપેક્ષા પૂર્ણિમાસી કે દિન વર્ણાદિ સે
લગાકર મણ્ડલ તક કી અપની સમસ્ત કલાઓ સે પરિપૂર્ણ હો જાતી હૈ

હસી તરહ મુનિ મી કુગુરુ આદિ કે સસર્ગ આદિ કે પરિત્યાગસે
તથા ચારિત્રાવરણ કર્મ કે ક્ષયોપશમ આદિ સે ક્રમશઃ ક્ષાન્ત્યાદિ ગુણો
કી વૃદ્ધિ કરતા હુઆ કેવલજ્ઞાન, કેવલ દર્શન આદિ ગુણો સે પરિપૂર્ણ
હો જાતા હૈ । (એવ સ્વલુ જીવા વદ્ધતિ, વા હાયતિ વા, એવ સ્વલુ જબૂ
સમણેણ ભગવતા મહાવીરેણ દસમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે

અર્થવાસ વગેરે બધા શુભોર્થી પરિપૂર્ણ થઈ જાય છે જેમ રાહુના સસર્ગરહિત
થઈને શુક્લ પક્ષની એકમથી માડીને દરરોજ પોતાની કળાઓની વૃદ્ધિ કરતો
અર્થ અનુક્રમે શુક્લ પક્ષની ચૌદશ કરતા પૂનમના દિવસે વર્ણ પરિમણ વગે
રેની પોતાની સંપૂર્ણ કળાઓથી પરિપૂર્ણ થઈ જાય છે

તેમજ મુનિ પણ કુગુરુ વગેરેની સાબત વગેરેને ત્યજીને તેમજ ચારિત્ર
વરણ કર્મના ક્ષયોપશમ વગેરેથી અનુક્રમે પોતાના ક્ષાન્તિ વગેરે શુભોર્થી વૃદ્ધિ
કરતો કેવલજ્ઞાન, કેવલ દર્શન વગેરે શુભોર્થી પરિપૂર્ણ થઈ જાય છે

(એવ સ્વલુ જીવા વદ્ધતિ, વા હાયતિ વા એવ સ્વલુ જબૂ ! સમણેણ ભગવતા
મહાવીરેણ દસમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે તિવેમિ ')

હીયન્તે વા । એવ સ્વલુ હે જન્મુઃ ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ દશમસ્ય જ્ઞાતા-
ધ્યયનસ્ય અય=પૂર્વોક્તઃ અર્થ =ભાવ પ્રજ્ઞસ । ‘તિવેમિ’ ઇતિ વ્રવીમિ પૂર્વવત્ ॥સૂ૦ ૧॥

ઇતિ શ્રી વિશ્વવિખ્યાત - જગદ્વલ્લભ-પ્રસિદ્ધવાચકપદ્મદશભાષાકલિત-
લલિતકલાપાલાપક - પ્રથિશુદ્ધગદ્યપદ્યનૈઃગ્રન્થનિર્માપક-વાદિમાનમર્દક
શ્રીશાહુ છત્રપતિકોલ્હાપુરરાજપ્રદત્ત ‘જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય’ પદભૂષિત-
કોલ્હાપુરરાજગુરુ-વાલબ્રહ્મચારિ જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકરપૂજ્યશ્રી
ઘાસીલાલવ્રતિવિરચિતાયા શ્રી જ્ઞાતાધર્મકથાજ્ઞસૂત્રસ્યાનગારધર્મામૃ-
તવર્ષિણ્યાખ્યાયા વ્યાખ્યાયાં દશમમધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૦ ॥

તિવેમિ) હસ પ્રકાર ક્ષાત્યાદિ ગુણોં કી વૃદ્ધિ સે જીવ વઢતે હેં ઓર ઉ
નકી હાનિ સે જીવ ઘટતે હેં યહ કથન બન જાતા હૈ હસ તરહ હે જન્મુ !
શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને દશવેં જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત અર્થ પ્રજ્ઞસ
કિયા હૈ । મૈને ઉન્હોં કોં મુખ સે જૈસા સુના હૈ ઉસી કોં અનુસાર
યહ કહા હૈ ॥ સૂ૦ ૧ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત “ જ્ઞાતા-
ધર્મકથાજ્ઞસૂત્ર ”કી અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાકા દશવા
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૦॥

ક્ષાતિ વગેરે ગુણોની વૃદ્ધિથી જીવો વૃદ્ધિ પામે છે અને ક્ષાતિ વગેરે
ગુણોની હાનિથી જીવો ઘટે છે એમ આ ઉપનની સાર્થકતા સિદ્ધ થઈ જાય
છે આ પ્રમાણે છે જ ખૂ ! શ્રમણુ લગવાન મહાવીરે દશમા જ્ઞાતાધ્યયનનો
આ પૂર્વોક્ત અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે આ અર્થ મેં તેમના મુખેથી જો પ્રમાણે
સાંભળ્યો છે તે જ પ્રમાણે તમારી સામે રજૂ કર્યો છે ॥ સૂત્ર “ ૧ ” ॥

જૈનાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની
અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ દશમ અધ્યયન સમાપ્ત ॥૧૦॥

અધિકતરઃ=અત્યધિકઃ જ્ઞાન્ત્યા યાત્દ અધિકતરો વ્રહ્મવર્ચસાસેન । એવં સ્વલુ
એતેન ક્રમેણ ' પરિવદ્ધમાણે ૨ ' પરિવર્ધમાનઃ ૨ ક્રમશો વૃદ્ધિસમ્પન્નો ભૂત્વા
યાવત્ ' પઙ્કિપુન્ને ' પ્રતિપૂર્ણ = સમ્પન્નો વ્રહ્મવર્ચસાસેન, જ્ઞાન્ત્યાદિસર્વગુણસમ્પન્નો
ભવતીત્યર્થઃ ।

યથા ચન્દ્રો નિત્યરાહુસસર્ગાપગમેન શુક્લપ્રતિપદમારભ્ય પ્રતિદિવસે વલ્ગમિ
વર્ધમાનઃ સન્ ક્રમેણ શુક્લચતુર્દશ્યપેક્ષયા પૂર્ણિમાયા વર્ગાદિના યાવન્મળંડલેન પરિ
પૂર્ણો ભવતિ તથૈવ મુનિ કુગુરસસર્ગાદિપરિત્યાગેન ચરિત્રાવરણવર્મક્ષયોપશમાદિના
ક્રમશઃ જ્ઞાન્ત્યાદિ ગુણવૃદ્ધિ પાપ્તુમ્ન્ કેવલજ્ઞાનકેવલદર્શનાદિગુણૈઃ પરિપૂર્ણો
ભવતીતિ ।

एव खलु=जीवा अनेन प्रकारेण ज्ञान्त्यादि गुणवृद्ध्या वर्द्धन्ते वा तेषां ज्ञान्त्या

વહ જ્ઞાન્તિ ગુણ સે લેકર વ્રહ્મવર્ચસાસ તક કે સમસ્ત ગુણો સે પરિપૂર્ણ
હો જાતા હૈ । જિસ પ્રકાર રાહુ કે સ સર્ગ કે અપનયન સે શુક્લ પક્ષ કી
પ્રતિપદા સે લેકર પ્રતિદિન અપની કલાઓ સે અભિવર્ધમાન હોતા હુઆ
ચન્દ્રમા ક્રમશઃ શુક્લચતુર્દશી કી અપેક્ષા પૂર્ણિમામી કે દિન વર્ગાદિ સે
લગાકર મળડલ તક કી અપની સમસ્ત કલાઓ સે પરિપૂર્ણ હો જાતી હૈ

इसी तरह मुनि भी कुगुरु आदि के ससर्ग आदि के परित्यागसे
तथा चारित्रावरण कर्म के क्षयोपशम आदि से क्रमशः ज्ञान्त्यादि गुणों
की वृद्धि करता हुआ केवलज्ञान, केवल दर्शन आदि गुणों से परिपूर्ण
हो जाता है । (एव खलु जीवा वर्द्धन्ति, वा हायन्ति वा, एव खलु जबू
समणेण भगवता महावीरेण दसमस्स णायज्झयणस्स अयमद्वे पण्णत्ते

અર્ચવાસ વગેરે બધા ગુણોથી પરિપૂર્ણ થઈ જાય છે જેમ રાહુના સ સર્ગરહિત
થઈને શુક્લ પક્ષની એકમથી માડીને દરરોજ પોતાની કળાઓની વૃદ્ધિ કરતો
ચન્દ્ર અનુક્રમે શુક્લ પક્ષની ચૌદશ કરતા પૂનમના દિવસે વર્ણ પરિમળ વગે
રેની પોતાની સ પૂર્ણ કળાઓથી પરિપૂર્ણ થઈ જાય છે

તેમજ મુનિ પણ કુગુરુ વગેરેની સોળત વગેરેને ત્યાજીને તેમજ ચારિત્ર
વરણ કર્મના ક્ષયોપશમ વગેરેથી અનુક્રમે પોતાના જ્ઞાતિ વગેરે ગુણોની વૃદ્ધિ
કરતો કેવળજ્ઞાન, કેવળ દર્શન વગેરે ગુણોથી પરિપૂર્ણ થઈ જાય છે

(एव खलु जीवा वर्द्धन्ति, वा हायन्ति वा एव खलु जबू । समणेण भगवता
महावीरेण दसमस्स णायज्झयणस्स अयमद्वे पण्णत्ते तिचेमि)

पुष्पिका फलिया हरियगरेरिजमाणा सिरीए अतीवरे उवसो-
 भेमाणा चिट्ठति, जयाणं दीविच्चगा ईसि पुरेवाया पच्छावाया
 मंदावाया महावाया वायति तयाणं वहवे दावदवा रुक्खा पत्तिया
 जाव चिट्ठति अप्पेगइया दावदवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिस-
 डियपंडुपत्तपुष्पफला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा २ चिट्ठति,
 एवामेव समणोउसो । जो अम्ह निर्गंथो वा निर्गंथी वा
 जाव पठ्वइये समाणे वहूणं समणाणं ४ सम्म संहति जाव
 अहियासे वहूण अण्णउत्थियाणं वहूणं गिहत्थाण नो सम्म
 सहइ नो खमइ नो तितिक्खइ नो अहियासेइ एस ण मए
 पुरिसे देसविराहए पणत्ते । समणाउसो । जया णं सामुद्दगा-
 ईसि पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाता वायंति तदा णं
 वहवे दावदवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा २ चिट्ठति,
 अप्पेगइया दावदवा रुक्खा पत्तिया पुष्पिका जाव उवसोभे-
 माणा २ चिट्ठति, एवामेव समणाउसो । जो अम्हे निर्गंथो वा
 निर्गंथी वा पठ्वइए समाणे वहूणं अण्णउत्थियाण वहूणं
 गिहत्थाण सम्म सहइ वहूण समणाणं ४ नो सम्म सहइ
 एसण मए पुरिसे देसाराहए पणत्ते । समणाउसो । जयाण नो
 दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसि पुरेवाया पच्छावाया जाव महा-
 वाया वायति तयाण सव्वे दावदवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव
 मिलायमाणा चिट्ठति, अप्पेगइया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठति,
 एवामेव समणाउसो । जाव पठ्वइए समाणे वहूण समणाणं ४

अन्नउत्थियगिहत्थाण नो सम्म सहइ एसणं मए

અથ એકાદશમધ્યયનં પ્રારંભ્યતે—

ગત દશમમધ્યયન, સામ્પતમેકાદશમારંભ્યતે । પૂર્વસ્મિન્નધ્યયને કૃષ્ણશુક્લ પક્ષચન્દ્રદૃષ્ટાન્તેન પ્રમાદાપ્રમાદયતો ક્ષાન્ત્યાદિગુણહાનિવૃદ્ધિભ્યામનર્થાનર્થો મતિ પાદિતો, इह तु मार्गाराधनविराधनाभ्यामर्थार्थी प्रदर्श्यते, अथ जम्बूस्वामी पूच्छति—‘ जइण भते ’ इत्यादि ।

મૂલમ્—જઈણ ભતે । સમણેણ જાન સપત્તેણ દસમસ્સ નાય-
જ્ઞણસ્સ અયમદ્દે પપ્પત્તે એકારસમસ્સ ણં ભતે ણાયજ્ઞયણ-
સ્સ કે અદ્દે પપ્પત્તે ?, એવં સ્વલુ જવૂ । તેણ કાલેણર રાયગિહે
ગોયમે એવં વેયાસી—કેહણ ભતે । જીવા આરાહગાવા વિરાહગા
વા ભવાંતિ ?, ગોં । સે જહા ણામંએ એગસિ સમુદ્ધકુલસિ દાવં-
દ્ધવા નામ સ્વસ્વા પપ્પત્તા કિણ્હા જાવ નિઉરુવભૂયા પત્તિયા

દાવ દ્રવ (વૃક્ષ) નામક ગ્યારહવા અધ્યયન પ્રારંભ

દશવા અધ્યયન સમાપ્ત હો ચુકા—અથ ગ્યારહવા અધ્યયન પ્રારંભ
હોતા હૈ । હસ અધ્યયનકા પૂર્વ અધ્યયનકે સાથ હસ પ્રકારસે સબન્ધ હૈ
કિ પૂર્વ અધ્યયન મેં કૃષ્ણ ઔર શુક્લ પક્ષકે ચન્દ્રમા કે દૃષ્ટાન્ત સે
પ્રમાદી ઔર અપ્રમાદી સયમી કે ક્ષાન્ત્યાદિ ગુણોં કી હાનિ એવ વૃદ્ધિ
રૂપ અનર્થ એવ અર્થ કી પ્રાપ્તિ હોની પ્રતિપાદિત કી ગઈ હૈ । અથ હસ
અધ્યયન દ્વારા યહ કહા જા રહા હૈ કિ જો સયમ માર્ગ કી આરાધના
તેથા વિરાધના કરતે હૈ વે અર્થ ઔર અનર્થ કી પ્રાપ્તિ કે પાત્ર હોતે હૈ ।
જવૂ સ્વામી શ્રી સુધર્માસે પૂછતે હૈ કિ ‘જઈણ ભતે । સમણેણ’ इत्यादि ।

દાવદ્રવ (વૃક્ષ) નામે અગિયારમું અધ્યયન પ્રારંભ

દશમું અધ્યયન પૂરું થઈ ચૂક્યું છે અને હવે અગિયારમું અધ્યયન આરંભ
થાય છે આ અધ્યયનનો પહેલાના અધ્યયનની સાથે આ પ્રમાણેનો સબંધ છે
પહેલાના અધ્યયનમાં કૃષ્ણ અને શુક્લ પક્ષના ચન્દ્રમાના દૃષ્ટાન્તથી પ્રમાદી અને
અપ્રમાદી સયમીને ક્ષાતિ વગેરે ગુણોની પ્રાપ્તિ થવી, આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ
કરવામાં આવ્યું છે હવે આ અધ્યયનમાં જે સયમ માર્ગની આરાધના તેમજ
વિરાધના કરે છે તેઓ અર્થ તેમજ અનર્થના પાત્ર ગણાય છે આ વાત સ્પષ્ટ
કરવામાં આવે છે જમ્બૂસ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે કે—

(જઈણ ભતે । સમણેણ “ इत्यादि ॥

पुष्पिका फलिया हरियगरेरिजमाणा सिरीए अतीवर उवसो-
 भेमाणा चिट्ठति, जयाणं दीविच्चगा ईसि पुरेवाया पच्छावाया
 मंदावाया महावाया वायति तयाण बहवे दावदवा रुक्खा पत्तिया
 जाव चिट्ठति अप्पेगइया दावदवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिस-
 डियपंडुपत्तपुष्पफला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणार चिट्ठति,
 एवामेव समणोउसो । जो अम्ह निर्गंथो वा निर्गंथी वा
 जाव पठ्वइये समाणे बहूण समणाणं ४ सम्मं सहति जाव
 अहियासे बहूण अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं
 सहइ नो खमइ नो तितिक्खइ नो अहियासेइ एस णं मए
 पुरिसे देसविराहए पणत्ते । समणाउसो । जया णं सामुदगा-
 ईसि पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाता वायति तदा णं
 बहवे दावदवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणार चिट्ठति,
 अप्पेगइया दावदवा रुक्खा पत्तिया पुष्पिका जाव उवसोभे-
 माणार चिट्ठति, एवामेव समणाउसो । जो अम्हे निर्गंथो वा
 निर्गंथी वा पठ्वइए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं
 गिहत्थाणं सम्म सहइ बहूण समणाणं ४ नो सम्म सहइ
 एसण मए पुरिसे देसाराहए पणत्ते । समणाउसो । जयाणं नो
 दीविच्चगा णां सामुदगा ईसि पुरेवाया पच्छावाया जाव महा-
 वाया वायति तयाण सव्वे दावदवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव
 मिलायमाणा चिट्ठति, अप्पेगइया जाव उवसोभेमाणार चिट्ठति,
 एवामेव समणाउसो । जाव पठ्वइए समाणे बहूण समणाणं ४
 अण्णउत्थियगिहत्थाणं नो सम्म सहइ एसणं मए

અથ એકાદશમધ્યયનં પ્રારમ્ભયતે—

ગત દશમમધ્યયન, સામ્પતમેકાદશમારમ્ભયતે । પૂર્વસ્મિન્નધ્યયને કૃષ્ણશુક્લ-
પક્ષચંદ્રદૃષ્ટાન્તેન પ્રમાદાપ્રમાદવતો ક્ષાન્ત્યાદિગુણહાનિવૃદ્ધિભ્યામનર્થાનર્થો પ્રતિ
પાદિતો, इह तु मार्गाराधनविराधनाभ्यामर्थार्थी પ્રદર્શયેતે, અથ જમ્બૂસ્વામી
પૂછતિ—‘ જહ્ણ ભતે ’ इत्यादि ।

મૂળ—જહ્ણ ભતે । સમણેણ જાવ સપત્તેણ દસમસ્સ નાય-
જ્ઞણસ્સ અયમદ્દે પપ્પણત્તે એકારસમસ્સ ણ ભતે ણાયજ્ઞયણ-
સ્સ કે અદ્દે પપ્પણત્તે ?, एवं खलु जवू । તેણ કાલેણર રાયગિહે
ગોયમે એવં વેયાસી—કેહણ ભતે । जीवा आराहगावा विराहगा
वा भवन्ति ?, गो० । से जहा णामए एगंसि समुद्धकुलसि दाव-
इवा नाम रुखा पपणत्ता किण्हा जाव निउरुवभूया पत्तिया

દાવ દ્રવ (વૃક્ષ) નામક ગ્યારહવા અધ્યયન પ્રારમ્ભ

દશવા અધ્યયન સમાપ્ત હો ચુકા—અર્થે ગ્યારહવા અધ્યયન પ્રારમ્ભ
હોતા હૈ । इस अभ्ययनका पूर्व अध्ययनके साथ इस प्रकारसे संबन्ध है
कि पूर्व अध्ययन में कृष्ण और शुक्ल पक्षके चन्द्रमा के दृष्टान्त से
प्रमादी और अप्रमादी सयमी के क्षांत्यादि गुणों की हानि एव वृद्धि
रूप अनर्थ एव अर्थ की प्राप्ति होनी प्रतिपादित की गई है । अब इस
अध्ययन द्वारा यह कहा जा रहा है कि जो सयम मार्ग की आराधना
तथा विराधना करते हैं वे अर्थ और अनर्थ की प्राप्ति के पात्र होते हैं ।
जबू स्वामी श्री सुधर्मासे पूछते हैं कि ‘जह्ण भते । समणेण’ इत्यादि ।

દાવદ્રવ (વૃક્ષ) નામે અગિયારમું અધ્યયન પ્રારભ

દશમું અધ્યયન પુર થઈ ચૂકયું છે અને હવે અગિયારમું અધ્યયન આરભ
થાય છે આ અધ્યયનનો પહેલાના અધ્યયનની સાથે આ પ્રમાણેનો સબંધ છે
પહેલાના અધ્યયનમા કૃષ્ણ અને શુકલ પક્ષના ચંદ્રમાના દૃષ્ટાંતથી પ્રમાદી અને
અપ્રમાદી સયમીને ક્ષાંતિ વગેરે ગુણોની પ્રાપ્તિ થવી, આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ
કરવામા આવ્યું છે હવે આ અધ્યયનમા જે સયમ માર્ગની આરાધના તેમજ
વિરાધના કરે છે તેઓ અર્થ તેમજ અનર્થના પાત્ર ગણાય છે આ વાત સ્પષ્ટ
કરવામા આવે છે જમ્બૂસ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે કે—

(જહ્ણ ભતે । સમણેણ “ ” इत्यादि ॥

पुष्पिया फलिया हरियगरेरिजमाणा सिरीए अतीवरे उवसो-
 भेमाणा चिट्ठति, जयाणं दीविच्चगा ईसि पुरेवाया पच्छावाया
 मंदावाया महावाया वायति तयाण वहवे दावदवा रुक्खा पत्तिया
 जाव चिट्ठति अप्पेगइया दावदवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिस-
 डियपंडुपत्तपुष्पफला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणारे चिट्ठति,
 एवामेव समणोउसो । जो अम्ह निगंथो वा निगंथी वा
 जाव पठवइये समाणे वहूण समणाणं ४ सम्मं संहति जाव
 अहियासे वहूण अण्णउत्थियाणं वहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं
 सहइ नो खमइ नो तितिक्खइ नो अहियासेइ एस णं मए
 पुरिसे देसविराहए पणत्ते । समणाउसो । जया णं सामुद्दगा-
 ईसि पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाता वायति तदा णं
 वहवे दावदवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणारे चिट्ठति,
 अप्पेगइया दावदवा रुक्खा पत्तिया पुष्पिया जाव उवसोभे-
 माणारे चिट्ठति, एवामेव समणाउसो । जो अम्हे निगंथो वा
 निगंथी वा पठवइए समाणे वहूणं अण्णउत्थियाण वहूणं
 गिहत्थाणं सम्म सहइ वहूणं समणाण ४ नो सम्म सहइ
 एसणं मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते । समणाउसो । जयाणं नो
 दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसि पुरेवाया पच्छावाया जाव महा-
 वाया वायति तयाणं सव्वे दावदवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव
 मिलायमाणा चिट्ठति, अप्पेगइया जाव उवसोभेमाणारे चिट्ठति,
 एवामेव समणाउसो । जाव पठवइए समाणे वहूणं समणाणं ४
 अण्णउत्थियगिहत्थाण नो सम्म सहइ एसणं मए

સવ્વવિરાહણ પળ્લન્તે । સમણાઉસો ! જયાણ દીવિચ્છગાવિ સામુ-
 દ્ધગાવિ ર્હસિ પુરેવાયા પચ્છાવાયા જાવ વાયંતિ તયા ણ સવ્વે
 દાવદ્ધવ્વા સુખા પત્તિયા જાવ ચિટ્ઠતિ, એવામેવ સમણાઉસો
 જો અમ્હ જાવ પઠ્ઠણ સમાણે વહૂણ સમણાણઃ વહૂણ અમ્મઉ-
 ત્થિયગિહત્થાણ સમ્મં સહજ્ઞ એસણ મણ પુરિસે સવ્વારાહણ પળ્લન્તે ।
 એવ સ્વલુ ગોયમા । જીવા આરાહગા વા વિરાહગા વા ભવતિ,
 એવં સ્વલુ જબ્બુ । સમણેણ ભગવયાં એકારસસ્સ અજ્ઞયણસ્સ
 અયમદ્દે પળ્લન્તે તિવેમિ ॥ સૂ. ૧ ॥

॥ એકારસમ નાયજ્ઞયણં સમત્ત ॥ ૧૧ ॥

ટીકા—યદિ સ્વલુ ભદન્ત ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્ સિદ્ધિર્ગતિ
 સમ્પાપ્તેન દશમસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય અયમ્=પૂર્વોક્ત પ્રકારો ગુણહાનિટ્ઠિરૂપ અર્થઃ
 ભાવઃ પ્રજ્ઞસ =કથિતઃ, અથ એકાદશસ્યા અયમસ્ય શ્રમણેન યાવત્સમ્પાપ્તેન કોઽર્થઃ=
 કો ભાવઃ પ્રજ્ઞસઃ ? । સુધર્માસ્વામી કથયતિ—એવ સ્વલુ હે જમ્બૂ । તસ્મિન્ કાલે

ટીકાર્થ—(જહ્ણ ભતે !) મદિ હે ભદત ! (સમણેણ જાવ સપત્તેણ દસ
 મસસ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લન્તે એકારસમસ્સ ણ ભત્તે । નાયજ્ઞય-
 ણસ્સકે અદ્દે પળ્લન્તે) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર પ્રમુને કિ જો મુક્તિકો પ્રાપ્ત
 હો હુકે હૈં, દશવે જ્ઞાતા યયન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રતિપાદિત
 કિયા હૈ—તહો શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર પ્રમુ ને ગ્યારહવે જ્ઞાતાધ્યયન
 કા કયા અર્થ કહા હૈ ? હસ પ્રકાર જબ્બુ સ્વામી કે પૂઠને પર શ્રી સુધર્મા
 સ્વામી લનસે કહતે હૈ કિ (એવ સ્વલુ જબ્બુ !) સુનો જો લન્હો ને ગ્યારહવે

ટીકાર્થ—(જહ્ણ ભતે !) હે ભદત !

(સમણેણ જાવ સપત્તેણ દસમસસ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લન્તે એકારસમસ્સ
 ણ ભતે ! નાયજ્ઞયણસ્સ કે અદ્દે પળ્લન્તે)

મુક્તિ મેળવેલા શ્રમણુ ભગવાન મહાવીરે દશમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ
 પૂર્વોક્ત રૂપ અર્થ નિરૂપિત કયો છે તો તેઓશ્રીએ અગિયારમો જ્ઞાતાધ્યયનનો
 શો અર્થ નિરૂપિત કયો છે ? આ રીતે જબ્બુ સ્વામીના પ્રશ્નને સુધર્મા

તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહે નગરે ગૌતમ એવમપ્રાદીત્-એવમપૃ-છત્-કથ સ્વલુ ભદન્ત !
 હે ભગવાન્ ! જીવા આરાધકા' = જ્ઞાનાદિ રત્નત્રયરૂપમોક્ષમાર્ગનાયકા', વિરાધકા' =
 તદ્વિપરીતા ભવન્તિ ? । એતમર્થ ભગવાન્ દૃષ્ટાન્તેન વર્ણયતિ-હે ગૌતમ ! તથથા
 નામક = યથા દૃષ્ટાન્તસ્-એકસ્મિન્ સમુદ્રકૂલે = સાગરતટે ' દાવદ્રવા ' દાવદ્રવાઃ,
 નામ = એતાન્નામધેયા વૃક્ષાઃ પ્રજ્ઞાઃ । કીદશા. ? ક્વિણ્ઠા- ' કિણ્ઠા ' કૃષ્ણાઃ =
 કૃષ્ણવર્ણા યાવત્ મહામેઘનિકુરમ્વભૂતા' = નલમમ્ભૃતમેવમૃન્દમદશા ' પત્તિયા '

જ્ઞાતાધ્યયન કા અર્થ નિરૂપિત ક્રિયા હૈ વહ્ इस प्रकार है-(तेण कालेण
 तेण समएण रायगिहे गोयमे एव वयासी) उस काल और उस समय
 में राजगृहनगर मे अमण भगवान् महावीर प्रभु पधारे—उनसे गौतम
 स्वामी ने इस प्रकार पूछा— (कइण भते ! जीवा आराहगा वा विराह
 गा वा भवति ?) हे भदत ! जीव ज्ञानादि रत्नत्रय रूप मोक्षमार्ग के
 आराधक साधक-और विराधक कैसे-किस कारण से-होते है ?
 (गोयमा ! से जहानामए एगसि समुद्रकूलसि दावद्रवा नाम रुक्खा
 पणत्ता) प्रभु ने उनकी इस बात का उत्तर इस तरह के दृष्टान्त
 से दिया-हे गौतम ! समुद्र के तटपर “ दावद्रव ” इस नामके बहुत
 से वृक्ष खड़े हुए थे (किण्ठा जाव निऊरवभूया पत्तिया पुण्किया
 फलिया हरियगरे रिज्जमाणा, सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणा चिद्धति)
 ये सब जल से भरे हुए मैघों के समूह जैसे कृष्ण वर्ण के थे

સ્વામી તેને કહે છે કે (એવ સ્વલુ જનૂ ।) હે જનૂ ! સાલણો, પ્રભુએ અગિ
 ચારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો અર્થ આ પ્રમાણે નિરૂપિત કર્યો છે

(તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ૦ ગોયમે એવ વયાસી)

તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમા અમણ ભગવાન મહાવીર
 પધાર્યા ગૌતમ સ્વામીએ તેમને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કર્યો—(કહણ ભત્તે ! જીવા
 આરાહગાવા વિરાહગાવા ભવતિ ? હે ભદત ! જીવ જ્ઞાન વગેરે રત્નત્રય રૂપ
 મોક્ષ માર્ગના આરાધક-સાધક અને વિરાધક કેવી રીતે-શા કારણથી થાય છે ?

(ગો ૦ ! સે જહાનામણ એગસિ સમુદ્રકૂલસિ દાવદ્રવા નામ રુક્ખા પણત્તા)

પ્રભુએ તેમના તે પ્રશ્નનો જવાબ દૃષ્ટાન્તના આધારે આપતા કહ્યું-હે
 ગૌતમ ! સમુદ્રને દાવદ્રવ તત્તિના ઘણાં વૃક્ષો હતા

(કિણ્ઠા જાવ નિઝરવ ભૂયા પત્તિયા પુણ્કિયા ફલિયા હરિયગરે રિજ્જમાણા,
 સિરીએ અતીવ ૨ ઉવસોભેમાણા ચિદ્ધતિ)

એ બધા વૃક્ષો જળપૂર્ણ મેઘ સમૂહોની જેમ કાળા રંગના હતા બધા
 વૃક્ષો, પત્રો, પુષ્પો અને ફળોથી સમૃદ્ધ હતા લીલા રંગથી એ વૃક્ષો શોભતા

सव्वविराहए पणत्ते । समणाउसो ! जयाण दीविच्चगाविसामु-
 द्दगावि ईसि पुरेवाया पच्छावाया जाव वायति तथा णं सव्वे
 दावहव्वा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठति, एवामेव समणाउसो
 जो अम्ह जाव पव्वइए समाणे वहुणं समणाणं वहुणं अस्सउ-
 त्थियगिहत्थाणं सम्म सहइ एसण मए पुरिसे सव्वाराहए पणत्ते ।
 एव खलु गोयमा । जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवति,
 एव खलु जंबू । समणेण भगवया० एक्कारसस्स अज्झयणस्स
 अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ॥ सू० १ ॥

॥ एक्कारसम नायज्झयणं समत्त ॥ ११ ॥

टीका—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिं
 सम्प्राप्तेन दशमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयम्=पूर्वोक्त प्रकारो गुणहानिद्विरूप' अर्थः
 भावः प्रज्ञप्त =कथित', अथ एकादशस्या ययमस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः=
 को भावः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मास्वामी कथयति—एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले

टीकार्थ—(जइण भते !) मदि हे भदत ! (समणेण जाव सपत्तेण दस
 मस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते एक्कारसमस्स ण भत्ते । नायज्झय
 णस्सके अट्ठे पणत्ते) श्रमण भगवान् महावीर प्रभुने कि जो मुक्तिको प्राप्त
 हो चुके हैं, दशवे ज्ञाता ध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रतिपादित
 किया है— उहो श्रमण भगवान् महावीर प्रभु ने ग्यारहवें ज्ञाताध्ययन
 का क्या अर्थ कहा है ? इस प्रकार जयू स्वामी के पूछने पर श्री सुधर्मा
 स्वामी उनसे कहते हैं कि (एव खलु जम्बू !) सुनो जो उन्हो ने ग्यारहवें

टीकार्थ—(जइण भते !) हे भदत !

(समणेण जाव सपत्तेण दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते एक्कारसमस्स
 ण भत्ते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पणत्ते)

मुक्ति भेजवेला श्रमणु भगवान् महावीरे दशमा ज्ञाताध्ययननो आ
 पूर्वोक्त रूप अर्थ निरूपित कथो छे तो तेओश्रीओ अगियारनो ज्ञाताध्ययननो
 शो अर्थ प्ररूपित कथो छे ? आ रीते जयू स्वामीना गच्छे वा ११ ॥

इत्यर्थः दावद्रवा वृक्षा 'जुन्ना' जीर्णाः=चिरकालीना. 'झोडा' झोडः=शटन, तद् योगाद् वृक्षा अपि झोडा =शटितमूलस्कन्धा इत्यर्थः, 'परिशडियपडुपत्तपुप्फ फला' परिशटितपाण्डु पत्रपुष्पफला-परिशटितानि=जीर्णानि-अतएव पाण्डूनि=ईषत्पीतानि पत्राणि पुष्पाणि फलानि च येषां ते तयोक्ता, 'सुक्कारुखओविव निलायमाणा' शुष्कवृक्षा इव म्लायन्तः =शोभारहितास्तिष्ठन्ति । भगवानाह- 'एवामेव' एवमेव=अनेनैव प्रकारेण 'समणाउसो' हे श्रमणा आयुष्मन्तः 'योऽस्माकनिर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थो वा यावत्प्रजितः सन् बहूना श्रमणानां वहीनां श्रमणीनां बहूनाश्रवकाणां वहीनां आधिकानां कर्कशकठोर वचनाद्युपमर्गान् 'सम्म' सम्यक्

पश्चिम दिशा सरन्धी मद सुगंध गीतल समीर चलने लगता तो उस समय जो पत्र पुष्प आदि से युक्त हुए दावद्रव वृक्ष थे वे ज्यों के त्यों अधिक शोभा सपन्न बने रहकर हरे भरे ही दिखलाई देते रहते । परन्तु उनमें जो दावद्रव वृक्ष जीर्ण थे पुराने थे, शीर्ण-सड़े हुए थे जिनका मूल और स्तम्भ दोनों खोखले हो गये थे और जिनके पीला सफेद होकर पत्र पुष्प एवं फल परिशटित हो झड़-चुके थे वे शुष्क वृक्षों के समान म्लान-शोभा रहित ही बने रहते (एवामेव समणा उसो ! जो अम्म निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा पक्वाइए समाणे बहूण अण्ण-उत्थियाण बहूण गिहत्थाण सम्म सहइ बहूण-समणाण ४ नो सम्म सहइ एसण मए पुरिसे देमाराहण पन्नत्ते) इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणों ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधु जन अथवा सा वी जन दीक्षित होता हुआ अनेक श्रमण जनों के अनेक श्रमणियों के, आवको के और आविकाओं के कर्कश, कठोर वचनादि रूप उपसर्गों को मध्यस्थ भाव

थयेला दावद्रव वृक्षों ने स्थितिमा न सविशेष शोभा युक्त थाने लीलाछम देखाता होता था तेव्हामा न दावद्रव वृक्षों लुप्त होता-मूला होता-शीर्ष-सडी गयेला होता, जेना मूला अने थरने लाग पोखले थाने गयेला होता अने जेव्हामा पीला अने सफेद थाने पाडला, पुष्पो मने झुगे परिशटित थाने भरी पड्या होता ते तो सुगंध गयेला वृक्षानी जे म म्लान-शोभा रहित थाने लीला होता

(एवामेव समणाउसो ! जो अम्म निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा पक्वाइए समाणे बहूण अण्णउत्थियाण बहूण गिहत्थाण सम्म सहइ बहूण समणाण ४ नो सम्म सहइ एसण मए पुरिसे देमाराहण पन्नत्ते)

आ प्रभाते न डे आयुष्मन्त श्रमणो ! जे अमारा निर्ग्रन्थ साधुजन अथवा साध्वीजन दीक्षित थाने धणा श्रमणो अने धणी श्रमणीओ, धणा आवको अने धणी आविको जेना कर्कश कठोर वचनो वगेरे उपसर्गोने मध्यस्थ

પત્રિતા = પત્રયુક્તા 'પુષ્પિયા' પુષ્પિતા = પુષ્પયુક્તા, 'ફલિયા' ફલિતા = ફલ સમૃદ્ધાઃ, 'હરિયગેરિ' = માળા 'હરિતકારાજ્યમાનાઃ' = હરિતકેન = હરિતર્ણેનાતિશયશોભમાના. 'મિરીષ' શ્રિયા = પત્રપુષ્પાદિ શોભયા અત્રી વાતીવ = અત્યંતમ્ ઉપશોભમાનાઃ શોભાસમન્નઃ, તિષ્ઠન્તિ । યદા સ્વલ્પ = યસ્મિન્ કાલે 'દીવિચ્ચગા' દ્વેષ્યાઃ = દ્વીપમમ્ભયા 'ઈસિપુરેયાયા' 'ઈપત્પુરોગાતાઃ' સ્વલ્પા પૂર્વદિગ્વાયવ, 'પચ્છાગાયા' પશ્ચાદ્ગાતા = પશ્ચિમદિગ્વાયવઃ 'મદાગાયા' મન્દ ગ્રાતાઃ = શનૈઃ શનૈઃ સશ્ચારિણો ગાયવ, 'મહાગાયા' મહાગાતા = પ્રચળવાયવઃ 'વાયતિ' વાન્તિ = ચલન્તિ તદા સ્વલ્પ મહત્ દાવદ્રવા વૃક્ષા પત્રિતા યાવત્ શ્રિયા સ્ત્રીવાતીયોપશોભમાનાસ્તિષ્ઠન્તિ । 'અપ્પેગહ્યા' અપ્પેઋકા = રતિપયા - સ્ત્રીકા

પત્ર યુક્ત થે, પુષ્પ યુક્ત થે ફલોં સે સમૃદ્ધ થે । હરિત વર્ણ સે યે સઘ અતિશય શોભાયમાન હો રહે થે । હસ તરહ પત્ર પુષ્પાદિ કી શોભા સે હનકી શોભા અત્યંત નિરાલી ઘની હુઈ થી । હસ કારણ યે વિશિષ્ટ શોભા સપન્ન બને હુઈ થે । (જયાળ દીવિચ્ચગા ઈસિ પુરેવયા પચ્છા ગાયા મદાગાયા મહાગાયા વાયતિ, તયા ણ બહવે દાવદ્રવા રુક્ષા પત્રિયા જાવ ચિદ્ધતિ, અપ્પેગહ્યા દાવદ્રવા સ્વલ્પા જુન્ના શ્લોઢા પરિસડિય પહુપત્ત પુષ્પફલા સુક્કરુક્ષાઓ વિવ મિલાયમાળા ૨ ચિદ્ધતિ) જિમ સમય દ્વીપ સે ઉત્પન્ન હુઈ પૂર્વ દિશા સબન્ધી સ્વલ્પ હવાઈ, પશ્ચિમ દિશા સબન્ધી સ્વલ્પ હવાઈ, ધીરે ૨ ચલને વાલી વાયુઈ તથા પ્રચળ વાયુઈ ચલને લગતી તો ઉસ સમય અનેક દાવદ્રવ વૃક્ષ પત્ર પુષ્પાદિ કી શોભા સે નિગાલે, બને હુઈ જયો કે ત્યોં સ્વલ્પ રહેતે થે ઉનમેં કુછ બી વિકાર નહીં હોતા યા । તાત્પર્ય હસકા યહ હૈ કિ જવ ટાપૂ સે પૂર્વ દિશા

હતા પત્રો અને પુષ્પોથી એમની શોભા અનેરી થઈ પડી હતી એથી એઓ એવિશેષ શોભા-સ પત્ર લાગતા હતા

(જયાળ દીવિચ્ચગા ઈસિ પુરેયાયા પચ્છાગાયા મદાગાયા મહાગાયા વાયતિ તયા ણ બહવે દાવદ્રવા રુક્ષા પત્રિયા જાવ ચિદ્ધતિ, અપ્પેગહ્યા દાવદ્રવા રુક્ષા જુન્ના શ્લોઢા પરિસડિય પહુપત્ત પુષ્પફલા સુક્કરુક્ષાઓ વિવ મિલાયમાળા ૨ ચિદ્ધતિ)

જ્યારે દ્વીપો ઉપર વહેતા પૂર્વ દિશાના આછા પવનો, પશ્ચિમ દિશાના આછા પવનો, ધામે ધીમે વહેનારા પવનો તેમજ પ્રથમ પવનો ફેંકાવા લાગતા ત્યારે પત્ર-પુષ્પ વગેરેની શોભાથી અનેક લાગતા દાવદ્રવ વૃક્ષો જે સ્થિતિમા જિભા હતા તે જ સ્થિતિમા વિકાર વગરના થઈને સ્થિર થઈને જિભા જ રહેતા હતા કહેવાની મતલબ એ છે કે જ્યારે દ્વીપના પૂર્વ અને પશ્ચિમ દિશાના મહા, સુગંધ અને શીતળ પવનો વહેતા હતા ત્યારે પત્રો-પુષ્પો વગેરેથી સ પત્ર

इत्यर्थः दावद्रवा वृक्षा 'जुन्ना' जीर्णाः=चिरकालीना. 'झोडा' झोडः=शटन, तद् योगाद् वृक्षा अपि झोडाः=शटितमूलस्कन्धा इत्यर्थः, 'परिसडियपडुपत्तपुष्प फला' परिशटितपाण्डु पत्रपुष्पफलाः-परिशटितानि=जीर्णानि-अतएव पाण्डूनि=ईपत्पीतानि पत्राणि पुष्पाणि फलानि च चेपा ते तयोक्ता, 'सुकाकवखओविव निलायमाणा' शुष्कवृक्षा इव म्लायन्तः २=शोभारहितास्तिष्ठन्ति । भगवानाह- 'एवामेव' एवमेव=अनेनैव प्रकारेण 'समणाउसो' हे श्रमणा आयुष्मन्तः ! योऽस्माक निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा यावत्प्रजितः सन् बहूना श्रमणाना बहूनां श्रम णीना बहूनाश्चक्राण बहूना श्राविकाना कर्कशकठोर वचनाद्युपमर्गान् 'सम्म' सम्यक्

પશ્ચિમ દિશા સવન્ધી મદ સુગંધ જીતલ સમીર ચલને લગતા તો उस समय जो पत्र पुष्प आदि से युक्त हुए दावद्रव वृक्ष ये वे ज्यो के त्यो अधिक शोभा सपन्न बने रहकर हरे भरे ही दिखलाई देते रहते । परन्तु उनमे जो दाव द्रव वृक्ष जीर्ण थे पुराने थे, शीर्ण-सडे हुए थे जिनका मूल और स्कंध दोनों खोखले हो गये थे और जिनके पीला सफेद होकर पत्र पुष्प एव फल परिशटित हो झड-चुके थे वे शुष्क वृक्षो के समान म्लान-शोभा रहित ही बने रहते (एवामेव समणा उसो ! जो अम्म निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा पव्वाइए समाणे बहूण अण्ण उत्थियाण बहूण गिहत्थाण सम्म सहइ बहूण-समणाण ४ नो सम्म सहइ एसण मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते) इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणों ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधु जन अथवा साध्वी जन दीक्षित होता हुआ अनेक श्रमण जनों के अनेक श्रमणियों के, श्रावको के और श्राविकाओं के कर्कश, कठोर वचनादि रूप उपसर्गों को मध्यस्थ भाव

થયેલા દાવદ્રવ વૃક્ષો જે સ્થિતિમા જે સવિશેષ શોભા યુક્ત થઈને લીલાછમ દેખાતા હતા પણ તેઓમા જે દાવદ્રવ વૃક્ષો જીર્ણ હતા-શૂન્ય હતા-શીર્ણ-સડી ગયેલા હતા, જેના મૂળ અને થડનો ભાગ ખોખલો થઈ ગયો હતો અને જેઓના પીળા અને સફેદ થઈને પાદડાઓ, પુષ્પો અને ફળો પરિશટિત થઈને ખરી પડ્યા હતા તે તો સુકાઈ ગયેલા વૃક્ષોની જેમ મ્લાન-શોભા રહિત થઈને બિલા હતા

(एवामेव समणाउसो ! जो अम्म निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा पव्वाइए समाणे बहूण अण्णउत्थियाण बहूण गिहत्थाण सम्म सहइ बहूण समणाण ४ नो सम्म सहइ एसण मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते)

આ પ્રમાણે જે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રન્થ માધુજન અથવા સાધ્વીજન દીક્ષિત થઈને ઘણા શ્રમણો અને ઘણી શ્રમણીઓ, ઘણા શ્રાવકો અને ઘણી શ્રાવિકાઓના કર્કશ કઠોર વચનો વગેરે ઉપસર્ગોને મધ્યસ્થ

પત્રિતા = પત્રયુક્તા 'પુષ્પિયા' પુષ્પિતા = પુષ્પયુક્તા, 'ફલિયા' ફલિતા = ફલ સમૃદ્ધા, 'હરિયગેરિ' નમાણા 'હરિતકુસારાજ્યમાના' = હરિતકેન = હરિતવર્ણેનાતિશયશોભમાના 'મિરીષ' ત્રિયા = પત્રપુષ્પાદિ શોભયા અત્રી વાતીર = અત્ય તમ્ ઉપશોભમાના: શોભાસમન્ન: , તિષ્ઠન્તિ । યદા સ્વલ્પ = યસ્મિન્ કાલે 'દીવિચ્ચગા' દ્વિપ્યા = દ્વીપમમ્મયા: 'ઈસિપુરેવાયા' 'ઈપત્પુરોચાતા: સ્વલ્પા પૂર્વદિગ્વાયવ, 'પચ્છાવાયા' પશ્ચાઢાતા: = પશ્ચિમદિગ્વાયવ: 'મદાવાયા' મન્દ વાતા: = શનૈ: શનૈ: સન્ધારિણો વાયવ', 'મહાવાયા' મહાવાતા: = પ્રચણ્ડવાયવ: 'વાયતિ' વાન્તિ = ચલન્તિ તદા સ્વલ્પ રહ્યો દાવદ્રવા વૃક્ષા પત્રિતા યાવત્ ત્રિયા સ્ત્રીવાતીરોપશોભમાનાસ્તિષ્ઠન્તિ । 'અપ્પેગહ્યા' અપ્પેરુકા = રતિપયા - સ્તૌકા

પત્ર યુક્ત છે, પુષ્પ યુક્ત છે ફલો સે સમૃદ્ધ છે । હરિત વર્ણ સે યે સઘ અતિશય શોભાગમાન હો રહે છે । હસ તરહ પત્ર પુષ્પાદિ કી શોભા સે इनकी शोभा अत्यंत निराली घनी हुई थी । इस कारण ये विशिष्ट शोभा सपन्न बने हुए थे । (જયાણ દીવિચ્ચગા ઈસિ પુરેવાયા પચ્છા વાયા મદાવાયા મહાવાયા વાયતિ, તયા ણ બહવે દાવદ્રવા રુક્ષા પત્તિયા જાવ ચિદ્ધતિ, અપ્પેગહ્યા દાવદ્રવા સ્વલ્પા જુન્ના છોડા પરિસહિય પહુપત્તિ પુષ્પફલા સુક્કરુક્ષાઓ વિવ મિલાયમાણા ર ચિદ્ધતિ) જિસ સમય દ્વીપ સે ઉત્પન્ન હુઈ પૂર્વ દિશા સવન્ધી સ્વલ્પ હવાઈ, પશ્ચિમ દિશા સવન્ધી સ્વલ્પ હવાઈ, ધીરે ર ચલને વાલી વાયુઈ તથા પ્રચણ્ડ વાયુઈ ચલને લગતી તો ઉસ સમય અનેક દાવદ્રવ વૃક્ષ પત્ર પુષ્પાદિ કી શોભા સે નિગાલે, બને હુઈ જ્યો કે ત્યો સ્વહે રહતે છે ઉનમેં કુછ બી વિકાર નહીં હોતા થા । તાત્પર્ય હસકા યદ હૈ કિ જન્મ ટાપૂ સે પૂર્વ દિશા

હતા પત્રો અને પુષ્પોથી એમની શોભા અનેરી થઈ પડી હતી એથી એએ
એવિશેષ શોભા-સ પત્ર લાગતા હતા

(જયાણ દીવિચ્ચગા ઈસિ પુરેવાયા પચ્છાવાયા મદાવાયા મહાવાયા વાયતિ તયા ણ બહવે દાવદ્રવા રુક્ષા પત્તિયા જાવ ચિદ્ધતિ, અપ્પેગહ્યા દાવદ્રવા રુક્ષા જુન્ના છોડા પરિસહિય પહુપત્તિ પુષ્પફલા સુક્કરુક્ષાઓ વિવ મિલાયમાણા ર ચિદ્ધતિ)

જ્યારે દ્વીપો ઉપર વહેતા પૂર્વ દિશાના આછા પવનો, પશ્ચિમ દિશાના આછા પવનો, ધીમે ધીમે વહેતારા પવનો તેમજ પ્રચંડ પવનો ફૂંકાવા લાગતા ત્યારે પત્ર-પુષ્પ વગેરેની શોભાથી અનેરા લાગતા દાવદ્રવ વૃક્ષો જે સ્થિતિમા બિભા હતા તે જ સ્થિતિમા વિકાર વગરના થઈને સ્થિર થઈને બિભા જ રહેતા હતા ઠહેવાની મતલબ એ છે કે જ્યારે દ્વીપના પૂર્વ અને પશ્ચિમ દિશાના મહા, સુગંધ અને શીતળ પવનો વહેતા હતા ત્યારે પત્રો-પુષ્પો વગેરેથી સ પત્ર

દિક્ સમન્વા વાયવઃ મન્દ્રવાતા મહાવાતા વાન્તિ=પ્રચલન્તિ તદા સ્વલુ વહવે દાવદ્રવા
 વૃક્ષા જીર્ણા ઝોડા ગટિમૂલસ્કન્ધા યાવત્ મ્લાયન્ત સ્તિષ્ઠન્તિ । તત્ર 'અપ્પેગઈયા'
 અપ્પેકકાઃ=રુતિપયાઃ દાવદ્રવા વૃક્ષા પત્રિતા યાવત્ ઉપશોભમાના ૨ સ્તિષ્ઠન્તિ ।
 એવમેવ હે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ યોઽસ્માક નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થી વા પ્રવ્રજિતઃ સન્
 વહુનામ્ અન્યતીર્થિકાના વહુના ગૃહસ્થાના પ્રતિકૂલવચનાનિ સમ્યક્ સહતે, વહુના
 શ્રમણાના ૪-શ્રમણાદીના=ચતુર્વિધસદ્ધસ્યેત્યર્થઃ વચનાનિ નો સમ્યક્ સહતે એવ
 સ્વલુ પુરુષો 'મદ્' મયા દેશારાધકઃ પ્રજ્ઞતઃ । હે આયુષ્મન્તઃ શ્રમણાઃ ! યદા સ્વલુ
 નો 'દીવિચ્ચગા' દ્વેષ્યા.=દ્વોપસમ્પન્ધિન નો 'સામુદ્દગા' સામુદ્રકાઃ=સમુદ્રસમ્પન્ધિન
 રૂપપુરોવાતા પશ્ચાદ્વાતા યાવન્ મહામાતા વાન્તિ તદા સ્વલુ મર્વે દાવદ્રવવૃક્ષા જીર્ણાઃ

અમત શ્રમણો ! જિસ સમય સમુદ્ર સે ઉત્થિત પૂર્વ દિશા સમન્ધી વાયુ
 સ્વલ્પ પશ્ચિમ દિશા સમન્ધી વાયુ મન્દ્ર વાયુ એવ મહા વાયુ ચલતી હૈ
 ઉમ સમય કિતનેક જીર્ણ-પુરાને-શીર્ણદાવ દ્રવ વૃક્ષ ઝોડા-પત્ર પુષ્પાદિ
 વર્જિત વૃક્ષ તો મ્લાન કે મ્લાન હી-શોભા રહિત હી સ્વહે રહતે હૈં ઓર
 કિતનેક દાવ દ્રવ વૃક્ષ જો પત્ર પુષ્પોં સે યુક્ત હોતે હૈં વે હરેમરે સુન્દર
 હી પ્રતીત હોતે રહતે હૈં । હસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા
 નિર્ગ્રન્થ સાધુ એવ સા વી જન પ્રવ્રજિત હોના હુઆ અનેક અન્યતીર્થિકો
 કે અનેક ગૃહસ્થોં કે પ્રતિકૂલ વચનોં વો તો અચ્છી તરહ સે સહન કર
 લેતા હૈં પરન્તુ અનેક શ્રમણ આદિકો કે ચતુર્વિધ સગ કે-વચનોં વો
 સહન નહીં કરતા હૈં-વહ મેરે દ્વારા દેશારાધક પ્રજ્ઞત હુઆ હૈં । (સમ-
 ણા ડસો ! જયા ણ નો દીવિચ્ચગા ણો સામુદ્દગા રૂંસિ પુરે વાયા પચ્છા

અને હે આયુષ્મત શ્રમણો ! ત્યારે સમુદ્ર ઉપર થડને વહેતો આજો
 પૂર્વ દિશાનો પવન, મદ્ર પવન અને પ્રચડ પવન ફૂંકાય છે ત્યારે કેટલાક
 છર્ણુ-જૂના, શીણ પાદડા અને પુષ્પો રહિત થયેલા દાવદ્રવ વૃક્ષો મ્લાન થઈને
 શોભાહીન થઈને જ ઊભા રહે છે અને કેટલાક દાવદ્રવ વૃક્ષો જે પાદડાઓ
 પુષ્પોવાળા છે-લીલાછમ અને સુગંધ લાગે છે આ પ્રમાણે હે આયુષ્મત
 શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રન્થ સાધુ અને સાધ્વીજન પ્રવ્રજિત થઈને ઘણા
 અન્યતીર્થિકોના ઘણા ગૃહસ્થોના પ્રતિજ્ઞ વચનોને સારી રીતે સમજી લઈને
 સહન કરી લે છે પણ તેઓમાથી શ્રમણ વગેરેના ચતુર્વિધ સધના વચનોને
 જે સહન કરતો નથી તે મારા વડે દેશારાધક તરીકે પ્રજ્ઞત થયો છે

(સમણાડસો ! જાયાણ નો દીવિચ્ચગા ણો સામુદ્દગા રૂંસિ પુરે વાયા
 પચ્છાવાયા જાવ મદ્ર વાયા વાયતિ તયાણ સ્વે દાદમા રુક્ષા જુળ્લા ઝાડા જાવ

મધ્યસ્થભાવેન 'સહઈ' સહતે=મુખાવવિકારરૂપેન મર્વતિ, 'સ્વમઈ' સમતે
ક્રોધાભાવેન, તિતિસ્વઃ, તિતિક્ષતે-અદીનાભાવેન, 'અહિયાસેઃ' અધ્યાસ્તે
નિર્જરાભાવનયાન્તરરૂપેન સહત । અથ ચ વહનામ્ અપતીર્થિકાનાં વહુનાં
ગૃહસ્થાનામ્ પ્રતિકૂલવચનાતિ નો સમ્યક્=સમ્યગ્ભાવેન સહતે યાવત્ નો અધ્યાસ્તે,
અપ સ્વલુ=અમ્ભૂત પુરુષઃ 'મય' મયા 'દેશવિરાઢ્ય' દેશવિરાધક. પ્રજ્ઞસ ।

પુનશ્ચ હે શ્રમણાઃ-આયુષ્મન્ત ! યદા સ્વલુ 'સામુદ્રગા' સામુદ્રકાઃ=સમુદ્ર
સમ્બન્ધિનઃ ઇપત્પુરોગાતા. સ્વલ્પપૂર્વદિગ્ગામયઃ. 'પચ્છાવાયા' પશ્ચાદ્વાતા =પશ્ચિમ-

સે સહન કરતા હૈં ઉન વચનો મો સુનર જિનકે મુખ આદિ મેં કોઈ
વિકાર નહીં ક્ષલકતા હૈં ક્રોધ નહીં ઉત્પન્ન હોતા હૈં, અદીન ભાવસે જો
ઉન્હેં સહન કરતા હૈં, નિર્જરા કી ભાવના સે જો ઉન્હેં અપને અન્તઃ
કરણ સે સહલેતા હૈં-તયા ક્રુતીર્થિકોં કે ગૃહસ્થોં કે પ્રતિકૂલ વચનોં
કો જો સહન નહીં કરતા હૈં-યાવત્ ઉન્હેં અધ્યાસિત નહીં કરતા હૈં
એસા વ્યક્તિ મૈને દેશ વિરાધક પ્રજ્ઞસ ક્રિયા હૈં । (સમણાડમો ! જયા
ણ સામુદ્દગા ઈસિં પુરેવાયા પચ્છાવાયા મદાવાયા મહાવાયા વાયતિ તયાણ
વઢવે દાવદવા રુક્ષા જુળ્લા શોડા જાવ મિલાયમાણા ૨ ચિદ્ધતિ, અપ્પે
મહ્યા દાવદવા રુક્ષા પત્તિયા પુષ્પિયા જાવ ઉવસોમેમાણા ૨ ચિદ્ધતિ
એવામેવ સમણાડમો જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગયી વા પવ્વહણ સમાણે
વહૂણ અણ્ણાડત્થિયાણ વહૂણ મિહરથાણ સમ્મ સહઈ વહૂણ સમણાણ ૪
નો સમ્મ સહઈ એસણ મપ્પ પુરિસે દેસારાહણ પળ્લન્તે) પુનશ્ચ-હે આયુ

ભાવથી સહન કરે છે, તે વચનોને સાભળીને જેના મો વગેરે અગો ઉપર
ક્રોધ પણ વિકાર સરખોએ થતો નથી, ક્રોધ ઉત્પન્ન થતો નથી, અદીન ભાવથી
જે તેને ખમતો રહે છે-સહન કરતો રહે છે, નિર્જરાની ભાવનાથી જે તેઓને
ચોતાના અતરથી સહન કરી લે છે તેમજ ક્રુતીર્થિ જેના ગૃહસ્થોને પ્રતિકૂળ
વચનોને જે સહન કરી શકતો નથી યાવત્ તેઓને અધ્યાસિત કરતો નથી
એવા માણસને મેં દેશ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞસ કર્યો છે

(સમણાડમો ! જયાણ સામુદ્દગા ઈસિં પુરે વાયા પચ્છાવાયા મદાવાયા
મહાવાયા વાયતિ તયાણ વઢવે દાવદવા રુક્ષા જુળ્લા શોડા જાવ મિલાયમાણા
૨ ચિદ્ધતિ, અપ્પેમહ્યા દાવદવા રુક્ષા પત્તિયા પુષ્પિયા જાવ ઉવસોમેમાણા ૨
ચિદ્ધતિ એવામેવ સમણાડમો જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગયી વા પવ્વહણ સમાણે
વહૂણ અણ્ણાડત્થિયાણ વહૂણ મિહરથાણ સમ્મ સહઈ વહૂણ સમણાણ ૪ નો સમ્મ
સહઈ એસણ મપ્પ પુરિસે દેસારાહણ પળ્લન્તે)

દિક્ સમગ્રા વાયવઃ મન્દવાતા મહાવાતા વાન્તિ=પ્રચલન્તિ તદા સ્વલુ વહવે દાવદ્રવા
વૃક્ષા જીર્ણા ઘોડા ગટિમૂલસ્કન્ધા' યાવત્ મ્લાયત સ્તિષ્ઠન્તિ । તત્ર 'અપ્પેગડયા'
અપ્પેકકાઃ=રુતિપયાઃ દાવદ્રવા વૃક્ષા પત્રિતા યાવત્ ઉપશોભમાના ૨ સ્તિષ્ઠન્તિ ।
એવમેવ હે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ યોઽસ્માક નિર્ગન્થો વા નિર્ગન્થી વા પ્રવ્રજિતઃ સન્
વહૂનામ્ અન્યતીર્થિકાના વહૂના ગૃહસ્થાના પ્રતિકૂલવચનાનિ સમ્યક્ સહતે, વહૂનાં
શ્રમણાના ૪-શ્રમણાદીના=વતુર્વિધસદ્ધસ્યેત્યર્થઃ વચનાનિ નો સમ્યક્ સહતે એવ
સ્વલુ પુરુષો 'મણ' મયા દેશારાધકઃ પ્રજ્ઞતઃ । હે આયુષ્મન્ત, શ્રમણાઃ ! યદા સ્વલુ
નો 'દીવિચ્ચગા' દ્વૈપ્યા.=દ્વીપસમ્પન્ધિન' નો 'સામુદગા' સામુદ્રગા'=સમુદ્રસમ્પન્ધિન
ઈપમ્પુરોવાતા પથાદ્વાતા યાવત્ મહાગાતા વાન્તિ તદા સ્વલુ મર્વે દ્રાવદ્રવવૃક્ષા જીર્ણાઃ

હમત શ્રમણો ! જિસ સમય સમુદ્ર સે ઉત્થિત પૂર્વ દિશા સન્ધી વાયુ
સ્વલ્પ પશ્ચિમ દિશા સન્ધી વાયુ મન્દ વાયુ એવ મહા વાયુ ચલની હૈ
ઉસ સમય કિતનેક જીર્ણ-પુરાને-શીર્ણદાવ દ્રવ વૃક્ષ ઘોડા-પત્ર પુષ્પાદિ
વ્રજિત વૃક્ષ તો મ્લાન કે મ્લાન હી-શોભા રહિત હી ચ્વહે રહતે હૈં ઓર
કિતનેક દાવ દ્રવ વૃક્ષ જો પત્ર પુષ્પો સે યુક્ત હોતે હૈં વે હરેમરે સુન્દર
હી પ્રતીત હોતે રહતે હૈં । હસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા
નિર્ગન્થ સાધુ એવ સાંઘી જન પ્રવ્રજિત હોના હુઆ અનેક અન્યતીર્થિકો
કે અનેક ગૃહસ્થોં કે પ્રતિકૂલ વચનોં કો તો અચ્છી તરહ સે સહન કર
લેતા હૈં પરન્તુ અનેક શ્રમણ આદિકોં કે ચતુર્વિધ સત્ત કે-વચનોં કો
સહન નહીં કરતા હૈં-વહ મેરે દ્વારા દેશારાધક પ્રજ્ઞત હુઆ હૈં । (સમ-
ણા ઉસો ! જયા ણ નો દીવિચ્ચગા ણો સામુદગા ઈસિં પુરે વાયા પંચ્છા

અને હે આયુષ્મત શ્રમણો ! ત્યારે મમુદ્ર ઉપર થઇને વહેતો આજો
પૂર્વ દિશાનો પવન, મદ પવન અને પ્રચડ પવન ફૂકાય છે ત્યારે કેટલાક
શુભ-જૂના, શીર્ણ પાદડા અને પુષ્પો રહિત થયેલા દાવદ્રવ વૃક્ષો મ્લાન થઇને
શોભાહીન થઇને જ ઊભા રહે છે અને કેટલાક દાવદ્રવ વૃક્ષો જે પાદડાઓ
પુષ્પોવાળા છે-લીલાછમ અને સુંદર જ લાગે છે આ પ્રમાણે હે આયુષ્મત
શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગન્થ સાધુ અને સાધ્વીજન પ્રવ્રજિત થઇને ધણા
અન્યતીર્થિકોના ધણા ગૃહસ્થોના પ્રતિજ્ઞ વચનોને સારી રીતે સમજી લઇને
સહન કરી લે છે પણ તેઓમાથી શ્રમણ વગેરેના ચતુર્વિધ સધના વચનોને
જે સહન કરતો નથી તે મારા વડે દેશારાધક તરીકે પ્રજ્ઞત થયો છે

(સમજાઉસો ! જાયાણ નો દીવિચ્ચગા ણો સામુદગા ઈસિં પુરે વાયા
પંચ્છાવાયા જાવ મહ વાયા વાયતિ તયાણ સન્વે દાદયા સ્વયા જુળગા ઘોડા જાવ

મધ્યસ્થભાવેન 'સહઈ' સહતે=મુગ્ધાદ્યવિકારરરણેન મર્વતિ, 'સ્વમઈ' સમતે ક્રોધાભાવેન, તિતિસ્વઈ, તિતિસ્તે-અદીનાભાવેન, 'અહિયાસેઈ' અધ્યાસ્તે નિર્જરાભાવનયાડ્ઞંત કરણેન સહત । અપ ચ વહનામ્ અ પતીર્થિકાનાં વહુનાં ગૃહસ્થાનામ્ પ્રતિકૂલચનાનિ નો સમ્પરૂ=સમ્પર્ગભાવેન સહતે યાત્રત્ નો અધ્યાસ્તે, એપ સ્વલુ=એવમ્ભૂતઃ પુરુષઃ 'મએ' મયા 'દેશવિરાઢએ' દેશવિરાધક. પ્રજ્ઞસ ।

પુનશ્ચ હે શ્રમણાઃ-આયુષ્મન્ત ! યદા સ્વલુ 'સામુદગા' સામુદ્રકાઃ=સમુદ્ર સમ્યન્ધિનઃ ઈપત્પુરોગાતાઃ સ્વલ્યપૂર્વદિગ્ગાયરઃ 'પન્ઠાગાયા' પન્થાદ્વાતા=પશ્ચિમ-

સે સહન કરતા હેં ઉન વચનોં યો રુનકર જિનકે મુગ્ધ આદિ મેં કોઈ વિકાર નહીં છલકતા હૈ ક્રોધ નહીં ઉત્પન્ન હોતા હૈ, અદીન ભાવસે જો ઉન્હેં સહન કરતા હૈ, નિર્જરા કી ભાવના સે જો ઉન્હેં અપને અન્તઃ કરણ સે સહલેતા હૈ-તયા કુતીર્થિકોં કે ગૃહસ્થોં કે પ્રતિકૂલ વચનોં કો જો સહન નહીં કરતા હૈ-યાવત્ ઉન્હેં અધ્યાસિત નહીં કરતા હૈ એસા વ્યક્તિ મને દેશ વિરાધક પ્રજ્ઞસ કિયા હૈ । (સમણાડમો ! જયાણ સામુદગા ઈર્મિ પુરેવાયા પચ્છાવાયા મદાવાયા મહાવાયા વાયતિ તયાણ વહવે દાવદવા રુક્ખા જુણ્ણા છોડા જાવ મિલાપમાણા ૨ ચિટ્ઠતિ, અપ્પે ગહયા દાવદવા રુક્ખા પત્તિયા પુપ્ફિયા જાવ ઉવસોમેમાણા ૨ ચિટ્ઠતિ એવામેવ સમણાડસો જો અમ્હ નિગ્ગથો વા નિગ્ગથી વા પવ્વહણ સમાણે વહૂણ અણ્ણાઉત્થિયાણ વહૂણ મિહત્થાણ સમ્મ સહઈ વહૂણ સમણાણ ૪ નો સમ્મ સહઈ એસણ મએ પુરિસે દેસારાહણ પળ્ણત્તે) પુનશ્ચ-હે આયુ

ભાવથી સહન કરે છે, તે વચનોને સાભળીને જેના મો વગેરે અગો ઉપર ક્રોધ પણ વિકાર સરખોએ થતો નથી, ક્રોધ ઉત્પન્ન થતો નથી, અદીન ભાવથી જે તેને ખમતો રહે છે-સહન કરતો રહે છે નિર્જરાની ભાવનાથી જે તેઓને પોતાના અંતરથી સહન કરી લે છે તેમજ કુતીર્થિ કેના ગૃહસ્થોને પ્રતિકૂળ વચનોને જે સહન કરી શકતો નથી યાવત તેઓને અધ્યાસિત કરતો નથી એવા માણસને મેં દેશ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞસ કર્યો છે

(સમણાડસો ! જયાણ સામુદગા ઈર્મિ પુરે વાયા પચ્છાવાયા મદાવાયા મહાવાયા વાયતિ તયાણ વહવે દાવદવા રુક્ખા જુણ્ણા છોડા જાવ મિલાપમાણા ૨ ચિટ્ઠતિ, અપ્પેગહયા દાવદવા રુક્ખા પત્તિયા પુપ્ફિયા જાવ ઉવસોમેમાણા ૨ ચિટ્ઠતિ એવામેવ સમણાડસો જો અમ્હ નિગ્ગથો વા નિગ્ગથી વા પવ્વહણ સમાણે વહૂણ અણ્ણાઉત્થિયાણ વહૂણ મિહત્થાણ સમ્મ સહઈ વહૂણ સમણાણ ૪ નો સમ્મ સહઈ એસણ મએ પુરિસે દેસારાહણ પળ્ણત્તે)

દિક્ સમયા વાયવઃ મન્દ્રાતા મહાવાતા વાન્તિ=પ્રચલન્તિ તદા સ્વલુ વહવે દાવદ્રવા
વૃક્ષા જીર્ણા શ્લોઢા ગટિમૂલસ્કન્ધા યાવત્ મ્લાયત સ્તિષ્ઠન્તિ । તત્ર 'અપ્પેગદ્યા'
અપ્પેકકાઃ=રૂતિપયાઃ દાવદ્રવા વૃક્ષા પતિતા યાવત્ ઉપશોમમાના ૨ સ્તિષ્ઠન્તિ ।
એવમેવ હે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ યોઽસ્માક નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થી વા પ્રવ્રજિતઃ સન્
વહુનામ્ અન્યતીર્થિકાનાં વહુના ગૃહસ્થાના પ્રતિકૂલવચનાનિ સમ્યક્ સહતે, વહુના
શ્રમણાના ૪-શ્રમણાદીના=વતુર્નિધમદ્વસ્યેત્યર્થઃ વચનાનિ નો સમ્યક્ સહતે એ
સ્વલુ પુરુષો 'મર્' મયા દેશારાધકઃ પ્રજ્ઞતઃ । હે આયુષ્મન્ત, શ્રમણાઃ । યદા સ્વલુ
નો 'દીવિચ્ચગા' દ્વેષ્યા,=દ્વેષસમ્વન્ધિન નો 'સામુદ્દગા' સામુદ્રકાઃ=સમુદ્રસમ્વન્ધિન
ઈપપુરોવાતા પશ્ચાદ્વાતા યાવન્ મહાગાતા વાન્તિ તદા સ્વલુ મર્વે દ્રાવદ્રવવૃક્ષા જીર્ણાઃ

ઘમત શ્રમણો ! જિસ સમય સમુદ્ર સે ઉત્થિત પૂર્વ દિશા સમન્ધી વાયુ
સ્વલ્પ પશ્ચિમ દિશા સમન્ધી વાયુ મન્દ વાયુ એવ મહા વાયુ ચલતી હૈ
ઉસ સમય કિતનેક જીર્ણ-પુરાને-શીર્ણદાવ દ્રવ વૃક્ષ શ્લોઢા-પત્ર પુષ્પાદિ
વર્જિત વૃક્ષ તો મ્લાન કે મ્લાન હી-શોમા રહિત હી ગ્વહે રહતે હૈં ઓર
કિતનેક દાવ દ્રવ વૃક્ષ જો પત્ર પુષ્પો સે યુક્ત હોતે હૈં વે હરેમરે સુન્દર
હી પ્રતીત હોતે રહતે હૈં । હસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા
નિર્ગ્રન્થ સાધુ એવ માત્રી જન પ્રવ્રજિત હોના હુઆ અનેક અન્યતીર્થિકો
કે અનેક ગૃહસ્થો કે પ્રતિકૂલ વચનો વો તો અચ્છી તરહ સે સહન કર
લેતા હૈં પરન્તુ અનેક શ્રમણ આદિકો કે ચતુર્વિધ સગ કે-વચનોં વો
સહન નહીં કરતા હૈં-વહ મેરે દ્વારા દેશારાધક પ્રજ્ઞત હુઆ હૈં । (સમ-
ણા ઉસો ' જયા ણ નો દીવિચ્ચગા ણો સામુદ્દગા ઈસિ પુરે વાયા પચ્છા

અને હે આયુષ્મત શ્રમણો ! ત્યારે સમુદ્ર ઉપર થાને વહેતો આઠો
પૂર્વ દિશાનો પવન, મદ પવન અને પ્રચડ પવન કૂકાય છે ત્યારે કેટલાક
શુભ-શૂના, શીણ પાદડા અને પુષ્પો રહિત થયેલા દાવદ્રવ વૃક્ષો મ્લાન થઈને
શોભાહીન થઈને જ ઊભા રહે છે અને કેટલાક દાવદ્રવ વૃક્ષો જે પાદડાઓ
પુષ્પોવાળા છે-લીલાછમ અને સુન્દર જ લાગે છે આ પ્રમાણે હે આયુષ્મત
શ્રમણો ! જે અમારા નિશ્ચય સાધુ અને સાધરીજન પ્રવ્રજીત થાને ઘણા
અન્યતીર્થિકોના ઘણા ગૃહસ્થોના પ્રતિજ્ઞ વચનોને મારી રીતે સમજી લઈને
સહન કરી લે છે પણ તેઓમાથી શ્રમણ વગેરેના ચતુર્વિધ સધના વચનોને
જે સહન કરતો નથી તે મારા વડે દેશારાધક તરીકે પ્રજ્ઞત થયો છે

(સમણાઉસો ! જાયાણ નો દીવિચ્ચગા ણો સામુદ્દગા ઈસિ પુરે વાયા
પચ્છાવાયા જાવ મહાવાયા વાયતિ તયાણ સવ્વે દાદયા રક્કવા જુણા ઘાઢા જાવ

મધ્યસ્થભાવેન 'સહઈ' સહતે=મુલાધરિકારરરણેન મર્ષતિ, 'સ્વમઈ' સમતે ક્રોધાભાવેન, તિતિસ્વઈ, તિતિશતે=અદીનાભાવેન, 'જહિયાસેઈ' અધ્યાસ્તે નિર્જરાભાવનયાઽન્ત રરણેન સહત । અ ચ વહનામ્ જ પતીર્થિકાનાં વહૂનાં ગૃહસ્થાનામ્ પ્રતિકૂલવચનાનિ નો સમ્પર્ક=સમ્યગ્ભાવેનસહતે યાવત્ નો અધ્યાસ્તે, એપ સ્વલુ=એમ્ભૂત પુરુષઃ 'મએ' મયા 'દેશવિરાઢઈ' દેશવિરાધકઃ પ્રજ્ઞસ ।

પુનશ્ચ હે શ્રમણા-આયુષ્મન્ત ! ચદા સ્વલુ 'સામુદગા' સામુદ્રકાઃ=સમુદ્ર સમ્બન્ધિનઃ ઈપત્પુરોચાતાઃ સ્વલ્પપૂર્વદિગ્ચાયવઃ 'પચ્છાવાયા' પથ્થાદ્વાતા=પશ્ચિમ-

સે સહન કરતા હે उन વચનો મો સુનકર જિનકે મુખ આદિ મેં કોઈ વિકાર નહીં શલકતા હે ક્રોધ નહીં ઉત્પન્ન હોતા હે, અદીન ભાવસે જો ઉન્હે સહન કરતા હે, નિર્જરા કી ભાવના સે જો ઉન્હે અપને અન્તઃકરણ સે સહલેતા હે-તયા કુતીર્થિકોં કે ગૃહસ્થોં કે પ્રતિકૂલ વચનોં કો જો સહન નહીં કરતા હે-યાવત્ ઉન્હે અધ્યાસિત નહીં કરતા હે એસા વ્યક્તિ મેને દેશ વિરાધક પ્રજ્ઞસ કિયા હે । (સમણાઉસો ! જયાણ સામુદગા ઈસિં પુરેવાયા પચ્છાવાયા મદાવાયા મહાવાયા વાયતિ તયાણ વહવે દાવદવા રુક્ષા જુળ્લા શોડા જાવ મિલાયમાળા ૨ ચિટ્ઠતિ, અપ્પે ગહયા દાવદવા રુક્ષા પત્તિયા પુષ્પિયા જાવ ઉવસોમેમાળા ૨ ચિટ્ઠતિ એવામેવ સમણાઉસો જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગયી વા પવ્વહણ સમાણે વહૂણ અણ્ણઉત્થિયાણ વહૂણ ગિહત્થાણ સમ્મ સહઈ વહૂણ સમણાણ ૪ નો સમ્મ સહઈ એસણ મએ પુરિસે દેસારાહણ પળ્ણત્તે) પુનશ્ચ-હે આયુ

ભાવથી સહન કરે છે, તે વચનોને સાભળીને જેના મો વગેરે અગો ઉપર ક્રોધ પણ વિકાર સરખોએ થતો નથી, ક્રોધ ઉત્પન્ન થતો નથી, અદીન ભાવથી જે તેને ખમતો રહે છે-સહન કરતો રહે છે, નિર્જરાની ભાવનાથી જે તેઓને પોતાના અતરથી સહન કરી લે છે તેમજ કુતીર્થિ કેના ગૃહસ્થોને પ્રતિકૂળ વચનોને જે સહન કરી શકતો નથી યાવત્ તેઓને અધ્યાસિત કરતો નથી એવા માણસને મે દેશ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞસ કર્યો છે

(સમણાઉસો ! જયાણ સામુદગા ઈસિં પુરે વાયા પચ્છાવાયા મદાવાયા મહાવાયા વાયતિ તયાણ વહવે દાવદવા રુક્ષા જુળ્લા શોડા જાવ મિલાયમાળા ૨ ચિટ્ઠતિ, અપ્પેગહયા દાવદવા રુક્ષા પત્તિયા પુષ્પિયા જાવ ઉવસોમેમાળા ૨ ચિટ્ઠતિ એવામેવ સમણાઉસો જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગયી વા પવ્વહણ સમાણે વહૂણ અણ્ણઉત્થિયાણ વહૂણ ગિહત્થાણ સમ્મ સહઈ વહૂણ સમણાણ ૪ નો સમ્મ સહઈ એસણ મએ પુરિસે દેસારાહણ પળ્ણત્તે)

સમ્યક્ સહતે એપ સ્વલુ=એવમ્ભૂતઃ પુરુષ 'મર્' મયા સર્વારાધકઃ પ્રજ્ઞતઃ, એવ સ્વલુ=અનેન પ્રકારેણ હે ગૌતમ ! જીવા આરાધકા વા વિરાધકા ભવન્તિ । સુધર્મા

અન્યતીર્થિક ગૃહસ્થોં કે વચનોં કો અચ્છી તરહ સહન આદિ નહોં કરતા હૈ એસા યહ સાધ્વાદિજન મેરે દ્વારા સર્વ વિરાધક પ્રજ્ઞત કિયા ગયા હૈ । (સમણા ઉસો ! જયાણ દીવિચ્છગાવિ સામુદ્દગાવિ ર્હસિં પુરે વાયા પચ્છા વાયા જાવ વાયતિ, તયા ણ સન્ને દાવદવા રુક્ખા પત્તિયા જાવ ચિટ્ઠતિ, એવામેવ સમણા ઉસો ! જો અમ્હ જાવ પવ્વત્તિએ સમાણે વહૂણ સમણાણ ૪ વહૂણ અન્નઉત્થિય ગિહત્થાણ સમ્મ સહદ્દ એસણ મર્ પુરિસે સન્નારાદ્દે પણ્ણત્તે । એવ સ્વલુ ગોયમા ! જીવા આરાદ્દગા વા વિરાદ્દગા વા ભવતિ, એવ સ્વલુ જન્નુ ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ એકકારસમસ્સ અઙ્ગયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે ત્તિવેમિ) હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જિસ સમય દ્વીપોત્થ મી તથા સમુદ્રોત્થ મી ર્હપત્પુરોવાત પશ્ચાદ્દાત યાવત્ વહતે હૈં ઉસ સમય પુષ્પિત પત્રિત આદિ સમસ્ત દાવદ્રવ વૃક્ષ શોભા સપન્ન હી વને રહતે હૈં । ર્હસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા સાયુ સાધ્વીજન દીક્ષિત હોતા હુઆ અનેક શ્રમણાદિકોં કે ચતુર્વિધ સઘ કે-તથા અન્યતીર્થિક ગૃહસ્થોં કે પ્રતિકૂલ વચનોં કો અચ્છી તરહ સહન કર લેના હૈ એસા સાયુ આદિ જન મેરે દ્વારા સર્વારાધક

પણ ચતુર્વિધ સઘના અને બીજા તીર્થિક ગૃહસ્થોના વચનોને સાચી પેઠે સહન કરી લે છે એવા સાધુ વગેરે જનો મારા વડે સર્વ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞત કરવામા આવ્યા છે

(સમણાઉસો ! જયાણ દીવિચ્છગાવિ સામુદ્દગા વિ ર્હસિં પુરે વાયા પચ્છા-વાયા જાવ વાયતિ, તયા ણ સન્ને દાવદવા રુક્ખા પત્તિયા જાવ ચિટ્ઠતિ, એવા-મેવ સમણાઉસો ! જો અમ્હ જાવ પવ્વત્તિએ સમાણે રહૂણ સમણાણ ૪ વહૂણ અન્ન-ઉત્થિયગિહત્થાણ સમ્મ સહદ્દ એસણ મર્ પુરિસે સન્નારાદ્દે પણ્ણત્તે ! એવ સ્વલુ ગોયમા ! જીવા આરાદ્દગા વા વિરાદ્દગા વા ભવતિ, એવ સ્વલુ જન્નુ ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ એકકારસમસ્સ અઙ્ગયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે ત્તિવેમિ)

હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! ત્યારે દ્વીપ અને સમુદ્ર ઉતરના પૂર્વ પશ્ચિમના ધીમા અને પ્રચડ પવનો કૂકાય છે ત્યારે પાદડા અને પુષ્પોવાળા બધા દાવદ્રવ વૃક્ષો શોભા સપન્ન થઈને જ બિલા રહે છે આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા સાધુ અને સાધ્વીજન દીક્ષિત થઈને ઘણા ધર્મણો વગેરેના, ચતુર્વિધ સઘના તેમજ બીજા તીર્થિક ગૃહસ્થોના પ્રતિકૂલ વચનો સામળીને

જોડા યાવદ્ મ્લાન્તસ્તિષ્ઠન્તિ, અપ્પેરુકા = રુતિપયાઃ યાવદ્ ઉપાતોમમાનાસ્તિ
 ષ્ઠન્તિ । એવમેવ હે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ ! યાવત્ પ્રવ્રજિત સન્ બહુના શ્રમણાનાં ૪
 ચતુર્વિધસહસ્રસ્ય, બહુનામ્ અન્યતીર્થિકગૃહસ્થાના વચનાનિ નો સમ્યક્ સહતે, એ
 સ્વલુ પુરુષઃ ' મણ ' મયા સર્વવિરાધક' પ્રજ્ઞાત । શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ । યદા સ્વલુ
 ' દોવિન્ચગાવિ ' દ્વૈષ્યા અપિ ' સામુદ્રગાવિ ' સામુદ્રના અપિ ઈપત્પુરોચાતા પશ્ચાદ્વાતા
 યાવદ્ વાન્તિ તદા સ્વલુ સર્વે દ્રાવદ્રવા વૃક્ષા પત્રિના યાવત્ ત્રિયા ઉપશોભમાનાઃ ૨
 તિષ્ઠતિ । એવમેવ હે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ ! યોઽસ્માકં યાવત્ પ્રવ્રજિત સન્ બહુના
 શ્રમણાના ૪ = ચતુર્વિધસહસ્રસ્ય બહુનામ્ અન્યતીર્થિકગૃહસ્થાના પ્રતિકૂલ વચનાનિ

વાયા જાવ મહાવાયા વાયતિ-તયાણ સઘ્વે દાવદ્વા રુક્ષા જુળ્લા ઓડા
 જાવ મિલાયમાળા ચિઢ્ઢતિ, અપ્પેગહયા જાવ ઉવસોભે માળા ચિઢ્ઢતિ,
 એવામેવ સમણાઉસો ! જાવ પવ્વહ્ણ સમાણે વહૂણ સમાણાણ ૪ વહૂણ
 અન્નઉત્થિયગિહત્યાણ નો સમ્મ સહહ્ણ એસણ મણ પુરિસે સઘ્વ વિરાહિણ
 પળગત્તે) હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જિસ સમય ન તો દોપોત્થ પૂર્વ દિશા
 સઘધી સ્વલ્પ વાયુઈ, પશ્ચિમ દિશા સઘધી સ્વલ્પ વાયુઈ, ધીરે ૨ ચલને
 વાલી વાયુઈ એવ પ્રવ્વહ્ણ વેગ શાલી વાયુઈ ચલતે હૈં ઓર ન સમુદોત્થ
 પૂર્વ દિશા સઘધી સ્વલ્પ વાયુઈ, પશ્ચિમ દિશા સઘધી સ્વલ્પ વાયુઈ
 ધીરે ૨ ચલને વાલી વાયુઈ એવ પ્રવ્વહ્ણ વેગ શાલી વાયુઈ ચલતે હૈં ઉમ
 સમય ઓ જીર્ણ શીર્ણ દાવદ્રવ વૃક્ષ મ્લાન હી રહતે હે-ઓર જો પત્ર
 પુષ્પાદિકો સે યુક્ત હોતે હૈં વે ઓ જૈસે હોતે હૈં વૈસે હી બને રહતે હૈં
 હસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા નિર્ગન્થ સાધુજન એવ
 નિર્ગન્થ સાધ્વી જન દીક્ષિત હોતા હુઆ ઓ ચતુર્વિધ સઘ કે ઓર

મિલાયમાળા ચિઢ્ઢતિ, અપ્પેગહયા જાવ ઉવસોભેમાળા ચિઢ્ઢતિ, એવામેવ સમણા-
 ઉસો ! જાવ પવ્વહ્ણ સમાણે વહૂણ સમાણાણ ૪ વહૂણ અન્નઉત્થિયગિહત્યાણ નો
 સમ્મ સહહ્ણ એસ ણ મણ પુરિસે સઘ વિરાહિણ પળગત્તે)

હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! ત્યારે દોપોના પૂર્વ દિશાના આછા પવનો, પશ્ચિમ
 દિશાના પવનો ધીમે, ધીમે વહેતા પવનો, અને પ્રચંડ વેગથી ફૂકાતા પવનો વહેતા
 નથી અને સમુદ્ર પર થઈને વહેતા પૂર્વ દિશાના આછા પવનો, ધીમે ધીમે વહે
 નારા પવનો, અને પ્રચંડ વેગે ફૂકાતા પવનો વહેતા નથી ત્યારે પશુ ભૂત,
 શીશુ દાવદ્રવ વૃક્ષો તો મ્લાન (ઠરમાયેલા) રહે છે અને પત્રપુષ્પ વગેરેથી
 સપત્ર દાવદ્રવ વૃક્ષો પણ જેવા છે તેવા જ રહે છે, આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્ત
 શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગન્થ સાધુઓ અને નિર્ગન્થ સાધ્વીઓ ની થઈને

સમ્યક્ સહતે એવ સ્વલુ=એવમ્ભૂતઃ પુરુષ 'મણ' મયા સર્વારાધકઃ પ્રજ્ઞસઃ, એવ સ્વલુ=અનેન પ્રકારેણ હે ગૌતમ ! જીવા આરાધકા વા વિરાધકા ભવન્તિ । સુધર્મા

અન્યતીર્થિક ગૃહસ્થોં કે વચનો કો અચ્છી તરહ સહન આદિ નહીં કરતા હૈ એસા યહ સાધ્વાદિજન મેરે દ્વારા સર્વ વિરાધક પ્રજ્ઞસ કિયા ગયા હૈ । (સમણા ઉસો ! જયાણ દીવિચ્ચગાવિ સામુદ્દગાવિ ર્હસિ પુરે વાયા પચ્છા વાયા જાવ વાયતિ, તયા ણ સવ્વે દાવદવા રુક્ખા પત્તિયા જાવ ચિટ્ઠતિ, એવામેવ સમણા ઉસો ! જો અમ્હ જાવ પવ્વત્તિણ સમાણે વહૂણ સમણાણ ૪ વહૂણ અન્નઉત્થિય ગિહત્થાણ સમ્મ સહ્દ્દ એસણ મણ પુરિસે સવ્વારાહણ પણ્ણત્તે ! એવ સ્વલુ ગોયમા ! જીવા આરાહગા વા વિરાહગા વા ભવતિ, એવ સ્વલુ જન્નૂ ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરે ણ ઇકકારસમસ્સ અઙ્ગયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે ત્તિવેમિ) હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જિસ સમય દ્વીપોત્થ મી તથા સમુદ્રોત્થ મી ર્હપત્તુરોવાત પશ્ચાદ્વાત યાવત્ વહતે હૈ ઉસ સમય પુષ્પિત પત્રિત આદિ સમસ્ત દાવ-દ્રવ વૃક્ષ શોભા સપન્ન હી બને રહતે હૈ । ઈસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા સાધુ સાધ્વીજન દીક્ષિત હોતા હુઆ અનેક શ્રમણાદિકોં કે ચતુર્વિધ સઘ કે-તથા અન્યતીર્થિક ગૃહસ્થોં કે પ્રતિકૂલ વચનોં કો અચ્છી તરહ સહન કર લેતા હૈ એસા માયુ આદિ જન મેરે દ્વારા સર્વારાધક

પણ ચતુર્વિધ સઘના અને બીજા તીર્થિક ગૃહસ્થોના વચનોને સારી પેઠે સહન કરી લે છે એવા સાધુ વગેરે જનો મારા વડે સર્વ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞ કરવામા આવ્યા છે

(સમણાઉસો ! જયાણ દીવિચ્ચગાવિ સામુદ્દગા વિ ર્હસિ પુરે વાયા પચ્છા-વાયા જાવ વાયતિ, તયા ણ સવ્વે દાવદવા રુક્ખા પત્તિયા જાવ ચિટ્ઠતિ, એવા-મેવ સમણાઉસો ! જો અમ્હ જાવ પવ્વત્તિણ સમાણે વહૂણ સમણાણ ૪ વહૂણ અન્ન-ઉત્થિયગિહત્થાણ સમ્મ સહ્દ્દ એસણ મણ પુરિસે સવ્વારાહણ પણ્ણત્તે ! એવ સ્વલુ ગોયમા ! જીવા આરાહગા વા વિરાહગા વા ભવતિ, એવ સ્વલુ જન્નૂ ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ ઇકકારસમસ્સ અઙ્ગયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે ત્તિવેમિ)

હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જ્યારે દ્વીપ અને સમુદ્ર ઉપરના પૂર્વ પશ્ચિમના ધીમા અને પ્રચંડ પવનો ફૂંકાય છે ત્યારે પાદડા અને પુષ્પોવાળા બધા દાવ દ્રવ વૃક્ષો શોભા સપન્ન થઈને જ બિભા રહે છે આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા સાધુ અને સાધ્વીજન દીક્ષિત થઈને ધણા શ્રમણો વગેરેના, ચતુર્વિધ સઘના તેમજ બીજા તીર્થિક ગૃહસ્થોના પ્રતિકૂલ વચનો સાંભળીને

સ્વામી પ્રાહ-અથ સ્વલુ=પૂર્વોક્તપ્રકારેણ હે જન્મુઃ ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરણ
યાવત્સિદ્ધિગતિં સપ્રાપ્તેન પદાદશસ્ય અથ=પૂર્વોક્તપ્રકાર અર્થઃ=ભાવઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ।
'તિવેમિ' હતિ વ્રતીમિ, હતિ પૂર્વવત્ ॥ સૂ. ૧ ॥

હતિ શ્રી-વિશ્વવિખ્યાત-જગદ્ગુરુ-પ્રસિદ્ધવાચકપદ્મદશભાષાકલિતકલિતક
લાપાલાપક-પ્રવિષ્ઠદ્વગયવચનૈકગ્રન્થનિર્માપક-પ્રાદિમાનમર્દક શ્રીશાહુન્દ
અપતિકોલ્હાપુરરાજપદત્ત-'જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય' પદભૂષિત-કોલ્હાપુરરાજ-
ગુરુ-પાલપ્રહ્લવારિ-જૈનાચાર્ય-જૈનધર્મદિગ્ગજપૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલ-
પ્રતિવિરચિતાયા 'જ્ઞાતાધર્મકથાજ્ઞ' સૂત્રસ્યાનગારધર્મામૃતવ
ર્ષિણ્યાર્યાયા વ્યાખ્યાયા પદાદશમ વચન સમાપ્ત ॥૧૧॥

રૂપ સે પ્રજ્ઞપ્ત હુઆ હૈ । હસ પ્રકાર હૈ ગૌતમ ! જીવ આરાધક ઔર
વિરાધક હોતે હૈ । સુધર્મા સ્વામી જન્મુસ્વામી સે કહતે હૈ કિ હૈ જન્મુ !
હસ પૂર્વોક્ત રૂપ સે શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને જો કિ સિદ્ધિ ગતિ કો
પ્રાપ્ત કર ચુકે હૈ ગ્યારહવે જ્ઞાનાધ્યયન કા યદ્ અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કિયા હૈ ।
એસા મૈને તુમ સે જૈસા સુના હૈ વૈસા યદ્ કહા હૈ । હસ મૈ નિજ કી
કુઠ બી કલ્પના નહી હૈ । સૂત્ર ॥ ૧ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત "જ્ઞાતા
ધર્મકથાજ્ઞસૂત્ર" કી અનગાર ધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યા કા ગ્યારહવા
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૧ ॥

સારી પેઠે સહન કરી હૈ છે એવા સાધુ જન વગેરે મારા વડે સર્વોપદેશક રૂપે
પ્રજ્ઞપ્ત થાય છે આ પ્રમાણે હૈ ગૌતમ ! જીવો આરાધકો અને વિરાધકો
હોય છે સુધર્મા સ્વામી જન્મુસ્વામીને કહે છે કે હૈ જન્મુ ! સિદ્ધિગતિ
પામેલા ભગવાન મહાવીર સ્વામીએ અગિયારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ ઉપર
મુજબનો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે મેં જે ગીતે સાંભળ્યો છે તે જ રીતે આ અર્થ તમારી
સામે સ્પષ્ટ કર્યો છે એમા મેં મારી તરફથી કંઈ જ ઉમેરું નથી ॥ સૂત્ર "૧" ॥

જૈનાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની અનગાર
ધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ અગિયારમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥૧૧॥

અથ દ્વાદશમધ્યયનં પ્રારમ્ભ્યતે—

ગતમેક્ષાદગમ યવન, સાપત દ્વાદશમારમ્ભ્યતે, પૂર્વસ્મિન્નધ્યયને ચારિત્રસ્યા-
રાધકત્વ તદ્ વિરાધકત્વ ચ પ્રોક્તમ્ ઇહ તુ ઉદકદૃષ્ટાન્તેન મલીમમપરિણામપરિણ-
મિતાન્તઃ કરણાનામપિ ભવ્યાના સુગુરુપરિકર્મ તન્નાવિરાધકત્વ ભવતીતિ પ્રદર્શ્યતે-
અત્રેદમાદિસૂત્રમ્—‘જહ્ણ ભતે’ इत्यादि ।

મૂલમ્—જહ્ણ ભતે । સમણેણ જાવ સંપત્તેણં એકારસમસ્સ
નાયઙ્ગયણસ્સ અયમં ધારસમસ્સ ણં નાયઙ્ગયણસ્સ કે
અદ્દે પપ્પત્તે ?, एवं खलु जवू । तेणं कालेणर चंपा नाम
नयरी पुण्णभद्दे चेइए जितसत्तू राया धारिणीदेवी, अदीण-

बारहवा अ घघन प्रारभ ”

जितशत्रु राजा सुबुद्धि प्रधान का वर्णन

ગ્યારહવા અધ્યયન સમાપ્ત હો ચુકા અવ બારહવા અધ્યયન પ્રારમ્ભ હોતા
હૈ । इस का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से संचन्व है—पूर्व अध्ययन
में जो जीव चारित्र का पालन करता है वह आराधक और जो इससे
विपरीत भाव वाला होता है वह विराधक है यह प्रकट किया गया है ।
अब इस अध्ययन में उदक के दृष्टान्त से यह प्रकट किया जायगा कि
जिन भव्य जीवों का अन्त. करण मलीन परिणामों से परिणत हो रहा
है—परन्तु उनमें यदि सुगुरु परिकर्मता-गुण विशेष का ग्रहण करना है
तो उससे वहाँ चारित्राराधकता आ जाती है 'जह्ण भतें !' इत्यादि ।

જિતશત્રુ રાજા અને સુબુદ્ધિ પ્રધાનનું બારમું અધ્યયન

અગિયારમું અધ્યયન સમાપ્ત થઈ ચૂક્યું છે અને હવે બારમું અધ્યયન
પ્રારંભ થાય છે આનો પહેલા અધ્યયનની સાથે આ પ્રમાણે સંબંધ છે કે
પહેલાના અધ્યયનમાં જે જીવ ચારિત્રનું પાલન કરે છે તે આરાધક અને જે
એના વિપરીત લાવનાળો હોય છે તે વિરાધક છે એ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવી
છે આ અધ્યયનમાં ઉદકના દૃષ્ટાંતથી આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ થશે કે જે ભવ્ય
જીવોનું અન્ત કરણ (અંતર) ખરાબ પરિણામોથી પરિણત થઈ રહ્યું છે, પણ
તેમનામાં જે સુગુરુ પરિકર્મતા ગુણ વિશેષનું ગ્રહણ કરવું છે તો ત્યાં ચારિત્ર
રાધકતા આવી જાય છે જ હ્ણ ભતે इत्यादि

સ્વામી પ્રાહ-પર સ્વલુ=પૂર્વોક્તપ્રકારણ હે જન્મુ. ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ
યાત્રત્સિદ્ધિગતિં સપ્રાપ્તેન પદ્માદશસ્ય અર્થ=પૂર્વોક્તપ્રકાર અર્થઃ=ભાવ' પ્રજ્ઞપ્તઃ ।
'તિથેમિ' ઇતિ ઘ્વમિ, ઇતિ પૂર્વત્ ॥ સૂ. ૧॥

ઇતિ શ્રી-વિશ્વવિરચિતા-જગદ્ગુપ્ત-પ્રસિદ્ધવાચકપદ્મદશભાષાકલિતકલિતક-
લાપાલાપક-પ્રવિષ્ઠદ્વગયપદ્યનૈકપ્રન્યનિર્માપક-પ્રાદિમાનમર્દક-શ્રીશાહુન્દ-
ત્રપતિકોલ્હાપુરરાજપદ્મ-‘જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય’ પદ્મભૂષિત-કોલ્હાપુરરાજ-
ગુરુ-બાલગ્રહચારિ-જૈનાચાર્ય-જૈનધર્મદિવાકરપૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલ-
વિશ્વવિરચિતાયા ‘જ્ઞાતાધર્મકથાજ્ઞ’ સૂત્રસ્યાનગારધર્મામૃતવ
વિષ્ણુચાર્યાયા વ્યાખ્યાયાં પદ્માદશમધ્યયન સમાપ્ત ॥૧૧॥

રૂપ સે પ્રજ્ઞપ્ત હુઆ હૈ । ઇસ પ્રકાર હૈ ગૌતમ । જીવ આરાધક ઓર
વિરાધક હોતે હૈ । સુધર્મા સ્વામી જન્મુસ્વામી સે કહતે હૈ કિ હે જન્મુ !
ઇસ પૂર્વોક્ત રૂપ સે શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને જો કિ સિદ્ધિ ગતિ કો
પ્રાપ્ત કર ચુકે હૈ ગ્યારહવે જ્ઞાતાધ્યયન કા યદ્ અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કિયા હૈ ।
એસા મૈને તુમ સે જૈસા સુના હૈ વૈસા યદ્ કહા હૈ । ઇસ મૈં નિજ કી
કુઝ બી કલ્પના નહી હૈ । સૂત્ર ॥ ૧ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત “જ્ઞાતા
ધર્મકથાજ્ઞસૂત્ર ” કી અનગાર ધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યા કા ગ્યારહવા
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૧ ॥

સારી પેઠે સહન કરી હૈ છે એવા સાધુ જન વગેરે મારા વડે સર્વોપદેશક રૂપે
પ્રજ્ઞપ્ત થાય છે આ પ્રમાણે હૈ ગૌતમ ! એવા આરાધકો અને વિરાધકો
હોય છે સુધર્મા સ્વામી જન્મુસ્વામીને કહે છે કે હે જન્મુ ! સિદ્ધિગતિ
પામેલા ભગવાન મહાવીર સ્વામીએ અગિયારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ ઉપર
મુજબનો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે મેં જે રીતે સામણ્યો છે તે જે રીતે આ અર્થ તમારી
સામે સ્પષ્ટ કર્યો છે એમા મેં મારી તરફથી કંઈ જ ઉમેરું નથી ॥ સૂત્ર “૧” ॥

જૈનાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની અનગાર
ધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ અગિયારમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥૧૧॥

धारिणीदेवी, अदीनशत्रुर्नाम कुमार' = जितशत्रुराजपुत्र 'जुवराया' युवराजः = युवराजत्वेऽभिपिक्तश्चाप्यानीत् । सुबुद्धिर्नामाऽमात्य औत्पातिस्यादिवुद्धि चतुष्टययुक्तः यावद् 'रज्जधुराचितए' राज्यपुराचिन्तकः = राज्यभारचिन्तक 'समणो वामए' श्रमणोपासक = श्रावणोऽभिगतजीवो जीव आसीत् । तस्याश्वम्पाया नगर्या बहिरुत्तरपौरस्त्ये एक 'परिहोदए' परिखोदक परिखा = दुर्गम्य चतुर्दिक्षु रिपुप्रभृतीना मवेष्टुमशक्या गर्तरूपावेष्टनाकारभूमिः, तन्न सम्भृतमुदक परिखोदक 'खाईजल' इतिभाषाप्रमिद्व चाप्यासीत् । तत्कीदृशम् ? इत्याह— 'मेयवसा'

प्ररूपित किया है ? । हे जन्म ! सुनो-जो उन्होंने १२वें अध्ययनका अर्थ निरूपित किया है वह इस प्रकार है- (तेण कालेण तेण समण चपा नाम नगरी पुणमहे चेइए जियसत्तू राया धारिणी देवी, अदीणसत्तू नाम कुमारे जुवराया यावि होत्था) उस काल और उस समय में चपा नाम की नगरी थी । उसमें पूर्णमद्र नाम का उद्यान था । उस नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था । इस की धारिणी देवी नाम की रानी थी । अदीन शत्रु नाम का इस का पुत्र था । यह युवराज था । (सुबुद्धी अमच्चे जाव रज्जधुराचितए समणोवासण) सुबुद्धि नाम का इस का अमात्य था । यह औत्पत्तिकी आदि चारों प्रकार की बुद्धि से सपन्न था । यावत् यही राज्यभार का चिन्तक था । जीव अजीव आदि तन्त्रों का यह ज्ञाता था और श्रमणोपासक था । (तीसे ण चपाए णगरीए रहिया उत्तरपुरच्छिमेण एगे परिहोदए यावि होत्था) उस चपा नगरी के बाहर उत्तरपौरस्त्यदिग्भाग में-ईशानकोण में-परिखोदक-खाईमें जल भरा था । दुर्ग (किल्ला)के चारों ओर बाहरकी तरफ

(तेण कालेण तेण समण चपा नाम नगरी पुणमहे चेइए जियसत्तू राया धारिणी देवी अदीणसत्तू नाम कुमारे जुवराया यावि होत्था)

ते जण्णे अने ते ममये थपा नामे नगरी હતી તેમાં પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતો તે નગરીના રાજાનું નામ જિતશત્રુ હતું ધારિણીદેવી નામે તેની પત્ની હતી તેના પુત્રનું નામ અદીનશત્રુ હતું અને તે યુવરાજ હતો (સુબુદ્ધિ અમચ્છે જાવ રજ્જધુરા ચિત્તે સમણોવાસણ) સુબુદ્ધિ નામે તેનો અમાત્ય (મંત્રી) હતો તે ઔત્પત્તિકા વગેરે ચારે પ્રકારની બુદ્ધિસપન્ન હતો અને ગત્યનુ ગામન તેના હાથમાં જ હતું એવ અણવ વગેરે તત્ત્વોનું તેને જ્ઞાન હતું અને તે શ્રમણોપાસક હતો

(तीसेण चपाए णगरीए रहिया उत्तरपुरच्छिमेण एगे परिहोदए यावि होत्था)

થપા નગરીની બહાર ઉત્તર પૌરસ્ત્ય નિગામા-ઈશાન કોણમાં-પરિખોદક આઈમાં પાણી ભર્યું હતું દુર્ગની ચોમેર બહારની બાજુએ કોટની પાસે

સત્તુ નામ કુમારં જુવરાયા યાવિ હોત્થા, સુવૃદ્ધી અમચ્ચે
 જાવ રજ્જધુરાચિત્તણ સમણોવાસણ, તીસેણ ચપાણ ણયરીણ
 વહિયા ઉત્તરપુરચ્છિમેણ ણમે પરિહોદણ યાવિ હોત્થા, મેય-
 વસામંસરુહિરપૂયપડલપોચ્છડે મયગકલેવરસછળણે અમણુણે
 વળળેણ જાવ ફાસેણ, સે જહા નામણ અહિમડેડ વા જાવ
 મયકુહિયવિળઢકિમિળવાવળળદુરભિગધે કિમિજાલાઉલે
 સંસત્તે અસુદ્ધિવિગયવીમત્થદરિસણિજ્જે, ભવેયારુવે સિયા ?,
 ણો ઇણદ્દે સમદ્દે, ણત્તો અણિદ્દુતરાણ ચેવ ફાસેણ વળળત્તે ॥સૂ. ૧॥

ટીકા—જમ્બૂસ્વામીપ્રાઠ—યદિ खलु भदन्त ! हे भगवन् ! श्रमणेन यावत्स-
 म्प्राप्तेन एकादशस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः द्वादशस्य खलु
 ज्ञाताध्ययनस्य कोऽर्थः प्राप्तः ? श्री सुधर्मास्वामी कथयति—एव खलु हे जम्बू !
 तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरी, पूर्णभद्र चैत्य, जितशत्रुराजा,

જબ્બૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામી સે પૂછતે હૈ કિ (જહ ણ ભતે !
 સમણેણ જાવ સપત્તે ણ એકકારસમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમં વારસ
 મસ્સ ણ નાયજ્ઞયણસ્સ કે અદ્દે વળળત્તે ? એવ खलु जबू ?) હૈ ભદન્ત !
 યદિ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને કિ જો મિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો
 પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈં ગ્યારહવેં જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે ભાવ અર્થ
 નિરૂપિત કિયા હૈ—તો કહિયે ઉન્હો ને વારહવેં જ્ઞાતાધ્યયનકા કયા અર્થ

ટીકાર્થ—જબ્બૂ સ્વામી શ્રીસુધર્મા સ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે કે—

(જહ ણ ભતે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ એકકારમમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમં
 વારસમસ્સ ણ નાયજ્ઞયણસ્સ કે અદ્દે વળળત્તે ? એવ खलु जबू !)

હે ભદન્ત ! સિદ્ધગતિ પામેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે અગિયારમા
 જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે ભાવ—અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તે તો તેઓશ્રીએ
 બારમા અધ્યયનનો શો ભાવ અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે હે જબ્બૂ સાલણો તેઓ
 શ્રીએ બારમા અધ્યયનનો જે રીતે અર્થ સ્પષ્ટ કર્યો છે તે આ પ્રમાણે છે—

धारिणीदेवी, अदीनशत्रुर्नाम कुमारः=जितशत्रुराजपुत्र 'जुवराया' युवराजः= युवराजत्वेऽभिषिक्तश्चाप्यासीत् । सुबुद्धिर्नामाऽमात्य औत्पातिभ्यादिवुद्धि चतुष्टययुक्तः यावद् 'रज्जधुराचिंतए' राज्यपुराचिन्तकः=राज्यभारचिन्तक 'समणो वासए' श्रमणोपासक=श्रमणोऽभिगतजीवो जीव आसीत् । तस्याश्रमपाया नगर्या वहिरुत्तरपौरस्त्ये एक 'परिहोदए' परिहोदक परिखा=दुर्गस्य चतुर्दिक्षु रिपुप्रभृतीना प्रवेष्टुमशक्या गच्छरूपावेष्टनाकारभूमि, तत्र सम्भृतमुदक परिखोदक 'खाईजल' इतिभाषाप्रमिद्व चाप्यासीत् । तत्कीदृशम् ? इत्याह—'मेयगसा'

प्ररूपित किया है ? । हे जन्म ! सुनो-जो उन्होंने १२वें अध्ययनका अर्थ निरूपित किया है वह इस प्रकार है- (तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नगरी पुण्णमहे चेइए जियसत्तू राया धारिणी देवी, अदीणसत्तू नाम कुमारे जुवराया यावि होत्था) उस काल और उस समय में चपा नाम की नगरी थी । उसमें पूर्णभद्र नाम का उद्यान था । उस नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था । इस की धारिणी देवी नाम की रानी थी । अदीन शत्रु नाम का इस का पुत्र था । यह युवराज था । (सुबुद्धी अमच्चे जाव रज्जधुराचिंतए समणोवासए) सुबुद्धि नाम का इस का अमात्य था । यह औत्पत्तिकी आदि चारों प्रकार की बुद्धि से संपन्न था । यावत् यही राज्यभार का चिन्तक था । जीव अजीव आदि तत्त्वों का यह जाना था और श्रमणोपासक था । (तीसे ण चपाए णगरीए रहिया उत्तरपुरच्छिमेण एगे परिहोदए यावि होत्था) उस चपा नगरी के बाहर उत्तरपौरस्त्यदिग्भाग में-ईशानकोण में-परिखोदक-खाईमें जल भरा था । दुर्ग (किल्ला)के चारों ओर बाहरकी तरफ

(तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नगरी पुण्णमहे चेइए जियसत्तू राया धारिणी देवी अदीणसत्तू नाम कुमारे जुवराया यावि होत्था)

ते ठाणे अने ते अभये थथा नामे नगरी હતી તેમા પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતો તે નગરીના રાજાનું નામ જિતશત્રુ હતું ધારિણીદેવી નામે તેની પત્ની હતી તેના પુત્રનું નામ અદીનશત્રુ હતું અને તે યુવરાજ હતો (સુબુદ્ધિ અમચ્છે જાવ રજ્જધુગ ચિંતણ સમણોવાસણ) સુબુદ્ધિ નામે તેનો અમાત્ય (મંત્રી) હતો તે ઔત્પત્તિકી વગેરે ચારે પ્રકારની બુદ્ધિસંપન્ન હતો અને ગત્યનુસારામન તેના હાથમા જ હતું જીવ અજીવ વગેરે તત્ત્વોનું તેને જ્ઞાન હતું અને તે શ્રમણોપાસક હતો

(तीसेण चपाए णगरीए रहिया उत्तरपुरच्छिमेण एगे परिहोदए यावि होत्था)

થથા નગરીની બહાર ઉત્તર પૌસ્ત્ય દિશામા-ઈશાન કોણમા-પરિખોદક ખાઈમા પાણી ભર્યું હતું દુર્ગની ચોમેર બહારની બાજુએ કોટની પાસે

इत्यादि, 'मेघवसामसरुहिरपूयपडपोचड' मेदोवसामसरुहिरपूयपडलपोचड ' मेदः=शरीरस्थधातुविशेषः, वसा=स्थिगतस्निग्धधातुविशेषः, 'चर्वी' इति प्रसिद्धः मांस=प्रसिद्ध रुधिर=शोणित, पूय=विकृतरुधिरम्, तेषा पटलेन=समूहेन पोचड=मिश्रित सपुद्बुदमित्यर्थः। 'मयगकलेयरसछन्ने' मृतककलेवर सछन्न=श्वमार्जारादिमृतकलेयरसभृतम्। 'अमणुण्ण' अमनोवम्-अरुचिकरं रणेन 'जाव' यावत्-गन्धेन रसेन स्पर्शेन च मनोविकृतिजनकमित्यर्थः। तदेव सदृष्टान्तं प्रश्नोत्तरेण वर्णयति- 'स जहानामए' तद् यथा नामकम्-यथा दृष्टान्तम्-यथा- 'अहिमडेइवा' अहिमृतकमिति ता=गर्भमृतकम्, 'गोमडेइ वा' गोमृतकमिति वा 'जाव' यावत्-एव यावच्छब्देन-श्वमृतक, मार्जारमृतक, मनुष्यमृतक, महिष

उस से लगा हुआ एक गोलाकार बड़ी भारी ग्वाई थी। इस की वजह से शत्रु उस दुर्ग-किल्ले में सहसा-एकाएक प्रविष्ट नहीं हो सकते। इस में पानी भरा रहता है। इस का नाम खातिकोदक भी है। (मेघवसामसरुहिर-पूय-पडल-पोचडे मयगकलेयरसछन्ने अमणुन्ने वण्णेण जाव फासेण-से जहा नामए अहिमडेइ वा गोमडेइ वा जाव मयकुहियविणट्टकिमिणवावण्णदुरभिगघे, किमिजालाउले ससत्ते असुइविगयवीभत्सदरिसणिज्जे भवेयारुवे सिया ? णोइणट्टे समट्टे एतो अणिट्टत्तराए चेव जाव फासेण पण्णत्ते यह परिखा का पानी, मेदावसा-चर्वी-मांस, रुधिर, पूय-पीय, के समूहसे मिश्रित था। कुत्ते, मार्जार आदि के मृत शरीरों से युक्त था। अरुचिकारक था गन्ध, रस एवं स्पर्श से यह मनो विकृति जनक बना) हुआ था। इसी बात को दृष्टान्त द्वारा प्रकट किया जाता है-जिस प्रकार मर जाने के बाद श्वमृतक-मरे हुए कुत्ते का कलेवर बिल्ली का

गोलाकार एक मोटी आर्ध छती तेथी शत्रु एकैकै सरणताथी दुर्गमा भवे शवानी हिंमत करी शकता नछोता, तेमा पाणी लरेलु छतु आनु णीणु नाम 'आतिकोदक' पणु छे

(मेघवसा मसरुहिरपूयपडलपोचडे मयगकलेवरसछन्ने अमणुन्ने वण्णेण जाव फासेण से जहानामए अहिमडेइ वा गोमडेइ वा जाव मय कुहिय विणट्ट किमिणवाव-ण्णदुरभिगघे, किमिजालाउले ससत्ते असुइविगयवीभत्सदरिसणिज्जे भवेयारुवे सिया ? णो इणट्टे समट्टे, एतो अणिट्टत्तराए चेव जाव फासेण पण्णत्ते)

आ परिभा-आधनु पाणी पुच्छण प्रमाणमा मेदा, वसा, रुध्री, मांस, रुधिर, लोही, पूय,-परुथी मिश्रीत छतु इतरा, जिलाडा वगेरेना भरी गयेला शोथी ते युक्त छतु ते अरुचिकारक छतु आने गध, रस तथा स्पर्शथी मनोविकृतिजनक छतु ओ न बात दृष्टात वडे अर्ही रजु करवामा आवे छे नेम भरी गया पछी श्वमृतक मरा गयेला इतरानु केवर (शरीर) जिलाडीनु कलेवर,

મૃતક, મૂપકમૃતકમ્, અશ્વમૃતક, હસ્તિમૃતક, સિંહમૃતક, વ્યાધ્રમૃતક, વૃકમૃતક= વૃક: ' મેહિયા ' ઇતિ પ્રસિદ્ધ:-શ્વાપદવિશેષસ્તસ્ય મૃતકલેપરમ્, દ્વીપિકમૃતક= દ્વીપિક:=ચિત્રક: ' ચીતા ' ઇતિપ્રસિદ્ધ: શ્વાપદવિશેષસ્તસ્ય મૃતશરીરમ્, ઇતિ સગ્રાહ્યમ્, કીદશાવસ્થાપન્ન તદહિમૃતાદિકમ્ ? ઇત્યાહ--' મયકુદિયવિણઢ કિમિણવાવણ્ણદુરભિગધે ' મૃતકુથિતવિનિષ્ટકૃમિમત્ વ્યાપન્નદુરભિગન્ધમ્==મૃત= જીવવિપ્રમુક્તમાત્રમેવ કુથિત શદિત, વિનષ્ટ=સ્વાકારતો નષ્ટ વાયુજલભરણેન દતિ- વત્સ્યુલતામુપગતમિત્યર્થ:, કૃમિમત્=ચિરકાલિકત્વાત્કૃમિમકુલમ્, અતएव વ્યાપન્ન= સર્વદિક્ પ્રસૂત દુરભિગન્ધમ્=અતિશયદુર્ગન્ધયુક્તમ્ । ' કિમિજાલાલે ' કૃમિજાલા-

કલેવર, મનુષ્ય કા કલેવર મહિષ મૈસે કા કલેવર, ચુહા કા કલેવર, ઘોડે કા કલેવર, હાથી કા કલેવર, સિંહ કા કલેવર, વ્યાધ્ર કા કલેવર, વૃક કા કલેવર, દ્વીપિક કા કલેવર કુથિત, વિનષ્ટ, કૃમિમત, વ્યાપન્ન એવ દુરભિગધ યુક્ત કૃમિજાલાકુલ-કીડો સે વ્યાપ્ત તન્મય, અશુચિ, વિકૃત એવ વીભત્સ, દૃશ્ય રૂપ હો જાતે હૈ-સો ઇન સવ સે મી અધિક અનિષ્ટતર-અત્યત ઘૃણા જનક-વહ સ્વાઈ કા જલ થા । મરને કે બાદ શરીર જો સડને લગ જાતા હૈ હસ કા નામ કુથિત હૈ । વાયુ ઓર જલ કે ભર જાને સે જિમ પ્રકાર મશક ફૂલ જાતી હૈ ઉસી પ્રકાર જીવ રહિત હોને કે બાદ જો શરીર ફૂલ જાતા હૈ હસ કા નામ વિનષ્ટ હૈ । હસ સ્થિતિ મે વહ પદાર્થ અપને પૂર્વાકાર સે મિત્રાકાર વાલા હો જાતા હૈ । જો શરીર વહુત દિનો તક જીવ રહિત પડા રહતા હૈ ઉસ મે સડ જાને કી વજહ સે કીડે પડ જાતે હૈ-હમ કા નામ કૃમિમત્ હૈ । જિસ મે સે

માણુસનુ કલેવર, પાડાનુ કલેવર, ઉદરનુ કલેવર, ઘોડાનુ કલેવર, હાથીનુ કલેવર, સિંહનુ કલેવર, વાધનુ કલેવર, વરુનુ કલેવર અને દ્વીપડાનુ કલેવર, કુથિત, વિનષ્ટ, કીડાઓવાળુ, વ્યાપન્ન અને દુરભિ-ગધયુક્ત કૃમિઓથી આક્રાંત કીડાઓથી વ્યાપ્ત-તન્મય, અશુચિ વિકૃત અને વીભત્સ દૃશ્યવાળુ વર્ધ જાય છે તેમ એના ડરતા પણ વધુ અનિષ્ટતર અત્યત ઘણાજનક તે આઈનુ પાણી હતું મરણ પછી શરીર મડવા માડે છે તેને ' કુથિત ' કહે છે જેમ પવન અને પાણીથી ભરાએલી મરાક ફૂલીને મોટી થઈ જાય છે તેમજ નિર્જીવ થયેલુ શરીર પણ કુલાઈને મોટુ થઈ જાય છે તેનુ નામ ' વિનષ્ટ ' છે પદાર્થની વ્યારે આવી સ્થિતિ થાય છે ત્યારે તે પહેલાના આકાર પ્રકારથી માવ મિત્ર આકાર વાળોથઈ જાય છે શરીર બહુ દિવસો નિર્જીવ વર્ધને મડદાના રૂપમા પડી રહે છે ત્યારે તે મડી બચાથી તેમા કીડાઓ પડી જાય છે, અને કૃમિમત્ કહે છે,

કુલ = કૃમિપુણ્યુક્ત યત તત્રાવયવે પુન્નીભૂતકૃમિવ્યાપ્તમ્, આગ્રવ 'સસક્ત' સસક્ત તન્મયમિત્યર્થઃ, 'અસુદ્ધિગયત્રીભત્તદરિમણિજ્જ' અશુચિવિકૃતત્રીભત્તદર્શનીયમ્ અશુચિ = અસ્પૃશ્યત્યાદપરિત્ર, વિઘ્નત = વિઘ્નયુક્ત, ત્રીભત્ત = ધૃણિત દર્શનીય = દૃશ્ય યસ્ય તત્તથોક્તમ્ 'એયારુપેસિયા' એતદ્રૂપ સ્યાત્-સ્મિ અદિમૃતાદિ સદૃશ સ્યાત્-અસ્તિ ?, ઇતિ પ્રશ્નો ભવેત્ ભગવાનાદ- 'નો ઇણદ્દે સમદ્દે' નાયમર્થ સમર્થઃ-નૈતાદૃશ કિન્તુ- 'એત્તો' એતસ્માદપિ અણિદ્દુતરાણ ચેત્ર 'અનિષ્ટતરમેવ અત્યન્તઘૃણાજનક યાવત્ સ્પર્શેન પ્રાપ્તમ્ ॥ સુ. ૧ ॥

મૂલમ્-તણ સે જિયસત્ત રાયા અણયા કયાઈ પહાણે
કાયવલિકમ્મે જાવ અપ્પમહગ્ધાભરણાલકિયસરીરે વહૂહિં રાઈ-
સર જાવ સત્થગાહપભિઈહિ સદ્ધિ ભોયણવેલાણે ભોયણમડવસિ
સુહાસણવરગણે વિપુલ અસણઠ જાવ વિહરતિ, જિમિયમુત્તુત્ત-
રાગણે આયતે ચોક્ખે પરમસુદ્ધભૂયે તસિ વિપુલસિ અસણ ૪
જાવ જાયવિમ્હણે તે વહવે રૈસર જાવ પભિઈણે એવ વયાસી-
અહો ણ દેવાણુપ્પિયા ! ઇમે મણુણે અસણ ૪ વણેણ ઉવવેણ
જાવ ફાસેણ ઉવવેણ અસ્સાયણિજ્જે વિસ્સાયણિજ્જે પીયણિજ્જે
દીવણિજ્જે દપ્પણિજ્જે મયણિજ્જે વિહણિજ્જે સઠ્ઠિદિયગાયપલ્હાય-
ણિજ્જે, તણ તે વહવે રૈસર જાવ પભિઈઓ જિયસત્ત એવ
વયાસી-તહેવ ણ સામી ! જણ તુવ્વમે વયઈ અહો ણ ઇમે
મણુણે અસણ ૪ વણેણ ઉવવેણ જાવ પલ્હાયણિજ્જે, તણં

ચારોં ઓર-દુર્ગંધ ફેલ રહી હો उस का नाम दुरभिग य है । सड जाने
'के बाद जिस के अग उपाग सब तरफ विग्वरे हुए पडे हो उस का नाम
व्यापन्न है । यहा मृतक शब्द से जीव रहित शरीर लिया गया है । सूत्र ॥ १ ॥

'જેમાથી ચોમેર દુર્ગંધ પ્રસરી રહે છે તેને 'દુરભિગંધ' કહે છે મહદુ સડી
જાય છે અને તેના બધા અંગો ઉપાગો ચોમેર વિખેરાઈ જાય તેને 'વ્યાપન્ન'
કહે છે અહીં મૃતક શબ્દથી નિજીવ શરીર સમજાવુ બોલ્યું છે "૧" ॥

जितसत्तू सुबुद्धिअमच्च एव वयासी-जहा ण सुबुद्धी । इमे
मणुण्णे असणं जाव पल्हायणिज्जे, तएण सुबुद्धी जितसत्तू-
स्सेयमट्ट नो आढाइ जाव तुसिणीए सच्चिट्ठइ, तएण जिय-
सत्तू सुबुद्धि दोच्चंपि तच्चपि एव वयासी-अहो ण सुबुद्धी ।
इमे मणुन्ने त चेव जाव पल्हायणिज्जे, तएण से सुबुद्धी अमच्चे
जितसत्तूणा दोच्चपि तच्चपि एववुत्ते समाणे जितसत्तू राय -
एव वयासी-नो खलु सामी । अम्ह एयसि मणुण्णसि असणं
४ केइ विम्हए, एव खलु सामी । सुब्भिसद्दावि पुग्गला दुब्भि-
सद्दाए परिणमति दुब्भिसद्दावि पोग्गला सुब्भिसद्दाए परि-
णमति, सुरूवावि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमति दुरूवावि
पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमति सुब्भिगधावि पोग्गला दुब्भि-
गंधत्ताए परिणमति दुब्भिगधावि पोग्गला सुब्भिगधत्ताए परि-
णमति सुरसावि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमति दुरसावि पोग्गला
सुरसत्ताए परिणमति सुहफासावि पोग्गला दुहफासत्ताए परि-
णमति दुहफासावि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमति पओग-
वीससापरिणयावि य ण सामी । पोग्गला पणत्ता, तएण से
जितसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमट्ट
नो अटाइ नो परियाण्डं तुसिणीए सच्चिट्ठइ, तएण से जिय-
सत्तू अपगया कयाई ण्हाए आसखधवरगए महया भडचरगर
आसवाहणियाए निज्जायमाणे तस्स फरिहोदगस्स अद्रसाम-
तेण वोइवयड । तएण जितसत्तू तस्स फरिहोदगस्स असुभेण

गधेणं अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्जगेणं आसग विहेइ,
एगतं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता ते वहवे ईसर जाव पभिइओ
एव वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया इमे फरिहोदए । अमणुण्णे
वण्णेण ४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए
चेव तएणं ते वहवे राईसरपभिइओ जाव एवं वयासी—तहेव
ण त सामी । जं णं तुव्भे एव वयह, अहो ण इमे फरिहोदए
अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहा णामए अहिमडेइवा जाव
अमणामतराए चेव, तएण ते वहवे राईसर पभिइओ जाव एव
वयासी—तहेव ण त सामी । ज ण तुव्भे एव वयह, अहो णं
इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहा नामए अहिमडेइ
वा जाव अमणामतराए चेव, तएण से जियसत्तु सुबुद्धिं अमच्चं
एव वयासी — अहो णं सुबुद्धि । इमे फरिहोदए अमणुण्णे
वण्णेणं, से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए,
चेव, तएण सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए सच्चिट्ठइ, तएण
से जियसत्तु राया सुबुद्धि अमच्च दोच्चपि तच्चपि एव वयासी
--अहो ण त चेव, तएण से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रत्ता
दोच्चपि तच्चपि एव वुत्ते समाणे एव वयासी—नो खलु
सामी । अम्ह एयसि फरिहोदगसि केइ विम्हए, एव खलु
सामी । सुब्भिसद्दावि पोग्गला दुब्भिसद्दाए परिणमत्ति, त
चेव जाव पओगवीससापरिणयावि य ण सामी । पोग्गला
पणत्ता, तएण जियसत्तु सुबुद्धि एवं वयासी—मा ण तुमं

देवाणुप्पिया ! अप्पाण च परं च तदुभय वा वहूहि य अस-
वभावुवभावणाहि मिच्छत्ताभिणिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाए-
माणे विहराहि, तएण सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झरिथए- अहो
ण जियसत्तु सते तच्चे ताहिए अवितहे सवभूए जिणपण्णत्ते
भावे णो उवलभति, तं सेय खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो सत्ताणं
तच्चाण ताहियाण अवितहाण सवभूताण जिणपण्णत्ताण भावाणं
अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठ उवाइणावेत्तए, एव सपेहेइ, संपे-
हित्ता पच्चतिएहि पुरिसेहि सद्धि अंतरावणाओ नवए घडएय
गेणहइ, गेण्हत्ता सज्जाकालसमयसि पविरलमणुस्संसि णिसं-
तपडिनिसंतसि जेणेव फरिहोदए तेणेव उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता त फरिहोदगं गेण्हावेइ गेण्हावित्ता नवएसु घडएसु
गालावेइ गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ पक्खिवा-
वित्ता लल्लियमुदिते करावेइ करावित्ता सत्तरत्त परिवसावेइ
दोच्चपि नवएसु घडएसु, गालवेइ गालवित्ता नवएसु घड-
एसु पक्खिवावेइ पक्खिवावित्ता सज्जक्खार पक्खिवावेइ
लल्लियमुदिते करावेइ करावित्ता सत्तरत्त परिवसावेइ तच्चपि
णवएसु घडएसु जाव सवसावेइ एव खलु एएणं उवाएणं
अतरा गलावेमाणे अतरा पक्खिवावेमाणे अतराय विपरि-
वसावेमाणे २ सत्तर राईदिया विपरिवसावेइ, तएणं से
फरिहोदए सत्तमसत्तयसि परिणममाणसि उदगरयणे जाए यावि
होत्था अञ्छे पत्थे जच्चे तणुए फलिहवण्णाभे वण्णेण उववेए

गंधेणं अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्जगेणं आसग पिहेइ,
 एगंत अवक्कमइ, अवक्कमिता ते वहवे ईसर जाव पभिइओ
 एव वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया इमे फरिहोदए । अमणुण्णे
 वण्णेण ४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए
 चेव तएणं ते वहवे राईसरपभिइओ जाव एव वयासी—तहेव
 ण त सामी । ज णं तुव्भे एव वयह, अहो ण इमे फरिहोदए
 अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहा णामए अहिमडेइवा जाव
 अमणामतराए चेव, तएण ते वहवे राईसर पभिइओ जाव एव
 वयासी—तहेव णं त सामी । ज ण तुव्भे एव वयह, अहो णं
 इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण ४ से जहा नामए अहिमडेइ
 वा जाव अमणामतराए चेव, तएण से जियसत्तु सुबुद्धि अमच्च
 एव वयासी — अहो णं सुबुद्धि । इमे फरिहोदए अमणुण्णे
 वण्णेणं, से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए,
 चेव, तएण सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण
 से जियसत्तु राया सुबुद्धि अमच्च दोच्चपि तच्चपि एव वयासी
 -अहो ण त चेव, तएण से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रत्ता
 दोच्चपि तच्चपि एव वुत्ते समाणे एव वयासी—नो खलु
 सामी । अम्ह एयसि फरिहोदगसि केइ विम्हए, एव खलु
 सामी । सुब्भिसद्दावि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमति, त
 चेव जाव पओगवीससापरिणयावि य ण सामी । पोग्गला
 पणत्ता, तएण जियसत्तु सुबुद्धि एव वयासी—मा ण तुमं

भोयणवेलाए इम उदगरयण न उवट्टवेसि ? त एसण तुमे देवाणुप्पिया । उदगरयणं कओ उवलद्धे ? तएणं सुबुद्धी जिय-सत्तू एव वयासी-- एसण सामी । से फरिहोदए, तएण से जियसत्तू सुबुद्धि एव वयासी--केणं कारणेणं सुबुद्धी । एस से फरिहोदए ? तएण सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासी-एव खलु सामी । तुम्हे तया मम एवमाइक्खमाणस्स४ एयमट्ट नो सहहह तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था, अहोणं जियसत्त सते जाव भावे नो सहहइ नो पत्तियइ नो रोएइ त सेय खलु मम जियसत्तूस्स रत्तो सताण जाव सव्वभूयाण जिणपन्नत्ताणं भावाण अभिगमणट्टयाए एयमट्ट उवाइणावेत्तए, एवं सपे-हेमि२ त चेव जाव पाणियघरिय सद्दावेमि सद्दावित्ता एवं वयासी-तुम ण देवाणुप्पिया । उदगरयण जियसत्तूस्स रत्तो भोयणवेलाए उवणेहि, त एएण कारणेणं सामी । एस से फरिहोदए । तएण जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमा-इक्खमाणस्स४ एयमट्ट नो सहहइ३ असहहमाणे३ अविभत्तर-ट्ठणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ२ एव वयासी-गच्छहण तुब्भे देवाणु-प्पिया । अतरावणाओ नवघडए पडए य गेणहह जाव उदग-सभारणिज्जेहि दव्वेहि सभारेह तेऽवि तहेव सभारेति सभा-रित्ता जियमत्तूस्स उवणेति, उवणित्ता तएण जियसत्तू राया त उदगरयण करयलसि आसाएइ आसायणिज्ज जाव सव्विदियगा-यपल्हायणिज्ज जाणित्ता सुबुद्धि अमच्च सद्दावेइ सद्दावित्ता एव

४ आसायणिज्जे जाव सव्विदियगायपल्हायणिज्जे, तएणं सुबुद्धी अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवा०२ करयलसि आसादेइ आसादित्ता त उदगरयण वण्णेण उववेय४ आसायणिज्जे जाव सव्विदियगायपल्हायणिज्ज जाणित्ता हट्ठतुट्ठे वहूहि उदगसभारणिज्जेहि सभारेइ सभारित्ता जितसत्तूस्स रण्णो पाणियघरिय सद्दावेइ मद्दावित्ता एव वयासी तुम च ण देवाणुप्पिया । इम उदगरयणं गेणहादि२ जियसत्तूस्स रत्तो भोयणवेलाए उवणेज्जासि, तएण से पाणियघरिय सुबुद्धियस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ पडिसुणित्ता त उदगरयण गिणहाइ गिणिहत्ता जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्ठवेइ, तएण से जियसत्तू राया त विपुल असण४ आसाएमाणे जाव विहरइ, जिमिय-भुत्तुत्तरागए यावि य णं जाव परमसुइभूए तसि उदगरयणे जायविम्हए ते वहवे राईसर जाव एव वयासी—अहो ण देवाणुप्पिया । इमे उदगरयणे अच्छे जाव सव्विदियगायपल्हायणिज्जे तएणं वहवे राईसर जाव एव वयासी—तहेव ण सामी । जेण तुब्भे वदह जाव एव चेव पल्हाणिज्जे, तएण जियसत्तू राया पाणियघरिय सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—एस णं तुब्भे देवाणुप्पिया । उदगरयणे कओ आसादिते ?, तएण से पाणियघरिए जियसत्तू एव वयासी—एम णं सामी । मए उदगरयणे सुबुद्धिस्स अतियाओ आसाइए तएण जियसत्तू सुबुद्धि अमच्च सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—अहो ण सुबुद्धी केण कारणेण अह तव अणिट्ठे५ जेण तुम मम कल्लाकल्लि

भोयणवेलाए इम उदगरयण न उवट्टवेसि ? त एसण तुमे देवाणुप्पिया । उदगरयणं कओ उवल्लहे ? तएण सुबुद्धी जिय-सत्तू एव वयासी-- एसण सामी । से फरिहोदए, तएण से जियसत्तू सुबुद्धि एव वयासी--केणं कारणेणं सुबुद्धी । एस से फरिहोदए, तएणं सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासी-एव खलु सामी । तुम्हे तया मम एवमाइक्खमाणस्स४ एयमट्टु नो सदहह तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था, अहोण जियसत्त संते जाव भावे नो सदहइ नो पत्तियइ नो रोएइ त सेय खलु मम जियसत्तूस्स रत्तो सताणं जाव सब्भयाणं जिणपन्नत्ताणं भावाण अभिगमणट्टयाए एयमट्टु उवाइणावेत्तए, एव सपे-हेमि२ त चेव जाव पाणियघरिय सदावेमि सदावित्ता एवं वयासी-तुम ण देवाणुप्पिया । उदगरयण जियसत्तूस्स रत्तो भोयणवेलाए उवणेहि, त एएण कारणेणं सामी । एस से फरिहोदए । तएण जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमा-इक्खमाणस्स४ एयमट्टु नो सदहइ३ असदहमाणे३ अविभतर-ट्टणिज्जे पुरिसे सदावेइ२ एव वयासी-गच्छहण तुव्भे देवाणु-प्पिया । अतरावणाओ नवघडए पडए च गेणहह जाव उदग-सभारणिज्जेहि दव्वेहि सभारेह तेऽवि तहेव सभारेति सभा-रित्ता जियमत्तूस्स उवणेति, उवणित्ता तएण जियसत्तू राया त उदगरयण करयलसि आसाएइ आसायणिज्ज जाव सव्विदियगा-यपल्हायणिज्ज जाणित्ता सुबुद्धि अमच्च सदावेइ सदावित्ता एव

वयासी-सुबुद्धी । एएणं तुमं सता जाव सवभूया भावा कओ
 उवलढ्ढा ? तएण सुबुद्धी जियसत्तु एवं वयासी-एएण सामी ।
 मए सता जाव सवभूया भावा जिणवयणाओ उवलढ्ढा, तएणं
 जियसत्तु सुबुद्धि एव वयासी-त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ।
 तव अतिए जिणवयणं निसामेत्तए, तएणं सुबुद्धी जियसत्तुस्स
 विचित्तं केवलपन्नत्त चाउज्जाम धम्म परिकहेइ, तमाइक्खइ जहा
 जीवा वज्झति जाव पचअणुव्वयाइ, तएण जियसत्तु सुबुद्धिस्स
 अंतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठं सुबुद्धिं अमच्चं एव वयासी
 -सदहामि ण देवाणुप्पिया । निग्गंथ पाववणइ जाव से जहेव
 जं तुब्भे वयह, त इच्छामि णं तव अंतिए पचाणुव्वइयं सत्त-
 सिक्खावइय जाव उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, अहासुह देवा-
 णुप्पिया । मा पडिवधं तएणं से जियसत्तु सुबुद्धिस्स अमच्च-
 स्स अतिए पचाणुव्वइय जाव दुवालसविह सावयधम्म पडि-
 वज्जइ, तएण जियसत्तु समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव
 पडिलाभेमाणे विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमण
 जियसत्तु राया सुबुद्धी य निग्गच्छइ, सुबुद्धी धम्म सोच्चा ज
 नवरजियसत्तु आपुच्छामि जाव पव्वयामि, अहासुह देवाणुप्पिया ।
 तएणं सुबुद्धी जेणैव जियसत्तु तेणैव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
 एव वयासी-एवं खलु सामी । मए थेराण अतिए धम्मे इच्छिए
 पडिच्छिए अभिरुइए, तएण अहं सामी संसारभउविग्गे भीए
 जाव इच्छामिण तुब्भेहि अब्भणुन्नाए स० जाव पव्वइत्तए,
 तएणं जियसत्तु सुबुद्धि एव वयासी-अच्छासु ताव देवाणु-

पिया । कइवयाइति वासाइ उरालाइ जाव भुजमाणा तओ
 पच्छा एगयओ अतिए मुडे भवित्ता जाव पव्वइस्सामो, तएण
 सुबुद्धी जियसत्तूस्स एयमठ्ठ पडिसुणेइ, तएण तस्स जियसत्तूस्स
 सुबुद्धीणा सद्धि विपुलाइ माणुस्स० पच्चणुवभवमाणस्स दुवा-
 लसवासाइ वीडक्कताइ तेणं कालेण२ थेरागमणं तएण जिय
 सत्तू धम्म सोच्चा एव ज नवरं देवाणुप्पिया । सुबुद्धि आमं-
 तेमि, अहासुह, तएण जियसत्तू जेणेव सए गिहे तेणेव उवा-
 गच्छइ उवागच्छित्ता सुबुद्धि सदावेइ सदावित्ता एव वयासी-
 एवं खलु देवाणुप्पिया । मए थेराणं जाव पव्वज्जामि, तुम णं
 किं करेसि ?, तएण सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासी-जाव के अन्ने
 आहारे वा जाव पव्वयामि, त जइणं देवाणुप्पिया जाव पव्व-
 यहि त गच्छह णं देवाणुप्पिया । जेट्ठपुत्त च कुडुवे ठावेहि
 ठावित्ता सीय दुरुहित्ताण मम अतिए पाउवभवइ, तएण जिय-
 सत्त कोडुवियपुरिमे सदावेइ सदावित्ता एव वयासी-गच्छह ण
 तुब्भे देवाणुप्पिया । अदीणसत्तूस्स कुमारस्स रायाभिसेय उव-
 ट्ठवेह जाव अभिसिचति जाव पव्वइए । तएणं जियसत्तू एक्का-
 रस अगाइ अहिज्जइ वहूणि वासाणि परियाओ मासियाए सिद्धे
 तएणं सुबुद्धी एक्कारसअगाइ अहिज्जइ वहूणि वासाणि जाव
 सिद्धे । एव खलु जवू । समणैणं भगदया महावीरेण वारस-
 मस्स णायज्झयणस्स अयमठ्ठे पणत्ते तिवेमि ॥ सू० ५ ॥

॥ वारसम नाअज्झयण समत्त ॥

टीका-‘तएण से’ इत्यादि । तत खलु स जितशत्रू राना=वम्पाधिपति अन्यदा

કદાચિત્=એકદા સ્નાત. ' કયવલિકર્મ્મે ' કૃતવલિકર્મ્મ=કૃત ચારવાધર્મમનાદિ
વિભાગઃ યાવદ્ અલ્પમહાર્ધાભરણાદૃતશરીરઃ વદ્મિઃ રાજેશ્વર યાત્રન્ સાર્યવાહ
પ્રભૃતિભિઃ સાર્દ્ધં ભોજનવેલાયાં ભોજનમણ્ડપે સુલાસનવરગતો વિપુલમ્ અશનમ્=
અન્નાદિક, પાન=પાનીયમપાણસાદિક, સ્વાદ્ય=દ્રાક્ષાવાદામાદિક સ્વાય=લવગ
પૂર્ણફલાદિક ચતુર્વિધમપ્યાદારમાસ્ત્રાદ્યન્ ' જાવ વિહરહ ' યાત્રત્ વિસ્વાદ્યન્,
પરિભોગયન્, પરિભાજ્યમાન., પરિશુઞ્ઞાનો વિહરતિ । ' જિમિયશ્ચુત્તરામણ '

‘ તણ્ણ સે જિયસત્તૂ રાયા ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(તણ્ણ) હસકે વાદ (સે જિયસત્તૂ રાયા) વે જિતશત્રુ રાજા
(અન્નયા કયાહ) કિસી ણક સમય (ણ્હાણ વયવલિકર્મ્મે જાવ અણ્ણ
મહગ્ધા ભરણાલકિયસરીરે વદ્મિં રાડસર જાવ સત્થવાહપભિર્ઠિં
સર્દિં ભોયણવેલાણ ભોયણ મહવસિ સુહામણવરગણ વિહલ અસણ ૪ જાવ
વિહરહ) સ્નાન કરકે તથા વલિકર્મ્મ-વાયસ આદિ કે લિયે અન્નાદિ કા
વિભાગ-દેન કરકે અલ્પ મારવાલે વદ્મસૂલ્ય અલકરોકો પરિને હુણ ભોજન
કરને કે સમય મેં ભોજન શાલા મેં સુન્દર આસન પર આક્રમ્મ વેઠ ગયે ।
ઉસ સમય ઉનકે સાથ મેં ઓર મી અનેક રાજેશ્વર આદિ સાર્યવાહ
પર્યન્ત સમસ્ત જન થે । વહા હન સત્થકે સાથ વે વર્હા આશનપાન આદિ
ધારોં પ્રકાર કા આહાર કરને લગે । અન્નાદિક અશન પીને યોગ્ય પદાર્થ
પાન, દ્રાક્ષા વાદામ આદિ સ્વાદ્ય ણવ લવગ સુપારી આદિ સ્વાદ્ય હૈ ।

‘ તણ્ણ સે જિયસત્તૂ રાયા ’ इत्यादि

ટીકાર્થ—(તણ્ણ) ત્યારપછી (સે જિયસત્તૂ રાયા) તે જિતશત્રુ રાજા (અન્નયા
કયાહ) કેાઈ વખતે

(ણ્હાણ કયવલિકર્મ્મે જાવ અણ્ણમહગ્ધામરણાલકિયસરીરે વદ્મિં રાડ-
સર જાવ સત્થવાહપભિર્ઠિં સર્દિં ભોયણવેલાણ ભોયણમહવસિ સુહામણવરગણ
વિહલ અમણ ૪ જાવ વિહરહ)

સ્નાન કરીને તેમજ બલિકર્મ્મ એટલે કે કાગડા વગેરે પક્ષીઓને માટે
અન્ન વગેરેનો ભાગ અપીને વળનમા હલકા પણ કિમતમા બહુ ભારે એવા
અલકારો ધારણ કરીને જમવાના સમયે રસોઈ ઘરમા આવીને સુદર આસન
ઉપર બેસી ગયા તે વખતે તેમની સાથે બીજા કેટલાક રાજેશ્વર અને સાર્ય
વાહો વગેરે હતા રાજા તેઓ બધાની સાથે બેસીને અશન પાન વગેરે ચાર
બીજાના આહારો જમવા લાગ્યા અન્ન વગેરે અશન, પીવા યોગ્ય પદાર્થ પાન,
દ્રાખ, બદામ વગેરે ખાદ્ય અને લવિગ-ઓપારી વગેરે સ્વાદ્ય છે

જિમિતશુક્તોત્તરાગત - જિમિત = શુક્તયાન્, શુક્તોત્તર = ભોજનાનન્તરમ્ આગત =
ઉપવેશનસ્થાન પ્રાપ્ત, કિમ્ભૂતઃ સન્ ? इत्याह- 'आयते' आचान्त शुद्धोदकेन
कृतचुलुक, 'चोक्खे' चोक्ष = सिक्खादिलेपरहित, अतएव 'परमसुहभूए'
परमशुचिभूतः = परमशुद्धः तस्मिन् विपुलेऽशनपानखाद्यम्वाये यावद् 'जाय
विम्हए' जातविस्मयः = समुत्पन्नपरमाश्चर्यो जितशत्रू राजा तान् गृह्णन् ईश्वर
यावत्-प्रभृतीन्-ईश्वर-तलवर-माडम्बिक-कोटुम्बिक-श्रेष्ठि सेनापति सार्यवाह
प्रभृतीन् एवमवदत्-अहो ! खलु हे देवानुप्रिया ! इदं 'मणुण्णे' मनोज्ञ = मर्वथा

(જિમિયશુક્તોત્તરાગત આયતે ચોક્ખે પરમસુહભૂએ તસિ વિઝલસિ અસણ
૪ જાવ જાયવિમ્હા તે વહવે ઈસર જાવ પમિહા એવ વયાસી) જવ
અચ્છી તરહ ભોજન હો ચુકા-વે સવકે સવ વૈઠક મેં આયે । વૈઠક મેં
આને કે પરિલે યે હાય મુંહ ધોકર ચિલકુલ સાફ હો ચુકે થે । અન્ના
દિકકે સીત જો હનકે હાય પૈરોં મેં કહીં ૨ પહ ગયે યે-ઉન્હેં જલ સે
હન્હોને સારુ કર દિયા યા-વો દિયા યા । હસ તરહ પરમ શુચીભૂત
હોકર રાજાને ઉસ વિપુલ આશન, પાન, ખાદ્ય એવ સ્વાદ્યરૂપ ચતુર્વિધ
આહાર મેં વિસ્મિત આશ્ચર્યયુક્ત બન કર ઉન ઈશ્વર, તલવર, માડયિક,
કૌટુમ્બિક, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ એવ સાર્યવાહ આદિકો સે હસ પ્રકાર કહા-
(અહોન દેવાણુપ્પિયા ! હમે મણુણ્ણે અસણ ૪ વણ્ણેણ ઉવવેણ જાવ ફાસે ન
ઉવવેણ અસ્સાયણિજ્જે વિસ્સાયણિજ્જે પીયણિજ્જે, દીવણિજ્જે, દપ્પ-
ણિજ્જે મયણિજ્જે, વિંહણિજ્જે, સન્નિવદિયગાય પરહાયણિજ્જે) દેવાનુ

(જિમિયશુક્તોત્તરાગત આયતે ચોક્ખે પરમસુહભૂએ તસિ વિઝલસિ અસણ-
૪ જાવ જાયવિમ્હા તે વહવે ઈસરજાવ પમિહા એવ વયાસિ)

જ્યારે તેઓ મરસ રીતે તૃપ્ત થઈને જમી રહ્યા ત્યારે તેઓ સર્વે બેઠ
કમા આવ્યા બેઠકમા આવતા પહેલા તેઓ હાથ મેં ધોઈને સ્વચ્છ થઈ ચૂક્યા
હતા અન્ન વગેરેના દાણા તેમના શરીર ઉપર જમતી વખતે પડી ગયા હતા
તેઓને પાણીથી ધોઈને સાફ કર્યા આ રીતે એકદમ પવિત્ર થઈને પુષ્કળ
પ્રમાણમા તૈયાર કરવામા આવેલા અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચાર
જાતના આહારોથી નવાઈ પામેલા રાજાએ બીજા સાથે રહેલા ઈશ્વર, તલવર, માડ
લિક કૌટુમ્બિક, શ્રેષ્ઠ સેનાપતિ અને સાર્યવાહ વગેરેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-

(અહો ન દેવાણુપ્પિયા ! હમે મણુણ્ણે અસણ ૪ વણ્ણેણ ઉવવેણ જાવ ફાસેણ
ઉવવેણ અસ્સાયણિજ્જે વિસ્સાયણિજ્જે પીયણિજ્જે, દીવણિજ્જે દપ્પણિજ્જે મય
ણિજ્જે વિંહણિજ્જે સન્નિવદિયગાય પરહાયણિજ્જે)

કદાચિત્=એકદા સ્નાત. ' કયરલિકમ્મે ' કૃતચલિકર્મ=કૃત વાયનાઘર્થમખાદિ વિભાગઃ યાવદ્ અલ્પમહાર્થમરણાદૃતગરીરઃ વહુમિ રાજેશ્વર યાવત્ સાર્થવાહ પ્રશ્રુતિભિઃ સાર્દ્ધે ભોજનવેલાયાં ભોજનમણ્ડપે સુલાસનવરગતો વિપુલમ્ અશનમ્=અન્નાદિક, પાન=પાનીયમપાણશાદ્રિક, શ્વાય=દ્રાક્ષાપાદામાદિક સ્વાય=લવગ પૂર્ણીફલાદિક ચતુર્વિધમપ્યાહારમાશ્વાદ્યન ' જાત્ર વિહરહ ' યાવત્ વિસ્વાદ્યન, પરિભોગયન્, પરિભાજ્યમાનઃ, પરિશુદ્ધાનો વિદરતિ । ' ત્રિમિયશ્ચુત્તરામણ '

‘ તણ્ણ સે જિયસત્તૂ રાયા ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(તણ્ણ) હસકે ચોદ (સે જિયસત્તૂ ગયા) વે જિતશત્રુ રાજા (અન્નયા કયાહ) કિમ્મી ણ્ક સમય (ણ્હાણ કયચલિકમ્મે જાવ અપ્પ મહગ્ધા મરણાલકિયસરીરે વહુહિં રાહસર જાત્ર સત્થવાહપભિર્હિં સર્દિં મોયણવેલાણ મોયણમહવસિ સુલાસણવરગણ વિહરહ) સ્નાન કરકે તથા ચલિકર્મ-વાયસ આદિ કે લિયે અન્નાદિ કા વિભાગ-દેન કરકે અલ્પ મારવાલે વહુમૂલ્ય અલકરોકો પહિને હુણ મોજન કરને કે સમય મેં મોજન શાલા મેં સુન્દર આસન પર આરુઠ બેઠ ગયે । ઉસ સમય ઉનકે સાથ મેં ઓર મી અનેક રાજેશ્વર આદિ સાર્થવાહ પર્યન્ત સમસ્ત જન થે । વહા હન સત્થકે સાથ વે વહાં આશનપાન આદિ ચારોં પ્રકાર કા આહાર કરને લગે । અન્નાદિક અશન પીને યોગ્ય પદાર્થ પાન, દ્રાક્ષા પાશમ આદિ શ્વાય ણ્વ લવગ સુપારી આદિ સ્વાય હૈ ।

‘ તણ્ણ સે જિયસત્તૂ રાયા ’ इत्यादि

ટીકાર્થ—(તણ્ણ) ત્યારપછી (સે જિયસત્તૂ રાયા) તે જીતશત્રુ રાજા (અન્નયા કયાહ) કોઈ વખતે

(ણ્હાણ કયચલિકમ્મે જાવ અપ્પમહગ્ધામરણાલકિયસરીરે વહુહિં રાહસર જાવ સત્થવાહપભિર્હિં સર્દિં મોયણવેલાણ મોયણમહવસિ સુલાસણવરગણ વિહરહ)

સ્નાન કરીને તેમજ બલિકર્મ એટલે કે કાગડા વગેરે પક્ષીઓને માટે અન્ન વગેરેનો ભાગ અપીને વજનમા હલકા પણ ઊંમતમા બહુ ભારે એવા અલકારો ધારણ કરીને જમવાના સમયે સ્નોઈ ઘરમા આવીને સુદર આસન ઉપર બેસી ગયા તે વખતે તેમની સાથે બીજા કેટલાક રાજેશ્વર અને સાર્થ વાહો વગેરે હતા રાજા તેઓ બધાની સાથે બેસીને અશન પાન વગેરે ચાર જાતના આહારો જમવા લાગ્યા અને વગેરે અશન, પીવા યોગ્ય પદાર્થ પાન, દ્રાક્ષ, પાશમ વગેરે ખાધ અને લવિગ-સુપારી વગેરે સ્વાદ્ય છે

यावत् सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयमस्ति । ततः खलु सुबुद्धिरमात्यो जितशत्रोरेत
मर्थं नो आद्रियते यावत् तूष्णीक = सन्मौनः सतिष्ठते । ततः खलु जितशत्रुः सुबु-
द्धिममात्य द्वितीयमपि तृतीयमपि वारमेवमवादीत्-अहो ! खलु हे सुबुद्धे ! इदं
मनोज्ञं तदेव यावत्सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयम्, ततः खलु स सुबुद्धिरमात्यः जित
शत्रुणा द्वितीयमपि तृतीयमपि वारमेवमुक्तः सन् जितशत्रुं राजानमेवमवादीत्-नो
उववेए जाव पल्हायणिज्जे) हा स्वामिन् ! जैसा आप कहते हैं आहार
वैसा ही था । वह बड़ा ही मनोज्ञ एवं शुभवर्ण से युक्त था । यावत्
समस्त शरीर एवं इन्द्रियों को आनन्द पहुँचाने वाला था ! (तएण
जितसत्तू सुबुद्धि अमच्च एव वयासी) अपनी बात का इन्वर आदि
समस्त जनों द्वारा समर्थन प्राप्त कर राजा ने अपने अमात्य सुबुद्धि से
भी यही बात कही कि (अहो ण सुबुद्धी-इमे मणुण्णे असण ४ जाव
पल्हायणिज्जे) हे सुबुद्धे कहो, मनोज्ञ चतुर्विध अशनादि रूप यह
आहार कितना अच्छा शुभ वर्णोपेत यावत् प्रह्लादनीय था । (तएण
सुबुद्धी जियसत्तूस्सेयमट्ठ णो आढाइ, जाव तुसिणीए सचिट्ठई) इस
प्रकार राजा द्वारा आहार की प्रशंसा सुनकर उस सुबुद्धि अमात्य ने
राजा की इस बातकी अनुमोदना नहीं की-प्रत्युत वह सुनकर चुपचाप
ही बैठा रहा-(तएण जियसत्तू सुबुद्धि दोच्च पि तच्च पि एव वयासी

उववेए जाव पल्हायणिज्जे)

हा स्वामिन् ! जेधेर जेम तमे डोहो छो तेम आहार पणु अवे। ४
डतो ते भूअ ४ मनोज्ञ अने शुभवर्ण वाणो डतो यावत् स पूर्यु शरीर अने
इन्द्रियोने आनंद पमाडनार डतो (तएण जितसत्तू सुबुद्धि अमच्च एव
वयासी) पोताना कथन विशे इन्वर वगेरे जधाओथी समर्थन प्राप्त करीने
राजअ पोताना अमात्य (भत्री) सुबुद्धिने पणु अवे वात डही डे

(अहोण सुबुद्धी इमे मणुण्णे असण ४ जाव पल्हायणिज्जे)

हे सुबुद्धि ! अतावे, मनोज्ञ अर जतने अशन वगेरे इप आ आहार
डेहो जधो शुभवर्णो युक्त यावत् आनंद आपनार डतो

(तएण सुबुद्धी जियसत्तूस्सेयमट्ठ णो आढाइ जाव तुसिणीए सचिट्ठई)

आ रीते राजाना भुजेथी आहार विशेषा वधाए सालगी सुबुद्धि
अमात्ये तो तेमनी बात ने टेके आये नहि पणु ते मात्र भूगे थधने
जेसी ४ रह्यो

तएण जियसत्तू सुबुद्धि दोच्च पि तच्च पि एव वयासी-अहो ण सुबुद्धी ! इमे

મનસ્તૃપ્તિકરમ્ અશન પાન શ્વાધ સ્વાધ વર્ણેન=શુભવર્ણેન ઉપપેત યાવત્ સ્પર્શેનોપપે
તમ્, ' આસાયણિજ્જે ' આસ્વાદનીયમ્=આસ્વાદનયોગ્યમ્, ' વિસ્માયણિજ્જે '
વિસ્વાદનીય=વિશેષત આસ્વાદનયોગ્યમ્, ' પીણણિજ્જે ' પીણનીય=મમસ્તેન્દ્રિય
પ્રીતિजनकम्, ' દીપણિજ્જે ' દીપનીય = જઠરાગ્નિદીપનક શરીરસૌન્દર્યजनक वा,
' દર્પણિજ્જે ' દર્પનીય=ચલजनकम्, મયણિજ્જે ' મદનીય=કામોદીપકમ્ ' વિહ
ણિજ્જે ' વૃહણીય=સકલધાતુપચયजनकम्, સર્વેન્દ્રિયગાત્રમહાદનીય=સકલેન્દ્રિય-
શરીરસુખजनक वर्तते । તતઃ સ્વલુ તે વદત્. ईश्वर यावत् सार्थवाहमभृतयो जित
शत्रु मत्प्रेवमवदन् 'तद्देव' तद्देव तादृशमेव स्वलु हे स्वामिन् ! यत्स्वलु यूयं वदथ,
अहो ! स्वलु इद मनोज्ञमशन पान स्वाद्य स्वाद्य चतुर्विधमप्याहार वर्णेन उपपेत

પ્રિયો ! મનકો તૃપ્તિ કરને વાલા યદ અશનાદિ રૂપ ચતુર્વિધ આહાર
કિતને અચ્છે શુભવર્ણ સે યુક્ત થા, કિતને અચ્છે શુભ સ્પર્શ સે યુક્ત
થા કિતના અચ્છા આસ્વાદનીય એવ વિશેષરૂપ સે સ્વાદનીય યા હસે
સ્વાકર સમસ્ત ઇન્દ્રિયા તૃપ્ત હો ગઈ હૈં । યદ જઠરાગ્નિ કા દીપક હૈ, અ
થવા શારીરિક સૌન્દર્ય કા જનક હૈ । ચલચર્ચક હૈ । કામોદીપક હૈ ।
હસે સ્વાને વાલે કી સમસ્ત ધાતુણ ઉપચિત્ત હો જાતી હૈં । સમસ્ત ઇન્દ્રિ
યો એવ શરીર કો હસકે સ્વાને સે આનન્દ પહુંચ રહા હૈ । તાતર્ય યદ
ચતુર્વિધ આહાર વડા હી આશ્ચર્યકારક હૈ (તણ તે વદવે હસર જાવ
પમિહઓ જિયસત્તૂ એવ વયાસી) ઓર અધિક વયા કહું યદ તો બહુત
હી અધિક ઉત્તમ થા । રાજા કી હસ પ્રકાર વાત સુનકર ડન ईश्वर
आदि अनेक सार्थवाहोंने उन जितशत्रु राजा से इस प्रकार कहा (तद्दे
व णं सामी ! जण्ण तुब्भे वदह-अहो ण इमे मणुण्णे असण ४ वण्णेण

હે દેવાનુપ્રિયો ! મનને તૃપ્ત કરનારો આ અશન વગેરેનો આર જાતનો
આહાર કેટલો શુભ વર્ણવાળો હતો, કેટલો બધો શુભસ્પર્શવાળો હતો, કેટલો
સરસ આસ્વાદનીય-અને સવિશેષરૂપથી સ્વાદનીય હતો આ આહારને જમીને
ઇન્દ્રિયો બધી તૃપ્ત થઈ ગઈ છે આ જઠરાગ્નિનો ઉદીપક છે તેમજ શારીરિક
સૌન્દર્યમાં વૃદ્ધિ કરનાર છે બળવર્ધક અને કામોદીપક છે અને જમવાથી
બધી ધાતુઓ ઉપચિત્ત (વૃદ્ધિ પામવું) થઈ જાય છે આ આહારથી બધી
ઇન્દ્રિયો તેમજ શરીરને આનંદની પ્રાપ્તિ થાય છે મતલમ એ છે કે આ
આર જાતના આહારો બહુ જ નવાઈ પમાડે તેવા છે (તણ તે હસર જાવ
પમિહઓ જિયસત્તૂ એવ વયાસી) અને વધારે શુ કહી શકીએ તે બહુ જ
ઉત્તમ હતો એમાં તો જરાએ શકા નથી રાજાની આ વાત સાંભળીને તે
ईश्वर वगैरे धणा सार्थवाहोએ તે જિતશત્રુ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(तद्देव ण सामी ! जण्ण तुब्भे वदह-अहो ण इमे मणुण्णे असण ४ वण्णेण

यावत् सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयमस्ति । ततः खलु सुबुद्धिरमात्यो जितशत्रोरेत
मर्थं नो आद्रियते यावत् तूष्णीक = सन्मोनः सतिष्ठते । ततः खलु जितशत्रुः सुबु-
द्धिममात्य द्वितीयमपि तृतीयमपिवारमेवमवादीत्-अहो ! खलु हे सुबुद्धे ! इदं
मनोन तदेव यावत्सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयम्, ततः खलु स सुबुद्धिरमात्यः जित
शत्रुणा द्वितीयमपि तृतीयमपि वारमेवमुक्तः सन् जितशत्रु राजानमेवमवादीत्-नो
उववेए जाव पल्हायणिज्जे) हा स्वामिन् ! जैसा आप कहते हैं आहार
वैसा ही था । वह बड़ा ही मनोज्ञ एवं शुभवर्ण से युक्त था । यावत्
समस्त शरीर एवं इन्द्रियों को आनन्द पहुँचाने वाला था । (तएण
जितसत्तू सुबुद्धिं अमच्च एव वयासी) अपनी बात का इश्वर आदि
समस्त जनों द्वारा समर्थन प्राप्त कर राजा ने अपने अमात्य सुबुद्धि से
भी यही बात कही कि (अहो ण सुबुद्धी-इमे मणुण्णे असण ४ जाव
पल्हायणिज्जे) हे सुबुद्धे कहो, मनोज्ञ चतुर्विध अशनादि रूप यह
आहार कितना अच्छा शुभ वर्णोपेत यावत् प्रह्लादनीय था । (तएण
सुबुद्धी जियसत्तूस्सेयमट्ठ णो आढाह, जाव तुसिणीए सचिट्ठई) इस
प्रकार राजा द्वारा आहार की प्रशंसा सुनकर उस सुबुद्धि अमात्य ने
राजा की इस बातकी अनुमोदना नहीं की-प्रत्युत वह सुनकर चुपचाप
ही बैठा रहा-(तएण जियसत्तू सुबुद्धिं दोच्च पि तच्च पि एव वयासी

उववेए जाव पल्हायाणिज्जे)

हा स्वामिन् ! जरेअर नेम तमे ठडो छो तेम आहार पणु अवे। न
डतो ते भूअ न मनोज्ञ अने शुभवर्ण वाणो डतो यावत् स पूरु शरीर अने
इन्द्रियोने आनंद पमाडनार डतो (तएण जितसत्तू सुबुद्धिं अमच्च एव
वयासी) पोताना कथन विशे इश्वर वगेरे णधाओथी समर्थन प्राप्त करीने
राजअ पोताना अमात्य (मत्री) सुबुद्धिने पणु अवे वात कही के

(अहोण सुबुद्धी इमे मणुण्णे असण ४ जाव पल्हायणिज्जे)

डे सुबुद्धि ! अतावे, मनोज्ञ आर नतनो अशन वगेरे इप आ आहार
केटलो णधो शुभवर्णो युक्त यावत् आनंद आपनार डतो

(तएण सुबुद्धी जियसत्तूस्सेयमट्ठ णो आढाह जाव तुसिणीए सचिट्ठई)

आ रीते राजना सुणेथी आहार विशेना वणाणु सालाणी सुबुद्धि
अमात्ये तो तेमनी वात ने टेके आये। नहि पणु ते मात्र भूगे थधने
जेमी न रह्यो

तएण जियसत्तू सुबुद्धिं दोच्च पि तच्च पि एव वयासी-अहो ण सुबुद्धी ! इमे

મનસ્વૃત્તિકરમ્ અશન પાન શ્વાધ સ્વાધ વર્ણેન=શુભવર્ણેન ઉપપેત યાવત્ સ્પર્શેનોપપે-
તમ્, ' આસાયણિજ્જે ' આસ્વાદનીયમ્=આસ્વાદનયોગ્યમ્, ' વિસ્સાયણિજ્જે '
વિસ્વાદનીય=વિશેષત આસ્વાદનયોગ્યમ્, ' પીણિજ્જે ' પીણનીય=સમસ્તેન્દ્રિય
પ્રીતિજનકમ્, ' દીપણિજ્જે ' દીપનીય = જઠરાગ્નિદીપનક શરીરસૌન્દર્યજનક વા,
' દપ્પણિજ્જે ' દર્પનીય=ચલજનકમ્, મયણિજ્જે ' મદનીય=કામોદીપકમ્ ' ચિંહ
ણિજ્જે ' વૃદ્ધનીય=સકલધાતુપચયજનકમ્, સર્વેન્દ્રિયગાત્રપહાદનીય=સકલેન્દ્રિય-
શરીરસુખજનક વર્તેતે । તતઃ સ્વલુ તે વદન્ । ઈશ્વર યાવત્ સાર્યવાહમભૂતયો જિત-
શત્રું મત્યેવમવદન્ ' તહેવ ' તયેવ તાદગમેવ સલુ હે સ્વામિન ! યત્સ્વલુ યૂય વદથ,
અહો ! સ્વલુ ઇદ મનોજ્ઞમશન પાન શ્વાધ સ્વાધ ચતુર્વિધમપ્યાહાર વર્ણેન ઉપપેત

પ્રિયો ! મનકો તૃપ્તિ કરને વાલા યદ અશનાદિ રૂપ ચતુર્વિધ આહાર
કિતને અચ્છે શુભવર્ણ સે યુક્ત થા, કિતને અચ્છે શુભ સ્પર્શ સે યુક્ત
થા કિતના અચ્છા આસ્વાદનીય ણ્વ વિશેષરૂપ સે સ્વાદનીય વા હસે
સ્વાકર સમસ્ત હિન્દ્રિયા તૃપ્ત હો ગઈ હૈં । યદ જઠરાગ્નિ કા દીપક હૈ, અ
થવા શારીરિક સૌન્દર્ય કા જનક હૈ । ચલવર્ધક હૈ । કામોદીપક હૈ ।
હસે સ્વાને વાલે કી સમસ્ત ધાતુણ ઉપચિત્ત હો જાતી હૈં । સમસ્ત હિન્દ્રિ
યો એવ શરીર કો હસકે સ્વાને સે આનન્દ પહુંચ રહા હૈ । તાત્પર્ય યદ
ચતુર્વિધ આહાર વડા હી આશ્ચર્યકારક હૈ (તણ તે વહવે હસર જાવ
પમિહઓ જિયસત્તૂ એવ વયાસી) ઓર અધિક કયા કહૂં યદ તો વહુત
હી અધિક ઉત્તમ થા । રાજા કી હસ પ્રકાર વાત સુનકર ડન ઈશ્વર
આદિ અનેક સાર્યવાહોને ડન જિતશત્રુ રાજા સે હસ પ્રકાર કહા (તહે
વ ણ સામી ! જણ તુઠમે વદદ-અહો ણ હમે મણુણે અસણ ૪ વણેણ

હે દેવાનુપ્રિયો ! મનને તૃપ્ત કરનારો આ આશન વગેરેનો આર બાતનો
આહાર કેટલો શુભ વર્ણવાળો હતો, કેટલો બધો શુભસ્પર્શવાળો હતો, કેટલો
સરસ આસ્વાદનીય-અને અવિશેષરૂપથી સ્વાદનીય હતો આ આહારને જમીને
હિન્દ્રિયો બધી તૃપ્ત થઈ ગઈ છે આ જઠરાગ્નિનો ઉદીપક છે તેમજ શારીરિક
સૌંદર્યમાં વૃદ્ધિ કરનાર છે બળવર્ધક અને કામોદીપક છે અને જમવાથી
બધી ધાતુઓ ઉપચિત્ત (વૃદ્ધિ પામતુ) થઈ જાય છે આ આહારથી બધી
હિન્દ્રિયો તેમજ શરીરને આનંદની પ્રાપ્તિ થાય છે મતલબ એ છે કે આ
આર બાતના આહારો બહુ જ નવાઈ પમાડે તેવા છે (તણ તે હસર જાવ
પમિહઓ નિયસત્તૂ એવ વયાસી) અને વધારે શુ કહી શકીએ તે બહુ જ
ઉત્તમ હતો એમાં તો જરાએ શંકા નથી રાખતી આ વાત સાંભળીને તે
ઈશ્વર વગેરે ઘણા સાર્યવાહોએ તે જિતશત્રુ રાખને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(તહેવ ણ સામી ! જણ તુઠમે વદદ-અહો ણ હમે મણુણે અસણ ૪ વણેણ

સુરૂપા અપિ પુદ્ગલાઃ દુરૂપતયા=કુત્સિતરૂપતયા પરિણમન્તિ દુરૂપા અપિ પુદ્ગલાઃ સુરૂપતયા પરિણમન્તિ । સુરભિગધા અપિ પુદ્ગલાઃ શુભગન્ધવન્તઃ પુદ્ગલાઃ અપિ દુરભિગન્ધતયા પરિણમન્તિ દુરભિગન્ધા અપિ પુદ્ગલાઃ સુરભિગન્ધતયા=સુગન્ધરૂપેણ પરિણમન્તિ । સુરસા અપિ=શુભરસવન્તોઽપિ પુદ્ગલાઃ દુઃસતયા=અશુભરસતયા=પરિણમન્તિ, દુરસા અપિ પુદ્ગલાઃ સુરસતયા શુભરસરૂપેણ પરિણમન્તિ । શુભસ્પર્શા અપિ પુદ્ગલાઃ દુસ્પર્શતયા પરિણમન્તિ, દુસ્સ્પર્શા અપિ પુદ્ગલાઃ શુભસ્પર્શતયા પરિણમન્તિ । ‘પદ્મોગ-

इसी तरह (सुरूवा वि पोग्गला दुरुवत्ताए परिणमति परिणमति) जो अशुभ रूप वाले पुद्गल होते हैं वे शुभरूप से परिणम जाते हैं और जो शुभरूप से परिणमे हुए पुद्गल होते हैं वे अशुभ रूप से परिणम जाते हैं । (सुन्मिगधावि पोग्गला दुन्मिगधत्ताए परिणमति, सुरसावि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमति, दुरसावि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमति, दुहफासावि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमति, पद्मोगवीस सा परिणया वि य ण सामी पोग्गला पणत्ता) जो पुद्गल सुरभि गध रूप से परिणमे हुए होते हैं वे ही पुद्गल दुरभि गध रूप से परिणम जाते हैं । इसी तरह जो पुद्गल शुभरसरूप से परिणमे हुए होते हैं वे ही पुद्गल कुत्सितरूप से परिणम जाते हैं और जो कुत्सित रूप वाले पुद्गल होते हैं वे ही शुभरस रूपवाले पुद्गल बन जाते हैं । जो पुद्गल शुभ स्पर्श रूप से परिणमे हुए होते हैं वे ही पुद्गल अशुभ स्पर्श रूप में परिणम

જાત છે આ પ્રમાણે (સુરૂવા વિ પોગ્ગલા દુરુવત્તાએ પરિણમતિ પરિણમતિ) જે અશુભ રૂપ વાળા પુદ્ગલો હોય છે તેઓ શુભ રૂપમાં પરિણમિત થઈ જાય છે અને જે શુભ રૂપમાં પરિણત થયેલા પુદ્ગલો હોય છે તેઓ અશુભ રૂપમાં પરિણત થઈ જાય છે

(સુન્મિગધા વિ પોગ્ગલા દુન્મિગધત્તાએ પરિણમતિ, સુરસાવિ પોગ્ગલા દુરસત્તાએ પરિણમતિ, દુરસાવિ પોગ્ગલા સુરસત્તાએ પરિણમતિ દુહફાસા વિ પોગ્ગલા સુહફાસત્તાએ પરિણમતિ, પદ્મોગવીસમા પરિણયા વિ ય ણ સામી પોગ્ગલા પણત્તા)

જે પુદ્ગલો સુરભિગધ રૂપમાં પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ દુરભિગધ રૂપમાં પરિણત થઈ જાય છે આ ગીતે જે પુદ્ગલો સરસ રૂપમાં પરિણત થયેલા છે તે પુદ્ગલો જ કુત્સિત (ખરાબ) રૂપમાં પરિણત થઈ જાય છે અને જે કુત્સિત રૂપવાળા પુદ્ગલો હોય છે તે પુદ્ગલો જ સરસ રૂપ વાળા પુદ્ગલો બની જાય છે જે પુદ્ગલો શુભ સ્પર્શ રૂપમાં પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ અશુભ સ્પર્શ રૂપમાં પરિણત થઈ જાય છે અને જે

खलु हे स्वामिन् ! अस्माकमेतस्मिन् मनाद्ये-अशनपानव्यायस्याद्ये कोऽपि विस्मय,
एव खलु हे स्वामिन् ! सुविमसदा दुरभिशब्दाः=प्रशस्तशब्दा अपि पुद्गलाः शुभाः
शब्दपुद्गला अपील्यर्थः. ' दुविमसदत्ताण ' दुरभिशब्दतया परिणमन्ति, दुरभिशब्दा
अपि पुद्गलाः=अशुभाः शब्दपुद्गला अपि सुविमशब्दतया=शुभशब्दतया परिणमन्ति ।

-अहो ण सुबुद्धी । इमे मणुण्णे त चेव जाव पत्तायणिज्जे तएण से
सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्चपि तच्चपि एव वुत्ते समाणे जितसत्तू
राय एव वयासी) अमात्य सुबुद्धि को चुप चाप बैठा देखकर जितशत्रु
राजाने दुबारा एव तिरारा भी इसी तरह से कहा-हे सुबुद्धे । यह मनोज्ञ
चतुर्विध आहार किनना अच्छा शुभवर्णपित यावत् समस्त शरीर
एव इन्द्रियो को आनन्द पहुँचा ने वाला था । इस प्रकार दुबारा तिरारा
जितशत्रु राजा द्वारा कहे गये सुबुद्धि अमात्य ने उन जितशत्रु राजा
से इस प्रकार कहा-(नो खलु मामी अम्ह एयमि मणुण्णसि असण
४ केइ विम्हए-एव-खलु मामी सुविमसदावि पुग्गला दुविमसदत्ताण
परिणमन्ति, दुविमसदावि पोग्गला सुविमसदत्ताण परिणमन्ति) स्वामि
न् ! मुझे इस मनोज्ञ अशनादिरूप चतुर्विध आहार में कोई आश्चर्य
नहीं हो रहा है । कारण कि जो जो शुभ शब्द रूप पुद्गल होते हैं वे
अशुभ शब्द पुद्गल रूप से परिणम जाते हैं और जो अशुभ शब्द
रूप पुद्गल होते हैं वे शुभ शब्द पुद्गल रूप से परिणम जाते हैं ।

मणुण्णे त चेव जाव पत्तायणिज्जे-तएण से सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्चपि
तच्चपि एव वुत्ते समाणे जितसत्तू राय एव वयासी)

અમાત્ય સુબુદ્ધિને ચૂપચ. ૧ બેઠેયો બેઠેને જિતશત્રુ ગભાએ બીજી ત્રીજી
વાર પણ આ પ્રમાણે જ કહ્યું કે હે સુબુદ્ધે ! આ મનોન ચાર ભાતનો આહાર
કેટલો બધો સરમ શુભવર્ણ પેત યાવત આખા શરીર અને ઇન્દ્રિયોને આનંદ
આપનાર છે આ રીતે બે ત્રણ વાર જિતશત્રુ રાજા વડે પૂછાયેલા સુબુદ્ધિ
અમાત્યે રાજાને કહ્યું કે

(નો खलु मामी अम्ह एयसि मणुण्ण सि असण ४ केइ विम्हए एव खलु
मामी सुविम सदा वि पुग्गला दुविम सदत्ताए परिणमन्ति दुविम सदावि पोग्गला
सुविम सदत्ताए परिणमन्ति)

હે સ્વામિન્ ! આ મનોજ્ઞ અશન વગેરે ચાર ભાતના આહાર વિશે મને
કંઈ નવાઈ જેવી વાત જણાતી નથી કેમ કે જે શુભ શબ્દ રૂપ પુદ્ગલો હોય
છે તે અશુભ શબ્દ પુદ્ગલ રૂપમાં પરિણમિત થઈ જાય છે અને જે અશુભ
શબ્દ રૂપ પુદ્ગલો હોય છે તે શુભ શબ્દ રૂપમાં પરિણમિત થઈ જાય છે

સુરુપા અપિ પુદ્ગલાઃ દુરુપતયા=કુત્સિતરુપતયા પરિણમન્તિ દુરુપા અપિ પુદ્ગલાઃ સુરુપતયા પરિણમન્તિ । સુભિગધા અપિ પુદ્ગલા શુભગન્ધવન્તઃ પુદ્ગલા અપિ દુરભિગન્ધતયા પરિણમન્તિ, દુરભિગન્ધા અપિ પુદ્ગલાઃ સુરભિગન્ધતયા=સુગન્ધરુપેણ પરિણમન્તિ, સુરસા અપિ=શુભરસવતોઽપિ પુદ્ગલાઃ દુરસતયા=અશુભરસતયા=પરિણમન્તિ, દુરસા અપિ પુદ્ગલા મુરસતયા શુભરસરુપેણ પરિણમન્તિ । શુભસ્પર્શા અપિ પુદ્ગલાઃ દુસ્પર્શતયા પરિણમન્તિ, દુસ્સ્પર્શા અપિ પુદ્ગલા શુભસ્પર્શતયા પરિણમન્તિ । 'પત્રોગ-

इसी तरह (सुरूवा वि पोगगला दुरुवत्ताए परिणमति परिणमति) जो अशुभ रूप वाले पुद्गल होते हैं वे शुभरूप से परिणम जाते हैं और जो शुभरूप से परिणमे हुए पुद्गल होते हैं वे अशुभ रूप से परिणम जाते हैं । (सुभिगधावि पोगगला दुभिगधत्ताए परिणमति, सुरसावि पोगगला दुरसत्ताए परिणमति, दुरसावि पोगगला सुरसत्ताए परिणमति, दुहफासावि पोगगला सुहफासत्ताए परिणमति, पत्रोगवीससा परिणया वि य ण मामी पोगगला पणत्ता) जो पुद्गल सुरभि गध रूप से परिणमे हुए होते हैं वे ही पुद्गल दुरभि गध रूप से परिणम जाते हैं । इसी तरह जो पुद्गल शुभरसरूप से परिणमे हुए होते हैं वे ही पुद्गल कुत्सितरूप से परिणम जाते हैं और जो कुत्सित रूप वाले पुद्गल होते हैं वे ही शुभरस रूपवाले पुद्गल बन जाते हैं । जो पुद्गल शुभ स्पर्श रूप से परिणमे हुए होते हैं वे ही पुद्गल अशुभ स्पर्श रूप में परिणम

જાથ છે આ પ્રમાણે (સુરુવા વિ પોગગલા દુરુવત્તાણ પરિણમતિ પરિણમતિ) જે અશુભ રૂપ વાળા પુદ્ગલો હોય છે તેઓ શુભ રૂપમાં પરિણમિત થઈ જાય છે અને જે શુભ રૂપમાં પરિણુત થયેલા પુદ્ગલો હોય છે તેઓ અશુભ રૂપમાં પરિણુત થઈ જાય છે

(સુભિગધા વિ પોગગલા દુભિગધત્તાણ પરિણમતિ, સુરસાવિ પોગગલા દુરસત્તાણ પરિણમતિ, દુરસાવિ પોગગલા સુરસત્તાણ પરિણમતિ દુહફાસા વિ પોગગલા સુહફાસત્તાણ પરિણમતિ, પત્રોગવીસસા પરિણયા વિ ય ણ મામી પોગગલા પણત્તા)

જે પુદ્ગલો સુરભિગધ રૂપમાં પરિણુત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ દુરભિગધ રૂપમાં પરિણુત થઈ જાય છે આ રીતે જે પુદ્ગલો સુરસ રૂપમાં પરિણુત થયેલા છે તે પુદ્ગલો જ કુત્સિત (ખરાબ) રૂપમાં પરિણુત થઈ જાય છે અને જે કુત્સિત રૂપવાળા પુદ્ગલો હોય છે તે પુદ્ગલો જ સુરસ રૂપ વાળા પુદ્ગલો બની જાય છે જે પુદ્ગલો શુભ સ્પર્શ રૂપમાં પરિણુત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ અશુભ સ્પર્શ રૂપમાં પરિણુત થઈ જાય છે અને જે

खलु हे स्वामिन् ! अस्माकमेवमस्मिन् मनाद्ये-अशनपानव्याधस्याग्रे कोऽपि विस्मय,
एव खलु हे स्वामिन् ! सुविमसदा दुरभिशब्दाः=प्रशस्तशब्दा अपि पुद्गलाः शुभाः
शब्दपुद्गला अपील्यर्थः ' दुविमसदत्ताए ' दुरभिशब्दतया परिणमन्ति, दुरभिशब्दा
अपि पुद्गलाः=अशुभाः शब्दपुद्गला अपि सुरभिशब्दतया=शुभशब्दतया परिणमन्ति ।

-अहो ण सुबुद्धी । इमे मणुण्णे त चेव जाव पत्तायणिज्जे तण्ण से
सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्चपि तच्चपि एव वुत्ते समाणे जितसत्तू
राय एव वयासी) अमात्य सुबुद्धि को चुप चाप बैठा देखकर जितशत्रु
राजाने दुयारा एव तिथारा भी इसी तरह से कहा-हे सुबुद्धे ! यह मनोज्ञ
चतुर्विध आहार किनना अच्छा शुभवर्णोपेत यावत् समस्त शरीर
एव इन्द्रियों को आनन्द पहुँचा ने वाला था । इस प्रकार दुयारा तिथारा
जितशत्रु राजा द्वारा कहे गये सुबुद्धि अमात्य ने उन जितशत्रु राजा
से इस प्रकार कहा-(नो खलु मामी अम्ह एयमि मणुण्णसि असण
४ केइ विम्हए-एव-खलु मामी सुविमसदावि पुग्गला दुविमसदत्ताए
परिणमति, दुविमसदावि पोग्गला सुविमसदत्ताए परिणमति) स्वामि
न् ! मुझे इस मनोज्ञ अशनारूप चतुर्विध आहार में कोई आश्चर्य
नहीं हो रहा है । कारण कि जो जो शुभ शब्द रूप पुद्गल होते हैं वे
अशुभ शब्द पुद्गल रूप से परिणम जाते हैं और जो अशुभ शब्द
रूप पुद्गल होते हैं वे शुभ शब्द पुद्गल रूप से परिणम जाते हैं ।

मणुण्णे त चेव जाव पत्तायणिज्जे-तण्ण से सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्चपि
तच्चपि एव वुत्ते समाणे जितसत्तू राय एव वयासी)

અમાત્ય સુબુદ્ધિને ચૂપચાપ બેઠેલા જોઈને જિતશત્રુ રાજાએ બીજી ત્રીજી
વાર પણ આ પ્રમાણે જ કહ્યું કે હે સુબુદ્ધે ! આ મનોજ્ઞ ચાર બંતને આધાર
કેટલો બધો સરસ શુભવર્ણોપેત યાવત આખા શરીર અને ઈન્દ્રિયોને આનંદ
આપનાર છે આ રીતે બે ત્રણ વાર જિતશત્રુ રાજા વડે પૂછાયેલા સુબુદ્ધિ
અમાત્યે રાજાને કહ્યું કે

(નો खलु मामी अम्ह एयमि मणुण्ण सि असण ४ केइ विम्हए एव खलु
मामी सुविम सदा वि पुग्गला दुविम सदत्ताए परिणमति दुविम सदावि पोग्गला
सुविम सदत्ताए परिणमति)

હે સ્વામિન્ ! આ મનોજ્ઞ અશન વગેરે ચાર બંતના આધાર વિશે મને
કંઈ નવાઈ જોવી વાત જણાતી નથી કેમ કે જે શુભ શબ્દ રૂપ પુદ્ગલો હોય
છે તે અશુભ શબ્દ પુદ્ગલ રૂપમાં પરિણમિત થઈ જાય છે અને જે અશુભ
શબ્દ રૂપ પુદ્ગલો હોય છે તે શુભ શબ્દ પુદ્ગલ રૂપમાં પરિણમિત થઈ

नाति=नाङ्गीकरोति तूष्णीकः सतिष्ठते=मोनमालम्ब्यस्थित इत्यर्थः । ततः खलु स-
जितशत्रुरन्यदा कदाचित्=एकस्मिन् प्रस्तावे स्नातः=कृतस्नातः अश्वरकन्धवरगतः
=जात्याश्वपृष्ठाखट 'महया भडचडगर०' महाभटचडकरपहकरवृन्दपरिक्षिप्तः
'आसवाहणियाए' अश्ववाहनिकायाम्=अश्ववाहनक्रीडाया 'निजायमाणे' नि-
यन्=निर्गच्छन् तस्य=पूर्वोक्तस्य परिखोदकस्य=परिखाजलस्य अदूर सामन्तेन=
पार्श्वभागेन व्यतिव्रजति । तत तदा खलु जितशत्रु राजा परिखोदकस्य=पूर्वोक्त-
विशेषणविशिष्टस्य अशुभेन गन्त्रेण 'अभिभूए समाणे' अभिभूत=व्याकुलित
चित्त सन् स्वकेन=स्वकीयेन उत्तरीयकेण=उत्तरीयस्त्रेण 'दुपट्टा' इतिप्रसिद्धेन
आस्य-सामीप्यसयोगान्नासिका पिदधाति, एकान्तमपक्रामति=दूरतो भूत्वा ग-
च्छति अपक्राम्य तान् वहून् राजेश्वर यावत् ममृतीन्=राजेश्वर-तलवर-माटम्बिक

सुनकर चुपचाप ही बैठा रहा । एकदिन जितशत्रु राजा स्नान से निश्चित
होकर घोड़े पर बैठकर अश्वक्रीडा करने के निमित्त घर से बाहर
निकला । उनके साथ २ महामर्दों का समुदाय भी चल रहा था । चलते
२ वे उसी परिखोदक (खाई)के पाससे होकर निकले । (तएण जियसत्तू
तस्स फरिहोदगस्स असुभेण गधेण अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्जेण
आसग पिहई, एगत अवक्रमइ, अवक्रमित्ता, ते वहवे ईमर जाव
पभिइओ एव वयासी-अहोण देवाणुप्पिया । इमे फरिहोदए अमणुण्णे
वण्णेण ४ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएण
ते वहवे राईसर पभिइओ एव वयासी) इतने में उन जितशत्रु राजाने
उस परिखोदक की अशुभ गव से अभिभूत होकर अपने दुपट्टे से अ-
पनी नासिका को ढक लिया । और फिर वे ढककर वहां से दूर होकर

जितशत्रु राजा स्नान करीने घोड़ा उपर सवार था । अने अश्वक्रीडा करवा
भाटे घेरथी अड्डार नीकल्या नेमनी साथे साथे भडान लटोने । समुदाय पण
यावतो डतो यावता यावता तेथे । ते २ परिखोदक-आध-नी पाने थडने नीकल्या ।

(तएण जितमत्तू तस्स फरिहोदगस्स असुभेण गधेण अभिभूए समाणे सएण
उत्तरिज्जेण आसग पिहई एगत अवक्रमइ अवक्रमित्ता ते वहवे ईमर जाव
पभिइओ एव वयासी-अहोण देवाणुप्पिया ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण
४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएण ते वहवे राई सर
पभिइओ एव वयासी)

जितशत्रु गन्तथे परिखोदक-आध-नी अरण गधथी व्याकुण थडने
येताना येसथी नाकने ढाडी लीधु अने तयार आइ तेथे । आधनी पासेवी

વીસસાપરિણયાત્રિ' પ્રયોગવિચિત્રતા પરિણતા અપિ, પ્રયોગેન=પ્રયોગપરિણામેન જીવ
કૃતવ્યાપારેણ વિસ્રસયા=વિસ્રમાપરિણામેન સ્વભાવેનૈવ ન પરિણતા:=एकावस्थाया
अवस्थान्तर प्राप्ताः सुखंदादय पुद्गलाः दृशान्त्वित्वेन दुःखंदादयश्च सुख-
व्दादिरूपेण परिणता इत्यर्थः पुद्गलाः खलु भवन्तीति हे व्याभिन् । प्रज्ञप्ता =भग-
वता कथिता । ततः खलु स जितशत्रुः सुबुद्धेरमात्यस्य एवम्=उक्तरूपेण ' आइ-
क्खमाणस्म ' आचक्षाणस्य=कथयत', एतम्=पूर्वोक्तम् अर्थम्=शब्दादिपुद्गलानां
शुभाशुभपरिणामस्य भार नो आद्वियते=तदात्रयस्याऽऽदरन करोति, नो परिजा

जाते हैं और जो पुद्गल अशुभ स्पर्श रूप में परिणामे हुए होते
हैं वे ही पुद्गल शुभस्पर्शरूप में परिणाम जाते हैं । इस प्रकार का
परिणामन पुद्गलों में जीवकृत व्यापाररूप परिणाम से और स्वाभाविक
रूप से होता रहता है । एक अवस्था से अवस्थान्तर की प्राप्ति
प्रत्येक समय प्रत्येक द्रव्य में होती रहती है । इस परिणामन से कोई
भी द्रव्य अछूता नहीं है । इसी परिणाम का नाम स्वाभाविक
परिणामन है । यह बात प्रभुने स्वयं प्रतिपादित की है । (तएण से
जितसत्तु सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमद्व नो
अढाइ, नो परियाणई, तुसिणीए सच्चिद्वइ, तएण से जियसत्तु अण्ण
या कयाई ण्हाए आसखधवरगए महया भडचडगर आसवाहिणीयाए
निज्जोयमाणे तस्स फरिहोदगस्स अदूरसामते ण वीइवयइ) अमात्य
सुबुद्धि की इस बात को सुनकर जिनशत्रु राजा ने उसकी इस
बात का आदर नहीं किया—उसकी बातको स्वीकार नहीं किया । केवल

પુદ્ગલો અશુભ સ્પર્શ રૂપમાં પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ શુભ
સ્પર્શ રૂપમાં પરિણત થઈ જાય છે આ જાતનું પુદ્ગલોમાં પરિણમન જીવકૃત
વ્યાપાર રૂપ પરિણામથી અને સ્વાભાવિક રૂપમાં થતું રહે છે એક અવસ્થા
માંથી અવસ્થાન્તરની પ્રાપ્તિ દરેક સમયે દરેક દ્રવ્યમાં થતી રહે છે આ પરિણમન
એકે એક દ્રવ્ય માટે એકસ પછે સમજવું જોઈએ દરેકે દરેક દ્રવ્યમાં આ
જાતનું પરિણમન થતું જ રહે છે પ્રભુએ સ્વયં આ વાત સ્પષ્ટ કરી છે

(તएण से जितसत्तु सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमद्व
नो अढाइ नो परियाणई, तुसिणीए सच्चिद्वइ, तएण से जियसत्तु अण्णया कयाई
ण्हाए आसखधवरगए महया भडचडगरआसवाहिणीयाए निज्जोयमाणे तस्स
फरिहोदगस्स अदूरसामतेण वीइवयइ)

અમાત્ય સુબુદ્ધિની આ વાત સાંભળીને જીતશત્રુ રાજા બે તેના કથનને
આદર કર્યો નહિ, કહ્યું મ ભગાને તે ચૂપચાપ બેસી જ રહ્યો એક દિવસે

નાતિ=નાઢીકરોતિ તૂળીકઃ સતિષ્ટતે=મોનમાલમ્બ્યસ્થિત इत्यर्थः । ततः खलु स-
जितशत्रुरन्यदा कदाचित्=एकस्मिन् प्रस्तावे स्नातः=कृतस्नातः अश्वरकन्धवरगतः
=जात्याश्वपृष्ठाखट्ट ' महया भडचडगर० ' महाभटचडकरपहकरवृन्दपरिक्षिप्तः
' आसगाहणियाए ' अश्वगाहनिकायाम्=अश्ववाहनक्रीडाया ' निज्जायमाणे ' नि-
र्यान्=निर्गच्छन् तस्य=पूर्वोक्तस्य परिखोदकस्य=परिखाजलस्य अदूर सामन्तेन=
पार्श्वभागेन व्यतिप्रजति । तत तदा खलु जितशत्रु राजा परिखोदकस्य=पूर्वोक्त-
विशेषणविशिष्टस्य अशुभेन गन्धेन ' अभिभूए समाणे ' अभिभूत =व्याकुलित
चित्त सन् स्वकेन=स्वकीयेन उत्तरीयकेण=उत्तरीयसूत्रेण ' दुपट्टा ' इतिप्रसिद्धेन
आस्य-सामीप्यसयोगान्नासिका पिदयाति, एकान्तमपक्रामति=दूरतो भूत्वा ग
च्छति अपक्राम्य तान् बहून् राजेश्वर यावत् प्रभृतीन्=राजेश्वर-तलवर-माटम्बिक

સુનકર ચુપચાપ હી વૈઠા રહા । एकदिन जितशत्रु राजा स्नान से निश्चित
होकर घोड़े पर बैठकर अश्वक्रीडा करने के निमित्त घर से बाहर
निकला । उनके साथ२ महाभटों का समुदाय भी चल रहा था । चलते
२ वे उसी परिखोदक (खाई)के पाससे होकर निकले । (तएण जियसत्तू
तस्स फरिहोदगस्स असुभेण गधेण अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्जेण
आसग पिहई, एगत अवक्कमइ, अवक्कमित्ता, ते बह्वे ईसर जाव
पभिइओ एव वयासी-अहोण देवाणुप्पिया ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे
वण्णेण ४ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएण
ते बह्वे राईसर पभिइओ एव वयासी) इतने में उन जितशत्रु राजाने
उस परिखोदक की अशुभ गंध से अभिभूत होकर अपने दुपट्टे से अ
पनी नासिका को ढक लिया । और फिर वे ढककर वहां से दूर होकर

જિતશત્રુ રાજા સ્નાન કરીને ઘોડા ઉપર સવાર થયા અને અશ્વક્રીડા કરવા
માટે ઘેરથી બહાર નીકળ્યા તેમની માથે સાથે મહાન ભટોનો સમુદાય પણ
ચાલતો હતો ચાલતા ચાલતા તેઓ તે જ પરિખોદક-ખાઈ-ની પાસે થઈને નીકળ્યા

(તएण જિતસત્તૂ તસ્સ ફરિહોદગસ્સ અસુભેણ ગધેણ અભિભૂએ સમાણે સएण
ઉત્તરિજ્જેણ આસગ પિહई એગત અવક્કમइ અવક્કમિત્તા તે બહવે રૈસર જાવ
પભિइओ એવ વયાસી-અહોણ દેવાણુપ્પિયા ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण
४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएण ते बह्वे राई सर
पभिइओ एव वयासी)

જિતશત્રુ રાજાએ પરિખોદક-ખાઈ-ની ખરાબ ગંધથી વ્યાકુળ થઈને
ખોતાના ખેસથી નાકને ઢાકી લીધું અને ત્યાર બાદ તેઓ ખાઈની પાસેથી

વીસસાપરિણયાત્રિ' પ્રયોગવિસસા પરિગતા અપિ, પ્રયોગેન=પ્રયોગપરિણામેન જીવ
કૃતવ્યાપારેણ વિસસયા=વિસસાપરિણામેન સ્વાભાવેનૈવ ન પરિણતા:=૧કાવસ્થાયા
અવસ્થાન્તર પ્રાપ્તાઃ સુગન્દાદય પુદ્ગલૃ દુઃશન્દાદિત્વેન દુઃશન્દાદયશ્ચ સુગ્ન-
ન્દાદિરુપેણ પરિણતા इत्यर्थ પુદ્ગલાઃ સ્વલુ ભવન્તીતિ હે સ્વામિન્ । મણ્ડપા =મગ
વતા કથિતા । તતઃ સ્વલુ સ જિતશત્રુ. સુબુદ્ધિરમાત્યસ્ય ઇત્થમ્=ઉક્તરુપેણ ' આઈ-
ક્ષ્વમાણસ્ય ' આચક્ષાણસ્ય=કથયત, ઇત્થમ્=પૂર્વોક્તમ્ અર્થમ્=શન્દાદિપુદ્ગલાના
શુભાશુભપરિણામરૂપ ભાવ નો આદ્રિયતે=તદ્વાચ્યસ્યાઽઽદરન કરોતિ, નો પરિજા

જાતે હૈં ઓર જો પુદ્ગલ અશુભ સ્પર્શ રૂપ મેં પરિણમે ઘટ્ટ હોતે
હૈં વે હી પુદ્ગલ શુભસ્પર્શરૂપ મેં પરિણમ જાતે હૈં । હસ પ્રકાર કા
પરિણમન પુદ્ગલોં મેં જીવજૂન વ્યાપારરૂપ પરિણામ સે ઓર સ્વાભાવિક
રૂપ સે હોતા રહતા હૈં । ઇત્થ અવસ્થા સે અવસ્થાન્તર કી પ્રાપ્તિ
પ્રત્યેક સમય પ્રત્યેક દ્રવ્ય મેં હોતી રહતી હૈં । હસ પરિણમન સે કોઈ
ભી દ્રવ્ય અછૂતા નહીં હૈં । હસી પરિણામ કા નામ સ્વાભાવિક
પરિણમન હૈં । યહ વાત પ્રભુને સ્વય પ્રતિપાદિત કી હૈં । (તણ સે
જિતસત્તુ સુબુદ્ધિસ્સ અમચ્ચસ્સ ઇવમાઈક્ષ્વમાણસ્સ ૪ ઇયમદ્ધ નો
અઢાઈ, નો પરિયાણઈ, તુસિણીંણ સચ્ચિદ્ધઈ, તણ સે જિયસત્તુ અણ્ણ
યા કયાઈ ણ્હાણ આસસ્થવરગણ મહયા મહચ્ચડગર આસવાહિણીયાં
નિજ્જોયમાણે તસ્સ ફરિહોદગસ્સ અદૂરસામતે ણ વીહવયઈ) અમાત્ય
સુબુદ્ધિ કી હસ વાદ કો સુનકર જિતશત્રુ રાજા ને ઉમકી હસ
વાત કા આદર નહીં કિયા-ઉસકી વાતકો સ્વીકાર નહીં કિયા । કેવલ

પુદ્ગલો અશુભ સ્પર્શ રૂપમા પરિણુત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ શુભ
સ્પર્શ રૂપમા પરિણુત થઈ જાય છે આ જાતનુ પુદ્ગલોમા પરિણુમન ઇવકૃત
વ્યાપાર રૂપ પરિણામથી અને સ્વાભાવિક રૂપમા થતુ રહે છે એક અવસ્થા
માથી અવસ્થાન્તરની પ્રાપ્તિ દરેક સમયે દરેક દ્રવ્યમા થતી રહે છે આ પરિણુમન
એકે એક દ્રવ્ય માટે ચોક્કસ પણ સમજવુ જોઈએ દરેકે દરેક દ્રવ્યમા આ
જાતનુ પરિણુમન થતુ જ રહે છે પ્રભુએ સ્વય આ વાત સ્પષ્ટ કરી છે

(તણ સે જિતસત્તુ સુબુદ્ધિસ્સ અમચ્ચસ્સ ઇવમાઈક્ષ્વમાણસ્સ ૪ ઇયમદ્ધ
નો અઢાઈ નો પરિયાણઈ, તુસિણીંણ સચ્ચિદ્ધઈ, તણ સે જિયસત્તુ અણ્ણયા કયાઈ
ણ્હાણ આસસ્થવરગણ મહયા મહચ્ચડગરઆસવાહિણીયાં નિજ્જોયમાણે તસ્સ
ફરિહોદગસ્સ અદૂરસામતેણ વીહવયઈ)

અમાત્ય સુબુદ્ધિની આ વાત સાંભળીને જીતશત્રુ રાજાએ તેના કથનનો
આદર કર્યો નહિ, કહ્યું તે અભાગને તે સ્વપચાપ બેસી જ રહ્યો એક દિવસે

નાતિ=નાઙ્ગીકરોતિ તૂળ્ણીકઃ સતિષ્ઠતે=મોનમાલમ્બ્યસ્થિત ઇત્યર્થ. । તતઃ સ્વલુ સ-
જિતશત્રુરન્યદા કદાચિત્=અકસ્મિન્ પ્રસ્તાવે સ્નાતઃ=કૃતસ્નાતઃ અશ્વરુદ્ધવરગતઃ
=જાત્યાશ્વપૃષ્ઠારુદ્ધ 'મહયા મહાચડગર૦' મહામટચડ કરપહકરવૃન્દપરિશિષ્ઠઃ
'આસવાહણિયા' અશ્વગાહનિકાયામ્=અશ્વગાહનક્રીડાયા 'નિજ્ઞાયમાણે' નિ-
ર્યાન્=નિર્ગન્નન્ત તસ્ય=પૂર્વોક્તસ્ય પરિશોદકસ્ય=પરિશોદકસ્ય અદૂર સામન્તેન=
પાર્શ્વભાગેન વ્યતિવ્રજતિ । તતઃ તદા સ્વલુ જિતશત્રુ રાજા પરિશોદકસ્ય=પૂર્વોક્ત-
વિશેષણવિશિષ્ટસ્ય અશુભેન ગન્ધેન 'અભિભૂ' સમાણે 'અભિભૂત=વ્યાકુલિત-
ચિત્ત સન્ સ્વકેન=સ્વકીયેન ઉત્તરીયકેણ=ઉત્તરીયપદ્ધેણ 'દુપદ્ધા' ઇતિપ્રસિદ્ધેન
આસ્ય-સામીપ્યસયોગાન્નાસિકા પિદધાતિ, એકાન્તમપક્રામતિ=દૂરતો ભૂત્વા ગ-
ચ્છતિ અપક્રામ્ય તાન્ વહૂન રાજેશ્વર યાત્ પદ્મતીન્=રાજેશ્વર-તલવર-માહમ્બિક

સુનકર ચુપચાપ હી બેઠા રહા । એકદિન જિતશત્રુ રાજા સ્નાન સે નિશ્ચિત
હોકર ઘોડે પર બેઠકર અશ્વક્રીડા કરને કે નિમિત્ત ઘર સે બાહર
નિકલ્લા । ઉનકે સાથર મહામટોં કા સમુદાય મી ચલ રહો થા । ચલતે
૨ વે ઉસી પરિશોદક (સ્વાઈ)કે પાસસે હોકર નિકલે । (તણ જિયસત્ત
તસ્સ ફરિહોદગસ્સ અસુમેણ ગધેણ અભિભૂ' સમાણે સણ ઉત્તરિજ્જેણ
આસગ પિદ્ધે, એગત અવકમહ, અવકમિત્તા, તે વહવે રૈસર જાવ
પમિહો એવ વયાસી-અહોણ દેવાણુપ્પિયા ! હમે ફરિહોદા અમણુણે
વણેણ ૪ સે જહાનામણ અહિમહેહ વા જાવ અમણામતરાણ ચેવ તણ
તે વહવે રાઈસર પમિહો એવ વયાસી) હતને મે ઉન જિતશત્રુ રાજાને
ઉસ પનિશોદક કી અશુભ ગધ સે અભિભૂત હોકર અપને દુપદ્ધે સે અ-
પની નાસિકા કો ઢક લિયા । ઓર ફિર વે ઢકકર વહા સે દૂર હોકર

જિતશત્રુ રાજા સ્નાન કરીને ઘોડા ઉપર સવાર થયા અને અશ્વક્રીડા કરવા
માટે ઘેરથી બહાર નીકળ્યા તેમની સાથે સાથે મહાન ભટોનો સમુદાય પણ
ચાલતો હતો ચાલતા ચાલતા તેઓ તે જ પરિશોદક-ખાઈ-ની પાસે થઈને નીકળ્યા

(તણ જિતસત્ત તસ્સ ફરિહોદગસ્સ અસુમેણ ગધેણ અભિભૂ' સમાણે સણ
ઉત્તરિજ્જેણ આસગ પિદ્ધે એગત અવકમહ અવકમિત્તા તે વહવે રૈસર જાવ
પમિહો એવ વયાસી-અહોણ દેવાણુપ્પિયા ! હમે ફરિહોદા અમણુણે વણેણ
૪ સે જહા નામણ અહિમહેહ વા જાવ અમણામતરાણ ચેવ તણ તે વહવે રાઈ સર
પમિહો એવ વયાસી)

જિતશત્રુ રાજાએ પરિશોદક-ખાઈ-ની ખરાબ ગધથી વ્યાકુળ થઈને
તેના ખેસથી નાકને ઢાકી લીધું અને ત્યાર બાદ તેઓ ખાઈની પાસેથી

કૌટુમ્બિક-શ્રેષ્ઠિ-સેનાપતિ સાર્યવાહાદીન એવાદીત્-અહો ! રત્ન હે દેવાનુ-
પ્રિયા ! કીદ્દુર્ગ્ગ્મ્મ્મ્ પરિવોદકમમનોજ્ઞ વર્ણેન ગન્ધેન રસેન સ્પર્શેન, તદ્ યથાના
મકમ્મ્ । તથાહિ-અહિમૃતકમિતિ વા યાવદ્ એતસ્માદપિ અનિષ્ટતરઅમનોજ્ઞતરમન-
આમતરક્રમે પ્રાસ્તિ । તતઃ સ્વલુ તે વદ્યો રાજેશ્વરમ્ભૃતયો યાવદેવમવાદિપુઃ-તથૈવ
સ્વલુ તત્ હે સ્વામિન્ । યત્સ્વલુ ગૂયમેવ પ્રદય-અહો ! સ્વલુ દ્વ પરિવોદકમમનોજ્ઞ
વર્ણેન રસેન ગન્ધેન સ્પર્શેન, તદ્ યથા નામકમ્મ્-તથાહિ-અહિમૃતકમિતિ વા યાવદ્

ચલને લગે । ચલતે ૨ ઝાંઝોને અપને સાથ રહે છુપ રાજેશ્વર ૨, તલવર,
માડમ્બિક, કૌટુમ્બિક, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ, એવ સાર્યવાહ આદિસે કહા હે
દેવાનુપ્રિયો ! દેવો-યદ્ પરિવોદક(ગાઈકા જલ)વર્ણસે ગધસે, રસસે એવ
સ્પર્શસે કિતના અગ્રિક અમનોજ્ઞ યન રહા હૈ । જૈસે મરે હુએ સર્પ આદિકે
સહે ચિનષ્ટ આદિ અવસ્થાપન્ન કલેવર કી ડુર્ગંધ આતી હૈ-ઉસ સે મી
અધિક તર અનિષ્ટ ડુર્ગંધ હસ જલ કી આ રહી હૈ । રાજા કી હસ
પ્રકાર વાત સુનકર ઉન રાજેશ્વર આદિ સમસ્ત જનોં ને હસ પ્રકાર
કહા-(તહેવ ણ સામી ! જ ણ તુઝમે એવ વચ્ચહ, અહો ણ હમે ફરિહો-
દદ, અમણુણે વણેણ ૪ સે જહા નામણ અહિમહેહ વા જાવ અમણામ
તરાણ ચેવ, તણ સે જિયસત્તુ સુબુદ્ધિ અમચ્ચ એવ વયાસી-તણ
સુબુદ્ધી અમચ્ચે જાવ તુસિણીણ સચ્ચિદ્ધ) હે સ્વામિન્ ! આપ જૈસા
કહતે હૈ યદ્ પરિવોદક વૈસા હી વર્ણ, રસ, ગધ, ઓર સ્પર્શ સે અમ

હર ખસીને ચાલવા લાગ્યા ચાલતા ચાલતા તેમણે પોતાની સાથેના રાજેશ્વર,
તલવર, માડમ્બિક, કૌટુમ્બિક, શ્રેષ્ઠી સેનાપતિ અને સાથવાહ વગેરેને કહ્યું કે
હે દેવાનુપ્રિયો ! જુઓ આ પરિવોદક-ખાઈ-વર્ણથી, ગધથી, રસથી, અને
સ્પર્શથી કેટલી બધી અમનોજ્ઞ-ખરાબ-લાગે છે મરેલા સાથ વગેરેના સડી
ગયેલા વિનષ્ટ વગેરે અવસ્થાપન્ન કલેવર (શરીર) ની જેવી ડુર્ગંધ હોય છે
તેના કરતા પણ વધારે ખરાબ ગધ આ પાણીમાથી આવી રહી છે રાખની આ
પ્રમાણે વાત સાંભળીને રાજેશ્વર વગેરે બધાઓએ આ પ્રમાણે કહ્યું -

(તહેવ, ણ સામી ! જ ણ તુઝમે એવ વચ્ચહ અહો ણ હમે ફરિહોદદ અમણુણે
વણેણ ૪ સે જહાનામણ અહિમહેહ વા જાવ અમણામતરાણ ચેવ, તણ સે જિય
સત્તુ સુબુદ્ધિ અમચ્ચ એવ વયાસી-તણ સુબુદ્ધી અમચ્ચે જાવ તુસિણીણ સચ્ચિદ્ધ)

હે સ્વામિન્ ! તમે કહો છો તેવી જ વચ્ચ, રસ, ગધ અને સ્પર્શથી
અમનોજ્ઞ આ ખાઈ છે મરીને સડી ગયેલા સાથ વગેરેના જેવી

अमनआमतरकमेवास्ति । तत खलु स जितशत्रु सुबुद्धिममात्यमेवमवादीत्-अहो !
खलु हे सुबुद्धे ! इद परिखोदकममनोज्ञ वर्णेन ४, कीदृशम् ? इत्याह- ' से जहा
नामए ' तद् यथा नामक=यथादृष्टान्त निरूप्यते-अहिमृतकमिति वा यावद् एत
स्मादपि=अहिमृतकादिभ्योऽपि अनिष्टतरम् अमनोज्ञतरम् अमनआमतरमेव वर्त्तते ।
ततः खलु सुबुद्धिरमात्यो यावत् तूष्णीक सतिष्ठते । तत खलु स जितशत्रू राजा
सुबुद्धिरमात्य द्वितीयमपि तृतीयमपि वारमेवमवादीत्-अहो ! खलु ' त चेव '
तदेव पूर्वदेव राजा वदति । ततः तदनन्तर खलु स सुबुद्धिरमात्यो जितशत्रुणा

नोज्ञ है । जैसे मरे हुए सर्पादिक के सड़े आदि अवस्थापन्न कलेवर से
दुर्गंध आती है उसी तरह की इस से भी अधिक अनिष्टतर असह्य
दुर्गंध इस से आ रही है । इस प्रकार अपनी बात का समर्थन प्राप्तकर
जितशत्रु राजा ने अपने सुबुद्धि अमात्य प्रधान से कहा- हे सुबुद्धे !
यह परिखोदक वर्ण, रस, गंध, और स्पर्श से बिलकुल अमनोज्ञ बन
रहा है । जिस प्रकार मरे हुए सर्प आदि के सड़े गले आदि अवस्था
पन्न कलेवर से अधिक अनिष्ट तर दुर्गंध निकलती है उससे भी अ
धिक अनिष्टतर दुर्गंध इससे निकल रही है । इस प्रकार अपने राजाकी
बात सुनकर सुबुद्धि अमात्य ने उसका आदर नहीं किया-उसे स्वीकार
नहीं किया केवल चुपचाप ही रहा । (तएण से जियसत्तूराया सुबुद्धि
अमच्च दोच्चपि तच्चपि एव वयासी-अहोण तचेव, तएण से सुबुद्धी
अमच्चे जियसत्तू रणा दोच्चपि तच्चपि एववुत्ते समाणे एव वयासी
नो खलु सामी । अम्ह एयसि फरिहोदगसि केड विम्हए, एव

अनिष्टतर, असह्य दुर्गंध आवे छे तेना करता पणु वधारे णगण आ
दुर्गंध छे आ रीते पोतानी बातनु समर्थन प्राप्त करीने जितशत्रु राजा
पोताना सुबुद्धि अमात्य प्रधानने कह्यु छे छे सुबुद्धे ! आ परिखोदक-वर्ण-
वसु, रस गंध अने स्पर्शमा अकटम अमनोज्ञ-अराण-थई गंध छे भरीने
सडी गयेला साप वगेरेना अवस्थापन्न कलेवरो-शरीरो-थी जेवी अनिष्टतर
दुर्गंध आवे छे तेना करता पणु वधु अनिष्टतर-अराण-दुर्गंध आ पाई
भावी आवी रही छे आ रीते राजानी बात साबणीने सुबुद्धि अमात्ये तेना आदर
करो नहि, तेना स्वीकार कर्यो नहि पणु थूपथाप थउने न आदतो रह्यो

(तएण से जियसत्तू राया सुबुद्धि अमच्च दोच्चपि तच्चपि एव वयासी
अहोण त चेव तएण से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तूणा रणा दोच्चपि तच्चपि एव
वत्ते समाणे एव वयासी नो खलु सामी । अम्ह एयसि फरिहोदगसि केड विम्हए,

કૌટુમ્બિક-શ્રેષ્ઠિ-સેનાપતિ સાર્વજાત્યાદીન એવમાદીત્-અહો ! રત્ન હે દેવાનુ-
પ્રિયા ! કીદૃશ્વ ઇદ પરિત્વોદકમમનોજ વર્ણેન ગન્ધેન રસેન સ્પર્શેન, તદ્ યથાના
મકમ્ । તથાહિ-અહિમૃતકમિતિ વા યાવદ્ ણતસ્પાદપિ અનિષ્ટતરઅમનોજતરમન-
આમતરકમેવાસ્તિ । તતઃ સ્વલુ તે વહગો રાજેશ્વરમમૃતયો યાવદેવમત્રાદિપુ-તથૈવ
સ્વલુ તત્ હે સ્વામિન્ ! યત્સ્વલુ ગ્રૂયમેવ વદથ-અહો ! સ્વલુ ઇદ પરિત્વોદકમમનોજ
વર્ણેન રસેન ગન્ધેન સ્પર્શેન, તદ્ યથા નામકમ્-તથાહિ-અહિમૃતકમિતિ વા યાવદ્

ચલને લગે । ચલતે ૨ ઉન્હોને અપને સાથ રહે નુણ રાજેશ્વર ૨, તલવર,
માહમ્બિક, કૌટુમ્બિક, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ, એવ સાર્વજાત આદિસે કહા હે
દેવાનુપ્રિયો ! દેવો-યદ પરિત્વોદક(ગાઈકા જલ)વર્ણસે ગધસે, રસસે એવ
સ્પર્શસે કિતના અત્રિકઅમનોજ યન રહા હૈ । જૈસે મરે હુણ સર્પ આદિકે
સહે વિનષ્ટ આદિ અવસ્થાપત્ર કલેવર કી દુર્ગંધ આતી હૈ-ઉસ સે બી
અધિક તર અનિષ્ટ દુર્ગંધ હસ જલ કી આ રહી હૈ । રાજા કી હસ
પ્રકાર વાત સુનકર ઉન રાજેશ્વર આદિ સમસ્ત જનો ને હસ પ્રકાર
કહા-(તહેવ ણ સામી ! જ ણ તુબમે એવ વયદ, અહો ણ હમે ફરિહો-
દણ, અમણુણે વણેણ ૪ સે જહા નામણ અહિમહેઈ વા જાવ અમણામ
તરાણ ચેવ, તણ સે જિયસત્તુ સુબુદ્ધિ અમચ્ચ એવ વયાસી-તણ
સુબુદ્ધી અમચ્ચે જાવ તુસિણીણ સચિદ્ધઈ) હે સ્વામિન્ ! આપ જૈસા
કહતે હૈ યદ પરિત્વોદક વૈસા હી વર્ણ, રસ, ગધ, ઓર સ્પર્શ સે અમ

હર ખસીને ચાલવા લાગ્યા ચાલતા ચાલતા તેમણે પોતાની સાથેના રાજેશ્વર,
તલવર, માહમ્બિક, કૌટુમ્બિક, શ્રેષ્ઠી સેનાપતિ અને સાથવાહ વગેરેને કહ્યું કે
હે દેવાનુપ્રિયો ! જુઓ આ પરિષોદક-ખાઈ-વર્ણથી, ગધથી, રસથી, અને
સ્પર્શથી ઠેટલી બધી અમનોજ-ખરાબ-લાગે છે મરીલા સાપ વગેરેના સડી
ગયેલા વિનષ્ટ વગેરે અવસ્થાપત્ર કલેવર (શરીર) ની જેવી દુર્ગંધ હોય છે
તેના કરતા પણ વધારે ખરાબ ગધ આ પાણીમાથી આવી રહી છે રાજાની આ
પ્રમાણે વાત સાંભળીને રાજેશ્વર વગેરે બધાઓએ આ પ્રમાણે કહ્યું—

(તહેવ, ણ સામી ! જ ણ તુબમે એવ વયદ અહો ણ હમે ફરિહોદણ અમણુણે
વણેણ ૪ સે જહાનામણ અહિમહેઈ વા જાવ અમણામતરાણ ચેવ, તણ સે જિય
સત્તુ સુબુદ્ધિ અમચ્ચ એવ વયાસી-તણ સુબુદ્ધી અમચ્ચે જાવ તુસિણીણ સચિદ્ધઈ)

હે સ્વામિન્ ! તમે કહો છો તેવી જ વસ્તુ, રસ, ગધ અને સ્પર્શથી
અમનોજ આ ખાઈ છે મરીને સડી ગયેલા સાપ વગેરેના જેવી

तत खलु जितशत्रु सुबुद्धिम् एवमवादीत्-मा सखु त्व हे देवानुप्रिय ! आत्मान= स्वक च परम्=अन्य च तदुभय=स्वपररूप समन्तमेव वा बह्वीभिश्च ' असम्भावु-
भावणार्हि ' असद्भावोद्भावनाभि असताम्=अविद्यमानाना भावाना=वस्तुधर्माणा
या उद्भावनाः=प्रतिपादनास्ताभि=वस्तुस्वरूपान्यथा प्रतिपादनरूपाभिः ' मिच्छ-
त्ताभिनिवेसेण य ' मिथ्यात्वाभिनिवेशेन=विपर्यासाप्रशेन च अज्ञानावेशेनेत्यर्थः
' बुग्गाहेमाणे ' व्युद्ग्राहयन्=विविधप्रकारेणोत्कृष्टतया चान्य ग्राहयन् ' बुप्पाए-
माणे' व्युत्पादयन्=व्युत्पत्तिजनयन् विहर=अशुद्धप्ररूपणा कुर्वन् मा तिष्ठेत्यर्थ ।

मन अपनी देशना द्वारा प्ररूपित किया है । (तएण जियसत्तू सुबुद्धिं
एव वयासी-माण तुम देवाणुप्पिया ! अप्पाण च पर च तदुभय वा
बह्वहिं य असम्भावुभावणार्हि मिच्छत्ताभिनिवेसेण य बुग्गाहेमाणे
बुप्पाहेमाणे विहराहि, तएण सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-अहो
ण जियसत्तू सते तच्चे तहिए अवितहे सम्भूण जिणपणत्ते भावे णो
उवलभति) इस प्रकार सुनकर जितशत्रु राजा ने सुबुद्धि प्रधान से
इस तरह कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम इस तरह की असद्भावोद्भावक
वचनों से-अविद्यमान वस्तु धर्मों की प्रतिपादनाओं से-वस्तु का जो
स्वरूप विद्यमान नहीं है-उस स्वरूप को उस वस्तु में विद्यमानता का
प्रतिपादन करने वाली वाणियों से एव मिथ्यात्वाभिनिवेश आग्रह से
इस तरह की प्ररूपणा मत करो, न स्वयं को इस प्रकार की प्ररूपणा
से वासित करो और न दूसरों को इस तरह की झूठी २ प्ररूपणाओं
से अपने फदे में फसाओ और न अपने को और न दूसरों को एक ही

(तएण जियसत्तू सुबुद्धिं एव वयासी-माण तुम देवाणुप्पिया ! अप्पाण
च पर च तदुभय वा बह्वहिं य असम्भावुभावणार्हि मिच्छत्ताभिनिवेसेण य
बुग्गाहेमाणे बुप्पाएमाणे विहराहि तएण सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए अहो
ण जियसत्तू सते तच्चे तहिए अवितहे सम्भूण जिणपणत्ते भावे णो उवलभति)

जितशत्रु राजाએ આ પ્રમાણે સાબળીને અમાત્ય સુબુદ્ધિને આ પ્રમાણે
કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ રીતે અસદ્ભાવના ભાવડ વચનોથી-અવિ
દ્યમાન વસ્તુધર્મોથી પ્રતિપાદનાઓથી વસ્તુનું જે સ્વરૂપ વસ્તુમાં હોય તે નથી
તે સ્વરૂપને વસ્તુમાં બતાવનારી વાણીઓથી અને મિથ્યાત્વાભિનિવેશના આશ્ર
હથી આ બંધનનું નિરૂપણ કરો નહિ આવી પ્રરૂપણથી પોતાની બંધનને બંધાવતા
રહો અને બીજાઓને પણ આવી જૂઠી પ્રરૂપણામાં ફસાવવાની ચેष्टા કરો નહિ,
તમે એકી માથે પોતાની બંધનને કે બીજા માણસને આવી પ્રરૂપણાની લપેટમાં
લેવાની ડોશિરા કરો નહિ ગાળની આ પ્રમાણે વાત સાબળીને સુબુદ્ધિ પ્રધા

રાજા દ્વિતીયમપિ તૃતીયમપિ ત્રારમ્ પરમુક્તઃ=સન એમવદત્-નો સ્વલ્પ હે સ્વામિન્ ! મમ એતસ્મિન્ પરિચ્છોદકે કોઽપિ વિસ્મય , કથમ્ ? इत्याह-एव स्वल्प हे स्वामिन् ! सुरमिश-दाः=शुभशब्दा अपि पुद्गला. शुभा अपि शब्दपुद्गला इत्यर्थः ' दुष्मिंसदत्ताए ' दुरमिशब्दतया=अशुभशब्दतया परिणमन्ति एव ' त चेव ' तदेव सर्वं रूपरसगन्धस्पर्शरस्यन्धिनः शुभाः अपि पुद्गला अशुभरूपादितया परिणमन्तीत्यर्थं यावत् प्रयोगविस्रसा परिणता जीवकृतमयोगेन स्वभावत एव वा परिवर्तनशीला. अपि च स्वल्प हे स्वामिन् ! पुद्गला प्रज्ञप्ताः भगवद्वि कथिता ।

સ્વલ્પ સામી ! સુખિ સદાચિ પોગલા દુષ્મિ સદત્તાણ પરિણમતિ, તચેવ જાવ પઓગવીસસા પરિણયાચિ ચ ણ સામી ! પોગલા પળણત્તા) અમાત્ય કો ચુપચાપ ઘઠા હુતા દેગ્ગકર જિતશત્રુ રાજા ને ઉસ અમાત્ય સુબુદ્ધિ સે દુધારા ઓર તિધારા મી પહિલે હી જૈસા કહા હસ તરહ દુધારા તિધારા જિતશત્રુ રાજા દ્વારા કહે ગયે ઉસ સુબુદ્ધિ અમાત્ય ને એસા કહા કિ સ્વામિન્ ! હમે હસ પરિચ્છા કે ઉદક મેં કોઈ આશ્ચર્ય નહી હો રહા હૈ કારણ કિ જો પુદ્ગલ પહિલે શુભ શબ્દ રૂપ સે પરિણમે હુણ હોતે હૈ વે હી કાલાન્તર મેં પ્રયોગ ઓર વિસ્રસા પરિણામ સે અશુભ શબ્દ રૂપ પરિણમ જાતે હૈ । હસ તરહ જૈસા ઉસને મનોજ્ઞ ચતુર્વિધ આહાર કે વિષય મેં પહિલે પ્રતિપાદન કિયા હૈ વૈસા હી યહાં પર મી ઉસને પ્રતિપાદિત કિયા । પુદ્ગલોં કા યહ હસ તરહ કો પરિણમન મેં અપની નિજ કલ્પના સે નહી કહ રહા હું પ્રત્યુત હસ મેં વીતરાગ પ્રભુ કી આજ્ઞા હૈ । ઉન્હો ને હમી તરહ કા પૌદ્ગલિક પરિણ

एव स्वल्प सामी ! सुखि सदाचि पोगला दुष्मिंसदत्ताए परिणमति त चेव जाव पओगवीससा परिणयाचि च ण सामी ! पोगला पण्णत्ता)

અમાત્ય સુબુદ્ધિને ચુપચાપ જોઈને રાજા જિતશત્રુએ બીજી અને ત્રીજી વાર પહેલાની જેમ જ હજી પૂછાએલા સુબુદ્ધિ અમાત્યે નાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામિન્ ! આ આઈના પાણીમા મને કંઈ નવાઈ જેવું લાગતું નથી કેમકે જે પુદ્ગલો પહેલા શુભ શબ્દ રૂપમા પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ કાલાન્તરમા પ્રયોગ અને વિસ્રસા (સ્વાભાવિક રીતના) પરિણામથી અશુદ્ધ શબ્દ રૂપમા પરિણત થઈ જાય છે આ રીતે અમાત્યે મનોજ્ઞ ચાર જાતના આહારો વિશે જે જાતના વિચારો રજૂ કર્યા હતા તે જ જાતના વિચારો આ અશુભ રૂપ આઈ જોઈને પણ પ્રકટ કર્યા અમાત્યે રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે પુદ્ગલોના આ રીતે પરિણમનની વાત મારી પોતાની કલ્પનાથી પણ વીતરાગ પ્રભુની જ એ આજ્ઞા છે તેઓશ્રીએ પૌદ્ગલિક પરિણમન આ રીતે જ પોતાની દેશના વડે નિર્ણયિત કર્યા છે

तत खलु जितशत्रु सुबुद्धिम् एवमवादीन्-मा खलु त्व हे देवानुप्रिय ! आत्मान=स्वरूपं च परम्=अन्यं च तदुभय=स्वपररूपं समक्रमेण सा बह्वीभिश्च ' असम्भावु-वभावणाहिं ' असद्भावोद्भावनाभिः, असताम्=अविद्यमानानां भावानां=वस्तुधर्माणां या उद्भावनाः=प्रतिपादनास्ताभिः=वस्तुस्वरूपान्यया प्रतिपादनरूपाभिः ' मिच्छ-त्ताभिनिवेशेण य ' मिथ्यात्वाभिनिवेशेन=विपर्यासायनेन च अज्ञानावेशेनेत्यर्थः ' बुग्गाहेमाणे ' व्युद्ग्राहयन्=विविधप्रकारेणोत्कृष्टतया चान्य ग्राहयन् ' बुष्पाए-माणे' व्युत्पादयन्=व्युत्पत्तिजनयन् विहर=अशुद्धप्ररूपणां कुर्यन् मा तिष्ठेत्यर्थः ।

मन अपनी देशना द्वारा प्ररूपित किया है । (तएण जियसत्तू सुबुद्धि एव वयासी-माण तुम देवाणुप्पिया ! अप्पाण च पर च तदुभय वा बह्वहिं य असम्भावुवभावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेशेण य बुग्गाहेमाणे बुष्पाहेमाणे विहराहिं, तएण सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-अहो ण जियसत्तू सते तच्चे तहिए अवितहे सम्भूए जिणपण्णत्ते भावे णो उवलमत्ति) इम प्रकार सुनकर जितशत्रु राजा ने सुबुद्धि प्रधान से इस तरह कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम इस तरह की असद्भावनोद्भावक वचनो से-अविद्यमान वस्तु धर्मों की प्रतिपादनाओं से-वस्तु का जो स्वरूप विद्यमान नहीं है-उस स्वरूप को उस वस्तु में विद्यमानता का प्रतिपादन करने वाली वाणियों से एव मिथ्यात्वाभिनिवेश आग्रह से इस तरह की प्ररूपणा मत करो, न स्वयं को इस प्रकार की प्ररूपणा से वासित करो और न दूसरों को इस तरह की झूठी २ प्ररूपणाओं से अपने फदे में फसाओ और न अपने को और न दूसरों को एक ही

(तएण जियसत्तू सुबुद्धि एव वयासी-माण तुम देवाणुप्पिया ! अप्पाण च पर च तदुभय वा बह्वहिं य असम्भावुवभावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेशेण य बुग्गाहेमाणे बुष्पाएमाणे विहराहिं तएण सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए अहो ण जियसत्तू सते तच्चे तहिए अवितहे सम्भूए जिणपण्णत्ते भावे णो उवलमत्ति)

जितशत्रु राजाએ આ પ્રમાણે સાભળીને અમાત્ય સુબુદ્ધિને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ રીતે અમદ્ભાવના ભાવડ વચનોથી-અવિ-ધમાન વસ્તુધર્મોથી પ્રતિપાદનાઓથી વસ્તુનું જે સ્વરૂપ વસ્તુમાં હોય તે સ્વરૂપને વસ્તુમાં બતાવનારી વાણીઓથી અને મિથ્યાત્વાભિનિવેશના આશ્ર-હયી આ જાતનું નિરૂપણ કરો નહિ આવી પ્રરૂપણાથી પોતાની જાતને બચાવતા રહો અને બીજાઓને પણ આવી જૂઠી પ્રરૂપણામાં ફસાવવાની ચેષ્ટા કરો નહિ, તમે એકી આથે પોતાની જાતને કે બીજા માણસને આની પ્રરૂપણાની લપેટમાં લેવાની ડોરિયા કરો નહિ રાજાની આ પ્રમાણે વાત સાભળીને સુબુદ્ધિ પ્રધા

તતઃ=તદનન્તર રાજા સદ્યાર્ત્તાલાપાનન્તર સ્વલ્પ સુમુદ્ધે =સુમુદ્ધિનામામાત્યસ્ય અ
 યમેતદ્ભૂવ=વક્ષ્યમાણપ્રકાર આધ્યાત્મિક, ચિન્તિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત, મનોગ
 તમકલ્પથ નાનારૂપો વિચારઃ સમુદ્પત્યત અહો ! =પ્રાશ્ચર્યમેતદ્ યત્સ્વલ્પ જિતશત્રુ
 રાજા 'સતે' સત = વિદ્યમાનાર્ 'તથે' તત્ત્વાનિ = તત્ત્વરૂપાન્ તત્ત્વ-
 વતો વા સ્વત્વપરત્વયુક્તાન્ 'તદ્વિષ્' તત્ત્વાન્ = સત્યાન્ યદ્વા—'તદ્વિષ્'
 તથા ચ-इति-त्राया, तथेति चिनोतीति, अव्ययमिदम्-मात्रयाऽप्यन्यूनाधिकान्
 'અવિતથે' અવિતથાન્ = અવિત્થમાનાસત્યાન્ 'સઙ્ભૂષ્' સદ્ભૂતાન્=મત્તાયુક્તાન્
 'જિણવણ્ણત્તે' જિનપ્રજ્ઞાન્ = જિનભાષિતાન્ ભાવાન્ 'નો ઉવમ્મટ' નોપ
 લભતે, તત્=તસ્માત્ વારણાત્ શ્રેય = સમીચીત સ્વલ્પ મમ યત્-જિતશત્રો
 રાજ સત્તા તત્ત્વાના તત્ત્વાનામ્ અવિતથાના સદ્ભૂતાના જિનપ્રજ્ઞાના ભાવનામ્
 'અભિગમણદ્વયાણ' અભિગમનાર્થતાયૈ=સમ્પગમરોધાય એતર્થમ્=પુદ્ગલાનામપરા-

સાથ ઇસ પ્રકાર કી પ્રરૂપણા કે જાલ મેં ન ઢાલો । રાજા કી ઇસ
 પ્રકાર વાણી સુનકર સુમુદ્ધિ પ્રધાન કે મન મેં એસા વિવિધ પ્રકાર કા
 વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ-યહાં વિચાર કે રૂન ઓર વિશેષણોં કા ગ્રહણ કર
 લેનાં ચાહિયે—“ચિન્તિત પ્રાર્થિત, કલ્પિત” । યહ બડે આશ્ચર્ય કી
 વાત હૈ જો જિતશત્રુ રાજા વિદ્યમાન, તત્ત્વરૂપ-અથવા વિવિધ પ્રકાર
 કી વિવક્ષા સે સ્વત્વ પરત્વ રૂપ સે યુક્ત, તથ્ય-સત્ય, ન ન્યૂન ઓર ન
 અધિક, અવિતથ, સત્તા યુક્ત એસે જિન પ્રજ્ઞસ, ભાવો કો નહીં સમજ
 રહા હૈ-અર્થાત્ જિતશત્રુ રાજા કે ધ્યાન મેં યહ વાત નહીં આ રહી હૈ
 કિ જિન પ્રજ્ઞસ (પ્રરૂપિત) ભાવ સત્ય હોતે હૈ, અવિતથ હોતે હૈં અન્યૂન
 અનતિરિક્ત હોતે હૈં, અનેક વિવક્ષાઓં કો લેકર ઊન મેં નાનો ધર્મ
 વિશિષ્ટતા હોતી હૈ-(ત) ઇસ લિયે (સેય સ્વલ્પ મમ, જિયસત્તુસ્સ રણ્ણો
 સતાણ તત્ત્વાણ તદ્વિયાણ અવિતથાણ સઙ્ભૂતાણ જિણવણ્ણસાણ ભાવા

નના મનમા અનેક વિચારો ઉદ્ભવ્યા અહીં વિચાર મળ્યા આ વિશેષણોનું
 ગ્રહણ પણ કરીલેવું જોઈએ કે “ચિન્તિત પ્રાર્થિત કલ્પિત” આ એકદમ નવાઈ
 જેવું લાગે છે કે જિતશત્રુ રાજા વિદ્યમાન તત્ત્વ રૂપ-અથવા તો વિવિધ પ્રકાર
 રની વિવક્ષાથી સ્વત્વ પરત્વ રૂપથી યુક્ત, તથ્ય-સત્ય, ઘણું ઓછું પણ નહિ
 અને ઘણું વધારે પણ નહિ, અવિતથ સત્તા યુક્ત એવા જિનપ્રજ્ઞસના ભાવોને સમજ
 રહ્યા નથી એટલે કે જિતશત્રુ રાજા આ વાતને સમજી શક્યા નથી કે જિન પ્રજ્ઞસ
 વડે નિરૂપિત થયેલા ભાવો સત્ય હોય છે, અવિતથ હોય છે, અન્યૂન અનતિરિક્ત
 હોય છે, અનેક વિવક્ષાઓને લઈને તેમનામાં નાના ધર્મ વિશિષ્ટતા હોય છે (ત) માટે

(સેય સ્વલ્પ મમ જિયસત્તુસ્સ રણ્ણો સતાણ તત્ત્વાણ) અવિતથાણ

परपरिणमनरूप भावम् 'उवाण्णावित्तए' उपादायितु=ग्राहयितु मम श्रेय, इति पूर्व्वेण सम्बन्धः । स सुबुद्धिरमात्यः एवम्=अनेन प्रकारेण सप्रेक्षते=विचारयति, सप्रेक्ष्य 'पञ्चतिण्हि' प्रत्यन्तिकैः=ममोपस्थै प्रतिक्षणनिदग्गवर्त्तिभिः पुरुषैः सार्द्धम् 'अतरावणाओ' अन्तरापणात्=हृदमार्गात् 'वाजार' इति भाषा प्रसिद्धान्, यद्वा-ग्रामान्तरावर्त्तिकुम्भकाग्दृष्टात् नवकान्=नूतनान् घटाश्च पृह्णाति, पृहीत्वा सन्ध्याकालसमये सूर्यास्तकाले 'पविरलमणुस्ससि' पविरलमनुष्ये प्रविरला=स्तोकाः मनुष्या यास्मिन् समये न पविरलमनुष्यस्तस्मिन्=सन्ध्याकाले हि मनुष्याणां गमनागमन स्वल्प भवति तादृशे ममय इत्यर्थः, पुन 'निसत्तपडिणिसत्तसि' निशान्त प्रतिनिशा ते=मनुष्यसत्तागभाद्रममये यौव परिखोदक तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तत् परिखोदक ग्राहयति, ग्राहयित्वा नवकेषु=नूतनेषु घटेषु 'गालावेड' गालयति, वस्त्रादिषु कालयति, गालयित्वा पुनरपरेषु नवकेषु घटेषु प्रक्षेपयति, प्रक्षेप्य तान् 'लडियमुण्हि' लडितमुद्रितान्-लडितान् लाक्षादिलेपयुक्तान्

ण अभिगमणद्वयाण एवमद्व उवाण्णावित्तए एव सपेहेड) मुझे यह उचित है कि मैं जितशत्रु राजा को मत्स्वरूप, भाव युक्त तत्पर्य्यरूप, अवितथ, और सद्भूतरूप ऐसे जिन प्रज्ञप्त भावों का अच्छी तरह बोध कराने के लिये और इस पुद्गलो के-अपरपर परिणमन रूप भाव को ये ऐसे ही हैं, इस तरह मनवाने के लिये उन्हें समझाऊँ । इस प्रकार उस ने विचार किया- (सपेहित्ता पञ्चतिण्हि पुरिसेहिं सद्धि अतरावणाओ नवण, पडण य गेण्हट, गेण्हित्ता सज्जाकालसमयसि पविरलमणुस्ससि निसत्तपडिणिमत्तसि जेणेव फरिहोदण तेणेव उवागच्छट, उवागच्छित्ता त फरिहोदग गेण्हावेड गेण्हावित्ता नवणसु घडणसु गाला

सद्भूताण जिणयणत्ताण भावाण अभिगमणद्वयाए एवमद्व उवाण्णावित्तए एव सपेहेड)

उवे भारे उत्तशत्रु राजाने मत् स्वरूप, आवयुक्त तत्पर्य्य रूप, अवितथ अने सद्भूत इव एवा एनप्रज्ञप्तना भावोने सारी पेठे नमन्तववा जेठे तेमन् पुद्गलोना अपरपर पण्णुमन इव आव विशेष पणु "तेओ तो ओवा न ठे" आ गते नमन्तववानी डेशिज करवी जेठे ओ अमाथे आ प्रभावे विचार उर्थे

(सपेहित्ता पञ्चतिण्हि पुरिसेहिं सद्धि अतरावणाओ नवण पडण य गेण्हट, गेण्हित्ता सन्ध्याकालसमयसि पविरल मणुस्ससि निसत्त पडिनिमत्तसि जेणेव फरिहोदण उपागच्छट, उपागच्छित्ता त फरिहोदग गेण्हावेड गेण्हावित्ता नवणसु घडणसु गालावेड. गालयित्वा नवणसु पडणसु परिखोदक, परिखोदक

મુદ્રિતાન્=મુદ્રાધક્ષિતાન્ કારયતિ, કારયિત્વા 'સત્તરત્તં' સપ્તરાત્ર=સપ્તરાત્રિન્દિવ
 પર્યન્ત પરિવસાવેદ્ ' પરિવાસયતિ=સ્થાપયતિ, તદ્વત્ 'દોચ્ચપિ' દ્વિતીયમપિ
 વારપુનરપરેષુ નવકેષુ ઘટેષુ ગાલયતિ, ગાલયિત્વા પુનરપરેષુ નવકેષુ ઘટેષુ
 પ્રક્ષેપયતિ, પ્રક્ષેપ્ય તેષુ ઘટેષુ 'સજ્જસ્વાર સર્વક્ષાર=' મજ્જીગાર 'ઇતિ પ્રસિદ્ધમ્,
 સઘો મસ્મ ગા પ્રક્ષેપયતિ, પ્રક્ષેપ્ય લાઙ્ઘિતમુદ્રિતાન્ કારયતિ, કારયિત્વા સપ્તરાત્ર
 યાવત્ પરિવાસયતિ, સ્થાપયતિ । અથ 'તચ્ચપિ' તૃતીયમપિ વાર પુનરપરેષુ નવકેષુ
 ઘટેષુ યાવત્ સપ્તરાત્રયતિ=મમ્યસ્મ્યાપયતિ । એવં સ્વલુ પત્તેન ઉપાયેન=અનેનૈવ
 ક્રમેણ અન્તરા=મધ્યેમધ્યે ગાલયન્, અન્તરા=મધ્યેમ યે પ્રક્ષેપયન્ અન્તરા ચ
 વિપરિવસાવેમાણે ' વિપરિવાસયન્ ૨ સપ્ત સપ્ત રાત્રિન્દિવાનિ=
 અહોરાત્રિણિ વિપરિવાસયતિ । તતઃ સ્વલુ તત્પરિગોદક 'સત્તમસત્તયમિ' સપ્તમ

વેદ્, ગાલાવિત્તા, લઙ્ઘિયમુદિતે કરાવેદ્, કરાવિત્તા સત્તરત્ત પરિવસાવેદ્,
 દોચ્ચપિ નવણ્ણુ ઘડણ્ણુ ગાલાવેદ્ ગાલાવિત્તા નવણ્ણુ ઘડણ્ણુ પક્કિલ
 વાવેદ્, પક્કિલવાવિત્તા લઙ્ઘિયમુદિતે કરાવેદ્, કરાવિત્તા સત્તરત્ત
 પરિવસાવેદ્ દોચ્ચપિ નવણ્ણુ ઘડણ્ણુ ગાલાવેદ્, ગાલાવિત્તા નવણ્ણુ
 ઘડણ્ણુ પક્કિલવાવેદ્) પ્રિચાર કરકે ફિર ઉત્તને અપને સમીપસ્થ રહે
 હુણ પુરુષો સે-સેવકો સે ઘાજાર સે અથવા ગ્રામાન્તરવર્તી કુભકાર કે
 હાટ સે નવીન ઘડોં કો મગવાયા । ઉન્હેં લેકર વહ સૂર્યાસ્ત કાલ કે
 સમય જલ્ કિ મનુજ્યોં કા આના જાના સ્વલ્પ હો ગયા ઓર ધીરે ૨
 વહ જલ્ બિલકુલ વદ હો ગયા જહા પરિલોદક થા વહા પહુંચા । વહાં
 પહુંચ કર ઉત્તને ઉન ઘડોં મેં પાની છાન કર ભરવાયા । ભરવા કર
 ફિર ઉસે ઓર દુસરે ઘડોં મેં ભરવાયા । ભરવા કર ફિર ઉન પર ઉત્તને
 લાક્ષાદિક કી મુહર લગવાઈ । લગવા કર ઉન્હેં સાત દિનરાત તક એક

લઙ્ઘિયમુદિતે, કરાવેદ્ કરાવિત્તા સત્તરત્ત પરિવસાવેદ્, દોચ્ચપિ નવણ્ણુ ઘડણ્ણુ
 પક્કિલવાવેદ્, પક્કિલવાવિત્તા લઙ્ઘિયમુદિતે કરાવેદ્, કરાવિત્તા સત્તરત્ત પરિવસાવેદ્,
 દોચ્ચપિ નવણ્ણુ ઘડણ્ણુ ગાલાવેદ્, ગાલાવિત્તા નવણ્ણુ ઘડણ્ણુ પક્કિલવાવેદ્)

વિચાર કરીને તેણે પોતાના સેવકો પાસેથી બળ્લર અથવા ગામના નજીક
 કુભારની હુકાનમાથી નવા માટલાઓ મંગાવડાવ્યાં । માટલાઓને લઈને તે
 બ્યારે સૂર્ય અસ્ત પામ્યો અને માણસોની અવરજવર એકદમ બંધ થઈ ગઈ
 ત્યારે તે ખાઈની પાસે પહોંચ્યો ત્યાં પહોંચીને તેણે માટલાઓના પાણી ગાળીને
 ભરાવ્યું । ભરાળીને તેણે બીજા ઘડાઓમા પણ પાણી ગાળીને ભરાવ્યું । પાણી
 ભરાવ્યા પછી તેણે માટલાઓને બરાબર બંધ કરાવડાવીને માત્ર દિવસ સુધી

सप्तके परिणम्यमानेसति एकोनपञ्चाशदहोरात्रेषु व्यतीतेषु मत्सु तत्परिखोद-
कम्-उदकरत्न जात चाप्यभयत् । कीदृश जातम् ? इत्याह-‘अच्छे’ अच्छ=स्वच्छ

जगह रखवा दिया । फिर दुबारा भी उसने और दूसरे नवीन घडों में पानी छान कर भरवाया । भरवा कर फिर उस जल को उसने और दूसरे घडो मे भरवाया । (पक्खिवावित्ता) भरवा कर (सज्जखार पक्खिवावेड लज्जिय मुद्धिते कारवेड) उन में उसने सज्जीखार डलवा दिया । डलवा कर उन पर लाक्षादिक के छेप की सुहर लगवा दी । (कारवित्ता सत्तरत्त परिवसावेड) लगवा कर उन्हें एक ओर रखवा दिया (तच्चपि नवएसु घडएसु जाव सवसावेड, एव ग्वलु एण उवाएण अतरा गलावेमाणे अतरा पक्खिवावेमाणे अतराय विपरिवसावेमाणे २ सत्त २ राई दिया विपरिवसावेड) तीसरी बार भी उसने उपर नवीन घडों में छानकर पानी भरवाया-भरवाकर पहिले की तरह ही उसने सब काम करवाया-फिर उन्हें अच्छी तरह एक ओर रखवा दिया । इस तरह के उपाय से उसने बीच २ मे उस जल को पुनः २ छानकर उनमें भरवाया और भरवा २ कर सात २ दिन तक उन घडों को एक २ ओर रखवा दिया । (तएण से फरिहोदण मत्तमसत्तयसि परिणम माणसि उदगरयणे जाये) इस प्रकार करते २ जब ४९ दिन समाप्त हो

એક જગ્યાએ માટલાઓને મૂકાવડાવ્યા બીજી વખત તેણે બીજા નવા ઘડાઓમાં પાણી ગાળીને ભરાવડાવ્યું ભરાવડાવીને તે પાણીને ગાળીને બીજા માટલાઓમાં ભરાવડાવ્યું (પક્ષિગાવિત્તા) ભરાવડાવીને

(સજ્જખાર પક્ષિગાવેડ લજ્જિયમુદ્ધિતે કારવેડ)

તેણે માટલાઓમાં માણખાત ન ખાવડાવ્યો માણ ખાર ન ખાવડાવીને તેણે માટલાઓને ધરાખત બધા ડરાવડાવી (કારવિત્તા સત્તરત્ત પરિવસાવેડ) સીલ ડરાવડાવીને માટલાઓને એકબીજા મૂકી દીધા

(તચ્ચપિ નવएसु घडएसु जाव सवसावेड, एव ग्वलु एण उवाएण अतरा पक्खिवावेमाणे अतराय विपरिवसावेमाणे २ सत्त २ राई दिया विपरिवसावेड)

ત્રીજી વખત પણ તેણે બીજા નવા માટલાઓમાં પાણી ભરાવડાવ્યું ભરાવીને પહેલાની જેમજ બધી વિધિ કરી અને માટલાઓને એક તરફ મૂકાવી દીધા આ પ્રમાણે કરતા તેણે વચ્ચે વચ્ચે કેટલીએ વખત વારવાર ગાળીને માટલાઓમાં પાણી ભરાવ્યું અને ત્યારપછી સાત દિવસ માટે માટલાઓને એક બીજા મૂકાવા દીધા

(तएण से फरिहोदण मत्तमसत्तयमि परिणममाणमि उदगरयणे जाये)

મુદ્રિતાન્=મુદ્રાઘઠિતાન્ કારયતિ, કારયિત્વા 'સત્તરત્ત' સપ્તરાત્ર=સપ્તરાત્રિન્દિવ
 પર્યન્ત પરિવસાવેહ' પરિવાસયતિ=સ્થાપયતિ, તદનુ 'દોચ્ચપિ' દ્વિતીયમપિ
 વારપુનરપરેષુ નવકેષુ ઘટેષુ ગાલયતિ, ગાલયિત્વા પુનરપરેષુ નવકેષુ ઘટેષુ
 પ્રક્ષેપયતિ, પ્રક્ષેપ્ય તેષુ ઘટેષુ 'સજ્જસ્વાર' મર્જક્ષાર='સજ્જીભાર' ઇતિ પ્રસિદ્ધમ્,
 સઘો ભસ્મ ગ્રા પ્રક્ષેપયતિ, પ્રક્ષેપ્ય લાઙ્ઘિતમુદ્રિતાન્ કારયતિ, કારયિત્વા સપ્તરાત્ર
 યાવત્ પરિવાસયતિ, સ્થાપયતિ । ણ્વ 'તચ્ચપિ' તતીયમપિ વાર પુનરપરેષુ નવકેષુ
 ઘટેષુ યાવત્ સગ્રામયતિ=સમ્યક્ સ્થાપયતિ । એવં સ્વલુ એતેન ઉપાયેન=અનેનૈવ
 ક્રમેણ અન્તરા=મધ્યેમધ્યે ગાલયન્, અન્તરા=મધ્યેમધ્યે પ્રક્ષેપયન્ અન્તરા ચ
 વિપરિવસાવેમાણે' વિપરિવાસયન્ ૨ સ્થાપયન્ ૨ સપ્ત સપ્ત રાત્રિન્દિવાનિ=
 અહોરાત્રિણિ વિપરિવાસયતિ । તતઃ સ્વલુ તત્પરિગ્વોદક 'સત્તમસત્તયમિ' સપ્તમ

વેહ, ગલાવિત્તા, લઙ્ઘિયમુદિતે કરાવેહ, કરાવિત્તા સત્તરત્ત પરિવસાવેહ,
 દોચ્ચપિ નવણ્ણુ ઘડણ્ણુ ગાલાવેહ ગાલાવિત્તા નવણ્ણુ ઘડણ્ણુ પક્કિલ
 વાવેહ, પક્કિલવાવિત્તા લઙ્ઘિયમુદિતે કરાવેહ, કરાવિત્તા સત્તરત્ત
 પરિવસાવેહ દોચ્ચપિ નવણ્ણુ ઘડણ્ણુ ગાલાવેહ, ગાલાવિત્તા નવણ્ણુ
 ઘડણ્ણુ પક્કિલવાવેહ) વિચાર કરકે ફિર ઉસને અપને સમીપસ્થ રહે
 હુણ પુરુષો સે-સેવકો સે ઘાજાર સે અથવા ગ્રામાત્તરવર્તી કુભકાર કે
 હાટ સે નવીન ઘડોં કો મગવાયા । ઉન્હેં લેકર વહ સૂર્યાસ્ત કાલ કે
 સમય જબ કિ મનુષ્યોં કા આના જાના સ્વલ્પ હો ગયાં ઓર ધીરે ૨
 વહ જબ બિલકુલ બદ હો ગયા જહા પરિલોદક થા વહાં પહુંચા । વહાં
 પહુંચ કર ઉસને ઉન ઘડોં મેં પાની છાન કર ભરવાયા । ભરવા કર
 ફિર ઉસે ઓર દુસરે ઘડોં મેં ભરવાયા । ભરવા કર ફિર ઉન પર ઉસને
 લાક્ષાદિક કો મુહર લગવાઈ । લગવા કર ઉન્હેં સાત દિનરાત તક એક

લઙ્ઘિયમુદિતે, કરાવેહ કરાવિત્તા સત્તરત્ત પરિવસાવેહ, દોચ્ચપિ નવણ્ણુ ઘડણ્ણુ
 પક્કિલવાવેહ, પક્કિલવાવિત્તા લઙ્ઘિયમુદિતે કરાવેહ, કરાવિત્તા સત્તરત્ત પરિવસાવેહ,
 દોચ્ચપિ નવણ્ણુ ઘડણ્ણુ ગાલાવેહ, ગાલાવિત્તા નવણ્ણુ ઘડણ્ણુ પક્કિલવાવેહ)

વિચાર ડીને તેણે પોતાના સેવકો પાસેથી બળ્તર અથવા ગામના નજીક
 કુભારની ડુકાનમાથી નવા માટલાઓ મગાવડાવ્યા માટલાઓને લઈને તે
 બ્યારે સૂર્ય અસ્ત પામ્યો અને માણસોની અવરજવર એકદમ બંધ થઈ ગઈ
 ત્યારે તે ખાઈની પાસે પહોંચ્યો ત્યાં પહોંચીને તેણે માટલાઓના પાછી ગાળીને
 ભરાવ્યું ભરાવીને તેણે બીજા ઘડાઓમા પણ પાછી ગાળીને ભરાવ્યું પાછી
 ભરાવ્યા પછી તેણે માટલાઓને બરાબર બંધ કરાવવાનીને માત્ર દિવસ સુધી

प्रहादनीय ज्ञात्वा हृष्ट-तुष्टः बहुभिः ' उदगमभारणिज्जेहि ' उदकसभारणीयै =
जलसुगन्धकरणयोग्यै. केतकीपाटलादिद्रव्यैः ' सभारेइ ' सभारयति = सस्कार-
यति सभारयित्वा जितशत्रो राज्ञः ' पाणियवरिय ' पानीयहारक यस्य हस्ताद्वारा
पानीय पिबति त शब्दयति, शब्दयित्वा एवमादीत्-त्वं च खलु हे देवानुप्रिय !
उदमुदकरत्न गृहाण, गृहीत्वा जितशत्रो राज्ञो भोजनवेलायाम् उपनय । ततः
खलु पानीयहारक. सुबुद्धिरस्य = सुबुद्धिनामकामात्यस्य एतमर्थ=राज. पानीय

उदगमभारणिज्जेहि सभारेइ सभारित्ता जियसत्तूस्स रण्णो पाणिय
वरिय सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी—तुमच ण देवाणुप्पिया इम
उदरगयण गेण्हाहि २ जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेज्जासि)
इसके बाद वह सुबुद्धि अमात्य जहाँ वह उदक रत्न था वहाँ गया ।
वहाँ जाकर उसने उस उदकरत्न को हाथ में लेकर चखा । चख कर
जब उसे यह बात हो चुका कि यह उदक रत्न वर्णादि से युक्त यावत्
सर्वेन्द्रिय गात्र प्रहादनीय बन गया है तो वह बहुत ही आनन्दित
एव सतुष्ट हुआ बाद में उसने उस जल को सुगन्धित करने वाले
केतकी पाटल (गुलाब) आदि द्रव्य से सस्कारित किया—सस्कारित
करके फिर उसने जितशत्रु राजा का जो पानी पिलाने वाला भृत्य था
उसे बुलाया बुलाकर उससे ऐसा कहा—हे देवानुप्रिय ! तुम इस उदक
रत्न को लो-और लेकर जब जितशत्रु राजा के भोजन करने का समय
होवे तब इसे उनके पाम ले जाना । (तएण से पणियवरिय सुबुद्धिय-
सभारेइ सभारित्ता जियसत्तूस्स रण्णो पाणियवरिय सदावेइ, सदावित्ता एव
वयासी—तुम च ण देवाणुप्पिया इम उदरगयण गेण्हाहि २ जियसत्तूस्स रण्णो
भोयणवेलाए उवणेज्जासि)

त्यारपणी अमात्य सुबुद्धि तथा उदकरत्न (पाणी) હતુ ત્યા ગયો
ત્યા બંધને તેણે ઉદકરત્ન (પાણી) ને હથેળી ઉપર લઈને ચાખ્યું ચાખ્યા બાદ
તેને એમ લાગ્યું કે ખરેખર આ ઉદકરત્ન (પાણી) વર્ણ વગેરે ગુણોથી યુક્ત
યાવત્ બધી ઈન્દ્રિયો અને શરીરને આનંદ પમાડે તેવું થઈ ગયું છે ત્યારે
તે ખબર જ પ્રમદ અને સતુષ્ટ થયો ત્યાર પછી તેણે પાણીને સુવાસિત કર
નારા કેતકી પાટલ (ગુલાબ) વગેરે દ્રવ્યોથી પાણીને સસ્કારિત કર્યું પાણીને
સસ્કારિત કર્યા બાદ અમાત્યે જિતશત્રુ રાજાને પાણી પીવડાવનાર નોકરને
બોલાવે અને બોલાવીને તેને મહુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! રાજાને જમવાનો
વખત થાય ત્યારે તું આ ઉદકરત્ન (પાણી) તેમની પામે લઈ જાણે

(તएण से पणियवरिय सुबुद्धियस्स एयमद्व पडिमुणेइ, पडिमुणित्ता त

निर्मलत्वात्, 'पत्ये' पत्यम्=आरोग्यजनकत्वात्, 'जच्चे' जात्यम्=उत्तमगुण-
 रत्त्वात्, 'तणुण' तनुक=भारेण शृणुक पाचयन्त्यात्, 'फलिहरणाभे' स्फटिक-
 वर्णाभ=स्फटिकमणिवर्णतुल्य वर्णन-उपपेयम् ५ = प्रशस्तवर्णगन्धरसस्पर्शयुक्तम्
 'आसायणिज्जे' आसादनीयम्=आम्बादयोग्य यावत् सर्वेन्द्रिय गात्रप्रह्लादनीय
 जातम् । ततः खलु सुबुद्धिरभात्यो यत्र तद् उदकरत्न तत्रोपागच्छति, उपा-
 गत्य करतले=हस्ततले गृहीत्वा तद् 'जागाण्ड' आम्बादयति आम्बाय तद्
 उदकरत्न वर्णेनोपपेतम् ४ वर्णादुपपेतम् - आम्बादनीय यावत् सर्वेन्द्रियगात्र
 चुके तत्र वह परिग्रोदक उदकरत्न श्रेष्ठजल रूपे परिणमित हो गया ।
 (अच्छे पत्ये जच्चे तणुण फलिहरणाभे वर्णेण उववेय ४ आसायणिज्जे
 जाव सर्व्विदियगाय पलहायणिज्जे) वर उदकरत्न निर्मल होने से त्रिल
 कुल स्वच्छ हो गया आरोग्य जनक होने से पत्य रूप बन गया उत्तम
 गुणवाला होने से श्रेष्ठ दिग्बनेलगा शीघ्र पचने के योग्य हो जाने के
 कारण भार में वह बहुत हलका हो गया, और स्फटिकमणि के वर्ण
 समान वर्ण से युक्त हो गया । इसके वर्ण, गंध, रस और स्पर्श सब
 प्रशस्त-श्रेष्ठ बन गये । यह आम्बादनीय हो गया यावत् समस्त इन्द्रि-
 यों को एव शरीर को तृप्ति करने वाला बन गया । (तणुण सुबुद्धी
 अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता करय
 लसि आसादेइ, आसादितात उदगरयण वर्णेण उववेय ४ आसाय
 णिज्जे जाव सर्व्विदियगाय पलहायणिज्ज जाणित्ता हइ तुट्टे बहूहि

आ रीते ल्यारे ४६ द्विसो पुरा तथा त्यारे ते आधनु उदरत्न (पाणु)

उत्तम पाणुना इपमा परिणुत थर्ध गयु

(अच्छे पत्ये जच्चे तणुण फलिहरणाभे वर्णेण उववेय ४ आसायणिज्जे जाव
 सर्व्विदियगाय पलहायणिज्जे)

ते उदकरत्न (पाणु) निर्माण होवा बहुत श्रेष्ठम स्वच्छ थर्ध गयु इतु
 आरोग्यजनक होवाथी पत्य इप थर्ध गयु इतु, उत्तम शुद्ध-स पन्न होवाथी
 श्रेष्ठ देखातु इतु, शीघ्र पायन थाय तेवु होवाथी वज्रमा ते भूषण इलड
 थर्ध गयु इतु पाणुना वर्णु गध, रस अने स्पर्श आ अधा शुद्ध प्रशस्त
 श्रेष्ठ इपमा परिणुत थर्ध गया इता ते आस्वादनीय थर्ध गयु इतु यावत्
 अधी इन्द्रियोने तेमण शरीर तृप्त करनार अनी गयु इतु

(तणुण सुबुद्धी अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता
 करयलसि आसादेइ, आसादिता त उदगरयण वर्णेण उववेय ४ आसायणिज्जे
 जाव सर्व्विदियगाय पलहायणिज्ज जाणित्ता हइतुट्टे बहूहि उदगसमारणिज्जेहि

ભૂત. = પરમપવિત્ર સ રાજા તસ્મિન્ ઉદકરત્નજાતપિમ્મયઃ = સજાતજલસ્વાદકૌતુકઃ તાન્ ગ્રહન્ રાજેશ્વર યાવત્-રાજેશ્વર-તલવર - માહમ્મિકકૌટુમ્બિકેભ્ય-શ્રેષ્ઠિ સેનાપતિસાર્થવાહપ્રભૃતીન્ એવમવદત્-અહો ! આશ્ચર્યમેતત્ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! ઉદમુદકરત્નમ્ અચ્છ યાવત્-સર્વેન્દ્રિયગાત્રપ્રહ્લાદનીયમસ્તિ । તત, સ્વલુ વહ્નો રાજેશ્વર યાવત્સાર્થવહ-પ્રભૃતય એવમવાદિપુઃ-તથૈવ સ્વલુ હે સ્વામિન્ ! યત્ સ્વલુ યૂય વદથ યાવદ્ એવમેવ સર્વેન્દ્રિયગાત્રપ્રહ્લાદનીય વર્તતે । તત. સ્વલુ જિતશત્રુ

લિયે યે । હસ પરમ શુચિભૂત વનકર અપની ચૈઠક પર વૈઠે હુણે ઉન જિતશત્રુ રાજા કો ઉમ ઉદકરત્ન કે આસ્વાદન મે વડા હી આશ્ચર્ય હો રહા થા । ઉસી આશ્ચર્ય મે હૂવે હુણે ઉન રાજા ને અપને પાસ વૈઠે હુણે રાજેશ્વર તલવર, માહમ્મિક, કૌટુમ્બિક, ઇમ્બ, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ ઓર સાર્યવાહક આદિ જનો સે હસ પ્રકાર કા (અહોણ દેવાણુપ્પિયા ! હમે ઉદગરયણે અચ્છે જાવ સર્વિન્દ્રિયગાય પલ્હાયણિજ્જે તણેણ ગ્રહવે રાઈસર જાવ એવ વયાસી-તહેવ ણ સામી ! જણેણ તુઠ્ઠમે વદહ જાવ એવ ચેવ પલ્હાયણિજ્જે તણેણ જિયસત્તૂરાયા પાણિયધરિય સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી-એમણ તુઠ્ઠમે દેવાણુપ્પિયા ! ઉદગરયણે કઝો આસાઙે ?) દેવાનુપ્રિયો ! દેલ્હો યહ ઉદકરત્ન (શ્રેષ્ઠ જલ) કિતના અચ્છા નિર્મલ યાવત્ સમસ્ત ઇન્દ્રિયો એવ શરીર કો આનન્દ દેનેવાલા હૈ । હસ પ્રકાર રાજા કા કથન સુનકર ઉન રાજેશ્વર આદિ સમસ્ત જનોં ને ઉસ રાજા સે એસા કહા-સ્વામિન્ આપ જૈસા કહતે હૈ, યહ જલ

દીધા હતા આ પ્રમાણે એકદમ પવિત્ર થઇને પોતાની બેઠકમા બેઠેલા રાજા ઉત્તરશત્રુને જમતી વખતે પીધેલા ઉદકરત્નના આસ્વાદન વિશે ખૂબ જ નવાઈ બેસુ લાગતુ હતુ ઉદકરત્ન (પાણી) વિશેના નવાઈના વિચારો કરતા રાજાએ પોતાની પાસે બેઠેલા રાજેશ્વર, તલવર, માહલિક, કૌટુમ્બિક, ઇમ્બ, શ્રેષ્ઠી, સેના પતિ અને સાર્યવાહ વગેરે જનોને આ પ્રમાણે કહ્યું

(અહોણ દેવાણુપ્પિયા ! હમે ઉદગરયણ અચ્છે જાવ સર્વિન્દ્રિયગાય પલ્હાયણિજ્જે તણેણ ગ્રહવે રાઈસર જાવ એવ વયાસી તહેવ ણ સામી ! જણેણ તુઠ્ઠમે વદહ જાવ એવ ચેવ પલ્હાયણિજ્જે તણેણ જિયસત્તૂ રાયા પાણિયધરિય સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી એમણ તુઠ્ઠમે દેવાણુપ્પિયા ! ઉદગરયણે કઝો આસાઙે)

હે દેવાનુપ્રિયો ! જમતી વખતે પીધેલુ ઉદકરત્ન (પાણી) કેટલુ બધુ નિર્મળ અને બધી ઇન્દ્રિયો તેમજ શરીરને આનન્દ પમાડનાર છે આ રીતે રાજાની વાત સાંભળીને રાજેશ્વર વગેરે બધા ઉપસ્થિત લોકોએ ગમ્મને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-હે સ્વામિન્ ! તમારી વાત એકદમ યથાર્થ છે પાણી ખરેખર

પાનરૂપ ભાવ પ્રતિશ્રુતિ=સ્વીકરોતિ, પ્રતિશ્રુત્ય તદુદકરત્ન ગૃહ્ણા ૧, ગૃહીત્વા
જિતશત્રોઃ રાજો ભોજનવેલાયામ્ ઉપસ્થાપયતિ । સતઃ ચત્તુ સ જિતશ રાજા તદ્
વિપુલમ્ અશનપાન-સ્વાધ-સ્વપ્નામ્-આસ્વાદયન્ યાવદ્ વિહરતિ । ‘ જિમિયમ્બુત્તુ
ત્તરાગણ વિ ’ જિમિતમ્બુત્તોત્તરાગતોઽપિ ચ ચત્તુ-જિમિતમ્=આસ્વાદિત શુક્તમ્
ઉદરપૂરણપૂર્વકમ્, તદુત્તરમ્ આગત=સ્વોપવેશનસ્થાને પ્રાપ્ત., કીંશ સન્ ?
इत्याह-यावत्-आचान्तः=कृतचुलुक, अतएव चोक्षः=निलेप. गच्छ परमशुचि

સસ એમમદ્ પડિસુણેઢ, પડિસુણિત્તા ત ઉદગરયણ ગિળ્હાઢ, ગિળ્હિત્તા
જિનસત્ત્સ રણ્ણો ભોયણવેલાણ ઉવટ્ટવેઢ તણ્ણ સે જિયસત્ત્ ગયા ત
વિપુલ અસણ ૪ આસાણમાણે જાવ વિહરઢ) હસ પ્રકાર ઉમ પાનીય
હારક ને સુબુદ્ધિ અમાત્ય કી હસ વાતકો માન લિયો ઔર માનકર ઉસ
ઉદકરત્ન કો-એઠ નિર્મલજલ કો-લે લિયો-લેકર ઉસને ઉસે જિતશત્રુ
રાજા કે ભોજન કરને કે સમય ઉપસ્થાપિત કર દિયા-તાકિ વે હમ
જલ કો પીવે । હસકે વાદ જિતશત્રુ રાજો વા જવ ભોજન કરને વા
સમય આયા તવ ઉસને અશનાદિ રૂપ ૪ વારો પ્રકાર વા આહાર સ્વૂઘ
હચ્છાનુસાર કિયા ઔર ઉસ ઉદકરત્ન કો પિયા । (જિમિય મ્બુત્તુત્તરા
ગણ યાવિયણ જાવ પરમસુહમ્બૂણ તસિ ઉદગરયણે જાવ વિમ્હણ તે વહવે
રાઈસર જાવ એવ વયાસી) જવ જિતશત્રુ રાજા અચ્છી તરહ સ્વા પી
ચુકે તવ વે અપને ઉપવેશન કે સ્થાન મેં બેઠક મે-આયે । બેઠક મેં આને
કે પહિલે ઉન્હોને કુલ્હા આદિ કરકે અપને મુખ કો અચ્છી તરહ ધો
લિયા થા ઔર હાવ વગૈરહ મી અચ્છી તરહ પ્રક્ષાલિત કર (ધોકર)

ઉદગરયણ ગિળ્હાઢ ગિળ્હિત્તા, જિયસત્ત્સ રણ્ણો ભોયણવેલાણ ઉવટ્ટવેઢ, તણ્ણ સે
જિયસત્ત્ રાયા ત વિપુલ અસણ ૪ આસાણમાણે જાવ વિહરઢ)

આ રીતે પાણીવાળા નોકરે સુબુદ્ધિ અમાત્યની વાત સ્વીકારી લીધી અને
સ્વીકારીને તે ઉદકરત્નને-એઠ નિર્મળ પાણીને-ત્યાથી લઈને જમવાની વખતે
જીતશત્રુ રાજાની સામે તેમને પીવા માટે પડોઆડી દીધુ ત્યાર પછી જ્યારે
જીતશત્રુ રાજાનો જમવાનો વખત થયો ત્યારે રાજા અશન વગેરે રૂપ ચાર જાતના
આહારે ખૂબ તૃપ્ત થઈને ઇચ્છા સુજળ જમ્યા અને તે ઉદકરત્ન (પાણી) ને પીધુ

(જિમિયમ્બુત્તુત્તરાગણ યાવિય ણ જાવ પરમસુહમ્બૂણ તસિ ઉદગરયણે જાવ
વિમ્હણ તે વહવે રાઈસર જાવ એવ વયાસી)

રાજા જીતશત્રુએ આમ સારી રીતે જમવાનું પતાવી દીધું ત્યારે તેઓ
ત્યાથી પોતાના ઉપવેશનના સ્થાનમાં એટલે કે બેઠકમાં આવ્યા બેઠકના આવતા
પહેલાં તેઓએ ઠાગળા વગેરે કરીને મો અને હાથોને ધોઈને બનાવી

ભૂત. = પરમપવિત્ર સ રાજા તસ્મિન્ ઉદ્ધરત્નજાતવિમ્મયઃ = સજાતજલસ્વાદકો
તુકઃ તાન્ પહૂન્ રાજેશ્વર યાત્-રાજેશ્વર-તલવર - માડમ્બિકકૌટુમ્બિકેમ્બ-
શ્રેષ્ઠિ સેનાપતિસાર્યવાહપ્રભૃતીન્ એવમવદત્-અહો ! આશ્ચર્યમેતત્ સ્વહુ હે દેવાનુ-
પ્રિયાઃ ! હ્રદમુદ્ધરત્નમ્ અન્ન યાવત્-સર્વેન્દ્રિયગાત્રપ્રહ્લાદનીયમસ્તિ । તત, સ્વહુ
વહ્વો રાજેશ્વર યાવત્સાર્યવાહ-પ્રભૃતય એવમવાદિપુઃ-તથૈવ સ્વહુ હે સ્વામિન્ ! યત્
સ્વહુ યૂય વદથ યાવદ્ એવમેવ સર્વેન્દ્રિયગાત્રપ્રહ્લાદનીય વર્તતે । તત, સ્વહુ જિતશત્રુ

લિયે યે । હમ્ પરમ શુચિભૂત વનકર અપની વૈઠક પર વૈઠે હુગ્ગ ડન
જિતશત્રુ રાજા કો ડમ્ ઉદ્ધરત્ન કે આસ્વાદન મે પહા હી આશ્ચર્ય હો
રહા થા । ડસી આશ્ચર્ય મે હૂવે હુગ્ગ ડન રાજા ને અપને પાસ વૈઠે હુગ્ગ
રાજેશ્વર તલવર, માડમ્બિક, કૌટુમ્બિક, હમ્બ, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ ઓર
સાર્યવાહક આદિ જનો સે હસ પ્રકાર કા (અહોણ દેવાણુપ્પિયા ! હમે
ઉદગરયણે અન્ને જાવ સર્વિન્દિયગાય પલ્હાયણિજ્જે તણ્ણ વહ્વે રાઈસર
જાવ એવ વયાસી-તહેવ ણ સામી ! જણ્ણ તુમ્હે વદહ જાવ એવ ચેવ
પલ્હાયણિજ્જે તણ્ણ જિયસત્તૂરાયા પાણિયધરિય સદાવેડ, સદાવિત્તા
એવ વયાસી-એમણ તુમ્હે દેવાણુપ્પિયા ! ઉદગરયણે કઓ આસાહ્ણ ?)
દેવાણુપ્પિયો ! દેસો યહ ઉદ્ધરત્ન (શ્રેષ્ઠ જલ) કિતના અન્ના નિર્મલ
યાવત્ સમસ્ત હન્દ્રિયો એવ શરીર કો આનન્દ દેનેવાલા હૈ । હસ
પ્રકાર રાજા કા કથન સુનકર ડન રાજેશ્વર આદિ સમસ્ત જનોં ને
ડસ રાજા સે એસા કહા-સ્વામિન્ આપ જૈસા કરતે હૈ, યહ જલ

હીધા હતા આ પ્રમાણે એકદમ પવિત્ર થઇને પોતાની બેઠકમા બેઠેલા રાજા
જિતશત્રુને જમતી વખતે પીધેલા ઉદ્ધરત્નના આસ્વાદન વિશે ખૂબ જ નવાઈ
બેધુ લાગતુ હતુ ઉદ્ધરત્ન (પાણી) વિશેના નવાઈના વિચારો કરતા રાજાએ
પોતાની પાસે બેઠેલા રાજેશ્વર, તલવર, માડલિક, કૌટુમ્બિક, હમ્બ, શ્રેષ્ઠી, સેના
પતિ અને સાર્યવાહ વગેરે જનોને આ પ્રમાણે કહ્યુ

(અહોણ દેવાણુપ્પિયા ! હમે ઉદગરયણ અન્ને જાવ સર્વિન્દિયગાય પલ્હા-
ણિજ્જે તણ્ણ વહ્વે રાઈસર જાવ એવ વયાસી તહેવ ણ સામી ! જણ્ણ તુમ્હે વદહ
જાવ એવ ચેવ પલ્હાયણિજ્જે તણ્ણ જિયસત્તૂ રાયા પાણિયધરિય સદાવેડ, સદાવિત્તા
એવ વયાસી એમણ તુમ્હે દેવાણુપ્પિયા ! ઉદગરયણે કઓ આસાહ્ણ)

હે દેવાણુપ્પિયો ! જમતી વખતે પીધેલુ ઉદ્ધરત્ન (પાણી) કેટલુ બધુ
નિર્મળ અને બધી હન્દ્રિયો તેમજ શરીરને આનન્દ પમાડનાર છે આ રીતે
રાજાની વાત સાંભળીને રાજેશ્વર વગેરે બધા ઉપસ્થિત લોકોએ રાજાને આ
પ્રમાણે કહ્યુ કે-હે સ્વામિન્ ! તમારી વાત એકદમ યથાર્થ છે પાણી ખરેખર

રાજા પાનીયહારક શબ્દયતિ, શ-દયિત્વા એમયદત્-અતન્ ચલુ ન્વ હે દેવાનુપ્રિય !
 ઉદકરત્ન પ્રમાણમુદક કુતઃ કરમાન્સ્થાનાત્ ' આમાઙ્ ' આમાદિત્=પ્રાપ્ત્મ્ ? ।
 તતઃ ચલુ મ પાનીયહારક' જિતશત્રુમેતાપાદીન્-અતન્ ચલુ હે રામિન્ ! મયા
 ઉદકરત્ન સુબુદ્ધેરન્તિમાદાસાદિત્મ્ । તતઃ ચલુ જિતશત્રુ સુબુદ્ધિરમાત્ય ગચ્ચયતિ,
 શબ્દયિત્વા એમયદત્-અગ્ને ! ચલુ હે સુબુદ્ધે ! કેન કારણેનાદ તવાનિષ્ટ'

વૈના હો છે-ચટ્ટન અધિક સ્વચ્છ એવ સમસ્ત ઇન્દ્રિયોં નો, શરીર
 કો આનન્દ દાયક છે હમકે યાદ જિતશત્રુ રાજાને પાનીયહારકકો
 બુલાયા ઓરબુલાકર ઉમસે જેના કહા-હે દેવાનુ પ્રિય ! યદ ઉદક રત્ન
 (શ્રેષ્ઠ જલ)- તુમને કહા સે પ્રાપ્ત કિયા છે । (તત્ત્વેણ સે પાણિયધરણ
 જિયમત્તૂ એવ વયાસી-અસણ સામી ! મમ ઉદગરયણે સુબુદ્ધિસ્સ
 અતિયાઓ આમાઙ્ તત્ત્વેણ જિયમત્તૂ સુબુદ્ધિ અમચ્ચ સદાવેદ સદા
 વિત્તા એવ વયાસી, અહોણ સુબુદ્ધી ! કેણ કારણેણ અહ તવ અણિદ્ધે
 પજેણ તુમ મમ ફલ્લાકરિલ્લ ભોયણવેલાણ્ણ હમ ઉદગરયણ ન ઉવટ્ઠવેસિ
 ? ત એસણ તુમે દેવાણુપ્પિયા ! ઉદગરયણે કઓ ઉવલલ્લદ્ધે ?) રાજાકી
 હમ વાન કો સુનકર ઉસ પાનીયહારક ને ઉનસે કહા-હે સ્વામિન્ !
 મૈને યદ ઉદક રત્ન સુબુદ્ધિ પ્રધાન કો પાસ સે પાંચા છે । હસકે યાદ
 જિતશત્રુ રાજા ને સુબુદ્ધિ પ્રધાન કો બુલાયા-બુલાકર ઉસસે હસ પ્રકાર
 કહા-હે સુબુદ્ધે ! મૈ કિસ કારણ સે તુમ્હારે લિયે અનિષ્ટ, અકાન્ત,

તેવુ જ હતુ તે બહુ જ નિર્મળ અને બધી ઇન્દ્રિયોને તથા શરીરને આનન્દ
 આપનાર હતુ ત્યારપછી જીતશત્રુ રાજાએ પાણીવાળાને બોલાવ્યો અને બોલા
 વીને તેને કહ્યું-કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ ઉદકરત્ન (શ્રેષ્ઠ પાણી) તમે
 કયાથી મેળવ્યું છે ?

(તત્ત્વેણ સે પાણિયધરણ જિયમત્તૂ એવ સુબુદ્ધિસ્સ અતિયાઓ અસાઙ્ તત્ત્વેણ
 જિયમત્તૂ સુબુદ્ધિ અમચ્ચ સદાવેદ, સદાવિત્તા એવ વયાસી, અહોણ સુબુદ્ધી ! કેણ
 કારણેણ અહ તવ અણિદ્ધે પજેણ તુમ મમ ફલ્લાકરિલ્લ ભોયણવેલાણ્ણ હમ ઉદગરયણ
 ન ઉવટ્ઠવેસિ ! ત એસણ તુમે દેવાણુપ્પિયા ! ઉદગરયણે કઓ ઉવલલ્લદ્ધે ?)

રાજાની આ વાત સાંભળીને પાણીવાળાએ જવાબમાં રાજાને કહ્યું કે હે
 સ્વામિન્ ! આ ઉદકરત્ન (પાણી) હું સુબુદ્ધિ અમાત્યની પાસેથી લાવ્યો
 હું રાજાએ ત્યાર બાદ સુબુદ્ધિ અમાત્યને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેમને
 આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સુબુદ્ધિ ! શા કારણથી હું તમારા માટે અજાત,

અકાન્ત, અપ્રિયઃ, અમનોજ્ઞ, અમનઆમોઽસ્મિ એન ત્વ મમ 'ઋણાઋણિ' કલ્યા-
કલિય=પ્રતિદિન ભોજનવેલાયામિદમુદકરત્ન નોપસ્થાપયમિ, તદેતત્ સ્વલુ ત્વયા હે
દેવાનુપ્રિય ! ઉદકરત્ન કુત ઉપલબ્ધમ્ ? । તત્ સ્વલુ સુવુદ્ધિ જિતશત્રુમેવમવા-
દીત્-એતત્સ્વલુ હે સ્વામિન્ ! તત્=યદ્ મનદ્વિઃ=પૂર્વદૃષ્ટ મેદોનસાદિદુર્ગન્ધયુક્ત
તદેવ પરિશોદક=પરિશાનલ વર્તતે । તત્ સ્વલુ સ જિતશત્રુઃ સુવુદ્ધિમેવમવદત્-
કેન કારણેન હે સુવુદ્ધે ! એતત્ પરિશોદકમ્ ? । તત્ સ્વલુ હે સ્વામિન્ ! યુય
તદા મમ એવાચક્ષાણમ્ય પ્રજ્ઞાપયતઃ, સજ્ઞાપયતઃ વિજ્ઞાપયતઃ=વારવાર પ્રતિપાદયત

અપ્રિય, અમનોજ્ઞ એવ અમન આમ બન રહો છું કે જિસસે તુમ પ્રતિ
દિન મેરે લિયે ભોજન વેલા મે હસ ઉદક રત્ન કો ઉપસ્થાપિત નહી
કરતે હો ? તો કહો હે દેવાનુપ્રિય ! યહ ઉદક રત્ન તુમને કહા સે પાયા
હે ? (તણ સુવુદ્ધી જિયસત્તુ એવ વયાસી એસણ સામી ! સે ફરિ
હોદણ, તણ સે જિયસત્તુ સુવુદ્ધિ એવ વયાસી-કેણ કારણેણ સુવુદ્ધી !
એસસે ફરિહોદણ ? તણ સુવુદ્ધી જિયસત્તુ એવ વયાસીએવ-સ્વલુ સામી !
તુમ્હે તયા મમ એવાઙ્કલમાણસ્સ ૪ એયમદ્ધ નો સદ્દહહ, તણ મમ
હમેયાસ્સવે અજ્ઞતિયે સમુપ્પજ્જિતથા) તવ સુવુદ્ધિ પ્રધાનને જિતશત્રુ
રજા સે કહા-હે સ્વામિન્ ! યહ ઉદક રત્ન વહી પરિશોદક હે । જિત-
શત્રુ ને કહા યહ પરિશોદક કિસ કારણ સે એગા ઉદક રત્ન બન ગયા
હે । સુવુદ્ધિ અમાત્ય ને તવ એસા કહા- હે સ્વામિન્ ! જવ મૈને આપસે
હસ પ્રકાર કહા થા હસ પ્રકાર પ્રરૂપિત કિયા થા, હસ પ્રકાર સજ્ઞાપિત
કિયા થા, વિજ્ઞાપિત કિયા થા- વાર વાર આપસે પ્રતિપાદિત કિયા થા

અપ્રિય, અમનોજ્ઞ અને અમન આમ થઈ પડ્યો છું કેમ કે હું મેશા જમવાના
વખતે મારા માટે આજના જેવું ઉદક રત્ન (સારૂ પાણી) તમે ઉપસ્થાપિત
કરતા નથી-મૂંઠાવડાવતા નથી ! હે દેવાનુપ્રિય ! બોલો, આવું ઉદક રત્ન
તમારે ક્યાથી મેળવ્યું છે ?

(તણ સુવુદ્ધી જિયસત્તુ એવ વયાસી એસણ સામી ! સે ફરિહોદણ, તણ
સે જિયસત્તુ સુવુદ્ધિ એવ વયાસી-કેણ કારણેણ સુવુદ્ધી એસ મે ફરિહોદણ ? તણ
સુવુદ્ધી જિયસત્તુ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ સામી ! તુમ્હે તયા મમ એવાઙ્કલમાણસ્સ
૪ એયમદ્ધ નો સદ્દહહ, તણ મમ હમેયાસ્સવે અજ્ઞતિયે સમુપ્પજ્જિતથા)

ત્યારે સુવુદ્ધિ પ્રધાને જિતશત્રુ રાજાને કહ્યું કે હે સ્વામી ! આ ઉદકરત્ન
(સારૂ પાણી) તેજ ખાઈનું પાણી છે રાજાએ અમાત્યને ફરી પૂછ્યું કે
ખાઈનું પાણી આવું સન્સ કેવી રીતે થઈ ગયું ? જવાબમાં સુવુદ્ધિ અમાત્યે
કહ્યું કે હે સ્વામિન્ ! પહેલા મે તમારી સામે આ પ્રમાણે પ્રરૂપિત કર્યું હતું,
આ પ્રમાણે સજ્ઞાપિત કર્યું હતું, વિજ્ઞાપિત કર્યું હતું, વારવાર પ્રતિપાદિત

રાજા પાનીહારક શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એમવદત્-અતન્ શ્વલ્લુ ત્વ હે દેવાનુપ્રિય !
 ઉદકરત્ન પ્રમાણમુદક કુત* કરમાન્મથાનાત્ ' આમાણ ' આમાદિત્=પ્રાપ્ત્મ ? ।
 તત્* શ્વલ્લુ મ પાનીયહારકો જિતશત્રુમેતાયાદીન્-અતન્ શ્વલ્લુ હે સ્વામિન્ ! મયા
 ઉદકરત્ન સુબુદ્ધેરન્તિમાદાસાદિતમ્ । તત્* શ્વલ્લુ જિતશત્રુ સુબુદ્ધિરમાત્મ્ય ગચ્ચયતિ,
 શબ્દયિત્વા એમવદત્-અહો ! શ્વલ્લુ હે સુબુદ્ધે ! કેન કારણેનાહ તયાનિષ્ઠઃ

વૈ શા હો હૈ-વહુન અત્રિક સ્વચ્છ ઇવ મમસ્ત્વ ઇન્દ્રિયો તો, શરીર
 કો આનન્દ દાયક હૈ હમકે વાદ જિતશત્રુ રાજાને પાનીયહારક કો
 બુલાયા ઓર બુલાકર ઉમસે પેમા કહા-હે દેવાનુ પ્રિય ! યદ્ ઉદકરત્ન
 (શ્રેષ્ઠ જલ)- તુમને કહા સે પ્રાપ્ત કિયા હૈ । (તત્ત્વેણ સે પાણિયધરણ
 જિયમત્તૂ એવ વયાસી-અસણ સામી ! મત્ત ઉદગરયણે સુબુદ્ધિસ્મ
 અતિયાઓ આમાણ તત્ત્વેણ જિયમત્તૂ સુબુદ્ધિ અમચ્ચ સદાવેદ મદા
 વિત્તા એવ વયાસી, અહોણ સુબુદ્ધી ! કેણ કારણેણ અહ તવ અણિદ્ધે
 પજેણ તુમ મમ કલ્લા કર્લિલ ભોયણવેલાએ હમ ઉદગરયણ ન ઉવઢ્ઢવેસિ
 ? ત એસણ તુમે દેવાણુપ્પિયા ! ઉદગરયણે કઓ ઉવલદ્ધે ?) રાજાકી
 હમ વાન કો સુનકર ઉસ પાનીયહારક ને ઉનસે કહા-હે સ્વામિન્ !
 મૈને યદ્ ઉદકરત્ન સુબુદ્ધિ પ્રધાન કે પાસ સે પોયા હૈ । હસકે વાદ
 જિતશત્રુ રાજા ને સુબુદ્ધિ પ્રધાન કો બુલાયા-બુલાકર ઉમસે હમ પ્રકાર
 કહા-હે સુબુદ્ધે ! મૈ કિસ કારણ સે તુમ્હારે લિયે અનિષ્ઠ, અકાન્ત,

તેવુ જ હતુ તે બહુ જ નિર્મળ અને બધી ઇન્દ્રિયોને તથા શરીરને આનન્દ
 આપનાર હતુ ત્યારપછી જિતશત્રુ રાજાએ પાણીવાળાને બોલાવ્યો અને બોલા
 વીને તેને કહ્યું-હે હે દેવાનુપ્રિય ! આ ઉદકરત્ન (શ્રેષ્ઠ પાણી) તમે
 કયાથી મેળવ્યું છે ?

(તત્ત્વેણ સે પાણિયધરણ જિયમત્તૂ એવ સુબુદ્ધિસ્મ અતિયાઓ અસાદે તત્ત્વેણ
 જિયમત્તૂ સુબુદ્ધિ અમચ્ચ સદાવેદ, સદાવિત્તા એવ વયાસી, અહોણ સુબુદ્ધી ! કેણ
 કારણેણ અહ તવ અણિદ્ધે પજેણ તુમ મમ કલ્લાકર્લિલ ભોયણવેલાએ હમ ઉદગરણ
 ન ઉવઢ્ઢવેસિ ! ત એસણ તુમે દેવાણુપ્પિયા ! ઉદગરયણે કઓ ઉવલદ્ધે ?)

રાજાની આ વાત સાંભળીને પાણીવાળાએ જવાબમાં રાજાને કહ્યું હે હે
 સ્વામિન્ ! આ ઉદકરત્ન (પાણી) હું સુબુદ્ધિ અમાત્યની પામેથી લાવ્યો
 છું રાજાએ ત્યાર બાદ સુબુદ્ધિ અમાત્યને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેમને
 આ પ્રમાણે કહ્યું હે હે સુબુદ્ધિ ! શા કારણથી હું તમારા માટે અ અકાન્ત,

હારક શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવ યદામિ-ત્વ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય ! ઉદકરત્ન જિત શત્રો રાજો ભોજનવેળાયામુપનય તદેતેન કારણેન હે સ્વામિન્ ' એતત્તત્=તદેવ યદ્ધ વદ્ધિ દૃષ્ટપૂર્વ પરિશોદકમ્ । તતઃ સ્વલુ જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધેરમાત્યસ્ય એવમાચ ક્ષાણસ્ય ૪ એતમર્થમ્- ' હદમેતદેવ પરિશોદકમ્ ' इत्येव रूप भाव नो श्रद्धाति.

રાજા કો સદ્ભૂત વિચિત્રમાન- યાવત્ જિન પ્રજ્ઞા ભાવો કા ધોધ કરાને કે લિયે ઔર ડનસે દન્હે યે ંસે હી હૈ, ઇસ રૂપ સે મનવાને કે લિયે ંસા પ્રયત્ન કરું કિ જિસસે ડનકી શ્રદ્ધા આદિ ડન પર જમ જાવે ઔર વે ઇસ વાત કો માનને લગ જાવે । ' એવ સપેહેમિ ૨ તચેવ જાવ પાણિય ઘરિય સદાવેમિ સદાવિત્તા એવ વયાસી તુમણ દેવાણુપ્પિયા ! ઉદગરય- ણ જિયસત્તુસ્સ રણ્ણો ભોયણવેલાણ ઉવણેહિ, ત એણ કારણેણ સા- મી ! એસ સે ફરિહોદણ ! તણ જિયસત્તુ રાયા સુબુદ્ધિસ્સ અમચ્ચસ્સ એવમાઙ્કલમાણસ્સ ૪ એવમટ્ઠ નો સદ્દહટ્ઠ ૩) એસા મૈને વિચાર કિયા વિચાર કરકે ફિર મૈને પાનીયહારક કો બુલાયા- બુલાકર ડસ સે ંસા કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! તુમ ઇસ ડદક રત્ન કો જિતશત્રુ રાજા કે ભોજન કે સમય પર લે જાના । ઇસ કારણ સે હે સ્વામિન્ । જો આપને પહિલે પરિશોદક દેલા થા-વહી યદ્ધ પરિશોદક હૈ-ઔર ઇસ રૂપ મેં પરિણત હો ગયા હૈ । જિતશત્રુ રાજા ને ઇસ પ્રકાર કહને વાલે ૪ સુબુદ્ધિ અમાત્ય કે ઇસ અર્થ કો કિ યદ્ધ વહી પરિશોદક હૈ અપની શ્રદ્ધા કા વિષય નહી બનાયા પ્રતીતિ કા વિષય નહી બનાયા, અપની

માટે અને એ લાવો ખરેખર એવા છે, એવું ઠમાવવા માટે પ્રયત્નો કરવા બોધ્યો બેથી તેઓને આ લાવો ઉપર સંપૂર્ણપણે વિશ્વાસ બેસી બાથ અને તેઓ આ વાતને સ્વીકાર પણ કરે

(એવ સપેહેમિ ૨ ત ચેવ જાવ પાણિયઘરિય સદાવેમિ સદાવિત્તા એવ વયાસી તુમણ દેવાણુપ્પિયા ! ઉદગરયણ જિયમત્તુસ્સ રણ્ણો ભોયણવેલાણ ઉવણેહિ ત એણ કારણેણ સામી ! એસ સે ફરિહોદણ । તણ જિયસત્તુ રાયા સુબુદ્ધિસ્સ અ મચ્ચસ્સ એવમાઙ્કલમાણસ્સ ૪ એવમટ્ઠ નો સદ્દહટ્ઠ ૩)

આ પ્રમાણે મેં વિચાર કર્યો વિચર કરીને મેં પાણી લાવનારને બોલાવ્યો અને બોલાવીને ડહુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ ઉદકરત્ન (સારા પાણી) ને જીતશત્રુ રાજા બ્યારે જમવા માટે બેસે ત્યારે લઈ જાવો એટલા માટે હે સ્વામી ! તમે પહેલા ખાઈનું બે પાણી બેથું છે તે જ આ પાણી છે અને આ તો તે પાણીનું જ ઉપાતર છે સુબુદ્ધિ અમાત્યની આ વાત પર-કે આ પાણી તે જ ખાઈનું છે રાજા જીતશત્રુને વિશ્વાસ વધ્યો નહિ રાજાએ અમાત્યની વાત

इत्यर्थः एतम्=पुद्गलानां शुभाशुभरूपेण परिवर्तनलक्षणम् अर्थम्=भावो नो
 श्रद्धात्थस्म=महावयोपरिश्रद्धा नो कृतवन्तः, ततः=तदा खलु मम अयमेतद्रूपः=
 वक्ष्यमाणः-आध्यात्मिकः, चिन्तितः, कल्पितः, प्रार्थितः, मनोगतः सकल्पः
 नानाविधो मानसिको विकल्पः इत्यर्थः समुद्रपथतः-अहो ! खलु जितशत्रु
 राजा सतो यावद् भावान् नो श्रद्धाति नो प्रत्येति नो रोचयति तत् श्रेयः खलु
 मम जितशत्रोः राज्ञः सता यावत् सद्भूतानां जिनप्रज्ञप्तानां भावानाम् अभिगम
 नार्थाय=अवबोधाय एतमर्थम् ' उपादयामि ' -उपादाययितुं=ग्राहयितुं श्रेय इति
 पूर्वेण सम्बन्धः, एव समेक्षे=अहं परालोचितयान्, समेक्ष्य तदेव यावत् पानीय-

कि पुद्गलों का शुभाशुभ रूपसे परिणमन होता रहता है- नाना रूप
 से उनका परिवर्तन होता रहता है यह परिवर्तन होना उनका स्वाभा-
 विक लक्षण है परन्तु जब आपने उस भाव को श्रद्धा में परिणत नहीं
 किया-मेरे वचनों पर आपको विश्वास नहीं जमा तब मुझे इस प्रकार
 का आध्यात्मिक, चिन्तित, कल्पित, प्रार्थित, मनोगत नाना प्रकार को
 विचार उत्पन्न हुआ (अहोण जियसत्तू सते जाव भावे नो सहहइ, न
 पत्तियाइ, रोएइ, त से य खलु मम जियसत्तूस रणो सताण जाव
 सब्भूयाण जिणपन्नत्ताण भावाण अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठ उवाइ
 णावेत्तए) देखो यह कितने आश्चर्य की बात है कि जो जितशत्रु राजा
 सद्भूत विद्यमान यावत् जिन प्रज्ञप्त भावों को अपनी श्रद्धा का विषय
 भूत नहीं बना रहे हैं उन पर प्रतीति नहीं कर रहे हैं, उन पर अपनी
 रुचि नहीं जमा रहे हैं । इसलिये मुझे यह उचित है कि मैं जितशत्रु

કર્તુ ઉત્ત કે શુભાશુભ રૂપમા પુદ્ગલોનુ પરિણમન થતુ જ રહે છે અનેક
 રૂપમા તેઓમા પરિવર્તન થતુ જ રહે છે આવુ પરિવર્તન તેઓનુ એક
 સ્વાભાવિક લક્ષણ છે પણ જ્યારે તમે મારી આ વાત શ્રદ્ધાપૂર્વક સાંભળી નહિ,
 મારા કથન ઉપર વિશ્વાસ કર્યો નહિ, ત્યારે મારા મનમા આ જાતના આધ્યા-
 ત્મિક, ચિન્તિત, કલ્પિત, પ્રાર્થિત મનોગત ઘણા વિચારો ઉત્પન્ન થયા કે—

(અહોણ જિયસત્તૂ સતે જાવ ભાવે નો સહહડ, નો પત્તિયાઈ, નો રોણઈ, ત
 સેય ખલુ મમ જિયસત્તૂસ રણો સતાણ જાવ સબ્ભૂયાણ જિણપન્નત્તાણ ભાવાણ
 અભિગમણટ્ઠયાએ એયમટ્ઠ ઉપાદયાવેત્તએ)

જુઓ આ કેવી આશ્ચર્યની વાત છે કે જિતશત્રુ રાજા સદ્ભૂત વિદ્યમાન
 યાવત્ જનપ્રજાસના ભાવો ઉપર શ્રદ્ધા ધરાવતા નથી, તેમના ઉપર વિશ્વાસ
 મૂકતા નથી અને પોતાની રૂચિ પણ તેમના પ્રત્યે જમાવતા નથી એટલે મારે
 હવે જિતશત્રુ રાજાને સદ્ભૂત વિદ્યમાન યાવત્ જનપ્રજાસભાવોનો બોધ આપવા

સંસ્કૃત । તેડપિ તથૈવ સમારયતિ, સમાર્ય જિતશત્રો' ' ઉવર્ણેતિ ' ઉપનયેન્તિ= સંમીપમાનયન્તિ । તતઃ સ્વલુ શિતશત્રુ રાજા તદુદકરત્ન કરતલે આસ્વાદયતિ, આસ્વાદનીય યાવત્ સર્વેન્દ્રિયગાત્રપ્રહાદનીય તદુદક જ્ઞાત્વા સુબુદ્ધિર્મમાત્ય ક્ષ્મ્દ યતિ, શબ્દયિત્વા એવમવદત્-હે સુબુદ્ધે ! એતે સ્વલુ ત્વયા સન્તઃ=વિધમાનાઃ 'જાવ' યાવત્ સદ્ભૂતાઃ ભાવાઃ કુત ઉપલબ્ધાઃ ? । તતઃ સ્વલુ સુબુદ્ધિજિતશુ મેવમવદેત્-એતે સ્વલુ હે સ્વામિન્ । મયા સન્તઃ યાવત્ સદ્ભૂતા ભાવાઃ જિનવચનત ઉપલબ્ધાઃ

ફિર ઉસે સસ્કારિત કરો । હસ પાઠ કો સમુચિત રૂપે સે સંમન્વિત કરને કે લિયે જૈસા પીછે લિખા ગયા હૈ વૈસા હી સંબન્ધ યહાં જાને લેના ચાહિયે । રાજા કી આજ્ઞાનુસાર ઉન લોગો ને વૈસા હી કિયા । સંસ્કારિત કરકે ફિર વે લોગ ઉમે જિતશત્રુ રાજા કે પાસ લે ગયે । જિતશત્રુ રાજા ને ઉસ સસ્કારિત ઉદક કો અપની હથેલી પર રક્ષા-ઔર ઉસે ચ્લા-જબ ચ્લ કર ઉસે યહ વિશ્વાસ હો ગયા કિ યહ જંલ આસ્વાદનીય એવ સર્વેન્દ્રિય-ગાત્ર પ્રહાદનીય બન ગયા હૈ તબ ઉસ ને સુબુદ્ધિ અમાત્ય કો બુલવાયા । બુલવા કર ઉસ સે એસા કહા- (સુબુદ્ધી !) એણ તુમે સતા જાવ સબ્ધૂયા ભાવા કઓ ઉવલદ્ધા તણ સુબુદ્ધી જિય સત્તૂ એવ વયાસી-એણ સામી મણ સતા જાવ સબ્ધૂયા ભાવા જિણ-વયણાઓ ઉવલદ્ધા, એણ જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિ એવ વયાસી-ત ઇચ્છામિણે દેવાણુપ્પિયા ! તવ અતિણ જિણવયણ નિસામેત્તણ) સુબુદ્ધે ! યે વિધર્મિણે યાવત્ સદ્ભૂત ભાવ તુમને કહા સે ઉપલબ્ધ કિયે હૈ ? તબ સુબુદ્ધિ ને

માટેના બધા ઉપાયો તેમજ દ્રવ્યોથી પાણીને નિર્મળ બનાવેા પહેલાની જેમજ અહીં પણ આગળની બધી વિગત બાણી લેવી જોઈએ તે લોકોએ રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે જ બધું કામ પૂરું કર્યું પાણી બ્યારે નિર્મળ થઈ ગયું ત્યારે તે લોકો પાણીના માટલાઓને રાજાની સામે લઈ આવ્યા રાજાએ અનેક સસ્કારો વડે નિર્મળ બનાવેલા પાણીને હથેળી ઉપર લીધું અને તેને ચાખ્યું ચાખ્યા બાદ રાજાને આ પ્રમાણે વિશ્વાસ થઈ ગયો કે ખરેખર આ પાણી આસ્વાદનીય અને સર્વેન્દ્રિય ગાત્ર-પ્રહાદનીય થઈ ગયું છે ત્યારે તેણે સુબુદ્ધિ અમાત્યને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું

સુબુદ્ધી ! એણ તુમે સતા જાવ સબ્ધૂયા ભાવા કઓ ઉવલદ્ધા તણ સુબુદ્ધી જિયસત્તૂ એવ વયાસી એણ સામી મણ સતા જાવ સબ્ધૂયા ભાવા જિણવયણાઓ ઉવલદ્ધા એણ જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિ એવ વયાસી ત ઇચ્છામિ ણ દેવાણુપ્પિયા ! તવ અતિણ જિણવયણ નિસામેત્તણ)

હે સુબુદ્ધે ! એ વિધમાન યાવત્ અદ્ભૂત ભાવો તમે કયાથી મેળવ્યા

નો પ્રત્યેતિ, નો રોચયતિ, અશ્રદ્ધાન, અપ્રતિયન્, આરોચમાન, 'અભ્મતરઠા
 ણિજ્ઞે' અભ્યન્તર સ્થાનીયાન્=સ્વસમીપરિવતાન્ પુરુષાન્ શન્દયતિ, શન્દયિત્વા
 એવમવદત્-ગચ્છત સ્વલ્લુ યુય હે દેવાનુપ્રિય ! 'અતરાવણાઓ' અન્તરાવણાત્=
 ગ્રામમધ્યસ્થિત કુમ્ભકારહટ્ટાત્ નવઘટકાન્ 'પઢણ ય' પટમાંશ્ર=જલગાલનવસ્ત્ર
 સ્વળ્ડાન્ શૂલીત યાત્રદ્ ઉદકસમારણીયૈઃ ઉદકમસ્કારયોગ્યૈઃ દ્રવ્યૈ સમારયત=
 રુચિકા વિષય નહીં વનાયા (અસદ્દર્શમાણે ૩) હમ પ્રકાર શ્રદ્ધા રહિત
 રુચિ રહિત, પ્રતીતિ રહિત ઘને હુળ રાજા જિતશત્રુને (અભિમતરઠાણિજ્ઞે
 પુરિસે સદાવેદ) અપને પાસ મેં સદા રહેને વાલે પુરુષોં કો બુલાયા (સ
 દાવિત્તા એવ વયાસી) બુલાકર ડનસે હસ પ્રકાર કહા—(ગચ્છહળ
 તુભે દેવાણુપ્પિયા ! અતરાવણાઓ નવઘટક પઢણ ય ગેળહર, જાવ
 ઉદગસમારણિજ્ઞેહિં દવ્વેહિં સમારેહ તે વિ તહેવ સમારેતિ,
 સમારિત્તા જિયસત્તૂસ્સ ઉવળેતિ, ઉવણિત્તા તણ્ણ જિયસત્તૂરાયા
 ત ઉદકરયણ કરયલસિ આસાણ્ઠ, આસાયણિજ્જ જાવ સન્નિવિ-
 યગાય પલ્હાયણિજ્જ જાણિત્તા સુબુદ્ધિ અમચ્ચ સદાવેદ, સદા-
 વિત્તા એવ વયાસી) હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ જાઓ ઓર ઘાજોર
 સે નવીન ઘડોં કો એવ જલ છાન ને, કે લિયે વસ્ત્રોં કે લ્હડોં કો
 છુઓ કો-લે આઓ ! યહા અન્તરાવણ કા અર્થ "ગ્રામ કે મધ્ય મેં
 સ્થિત કુમ્હારો કા હાટ યા સામાન્ય ઘાજાર હૈં । તેમા હો અર્થ હસ
 શબ્દ કા પહિલે ક્રિયા ગયા હૈં । યાવન્ ઉદક સસ્કાર યોગ્ય દ્રવ્યોં સે

ઉપર ન તો પ્રતીતિ પણ થઈ અને ન તે પ્રત્યે પોતાની અભિરુચિ બતાવી
 (અસદ્દર્શમાણે ૩) આ રીતે શ્રદ્ધા, રુચિ અને પ્રતીતિ રહિત થયેલા રાજા
 જિતશત્રુએ (અભિમતરઠાણિજ્ઞે પુરિસે સદાવેદ) હમેશાં એવીસે ડલાક પોતાની
 પાસે રહેનારા માણસોને બોલાયા (સદાવિત્તા એવ વયાસી) બોલાવીને
 તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું

(ગચ્છહળ તુભે દેવાણુપ્પિયા ! અતરાવણાઓ નવઘટક પઢણ ય ગેળહર જાવ
 ઉદગ સમારણિજ્ઞેહિં દવ્વેહિં સમારેહ તે વિ તહેવ સમારેતિ, સમારિત્તા જિયસત્તૂ-
 સ્સ ઉવળેતિ, ઉવણિત્તા તણ્ણ જિયસત્તૂરાયા ત ઉદકરયણ કરયલસી આસાણ્ઠ
 આસાયણિજ્જ જાવ સન્નિવિદિયગાયપલ્હાયણિજ્જ જાણિત્તા સુબુદ્ધિ અમચ્ચ
 સદાવેદ, સદાવિત્તા એવ વયાસી)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બન્તરમા બાંઓ અને ત્યાથી નવા માટલાઓ
 તેમજ પાણી ગાળવા માટે વસ્ત્રોના ડકડા ખરીદી લાવો 'અન્તરાવણ'નો અર્થ
 ગામની વચ્ચેનું કે બારેનું બન્તર કે સામાન્ય બન્તર છે પહિલા પાપુ આ શબ્દનો
 અર્થ આ પ્રમાણે જ કરવામાં આવ્યો છે ત્યારબાદ પાંચીને

ન્દિતઃ હર્પવશવિસર્પદ્ હૃદય' સુબુદ્ધિમમાત્યમેવમવાદીત્-શ્રદામિ સ્વલ્હે હે દેવાનુ
પ્રિય ! નૈર્ગ્રન્થ્ય પ્રવચન ' તત્ત્વમેતત્ ' इत्यादि यावत् तद् यथैव यद् यूयं वदथ,
तत्=तस्मात्कारणात् इच्छामि स्वलु तत्रातिके पञ्चाणुव्रतिक सप्तशिक्षाव्रतिक यावद्
एव द्वादशविध श्रावकधर्मम् ' उपसपज्जित्ता ' उपसम्पद्य=स्वीकृत्य विहर्तुम् ।
यथा सुख हे देवानुप्रिय ! हे राजन् ! यदि रोचते तदा एवमेव कुरु तत्र माम-

સુનકર ઓર ઉસે હૃદય મે અવધારિત કર વહુત હી અધિક પ્રસન્ન
એવ તુષ્ટ હુણ । હર્પ સે ગદ્ગદ હોકર ઉન્હોને સુબુદ્ધિ અમાત્ય સે હસે
પ્રકાર કાહા-(સદ્દહામિ ણ દેવાણુપ્પિયા ! નિગ્ગય પાવયણ ૩ જાવ સે
જહેવ જ તુબ્બે વયહ, ત ઇચ્છામિ ણ તવ અતિએ પચાણુવ્વદ્ય સત્તસિ-
વ્વલાવદ્ય જાવ ઉવસપજ્જિત્તાણ વિહરિત્તએ, અહાસુહ દેવાણુપ્પિયા ! મા
પહિવધ૦ તણ સે જિયસત્તુ સુબુદ્ધિસ્સ અમચ્ચસ્સ અતિએ પચાણુવ્વ-
દ્ય જાવ દુવાલસવિહ સાવયધમ્મ પહિવજ્જહ, તણ જિયસત્તુ સમણો
વાસએ અભિગયજીવાજીવે જાવ પહિલામે માણે વિહરહ) હે દેવાનુ
પ્રિય ! મેં હસ નિર્ગ્રન્થ્ય પ્રવચન પર શ્રદ્ધા કરતા હું હસ પર રુચિ કરતા
હું યહ નિર્ગ્રન્થ્ય પ્રવચન સર્વથા સત્ય હૈં ઇત્યાદિ યાવત્ જૈસા તુમ કહતે
હો વહ વૈસા હી હૈં । હસ લિયે મેં તુમ્હારે પાસ પચ્ચ અણુવ્રત સાત શિ-
ક્ષાવ્રત રૂપ દ્વાદશ વિધ શ્રાવક ધર્મ કો સ્વીકાર કરના ચાહતાહું । હસ
પ્રકાર રાજા કી વાત સુનકર સુબુદ્ધિ અમાત્ય ને ઉસસે કહા-હે દેવાનુ-
પ્રિય ! તુમ્હે જિસ પ્રકાર સુખ હ-વૈસા કરો પ્રમાદ ન કરો શુભ કર્મ મેં

સાભળીને એને તેને શરીરમા અવધારિત કરીને ખૂબ જ પ્રસન્ન તેમજ તુષ્ટ
થયો । હર્પથી ગળગળો થઈને તેણે સુબુદ્ધિ અમાત્યને આ પ્રમાણે કહ્યું કે--

(સદ્દહામિ ણ દેવાણુપ્પિયા ! નિગ્ગય પાવયણ ૩ જાવ સે જહેવ જ તુબ્બે વયહ
ત ઇચ્છામિ ણ તવ અતિએ પચાણુવ્વદ્ય સત્તસિવ્વલાવદ્ય જાવ ઉવસપજ્જિત્તાણ
વિહરિત્તએ અહાસુહ દેવાણુપ્પિયા ! મા પહિવધ૦ તણ સે જિયસત્તુ સુબુદ્ધિસ્સ
અમચ્ચસ્સ અતિએ પચાણુવ્વદ્ય જાવ દુવાલસવિહ સાવયધમ્મ પહિવજ્જહ તણ
જિયસત્તુ સમણોવાસએ અભિગયજીવાજીવે જાવ પહિલામેમાણે વિહરહ)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ નિર્ગ્રન્થ્ય પ્રવચનમા હું શ્રદ્ધા રાખું છું, આમા હું
રુચિ રાખું છું આ નિર્ગ્રન્થ્ય પ્રવચન ખરેખર સત્ય છે વગેરે જેવું તમે કહો છો
તેવું જ આ નિર્ગ્રન્થ્ય પ્રવચન છે એથી હું તમારી પાસેથી પચ્ચ અણુવ્રત અને
સાત શિક્ષા વ્રત રૂપ બાર (૧૨) પ્રકારનો શ્રાવક ધર્મ સ્વીકારવા આહુ છું
આ રીતે રાજાની વાત સાભળીને સુબુદ્ધિ અમાત્યે તેને કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિય !
તમને જેમ ગમે તેમ કરો પ્રમાદ કરો નહિ, સારા કામમા મોહુ કરવું યોગ્ય

તતઃ સ્વલુ જિતશત્રુઃ સુબુદ્ધિમેયમયદત્-તદ્ ઇચ્છામિ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય ! તથા-
ન્તિકે જિનવચન ' નિસામેત્તણ ' નિશામયિતુ=શ્રોતુમ્ । તત્ સ્વલુ સુબુદ્ધિજિત
શત્રોર્વિચિત્ર=અદ્ભુત પૂર્વમશ્રુત કેવલિપ્રજ્ઞસ=જિનભાષિત ધર્મ=શ્રુતચારિત્રલ્ક્ષણ
પરિકથયતિ, ' તમાઠ્ઠકલ્લહ ' તમાર્ય તિ=તદેય પ્રતિપાદયતિ-' જહા ' યથા=
યેન-કર્મસયોગેન જીવા રમ્યન્તે યેન ચ મુચ્ચન્તે યાત્ પચ્ચાણુપ્રતાનિ । તત્
સ્વલુ જિતશત્રુ સુબુદ્ધેરન્તિકે ધર્મ શ્રુત્વા નિશમ્ય=હૃદિસમવધાર્ય દ્વપ્પતુષ્ણવિત્તાન-

જિતશત્રુ રાજા સે ઇસ પ્રકાર કહા-હે સ્વામિન્ ! યે વિશ્વમાન યાવત્
સદ્ભૂત ભાવ મેંને જિન પ્રવચન સે ઉપલબ્ધ ક્રિયે હેં । જિતશત્રુ ને તથ
સુબુદ્ધિ અમાત્ય સે કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! મેં તુમ્હારે પાસ જિન પ્રવચન
કો સુનના ચાહતા હેં । (તણ સુબુદ્ધી જિયસત્તૂસ્સ વિચિત્ત
કેવલીપન્નત્ત ચાઉઝ્જામ ધમ્મ પરિકહેઠ, તમાઠ્ઠકલ્લહ, જહા જીવા વજ્જ
તિ જાવ પચ અણુવ્વયાહ, તણ જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિસ્સ અતિણ ધમ્મ સોચ્ચા
ણિસમ્મ હદ્ધં સુબુદ્ધિ અમચ્ચ એવ વયાસી) સુબુદ્ધિ પ્રધાન ને તથ
જિતશત્રુ રાજા કો પૂર્વ મેં કમ્મી નહીં સુના ગયા એસા કેવલિ પ્રજ્ઞસ-
સર્વજ્ઞ જિનેન્દ્રદ્વારા પ્રતિપાદિત ચાતુર્યામિ ચાલા શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મ સુના-
યા । ઉસે હી વિસ્તાર રૂપ સે ઉન્હેં સમજાયા । જીવ જિસ પ્રકાર કર્મો
સે બધતે હેં, ઓર જિસ પ્રકાર કર્મો સે મુક્ત હોતે હેં-છૂટતે હેં યહ
સુનાયા સમજાયા યાવત્ શ્રાવક ધર્મરૂપ પચમ અણુવ્રતોં કો સમજાયા
હસ તરહ જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિ અમાત્ય કે મુગ્ધ સે ધર્મ કા વ્યાખ્યાન

છે ? જવાબમા સુબુદ્ધિએ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામી ! એ વિશ્વમાન
યાવત્ અદ્ભૂત ભાવ મેં જિન પ્રવચન માથી મેળવ્યા છે ત્યારે જિતશત્રુએ
સુબુદ્ધિ અમાત્યને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમારી પાસે હું જનપ્રવચન
સાંભળવાની ઈચ્છા રાખું છું

(તણ સુબુદ્ધી જિયસત્તૂસ્સ વિચિત્ત કેવલિપન્નત્ત ચાઉઝ્જામ ધમ્મ પરિકહેઠ
તમાઠ્ઠકલ્લહ, જહા જીવા વજ્જતિ જાવ પચ અણુવ્વયાહ, તણ જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિ-
સ્સ અતિણ ધમ્મ સોચ્ચા ણિસમ્મ હદ્ધં સુબુદ્ધિ અમચ્ચ એવ વયાસી)

સુબુદ્ધિ પ્રધાને જિતશત્રુ રાજાને પહેલા કોઈપણ વખતે સાંભળેલો નહિ
એવો કેવળી પ્રજ્ઞસ-સર્વજ્ઞ જિનેન્દ્ર વડે પ્રતિપાદિત ચાતુર્યામિવાળો શ્રુત-ચારિત્ર
રૂપ ધર્મ સંભળાવ્યો અને સંવિસ્તાર તેને સંમળાવ્યો જે પ્રમાણે એવ કર્મો
વડે બધાય છે અને જે પ્રમાણે કર્મોથી મુક્ત થાય છે તે વિગેની બધી વિગત
કહી સંભળાવી અને સંમળાવી યાવત્ શ્રાવક ધર્મ રૂપ પાંચ આણુવ્રતોને સંમ
ળાવ્યા આ રીતે જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિ અમાત્યના મુખેથી

न्दितः हर्षवशविसर्पद् हृदयः सुबुद्धिममात्यमेवमवादीत्-अदगामि खलु हे देवानु-
प्रिय ! निर्ग्रन्थ प्रवचन ' तस्यमेतत् ' इत्यादि यावत् तद् यथैव यद् यूयं वदथ,
तत्=तस्मात्कारणात् इच्छामि खलु तवान्तिके पञ्चाणुव्रतिक सप्तशिक्षाव्रतिक यावद्
एव द्वादशविध श्रावकधर्मम् ' उपसपज्जित्ता ' उपसम्पद्य=स्वीकृत्य विहर्तुम् ।
यथा सुख हे देवानुप्रिय ! हे राजन् ! यदि रोचते तदा एवमेव कुरु तत्र माम्

सुनकर और उसे हृदय से अवधारित कर बहुत ही अधिक प्रसन्न
एव तुष्ट हुए । हर्ष से गद्गद होकर उन्होंने सुबुद्धि अमात्य से इस
प्रकार कहा-(सद्वहामि ण देवाणुप्पिया । निग्गथ पावयण ३ जाव से
जहेव ज तुम्हे वयह, त इच्छामि ण तव अतिए पचाणुव्वइय सत्तसि-
क्खावइय जाव उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, अहासुह देवाणुप्पिया । मा
पडिवध० तएण से जियसत्तु सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अतिए पचाणुव्व-
इय जाव दुवालसविह सावयधम्म पडिवज्जइ, तएण जियसत्तु समणो
वासए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभे माणे विहरइ) हे देवानु-
प्रिय ! मैं इस निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करता हूँ इस पर रुचि करता
हूँ यह निर्ग्रन्थ प्रवचन सर्वथा सत्य है इत्यादि यावत् जैसा तुम कहते
हो वह वैसा ही है । इस लिये मैं तुम्हारे पास पञ्च अणुव्रत सात शि-
क्षाव्रत रूप द्वादश विध श्रावक धर्म को स्वीकार करना चाहता हूँ । इस
प्रकार राजा की बात सुनकर सुबुद्धि अमात्य ने उससे कहा-हे देवानु-
प्रिय ! तुम्हें जिस प्रकार सुख है-वैसा करो प्रमाद न करो शुभ कर्म में

साधणीने એને તેને શરીરમાં અવધારિત કરીને ખૂબ જ પ્રસન્ન તેમજ તુષ્ટ
થયો. હર્ષથી ગળગળો થઈને તેણે સુબુદ્ધિ અમાત્યને આ પ્રમાણે કહ્યું કે--

(સદ્વહામિણ દેવાણુપ્પિયા ! નિગ્ગથ પાવયણ ૩ જાવ સે જહેવ જ તુમ્હે વયહ
ત ઇચ્છામિ ણ તવ અતિએ પચાણુવ્વઇય સત્તસિક્ખાવઇય જાવ ઉવસપજ્જિત્તાણ
વિહરિત્તએ અહાસુહ દેવાણુપ્પિયા ! મા પડિવધ૦ તએણ સે જિયસત્તુ સુબુદ્ધિસ્સ
અમચ્ચસ્સ અતિએ પચાણુવ્વઇય જાવ દુવાલમવિહ સાવયધમ્મ પડિવજ્જઇ તએણ
જિયસત્ત સમણોવાસએ અભિગયજીવાજીવે જાવ પડિલાભેમાણે વિહરઇ)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચનમાં હું શ્રદ્ધા રાખું છું, આમાં હું
રુચિ રાખું છું આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન ખરેખર સત્ય છે વગેરે જેવું તમે કહેો છો
તેવું જ આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન છે એથી હું તમારી પામેથી પચ અણુવ્રત અને
સાત શિક્ષા વ્રત રૂપ બાર (૧૨) પ્રકારનો શ્રાવક ધર્મ સ્વીકારવા આહુ છું
આ રીતે રાજાની વાત સાંભળીને સુબુદ્ધિ અમાત્યે તેને કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિય !
તમને જેમ ગમે તેમ કરો પ્રમાદ કરો નહિ, સારા કામમાં મોડું કરવું યોગ્ય

તતઃ સ્વલુ જિતશત્રુઃ સુબુદ્ધિમેયમપદત્-તદ્ ઇચ્છામિ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય ! તવા-
ન્તિકે જિનવચન ' નિસામેત્તણ ' નિશામયિતુ=શ્રોતુમ્ । તતઃ સ્વલુ સુબુદ્ધિજિત
શત્રોર્વિચિત્ર=અદ્ભુત પૂર્વમશ્રુત કેવલિપ્રજ્ઞસ=જિનભાષિત ધર્મ=શ્રુતચારિત્રલક્ષણ
પરિકથયતિ, ' તમાહ્વસ્વહ ' તમાર્ય તિ-તદેય પ્રતિપાદયતિ-' જહા ' યથા=
યેન-કર્મસયોગેન જીવા વખ્યન્તે યેન ચ મુચ્યન્તે યાવત્ પચ્ચાણુપત્તાનિ । તત
સ્વલુ જિતશત્રુઃ સુબુદ્ધેરન્તિકે ધર્મ શ્રુત્વા નિશમ્ય=હૃદિસમવધાર્ય દ્વષ્ટતુષ્ટિચિત્તાન-

જિતશત્રુ રાજા સે ઇસ પ્રકાર કહા-હે સ્વામિન્ ! યે વિચ્ચમાન યાવત્
સદ્ભૂત ભાવ મૈને જિન પ્રવચન સે ઉપલબ્ધ ક્રિયે હં । જિતશત્રુ ને તથ
સુબુદ્ધિ અમાત્ય સે કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! મૈં તુમ્હારે પાસ જિન પ્રવચન
કો સુનના ચાહતા હૈં । (તણ સુબુદ્ધી જિયસત્તૂસ્સ વિચિત્ત
કેવલીપન્નત્ત ચાઉજ્જામ ધમ્મ પરિકહેહ, તમાહ્વસ્વહ, જહા જીવા વજ્ઞ
તિ જાવ પચ અણુવ્વયાહ, તણ જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિસ્સ અતિણ ધમ્મ સોચ્ચા
ણિસમ્મ હદ્દં સુબુદ્ધિ અમચ્ચ એવ વયામી) સુબુદ્ધિ પ્રધાન ને તથ
જિતશત્રુ રાજા કો પૂર્વ મૈં કમી નહી સુના ગયા એસા કેવલિ પ્રજ્ઞસ-
સર્વજ્ઞ જિનેન્દ્રદ્વારા પ્રતિપાદિત ચાતુર્યામિ વાલા શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મ સુના
યા । ઉસે હી વિસ્તાર રૂપ સે ઉન્હેં સમજાયા । જીવ જિસ પ્રકાર કર્મો
સે વધતે હૈં, ઓર જિસ પ્રકાર કર્મો સે મુક્ત હોતે હૈં-છૂટતે હૈં યહ
સુનાયા સમજાયા યાવત્ શ્રાવક ધર્મરૂપ પચમ અણુવ્રતોં કો સમજાયા
હસ તરહ જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિ અમાત્ય કે મુગ્ધ સે ધર્મ કા વ્યાખ્યાન

છે ? જવાબમા સુબુદ્ધિએ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામી ! એ વિચ્ચમાન
યાવત્ અદ્ભૂત ભાવ મે જિન પ્રવચન માથી મેળવ્યા છે ત્યારે જીતશત્રુએ
સુબુદ્ધિ અમાત્યને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમારી પાસે હું જીનપ્રવચન
સાંભળવાની ઇચ્છા રાખું છું

(તણ સુબુદ્ધી જિયસત્તૂસ્સ વિચિત્ત કેવલિપન્નત્ત ચાઉજ્જામ ધમ્મ પરિકહેહ
તમાહ્વસ્વહ, જહા જીવા વજ્ઞતિ જાવ પચ અણુવ્વયાહ, તણ જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિ
સ્સ અતિણ ધમ્મ સોચ્ચા ણિસમ્મ હદ્દં સુબુદ્ધિ અમચ્ચ એવ વયામી)

સુબુદ્ધિ પ્રધાને જીતશત્રુ રાજાને પહેલા કોઈપણ વખતે સાંભળેલો નહિ
એવો કેવળી પ્રજ્ઞસ-સર્વજ્ઞ જિનેન્દ્ર વડે પ્રતિપાદિત ચતુર્યામિવાળો શ્રુત-ચારિત્ર
રૂપ ધર્મ સાંભળાવ્યો અને સવિસ્તર તેને સમજાવ્યો જે પ્રમાણે એવ કર્મો
વડે બધાય છે અને જે પ્રમાણે કર્મોથી મુક્ત થાય છે તે વિશેની બધી વિગત
કહી સાંભળાવી અને સમજાવી યાવત્ શ્રાવક ધર્મ રૂપ પાંચ અણુવ્રતોને સમ
જાવ્યા આ રીતે જીતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિ અમાત્યને

નીના સમવસરણ જાતમ્ । જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિરમાત્યથ નિર્ગચ્છતિ=વમશ્રવણાર્થ
ગ્રામાન્દહિર્નિસ્સરતિ સુબુદ્ધિઃ વર્મશ્રુત્વા 'અન્યત્સર્વં પૂર્વવત્, નવર=વિશેષસ્ત્વ
યમ્યત્ જિતશત્રુ રાજાનમાપૃચ્છામિ યાવત્-યુષ્માક સમીપે મત્રજામિ દીક્ષા ગ્રહિષ્યા-
મીત્યર્થ । સ્થવિરાઉચુ -યથાસુખ હે દેવાનુપ્રિય ! મા પ્રતિગ્ધ કુરુ । તતઃ સ્વલુ
સુબુદ્ધિ યત્રેવ જિતશત્રુસ્તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય એવમવાદીત્-એવ સ્વલુ હે
સ્વામિન્ ! જિતશત્રો ! મયા સ્થવિરાણામન્તિક્કે ધર્મ નિશાન્ત =શ્રુતઃ સોઽપિચ
ધર્મોમે ' હચ્છિઉ' ' હપ્પ' =વાઙ્છિતઃ, ' પહિન્નિઉ' ' પ્રતીપ્પ =વિશેષતો વાઙ્છિત ,
' અભિરુદ્ધ' અભિરુચિત =આસેવનરૂપેણ સર્વથા વાઙ્છિત । તતઃ સ્વલુ તસ્માત્
કારણાત્ અહ હે સ્વામિન્ ! સસારમઉગ્ગિગ્ગે ' સસારમયોદ્ધિગ્ગઃ =સસારમયત્રસ્તઃ

મય મે-ઔર उनके आवक वर्म के पावन करने के समय में-स्थविर
मुनियो का वहा आगमन हुआ । जितशत्रु राजा और सुबुद्धि अमात्य
धर्म श्रवण के लिये अपने अपने २ स्थान से निकल कर उनके समीप
आये । सुबुद्धि ने धर्म का उपदेश सुनकर स्थविर मुनियो से निवेदन
किया-भदत ! मे जितशत्रु राजा से पूछकर यावत् आपके पास आकर
मुनिदीक्षा धारण करना चाहता हूँ । स्थविरो ने सुबुद्धि अमात्य का
अभिप्राय जानकर उससे कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम्हे जिससे सुख हो
वैसा करो-श्रेयस्कर कार्य में विलम्ब करना हितावह नहीं है । इस तरह
सुबुद्धि वहाँ से आकर जहा जितशत्रु राजा थे वहा आया वहाँ आकर
कहा-स्वामिन् ! मने र स्थविर मुनिजनों के सुख से धर्म का उपदेश सुना
है । वह मुझे बहुत ही रचा है, मेरी इच्छा का विषय भूत बन गया है,
मेरी चाहना उस तरफ विशेष रूप से बढ़ गई है । मे चाहता कि में

હતા તે ઇણે અને તેઓ જ્યારે આવક ધર્મનું પાવન કરતા હતા તે સમયે-
ત્યા સ્થવિર મુનિઓ આવ્યા જીતશત્રુ રાજા અને સુબુદ્ધિ અમાત્ય ધર્મશ્રવણ
માટે પોતાપે તાને ત્યાં નીકળીને તેમની પાસે પહોંચ્યા ધર્મને ઉપદેશ સાલ
ળીને સુબુદ્ધિએ મુનિએ ને વિનતી કરી કે હે ભદત ! જીતશત્રુ રાજાની આજ્ઞા
મેળવીને તેમજ બીજી પણ ઘણી વ્યવસ્થાઓ વગેરે કરીને તમારી પાસે આવીને
મુનિ દીક્ષા ધારણ કરવા આહુ છું સ્થવિરોએ સુબુદ્ધિ અમાત્યના વિચારો
જાણીને કહ્યું કે હે દેવનુપ્રિય ! તમને જેમા મુખ્ય મળતું હોય તેમ કરો સારા
કામોમા મોડું કરવું ચો ય કહેવાય નહિ આ રીતે આજ્ઞા મેળવીને સુબુદ્ધિ ત્યાંથી
આવાને જીતશત્રુ રાજાની ખાતે પહોંચ્યા અને તેણે રાજાને વિનતી કરતા કહ્યું કે
હે સ્વામી ! સ્થવિર મુનિઓના મોથી મે ધર્મને ઉપદેશ આપ્યો છે તે મને
પૂજા જ ગમી ગયો છે મારી ઈચ્છા તે તરફ આકર્ષાઈ છે વિશેષ ઉપમા હું
નેને આહવા લાગ્યો છું મારી ઈચ્છા છે કે સયમ ધારણ કરીને પોતાનું જીવન

तिबन्ध कुरु=शुभकार्ये विलम्बो न करणीय इत्यर्थः । ततःपुनः स जितशत्रुः सुबुद्धे-
स्माह्यस्यान्तिके पञ्चाणुवतिक यावद् द्वादशविध श्रावकधर्मं प्रतिपद्यते । ततः
खलु जितशत्रु श्रमणोपासक 'अभिगयजीराजीवे' अभिगतजीराजीर.=रहिताव
जीवाजीरस्वरूप' यावत् प्रासुकैषणीयैरशनादिभिः श्रमणनिर्ग्रन्थान् पतिलाभयन्
=आहारादि ददनं विहरति=तिष्ठतिम् । तस्मिन् काले जितशत्रुराज्यशासनकाले
तस्मिन् समये=श्रावकधर्मप्रतिपालनसमये 'धेरागमण' स्थविरागमन=स्थविरपु-

विलम्ब करना योग्य नहीं है-इस तरह सुबुद्धि अमात्य के मुख से
सुनकर जितशत्रु राजा ने उस सुबुद्धि अमात्य से पांच अणुवत् एव
सात शिक्षावत् रूप द्वादश प्रकार का गृहस्थ धर्म स्वीकार कर लिया ।
इस तरह वे जितशत्रु राजा श्रमणोपासक बन गये । और जीव एव
अजीव तत्त्व के स्वरूप ज्ञाता भी हो गये । प्रसुक ण्यणीय आहारादि
श्रमण निर्ग्रन्थ साधुओं के लिये प्रदान करने लगे । (तण कालेण तेण
समएण थेरागमण जियसत्तू राया सुबुद्धी य निगच्छइ, सुबुद्धी धम्म
सोच्चा ज नवर जियसत्तू आपुच्छामि जाव पव्वयामि, आहासुह देवा-
णुप्पिया ! तएण सुबुद्धी जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छि-
त्ता, एव वयासी-एव खलु सामी ! मए थेराण अतिए धम्मे निसत्ते,
से वि य, धम्मे इच्छिण पडिच्छिण, अभिरुइण, तएण अह सामी ! सः-
सारभउव्विग्गे भीए जाव इच्छामिण तुव्वेहिं अब्भणुवाए स० जाव
पव्वइत्तए) उस काल जितशत्रु राजा के राज्यशासन काल में-उस स

वेधाय नहि आ रीते सुबुद्धि अमात्यना भुजेथी वात सालणीने एतशत्रु
राज्ये ते सुबुद्धि अमात्य पासेथी पाच अणुवत् अने सात शिक्षावत् रूप
पार प्रकारने गृहस्थ धर्म स्वीकारी लीधे आ प्रभावे ते एतशत्रु राज
श्रमणोपासक थर्ग गया अने एव तेमज अएव तत्त्वना स्वइयने समजनास
पण थर्ग गया प्रासुक षणीय आहार वगेरे श्रमण निर्ग्रन्थ साधुओने
आपवा लाया

(तेण कालेण तेण समएण थेरागमण जियसत्तूराया सुबुद्धी य निगच्छइ,
सुबुद्धी धम्म सोच्चा ज नवर जियसत्तू आपुच्छामि जाव पव्वयामि अहासुह देवा
णुप्पिया ! तएण सुबुद्धी जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ उवागच्छि-
त्ता एव वयासी एव खलु, सामी मए थेराण अतिए धम्मे निसत्ते, से वि य धम्मे इच्छिण
पडिच्छिण, अभिरुइण, तएण अह सामी ! ससारभउव्विग्गे भीए जाव इच्छामि
ण अब्भणुवाए स० जाव पव्वइत्तए)

ते ज्ञाने अने ते समये ओटवे के एतशत्रु राजा न्यारे शासन करता

નીના સમન્વસરણ જાતમ્ । જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિરમાત્યથ નિર્ગચ્છતિ=વમશ્રવણાર્થ
ગ્રામાઘ્ઘિર્નિસ્સરતિ સુબુદ્ધિ' વર્મશ્રુત્વા 'અન્યત્સર્વં પૂર્વગત્, નવર=વિશેષસ્ત્વ
યમ્ યત્ જિતશત્રુ રાજાનમાવૃચ્છામિ યાવત્-પુનઃક સમીપે પ્રવ્રજામિ દીક્ષા ગ્રહિષ્યા-
મીત્યર્થ । સ્થવિરાઉચુ -યથાસુખ હે દેવાનુપ્રિય । મા પ્રતિગ્રન્ધ કુરુ । તતઃ સ્વલુ
સુબુદ્ધિ યત્રેવ જિતશત્રુસ્તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય એવમવાદીત્-એવ સ્વલુ હે
સ્વામિન્ । જિતશત્રો । મયા સ્થવિરાણામન્તિકે ધર્મ નિશાન્ત =શ્રુતઃ સોઽપિચ
ધર્મોમે ' ઇચ્છિઽપ્ ' ઇષ્ટ=વાચ્છિઽતઃ, ' પઠિન્નિઽપ્ ' પ્રતીષ્ઠ =વિશેષતો વાચ્છિઽત ,
' અભિરુઽપ્ ' અભિરુચિત=આસેવનરૂપેણ સર્વથા વાચ્છિઽત । તતઃ સ્વલુ તસ્માત્
કારણાત્ અહ હે સ્વામિન્ । સસારમઉગ્ગિગ્મે ' સમારમયોદ્ગિગ્ન=સસારમયત્રસ્તઃ

મધ મેં-ઔર उनके आवक वर्म के पालन करने के समय में-स्थविर
मुनियों का वहां आगमन हुआ । जितशत्रु राजा और सुबुद्धि अमात्य
धर्म श्रवण के लिये अपने अपने २ स्थान से निकल कर उनके समीप
आये । सुबुद्धि ने धर्म का उपदेश सुनकर स्थविर मुनियों से निवेदन
किया-भदत ! मैं जितशत्रु राजा से पूछकर यावत् आपके पास आकर
मुनिदीक्षा धारण करना चाहता हूँ । स्थविरो ने सुबुद्धि अमात्य का
अभिप्राय जानकर उससे कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम्हे जिससे सुख हो
वैसा करो-श्रेयस्कर कार्य में विलम्ब करना हितावह नहीं है । इस तरह
सुबुद्धि वहां से आकर जहां जितशत्रु राजा ये वहां आया वहां आकर
कहा-स्वामिन् । मैंने स्थविर मुनिजनों के मुख से धर्म का उपदेश सुना
है । वह मुझे बहुत ही रचा है, मेरी उच्छा का विषय भूत बन गया है,
मेरी चाहना उस तरफ विशेष रूप से बढ़ गई है । मैं चाहता कि मैं

હતા તે ડાળે અને તેઓ જ્યારે શ્રાવણ ધર્મનું પાલન કરતા હતા તે સમયે-
ત્યા સ્થવિર મુનિઓ આવ્યા જિતશત્રુ રાજા અને સુબુદ્ધિ અમાત્ય ધર્મશ્રવણ
માટે પોતાપોતાને ત્યાંથી નીકળીને તેમની પાસે પહોંચ્યા ધર્મનો ઉપદેશ સાંભ
ળીને સુબુદ્ધિએ મુનિઓને વિનતી કરી કે હે ભદ્રત ! જિતશત્રુ રાજાની આજ્ઞા
મેળવીને તેમજ બીજી પણ ઘણી વ્યવસ્થાઓ વગેરે કરીને તમારી પાસે આવીને
મુનિ દીક્ષા ધારણ કરવા આહુ છું સ્થવિરોએ સુબુદ્ધિ અમાત્યના વિચારો
જાણીને કહ્યું કે હે દેવનુપ્રિય ! તમને જેમા મુખ્ય મળતું હોય તેમ કરો સારા
કામોમા મોડું કરવું યોગ્ય નહિ આ રીતે આજ્ઞા મેળવીને સુબુદ્ધિ ત્યાંથી
આવાને જિતશત્રુ રાજાની ખાતે પહોંચ્યા અને તેણે રાજાને વિનતી કરતા કહ્યું કે
હે સ્વામી ! સ્થવિર મુનિઓના મોથી મે ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળ્યો છે તે મને
મુખ્ય જ ગમી ગયો છે મારી ઈચ્છા તે તરફ આકર્ષાઈ છે વિશેષ ઉપમા હું
તેને આહવા લાગ્યો છું મારી ઈચ્છા છે કે સચમ ધારણ કરીને પોતાનું જીવન

‘ भीए ’भीतः जन्ममरणादि दुःखेभ्यो भय प्राप्तः, अतएव यावद् इच्छामि खलु युष्माभिरभ्यनुज्ञातः सन् यावत् स्थविराणामन्तिके प्रव्रजितुम् । ततः खलु जित-
शत्रुः सुबुद्धिमेवमवादीत्-‘ अच्छामु ’ तिष्ठेम त्वं तावद् गृहे हे देवानुप्रिय !
कतिपयानि वर्षाणि, उदारान् यावत्-मानुष्यकान् कामभोगान् भुञ्जानाः सन्तः,
ततः पश्चात्=तदनन्तर शब्दादिप्रियोयभोगानन्तरम् ‘ एगयओ ’ एकतः=सार्द्धम्
स्थविराणामन्तिके मुण्डो भूया यावत् प्रव्रजिष्याम. । ततः खलु सुबुद्धिर्जितशत्रो-
रेतमर्थ=पश्चादीक्षाग्रहणरूप भाव प्रतिशृणोति=स्वीकरोति । ततः खलु तस्य जित
शत्रोः सुबुद्धिना सार्द्धं विपुलान् मानुष्यकान् भोगभोगान् प्रत्यनुभवतो द्वादश

સયમ ધારણ કર અપને જીવન કો સફલ બનાઉં । ઇસ લિયે હે સ્વા
મિન્ । સસાર ભય સે ઉદ્વિગ્ન બના હુઆ મ જન્મ મરણ કે દુખો સે ભય
भीत होकर चाहता हूँ कि आपसे आज्ञापित हो स्थविरो के पास दीक्षा
धारण करलू । (तएणं जियसत्तू सुबुद्धि एव वयासी अच्छामु ताव देवाणु
कइवयाइति वासाइ उरालाइ जाव भुजमाणा तओ पच्छा एगयओ थेराण
अतिए मुडे भवित्ता जाव पव्वइस्सामो) अमात्य कि इस बात को
सुनकर जितशत्रु राजाने उस सुबुद्धि अमात्य से इस प्रकार कहा ।
देवानुप्रिय ! हम लोग कुछ वर्षों तक मनुष्य भव सबन्धी प्रचुर काम
भोगों को भोगते हुए अभी घर पर ही रहें । इस के बाद एक साथ
स्थविरों के पास मुण्डित होकर यावत् फिर दीक्षित हो जायेगे ।
(तएण सुबुद्धी जियसत्तूस्स, एयमइ पडिसुणेइ, तएण तस्स जियसत्तू
स्स, सुबुद्धिणा सद्धिं विपुलाइ, माणुस्स० पव्वणुब्भुवमाणस्स दुवाल

સફળ બનાવવું માટે હે સ્વામી ! સસાર ભયથી ઉદ્વિગ્ન તેમજ જન્મ મરણના
દુખોથી ભય પામેલો હું તમારી આજ્ઞા મેળવીને સ્થવિરોની પાસેથી દીક્ષા
મેળવવાની ઇચ્છા રાખુ છું

(તएण જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિ એવ વયાસી-અચ્છામુ તાવ, દેવાણુપ્પિયા ! કइवया
इति वासाइ उरालाइ जाव भुजमाणा तओ पच्छा एगयओ थेराण अतिए मुडे भवित्ता
जाव पव्वइस्सामो)

અમાત્યની એ વાત સાંભળીને જિતશત્રુ રાજાએ તે સુબુદ્ધિ અમાત્યને
આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! મનુષ્યલવના કામસુખોની મજા માણવા
માટે અમે થોડા વર્ષો હજી પણ ગૃહસ્થના જ રૂપમાં રહીએ તો સાર ત્યારપછી એકી
સાથે આપણે બંને સ્થવિરોની પાસે મુડિત થઈને દીક્ષા ધારણ કરી લઈશું

(તएण सुबुद्धी जियसत्तूरस्स एयमइ पडिसुणेइ, तएणं तस्स जियसत्तूरस्स सुबु
द्धिणा सद्धिं विपुलाइ माणुस्स० पव्वणुब्भुवमाणस्स इ०

वर्षाणि व्यतिक्रान्तानि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये द्वादश वर्षव्यतिक्रान्ते सतीत्यर्थः स्थविरागमन सजात, तएण=तदा खलु परिपन्निर्गत । जितशत्रुरपि स्थविरान्तिके धर्म श्रुत्वा 'एव' एवमेव पूर्वोक्त सुबुद्धि वदेव सर्वं नगर=विशेषस्त्व यम्-यत् हे देवानुप्रियाः । सुबुद्धिम् आमन्त्रयामि, ज्येष्ठपुत्र राज्ये स्थापयामि, ततः खलु=तत्पश्चात् युष्माकमन्तिके यावत्-मुण्डो भूत्वा आगारात्=अगारभावात् अनगारिता=साधुता प्रव्रजामि । स्थविरा ऊचु - हे देवानुप्रिय ! यथामुख=यथा

सवासाह वीइक्कनाह ताह तेण कालेण २ थेरागमण तएण जियसत्तू धम्मं सोच्चा एव ज नगर देवाणुप्पिया ! सुबुद्धि आमतेमि, जेद्वपुत्त रज्जे ठावेमि, तएण तुव्वम अतिए जाव पव्वयासि) इस प्रकार सुबुद्धि अमात्य ने जितशत्रु राजा की इस बात को स्वीकार कर लिया । इस तरह सुबुद्धि अमात्य के साथ विपुल मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगों का अनुभव करते हुए जितशत्रु राजाके १२ वर्ष निकल गये । उसकाल और उस समय में-अर्थात् १२ वर्ष व्यतीत हो जाने के समय में स्थविरोका वहां आगमन हुआ । नगर की परिपद स्थविरो का आगमन सुनकर धर्म सुनने की भावना से उन स्थविरो के पास आई । जितशत्रु राजा भी आये उनसे धर्म का उपदेश सुनकर जितशत्रु राजा सचेत हो गये । उन्होंने ने कहा हे देवानुप्रियो ! मैं आपसे दीक्षा लेना चाहता हूँ अतः पहिले सुबुद्धि अपने अमात्य से पूछूँ-और अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य में स्थापित करदूँ-बाद में आप के पास मुडित होकर अगार भाव से अनगार अवस्था स्वीकार करलूँगा । (अहामुह,

तेण कालेण २ थेरागमण तएण जियसत्तू धम्मं सोच्चा एव ज नगर देवाणुप्पिया सुबुद्धि आमतेमि जेद्वपुत्त रज्जे ठावेमि तएण तुव्वम अतिए जाव पव्वयामि)

आ रीते सुबुद्धि अमात्ये जितशत्रु राजानी बातने मानी लीधी सुबुद्धि अमात्यनी साथे कामलोगो लोगवता जितशत्रु राजने आमने आम ज गार वर्ष पसार थर्र गया ते ठाणे अने ते समये जेट्ठे के काममुणो लोगवता जितशत्रु राजने ज्यारे गार वर्षो पसार थर्र गया त्यारे त्या स्थविरो आव्या नगरनी परिपदो स्थविरोनु आगमन सालणीने धर्मनो उपदेश सालणवा भाटे स्थविरोनी पासो पडोथी जितशत्रु राज पण त्या गया अने धर्मनो उपदेश सालणने राज सावधान थर्र गया तेओओ स्थविरोने विनती करी के हे देवानुप्रियो ! हु तमारी पामेधी दीक्षा लेवा चाहु छु हु पडेला सुबुद्धि अमात्यने पूछी तउ अने पछी मारा ज्येष्ठ पुत्रने राज्यलार सोपी दउ तयारण ह तमारी पासो आवीने मुडित थर्रश ने अगारसावधी अनगार अवस्था स्वीकारीश,

‘ भीए भीतः जन्ममरणादि दुःखेभ्यो भय प्राप्तः, अतएव यावद् इच्छामि खलु युष्माभिरभ्यनुज्ञात’ सन् यावत् स्थविराणामन्तिके प्रजितुम् । ततः खलु जित शत्रुः सुबुद्धिमेवमवादीत्-‘ अच्छामु ’ तिष्ठेम त्रय तावद् गृहे हे देवानुप्रिय ! कतिपयानि वर्षाणि, उदारान् यावत्-मानुष्यकान् कामभोगान् भुञ्जानाः सन्तः, ततः पश्चात्=तदनन्तर शब्दादिरिषयोयभोगानन्तरम् ‘ एगयओ ’ एकतः=सार्द्धम् स्थविराणामन्तिके मुण्डो भूत्वा यावत् प्रजिप्यामः । ततः खलु सुबुद्धिर्जितशत्रो-रेतमर्थ=पश्चाद्दीक्षाग्रहणरूप भाव प्रतिशृणोति=स्वीकरोति । ततः खलु तस्य जित शत्रोः सुबुद्धिना सार्द्धं विपुलान् मानुष्यकान् भोगभोगान् प्रत्यनुभवतो द्वादश

સયમ ધારણ કર અપને જીવન કો સફલ બનાઝે । ઇસ લિયે હે સ્વા-
મિન્ ! સસાર ભય સે ઉદ્વિગ્ન બના હુઆ મે જન્મ મરણ કે દુખો સે ભય
भीत होकर चाहता हूँ कि आपसे आज्ञापित हो स्थविरो के पास दीक्षा
धारण करलू । (तएणं जियसत्तू सुबुद्धि एव वयासी अच्छामु ताव देवाणु
कइवयाइति वासाइ उरालाइ जाव भुजमाणा तओ पच्छा एगयओ थेराण
अतिए मुडे भविता जाव पव्वइस्सामो) अमात्य कि इस बात को
सुनकर जितशत्रु राजाने उस सुबुद्धि अमात्य से इस प्रकार कहो ।
देवानुप्रिय ! हम लोग कुछ वर्षों तक मनुष्य भव सवन्धी प्रचुर काम
भोगों को भोगते हुए अभी घर पर ही रहें । इस के बाद एक साथ
स्थविरों के पास मुण्डित होकर यावत् फिर दीक्षित हो जायेगे ।
(तएण सुबुद्धी जियसत्तूस्स, एयमह पडिसुणेइ, तएण तस्स जियसत्तू
स्स, सुबुद्धिणा सद्धिं विपुलाइ, माणुस्स० पच्चणुब्भुवमाणस्स दुवाल

સદ્ગુણ બનાવવું માટે હે સ્વામી ! સસાર ભયથી ઉદ્વિગ્ન તેમજ જન્મ મરણના
દુખોથી ભય પામેલો હું તમારી આજ્ઞા મેળવીને સ્થવિરોની પાસેથી દીક્ષા
મેળવવાની ઇચ્છા રાખું છું

(તएण જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિ એવ વયાસી-અચ્છામુ તાવ, દેવાણુપ્પિયા ! કइवया
इति वासाइ उरालाइ जाव भुजमाणा तओ पच्छा एगयओ थेराण अतिए मुडे भविता
जाव पव्वइस्सामो)

અમાત્યની એ વાત સાંભળીને જીતશત્રુ રાજાએ તે સુબુદ્ધિ અમાત્યને
આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! મનુષ્યભવના કામસુખોની મળત માણવા
માટે અમે થોડા વર્ષો હજી પણ ગૃહસ્થતા જ રૂપમા રહીએ તો સાફ ત્યારપછી એકી
સાથે આપણે બંને સ્થવિરોની પાસે મુડિત થઈને દીક્ષા ધારણ કરી લઈશું

(તएण સુબુદ્ધી જિયસત્તૂસ્સ એયમહ પડિસુણેइ, તएण તસ્સ જિયસત્તૂસ્સ સુબુ-
દ્ધીના સદ્ધિં વિપુલાइ માણુસ્સ० પવ્વણુબ્ભુવમાણસ્સ દુવાલમવાસાइ વીક્કતાइ,

યદિ ભયાન્ પ્રવ્રજતિ તદા મે ક્ષોડન્ય આધારો વા યાવત્-અહમપિ જ્યેષ્ઠપુત્ર કુટુમ્બે સ્થાપયિત્વા ભવતા સાદ્ધં પ્રવ્રજામિ । જિતશત્રુ પ્રાઠ-તદ્ યદિ સ્વલ્પ હે દેવાનુપ્રિય ! યાવત્ પ્રવ્રજેઃ તદ્ ગચ્છ સ્વલ્પ હે દેવાનુપ્રિય ! જ્યેષ્ઠપુત્ર ચ કુટુમ્બે સ્થાપય, સ્થાપયિત્વા શિવિકા દુરુહ મમાન્નિકે પ્રાદુર્ભવ, ઇતિ શ્રુત્વા સ સુબુદ્ધિરમાત્યઃ રાજાજ્ઞાનુસારેણ સર્વં કૃત્વા યાવત્ પ્રાદુર્ભવતિ । તતઃ સ્વલ્પ જિતશત્રુઃ કૌટુમ્બિક પુરુષાન્ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમવદત્-ગચ્છત સ્વલ્પ યૂય હે દેવાનુપ્રિયા ! અદીનશત્રોઃ કુમારસ્ય રાજ્યાભિષેકમુપસ્થાપયત યાવત્ તે રાજાજ્ઞા પ્રાપ્યાદીનશત્રુ

કર જિન દીક્ષા ધારણ કરના ચાહતા હું । કહો તુમ્હારી કયા રાય હે ? જિતશત્રુ રાજા કી હસ વાત કો સુનકર અમાત્ય સુબુદ્ધિ ને ડનસે કહા—યદિ ઓપ દીક્ષા ધારણ કરના ચાહતે હૈ, તો અવ મેરે લિયે આપકે સિવાય ઓર કોન દૂસરા આધાર હો સકતા હૈ । અતઃ મેં ભી અપને જ્યેષ્ઠ પુત્ર કો કુટુમ્બ મેં અપને સ્થાન પર સ્થાપિત કર આપકે સાથ હી દીક્ષિત હોના ચાહતા હું । અમાત્ય સુબુદ્ધિ કી હસ ભાવના કો સુન કર જિતશત્રુ ને ડસસે કહા—હે દેવાનુપ્રિય ! યદિ તુમ મેરે સાથ હી દીક્ષિત હોના ચાહતે હો તો જાઓ—ઓર અપને જ્યેષ્ઠ પુત્ર કો કુટુમ્બ મેં સ્થાપિત કરો—સ્થાપિત કર ફિર શિવિકા પર આરુઢ હો મેરે પાસ આ જાઓ । (જાવ પાડવ્મવહ, તણ જિયસત્તૂ કોટુપ્રિયપુરિસે સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી - ગચ્છહણં તુવ્મે દેવાણુપ્પિયા અદીણસત્તૂસ્સ કુમારસ્સ રાયાભિસેય ઉવટ્ઠવેહ, જાવ અભિસિંચતિ, જાવ પવ્વહણ, તણં જિયસત્તૂ ણકારસઅગાહ અહિજ્જહ) સુબુદ્ધિ અમાત્ય ને રાજા

દીક્ષા ધારણ કરવા ઇચ્છુ છુ બોલો તમારો શો વિચાર છે ? જિતશત્રુ રાજાની આ વાત સામળીને અમાત્ય સુબુદ્ધિએ તેને કહ્યું કે જો તમે દીક્ષિત થવા ઇચ્છો છો ત્યારે તમારા સિવાય બીજો મારો કોણ આધાર છે અથવા થઈ શકે છે ? એટલા માટે હું પણ મોટા પુત્રને કુટુમ્બના વડા તરીકે નીમીને તમારી સાથે જ દીક્ષા સ્વીકારી લઉં છું અમાત્ય સુબુદ્ધિની આ વાત સામળીને જિતશત્રુએ તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! જો મારી સાથે જ દીક્ષિત થવાની તમારી ઇચ્છા હોય તો તમે મોટા પુત્રને કુટુમ્બના વડા તરીકે નીમો અને ત્યારપછી પાલખી ઉપર સવાર થઈને મારી પાસે આવી જાવ

(જાવ પાડવ્મવહ, તણ જિયસત્તૂ કોટુપ્રિયપુરિસે સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી ગચ્છહ ણ તુવ્મે દેવાણુપ્પિયા અદીણસત્તૂસ્સ કુમારસ્સ રાયાભિસેય ઉવટ્ઠવેહ જાવ અભિસિંચતિ જાવ પવ્વહણ, તણ જિયસત્તૂ ણકારસઅગાહ અહિજ્જહ)

તે મનસિ સુખ સ્યાત્તથા કુરુવેત્યર્થઃ । તત્ સ્વલુ જિતશત્રુર્યન્નૈવ સ્વક ગૃહં તર્ગીયો
પાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સુબુદ્ધિ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમપદત્-એવ સ્વલુ હે
દેવાનુપ્રિય ! મયા સ્થવિરાણામન્તિકે ધર્મેનિશાન્તઃ, મોઽપિ ચ ધર્મે ઇષ્ટઃ, પ્રતીષ્ઠઃ,
અભિરુચિતઃ, તસ્માદહ મુખ્ડો ભૂત્યા અગારાદ્ અનગારિતા પ્રવ્રજામિ, ત્વ ચ સ્વલુ
કિં કરોપિ=તવ કા વાઙ્મય વર્તતે इत्यर्थः । તત્ સ્વલુ સુબુદ્ધિર્જિતશત્રુમેત્રમવાદીત્-

તएण जियसत्तू जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता,
सुबुद्धिं सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी- एव खलु देवाणुप्पिया । मए
थेराण जाव पव्वज्जामि, तुम ण किं करेसि, तएण सुबुद्धी जियसत्तू एव
वयासी-जाव के अन्ने आहारे वा जाव पव्वज्जामि, त जइण देवाणु-
प्पिया ! जाव पव्वयहिं त गच्छह ण देवाणुप्पिया ! जेइ पुत्त च कुडुंवे
ठावेहि ठावित्ता सीय दुरुहित्ता ण मम अतिण पाउब्भवइ) स्थविरो ने
कहा-हे देवानुप्रिय ! यथा सुख-तुम्हें जैसे सुख हो वैसा करो-हितावह
कार्य में विलय करना उचित नहीं है । इसके अनंतर वे जितशत्रु राजा
वहाँ से अपने घर पर आये । वहाँ आकर उन्होंने अपने अमात्य सुबुद्धि
को बुलाया बुलाकर उससे इस प्रकार कहा हे देवानुप्रिय । मैंने स्थविरो
से श्रुतचारित्र रूप धर्म का उपदेश सुना है । वह धर्म मुझे बहुत ही
अधिक इष्ट, प्रतीच्छित हुआ है । मेरे अन्तः करण में वह समा गया
है । इस लिये मैं अब मुडित होकर इस अगार अवस्था का परित्याग

(अहा सुह, तएण जियसत्तू जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
सुबुद्धिं सदावेइ सदावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराण जाव
पव्वज्जामि तुम ण किं करेसि, तएण सुबुद्धी जियसत्तू एव वयासी, जाव के अने
आहारे वा जाव वज्जामि त जइण देवाणुप्पिया ! जाव पव्वयहिं त गच्छहण देवाणु
प्पिया ! जेइ पुत्त च कुडुंवे ठावेहि ठावित्ता सीय दुरुहित्ता ण मम अतिण पाउब्भवइ)

स्थવિરોએ રાજાને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! ‘યથા સુખ’ એટલે કે તમને
જેમા સુખ મળતું હોય તેમ કરો. સારા ઠામોમા મોડું ઝરવું થોડું નથી ત્યારપછી
જિતશત્રુ રાજા પોતાને ઘેર આવ્યા ત્યાં આવીને તેઓએ પોતાના અમાત્ય
સુબુદ્ધિને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય !
મેં સ્થવિરોની પાનેથી શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળ્યો છે તે ધર્મ
મારા માટે ખૂબ જ ઈષ્ટ અને પ્રતિચ્છિત થઈ ગયો છે. મારા અંતરમાં તે
ખૂબ જ ઊંડે પહોંચી ગયો છે એટલે કે આત્માના પ્રતિ પ્રદેશમાં તે વ્યાપ્ત
થઈ ગયો છે. માટે હું હવે મુડિત થઈને આ અગાર અવસ્થાને ત્યાજીને જીવ

यदि भवान् प्रजति तदा मे कोऽन्य आधारी वा यावत्-अहमपि ज्येष्ठपुत्र कुटुम्बे स्थापयित्वा भवता साद्धं प्रजामि । जितशत्रु प्राह-तद् यदि खलु हे देवानुप्रिय ! यावत् प्रजेः तद् गच्छ खलु हे देवानुप्रिय ! ज्येष्ठपुत्र च कुटुम्बे स्थापय, स्थापयित्वा शिविका दूर्य ममान्निके प्रादुर्भव, इति श्रुत्वा स सुबुद्धिरमात्यः राजाज्ञानुसारेण सर्वं कृत्वा यावत् प्रादुर्भवति । ततः खलु जितशत्रुः कौटुम्बिक पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिया ! अदीनशत्रोः कुमारस्य राज्याभिषेकमुपस्थापयत यावत् ते राजाज्ञा प्राप्यादीनशत्रु

कर जिन दीक्षा धारण करना चाहता हूँ । कहो तुम्हारी क्या राय है ? जितशत्रु राजा की इस बात को सुनकर अमात्य सुबुद्धि ने उनसे कहा—यदि आप दीक्षा धारण करना चाहते हैं, तो अब मेरे लिये आपके सिवाय और कौन दूसरा आधार हो सकता है । अतः मैं भी अपने ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब में अपने स्थान पर स्थापित कर आपके साथ ही दीक्षित होना चाहता हूँ । अमात्य सुबुद्धि की इस बात को सुन कर जितशत्रु ने उससे कहा—हे देवानुप्रिय ! यदि तुम मेरे साथ ही दीक्षित होना चाहते हो तो जाओ—और अपने ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब में स्थापित करो—स्थापित कर फिर शिविका पर आरूढ़ हो मेरे पास आ जाओ । (जाव पाउवभवइ, तएण जियसत्तू कोटुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी - गच्छहण तुव्वे देवाणुप्पिया अदीणसत्तूस्स कुमारस्स रायाभिसेय उवट्ठवेइ, जाव अभिसिंचति, जाव पव्वइए, तएणं जियसत्तू एक्कारसअगाइ अहिज्जइ) सुबुद्धि अमात्य ने राजा

दीक्षा धारण करवा छिछु छु जोलो तमारो शो चिन्तार छे ? जितशत्रु राजानी आ बात सामजीने अमात्य सुबुद्धिजे तेने कह्यु छे जे ते तमे दीक्षित थवा छच्छे छे । त्यारे तमारा सिवाय जीने मारे जोणु आधार छे अथवा थर्छ शके छे ? ओटला माटे हु पणु मोटा पुत्रने कुटुम्बना वडा तरीके नीमीने तमारी साथे न दीक्षा स्वीकारी लउ छु अमात्य सुबुद्धिनी आ बात सामजीने जित शत्रुजे तेने कह्यु छे छे देवानुप्रिय ! जे मारी साथे न दीक्षित थवानी तमारी छच्छे होय तो तमे मोटा पुत्रने कुटुम्बना वडा तरीके नीमे अने तयारपणी पावणी उपर सवार थछने मारी पासे आवी नव

(जाव पाउवभवइ, तएण जीयसत्तू कोटुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुव्वे देवाणुप्पिया अदीणसत्तूस्स कुमारस्स रायाभिसेय उवट्ठवेइ जाव अभिसिंचति जाव पव्वइए, तएण जियसत्तू एक्कारसअगाइ अहिज्जइ)

તે મનસિ સુખ સ્યાત્તથા કુરુવેત્યર્થઃ । તતઃ સલુ જિતશત્રુયંત્રેવ સ્વક ગૃહં તગૈયો
પાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સુબુદ્ધિ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમપદત્-એવ સલુ હે
દેવાનુપ્રિય ! મયા સ્થવિરાણામન્તિકે ધર્મોનિશાન્તઃ, મોઽપિ ચ ધર્મે દૃષ્ટઃ, પ્રતીષ્ઠઃ,
અભિરુચિતઃ, તસ્માદહ મુણ્ડો ભૂત્યા અગારાદ્ અનગારિતા પ્રજામિ, સ્વ ચ સલુ
કિં કરોપિ=તવ કા વાઙ્ઠા વર્તતે इत्यર્થઃ । તત સલુ સુબુદ્ધિર્જિતશત્રુમેવમવાદીત્-

તણ જિયસત્તૂ જેણેવ સણગિહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા,
સુબુદ્ધિ સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી- એવ સલુ દેવાણુપ્પિયા । મણ
થેરાણ જાવ પવ્વજ્જામિ, તુમ ણં કિં કરેસિ, તણ સુબુદ્ધી જિયસત્તૂ એવ
વયાસી-જાવ કે અન્ને આહારે વા જાવ પવ્વજ્જામિ, ત જહ્ણ દેવાણુ-
પ્પિયા ! જાવ પવ્વયર્હિં ત ગચ્છહ ણ દેવાણુપ્પિયા ! જેઠ્ઠ પુત્ત ચ કુડુંબે
ઠાવેહિ ઠાવિત્તા સીય દુરુહિત્તા ણ મમ અતિણ પાઠ્ઠમ્મવહ) સ્થવિરોં ને
કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! યથા સુખ-તુમ્હેં જૈસે સુખ હો વૈસા કરો-હિતાવહ
કાર્ય મેં વિલગ્ન કરના ઉચિત નહીં હૈં । હમકે અનતર વે જિતશત્રુ રાજા
વર્હાં સે અપને ઘર પર આવે । વહ! આકર ઉન્હોને અપને અમાત્ય સુબુદ્ધિ
કો બુલાયા બુલાકર હસસે હસ પ્રકાર કહા હે દેવાનુપ્રિય । મેંને સ્થવિરોં
સે શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મ કા ઉપદેશ સુનાં હૈં । વહ ધર્મ સુણે વહુત હી
અધિક દૃષ્ટ, પ્રતીચ્છિત હુઆ હૈં । મેરે અન્તઃ કરણ મેં વહ સમા ગયા
હૈં । હસ લિયે મે અવ મુહિત હોકર હસ અગાર અવસ્થા કા પરિત્યાગ

(અહા સુહ, તણ જિયસત્તૂ જેણેવ સણગિહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા
સુબુદ્ધિ સદાવેહ સદાવિત્તા એવ વયાસી એવ સલુ દેવાણુપ્પિયા । મણ થેરાણ જાવ
પવ્વજ્જામિ તુમ ણ કિં કરેસિ, તણ સુબુદ્ધી જિયસત્તૂ એવ વયાસી, જાવ કે અન્ને
આહારે વા જાવ વજ્જામિ ત જહ્ણ દેવાણુપ્પિયા ! જાવ પવ્વયર્હિં ત ગચ્છહ ણ દેવાણુ
પ્પિયા । જેઠ્ઠ પુત્ત ચ કુડુંબે ઠાવેહિ ઠાવિત્તા સીય દુરુહિત્તા ણ મમ અતિણ પાઠ્ઠમ્મવહ)

સ્થવિરોએ રાબને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! ‘યથા સુખ’ એટલે કે તમને
જેમા સુખ મળતું હોય તેમ કરે । સારા કામોમા મોડું કરવું યોગ્ય નથી ત્યારપછી
જિતશત્રુ રાબ પોતાને ઘેર આવ્યા ત્યાં આવીને તેઓએ પોતાના અમાત્ય
સુબુદ્ધિને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય !
મેં સ્થવિરોની પાસેથી શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળ્યો છે તે ધર્મ
મારા માટે ખૂબ જ ઈષ્ટ અને પ્રતિચ્છિત થઈ ગયો છે । મારા અંતરમા તે
ખૂબ જ હાડે પહોંચી ગયો છે એટલે કે આત્માના પ્રતિ પ્રદેશમા તે વ્યાપ્ત
થઈ ગયો છે । માટે હું હવે મુહિત થઈને આ અગાર અવસ્થાને ત્યજીને જવું

પૂર્વોક્તપ્રકારેણ સ્વલુ છે જન્મૂઃ ' શ્રમણેન ભગવતા શ્રીમહાવીરેણ યાત્રત્ સિદ્ધિગ-
તિનામધેય સ્થાન સમ્પ્રાપ્તેન દ્વાદશસ્ય ઉદકારુયસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય અય=પૂર્વોક્ત-
પ્રકારઃ અર્થઃ=ભાવ પ્રજ્ઞત ' તિવેમિ ' ઇતિ વ્રવીમિ યથા ભગવાન્મુલાચ્છ્રુત તથૈવ
તુમ્ય પ્રતિપાદયામિ ॥ સૂ૦ ૨ ॥

ઇતિ શ્રી-ત્રિશ્વવિખ્યાત-જગદૂલ્લભ-પ્રસિદ્ધવાચકપશ્ચદશભાષાકલિતલલિતક-
લાપાલાપક-પ્રવિશુદ્ધગદ્યપદ્યનૈકગ્રન્થનિર્માપક-વાદિમાનમર્દક-શ્રીશાહુચ્છ-
ત્રપતિકોલ્હાપુરરાજપ્રદત્ત-' જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય ' પદભૂષિત-કોલ્હાપુરરાજ-
ગુરુ-વાલ્મીકીચારિ-જૈનાચાર્ય-જૈનધર્મદિવાકરપૂજ્યશ્રી-ઘાસીલાલ-
વ્રતિવિરચિતાયા ' જ્ઞાતાધર્મકથાજ્ઞ ' સૂત્રસ્યાનગારધર્મામૃતવ-
ર્ષિણ્યાખ્યાયા વ્યાખ્યાયા દ્વાદશમધ્યયન સર્પૂર્ણમ્ ॥૧૨ ॥

કો પ્રાપ્ત કર લિયા । સુધર્મા સ્વામી જન્મ સ્વામી સે કહતે હૈં-હે જન્મ !
શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત
હો જુકે હૈં હસ દ્વાદશ ઉદકારુય જ્ઞાતાધ્યયન કા હસ પ્રકાર સે યહ
પૂર્વોક્ત રૂપ અર્થ નિરૂપિત કિયા હૈ । સો જૈસા મૈને ઉન ભગવાન્ કે
મુલ સે સુના હૈ વૈસા હી યહ તુમ સે કહા હૈ । અપની તરફ સે હસ મેં
કુછ બી મિલાવટ નહીં કી હૈ । સૂત્ર ॥ ૨ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત " જ્ઞાતા-
ધર્મકથાજ્ઞસૂત્ર " કી અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાકા ચારહવાં
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૨ ॥

અને છેવટે સિદ્ધાવસ્થા પ્રાપ્ત કરી લીધી સુધર્મા સ્વામી જન્મ સ્વામીને કહે છે
કે હે જન્મ ! સિદ્ધગતિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ દ્વાદશ-ઉદકારુય
જ્ઞાતા-ધ્યયનનો ઉપર કહ્યા પ્રમાણે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે મે ભગવાનના
શ્રીમુખથી જેવો અર્થ આભળ્યો છે તેવો જ તમારી સામે સ્પષ્ટ કર્યો છે મે
આમા પોતાની મેળે કંઈ પણ વાત ઉભરી નથી ॥ સૂત્ર " ૨ " ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી

વ્યાખ્યાનુ ખારમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૨ ॥

રાજ્યેऽભિપિશ્વતિ યાત્-જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિનાઽમાત્યેન સહ પ્રવ્રજિતઃ । તતઃ
 સ્વલુ જિતશત્રુરેકાદશાઙ્ગાનિ અગ્રીતે । વહ્નિ વર્ષાણિ પર્યાયઃ=શ્રામણ્યપર્યાયઃ ।
 માસિકયા સહેલ્લનયા સિદ્ધઃ । તતઃ સ્વલુ સુબુદ્ધિ રેકાદશાઙ્ગાનિ-અગ્રીતે, વહ્નિ
 વર્ષાણિ શ્રામણ્યપર્યાય પાલયિત્વા યાત્સિદ્ધઃ । સુધર્માસ્વામી કથયતિ-एवम्=

કે કહે અનુસાર સવ કાર્ય વૈસા હી કિયા । યાદ મેં વહ જિતશત્રુ રાજા
 કે પાસ આ ગયા । જિતશત્રુ રાજા ને હસ કે અનતર કૌટુંબિક પુરુષો
 કો ઘુલાયા-ઘુલાકર ઉનસે એસા કહા-દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ જાઓ
 ઓર યુવરાજ અદીન શત્રુ કુમારકા રાજ્યાભિષેક કરો । રાજાકી આજ્ઞા-
 નુસાર ઉન લોગોને વૈસા હી કિયા -અદીન શત્રુ રાજા સુબુદ્ધિ અમાત્ય
 કે સાથ દીક્ષિત હો ગયે । રાજર્ષી જિતશત્રુને ૧૧ ગ્યારહ અંગોકા અધ્યયન
 કિયા । (વહ્નિ વાસાણિ પરિયાઓ માસિયાએ સિદ્ધે, તણ સુબુદ્ધી એગા
 રસ અગાહ અહિજ્જહ, વહ્નિ વાસાહ જાવ સિદ્ધે । એવ સ્વલુ જબૂ ! સમ
 ણેણં ભગવયા મહાવીરેણ વારમસ્સ ણાયઙ્ગયણસ્સ એયમદ્દે પણ્ણત્તે ત્તિ
 વેમિ) અનેક વર્ષોતક શ્રામણ્યપર્યાય કા પાલન કિયા । યાદમેં એક માસ
 કી સહેલ્લનાસે ૬૦ ભક્તોકા અનશન દ્વારાછેદન કર વે સિદ્ધાવસ્થાપન્ન
 હો ગયે । સુબુદ્ધિ સુનિરાજ ને ૧૧ ગ્યારહ અંગોકા અચ્છી તરહ અધ્યયન
 કિયા-ઓર ઘહુત વર્ષોતક શ્રામણ્ય પર્યાય કા પાલન કર સિદ્ધ અવસ્થા

૧૪૪ ૩ સુબુદ્ધિ અમાત્યે રાજાની આજ્ઞા સુજ્ઞા જ બધુ કામ પતાવી દીધુ ત્યાર
 પછી તે રાજાની પાસે આવ્યો । જિતશત્રુ રાજાએ પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને
 બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો જાઓ
 અને યુવરાજ અદીનશત્રુ કુમારને રાજ્યાભિષેક કરો । રાજાની આજ્ઞા સાલજીને
 તે લોકોએ બધી વિધિ પૂરી કરી હીધી આ પ્રમાણે અદીનશત્રુકુમારને રાજ્યા
 સને બેસાડીને જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિ અમાત્યની સાથે દિક્ષિત થઈ ગયા
 રાજાકી જિતશત્રુએ અગિયાર અંગોતુ અધ્યયન કર્યું

(વહ્નિ વાસાણિ પરિયાઓ માસિયાએ સિદ્ધે, તણ સુબુદ્ધી એગારસઅગાહ
 અહિજ્જહ, વહ્નિ વાસાહ જાવ સિદ્ધે । એવ સ્વલુ જબૂ ! સમણેગ ભગવયા મહાવીરે
 ણ વારમસ્સ ણાયઙ્ગયણસ્સ એયમદ્દે પણ્ણત્તે ત્તિવેમિ)

તેઓએ ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કર્યું ત્યારપછી એક
 માસની સહેલ્લનાથી ૬૦ ભક્તોતુ અનશન દ્વારા છેદન કર્યું અને ત્યારબાદ
 તેઓ સિદ્ધ થઈ ગયા । સુનિરાજ સુબુદ્ધિએ પણ સારી પેઠે અગિયાર
 અંગોતુ અધ્યયન કર્યું અને ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કર્યું

પૂર્વોક્તપ્રકારેણ સ્વલુ હે જમ્બૂઃ ! શ્રમણેન ભગવતા શ્રીમહાવીરેણ યાત્રત્ સિદ્ધિગ-
તિનામધેય સ્થાન સમ્પાસેન દ્વાદશસ્ય ઉદકાલ્યસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય અય=પૂર્વોક્ત-
પ્રકારઃ અર્થઃ=ભાવ મદ્દત્ત 'ત્તિવેમિ' ઇતિ વ્રત્તીમિ યથા ભગવાન્મુખાચ્છુત તથૈવ
તુમ્ય પ્રતિપાદયામિ ॥ સૂ૦ ૨ ॥

ઇતિ શ્રી-વિશ્વવિખ્યાત-જગદ્વલ્લભ-પ્રસિદ્ધવાચકપશ્ચદશભાષાકલિતલલિતક-

લાપાલાપક-પ્રવિશુદ્ધગદ્યપદ્યનૈકગ્રન્થનિર્માપક-વાદિમાનમર્દક-શ્રીશાહુચ્છ-

ત્રપતિકોલ્હાપુરરાજપ્રદત્ત-'જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય' પદભૂષિત-કોલ્હાપુરરાજ

ગુરુ-બાલવ્રહ્મચારિ-જૈનાચાર્ય-જૈનધર્મદિવાકરપૂજ્યશ્રી-ઘાસીલાઝ-

વ્રતિવિરચિતાયા 'જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગ' સૂત્રસ્યાનગારધર્મામૃતવ-

ર્ષિણ્યાખ્યાયા વ્યાખ્યાયા દ્વાદશમધ્યયન સર્પૂર્ણમ્ ॥૧૨ ॥

કો પ્રાપ્ત કર લિયા । સુધર્મા સ્વામી જમ્બૂ સ્વામી સે કહતે હૈં-હે જમ્બૂ !
શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત
હો શુકે હૈં હસ દ્વાદશ ઉદકાલ્ય જ્ઞાતાધ્યયન કા હસ પ્રકાર સે યહ
પૂર્વોક્ત રૂપ અર્થ નિરૂપિત કિયા હૈ । સો જૈસા મૈને ઉન ભગવાન્ કે
મુખ સે સુના હૈ વૈસા હી યહ તુમ સે કહા હૈ । અપની તરફ સે હસ મેં
કુછ બી મિલાવટ નહીં કી હૈ । સૂત્ર ॥ ૨ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત "જ્ઞાતા-

ધર્મકથાઙ્ગસૂત્ર" કી અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાકા ચારહવાં

અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૨ ॥

અને છેવટે સિદ્ધાવસ્થા પ્રાપ્ત કરી લીધી સુધર્મા સ્વામી જમ્બૂ સ્વામીને કહે છે
કે હે જમ્બૂ ! સિદ્ધગતિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ દ્વાદશ-ઉદકાલ્ય
જ્ઞાતા-ધ્યયનનો ઉપર કહ્યા પ્રમાણે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે મે ભગવાનના
શ્રીમુખથી જેવો અર્થ આલજ્યો છે તેવો જ તમારી સામે સ્પષ્ટ કર્યો છે મે
આમા પોતાની મેળે કાંઈ પણ વાત ઉમરી નથી ॥ સૂત્ર " ૨ " ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી

વ્યાખ્યાનુ બારમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૨ ॥

अथ त्रयोदशममध्ययनम् प्रारभ्यते ।

गत द्वादशमध्ययनम्, सम्प्रति त्रयोदशमारभ्यते—अस्याध्ययनस्य पूर्वेण सहाऽयं सम्प्रधः—पूर्वस्मिन् अध्ययने ससर्गविशेषश्चाद् गुणवृद्धिरुक्ता, इह तु त्रयोदशेऽध्ययने तद्भावात् गुणहानिरुच्यते इत्येव पूर्वाध्ययनेन सह अयमेव संबद्ध तस्येदमादि सूत्रमाह—‘ जइ ण भते ’ इत्यादि ।

मूलम्—जइण भते । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण वारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते, तेरस मस्स ण भते । णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेण के अट्ठे पणत्ते ? एवं खलु जवू । तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णाम नयरे होत्था, गुणसिलए चेइए, समोसरण, परिसा निग्गया । तेण कालेण तेणं समएण सोहम्मे कप्पे दइरवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए, दहु रसि सीहासणसि दइरे देवे, चउहि समाणियसाहस्सीहि चउहि अग्गमहिस्सीहि सपरिसाहि एव जहा सूरियाभो जाव दिट्ठाइ भोगभोगाइ भुजमाणो विहरइ ॥ सू० १ ॥

—, णद मणियार नाम का तेरहवा अध्ययन प्रारभः—

१२वारवा अध्ययन समाप्त हो चुका । अब तेरहवा अध्ययन प्रारभ होता है । इस का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से संबन्ध है कि पूर्व अध्ययन में ससर्ग (सत्सर्ग) विशेष के वश से० गुण वृद्धि कही गई है—यहां इस तेरहवें अध्ययन में उस के अभाव से गुण हानि कही जावेगी । ‘ जइण भते ’ समणेण ’ इत्यादि । सूत्र ॥ १ ॥

शुद्ध मणियार नामे तेरमु अध्ययन प्रारभ

आरमु अध्ययन पूइ थछ थूकथु छे डवे तेरमु अध्ययन प्रारभ थाय छे आ अध्ययननी साथे आ जतने। संबध छे के पडैवाना अध्ययनमा ससर्ग (सोमत्) विशेषथी शुण वृद्धि जताववाभा आवी छे आ तेरमा अध्ययनमा ससर्ग विशेषना अभावथी शुण-हानि निरूपवाभा आवशे

जइण भते ! समणेण इत्यादि

ટીકા—જમ્બૂ સ્વામી પૃચ્છતિ—યદિ સ્વલુ ભદન્ત । શ્રમણેન ભગવતા મહા-
વીરેણ યાવત્ સંપાત્તેન, મિદ્ધિગતિનામધેય સ્થાન ગતેન, દ્વાદશસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય
'અયમદ્વે' અયમર્થ. = સસર્ગવિશેષવશાદ્ ગુણવૃદ્ધિરૂપોઽર્થ. 'પણ્ણત્તે' પ્રજ્ઞપ્તઃ=
પ્રરૂપિતઃ, તર્હિ તદનન્તરમ્ ત્રયોદશસ્ય ચ ભદન્ત । જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય, શ્રમણેન
ભગવતા મહાવીરેણ કોઽપિ પ્રજ્ઞપ્તઃ । સુધર્મા સ્વામી કથયતિ—એવ સ્વલુ
હે જમ્બૂ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહ નામ નગરમાસીત ।

ટીકાર્થ—(જહ્ણ ભતે) હે ભદત ! યદિ (સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ)
શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને (જાવ સંપત્તેણ વારમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ
અયમદ્વે પળ્ણત્તે તેરમસ્સ ણ ભતે । ણાયજ્ઞયણસ્સ સમણેણ ભગવયા
મહાવીરેણ કે અદ્વે પળ્ણત્તે) કિ જો મિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કે માગી
યન ચુકે હૈ વારહવે જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ નિર્દિષ્ટ
કિયા હૈ—તો હે ભદત ડન્હી શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને ડસ તેરહવે
જ્ઞાતાધ્યયન કા કયા માવ—અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ ? (એવ સ્વલુ જમ્બૂ !
તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે નામ નયરે હોત્યા, ગુણસિલ્લ વેહણ,
સમોસરણ, પરિસા નિગ્ગયા) હસ પ્રકાર જમ્બૂ સ્વામી કા પ્રશ્ન સુનકર
શ્રી સુધર્મ સ્વામી ડન્હે સમજ્ઞા ને કે નિમિત્ત કહતે હૈ કિ જમ્બૂ ! સુનો
તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈ ડસ કાલ ઓર ડસ સમય મેં
રાજગૃહ નામ કા નગર થા । ડસ નગર કે ઘહિર્માગ મેં ગુણશિલક
નામ કા ચૈત્ય થા । ડસ મેં ભગવાન્ મહાવીર પ્રભુ આયે । પ્રભુ કે

ટીકાર્થ—(જહ્ણ ભતે ।) હે ભદન્ત ! જો (સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ)
શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—

(જાવ સંપત્તેણ વારમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્વે પળ્ણત્તે તેરસમસ્સ ણ ભતે ।
ણાયજ્ઞયણસ્સ સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ કે અદ્વે પળ્ણત્તે)

કે જો સિદ્ધગતિ મેજવેલા છે—ખારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ ઉપગ્રહ
ગુણ અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ત્યારે હે ભદન્ત ! તેઓ શ્રમણ ભગવાન મહા
વીરે આ તેરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો જો ભાવ—અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ?

(એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે નામ નયરે હોત્યા,
ગુણસિલ્લ વેહણ, સમોસરણ પરિસા નિગ્ગયા)

આ પ્રમાણે જમ્બૂ સ્વામીનો પ્રશ્ન નાલળીને સુધર્મા સ્વામી તેમને સમ
જાવવા માટે કહેવા લાગ્યા કે હે જમ્બૂ ! સાલજો, તમાગ પ્રશ્નનો ઉત્તર આ
પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તે નગરની

अथ त्रयोदशममध्ययनम् प्रारभ्यते ।

गत द्वादशमध्ययनम्, सम्पत्ति त्रयोदशमारभ्यते-अस्याध्ययनस्य पूर्वेण सहाऽय सम्बन्धः-पूर्वस्मिन् अध्ययने ससर्गविशेषाद् गुणवृद्धिरुक्ता, इह तु त्रयोदशेऽध्ययने तदभावात् गुणहानिरुच्यते इत्येव पूर्वाध्ययनेन सह अयमेव संबन्ध तस्यैवमादि सूत्रमाह-‘ जइ ण भते ’ इत्यादि ।

मूलम्-जइण भते । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण चारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पणणत्ते, तेरस मस्स ण भंते । णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पणणत्ते ? एव खलु जवू । तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णाम नयरे होत्था, गुणसिलए चेइए, समोसरण, परिसा निग्गया । तेण कालेण तेण समएण सोहम्मे कप्पे ददुरवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए, ददु रंसि सीहासणसि ददुरे देवे, चउहि समाणियसाहस्सीहि चउहि अग्गमहिसीहि सपरिसाहि एव जहा सूरियाभो जाव दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणो विहरइ ॥ सू० १ ॥

-, णद मणियार नाम का तेरहवा अध्ययन प्रारभ-

१२वारवा अध्ययन समाप्त हो चुका । अब तेरहवा अध्ययन प्रारभ होता है । इस का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से संबन्ध है कि पूर्व अध्ययन में ससर्ग (सत्सर्ग) विशेष के वश से० गुण वृद्धि कही गई है-यहा इस तेरहवें अध्ययन में उस के अभाव से गुण हानि कही जावेगी । ‘ जइण भते ! समणेण ’ इत्यादि । सूत्र ॥ १ ॥

छुट भणियार नामे तेरमु अध्ययन प्रारभ

प्रारभु अध्ययन पूरे थई थूक्यु छे डवे तेरमु अध्ययन प्रारभ थाय छे आ अध्ययननी साथे आ जतनेो संबध छे डे पडेवाना अध्ययनमा ससर्ग (सोमत) विशेषथी गुण वृद्धि जताववाभा आवी छे आ तेरमा अध्ययनमा ससर्ग विशेषना अलावथी गुण-हानि निरूपवाभा आवशे

जइण भते ! समणेण इत्यादि

मूलम्—इमं च ण केवलकप्प जवूदीव दीव विउलेणं ओ-
हिणा आभोएमाणेर जाव नट्टविहि उवदसित्ता पडिगए ।
जहा सूरियाभे । भतेति भगव गोयसे समणे भगव महा-
वीरं वदइ णमसइ वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—अहो णं
भते । ददुरेदेवे महड्डिए महज्जुइए महावले महाजसे महा-
सोक्खे महाणुभावे ददुरस्स ण भते । देवस्स सा दिव्वा देवड्डी
देवज्जुई कहिगया कहि पविट्ठा गोयमा । सरीर गया सरीर
अणुप्पविट्ठा, कूडागारदिट्ठतो । ददुरेणं भते । देवेणं सा दिव्वा
देवड्डी देवज्जुई, किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभिस-
मन्नागया ? एव खलु गोयमा । इहेव जवूदीवे दीवे भारहे
वासे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए, सेणिए राया । तत्थ
णं रायगिहे णयरे णंदे णाम मणियारसेट्ठी अड्डे दित्ते० ।
तेणं कालेणं तेण समएण अह गोयमा । समोसढे, परिसा
णिग्गया । सेणिए राया णिग्गए तएण से णंदे मणियारसेट्ठी इ-
मीसे कहाए लद्धे समणे णहाए० पायचारेण जाव पज्जुवासइ ।
णंदे धम्म सोच्चा णिसम्म समणोवासए जाए । तएणं अह
रायगिहाओ पडिनिक्खते बहिया जणवयविहार विहरामि, तए
णं से णंदे मणियारसेट्ठी अन्नया कयाइ असाहुदसणेण य
अपज्जुवासणाए य अणुसासणाए य असुस्सूसणाए य
सम्मत्तपज्जवेहि परिहायमाणेहि २ मिच्छत्तपज्जवेहि परिवड्ढ-
माणेहि २ मिच्छत्त विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था तएणं नदे

તસ્ય નગરસ્ય પહિર્ભાગે શુભગિલક નામ ચૈત્યમાસીત્ । તત્ર મગવતો મહાવીરસ્ય સમવસરણ સજાતમ્ । નગરદર્શનાર્થે પરિપન્નિર્ગતા । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે 'સોદમ્મેકપ્પે' સૌધર્મે કલ્પે=સૌધર્મનામ્નિ દેવત્રોકે દર્દુરાવતસકે વિમાને, સમાયા સુધર્મયા દર્દુરે સિંહામને દર્દુરો દર્દુરનામતો દેવ 'ચઝહિં સામા ણિયસાહસ્સીહિં' ચતસ્રમિ સામાનિકમાહસ્સીમિ ચતુસ્સદસસરયકૈઃ-સામાનિક દેવૈઃ, તથા 'ચઝહિં અગ્ગમહિસીહિં સપરિસાહિં' ચતસ્રભિરગ્ગમદિપીમિ સપરિપદ્ધિ=સ્વસ્વ પરિપત્સદિતામિશ્વતુઃ સરયકામિઃ પટ્ટદેવોમિ. સપરિવૃત્ત' 'એવ જહા સૂરિયામો જાવ દિવ્વાહ ભોગભોગાહ' શુજમાણો વિહરહ' એવ યથા સૂર્યામો રાજ પ્રશ્નીયસૂત્રે-સૂર્યામદેવસ્ય વર્ણન મોક્ત તદ્વદત્રાપિ મોહ્યમ્, યાવત્-દિવ્યાન ભોગભોગાન શુજાનો વિહરતિ ॥ સૂ૦ ૧ ॥

વદના કરને કે લિયે પરિપદ આવી ઓર દેશના સુનકર વાપિસ ચલી આવી (તેણ કાલેણ તેણ સમણ સોદમ્મે કપ્પે દદ્દુરવડિંસણ વિમાણે સમાણ સુદમ્માણ, દદ્દુરસિ સીહાસણસિ, દદ્દુરે દેવે ચઝહિં સામાણિય સાહસ્સીહિં ચઝહિં અગ્ગમહિસીહિં સપરિસાહિં એવ જહા સૂરિયામો જાવ દિવ્વાહ ભોગભોગાહ શુજમાણો વિહરહ) उसी काल और उसी समय में सौधर्म नाम के देव लोक में दर्दुरावतसक विमान में सुधर्मा सभा में दर्दुर सिंहासन पर दर्दुर नाम का देव चार हजार सामानिक देवों के एव अपनी २ परिपद सहित चार पट्ट देवियों के साथ सूर्यामदेव की तरह दिव्य काम भोगों का अनुभवन करता हुआ बैठा था । राज प्रश्नीय सूत्र में सूर्याम देव का वर्णन यहा पर भी जानना चाहिये । सूत्र ॥ १ ॥

બહાર શુભશીવક નામે ચૈત્ય (જૈન દેરાસર) હતુ તેમા ભગવાન મહાવીર આવ્યા પ્રભુને વદન કરવા માટે નગરની પરિધિ આવી અને દેશના સાબળીને પાછી જતી રહી

(તેણ કાલેણ તેણ સમણ સોદમ્મે કપ્પે દદ્દુરવડિંસણ વિમાણે સમાણ સુદમ્માણ, દદ્દુરસિ સીહાસણસિ, દદ્દુરે દેવે ચઝહિં સામાણિયસાહસ્સીહિં ચઝહિં અગ્ગમહિસીહિં સપરિસાહિં એવ જહા સૂરિયામો જાવ દિવ્વાહ ભોગભોગાહ શુજમાણો વિહરહ)

તે જાણે અને તે સમયે સૌધર્મ નામના દેવલોકમા દદ્દુર સિંહાસન ઉપર દર્દુર નામે દેવ ચાર હજાર સામાનિક દેવોની અને પોતપોતાની પરિપદા સહિત ચાર પટ્ટ દેવીઓ (પટ્ટરાણીઓ) ની સાથે સૂર્યામ દેવની જેમ દિવ્ય કામ સુખોને અનુભવતો બેઠો હતો. " રાજ પ્રશ્નીય સૂત્ર " માં સૂર્યામ દેવનું વર્ણન કરવામા આવ્યું છે અહીં પણ તે પ્રમાણે જ વર્ણન બાળી લેવું જોઈએ ॥ સૂ. "૧"

चाउक्कोणासमतीरा अणुपुव्वसुजायवप्पगभीरसीयलजला
संछपणपत्तविसमुणाला बहुप्पलपउमकुमुयनलिणसुभगसो
गंधियपुडरिय महापुडरीय सयपत्तसहस्सपत्तपफुल्लकेसरोव-
वेया परिहत्थभमतमत्तछप्पयअणेगसउणगणमिहुणविय-
रियसदुन्नइयमहुरसरनाइया पासाईया ॥ सू० २ ॥

टीका—‘ इम च ण ’ इत्यादि । स ददुरको देवः इम च खलु ‘ केवल-
कप्प ’ केवलकल्प = सम्पूर्ण जम्बूद्वीप द्वीप विपुलेन ‘ ओहिणा ’ अधिना
—अवधिज्ञानेन ‘ आभोएमाणे २ ’ आभोगयन आभोगयन् = बारबारभव
लोकयन् ‘ जाव ’ ‘ नट्टविहिं उवदसित्ता पडिगए ’ यावन्नाट्यविधिमुपदर्श्य
प्रतिगतः ‘ जहा सूरियाभे ’ यथा सूर्याभ, सूर्याभदेववत् । तद् गमना
नन्तर भदन्त ! इति सरोध्य भगवान् गौतमः श्रमण भगवन्त महावीर —
चन्दते नमस्यति, चन्दित्वा नमस्यत्वा एवमवदत्—अहो ! खलु भदन्त ? ददुरो

‘ इम च ण केवलकप्प ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—वह ददुरकदेव (इम च ण केवलकप्प जम्बूद्वीप २) इस केवल
कल्प—सम्पूर्ण—जम्बूद्वीप नाम के द्वीप को (विपुलेण ओहिणा) अपने
विपुल अवधिज्ञान से (आभोए माणे २) बार २ देखता हुआ (जाव
नट्टविहिं उवदसित्ता पडिगए) यावत् नाट्य विधि को दिखला कर
चला गया (जहा सूरियाभे) सूर्याभदेव की तरह (भतेति भगव
गोयमे समण भगव महावीर वदइ णमसइ, चदित्ता णमसित्ता एव
वयासी) उस के चले जाने के बाद हे भदन्त ! इस प्रकार से सरोधित
करके भगवति गौतम ने श्रमण भगवान् महावीर प्रभु से इस प्रकार
पूछा (अहो ण भते ! ददुरे देवे महड्डिए महज्जुइए महापळे, महाजसे

‘ इम च ण केवलकप्प ’ इत्यादि

ते ददुरक देव (इम च ण केवलकप्प जम्बूद्वीप २) आ केवल कल्प-
सम्पूर्ण—जम्बूद्वीप नामना द्वीपने (विपुलेण ओहिणा) पोताना अवधिज्ञानथी
(आभोएमाण २) बार बार जेतो (जाव नट्टविहिं उवदसित्ता पडिगए) यावत्
नाट्य विधिनु प्रदर्शन जतावीने जेतो रह्यो (जहा सूरियाभे) सूर्याभ देवनी
जेम (भतेति भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ, णमसइ, चदित्ता
णमसित्ता एव वयासी) तेना जवा पछी श्रमणु लगवान महावीर प्रभुना
चरह्योभा लगवान गौतमे ‘ हे भदन्त ! ’ ऐसी रीते सरोधीने तेज्योअे प्रभुने
आ प्रमाणे कहा है—

मणियारसेट्टो अन्नया गिम्हकालसमयांसि जेट्टामूलंसि मासंसि
 अट्टमभत्तं परिगेण्हइ परिगेणिहत्ता पोसहसालाए जाव विह-
 रइ, तएणं णदस्स अट्टमभत्तांसि परिणममाणसि तण्हाए
 छुहाए य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए
 समुप्पज्जित्था—धन्नाणं ते राईसर जाव सत्थवाहप्पभियओ
 जेसि णं रायगिहस्स वहिया वहूओ वावीओ पोक्खरणीओ
 जाव सरसरपत्तियाओ जत्थ ण बहुजणो ण्हाइ य पियइ य
 पाणिय च सवहइ, त सेय खल्ल मम कल्ल पाउ० सेणिय
 आपुच्छित्ता रायगिहस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए वेभार-
 पव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढगरोइयसि भूमिभागंसि
 जाव णंद पोक्खरणि खणावेत्तए त्तिकट्टु एव सपेहेइ कल्ल
 पाउ० जाव पोसह पारेइ पारित्ता ण्हाए कयवलिकम्मे मित्तणाइ
 जाव सपरिवुडे महत्थ जाव रायारिह पाहुड गेण्हइ गेणिहत्ता
 जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जाव
 पाहुड उवट्टवेइ उवट्टवित्ताएव वयासी—इच्छामि ण सामी।
 तुब्भेहि अव्वभणुन्नाए समाणे रायगिहस्स वहिया जाव
 खणावेत्तए, अहासुह देवाणुप्पिया !, तएण णदे सेणिएण
 रत्ता अव्वभणुण्णाए समाणे हट्ठ० रायगिह मज्झ मज्झेणं
 निग्गच्छइ २ वत्थुपाढयरोइसि भूमिभागसि णंद पोक्खरणि
 खणाविउ पयत्ते यावि होत्था, तएण सा णंदा पोक्खरणी
 अणुपुव्वेणं खणमाणा २ पोक्खरणी जाया यावि

एव खलु हे गौतम ! इहेव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजगृह नगर, गुण-
शिलक चैत्य, श्रेणिको राजाऽऽसीत् । तत्र खलु राजगृहे नगरे नन्दनामा मणि-
कारश्रेणी आढ्यो दीप्तोऽपरिभूतः परिवसति । तस्मिन् काले तस्मिन् समये हे
गौतम ! अह तत्र राजगृहे समवसतः परिपन्निर्गता श्रेणिको राजा निर्गतः । ततः
खलु स नन्दो मणिकार श्रेणी अस्याः कथाया लब्धार्थः सन् स्नातः पादचारेण=
पादाभ्यामेव न तु रथाश्वादि यानेन ' जाव पज्जुवासइ ' मम वन्दनार्थमागतो
वन्दित्वा नमस्यित्वा च यथास्थानमुपविश्य पर्युपास्तेरम । नन्दः नन्द-
मणिकारश्रेणी यमं = श्रुतचारित्रलक्षण श्रुत्या श्रमणोपासक = श्रावको
जातः । ततः खलु अह (महावीरस्वामी) राजगृहात् प्रतिनिष्क्रान्तो वहिर्जनपद

पत्ता किण्णा अभिसमन्नागया ? एव खलु गोयमा ! इहेव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारहे वासे
रायगिहे नगरे गुणसिलण चेइए सेणिए राया तत्थणं रायगिहे नगरे णदे णाम
मणियारसेही अड्डे दित्ते०) गौतम स्वामी प्रभु से पूछते हैं भद्रे ! दूर देव ने वह दिव्य देवर्षि और दिव्य देव
द्युति किस प्रकार से उपार्जितकी, किस प्रकार से अपने आधीन की
और किस प्रकार उसे अपने भोग के विषय भूत बनाई ? प्रभु ने कहा
गौतम ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-इसी जम्बूद्वीप नाम के
द्वीप में, भरत क्षेत्र में, राजगृह नाम के नगर में गुण शिलक नाम का
चैत्य था । नगर के राजा का नाम श्रेणिक था । उस राजगृह नगर में नन्द
नामका मणिकार श्रेणी रहता था । यह बहुत ही आढ्य-धन सपन्न-एव
अपरिभूत-जनमान्य-था (तेण कालेण तेण समएण अह गोयमा !
समोसडे, परिसा निग्गया, सेणिए, राया निग्गए, तण्ण से णदे मणि

किण्णा अभिसमन्नागया ? एव खलु गोयमा ! इहेव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारहे वासे
रायगिहे नगरे गुणसिलण चेइए सेणिए राया तत्थणं रायगिहे नगरे णदे णाम
मणियारसेही अड्डे दित्ते०)

गौतम स्वामी प्रभुने पूछे छे डे डे भद्रे ! दूर देवे ते दिव्य देवर्षि
अने दिव्यद्युति केवी गीते भेजवी, केवी रीते पोताने आधीन जनावी अने
केवी रीते तेने पोताना उपलोग योग्य जनावी ? प्रभुछे उछु डे डे गौतम !
तमार प्रश्नो उत्तर आ प्रमाणे छे डे अज्ज जम्बूद्वीप नामना द्वीपमा भरत
क्षेत्रमा राजगृह नामना नगरमा गुणशीलक नामे चैत्य इत्तु ते नगरमा
राजानु नाम श्रेणिक इत्तु ते राजगृह नगरमा नन्द नामे मणिकार श्रेणि रहितो
ते णड्डे ज आढ्य-धनमान-अपरिभूत-जनमान्य (नगरमा पूजितो) इत्ते।

तेण कालेण तेण समएण अह गोयमा ! समोसडे, परिसा निग्गया, सेणिए

દેવો મહર્દિકો મહાધુતિકઃ, આશ્ચર્યકારિ મહદ્વર્ત્તોદિયુક્તોઽય વર્ત્તતે દર્દુરસ્ય
 સ્વલુ ભદન્ત ! દેવસ્ય સા દિવ્યા દેવર્દ્ધિર્દેવધુતિઃ કુમ ગતા કુત્ર પ્રવિષ્ટા ? યા
 પૂર્વં દૃષ્ટેતિ ભાવઃ । મગવાનાહ-હે ગૌતમ ! સા દિવ્યા દેવર્દ્ધિઃ દેવધુતિશ્ચ તસ્ય
 શરીર ગતા શરીરમનુપ્રવિષ્ટા । અત્ર 'કૂટાગારદિદ્વતો' કૂટાગારદૃષ્ટાન્તો બોધઃ ।
 કૂટાગારદૃષ્ટાન્તસમન્વયાય ગૌતમસ્ય મગવતો મહાવીરસ્ય ચ ઉક્તિઃ પ્રયુક્તિ-
 ધોનિર્દિષ્ટપ્રકારેણ જ્ઞેયા-ગૌતમસ્વામી પૃચ્છતિ હે ભદન્ત ! =હે મગવન્ ! દર્દુરેણ
 દેવેન સા દિવ્યા દેવર્દ્ધિઃ દેવધુતિઃ કથ=કેન પ્રકારેણ લાભા=સમુપાર્જિતા પ્રાપ્તા=
 આયત્તીભૂતા અભિસમન્વાગતા=સમ્યક્સ્વમોગપિપયીકૃતા ? મગવાનાહ—

મહાસૌમ્યે, મહાણુભાવે, દદ્દુરસ્સ ણ ભતે ! દેવસ્સ સા દિવ્વા દેવિહ્વી
 દેવજ્જુઈ કહિં ગયા, કહિં પવિટ્ઠા) હે ભદત ! અમીરયહ દર્દુર દેવ આશ્ચર્યકારી
 મહદ્વર્ત્તોદિ સે યુક્ત ધા, સો હમ સમય ઉસ દર્દુર દેવ કી હે ભદત ! વહ
 પૂર્વદૃષ્ટ દિવ્ય દેવર્દ્ધિ, દેવધુતિ કહા ગઈ, કહાં પ્રવિષ્ટ હો ગઈ ? (ગોયમા !
 સરીર ગયા, સરીર અણુપ્પવિટ્ઠા) હસ પ્રકાર ગૌતમ કા પ્રશ્ન સુનકર
 પ્રમુ ને ઉન સે કહા-હે ગૌતમ ! વહ દિવ્યદેવર્દ્ધિ ઓર દિવ્ય દેવધુતિ
 ઉસ દર્દુર દેવ કે શરીર મેં ચલી ગઈ હૈ, શરીર મેં પ્રવિષ્ટ હો ગઈ હૈ ।
 (કૂટાગાર દિદ્વતો) હસ વિષય મેં કૂટાગાર દૃષ્ટાન્ત પ્રયુક્ત હુઆ હૈ ।
 હસી કૂટાગારદૃષ્ટાન્ત કે સમન્વય કે લિયે મગવાન્ ગૌતમ ઓર મહા-
 વીર પ્રમુ કી યહ ઉક્તિ પ્રયુક્તિ અધોનિર્દિષ્ટ પ્રકાર સે જાનની ચાહિયે
 (દર્દુરે ણ ભતે દેવેણ સા દિવ્વા દેવિહ્વી દેવજ્જુઈ કિણ્ણા લદ્ધા કિણ્ણા

(અહોણ ભતે ! દદ્દુરે દેવે મહદ્વિષ્ણ મહજ્જુહ્ણ, મહાવલે, મહાજસે, મહા
 સૌમ્યે, મહાણુભાવે દદ્દુરસ્સ ણ ભતે ! દેવસ્સ સા દિવ્વા દેવિહ્વી દેવજ્જુઈ કહિં
 ગયા, કહિં પવિટ્ઠા)

હે ભદત ! હમણા તો આ દર્દુર દેવ આશ્ચર્યકારી મહર્દ્ધિ વગેરેથી
 સખત હોતો આ સમયે દર્દુરક દેવની હે ભદત ! તે પૂર્વ દૃષ્ટ દિવ્ય દેવર્દ્ધિ,
 દેવધુતિ કયા જતી રહી છે ? કયા પ્રવિષ્ટ થઈ ગઈ છે ? (ગોયમા ! સરીર
 ગયા, સરીર અણુપ્પવિટ્ઠા) આ રીતે ગૌતમનો પ્રશ્ન સાલજીને પ્રભુએ તેમને
 કહ્યું કે હે ગૌતમ ! તે દિવ્ય દેવર્દ્ધિ અને દિવ્ય દેવધુતિ તે દેવ દર્દુરકના
 શરીરમાં પ્રવિષ્ટ થઈ ગઈ છે શરીરમાં જતી રહી છે (કૂટાગારદિદ્વતો) આ
 વિશેષ કૂટાગાર દૃષ્ટાન્ત આપવામાં આવ્યું છે આ કૂટાગાર દૃષ્ટાન્તના સમન્વય માટે
 મગવાન ગૌતમ અને મહાવીર પ્રભુની ચર્ચાનીચે લખ્યા મુજબ જાણવી

(દદ્દુરેણ ભતે ! દેવેણ સા દિવ્વા દેવિહ્વી દેવજ્જુઈ કિણ્ણા લદ્ધા ।

अन्यदा=एकस्मिन् काले ग्रीष्मकालसमये=ग्रीष्मऋतौ ' ज्येष्ठामूलसि माससि ' ज्येष्ठामूले मासे-ज्येष्ठायामूलस्य वा च द्वेण सह योगो भवति पूर्णमास्या यस्मिन् मासे स ज्येष्ठामूलान्तस्मिन्=ज्येष्ठामूले मासे ज्येष्ठमासे इत्यर्थः, ' अट्टमभक्त ' अट्टमभक्तम्-उपवासनरूपं तप परिगृह्णाति=स्वीकरोति, परिगृह्य पौषधशालाया ' जाव विहरइ ' यावत् पौषाणि =समाश्रितपौषा विहरति । ततः ख नन्दस्य=नन्दाभिधमणिकारश्रेष्ठिनः अट्टमभक्ते परिणम्यमाने=सम्पूर्णप्राये सति तृणया धुधया च अभिभूतस्य=व्याकुलस्य सन अयम्=वक्ष्यमाणप्रकारः आभ्यात्मिक =

लगा (तण्णं से णदे मणियारसेट्ठी, अन्नया कयाइ असाहु दसणेण य अपज्जुवासणाएय, अण्णुसासणाए य असुस्ससणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्डमाणेहिं २ मिच्छत्त विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था) मेरे वहा से विहार करने के बाद वह मणिकार श्रेष्ठी नद किसी एक समय असाधु के दर्शन से कुगुरु के ससर्ग से-सद्गुरुओं की अनासेवना से, सुगुरु के उपदेश की प्राप्ति नहीं होने से सुगुरु के पास धर्म के श्रवण का अभाव होने से, तथा सम्यक्तरूप पर्यव-परिणाम क्रमशः क्षीयमाण होने से एव मिथ्यात्वरूप पर्यव-परिणाम क्रमशः वृद्धिगत होते रहने से मिथ्यात्व दशापन्न बन गया=मिथ्यात्वी हो गया । (तण्णं से णदे मणियारसेट्ठी अन्नया गिम्हकाजसमयसि, जेष्ठा मूलसि, माससि अट्टमभक्त परिणेणइ, २ पोसहसालाए जाव विहरइ, तण्ण नदस्स अट्टमभक्तसि, परिणममाणसि, तण्हाए छुहाए, य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था) किसी एकदिन ग्रीष्म काल के समय में

(तण्ण से णदे मणियार सेट्ठी अन्नया कयाइ अपाहुदसणेण य अपज्जु वासणाए य अण्णुसासणाए य असुस्ससणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्डमाणेहिं २ मिच्छत्त विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था)

त्याथी भारा विहार उथा पछी डोछ वणते असाधुना दृश नथी, कुगुरुना ससर्ग (साभत) थी सद्गुरुओंकी अनासेवनाथी, सुगुरुना उपदेशने मालन वानी तड नडि भगवाया सुगुरुनी पानेथी धर्म नडि साभलवाथी तेभज सम्यक्त्व उप पर्यव-परिणाम अनुक्रमे क्षीयमाण (नष्ट) होवायी अने मिथ्यात्वइय पर्यव परिणाम अनुक्रमे वृद्धि पाववाथी मिथ्यात्व दशापन्न थड गये-मिथ्यात्वी जड गये । (तण्ण से णदे मणियारसेट्ठी अन्नया गिम्हकाजसमयसि, जेष्ठामूलसि, माससि अट्टमभक्त परिणेणइ २ पोसहसालाए जाव विहरइ तण्ण नदस्स अट्टमभक्तसि परिणममाणसि, तण्हाए छुहाए य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था) डोछ ओड दिवसे डोछाणाना जेठ भडिनामा

विहार विहारामि । ततः खलु स नन्दो मणिकारश्रेष्ठी अन्यदा वदामि ' असाधु
 दसणेणय ' असाधुदर्शनेन=कुगुरुमसर्गेण ' अपज्जुवासणा ' अपर्युपासनया च=
 सुगुरोस्नानसेवनेन ' अणुसासणा य ' अननुशासनया च=सुगुरोरुपदेशाभावेन
 ' असुसूसाणाए य ' अशुश्रूषणया च=सुगुरोरन्तिके धर्मश्रवणाभावेन च, तथा
 ' सम्मत्तपज्जवेहि ' सम्यक्त्वपर्यवै ' परिहायमाणेहि ' परिहीयमाने २ क्रमशः
 क्षीयमाणे ' मिञ्जत्तपज्जवेहि मिथ्यात्वपर्यवै ' परिह्वमाणेहि ' परिवर्द्धमाने,=
 पुनः पुनः क्रमशो वृद्धिपुपगतौ सः नन्दमणिकारश्रेष्ठी मिथ्यात्व मिथ्यास्वभाव
 प्रतिपत्त=मात्त=मिथ्यात्वी जातश्चाप्यभूत् । ततः खलु नन्दोमणिकारश्रेष्ठी

यारसेट्ठी इमीसे कहाण लद्धे समणे णहाण० पायचारेण जाव पज्जु-
 वासइ, ण दे धम्म सोच्चा, णिसम्म समणोवासण जाण) उसी काल
 में और उसी समय में हे गौतम । मैं उस राजगृह नगर में विहार करता
 हुआ पहुँचा । वहाँ का समस्त परिपदा वदना नमस्कार करने के लिये
 गुणशिशुक चैत्य में आई । श्रेणिक राजा भी आया । जब उस मणि
 कार श्रेष्ठी नद को मेरे आने का समाचार मिला तो वह भी स्नान
 आदि से निश्चिन्त होकर पैदल ही मेरी वदना करने के लिये आया ।
 वहाँ आकर वह वदना, नमस्कार कर यथा स्थान पर बैठ गया । उसने
 श्रुत चारित्र्य रूप धर्म का व्याख्यान सुनकर गृहस्थधर्म धारण कर लिया
 अर्थात् वह श्रमणोपासक बन गया । (तएण अहं रायगिहाओ पडि
 निक्खते वहिया जणवयविहार विहरामि) इसके बाद मैं वहाँ से
 राजगृह से निकला और निकल कर बाहर जनपदों में विहार करने

राया णिग्गए, तएण से णद मणियारसेट्ठी इमीसे कहाण लद्धे समणे णहाण०
 पायचारेण जाव पज्जुवासइ, णदे धम्म सोच्चा, णिसम्म समणोवासण जाण)

ते जाणे अने ते समये हे गौतम ! हु विहार करतो करतो राजगृह नगरभा
 पडोअये। नगरनी परिपदा गुणशीलक नीत्यभा वदना अने नमस्कार करवा भाटे
 आवी श्रेष्ठिक राजा પણ वदन तेमज नमन करवा भाटे आव्या हुता भव्ति
 यार श्रेष्ठि नदने ज्यारे मारा आववाना समाचारे भज्या त्यारे ते स्नान
 वगेरेथी परवारीने पगपाणा न भने वदन करवा भाटे आव्यो त्या आवीने
 वदन तेमज नमन करीने ते उचित स्थाने जेभी गये श्रुतचारित्र्य धर्मनु
 व्याख्यान सालणीने तेणे गृहस्थ धर्म धारण करी लीये अटले हे ते श्रमणे
 पासक थर्ध गये। (तएण अहं रायगिहाओ पडिनिक्खते वहिया जणवयविहार
 विहरामि) तयारपछी हु तयथी-राजगृह नगरथा नीज्यो अने नीकणीने णहार
 जनपदोभा विहार करवा लाग्यो।

अन्यदा=एरम्मिन् झाले ग्रीष्मकालसमये=ग्रीष्मऋतौ ' जेष्ठामूलमि माससि ' ज्येष्ठामूले मासे-ज्येष्ठायामूलस्य वा च द्वेण सह योगो भवति पौर्णमास्या यस्मिन् मासे स ज्येष्ठामूलान्तस्मिन्=ज्येष्ठामूले मासे ज्येष्ठमासे इत्यर्थः, ' अट्टमभक्त ' अष्टमभक्तम्-उपवासनरूपं तपः परिगृह्णाति=स्वीकरोति, परिगृह्य पौषधशालाया ' जाव विहरइ ' यावत् पौषाणि =समाश्रितपौषः विहरति । ततः ख नन्दस्य=नन्दाभिषमणिकारश्रेष्ठिनः अष्टमभक्ते परिणम्यमाने=सम्पूर्णप्राये सति तृणया क्षुधया च अभिभूतस्य=व्याकुलस्य सन. अयम्=वक्ष्यमाणप्रकारः आध्यात्मिक =

लगा (तएण से णदे मणियारसेट्ठी, अन्नया कयाड असाहु दसणेण य अपज्जुवासणाएय, अणुसामणाए य असुस्सुसणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवट्ठमाणेहिं २ मिच्छत्त विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था) मेरे बहा से विहार करने के बाद वह मणिकार श्रेष्ठी नद किसी एक समय असावु के दर्शन से कुगुरु के ससर्ग से-सद्गुरुओं की अनासेवना से, सुगुरु के उपदेश की प्राप्ति नहीं होने से सुगुरु के पास धर्म के श्रवण का अभाव होने से, तथा सम्यक्तरूप पर्यव-परिणाम क्रमशः क्षीयमाण होने से एव मिथ्यात्वरूप पर्यव-परिणाम क्रमशः वृद्धिगत होते रहने से मिथ्यात्व दशापन्न बन गया=मिथ्यात्वी हो गया । (तएण णदे मणियार-सेट्ठी अन्नया गिम्हकाज्जसमयसि, जेष्ठा मूलसि, माससि अट्टमभक्त परिगेण्हइ, २ पोसहसालाए जाव विहरइ, तएण नदस्स अट्टमभक्तसि, परिणममाणसि, तण्हाए छुहाए, य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्वा) किसी एकदिन ग्रीष्म काल के समय में

(तएण से णदे मणियार सेट्ठी अन्नया कयाड असाहुदसणेण य अपज्जु वासणाए य अणुसामणाए य असुस्सुसणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवट्ठमाणेहिं २ मिच्छत्त विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था)

त्याथा भारा विहार उर्या पछी डोछ वण्णते अमाधुना दर्शनयी, कुगुरुना ससर्ग (सोभत) थी सद्गुरुओंकी अनासेवनाथी, सुगुरुना उपदेशने आभण वानी तक नहिं भगवाया, सुगुरुनी यायेवी धर्म नहिं आभलवाथी तेमज्ज सम्यक्तरूप उप पर्यव-परिणाम अनुक्रमे क्षीयमाण (नष्ट) होवाथी अने मिथ्यात्वइय पर्यव परिणाम अनुक्रमे वृद्धि पाववाथी मिथ्यात्व दशापन्न थय जये-मिथ्यात्वी जय जये । (तएण णदे मणियारसेट्ठी अन्नया गिम्हकाज्जसमयसि, जेष्ठामूलसि, माससि अट्टमभक्त परिगेण्हइ २ पोसहसालाए जाव विहरइ तएण नदस्स अट्टमभक्तसि परिणममाणसि, तण्हाए छुहाए य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्वा) उधै अक दिवसे उनाणाना जेठ भडिनामा

विहारं विहरामि । ततः खलु स नन्दो मणिकारश्रेष्ठी अन्यदा कदाचित् 'असाधु
दसणेणय' असाधुदर्शनेन=सुगुरुरपसर्गेण 'अपज्जुवासणाण' अपर्युपासनया च=
सुगुरो रनासेवनेन 'अणणुसासणाण य' अननुशासनया च=सुगुरोरुपदेशाभावेन
'असुस्सुसणाण य' अशुश्रूषणया च=सुगुरोरन्तिके धर्म-ययणाभावेन च, तथा
'सम्मत्तपज्जवेहि' सम्पक्त्वपर्ययै 'परिहायमाणेहि' परिहीयमानै २ क्रमशः
क्षीयमाणे 'मिच्छत्तपज्जवेहि मिच्छात्पर्ययै' परिवर्द्धमाणेहि 'परिवर्द्धमानै=
पुनः पुनः क्रमशो वृद्धिमुपगतै सः नन्दमणिकारश्रेष्ठी मिच्छात्व मिच्छास्वभाव
प्रतिपत्तः=प्राप्त=मिच्छात्वी जातश्चाप्यभूत् । ततः खलु नन्दो मणिकारश्रेष्ठी

यारसेट्ठी इमीसे क्हाए लद्धे समणे णहाण० पायचारेणं जाव पज्जु-
वासइ, ण दे धम्म सोच्चा, णिसम्म समणोवासण जाण) उसी काल
में और उसी समय में हे गौतम । मैं उस राजगृह नगर में विहार करता
हुआ पहुँचा । वहाँ का समस्त परिपदा वदना नमस्कार करने के लिये
गुणशिरक चैत्य में आई । श्रेणिक राजा भी आया । जब उस मणि
कार श्रेष्ठी नद को मेरे आने का समाचार मिला तो वह भी स्नान
आदि से निश्चित होकर पैदल ही मेरी वदना करने के लिये आया ।
वहाँ आकर वह वदना, नमस्कार कर यथा स्थान पर बैठ गया । उसने
श्रुत चारित्र रूप धर्म का व्याख्यान सुनकर गृहस्थ धर्म धारण कर लिया
अर्थात् वह श्रमणोपासक बन गया । (तएणं अहं रायगिहाओ पडि
निकखते वहिया जणवयविहार विहरामि) इसके बाद मैं वहाँ से
राजगृह से निकला और निकल कर बाहर जनपदों में विहार करने

राया णिग्गए, तएण से णद मणियारसेट्ठी इमीसे क्हाए लद्धे समणे णहाए०
पायचारेणं जाव पज्जुवासइ, णदे धम्म सोच्चा, णिसम्म समणोवासए जाए)

ते काणे अने ते समये हे गौतम । हु विहार करतो करतो राजगृह नगरमा
पहुँच्यो । नगरनी परिपदा गुणशीलक चैत्यमा वदना अने नमस्कार करवा भाटे
आवी श्रेणिक राजा पण वदना तेमज्ज नमन करवा भाटे आओ । हुता भण्णि
यार श्रेष्ठि नदने ज्यारे मारा आववाना समाचारो भल्या त्यारे ते स्नान
वृजेरेथी परिवारीने पगपाणा ज भने वदना करवा भाटे आओ । त्या आवीने
वदना तेमज्ज नमन करीने ते उचित स्थाने जेसी गयो श्रुतचारित्ररूप धर्मनु
व्याख्यान सावणीने तेले गृहस्थ धर्म धारण करी लीयो । ओटले हे ते श्रमणो
पासक थर्ष गयो । (तएण अहं रायगिहाओ पडिनिकखते वहिया जणवयविहार
विहरामि) त्यारपछी हु त्यथी-राजगृह नगरथा नीज्यो अने नीकणीने णहार
जनपदोमा विहार करवा लाग्यो ।

बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे वैभारपर्वतस्य अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातिसमीपे पार्श्व
भागे इत्यर्थः. ' वस्तुपाठगरोदयसि ' वस्तुपाठरुचिते=वस्तुपाठकानां=गृहादि-
निर्माणशास्त्रनिपुणानां=भूगर्भविद्याप्रशारदानां रुचित'=रुचिविषयीभूतस्तस्मिन्
तादृशे भूमिभागे=भूमिदेशे यावत् नन्दा=नन्दाभिधा पुष्करिणी=वापी खनयितुम् ।
इति कृत्वा=इति मनसिनिवाय एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण मपेक्षते,=विचारयति, सप्रे-
क्ष्य कल्पे प्रादुर्गमभाताया यावत्-रजन्या तेजसा ज्वलतिमूर्ये=सूर्योदये सति पौषधं
पारयति, पारयित्वा स्नातः कृतबलिकर्मा मित्रज्ञाति यावत्सरस्वितः महार्थं ' जाव
रायारिह ' महार्थं महार्हं विपुलं राजार्हमाभूतं गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव श्रेणिको

अथ यही उचित है कि मे भी दूसरे दिन प्रातः काल होते ही श्रेणिक
राजा से पूछकर राजगृह नगर के बाहिर ईशान कोण की ओर वैभार
पर्वत की तलहटी- पार्श्वभाग- में जिस स्थान को वास्तुशास्त्र के वेत्ता
पास करे उस स्थान पर एक नदा नामकी बावड़ी को खुदवाऊ । इस
प्रकार उस ने अपने मन में विचार किया । (सपेक्षिता कल्ल पा० जाव
पोसह पारेइ पारेत्ता पहाए कयबलिकम्ममे मित्तणाइ जाव सपरिवुडे
महत्थ जाव रायारिह पाहुड गण्हइ, गेण्हित्ता, जेणेव सेणिए राया तेणेव
उवा० उवागच्छित्ता जाव पाहुड उवट्टवेइ, उवट्टवेत्ता एव वयासी-
इच्छामिण सामी ' तुव्भेहिं अव्वमणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया
जाव खणावेत्तए, अहासुह देवाणुप्पिया ।) विचार करके उसने प्रातः
काल सूर्योदय होने पर पौषध को पारा (पाला) । (पार कर) पाल कर
पौषध को समाप्त कर-फिर उसने स्नान किया । स्नान से निवृत्त कर
काक आदि पक्षियों को अन्नादि का भाग रूप बलिकर्म किया । बाद में

भने अथ योज्य दागे छे के हु पाणु आवती डाढे मवार थता न् ' श्लिष्ठ
राजनी आजा मेणवीने राजगृह नगरनी णडार ईशान डोणमा वैभार पर्वतनी
तणेटीमा वास्तुशास्त्रने ज्ञाणुनारा जे स्थानने पमह करे ते स्थान उपर अक
नदा नामे वाव जोडावु आ रीते तेजे मनमा विचार उर्थे (सपेक्षिता कल्ल
पा० जाव पोसह पारेइ पारेत्ता पहाए कयबलिकम्ममे मित्तणाइ जाव सपरिवुडे
महत्थ जाव रायारिह पाहुड गण्हइ गेण्हित्ता, जेणेव सेणिए राया तेणेव उवा०
उवागच्छित्ता जाव पाहुड उवट्टवेइ उवट्टवेत्ता एव वयासी इच्छामि ण सामी ।
तुव्भेहिं अव्वमणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्तए, अहासुह
देवाणुप्पिया ।) विचार करीने तेजे जीन द्विसे सवार सूर्योदय थता पौषध
पाल्ये अने पौषध पाणाने तेजे स्नान उर्थे अने तयारपटी दागडा वगेरे

આત્મગતોવિચાર સમુદપદ્યત । તદેવાહ-‘ ધન્નાણત ’ इत्यादि-धन्याः खलु ते राजेश्वरयावत्साहर्षयादप्रभृतय, येषा खलु राजगृहस्य गहि. बहुयो वाप्यः= सामान्यः पुष्करिण्यः=रमन्युक्ता यावत्-सरः सर पङ्क्तिरा=यत्रैकस्मात्सरसो ऽस्मिन् सरसि जल प्रवहति, एव सरसा जलाशयाना पङ्क्तयः पङ्क्तिभूता जला शया इत्यर्थः विद्यन्ते, यत्र खलु बहुजनः=जनसमुदायः स्नाति च पिबति च तथा- पानीय च सरहति=ततो जल नगति । तन्=तस्मात्त्रेय =उचित खलु मम कल्ये= प्रादुष्प्रभाताया रजन्या सूर्योदये सतीत्यर्थ, त्रेणिक राजानमापृच्छ राजगृहस्य

જેઠ માસ મે મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદ ને અષ્ટમ ભક્ત કિયા તીન ઉપવાસ કિયે— ઔર पौषध शाला में रहा— । जब उसकी यह तपस्या पूर्ण प्राय हो रही थी तब उसे तृष्णा पिपासा और क्षुधा ने व्याकुल कर दिया । उस समय उसे इस प्रकार का विचार आया— (धन्नाण ते राईसर जाव सत्थवाहपभियओ जेसिण रायगिहस्स वहिया बहओ वावीओ पोक्खरणीओ जाव सरसरपतियाओ जत्थण बहुजणो ण्हाइ य, पियइ य, पाणिय च सवहइ त सेय मम कल्ल पाउ० सेणिय आपुच्छित्ता राय गिहस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए वेभारपव्वयस्स अदूर सामते वस्तुपाढगरोइयसि भूमिभागसि जाव णद पोक्खरणिं खणा वेत्तए त्तिकइ एव सपेहेइ) राजेश्वर से लेकर सार्थवाह प्रभृति वे जन ध-यवाद के पात्र हैं कि जिनकी राजगृह नगर के बाहर अनेक बावडिया हैं,—पक्ति भूत जलाशय हैं कि जिन में अनेक मनुष्य स्नान करते हैं, अनेक जन पानी पीते हैं अनेक उन में से पानी ले जाते हैं । तो मुझे भी

મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદે અષ્ટમ ભક્ત કર્યો—ત્રણ ઉપવાસ કર્યો—અને પૌષધશાળામાં રહ્યો બ્યારે તેની આ તપસ્યા પૂરી થવાની આણી ઉપર જ હતી ત્યારે તેને તરસ અને ભૂખે વ્યાકુળ બનાવી દીધો તે સમયે તેણે વિચાર કર્યો કે— (ધન્ના ણ તે રાઈ સર જાવ સત્થવાહપભિયઓ જેસિણ રાયગિહસ્સ વહિયા બહઓ વાવીઓ પોક્કલરણીઓ જાવ સરસરપતિયાઓ જત્થ ણ બહુજણો ણ્હાઈ ય, પિયઈ ય, પાણિય ચ સવહઈ ત સેય કલ્લ પાઉ૦ સેણિય આપુચ્છિત્તા રાયગિહસ્સ વહિયા ઉત્તરપુરત્થિમે દિસીભાણ વેભારપવ્વયસ્સ અદૂરસામતે વસ્તુપાઢગરોઈયસિ ભૂમિભાગ સિ જાવ ણદ પોક્કલરણિં લખાવેત્તદ ત્તિકદદુ ઇવ સપેહેઈ) રાજેશ્વરથી માડીને સાર્થવાહ વગેરે તે લોકોને ધન્ય છે કે રાજગૃહ નગરની બહાર જેમની ધણી વાવો છે, પક્તિભૂત જળાશયો છે—કે જેમાં ઘણા માણસો સ્નાન કરે છે, ઘણા માણસો પાણી પીએ છે, ઘણા તેઓમાંથી પાણી લઈ લય છે તે હવે

बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे वैभारपर्वतस्य अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातिसमीपे पार्श्वभागे इत्यर्थः. ' वस्तुपाठगरोदयसि ' वस्तुपाठकुरुचिते=वस्तुपाठकाना=गृहादि-निर्माणशास्त्रनिपुणाना=भूगर्भविद्याविशारदाना रुचितः=रुचिविषयीभूतस्तस्मिन् तादृशे भूमिभागे=भूपदेशे यावत् नन्दा=नन्दाभिधा पुष्करिणी=वापीं खनयितुम् । इति कृत्वा=इति मनसिनिग्राय एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण समेक्षते,=विचारयति, सप्रेक्ष्य कल्पे मादुष्प्रभाताया यावत्-रजन्या तेजसा ज्वलतिमूर्ये=सूर्योदये सति पौषधं पारयति, पारयित्वा स्नातः कृतबलिकर्मा मित्रज्ञाति यात्रत्सपरिवृतः महार्थं ' जाव-रायारिह ' महार्थं महार्हं विपुलं राजार्हमाभूतं गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव श्रेणिको

अथ यही उचित है कि मे भी दूसरे दिन प्रातः काल होते ही श्रेणिक राजा से पूछकर राजगृह नगर के बाहिर ईशान कोण की ओर वैभार पर्वत की तलहटी- पार्श्वभाग- में जिस स्थान को वास्तुशास्त्र के वेत्ता पास करे उस स्थान पर एक नदी नामकी बावड़ी को खुदवाऊ । इस प्रकार उस ने अपने मन में विचार किया । (सपेक्षित कल पा० जाव पोसह पारेह पारेत्ता एहाए कयवलिकर्मे मित्रणाइ जाव सपरिवुडे महत्थ जाव रायारिह पाहुड गण्हइ, गेण्हित्ता, जेणेव सेणिए राया तेणेव उवा० उवागच्छित्ता जाव पाहुड उवट्टवेइ, उवट्टवेत्ता एव वयासी-इच्छामिण सामी ! तुभेहिं अवभणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्तए, अहासुह देवाणुप्पिया ।) विचार करके उसने प्रातः काल सूर्योदय होने पर पौषध को पारा (पाला) । (पार कर) पाल कर पौषध को समाप्त कर-फिर उसने स्नान किया । स्नान से निवृत्त कर काक आदि पक्षियों को अन्नादि का भाग रूप बलिकर्म किया । बाद में

भने ऐज योअ्य लागे ते के हु पणु आवती डावे अवार थता न ' श्रुिठ राजनी आजा भेणवीने राजगृह नगरनी ञडार ईशान डोणुमा वभार पर्वतनी तणेटीमा वास्तुशास्त्रने ञणुनाग ने स्थानने पमह करे ते स्थान उपर ऐक नहा नामे वाव पोहावु आ रीते तेणे भनमा विचार उथे । (सपेक्षित कल पा० जाव पोसह पारेइ पारेत्ता एहाए कयवलिकर्मे मित्रणाइ जाव सपरिवुडे महत्थ जाव रायारिह पाहुड गण्हइ गेण्हित्ता, जेणेव सेणिए राया तेणेव उवा० उवागच्छित्ता जाव पाहुड उवट्टवेइ उवट्टवेत्ता एव वयासी इच्छामि ण सामी ! तुभेहिं अवभणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्तए, अहासुह देवाणुप्पिया ।) विचार करीने तेणे जीन दिवसे अवार सूर्योदय थता पौषध पाण्ये अने पौषध पाणाने तेणे स्नान उथु अने त्थारपणी ढागडा वगेरे

આત્મગતોવિચાર સમુદપદ્યત । તદેવાહ—‘ ધન્નાણત ’ इत्यादि—धन्याः खलु ते राजेश्वरयापत्साहर्षवाहप्रभृतय, येषां खलु राजगृहस्य वहिः बहवो वाप्यः= सामान्यः पुष्करिण्य=स्मन्पुक्ताः यावत्-सरः सर पट्टिकाः=यत्रैकस्मात्सरसोऽस्मिन् सरसि जल प्रवहति, एव सरसा जलाशयानां पट्टिकाः पट्टिभूता जलाशया इत्यर्थः विद्यन्ते, यत्र खलु बहुजनः=जनसमुदायः स्नाति च पिवति च तथा-पानीयं च सवहति=ततो जलं नाति । तत्=तस्मात्त्रेय=उचितं खलु मम कल्ये=मादुष्प्रभाताया रजन्या सूर्योदये सतीत्यर्थ, त्रेणिक राजानमापृच्छत् राजगृहस्य

જેઠ માસ મેં મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદ ને અષ્ટમ ભક્ત કિયા તીન ઉપવાસ કિયે— ઔર પૌષધ શાલા મેં રહા— । જવ ઉસકો ચત્ત તપસ્યા પૂર્ણપ્રાય હો રહી થી તવ ઉસે તૃણા પિપાસા ઔર ક્ષુધા ને વ્યાકુલ કર દિયા । ઉસ સમય ઉસે હમ પ્રકાર કા વિચાર આયા— (ધન્નાણ તે રાઈસર જાવ સત્યવાહપ્રભિયઓ જેસિણ રાયગિહસ્સ વહિયા બહુઓ વાવોઓ પોક્કરણીઓ જાવ નરસરપતિયાઓ જત્યળ બહુજળો પહાઈ ચ, પિયડ ચ, પાણિય ચ સવહઈ ત સેય મમ કલ્લ પાડ૦ સેણિય આપુચ્છિત્તા રાય ગિહસ્સ વહિયા ઉત્તરપુરતિયમે દિસિમાએ વેમારપવ્વચસ્સ અદૂર સામતે વસ્તુપાઢગરોઈયસિ ભૂમિભાગસિ જાવ ણદ પોક્કરણિં સ્વળા વેત્તે ત્તિકદ્દુ એવ સપેહેઈ) રાજેશ્વર સે લેકર સાર્થવાહ પ્રભૃતિ વે જન ધન્યવાદ કે પાત્ર હૈં કિ જિનકી રાજગૃહ નગર કે બાહર અનેક વાવડિયા હૈં,—પક્તિ ભૂત જલાશય હૈં કિ જિન મેં અનેક મનુષ્ય સ્નાન કરતે હૈં, અનેક જન પાની પીતે હૈં અનેક ઉન મેં સે પાની લે જાતે હૈં । તો મુઝેં મી

મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદે અષ્ટમ ભક્ત કર્યો—ત્રણ ઉપવાસ કર્યો—અને પૌષધશાળામાં રહ્યો બ્યારે તેની આ તપસ્યા પૂરી થવાની અણી ઉપર જ હતી ત્યારે તેને તરસ અને ભૂખે વ્યાકુળ બનાવી દીધો તે સમયે તેણે વિચાર કર્યો કે— (ધન્ના ણ તે રાઈ સર જાવ સત્યવાહરભિયઓ જેસિણ રાયગિહસ્સ વહિયા બહુઓ વાવોઓ પોક્કરણીઓ જાવ નરસરપતિયાઓ જત્યળ બહુજળો પહાઈ ચ, પિયડ ચ, પાણિય ચ સવહઈ ત સેય કલ્લ પાડ૦ સેણિય આપુચ્છિત્તા રાયગિહસ્સ વહિયા ઉત્તરપુરતિયમે વિસિમાએ વેમારપવ્વચસ્સ અદૂરસામતે વસ્તુપાઢગરોઈયસિ ભૂમિભાગ સિ જાવ ણદ પોક્કરણિં સ્વળાવેત્તે ત્તિકદ્દુ એવ સપેહેઈ) રાજેશ્વરથી માંડીને સાર્થવાહ વગેરે તે લોકોને ધન્ય છે કે રાજગૃહ નગરની બહાર જેમની ઘણી વાવો છે, પક્તિભૂત જલાશયો છે—કે જેમાં ઘણા માણ્યો સ્નાન કરે છે, ઘણા માણ્યો પાણી પીએ છે, ઘણા તેઓમાંથી પાણી લઈ બચે છે તે હવે

नन्दा पुष्करिणी अनुपूर्वेण=क्रमेण खन्यमाना खन्यमाना पुष्करिणी जाता चाप्यासीत्,
सा कीदृशी जाता ? इत्याह—'चाउकोणा' इत्यादि—'चाउकोणा' चतुष्कोणा=
समतीरा समम् = उन्नतत्वावनतत्वरहित तीर=तटप्रदेशो यस्याः सा तथोक्ता,
'अणुपुष्पसुजायवप्पगभीरसीयलजला' अनुपूर्वे सुजातप्रगम्भीरशीतलजला—
अनुपूर्वेण=क्रमेण नीचैर्नीचैस्तरादिभायरूपेण सु=सुष्ठु अतिशयेन यो जातः वप्प =
केदाराकार जलस्थान तत्र गम्भीरम्=अगाध शीतल च जल यस्या सा तथा,
'सच्छणपत्तविसमुणाला' संछन्नपत्रविसमृणाला=सछन्नानि=जलेनातरितानि
जलमग्नानीत्यर्थः पत्राणि=कमलदलानि विसानि=कमलकन्दा मृणालानि=कमल

होकर निकला। निकलकर फिर वह वास्तु शास्त्र के वेत्ताओं द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचा—वहाँ पहुँचकर उसने नदा नाम की बावड़ी खुदवानी प्रारम्भ कर दी। (तएण सा नदा पोक्खरणी अणुपुब्बेण खणमाणा २ पोक्खरणी जाया यावि होत्था चाउक्कोणा, समतीरा, अणुपुब्ब सुजायवप्पगभीरसीयलजला, सच्छणपत्तविसमुणाला, बहुप्पलपडमकुमुय नलिणसुभगसोगधियपुडरीयसयपत्तसहस्सपत्तयफुल्लकेसरोववेया परिहत्थभमन्तमत्तउप्पयअणेगसउणगणमिदुणविहरियसदुन्नइयमहुरसुरनाइया पासार्इया) क्रमशः खुदती २ वह नदा पुष्करिणी एक दिन वास्तविक पुष्करिणी के रूप में तैयार हो गई। इसके चारकोने थे। तट प्रदेश इसका समान था। ऊँचाई नीचाई से रहित था। इस बावड़ी का अगाध शीतल जल से भरा हुआ नीचेका जल स्थान बहुत नीचा बहुत गहरा था और क्रम क्रम से निष्पन्न करने में आया था। इस में

आधीने ते राजगृह नगरनी वन्थे थधने नीकल्ये। नीकलीने ते वाम्पुराअना निष्ठातो वडे णताववामा आवेला स्थान उपर पडोअये। अने त्या जलने तेले नदा नामनी वाव जोहववी शङ्खरी दीधी (तएण सा नदा पोक्खरणी अणुपुब्बेण खणमाणा २ पोक्खरणी जाया यावि होत्था चाउक्कोणा, समतीरा, अणुपुब्बसुजायवप्पगभीरसीयलजला सच्छणपत्तविसमुणाला, बहुप्पलपडमकुमुयनलिणसुभगसोगधियपुडरीयमहापुडरीयसयपत्तसहस्सपत्तयफुल्लकेसरोववेया परिहत्थभमन्तमत्तउप्पयअणेगसउणगणमिदुणविहरियसदुन्नइयमहुरसुरनाइया पासार्इया) आभ ६२रे। जोहता जोहता छेवटे ओक द्विने नदा पुष्करिणी वाव) स पूरुपले जोहाध गध तेने थार भुत्ता डता डिनाराने लाग तेने ओक सरजो डने। ओटले डेडये। नीचे नडोतो आवापनु अगाधडा पाणीथी लहेलु नीचेनु जण स्थान भूण ज डेडु

राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य यावत्प्राभृतम् उपस्थापयति उपस्थाप्या एवमवा
दीत्-इच्छामि खलु हे स्वामिन् ! युष्माभिरभ्यनुज्ञातं सन् राजगृहस्य बहिः
' जाय खणावेत्तए ' यावत्-उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे वैभारपर्वतस्यादूरसामन्ते
वास्तु पाठकरुचिते भूमिभागे यावत् नन्दा पुष्करिणीं खनयितुम् । श्रेणिको पाठ-
पथासुख हे देवानुप्रिय ! इच्छानुसारं कुरु । ततः खलु नन्द श्रेष्ठी श्रेणिकेन
राज्ञाऽभ्यनुज्ञातः सन् हृष्टतुष्टः राजगृहस्य मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य वास्तु
पाठकरुचिते भूमिभागे नन्दा पुष्करिणीं खनयितुं प्रवृत्तश्चाप्यभवत् । ततः खलु सा
मित्रादिजनो से परिवृत होकर उसने महार्थ साधक यावत् बहुत कीमती
राजा को भेंट करने योग्य पदार्थ लिया । लेकर वह जहां श्रेणिक राजा
था वहां गया । वहां जाकर उसने राजा को दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार
किया और फिर वह भेंट उनके समक्ष रखी । बाद में राजा से उसने
इस प्रकार कहा हे स्वामिन् मैं आपसे आज्ञा प्राप्तकर राजगृह नगर के
बाहर ईशान कोण में वैभार गिरि के पार्श्वभाग में एक पुष्करिणी बन
वाना चाहता हूँ । राजा ने उस की बात सुनकर उससे कहा हे देवानु
प्रिय ! यथासुखम्- तुम्हारी जैसी इच्छा हो उस के अनुसार
वैसा ही करो । (तएण ण दे सेणिएण रत्ता अन्भणुन्नाए समाणे हट्ठं
रायगिह मज्झ मज्झेण निगच्छइ २ वत्थुपाढयरोइसि भूमिभागसि
णद पोक्खरणिं खणाविउ पयत्ते यावि होत्था) उस प्रकार श्रेणिक राजा
से आज्ञा प्राप्त कर वह मणिकार श्रेष्ठी नद बहुत ही अधिक आनंदित
एव सतुष्ट हुआ । बाद में वहां से आकर वह राजगृह नगर के बीच से

पक्षीओने अन्नलाग अर्पीने अलिकर्म कथुं त्थारभाह घोतानी मित्र-मंडलीने
साथे लडने मंडार्थ साधक यावत् बहुत कीमती राजने लेट करवा योग्य पदार्थ
लीधा लडने ते न्या श्रेष्ठिक राजा डता त्या गये। त्या पछोचीने तेले अने
डार्थ लेडीने राजने नमस्कार कर्था अने पछी लेट तेमनी सामे अर्पण करी
त्थारभाह राजने विनती करता तेले कछु के डे स्वामी । तमारी आज्ञा भेज
वीने डु राजगृह नगरनी गडार ईशान कोणमा वैभार पर्वतनी तलेटीमा अेक
पुष्करिणी (वाव) जोदावषानी भारे छिटा छे राजाओ तेनी बात सालगीने
तेने कछु-के डे देवानुप्रिय । “ यथा सुखम् ” तमारी लेवी छच्छा डाय भुशीथी
तमे ते प्रमाणे करे । (तएण ण दे सेणिएण रत्ता अन्भणुन्नाए समाणे हट्ठं
रायगिह मज्झ मज्झेण निगच्छइ २ वत्थुपाढयरोइसि भूमिभागसि णद पोक्खरणिं
खणाविउ पयत्ते यावि होत्था) आ रीते श्रेष्ठिक राजा पासेथी आज्ञा भेजवीने
से भण्डिकार श्रेष्ठि नद भूषण आनंदित तेमज सतुष्ट थये। त्थार

नन्दा पुष्करिणी अनुपूर्वेण=क्रमेण खन्यमाना खन्यमाना पुष्करिणी जाता चाप्यासीत्, सा कीदृशी जाता ? इत्याह- 'चाउकोणा' इत्यादि- 'चाउकोणा' चतुष्कोणा=समतीरा समम्=उन्नतत्वात्तत्वरहित तीर=तटप्रदेशो यस्याः सा तथोक्ता, 'अणुपुष्पसुजायवपगभीरसीयलजला' अनुपूर्वे सुजातवपगम्भीरशीतलजला-अनुपूर्वेण=क्रमेण नीचैर्नीचैस्तरादिभायरूपेण सु=सुष्ठु अतिशयेन यो जातः वप=कैदाराकार जलस्थान तत्र गम्भीरम्=अगाध शीतल च जल यस्या सा तथा, 'सछण्णपत्तविसमुणाला' संछन्नपत्रविसमृणाला=सछन्नानि=जलेनान्तरितानि जलमग्नानोन्यर्थः पत्राणि=कमलदलानि विसानि=कमलकन्दा मृणालानि=कमल-

होकर निकला। निकलकर फिर वह वास्तु शास्त्र के वेत्ताओं द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचा-वहाँ पहुँचकर उसने नदा नाम की वावड़ी खुदवानी प्रारम्भ कर दी। (तएण सा नदा पोक्खरणी अणुपुब्बेण खणमाणां २ पोक्खरणी जाया यावि होत्था चाउक्कोणा, समतीरा, अणुपुब्ब सुजायवपगभीरसीयलजला, सछण्णपत्तविसमुणाला, बहुप्पलपडमकुमुयनलिणसुभगसोगधियपुडरीयसयपत्तसहस्सपत्तयफुल्लकेसरोववेया परिहत्थभमन्तमत्तछप्पयअणेगसउणगणमिहुणविहरियसदुन्नइयमहुरसुरनाइया पासाईया) क्रमशः खुदती २ वह नदा पुष्करिणी एक दिन वास्तविक पुष्करिणी के रूप में तैयार हो गई। इसके चारकोने थे। तट प्रदेश इसका समान था। ऊँचाई नीचाई से रहित था। इस वावड़ी का अगाध शीतल जल से भरा हुआ नीचेका जल स्थान बहुत नीचा बहुत गहरा था और क्रम क्रम से निष्पन्न करने में आया था। इस में

आवीने ते राजगृह नगरनी वन्थे थधने नीक्ख्ये। नीक्खीने ते वान्तुशास्त्रना निष्णातो वडे णताववाभा आवेला स्थान उपर पडोन्थे। अने त्वा ज्वने तेले नदा नामनी वाव जोहववी शङ्खरी दीधी (तएण सा नदा पोक्खरणी अणुपुब्बेण खणमाणा २ पोक्खरणी जाया यावी होत्था चाउक्कोणा, समतीरा, अणुपुब्बसुजायवपगभीरसीयलजला सछण्णपत्तविसमुणाला, बहुप्पलपडमकुमुयनलिणसुभगसोगधियपुडरीयमहापुडरीयसयपत्तसहस्सपत्तयफुल्लकेसरोववेया परिहत्थयमन्तमत्तछप्पयअणेगसउणगणमिहुणविहरियसदुन्नइयमहुरसुरनाइया पासाईया) आभ दररेण जोहता जोहता छेवटे ओक्क हिवने नदा पुष्करिणी वाव) ३ पूर्णपले जोहाध गध तेने चार पुष्पा डता जिनाराने भाग तेने ओक्क सरजो डते ओट्ठे डेठये। नीचे नडोते आवावनु अगाधडा पाणीथी लहेतु नीचेतु जण स्थान भूण न डेडु

નાલાનિ યસ્યા સા તથા । ‘ વહુપ્પલ્પત્તમકુમુદનલિણસુભગસૌગધિયપુઢરીય
મહાપુઢરીયસયપત્તમહસ્તપત્તપ્પુલ્લકેશરોવવેયા ’ વહુપ્પલ્પત્તમકુમુદનલિણસુભગસૌગ
ધિકપુઢરીકમહાપુઢરીકશતપત્રસહસ્ત્રપત્રપ્પુલ્લકેશરોપપેતા-વહુનિ = વહુવિધાની
ઉત્પલાનિ પદ્માનિ ચ=સામાન્યકમલાનિ કુમુદાનિ=ચન્દ્રવિકાસિકમલાનિ નલિ
નાનિ=વિશિષ્ટગન્ધયુક્તકમલાનિ સુભગાનિ=સુન્દરાણિ સૌગન્ધિકાનિ=સધ્યાવિ
કાસિકમલાનિ, પુઢરીકાણિ=શ્વેતકમલાનિ, મહાપુઢરીકાણિ=મહાશ્વેતકમલાનિ,
શતપત્રાણિ=શતદલકમલાનિ સહસ્ત્રદલકમલાનિ, કીટશાનિ એતાનિ ? इत्याह-
પ્પુલ્લકેશરાણિ=વિકસિતકેશરાણિ, તૈરુપપેતા=વ્યાપ્તા । ‘ પરિહત્યમમતમત્તચ્છ
પ્પયઅણેગમઝણગણમિહુણનિયરિયસહુન્નઇય મહુરસરનાડયા ’ પરિહત્યભ્રમન્મત્તપદ્
પદાનેકશકુનગગમિથુનશન્દોન્નતિકમધુરસ્વરનાદિતા- ‘ પરિહત્ય ’ इतिदेशीशब्दो
ऽयम् , परिहत्या ’=पचुराः, भ्रमन्तः=इतस्ततो विचरन्तः मत्ताः=मकरन्दपानो
न्मत्ताः पद्मपदा =भ्रमरास्तेषाम्, तथा-अनेकेषा=ननाविधानां शकुनगणाना=
हससारसादिपक्षिसमूहानां मिथुनाना=युगलरूपाणां शब्दोन्नतिकाः=उत्कृष्टयुक्ता ये
मधुरस्वरः तै नादिता=शब्दायमानेत्यर्थ प्रासादीया, दर्शनीया, अभिरूपा-
भतिरूपा-अत्यन्तरमणीयेत्यर्थः ॥ सू० २ ॥

કમલ દલ કમલ કદ ઓર કમલ નાલ સદા જલ સે અન્તરિત હો રહે
થે । યહ અનેક પ્રકાર કે વિકસિત કેશરોં વાલે ઉત્પલોં સે, કમલોં સે,
ચન્દ્રવિકાશી કુમુદો સે, વિશિષ્ટ ગન્ધ વાલે કમલોં સે સન્ યા વિકાશી
સુન્દર સૌગધિકો સે શ્વેતકમલો સે, મહા પુઢરીકો સે, શતપત્ર વાલે
કમલોં સે ઓર સહસ્ત્ર પત્ર વાલે કમલો સે આચ્છાદિત હો રહી થી ।
હધર ભ્રમણ કરતે હુએ અનેક ભ્રમરોં કે કિ જો મકરન્દ પાન સે ઉન્મ
ત્ત વન રહે થે, તથા નાના પ્રકાર કે પક્ષિગણોં કે-હસ, સારસ આદિ
પક્ષિ સમૂહ કે-યુગલોં કે ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ યુક્ત મધુર સ્વરોં સે વાચાલિત

હતુ, ગલીરહતુ અને અનુક્રમે નિષ્પન્ન કરવામા આવ્યું હતું આમા કમળદલ, કમળ
કદ, અને કમળનાળ હુ મેશા પાણીથી ઢાકાયેલા (અતરિત) રહેતા હતા આ વાવ
ધણી જાતના વિકસિત કેશરોવાળા ઉત્પલોથી, કમળોથી, ચન્દ્રવિકાશી કુમુદોથી
વિશિષ્ટ સુગન્ધવાળા કમળોથી, સધ્યા વિકાશી સુન્દર સૌગધિકોથી સદેહ કમ
ળોથી, મહા પુઢરીકોથી, શતપત્રવાળા કમળોથી અને સહસ્ત્ર (હજાર) પત્ર
વાળા કમળોથી ઢાકાયેલી હતી આ વાવ મકરન્દ (પુષ્પરસ) નો સ્વાદ લઈને
ઉન્મત્ત થઈ ગયેલા આમતેમ ઉડતા ઘણા ભ્રમરાઓના તેમજ ઘણી જાતના
પક્ષીઓના હસ, સારસ વગેરે પક્ષી સમૂહોના પક્ષીયુગલોના ઉ

મૂલમ્—તણં સે ણંદે મણિયારસેટ્ટી ણદાણ પોક્કલરણીણ
 ષડહિસિં ષત્તારિ વણસડે રોવાવેઙ્ગ । તણં તે વણસડા અણુ-
 પુઠ્ઠેણ સારવિલ્લજ્જમાણા સંગોવિલ્લજ્જમાણા સવહિલ્લજ્જમાણા ય વણ-
 સડા જાયા કિઞ્ઠા જાવ નિકુરંવભૂયા પત્તિયા પુપ્પિયા જાવ
 ઉવસોભેમાણા ચિટ્ઠતિ । તણં નદે મણિયારસેટ્ટી પુરચ્છિમિ-
 લ્લે વણસડે ઇમં મહ ચિત્તસમ કરાવેઙ્ગ અણેગલ્લભસયસનિવિટ્ઠ
 પાસાઙ્ગય દરિસુણિલ્લ અભિરુવ પહિરુવ તત્થ ણં વહૂણિ કિઞ્ઠાણિ
 ય જાવ સુક્કિલાણિ ય કટ્ઠકમ્માણિ ય પોત્થકમ્માણિ ચિત્તક-
 મ્માણિ લેપ્પકમ્માણિ ગથિમવેલ્લિમપૂરિમસઘાઙ્ગમાઙ્ગ ઉવદસિ-
 જ્જમાણાઙ્ગ ચિટ્ઠસિ, તત્થ ણં વહૂણિ આસણાણિ ય સયણાણિ
 ય અત્થુયપચ્ચત્થુયાઙ્ગ ચિટ્ઠતિ, તત્થ ણં વહુવે ણડા ય ણટ્ટા ય
 જાવ દિન્નમહમત્તવેચ્છણા તાલાયરકમ્મ કરેમાણા વિહરતિ, રાય-
 ગિહવિંણિગ્ગઓ ય જત્થ વહૂજણો તેસુ પુઠ્ઠન્નત્થેસુ આસણ-
 સયણેસુ સન્નિસન્નો ય સતુયટ્ઠો ય સુણમાણો ય પેચ્છમાણો ય
 સાહમાણો ય સુહસુહેણ વિહરઙ્ગ ॥ સૂ. ૩ ॥

ટીકા—‘ તણ ’ इत्यादि । तत खलु न नन्दो मणिकारश्रेष्ठी नन्दाया
 पुष्करिण्याश्चतुर्दिक्षु चतुरो वनपण्डान् रोपयति कारयतीत्यर्थः । ततः खलु
 यनी हुई थी । यह बहुत प्रामादीय, दर्शनीय, अभिरूप एव प्रतिरूप
 थी—तात्पर्य अत्यन्त रमणीय थी ॥ सूत्र २ ॥

‘ તણ સે ણંદે મણિયાર સેટ્ટી ’—इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—(તણ)ઢસકે ણદ(સે ણંદે મણિયારસેટ્ટી) ડસ મણિકાર શ્રેષ્ઠી

સ્વરોથી મુખરિત (શબ્દયુક્ત) થઈ રહી હતી આ વાવ ખૂબ જ પ્રાસાદીય,
 દર્શનીય, અભિરૂપ અને પ્રતિરૂપ હતી એટલે કે તે અત્યંત રમણીય હતી સૂત્ર ૨

(તણ સે ણંદે મણિયાર સેટ્ટી—इत्यादि

ટીકાર્થ—(તણ) ત્યારણાદ (સે ણંદે મણિયારસેટ્ટી) તે મણિકાર શ્રેષ્ઠી નંદ

ते वनपण्डाः 'अणुपुण्ड्रेण' अनुपूर्वेण = अनुक्रमेण 'सारस्विज्जमाणा' सरक्ष्यमाणाः = पशुपक्ष्याद्युपद्रातः 'सगोविज्जमाणा' सगोप्यमाणाः हिमवनदवादिभ्य, 'सबद्धिज्जमाणा य' सवर्ध्यमानाश्च=जलसेकादिना वृद्धिमाप्ता सन्तः वनपण्डाः पूर्णरूपेण परिणता जाताः । कीदृशास्ते जाताः ? इत्याह—'किण्ठा' इत्यादि 'किण्ठा' कृष्णा=हरितत्वातिशयेन कृष्णवर्णा 'जाव' यावत्—'निकुरवभूया' महामेघनिर्गम्यभूताः सजलजलधरनिकरसदृशाः पत्रिताः पुष्पिताः 'जाव उवसोभेमाणा २' यावत्—त्रिया=वनपण्डत्रिया अतीव उपशोभमाना २ तिष्ठन्ति । ततः खलु नन्दः मणियार श्रेष्ठी पौरस्त्ये वनपण्डे एका महती चित्रसभा कारयति । कीदृशाम् ? इत्याह—'अणेमे' त्यादि—'अणेगखभ

नदने (णदोए पोक्खरणीए चउद्धिसि) नदा पुष्करिणी की चारों दिशाओं में (चत्तारिवणसडे रोवावेइ) चार वनपण्ड आरोपित करवाये (तण्ण ते वणसडा अणुपुण्ड्रेण सारस्विज्जमाणा सगोविज्जमाणा सबद्धिज्जमाणा य वणसडा जाया किण्ठा जाव निकुरवभूया पत्तिया पुष्पिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठति) आरोपित किये गये वे चारो वनपण्ड क्रमशः सरक्षित होते हुए—पशु पक्षी आदि के उपद्रव से बचते हुए—एव हिमवर्षा—दवाग्नि आदि से रहित होते हुए खूब वृद्धिगत हो गये । इन में चारों ओर हरियाली २ छा गई—इस से ये काले काले दिखलाई देने लगे—ऐसे मालूम देते थे मानो जल से भरे हुए मेघहों । पत्र और पुष्पों से युक्त होने के कारण इन की शोभा कुछ निराली ही बन गई थी । (तण्ण णदे मणियार सेट्ठी पुरच्छिमिल्ले वणसडे एग मह चित्त

(णदोए पोक्खरणीए चउद्धिसि) नदा पुष्करिणी (वाव) नी आरे आणु (चत्तारिवणसडे रोवावेइ) चार वनपण्डो रोपावडाव्या (तण्ण ते वनसडा अणुपुण्ड्रेण सारस्विज्जमाणा सगोविज्जमाणा सबद्धिज्जमाणा य वणसडा जाया किण्ठा जाव निकुरवभूया पत्तिया पुष्पिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठति) रोपायेला ते आरेआरे वनपण्डो अनुक्रमे सरक्षित भूता—पशुपक्षी वगेरेना उपद्रवो नी सरक्षा येला अने हिम वननो अग्नि (दवान्तर) वगेरेथी सरक्षित थधने भूषण वृद्धि पाभ्या तेओभा ओमेर हरीयाणी प्रसगी गछ तेथी तेओ श्याम हेप्पाया लाव्या हुता जाए के पाछीथी भरेला मेघ डोय पाहडा अने पुष्पोथी युक्त होवा अदल तेओनी शोभा ओऊम निराली थध गछ हुती (तण्ण ण दे मणियारसेट्ठी पुरच्छिमिल्ले वणसडे एग मह चित्तसभ करावेइ, भ

सयसनिविद्ध ' अनेकस्तम्भगतसनिविष्टा=नानाविधमणिमाणिक्यादि निर्मितस्तम्भगतसनिविद्धा प्रासादीया दर्शनीयाम्, अभिरूपा, प्रतिरूपाम् । तत्र खलु चित्रसभाया बहूनि=बहुविधानि कृष्णानि च ' जाव ' यावत्-नीलानि च, पीतानि च, रक्तानि च, शुक्लानि च, ' कटुकम्माणिय ' काष्ठकर्मणि च=काष्ठशिल्पानि ' पोत्थकम्माणि ' पुस्तकर्मणि=पुस्तकेषु वस्त्र ताडपत्रकर्मणादिषु कर्मणि=लेखनकर्मणि, चित्रकर्मणि=भित्तादिषु चित्ररूपाणि, लेप्यकर्मणि=मृत्तिकासेटिकादिना बल्ल्याधाररचनाविशेषरूपाणि ' गंधिमवेष्टिमपूरिमसपाइमाइ ' ग्रन्थिमवेष्टिमपूरिम-सघातिमानि, तत्र ग्रन्थिमानि-कौशल्यातिशयेन ग्रन्थिसमुदायनिष्पादितानि, वेष्टिमानि=यानि लतादिवेष्टनतो निष्पादितानितानि पूरिमाणि यानि छिद्रादिपूरणेन निष्पाद्यन्ते कनकादि पुतलिकावत् तानि, सघातिमानि=यानि

सभ करावेड, अणेगख मसयमनिविद्ध पासाईय दरिसणिज्ज अभिरुचपडिरुव तत्थ ण रग्णि किण्हाणि य जाव सुक्खिलाणि य कटुकम्माणि य पोत्थकम्माणि चित्तकम्माणि, लेप्यकम्माणि गंधिमवेष्टिम पूरिम सपाइमाइ उवदमिज्जमाणाइ २ चिट्ठति) उस मणिकार श्रेष्ठी नद ने पूर्वे दिशा सवन्धी वनपड मे एक बडी भारी चित्रसभा बनवाई । यह चित्रसभा नाना प्रकार के मणिक्यादि निर्मित हुए सैकड़ों स्तंभों से युक्त थी । प्रासादीय, दर्शनीय, अभिरूप एव प्रतिरूप थी । उस चित्रसभा में उसने अनेकविध कृष्ण, नील, पीत, श्वेत और लाल रंगों से काष्ठ के ऊपर शिल्प कार्य करवाये, पुस्तकर्म करवाये-वस्त्र, ताड पत्र, कागज आदिकों में लेख लिखवाये, चित्र कर्म करवाये-भित्ति आदिकों के ऊपर नाना प्रकार के चित्र अंकित करवाये, लेप्य कर्म करवाये-

सयस निविद्ध पासाइय दरिसणिज्ज अभिरुच पडिरुव तत्थ ण बहूणि किण्हाणि य जाव सुक्खिलाणि य कटुकम्माणिय पोत्थ कम्माणि चित्तकम्माणि लेप्यकम्माणि गंधिम-वेष्टिम-पूरिमसपाइमाइ उवदमिज्जमाणाइ २ चिट्ठति) भण्डिउ २ श्रेष्ठी नहे ते पूर्व दिशा तरुना वनपडमा ओठ मडु लारे चित्रसभा बनावडावी ते चित्रसभा धणी नतना भण्डिओ भांडिओ वगेरेयी बनावडाभा आवेला ओवा सेडो थाबलाओवाणी छती ते प्रासादीय दर्शनीय अभिरूप अने प्रतिरूप छती ते चित्रसभाभा तेहो धणी नतना कृष्ण नील पीत (पीणा), श्वेत (सदे) ओ लाल रंगेयी डाष्ठ (लाडडा) ना उपर शिल्प काम करावडाव्या पुस्तकर्म करावडाव्या, वस्त्र, ताडपत्र कागज वगेरे उपर लेखो लखावडाव्या-चित्रो होरावडाव्या, भित्ति वगेरे उपर अने नतना चित्रो होरावडाव्या, लेप्य कर्म करवावडाव्या, भाटी लाल भाटी वडे वट्टी वगेरेनी तेभा

વસ્તુમમૃદેન નિષ્પાદ્યન્તે લોહતાટાદિભીદયાદિસ્ત, તાનિ, એતાનિ પશુવૈશ્યો-
 દિરુપાણિ ' ઉપદસિઙ્ગમાણાઃ ૨ ' ઉપદશ્યમાનાનિ ૨ લોકૈરન્યોન્ય પુનઃ પુનર્-
 પદશ્યમાનાનિ તિષ્ઠન્તિ=સન્તિ । તત્ત્વલ્લુ વહુનિ ' આસનાણિય ' આસનાનિ=
 ઘેત્રકાષ્ઠાદિનિર્મિતાનિ ચતુર્ગોણાદિરુપાણિ શયનાનિ=શયનયોગ્યાનિ સાર્દત્તૃતીય-
 હસ્તપરિમિતાનિ ફલકાગ્રીનિ, વીરશાનીત્યાદિ- ' અત્યુય ' इत्यादि- ' अत्युयप
 चचत्थुयाड ' આસ્તતપ્રત્યાસ્તતાનિ, આસ્તતાનિ મૃદુલચ્છાદિનાઽઽચ્છાદિતાનિ, પ્ર-
 ત્યાસ્તતાનિ = તદુપરિ પુનઃપુનર્દુઃખલાદિનાઽઽચ્છાન્તિતાનિ તિષ્ઠન્તિ=વર્તન્તે ।
 પુનર્થ-તત્ત્વલ્લુ વહુનો નટાથ=ગાનનૃત્યચર્ચાર. ' ણટ્ટા ય ' નૃત્તા. કેવલમદ્ભવિ
 ક્ષેપમાત્રેણ નર્તનશીલ્યાથ યાવત્ ' દિનમદ્ભવત્તવેયણા ' દત્તમૃતિમક્તવેતના.-દત્તા!

મિટ્ટી, સ્વરિયામિટ્ટી સે વહ્ણી આદિ કી ઉમ્મમેં રચના કરવાઈ । અન્થિમ,
 વેષ્ટિમ, પૂરિમ, ણવ સધાતિમ આદિ અનેકુ સ્વેલ મી ઉસ મેં દિસલ્લાવ
 (તત્ત્વેણ વહુણિ આસનાણિ ય, સયનાણિ ય, અત્યુ ય પચ્ચત્યુયાડ ચિદ્ધતિ
 તત્ત્વેણ વહુવે ણટ્ટાય ણટ્ટા ય, જાવ દિનમદ્ભવત્તવેયણા તાલાયકમ્મ
 કરેમાણા વિહરતિ) અનેક આસન, શયન, જો આસ્તૃત પ્રત્યાસ્તૃત થે
 વે મી ઉસમેં રસવાયે, વેત્ર અથવાં કાષ્ઠ આદિ સે નિર્મિત ચતુષ્કિકાદિ
 રૂપ-કુર્સી આદિરૂપ જો હોતે હેં વે આસન હેં એવ માટે ત્રીન દાથે કે
 જો કાષ્ઠ ફલક-નસ્વતા આદિરૂપ હોતે હેં કિ જિન પર અઢી તરેહ
 સોયા જા સકતા હેં વે શયન હેં । હન આસન શયનો કે ઉપર મૃદુલ
 વસ્ત્રાદિ, વિઝા હુઆ થા હસલિયે વે આસ્તૃત વે, ઓર ઉન મૃદુલ વસ્ત્રા
 દિકો કે ઉપર ઓર મી દૂસરા પલગ પોસ વિઝા હુઆ થા હસ લિયે વે
 પ્રત્યસ્તૃત થે । નદ સેઠ ને ઉસ ચિત્ર સમા મેં નટો કો નર્તો કો-નૃત્ય

રચના કરાવડાવી અન્થિમ, વેષ્ટિમ, પૂરિમ અને સધાતિમ વગેરે ઘણાં જાતની
 રમતો પણ તેમા દેરાવડાવી (તત્ત્વેણ વહુણિ આસનાણિ ય, સયનાણિ, ય, અત્યુય
 પચ્ચત્યુયાડ ચિદ્ધતિ, તત્ત્વેણ વહુવે ણટ્ટાય ણટ્ટા ય, જાવ દિનમદ્ભવત્તવેયણા
 તાલાયકમ્મ કરેમાણા વિહરતિ) ઘણાં આમનો, ઘણી પથારીઓ કે જે આસ્તૃત
 પ્રત્યાસ્તૃત હતા-પણ તેમા મૂકાવડાવી વેત્ર કે લાકડા વગેરેથી બનાવવામાં
 આવેલી ચતુષ્કિકા વગેરે રૂપ ખુરશી રૂપ જે હોય છે તે આસન છે અને
 સાડા ત્રણ હાથના જે લાકડાના તખ્તના વગેરે હોય છે કે જેના ઉપર સારી
 રીતે સૂઈ શકાય-તે શયન છે આ આસનો તેમજ શયનોની ઉપર કેમળ
 વસ્ત્રો વગેરે પાથરેલાં થા માટે જે તેઓ આસ્તૃત હતા તે કેમળ
 વસ્ત્રો વગેરે ઉપર જે પાથરેલું હતું એટલા માટે એઓ પ્રત્યા-
 સ્તૃત હતા નહ જે નટો, નૃત્તા-નાચનારા માણસો-ભૂતિ,

મૃતિ:=ધાન્યાદિરૂપ પારિશ્રમિકમ્, મક્તમ્=ઓદનાદિરૂપ વેતન=રૂપ્યકાદિરૂપ
પારિશ્રમિકમ્, એતેપા દ્વન્દ્વે મૃતિમક્તવેતનનિ, વૃત્તાનિ મૃતિમમક્તવેતનનિ ચેભ્ય-
સ્તે તથોક્તા પુરુષાઃ ' તાલાચરકર્મ ' તાન્નાચરકર્મ=નટાદિ સમ્પન્નિક્ ગીતવા-
દિત્રાદિકર્મ કુર્વાણા વિહરન્તિ=તિષ્ઠન્તિ સ્મ । અ ચ-રાજગૃહવિનિર્ગતઃ=વાયુ-
સેવનાર્થ રાજગૃહનગરાદ્ બહિર્નિસ્સૃતઃ વહુજનો=જનસમુદાયઃ ' જત્ય ' યત્ર ચિત્ર-
સભાયામાગત્ય તેષુ પૂર્વન્યસ્તેષુ=પૂર્વમ્યાપિતેષુ આસનશયનેષુ કથિત્ ' સનિસ-
ન્નાય ' સનિષ્ણઃ=ઉપવિષ્ટ', કથિત્ ' સતુયદ્દો ય ' સત્ત્વગૃહત્તથ શયિતઃ, કથિત્

કારકોં કો ધાવત્ મૃતિ, મક્ત એવ વેતન દેકર તાલચર કર્મ કરને
વાલોં કો મી નિયુક્ત કર રહ્યા થા । જો ગાન નૃત્ય કર્મ કરતે હેં વે નટ
હેં । જો કેવલ અગ વિલેપ માત્ર સે હી નૃત્ય ક્રિયા પ્રદર્શિત કરતે હેં વે
નૃત્ત હેં । ધાન્યાદિ રૂપ પારિશ્રમિકકા નામ મૃતિ, ઓદનાદિરૂપ પારિશ્ર-
મિક કા નામ મક્ત એવ નગદી પૈસા રૂપ આદિ રૂપ પારિશ્રમિક કા
નામ વેતન હેં । નટાદિ સમ્પન્ધી ગીતનૃત્ય વાદિત્ર આદિ કર્મ કો જો
કરતે હેં ડનકા નામ તાલચર હેં । તપલે આદિ વજાને વાલે વ્યક્તિ તા-
લાચરો મેં હેં । (રાયાગિહવિનિર્ગતો ય જત્ય વહુજનો તેસુ પુવ્વન્નત્યે
સુ આસણસયનેસુ સનિસન્નો ય સતુયદ્દો ય સુણમાણો ય પેચ્છમાણો
ય સાહેમાણો ય સુદ્ર સુદ્ધેણ વિહરઈ) રાજગૃહ નગર સે વાયુ સેવન-
ધૂમને-કે લિયે નિકલે હુઈ અનેક જન ડસ ચિત્ર સના મેં આતે ડનમેં
કિતનેક જન વહા પૂર્વન્યસ્ત ડન આસન શયનોં પર વેઠ જાતે, ઓર
કિતનેક જન સો જાતે, કિતનેક જન ગીતવાદિત્રોં કો સુનતે, કિતનેક

લક્ષા અને વેતન (પગાર) આપીને તેમજ ખીન્ત પણ તાલચર કર્મ કર
નારાઓની નીમણુંક કરી હુતી જેઓ ગાન-નૃત્ય કર્મ કરે છે તેઓ નટ છે
જેઓ ફક્ત અગ વિલેપ માત્રથી જ નૃત્ય કરે છે તેઓ નૃત્ત છે મહેનતાણના
રૂપમા ધાન્ય વગેરે આપે તે ભૂતિ મહેનતાણના રૂપમા ઓદન (રાધેના ચોખા)
વગેરે આપે તે લક્ષા અને રોકડા નાણા આદિ વગેરેના નિહડા મહેનતાણના
ખદલ આપે તેને વેતન કહે છે નટ વગેરેની ગીત, નૃત્ય, વાજીત્ર વગેરે કર્મ
કરનારાઓ ' તાલચર ' છે તખલા (નરધા) વગેરે વગાડનારા માણસો તાલ-
ચરો છે (રાયાગિહ વિનિર્ગતો ય જત્ય વહુજનો તેસુ પુવ્વન્નત્યેસુ આસણસય
નેસુ સનિસન્નો ય સતુયદ્દો ય સુણમાણો ય પેચ્છમાણો ય સાહેમાણો ય સુદ્ર
સુદ્ધેણ વિહરઈ) રાજગૃહ નગરના હરવા ફરવા માટે નીડળેલા ધણા માણસો
ચિત્રસભામા આવતા અને તેઓમાથી કેવલાં માણસો તો પૂર્વે મૃગવડાવેલા
આસનો શયનો ઉપર જેસી જતા અને ડેટલાડ સૂઈ જતા, ડેટલાડ ગીત,

વસ્તુવશ્યેન નિષ્પાદ્યન્તે લોહકાષ્ઠાદિભીદયાદિયત્, તાનિ, એતાનિ પશુપેદ્યાં
 દિરૂપાણિ ' ઉરદસિજ્જમાણાઃ ૨ ' ઉપદશ્યમાનાનિ ૨ લોરૈરન્યોન્ય પુનઃ પુનઃ
 પેદશ્યમાનાનિ તિષ્ઠન્તિ=સન્તિ । તાં સ્વલુ વહૂનિ ' આસનાણિય ' આસનાનિ=
 વેત્રકાષ્ઠાદિનિર્મિતાનિ ચતુર્મોળાદિરૂપાણિ શયનાનિ=શયનયોગ્યાનિ સાર્દ્ધતૃતીય-
 હસ્તપરિમિતાનિ ફલકાઢીનિ, ધીદશાનીત્યાહ- ' અત્યુય ' इत्यादि- ' अत्युयपं
 च्चत्थुयाइ ' आस्तनप्रत्यास्तनानि, आस्तनानि મૃદુલચ્છાદિનાઽઽચ્છાદિતાનિ, પ્રે
 ત્યોસ્તનનિ = તદુપરિ પુનઃપુનર્દુઃકલાદિનાઽઽચ્છાદિતાનિ તિષ્ઠન્તિ=ચર્તન્તે ।
 પુનશ્ચ-તત્ર સ્વલુ વહ્વો નટાથ્થ=ગાનનૃત્યચર્તારઃ ' ણટ્ટા ય ' નૃત્તા. કેવલમગ્નિ
 ક્ષેપમાત્રેણ ચર્તનશીલાથ્થ યાત્ ' દિનમદ્ભક્તવેયના ' દત્તભૃતિમક્તવેતના-દત્તાઃ

મિટ્ટી, સ્વરિયામિટ્ટી સે ગહ્ણી આદિ કી ઉસમેં રચના કરવાઈ । અન્થિમ,
 વેષ્ટિમ, પૂરિમ, એવ સધાતિમ આદિ અનેક સ્વેલ ભી ઉસ મેં દિસલા
 (તત્થેણ વહૂણિ આસનાણિ ય, સયનાણિ ય, અત્યુ ય પચ્ચત્યુયાઈ ચિટ્ટતિ
 તત્થેણ વહ્વે ણટ્ટાય ણટ્ટા ય, જાવ દિનમદ્ભક્તવેયના તાલાયકમ્મ
 કરેમાણા વિહરતિ) અનેક આસન, શયન, જો આસ્તુત પ્રત્યાસ્તુત થે
 વે ભી ઉસમેં રચવાયે, વેત્ર અથવા કાષ્ઠ આદિ સે નિર્મિત ચતુષ્કિકાદિ
 રૂપ-કુર્સી આદિરૂપ જો હોતે હેં વે આસન હેં એવ સાઢે ત્રીન હાથ કે
 જો કાષ્ઠ ફલક-નસ્વતા આદિરૂપ હોતે હેં કિ જિન પર અચ્છી તરેહ
 સોયો જા સકતા હેં વે શયન હેં । ઇન આસન શયનોં કે ઉપર મૃદુલ
 વસ્ત્રાદિ, વિઝા હુઆ થા હસલિયે યે આસ્તુત યે, ઓર ઉન મૃદુલ વસ્ત્રા
 દિકો કે ઉપર ઓર ભી દૂસરા પલમ પોસ વિઝા હુઆ થા હસ લિયે વે
 પ્રત્યસ્તુત થે । નદ સેઠ ને ઉસ ચિત્ર સભા મેં નટોં કો નટોં કો-નૃત્ય

ચેયના ડરાવડાવી અન્થિમ, વેષ્ટિમ, પૂરિમ અને સધાતિમ વગેરે ઘણી જાતની
 રમતો પશુ તેમા દેરાવડાવી (તત્થેણ વહૂણિ આસનાણિ ય, સયનાણિ, ય, અત્યુય
 પચ્ચત્યુયાઈ ચિટ્ટતિ, તત્થેણ વહ્વે ણટ્ટાય ણટ્ટા ય, જાવ દિનમદ્ભક્તવેયના
 તાલાયકમ્મ કરેમાણા વિહરતિ) ઘણા આમનો, ઘણી પથારીઓ કે જે આસ્તુત
 પ્રત્યાસ્તુત હતા-પશુ તેમા મૂકાવડાવી વેત્ર કે લાકડા વગેરેથી બનાવવામા
 આવેલી ચતુષ્કિકા વગેરે રૂપ ખુરશી રૂપ જે હોય છે તે આસન છે અને
 સાડા ત્રણ હાથના જે લાકડાના તખ્તા વગેરે હોય છે કે જેના ઉપર સારી
 રીતે સૂઈ શકાય-તે શયન છે આ આસનો તેમજ શયનોની ઉપર કેમળ
 વસ્ત્રો વગેરે પાવરેલા હતા એટલા માટે જ તેઓ આસ્તુત હતા તે કેમળ
 વસ્ત્રો વગેરે ઉપર એક બીજુ વસ્ત્ર પાથરેલુ હતુ એટલા માટે એઓ પ્રત્યા
 સ્તુત હતા નહ શેઠે તે ચિત્રસભામા નટોં, નૃત્તા-નાચનારા માણસો-ભૂતિ,

ભૃતિ.=ધાન્યાદિરૂપ પારિશ્રમિકમ્, મક્તમ્=ઓદનાદિરૂપ વેતન=રૂપ્યકાદિરૂપ પારિશ્રમિકમ્, એનેવા દ્વન્દ્વે ભૃતિમક્તવેતનાનિ, વત્તાનિ ભૃતિમમક્તવેતનાનિ યેભ્ય-સ્તે તથોક્તા પુરુષાઃ ' તાલાચરક્રમ્મ ' તાલાચરકર્મ=નટાદિ સમ્પન્ધિક ગીતવા-દિત્રાદિકર્મ કુર્વાણા વિહરન્તિ=તિષ્ઠન્તિ સ્મ । અથ ચ-રાજગૃહવિનિર્ગતઃ=વાયુ-સેવનાર્થ રાજગૃહનગરાદ્ પદ્ધિર્નિસ્સૃતઃ વહુજનો=જનસમુદાય. ' જત્ય ' યત્ર ચિત્ર-સભાયામાગત્ય તેષુ પૂર્વન્યસ્તેષુ=પૂર્વેભ્યાપિતેષુ આસનશયનેષુ કથિત્ ' સનિસ-ન્નાય ' સનિષ્ણઃ=ઉપવિષ્ટઃ, કથિત્ ' સતુયદ્દો ય ' સત્વગૃત્તથ શયિતઃ, કથિત્

કારકોં કો યાવત્ ભૃતિ, મક્ત એવ વેતન દેકર તાલચર કર્મ કરને ઘાલોં કો ખી નિયુક્ત કર રહ્યા થા । જો ગાન નૃત્ય કર્મ કરતે હૈં વે નટ હૈં । જો કેવલ અગ વિલેપ માત્ર સે હી નૃત્ય ક્રિયા પ્રદર્શિત કરતે હૈં વે નૃત્ત હૈં । ધાન્યાદિ રૂપ પારિશ્રમિકકા નામ ભૃતિ, ઓદનાદિરૂપ પારિશ્ર-મિક કા નામ મક્ત એવ નગદી પૈસા રૂપ્ય આદિ રૂપ પારિશ્રમિક કા નામ વેતન હૈં । નટાદિ સમ્પન્ધી ગીતનૃત્ય ત્રાદિત્ર આદિ કર્મ કો જો કરતે હૈં ઉનકા નામ તાલચર હૈં । તવલે આદિ ઘજાને વાલે વ્યક્તિ તા-લાચરોં મેં હૈં । (રાયાગિહવિનિર્ગતો ય જત્ય વહુજનો તેષુ પુવ્વન્નત્યે-સુ આસનશયનેષુ સનિસન્નો ય સતુયદ્દો ય સુણમાણો ય પેચ્છમાણો ય સાહેમાણો ય સુહ સુહેણ વિહરહ) રાજગૃહ નગર સે વાયુ સેવન-ધૂમને-કે લિયે નિકલે હુણ અનેક જન ઉસ ચિત્ર સભા મેં આતે ઉનમેં કિતનેક જન વહા પૂર્વન્યસ્ત ઉન આસન શયનોં પર વેઠ જાતે, ઔર કિતનેક જન સો જાતે, કિતનેક જન ગીતવાદિત્રોં કો સુનતે, કિતનેક

લક્ષ્મ અને વેતન (પગાર) આપીને તેમજ ખીન પણ તાલચર કર્મ કર નારાઓની નીમણુક કરી હતી જેઓ ગાન-નૃત્ય કર્મ કરે છે તેઓ નટ છે જેઓ ફક્ત અગ વિલેપ માત્રથી જ નૃત્ય કરે છે તેઓ નૃત્ત છે મહેનતાણના રૂપમા ધાન્ય વગેરે આપે તે ભૃતિ મહેનતાણના રૂપમા ઓદન (રાધેવા ચોખા) વગેરે આપે તે મક્ત અને રોકડા નાણા આદી વગેરેના નિકડા મહેનતાણા બદલ આપે તેને વેતન કહે છે નટ વગેરેની ગીત, નૃત્ય, વાગ્ગ્ય વગેરે કર્મ કરનારાઓ ' તાલચર ' છે તળલા (નરધા) વગેરે વગાડનારા માણસો તાલ-ચરો છે (રાયાગિહ વિનિર્ગતો ય જત્ય વહુજનો તેષુ પુવ્વન્નત્યેસુ આસનશય-નેષુ સનિસન્નો ય સતુયદ્દો ય સુણમાણો ય પેચ્છમાણો ય સાહેમાણો ય સુહ સુહેણ વિહરહ) રાજગૃહ નગરના હરવા કરવા માટે ની-જેવા ધણા માણસો ચિત્રસભામા આવતા અને તેઓમાથી કેટલાક માણસો તો પૂર્વે મૃગાવડાવેલા આસનો શયનો ઉપર બેસી જતા અને કેટલાક સૂઈ જતા, કેટલાક ગીત,

‘सुणमाणो य’ शृण्वतश्च गीतगादिनादिक कर्णनिपथी कुर्वन् रश्चित् ‘पेच्छमाणो य’
प्रेक्षमाणश्च=नृत्यादिक पश्यन् ‘साहेमाणो य’ कथयश्च=परस्पर कथा कुर्वन्-
श्लाघयन् वा सुखसुखेन=सुखपूर्वक सानन्द विहरति=क्रीडतिस्म ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तएण णंदे दाहिणिछेवणसडे एगं मह महाणससाल
करावेइ अणेगखभसयसंनिविट्ठ जाव पडिरूव तत्थ ण बहवे
पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा विपुल असणं४ उवक्खडेंति बहूणं
समणमाहणअतिहि किवणवणीमगाण परिभाएमाणा परिवेसे-
माणा विहरति, तएण णंदे मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिल्ले वण-
संडे एग मह तेगिच्छियसाल करावेइ, अणेगखंभसयसंनिविट्ठ जाव
पडिरूव, तत्थ ण बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुयाय जाणुयपुत्ता
य कुसला य कुसलपुत्ता य दिन्नभइभत्तवेयणा बहूण बाहियाण
य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छ करेमाणा
२ विहरति, अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा
तेसि बहूणं बाहियाण य रोगियाणय गिलाणाणय दुब्बलाणय
ओसहभेसज्जभत्तपाणेण पडियारकम्म करेमाणा २ विहरति,
तएण णंदे उत्तरिल्ले वणसडे एग मह अलकारियसभ करावेइ
अणेगखभसयसंनिविट्ठ जाव पडिरूव, तत्थ ण बहवे अलका-
रियपुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहूण समणाण य माहणाणय
अणाहाण य गिलाणाण य रोगियाणय दुब्बलाणय अलंका-
रियकम्म करेमाणा २ विहरति । तएण तीए णदाए पोक्ख-

जन नृत्यादिकों को देखते और कितनेक जन परस्पर, बैठकर बातचीत
करते हुए बड़े आनंद के साथ अपना समय व्यतीत किया करते ॥सू३॥

वाद्यत्रोने सालणता, डेटलाड नृत्यो वगेरे जेता अने डेटलाड पासे पासे
जेसीने गपसप करता सुजेथी चोतानो वधत पसार करता हुता ॥

रिणीए वहवे सणाहा य अणाहा य पथिया य करोडिया य
कप्पडिया य तणहारा य पत्तहारा य कट्टुहाराय अप्पेगइया
पहायंति अप्पेगइया पाणिय पियति, अप्पेगइया पाणिय सव-
हति अप्पेगइया विसज्जियसेयजल्लमलपरिस्समनिद्वसुप्पिवासा
सुह सुहेणं विहरति । रायगिहविणिग्गओ वि जत्थ बहुजणो
किं ते जलरमणविविहमज्जणकयलिलयाघरयकुसुमसत्थरय
अणेग सउणगणरुयरिभियसकुलेसु सुहसुहेणं अभिरममाणो
२ विहरइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—‘तएण णदे’ इत्यादि । तत् खलु नन्दः श्रेष्ठी दाक्षिणात्ये वन-
पण्डे एका महती महानसशाला=पाकशाला कारयति । कीदृशीम् ? इत्याह—
‘अणेग’ इत्यादि—अनेकस्वम्भगतसनिविष्टा यावत्पतिरूपाम् । तत्र खलु वहवः
पुरुषा दत्तभृतिमक्तवेतना=पारिश्रमिकदानेन नियुक्ता पाककर्मकराः विपुलम्

‘तएण णदे दाहिणिल्ले’—इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (णदे) नद श्रेष्ठी ने (दाहिणिल्ले) दक्षि
णदिशा सवन्धी (वणसडे) वनषड मे (एग मह) एक बडा भोरी (म
हाणससाल) रसोदधर-भोजन शाला (करावेइ) वनवाया । (अणेग
स्वभसयसनिविट्ट जाव पडिरुव, तत्थण वहवे पुरिमा दिन्नभइभत्त वेयणा
विपुल असण४ उवक्खडेंति वहूण समण-माहण-अतिहि-किरणवणीप-
गाण परिभाएमाणा परिवेसेमाणाविहरति) यह रसोदधर सैकड़ों स्वभो
के ऊपर खडा किया गया था । बडा ही रमणीय था । इस में अनेक
पुरुष रसोई बनाने का काम करने के लिये नियुक्त किये गये थे । उन्हें

‘तएण णदे दाहिणिल्ले’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थार पथी (णदे) नद शेठे (दाहिणिल्ले) दक्षिण दिशाना
(वणसडे) वनषडभा (एग मह) ओक णडु विशाण (महाणससाल) रसोद
धर-भोजनशाला—(करावेइ) जनावडावी (अणेगस्वभसयसनिविट्ट जाव पडि
रुव तत्थण वहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा विपुल असण४ उवक्खडेंति वहूण
समण-माहण-अतिहि-किरणवणीपगाण परिभाएमाणा परिवेसेमाणा विहरति)
आ भोजनशाला सेकरो थाललाओनी डती ते भूण न रमणीय डती तेभा
‘ओ’ तैयार करवा भाटे धया भाषुसो नियुक्त करवाभा आया डता तेओने

‘ सुणमाणो य ’ शृण्वतश्च गीतगादित्रादिक कर्णत्रिपथी कुर्वन् ऋश्वित् ‘ पेच्छमाणो य ’
प्रेक्षमाणश्च=नृत्यादिक पश्यन् ‘ साहेमाणो य ’ कथयश्च=परस्पर कथा कुर्वन्-
श्लाघयन् वा सुखसुखेन=सुखपूर्वक सानन्द विहरति=क्रीडतिस्म ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तएण णंदे दाहिणिह्लेवणसडे एगं मह महाणससाल
करावेइ अणेगखभसयसनिविट्ठ जाव पडिरूव तत्थ ण वहवे
पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा विपुलं असणं४ उवक्खडेंति बहूणं
समणमाहणअतिहि किवणवणीमगाण परिभाएमाणा परिवेसे-
माणा विहरति, तएण णंदे मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिह्ले वण-
सडे एगं महं तेगिच्छियसाल करावेइ, अणेगखभसयसंनिविट्ठ जाव
पडिरूव, तत्थ णं वहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुयाय जाणुयपुत्ता
य कुसला य कुसलपुत्ता य दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं बाहियाण
य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छं करेमाणा
२ विहरति, अण्णे य एत्थ वहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा
तेसि बहूणं बाहियाण य रोगियाणय गिलाणाणय दुब्बलाणय
ओसहभेसज्जभत्तपाणेणं पडियारकम्म करेमाणा २ विहरंति,
तएण णंदे उत्तरिह्ले वणसडे एग मह अलकारियसभ करावेइ
अणेगखभसयसनिविट्ठ जाव पडिरूव, तत्थ ण वहवे अलका-
रियपुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं समणाण य माहणाणय
अणाहाण य गिलाणाण य रोगियाणय दुब्बलाणय अलका-
रियकम्म करेमाणा २ विहरति । तएण तीए णदाए पोक्ख-

जन नृत्यादिकों को देखते और कितनेक जन परस्पर, बैठकर बातचीत
करते हुए बड़े आनंद के साथ अपना समय व्यतीत किया करते ॥सू३॥

वाञ्छने साधनता, डेटवाइ नृत्यो वगेरे जेता अने डेटवाइ पासो पासो
जेसीने गपसप करता सुजेथी पोतानो वधत पसार करता डेटा

ચિકિત્સાશાલાયા, સ્વલુ ગૃહો ચિકિત્સકાશ્ચ વૈદ્યાઃ=વૈદ્યપુત્રાશ્ચ, 'જાણુયા ય' જ્ઞાયકા=ચિકિત્સાગાહ્યમનધીન્દ્રાપિ વૈદ્યપ્રવૃત્તિદર્શનેન વ્યાધિચારણવિધિજ્ઞાશ્ચ, જ્ઞાયકપુત્રાશ્ચ=ચિકિત્સાપેદિના સુતાશ્ચ, તથાકુશલ-સ્વકીયતર્કતથ્ચિકિત્સાદૌ પ્રેમીણાશ્ચ, કુશલપુત્રાઃ=તેષાં પુત્રાશ્ચ દત્તશ્રુતિભક્તવેતનાઃ ગૃહના 'વાહિયાળ' વ્યાપિતાના વિશિષ્ટદુઃસ્વપ્નનકુઠાદિરોગગત્તા, 'ગિલાણાગ ય' ગ્લાનાના 'રોગિ' યાળ ય' રોગિકાના દુર્બલાના=શક્તિહીનાના ચ 'તેઙ્છકરેમાણા' ચિકિત્સા=વ્યાધિપ્રતીકાર, કુર્વન્ત, વિદ્વન્તિ । તસ્યા શાલાયા અન્યે ચાત્ર ગૃહયઃ પુરુષાઃ દત્તશ્રુતિભક્તવેતનાસ્તેષાં ગૃહના વ્યાધિતાના ચ ગ્લાનાના ચ રોગિકાના ચ દુર્બ-

ન્દર થી । હસ મેં અનેક વૈદ્ય, વૈદ્યપુત્ર જ્ઞાયક જ્ઞાયકપુત્ર, કુશલ, કુશલ પુત્ર, શ્રુતિ, ભક્ત ઓર વેતન દેવર નિયુક્ત કિયે હુણ થે । યે વહા અનેક વ્યધિયુક્ત મનુષ્યો કી ગ્લાન મનુષ્યો કી, રોગી મનુષ્યો કી, દુર્બલ મનુષ્યો કી, ચિકિત્સા કરતે થે । વહા ઓર મી પરિચારક મનુષ્ય શ્રુતિ ભક્ત ઓર વેતન દેકર નિયુક્ત કિયે હુણ યે-જો હન વ્યાધિન ગ્લાન, રોગી ઓર દુર્બલ મનુષ્યો કી ઔષધ, ભૈષજ્ય, ભક્ત ઓર પાન સે સેવા કિયા કરતે થે । ચિકિત્સા શાસ્ત્ર કા અધ્યયન કિયે વિના હી જો વૈદ્યો કી પ્રવૃત્તિ દેવ ૨ કર વ્યાધિ કો દૂર કરને કા અનુભવ પ્રાપ્ત કર લેતે હૈં એસે વ્યક્તિ યહા "જ્ઞાયક" શબ્દ સે ગૃહીત હુણ હૈં । જો અપની તર્કણા કે વલપર ચિકિત્સા આદિ મે નિપુણ હોતે હૈં વે યહા "કુશલ" શબ્દ સે ગૃહીત હુણ હૈં । વિશિષ્ટ દુઃસ્વોત્પાદક કુઠાદિરોગ સે જો પીડિત હો રહેહૈં એસે મનુષ્ય યહા વ્યાપિત શબ્દ કે વાચ્ય હુણ હૈં । ઇક

હતી તેમા ધણા વૈદ્યો, વૈદ્ય પુત્રો, જ્ઞાયક, જ્ઞાયકપુત્રો, કુશલ કુશલ પુત્રો, શ્રુતિ, ભક્ત અને વેતન આપીને નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તે બધા ત્યા ધણા માદા માણસોની, ગ્લાન માણસોની, રોગીઓની, કમજોર માણસોની ચિકિત્સા (ઇલાજ) કરતા હતા ત્યા બીજા પણ ધણા પરિચારકોનો શ્રુતિ, ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપીને નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તેઓ માદા, ગ્લાન, રોગી અને કમજોર માણસોની ઔષધ ભૈષજ્ય, ભક્ત અને પાનથી સેવા કરતા હતા ચિકિત્સાશાસ્ત્રના અભ્યાસ કર્યો વગર જ જે વૈદ્યોની પ્રવૃત્તિ-વૈદ્ય કી ગીતે બીમારની ચિકિત્સા કરે છે ?-આ બધુ જોઇને બીમારોને મરાડવાનો અનુભવ મેળવે તે માણસ અહીં 'જ્ઞાયક' ના રૂપમા પ્રયુક્ત થયો છે જે પોતાની તર્કપ્રાશસ્તિતા આધારે ઇલાજ વગેરેમા નિપુણ હોય છે તેઓ અહીં 'કુશલ' રાખના રૂપમા ગૃહીત થયા છે વિશિષ્ટ દુઃસ્વોત્પાદક કુઠા વગેરે રોગથી જે પીડાતા રહે છે એવા માણસો અહીં વ્યાપિત

अशनम् ४ चतुर्विधमाहारम् उपस्कुर्यन्ति । नृणां श्रमणब्राह्मणातिथिकृपणवनीप-
काना-परिभाजयन्तः २=विभागं कुर्यन्तः, परिवेषयन्तश्च विहरन्ति ।

ततः खलु नदी मणिकारश्रेणी 'पञ्चत्थिमिले' पाश्चात्य=पश्चिमदिग्भागस्थे
वनपण्डे एका महती 'तेणिच्छियसाल' चिकित्साशाला=रोगापनयनशालां 'करा
वेह' कारयति, किंभूताम्-अनेकस्तम्भगतसन्निविष्टा यावत्-प्रतिरूपा, तत्र=तस्या

पारिश्रमिक रूप में भृति, भक्त और चेतन दिया जाता था । ये ४ चारों
प्रकार का आशनादि रूप आहार उसमें बनाया करते थे । अनेक श्रमण
ब्राह्मण, अतिथि एवं वनीपकोंको-याचकोंको यहासे भोजन दिया जाता
था । कोई २ वही खाते थे और कोईकोई अपने विभागको लेजाते थे ।
(तदण णदे मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिरले वणसडे एग मह तेणिच्छिय-
साल करावेह, अणेगखभसयसनिविट्ठ जाव पडिरुव, तत्थ ण बह्वे
वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणु य पुत्ता य कुसला य कुसल
पुत्ता य दिन्नभइमत्तवेयणा बहूण वाहियाण य गिलाणाण य रोगियाण
य दुब्बलाण य तेइच्छ करेमाणा २ विहरति, अण्णे य एत्थ बह्वे
पुरिसा दिन्नभइमत्तवेयणा तेसि बहूण वाहियाण य रोगियाण य गिला
णाण य दुब्बलाण य ओसहभेसज्जमत्तपाणेण पडियारकम्म करेमाणा
२ विहरति) इस के बाद उस नद मणिकार श्रेणी ने पश्चिम दिशा
सम्बन्धी वनपड में एक बड़ी भारी चिकित्साशाला-औषधालय-बन
वाई । यह भी सेकड़ों ख भों के ऊपर गवड़ी की गई थी । बहुत ही सु

पोताना भडेनताणु णदल भृति, भक्त अने चेतन (पगार) आपवामा आवतुं
इतु चारे जतना अशन वगेरे आडादे तेमा जनावता इता धणु श्रमणो
ब्राह्मणो, अतिथियो अने वनीपको-याचनाराओ-ने त्याथी लोजन आपवामा
आवतु इतु तेओमाथी डेटलाक तो त्या ज जमी देता इता अने डेटलाक
पोतानु लोणु लर्ध जता इता (तदण णदे मणियार सेट्ठी पच्चत्थिमिले वणसडे
एग मह तेणिच्छियसाल करावेह, अणेगखभसयसनिविट्ठ जाव पडिरुव, तत्थण
बह्वे वेज्जा य वेज्जपुत्ताय जाणुयाय जाणुयपुत्ताय कुसुलाय कुसलपुत्ताय दिन्न भइ
भत्तवेयणा बहूण वाहियाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छ करे
माणा २ विहरति, अण्णे य एत्थ बह्वे पुरिसा दिन्नभइमत्तवेयणा तेसि बहूण
वाहियाण य रोगियाण य गिलाणाण य दुब्बलाण य ओसहभेसज्जमत्तपाणेण पडियार
कम्म करेमाणा २ विहरति) त्थारआह ते मणिकार शेठे पश्चिम दिशाना वनपडमा
ओक णहु विशाण पाया उपर चिकित्सा शाला (इवाणानु) जनावडावी ओ
पधु सेकडा थालदाओथी जिली करवामा आवी इती तेमज्ज ५

ચિકિત્સાશાલાયા, સ્વલુ વદ્યો ચિકિત્સકાશ્વ વૈદ્યાઃ=વૈદ્યપુત્રાશ્વ, 'જાણુયા ય' જ્ઞાયકા=ચિકિત્સાશાસ્ત્રમનધીન્દ્રાપિ વૈદ્યપ્રવૃત્તિદર્શનેન વ્યાધિચારણત્રિધિજ્ઞાશ્વ, જ્ઞાયકપુત્રાશ્વ=ચિકિત્સાવેદિના મુતાશ્વ, તથાકુશલઃ=સ્વકીયતર્કતથિચિકિત્સાદૌ પ્રમીણાશ્વ, કુશલપુત્રાઃ=તેષા પુત્રાશ્વ દત્તભૃતિભક્તવેતના. વદૂના 'વાહિયાળ' વ્યાધિતાના વિશિષ્ટઃ સ્વજનકુઠાદિરોગમના, 'ગિલાણાગ ય' ગ્લાનાના 'રોગિ યાળ ય' રોગિકાના દુર્બલાના=શક્તિહીનાના ચ 'તેદ્વચ્છરેમાણા' ચિકિત્સા=વ્યાધિપ્રતીકાર, કુર્વન્ત, પ્રિદરન્તિ । તસ્યા શાલાયા અન્યે ચાત્ર વદૂન' પુરુષાઃ દત્તભૃતિભક્તવેતનાસ્તેષા વદૂના વ્યાધિતાના ચ ગ્લાનાના ચ રોગિકાના ચ દુર્બ-

ન્દર થી । હસ મેં અનેક વૈદ્ય, વૈદ્યપુત્ર જ્ઞાયક જ્ઞાયકપુત્ર, કુશલ, કુશલ પુત્ર, ભૃતિ, ભક્ત ઓર વેતન દેકર નિયુક્ત કિયે હુળ યે । યે વદૂના અનેક વ્યધિયુક્ત મનુષ્યો કી ગ્લાન મનુષ્યો કી, રોગી મનુષ્યો કી, દુર્બલ મનુષ્યો કી, ચિકિત્સા કરતે થે । વદૂના ઓર ઓ પરિચારક મનુષ્ય ભૃતિ ભક્ત ઓર વેતન દેકર નિયુક્ત કિયે હુળ યે-જો હન વ્યાધિન ગ્લાન, રોગી ઓર દુર્બલ મનુષ્યો કી ઔપધ, ભૈષજ્ય, ભક્ત ઓર પાન સે સેવા કિયા કરતે થે । ચિકિત્સા શાસ્ત્ર કા અધ્યયન કિયે વિના હી જો વૈદ્યો કી પ્રવૃત્તિ દેશ્વ ર કર વ્યાધિ કો દૂર કરને કા અનુભવ પ્રાપ્ત કર હેતે હેં એસે વ્યક્તિ યદ્વા "જ્ઞાયક" શબ્દ સે ગૃહીત હુળ હે । જો અપની તર્કણા કે ચલપર ચિકિત્સા આદિ મેં નિપુણ હોતે હેં વે યદ્વા "કુશલ" શબ્દ સે ગૃહીત હુળ હેં । વિશિષ્ટ ડુ સ્વોત્પાદક કુઠાદિરોગ સે જો પીડિત હો રહેહેં એસે મનુષ્ય યદ્વા વ્યાધિત શબ્દ કે વાચ્ય હુળ હે । એક

હતી તેમાં ઘણા વૈદ્યો, વૈદ્ય પુત્રો, જ્ઞાયક, જ્ઞાયકપુત્રો, કુશલ, કુશલ પુત્રો, ભૃતિ, ભક્ત અને વેતન આપીને નિયુક્ત કરવામાં આવ્યા હતા તે બધા ત્યા ઘણા માદા માણુસોની, ગ્લાન માણુસોની, રોગીઓની, કમલેગ માણુસોની ચિકિત્સા (ડવાજ) કરતા હતા ત્યા બીન્ત પણ ઘણા પરિચારકઓ ભૃતિ, ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપીને નિયુક્ત કરવામાં આવ્યા હતા તેઓ માદા, ગ્લાન, રોગી અને કમલેગ માણુસોની ઔપધ ભૈષજ્ય, ભક્ત અને પાનથી સેવા કરતા હતા ચિકિત્સાશાસ્ત્રના અભ્યાસ કર્યા વગર જ બે વૈદ્યોની પ્રવૃત્તિ-વૈદ્ય કેની ગીતે બીમારની ચિકિત્સા કરે છે ?-આ બધુ લેધને બીમારોને મટાડવાનો અનુભવ મેળવે છે તે માદમ અહીં 'જ્ઞાયક' ના ઉપમા પ્રયુક્ત થયો છે જે પોતાની તર્જણાશક્તિના આધારે ડિવાજ વગેરેમાં નિપુણ હોય છે તેઓ અહીં 'કુશલ' શબ્દના ઉપમા ગૃહીત થયા છે વિશિષ્ટ ડુ જો-તેમણે કુશ વગેરે રોગથી જે પીડાતા રહે છે એવા માણુસો અહીં વ્યાધિત

અશનેમ્ ૪ ચતુર્વિધમાહારમ્ ઉપસ્કુર્યન્તિ । રૂઢના શ્રમણત્રાહ્મણાતિથિકૃપણવનીપ-
કાના-પરિભાજયન્તઃ ૨=વિભાગ કુર્યન્તઃ, પરિવેપયન્તશ્ચ વિહરન્તિ ।

તતઃ સ્વલુ નંદો મણિકારશ્રેષ્ઠી 'પચ્ચત્થિમિત્હે' પાશ્ચાત્યે=પશ્ચિમદિગ્ભાગસ્થે,
વનપણ્ઠે એકા મહતી 'તેગિચ્છિયસાલ' ચિકિત્સાશાળા=રોગાપનવનશાળા 'કરા
વેહ' કારયતિ, કિંમૂતામ્-અનેકસ્તમ્ભશતસનિવિષ્ટા યાવત્-પ્રતિરૂપા, તત્ર=તસ્યા

પારિશ્રમિક રૂપ મેં મૃતિ, ભક્ત ઓર વેતન દિયા જાતા થા । યે ૪ ચારો
પ્રકાર કા આશનાદિ રૂપ આહાર ઉસમેં વનાયા કરતે થે । અનેક શ્રમણ
બ્રાહ્મણ, અતિથિ એવ વનીપકોકો-યાચકોકો યહાસે ભોજન દિયા જાતા
થા । કોઈ ૨ વહીં રાતે થે ઓર કોઈ કોઈ અપને વિભાગ કો લેજાતે થે ।
(તણ્ણ ણદે મણિયારસેટ્ટી પચ્ચત્થિમિત્તહે વગસહે એગ મહ તેગિચ્છિય-
સાલ કરાવેહ, અણેગસ્થમસયસનિવિટ્ઠ જાવ પહિરુવ, તત્થ ણ વહવે
વેજ્ઞા ય વેજ્ઞપુત્તા ય જાણુયા ય જાણુ ય પુત્તા ય કુસલા ય કુસલ
પુત્તા ય દિન્નમહમત્તવેયણા વહૂણ હિયાયાણ ય ગિલાણા ય રોગિયાણ
ય દુઘ્વલાણ ય તેહ્ચ્છ કરેમાણા ૨ વિહરતિ, અણે ય એત્થ વહવે
પુરિસા દિન્નમહમત્તવેયણા તેસિં વહૂણ વાહિયાણ ય રોગિયાણ ય ગિલા
ણા ય દુઘ્વલાણ ય ઓસહમેસજ્ઞમત્તવાણેણ પહિયારકમ્મ કરેમાણા
૨ વિહરતિ) ઇસ કે બાદ ઉસ નદ મણિકાર શ્રેષ્ઠી ને પશ્ચિમ દિશા
સમ્બન્ધી વનપહ મેં એક વહીં ભારી ચિકિત્સાશાળા-ઔષધાલય-વન
વાઈ । યહ ભી સેકહો સ્થ મોં કે ઉપર ગ્વહી કી ગઈ થી । વહુત હી સુ

પોતાના મહેનતાણા બદલ ભૂતિ, ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપવામા આવતું
હતું ત્યારે જાતના અશન વગેરે આહારો તેમા બનાવતા હતા ઘણા શ્રમણો
બ્રાહ્મણો, અતિથિઓ અને વનીપકો-યાચનારાઓ-ને ત્યાથી ભોજન આપવામા
આવતું હતું તેઓમાથી કેટલાક તો ત્યા જ જમી લેતા હતા અને કેટલાક
પોતાનું ભાણુ લઈ જતા હતા (તણ્ણ ણદે મણિયાર સેટ્ટી પચ્ચત્થિમિત્તહે વણસહે
એગ મહ તેગિચ્છિયસાલ કરાવેહ, અણેગસ્થમસયસનિવિટ્ઠ જાવ પહિરુવ, તત્થણ
વહવે વેજ્ઞા ય વેજ્ઞપુત્તાય જાણુયાય જાણુયપુત્તાય કુસુલાય કુસલપુત્તાય દિન્ન મહ
મત્તવેયણા વહૂણ વાહિયાણ ય ગિલાણા ય રોગિયાણ ય દુઘ્વલાણ ય તેહ્ચ્છ કરે
માણા ૨ વિહરતિ, અણે ય એત્થ વહવે પુરિસા દિન્નમહમત્તવેયણા તેસિં વહૂણ
વાહિયાણ ય રોગિયાણ ય ગિલાણા ય દુઘ્વલાણ ય ઓસહમેસજ્ઞમત્તવાણેણ પહિયાર
કમ્મ કરેમાણા ૨ વિહરતિ) ત્યારબાદ તે મણિકાર શેઠે પશ્ચિમ દિશાના વનપહમા
એક બહુ વિશાળ પાયા ઉપર ચિકિત્સા શાળા (હોસ્પિટાલ) બનાવડાવી એ
પણુ સેકહો થાભલાઓથી ભરી કરવામા આવી હતી તેમજ ખૂબ

ચિકિત્સાશાલાયા, સહુ પદ્મો ચિકિત્સકાશ્ચ વૈદ્યાઃ=વૈદ્યપુત્રાશ્ચ, 'જાણુયા ય' જ્ઞાયકાઃ=ચિકિત્સાશાલ્યમનધીન્દ્યાપિ વૈદ્યપ્રવૃત્તિદર્શનેન વ્યાધિચારણત્રિવિદ્યાશ્ચ, જ્ઞાયકપુત્રાશ્ચ=ચિકિત્સાવેદિના મુતાશ્ચ, તથાકુશલઃ=સ્વકીયતર્કતથ્ચિકિત્સાદૌ મવીણાશ્ચ, કુશલપુત્રાઃ=તેષા પુત્રાશ્ચ દત્તભૃતિભક્તવેતના. વહૂના 'વાહિયાળ' વ્યાધિતાના વિશિષ્ટઃ સત્તનકકુઠાદિરોગવતા 'ગિલાણાગ ય' ગ્લાનાના 'રોગિ' યાળ ય' રોગિકાણા દુર્વલાના=શક્તિહીનાના ચ 'તેદ્વન્તરુરેમાણા' ચિકિત્સા= વ્યાપ્તપતીકાર, કુર્વન્ત, વિદ્વન્તિ । તસ્યા શાલાયા અન્યે ચાત્ર પદ્મવ' પુરુષાઃ દત્તભૃતિભક્તવેતનાસ્તેષા વહૂના વ્યાધિતાના ચ ગ્લાનાના ચ રોગિકાના ચ દુર્વ-

ન્દર યી । હસ મે અનેક વૈદ્ય, વૈદ્યપુત્ર જ્ઞાયક જ્ઞાયકપુત્ર, કુશલ, કુશલ પુત્ર, ભૃતિ, ભક્ત ઓર વેતન દેસર નિયુક્ત કિયે હુણ થે । યે વદ્ધા અનેક વ્યધિયુક્ત મનુષ્યો કી ગ્લાન મનુષ્યો કી, રોગી મનુષ્યો કી, દુર્બલ મનુષ્યો કી, ચિકિત્સા કરતે થે । વદ્ધા ઓર બી પરિચારક મનુષ્ય ભૃતિ ભક્ત ઓર વેતન દેકર નિયુક્ત કિયે હુણ થે-જો હન વ્યાધિત ગ્લાન, રોગી ઓર દુર્બલ મનુષ્યો કી ઔષધ, ભૈષજ્ય, ભક્ત ઓર પાન સે સેવા કિયા કરતે થે । ચિકિત્સા શાસ્ત્ર કા અધ્યયન કિયે વિના હી જો વૈદ્યો કી પ્રવૃત્તિ દેસ ૨ કર વ્યાધિ કો દૂર કરને કા અનુભવ પ્રાપ્ત કર લેતે હૈ એસે વ્યક્તિ યદ્ધા "જ્ઞાયક" શબ્દ સે ગૃહીત હુણ હૈ । જો અપની તર્કણા કે વલપર ચિકિત્સા આદિ મે નિપુણ હોતે હૈ વે યદ્ધા "કુશલ" શબ્દ સે ગૃહીત હુણ હૈ । વિશિષ્ટ દુ સ્વોત્પાદક કુષ્ઠાદિરોગ સે જો પીડિત હો રહેહૈ એસે મનુષ્ય યદ્ધા વ્યાધિત શબ્દ કે વાચ્ય હુણ હૈ । એક

હતી તેમા ઘણા વૈદ્યો, વૈદ્ય પુત્રો, જ્ઞાયક, જ્ઞાયકપુત્રો, કુશલ, કુશલ પુત્રો, ભૃતિ, ભક્ત અને વેતન આપીને નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તે બધા ત્યા ઘણા માદા માણસોની, ગ્લાન માણસોની, રોગીઓની, કમજોર માણસોની ચિકિત્સા (ઇલાજ) કરતા હતા ત્યા બીજા પણ ઘણા પરિચારકોનો ભૃતિ, ભક્ત અને વેતન (પગાર) આપીને નિયુક્ત કરવામા આવ્યા હતા તેઓ મદા, ગ્લાન, રોગી અને કમજોર માણસોની ઔષધ ભૈષજ્ય, ભક્ત અને પાનવા સેવા કરતા હતા ચિકિત્સાશાસ્ત્રના અભ્યાસ કર્યા વગરજ ને વૈદ્યોની પ્રવૃત્તિ-વૈદ્ય કેવી રીતે બીમારની ચિકિત્સા કરે છે ?-આ બધું જોઈને બીમારોને મટાડવાનો અનુભવ મેળવે છે તે માણસ અહીં 'જ્ઞાયક' ના રૂપમા પ્રયુક્ત થયો છે ને પાતાની તર્કણશક્તિના આધારે ઈલાજ વગેરેમા નિપુણ હોય છે તેઓ અહીં 'કુશલ' શબ્દના રૂપમા ગૃહીત થયા છે વિશિષ્ટ દુ સ્વોત્પાદક કુષ્ઠ વગેરે રોગથી ને પીડાતા રહે છે એવા માણસો અહીં વ્યાધિત

જ્ઞાતા ચ ' ઓસદ્ભેષજ્ઞમત્તપાણેણ ' ઔષધ મૈષ્ઞપમત્તપાનેન=ઔષધમેષ્ઞદ્રવ્ય સાધ્ય, ભેષજ=અનેકદ્રવ્યસયોગનિષ્પન્ન મત્તપાનમ્-આહારઃ, પાનમ્=પાનીય, તેન, ' પદિયારકમ્મં ' પ્રતિચારકમ્મ=સેવારૂપ કર્મ કુર્વન્તો વિહરન્તિ ।

તત્તસદનન્તર સ્વલુ નન્દઃ નન્દનામામણિકારશ્રેષ્ઠી, ' ઉત્તગિલ્લે ' ઉત્તરીયે વનપણ્ડે એકાં મહર્તી ' અલકારિયસમ ' અલકારિકસમા=નાપિતકર્મશાળા કાર યતિ, કીદશીમ્ ? અનેકસ્તમ્મશતસનિવિટ્ઠા યાવત્-પતિરૂપામ્, તત્ત તથ્યા નાપિતકર્મશાળાયા વહ્વોડલઢ્ઢારિક પુરુષા=નાપિતાઃ, દત્તમૃતિમત્તવેતનાઃ વહૂનાં

દ્રવ્ય સાધ્ય દવાકા નામ ઔષધ છે ઓર જો અનેક દવાઓંકે સયોગસે દવાઈ તૈયાર કી જાતી છે વત્ત મૈષ્ઞપ છે (તણ્ણ ણદે ઉત્તરિલ્લે વણસડે એગ મહ અલકારિયસમ કરાવેઈ અણેગસ્વમસયસ નિવિટ્ઠ જાવ પડિસ્સ, તત્થ વહ્વે અલકારિયપુરિસા દિન્નમઈમત્તવેયણા વહૂણ સમણાણ ય માહ-ણાણ ય અગાહાણ ય ગિલાણાણ ય રોગિયાણ ય દુઢ્ઢલાણ ય અલકારિય કમ્મ કરેમાણા ૨ વિહરતિ તણ્ણ તીએ નદાણ પોક્કલ્લિણીએ વહ્વે સણાહા ય અણાહા ય પથિયા ય પહિયાય કરોડિયા ય કપ્પડિયા ય તણહારા ય પત્તહારા ય કટ્ઢહારા ય અપ્પેગઈયા ણ્હાયતિ, અપ્પેગઈયા પાણિય પિયતિ, અપ્પેગઈયા પાણિય સવહતિ, અપ્પેગઈયા વિસડ્ઢિજય સે ય જલ્લમલ પરિસ્સમનિદ્ધ સુપ્પિવાસા સુહ સુહેણ વિહરતિ) ઇસ કે વાદ ઉસ મણિ-કાર શ્રેષ્ઠી નદને ઉત્તર દિશા સયન્વી વનપણ્ડ મે એક વડી ભારી નાપિત કર્મ શાળા વનવાઈ । વત્ત મૈ સૈકઢોં સ્વમો સે નિર્મિત્ત કી ગઈ

શબ્દથી ગૃહીત થયેલા છે એક દ્રવ્ય-સાધ્ય દવાનુ નામ ' ઔષધ ' છે અને જે અનેક (ઘણી) દવાઓના મિશ્રણથી તૈયાર કરવામા આવે છે તે લૈષ્ઞ્ય છે (તણ્ણ ણદે ઉત્તરિલ્લે વણસડે એગ મહ અલકારિયસમ કરાવેઈ અણેગસ્વમસય સ નિવિટ્ઠ જાવ પડિસ્સ, તત્થણ વહ્વે અલકારિયપુરિસા દિન્નમઈમત્તવેયણા વહૂણ સમણાણ ય, માહણાણ ય, અણાહાણ ય, ગિલાણાણ ય, રોગિયાણ ય, દુઢ્ઢલાણ ય, અલકારિયકમ્મ કરેમાણા ૨ વિહરતિ તણ્ણ તીએ નદાણ પોક્કલ્લિણીએ વહ્વે સણાહા ય અણાહા ય પથિયા ય, વહિયા ય કરોડીયા ય કપ્પડિયા ય તણ હારા ય, પત્તહારા ય કટ્ઢહારા ય અપ્પેગઈયા ણ્હાયતિ, અપ્પેગઈયા પાણિય પિયતિ અપ્પેગઈયા પાણિય સવહતિ, અપ્પેગઈયા વિસડ્ઢિજય સે ય જલ્લમલપરિસમનિદ્ધ સુપ્પિવાસા સુહ સુહેણ વિહરતિ) ત્યારપછી તે મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદે ઉત્તર દિશાના વનપણ્ડમા એક વિશાળ નાપિત કર્મશાળા (હન્નમ શાળા) ણનાવડાવી તે પશુ સેકડો ચાલવાઓ ઉપર બાધવામા આવી હતી જેવામા તે ખૂબ જ

श्रमणानां च ब्राह्मणानां च मनाथानां च ग्लानानां च रोगिणानां च दुर्बलानां चालङ्कारिककर्म कुर्वन्तः २ विहरन्ति ।

ततस्तदनन्तरं सल्लु तस्या नदाया पुष्करिण्या गङ्गाः सनाथाश्च अनाथाश्च पान्थिकाश्च पथिकाश्च करोटिकाश्च कर्पटिकाश्च तृणहारकाश्च पत्रहारकाश्च काष्ठहारकाश्च 'अप्येकहया' अप्येकहा = प्येके-केचन, 'ण्हायति' स्नान्ति=स्नानं कुर्वन्ति, अप्येकहाः-पानीयं पिबन्ति, अप्येकहाः-पानीयं सग्रहन्ति, भरन्ति, अप्येकहाः=केचन 'विसज्जियसेयजल्लमलपरिस्समनिःसुप्पिवासा' विजितस्वेदजल्लमलपरिश्रमनिद्राक्षुत्पिपासा विमज्जिता अपनीता दूरीकृता स्वेदजल्लमलरूपा शरीरमलास्तथापरिश्रमनिद्राबुभुक्षापिपासाश्च यैस्ते तथाविधा मनुष्याः 'सुहं सुहेण' सुखं सुखेन अतिसुखेन विहरन्ति । 'मित्ते' किमपि तद्वर्ण्यते-राजगृहमिति

थी । देवने मे बड़ी सुहावनी थी । इस मे अनेक नापित (नार्ड) भृति भक्त एव वेतन देकर नियुक्त किये गये थे । ये वहा अनेक श्रमणों के ब्राह्मणों के, सनाथ अनाथ जनो के, ग्लानो के, रोगियों के एव दुर्बलों के बाल बनाया करते थे । उस नदा पुष्करिणी में कितनेक सनाथ कितनेक पान्थिक, कितनेक पथिक, कितनेक करोटिक, कितनेक कर्पटिक, कितनेक तृण हारक-घास ढोने वाले कितनेक पत्र हारक कितनेक कण्ठ हारक-लकड़हारे-स्नान करते पानी पिया करते और कितनेक उस में से पानी भरा करते । कितनेक स्वेद, जल मल रूप शरीर के मैल को उस के जल से दूर करते और कितनेक परिश्रम, निद्रा बुभुक्षा एव पिपासा को उस बापिका के सहारे से शांत किया करते । इस तरह अनेक जन उस पुष्करिणी से बहुत आनन्दित रहते । (रायगिरि विणि

भनोअम लागती हुती तेमा धण्णा नापतो (डल्लभो) भृति, भक्त अने वेतन (पगार) आपीने नियुक्त उरवामा आव्या हुता तेओ त्या धण्णा श्रमणोना, ब्राह्मणोना, सनाथ तेमअ अनाथजनोना, ग्लानोना, रोगीओना अने दुर्बल भाणुओना बाण डापता हुता ते नदा पुष्करिणी (वाव) मा डेटलाड अनाथ, डेटलाड पथिक, डेटलाड पथिक, डेटलाड करोटिक, डेटलाड कर्पटिक, डेटलाड तृणहारक (चारना लागओ उथलनारा) डेटलाड पत्रहारक डेटलाड काष्ठहारक, (लाडल पगेरे वेथवानो वधो म्मनारा) स्नान उग्ता हुता, पाणी पीना हुता अने डेटलाड तो तेमाथी पाणी भरता रहेता हुता डेटलाड भाणुओ तो स्वेद, जलमा उग्र तरी आवत शरीरमा मैल ने पाणीमाथी जहार डाढता हुता अने चीन्त डेटलाड भाणुओ परिश्रम, निद्रा बृष्ण अने तरम ते पाणी पीने मटाडता हुता आ रीते धण्णा भाणुओ ते पुष्करिणीमा आनन्द-

લાના ચ 'ઓસહભેષજ્ઞમત્તપાણેણ' ઔષધ ભૈષજ્યમત્તપાનેન=ઔષધમેકદ્રવ્ય સાધ્ય, ભેષજ=અનેકદ્રવ્યસયોગનિષ્પન્ન મત્તપાનમ્-આહારઃ, પાનમ્=પાનીય, તેન, 'પહિયારકમ્મં' પ્રતિચારકર્મ=સેવાકાર કર્મ કુર્વન્તો વિહરન્તિ ।

તતસ્પદનન્તરં સ્વલુ નન્દઃ નન્દનામામણિકારશ્રેષ્ઠી, 'ઉત્તરિલ્લે' ઉત્તરીયે વનપણ્ડે એકા મહતી 'અલકારિયસમ' અલકારિકસમા=નાપિતકર્મશાળા વાર યતિ, કીદશીમ્ ? અનેકસ્તમ્મગતસનિવિષ્ટા યાગત્-પ્રતિરૂપામ્, તત્ર તથા નાપિતકર્મશાળાયા વહ્યોડ્ઠહારિક પુરુષાઃ=નાપિતાઃ, દત્તભૃતિમત્તવેતનાઃ વહૂનાં

દ્રવ્ય સાધ્ય દવાકા નામ ઔષધ છે અને જો અનેક દવાઓંકે સયોગસે દવાઈ તૈયાર કી જાતી છે વહ ભૈષજ્ય છે (તણ નદે ઉત્તરિલ્લે વનસહે એમ મહ અલકારિયસમ કરાવેઈ અણેગલ્લમસય સનિવિષ્ટ જાવ પહિરુવ, તત્થ વહવે અલકારિયપુરિસા દિન્નમહમત્તવેયણા વહૂણ સમણાણ ય માહ-ણાણ ય અગાહાણ ય ગિલાણાણ ય રોગિયાણ ય દુબ્બ-લાણ ય અલકારિય કમ્મ કરેમાણા ૨ વિહરતિ તણ તીણ નદાણ પોક્કલિનીણ વહવે સળાહા ય અળાહા ય પથિયા ય પહિયાય કરોડિયા ય કપ્પડિયા ય તળહારા ય પત્તહારા ય કટ્ટહારા ય અપ્પેગહયા પ્પહાયતિ, અપ્પેગહયા પાણિય પિયતિ, અપ્પેગહયા પાણિય સવહતિ, અપ્પેગહયા વિસજ્જિય સે ય જલ્લમલ પરિસસનિદ્ધ સુપ્પિવાસા સુહ સુહેણ વિહરતિ) હસ કે બાદ હસ મણિ-કાર શ્રેષ્ઠી નદને ઉત્તર દિશા સચન્વી વનપહડ મે એક બડી ભારી નાપિત કર્મ શાળા વનવાઈ । યહ બી સૈકડોં સ્વભો સે નિર્મિત્ત કી ગઈ

શબ્દથી ગૃહીત થયેલા છે એક દ્રવ્ય-સાધ્ય દવાનુ નામ 'ઔષધ' છે અને જે અનેક (ઘણી) દવાઓના મિશ્રણથી તૈયાર કરવામા આવે છે તે લૈષજ્ય છે (તણ નદે ઉત્તરિલ્લે વનસહે એમ મહ અલકારિયસમ કરાવેઈ અણેગલ્લમસય સનિવિષ્ટ જાવ પહિરુવ, તત્થ વહવે અલકારિયપુરિસા દિન્નમહમત્તવેયણા વહૂણ સમણાણ ય, માહણાણ ય, અળાહાણ ય, ગિલાણાણ ય, રોગિયાણ ય, દુબ્બ-લાણ ય, અલકારિયકમ્મ કરેમાણા ૨ વિહરતિ તણ તીણ નદાણ પોક્કલિનીણ વહવે સળાહા ય અળાહા ય પથિયા ય, વહિયા ય કરોડીયા ય કપ્પડિયા ય તળ હારા ય, પત્તહારા ય કટ્ટહારા ય અપ્પેગહયા પ્પહાયતિ, અપ્પેગહયા પાણિય પિયતિ અપ્પેગહયા પાણિય સવહતિ, અપ્પેગહયા વિસજ્જિય સે ય જલ્લમલ પરિસસનિદ્ધ સુપ્પિવાસા સુહ સુહેણ વિહરતિ) ત્યારપછી તે મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદે ઉત્તર દિશાના વનપહડમા એક વિશાળ નાપિત કર્મશાળા (હનમ શાળા) બનાવડાવી તે પશુ સેકડો થાલવાઓ ઉપર બાધવામા આવી હતી જેવામા તે ખૂબ જ

ય સયણેસુ ય સન્નિસન્નો ય સતુયદ્દો ય પેચ્છમાણો ય સાહે-
માણો ય સુહસુહેણં વિહરઈ, ત ધન્ને કયત્થે કયપુન્ને કયાણંદે
લોએ । સુલહે માણુસ્સણ જન્મ-જીવિયફલે નદસ્સ મણિયા-
રસ્સ, તણ્ણં રાયગિહે સિઘાડગ જાવ વહુજણો અન્નમન્નસ્સણ્ણ-
માઙ્ગલ્લઈ ૪ ધન્ને ણં દેવાણુપ્પિયા । ણદે મણિયારે સો ચેવ,
ગમઓ જાવ સુહસુહેણં વિહરઈ । તણ્ણં સે ણંદે મણિયારે
વહુજણસ્સ અતિણ્ણે એયમદ્દ સોચ્ચા ણિસમ્મ હદ્દતુદ્દે ધારાહય-
કલવગંપિવ સમૂસિયરોમકૂવે પર સાયાસોક્કલમણુભવમાણે
વિહરઈ ॥ સૂ૦ ૫ ॥

ટીકા—‘ તણ્ણં ણદાણ્ણ ’ ઇત્યાદિ । તતરતદનન્તર સ્વલ્લ નન્દાયા પુષ્કરિણ્યા
વહુજનઃ ‘ પ્હાયમાણો ય ’ સ્નાન કર્વન્ ‘ પીયમાણોય ’ પિવન્ પાનીય ચ સંવદ્ધ;

‘ તણ્ણં ણદાણ્ણ પોક્કલરિણીણ્ણ ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તણ્ણં) હસકે ત્રાદ (ણદાણ્ણ પોક્કલરિણીણ્ણ પ્હાયમાણો ય
પિયમાણો ય પાણિયચ સવહમાણો ય વહુજણો અણમણ્ણ એવ વયાસી-
ધણ્ણે ણ દેવાણુપ્પિયા । ણદે મણિયારસેટ્ઠી કયત્થે જાવ જન્મજીવિયફલે
જસ્સણ્ણ હમેયા સ્વ્વા ણદા પોક્કલરણી ચાઝકકોણા જાવ પડિ હ્વા, જિ-
સ્સાણં પુરત્થિમિલ્લે ત ચેવ સવ્વ ચઙ્ગુ વિ વણસહેસુ જાવ રાયગિહ
વિણિગ્ગઓ જત્થ વહુજણો આસણેસુ ય સયણેસુ ય સન્નિસન્નો ય
સતુયદ્દો ય પેચ્છમાણો ય સોહેમાણો ય સુહ સુહેણ વિહરઈ) ઉસ નદા
પુષ્કરિણી મેં સ્નાન કરને વાલા પાની પીનેવાલા ઓર ઉસ મેં સે પાની

‘ તણ્ણં ણદાણ્ણ પોક્કલરિણીણ્ણ ’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—(તણ્ણં) ત્યાગ્ગાદ (ણદાણ્ણ પોક્કલરિણીણ્ણ પ્હાયમાણો ય, પિયમાણો ય
પાણિય ચ સવહમાણો ય વહુજણો અણમણ્ણ એવ વયાસી ધણ્ણે ણ દેવાણુપ્પિયા ।
ણદે મણિયારસેટ્ઠી કયત્થે જાવ જન્મજીવિયફલે જસ્સણ્ણ હમેયાસ્વ્વ ણદા પોક્ક-
લરણી ચાઝકકોણા જાવ પડિહ્વા, જિસ્સાણ પુરત્થિમિલ્લે ત ચેવ સવ્વ ચઙ્ગુ વિ વણ-
સહેસુ જાવ રાયગિહવિણિગ્ગઓ જત્થ વહુજણો આસણેસુ ય સયણેસુ ય સન્નિસન્નો ય
સતુયદ્દો ય પેચ્છમાણો ય સોહેમાણો ય સુહ સુહેણ વિહરઈ) તે નદા પુષ્કરિણી
('વાવ') માં સ્નાન કરનાર, પાણી પીનાર, અને તેમાંથી પાણી ભરનાર, દરેકે
દરેકે માણુસ પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતો કરવા લાગ્યા છે એ બાબ । મણિયારે

ર્ગોઽપિ 'યત્ર વહુજનઃ' જલરમણવિવિદ્મજ્જનકયલિત્યાગ્રયકુસુમસત્થરયઅણેગ
સડળગણમ્યરિમિતસકલેસુ' જલરમણવિવિદ્મજ્જન 'કદલીલતાગૃહકુસુમશસ્ત-
રજોઽનેકશકુનગણરુતરિમિતસકુલેષુ=તત્ર જલરમણેઃ- જત્રક્રીડાદિભિઃ, વિવિદ્મ-
જ્જનૈ-વહુદિધૈઃ સ્નાનૈ, કદલીના લતાના ચ ગૃહકૈઃ કુસુમશસ્તરજોભિઃ=કુસુ-
માના પુષ્પાણા, શસ્તૈ=સુગંધયુક્તૈઃ, રજોભિઃ=પરાગૈશ્ચ, અનેકશકુનગણસ્તૈ=
વહુવિધપક્ષિગણાના સ્તૈ-શબ્દૈશ્ચ, સ્તૈ કીદૃશૈરિત્યાદ-રિમિતૈ સ્વયુક્તૈ-મધુરૈ-
રિત્યર્થઃ, સકુલેષુ=યુક્તેષુ વનપ્રદેષુ, યુગ્મ સુસેનાભિરમમાણ ૨ વિહરતિ, સૂ.૦૪॥

મૂલમ્-તદ્દર્શનં પાંદાણ પોવલ્લરિણીણ વહુજણો પહાયમાણો
ય પિયમાણો ય પાણિય ચ સંવહમાણો ય અન્નમન્ન એવ વેયા-
સી-ધણે 'ણ દેવાણુપ્પિયા । ણદે મણિયારસેટ્ટી કયત્થે જાવ
જમ્મજીવિયફલે જસ્સણંડમેયારૂવા પાંદા પોવલ્લરણી ચાઉક્કોખા
જાવ પાંડિરૂવા, જિસ્સા ણં પુરત્થિમિહ્લે ત ચેવ સઠ્ઠ ચડસુ વિ
વણસડેસુ જાવ રાયગિહે વિણિગ્ગઓ જત્થ વહુજણો આસણેસુ

ર્ગઓ વિ જત્થ વહુજગો કિં તે જલરમણ વિવિદ્મજ્જનકયલિલયા
'ઘરય કુસુમ સત્થરય અણેગઅભિરમમાણો ૨' વિહરહ) ઓર અધિક
કયા કહે-રાજગૃહ નગર સે બાહિર નિકલે હુણ પ્રાય સમી જન વિવિધ
પ્રકાર કી જલ ક્રીડાઓ સે નાના પ્રકાર કે મજ્જનો 'સે, કદલી' ઓર
લતાઓ કે ઘરો સે, પુષ્પો કી સુગંધિત રજ સે, ઓર અનેક વિધપક્ષી
ગણો કે મધુર શબ્દો સે યુક્ત હન વનપ્રદેશો મે આનંદ સે ઇટલોતે હુણ
વિચરણ કિયા કરતે યે । સૂત્ર ॥ ૪ ॥

પૂર્વક પોતાનો વખત ગાળતા હતા । (રાયગિહવિણિગ્ગઓ વિ જત્થ વહુજણો કિં
તે જલરમણવિવિદ્મજ્જનકયલિલયા ઘરય કુસુમ સત્થરયઅણેગસડળગણમ્યરિમિય
'સકુલેસુ સુહ સુદેણ અભિરમમાણો ૨ વિહરહ) અને ખીજુ તો વધારે શુ કહીએ
રાજગૃહ નગરની બહાર આવનારા ઘણા માણસો ઘણી જાતની જળ-ક્રીડાઓ
અને ઘણી જાતના મજ્જનો (સ્નાન) કરીને તેમજ કદલી અને લતાગૃહોથી,
પુષ્પોની સુગંધિત રજથી અને ઘણા પક્ષીઓના મધુર કલરવથી યુક્ત આ
વનપ્રદેશમાં આનંદથી મસ્ત થઈ ને લહેર કરતા હતા-વિચરણ કરતા હતા. "૪"

ય સયણેસુ ય સન્નિસન્નો ય સતુયદ્દો ય પેચ્છમાણો ય સાહે-
માણો ય સુહસુહેણ વિહરઈ, ત ધન્ને કયત્થે કયપુન્ને કયાણંદે-
લોએ । સુલહે માણુસ્સએ જન્મ-જીવિયફલે નદસ્સ મણિયા-
રસ્સ, તણ્ણં રાયગિહે સિઘાહગ જાવ વહુજણો અન્નમન્નસ્સ એવ-
માઙ્ગલ્લઈ ૪ ધન્ને ણં દેવાણુપ્પિયા । ણદે મણિયારે સો ચેવ
ગમઓ જાવ સુહસુહેણં વિહરઈ । તણ્ણ સે ણંદે મણિયારે
વહુજણસ્સ અતિએ ઇયમદ્દ સોચ્ચા ણિસમ્મ હદ્ધતુદ્ધે ધારાહય-
કલવગંપિવ સમૂસિયરોમકૂવે પર સાયાસોક્કલમણુભવમાણે
વિહરઈ ॥ સૂ૦ ૫ ॥

ટીકા—‘ તણ્ણ ણદાએ ’ ઇત્યાદિ । તતસ્તદનન્તર સ્વલુ નન્દાયા પુષ્કરિણ્યાં
વહુજનઃ ‘ પ્હાયમાણો ય ’ સ્નાન કર્ત્વેન ‘ પીયમાણોય ’ પિવન્ પાનીય ચ સંવહ

‘ તણ્ણ ણદાએ પોક્કલરિણીએ ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તણ્ણ) હસકે ત્રાદ (ણદાએ પોક્કલરિણીએ પ્હાયમાણો ય
પ્રિયમાણો ય પાણિયચ સવહમાણો ય વહુજણો અણમણ્ણ એવ વયાસી-
ધણે ણ દેવાણુપ્પિયા । ણદે મણિયારસેટ્ટી કયત્થે જાવ જન્મજીવિયફલે
જસ્સણ હમેયા સ્વ્યા ણદા પોક્કલરણી ચાઝકકોણા જાવ પહિ હ્વા, જિ-
સ્સાણ પુરતિયમિલ્લે ત ચેવ સન્ન ચઝસુ વિ વણસહેસુ જાવ રાયગિહ
વિણિગ્ગઓ જત્થ વહુજણો આસણેસુ ય સયણેસુ ય સન્નિસન્નો ય
સતુયદ્દો ય પેચ્છમાણો ય સોહેમાણો ય સુહ સુહેણ વિહરઈ) ઉમ નદા
પુષ્કરિણી મેં સ્નાન કરને વાલા પાની પીનેવાલા ઓર ઉસ મે સે પાની

‘ તણ્ણ ણદાએ પોક્કલરિણીએ ’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—(તણ્ણ) ત્યાગ્ણાદ (ણદાએ પોક્કલરિણીએ પ્હાયમાણો ય, પ્રિયમાણો ય
પાણિય ચ સવહમાણો ય વહુજણો અણમણ્ણ એવ વયાસી ધણે ણ દેવાણુપ્પિયા ।
ણદે મણિયારસેટ્ટી કયત્થે જાવ જન્મજીવિ ફલે જસ્સણ હમેચારૂત્ત ણદા પોક્ક-
લરણી ચાઝકકોણા જાવ પહિહ્વા, જિસ્સાણ પુરતિયમિલ્લે ત ચેવ સન્ન ચઝસુ વિ વણ-
સહેસુ જાવ રાયગિહવિણિગ્ગઓ જત્થ વહુજણો આસણેસુ ય સયણેસુ ય સન્નિસન્નો ય
સતુયદ્દો ય પેચ્છમાણો ય સોહેમાણો ય સુહ સુહેણ વિહરઈ) તે નદા પુષ્કરિણી
(‘ વાવ ’) મા સ્નાન કરનાર, પાણી પીનાર, અને તેમાથી પાણી બનાર, દરેકે
દરેકે માણસ પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતો કરવા લાગ્યા કે હે સાધ ! મણિયાર

માનઃ=ઘટાદિભિર્નયન્ ચાન્યોન્યમેવમવાદીત્-ધન્યઃ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયાઃ નન્દો મણિકારશ્રેષ્ઠી કૃતાથો યાવત્-સુલઘ્વજન્મજીવિતફલ, યસ્ય સ્વલુ હ્યમેતદ્રૂપા નન્દા=નન્દાનામ્ની, પુષ્કરિણી ચતુષ્કોણા યાવત્ પ્રતિરૂપા વર્તતે ' જિસ્સાણ ' યસ્યા સ્વલુ પુષ્કરિણ્યાઃ પોસ્ત્યે તદેવ સર્વં ચતુર્થપિ વનપણ્ડેષુ યાવત્-રાજગૃહ-વિનિર્ગતો યત્ર રહુજન આસનેષુ ચ શયનેષુ ચ સનિવણ્ણઃ=સમ્યક્પ્રકારેણોપવિષ્ટશ્ચ ' સતુયદ્દો ' સત્વગૃત્ત.=શયિત' કૃતપાર્થપરિવર્તનશ્ચ, ' યેચ્છમાણ ' પ્રેક્ષમાણઃ વનપણ્ડશ્રિય પશ્યન્ 'સાહેમાણો' કથયન્=તદ્વિષયકકથા કુર્વન્ શ્લાઘયન્ વા સુખ સુખેન=અતિસુખેન વિહરતિ । તત્-તસ્માદ્ ધન્યઃ કૃતાર્થ કૃતપુણ્યઃ કૃતાનન્દો નન્દમણિકારશ્રેષ્ઠીલોકે સુલઘ્વ માનુષ્યજન્મજીવિતફલ યસ્ય નન્દસ્ય મણિકા

ભરને વાલા પ્રત્યેક જન આપસ મેં હમ પ્રકાર સે વાત ચીત ક્રિયા કરતા કિ હે ભાઈ ! મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદ કો ધન્યવાદ ' હૈ । વહ કૃતાર્થ હો ગયા । ડસને અપને જન્મ ઓર જીવનકા ફલ અચ્છી તહર સે પા લિયા કિ જિસમે યહ ચારકોનોં વાલી યાવત્ પ્રતિરૂપ નદા નામ કી સુન્દર વાપિકા વનવાઈ હૈ । ઓર ડસકે ચારોં ઓર ચાર વનખડ વનવાયે હૈ । પૂર્વ દિશા સવન્ધી વનપડ મેં એક વિશાલ ચિત્રસભા વનવાઈ હૈ હત્યાદિ રૂપ સે પહિલે કા કહા ગયા સવ સવન્ધ યહાં સમજ્ઞ લેના ચાહિયે । હન ચાર વનપડોમેં યાવત્ રાજગૃહ નગરસે નિર્ગત પ્રત્યેક જન બિછે હુએ આસનો પર શયનો પર વૈઠ કર, લેટ કર, વનપડ કી શોભા કા નિરીક્ષણ કરતા હુઆ, તદ્વિષયક કથા-વાર્તા-કરતા હુઆ બડે આનંદ કે સાથ વિચરણ કરતા હૈ । (ત ધન્ને કથત્યે કયપુન્ને કયાણંદે લોએ ! સુલદ્દે માણુસ્સએ જમ્મજીવિયફલે નદસ્સ મણિયારસ્સ તણ

શ્રેષ્ઠી નદને ધન્યવાદ છે તે કૃતાર્થ થઈ ગયો છે તેણે પોતાના જન્મ જીવનનું કૃણ સારી રીતે મેળવી લીધું છે કેમકે તેણે આ ચાર ખૂણાઓવાળી પ્રતિરૂપ વગેરે ગુણોથી યુક્ત એવી નદા નામે રમ્ય વાવ બનાવડાવી છે અને વાવને ચારે બાજુએ ચાર વનપડો બનાવડાવ્યા છે પૂર્વ દિશા તરફના વન પડમા એક વિશાળ ચિત્રસભા બનાવડાવી છે, વગેરે પહેલાની જેમજ અહીં સમજી લેવું જોઈએ એ ચારે વનપડોમા રાજગૃહ નગરથી આવીને માણુસો આસનો તેમજ શયનો ઉપર બેસીને, સૂઈને અને વનપડની શોભાને જોતાં, તદ્વિષયક કથા-વાર્તા-(વનપડ સબધી વખાણો) એટલે કે થયાંઓ કરતા સુખેથી વિચરણ કરતા રહે છે (ત ધન્ને કથત્યે કયપુન્ને કયાણંદે લોએ । સુલદ્દે માણુસ્સએ જમ્મજીવિયફલે નદસ્સ મણિયારસ્સ તણ રાયગિહે સિંધા ઢગ જાવ બહુજનો અન્નમન્નસ્સ એવમાહિક્કસદ્ ૪ ધન્નેણ મેઘાણંદે) ।

રસ્ય શ્રેષ્ઠિનઃ, અત્ર સમ્યન્ધમામાન્યે પૃષ્ઠી । એવ રાજગૃહવિનિર્ગતોવહુજનરતત્રસ્થિતો
વદતીત્યર્થ । તતસ્તદનન્તર સ્વલુ રાજગૃહે નગરે ' સિંધાડગ જાવ વહુજનો '
શૃંગાટકાદિયાવન્મહાપથપયેષુ વહુજન', અન્યોન્યસ્ય=પરસ્પર, એવમાહ્યાતિ, માપતે,
પ્રજ્ઞાપયતિ, પ્રરૂપયતિ । કિમારયાતીત્યાહ-હે દેવાનુમિય ! ધન્ય. સ્વલુ નન્દો
મણિકારઃ 'સો ચેવ ગમઓ' સ એવ ગમકુ =અત્ર પૂર્વોક્ત એવ પાઠો વાચ્ય, કૃતાર્થ
કૃતપુણ્ય, યાત્-સુલભ્ય જન્મજીવિતફલ, યસ્ય સ્વલુ ઇયમેનરૂપા નન્દા પુષ્કરિણી
ચતુષ્કોણા યાત્ પ્રતિરૂપા વર્તતે, યાત્-વહુજન.-સુખસુખેન વિહરતિ । તતઃ

રાયગિહે સિંધાડગ જાવ વહુજનો અન્નમન્નસ્સ એવમાહસ્વહ ૪ ધન્ને ણ
દેવાણુપ્પિયા ! ણદે મણિયારે સો ચેવ ગમઓ જાવ સુહ સુહેણં વિહરહ,
તણ સે ણદે મણિયારે વહુજણસ્સ અતિણ એયમહુ સોચ્ચા ણિસમ્મ
હટ્ઠતુદ્ધે ધારાહયકલવગ પિવ સમૂસિય રોમકૂવે પર સાયા સોસ્સમણુભ-
વમાણે વિહરહ) હમ લિયે નદ મણિકાર શ્રેષ્ઠી વિશેષ રૂપ સે ધન્ય
વાદાર્હ હૈ । વિશિષ્ટ પુણ્યશાલી હૈ । ઓર વિશિષ્ટ આનન્દ કા ભોક્તા હૈ ।
હસ લોક મેં મનુષ્ય જન્મ ઓર જીવન કા ફલ હસ ને પ્રાપ્ત કર લિયા
હૈ । હસી તરહ કી રાજગૃહ નગર કે શૃંગાટક આદિ મહા માર્ગો પર
સહે હોકર અનેક જન પરસ્પર મેં વાત ચીત કિયા કરતે, પરસ્પર મેં
સમાપણ કરતે, પ્રજ્ઞાપના કરતે ઓર પ્રરૂપણા કરતે રહતે-વે કહતે-હે
માઈ ! નદ મણિકાર શ્રેષ્ઠી કો ધન્યવાદ હૈ, વહ કૃતાર્થ હૈ, કૃત પુણ્ય
હૈ । હસી ને અપને મનુષ્ય ભવસંવધી જન્મ ઓર જીવન કો પા લિયા
હૈ-જિસ ને યહ હતની સુન્દર ચાર કોન વાલી નદા પુષ્કરિણી વનવાઈ
હૈ । જહા અનેક જન સુખ પૂર્વક વિચરણ કરતા હૈ । હત્યાદિ પહિલે કા

મણિયારે સોચેવ ગમઓ જાવ સુહ સુહેણ વિહરહ, તણ સે ણદે મણિયારે
વહુજણસ્સ અતિણ એયમહુ સોચ્ચા ણિમમ્મ હટ્ઠતુદ્ધે ધારાહયકલવગ પિવ
સમૂસિય રોમકૂવે પર સાયા સોસ્સમણુભવમાણે વિહરહ) એથી નદ
મણિયાર ખરેખર અવિશેષ ધન્યવાદને યોગ્ય છે તે વિશિષ્ટ પુણ્યશાળી છે અને
વિશિષ્ટ આનન્દનો ઉપભોગ કરનાર છે આ લોકમા મનુષ્ય જન્મ અને જીવ-
નનુ ફળ તેણે સંપૂર્ણપણે મેળવી લીધું છે આ ગીતે જ રાજગૃહ નગરના
શૃંગાટક વગેરે રાજમાર્ગો ઉપર ઊભા રહીને ઘણા માણસો પરસ્પર વ તો કરતા
હતા અભાષણ કરતા હતા, પ્રજ્ઞાપના કરતા હતા અને પ્રરૂપણ કર્યા કરતા
હતા તેઓ કહેતા કે હે ભાઈ ! નદ મણિકાર શ્રેષ્ઠીને ધન્ય છે, તે ખરેખર
કૃતાર્થ મનુષ્યભવ સંવધી જન્મ અને જીવનને સફળ બનાવ્યા છે તેણે કેટલી
સરસ નદા નામે ચાર ખૂણાવાળી વાવ બંધાવી છે ત્યાં ઘણા માણસો સુખેથી

માનઃ=ઘટાદિભિર્નયન્ ચાન્યોન્યમેતમવાદીત્-ધન્યઃ સ્વલુ હે દેવાનુમિયાઃ નન્દો મણિકારશ્રેષ્ઠી કૃતાથો યાવત્-સુલન્ધજન્મજીવિતફલ, યસ્ય સ્વલુ હ્યમેતદૂપા નન્દા=નન્દાનામ્ની, પુષ્કરિણી ચતુષ્કોણા યાવત્ પ્રતિરૂપા વર્તતે ' નિસ્સાણ ' યસ્યા સ્વલુ પુષ્કરિણ્યાઃ પૌરસ્ત્યે તદેવ સર્વં ચતુર્વપિ વનપણ્ડેષુ યાવત્-રાજગૃહ વિનિર્ગતો યત્ર વહુજન આસનેષુ ચ શયનેષુ ચ સનિવણ્ણઃ=સમ્યક્પ્રકારેણોપવિષ્ટશ્ચ ' સતુયદ્દો ' સત્વગૃહ્ણતઃ=શયિતઃ કૃતપાર્થપરિવર્તનશ્ચ, ' પેચ્છમાણ ' પ્રેક્ષમાણઃ વનપણ્ડશ્રિય પશ્યન્ 'સાહેમાણો' કથયન્=તદ્વિષયકકથા કુર્વન્ શ્લાઘયન્ વા સુખ સુખેન=અતિસુખેન વિઠરતિ । તત્-તસ્માદ્ ધન્ય' કૃતાર્થ કૃતપુણ્યઃ કૃતાનન્દો નન્દમણિકારશ્રેષ્ઠીલોકે સુલ્લઘ માનુષ્યકજન્મજીવિતફલ યસ્ય નન્દસ્ય મણિકા

ભરને ચાલા પ્રત્યેક જન આપસ મેં હમ પ્રકાર સે વાત ચીત કિયા કરતા કિ હે ભાઈ ! મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદ કો ધન્યવાદ હૈ । વહ કૃનાર્થ હો ગયા । ઉસને અપને જન્મ ઓર જીવનકા ફલ અઠ્ઠી તહર સે પા લિયા કિ જિસમે યહ ચારકોનોં વાલી યાવત્ પ્રતિરૂપ નદા નામ કી સુન્દર વાપિકા બનવાઈ હૈ । ઓર ઉસકે ચારોં ઓર ચાર વનખડ બનવાયે હૈ । પૂર્વ દિશો સવન્ધી વનખડ મેં એક વિશાલ ચિત્રસભા બનવાઈ હૈ । ઇત્યાદિ રૂપ સે પહિલે કા કહા ગયા સબ સવન્ધ યહાં સમજ્ઞ લેના ચાહિયે । ઇન ચાર વનખડોમેં યાવત્ રાજગૃહ નગરસે નિર્ગત પ્રત્યેક જન બિઠે હુએ આસનો પર શયનો પર વૈઠ કર, લેટ કર, વનખડ કી શોભા કા નિરીક્ષણ કરતા હુઆ, તદ્વિષયક કથા-વાર્તા-કરતા હુઆ બઢે આનંદ કે સાથ વિચરણ કરતા હૈ । (ત ધન્ને કયત્યેકયપુન્ને કયાર્ણદે લોએ ! સુલલ્લે માણુસ્સએ જમ્મજીવિયફલે નદસ્સ મણિયારસ્સ તણ

શ્રેષ્ઠી નદને ધન્યવાદ છે તે કૃતાર્થ થઈ ગયો છે તેણે પોતાના જન્મ શ્રવ નનુ ફળ સારી રીતે મેળવી લીધું છે કેમકે તેણે આ ચાર ખૂણાઓવાળી પ્રતિરૂપ વગેરે ગુણોથી યુક્ત એવી નદા નામે રમ્ય વાવ બનાવડાવી છે અને વાવને ચારે બાજુએ ચાર વનખડો બનાવડાવ્યા છે પૂર્વ દિશા તરફના વન ખડમા એક વિશાળ ચિત્રસભા બનાવડાવી છે, વગેરે પહેલાની જેમજ અહીં સમજી લેવું જોઈએ એ ચારે વનખડોમા રાજગૃહ નગરથી આવીને માણુસો આસનો તેમજ શયનો ઉપર બેસીને, સૂઈને અને વનખડની શોભાને જોતાં, તદ્વિષયક કથા-વાર્તા-(વનખડ સબધી વખાણું) એટલે કે ચર્ચાઓ કરતા સુખેથી વિચરણ કરતા રહે છે (ત ધન્ને કયત્યે કયપુન્ને કયાર્ણદે લોએ । સુલલ્લે માણુસ્સએ જમ્મજીવિયફલે નદસ્સ મણિયારસ્સ તણ રાયગિદે સિંધા હગ જાવ વહુજનો અન્નમન્નરહ્મ એવમાદ્કયદ ૪ ધન્નેણ દેવાણિ ! ણંદે

રસ્ય શ્રેષ્ઠિન., અત્ર સમ્યન્ધમામાન્યે પ્પઠી । એવ રાજગૃહવિનિર્ગતોવહુજનરતત્રસ્થિતો
વદતીત્યર્થ । તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ રાજગૃહે નગરે ' સિંઘાડગ જાવ વહુજનો '
શૃંગાટકાદિયાવન્મહાપથપથેષુ વહુજન', અન્યોન્યસ્ય=પરસ્પર, એવમાહ્યાતિ, માપતે,
પ્રજાપયતિ, પ્રરૂપયતિ । કિપારયાતીત્યાહ-હે દેવાનુમિય ! ધન્ય, સ્વલુ નન્દી
મણિકાર. 'સો ચેવ ગમઓ' સ એવ ગમક =અત્ર પૂર્વોક્ત એવ પાઠો વાચ્ય, કૃતાર્થ
કૃતપુણ્યઃ, યાવત્-સુલભ્ય જન્મજીવિતફલ, યસ્ય સ્વલુ ઇયમેનરૂપા નન્દા પુષ્કરિણી
ચતુષ્કોણા યાવત્ પ્રતિરૂપા વર્તતે, યાવત્-વહુજન -સુખસુખેન વિહરતિ । તતઃ

રાયગિહે સિંઘાડગ જાવ વહુજનો અન્નમન્નસ્સ એવમાહસ્વહ ૪ ધન્ને ણ
દેવાણુપ્પિયા ! ણદે મણિયારે સો ચેવ ગમઓ જાવ સુહ સુહેણં વિહરહ,
તણ સે ણદે મણિયારે વહુજણસ્સ અતિણ એયમહ સોચ્ચા ણિસમ્મ
હટ્ઠતુદ્ધે ધારાહયકલવગ પિવ સમૂસિય રોમકૂવે પર સાયા સોક્કલમણુભ-
વમાણે વિહરહ) ઇસ લિયે નદ મણિકાર શ્રેષ્ઠી વિશેષ રૂપ સે ધન્ય
વાદાર્હ છે । વિશિષ્ટ પુણ્યશાલી છે । ઓર વિશિષ્ટ આનંદ કા ભોક્તા છે ।
ઇસ લોક મે મનુષ્ય જન્મ ઓર જીવન કા ફલ ઇસ ને પ્રાપ્ત કર લિયા
છે । ઇસી તરહ કી રાજગૃહ નગર કે શૃંગાટક આદિ મહા માર્ગો પર
લેહે હોકર અનેક જન પરસ્પર મે વાત ચીત કિયા કરતે, પરસ્પર મે
સમાવણ કરતે, પ્રજાપના કરતે ઓર પ્રરૂપણા કરતે રહતે-વે કહતે-હે
માઈ ! નદ મણિકાર શ્રેષ્ઠી કો ધન્યવાદ છે, વહ કૃતાર્થ છે, કૃત પુણ્ય
છે । ઊસી ને અપને મનુષ્ય ભવસંધી જન્મ ઓર જીવન કો પા લિયા
છે-જિસ ને યહ ઇતની સુન્દર ચાર કોન ચાલી નદા પુષ્કરિણી વનવાઈ
છે । જહા અનેક જન સુખ પૂર્વક વિચરણ કરતા છે । ઇત્યાદિ પદ્ધિલે કા

મણિયારે સોચેવ ગમઓ જાવ સુહ સુહેણ વિહરહ, તણ સે ણદે મણિયારે
વહુજણસ્સ અતિણ એયમહ સોચ્ચા ણિસમ્મ હટ્ઠતુદ્ધે ધારાહયકલવગ પિવ
સમૂસિય રોમકૂવે પર સાયા સોક્કલમણુભવમાણે વિહરહ) એથી નદ
મણિયાર ખરેખર સવિશેષ ધન્યવાદને યોગ્ય છે તે વિશિષ્ટ પુણ્યશાળી છે અને
વિશિષ્ટ આનંદને । ઉપલોગ કરનાર છે આ લોકમા મનુષ્ય જન્મ અને જીવ-
નનુ રૂપ તેણે મપૂણ્ય પણે મેળવી લીધું છે આ રીતે જ રાજગૃહ નગરના
શૃંગાટક વગેરે રાજમાર્ગો ઉપર ઊભા રહીને ઘણા માણુઓ પરસ્પર વ તો કરતા
હતા સલાપણુ કરતા હતા, પ્રજાપના કરતા હતા અને પ્રરૂપણા કર્યા કરતા
હતા તેઓ કહેતા કે હે ભાઈ ! નદ મણિકાર શેઠને ધન્ય છે, તે ખરેખર
કૃતાર્થ મનુષ્યભવ સંધી જન્મ અને જીવનને સફળ બનાવ્યા છે તેણે કેટલી
સરસ નદા નામે ચાર ખૂણાવાળી વાવ બંધાવી છે ત્યાં ઘણા માણુઓ સુખેથી

खलु स नन्दो मणिकारश्रेष्ठी बहुजनस्यान्तिके एनमर्थश्रुत्वा दृष्टनुष्टः ' धाराहय-
 कलयगपि ' धाराहतकदम्बकमित्र=मेघधाराभिराहत यत्कदम्बकुसुम तद्वत्-
 ' समृसियरोरकूवे ' समुन्द्भूतरोमरूपः समुल्लभितरोमरन्त्रः सजातरोमाश्च इत्यर्थः,
 परम=उत्कृष्ट ' सायामोक्तत्वमणुभवमाणे ' शातसौरयमनुभवन्=बहुजनकृत-
 स्वात्मप्रशसाश्रवणजनित शातगौरवोदयेनामन्दमानानन्दोल्लसितचित्तः, सन् विह-
 रति=भास्तेस्म ॥ सू० ५ ॥

मूलम्—तएणं तस्स नदस्स मणियारसेट्टिस्स अन्नयाकयाई
 सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउवभूया त जहा—“ सासे १,
 कासे २, जरे ३, दाहे ४, कुच्छिसूले ५, भगदरे ६। अरिसा ७,
 अजीरए ८, दिट्ठिमुद्धसूले ९-१० अरोअए ११” ॥१॥ अच्छिवेयणा
 १२, कन्नवेयणा १३, कडू १४, दउदरे १५, कोढे १६। तएणं
 से णदे मणियारसेट्टी सोलसहि रोगायकेहि अभिभूए समाणे
 कोडुंवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एव वयासी-गच्छह णं
 तुव्भे देवाणुप्पिया । रायगिहे सिघाडग जाव पहेसु महयार
 सदेणं उग्घोसेमाणा एव वदह—एव खलु देवाणुप्पिया । णंदस्स

सत्त्वत्तव्य यहा लगा लेना चाहिये । मणिकार श्रेष्ठी नद अनेक जनों
 के मुख से इस अपनी प्रशसा रूप अर्थ को सुनता तो सुन कर बहुत
 अधिक आनदित एव सतुष्ट बन जाता । मेघ की धारा से आहत
 कदम्ब, पुष्प के समान उस के शरीर भर में रोमांच हो आते । इस तरह
 अनेक जन कृत अपनी प्रशसा के श्रवण से जनित शातगौरवोदय से
 अनन्द आनन्द उल्लसित बना रहता । सूत्र ॥ ५ ॥

विचरए उरे छे-वगेरे अहाँ पणु पूर्ववत् वर्णन समञ्ज लेवु जेध ओ मणिकार
 श्रेष्ठि नद धणु। माणुसेना मोची पोताना वणाणु सालणतो त्थारे णहु न
 आनदित अने सतुष्ट थध जतो हुतो। मेघनी धाराओथी आहत कदम्ब पुष्पनी
 जेम तेनु शरीर रोमाचित थध जतु हुतु आ रीते धणु। माणुसेना मुजेथी
 पोताना वणाणु सालणीने ते शत गौरवोदयथी जूम न आनदमा भन्ति
 रुडेतो हुतो ॥ सूत्र “ ५ ” ॥

मणियारसेट्टिस्स सरीरगस्सि सोलसरोगायका पाउव्भूया तं जहा—
 'सासे जाव कोढे' त जो ण डच्छइ देवाणुप्पिया । वेज्जो वा वेज्ज-
 पुत्तो वा जाणओ वार कुसलो वार नदस्स मणियारस्स तेसि
 च णं सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसाभेत्तए
 तस्स णं देवाणुप्पिया । मणियारे विउल अत्थसपयणं दलयइ
 त्तिकट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसणं घोसेह घोसित्ता एयमाणत्तिय
 पच्चप्पिणह, तेहि तहेव पच्चप्पिणति, तएण रायगिहे इमेयारूव
 घोसण सोच्चा णिसम्म वहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाव कुस-
 लपुत्ता य सत्थकोसहत्थगया य कोसगपायहत्थगया य सिलि-
 याहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसहभेसज्जहत्थगया य
 सएहि २ गिहेहितो निक्खमाति निक्खमिन्ता रायगिहं नयरं
 मज्झ मज्झेण जेणेव णदस्स मणियारसेट्टिस्स गिहे तेणेव उवा-
 गच्छति उवागच्छित्ता णदस्स सरीर पासति, तेसि रोगायकाण
 'णियाणं पुच्छति णदस्स मणियारसेट्टिस्स वहूहि उव्वलणेहि य
 उवट्टणेहि य सिणेहपाणेहि य वमणेहिय विरेयणेहि य सेयणेहिय
 अवदहणेहि य अवण्हाणेहि य अणुवासणेहि य वेत्थिकम्मेहि
 य निरूहेहि य सिरावेहेहि य तच्छणाहि य पच्छणाहि य
 सिरावेढेहि य तप्पणाहि य पुडपागेहि य छल्लीहि य वल्लीहि य
 मूलेहि य कदेहि य पत्तेहि य पुप्फंहि य फलेहि य वीएहि य
 सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहिय भेसज्जेहि य डच्छतितेसि
 सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसामित्तए, नो चेव णं
 सचाएति उवमामेत्तए, तएण ते वहवे वेज्जा य ६ जाहे नो
 संचाएति तेसि सोलसण्ह रोगायकाण एवमवि रोगायक उव-

સામિત્તણ તાહે સતા તતા જાવ પડિગયા । તણ નદે તેહિ સોલસેહિ રોગાયંકેહિ અભિભૂણ સમાણે ણદા પોઝ્ઝવરણીણ મુચ્છીણ મિદ્ધે ગઢિણ અઙ્ગોવવણે તિરિવ્વજોણિણિં નિવ-
દ્ધાઉણ વદ્ધપણસિણ અદ્ધદુહદ્ધવસદ્ધે કાલમાસેકાલ કિચ્ચા નદાણ પોઝ્ઝવરણીણ દદ્ધરીણ કુચ્છિસિ દદ્ધરત્તાણ ઉવવન્ને ॥સૂ.૦૬॥

ટીકા—‘તણ તસ્મ’ ઇત્યાદિ । તતસ્તદનન્તર સ્વલુ નન્દસ્ય મણિકાર-
શ્રેષ્ઠિનઃ, અન્યદા કદાચિત્—પ્રવલતરગાતગૌરવજનિતકર્મોદયેના શરીરે પોડશ
રોગાતાઙ્કા. તત્ર રોગા.=સ્વલ્પકાલસ્થાયિનો ઝવરાદય, આતઙ્કા:=ચિરસ્થાયિનઃ
કુષ્ઠાદયઃ, માદુર્ભૂતાઃ, તદ્ યથા—

સાસે ૧ કાસે ૨ જરે ૩ દાહે ૪ કુચ્છિમૂલે ૫ મગરે ૬ ।

અરિસા ૭ અજીરણ ૮ દિદ્ધિમુદ્ધ ૯-૧૦ સૂલે અરોઝણ ૧૧ ॥ ૧॥

અચ્છિવેયણા ૧૨ રન્નવેયણા ૧૩ કઙ્ક ૧૪ દુડરે ૧૫ કોઢે ૧૬ ॥

(૧) શ્વાસ = ઊર્ધ્વશ્વાસ, (૨) કાસ = ક્ષેપ્તવિકાર, (૩) ઝવરસ્તાપ, (૪)

‘તણ તસ્સ નદસ્સ’ ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—(તણ) इसके बाद (तस्स नदस्स) मणियारसेट्टिस्स
अन्नया कयाई सरीरगसि सोलस रोगायका पाउब्भूया तजहा—उस
मणिकार श्रेष्ठी के शरीर में किसी एक समय ये प्रवलतर
शात गौरव जनित कर्म के उदय से १६ रोग और आतङ्क
प्रकट हुए—स्वल्प कालतक जो बिमारी शरीर में रहती है—जैसे ज्वर
आदि—वे रोग, और जो बीमारी शरीर में चिरस्थायी होकर रहती
है जैसे कुष्ठादि—वे आतंक कहलाते हैं । वे सोलह ये हैं—१ श्वास
—उर्ध्वश्वास, २ कास—खासी, ३ ज्वर—ताप, ४ दाह—दाहज्वर, ५ कुक्षि-

‘તણ તસ્સ નદસ્સ’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—(તણ)ત્યારપછી(તસ્સ નદસ્સ)મણિયાર સેટ્ટિસ્સ અન્નયા કયાઈ સરી
રગસિ સોલસ રોગાયકા પાઉબ્ભૂયા—ત જહા તે મણિકાર શ્રેષ્ઠિના શરીરમા કેઈ એક :
વખતે પ્રબળતર શાત જો વ જનિત કર્મના ઉદયથી ૧૬રોગો અને આતંકો પ્રગટયા
થોડા વખત સુધી શરીરમા જે માદગી રહે છે જેમ કે તાર વગેરે તે રોગ અને જે
મદગી શરીરમા કાયમ માટે રહે છે જેમકે કોઠ વગેરે તે આતંક કહેવાય છે તે
સોળ ના નામ આ પ્રમાણે છે—(૧)શ્વાસ—ઉર્ધ્વ શ્વાસ,(૨)કાસ—ઉધરમ (૩)જ્વર—

दाहः,=दाहज्वरः, (५) कुक्षिशूल, (६) भगदर, (७) अर्श =गुदाङ्कुररोग, (८) अजीर्ण =आहारस्यापरिणति, (९) दृष्टिशूल, दृष्टिशूल-नेत्रशूलम् (१०) मूर्धशूल=मस्तकशूलम्, (११) " अरोचक " अरोचक =भोजनादावरुचिः, (१२) अक्षिवेदना (१३) कर्णवेदना (१४) कण्ठ =दर्ज, (१५) दकोदर-जलोदर (१६) कुष्ठ ।

ततः खलु स नन्दो मणिकार षोडशभीरोगातङ्गेरभिभूतः सन् कौटुम्बिक पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्-हे देवानुप्रियः ! गच्छत खलु यूय राजगृहे शङ्काटक यावद्-महापथयेषु महता महता शब्देनोद्धोपयन्त. २ एव -हे देवानुप्रिया ! एव खलु नन्दस्य मणिकारश्रेष्ठिन, शरीरके षोडशरोगा तङ्काः प्रादुर्भूता, तद् यथा श्वासो यावत् कुठ । तत्=तस्माद् य खलु इच्छति हे देवानुप्रियाः ! वैद्यो वा, वैद्यपुत्रो वा, ज्ञायको वा, ज्ञायकपुत्रो वा कुमलो वा, कुशपुत्रो वा, नन्दस्य मणिकारस्य तेषा च खलु षोडशाना रोगातङ्कानामेकमपि

शूल, ६ भगदर, ७ अर्श-व्यासीर ८ अजीर्ण, ९ दृष्टिशूल, १० मस्तक शूल ११ अरोचक-भोजनादि मे रुचि का अभाव, १२ अक्षिवेदना १३ कर्णवेदना १४ खाज १५ जलोदर १६ कुष्ठ (तएण मणियारसेट्ठी णदे सोलसहिं रोगायकेहि अभिभूण समणे कोडुवियपुरिसे सदावेड, सदा-वित्ता एव व्यासी गच्छत ण तुब्भे देवानुप्पिया ! रायगिहे सिधाडग जाव पहेसु महया २ सदेण उग्घोसेमाणा २ एव वयह-एव खलु देवानुप्पिया ! णदस्स मणियारसेट्ठिस्स सरीरगंसि सोलसरोगायका पाउब्भूया-त जहा-मासे जाव कोढे ' त जो ण उच्छतइ देवानुप्पिया ! वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणओ वा २ कुमलो वा २ नदस्स मणिया-रस्स तेसि च ण सोलसण्ह रोगायकाण एगम वि रोगायक उवसामेत्तए

ताव, (४) दाह-दाहज्वर (५) कुक्षिशूल, (६) भगदर, (७) अर्श-ङ्कुर, (८) अजीर्ण-अपरिणति (९) दृष्टिशूल (१०) मस्तकशूल (११) अरोचक भोजनादिवगेरे तरङ्ग आणुगना थलु, (१२) अक्षिवेदना (१३) कर्णवेदना, (१४) खाज-णरुण, (१५) जलोदर (१६) कुष्ठ (तएण मणियारसेट्ठी से णदे सोलसहिं रोगायकेहि अभिभूण समणे कोडुवियपुरिसे सदावेड, सदावित्ता, एव व्यासी, गच्छत ण तुब्भे देवानुप्पिया ! रायगिहे सिधाडग जाव पहेसु महया २ सदेण उग्घोसेमाणा २ एव वयह एव खलु देवानुप्पिया ! णदस्स मणियारसेट्ठिस्स सरीरगंसि सोलस रोगायका पाउब्भूया-त जहा-मासे जाव कोढे त जोण उच्छतइ देवानुप्पिया ! वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणओ वा २ कुमलो वा २ नदस्स मणियारस्स तेसि च ण सोलसण्ह रोगायकाण एगमविरोगायक उवसामेत्तए तस्स ण देवानुप्पिया !

સામિત્તણ તાહે સતા તતા જાવ પડિગયા । તણ નદે તેહિ
સોલસેહિ રોગાયકેહિં અભિભૂણ સમાણે ણદા પોઝ્ઝરણીણ
મુચ્છીણ ગિછે ગઢિણ અઝ્ઝોવવણે તિરિવ્વજોણિણિં નિવ-
દ્ધાઉણ વઘ્ઘપણિણ અદ્દહુહદ્દવસદ્દે કાલમાસેકાલ કિચ્ચા નદાણ
પોઝ્ઝરણીણ દહરીણ કુચ્છિસિ દહરત્તાણ ઉવવન્ને ॥સૂ.૦૬॥

ટીકા—‘તણ તસ્મ’ ઇત્યાદિ । તતસ્તદનન્તરં સ્વલ્પ નન્દસ્ય મણિકાર-
શ્રેણિનઃ, અયદા કદાચિત્-પ્રવલતરગાતગૌરવજનિતકર્મોદયેના શરીરે ષોડશ
રોગાતાઙ્કાઃ તત્ર રોગા =સ્વલ્પકાલસ્થાયિનો ઝવરાદય, આતઙ્કા =ચિરસ્થાયિનઃ
કુષ્ઠાદયઃ, પ્રાદુર્ભૂતાઃ, તદ્ યથા—

સાસે ૧ કાસે ૨ જરે ૩ દાહે ૪ કુચ્છિમૂલે ૫ મગરે ૬ ।

અરિસા ૭ અજીરણ ૮ દિદ્ધિમુદ્ધ ૯-૧૦ સૂલે અરોઘ્રણ ૧૧ ॥ ૧॥

અચ્છિવેયણા ૧૨ વઘ્ઘવેયણા ૧૩ કહ્ ૧૪ દહરે ૧૫ કોઢે ૧૬ ? ॥

(૧) શ્વાસ =ઊર્ધ્વશ્વાસઃ, (૨) કાસ =ઋષ્ટેષ્મવિકારઃ, (૩) ઝવરસ્તાપ, (૪)

‘તણ તસ્મ નદસ્મ’ ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—(તણ) હમકે વાદ (તસ્મ નદસ્મ) મણિયારસેટ્ઠિસ્સ
અન્નયા કયાઈ સરીરગસિ સોલસ રોગાયકા પાઝમ્ભૂયા તજહા-ઉસ
મણિકાર શ્રેણી કે શરીર મેં કિસી ઇક સમય યે પ્રવલતર
શાત ગૌરવ જનિત કર્મ કે ઉદય સે ૧૬ રોગ ઓર આતઙ્ક
પ્રકટ હુણ-સ્વલ્પ કાલતક જો વિમારી શરીર મેં રહતી હૈ-જેસે ઝવર
આદિ-વે રોગ, ઓર જો વીમારી શરીર મેં ચિરસ્થાયી હોકર રહતી
હૈ જેસે કુષ્ઠાદિ-વે આતક કહલાતે હૈ । વે સોલહ યે હૈ—૧ શ્વાસ
-ઊર્ધ્વશ્વાસ, ૨ કાસ-શ્વાસી, ૩ ઝવર-તાપ, ૪ દાહ-દાહઝવર, ૫ કુષ્ઠિ-

‘તણ તસ્મ નદસ્મ’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—(તણ)ત્યારપછી(તસ્મ નદસ્મ)મણિયાર સેટ્ઠિસ્સ અન્નયા કયાઈ સરી
રગસિ સોલસ રોગાયકા પાઝ મ્ભૂયા-ત જહા તે મણિયાર શ્રેષ્ઠિના શરીરમા કોઈ એક
વખતે પ્રબળતર શાત ગૌ વ જનિત કર્મના ઉદયથી ૧૬રોગો અને આતકો પ્રગટયા
થોડા વખત સુધી શરીરમા જે માદગી રહે છે જેમ કે તાવ વગેરે તે રોગ અને જે
મદગી શરીરમા કાયમ માટે રહે છે જેમકે કોઢ વગેરે તે આતક કહેવાય છે તે
સોળ ના નામ આ પ્રમાણે છે—(૧)શ્વાસ-ઊર્ધ્વ શ્વાસ,(૨)કાસ-ઉધરમ (૩)ઝવર-

તતસ્તદનન્તર સલ્લુ રાજગૃહે નગરે ઇમામેતદ્રૂપા ઘોષણા શ્રુત્વા નિશમ્ય વહત્તો વૈદ્યા યાવત્ કુશલપુત્રા ' સત્થકોમહત્થગયા ય ' શસ્ત્રકોશહસ્તગતાથ્થ હસ્તે ધુરાદિ- શસ્ત્રભાજનધારકાઃ, ' કોસગપાયહત્થગયા ય ' કોઝકપાત્રહસ્તગતાઃ ચર્મમયોપ- કરણધારિણઃ, ' સિલિયાહત્થગયા ય ' શિલિકાહસ્તગતાઃ=કિરાતતિક્તાધૌપધ- ધારિણ ' ગુલિયાહત્થગયા ય ' ગુલિકાહસ્તગતાથ્થ હસ્તે દ્રવ્યસયોગનિર્મિતવટિકા ધારિણઃ, ઔપયમૈષજ્યહસ્તગતાથ્થ સ્વકેભ્યઃ સ્વકેભ્યો નિષ્ક્રામન્તિ=નિર્ગન્ઠન્તિ, નિષ્ક્રમ્ય રાજગૃહ મધ્યમ ય્યેન યત્રેવ નન્દસ્ય મણિઝારશ્રેષ્ઠિનો ગૃહ તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ,

કૌટુમ્બિક લોગો ને उसी के अनुसार वैसी ही घोषणा कर दी-और बाद में आकर नद को इसकी खबर दे दी । (तएण रायगिहे इमेयारूव घोसण सोच्चा णिसम्म बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य सत्थको महत्थ गया य कोमगपायहत्थ गया यि सल्लियाहत्थ गया य गुलिया हत्थ गया य ओसह भेसज्ज हत्थ गया य सएहिं रगिहेहिं तो निकस्व- मत्ति, निस्समित्ता रायगिह नयर मज्झ मज्झे ण जेणेव नदस्स मणि- यारसेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छति) इस प्रकार की घोषणा सुन कर और उसको विचार कर राजगृह नगर में अनेक वैद्य, वैद्य पुत्र यावत् कुशल कुशल पुत्र, अपने २ हाथों में धुरादिशस्त्र एव भाजनो को, चर्ममय उपकरणों को किरात तिक्त औषध को गोलियों को, औषध भैषज्य को ले लेकर अपने २ घरों से निकले । और निकल कर राजगृह नगर के बीच से चल कर जहाँ मणिकार श्रेष्ठी नद का घर था वहाँ

કૌટુમ્બિક લોકોએ તેની આજ્ઞા પ્રમાણે જ ઘોષણા (ઢઢેરો) કરી અને ત્યાર પછી નદને તેની ખબર આપી (તएण रायगिहे इमेयारूव घोसण सोच्चा णिसम्म बहवे वेज्जाय, वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य सत्थकोसहत्थ गया य कोसगपायहत्थगया य सिलियाहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसह भेसज्जहत्थगया य सएहिं २ गिहेहिं तो निकस्व मत्ति, निस्समित्ता रायगिह नयर मज्झ मज्झेण जेणेव नदस्स मणियार सेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छति) આ રીતે ઘોષણા સાલળીને અને તેના વિશે વિચાર કરીને રાજગૃહ નગરમાંથી ધણા વૈદ્યો, વૈદ્યપુત્રો, યાવત્ કુશલો અને કુશલપુત્રો પોતપોતાના હાથોમાં ધુરા વગેરે શસ્ત્રો અને ભાજનો, ચર્મમય ઉપકરણો એટલે કે ચામડાના સાધનો, કિરાતક (કશિયાતુ) ઔષધોને, ગોળીઓને, ઔષધ લેપન્યને લઈને પોતપોતાના ઘરોથી બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને રાજગૃહ નગરની વચ્ચે થઈને જ્યાં મણિઝાર શ્રેષ્ઠિ નહતું ઘર હતું ત્યાં પહોંચ્યા (उवागच्छति नदस्स

रोगातङ्गमुपगमयितुम् इच्छतीति पूर्वेण सम्बन्धः, तस्य खलु हे देवानुप्रियाः । नन्दो मणिकारश्रेष्ठी विपुला=बहुलाम्, “अत्यमय” अर्थात् सपदा खलु ददाति= दास्यति, इति इत्या=एवमुक्त्वा द्वितीयमारमपि तृतीयमारमपि घोषणा घोषयत । घोषयित्वा एताममाज्ञप्तिका प्रत्यर्पयत, तथैव प्रत्यर्पयन्ति=यथा नन्दमणिकार श्रेष्ठिना कौटुम्भिकपुरुषा आदिष्ठास्तथैव ते कृत्वा निवेदयन्ति स्मेत्यर्थः ।

तैस्स ण देवाणुप्पिघा ! मणियारे विउल अत्थसपय दलयइ त्ति कइहुँ दोच्चपि तच्चपि घोसण घोसेह) इन १६ प्रकार के रोगातकों से व्यथित हुए उस मणिकार श्रेष्ठी नन्द ने कौटुम्भिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उसने उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियो ! तुम जाओ-और राजगृह नगर के शृंगाटक आदि बड़े २ मार्गों में जोड़ जोड़ से इस प्रकार की घोषणा करते हुए कहो-कि हे देवानुप्रियो ! मणिकार श्रेष्ठी नन्द के शरीर में सोलह रोगातक उत्पन्न हुए हैं-वे स्वाम से लगा कर कुण्ठ तक हैं-इस लिये हे देवानुप्रियो ! सुनो-चाहे वैद्य हो या वैद्य पुत्र हो ज्ञायक हो या ज्ञायक पुत्र हों कुशल हो चाहे कुशल पुत्र हों कोई भी क्यों न हो-जो इन १६ प्रकार के रोगातकों में से एक भी रोगातक उपशमित कर देगा-हे देवानुप्रियो उसके लिये मणिकार श्रेष्ठी नन्द विपुल मात्रा में अर्थ सपदा प्रदान करेगा । इस प्रकार की घोषणा को तुम लोग २-३ बार घोषित करना । (घोसित्ता एयमाणत्तिर्य पच्चप्पिणह, ते वि तहेव पच्चप्पिणत्ति) घोषित कर फिर हमें इस की खबर देना । इस प्रकार नन्द की आज्ञा प्राप्त कर उन

मणियारे विउल अत्थसपय दलयइ त्ति कइहुँ दोच्चपि तच्चपि घोसण घोसेह)

मणि नन्दना रोग अने आतडेथी पीडायेवा मणिकार श्रेष्ठी नन्दे कौटुम्भिक पुरुषोंने बोलाव्या अने बोलावीने तेले तेमने कहे के हे देव नुप्रियो । तमे

नन्दे अने राजगृह नगरना शृंगाटक वगेरे राजमार्गों उपर आ प्रभावे मोटेथी घोषणा कराने कहे के हे देवानुप्रियो । मणिकार श्रेष्ठी नन्दना शरीरमा

सोण रोगातके उत्पन्न थाय छे तेओ आसथी भाडीने कुछ सुधी सोण रोग अने आतडेपर्यन्तछे भाटे हे देवानुप्रियो । सालणो, वैद्य होय के वैद्यपुत्र होय,

ज्ञायक होय के ज्ञायकपुत्र होय, कुशल होय के कुशलपुत्र होय, गमे ते होय, ने आ मणिकार श्रेष्ठिना सोण रोग अने आतडेमाथी ओक रोग अथवा तो

ओक आतक पणु भटाडी शकसे हे देवानुप्रियो । मणिकार श्रेष्ठी नन्द तेने पुण्डग प्रभावेमा धन सपत्ति आपसे आ प्रभावेनी घोषणा तमे बारबार जे त्रय

व्यथित घोषित करे (घोसित्ता एयमाणत्तिर्य पच्चप्पिणह, ते हि तहेव पच्चप्पिणत्ति) घोषणा करीने तमे अमने अजर आपो आ रीते नदनी आ ते

તતસ્તદનન્તર સ્વલુ રાજગૃહે નગરે ઇમામેતદ્રૂપા ઘોષણા શ્રુત્વા નિશમ્ય વહ્નો
વૈદ્યા યાવત્ કુશલપુત્રા ' સત્થકોમહત્થગયા ય ' શસ્ત્રકોશહસ્તગતાશ્ચ હસ્તે હુરાદિ-
શસ્ત્રમાજનધારકાઃ, ' કોસગપાયહત્થગયા ય ' કોશકપાત્રહસ્તગતાઃ ચર્મમયોપ-
કરણધારિણઃ, ' સિલિયાહત્થગયા ય ' ગિલિકાહસ્તગતાઃ=કિરાતતિક્તાઔપધ-
ધારિણ ' ગુલિયાહત્થગયા ય ' ગુલિકાહસ્તગતાશ્ચ હસ્તે દ્રવ્યસયોગનિર્મિતવટિકા
ધારિણ, ઔપયમૈષજ્યહસ્તગતાશ્ચ સ્પર્કેભ્યઃ સ્પર્કેભ્યો નિષ્ક્રામન્તિ=નિર્ગચ્છન્તિ,
નિષ્ક્રમ્ય રાજગૃહ મધ્યમ યેન યત્રૈવ નન્દમ્ય મણિમારશ્રેષ્ઠિતો ગૃહ તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ,

કૌટુમ્બિક લોગો ને उसी के अनुसार वैसी ही घोषणा कर दी-और
बाद में आकर नद को इसकी खबर दे दी । (तएण रायगिहे इमेयारूप
घोसण सोच्चा णिसम्म बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता
य सत्थको सहत्थ गया य कोसगपायहत्थ गया यि सल्लियाहत्थ गया य
गुलिया हत्थ गया य ओसह भेसज्ज हत्थ गया य सएहिं २ गिहेहिं तो निक्ख-
मति, निक्खमिक्का रायगिह नयर मज्झ मज्झे ण जेणेव नदस्स मणि-
यारसेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छति) इस प्रकार की घोषणा सुनकर
और उसको विचार कर राजगृह नगर में अनेक वैद्य, वैद्य पुत्र यावत्
कुशल कुशल पुत्र, अपने २ हाथों में क्षुरादिशस्त्र एवं भाजनो को,
चर्ममय उपकरणों को किरात तिक्त औषध को गोलियों को, औषध
भैषज्य को ले लेकर अपने २ घरों से निकले । और निकल कर राजगृह
नगर के बीच से चल कर जहाँ मणिकार श्रेष्ठी नद का घर था वहा

કૌટુમ્બિક લોકોએ શેની આજ્ઞા પ્રમાણે જ ઘોષણા (ઢંઢેરો) કરી અને ત્યાર
પછી નદને તેની ખબર આપી (તएण रायगिहे इमेयारूप घोसण सोचा
णिसम्म बहवे वेज्जाय, वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य सत्थकोसहत्थ
गया य कोसगपायहत्थगया य सिलियाहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसह
भेसज्जहत्थगया य सएहिं २ गिहेहिं तो निक्खमति, निक्खमिक्का रायगिह
नयर मज्झ मज्झेण जेणेव नदस्स मणियार सेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छति)
આ રીતે ઘોષણા માલખીને અને તેના વિશે વિચાર કરીને રાજગૃહ નગરમાંથી
ધણા વૈદ્યો, વૈદ્યપુત્રો, યાવત્ કુશલો અને કુશલપુત્રો પોતપોતાના હાથોમાં
ક્ષુરા વગેરે શસ્ત્રો અને ભાજનો, ચર્મમય ઉપકરણો એટલે કે ચામડાના
સાધનો, કિરાતક (ડરિયાતુ) ઔષધોને, ગોળીઓને, ઔષધ ભપલ્યને લઈને
પોતપોતાના ઘરેલી ખહાર નીકળ્યા અને નીકળીને રાજગૃહ નગરની વચ્ચે
થઈને જ્યાં મણિકાર શ્રેષ્ઠિ નદનું ઘર હતું ત્યાં પહોંચ્યા (उवागच्छित्ता नदस्स

उपागत्य नन्दस्य शरीर पश्यन्ति, दृष्ट्वा ते तेषां रोगातङ्कानां 'णिषाण' निदानम्-
उत्पत्तिकारणं पृच्छन्ति, नन्दस्य मणिकारश्रेष्ठिनस्ते वैद्या बहुभिः=बहुविधैः
'उन्वलणेहि य' उद्बलनैश्च=देहोपलेपनविशेषैश्च, 'उन्वदणेहि य' उद्बर्तनैश्च=
मलापरुषं रुद्रव्यसंयोगविशेषेण शरीरोपमर्दनैश्च, 'मिणेऽपाणेदि य' स्नेहपानैश्च=
औषधपरिपक्वतादिपानैश्च, रसनैश्च, विरेचनैश्च सेचनैश्च=उष्णजलामिषैः 'अत्र

पहुँचे । (उपागच्छित्वा नन्दस्म शरीरं पासति, तेषां रोगायकाणं णिषा-
णं पृच्छति णन्दस्म मणिकारश्रेष्ठिस्स बहूहि 'उन्वलणेहि य उन्वदणेहि
य सिणेहपाणेहि य वमणेहि य, विरेयणेहि य सेयणेहि य अवदसणेहि
य अवण्हाणेहि य अणुवासणेहि य वत्थिकम्मेहि य निरुहेहि य सिरा-
वेहेहि य तच्छणाहि य, पच्छणाहि य, सिरावेहेहि य तप्पणाहि य,
पुढपागेहि य, छल्लीहि य वल्लीहि य मूलेहि य, कदेहि य पत्तेहि य
पुप्फेहि य, फलेहि य, वीएहि य, सिलियाहि य, गुलियाहि य, ओस-
हेहि य, भेसज्जेहि य, इच्छति तेषां सोलसण्ह रोगायकाणं एगमवि
रोगायक उवसामित्तए नो चेव ण सचाएति उवसामेत्तए) वहा पहुँच
कर उन्हो ने नद सेठ के शरीर को देखा देख कर उन रोगातकों के
निदान को-मूल कारण को-पूछा । बाद में उस मणिकार श्रेष्ठी नद का
उन वैद्यों ने अनेकविध उद्बलनो से देहोपलेपन विशेष से, स्नेहपानों
से-औषधियों में पकाये गये घृतादिके पिलाने से, वमन कराने से,

शरीरं पासति तेषां रोगायकाणं णिषाणं पृच्छति, णन्दस्म मणिकारश्रेष्ठिस्स बहूहि
उन्वलणेहि य, वमणेहि य, विरेयणेहि य, सेयणेहि य, अवदसणेहि य, अवण्हाणेहि य,
अणुवासणेहि य वत्थिकम्मेहि य निरुहेहि य, सिरावेहेहि य, तच्छणाहि य, पच्छणाहि य,
सिरावेहेहि य, तप्पणाहि य, पुढपागेहि य, छल्लीहि य, वल्लीहि य, मूलेहि य, कदेहि
य, पत्तेहि य, पुप्फेहि य, फलेहि य, वीएहि य, सिलियाहि य, गुलियाहि य, ओसहेहि
य, भेसज्जेहि य, इच्छति तेषां सोलसण्ह रोगायकाणं एगमवि रोगायक उवसा
मित्तए, नो चेव ण सचाएति उवसामेत्तए) त्या जेधने तेजोने नद श्रेष्ठिना
शरीरने तपाय्थु, तपासीने ते रोग अने आतङ्काना निदान (रोगानु भूण
कारण) विशेषे पूछपरछ करी त्याभाह वैद्योने मणिकार श्रेष्ठिनी धणी बातना
उद्बलनोथी-शरीरना लेप विशेषोथी, उद्बर्तनोथी-मलापरुषं रुद्रव्य संयोग
विशेषने शरीर उपर बाणवाथी, स्नेहपानोथी-औषधीओमा परिपक्व थयेला
धी वगेरे ते पीवडाववाथी, वमन (उलटी) करवाथी विरेचन

दहणेहि य ' अनदहनैः दम्भनैः-तप्तलोहकोशादिना शरीरावयवविशेषे दाहकर
 णैश्च ' अग्न्याणेहि य ' अवस्तानेः=शरीरे ऋण्डयनादिवारणार्थं तदनुकूलद्रव्यमिश्रि-
 तजलस्नानैश्च, ' अनुवासणेहि य ' अनुवासनैः=विरेचनविशेषैः-यन्त्रद्वारेणापान-
 मार्गेण तैलादीनामुदरे प्रवेशनरूपैश्च ' वस्तिकर्मणि =मलनिर्ग-
 मार्थं गुदे वर्त्यादिप्रक्षेपैः, ' निरुहेहि य ' 'निरुह' =द्रव्यपक्वतैलप्रयोगेण विरेचन-
 विशेषैश्च ' सिरावेहिहेहि य ' शिरावेधैः=विकृतरुधिरनिस्सारणार्थं नाडीवेधैश्च,
 ' तच्छणाहि य ' तक्षणैः=क्षुरादिना त्वक् छेदनैश्च, ' पच्छणाहि य ' प्रतक्षणैः=
 क्षुरादिनाहस्तलाघवेन त्वचः प्रतनूकरणैश्च, ' सिरावेष्टेहि य ' शिरावेष्टैः=नाडी-
 वेष्टनैश्च, तप्पणाहि य ' तर्पणैश्च=स्निग्धद्रव्येण शरीरसन्वाहनैश्च, ' पुटपाकेहि य '
 पुटपाकैः=पाकविशेषनिष्पन्नौषधविशेषैश्च, ' उल्लीहि य ' छल्लीभिश्च=निवादित्वग्भिः,

विरेचन कराने से, उष्णजल से स्नान कराने से तकुआ आदि को
 अग्नि में तपाकर उसका शरीर के किसी अवयव विशेष में डाम देने
 से अवस्तानों से-खाज-आदि मिटाने के लिये शरीर पर तदनु कूल
 द्रव्य मिश्रित जल से बार २ स्नान कराने से अनुवासनों से-यत्र द्वारा
 अपान मार्ग से उदर में तैलादिकों के पहुँचाने से, वस्ति कर्मों से-मल
 को निकालने के लिये गुदा में वर्त्यादि के प्रवेश कराने से, निरुहों से
 द्रव्यपक्वतैल के प्रयोग से विरेचन करवाने से, शिरावेध से-विकृत
 खून को निकालने के लिये शिरा-नस के काट देने से-नाडीवेध से-
 तक्षण से क्षुरा आदि द्वारा चमड़ी के काट देने से, प्रतक्षण से क्षुरा
 आदि द्वारा हस्तलाघव पूर्वक चमड़ी के छील देने से, शिरावेष्ट-नाडी
 वेष्टन से, स्निग्ध द्वारा शरीर की मालिश कराने से, पुटपाक से-
 पाक विशेष से तैयार की गई औषधियों से, छालो से-निम्ब आदि की

गरम पाणीसे स्नान कराववाची, लोण उ वगेरेने अग्निमा तपावीने शरीरना
 कोर्ध विशेष अवयवने डामवाची अवस्तानोथी-अरजु वगेरे भटाउवा भाटे
 शरीर उपर तदनुकूल द्रव्यमिश्रित पाणीमा बारबार स्नान कराववाची, अनु
 वासनोथी-यत्र वडे गुदा-भागथी चेटमा तेल वगेरे पडोआउवाथी, वस्ति
 कर्मोथी-भजने अडार डाढवा भाटे गुदामा वर्त्यादिने प्रविष्ट कराववाची निरु
 होथी-द्रव्यमा परिपक्व थयेला तेलना प्रयोगथी, विरेचन कराववाची, शिरावेधथी
 अराण लोहीने अडार डाढवा भाटे शिरा-नसने आपवाथी-नाडीवेधवी, प्रतक्षणथी
 छरा वगेरेथी अडु अ कुशणताथी आभडीने छोलवाथी, शिरावेष्टथी-नाडी
 वेष्टनथी, स्निग्ध पदार्थ वडे शरीरना उपर मालिश करवाथी, पुटपाकथी-पाक
 विशेषथी तैयार करवामा आवेली औषधीओथी, छालो (छाला) थी-नि अ

‘ वल्लीहि य ’ वल्लीभीथ=गडन्यात्रि-न्तामिथ, तथा-मूलैश्च, कन्दैश्च पत्रैश्च, पुष्पैश्च फलैश्च, बीजैश्च, शिलिकाभिश्च=किराततिक्तैःचिरायता इतिप्रसिद्धैरोषभि विशेषै गुलिकाभिश्च औषधैश्च भैषज्यैश्च दृच्छन्ति तेषा षोडशाना रोगातङ्कानामेकमपि रोगातङ्कमुपशमयितुं, किन्तु नो चैव शक्नुवन्त्युपशमयितुम् । ततः खलु ते बहवो वैद्याश्च ‘ जाहे ’ यदा नो शक्नुवति तेषा षोडशाना रोगातङ्कानामेकमपि रोगातङ्कमुपशमयितुम्, तदा श्रान्ता=श्रमातुरा, तान्ता=विद्या.=परितान्ताः=सर्वथाविन्नाः रोगातङ्कमपनेतुमसमर्थो इत्यर्थं यावत्-प्रतिगता.=स्वस्व स्थान गतवतः ।

ततः खलु नन्दस्ते षोडशमीरोगतङ्कैश्चामिभूतः सन् नदा पुष्करिण्या ‘ मुच्छिण ’ मूर्च्छितः=मूर्छा प्राप्तः आसक्तः ग्रथितः=बद्धात्मपरिणाम, ‘ अज्ज्ञोव वन्ने ’ अध्युपपन्नः=सर्वथा निरन्तर तद्वायव्या तन्मयात्मपरिणामवान् तिर्यग्

अन्त २ छाल से, गुडु ज्यादि-गिलोय आदि लताओं से, तथा मूल, कन्द, पत्र, पुष्प, फल, बीज, शिलिका-चिरायता, गोलियों, औषध, भैषज्य से उन सोलह रोगातकों में से एक भी रोग को शांत करने की चिकित्सा की । परन्तु वे उसके एक भी रोगातक को उपशमित नहीं कर सके । (तएण ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो सचाएति ते सि सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसामित्तए, ताहे सत्ता ततो जाव पडि गया) जब वे समस्त वैद्यादिजन ६, उन १६ सोलह रोगातकों में से एक भी रोगातक को शमित कर ने में (शक्य नहीं) समर्थ नहीं हो सके तब श्रान्त एव तान्त होकर अपने २ पर चले आये । (तएण नंदे तेहि सोलसेहि रोगायकेहि अभिभूण समणे नदा पोक्खरणिण मुच्छिण गिद्धे गढिए अज्ज्ञोववण्णे तिरिक्ख जोणिणहि निषट्ठाउण बुद्ध

वगेरेनी छालेथी, गुडु न्यादि-गणो वगेरे लताओथी तेम ४ भूण, ६ डो, पत्र, पुष्प, फल, बी, शिलिका-चिरायता, गोणीओ, औषध, भैषज्यथी ते सोज रोग अने आतकोमाथी ओक रोग अने ओक आतकने मटाउवा माटे चिकित्सा (छलान) करी पणु ते लोको तेना ओके य रोग अने ओक य आतकने पणु मटाउवाभा शक्तिमान थरु शक्या नडि, (तएण ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो सचाएति वेसि सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसामित्तए, ताहे सत्ता जाव पडि गया) न्यादे जधा वैद्यो ६, ते सोज रोगानकोमाथी ओकेय रोग अने आतकने पणु मटाउवाभा समर्थ थरु शक्या नडि त्यादे श्रात अने तात थधने पोतपोताने घेर पाछाजता रह्या (तएण नंदे तेहि सोलसेहि रोगायकेहि अभिभूण समणे नदा पोक्खरणिण मुच्छिण गिद्धे गढिए अज्ज्ञोववण्णे तिरिक्खजोणि

योनिषु निवृत्तायुष्कः, नद्धप्रदेशिकः प्रदेशन्यापेक्षया, अदृढदृढवसद्वे 'आर्त-
दुःखार्तिवशात्' = आर्त = मनसा दुःखितः, दुःखार्त = देहेन, वशात् = पुष्करिणीसमा-
सक्तेन्द्रियवशेन तत्सुखत्रियोगमम्भाननया पीडितः = एतेषा कर्मभारये आर्तदुःखा-
र्तवशात् = आर्त यानोऽगतदुःखः कालमासे काल कृत्वा नन्दाया पुष्करिण्यां
'दददुरीए कुच्छिसि' ददुर्याः कुक्षो = मण्डकीगर्भे 'दददुरत्ताए' ददुर्गतया मण्डकतया,
उत्पन्नः सजातः ॥ सू० ६ ॥

मूलम्—तएणं पंदे ददरे गवभाओ विणिम्मुक्के समाणे

उम्मुक्कवालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते नदाए
पोक्खरणीए अभिरममाणेऽ विहरइ, तएण पंदेए पोक्खरणीए
वहूजेणे पहायमाणो य पियइय पाणिय च सवहमाणो अन्न-

पणसिए अदृढ दृढ वसद्वे काल मामे काल किच्चा नदाए पोक्खरिणीए
दददुरीए कुच्छिसि दददुरत्ताए उववन्ने) उन सोलह रोगातकोसे अत्यन्त
व्यथित हुआ वह नद नदा पुष्करिणी में मूर्च्छितमति एव अत्यन्त
आसक्त मन होता हुआ तन्मय आत्मपरिणामवाला बन गया—सो इस
कारण उसने प्रदेश बंध की अपेक्षा से तिर्यश्च आयु का बंध कर लिया।
मन से दुःखित देह से, व्यथित एव पुष्करिणी में समा सक्त अन्तः-
करण से उसके सुखके वियोग की सम्भावना करके अत्यन्त पीडित
बने हुए अर्थात् आर्तध्यान के वशवर्ती हुए उसने मृत्यु के समय देह
का परित्याग किया सो मर कर वह उस नदा पुष्करिणी में एक मेंढकी
के गर्भ में मेंढक की पर्याय से उत्पन्न हो गया। सूत्र ॥ ६ ॥

एहि, निवृत्तायु वद्धपणसिए अदृढ दृढ वसद्वे कालमासे काल किच्चा नदाए
पोक्खरिणीए दददुरीए कुच्छिसि दददुरत्ताए उववन्ने) मोण देशे अने आत्-
काथी भूमि न कटाणेले ते नद श्रेष्ठि न वावमा मूर्च्छित मति ओले ई
अत्यंत आसक्त मनरी तन्मय आत्मपरिणाम युक्त थई गये। ओधी तेनुं
प्रदेशबन्धी अपेक्षाओ तिय अ आयुने। बंध करी लीयो। मनथी दुःखी,
शरीरथी व्यथित अने पुष्करिणी (वाव) मा आसक्त अन्तःकरणथी ओले
ई तेना सुभना वियोगनी सम्भावना करीने भूमि पीडित थईने—आर्तध्यान
करता तेणे मृत्युना समये देह छोड्यो। देह छोडीने नद श्रेष्ठि ते नदा पुष्-
करिणीमा न ओले देडकीना गर्भमा देडकाना पर्यायथी उत्पन्न थई गये। सूत्र ६

‘ वल्लीहि य ’ वल्लीभीथ=गड्ग्यानि-न्तामिथ, तथा-मूलैथ, कन्दैथ पत्रैथ, पुष्पैथ फलैथ, बीजैथ, शिलिकाभिथ=चिरायता इतिप्रसिद्धैरोषधि विशेषैः गुलिकाभिथ औषधैथ भैषज्यैथ उच्यन्ति तेषां षोडशाना रोगातङ्कानामेकमपि रोगातङ्कमुपशमयितुं, किन्तु नो चैव शक्नुवन्त्युपशमयितुम् । ततः खलु ते बहवो वैद्याश्च ‘ जाहे ’ यदा नो शक्नुवन्ति तेषां षोडशाना रोगातङ्कानामेकमपि रोगातङ्कमुपशमयितुम्, तदा श्रान्ता = श्रमातुरा, तान्ता = खिन्ना = परितान्ताः = सर्वथा खिन्नाः रोगातङ्कमपनेतुमसमर्थे इत्यर्थं यावत्-प्रतिगताः = स्वस्व स्थानं गतवन्तः ।

ततः खलु नन्दस्तैः षोडशभीरोगतङ्कैश्चामिभूतः सन् नदा पुष्करिण्या ‘ मुच्छिष्टे ’ मुच्छिष्टः = मूर्च्छा प्राप्तः आसक्तः ग्रथितः = यदात्मपरिणाम, ‘ अज्ज्ञो व वन्ने ’ अध्युपपन्नः = सर्वथा निरन्तरं तद्वायव्या तन्मयात्मपरिणामवान् तिर्यग्

अन्तः २ छाल से, गुडु ज्यादि-गिल्लोय आदि लताओं से, तथा मूल, कन्द, पत्र, पुष्प, फल, बीज, शिलिका-चिरायता, गोलियों, औषध, भैषज्य से उन सोलह रोगातकों में से एक भी रोग को शांत करने की चिकित्सा की । परन्तु वे उसके एक भी रोगातक को उपशमित नहीं कर सके । (तएण ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो सचाएति ते सिं सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उरसामित्तए, ताहे सता तता जाव पडि गया) जब वे समस्त वैद्यादिजन ६, उन १६ सोलह रोगातकों में से एक भी रोगातक को शमित कर ने में (शक्य नहीं) समर्थ नहीं हो सके तब श्रान्त एव तान्त होकर अपने २ घर चले आये । (तएण नंदे तेहिं सोलसेहिं रोगायकेहिं अभिभूण समणे नदा पोक्खरणि ए मुच्छिष्टे गिद्धे गट्ठि ए अज्ज्ञो व वण्णे तिरिक्ख जोणि ण्हिं निषट्ठा उ ए वद्ध

वगेरेनी छालेथी, गुडु ज्यादि-गिल्लोय वगेरे लताओथी तेमज भूण, उदो, पत्र, पुष्प, फल, बी, शिलिका-चिरायता, गोलियों, औषध, लैषज्यथी ते सोल रोग अने आतकोमाथी ओक रोग अने ओक आतकने मटाउवा भाटे चिकित्सा (छलान्) करी पणु ते लोको तेना ओके य रोग अने ओक य आतकने पणु मटाउवाभा शक्तिमान थरु शक्या नहि, (तएण ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो सचाएति ते सिं सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उरसामित्तए, ताहे सता जाव पडि गया) ज्यारे अधा वेजो ६, ते सोल रोगानकोमाथी ओकेय रोग अने आतकने पणु मटाउवाभा समर्थ थरु शक्या नहि त्यारे आत अने तात थरुने पोतपोताने घर पाछान्ता न्हा (तएण नंदे तेहिं सोलसेहिं रोगायकेहिं अभिभूण समणे नदा पोक्खरणि ए मुच्छिष्टे गिद्धे गट्ठि ए अज्ज्ञो व वण्णे तिरिक्ख जोणि

अभिगिण्हइ—कप्पड से जावजीव छट्टुंछट्टेण अणिक्खित्तेण
तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणस्स विहरित्तए, छट्टुस्स वि य णं
पारणगंसि कप्पड से णदाए पोक्खरणीए परिपेरतेसु फामुण्णं
पहाणोदएणं उम्मदणं छोलियाहि य वित्ति कप्पेमाणस्स विह-
रित्तए, इमेयारूप अभिगह अभिगेण्हइ, जावज्जीवाए छट्टु-
छट्टेणं जाव विहरइ ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘तएण नदे’ इत्यादि, ततः खलु नन्दो दर्दुरी गर्भाद्=गर्भवासाद्
विनिर्मुक्तः=निर्गतः सन् उन्मुक्तबालभावः=व्यतीत बालवयस्कः, ‘विज्जाय
परिणयमित्ते’ विजातपरिणतमात्र दर्दुरजातीयकूदनादिविज्ञानसमम्पन्नः, नन्दाया-
पुष्करिण्याम् अभिरममाण २=क्रीडन् २ सुखमुखेन विहरति=काल यापयतिस्म ।

ततस्तदनन्तर खलु नन्दाया पुष्करिण्या राजगृहविनिर्गतो बहुजनः स्नान
कुर्वन्, जलपियन्, पानीय च समहमानः, अन्योन्य=परस्परम् आग्याति-

‘तएण णदे दर्दुरे गर्भाओ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (णदे दर्दुरे) वह नद सेठका जीव दर्दुर
(गर्भाओ विणिम्मुक्के समाणे उन्मुक्कबालभावे विज्जायपरिणयमित्ते
जोव्वणगमणुपत्ते नदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विहरइ) गर्भा-
वास से बाहिर निकल कर जब बालभाव से रहित हो गया और उसे
दर्दुर जानि को कूदना आदि आ गया—तब वह यौवन अवस्था सपन्न
होकर नदा पुष्करिणी में बार २ क्रीडा करता हुआ सुख पूर्वक अपने
समय को व्यतीत करने लगा । (तएण णदाए पोक्खरणीए बहुजणे

‘तएण णदे दर्दुर गर्भाओ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (णदे दर्दुरे) नद सेठने। ओव देउडाना (गर्भाओ
विणिम्मुक्के समाणे उन्मुक्कबालभावे विज्जायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते नदाए
पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विहरइ) गर्भाओ णडाए आनीने नदारे
भोटो थड गये। ओटवे डे जयपणु वटावीने जुवान थड गये। अने भीन्
देउडानी जेम दूवानु, वगेरे आवडी गयु त्यागे ते जुवान थडने नदा पुष्क
रिणीमा ४ बारबार डीडा करता मुजेरा पोताने। वधत पमार करवा लाग्ये।
(तएण णदाए पोक्खरणीए बहुजणे प्हायमाणो य पियइ य पाणिय च सवह

मन्नस्स एवमाइक्खइ४ धन्नेण देवाणुप्पिया । णंदे मणियारे
जस्स णंदे मणियारे जस्स ण इमेयारूवे णंदा पुक्खरणी चाउ-
क्कोणा जाव पडिस्वा । जस्म णं पुरत्थिमिह्ते वणसडे चित्तसभा
अणेगखभ० तहेव चत्तारि सहाओ जाव जम्मजीवियफले, तएणं
तस्स ददुरस्स त अभिक्खणं अभिक्खणं बहुजणस्स अतिए
एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए५—से वहिं मन्ने
मए इमेयारूवे सहे णिसत्तपुठ्वे त्तिक्कट्ठ सुभेण परिणामेण जाव
जाइसरणे समुप्पन्ने, पुठ्वजाइ सम्मं समागच्छइ, तएण तस्स
ददुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५—एव खलु अह इहेव राय-
गिहे नयरे णंदे णाम मणियारे अड्डे० जाव अपरिभूए । तेण
कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे समोसडे, तएणं
समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय सत्तसि-
क्खावइय जाव पडिवन्ने, तएण अह अन्नया कयाइ असाहु-
दसणेण य जाव निच्छत्त विपडिवन्ने, तएण अह,
अन्नया कयाई गिम्हकालसमयसि जाव उपसपजित्ताणं
विहरामि, एव जहेव चित्ता आपुच्छणा नदा पुक्खरिणी वण-
सडा सहाओ त चेव सव्व जाव नदाए पुक्खरिणीए ददुरत्ताए
उव्वन्ने, त अहो ण अह अहन्ने अपुन्ने अकयपुन्ने निगं-
थाओ पावयणाओ नट्टे भट्टे परिब्भट्टे त सेय खलु मम सयमेव
पुठ्वपडिवन्नाइ पचाणुव्वयाइ सत्तसिक्खावयाइ उव्वसपजित्ताणं
विहारित्तए, एव सपेहेइ सपेहित्तापुठ्वपडिवन्नाइ पचाणुव्वयाइ
सत्तसिक्खावयाइ आरुहेइ आरुहित्ता इमेयारूव अभिग्गह

अभिगिण्हइ—कप्पइ मे जावजीव छट्टंछट्टेण अणिप्पिखत्तेण
तवोकम्मेणं अप्पाण भावेमाणस्स विहरित्तए, छट्टस्स वि य णं
पारणगसि कप्पइ मे णदाए पोक्खरणीए परिपेरतेसु फासुणं
पहाणोदएण उम्मदणंछोलियाहि य विति कप्पेमाणस्स विह-
रित्तए, इमेयारूप अनिग्गह अभिगेण्हइ, जावज्जीवाए छट्टं-
छट्टेणं जाव विहरइ ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘ तएण नदे ’ इत्यादि, ततः खलु नन्दो दर्दुरी गर्भाद्=गर्मवासाद्
विनिर्मुक्तः=निर्गत सन् उन्मुक्तबालभावे=व्यतीत बालवयस्क, ‘ विज्ञाय-
परिणयमित्ते ’ विज्ञातपरिणतमात्र दर्दुरजातीयकूदनादिविज्ञानममम्पन्नः, नन्दाया-
पुष्करिण्याम् अभिरममाण २=क्रीडन् २ सुखमुखेन विहरति=काल यापयतिस्म ।

ततस्तदनन्तर खलु नन्दाया पुष्करिण्या राजगृहविनिर्गतो बहुजनं स्नान
कुर्वन्, जलपियन्, पानीय च सप्रदमानं, अन्योन्य=परस्परम् आख्याति-

‘ तएण णदे दद्दुरे गम्भाओ ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (णदे दद्दुरे) वह नद से ठका जीव दर्दुर
(गम्भाओ विणिम्मुक्के समाणे उन्मुक्तबालभावे विज्ञायपरिणयमित्ते
जोवणगमणुपत्ते नदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विहरइ) गर्भा-
वास से बाहर निकल कर जब बालभाव से रहित हो गया और उसे
दर्दुर जानि को कूदना आदि आ गया—तब वह यौवन अवस्था सपन्न
होकर नदा पुष्करिणी में बार २ क्रीडा करता हुआ सुख पूर्वक अपने
समय को व्यतीत करने लगा । (तएण णदाए पोक्खरणीए बहुजणे

‘ तएण णदे दद्दुरे गम्भाओ ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (णदे दद्दुरे) नद शेडने। एव हेडडाना (गम्भाओ
विणिम्मुक्के समाणे उन्मुक्तबालभावे विज्ञायपरिणयमित्ते जोवणगमणुपत्ते नदाए
पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विहरइ) गर्भाभाधी णडार आनीने नदारे
भोटे थउ गये। ओटये डे अयपणु वटावीने जुवान थउ गये। अने भीन्त
हेडडानी नेम हुवानु, वगेरे आवडी गयु त्याडे ते जुवान थछने नदा पुष्क
रिणीमा न बारवार डीडा कृता भुजेरी पोताने। वण्त पमार करवा लाग्ये।
(तएण णदाए पोक्खरणीए बहुजणे पहायमाणो य पियइ य पाणिय च सवह

મોપતે પ્રજાપયતિ પ્રરૂપયતિ-વન્ય. સત્તુ હે દેવાનુપ્રિય ! નન્દો મણિકારરશ્રેષ્ઠી
યસ્ય સ્વલુ ક્યમેતદ્રૂપા નન્દાપુષ્કરિણી ચતુઃકોણા સમતીરા યાવત્ પ્રતિરૂપા વર્તતે,
યસ્યાઃ સ્વલુ નન્દાયાઃ પુષ્કરિણ્યા પૌરસ્ત્યે વનપથે ચિત્રમભાડનેસ્તમ્મગતસનિ
વિષ્ટા તથૈવ ચતુર્પુ વનપથેષુ ચતસ્રઃ સભા અનેકસ્તમ્મગતસનિવિષ્ટાઃ સન્તિ,
યાવત્ તસ્ય નન્દમણિકારનેષ્ટિનઃ સુલભ માનુષ્યક જન્મજીવિતફલમ્ ।

પહાયમાણો ય પિયઢ ય પાણિય ચ મન્નહમાણો અન્નમન્નસ્સ ણ્વમાહ-
કલ્લહ ૪) ઉસ નદા પુષ્કરિણી મેં જય રાજગૃહ નગર કે લોગ આકર
સ્નાન કરતે, પાની પીતે, ઉસમે સે પાની ભરતે તો ઉસ સમય વે
પરસ્પર મેં હસ પ્રકાર સે વાત ચીત કરતે, માપણ કરતે પ્રજાપના
એવ પ્રરૂપણા કરતે કિ (ધન્નેણ દેવાણુપ્પિયા ! ણદે મણિયારે
જસ્સ ણ હમેયારૂવા ણદા પુષ્કરણી ચાઉરકોણા જાવ પઢિરૂવા)
હે દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદ કો ધન્યવાદ હૈ કિ જિસ કી યહ
ચતુષ્કોણ વાલી તથા સમતીર વાલી નદા પુષ્કરિણી બહુત હી સુરમ્ય
બની હૈ । (જસ્સ ણ પુરત્થિમિલ્લે વણસઢે ચિત્તસભા અણેગસ્વમ્મ
તહેવ ચત્તારિ સહાઓ જાવ જમ્મજીવિય ફલે-તણ તસ્સ દદ્દુરસ્સ ત
અભિકલ્લણ ૨ વહુજણસ્સ અતિણ ણ્યમદ્દુ સોચ્ચા ણિસમ્મ હમેયારૂવે
અવ્વમત્થિણ ૬) જિસ કે પૂર્વ દિશા સવન્ધી વનપડ મેં અનેક સૈકડો
સ્વમ્મો સે વિરાજિત ચિત્ર સભા બની હુઈ હૈ । ડસી તરહ કી ચારોં
વનપડોં મેં ચારોં સભાઈ હૈ । યાવત્ ઉસ મણિકાર નદ શ્રેષ્ઠી કે મનુષ્ય

માણો અન્નમન્નસ્સ એવમાહકલ્લહ ૪) નદા વાવમા જ્યારે રાજગૃહ નગરના
લોકો આવીને સ્નાન કરતા, પાણી પીતા, તેમાંથી પાણી ભરતા ત્યારે તેઓ
પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતચીત કરવા માડતા, સલાપણો કરવા માડતા, પ્રજાપના
અને પ્રરૂપણા કરવા માડતા કે (ધન્નેણ દેવાણુપ્પિયા ! ણદે મણિયારે જસ્સણ
હમેયારૂવા ણદી પુષ્કરણી ચાઉરકોણા જાવ પઢિરૂવા) હે દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર
શ્રેષ્ઠી નદને ધન્યવાદ છે કારણ કે આ ચાર ખૂણાવાળી તેમજ સરખા કિનારા
વાળી નદા વાવ બહુ જ રમ્ય બધાવી છે (જસ્સણ પુરત્થિમિલ્લે વણસઢે
ચિત્તસભાઅણેગ સ્વમ્મ તહેવ ચિત્તારિ સહાઓ જાવ જમ્મજીવિયફલે-તણ
તસ્સ દદ્દુરસ્સ ત અભિકલ્લણ ૨ વહુજણસ્સ અતિણ ણ્યમદ્દુ સોચ્ચા ણિસમ્મ
હમેયારૂવે અવ્વમત્થિણ ૬) વાવના પૂર્વ દિશાના વનપડમાં સે ડો થાભલાઓથી
શોભતી ચિત્રસભા બનાવી છે આ પ્રમાણે ચારે ચાર વનપડોમાં ચાર સલાઓ
તૈયાર કરાવડાવી છે અરેઅર તે મણિકાર નદ શેઠનો મનુષ્ય જન્મ અને જીવન

ततः तलु तस्य दर्दुरस्य तदभीक्ष्ण=पीनः पुन्येन, बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य, अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूप. आध्यात्मिक आत्मगतोविचारः, यावन्मनोगतः सकल्पः समुदपद्यत । किं स्वरूप ? इत्याह—‘ से कहिं मन्ने ’ इत्यादि । ननूह मन्ये—कुत्रापि मया अयमेतद्रूप शब्द. ‘ गिसतपुव्वे ’ निशान्तपूर्व. श्रुतपूर्व पूर्वकाले श्रुतआसीत्, इति कृत्वा शुभेन परिणामेन=विशुद्धा. व्यवसायेन यावत्-जातिस्मरण समुत्पन्नम्, स दर्दुर ‘ पुव्वजाइ ’=पूर्वजन्मवृत्तान्त सम्यक् समागच्छति = स्मरति । तत खलु तस्य दर्दुरस्यायमेतद्रूप=वक्ष्यमाणस्वरूप. ‘ अज्झत्थिए ’ आध्यात्मिक यावन्मनोगत सकल्प = स्मरणरूप. ‘ समुप्प जिजत्था ’ समुदपद्यत-सजातः, तद् यथा—एव खलु अह इहेव राजगृहे नगरे नन्दो

जन्म और जीवन दोनों ही सफल है । उस ने अपने मनुष्य जन्म और जीवन का फल अच्छी तरह पा लिया है । इस प्रकार अनेक जनों के मुख से बार २ अपनी प्रशंसा सूचक शब्दों को सुनकर और उन्हें हृदय में अववृत्त कर उस दर्दुर को यह इस प्रकार का आध्यात्मिक विचार यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ—(से कहिं मन्ने मए इमे यारूवे सहे गिसतपुव्वे त्ति कह्हु शुभेण परिणामेण जाव जाइसरणे समुप्पन्ने, पुव्वजाइ सम्म समागच्छइ तण्ण तस्स ददुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५) मैं मानता हूँ कि मैंने इस प्रकार का यह शब्द पहिले सुना है—इस प्रकार के विचार से उसे विशुद्ध अध्यवसाय के वश से जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया । इससे उसने अपने पूर्व जन्म के वृत्तान्त को अच्छी तरह जान लिया । इस के बाद उस दर्दुर को इस प्रकार—वक्ष्यमाण रूप सकल्प उत्पन्न हुआ । (एव खलु अह इहेव

अने सक्ष्ण थई गया छे तेणु पोताना मनुष्य जन्म अने एवमनु क्षण सारी चेठे भेणवी लीधु छे आ गीते धणु भाणसोना मुण्ठेथी वारवार पोताना वण्णणु सालणीने अने हृदयमा अवधूत उगीने देडडाने आ प्रमाणेनो आध्यात्मिक विचार यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न थये—(से कहिं मन्ने मए इमेयारूवे सहे गिसतपुव्वे त्ति कह्हु शुभेण परिणामेण जाव जाइसरणे समुप्पन्ने, पुव्वजाइ सम्म समागच्छइ तण्ण तस्स ददुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए) भने अम थाय छे के आ राण्ठो पडेसा मे सालण्णु छे आ जतना विचारोथी तेने विशुद्ध अध्यवसायने लीये जतिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थई गथु अर्थी तेणु पोताना पूर्व जन्मनी जधी विगत जण्णी लीधी त्थारणाह ते देडडाने आ रीते वक्ष्यमाण इथी आध्यात्मिक यावत् मनोगत स्मरणरूप सकल्प उत्पन्न थये के (एव खलु अह इहेव रायगिहे नगरे पदे नाम मणियारे अइहे जाव अपरि-

સાપતે પ્રજાપયતિ પ્રરૂપયતિ-ધન્ય. સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય ! નન્દો મણિકારરશ્રેષ્ઠી
યસ્ય સ્વલુ ઇયમેતદ્રૂપા નન્દાપુષ્કરિણી ચતુઃકોણા સમતીરા યાત્ પ્રતિરૂપા વર્તતે,
યસ્યાઃ સ્વલુ નન્દાયા. પુષ્કરિણ્યા ધૌરસ્ત્યે વનપથ્થે ચિત્રગભાડનેકસ્તમ્મશતસનિ
વિષ્ટા તથૈવ ચતુર્ણ વનપથ્થેષુ ચતસ્રઃ સભા અનેકસ્તમ્મશતસનિવિષ્ટા. સન્તિ,
યાવત્ તસ્ય નન્દમણિકારગેષ્ઠિનઃ સુલલ્લધ માનુષ્યક જન્મજીવિતફળમ્ ।

પ્રજ્ઞાપયમાણો ય પિયહ ય પાણિય ચ સન્નહમાણો અન્નમન્નસ્સ ઇવમાહ-
ક્વલ્લ ૪) ઉસ નદા પુષ્કરિણી મેં જત્ત રાજગૃહ નગર કે લોગ આકર
સ્નાન કરતે, પાની પીતે, ઉસમે સે પાની ભરતે તો ઉસ સમય વે
પરસ્પર મેં હસ પ્રકાર સે વાત ચીત કરતે, ભાષણ કરતે પ્રજ્ઞાપના
એવ પ્રરૂપણા કરતે કિ (ધન્નેણ દેવાણુપ્પિયા ! ણદે મણિયારે
જસ્સ ણ હમેયારૂપા ણદા પુષ્કરણી ચાઉક્કોણા જાવ પહિરૂવા)
હે દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર શ્રેષ્ઠી નદા કો ધન્યવાદ હૈ કિ જિસ કી ગહ
ચતુષ્કોણ વાલી તથા સમતીર વાલી નદા પુષ્કરિણી બહુત હી સુરમ્ય
બની હૈ । (જસ્સ ણ પુરત્થિમિલ્લે વણસલ્લે ચિત્તસભા અણેગલ્લભં
તહેવ ચત્તારિ સહાઓ જાવ જન્મજીવિય ફલે-તણ તસ્સ દદ્દુરસ્સ ત
અભિકલ્લણ ૨ બહુજણસ્સ અતિણ ઇયમદ્ધ સોચ્છા ણિસમ્મ હમેયારૂપે
અવ્ભત્થિણ ૬) જિસ કે પૂર્વ દિશા સવન્ધી વનપથ્થ મેં અનેક સૈકલો
લ્લભો સે વિરાજિત ચિત્ર સભા બની હુઈ હૈ । હસી તરહ કી ચારોં
વનપથ્થોં મેં ચારોં સભાઈ હૈ । યાવત્ ઉસ મણિકાર નદા શ્રેષ્ઠી કે મનુષ્ય

માણો અન્નમન્નસ્સ ઇવમાહક્વલ્લ ૪) નદા વાવમા ત્યારે રાજગૃહ નગરના
લોકો આવીને સ્નાન કરતા, પાણી પીતા, તેમાંથી પાણી ભરતા ત્યારે તેઓ
પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતચીત કરવા માડતા, સભાષણો કરવા માડતા, પ્રજ્ઞાપના
અને પ્રરૂપણા કરવા માડતા કે (ધન્નેણ દેવાણુપ્પિયા ! ણદે મણિયારે જસ્સણ
હમેયારૂપા ણદી પુષ્કરણી ચાઉક્કોણા જાવ પહિરૂવા) હે દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર
શ્રેષ્ઠી નદાને ધન્યવાદ છે કારણ કે આ ચાર ખૂણાવાળી તેમજ સરળા કિનારા
વાળી નદા વાવ બહુ જ સમ્ય બધાવી છે (જસ્સણ પુરત્થિમિલ્લે વણસલ્લે
ચિત્તસભાઅણેગ લ્લભં તહેવ ચિત્તારિ સહાઓ જાવ જન્મજીવિયફલે-તણ
તસ્સ દદ્દુરસ્સ ત અભિકલ્લણ ૨ બહુજણસ્સ અતિણ ઇયમદ્ધ સોચ્છા ણિસમ્મ
હમેયારૂપે અવ્ભત્થિણ ૬) વાવના પૂર્વ દિશાના વનપથ્થમાં સે ડો થાલલાઓથી
શેલતી ચિત્રસભા બનાવી છે આ પ્રમાણે ચારે ચાર વનપથ્થોમાં ચાર સભાઓ
તૈયાર કરાવડાવી છે ખરેખર તે મણિકાર નદા શેઠનો મનુષ્ય જન્મ અને જીવન

ततः तलु तस्य दर्दुरस्य तदभीक्ष्ण=पीन. पुन्येन, बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निश्चय, अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः आध्यात्मिकः आत्मगतोविचारः, यावन्मनोगतः सकल्पः समुदपद्यत । किं स्वरूप ? इत्याह—‘ से कहिं मन्ने ’ इत्यादि । ननूह मन्ये—कुत्रापि मया अयमेतद्रूप शब्द. ‘ गिसतपुव्वे ’ निशान्तपूर्व. श्रुतपूर्व पूर्वकाले श्रुतआसीत्, इति कृत्वा शुभेन परिणामेन=विशुद्धा-यवसायेन यावत्-जातिस्मरण समुत्पन्नम्, स दर्दुरः ‘ पुव्वजाइ ’=पूर्वजन्मवृत्तान्त सम्यक् समागच्छति = स्मरति । तत खलु तस्य दर्दुरस्यायमेतद्रूप =वक्ष्यमाणस्वरूप. ‘ अज्झत्थिए ’ आध्यात्मिक यावन्मनोगत सकल्प = स्मरणरूप ‘ समुप्पज्जित्था ’ समुदपद्यत-सजात, तद् यथा—एव खलु अह इहेव राजगृहे नगरे नन्दो

जन्म और जीवन दोनों ही सफल है । उसने अपने मनुष्य जन्म और जीवन का फल अच्छी तरह पा लिया है । इस प्रकार अनेक जनो के सुख से बार २ अपनी प्रशंसा सूचक शब्दों को सुनकर और उन्हें हृदय में अवधृत कर उस दर्दुर को यह इस प्रकार का आध्यात्मिक विचार यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ—(से कहिं मन्ने मए इमे यारूवे सहे गिसतपुव्वे त्ति कइहु सुभेण परिणामेण जाव जाइसरणे समुप्पन्ने, पुव्वजाइ सम्म समागच्छइ तएण तस्स ददुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५) मैं मानता हूँ कि मैंने इस प्रकार का यह शब्द पहिले सुना है—इस प्रकार के विचार से उसे विशुद्ध अध्यवसाय के वश से जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया । इससे उसने अपने पूर्व जन्म के वृत्तान्त को अच्छी तरह जान लिया । इस के बाद उस दर्दुर को इस प्रकार—वक्ष्यमाण रूप सकल्प उत्पन्न हुआ । (एव खलु अह इहेव

ખને સફળ થઈ ગયા છે તેણે પોતાના મનુષ્ય જન્મ અને જીવનનું ફળ સારી પેઠે મેળવી લીધું છે આ રીતે ઘણા માણસોના મુખેથી વારંવાર પોતાના વખાણુ સાંભળીને અને હૃદયમાં અવધૂત કરીને ફેડકાને આ પ્રમાણેનો આધ્યા-
ત્મિક વિચાર યાવત્ મનोगत सकल्प ઉદભવ્યો કે—(સે કહિં મન્ને મए इमेया-
रूवे सहे गिसतपुव्वे त्ति कइहु सुभेण परिणामेण जाव जाइसरणे समुप्पन्ने,
पुव्वजाइ सम्म समागच्छइ तएण तस्स ददुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए) મને
એમ થાય છે કે આ રાખ્દો પહેલા મે સાંભળના છે આ જાતના વિચારોથી
તેને વિશુદ્ધ અધ્યવસાયને લીધે જાતિસ્મરણુ જ્ઞાન ઉત્પન્ન થઈ ગયું એથી તેણે
પોતાના પૂર્વ જન્મની બધી વિગત જાણી લીધી ત્યારબાદ તે ફેડકાને આ રીતે
વક્ષ્યમોણુ રૂપથી આધ્યાત્મિક યાવત્ મનोगत स्मरणरूप सकल्प ઉત્પન્ન થયો કે
(एव खलु अह इहेव रायगिहे नगरे ण्दे णाम मणियारे अइहे जाव अपरि

નામ મણિકાર. જાઢ્યો યાત્રપરિભૂત આસમ્ । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે શ્રમણો
ભગવાન્ મહાવીર* સમવસ્યત, તતઃ સ્વલુ શ્રમણસ્યમગતો મહાવીરમ્યાન્તિકે
પચ્ચાણુવ્રતિક સપ્તશિક્ષાવ્રતિક દ્વાદશવિધ ગૃધિધર્મ પ્રતિપન્ન*, તતઃ સ્વલ્લહમન્યદા
કદાચિદ્ અસાધુદર્શનેન ચ યાત્ર-મિથ્યાત્વ વિપ્રતિપન્નઃ, તતઃ સ્વલ્લહમન્યદા કદા-
ચિદ્ ગ્રીષ્મકાલસમયે યાત્ર-પૌષ્પશાલાયા પૌષ્પધુપાપય સ્વલુ વિહરામિ, ' એવ
યથૈવચિન્તા, આપુચ્છના, નન્દાપુષ્કરિણી, વનપણ્ટા, સભાઃ તદેવ સર્વમ્ ' તથૈવ-
ચિન્તાદિક દર્દુરેણ પૂર્વભૂવે કૃત તથૈવ તત્ સર્વ સ્મૃત, તદ્ યથા-મમ તત્રાપ્ટમમક્ટે

રાયગિહે નયરે ણદે ણામ મણિયારે અદ્દે જાવ અપરિભૂત । તેણ કાલેણ
તેણ સમણ સમણે ભગવ મહાવીરે સમોસઢે, તણ સમણસ્સ ભગ
વઓ મહાવીરસ્સ અતિણ પચાણુવ્વહય સત્તસિમ્મવાહય જાવ પહિવન્ને)
મેં હસી રાજગૃહ નગરમેં નદ નામ કા મણિકાર શ્રેષ્ઠી થા । વિશેષ રૂપસે
ધન વાન્યાદિ સપત્તિ શાલી એવ જન માન્ય થા । ઉસ કાલ ઓર ઉસ સમય
મેં શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર વહા આયે-સો મેંને ઉનસે પાચ અણુવ્રત એવ
સાત શિક્ષાવ્રત રૂપ શ્રાવક ધર્મ અગીકાર કરલિયા થા । (તણ અહ
અન્નયા કયાઈ અસાહુદમણેણય જાવ મિચ્છત્ત વિપહિવન્ને) કિસી
એક સમય અસાધુ કે દર્શન સે તથા ઓર ખી કઈ નિમિત્તો સે મેં મિ-
થ્યાત્વ ભાવ રૂપ સે પરિણત હો ગયા-(તણ અહ અન્નયાકયાઈ ગિમ્હ
કાલસમયસિ જાવ ઉવસપહિજિત્તાણ વિહરામિ, એવ જહેવ ચિંતા આ-
પુચ્છણા નદાપુષ્કરિણી વનસહા, સહાઓ ત ચેવ સવ્વ જાવ નદાણ
પુષ્કરિણીણ દદ્દુરત્તાણ ઉવવન્ને, ત અહોણ અહ અહન્ને, અપુન્ને, અક-

ભૂણ । 'તેણ કાલેણ તેણ સમણ સમણે ભગવ મહાવીરે સમોસઢે, તણ સમણસ્સ
ભગવઓ મહાવીરસ્સ અતિણ પચાણુવ્વહય સત્તસિમ્મવાહય જાવ પહિવન્ને) હું
પહેલા આ રાજગૃહ નગરમા જ નદ નામે મણિકાર શ્રેષ્ઠી હતો હું વિશેષ
રૂપથી ધન-ધાન્ય વગેરેથી સમૃદ્ધ તેમજ જનમાન્ય (લોકોમા પૂજાતો) હતો
તે કાળે અને તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ત્યા પધાર્યા હતા મે
તેઓશ્રી પાસેથી પાચ અણુવ્રતો અને સાત શિક્ષાવ્રતો રૂપ શ્રાવક ધર્મ
સ્વીકારી લીધો હતો (તણ અહ અન્નયા કયાઈ અસાહુ દસણેણય જાવ
મિચ્છત્ત વિપહિવન્ને) કેઈ એક વખતે અસાધુના દર્શનથી તેમજ ખીલ પણ
ધણા કારણથી હું મિથ્યાત્વભાવ રૂપમા પરિણત થઈ ગયો (તણ અહ
અન્નયા કયાઈ ગિમ્હકાલસમયસિ જાવ ઉવસપહિજિત્તા ણ વિહરામિ, એવ જહેવ
ચિંતા આપુચ્છણ નદા પુષ્કરિણી વનસહા, સહાઓ ત ચેવ સવ્વ જાવ નદાણ
પુષ્કરિણીણ દદ્દુરત્તાણ ઉવવન્ને, ત અહોણ, અહ અહન્ને,

परिणम्यमाने पिपासया क्षुधया चाभिभूतस्येत्य चिन्ता सजाता “धन्याः खलु ते लोका येषा जलाशया विद्यन्ते, तस्मात् वलये श्रेणिक राजानमापृच्छथ राजगृहस्य वहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे नन्दानाम्नी पु करिणी खनयितु श्रेय इति ” । अथैव विचिन्त्य श्रेणिक प्रत्यापृच्छना कृत्वा तदाऽज्ञया मया नन्दापुष्करिणी कारिता, यपुन्ने निगर्गथाओ पावयणाओ नट्टे भट्टे परिभट्टे त सेय खलु मम सयमेव पुव्वपडिवन्नाइ पचाणुव्वयाइ सत्तसिक्खावयाइ उवसपज्जित्ता ण विहरित्ताण) किसी समय में ग्रीष्मकाल में यावत् पौषधशाला में पौषध धारण कर बैठा हुआ था-इस प्रकार मुझे वहा ऐसी चिन्ता हुई आपृच्छना हुई, नदा पुष्करिणी कराने का विचार हुआ, वनपडों, सभाओ के बनाने का विचार हुआ-यह सब विषय पूर्वभव का उसे स्मृत हो आया-अर्थात् उसे यह बात याद आई-कि जब मैं अष्टम-भक्त की तपस्या का नियम धारण कर पौषध शाला में बैठा हुआ था तब मेरी वह तपस्या पूर्णप्राय हो रही थी-उस समय मुझे पिपासा और क्षुधा की याधा ने आकुलित परिणाम वाला बना दिया । सो मुझे इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ-कि वे लोग धन्यवाद के पात्र हैं कि जिन्हों के मनचाहे हुए जलाशय विद्यमान हैं । इसलिये मे भी प्रातः काल होते ही श्रेणिक राजा से पूछकर राजगृह के बाहिर ईशान कोण में नदा नाम की एक बावड़ी खुदवाऊंगा । इस प्रकार विचार कर फिर मैंने श्रेणिक राजा से पूछा तो उन्होंने ने मुझे इस की आज्ञा देदी मैंने

निगर्गथाओ पावयणाओ नट्टे भट्टे परिभट्टे त सेय खलु मम सयमेव पुव्वपडिवन्नाइ पचाणुव्वयाइ सत्तसिक्खावयाइ उवसपज्जित्ताण विहरित्ताण) के।छ अेक वणते Cनाणामा यावत् पौषधशाणामा पौषध धारणु करीने जेठो हुतो त्यारे भारा मनमा अेवे। विचार उहुलव्ये। अेवी आपृच्छना थछ, नदा पुष्करिणी तैयार कराववाने। विचार थयो, वनपडो तेमज सभाअेने जनाववने। विचार थयो, अे रीते पडेलाना जन्मनी जधी वातयाह आवी अेटले के तेने आ जतनु स्मरणु यथु डे ज्यारे हु अष्टम लक्ष्मनी तपस्यानु प्रत लछने पौषधशाणामा जेठो हुतो भारी अष्टम लक्ष्मनी तपस्या पूरी थवानी हुती ते वणते तरस अने लूणनी पीडअे मने व्याकुल जनवी दीधो । त्यारे मने विचार आव्ये। के ते लो। धन्यवाहने लायड छे के जेमना वडे जधायेला जणाशये। अत्यारे पणु हयात छे अेथी हु पणु सवार थता ज श्रेणिक राजनी आज्ञा मेजवीने राजगृह नगरनी जहार ईशान के।णुमा नदा नामे वाव जधावडावु आ रीते विचार करीने मे श्रेणिक राजने ज्यारे पूछथु त्यारे तेमजे मने तेनी आज्ञा

નામ મણિકાર. આઢ્યો યાદપરિભૂત આસમ્ । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે શ્રમણો
ભગવાન્ મહાવીરઃ સમસ્યત, તતઃ સ્વલુ શ્રમણસ્યમગરતો મહાવીરમ્યાન્તિકે
પચ્ચાણુત્તિક સપ્તશિક્ષાત્તિક ઢાદશવિધ ગૃહધર્મે પ્રતિપન્નઃ, તતઃ સ્વલ્લહમન્યદા
વદાચિદ્ અસાધુદર્શનેન ચ યાત્-મિધ્યાત્વ વિપ્રતિપન્નઃ, તતઃ સ્વલ્લહમન્યદા કદા-
ચિદ્ ગ્રીષ્મકાલસમયે યાત્-પૌષ્પશાલાયા પૌષ્પધમુપાપય સ્વલુ વિહરામિ, ' એવ
યથૈવચિન્તા, આપૃચ્છના, નન્દાપુષ્પરિણી, વનપણ્ડા, સભાઃ તદેવ સર્વમ્ ' તથૈવ-
ચિન્તાદિક દર્દુરેણ પૂર્વભૂવે કૃત તથૈવ તત્ સર્વં સ્મૃત, તદ્ યથા-મમ તત્રાપ્તમમકે

રાયગિહે નયરે ણદે ણામ મણિયારે અદ્દે જાવ અપરિભૂણ । તેણ કાલેણ
તેણ સમણ્ણ સમણે ભગવ મહાવીરે સમોસઢે, તણ્ણ સમણસ્સ ભગ
વઓ મહાવીરસ્સ અતિણ પચાણુવ્વહય સત્તસિય્સાવહય જાવ પહિવન્ને)
મેં હસી રાજગૃહ નગરમેં નદ નામ કા મણિકાર ઁષ્ઠી થા । વિશેષ રૂપસે
ધન ધાન્યાદિ સપત્તિ શાલી એવ જનમાન્ય યા । ઉસ કાલ ઔર ઉસ સમય
મેં શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર વહા આયે-સો મેંને ઉનસે પાચ અણુવત એવ
સાત શિક્ષાવ્રત રૂપ શ્રાવક ધર્મ અગીકાર કરલિયા યા । (તણ્ણ અહ
અન્નયા કયાઈ અસાહુદમણેણય જાવ મિચ્છત્ત વિપહિવન્ને) કિસી
એક સમય અસાધુ કે દર્શન સે તયા ઔર ઁી કઈ નિમિત્તો સે મેં મિ-
ધ્યાત્વ ભાવ રૂપ સે પરિણત હો ગયા-(તણ્ણ અહ અન્નયાકયાઈ ગિમ્હ
કાલસમયસિ જાવ ઉવસપજિજ્ઞાણ વિહરામિ, એવ જહેવ ચિન્તા આ-
પુચ્છણા નદાપુષ્પરિણી વનસઢા, સહાઓ ત ચેવ સવ્વ જાવ નદાણ
પુષ્પરિણીણ દદ્દુરત્તાણ ઉવવન્ને, ત અહોણ અહ અહન્ને, અપુન્ને, અક-

ભૂણ । 'તેણ કાલેણ તેણ સમણ્ણ સમણે ભગવ મહાવીરે સમોસઢે, તણ્ણ સમણસ્સ
ભગવઓ મહાવીરસ્સ અતિણ પચાણુવ્વહય સત્તસિય્સાવહય જાવ પહિવન્ને) હું
પહેલા આ રાજગૃહ નગરમા જ નદ નામે મણિકાર ઁષ્ઠિ હતો હું વિશેષ
રૂપથી ધન-ધાન્ય વગેરેથી સમૃદ્ધ તેમજ જનમાન્ય (લોકોમા પૂછાતો) હતો
તે કાળે અને તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ત્યા પધાર્યા હતા મે
તેઓશ્રી પાસેથી પાત્ર અણુવ્રતો અને સાત શિક્ષાવ્રતો રૂપ શ્રાવક ધર્મ
સ્વીકારી લીધો હતો (તણ્ણ અહ અન્નયા કયાઈ અસાહુ દસણેણય જાવ
મિચ્છત્ત વિપહિવન્ને) ડોઁ ઓક વખતે અસાધુના દર્શનથી તેમજ બીજા પણુ
ધણુ કારણોથી હું મિધ્યાત્વભાવ રૂપમા પરિણત થઈ ગયો (તણ્ણ અહ
અન્નયા કયાઈ ગિમ્હકાલસમયસિ જાવ ઉવસપજિજ્ઞાણ વિહરામિ, એવ જહેવ
ચિન્તા આપુચ્છણ નદા પુષ્પરિણા વનસઢા, સહાઓ ત ચેવ સવ્વ જાવ નદાણ
પુષ્પરિણીણ દદ્દુરત્તાણ ઉવવન્ને, ત અહોણ, અહ અહન્ને, અપુન્ને, અકયપુન્ને

ન્યદા કદાચિત્-પોઢશરોગાતક્લાં પ્રાદુર્ભૂતાઃ। વહવો વૈદ્યાસ્ત્રાગતાં પરત્વેકમપિ
રોગાતકુમુપશમયિતુમસમર્થા સન્ત પ્રતિગતા. । તતરતૈરોગાતકૈરભિભૂતાં સ્વલુ
નન્દાપુષ્કરિણ્યા મૂર્ચ્છિતોઽહ તત્સુખવિયોગસમાગ્રનયાઽઽર્ત યાનોપગતઃ સન્ કાલ
માસે કાલ કૃત્વા અગ્રૈવ નન્દાપુષ્કરિણ્યા દર્દુરતયા સજાતોઽસ્મિ । इत्थं जातिस्म-
रणं प्राप्य स दर्दुर स्वात्मनि विचारयति-‘ त अहोण जह अहन्ने ’ इत्यादि, तत्=
तस्माद् अहो ! इति खेदे खलु अहमधन्यः, अपुण्यः, अकृतपुण्यः, नैर्ग्रन्थात् प्रवच-
नाद् नष्टो भ्रष्टश्चास्मि, तत्=तस्मात्-श्रेयः खलु मम स्वयमेव पूर्वप्रतिपन्नानि=पूर्व
भगवद्गीकृतानि, पञ्चाणुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतान्युपसपद्य विद्वर्तुम् इत्येव ममेक्षते=

उदय से अतिशय आनंद का अनुभव करने लग जाता । किसी एक
समय मुझे मणिकार त्रेष्ठी के भव में उस प्रचलित शात गौरवजनित
कर्म के उदय से १६ रोगातक शरीर में प्रकट हुए । अनेक वैद्य आये,
परन्तु वे मेरे एक भी रोगातक को शमित करने में समर्थ नहीं हो
सके । सो चापिस चले गये । इस तरह उन रोगातकों से अभिभूत
हुआ मैं नदा पुष्करिणी में मूर्च्छित होकर उसके सुख के वियोग की
संभावना से आर्त-ध्यान में पड़कर मृत्यु के अवसर में मरा सो इसी
नदा पुष्करिणी में इस दर्दुर की पर्याय से उत्पन्न हुआ हूँ । इस तरह
जातिस्मरण ज्ञान को प्राप्त कर उस दर्दुर ने अपने मन में विचार किया
देखो यह कितने खेद की बात है-मैं कितना अधन्य हूँ कितना पापी
हूँ कितना अकृत पुण्य हूँ जो मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन से नष्ट भ्रष्ट हुआ इस-
लिये मुझे यही कल्याणास्पद है कि मैं स्वयं अब पूर्व भव में अगीकृत
किये गये पांच अणुव्रतोंको सात शिक्षाव्रतोंको स्वीकार-धारण-कर लू ।

આનંદમાં મગ્ન થઈ જતો હતો. ડોઠ એક સમયે મણિકાર શેઠના ભવમાં મારા
શરીરમાં પ્રબળતર શાત ગૌરવ જનિત કર્મના ઉદયથી મોળ રોગ અને આતક
પ્રકટ થયા. ઘણા વૈદ્યો આવ્યા પણ તેઓ મારો એક રોગ પણ મટાડી શક્યા
નહિ. વૈદ્યો પણ નિરાશ થઈને પાછા જતા રહ્યા હતા. આ રીતે રોગ અને
આતકથી પીડિત થઈને હું નદા વાવમાં બેમાન થઈને સુખના વિયોગની
સંભાવનાથી જ આર્તધ્યાન કરતો. ઇવટે મૃત્યુના સમયે મરણ પામ્યો. મૃત્યુ
બાદ હું એ નદા વાવમાં જ દેડકાના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થયો છું. આ રીતે
જાતિસ્મરણ જ્ઞાન પ્રાપ્ત થતા તે દેડકાએ પોતાના મનમાં વિચાર કર્યો કે-અરે !
અરે ! હું કેટલો બધો અધન્ય છું. પાપી છું અને અકૃતપુણ્ય છું. નિર્ગ્રન્થ
પ્રવચનથી ભ્રષ્ટ થઈને જ મારી આવી દશા થઈ છે, એથી હવે હું પૂર્વભવમાં
સ્વીકારેલા પાંચ અણુવ્રતો, અને શિક્ષાવ્રતોને સ્વીકારી લઉં (એવ સપેદેદ સપે

તતસ્તેસ્યાઃ પુષ્કરિણ્યાથતુર્દિક્ષુ વનપટ્ટા આરાપિતાઃ સરક્ષિતાઃ સર્વધિતાઃ, તત્ સ્તેષુ વનપટ્ટેષુ પૌરસ્ત્યે ચિત્રસભા, દાક્ષિણાત્યે મહાનસશાલા, પાશ્ચાત્યે ચિકિત્સા શાલા, ઔદીચ્યે વનપટ્ટેડલકારિકસભા મયા કારિતા, ઇતિ । 'યાવત્-નન્દાયાં પુષ્કરિણ્યા દર્દુરતયોપપન્નઃ' તત્તો રાજગૃહપિનિર્ગતો વહુજનસ્તત્ર પુષ્કરિણ્યાં સ્નાનં કુર્વન્ જલ પિબન્ પાનીય ઘટાદિભિર્નયન્ પરસ્પરમેવમવાદીત્-મો દેવાનુપ્રિયાઃ ! ધન્યઃ કૃતાર્થઃ સ્વલુ નન્દો મણિકારશ્રેષ્ઠી યસ્ય સલુ હ્યમેતદ્વા નન્દાપુષ્કરિણી ત્યોદિ, તત્ પ્રશંસાવચનમહ વહુજનસ્યાન્તિકે શ્રુત્વા હૃષ્ટતુષ્ટઃ સાતગૌરવસુર્ત્વમનુભવન્ આસમ્ । તત સ્વલુ મમ મણિકારશ્રેષ્ઠિભવે પ્રચલતરશાતગૌરવજનિતકર્મોદ્યેના-

નંદા નામ કી પુષ્કરિણી ઉન્હી કી આજા સે વન વાઈ । उस की चारों दिशाओं में चार वनपट्ट लगवाये वे सरक्षित होकर खूब अच्छी वृद्धि गंत हुए उन वनपट्टों में से जो पूर्व दिशा सबन्धी वनपट्ट था उसमें मैंने एक चित्र सभा वनवाई दक्षिण दिशा सबन्धी वनपट्ट में एक मेहरा नंस शाला, पश्चिमदिशा सबन्धी वनपट्ट में चिकित्सा शाला और उत्तर दिशा सबन्धी वनपट्ट में अलंकारिक सभा वनवाई । राजगृहनगर से निर्गत अनेक जन उस पुष्करिणी में स्नान करते-पानी पीते और उस में से पानी भी भरते-तब परस्पर मिलकर वे इस प्रकार से बात चीत करते कि भो देवानुप्रिय ! मणिकार नंद श्रेष्ठी धन्यवाद का पात्र है, कृतार्थ है-जिसने इतनी अच्छी इस नदा पुष्करिणी को बन वाया है । इस तरह के प्रशंसात्मक वचन सुनकर मैं हर्षोत्फुल्ल गात्र हो जाता, मेरा चित्त संतुष्ट हो जाता । मे उस समय शात गौरव के

આપી દીધી તેમની આજ્ઞાથી જ મે નદા નામે પુષ્કરિણી બનાવી છે તેની ચારે દિશાઓમા ચાર વનપટ્ટો રોપાવ્યા સુરક્ષિત થયેલા વનપટ્ટો ખૂબ જ વૃદ્ધિ પામ્યા પૂર્વ દિશા તરફના વનપટ્ટમા મે એક ચિત્રસભા બનાવડાવી હતી દક્ષિણ દિશાના વનપટ્ટમા એક વિશાળ મહાનસ શાળા (રસોઈ ઘર), પશ્ચિમ દિશાના વનપટ્ટમા ચિકિત્સાલય (દવાખાતુ) અને ઉત્તર દિશાના વનપટ્ટમા અલંકારિક સભા બનાવડાવી રાજગૃહ નગરના ઘણા માણસો પુષ્કરિણીમા સ્નાન કરતા, પાણી પીતા અને તેમાથી પાણી ભરતા હતા ત્યારે તેઓ પરસ્પર વાત ચીત શરૂ કરવા માડતા કે હે દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર શ્રેષ્ઠિ ધન્યવાદને લાયક છે કૃતાર્થ છે, કેમકે તેણે કેવી સરમ નદા પુષ્કરિણી બનાવડાવી છે આ રીતે પોતાના જ વખાણુ સાલણીને હું ખુશ ખુશ (હર્ષોત્કુલ) થઈ જતો અને મોઈ હૈયું સંતુષ્ટ થઈ જતું હતું હું તે વખતે શાત ગૌરવના ઉદયથી ખૂબ જ

ન્યદા કદાચિત્-પોડશરોગાતઙ્કા* પ્રાદુર્ભૂતા । વહવો વૈદ્યાસ્ત્રાગતા* પરત્વેકમપિ
રોગાતઙ્કમુપગમયિતુમસમર્થા સન્ત પ્રતિગતાઃ । તતરતૈરોગાતઙ્કૈરભિભૂતઃ સ્વલુ
નન્દાપુ*કરિણ્યા મૂર્ચ્છિતોઽહ તત્સુખવિયોગસભાવનયાઽઽર્ત યાનોપગતઃ સન્ કાલ-
માસે કાલ કૃત્વા અગૈવ નન્દાપુ*કરિણ્યા દર્દુરતયા સજાતોઽસ્મિ । इत्य जातिस्म-
रण प्राप्य स दर्दुर स्वात्मनि विचारयति-‘ त अहोण जह अहन्ने ’ इत्यादि, तत्=
तस्माद् अहो ! इति खेदे सलु अहमवन्थ , अपुण्य , अकृतपुण्यः, नैर्ग्रन्थ्यात् प्रवच-
नाद् नष्टो भ्रष्टश्चास्मि, तत्=तस्मात्-श्रेयः सलु मम स्वयमेव पूर्वप्रतिपन्नानि=पूर्व
भवाङ्गीकृतानि, पञ्चाणुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतान्युपसपद्य विदुर्तुम् इत्येव ममेक्षते=

ઉદય સે અતિશય આનંદ કા અનુભવ કરને લગ જાતા । કિસી એક
સમય મુઝે મણિકાર શ્રેષ્ઠી કે ભવ મેં ઉસ પ્રવલતર શાત ગૌરવજનિત
કર્મ કે ઉદય સે ૧૦ રોગાતક શરીર મેં પ્રકટ હુણ । અનેક વૈદ્ય આયે
પરન્તુ વે મેરે ણક મી રોગાતક કો શમિત કરને મે સમર્થ નહીં હો
મકે । સો વાપિમ ચલે ગયે । ઇસ તરહ ઉન રોગાતકોં સે અભિભૂત
હુઆ મે નદા પુષ્કરિણી મેં મૂર્ચ્છિત હોકર ઉસકે સુખ કે વિયોગ કી
સંભાવના સે આર્ત યાન મેં પડકર મૃત્યુ કે અવસર મે મરા સો ઇસી
નદા પુષ્કરિણી મેં ઇસ દર્દુર કી પર્યાય સે ઉત્પન્ન હુઆ હૂં । ઇસ તરહ
જાતિસ્મરણ જ્ઞાન કો પ્રાપ્ત કર ઉસ દર્દુર ને અપને મન મેં વિચાર ક્રિયા
દેખો યહ કિતને સ્વેદ કી વાત હૈ-મે કિતના અવન્થ હૂં કિતના પાપી
હૂં કિતના અકૃત પુણ્ય હૂં જો મ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન સે નષ્ટ ભ્રષ્ટ હુઆ ઇસ-
લિયે મુઝે યહી કલ્યાણાસ્પદ હૈ કિ મે સ્વય અથ પૂર્વ ભવ મેં અગીકૃત
ક્રિયે ગયે પાચ અણુવ્રતોકો સાત શિક્ષાવ્રતોકો સ્વીકાર-ધારણ-કર લૂ ।

આનંદમા મગ્ન થઈ જતો હતો કેઈ એક સમયે મણિકાર શેના ભવમા મારા
શરીરમા પ્રબળતર શાત ગૌરવ જનિત કર્મના ઉદયથી મોળ રોગ અને આતક
પ્રકટ થયા ઘણા વયો આવ્યા પણ તેઓ મારો એક રોગ પણ મટાડી શક્યા
નહિ વૈદ્યો પણ નિરાશ થઈને પાછા જતા રહ્યા હતા આ રીતે રોગ અને
આતકથી ખીડિત થઈને હું નદા વાનમા બેમાન થઈને સુખના વિયોગની
સંભાવનાથી જ આર્તધ્યાન કરતો દેવટે મૃત્યુના સમયે મળુ પામ્યો મૃત્યુ
ખા હું એ નદા વાનમા જ દેડકાના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થયો છું આ રીતે
જાતિસ્મરણ જ્ઞાન પ્રાપ્ત થતા તે દેડકાએ પોતાના મનમા વિચાર કર્યો કે-અરે !
અરે ! હું કેટલો બધો અવન્થ છું પાપી છું અને અકૃતપુણ્ય છું નિર્ગ્રન્થ
પ્રવચનથી ભ્રષ્ટ થઈને જ મારી આવી દશા થઈ છે, એવી હરે હું પૂર્વભવમા
સ્વીકારેલા પાચ અણુવ્રતો, અને શિક્ષાવ્રતોને સ્વીકારી લઉં (એવ સપેદેદ સપે

विचारयति, सप्रेक्ष्य पूर्वप्रतिपन्नानि पञ्चाणुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतानि आरोहति=
धारयति स्वीकरोतीत्यर्थः । आरुह्य=दादशव्रतान्यङ्गीकृत्य, इममेतद्रूप=वक्ष्यमाण
स्वरूपम्, अभिग्रहमभिगृह्णाति-कल्पते मे यावज्जीव ' छट्छट्टेण ' पष्टपष्टभक्तन,
' अणिकित्तेण ' अनिक्षित्तेन-अन्तररहितेन अविश्रान्तेनेत्यर्थः तपः कर्मणाऽऽ
त्मान भावयत.=आत्मनः शुभपरिणाम वर्धयतः, विहर्तुं कल्पते इति पूर्वण सम्वन्धः ।
अपिच-पष्ठम्यापि--पष्ठभक्तस्यापि च पारणके कल्पते मे नन्दाया. पुष्करिण्या.
' परिपेरतेसु ' परिपर्यन्तेषु=तटेषु=प्रायुकेन=भविष्येण, स्नानोदकेन ' उम्महणो-
ल्लोलियाहि य ' उ-मर्दनोल्लोलिताभिः=उद्धर्तनादुर्वरिताभिः लोकैर्दोहोद्धर्तने कृते
सति शेषभूता इतस्ततः पतिता या ययचूर्णादिनिर्मितपिष्टिकास्ताभिरित्यर्थः,
वृत्तिं कल्पयत शरीरयात्रानिर्वाह कुर्वत. विहर्तुं कल्पते इति पूर्वणान्वयः । इममेत

(एव सपेवेइ, सपेहिता पुव्वपडिचन्नाइ पचाणुव्वयाइ सत्त सि
क्खावयाइ आरुहेइ, आरुहिता इमेयारुव्व अभिग्गह् अभिगिण्हइ-कप्प
मे जाव जीव छट्ठ छट्टेण अणिकित्तेण तवो कम्मेण अप्पाण भावेमा
णस्स विहरित्तए) इस प्रकार उसने विचार किया । विचार करके पूर्व
प्रतिपन्न पच अणुव्रतों को सात शिक्षाव्रतों को उसने स्वयं धारण कर
लिया । धारण करके फिर उसने इस प्रकार का नियम ले लिया कि मैं
अब जीवन पर्यन्त अन्तर रहित पष्ट पष्ट भक्त की तपस्या से अपने
आत्मपरिणामोंको बढ़ाना रहूँगा । (छट्ठस्स वि य ण पारणगसि कप्पइ
मे णदाए पोक्खरणीए परिपेरतेसु फासुएण ण्हणोदएण उम्महणो-
ल्लोलियाहि य वित्तिं कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारुव्व अभिग्गह् अ
भिगेण्हइ, जावज्जीवाए छट्ठ छट्टेण जाव विहरइ) और छट्ठ भक्त की

हिता पुव्व पडिचन्नाइ पचाणुव्वयाइ सत्तसिक्खावयाइ आरुहेइ, आरुहिता
इमेयारुव्व अभिग्गह् अभिगिण्हइ, कप्प मे जाव जीव छट्ठ छट्टेण अणिकित्तेण
तवो कम्मेण अप्पाण भावेमाणस्स विहरित्तए) आ रीते तेणु विचार ज्यो विचार
करीने पूर्व अवभा स्वीकारेला पाथ आणुव्वाने अने सात शिक्षाव्रताने तेणु
पोते न धारणु करी लीधा धारणु करीने तेणु अे जतने। नियम लीधा ऊ
हुवे जवननी छेन्दी पण सुधी अन्तर रहित पष्ट पष्ट लक्ष्मणी तपस्या पडे
भारा आत्म परिणामोनी वृद्धि करतो न रहीश (छट्ठस्स वि य ण पारणगसि
कप्पइ मे णदाए पोक्खरणीए, परिपेरतेसु फसुएण ण्हणोदएण उम्महणोल्लो
ल्लियाहिय वित्तिं कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारुव्व अभिग्गह् अभिगेण्हइ, जाव
ज्जीवाए छट्ठ छट्टेण जाव विहरइ) अने छट्ठ लक्ष्मणी धारणुना नहा

द्रूपमभिगृह्णाति, अभिगृह्य यावज्जीव पटुपट्टेन=पठपठभवतेन यावत्-स ददुरीऽ
भिग्रहग्रहणपूर्वक स्वीकृतेन तप कर्मणाऽऽत्मान भावयन् विहरति=आस्तेरमा मृ० ७॥

मूलम्-तेषां कालेण तेषां समेषां अह गोयमा । गुण-
सिलए चेइए समोसढे परिसा निग्गया, तएणं नंदाए पुक्ख-
रिणीए बहुजणो ण्हयमाणो य ३ अन्नमन्न एव वयासी-
देवाणुप्पिया । समणे३ इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, त
गच्छामो णं देवाणुप्पिया । समण भगव महावीर वदामो
जाव पज्जुवासामो एय मे इहभवे परभवे य हियाए जाव
अणुगामियत्ताए भविस्सइ तएणं तस्स ददुरस्स बहुजणस्स
अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अञ्जतिथए ५
समुप्पज्जितथा-एव खल्लु समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसि-
लए चेइए समोसढे, त गच्छामि णं समणां३ वदामि जाव
पज्जुवासामि एव सपेहेइ सपेहिता णंदाओ पुक्खरणीओ
सणिय २ उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ
उक्किट्ठाए ददुरगईए वीइवयमाणे जेणेव मम
रेत्थ गमणाए, इम च ण सेणिए राया

पारणाके दिन में नदा पुक्करिणी के तट पर के अचित्त स्नानोदक से
तथा लोको के द्वारा दोहोवर्तन करने पर ओपभूत डधर उधर पतित
यव चूर्णादि निर्मिन पिष्टिका से अपने शरीर की यात्रा का निर्वाह
करूंगा, इस प्रकार का अभिग्रह उसने ग्रहण कर लिया । । इस करह
अभिग्रह ग्रहण पूर्वक वह ददुर घृत पण्ड पण्ड भक्त की तपस्या से
आत्मशुद्धि करने में लग गया ॥ सूत्र ७ ॥

वाचना दिन रानी आने आनुना अचित्त स्नानोदकी तेमर दोजे पडे देडोह
वर्तन उयो पट्टी वधेया अने अभतेम वेराउने पडेया नवना दोर वगेदेथी
पोताना पिउने शरीरने निर्वाह करीया आ रीते तेले अभिग्रह लई लीये
आम अलिग्रह धारण करीने देउजे पण्ड लक्ष्मणी तपस्या करने आत्मशुद्धि
करवाभा तल्लीन थई गये सूत्र " ७ "

વિચારયતિ, સપ્રેક્ષ્ય પૂર્વપ્રતિપન્નાનિ પચ્ચાણુત્તરતાનિ સત્તગિજ્ઞાત્રતાનિ આરોહતિ= ધારયતિ સ્વીકરોતીત્યર્થઃ । આરણ્ય=દ્વાદશગ્રન્થાન્યદ્વીકૃત્ય, ઇમમેતદ્રૂપ=વક્ષ્યમાણ સ્વરૂપમ્, અભિગ્રહમભિગૃહ્ણાતિ-કલ્પતે મે જાગજીવ ‘ છટ્ટછટ્ટેણ ’ પપ્પપપ્પભવતેન, ‘ અણિસ્થિત્તેણ ’ અનિશ્ચિત્તેન-અન્તરરહિતેન અવિશ્રાન્તેનેત્યર્થઃ તપઃ કર્મણાઽઽત્માન ભાવયત=આત્મનઃ શુભપરિણામ વર્ધયતઃ, વિહતું કલ્પતે ઇતિ પૂર્વેણ સમ્યન્ધઃ । અપિચ-પપ્પમ્યાપિ--પપ્પભક્તસ્યાપિ ચ પારણકે કલ્પતે મે નન્દાયાઃ પુપ્પરિણ્યાઃ ‘ પરિપેરતેસુ ’ પરિપર્યન્તેપુ=તટ્ટેપુ=પાપુકેન=અચિત્તેન, સ્નાનોદકેન ‘ ઉમ્મદ્દણો છોલિયાહિ ય ’ ઉમ્મદ્દનોછોલિતાભિઃ=ઉદ્વર્તનાદુર્વરિતાભિઃ લોકૈર્દોહોદ્વર્તને કૃતે સતિ શેષભૂતા ઇતસ્તતઃ પતિતા યા યચ્ચૂર્ણાદિનિર્મિતપિષ્ટિકાસ્તાભિરિત્યર્થઃ, વૃત્તિ કલ્પયત શરોરયાત્રાનિર્વાહ કુર્વત વિહતું કલ્પતે ઇતિ પૂર્વેણાન્યયઃ । ઇમમેત

(એવ સપેવેહ, સપેહિત્તા પુન્નપહિવન્નાહ પચાણુન્વયાહ સત્ત સિ ક્વવાવયાહ આરહેટ, આરહિત્તા ઇમેયાહ્વ અભિગ્ગહ અભિગિણ્હ-કપ્પ મે જાવ જીવ છટ્ટ છટ્ટેણ અણિસ્થિત્તેણ તવો કમ્મેણ અપ્પાણ ભાવેમા ણસ્સ વિહરિત્તે) ઇસ પ્રકાર ઉસને વિચાર કિયા । વિચાર કરકે પૂર્વ પ્રતિપન્ન પચ અણુત્તરોં કો માત શિક્ષાવ્રતોં કો ઉસને સ્વય ધોરણ કર લિયા । ધારણ કરકે ફિર ઉસને ઇસ પ્રકાર કા નિયમ લે લિયા કિ મેં અવ જીવન પર્યંત અન્તર રહિત પપ્પ પપ્પ ભક્ત કી તપસ્યા સે અપને આત્મપરિણામોંકો વઢાતો રહુંગા । (છટ્ટસ્મ વિ ય ણ પારણગસિ કપ્પહ મે ણદાણ પોક્કલ્લરણીણ પરિપેરતેસુ કાસુણ્ણ પ્હાણોદણ્ણ ઉમ્મદ્દણો-છોલિયાહિ ય વિત્તિ કપ્પેમાણસ્મ વિહરિત્તે, ઇમેયાહ્વ અભિગ્ગહ અ ભિગેણ્હ, જાગજીવાણ છટ્ટ છટ્ટેણ જાવ વિહરહ) ઓર છટ્ટ ભક્ત કી

હિત્તા પુન્ન પહિવન્નાહ પચાણુન્વયાહ સત્તસિસ્થાવયાહ આરહેટ, આરહિત્તા ઇમેયાહ્વ અભિગ્ગહ અભિગિણ્હ, કપ્પ મે જાવ જીવ છટ્ટ છટ્ટેણ અણિસ્થિત્તેણ તવો કમ્મેણ અપ્પાણ ભાવેમાણસ્સ વિહરિત્તે) આ રીતે તેણે વિચાર ડ્યો વિચાર કરીને પૂર્વ ભવમા સ્વીકારેલા પાપ આણુમ્મને અને સાત શિક્ષાવ્રતોને તેણે પોતે જ ધારણ કરી લીધા ધારણ કરીને તેણે એ જાતને નિયમ લીધો કે હવે જીવનની છેલ્લી પણ સુધી અન્તર રહિત પપ્પ પપ્પ ભક્તની તપસ્યા વડે મારા આત્મ પરિણામોની વૃદ્ધિ કરતો જ રહીશ (છટ્ટસ્મ વિ ય ણ પારણગસિ કપ્પહ મે ણદાણ પોક્કલ્લરણીણ, પરિપેરતેસુ કાસુણ્ણ પ્હાણોદણ્ણ ઉમ્મદ્દણોછો લિયાહિય વિત્તિ કપ્પેમાણસ્સ વિહરિત્તે, ઇમેયાહ્વ અભિગ્ગહ અભિગેણ્હ, જાવ જીવાણ છટ્ટ છટ્ટેણ જાવ વિહરહ) અને છટ્ટ ભક્તની પારણાના સિ મે નહા

द्रूपमभिगृह्णाति, अभिगृह्ण यावज्जीव पट्टपट्टेन=पट्टपट्टभक्तेन यावत्-स ददुरोऽ-
भिग्रहग्रहणपूर्वक स्वीकृतेन तप कर्मणाऽऽत्मान भावयन् विहरति=आस्तेस्मा सु० ७॥

मूलम्-तेषां कालेण तेषां समेषां अह गोयमा । गुण-
सिलए चेइए समोसढे परिसा निगया, तएणं नंदाए पुक्ख-
रिणीए बहुजणो पह यमाणो य ३ अन्नमन्नं एव वयासी-
देवाणुप्पिया । समणेइ इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, त
गच्छामो णं देवाणुप्पिया । समण भगव महावीर वदामो
जाव पज्जुवासामो एय मे इहभवे परभवे य हियाए जाव
अणुगामियत्ताए भविस्सइ तएणं तस्स द्दग्गस्स बहुजणस्स
अंतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अञ्जतिथिए ५
समुप्पडिजत्था-एव खल्लु समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसि-
लए चेइए समोसढे, त गच्छामि णं समणंइ वदामि जाव
पज्जुवासामि एव सपेहेइ सपेहिता णंदाओ पुक्खरणीओ
सणिय २ उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ
उक्किहाए द्दुरगईए वीइवयमाणे जेणेव मम
रेत्थ गमणाए, इम च णं सेणिए राया

पारणाके दिन में नदा पुक्करिणी के तट पर के अचित्त स्नानोदक से
तथा लोको के द्वारा दोहोछर्तन करने पर शेषभूत डधर उवर पतित
यव चूर्णादि निर्मित पिष्टिका से अपने शरीर की यात्रा का निर्वाह
करूंगा, इस प्रकार का अभिग्रह उसने ग्रहण कर लिया । । इस करह
अभिग्रह ग्रहण पूर्वक वह ददुर घृत पण्ड पण्ड भक्त की तपस्या से
आत्मशुद्धि करने में लग गया ॥ सूत्र ७ ॥

वाचना दिन रानी आरे आणुना अचित्त स्नानोदकथी तेमज्ज दोजे वडे देहोइ
वर्तन उयो पली वधेया अने अभतेम वेराउने पडेया लवना दोज वगेरथी
पोताना पिंडनो शरीरनो निर्वाह करीया आ रीते तेले अभिग्रह लक्ष दीधो
आम अभिग्रह धारण उगीने देउडे पण्ड लक्ष्मणी तपस्या करने आत्मशुद्धि
करवामा तलीन थर्ध गयो सूत्र " ७ "

विचारयति, सप्रेक्ष्य पूर्वप्रतिपन्नानि पञ्चाणुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतानि आरोहति=
धारयति स्वीकरोतीत्यर्थः । आरुह्य=द्वादशव्रतान्यङ्गीकृत्य, इममेतद्रूप=वक्ष्यमाण
स्वरूपम्, अभिग्रहमभिगृह्णाति-कल्पते मे यावज्जीव ' छट्छट्टेण ' पट्टपट्टभवतेन,
' अणित्थित्तेण ' अनिक्षिप्तेन-अन्तररहितेन अविश्रान्तेनेत्यर्थः तपः कर्मणाऽऽ
त्मानं भावयत =आत्मनः शुभपरिणामं वर्धयतः, विहर्तुं कल्पते इति पूर्वेण सम्यन्धः ।
अपिच-पट्टम्यापि--पट्टभक्तस्यापि च पारणके कल्पते मे नन्दायाः पुष्करिण्या
' परिपेरतेसु ' परिपर्यन्तेषु=तटेषु=प्रासुरकेन=प्रचित्तेन, स्नानोदकेन ' उम्मदणो
ल्लोलियाहि य ' उ-मर्दनोल्लोलिताभिः=उद्धर्तनादुर्वरिताभिः लोकैर्दोहोद्धर्तने कृते
सति शेषभूता इतस्ततः पतिता या यश्चूर्णादिनिर्मितपिष्टिकास्ताभिरित्यर्थः,
वृत्तिं कल्पयत शरीरयात्रानिर्वाहं कुर्वत. विहर्तुं कल्पते इति पूर्वणान्वयः । इममेत

(एव सपेवेड, सपेहत्ता पुण्वपडिवन्नाह पचाणुव्वयाड सत्त सि
क्खावयाड आरुहेड, आरुहत्ता इमेयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ-कप्प
मे जाव जीव छट्ट छट्टेण अणित्थित्तेण तवो कम्मेण अप्पाण भावेमा
णस्स विहरित्तए) इस प्रकार उसने विचार किया । विचार करके पूर्व
प्रतिपन्न पच अणुव्रतों को सात शिक्षाव्रतों को उसने स्वयं धारण कर
लिया । धारण करके फिर उसने इस प्रकार का नियम ले लिया कि मैं
अब जीवन पर्यन्त अन्तर रहित पट्ट पट्ट भक्त की तपस्या से अपने
आत्मपरिणामोंको बढ़ाना रहूँगा । (छट्टस्स वि य ण पारणगंसि कप्पइ
मे णदाए पोक्खरणीए परिपेरतेसु फासुएण पहाणोदण्ण उम्मदणो-
ल्लोलियाहि य वित्ति कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारूव अभिग्गह अ
भिगेण्हइ, जावज्जीवाए छट्ट छट्टेण जाव विहरइ) और छट्ट भक्त की

हिता पुण्व पडिवन्नाह पचाणुव्वयाड सत्तसिक्खावयाड आरुहेड, आरुहत्ता
इमेयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ, कप्प मे जाव जीव छट्ट छट्टेण अणित्थित्तेण
तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणस्स विहरित्तए) आ रीते तेले विचार ज्यो विचार
करीने पूर्व अवमा स्वीकारेला पाय आणुव्रतो अने सात शिक्षाव्रताने तेले
पोते न धारणु करी लीध । धारणु करीने तेले अ नतने नियम लीध । के
डे अवननी छट्टी पण सुधी अन्तर रहित पट्ट पट्ट भक्तनी तपस्या वडे
भारा आत्म परिणामोनी वृद्धि करतो न रहीश । (छट्टस्स वि य ण पारणगंसि
कप्पइ मे णदाए पोक्खरणीए, परिपेरतेसु फासुएण पहाणोदण्ण उम्मदणोल्लो
ल्लोलियाहि य वित्ति कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारूव अभिग्गह अभिगेण्हइ, जाव
ज्जीवाए छट्ट छट्टेण जाव विहरइ) अने छट्ट भक्तनी पारणाना वि

द्रूपमभिगृह्णाति, अभिगृह्य यावज्जीव पट्टपठेन=पठपठुमन्तेन यावत्-स ददुरोऽ
भिग्रहग्रहणपूर्वक स्वीकृतेन तप कर्मणाऽऽत्मान भावयन् विहरति=आस्तेस्मा सु० ७॥

मूलम्-तेषां कालेण तेषां समेषां अह गोयमा । गुण-
सिलए चेइए समोसढे परिसा निगया, तएणं नंदाए पुक्ख-
रिणीए बहुजणो पहायमाणो य ३ अन्नमन्नं एव वयासी-
देवाणुप्पिया । समणेइ इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, त
गच्छामो णं देवाणुप्पिया । समण भगव महावीर वदामो
जाव पज्जुवासामो एय मे इहभवे परभवे य हियाए जाव
अणुगामियत्ताए भविस्सइ तएणं तस्स ददुरस्स बहुजणस्स
अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अञ्जतिथए ५
समुप्पज्जितथा-एव खलु समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसि-
लए चेइए समोसढे, त गच्छामि णं समणंइ वदामि जाव
पज्जुवासामि एव सपेहेइ सपेहित्ता णंदाओ पुक्खरणीओ
सणिय २ उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ
उक्किट्ठाए ददुरगईए वीइवयमाणे जेणेव मम
रेत्थ गमणाए, इम च णं सेणिए राया

पारणाके दिन में नदा पुक्करिणी के तट पर के अचित्त स्नानोदक से
तथा लोको के द्वारा दोहोछर्तन करने पर शेषभूत डधर उवर पतित
यव चूर्णादि निर्मिन पिष्टिका से अपने शरीर की यात्रा का निर्वाह
करूंगा, इस प्रकार का अभिग्रह उसने ग्रहण कर लिया । । इस करह
अभिग्रह ग्रहण पूर्वक वह ददुर धृत् पण्ड पण्ड भक्त की तपस्या से
आत्मशुद्धि करने में लग गया ॥ सूत्र ७ ॥

वाचना दिन रानी आरे णानुना अचित्त स्नानोदकथी तेमए लोको वडे देडोइ
वर्तन उयो पठी वधेया अने अमतेम वेराउने पडेया लवना लो० वगेरेथी
योताना पिडने शरीरने निर्वाह करीश आ रीते तेले अभिग्रह लई लीधो
आम अभिग्रह धारण करीने देडोको पण्ड भक्तनी तपस्या उगे आत्मशुद्धि
करवाभा तल्लीन धई गये सूत्र " ७ "

भभसारे णहाए कयकोउयमगलपायच्छित्ते सव्वालकारविभू-
 सिए हत्थिखंधवरगए सकोरटमह्छदामेण छत्तेणं धरिजमाणेणं
 सेयवरचामराहि उद्धुव्वमाणाहि हयगयरहमहया भडचडगर-
 कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे मम पायवदए
 हव्वमागच्छइ, तएण दहुरे सेणियस्स रत्तो एगेणं आसकिसो-
 रएणं वामपाएणं अवकंते समाणे अंतनिग्घाइए कएयावि होत्था,
 तएणं से दहुरे अत्थामे अवले अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे
 अधारणिज्जमित्तिकट्टु एगंतमवक्कमइ अवक्कमित्ता करयल-
 परिग्गहिय मत्थए अजलि कट्टु एव वयासी—नमोऽत्थु णं
 मम धम्मायरियस्स जाव सपाविउकामस्स पुठ्वि पिय णं मए
 समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए थूलए पाणाइ ११ ए पच्च-
 क्खाए, जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए, त इयाणि पि तस्सेव
 अतिए सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि जाव सव्व परिग्गहं पच्च-
 क्खामि जावजीवं, सव्व असणं ४ पच्चक्खामि जावजीव
 जंपि य णं इम सरीर इट्ठ कत जाव मा फुसतु एयपि णं चरि-
 मेहिं ऊसासेहिं वोसिरामि त्तिकट्टु, वोसिरइ तएण दहुरे कालमासे
 काल किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे दहुरवडिसए विमाणे उववा-
 यसभाए दहुरे देवत्ताए उववन्ने, एव खलु गोयमा । दहुरेणं सा
 दिव्वा देविट्ठी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया । दहुरस्स णं भत्ते ।
 देवस्स केवइयकाल ठिई पणत्ता ? गोयमा । चत्तारि पलि
 ओवमाइ ठिई पणत्ता, से ण भत्ते । दहुरे देवे ताग्गे ११

गाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएण चयं चइत्ता कहिं
गच्छिहिइ कहि उववज्जिहिइ गोयमा । महाविदेहेवासे
सिज्झिहिइ वुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वहिइ सब्बदुक्खाण
अंतं करोहिइ य । एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण
तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ॥ सू०८ ॥

॥ तेरसम नायज्झयणं समत्तं ॥ १३ ॥

टीका—भगवान् महावीरः स्वामी कथयति—‘तेण कालेण’ इत्यादि ।
तस्मिन् काले तस्मिन् समये=यदा म ददुरः पण्ठभक्त तपः कर्मणाऽऽत्मान भाव-
यन् विहरतिस्म, तस्मिन् काले तस्मिन् समये हे गौतम । अहगुणशिलके चैत्ये=
गुणशिल्पकनामकोद्याने समवसृतः=माप्तः । परिउद्=राजट्टहनगरनिवापिना जनानां
समूहः, निर्गता=मा द्रष्टु वन्दितु नगराब्दहिर्निःसृता । ततः खलु नन्दाया
पुष्करिण्या ऋजुन स्नानं कुर्वन् जलं पिबन् पनीयं च सवहन् अन्योन्यमेवमवा-
दीत्—भो देवानुप्रियाः ! श्रमणो भगवान् महावीर स्वामी इहैव गुणशिलके चैत्ये
समवसृतः, तत्=तस्माद् गच्छाम खलु हे देवानुप्रियाः ! श्रमण भगवन्त महा-
वीरस्वामिन वन्दामहे नमस्यामः वन्दित्वा नत्वा यावन्-पर्युपास्महे=सेवां कुर्मः,
अस्माकमेतद् इहभवे परभवे च हिताय यावत्-सुखाय, क्षेमाय, निःश्रेयसे, ‘अणु-

‘तेण काले ण तेण समएण’ इत्यादि ।

टीकाय—(तेण काले ण तेण समएण) उस काल और उस समयमें
(अह गोयमा । गुणसिलए चेइए समोसठे परिसा निग्गया, तएण नदाए
पुक्खरिणीए षड्जणो ण्हायमाणो य ३ अन्नमन्न एव वयासी-देवाणु-
प्पिया ! समणे ३ इहेव गुणसिलए चेइए समोसठे, त गच्छामो ण
देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामो जाव पज्जुवासामो, एय
मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ) हे

‘तेण कालेण तेण समएण’ इत्यादि—

टीकाय—(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये (अह गोयमा ।
गुणसिलए चेइए समोसठे परिसा निग्गया, तएण नदाए पुक्खरिणीए षड्जणो
ण्हायमाणो य ३ अन्नमन्न एव वयासी-देवाणुप्पिया ! समणे ३ इहेव गुणसिलए
चेइए समोसठे, त गच्छामो ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामो जाव
पज्जुवासामो, एय मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ)

भंभसारे पहाए कयकोउयमगलपायच्छित्ते सव्वालकारविभू-
 सिए हत्थिखधवरगए सकोरंटमहृदामेण छत्तेण धरिजमाणेणं
 सेयवरचामराहि उद्धुव्वमाणाहि हयगयरहमहया भडचडगर-
 कलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे मम पायवदए
 हव्वमागच्छइ, तएण दहुरे सेणियस्स रत्तो एगेणं आसकिसो-
 रएणं वामपाएणं अवकंते समाणे अतनिग्घाइए कएयावि होत्था,
 तएणं से दहुरे अत्थामे अवले अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे
 आधारणिजमित्तिकट्टु एगंतमवक्कमइ अवक्कमित्ता करयल-
 परिग्गहिय मत्थए अजलि कट्टु एव वयासी—नमोऽत्थु णं
 मम धम्मायरियस्स जाव सपाविउकामस्स पुठ्ठि पिय णं मए
 समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए थूलए पाणाइ ५ पच्च-
 क्खाए, जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए, त इयाणि पि तस्सेव
 अतिए सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि जाव सव्व परिग्गहं पच्च-
 क्खामि जावजीवं, सव्वं असणं ४ पच्चक्खामि जावजीव
 जपि य णं इम सरीर इट्ठ कत्त जाव मा फुसत्तु एयपि णं चरि-
 मेहि ऊसासेहि वोसिरामि त्तिकट्टु, वोसिरइ तएणं दहुरे कालमासे
 काल किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे दहुरवडिसए विमाणे उववा-
 यसभाए दहुरे देवत्ताए उववन्ने, एव खलु गोयमा । दहुरेणं सा
 दिव्वा देविट्ठी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया । दहुरस्स ण भते ।
 देवस्स केवइयकाल ठिई पणत्ता ? गोयमा । चत्तारि पलि
 ओवमाइ ठिई पणत्ता, से णं भते । दहुरे देवे ता-

गाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएण चयं चइत्ता कहिं
गच्छिहिइ कहि उव्वज्जिहिइ गोयमा । महाविदेहेवासे
सिज्झिहिइ वुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वहिइ सव्वदुक्खाणं
अंतं करोहिइ य । एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेणं
तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ॥ सू०८ ॥

॥ तेरसम नायज्झयण समत्तं ॥ १३ ॥

टीका—भगवान् महावीर. स्वामी कथयति—‘ तेण कालेण ’ इत्यादि ।
तस्मिन् काले तस्मिन् समये=यदा म ददुर्ः पष्ठभक्त तपः कर्मणाऽऽत्मान भाव-
यन् विहरतिस्म, तस्मिन् काले तस्मिन् समये हे गौतम ! अहगुणशिलके चैत्ये=
गुणशिल्पनामकोद्याने समवसृतः=प्राप्त. । परिउद्=राजट्टहनगरनिवासिना जनाना
समूहः, निर्गता=मा द्रष्टु वन्दितु नगराब्दहिर्निःसृता । ततः खलु नन्दाया
पुष्करिण्या बहुजनं स्नानं कुर्वन् जलं पिबन् पनीयं च सपहन् अन्योन्यमेवमवा
दीत्—भो देवानुप्रियाः ! श्रमणो भगवान् महावीर स्वामी इहैव गुणशिलके चैत्ये
समवसृत, तत्=तस्माद् गच्छाम खलु हे देवानुप्रियाः ! श्रमण भगवन्त महा-
वीरस्वामिन वन्दामहे नमस्याम वन्दित्वा नत्वा यावन्—पर्युपास्महे=सेवां कुर्म,
अस्माकमेतद् इहभवे परभवे च हिताय यावत्—सुखाय, क्षेमाय, निःश्रेयसे, ‘अणु-

‘ तेण काले ण तेण समएण ’ इत्यादि ।

टीकाय—(तेण काले ण तेण समएण) उस काल और उस समयमें
(अह गोयमा ! गुणसिलए चेइए समोसठे परिसा निगगया, तएण नदाए
पुक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य ३ अन्नमन्न एव वयासी—देवाणु-
प्पिया ! समणे ३ इहेव गुणसिलए चेइए समोसठे, त गच्छामो ण
देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामो जाव पज्जुवासामो, एय
मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ) हे

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि—

टीकाय—(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये (अह गोयमा !
गुणसिलए चेइए समोसठे परिसा निगगया, तएण नदाए पुक्खरिणीए बहुजणो
ण्हायमाणो य ३ अन्नमन्न एव वयासी—देवाणुप्पिया ! समणे ३ इहेव गुणसिलए
चेइए समोसठे, त गच्छामो ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामो जाव
पज्जुवासामो, एय मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ)

ગામિયતાય ' અનુગામિકતાયૈ પરમવેડનુગમનાયં મરિયતિ, ઇતિ પરસ્પરમત્રવત્ ।

તતઃ સ્વલુ તસ્ય દર્દુરસ્ય વહુજનસ્યાન્તિકાદ્ એતમર્થં શ્રુત્વા નિશમ્ય અય-
મેતદ્વૂપ આધ્યાત્મિકો વિચારઃ સમુદપચત-એવ સ્વલુ શ્રમણો મગવાન્ મહાવીર.

ગૌતમે ! મેં મેં વિહાર કરતા હુઆ ગુણશિલક નામ કે ઉચ્ચાન આયા ।
રાજગૃહ નગર નિવાસી મનુષ્યોં કા સમૂહ મેરી વદના કરને કે લિયે
તથા મૈરે દર્શન કે લિયે અપને ૨ સ્થાન સે ઓઘે-ઉસ સમય નદા
પુષ્કરિણી મેં અનેક મનુષ્ય સ્નાન કરતે હુઅ જલ પીતે હુઅ ઓર પાની
ભરતે હુઅ પરસ્પર મેં હસ પ્રકાર સે વાત-ચીત કર રહે થે-મો દેવાનુ
પ્રિયો ! શ્રમણ મગવાન્ મહાવીર યહી પર ગુણ શિલક ચૈત્ય મેં પધારે
હુઅ હૈં-હસલિયે હે દેવાનુપ્રિયો ! ચલો-આઓ ચલેં શ્રમણ મગવાન્
મહાવીર કો વદના કરે નમસ્કાર કરે । વદનો નમસ્કાર કર ફિર ઉન
કી પર્યુપાસના-સેવા કરેં । યહી વાત હસ મવ મેં, પરમવ મેં હમારે
લિયે હિતકારક હોગી, યાવત્ સુચવિધાયક હોગી, ક્ષેમકારક, નિશ્રેય-
સકારક એવ અન્ય મવ મેં સાચ જાને વાલી હોગી । (તણ તસ્સ દર્દુરસસ
વહુજણસ્સ અતિણ એયમદ્ધ સોચ્ચા, નિસમ્મ અયમેયોસ્સવે અજ્ઞત્થિણ ૫
સમુપ્પજિજ્ઞા) તો હસ પ્રકાર કી વાત ચીત જવ ઉસ દર્દુર ને ઉન
અનેક મનુષ્યોં કે સુખ સે સુની-તો સુનકર ઓર ઉસે હૃદય મેં ધારણ
કર ઉસકે મન મેં હસ પ્રકાર કા વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ-(એવ સ્વલુ સમણે

હે ગૌતમે ! ગુણશિલક નામના ઉચ્ચાનમા હુ વિહાર કરતો કરતો આવ્યો
રાજગૃહ નગરના નાગરિકોના સમૂહો મને વદન કરવા તેમજ દર્શન કરવા
માટે પોતપોતાને ઘેરથી મારી પાસે આવ્યા તે સમયે નદા વાવમા ઘણા
માણસો સ્નાન કરતા, પાણી પીતા અને પાણી ભરતા આ પ્રમાણે વાતો કરવા
લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિયો ! અહીં ગુણશિલક ચૈત્યમા જ ભગવાન મહાવીર સ્વામી
પધારેલા છે, એવલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! ચાલો આપણે શ્રમણ ભગવાન
મહાવીરને વદન તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમની પર્યુપાસના-સેવા-કરીએ આ
સ્વ તેમજ પરસ્પરમા એ વાત જ અમારા માટે શ્રેયસ્પ થશે યાવત સુખ
વિધાયક થશે ખરેખર એ વાત જ ક્ષેમકારક નિશ્રેયસકર અને ખીજા ભવમા
પણ સાથે રહેશે (તણ તસ્સ દર્દુરસસ વહુજણસ્સ અતિણ એયમદ્ધ સોચ્ચા,
નિસમ્મ, અયમેયોસ્સવે અજ્ઞત્થિણ ૫ સમુપ્પજિજ્ઞા) તે માણસોની એ વાતો
તેડકાએ પણ સાંભળી અને તેને ધારણ કરી લીધી ત્યારપછી તેના મનમા આ
જાતનો વિચાર સ્ફુર્યો કે (એવ સ્વલુ સમણે મગવ મહાવીરે રહેવ ગુણશિલક ચૈત્ય
પરોસદે, ત ગચ્છામિ ણ સમણે ૩ વદામિ, જાવ પજ્જુવાસામિ

स्वामी इहैव गुणशिलके चैत्ये समवसृतोऽस्ति । तत्=तस्माद् अहमपि गच्छामि
खलु श्रमण भगवन्त महावीर वन्दे नमस्यामि एव सपेक्षते=विचारयति, संप्रेक्ष्य
नन्दायाः पुष्करिणीत शनै शनैरुत्तरति=गहिर्नि' सरती, उत्तीर्य यत्रैव राजमार्ग-
स्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तथा (१) 'उक्किट्ठाए' उत्कृष्टया, अत्रैव बोध्यम्-
(२) "तुरियाए (३) चवलाए, (४) चडाए, (५) सिग्घाए, (६) उद्धुयाए, (७)
जयणाए, (८) छेयाए, " इति । तत्र-उत्कृष्टया-ददुराणा गतौ य उत्कर्षस्तेन-
युक्तागतिरुत्कृष्टा तयेत्यर्थः । त्वरितया-मनस औत्सुक्येन युक्ता त्वरिता तथा,

भगव महावीरे इहेव गुणसिलए चेडए समोसढे, त गच्छामि णं संम
ण ३ वंदामि जाव पज्जुवांसामि एव सपेहेइ, सपेहिच्चा णदाओ
पुक्खरणीओ सणियं २ उत्तरइ) श्रमण भगवान् महावीर प्रभु यहा
गुण शिलक उद्यान में आये हुए है तो चलू श्रमण भगवान् महावीर को
वन्दना करूँ यावत् उनकी पर्युपासना करूँ । ऐसा उसने विचार किया-
विचार कर के फिर वह उस नन्दा पुष्करिणी से धीरे २ बाहिर निकला-
(उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताए
उक्किट्ठाए ददुर गइए वीइवयमाणे जेणेव मम अंतिए तेणेव पहारेत्थ
गमणाए) बाहिर निकल कर फिर वह जहा राजमार्ग था, उस ओर
चल दिया । वहा पहुँच कर फिर वह उस उत्कृष्ट ददुर गति से चलता
हुआ मेरी ओर बढ़ा । यहा " तुरियाए, चवलाए, चडाए, सिग्घाए,
उद्धुयाए, जयणाए, छेयाए " इन पदों का भी संग्रह कर लेना चाहिये
उस ददुर की गति को उत्कृष्ट इसलिये कहा है कि ददुरो की गति में

सपेहिच्चा णदाओ पुक्खरणीओ सणियं २ उत्तरइ) श्रमण भगवान् महावीर प्रभु
अहाँ गुणशिलक उद्यानमा पधारेला छे त्थारे हु पणु श्रमण भगवान् महा
वीरने वन्दन यावत् तेमनी पर्युपासना-सेवा कइ आ जतने। तेले विचार
कथो, विचार कथो पछी ते नन्दा वावमायी धीमे धीमे ञ्छार नीकल्ये।
(उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए ददुर
गइए वीइवयमाणे जेणेव मम अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) ञ्छार नीकलीने
ते जे तरइ राजमार्ग हुतो ते तरइ आलवा भाड्ये। त्थारपछी ते पोतानी
उत्कृष्ट (शीघ्र) देडकानी गतिथी आलतो आलतो भारी तरइ आव्ये। अहाँ
(तुरियाए, चवलाए, चडाए, सिग्घाए, उद्धुयाए, जयणाए छेयाए) आ पढोने
पणु संग्रह कव्ये। जेधअ ते देडकानी गति उत्कृष्ट अटला भाटे वल्लुववाभा
आवी छे के देडकाओनी गतिमा जे उत्कर्ष होय छे ते गति तेनार्थो युक्ता

શામિયક્ષાપ ' અનુગામિકતાયૈ પરમભવેન્નુગમનાર્થ મશિયતિ, इति परस्परमववत् ।

તતઃ સ્વલુ તસ્ય દર્દુરસ્ય વહુજનસ્યાન્તિકાદ્ એવમર્થ શ્રુત્વા નિશ્ચય અય-
મેતદ્દૂષ આધ્યાત્મિકો વિચારઃ સમુદપદ્યત-એ સ્વલુ શ્રમણો ભગવાન્ મહાવીર

ગૌતમે ! મેં મેં વિહાર કરતા હુઆ ગુણશિલક નામ કે ઉચ્ચાન આયા ।
રાજગૃહ નગર નિવાસી મનુષ્યો કા સમૂહ મેરી વદના કરને કે લિયે
તથા મેરે દર્શન કે લિયે અપને ૨ સ્થાન સે આયે-ઉસ સમય નદા
પુષ્કરિણી મેં અનેક મનુષ્ય સ્નાન કરતે હુઅ જલ પીતે હુઅ ઓર પાની
ભરતે હુઅ પરસ્પર મેં હસ પ્રકાર સે વાત-ચીત કર રહે થે-ઓ દેવાનુ
પ્રિયો ! શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર યહી પર ગુણ શિલક ચૈત્ય મેં પધારે
હુઅ હૈં-હસલિયે હે દેવાનુપ્રિયો ! ચલો-આઓ ચલેં શ્રમણ ભગવાન
મહાવીર કો વદના કરે નમસ્કાર કરે । વદનો નમસ્કાર કર ફિર ઉન
કી પર્યુપાસના-સેવા કરે । યહી વાન હસ ભવ મેં, પરભવ મેં હમારે
લિયે હિતકારક હોગી, યાવત્ સુખવિધાયક હોગી, ક્ષેમકારક, નિશ્રેય-
સકારક એવ અન્યભવ મેં સાવ જાને વાલી હોગી । (તણ તસ્સ દર્દુરસ્સ
વહુજણસ્સ અતિએ એયમદ્દુ સોચ્ચા, નિસમ્મ અયમેયારુવે અજ્ઞતિએ ૫
સમુપ્પજિજ્ઞાયા) તો હસ પ્રકાર કી વાત ચીત જવ ઉસ દર્દુર ને ઉન
અનેક મનુષ્યોં કે સુખ સે સુની-તો સુનકર ઓર ઉસે હૃદય મેં ધારણ
કર ઉસકે મન મેં હસ પ્રકારે કા વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ-(એવ સ્વલુ સમણે

હે-ગૌતમ ! ગુણશિલક નામના ઉચ્ચાનમા હુ વિહાર કરતો કરતો આવ્યો
રાજગૃહ નગરના નાગરિકોના સમૂહો મને વદન કરવા તેમજ દર્શન કરવા
માટે પોતપોતાને ઘેરથી મારી પાસે આવ્યા તે સમયે નદા વાવમા ઘણા
માણસો સ્નાન કરતા, પાણી પીતા અને પાણી ભરતા આ પ્રમાણે વાતો કરવા
લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિયો ! અહીં ગુણશિલક ચૈત્યમા જ ભગવાન મહાવીર સ્વામી
પધારેલા છે, એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! ચાલો આપણે શ્રમણ ભગવાન
મહાવીરને વદન તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમની પર્યુપાસના-સેવા-કરીએ આ
ભવ તેમજ પરભવમા એ વાત જ અમારા માટે શ્રેયસ્પ થશે યાવત સુખ
વિધાયક થશે ખરેખર એ વાત જ ક્ષેમકારક નિશ્રેયસકર અને ખીજા ભવમા
પણ સાથે રહેશે (તણ તસ્સ દર્દુરસ્સ વહુજણસ્સ અતિએ એયમદ્દુ સોચ્ચા,
નિસમ્મ, અયમેયારુવે અજ્ઞતિએ ૫ સમુપ્પજિજ્ઞાયા) તે માણસોની એ વાતો
દેહકાએ પણ સાંભળી અને તેને ધારણ કરી લીધી ત્યારપછી તેના મનમા આ
જાતનો વિચાર સ્ફુર્યો કે (એવ સ્વલુ સમણે ભગવ મહાવીરે રહેવ ગુણશિલક ચૈત્ય
સમોસદે, ત ગચ્છામિ ણ સમણે ૩ વદામિ, જાવ પગ્ગુવાસામિ

हस्तिस्कन्धवरगतः=गजोपरिसमारुहः, सकोरुण्टमाल्यदाम्ना-कोरुण्टकुसुममालया,
छत्रेण ध्रियमाणेन=स्वभृत्यहस्तधृतेन, श्वेतरचामरैरुद्धूयमानैः=स्वभृत्यैर्वीजितैः,
हयगजरथमहाभटचटकरकलितया=अथगजरथमहाभटानां चटकर समूहस्तेन कलि-
तया-युक्तया, चतुरङ्गिण्या सेनया सार्धं सपरिवृतो मम पादवदको हव्य-शीघ्रम्,
आगच्छति, ततः खलु स ददुरिः श्रेणिकस्य राज्ञ एकेन 'आसन्निसोरण'
अश्वकिसोरकेन वामपादेन 'अकृते समाणे' आक्रान्तः=अभिभूतः देहोपरिपाद-
निपाताऽऽघात प्राप्तः सन् 'अतनिग्घाडए' अन्त्रनिर्घातितः=अन्त्रस्य 'अत'

करने के लिये तैयार हुआ स्नान से निवृत्त कर और कौतुक, मंगल
एव प्रायश्चित्त विधि समाप्त कर गज पर चढ़े हुए जल्दी २ आ रहे थे।
उस समय वे समस्त अलकारों से विभूषित थे। उन के ऊपर कोरुट
पुष्पों की माला से शोभित छत्र छत्रधारी ने लगा रखा था। चमर
ढोरने वाले भृत्य जन उन पर शुभ्र उत्तम चमर ढोल रहे थे, हय, गज,
रथ, एव महाभटों के समूह से युक्त चतुरङ्गिणी सेना से वे घिरे हुए
थे। (तएण से ददुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आसन्निसोरण वाम
पाएण अकृते समाणे अतनिग्घाडएकए यावि होत्था तएण से ददुरे
अत्थामे अबले अकीरिण अपुरिसकारपरक्कमे अधोरणिज्ज मित्ति
कट्ठु एगतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहिय मत्थए अजलिं
कट्ठु एव वयोसि) फुदक २ अपनी चाल से चलता-हुआ वह मेढक
श्रेणिक राजा के किसी एक घोड़े के बच्चे के वाम पैर से आक्रान्त हो
गया-अर्थात् उस का वाम चरण उस के ऊपर पड़ गया। सो उसी

श्रेणिक राजा भने वदन करवा भाटे तैयार थया तेन्ना स्नानथी परवाराने
कौतुक, मंगल अने प्रायश्चित्त विधि पूरी करी अने हाथी उपर नवार थयने
अडपथी आवी रह्या हुता ते वणते तेन्ना णधी नतना अलङ्कारेथी विभूषित
हुता तेभना उपर कोरुट पुष्पोन्नी भाणाथी शोभतु छत्र छत्रधारीअन्ने ताण्णु
हुतु चमर ढोलनार नोकरे तेभना उपर शुभ्र उत्तम चमरे ढोली ग्हा हुता
हय (घोडा) गज, रथ अने महाभटोना स हुथी युत्ता चतुरङ्गिणी सेनाथी
तेन्ना वीटणायेला हुता (तएण से ददुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आसन्निसो
रण वामपाएण अकृते समाणे अतनिग्घाडएकए यावि होत्था तएण से
ददुरे अत्थामे अबले अकीरिण अपुरिसकारपरक्कमे आधारणिज्जमित्ति कट्ठु
एगतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहिय मत्थए अजलिं कट्ठु एव वयोसी)
इइडा भारतो ते देउडे श्रेणिक राजाना डोई अेक घोडाना टहना डाना पगथी
आक्रान्त थय गये अेटले डे तेनो डानो पग तेना उपर पडी गये तेथी

ચપલયા-શરીરચાપલ્યેન યુક્તયા, ચણ્ડયા-તીવ્રયા, અતઃપ્ર ગીધ્રયા, ઉદ્યુતયા-
અશેષ શરીરાવયવકમ્પયત્યા, જયિન્યા અન્યદર્દુરગતિજેત્ર્યા, છેકયા-અપાયપરિ-
હારે નિપુણયા, દર્દુરગત્યા-મળ્હુરગત્યા 'વીઢ્યમાણે' વ્યતિવ્રજન્ ૨-મહા
વેગેન ગચ્છન્ ૨, યગૈવ મમાન્તિક તગૈવ પ્રાધારયદ્ ગમનાય=ગન્તુ પ્રવૃત્ત ।
અસ્મિન્નેવ સમયે ઉદ્યાનરક્ષકમુગ્ધાન્મમાગમન શ્રુત્યા શ્રેણિકો રાજા ભભસારઃ =
ભભસારાપરનામક, સ્નાતઃ કૃતકાતુરમદ્ગલપાયથિત, સર્વાલંકારવિભૂષિત,

જો ઉત્કર્ષ હોતા હૈં વહ ઉસ ઉત્કર્ષ સે યુક્ત થી । ઉસ મેંઢક કે મન મેં
ઘઢી ભારી ઉત્સુકતા થી-સો ઉસ ઉત્સુકતા સે વહ ગતિ ભરી હુઈ
થી-હસ કારણ વહ ઉસ કી ગતિ ત્વરિત થી । શરીર કી ચપલતા સે
યુક્ત હોને કે કારણ, તીવ્ર હોને કે કારણ, શીઘ્રતા સે યુક્ત હોને કે
કારણ, સમસ્ત શારીરિક અવયવોં કે રૂપન સે યુક્ત હોને કે કારણ
અન્ય સાધારણ દર્દુરોં કી ગતિ કી અપેક્ષા વિશિષ્ટ હોને કે કારણ,
ઔર અપાયોં કો બચા ૨ કર ચલને કે કારણ વહ ગતિ ક્રમશઃ ચપલ
ચણ્ડ, શોઘ્ર ઉદ્યુત, જયની, ઔર છેક इन विशेषणों वाली थी । इम
च ण सेणिए राया भभसारे ण्हाए कयकौउयमगलपायच्छित्ते सव्वा-
लंकारविभूसिए, हत्थि खधवरगए सकोरटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्ज
माणेण सेयवरचामराहिं उद्धुवमाणहिं हयगयरहमहया भडचड-
गरकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धिं सपडिवुडे मम पायवदए
हव्वमागच्छइ) इसी समय उद्यान रक्षक के सुग्व से मेरा आगमन
सुनकर " भभसार " इस अपर नाम वाले श्रेणिक राजा मेरी बदना

હતી તે દેડકાના મનમા ભારે ઉત્સુકતા હતી તેની ગતિમા ઉત્સુકતાને લીધેજ
ત્વરા આવી ગઈ હતી શરીરની ચપળતાથી યુક્ત હોવા બદલ, તીવ્ર હોવા
બદલ, શીઘ્રતા યુક્ત હોવા બદલ, શરીરના બધા અવયવોના કપનથી યુક્ત
હોવા બદલ, ખીન્ન સાધારણ દેડકાઓ ગતિ કરતા વિગિષ્ટતા યુક્ત હોવા બદલ
અને અપાયો (આફતો) થી સાવધ થઈને ચાલવા બદલ તે ગતિ ક્રમશઃ
ચપળ, ચડ, શીઘ્ર, ઉદ્યુત, જયની અને છેડ આ વિશેષણોવાળી હતી
(ઇમ ચણ સેણિયરાયા ભભસારે ણ્હાए कयकौउयमगलपायच्छित्ते सव्वा-
लंकारविभूसिए, हत्थिखधवरगए सकोरटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवर
चामराहिं उद्धुवमाणहिं हयगयरहमहया भडचडगरकलियाए चाउरगिणीए
सेणाए सद्धिं संपडिवुडे मम पायवदए हव्वमागच्छइ) તે વખતે ઉદ્યાન રક્ષકના
મુખથી મારા આગમનની વાત સાંભળીને ' ભભસાર ' એ ખીન્ન નામવાળા

हस्तिस्कन्धवरगतः=गजोपरिसमासुद्धः, सकोरुणमाल्यदाम्ना-कोरुणकुसुममालया,
छत्रेण ध्रियमाणेन=स्वभृत्यहस्तधृतेन, श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैः=स्वभृत्यैर्वीजितैः,
हयगजरथमहाभटचटकरकलितया=अथगजरथमहाभटानां चटकर समूहस्तेन कलि-
तया-युक्तया, चतुर्गङ्गिण्या सेनया सार्धं सपरिवृतो मम पादवन्दको हव्य-शीघ्रम्,
आगच्छति, ततः खलु स ददुरः श्रेणिकस्य राज्ञ एकेन 'आसन्निसोरण'
अश्वकिशोरकेन वामपादेन 'अकृते समाणे' आक्रान्तः=अभिभूतः, देहोपरिपाद-
निपाताऽऽघात प्राप्तः सन् 'अतनिग्घाडए' अन्त्रनिर्घातितः=अन्त्रस्य 'अत'

करने के लिये तैयार हुआ स्नान से निवृत्त कर और कौतुक, मगल
एव प्रायश्चित्त विधि समाप्त कर गज पर चढ़े हुए जट्टी २ आ रहे थे।
उस समय वे समस्त अलंकारों से विभूषित थे। उन के ऊपर कोरुट
पुष्पों की माला से शोभित छत्र छत्रधारी ने लगा रखा था। चमर
ढोरने वाले भृत्य जन उन पर शुभ्र उत्तम चमर ढोल रहे थे, हय, गज,
रथ, एव महाभटों के समूह से युक्त चतुरगिणी सेना से वे घिरे हुए
थे। (तएण से ददुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आस किमोरएण वाम
पाएण अकृते समाणे अत निग्घाडएकए यावि होत्था तएण से ददुरे
अत्थामे अबले अकीरिए अपुरिसकारपरक्कमे अधोरणिज्ज मित्ति
कट्टु एगतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहिय मत्थए अजलिं
कट्टु एव वयोसि) फुदक २ अपनी चाल से चलता-हुआ वह मेढक
श्रेणिक राजा के किसी एक घोड़े के पंखे के वाम पैर से आक्रान्त हो
गया-अर्थात् उस का वाम चरण उस के ऊपर पड़ गया। सो उसी

श्रेणिक राजा भूने वदन करवा भाटे तैयार थया तेओ स्नानथी पञ्चाराने
कौतुक, मगल अने प्रायश्चित्त विधि पूरी करी अने हाथी उपर सवार थअने
अडपथी आवी रह्या हुता ते वण्णते तेओ णधी जतना अवकाशेथी विभूषित
हुता तेभना उपर कोरुट पुष्पोनी भाणाथी शोभतु छत्र छत्रधारीओओ ताण्णु
हुतु अमर ढाणनार नोकरे तेभना उपर शुभ्र उत्तम अमरे ढाणी रह्या हुता
हुय (घोडा) गज, रथ अने मडालटोना स गहुथी युत्त अतुरगिणी सेनाथी
तेओ वीटणायेवा हुता (तएण से ददुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आसकिमो
रण वामपाएण अकृते समाणे अत निग्घाडएकए यावि होत्था तएण से
ददुरे अत्थामे अबले अकीरिए अपुरिसकारपरक्कमे आधारणिज्जमित्ति कट्टु
एगतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहिय मत्थए अजलिं कट्टु एव वयोसी)
इहका भागते ते देउके श्रेणिक राजाना केरु ओउ घोडाना टट्टना डाना पगथी
आक्रान्त थअ गये ओटले के तेना डाने पग तेना उपर पडी गये तेथी

ચપલયા-શરીરચાપલ્યેન યુક્તયા, ચણ્ડયા-તીવ્રયા, અતઃપ્ર શીઘ્રયા, ઉદ્ધુતયા-
અશેષ શરીરાવયવકમ્પવત્પા, જયિન્યા અન્યદર્દુરગતિજેત્ર્યા, છેકયા-અપાયપરિ-
હારે નિપુણયા, દર્દુરગત્યા-મળ્હરગત્યા 'ત્રીઃવયમાણે' વ્યતિવ્રજન્ ૨-મહા
વેગેન ગચ્છન્ ૨, યત્રૈવ સમાન્તિક તત્રૈવ પ્રાધારયદ્ ગમનાય=ગન્તુ મશ્વત્ત ।
અસ્મિન્નેવ સમયે ઉગ્રાનરક્ષકપુત્રાન્મમાગમન શ્રુત્યા શ્રેણિકો રાજા મમસારઃ =
મમસારાપરનામક, સ્નાતઃ કૃતકૌતુકમદ્ગલપાયશ્ચિતઃ સર્વાલંકારવિભૂષિતઃ,

જો ઉત્કર્ષ હોતા હૈ વહ ઉસ ઉત્કર્ષ સે યુક્ત થી । ઉસ મેંઢક કે મન મેં
ઘઢી ભારી ઉત્સુકતા થી-સો ઉસ ઉત્સુકતા સે વહ ગતિ ભરી હુઈ
થી-હસ કારણ વહ ઉસ કી ગતિ ત્વરિત થી । શરીર કી ચપલતા સે
યુક્ત હોને કે કારણ, તીવ્ર હોને કે કારણ, શીઘ્રતા સે યુક્ત હોને કે
કારણ, સમસ્ત શારીરિક અવયવોં કે કમ્પન સે યુક્ત હોને કે કારણ
અન્ય સાધારણ દર્દુરોં કી ગતિ કી અપેક્ષા વિશિષ્ટ હોને કે કારણ,
ઔર અપાયોં કો વચા ૨ કર ચલને કે કારણ વહ ગતિ ક્રમશઃ ચપલ
ચણ્ડ, શીઘ્ર ઉદ્ધુત, જયની, ઔર છેક इन विशेषणों वाली थी । इम
च ण सेणिए राया ममसारे ण्हाए कयकोउयमगलपायच्छित्ते सब्वा-
लकारविभूसिए, हत्थि खधवरगए सकोरटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्ज
माणेण सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणहिं हयगयरहमहया भडचड-
गरकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धिं सपडिवुडे मम पायवदए
हव्वमागच्छइ) इसी समय उद्यान रक्षक के सुग्व से मेरा आगमन
सुनकर " ममसार " इस अपर नाम वाले श्रेणिक राजा मेरी वदना

હતી તે દેડકાના મનમાં ભારે ઉત્સુકતા હતી તેની ગતિમાં ઉત્સુકતાને લીધેજ
ત્વરા આવી ગઈ હતી શરીરની ચપળતાથી યુક્ત હોવા બદલ, તીવ્ર હોવા
બદલ, શીઘ્રતા યુક્ત હોવા બદલ, શરીરના બધા અવયવોના કમ્પનથી યુક્ત
હોવા બદલ, ખીજા સાધારણ દેડકાઓ ગતિ કરતા નિશિષ્ટતા યુક્ત હોવા બદલ
અને અપાયો (આક્રતો) થી સાવધ થઈને ચાલવા બદલ તે ગતિ ક્રમશઃ
ચપળ, ચડ, શીઘ્ર, ઉદ્ધુત, જયની અને છેડ આ વિશેષણોવાળી હતી
(ઇમ ચણ સેણિયરાયા મમસારે ણ્હાએ કયકોઉયમગલપાયચ્છિત્તે સવ્વા
લકારવિભૂસિય, હત્થિયધવરગાએ સકોરટમલ્લદામેણ છત્તેણ ધરિજ્જમાણેણ સેયવર
ચામરાહિં ઉદ્ધુવ્વમાણાહિ હયગયરહમહયા મહચડગરકાલિયાએ ચાઉરગિનીએ
સેણાએ સદ્ધિં સપડિવુડે મમ પાયવદએ હવ્વમાગચ્છઈ) તે વખતે ઉદ્યાન રક્ષકના
સુખથી માશ આગમનની વાત સાંભળીને ' મમસાર ' એ ખીજા નામવાળા

हस्तिस्कन्धवरगतः=गजोपरित्तमारुहः, सकोरुण्टमाल्यदाम्ना-कोरुण्टकुसुममालया,
छत्रेण प्रियमाणेन=स्वभृत्यहस्तधृतेन, श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैः=स्वभृत्यैर्वीजितैः,
हयगजरथमहाभटचटकरकलितया=अश्वगजरथमहाभटानां चटकर समूहस्तेन कलि-
तया-युक्तया, चतुर्गङ्गिण्या सेनया सार्धं सपरिवृतो मम पादवदको हव्य-शीघ्रम्,
आगच्छति, ततः खलु स ददुरः श्रेणिकस्य राज्ञ एकेन 'आसन्निसोरण'
अश्वकिशोरकेन वामपादेन 'अकृते समाणे' आक्रान्तः=अभिभूतः, देहोपरिपाद-
निपाताऽऽघात प्राप्तः सन् 'अतनिग्गाडण' अन्त्रनिर्घातितः=अन्त्रस्य 'आँत'

करने के लिये तैयार हुआ स्नान से निवृत्त कर और कौतुक, मगल
एव प्रायश्चित्त विधि समाप्त कर गज पर चढ़े हुए जल्दी २ आ रहे थे।
उस समय वे समस्त अलकारों से विभूषित थे। उन के ऊपर कोरट
पुष्पों की माला से शोभित छत्र छत्रधारी ने लगा रखा था। चमर
ढोरने वाले भृत्य जन उन पर शुभ्र उत्तम चमर ढोल रहे थे, हय, गज,
रथ, एव महाभटों के समूह से युक्त चतुरगिणी सेना से वे घिरे हुए
थे। (तएण से ददुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आस किमोरएण वाम
पाएण अकृते समाणे अतनिग्गाडणकए यावि होत्था तएण से ददुरे
अत्थामे अबले अकीरिण अपुरिसकारपरक्कमे अधोरणिज्ज मित्ति
कट्टहु एगतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहिय मत्थए अजलि
कट्टहु एव वयोसि) फुदक २ अपनी चाल से चलता-हुआ वह मेढक
श्रेणिक राजा के किसी एक घोड़े के बच्चे के वाम पैर से आक्रान्त हो
गया-अर्थात् उस का वाम चरण उस के ऊपर पड़ गया। सो उसी

श्रेणिक राजा अपने वदन उरवा भाटे तैयार थया तेओ स्नानथी पन्वारने
कौतुक, मगल अने प्रायश्चित्त विधि पूरी करी अने हाथी उपर सवार थअने
अडपथी आवी रह्या हुता ते वअने तेओ णधी जतना अलङारेथी विभूषित
हुता तेमना उपर कोरट पुष्पोनी भाणाथी शोभतु छत्र छत्रधारीओओे ताबेलु
हुतु अमर ढोणनार नोकरे तेमना उपर शुभ्र उत्तम अमरे ढोणी रह्या हुता
हुय (घोडा) गज, रथ अने महाभटोना स 'हुथी युक्त अतुरगिणी सेनाथी
तेओ वीटणायेला हुता (तएण से ददुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आसकिमो
रण वामपाएण अकृते समाणे अतनिग्गाडणकए याविहोत्था तएण से
ददुरे अत्थामे अबले अकीरिण अपुरिसकारपरक्कमे आधारणिज्जमित्ति कट्टहु
एगतमवक्कमइ, अवक्कमित्ता करयलपरिग्गहिय मत्थए अजलि कट्टहु एव वयोसी)
कूडका भागते ते देडके श्रेणिक राजाना डोअ ओक घोडाना टट्टना डाणा पगथी
आडगत थअ गये ओटले के तेनो डाओ पग तेना उपर पडी गये तेथी

चपलया-शरीरचापल्येन युक्तया, चण्डया-तीव्रया, अतएव शीघ्रया, उद्धुतया-
अशेष शरीरावयवकम्पयत्या, जयिन्या अन्यददुर्गतिजेन्या, छेकया-अपायपरि-
हारे निपुणया, ददुर्गत्या-मण्डकगत्या 'वीडयमाणे' व्यतिव्रजन् २-महा-
वेगेन गच्छन् २, यज्ञेय ममान्तिक तज्ञेय आधारयद् गमनाय=गन्तु प्रवृत्त ।
अस्मिन्नेव समये उपानरक्षकमुखान्ममागमन श्रुत्या श्रेणिको राजा भभसारः =
भभसारापरनामक, स्नातः कृतकोतुम्भल्लपायश्चित्त सर्वालंकारविभूषितः,

जो उत्कर्ष होता है वह उस उत्कर्ष से युक्त थी । उस मेंढक के मन में
बड़ी भारी उत्सुकता थी-सो उस उत्सुकता से वह गति भरी हुई
थी-इस कारण वह उस की गति त्वरित थी । शरीर की चपलता से
युक्त होने के कारण, तीव्र होने के कारण, शीघ्रता से युक्त होने के
कारण, समस्त शारीरिक अवयवों के रूपन से युक्त होने के कारण
अन्य साधारण ददुर्गों की गति की अपेक्षा विशिष्ट होने के कारण,
और अपायों को बचा २ कर चलने के कारण वह गति क्रमशः चपल
चण्ड, शीघ्र उद्धुत, जयनी, और छेक इन विशेषणों वाली थी । इस
चण सेणिए राधा भभसारे पहाए कयकोउयमगलपायच्छित्ते सब्बा-
लकारविभूसिए, हत्थि खधवरगए सकोरटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्ज
माणेण सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणहिं हयगयरहमहया भडचड-
गरकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धिं सपडिबुडे मम पायवदए
हव्वमागच्छइ) इसी समय उद्यान रक्षक के मुख से मेरा आगमन
सुनकर " भभसार " इस अपर नाम वाले श्रेणिक राजा मेरी बदना

हती ते हेडकाना भनभा लारे उत्सुकता हती तेनी गतिभा उत्सुकताने लीधेज्
त्तरा आवी गर्ध हती शरीरनी चपलताथी युक्त होवा भदल, तीव्र होवा
भदल, शीघ्रता युक्त होवा भदल, शरीरना अधा अवयवोना उपनथी युक्त
होवा भदल, भीज साधारण हेडकाओ गति करता विशिष्टता युक्त होवा भदल
अने अपायो (आक्षतो) थी सावध थधने चालवा भदल ते गति क्रमश
चपल, चड, शीघ्र, उद्धुत, जयनी अने छेक आ विशेषहोवाणी हती
(इस चण सेणिएराया भभसारे पहाए कयकोउयमगलपायच्छित्ते सब्बा
लकारविभूसिए, हत्थिखधवरगए सकोरटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवर
चामराहिं उद्धुव्वमाणहिं हयगयरहमहया भडचडगरकलियाए चाउरगिणीए
सेणाए सद्धिं संपडिबुडे मम पायवदए हव्वमागच्छइ) ते वज्जते उद्यान रक्षकना
सुणथी भारा आगमननी बात साजणीने ' भभसार ' ओ भीज नामवाणी

સ્વલુ મમ ધર્માચાર્ય શ્રમણાય ભગવતે મહાવીરાય યાવત્ સિદ્ધિગતિનામધેયસ્થાને
સમાપ્તુકામાય, પૂર્વમપિ=પૂર્વભવેડપિ ચ સ્વલુ મયા શ્રમણસ્ય ભગવતો મહાવીર
સ્યાન્તિકે સ્થૂલઃ પ્રાણાતિપાતઃ પ્રત્યાર્ણ્યાતઃ, યાવત્-સ્થૂલઃ પરિગ્રહઃ પ્રત્યાખ્યાતઃ,
યાવત્કરણાત્-સ્થૂલઃ મૃષાવાદસ્થૂલાદત્તાદાન-સ્થૂલ-મૈથુન-પ્રત્યાખ્યાન વોધ્યમ્,
તદ્દાદાનીમપિ=અસ્મિન્ ભવેડપિ તસ્યૈવાન્તિકે સર્વ પ્રાણાતિપાત પ્રત્યાખ્યામિ
યાવત્ સર્વ પરિગ્રહ પ્રત્યાર્ણ્યામિ યાવજ્જીવમ્, યદપિ ચ સ્વલુ ઇદ શરીરમિષ્ટ
કાન્ત યાવત્ મા સ્પૃશન્તુ રોગાતઙ્કા, એતદપિ શરીર સ્વલુ 'ચરિમેહિ' ચરમૈઃ=
અન્તિમૈઃ 'ઝસાસેહિ' ઝન્છવાસૈઃ=પ્રાણનિર્ગમૈ 'વોમિરામિતિકદ્દુ' વ્યુત્સૃજામિતિ

પાણાદિવાય પચ્ચક્ક્રવામિ જાવ સન્ન પરિગ્રહ પચ્ચક્ક્રવામિ જાવ જીવ
સન્ન અસણ ૪ પચ્ચક્ક્રવામિ જાવ જીવ જ પિ ય ણ ઇમ સરીર ઇદ્દ કત્ત
જાવ મા ફુસતુ એવ પિ ણ ચરિમેહિ ઝસાસેહિ વોસિરામિ ત્તિ કદ્દુ
વોસિરહ) યાવત્ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુએ અર્હત ભગ-
વતો કો મેરા નમસ્કાર હો, યાવત્ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત
કરને કો કામના વાલે મેરે ધર્માચાર્ય, શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કો
મેરા નમસ્કાર હો । પૂર્વભવ મેં મી મેંને સ્થૂલ રૂપ સે પ્રાણાતિપાત કા
પરિત્યાગ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કે સમીપ કિયા થા । ઇસી તરહ
સ્થૂલ મૃષાવાદ કા સ્થૂલ અદત્તાદાન કા સ્થૂલ મૈથુન કો, એવ સ્થૂલ
પરિગ્રહ કો મી પ્રત્યાખ્યાન કિયા થા । એ સ્થૂલ મૃષાવાદ આદિ યાવત્
શબ્દ સે યહાં ગૃહીત હુએ હૈં નો અબ ઇસ ભવ મેં મી ઝન્હી કે સમીપ
સર્વ પ્રાણાતિપાત યાવત્ સર્વ પરિગ્રહ કા યાવજ્જીવ પ્રત્યાખ્યાન કરતા
હૈં । તથા અશન, પાન, સ્વાદ્ય એવ સ્વાદ્ય રૂપ સે ચતુર્વિધ આહાર કા મી
જીવન પર્યન્ત પરિત્યાગ કરતા હૈં । તથા જો ઇષ્ટ, કાન્ત યહ મેરા શરીર

પચ્ચક્ક્રવામિ જાવજીવ જ પિ ય ણ ઇમસરીર ઇદ્દ કત્ત જાવ મા ફુસતુ એવપિ ણ
ચરિમેહિ વોસિરામિ ત્તિ કદ્દુ વોસિરહ) યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને પ્રાપ્ત
કરેલા અર્હત ભગવતને મેરા નમસ્કાર છે, યાવત્ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાનને
મેળવવાની ઇચ્છા કરનારા મારા ધર્માચાર્ય શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને મારા
નમસ્કાર છે પહેલાના ભવમા પણ મે સ્થૂલ રૂપથી શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની
નજીક પ્રાણાતિપાતનો પરિત્યાગ કર્યો હતો આ ગીતે જ સ્થૂળ મૃષાવાદનુ, સ્થૂલ
અદત્તાદાનનુ, સ્થૂલ મૈથુનનુ, અને સ્થૂલ પરિગ્રહનુ પણ મે પ્રત્યાખ્યાન કર્યું
હતુ સ્થૂલ મૃષાવાદ વગેરે અહીં 'યાવત્' શબ્દ વડે મગૃહીત થયા છે ત્યારે
હવે હું આ ભવમા પણ તેમની નજીક સર્વ પ્રાણાતિપાત યાવત મને પરિ-
ગ્રહનુ મૃત્યુ સુધી પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છું તેમજ જે ઈષ્ટ, કાન્ત આ મારે શરીર
છે-કે જેના માટે મારા મનમા આ જાતના વિચારો હતા કે એને કોઈ પણ

इति प्रसिद्धस्य, निर्घात - अन्त्रनिर्घातः, स सजाओऽस्येति अन्त्रनिर्घातितः -
चुटितान्घः कृतश्चाप्यभयत् ।

ततः खलु स ददुरः ' अत्वामे ' अस्थामा=हीनपराक्रमः गमनशक्तिरहित
इत्यर्थः अवल=मनोबलरहितः-खिन्न इत्यर्थः अवीर्यः-हतोत्साहः, ' अपुरिसकार-
परक्रमे ' अपुरुषकारपराक्रमः=पुरुषकारः पराक्रमश्च न विद्येते यस्य सोऽपुरुषकार
पराक्रमः । पुरुषार्थहीनइत्यर्थः । ' अपारगिज्जमिभिरुट्ठु ' अप्रारणीयमिति कृत्वा=
अप्रारणीयमिदं शरीरमिति विचार्य, एकान्तमवक्रामति=एकान्त-जनसंचाररहित
स्थान मार्गस्य प्रान्तभागं कथंचिद् गच्छति, अरुह्य करतलपरिगृहीत मस्तकेऽ-
ञ्जलिकृत्वा, एवमवादीत्-एव उक्षयमाणस्वरूपेण स्वगमनस्युक्तवान् ' नमोऽत्थुण जाव
सपत्ताण ' नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो भगवद्भ्यो यावत्-सिद्धिगतिनामवेयं स्थानं
संप्राप्तेभ्यः, " नमोऽत्थुण मम धम्मायरियस्स जाव सपाविउकामस्स ' नमोऽस्तु

समय उस की आते टूट गई । आंतों के टूटते ही वह ददुर गमन शक्ति
से रहित हो गया, मानसिक बल उस का जाता रहा-उत्साह उस का
इकदम खिन्न भिन्न हो गया, पुरुषार्थ और पराक्रम मानों उस में हैं ही
नहीं ऐसा वह हो गया । जब उसने यह देखा कि यह शरीर अब टिक
नहीं सकता तब वह बड़ी कठिनतासे जन संचाररहित एकान्त स्थान
में चला गया । वहां जाकर उसने अपने दोनों हाथों की अञ्जलि बनाकर
और उसे मस्तक पर रखकर इस प्रकार मन ही मन में कहा (नमो-
त्थुण जाव सपत्ताण नमोत्थुण मम धम्मायरियस्स जाव सपाविउ-
कामस्स पुर्विं पियण मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए सुव्वं

देउकाना आतरडा तूरी गया आतरडा तूता ज ते देउडे डालवा आलवाभा
असमर्थ थई गये। तेनु आत्ममण नउट थई गथु तेने छिंसाड मइ थई
गये। ते पुइपार्थ तेमज पराक्रम रहित थई गये। न्यारे तेने ओम लाग्यु
डे डवे ओ शरीर टकडु भुइडेल छे, त्यारे ते बहुत ज प्रयत्नथी ओक तरई न्या
भाणुसेनी अवर जवर हुती नछि त्या जतो रह्यो त्या जधने तेले पोताना
जने डायोनी अज्जणि जनावी अने तेने मस्तके भूझीने मनभा ज तेले आ
प्रभाणु कथु—' नमोत्थुण जाव सपत्ताण नमोत्थुण मम धम्मायरियस्स जाव सवा
विउकामस्स पुर्विं पियण मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अ तेण दठव पाणा
इवाय पयक्खामि जाव सव्व परिगह पयक्खामि जाव जाव,

સ્વલુ મમ ધર્માચાર્યાય શ્રમણાય ભગવતે મહાવીરાય યાવત્ સિદ્ધિગતિનામધેય સ્થાને
સપ્રાપ્તકામાય, પૂર્વમપિ=પૂર્વભવેડપિ ચ સ્વલુ મયા શ્રમણસ્ય ભગવતો મહાવીર-
સ્યાન્તિકે સ્થૂલઃ પ્રાણાતિપાતઃ પ્રત્યાખ્યાતઃ, યાવત્-સ્થૂલઃ પરિગ્રહઃ પ્રત્યાખ્યાતઃ;
યાવત્કરણાત્-સ્થૂલઃ મૃષાવાદસ્થૂલાદત્તાદાન-સ્થૂલ-મૈથુન-પ્રત્યાખ્યાન યોધ્યમ્,
તદ્દાનીમપિ=અસ્મિન્ ભવેડપિ તસ્યૈવાન્તિકે સર્વ પ્રાણાતિપાત પ્રત્યાખ્યામિ
યાવત્ સર્વ પરિગ્રહ પ્રત્યાખ્યામિ યાવજ્જીવમ્, યદપિ ચ સ્વલુ ઇદ શરીરમિષ્ટ
કાન્ત યાવત્ મા સ્પૃશન્તુ રોગાતઙ્કા, એતદપિ શરીર સ્વલુ 'ચરિમેહિ' ચરમૈઃ=
અન્તિમૈઃ 'ઝસાસેહિ' ઝન્હવાસૈઃ=પ્રાણનિર્ગમૈઃ 'વોસિરામિતિકદ્દુ' વ્યુત્સૃજામિતિ

પ્રાણાદિગાય પચ્ચક્કામિ જાવ સન્ન પરિગ્રહ પચ્ચક્કામિ જાવ જીવ
સન્ન અસણ ૪ પચ્ચક્કામિ જાવ જીવ જ પિ ય ણ ટ્થ સરીર ઇદ્ધ કત
જાવ મા ફુસતુ ણ્ણ પિ ણ ચરિમેહિ ઝસાસેહિ વોસિરામિ ત્તિ કદ્દુ
વોસિરહ) યાવત્ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુણ અર્હત ભગ-
વતો કો મેરા નમસ્કાર હો, યાવત્ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત
કરને કો કામના વાલે મેરે ધર્માચાર્ય, શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કો
મેરા નમસ્કાર હો । પૂર્વભવ મેં મી મેંને સ્થૂલ રૂપ સે પ્રાણાતિપાત કા
પરિત્યાગ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કે સમીપ કિયા થા । ઇસી તરહ
સ્થૂલ મૃષાવાદ કા સ્થૂલ અદત્તાદાન કા સ્થૂલ મૈથુન કો, એવ સ્થૂલ
પરિગ્રહ કો મી પ્રત્યાખ્યાન કિયા થા । એ સ્થૂલ મૃષાવાદ આદિ યાવત્
શબ્દ સે યહો ગૃહીત હુણ હેં નો અચ્છ ઇસ ભવ મેં મી ઉન્હી કે સમીપ
સર્વ પ્રાણિતિપાત યાવત્ સર્વ પરિગ્રહ કા યાવજ્જીવ પ્રત્યાખ્યાન કરતા
હું । તથા અશન, પાન, સ્વાદ્ય એવ સ્વાદ્ય રૂપ સે ચતુર્વિધ આહાર કા મી
જીવન પર્યન્ત પરિત્યાગ કરતા હું । તથા જો ઇષ્ટ, કાન્ત યહ મેરા શરીર

પચ્ચક્કામિ જાવજીવ જ પિ ય ણ ઇમમગીર ઇદ્ધ કત જાવ મા ફુસતુ ણ્ણ પિ ણ
ચરિમેહિ વોસિરામિ ત્તિ કદ્દુ વોસિરહ) યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને પ્રાપ્ત
કરેલા અર્હત ભગવતને મેરા નમસ્કાર છે, યાવત્ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાનને
મેળવવાની ઇચ્છા ડગ્ગાગ મારા ધર્માચાર્ય શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને મારા
નમસ્કાર છે પહેલાના ભવમા પણ મે સ્થૂલ રૂપથી શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની
નજીક પ્રાણાતિપાતનો પરિત્યાગ કર્યો હતો આ ગીતે જ સ્થૂળ મૃષાવાદનુ, સ્થૂલ
અદત્તાદાનનુ, સ્થૂલ મૈથુનનુ, અને સ્થૂલ પરિગ્રહનુ પણ મે પ્રત્યાખ્યાન કર્યું
હતુ સ્થૂલ મૃષાવાદ વગેરે અહી 'યાવત્' શબ્દ વડે સગૃહીત થયા છે ત્યારે
હવે હું આ ભવમાં પણ તેમની નજીક સર્વ પ્રાણાતિપાત યાવત સર્વ પરિ-
ગ્રહનુ મૃત્યુ સુધી પ્રત્યાખ્યાન કરી છું તેમજ જે ઈષ્ટ, કાન્ત આ માર શરીર
છે-એ જેના માટે મારા મનમા આ જાતના વિચારો હતા કે એને કોઈ પણ

કૃત્વા=શરીરં વ્યુત્સૃજતિ-પરિત્યજતિ, ભગવાનાહ-હે ગૌતમ ! તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ સ
દર્દુરઃ-કાલમાસે કાલ કૃત્વા યાવત્-સૌધર્મે વલ્પે 'દદ્દુર વડિસણ વિમાણે' દર્દુરા
વતસકે વિમાણે=દર્દુરદેવતયા 'ઉવવન્ને' ઉવવન્નઃ-ઉવપાત-જન્મ પ્રાપ્તિ-ઇત્યર્થ ।

દર્દુરચરિતમુક્તવા-ભગવાન્ મહાવીરઃ સ્વામી પ્રાહ- 'એવ સ્વલુ ગોયમા !'
ઇત્યાદિ । હે ગૌતમ ! એવ સ્વલુ દર્દુરેણ સા દિવ્યા દેવદિદ્ધિ લંબા ઉપાર્જિતા પ્રાપ્તા
સ્વયત્તીકૃતાઽભિસમન્નાગતા-સમ્યક્ સેવિતા । ગૌતમઃ પૃચ્છતિ- 'દદુરસ્સ'
ઇત્યાદિ । દર્દુરસ્ય સ્વલુ દેવસ્ય હે મદન્ત ! કિયત્કાલપર્યન્ત મિથિતિઃ પ્રજ્ઞા ?

હૈ કિ જિસ કે પ્રતિ મેરી યત્ ધારણા રહતી થી, કિ હસે કોઈ બી રોગા
તક સ્પર્શ ન કરેં વસકો બી મેં અન્તિમ શ્વાસોં તક મમત્વ ભાવસે રહિત
હોકર છોડતા હું । હસ પ્રકાર કરકે વસને સઘ કા પરિત્યાગ કર
દિયા । (તણ સે દદ્દુરે કાલમાસે કાલ કિચ્ચા જાવ સોહમ્મે કપ્પે
દદ્દુરવડિસણ વિમાણે ઉવવાયસમાણ દદ્દુરદેવત્તાણ ઉવવન્ને-એવ
સ્વલુ ગોયમા ! દદ્દુરેણ સા દિવ્વા, દેવિદ્ધી, લદ્દા, પત્તાઅભિસમન્ના
ગયા) હસકે ઘાદ વહ દર્દુર કાલ અવસર કાલ કરકે યાવત્ સૌધર્મ
કલ્પ મેં દર્દુરાવતસક વિમાણ મેં ઉવપાત સમા મેં દર્દુર દેવતા કી
પર્યાય સે ઉત્પન્ન હો ગયા । હસ પ્રકાર દર્દુર કા ચરિત્ર કહકર ભગવાન્
મહાવીર સ્વામી ને ગૌતમ સે કહા-કિ હે ગૌતમ ! હસ પ્રકાર
સે વસ દર્દુર દેવ ને વહ દિવ્ય દેવદિદ્ધિ ઉપાર્જિત કી હૈ, અપને આધીન
કી હૈ ઓર વસે અપને ભોગકે યોગ્ય ઘનાઈ હૈ । અવ ગૌતમ અમણ
ભગવાન્ મહાવીર સ્વામી સે પુનઃ પૂછતે હૈં કિ- (દદુરસ્સ ણ મતે ! દેવ
સ્સ કેવહયકાલ ઠિદ્ધિપણ્ણત્તા ? ગોયમા ! ચત્તારિ પલિઓવમાઈ ઠિદ્ધિ

રોગ અને આતક સ્પર્શ કરે નહિ-તેને પણ હું મમત્તર વગર થઇને છોડી
પણ સુધી ત્યજુ છું આ રીતે વિચાર કરીને તેણે બધી વસ્તુઓને ત્યજી દીધી
(તણ સે દદ્દુરે કાલમાસે કાલ કિચ્ચા જાવ સોહમ્મે કપ્પે દદ્દુરવડિસણ વિમાણે
ઉવવાયસમાણ દદ્દુરદેવત્તાણ, ઉવવન્ને એવ સ્વલુ ગોયમા ! દદ્દુરેણ સા દિવ્વા,
દેવિદ્ધી, લદ્દા, પત્તા અભિસમન્નાગયા) ત્યારબાદ તે દેડકો કાળના મમથે કાળ
કરીને યાવત્ સૌધર્મકલ્પમા દર્દુરાવતસક વિમાણમા ઉવપાત સમામા દર્દુર
દેવતાના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થયે । આ રીતે દેડકાના ચરિત્ર વિશે વર્ણન કરીને
ભગવાન મહાવીર સ્વામીએ ગૌતમને કહ્યું કે હે ગૌતમ ! આ રીતે તે દર્દુર
દેવે તે દિવ્યદેવદિધિ મેળવી છે, તેને સ્વાધીન બનાવી છે અને તેને પોતે ભોગ
વધાને લાયક બનાવી છે હવે અમણ ભગવાન મહાવીરને ગૌતમ ફરી પૂછે
છે કે (દદ્દુરસ્સ ણ મતે ! દેવસ્સ કેવહયકાલ ઠિદ્ધિપણ્ણત્તા ? ગોયમા ! ચત્તારિ

भगवानाह—हे गौतम ! ददुरस्य खलु देवस्य चत्वारि पल्योपमानि स्थितिः प्रज्ञा । पुनर्गौतमः पृच्छति—‘ सेण ’ इत्यादि स खलु हे भदन्त ! ददुरो देवन्तस्माद् देवलोकाद् आयुः क्षयेण भवक्षयेण स्थिति क्षयेण चय त्यक्त्वा कुत्र गमिष्यति ? कुत्र उत्पत्स्यते—उपपात—जन्म प्राप्स्यति ? । भगवान् कथयति—‘ गोयमा ! ’ इत्यादि । हे गौतम ! स खलु ददुरो देवः आयुः क्षयेण भवक्षयेण स्थितिक्षयेण देवलोकाच्च्युतः सन् महाविदेहे वर्षे जन्म प्राप्य सेत्स्यति भोत्स्यति मोक्ष्यति परिनिर्वस्यति सर्वदुःखानामन्त करिष्यति च ।

पणत्ता, से ण भते । ददुरे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण चय चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ?) हे भदन्त ! ददुरदेव की वहा कितनी स्थिति हुई है ? प्रभु कहते हैं कि हे गौतम । चार पल्योपम की स्थिति उसकी वहा हुई है । पुनः गौतम उनसे पूछते हैं कि हे भदन्त ! वह ददुर देव वहा से—उस देवलोक से—आयु के क्षय भवके क्षय एव स्थिति के क्षय हो जाने पर शरीर का—देव सम्बन्धी शरीर का—परित्याग कर कहा जावेगा (कहिं उववज्जिहिइ) कहा पर जन्म धारण करेगा ? इस प्रश्न का उत्तर भगवान् ने उन्हें इस प्रकार दिया—(गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, सुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाण अत करेहिइय) गौतम ! वह ददुर देव आयु के क्षय से, भव के क्षय से एव स्थिति के क्षय से देवलोक से चक्कर महाविदेह क्षेत्र में जन्म प्राप्त कर वहाँ से सिद्ध होगा, विमल केवल लोक से सकल लोकालोक का ज्ञान होगा, समस्त कर्मों से मुक्त

पलिओवमाइ ठिई पणत्ता से ण भते । ददुरे देवे ताओ देव लोकाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण चय चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ?) हे भदन्त ! तया ददुर देवनी डेटली स्थिति थं छे ? प्रभु उडे ठे ठे ठे गौतम । तेनी आरपट्योपम डेटली स्थिति थं छे गौतम इगी तेओश्रीने पूछे ठे ठे ठे भदन्त ! ते ददुर देव तयाथी—ते देवलोकाथी—आयुष्यना क्षय, लवना क्षय, तेमज स्थितिना क्षय थया भाद शरीरने—देवसम्बन्धी शरीरने त्यज्जने क्या जगे ? (कहिं उववज्जिहिइ) क्या जन्म प्राप्त करे ? लगवाने आ प्रश्नने जवाब आ प्रमाणे आये । हे (गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, सुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वाहिइ, सव्व दुक्खाण अत करेहिइय) हे गौतम ! ते ददुर देव आयुष्यना क्षय थया भाद, लवने क्षय थया भाद, अने स्थितिना क्षय थया भाद देवलोकाथी यवीने भूविदेह क्षेत्रमा जन्म प्राप्त कराने तयाथी ज सिद्ध थये विमल—केवल लोकालोक

કૃત્વા=શરીરં વ્યુત્સૃજતિ-પરિત્યજતિ, મગયાનાહ-હે ગૌતમ ! તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ સ
દર્દુરઃ-કાલમાસે કાલ કૃત્વા યાવત્-સૌધર્મે કલ્પે 'દદ્દુર વડિસણ વિમાણે' દર્દુરા
વતસકે વિમાણે=દર્દુરદેવતાયા 'ઉવવન્ને' ઉવવન્નઃ-ઉવપાત-જન્મ પ્રાપ્ત ઇત્યર્થઃ ।

દર્દુરચરિતમુત્તવા-મગયાન્ મહાવીરઃ સ્વામી પ્રાહ-‘ એવ સ્વલુ ગોયમા ! ’
ઈત્યાદિ । હે ગૌતમ ! એવ સ્વલુ દર્દુરેણ સા દિવ્યા દેવદિર્ઘિ લંબા ઉપાર્જિતા પ્રાપ્તા
સ્વયત્તીકૃતાઽભિસમવાગતા-સમ્યક્ સેવિતા । ગૌતમઃ પૂચ્છતિ-‘ દદુરસ્સ ’
ઈત્યાદિ । દર્દુરસ્ય સ્વલુ દેવમ્ય હે મદન્ત ! કિયત્કાન્તપર્યન્ત મિયતિઃ મજ્ઞતા ?

હૈં કિં જિસ કે પ્રતિ મેરી યત્ ધારણા રહતી થી, કિં હસે કોઈં બી રોગા
તક સ્પર્શ ન કરેં ઉસકો બી મૈં અન્તિમ શ્વાસોં તક મમત્વ ભાવસે રહિત
હોકર છોડતા હૂં । હસ પ્રકાર કરકે ઉસને સથ કા પરિત્યાગ કર
દિયા । (તણ્ણ સે દદ્દુરે કાલમાસે કાલ કિંચ્ચા જાવ સોહમ્મે કપ્પે
દદ્દુરવડિસણ વિમાણે ઉવવાયસમાણ દદ્દુરદેવત્તાણ ઉવવન્ને-એવ
સ્વલુ ગોયમા ! દદ્દુરેણ સા દિવ્યા, દેવિઢ્ઠી, લદ્દા, પત્તાઅભિસમન્ના
ગયા) હસકે ઘાદ વહ દર્દુર કાલ અવસર કાલ કરકે યાવત્ સૌધર્મ
કલ્પ મે દર્દુરાવતસક વિમાન મે ઉવપાત સભા મેં દર્દુર દેવતા કી
પર્યાય સે ઉત્પન્ન હો ગયા । હસ પ્રકાર દર્દુર કા ચરિત્ર કહકર મગવાન્
મહાવીર સ્વામી ને ગૌતમ સે કહા-કિં હે ગૌતમ ! હસ પ્રકાર
સે ઉસ દર્દુર દેવ ને વહ દિવ્ય દેવદિર્ઘિ ઉપાર્જિત કી હૈં, અપને આધીન
કી હૈં ઓર ઉસે અપને ભોગકે યોગ્ય ઘનાઈ હૈં । અવ ગૌતમ શ્રમણ
મગવાન્ મહાવીર સ્વામી સે પુનઃ પૂછતે હૈં કિં-‘ દદુરસ્સ ણ મતે ! દેવ
સ્સ કેવહ્યકાલ ઠિઈપણ્ણત્તા ? ગોયમા ! વત્તારિ પલિઓવમાઈ ઠિઈ

રોગ અને આતક સ્પર્શ કરે નહિ-તેને પણ હું મમત્ત વગર થઈને છેડી
પણ સુધી ત્યજુ છું આ રીતે વિચાર કરીને તેણે બધી વસ્તુઓને ત્યજી દીધી
(તણ્ણ સે દદ્દુરે કાલમાસે કાલ કિંચ્ચા જાવ સોહમ્મે કપ્પે દદ્દુરવડિસણ વિમાણે
ઉવવાયસમાણ દદ્દુરદેવત્તાણ, ઉવવન્ને એવ સ્વલુ ગોયમા ! દદ્દુરેણ સા દિવ્યા,
દેવિઢ્ઠી, લદ્દા, પત્તા અભિસમન્નાગયા) ત્યારબાદ તે દેડકો ઠાગના સમયે ઠાગ
કરીને યાવત્ સૌધર્મકલ્પમા દર્દુરાવતસક વિમાનમા ઉવપાત સભામા દર્દુર
દેવતાના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થયો આ રીતે દેડકાના ચરિત્ર વિશે વર્ણન કરીને
મગવાન મહાવીર સ્વામીએ ગૌતમને કહ્યું કે હે ગૌતમ ! આ રીતે તે દર્દુર
દેવે તે દિવ્યદેવદિર્ઘિ મેળવી છે, તેને સ્વાધીન બનાવી છે અને તેને પોતે ભોગ
વવાને લાયક બનાવી છે હવે શ્રમણ મગવાન મહાવીરને ગૌતમ ફરી પૂછે
છે કે (દદ્દુરસ્સ ણ મતે ! દેવસ્સ કેવહ્યકાલ ઠિઈપણ્ણત્તા ? ગોયમા ! વત્તારિ

भगवानाह-हे गौतम ! ददुरस्य खलु देवस्य चत्वारि पल्योपमानि स्थितिः प्रवृत्ता । पुनर्गौतमः पृच्छति-‘ सेण ’ इत्यादि स खलु हे भदन्त ! ददुरो देवस्तस्माद् देवलोकाद् आयुः क्षयेण भवक्षयेण स्थिति क्षयेण च यत्कत्वा कुत्र गमिष्यति ? कुत्र उत्पत्स्यते=उपपात-जन्म प्राप्स्यति ? । भगवान् कथयति-‘ गोयमा । ’ इत्यादि । हे गौतम ! स खलु ददुरो देवः आयुः क्षयेण भवक्षयेण स्थितिक्षयेण देवलोकाच्च्युतः सन् महाविदेहे उपै जन्म प्राप्य सेत्स्यति भोत्स्यति मोक्ष्यति परिनिर्वस्यति सर्वदुःखानामन्त करिष्यति च ।

पण्णत्ता, से ण भते ! दददुरे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण चय चट्ठा कहिं गच्छिहिइ ?) हे भदन्त ! ददुरदेव की वहा कितनी स्थिति हुई है ? प्रभु कहते हैं कि हे गौतम ! चार पल्योपम की स्थिति उसकी वहा हुई है । पुनः गौतम उनसे पूछते हैं कि हे भदन्त ! वह ददुर देव वहा से-उस देवलोक से-आयु के क्षय भवके क्षय एव स्थिति के क्षय हो जाने पर शरीर का-देव सबन्धी शरीर का-परित्याग कर कहा जावेगा (कहिं उव्वज्जिहिइ) कहाँ पर जन्म धारण करेगा ? इस प्रश्न का उत्तर भगवान् ने उन्हें इस प्रकार दिया-(गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वहिइ सव्वदुक्खाण अत करेहिइय) गौतम ! वह ददुर देव आयु के क्षय से, भव के क्षय से एव स्थिति के क्षय से देवलोक से चक्कर महाविदेह क्षेत्र में जन्म प्राप्त कर वही से सिद्ध होगा, विमल केवल लोक से सकल लोकालोक का ज्ञान होगा, समस्त कर्मों से मुक्त

पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता से ण भते ! दददुरे देवे ताओ देव लोकाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण चय चट्ठा कहिं गच्छिहिइ ?) हे भदन्त ! त्था ददुर देवनी केटली स्थिति थछ छे ? प्रभु उछे छे उ छे गौतम ! तेनी चारपट्योपम केटली स्थिति थछ छे गौतम इनी तेओश्रीने पूछे छे उ छे भदन्त ! ते ददुर देव त्थाथी-ते देवलोकाथी-आयुण्णना क्षय, लवना क्षय, तेमज्ज स्थितिने क्षय थथा भाद शरीरने-देवसबन्धी शरीरने त्यज्जने क्या ज्जे ? (कहिं उव्वज्जिहिइ) क्या जन्म प्राप्त करे ? लगवाने आ प्रश्नने ज्वण्ण आ प्रमाणे आये के (गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वहिइ, सव्व दुक्खाण अत करेहिइय) हे गौतम ! ते ददुर देव आयुण्णने क्षय थथा भाद, लवने क्षय थथा भाद, अने स्थितिने क्षय थथा भाद देवलोकाथी यवीने भडा-विदेह क्षेत्रमा जन्म प्राप्त करीने त्थाथी ज सिद्ध थथे विमल-केवल लोक ?

સુધર્માસ્વામી જન્મુસ્વામીન પાઠ-‘ એવ ચ્વલુ સમણેણ ’ इत्यादि, हे जम्बू !
 एवं खलु श्रमणेन भगवता महावीरेण त्रयोदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य, अयम्=उक्त
 स्वरूपः, अर्थ प्रज्ञप्तः, ‘ इति ब्रवीमि ’-अस्य व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ॥ ८ ॥

इति श्री-विश्वनिख्यात-जगद्गुरु-मसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितक-
 लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहच्छ
 प्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोल्हापुरराज
 गुरु-गालप्रज्ञचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-वासोलात्र-
 व्रतिविरचिताया ‘ ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ’ सूत्रस्यानगारधर्ममृतव-
 षिण्याख्याया व्याख्याया त्रयोदशमः पद्यन सपूर्णम् ॥ १३ ॥

રોગા, સમસ્ત કર્મકૃત વિકાર સે રહિત હોને કે કારણ સ્વસ્થ રોગા
 ઔર इम प्रकार समस्त दुःखों का वह अन्त करने वाला हो जावेगा ।
 (एवं खलु जम्बू ! समणेण भगवता महावीरेण तेरसमस्स नायज्झयण
 स्स अयमद्वे पणत्ते त्तिवेमि) इस प्रकार जम्बू स्वामी को समझाकर
 अय गौतम उन से कहते हैं हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीरने इस
 तेरहवें ज्ञाताध्ययन का उक्त रूप मे अर्थ प्ररूपित किया है । मैंने जैसा
 उनके मुख से इसे सुना वैसा ही यह तुमसे कहा है । अपनी ओरसे
 मिलाकर इसमे कुछ नहीं कहा है ॥ सूत्र ८ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री वासीलालजी महाराज कृत

“ ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र ” की अनगारधर्ममृतवषिणी व्याख्याका

तेरहवा अध्ययन समाप्त ॥ १२ ॥

તે સકલ લોકલોકને જાણનાર થશે, સમસ્ત (બધા) કર્મકૃત મુક્ત થશે, સમસ્ત
 કર્મકૃત વિકાર વગર થયા બદલ તે સ્વસ્થ થશે અને આ રીતે બધા હુ ખોને
 તે અન્તકરનાર થઈ જશે (એવ ચ્વલુ જમ્બૂ ! સમણેણ ભગવતા મહાવીરેણ તેરમસ્સ
 નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્વે પણત્તે ત્તિ વેમિ) આ રીતે જ ખૂ સ્વામીને સમજાવીને
 ગૌતમ તેમને કહે છે કે હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ તેરમા
 જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે મે જેવો તેમના મુખથી
 સાંભળ્યો છે તેવો જ તમને કહ્યો છે મે આમા પોતાની મેળે ઉમેરીને કંઈજ
 કહ્યું નથી ॥ સૂત્ર “ ૮ ” ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય વાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મમૃતવર્ષિણી
 વ્યાખ્યાનું તે

